# पहाड़ी-हिन्दी शब्दकोश

हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी, शिमला

# पहाड़ी- हिन्दी शब्दकोश

# समर्पण

पहाड़ी भाषा एवम् संस्कृति के पोषक जनमानस को

तथा

हिमाचल निर्माता डॉ० यशवन्त सिंह परमार,
स्व० लाल चन्द प्रार्थी 'चान्द' कुल्लवी,
पहाड़ी गान्धी बाबा कांशीराम,
पद्मभूषण डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा,
पद्मभूषण डॉ० सुनीतिकुमार चैटर्जी,
महापण्डित राहुल सांकृत्यायन,
ए.एच. डायक, डॉ० इब्राहम ग्रियर्सन, टी. ग्राहम बैली, डॉ० हंस ऐण्ड्रिक्सन

और

अनेक प्रतिबद्ध भाषाविदों और संस्कृति के पोषक कर्णधार शोधकर्ता विद्वानों को
जिनके कारण पर्वतीय संस्कृति व पहाड़ी भाषा के ज्ञान का
प्रकाश निरन्तर उजागर होता रहा।

# दो शब्द

हिमाचल प्रदेश का निर्माण १५ अप्रैल, १९४८ को हुआ। ५५,६५० वर्ग किलोमीटर में फैले इस प्रदेश की कुल जनसंख्या वर्ष १९८१ की जनगणना के अनुसार ४२,८०,८१८ है। प्रदेश में कुल १२ ज़िले हैं। इन ज़िलों में से दो में तिब्बती-बर्मी भाषा बोली जाती है तथा शेष १० ज़िलों में आर्य भाषा परिवार की बोलियों का प्रचलन है। इन सभी बोलियों पर समग्र रूप से शोधकार्य के प्रयत्न बहुत कम हुए हैं। इसका मुख्य कारण सम्भवत: प्रदेश की भौगोलिक स्थिति है, जिसके अनुसार किसी भी व्यक्ति के लिए भाषा वैज्ञानिक अध्ययन में कठिनाइयां हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सारे देश में सांस्कृतिक संरक्षण तथा उत्थान की लहर चली। इस ओर कला पारखियों तथा संस्कृति के अध्येताओं का ध्यान आकृष्ट हुआ। भाषा वैज्ञानिकों तथा शोधकर्ताओं ने भी अपने देश की सांस्कृतिक विरासत को प्रचारित-प्रसारित करने के लिए प्रयत्न आरंभ किए। हिमाचल प्रदेश का लोक-मानस भी इस जागरण से प्रभावित हुआ और स्थानीय बोलियों में अधिकाधिक आदान-प्रदान तथा लेखन का सूत्रपात हुआ। इसे प्रोत्साहन देने के लिए प्रदेश में हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी की स्थापना २ अक्तूबर, १९७२ को हुई और वर्ष १९७३ में भाषा एवं संस्कृति विभाग की स्थापना हुई। उक्त दोनों संस्थाओं ने स्थानीय संस्कृति तथा क्षेत्रीय भाषा के विकास के लिए अनेक योजनाओं पर कार्य आरम्भ किया। पहाड़ी कवि सम्मेलनों तथा लेखक गोष्ठियों से प्रदेश में इस भाषा में साहित्य-सृजन का वातावरण बना। पहाड़ी भाषा की विभिन्न उपभाषाओं में साहित्य की प्राय: सभी विधाओं में साहित्य-सृजन हुआ है। इसमें अन्य भाषाओं से अनुवाद करके मूल्यवान ग्रन्थ सामने आए। पहाड़ी भाषा व संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्धन की दिशा में स्व. डॉ. यशवन्त सिंह परमार, तत्कालीन मुख्यमन्त्री, हिमाचल प्रदेश तथा स्व. लालचन्द प्रार्थी, भाषा एवं संस्कृति मन्त्री तथा तत्कालीन अध्यक्ष अकादमी ने विशेष योगदान दिया, तथा प्रदेश के साहित्यकारों में क्षेत्रीय भाषा में साहित्य-सृजन के लिए जागृति पैदा की।

पहाड़ी भाषा के शब्द-भण्डार के अध्ययन, संरक्षण तथा सर्वेक्षण की दृष्टि से यह आवश्यकता समझी गई कि पहाड़ी-हिन्दी शब्दकोश तैयार किया जाए क्योंकि इस भाषा की शब्द-सम्पदा के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए यह एक अभूतपूर्व माध्यम हो सकता है। इसकी आवश्यकता तो पर्याप्त समय से अनुभव की जा रही थी और स्व. डॉ. यशवन्त सिंह परमार ने वर्ष १९६९ में हिमाचल दिवस समारोह में इस ओर अपनी इच्छा भी व्यक्त की थी परंतु इसका विधिवत् कार्य २५ अगस्त,, १९८६ को अकादमी की सामान्य परिषद में लिए गए निर्णय के अनुसार आरम्भ हो सका। प्रदेश के प्राय: सभी भागों से इसके लिए शब्द संकलन का कार्य भाषायी सर्वेक्षकों ने किया तथा शब्दकोश सलाहकार समिति ने प्राप्त प्रविष्टियों को अंतिमित किया। अकादमी का यह कार्य सामयिक तथा महत्वपूर्ण है।

इस शब्दकोश में अनेक कमियां रह गई होंगी यह सम्भव है, पर शब्दकोश ने एक स्वरूप तो ले ही लिया है। कमियों को अगले संस्करणों में सुधारा जाता रहेगा। हमें इस बात का संतोष है कि इस शब्दकोश के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होने से हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी भाषा विश्व के शब्दकोश-इतिहास में सम्मिलित होने की अधिकारिणी हुई है और इस कृति के माध्यम से पाठकों को इस क्षेत्र की उपभाषाओं के शब्द-भण्डार के सम्बन्ध में विश्वसनीय जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

हम शब्दकोश निर्माण में सहायता हेतु सम्बन्धित सलाहकार समिति के सदस्यों तथा शब्दकोश से सम्बन्धित अन्य विद्वानों के सहयोग के लिए आभार प्रकट करते हैं।

दिनांक : ११ दिसम्बर १९८९

वीरभद्र सिंह
मुख्यमन्त्री, हिमाचल प्रदेश
तथा अध्यक्ष, कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी

# सन्देश

प्रसन्नता का विषय है कि प्रदेश के अनेक विद्वानों के सहयोग से पहाड़ी-हिन्दी शब्दकोश तैयार करने का कार्य सम्पन्न हो गया। शब्दसंग्रह साहित्य तथा संस्कृति के अध्ययन के लिए उपयोगी होता है। प्राचीन शब्द जिन्हें हमारे पूर्वज प्रयोग में लाते थे अब लुप्त होते जा रहे हैं। परम्पराओं के साथ शब्द समूहों में भी परिवर्तन आता है। ए.एच. रोज़ ने कुल्लू क्षेत्र के कुछ शब्दों का अपनी पुस्तक 'ग्लॉसरी ऑफ ट्राईब्ज़ एण्ड कास्टस ऑफ नॉर्थ-वैस्टर्न फ्रांटियर एण्ड पंजाब' की भूमिका में उद्धरण देते हुए उनकी सांस्कृतिक महत्ता पर प्रकाश डाला है। प्रस्तुत शब्दकोश में शोधकर्ताओं के लिए भाषा सम्बन्धी प्रचुर सामग्री उपलब्ध होगी।

अकादमी के इस प्रयास की एक विशेषता यह है कि इसमें प्रदेश के विभिन्न जनपदों में प्रचलित शब्दों का मानकीकरण भी किया गया है। जिनसके अन्तर्गत चार ज़िलों से अधिक में प्रचलित शब्द को पहाड़ी भाषा का मानकीकृत शब्द माना गया है और उसके लिए स्थान विशेष का चिन्ह नहीं दिखाया गया है। इस पद्धति से शब्दकोश में लगभग १०,००० शब्द ऐसे उपलब्ध हो जाते हैं, जिन्हें हिमाचल प्रदेश के सभी जनपदों में प्रचलित शब्द माना जा सकता है।

कोश-परम्परा को आगे ले जाने के लिए यह प्रयास सामयिक तथा स्तुत्य है।

दिनांक : ११-१२-१९८९

चन्द्र कुमार
कृषि, भाषा एवं संस्कृति राज्य मन्त्री,
हिमाचल प्रदेश

# मतेयां बरहेयां री तांघ

पहाड़ी-हिन्दी सब्दकोसे रा सुपना मता ई छैल कनै सुहाणा तां है ई, सगुआं मता पुराणा भी ए। हिमाचल निर्माता डॉ. यशवन्त सिंह परमार जी री एह दिली इच्छेया थी जे पहाड़ी भाषा जो सिगरी ठकाणा मिलो, तिन्हां इस सुपने जो सुआरने कनै संगारने ताईं बड़ीया ते बड्डी कुबार्नी देयी री। सभ किछ त्यागी ता जे नी बसारेया तां पहाड़ी कनै तिसा री किस्मत। पंजाब रे पहाड़ी इलाकेयां जो हिमाचल सौगी १ नवम्बर १९६६ तिहाड़ी मिलाने परन्त तिन्हां पहाड़ी भाषा जो सुआरने रां फैसला कीता। १५ अप्रैल १९६९ तिहाड़ी मण्डी जिले रे करसोग नगरे मंझा तिन्हां पहली वरी पहाड़ी-हिन्दी सब्द कोसे ताईं कदम चुकणे री हुंकार भरी। ३० सितम्बर १९७० तिहाड़ी हिमाचल विधान सभा मंझा तिन्हां स: संकल्प पास कराई लेया जिस मुजब पहाड़ी भाषा री इकसार उन्नतीया ताईं हिमाचल कला संस्कृति कनै भाषा अकादमीया री स्थापना रा व्योरा ए। एह संकल्प ताहल्कणे मन्त्री ठाकुर राम लाल जी वल्हा पेस होई रा। २५ जनवरी १९७१ तिहाड़ी हिमाचल प्रदेसे जो प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी वल्हा पूरे दर्जे रा प्रान्त वणाई देणे परन्त एह तांघ तां हिमाचल वासियां जो वधेरे झकोरना लगी। कनै २ अक्तूबर १९७२ तिहाड़ी श्री लाल चन्द प्रार्थी जी री प्रधानगी हेठ अकादमी री स्थापना होई गई। पर जतन तां इस ते मूहरीया होईरे, किछ खरे कनै किछ खोटे। पंजाब सरकारैं एह सिद्ध करने ताईं जे पहाड़ी पजाबी भाषा री इक बोल्ली ई तां ए, १९६२ च कांगड़ी सब्दां जो कठेरने ताईं इक कमेटी वणाई थी, पर प्रताप सिंह कैरो जे तिस समे मुख्यमन्त्री थिए, तिन्हां जो इसा कमेटीया मंझा सामल करने ताईं ताहलकणे कांगड़े ज़िले रा कोई माहणू इस कम्मे ताईं ठीक नी सुझीरा। इस ते कितणे ई साल मूहरैं पहाड़ी बाबा कांशी राम जी (१८८२-१९४३) पहाड़ी भाषा मंझा गीत कनैं नजमां लिखी करी सुत्ती रे कांगड़े जो खरा करी चतैरया था। मतेयां सूरमेयां पहाड़ी भाषा मंझा अपणी रचनां नै एह क्यारी संगारी थी। समाज सुधारक श्री कुंदामल जी बगार बरोधी सत्याग्रह नदोण, रियास्ता च १९वीं सदीया च पहाड़ी भाषा रे टोहैं ई कामयाब कीता था।

श्री लाल चन्द प्रार्थी जी प्रधानगीया हेठ तां पहाड़ी भाषा रा रूप निखरना लगी पेया। प्रार्थी जी अप्पू भी मते सब्द कठेरे। सुपना पूरने ताईं मतेया रंगां कनै उमंगा री लोड़ पौआं। ७ जुलाई १९७६ जो अकादमीया री प्रबन्ध समितीयै इक संकल्प पास कीता जे हिमाचल प्रदेश ता इक पहाड़ी भाषी प्रदेस ए। इसरी पहाड़ी भाषा न डोगरीयारी उपभाषा ए न हिन्दीयां री तां नांई पंजाबीया री। एह तां अपणे आपैं ई इक सुआधीन भाषा ए।

पहाड़ी भाषा तांइ बची सकां थी, सघरोई कनैं संगरोई सकां थी—जे पहाड़ी भाषी लोक इकसी प्रान्तें—म्हाचल प्रदेसे मळे मंझा कठरोन कनैं एह मोतीयां री माला कदी नीं वखरोए, सगुआं होर लमेरी होये। हिमाचले जो बचाणे ताई 'भारते रे मूहलें राज पुर्नगठन आयोग (States Reorganisation Commission) (1955-56) रे प्रमुख न्यांय मूर्ति फज़ल अली रा नां सभनां ते उपर ए, तिन्हां हिमाचले जो पंजाबे मंझा गर्क होणे ते बचाणे ताईं अपणा नोखा नोट लिखी करी इस प्रदेसे जो अपणे पैरां खरेड़ने री सिफारिश कीती।

संसदी कमेटीया रे प्रधान स० हुकम सिंह अध्यक्ष लोक सभा कनैं पंजाब पुनर्गठन आयोगे (Punjab Reorganisation Commission (1965-1966) रे प्रधान न्यां मूर्ति जे.सी. शाह वल्हा भी पंजाब रे पहाड़ी भाषा इलाकेयां जो पंजाब ते उभारी करी हिमाचल प्रदेसे मंझा लगाई नैं पहाड़ी भाषा विशाल हिमाचल प्रदेस नुआड़ने कनैं संगारने री सिफारिशा होईयां।

इंहयां सुरु होई री पहाड़ी ललकारा री गूंज। मुख्य मन्त्री श्री वीरभद्र सिंह जी २५ अगस्त १९८६ तिहाड़ी अकादमीया री बैठका मंझा एह नीति कीती जे अकादमी स्ताबी ई पहाड़ी-हिन्दी सब्दकोस तय्यार करगी। इसा घोषणा जो हुक्म मन्नी करी म्हारे प्रदेसे रे विद्वानां पूरा जोर लाई नैं सब्द कठेरे, ताले कनै मालां साही विन्नही करी कोसे री पालीयां सजाईयां। लगभग ५५,००० सब्दा रा भण्डार तुसां जो पेस करी सांझो मती खुशी ए। मते सब्द तां हिमाचले रे इकसी कूणे ते लेयी करी दूये कूणे तिक्र इकसार रूपैं मिलां। किछ जे

थोड़े मते फर्क भी। पर सभनां री बुणतर तां इक सार ई ए। कुती उच्चारणे रा भेत तां कुती अर्थे रा अन्तर। पर ४ कनैं इस ते होर वधेरे ज़िलेयां मंझा सांझी सब्दां रा भण्डारा तां मता भरपूर ए। इसकरी तिन्हां जो सांझी सब्द मन्नी करी तिन्हां अग्गै कुसी ज़िले रा ना नी ए।

एह सब्दकोस अकादमीया री पहली कोसस ए। उम्मीद इ इस जखीरे बधेरैं सुआरना कनैं संगारना हऊं इस गुलदस्ते री बधेरी खूशबू कनै छैलपणे वारे पूरी आस रखां। मिंजो पूरी आस ए जे इस गुलदस्ते नै सांजो पूरे बागे रे मते सारे होर रंग-वरंगे फुल्लां रा थौह ठकाणा सुझणा कनै असां स: भी कठेरने कनैं संगेरने।

जिन्हां पितां पुरखेयां पहाड़ी भाषा मंझा रचना करी नैं इसा री सोभा बधाई, जिन्हां इसा जो नेहरके दिनां भी अपणे प्यारे रे निघे नैं पालेया पोसेया, जिन्हां इसा ताई मते लुभाणे मौके वसारे कनै इसा सौगी अपणा धर्म नभाईरा कनै जिन्हां सुरमेयां इस ताई होरना भाषा रे दावेदारां ने टक्करां मारीयां कनै जिन्हां इसा भाषा रे सब्दा री चगेर सजाई नै एह पहाड़ी-हिन्दी सब्दकोस मोती साही परोईता- तिन्हां सुरमेयां री मंजिल भी इक ई जिनी पहाड़ी भाषा जो भारते री भाषा मंझा अपणा स्थान देणा।

एह मतेयां बरेहयां री तांघ थी जे पूरी होई री। इसा तांघा रे सुर कदी विधान सभा मंझा ते कदी लोक सभा मंझा गूंजणे कदी साहित्य अकादमीयां मंझा तां कदी विद्वानां री गोष्ठीया कनैं सम्मेलना मंझा।

पर जे भी होणा स इस सतरंगी पींघा रा ई इक लसकारा होणा जिसा जो असां पहाड़ी भाषा करी चतेरां। पहाड़ी-हिन्दी सब्दकोस इसा पींघा री इक झलक ए—एह सपना पहाड़ी भाषा साहित्य कनै संस्कृति प्रेमीयां जो मुबारक कनै सब्द कठेरने, संगेरने कनैं सधेरने आले विद्वानां जो म्हारा सादर प्रणाम। भारते रे कर्णधार पं॰ जवाहर लाल जी री जन्मशताब्दीया मंझा ए म्हारी तिन्हां री सौरा जो सुगात।

बुधवार १ नवम्बर १९८९ ई०
(पहाड़ी भाषा दिवस) अनुराधा नक्षत्र
१६ प्रविष्टे (३ शुक्ला) कत्तक २०४६ वि०
बुद्ध संवत् २५३३

प्रो० नारायण चंद पराशर संसद सदस्य,
कनै सभापति संसदीय सरकारी भरोसा समिति (लोकसभा)
सभापति, कार्यकारी परिषद
हिमाचल अकादमी — शिमला-१७१००१

# भूमिका

पश्चिमी हिमालय का क्षेत्र हिमाचल प्रदेश शब्द-सम्पदा की धरोहर के लिए अनूठा क्षेत्र है। जीवन के प्रत्येक कार्य-कलाप के लिए इस क्षेत्र की बोलियों में भावों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द मिलते हैं। शब्द-सम्पदा का संग्रह करने का प्रयत्न निजी स्तर पर बहुत पहले से होता आ रहा है। कुल्लू की उपभाषा पर एक विद्वान् ए.एच. डायक ने सन् १८९६ ई. में एक पुस्तक प्रकाशित की थी। स्व. पंडित टीकाराम जोशी ने पहाड़ी बोलियों तथा किन्नौरी से सम्बन्धित दो शब्दकोश तैयार किए थे, जो सन् १९०९ तथा १९११ में जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाईटी, कलकत्ता की पत्रिका के अंकों में प्रकाशित हुए। विदेशी विद्वानों यथा— डॉ. ग्राहम बैली तथा डॉ. इब्राहम ग्रियर्सन ने भी इस क्षेत्र में प्रचलित उपभाषाओं के शब्दों के संग्रह पर बल दिया। पंडित टीकाराम जोशी द्वारा लिखित पुस्तकों का पुनर्मुद्रण अकादमी द्वारा किया जा रहा है।

भाषा एवं संस्कृति विभाग तथा हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी की स्थापना के पश्चात् शब्दकोश तैयार करने का क्रम जारी किया गया। इस क्रम में राज्य भाषा संस्थान द्वारा पहाड़ी-हिन्दी शब्दावली वर्ष १९७५ में प्रकाशित हुई। इसके पश्चात् गादी-हिन्दी प्रयोगात्मक शब्दावली का प्रकाशन विभाग द्वारा किया गया परंतु मुद्रण की कठिनाइयों के कारण पुस्तक प्रकाशित न हो पाई।

वर्ष १९८८ में भाषा एवं संस्कृति विभाग तथा अकादमी की गतिविधियों का विभाजन किया गया। इसके अनुसार अकादमी को शोध, प्रलेखन, सर्वेक्षण तथा पहाड़ी भाषा से सम्बन्धित सभी कार्यक्रम हस्तान्तरित किए गए। विभाग द्वारा संकलित पहाड़ी भाषा के शब्दों को भी अकादमी को शब्दकोश तैयार करने के लिए दे दिया गया। अकादमी की सामान्य परिषद के २५.८.८६ के निर्णय के अनुसार कार्यकारी परिषद ने इस कार्य को गम्भीरता से लिया और इसके लिए अकादमी में शब्दकोश शाखा की स्थापना की गई। प्रदेश के सभी जनपदों से सर्वेक्षकों द्वारा शब्द संकलन का कार्य आरम्भ हुआ। डॉ. श्यामलाल डोगरा तथा श्री मौलूराम ठाकुर को १२ सदस्यों की सलाहकार समिति के सहयोग से शब्दकोश तैयार करने का कार्य सौंपा गया। सलाहकार समिति की बैठकें कई मासों तक प्रतिदिन होती रहीं और इस प्रकार इस शब्दकोश के लिए शब्दों का चयन करके उन्हें अकारादि क्रम से व्यवस्थित किया गया। भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के शब्दकोश विशेषज्ञ डॉ. आर.ए. सिंह के सुझाव पर शब्दकोश को दो भागों में प्रस्तुत किया जाना स्वीकृत हुआ। इसके अनुसार प्रथम भाग में आर्य भाषा परिवार की उपभाषाओं के शब्दों को तथा द्वितीय भाग में तिब्बती-बर्मी भाषाओं के शब्दों को रखा गया। शब्दकोश के प्रणयन का कार्य बहुत श्रम-साध्य होता है और इसके लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है।

प्रस्तुत शब्दकोश लगभग दो वर्ष की अवधि में तैयार हुआ। यह समय इस कार्य की महानता को देखते हुए पर्याप्त कम प्रतीत होता है। अकादमी से शब्दकोशों की श्रृंखला में अन्य प्रकार के शब्दकोश बनाये जाने की भी अपेक्षा है। यह कार्य आगे बढ़ता रहेगा और इस प्रकार उपलब्ध शब्द सम्पदा का संरक्षण तथा अध्ययन हो सकेगा।

आशा है प्रस्तुत शब्दकोश सुधि विद्वानों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

**महाराज कृष्ण काव**
**वित्तायुक्त एवं सचिव (भाषा, कला एवं संस्कृति)**
**तथा उपसभापति, कार्यकारिणी, अकादमी**

# प्राक्कथन

भाषा बहता नीर है। लोक में इसकी यात्रा के अनेक सोपान होते हैं। लौकिक संस्कृत से प्राकृत, पालि तथा बाद में अपभ्रंशों की विभिन्न उपशाखाएं भारतीय आर्य-भाषा परिवार की विस्तार-यात्रा का इतिहास है। एक भाषा के शब्दों का अन्य भाषाओं में समाहित होकर उनकी सम्पत्ति बन जाना आश्चर्यजनक घटना नहीं है। एकाधिक संस्कृतियों के विलय तथा सम्मिलन के कारण भी भाषाओं की परिधि में विस्तार होता रहता है। संचार तथा आवागमन के साधन भाषाओं को जितना प्रभावित करते हैं, उतना शायद ही कोई अन्य माध्यम करता हो। यही कारण है कि विश्व की किसी भी भाषा में प्रचलित शब्द-संग्रह का मूल उसी भाषा में खोज पाना कठिन है। दुर्गम क्षेत्रों में प्रचलित भाषायें अपने प्राचीन तथा मूल रूप में अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित रहती हैं, परन्तु ज्यों-ज्यों उन क्षेत्रों के लोगों का सम्पर्क इतर क्षेत्रों के निवासियों से बढ़ता जाता है उनका शब्द भण्डार व्यापक हो जाता है और अनेक नए शब्द उन बोलियों अथवा भाषाओं के अंग बनते जाते हैं। इस प्रकार भाषा संस्कृति का वाहन बन कर अपना कार्य करती रहती है। हिमाचल प्रदेश के बारह ज़िलों में से दस में आर्य भाषा परिवार की उपभाषाएं प्रचलित हैं तथा शेष दो ज़िलो में तिब्बतीबर्मी की हिमालयी शाखा की बोलियां पाई जाती हैं। हिमाचल प्रदेश पश्चिमी हिमालय का अंग है। इसके सीमावर्ती प्रदेशों में डोगरी, पंजाबी, हरियाणवी तथा गढ़वाली भाषाएं बोली जाती हैं। लाहुल के उस पार लद्दाख का क्षेत्र है जहाँ लद्दाखी बोली का प्रचलन है। लाहुल, स्पिति तथा किन्नौर की सीमाएं तिब्बत से लगती हैं अत: इन सीमांत क्षेत्रों में भोटी भाषा का प्रभाव भी देखा जा सकता है। हिमाचलीपहाड़ी पर शौरसेनी अपभ्रंश तथा दरद-पैशाची का प्रभाव है। अपभ्रंश की प्रधानता मुख्यरूप से सातवीं और ग्यारवीं शताब्दी के बीच रही है। आचार्य भरत मुनि ने हिमालय प्रदेश से लेकर सिन्ध तथा उत्तरी पंजाब तक प्रचलित जिस 'उकार बहुला' भाषा का परिचय दिया है, वह अपभ्रंश ही थी। डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी की मान्यता है कि पश्चिमी या शौरसेनी अपभ्रंश गुजरात तथा पश्चिमी पंजाब से लेकर बंगाल तक लोक भाषा के रूप में प्रचलित रही। डॉ० भोलानाथ तिवारी के अनुसार शौरसेनी से पश्चिमी हिन्दी का विकास हुआ तथा नागर अपभ्रंश से राजस्थानी, गुजराती तथा पहाड़ी बोलियां विकसित हुई। डॉ० सर जॉर्ज इब्राहम ग्रियर्सन ने अपने ग्रन्थ 'भारत का भाषा सर्वेक्षण' में हिमालय क्षेत्र की बोलियों को पूर्वी, मध्य तथा पश्चिमी पहाड़ी के वर्गों में बांटा है। उन्होंने पश्चिमी पहाड़ी में भद्रवाही तथा जौनसारी को भी सम्मिलित किया है। भरत मुनि ने बताया है कि प्राचीन काल में हिमालय, सिन्ध तथा उत्तर-पश्चिम पंजाब से लेकर गुजरात तक एक ही बोली प्रचलित थी जो जातीय संस्कार, भौगोलिक प्रभाव तथा उच्चारण आदि के भेद से कई रूपों में विकसित हुई। इसी के लौकिक संस्कृत तथा प्राकृत रूप वर्तमान समय की जन-बोलियों से सम्बन्धित रहे हैं। यह सही है कि किसी भी बोली जाने वाली भाषा का संस्कार साहित्य के निश्चित आदर्श रूप के अभाव में सम्भव नहीं है। जिस प्रकार नदी में अनेक छोटे-मोटे नाले अपने निर्मल तथा मटमैले जल के साथ समाहित होते रहते हैं और उनका स्वतन्त्र अस्तित्व समाप्त होकर नदी का विराट् रूप लेता जाता है उसी प्रकार किसी क्षेत्र की बोलियों का स्वतन्त्र अस्तित्व होते हुए भी लोक उन्हें सशक्त भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए साधन जुटाता रहता है। विश्व में आज जो भाषाएं विद्यमान हैं उनका मूलरूप किसी न किसी बोली में उपलब्ध है। किसी भी भाषा का विकास किसी अन्य भाषा से नहीं होता बल्कि उसकी पूर्वपीठिका किसी बोली अथवा उपभाषा में सम्पुटित रहती है। इस प्रकार बोलियां तथा भाषाएं प्राय: एक साथ जन्म लेती तथा विकसित होती हैं। जब भाषा को अनेक प्रकार से नियमबद्ध कर लिया जाता है तो उसके विकास की गति मन्द पड़ जाती है और जो बोली मंथर गति से भाषा की डगर पर चलने लगती है उसका स्वरूप सशक्त एवम् पुष्ट होता जाता

है और साहित्य रचना होने से वह साहित्यिक भाषा का सम्मान प्राप्त कर लेती है। बोलियों की संक्रमण अवस्थाएं ही भाषा के विकास का इतिहास हैं। आवश्यकतानुसार अन्य भाषाओं तथा बोलियों के शब्द-भण्डार से शब्द प्राप्त करके लोकभाषाएं अन्य भाषाओं तथा बोलियों के शब्द-भण्डार से शब्द प्राप्त करके अपना स्वरूप स्थिर करती जाती हैं। अन्य भाषाओं के शब्द भाषाओं अथवा बोलियों को विकृत नहीं करते बल्कि उन्हें पुष्ट करते हैं। जिस प्रकार प्राचीन साहित्य में प्रयुक्त प्राकृत का अर्थ विद्वानों ने स्वाभाविक भाषा लिया है उसी प्रकार अपभ्रंश अपने विविध रूपों में जनबोली कही जा सकती है। आचार्य वाग्भट्ट तथा हेमचन्द्र ने भी अपभ्रंश में ग्राम्य तथा साहित्यिक दोनों ही परम्पराएं प्रचलित मानी हैं। कबीरदास ने कहा था कि, 'कबीरा संस्करत कूप जल भाखा बहता नीर।' इसका अर्थ यह है कि बोलियों को भाखा अथवा भाषा कहने का प्रचलन रहा है। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी' में डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने ठीक ही कहा है कि, 'आर्यभाषा का इतिहास ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जाता है त्यों-त्यों इन अनुकार शब्दों की बढ़ती हुई संख्या भी द्रष्टव्य बनती जाती है। देशी नाम माला में कुछ अनउकार शब्द हैं। द्रविड़ तथा निषाद (आस्ट्रिक) दोनों भाषाओं के अनुकार शब्द उनका एक महत्वपूर्ण भाग हैं।' पन्द्रहवीं शताब्दी के संतोष मुनि नामक साहित्यकार ने लिखा है :—

**मागधी आणि शौरसेनी, पिशाच अपभ्रंश जाणी**
**संस्कृत प्राकृत या षट्वाणी, आणि के छपन्न भाषा।**

इससे पता चलता है कि मागधी, शौरसेनी तथा पैशाची को अपभ्रंश का मुख्य भाग माना जाता था और महाराष्ट्र में पन्द्रहवीं शताब्दी तक अपभ्रंश में काव्य रचना की जाती थी।

मैक्डॉनल का विचार है कि सिन्धी, पश्चिमी, पंजाबी तथा काश्मीरी का विकास 'व्राचड़' अपभ्रंश से हुआ। देवेन्द्र कुमार शास्त्री तथा कतिपय अन्य विद्वानों का यह कथन सही है कि अपभ्रंश भाषा आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की जननी है। डॉ० शास्त्री अपने ग्रन्थ 'अपभ्रंश भाषा और साहित्य की शोध प्रवृत्तियां' में अपभ्रंश के एक वाक्य 'घोड़ा मारिउ' का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए— 'घोड़ों ने मारा' (हिन्दी), 'घोड़यां' ने कुट्या' (पंजाबी), 'घोड़ाओं ए मारयों' (गुजराती), 'घोड़ेयां नी मारि ले' (मराठी), 'घोड़े मारयो' (सिन्धी), 'घोड़ा येई मारि ले' (असमिया), 'घोरा मनमारे' (छत्तीसगढ़ी) 'घोरन ने मारो' (बुन्देल खण्डी) तथा 'घोड़ा गुलि मेरे छे' (बंगला) लिखते हैं कि 'अपभ्रंश भाषा' का 'घोड़ा' शब्द सभी भाषाओं में अब तक प्रचलित है। पश्चिमी पहाड़ी की कुछ बोलियों में इस वाक्य को 'घोड़ेयां मारेया' कहा जाएगा। इन वाक्यों में 'घोड़ा' शब्द तो महत्वपूर्ण है ही साथ ही वाक्य रचना भी कम उल्लेखनीय नहीं है। उपरोक्त वाक्यों में पंजाबी वाक्य 'घोड़ेयां ने कुट्या' उपयुक्त अनुवाद प्रतीत नहीं होता क्योंकि 'कुटणा' क्रिया प्राय: हाथ से पीटने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। अस्तु, विभिन्न क्षेत्रों की भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से रोचक होता है। उपरोक्त वाक्य में 'घोड़ों ने' के लिए पहाड़ी भाषा का शब्द 'घोड़ेयां' द्रष्टव्य है। इससे कारकों की प्रक्रियां पर प्रकाश पड़ता हैं।

भरत मुनि ने भाषा के चार प्रकार बताएं है। इनमें देवताओं की वाणी को 'अतिभाषा', राजाओं की बोली को 'आर्यभाषा' शिष्ट तथा भले लोगों की बोली को 'जाति भाषा' तथा पशु पक्षी की बोली को योन्यन्तरी भाषा बताया गया है। वे जाति-भाषा के वर्ग के अन्तर्गत प्राकृत तथा संस्कृत दो भेद मानते हैं। इनमें से प्राकृत का प्रयोग जनसामान्य द्वारा किया जाता था तथा नाटकों में शिष्ट, वेदपाठी ब्राह्मण, चोक्ष, गणिकी तथा शिल्पी आदि संस्कृत भाषा का प्रयोग करते थे। उन्होंने सात प्रादेशिक भाषाओं का उल्लेख नाट्य के काव्य के रूप में किया है। उनमें मागधी, अवन्तिका, प्राच्या, (पूर्वी) शौरसेनी, अर्धमागधी, वाल्हीक, और दाक्षिणात्य सम्मिलित हैं। विद्वानों का मत है कि लोक-भाषाओं में साहित्य रचना ईसा की लगभग दूसरी शताब्दी तक अधिक प्रचलित रही। इसके पश्चात् भी इस परम्परा का ह्रास तो नहीं हुआ परन्तु इसके अनेक भेद-उपभेद दृष्टिगोचर होते हैं। अपभ्रंश का बोली के रूप में लगभग तीसरी शताब्दी ई.पू. में प्रचलन आरम्भ हो गया था और बहुत सम्भव है कि यह उस समय नाटकों की

बोली के रूप में प्रयुक्त होती हो। छठी शताब्दी में अपभ्रंश में काव्य-रचना उपलब्ध होने के संकेत मिलते हैं।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने अपभ्रंश काल ५५०-१२०० ई० माना है। अपभ्रंश की बोलियों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में सभी विद्वान एकमत नहीं हैं। डॉ० याकोबी के अनुसार इसके पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी तथा उत्तरी चार भेद हैं। कुछ अन्य विद्वानों ने इसके दक्षिणी, पश्चिमी तथा पूर्वी तीन भेद तथा कतिपय अन्य विद्वानों ने इसे पश्चिमी तथा पूर्वी दो ही वर्गों में विभाजित किया है। अपभ्रंश की बोलियों के सत्ताईस भेदों के विभाजन में भौगोलिक दृष्टिकोण ही अधिक मुखर है। ये भेद हैं :—

ब्राचड़, लाट, वैदर्भ, उपनागर, नागर, बर्बर, आवन्त्य, मागध, पांचाल, टाक्क, मालव, कैकेय, गौड़, औठ, वैव पाश्चात्य, पाण्ड्य, कौन्तल, सैहल, कालिंग, प्राच्य, कार्णाटि, कांच्य, द्राविड़, गौर्जर, आभीर मध्य देशीय और वेताल।

इन भेदों में कमी यह है कि इनमें हिमालय क्षेत्र की बोलियों का स्पष्ट उल्लेख नहीं है। मुख्य रूप से अपभ्रंश के शौरसेनी, पैशाची, ब्राचड़, खश, महाराष्ट्री, अर्धमागधी तथा मागधी, भेद भी किए गए हैं। इनमें से खश अपभ्रंश में से पहाड़ी भाषा का विकास माना जाता है। शौरसेनी अपभ्रंश के नागर रूप से राजस्थानी और गुजराती का विकास हुआ है। इन्हीं दो भाषाओं के साथ पहाड़ी का कुछ न कुछ सम्बन्ध माना जाता है। दरद-पैशाची का प्रभाव पहाड़ी बोलियों पर काश्मीर क्षेत्र की ओर से हुआ। अपभ्रंश में प्रयुक्त शब्दावली में तद्भव शब्द संस्कृत से प्राकृत में सम्मिलित हुए और इनके अतिरिक्त अन्य प्रकार की शब्दावली देशी बोलियों से सीधे रूप में ग्रहण की गई। कालान्तर में तत्सम शब्दों का ह्रास होता गया और वे अपभ्रंश में आकर विलीन हो गए। इस विकासक्रम में भाषायी दृष्टि से निम्नलिखित परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं :—

(१) 'न' का स्थान 'ण' ने ले लिया तथा 'ऐ' के स्थान पर 'अई' हो गया।
(२) आदि व अनादि स्पर्श व्यंजन महाप्राण हो गए।
(३) 'ॠ' या 'ट' के समीपवर्ती दन्त्य व्यंजन मूर्धन्य हो गए।
(४) 'य' का स्थान 'ज' ने ले लिया।
(५) ऊष्म व्यंजनों में 'स' ही शेष रह गया। कई स्थानों पर इसका स्थान मात्र 'श' ने ले लिया।
(६) अन्त्य स्वर ह्रस्व हो गए।
(७) संयुक्त 'र' के समीकरण की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होने लगी।
(८) स्वतन्त्र परसर्ग यथा तृतीया विभक्ति के लिए 'सहु', 'तण' चतुर्थी के लिए 'केहि', 'रेसि' पंचमी के लिए होन्त ऊ, होन्त थिउ, षष्ठी के लिए केर, केरअ तथा सप्तमी के लिए मंझ शब्दों का प्रयोग आरम्भ हुआ। और,
(८) संयुक्त क्रियाओं की अधिकता रही।

पश्चिमी पहाड़ी पर दरद पैशाची का प्रभाव स्पष्टता से अंकित है। दरद संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ पर्वत होता है। विद्वानों ने समस्त विश्व की भाषाओं को बारह वर्गों में विभाजित किया है। इनमें से प्रत्येक के अनेक उपवर्ग हैं और अनुमान है कि इस समय विश्व में लगभग दो हजार प्रमुख जीवन्त भाषाएं हैं। इसके अतिरिक्त ऐसी भाषाओं की संख्या बहुत अधिक है जिन्हें अनुवर्ती वर्गों में रखा जा सकता है। भारोपीय भाषा-परिवार में तीन प्रमुख उपवर्ग उल्लेखनीय हैं। ये हैं :—(१) भारतीय आर्य भाषा समुदाय, (२) ईरानी भाषा समुदाय तथा (३) दरद समुदाय। इनके अतिरिक्त भारोपीय भाषा परिवार में आर्मेनीय, बाल्टो-स्लावोनिक, बाल्टिक, स्लाव, इतालीय, अल्बेनियन, केल्ती, जर्मनीय या ट्यूटानिक अर्थात् केण्टुम शाखा की भाषाओं को भी रखा जाता है। काश्मीर के समीपस्थ गिलगित क्षेत्र में खश, शिन्ह (शीणा), शिणा लोग रहते हैं। इस क्षेत्र के लोग दरद भाषा-भाषी हैं। शीना,

कश्मीरी तथा कोहिस्तानी दरद पैशाची की मुख्य भाषाएं हैं। पहाड़ी में कुछ ऐसी ध्वनियां हैं जिनका स्पष्ट सम्बन्ध प्राकृत अपभ्रंश से न होकर किन्हीं ऐसी अन्य पर्वतीय भाषाओं से हो सकता है जिनमें तालव्य चवर्ग (च़, छ़, ज़, झ़) उपलब्ध हैं। हिमाचली बोलियों में ये ध्वनियां उच्च तथा मध्य हिमालय की पर्वत-श्रृंखलाओं के क्षेत्रों में ही उपलब्ध होती हैं और वहां इनका स्वतन्त्र अस्तित्व है। ये च, छ, ज, झ की संध्वनियां नहीं हैं। दरद पैशाची में ये ध्वनियां स्वतन्त्र रूप से उपलब्ध हैं। डॉ० ग्रियर्सन ने पैशाची में इस प्रकार की ध्वनियों को तालव्य ही माना है। पहाड़ी बोलियों में मुण्डारी, किराती तथा तिब्बती वर्मी भाषाओं के शब्दों व ध्वनियों का भी आंशिक प्रभाव मिलता है। तिब्बती में चवर्ग और च़वर्ग अलग-अलग ध्वनि-समूह बताए जाते हैं। सघोष महाप्राण 'झ' तिब्बती में नहीं है परन्तु ये दरद पैशाची में उपलब्ध हैं। 'ऋ' का 'इ' में बदल जाना, 'श' का 'स' हो जाना तथा 'ल' का 'ल़' तथा 'ड़' बन जाना पैशाची के प्रभाव के अन्तर्गत आता है। पहाड़ी में अन्य भाषाओं की तरह उधार (Loan) लिए हुए शब्दों का प्रभाव भी द्रष्टव्य है। इसमें अन्य भाषाओं के अतिरिक्त फारसी, अरबी, तुर्की आदि भाषाओं के शब्द इस प्रकार से समाविष्ट हो गए हैं कि अनेक दशाओं में उनके पर्याय खोज पाना सहज नहीं है। इन बोलियों के शब्द-भण्डार तथा वाक्य-संरचना में संस्कृत का प्रभाव इतना अधिक है कि इन्हें हिन्दी की बोलियों से अधिक संस्कृत से सीधे सम्बद्ध मानना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। दरद पैशाची का प्रभाव सघोष महाप्राण (घ, झ, ढ, ध, भ) पर नहीं हुआ है क्योंकि उक्त भाषा में ये ध्वनियां उपलब्ध नहीं हैं। पहाड़ी भाषा की सभी बोलियों में सघोष महाप्राण मौलिक ध्वनियां हैं। अत: यह कहा जा सकता है कि पहाड़ी बोलियों पर न तो शौरसेनी अपभ्रंश और न ही दरद पैशाची का इतना अधिक प्रभाव हुआ है कि उपरोक्त भाषाओं में किसी को इन बोलियों की जननी कहा जा सकता है। सांस्कृतिक दृष्टि से देखने पर भी यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जनपदों में प्राचीन एवम् विशिष्ट प्रथाएं त्यौहार, उत्सवों अथवा अन्य सांस्कृतिक मान्यताओं के रूप में प्रचलित हैं जिनसे यह स्पष्ट होता है कि समय-समय पर विभिन्न सांस्कृतिक मान्यताओं के वर्ग इस क्षेत्र में आए और सांस्कृतिक एकता तथा सद्भाव का वातावरण निर्मित हुआ परन्तु वर्ग-विशेष ने अपनी परम्पराओं को बनाए रखा। उदाहरण के लिए कुल्लू क्षेत्र में प्रचलित 'काहिका उत्सव' उस क्षेत्र के अतिरिक्त मण्डी के सीमावर्ती क्षेत्रों तक प्रचलित हुआ। मण्डी जनपद में प्रचलित शिवरात्रि का आयोजन अपने विशिष्ट रूप में इसी क्षेत्र तक सीमित रहा। शिमला तथा सिरमौर में आयोजित होने वाले 'भूण्डा' तथा 'मौण' उत्सव उन्हीं क्षेत्रों तक प्रचलित रहे। चम्बा के 'नागपूजा' तथा 'जात्रा' उत्सव उसी जनपद की विशिष्टता हैं और धनुष बाण का लोक नाट्य 'ठोडा' शिमला, सोलन तथा सिरमौर क्षेत्रों में ही प्रचलित है। बूढ़ी दीवाली का त्यौहार किन्नौर की सांगला घाटी तक तो फैला परन्तु निरमण्ड क्षेत्र के अतिरिक्त इसका प्रचलन कुल्लू के अन्य क्षेत्रों में नहीं हो पाया। इसी प्रकार शिमला की 'गाडर' विवाह-प्रथा का प्रचलन भी सीमित क्षेत्र में ही रहा। यही बात कतिपय अन्य सांस्कृतिक परम्पराओं के सम्बन्ध में उल्लेखनीय है परन्तु इस विविधता के बावजूद जिस प्रकार का आपसी सौहार्द इस क्षेत्र विशेष के विशिष्ट आयोजन यहां अब भी अपने मूल रूप में प्रचलित हैं जो ग्राम-देव-परम्परा प्रधान संस्कृति की विशिष्टता कही जा सकती है। ग्राम देवताओं ने इस प्रदेश की सामाजिक परम्पराओं को व्यवस्थित तथा मर्यादित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और यह सुखद आश्चर्य है कि विभिन्न जनपदों के ग्राम-देवताओं में वर्गगत भिन्नता नहीं है, यद्यपि उनके रथों (पालकियों) की बनावट में यत्र-तत्र अन्तर दृष्टिगोचर होता है। उदाहरणत: कुल्लू क्षेत्र के ग्राम देवताओं की पालकियों में धातु मुख इस प्रकार लगाए जाते हैं कि वे दर्शकों को मानव मुखों की तरह प्रत्यक्ष दिखाई दें। देवताओं की जटाएं पालकी की पिछली ओर रखी जाती हैं। शिमला व सिरमौर क्षेत्र में तनिक भिन्नता के साथ प्राय: इसी प्रकार की पालकियां बनाई जाती हैं। किन्नौर तथा शिमला के रोहड़ू क्षेत्र में देवरथ जिन्हें किन्नरी भाषा में 'रथड़' कहा जाता है, देवताओं के धातु मुखौटों (मुखड़) को एक गोलाई में ढके रहते हैं। बौद्ध धर्म प्रधान क्षेत्रों में ग्राम देवता का रथ न बनाकर एक लम्बे डण्डे (फोबरड़) को सजा कर एक ही व्यक्ति थाम कर चलता है और अनेक बार इसे अपने कमरवस्त्र (गाची) के साथ टिका लेता है। पहाड़ी बोलियों में आनुष्ठानिक शब्दावली का विशिष्ट भण्डार भी प्राचीन संस्कृति के इतिहास को पर्याप्त रूप से स्पष्ट करता है।

हिमाचल प्रदेश की प्रमुख बोलियों में भौगोलिक दृष्टि से उच्चारण सम्बन्धी भिन्नता भी यंत्र-तंत्र दृष्टिगोचर होती है। परन्तु शब्द-भण्डार एक होने के कारण इससे बोलियों की बनावट पर अन्तर नहीं पड़ता। इस क्षेत्र के विभिन्न जनपदों की भारतीय आर्य भाषा वर्ग की बोलियों को अध्ययन की दृष्टि से निम्न विशिष्ट उपवर्गों में बांटा जा सकता है। यह वर्गीकरण स्थूल तथा अनन्तिम है अत: इसे मात्र सर्वेक्षण की दृष्टि से ही उपयोगी माना जा सकता है।

(१) **शिमला व सोलन क्षेत्र** (१) जुब्बल, (२) रामपुर, (३) जुनगा, (४) कुनिहार, (५) बघाट और (६) नालागढ़।

(२) **सिरमौर** (१) रेणुका, (२) नाहन व (३) शिलाई,।

(३) **मण्डी क्षेत्र** (१) मण्डी, (२) चच्योट।

(४) **कुल्लू** (१) बंजार तथा (२) नीथर।

(५) **चम्बा** (१) चम्बा, (२) चुराह, (३) भरमौर, (४) पांगी।

(६) **कांगड़ा** (१देहरा, (२) सुजानपुर, (३) ऊना, (४) नूरपुर, (५) हमीरपुर।

(७) **बिलासपुर** (१) घुमारवीं, (२) कोट-कहलूर, (३) दावीं, (४) बिलासपुर।

(८) **लाहुल, किन्नौर तथा स्पिति** क्षेत्रों में तिब्बती वर्मी भाषा की हिमालयी शाखा की बोलियां प्रचलित हैं परन्तु इन क्षेत्रों में निवास करने वाले सिप्पी, चनाल, कोली, लुहार (ओरेस) और पांगी के भोट अलग बोलियों का प्रयोग करते हैं। लाहुल के चनाल अथवा चिनाल जिस बोली का उपयोग करते हैं उसे डॉ० डी.डी. शर्मा ने लौकिक संस्कृत के समकक्ष रखा है।

पहाड़ी संस्कृतनिष्ठ तथा पालि से प्रभावित भाषा है। यह विभक्तिपरक भी है। इसमें declention हैं इस प्रकार यह aggnltinative है। यह हिन्दी तथा डोगरी की तरह analytical नहीं है। पहाड़ी तथा संस्कृत में वह के लिए 'स:' शब्द प्रयुक्त होता है। संस्कृत में पुल्लिंग के लिए 'स:' तथा स्त्रीलिंग के लिए 'सा' का प्रयोग होता है परन्तु पहाड़ी में दोनों अवस्थाओं में 'स:' अर्थात् समान शब्द का ही प्रयोग होता है। पालि में 'सो' शब्द पुंल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों का वाचक है। डोगरी तथा पंजाबी में 'मैंनू' 'मुझ को' के लिए प्रयुक्त होता है तथा पहाड़ी भाषा में 'मिंजो' शब्द का प्रचलन है। 'मैंनू' तथा 'मुझ को' के भाग किए जा सकते हैं परन्तु 'मिंजो' को विभाजित नहीं किया जा सकता। यह संस्कृत 'मह्यम' का पहाड़ी रूपान्तर है। पहाड़ी में विशेषण तथा क्रियाविशेषण को भी विभक्तिपरक देखा गया है। उदाहरण के लिए हिन्दी का वाक्य 'काली बकरी को सवेरे उठ कर घास डालना' 'पंजाबी में 'काली बकरी नूं सवेरे उठके घा पाणा' होगा तथा डोगरी में 'काली बकरी गी सवेरै घा पाणा' और पहाड़ी में कालीया बकरीया जो भ्यागा उठी ने तौलिए-तौलिए घा पाणा' कहा जाएगा। इसी प्रकार 'भूखी गा नूं चराण वास्ते लै जावो' तथा डोगरी में 'भूखी गां जो चराणे वास्ते लई जावा' होगा परन्तु पहाड़ी में 'भूखिया गाई जो चराणे वास्ते लेई जायों" होगा। ऊपर लिखित वाक्यों में संज्ञा के साथ विशेषण का परिवर्तन द्रष्टव्य है। शब्द भण्डार एक होने पर भी भाषा का स्वरूप निर्धारण करने के लिए वाक्य रचना का अध्ययन आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है। क्रिया विशेषण तथा विशेषण के अन्तर्गत भी विभक्ति का परिवर्तित हो जाना पहाड़ी भाषा के स्वरूप की अलग विशेषता है।

प्राचीन शब्दकोशों की परम्परा में 'रिपोर्ट० ऑफ लैण्ड रेवेन्यू सैटलमैन्ट' (१८६५-७२) में कांगड़ा तथा अन्य ज़िलों में प्रचलित शब्द सूची तथा लोकोक्ति संग्रह उपलब्ध हैं। इसे इस क्षेत्र की शब्द-सम्पदा पर कोश निर्माण की दिशा में आरम्भिक प्रयास माना जा सकता है। सन् १८९५ ई० में लाहौर में प्रकाशित भाई माया सिंह

की 'पंजाबी' डिक्शनरी' में पहाड़ी शब्दों का समावेश किया गया है। सन् १९०९ ई० में बुशहर रियासत के राजा के निजी सचिव स्वर्गीय पंडित टीकाराम जोशी की 'ए ग्रामर एण्ड डिक्शनरी ऑफ किन्नौरी' एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की पत्रिका के वाल्यूम ५ में प्रकाशित हुई थी। सन् १९११ ई० में इन्हीं लेखक की 'ए डिक्शनरी ऑफ पहाड़ी डॉयलैक्टस एज़ स्पोकेन इन द पंजाब हिमालयाज़' का प्रकाशन हुआ। इन पुस्तकों का एक ज़िल्द में अकादमी द्वारा वर्ष १९९० में पुनर्मुद्रण किया गया है। श्री ए०एच० डायक, द्वारा लिखित 'द कुल्लू डायलैक्ट ऑफ हिन्दी एण्ड ग्लॉसरी' सन् १८९६ में प्रकाशित हुई। इसमें कुलुई उपभाषा के शब्दों का संग्रह है। सन् १९११ ई० में ही टी० ग्राहम बैली की कृति 'किन्नौरी वाकेबुलरी इन द पार्टस-इंगलिश-किन्नौरी-इंगलिश' का प्रकाशन रॉयल एशियाटिक सोसाईटी, लन्दन द्वारा किया गया। इसी सोसाइटी द्वारा सन् १९०८ ई० में ग्राहम बैली की एक और कृति 'लैंग्वेजिज़ ऑफ द नॉर्दन हिमालयाज़ बींग स्टडीज इन द ग्रामर ऑफ २६ हिमालयन डायलैक्टस' का प्रकाशन किया गया। इसमें हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी भाषा के अनेक शब्दों का संग्रह है। शब्दकोश निर्माण तथा भाषा संरक्षण की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य डॉ० जार्ज इब्राहिम ग्रियर्सन का है जिन्होंने सन् १९०३ ई० तक इस देश की सभी भाषाओं का अध्ययन करके ११ भागों और १९ खण्डों में लगभग १०,००० पृष्ठों में 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया। डॉ० ग्रियर्सन द्वारा किये गये भाषाओं के वर्गीकरण के सम्बन्ध में विद्वानों ने अनेक स्थानों पर असहमति व्यक्त की है परन्तु शब्द-संग्रह तथा व्याकरण के रूप निर्धारण तथा तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से इस कोटि का महान कार्य अब तक देखने में नहीं आया। नवम् भाग के प्रथम खण्ड में कांगड़ी तथा भटियाली और इसी भाग के चौथे खण्ड में सभी पहाड़ी भाषाओं का सोदाहरण उल्लेख है। ग्रन्थ के तीसरे भाग के प्रथम खण्ड में लाहुल-स्पिति की उपभाषा, किन्नौरी तथा मलाणा की कनाशी आदि का उल्लेख किया गया है। डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा ने इस वृहद् ग्रन्थ में संजोई गई सामग्री का संक्षिप्त रूप 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया-ए समरी' के शीर्षक से दो भागों में किया। सन् १९२६ ई० में डॉ० सुनीति कुमार चैटर्जी ने अपने ग्रंथ 'द ऑरिज़न एण्ड डवैलपमैंट ऑफ बंगाली लैंग्वेज' में पहाड़ी भाषा के शब्दों का समावेश ही नहीं किया बल्कि उनका ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया। टर्नर दम्पत्ति ने अपने चर्चित ग्रन्थ 'कम्पैरिटिव एटिमोलोजिकल डिक्शनरी ऑफ द नेपाली लैंग्वेज' का प्रकाशन सन् १९३१ ई० में लन्दन में किया।

पहाड़ी बोलियों का शब्द रूप दर्शन, डॉ० लोक०वि० टर्नर द्वारा रचित तथा सन् १९६६ में आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित कृति में होता है। ८४१ पृष्ठों के इस वृहद् ग्रन्थ में श्रीमती डोरोथी रिवर्ज़ टर्नर ने वैस्ट्रन पहाड़ी की मानक सूची में पृष्ठ १६५ से १७३ तक पहाड़ी भाषा के शब्दों का संकलन प्रस्तुत किया है। यह लगभग ५,००० शब्दों का संग्रह है इसमें भटियाली, पंगवाली, क्यूंथली, सिराज़ी, सुकेती, सिरमौरी तथा कांगड़ी आदि बोलियों के शब्द सम्मिलित हैं।

सन् १९७१ ई० में टर्नर दम्पत्ति द्वारा लिखित एक अन्य कृति 'ए कम्पैरिटिव डिक्शनरी ऑफ द इंडो-आर्यन लैंग्वेजिज़-फॉनटिक ऐनेलेसिस' शीर्षक से प्रकाशित हुई। डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा का नाम डोगरी तथा पहाड़ी शब्दकोश के इतिहास में अमर रहेगा। उन्होंने पश्चिमोत्तर हिमालय की २७ बोलियों का तुलनात्मक कोश तैयार किया। यह अभी तक अप्रकाशित है। उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय के हिन्दी पीठ की शोध पत्रिका 'भारतीय साहित्य' में डोगरी, कांगड़ी, बिलासपुरी तथा सुजानपुरी' बोलियों के शब्दों का ध्वन्यात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। पहाड़ी भाषा के सम्बन्ध में उनके अनेक लेख हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी की पत्रिकाओं 'सोमसी' तथा 'हिमभारती' में प्रकाशित हुए हैं। सन् १९७० ई० में राज्य भाषा संस्थान, हिमाचल प्रदेश द्वारा हिन्दी-हिमाचली (पहाड़ी) की अनन्तिम शब्दावली प्रकाशित हुई है। इसमें सिरमौर, महासु, कुल्लू, मण्डी, बिलासपुर, कांगड़ा तथा चम्बा जनपदों में प्रचलित लोकभाषा के शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया। सन् १९७४ ई० में जम्मू-काश्मीर अकादमी द्वारा प्रकाशित डोगरी-हिन्दी कोश तथा १९७९ में इसी संस्था द्वारा

प्रकाशित डोगरी डिक्शनरी के चार खण्डों में पहाड़ी भाषा के अनेक शब्द संकलित हैं, जो अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

जनजातीय भाषाओं में किन्नौरी शब्द संग्रह पर सर्वाधिक कार्य हुआ है। सन् १९५७ ई० में प्रकाशित महापंडित राहुल सांकृत्यायन की कृति 'किन्नर देश' में किन्नौर के सांस्कृतिक शब्दों का सुंदर संग्रह है। सन् १९६७ ई० में डॉ० ना० राम सुब्रह्मण्यम् ने 'ए डिस्क्रिप्टिव स्टडी ऑफ किन्नौरी' शोध प्रबन्ध लिखा परन्तु यह अब तक प्रकाशित रूप में देखने में नहीं आया। सन् १९७५ में श्री के. अंगरूप लाहुली ने 'सोमसी' पत्रिका में तथा श्री ठाकुरसेन नेगी ने किन्नौरी बोली के कुछ शब्दों का संग्रह प्रस्तुत किया। सन् १९७६ में प्रकाशित डॉ० बंशी राम शर्मा के शोध प्रबन्ध 'किन्नर लोक साहित्य' के ११वें अध्याय में पृष्ठ ३३६ से ३९७ तक किन्नौर की ९ बोलियों के शब्दों का संग्रह तथा परिचय दिया गया है। डॉ० एस.आर. शर्मा ने स्पिति क्षेत्र की बोलियों पर 'फोनालॉजिकल स्ट्रक्चर ऑफ स्पिति' शीर्षक से सन् १९७६ में शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया परन्तु यह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ। डॉ० देवीदत्त शर्मा ने 'डिस्क्रिप्टिव ग्रामर ऑफ किन्नौरी' (१९८८) में लिखा। यह किन्नौर की बोली की महत्वपूर्ण कृति है। डॉ० डी.डी. शर्मा ने लाहुल की बोलियों चनाली तथा पट्टनी पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। हिमालय क्षेत्र की बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करने की दिशा में डॉ० शर्मा महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। वे हिमालय क्षेत्र की पच्चीस बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत कर रहे है। चिनाली बोली पर उन द्वारा लिखित पुस्तक A dscuriptive grammer and vocabulury of chinali का प्रकाशन अकादमी द्वारा किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक विद्वानों ने प्रदेश के जन-जातीय क्षेत्रों की शब्द-सम्पदा पर कार्य किया है। कुल्लू वोकेबुलरी पर सन् १८७१ ई० में रेव.डब्ल्यू. जे.पी. मारिक्सन द्वारा लिखित शब्द संग्रह अभी प्रकाशित नहीं हुए। यह बात उल्लेखनीय है कि चनाली संस्कृत का ही वर्तमान प्रचलित रूप मानी जा सकती है।

स्वर्गीय लाल चन्द प्रार्थी ने अपनी कृति 'कुल्लूत देश की कहानी' के परिशिष्ट में मूल संस्कृत तथा कुल्लू क्षेत्र में प्रचलित शब्दों की १० पृष्ठों की सूची दी है। श्री मौलूराम ठाकुर ने सन् १९७५ में 'पहाड़ी भाषा—कुल्लूई के विशेष संदर्भ में' लिखी। इस ग्रन्थ में कुल्लूई के अनेक महत्वपूर्ण शब्द दिए हैं। डॉ० ईश्वरी दत्त शर्मा ने 'बघाटी बोली का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन' (१९७९) में बघाटी के अनेक शब्दों का विवेचन प्रस्तुत किया है। शब्दकोशों की परम्परा में विदेशी विद्वानों में 'हिमाचली स्टडीज' (कोपन हैगन-१९७६) के लेखक डॉ० हंस हैण्ड्रिक्सन का नाम उल्लेखनीय है। डॉ० कांशी राम आत्रेय के शोध प्रबन्ध 'मण्डियाली लोक साहित्य', डॉ० जगतपाल शर्मा के शोध प्रबन्ध, 'मण्डियाली भाषा का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन, में मण्डियाली उपभाषा के शब्द-भण्डार का उल्लेख हुआ है। डॉ० मुरारीलाल शर्मा द्वारा प्रस्तुत 'मण्डियाली बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन' शब्द संग्रह की दशा में महत्व-पूर्ण कार्य है। श्री अमरसिंह रणपतिया का गादी उप भाषा के क्षेत्र में किया गया कार्य उल्लेखनीय है। यह भाषा एवम् संस्कृति विभाग, हि०प्र० द्वारा 'गादी-हिन्दी प्रयोगात्मक शब्दावली' नाम से छपा। हिमभारती, हिमधारा, सोमसी तथा अनेक पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित लेख पहाड़ी भाषा की शब्द-सम्पदा के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी देते हैं। प्रो० नारायण चन्द पराशर द्वारा 'धम्म पद' के पहाड़ी अनुवाद (१९८३) के अन्त में प्रस्तुत पहाड़ी पालि तथा संस्कृत व हिन्दी शब्दों की तुलनात्मक सूची पहाड़ी भाषा की शब्द-सम्पदा के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण स्रोत-संकेत देती है।

सन् १९१० ई० में लाहौर से प्रकाशित चम्बा स्टेट गैजेटियर में डॉ० जे.पी.एच. फोगल ने 'चम्बयाली वोकेबुलरी ड्रान फ्रॉम लिटल डीड्ज़ ऑफ द सिक्सटीन्थ एण्ड सैवेनटीन्थ सैन्चुरी' में राज-काज तथा दान-सम्बन्धी शब्द संगृहीत हैं। विभिन्न अवसरों पर प्रकाशित ज़िला गैज़ेटियर तथा १९६१ तक उससे पूर्व प्रकाशित जनगणना सम्बन्धी रिपोर्ट में भी इस क्षेत्र की उपभाषाओं के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

हिमाचली (पहाड़ी) की विकास यात्रा का इतिहास पर्याप्त प्राचीन है। चम्बा के राजा वैरासी वर्मन द्वारा सन् १३३० ई० में गैरोली के ब्राह्मण को भूमिदान के समय दिया गया ताम्रपत्र इस भाषा का प्राचीनतम लिखित

अभिलेखा माना जा सकता है। इससे पूर्व नाथों व सिद्धों की वाणियों में पहाड़ी भाषा के अनेक पद मौखिक तथा पाण्डुलिपियों के रूप में उपलब्ध होते हैं। नौ नाथों में प्रसिद्ध चर्पट नाथ, जिन्होंने ब्रह्मपुर (भरमौर) क्षेत्र में जन्म लिया था, के अनेक पद पहाड़ी भाषा में अलिखित रूप से लोक में प्रचलित है। आरम्भिक काल में विभिन्न ठकुराइयों तथा रियासतों में पहाड़ी बोलियों का प्रचलन टाकरी लिपि में होता रहा और आश्चर्य नहीं होना चाहिए यदि पनघट पर लगाए जाने वाले प्रस्तर अभिलेखों जिन्हें 'पनिहार' कहा जाता है, के माध्यम से पहाड़ी का प्राचीनतम लिखित रूप सामने आए। अपने ग्रन्थ एंटिक्विटीज़ ऑफ चम्बा में हचिसन तथा फोगल ने १३० प्राचीन शिला लेखों का उल्लेख किया है। इनमें से अधिकांश पहाड़ी बोलियों के इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। जिस प्रकार अपभ्रंश में जनजीवन की साधारण घटनाओं तथा समाजोपयोगी विषयों पर साहित्य रचना होती रही और विभिन्न प्रकार की गीतियां लिखी गई उसी प्रकार अनेक स्वतन्त्र गीतियों की रचना पहाड़ी भाषा की विभिन्न उपभाषाओं में भी हुई। इनमें अनेक पाण्डुलिपियों के रूप में भी सुरक्षित मिलती हैं। परन्तु 'गूगागीत' 'बूढ़ी दीवाली' के अवसर पर गाई जाने वाली गाथी 'काब', देवताओं की 'भारनिया' तथा 'भारथाएं', 'बरलाज गीत' देवी की भेटें, 'घुरेही', 'ऐंचलियां', लोक गाथाएं, 'पण्डवायण', ढोलरु तथा रमैणी और लोक नाट्यों के अनेक रूप, यथा बांठड़ा, करयाला, भगत, रास, स्वांग आदि अब भी लोक में प्रचलित हैं। इन गीतियों में लोक शैली के विभिन्न प्रयोग किए गए हैं। यही नहीं, विभिन्न लोक देवी-देवताओं के मन्त्रों, पूजाविधानों की रचना भी प्राचीन बोलियों में उपलब्ध होती है। 'बूढ़ी दीवाली' तथा अन्य उत्सवों पर समाज के कुछ वर्गों द्वारा निश्चित गाए जाने वाले अश्लील गीत भी इस भाषा के विकास को किसी न किसी रूप में दर्शाते हैं। इस प्रकार के गीतों को 'संगरी' 'बांहडरु' तथा 'डंडरु' कहा जाता है। कुल्लू क्षेत्र में लोहड़ी का त्यौहार सात दिन मनाया जाता है। इस अवसर पर गाए जाने वाले अश्लील गीतों को 'जीहरु' कहा जाता है। ये भी प्रागैतिहासिक काल से प्रचलित लोकगीत हैं।

लोक काव्य में वार्णिक तथा मात्रिक छन्दों के प्रयोग भी किए गए हैं। अभी तक यद्यपि लोक छन्दों का अध्ययन-अनुसन्धान व्यवस्थित रूप से नहीं हो सका है परन्तु यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस प्रदेश की लोक भाषा में वैदिक और लौकिक संस्कृत में प्रयुक्त छन्द विधान ही उपलब्ध नहीं है, बल्कि अपभ्रंश और किराती भाषाओं के छन्द व अलंकार आश्चर्यजनक रूप से सुरक्षित हैं। हिमाचल प्रदेश में प्राचीन काल से नाग, असुर, खश, गन्धर्व, कुणिन्द, किन्नर, किरात आदि जनजातियां निवास करती रही हैं। इनकी संस्कृति तथा भाषाओं के अवशेष वर्तमान संस्कृति की विविध भंगिमाएं हैं। यह स्वाभाविक है कि एकाधिक वर्गों की भाषाओं के शब्द कालान्तर में पहाड़ी बोलियों के रूप में विकसित हुए। पहाड़ी भाषाओं की विभिन्न बोलियों के शब्दों के तुलनात्मक अध्ययन से सांस्कृतिक धरोहर का अनुमान भी लगाया जा सकता है। एक ही प्रकार से बोले तथा लिखे जाने वाले शब्दों के अर्थों में यत्र-तत्र जनपदीय भिन्नता का मुख्य कारण क्षेत्रीय सांस्कृतिक इतिहास से जोड़ा जाना चाहिए। लोक गीतों के प्रणेता कई स्वनामधन्य कवियों ने अपने नाम को भी बताना उचित नहीं समझा परन्तु इससे उनका योगदान किसी प्रकार भी कम नहीं हो जाता। यद्यपि स्थानीय बोलियों में शब्द सम्पदा लिखित रूप लेने वाली भाषा से किसी प्रकार कम नहीं होती परन्तु साहित्य सृजन न होने से उपभाषाओं का शब्द-भण्डार अक्षुण्ण नहीं रह पाता और उनके स्वरूप निर्धारण की प्रक्रिया अपेक्षाकृत मन्द पड़ जाती है।

इसके अतिरिक्त अनेक लिखित गीतियों व अन्य पाण्डुलिपियों में पहाड़ी भाषा के सन्दर्भ अंकित हैं। यही नहीं, हिमाचल के पर्वतीय क्षेत्रों में ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दियों में आए हुए बौद्ध भिक्षुओं ने भोटी भाषा में यत्र-तत्र स्थानीय बोलियों के सन्दर्भ अंकित किए हैं। एक सिद्ध लामा गद्दत शड़ंपा ने नगरकोट क्षेत्र की वर्ष ११८९-१२५८ ई० में यात्रा की और वह ज्वालामुखी क्षेत्र में एक बौद्धभिक्षुणी द्वारा स्थानीय बोली में इस प्रकार सम्बोधित किया गया—'एत्थी बेश, एत्थी डाक्या'। इसका अर्थ है कि 'यहां बैठिए/रुकिए, यहां डाइने हैं'। इस आशय का उल्लेख उन्होंने अपने तिब्बती भाषा में लिखित ग्रन्थ ग्यल-बा गट्टत शड पई नमथर जुग्स के ७० वें पृष्ठ पर किया है। आश्चर्य है कि यह वाक्य अब भी इसी प्रकार कहा जाएगा।

पहाड़ी (हिमाचली) भाषा का साहित्यिक विकास स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् तीव्र गति से होना आरम्भ हुआ परन्तु सन् १९३१ ई० की जनगणना रिपोर्ट में लिखा गया है कि मण्डियाली बोली में उस समय भी दो पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं। पर्वतीय रियासतों में से अधिकांश में टाकरी तथा देवनागरी लिपियों में स्थानीय उपभाषाओं का प्रयोग राजकाज तथा आपसी लेनदेन व लोक साहित्य में होता रहा है। प्रथम नवम्बर, १९६६ ई० को पंजाब के कुछ क्षेत्र भाषायी तथा सांस्कृतिक एकता के दृष्टिगत पर्वतीय राज्य हिमाचल प्रदेश के साथ मिलाए गए। इससे प्रदेश का भाषायी एवम् सांस्कृतिक स्वरूप सामने आया। वर्ष १९६८ में राज्य भाषा संस्थान की स्थापना से पहाड़ी भाषा सम्बन्धी गतिविधियों को बल मिला और ३० सितम्बर, १९७० ई० में हिमाचल प्रदेश विधानसभा ने प्रदेश में कला, संस्कृति और भाषा के विकास के लिए एक अकादमी के गठन का प्रस्ताव पारित किया जिसके फलस्वरूप २ अक्तूबर, १९७२ को हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी की स्थापना की गई। सन् १९७३ ई० में भाषा एवं संस्कृति विभाग की स्थापना से भी पहाड़ी भाषा व साहित्य सम्बन्धी गतिविधियों के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। साहित्यिक विकास की यह गति आबाध रूप से आगे बढ़ रही है और पहाड़ी भाषा की उपभाषाओं में सैंकड़ों ग्रन्थ प्रकाश में आ चुके हैं।

पहाड़ी शब्दकोश के निर्माण की घोषणा तत्कालीन मुख्यमन्त्री तथा प्रख्यात चिन्तक और पहाड़ी भाषा तथा संस्कृति के समर्पित मनीषी स्व० डॉ० यशवन्त सिंह परमार ने १५ अप्रैल, १९६९ ई० में हिमाचल दिवस के अवसर पर की थी परन्तु यह कार्य उसके पश्चात् अनेक वर्षों तक विधिवत् रूप से आरम्भ नहीं हो सका। इसका श्रीगणेश दिनांक २५ अगस्त, १९८६ को अकादमी की सामान्य परिषद् की बैठक में लिए गए निर्णय से ही हुआ।

प्रस्तुत शब्दकोश में उपभाषाओं की अपेक्षा जनपदों (ज़िला) का नाम दिया गया है। इसका कारण सम्बन्धित ज़िला में प्रचलित बोलियों में समानता तथा प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियां है। बोलियों का नामकरण तो सम्भव है परन्तु उनके प्रचलन क्षेत्रों का सही निर्धारण किया जाना कठिन कार्य है क्योंकि किसी बोली का प्रभाव क्षेत्र किसी गांव अथवा उपभाग विशेष तक ही सम्बद्ध रखना वैज्ञानिक नहीं होगा। इस कमी को पूरा करने के लिए कार्यकारी परिषद् ने निर्णय लिया कि जो शब्द-चार ज़िलों से अधिक में प्रचलित हैं उसे पहाड़ी भाषा का मानकीकृत शब्द मानकर उसके आगे जिला का नाम न दिखाया जाए। इस निर्णय से पहाड़ी भाषा के लगभग दस हज़ार शब्द मानकीकृत हुए और यह पता चला कि वे प्रदेश की सभी बोलियों में उपलब्ध हैं। यद्यपि इस प्रकार के शब्दों की संख्या बहुत अधिक है परन्तु सम्पादक मण्डल ने यह आवश्यक समझा कि जो शब्द अर्थ में समान भी हों किन्तु उनमें यदि उच्चारण-भिन्नता है तो उनकी प्रविष्टि अलग रखी जाए।

भारतीय भाषा संस्थान मैसूर के भाषाविद् डॉ० आर.ए. सिंह के सुझाव पर भारतीय भाषा परिवार तथा तिब्बती-वर्मी भाषा परिवार के शब्दों को दो खण्डों में रखा गया है तिब्बती-वर्मी के शब्दों को परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित किया गया है। किन्नौर और लाहुल स्पिति ज़िलों में प्रचलित बोलियों में स्त्रिलिंग और पुलिंग का प्रयोग नहीं होता है अत: इसके स्थान पर संज्ञा (सं०) का प्रयोग किया गया है। ग्रन्थ के विस्तारभय से मुहावरों और लोकोक्तियों को छोड़ दिया गया है परिवर्धित संस्करण में इन्हें अवश्य जोड़ा जा सकेगा।

प्रस्तुत ग्रन्थ के लिए सामग्री-संकलन भाषायी एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षकों , ज़िला भाषाधिकारियों तथा अन्य विद्वानों द्वारा किया गया है। भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा शब्दकोष तैयार करने के लिए एक योजना का सूत्रपात किया गया था। उसके लिए शब्द-संग्रह भी हुआ परन्तु मुद्रण सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण इसे पुस्तक रूप में प्रकाशित न किया जा सका। यह सामग्री प्रस्तुत शब्दकोश के लिए पुन: सम्पादित की गई। विभाग द्वारा पूर्व प्रकाशित 'गादी-हिन्दी प्रयोगात्मक शब्दवली' से गादी बोली के कुछ शब्दों को भी संचित शब्द-निधि में सम्मिलित किया है। अकादमी के प्रथम अध्यक्ष तथा भाषा,संस्कृति मन्त्री हिमाचल प्रदेश, स्व० लाल चन्द प्रार्थी

पहाड़ी उपभाषाओं का शब्दकोश बनाने के लिए बहुत उत्सुक थे और उन्होंने निजी स्तर पर लगभग पांच हज़ार शब्दों का संग्रह किया था। उनके जीवनकाल में यह ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हो पाया परन्तु उनके सुपुत्र श्री किरण प्रार्थी ने उनके हस्तलेख इस कार्यालय को उपलब्ध करवाए और यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि वे बहुत ही निष्ठापूर्वक अपने उद्देश्य में अग्रसर हो रहे थे। उनके द्वारा संकलित शब्दों को यथासम्भव इस ग्रन्थ में सम्मिलित किया गया है। परन्तु अभी कुछ ऐसे शब्द उनके हस्तलेखों में उपलब्ध हैं जिनका अर्थ स्पष्ट न होने के कारण उन्हें यहां स्थान नहीं दिया जा सका। इन्हें शब्दकोश के परिवर्धित संस्करण में अर्थ सहित सम्मिलित किया जाएगा। श्री सुनील कुनिहारवी के 'हिम माला' नामक हस्तलेख में संकलित शब्दों को भी यहाँ जोड़ लिया गया है। श्री कुनिहारवी अपने स्तर पर एक हिन्दी पहाड़ी शब्दकोश का प्रणयन कर रहे थे परन्तु बाद में उन्होंने संकलित शब्द सूची अकादमी को उपलब्ध करवा कर इस कार्य में योगदान दिया।

पहाड़ी भाषा व साहित्य का संरक्षण करने तथा उसे विकसित करने में स्व० पहाड़ी गान्धी बाबा कांशी राम, स्व० रूप सिंह फूल, श्री शबीर कुरैशी, स्व० गणेश सिंह बेदी, श्री हरिचन्द पराशर हिमाचल पहाड़ी साहित्य सभा, श्रीमती स्वर्णलता पराशर, (सम्पादक हिमधारा), श्री धनीराम चौधरी, आई.ए.एस., श्री हरनाम दास, श्री दिले राम धीमान, स्व० एम.एस. रणधावा, प्रि० रल्ला राम, देवराज दिनेश, श्री टी.ऐस. नेगी, ठाकुर राम लाल, भूतपूर्व मुख्य मन्त्री हिमाचल प्रदेश तथा अन्य अनेक बुद्धिजीवियों के नाम इस सूची में सम्मिलित किए जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त शब्दकोश के लिए जिन संग्राहकों ने सामग्री उपलब्ध करवाई उनके नाम इस प्रकार है : ज़िला शिमला से सर्वश्री गरोशदत्त, हरिराम, मोहनलाल, वीरेन्द्र शर्मा, प्रमोद कुमार, काहनसिंह जमाल, बुलाराम चौहान, ध्यान सिंह भागटा, कुमारी मीरा शर्मा, श्रीमती बिमला मेहता, कुमारी लोमादेवी तथा कुमारी संयोगिता, ज़िला कांगड़ा से अश्विनी गर्ग, डी.सी. चम्बयाल, डॉ० प्रत्यूष गुलेरी, पृथुराम शास्त्री, शेष अवस्थी, श्रीमती सुदर्शन डोगरा, कुमारी सविता सूद तथा कुमारी स्वर्णकान्ता ज़िला सोलन से प्रो० नरेन्द्र अरुण, सुरेन्द्र ठाकुर, शंकर लाल शर्मा, अजय शर्मा, डॉ० ईश्वरीदत्त शर्मा तथा कुमारी कांता भारद्वाज, ज़िला चम्बा से हरिप्रसाद सुमन, कुमारी मनीषा, अमर सिंह रणपतिया, धर्मचन्द कौशल, पुरुषोत्तम कुमार, कुलभूषण उपमन्यु, कर्मसिंह, खेमराज गुप्त, ज़िला हमीरपुर से बी.आर. मुसाफिर, रामनाथ शर्मा, विप्पिन शर्मा, डॉ० प्रेमप्रकाश, शुकदेव शर्मा, ज़िला कुल्लू से पूर्ण सिंह, रामकृष्ण शर्मा, शरभानन्द 'श्रवण' खीमीराम वर्मा तथा श्रीमती तारा नेगी, ज़िला बिलासपुर से नरोत्तमदत्त शास्त्री, रूपलाल पठानिया डॉ० श्रीराम शर्मा, आनन्द बिहारी लाल शर्मा, रूपलाल शर्मा, डॉ० अमिता शर्मा, ज़िला मण्डी से कृष्णचन्द महादेविया, केशवचन्द्र, दर्शन त्रिपाठी, प्रकाशचन्द्र धीमान, ज़िला ऊना से श्रीमती श्यामा शर्मा, डॉ० श्याम लाल डोगरा, हरिसिंह कुंवर, ओम प्रकाश शान्त, सुखदेव शर्मा, ज़िला लाहुल-स्पिति से डॉ० डी.डी. शर्मा, कुमारी श्यामा ठाकुर, बलराम, सोहन लाल किन्नौर से अमरसिंह नेगी, हरीपाल नेगी, प्रवीणसिंह मनकोटिया तथा कुमारी हिमालय नेगी और ज़िला सिरमौर से विद्यानन्द सरैक, बेलीराम शर्मा, रमेश कटोच, डॉ० खुशी राम गौतम, जियालाल शास्त्री, मनसाराम शर्मा, यज्ञदत्त शर्मा, मेलाराम, प्रेमदत्त शर्मा तथा भगतराम आदि।

प्रो० डॉ० एल.एम. खूबचन्दानी, फैलो, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला ने इस ग्रन्थ के कुछ अंश देखकर मूल्यवान सुझाव दिए और इस प्रयास के सांस्कृतिक तथा भाषागत महत्व को सराहा। श्री सागर चन्द नैय्यर माननीय शिक्षा मन्त्री, हि०प्र० ने पहाड़ी-हिन्दी शब्दकोश की महत्वाकांक्षी योजना के संचालन में गहरी रुचि ली। श्री महाराज कृष्णकाव वित्तायुक्त(वित्त)एवं सचिव (भाषा, संस्कृति) हि०प्र० के मार्गदर्शन में श्री श्रीनिवास जोशी उपसचिव (भा०,सं०) हि०प्र० ने इस योजना को क्रियान्वित करते हुए इस प्रदेश की भाषायी एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के महत्वपूर्ण कार्य को गतिशीलता प्रदान की। श्री सी.आर.बी. 'ललित' निदेशक (भा. सं०) हि०प्र० ने प्रस्तुत ग्रन्थ को वर्तमान स्वरूप प्रदान करने में क्रियात्मक सहयोग प्रदान किया। एतदर्थ हम सबका हार्दिक आभार अभिव्यक्त करते हैं।

शब्दकोश के निर्माण में प्रदेश तथा प्रदेश के बाहर जिन अनेक विद्वानों का अकादमी द्वारा आयोजित गोष्ठियों, विचार चर्चाओं तथा पत्रों के माध्यम से मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त होता रहा उन सबके प्रति हम कृतज्ञता प्रकट करते हैं। शब्दकोश के कार्यकारी सम्पादक डॉ० श्याम लाल डोगरा और श्री एम.आर. ठाकुर का हम हार्दिक धन्यवाद करते हैं जिन्होंने न केवल अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया अपितु समय-समय पर अपने मूल्यवान सुझावों द्वारा भी हमें अनुगृहीत किया। शब्दकोश सलाहकार समिति के सदस्यों ने जिस कार्यकुशलता से अपना दायित्व निभाया है उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना हम अपना पुनीत कर्त्तव्य समझते हैं।

शब्दकोश निर्माण का हमारा यह सर्वप्रथम प्रयास है अत: इसमें कमियां रह जाना स्वाभाविक है परन्तु हमारा विश्वास है कि इसके लिए हमें अनुसंधित्सुओं, विद्वानों, समालोचकों व सुधी पाठकों का सक्रिय सहयोग इसके परिवर्धित संस्करण को अत्युत्तम बनाने के लिए हमारा मार्ग प्रशस्त करेगा।

(डॉ०) बंशीराम शर्मा
सचिव, अकादमी

# सम्पादक मण्डल

अध्यक्ष

**प्रो. नारायण चन्द पराशर**, संसद सदस्य
तथा अध्यक्ष सरकारी आश्वासन समिति (लोकसभा)
उपाध्यक्ष अकादमी एवम् सभापति कार्यकारी परिषद, अकादमी

**प्रधान सम्पादक**
**डॉ० बंशीराम शर्मा**
सचिव, अकादमी

**कार्यकारी सम्पादक**
**डॉ० श्याम लाल डोगरा**
**श्री एम. आर. ठाकुर**

**सम्पादन सहयोग**

**श्रीमती सरोज सांख्यायन**
तकनीकी अधिकारी

**डॉ० कर्म सिंह**
तकनीकी सहायक (प्रकाशन)

**कुमारी श्यामा ठाकुर**
तकनीकी सहायक (शब्दकोश)

**श्रीमती सूनृता गौतम**
तकनीकी सहायक (शब्दकोश)

**श्रीमती गिरिजा शर्मा**
तकनीकी सहायक (संस्कृत)

# पहाड़ी-हिन्दी शब्दकोश सलाहकार समिति

| | |
|---|---|
| ऊना | श्री अश्विनी कुमार गर्ग |
| कांगड़ा | डॉ. श्याम लाल डोगरा |
| किन्नौर | श्री हीराज़ोर नेगी |
| कुल्लू | श्री एम.आर. ठाकुर |
| चम्बा | श्री खेमराज गुप्त<br>श्री बी.एल. पुरी |
| बिलासपुर | श्री शान्तिस्वरूप गौतम |
| मण्डी | डॉ. नीलमणि उपाध्याय |
| लाहुल-स्पिति | श्री बलराम<br>श्री के. अंगरूपी लाहुली |
| शिमला | श्री सी.आर.बी. ललित<br>आचार्य दिवाकरदत्त शर्मा<br>डॉ. हरिराम जुसटा<br>श्री ध्यान सिंह भागटा<br>श्री काहन सिंह जमाल |
| सिरमौर | श्री विद्यानन्द सरैक |
| सोलन | डॉ. ईश्वरीदत्त शर्मा |
| हमीरपुर | डॉ. श्याम लाल डोगरा<br>श्री बालक राम भारद्वाज<br>श्री धनीराम |

# संकेत सूची

| | |
|---|---|
| अ० | अव्यय |
| अ० क्रि० | अर्कमक क्रिया |
| उप० | उपसर्ग |
| क्रि० | क्रिया |
| दे० | देखिये |
| पु० | पुंल्लिङ्ग |
| वि० | विशेषण |
| सं० | संज्ञा |
| स० क्रि० | सकर्मक क्रिया |
| सर्व० | सर्वनाम |
| स्त्री० | स्त्रीलिङ्ग |
| ऊ० | ऊना |
| कां० | कांगड़ा |
| कु० | कुल्लू |
| चं० | चम्बा |
| बि० | बिलासपुर |
| मं० | मण्डी |
| ला० | लाहुल-स्पिति |
| शि० | शिमला |
| सि० | सिरमौर |
| सो० | सोलन |
| ह० | हमीरपुर |
| * | ग्राम्यशब्द |
| ( ) | वाक्य में आये पहाड़ी शब्द का हिन्दी अर्थ |
| ' ' | वाक्य में प्रयुक्त पहाड़ी शब्द |
| " " | वाक्य में प्रयुक्त विशेष शब्द जैसे—"यह लो" भावाभिव्यक्ति का आश्चर्यबोधक शब्द |
| | खाणा/णो |

## अ

अ—वर्णमाला का प्रथम अक्षर, स्वरवर्ण। कंठ्य उच्चारण, अ० "हां" के अर्थ में स्वीकृति बोधक शब्द। प्रायः उपसर्ग के रूप में भी प्रयुक्त होता है और उलटा, रहित, हीन या निषेध का भाव व्यक्त करता है—यथा 'अजोग' (अयोग्य), 'अजाण' (अनजान)।
अं—अ० हां; हां जी आदि अर्थ में स्वीकृति बोधक शब्द।
अं—सर्व० (शि०, सि०) मैं। वस्तुतः शीघ्रता में बोलते समय 'हांऊं' का संक्षिप्त रूप।
अं—अ० (सि०, सो०) और, अन्य; दो शब्द या वाक्यों को जोड़ने वाला शब्द।
अंअं—अ० (कु०) "ऐसा नहीं" अर्थ का द्योतक निषेधार्थक अव्यय शब्द।
अंईशा—वि० आंशिक, थोड़ा, कुछ।
अंउआ—वि० (शि०) अधपका तरल पदार्थ, कच्चा।
अंऊं—सर्व० (शि०) मैं, दे० हांऊं।
अंऊदा—पु० (बि०) चूल्हे के दायें, बायें या पीछे के खोखले भाग जिन में से आग निकलती रहती है और चूल्हे का काम लिया जाता है।
अंएं—सर्व० (चं०) मैंने। 'अंएं जोए' (मेरे लिए) 'अंएं बखाला' (मुझसे)।
अंक—पु० संख्या, चिह्न, गिनती।
अंकड़ा—पु० (सि०) अंकुश, पाश, फंदा, लोहे की मुड़ी हुई छड़।
अंकड़ेयाव—पु० (मं०) अकड़ाव, ऐंठन, मरोड़।
अंकर—पु० (चं०) अंकुर, कली।
अंकरा—वि० (सि०) पारदर्शी।
अंकार—पु० (शि०) अहंकार।
अंकाळ—पु० (चं०) अकाल, दुर्भिक्ष।
अंकूर—पु० (कां, मं०) अंकुर। भाग्य।
अंकूरना—अ० क्रि० (कां०, मं०) अंकुर उगना, नये पत्ते व फूल आना।
अंग—पु० शरीर का भाग। अंश। प्रकार। प्रतीक।
अंगठ—पु० (चं०) अंगूठा, अंगुष्ठ।
अंगण—पु० आंगन।
अंगणदुआर—पु० आंगन द्वार।
अंगणबणो—स० क्रि० (शि०) अंकुर फूटने से पहले मिट्टी की परत को तोड़ना जिससे अंकुर जल्दी निकले।
अंगणबाड़ी—स्त्री० आंगनबाड़ी, बाल पाठशाला।
अंगणबाहर—पु० घर के आंगन तथा बाहर का भाग।
अंगत—पु० अंगद, बालि का पुत्र।
अंगद—पु० (कां०) विशेष प्रकार का बाजूबंद।
अंगदुआर—पु० अंगद्वार, शरीर के वायुछिद्र, मुख, नेत्र, कान आदि।
अंगदुआरी—स्त्री० द्वार के आस-पास की गई विशेष चित्रकारी।
अंगन्यास—पु० मंत्रपाठ द्वारा अंगस्पर्श।
अंगभंग—पु० अंग का मोड़, ऐंठन।
अंगरखा—पु० अंगरक्षक, कवच, कमर तक की लंबाई का विशेष प्रकार का कुर्ता।
अंगरखी—स्त्री० (चं०) चोली।
अंगरच्छक—पु० अंगरक्षक।
अंगरच्छया—स्त्री० अंगरक्षा।
अंगरना—अ० क्रि० (शि०) कोपल फूटना।
अंगरास्सड़—पु० अंगार, अंगारों का समूह, धधकते अंगारे।
अंगरेज—पु० इंग्लैंड देशवासी।
अंगरेजी—वि० अंग्रेज से संबंधित। स्त्री० अंग्रेजों की भाषा, 'इंग्लिश'।
अंगरेयास्सड़—पु० (कां०) दे० अंगरास्सड़।
अंगरौड़—पु० (बि०) दे० अंगरास्सड़।
अंगळी—स्त्री० (चं०) अंगुली।
अंगशू—पु० (शि०) अंकुश; घास-पत्ते एकत्रित करने के लिए दो या अधिक अग्रभाग वाला लकड़ी का उपकरण।
अंगस—स्त्री० (कां०) दुःख प्रकट करने का भाव, संवेदना।
अंगा—स्त्री० (कां०) दे० अंगरखी।
अंगा—पु० (मं०, कां०) दे० अंगण।
अंगाकणा—स० क्रि० अंग लगाना, गले लगाना।
अंगाखड़—पु० (कां०) दे० अंगरास्सड़।
अंगाड़—पु० (शि०) अंगार, कोयला।
अंगार—पु० जलता काष्ठखंड, कोयला।
अंगारी—स्त्री० (कां०) चिनगारी। अंगुलि की व्याधि।
अंगारू—पु० (कां०) जलता हुआ छोटा कोयला।
अंगिया—स्त्री० चोली।
अंगी—वि० (मं०) देहयुक्त। विशिष्ट, प्रधान।
अंगी—वि० अलग, जुदा, दूर।
अंगीकार—वि० (चं०) हितैषी।
अंगीकार—पु० (कां०) स्वीकार, ग्रहण।
अंगीसंगी—पु० साथी, संबंधी।
अंगुआ—पु० (मं०) ऊनी चोला।
अंगुळ—स्त्री० अंगुलि।
अंगुळटुक—पु० (कां०) पैर की अंगुलि काटने वाला कीड़ा।
अंगू—पु० (कां०) छोटा चोला।
अंगूठड़ा—पु० (चं०) पैर के अंगूठे का चांदी का आभूषण।
अंगूठो—पु० (चं०) अंगूठा।
अंगूर—पु० अंकुर, अंखुआ। द्राक्षा, दाख। घाव की झिल्ली, घाव के ठीक होने की स्थिति।
अंगूरी—स्त्री० अंगूर से बनी सुरा। वि० अंगूर-समान।
अंगेबांगे—वि० (शि०) टेढ़े-मेढ़े।
अंगो—पु० (मं०) बाहों का घेरा, बाहुपाश।
अंगोरा—पु० (मं०, कु०, बि०) खरगोश की एक नस्ल।
अंचला—पु० (कां०) साधु का चोला; पल्ला।
अंचली—स्त्री० (चं०) गादी विवाह गीत।
अंछा—स्त्री० (कु०) खट्टे-मीठे फल जो कांटेदार झाड़ी में लगते हैं।
अंज—अ० (कु०) दूसरों को वस्तु देने के लिए संकेतार्थक शब्द।

**अंजण**—पु० अंजन, काजल। इंजन।
**अंजणमंजण**—पु० अंजन श्रृंगार।
**अंजणा**—स० क्रि० (मं०) दो या अधिक प्रकार के दाने अलग करना।
**अंजन**—पु० (चं०) दे० अंजण।
**अंजनी**—स्त्री० सुरमादानी।
**अंजमेड़ा**—पु० (कां०) ओझा, विष उतारने वाला।
**अंजल**—पु० (सो०) अन्न और जल।
**अंजळ**—पु० (कां०) अंजलि। आंचल, पल्ला।
**अंजळी**—स्त्री० (चं०) अंजलि।
**अंजवाणा**—स० क्रि० (सि०, शि०) विष उतरवाना।
**अंजा**—स्त्री० (मं०) दे० आंज।
**अंजी**—अ० स्वीकृति अभिव्यक्त करने के लिए प्रयुक्त शब्द, हां जी।
**अंजोड़ा**—पु० विष उतारने वाला, ओझा।
**अंज्वाड़**—पु० (शि०) दे० अंजोड़ा।
**अंझा**—अ० (मं०) अभी, तुरंत, आज ही।
**अंझीर**—पु० (बि०) एक रोग जिसमें गले के आस-पास गिलटियां हो जाती हैं।
**अंझू**—पु० आंसू, अश्रु।
**अंट**—स्त्री० (कु०) आनंद।
**अंटसंट**—पु० ऊटपटांग, असंगत वर्णन।
**अंटी**—पु० (कु०) दे० आंटी।
**अंडकू**—पु० (बि०) छोटी हांडी।
**अंडगळ**—पु० (कां०) ततैया, भिड़।
**अंडला**—वि० (कां०) अंजलिपूर्ण, अंजलभरा।
**अंडा**—पु० (कां०) पिंड, गोल वस्तु; जीव-जंतु का अंडा।
**अंडा/डा**—वि० (कु०) दे एंडा।
**अंडूर**—पु० (चं०) दूर से दिखाई देने वाला बिंदु।
**अंतकारी**—स्त्री० (सि०) श्राद्ध के समय ब्राह्मणों को परोसा गया भोजन या उनका भाग।
**अंतड़ी**—स्त्री० (कां०) अंत्र, आंत।
**अंतम**—वि० अंतिम, सबसे पिछला।
**अंतर**—पु० (कां०) भेद, अलगाव; दूरी।
**अंतरधान**—पु० अंतर्धान, समाधिमग्न अवस्था।
**अंतरमो**—वि० (चं०) अंतरिम, मध्यवर्ती।
**अंतरा**—अ० (कां०) मध्य, गीत की टेक, बीच में।
**अंतराळ**—पु० (कां०, बि०) अंतराल, घेरा, मध्यभाग।
**अंतर्दसा**—स्त्री० (कां०) अंतर्दशा।
**अंतर्देस्सी**—वि० (कां०) अंतर्देशीय।
**अंतसमा**—पु० अंतिम समय।
**अंतुआळी**—वि० (मं०, बि०) उनतालीस।
**अंतेस्ठी**—स्त्री० अंत्येष्टि, दाह संस्कार।
**अंदकछ**—पु० (कां०) खेत का किनारा जहां हल नहीं चलता है।
**अंदरगुदुदू**—वि० (चं०) मन में बात छुपाने या रखने वाला।
**अंदरथ**—पु० (मं०) गर्म सिले वस्त्र का भीतरी कपड़ा।
**अंदरना**—अ० क्रि० (सि०) मनुष्य में देवता या अन्य आत्मा का प्रवेश होना; देवता के प्रवेश से शरीर में कंपन होना।
**अंदरबाती**—अ० (चं०) भीतर, अंदर।
**अंदरमाण**—पु० (कु०, चं०) भीतर का भाग; कमरे या मकान आदि की अंदर की लंबाई-चौड़ाई।
**अंदरला**—वि० (कां०, मं०) भीतरी, आभ्यंतरिक, अंदर का।
**अंदरस**—पु० कोट आदि का भीतरी कपड़ा।
**अंदराओ**—पु० (सि०) घर के अंदर का भाग।
**अंदराज**—पु० इंदराज, शासन पत्र पर लेख, भूमि-ग्रहण का लेख।
**अंदराड़**—पु० (कां०) घर के समीप की भूमि या खेत, सांझा आंगन; अंतराल; खुला हुआ जोड़, किसी वस्तु के बीच से फट जाने या खुल जाने से बना खाली स्थान, दरार।
**अंदराळ**—पु० (चं०) फसल काटने के पश्चात् पशुओं को चराने के लिए रखा खेत, चरागाह।
**अंदराळा**—वि० दे० अंदरला।
**अंदरास**—स्त्री० (चं०) पशु की आंत।
**अंदरीहण**—पु० (चं०) दे० अंदराओ।
**अंदरीहणा**—अ० क्रि० (चं०) घर अथवा नीड़ में प्रवेश करना।
**अंदरेऊ**—वि० (चं०) घर के भीतर काम करने वाला।
**अंदरेड़ण**—पु० (चं०) वधू प्रवेश। इसका प्रयोग विशेषतया उस स्थिति में होता है जब विवाह कर लाई वधू ऐसे समय पर पहुंचे जब गृह प्रवेश के लिए मुहूर्त न हो। तब उसे किसी के घर ठहराया जाता है और निर्धारित समय पर 'अंदरेड़ण' करवाया जाता है।
**अंदरेर**—पु० वधू प्रवेश।
**अंदरेरना**—स० क्रि० घर में प्रवेश कराना।
**अंदरेरनो**—स० क्रि० (चं०) गीला करना।
**अंदरेळ**—पु० (कां०) दे० अंदरेड़ण।
**अंदरेळ**—पु० (सि०) हल चलाते समय एक बैल का दूसरे को उसकी ओर धकेलने अथवा धक्का मारने की क्रिया जबकि दूसरा सीधा चल रहा हो।
**अंदरेळणा**—स० क्रि० दे० अंदरेरना।
**अंदरेळणा**—स० क्रि० (सि०) एक बैल द्वारा दूसरे बैल को बरबस धकेलना।
**अंदरेस**—पु० (कां०) दे० अंदरेर।
**अंदरोक्खा**—वि० (कां०) आभ्यंतरिक, अंदर वाला।
**अंदरोट्ठी**—स्त्री० अंदर की कोठरी।
**अंदरोट्टू**—पु० अंदर की छोटी कोठरी।
**अंदरोठ**—पु० (कां०) दे० अंदरोट्ठी।
**अंदरोण**—पु० (कां०) दे० अंदरेर।
**अंदरोणा**—स० क्रि० (कां०) गृह प्रवेश कराना।
**अंदरोळ**—पु० (कां०) अंतःपुर।
**अंदरोळ**—पु० (बि०) परदे वाला स्थान, रनिवास।
**अंदरोह**—पु० (सि०) आपस का बैर, शत्रुता।
**अंदरोहणा**—अ० क्रि० (चं०) अंदर होना, अंदर जाना।

अंदरोहणा—स० क्रि० (सि०) रात को अंधेरे में साथ देना ताकि व्यक्ति अकेले में डरे नहीं।
अंदल—स्त्री० (सि०) अंजलि, दोनों हाथों में भरा अन्न।
अंदळू—पु० (सि०) किसी वस्तु की इतनी मात्रा जो दोनों हाथों में आ जाए।
अंदवाड़ी/ळी—स्त्री० उतराई।
अंदा—पु० (शि०) चूल्हे का ऊपरी भाग।
अंदाजो—पु० (शि०) अंदाज़ा, अनुमान।
अंदाणू—पु० (शि०) बटेर।
अंदेड़ू—पु० (शि०) चमगादड़।
अंदेरड़न—पु० (चं०) अंदर का भाग।
अंदेर्ख—पु० (सि०) अंधेरा पक्ष, कृष्ण पक्ष।
अंदेसा—पु० (कां०) अंदेशा, संदेह।
अंद्रीणा—अ० क्रि० (चं०) दे० अंदरोहणा।
अंद्रोष—वि० (चं०) भीरु, कायर।
अंघड़—पु० (मं०) प्रबल आंधी।
अंघबसास—पु० (कां०) अंधविश्वास।
अंघमुंह—वि० (कां०) अधोमुख।
अंघेत—स्त्री० (चं०) त्रुटि, दोष।
अंब—सर्व० (चं०) मैं।
अंब—पु० आम का वृक्ष; आम का फल।
अंबकदडून्नी—स्त्री० आम्र-दाड़िम वृक्ष पूजा, विवाह संस्कार में आम और दाड़िम की परिक्रमा।
अंबकदाड़नी—स्त्री० दे० अंबकदडून्नी।
अंबकदाड़म—स्त्री दे०. अंबकदडून्नी।
अंबका—स्त्री० अंबिका देवी।
अंबचूर—पु० अमचूर, आम का चूर्ण।
अंबड़तास—पु० (मं०, कां०) अमलतास।
अंबड़ी—स्त्री० माता, अंबा।
अंबदाड़नी—स्त्री० दे० अंबकदडून्नी।
अंबबाड़ा—पु० (मं०) आमलक, खट्टा फल।
अंबर—पु० आकाश।
अंबर—स्त्री० (शि०) उमर, आयु।
अंबरगोज—पु० (कां०) वृथालाप, व्यर्थ बात।
अंबरसर—पु० अमृतसर।
अंबराणी—स्त्री० (चं०) वर्षा का पानी।
अंबरी—वि० (कां०) वर्षा पर निर्भर भूमि।
अंबल—पु० (मं०, कां०) मद, नशा।
अंबला—वि० अम्ल, खट्टा पदार्थ।
अंबली—वि० नशा करने वाला, व्यसनी।
अंबळी—स्त्री० (मं०) इमली।
अंबा—स्त्री० माता, देवी।
अंबाड़ा—पु० आमलक, खट्टा फल।
अंबार—पु० समूह, भार।
अंबास—स्त्री० (कां०) अमावस्या।
अंबिया—पु० (सो०) आम्रवृक्ष; आम्रफल।
अंबी—स्त्री० छोटा आम्रवृक्ष, लंबा या छोटा आम्रफल।
अंबीर—पु० (कां०) अमीर।
अंबुआ—पु० आम का व्यंजन।
अंबोटा—पु० आम का बाग।
अंबोट्टू—पु० आम का छोटा वृक्ष।
अंभे—अ० (सि०) अभी।
अंया—स्त्री० (कु०) माता।
अंयाफाकुच—स्त्री० (कु०) चाची।
अंशु—पु० (शि०) अश्रु, आंसू।
अंस—पु० अंश, भाग। संतति।
अंसाफ—पु० इंसाफ, न्याय।
अंस्या—पु० (कां०) संतान।
अंहं—अ० स्वीकृति दर्शाने वाला विस्मयबोधक शब्द।
अइ—अ० हाय! पीड़ा, दर्द, दुख, आदि दर्शाने वाला विस्मय-बोधक शब्द।
अउटणो—स० क्रि० (शि०) अधिक घोटना।
अऊं—सर्व० (चं०) मैं।
अऊंड—पु० (शि०) अलाव।
अऊत्तर—पु० (कां०) भूतप्रेत के निवारणार्थ पहना गया यंत्र।
अऊछी—स्त्री० (चं०) अंगुलि।
अएड़—पु० (सि०) भेड़-बकरियों की मेगनी।
अक—पु० अर्क। आक का पौधा।
अक—पु० (चं०) समिधा का माप।
अकचे—वि० (सि०) निद्रालु, अधिक सोने वाला।
अकड़—स्त्री० अकड़, ऐंठ, तनाव। हठ।
अकड़ना—अ० क्रि० हठ करना। ऐंठना।
अकड़बाज़—वि० घमंडी, हठी।
अकड़ाव—पु० (सि०) तनाव, ऐंठन।
अकडू—वि० दे० अकड़बाज़।
अकड़ैल—वि० दे० अकड़बाज़।
अकतोला—वि० एकांगी, अनमेल।
अकत्यार—पु० इख्तियार, अधिकार।
अकपाळिया—वि० दे० अकतोला।
अकरंगा—वि० एक रंगी।
अकरा—वि० तेज।
अकरी—स्त्री० (कां०) छत की दो घरनों का अंतराल।
अकल—स्त्री० अक्ल, बुद्धि।
अकलबंद—वि० बुद्धिमान्।
अकस—पु० प्रतिकृति, परछाई।
अकसर—अ० प्रायः।
अकांत—वि० एकांत। उदास।
अकाग्र—वि० एकाग्र, स्थिर।
अकात—स्त्री० औक़ात, योग्यता, सामर्थ्य।
अकार—पु० आकार।
अकार—पु० (कां०) बेगार के लिए दिया अन्न आदि।
अकार—वि० (चं०) अकेला।
अकाळ—पु० अकाल, दुर्भिक्ष।
अकावणो—अ० क्रि० (शि०) समा जाना।

**अकास**—पु० (कां०) आकाश, आसमान।
**अकेहरा**—वि० इकहरा।
**अकोरा**—वि० (सि०) नया, कोरा, अप्रयुक्त (वस्त्र या बर्तन आदि)।
**अक्क**—पु० अर्क, आक।
**अक्कणा**—अ० क्रि० थक जाना, ऊबना। समाना।
**अक्कर**—वि० (कां०) हल चलाने के लिए कठिन (भूमि)।
**अक्कर**—वि० (चं०) वार्षिक उपहार-दाता, वार्षिक नज़राना देने वाला।
**अक्करा**—वि० (कां०) कच्चा। अड़ियल।
**अक्करी**—वि० (कां०) दे० अक्कर।
**अक्का**—पु० इक्का, घोड़ागाड़ी।
**अक्ख**—स्त्री० (कां०) आंख, अक्षि।
**अक्खड़**—वि० उजड्ड, अड़ियल, हठी।
**अक्खबक्ख**—पु० आस-पास।
**अक्खर**—पु० अक्षर।
**अक्खरी**—स्त्री० अक्षरी, वर्णमाला।
**अक्खे**—स्त्री० एक प्रकार का छोटा फूल।
**अक्खे**—अ० (सि०) यहां।
**अक्खेबक्खे**—अ० दायें-बायें, इधर-उधर।
**अक्वार्थ**—वि० (सि०, शि०) व्यर्थ, बेकार।
**अखंड**—वि० (कां०) अटूट, संपूर्ण।
**अख**—अ० (कु०) "अच्छा हुआ", "ठीक हुआ आदि अर्थ अभिव्यक्त करने वाला शब्द।
**अख**—अ० हठ, गर्वबोधक शब्द।
**अखटी**—स्त्री० दे० आखटी।
**अखण**—पु० (चं०) ओला।
**अखण**—पु० (सि०) छोटा देव-यज्ञ।
**अखनाली**—स्त्री० आंख का रोग, आंख की पलक या किनारे पर निकली गिलटी जो बड़ा कष्ट देती है।
**अखरना**—अ० क्रि० बुरा लगना, खटकना।
**अखरा**—वि० (मं०) अधपागल।
**अखरेन**—पु० (चं०) फल विशेष।
**अखळ**—पु० (चं०) सर्पविष निकालने वाली एक बूटी विशेष।
**अखवा**—पु० (बि०) जादू-टोने के अनुमानार्थ प्रयुक्त अन्नकण। जादू-टोना का पता लगाने के लिए ओझा को दिए जाने वाले अन्न के दाने।
**अखाड़ा**—पु० (कां०) मल्लयुद्ध या व्यायाम का स्थान, मठ, अड्डा।
**अखीरला**—वि० अंतिम।
**अखु**—पु० (कां०) छोटी कोंपल।
**अखुआ**—पु० (बि०, कां०) कोंपल।
**अखूख**—पु० (चं०) आशीर्वाद।
**अखें**—अ० संबोधन। "मैंने कहा" "सुनो" आदि भाव अभिव्यक्त करने वाला शब्द।
**अखेंमखें**—स्त्री० अगर-मगर।
**अखेगत**—वि० (चं०) कठोर।
**अखो**—अ० (चं०) इस वर्ष।
**अखोका**—वि० (चं०) इस वर्ष का।
**अखोड़**—पु० (चं०) अखरोट।
**अगका**—वि० (सि०) स्वाभिमानी। अल्पभाषी।
**अगड़ा**—वि० अगला; अगुआ।
**अगड़ौला**—वि० (कां०) आगे बात करने वाला, बड़बोला, बात करने में तेज।
**अगणबाण**—पु० अग्निबाण।
**अगणि**—स्त्री० (शि०) आग।
**अगपिच्छ**—स्त्री० (कां०) आगापीछा; अगली-पिछली बात।
**अगयाई**—स्त्री० (चं०) अग्नि ताप से हुई पैर की लाली, अधिक आग तापने से पैर पर आए लाल निशान।
**अगयान्हा**—पु० (चं०) अधिक आग का ढेर, अग्नि समूह, अलाव।
**अगर**—पु० (कु०) तीन सूत्र वाला यज्ञोपवीत।
**अगर**—अ० (शि०) आगे।
**अगरीहण**—पु० (चं०) अगवाई।
**अगरेकणा**—स० क्रि० (सि०) साथ चलने वाले को आगे चलाना ताकि वह पिछड़े नहीं।
**अगरोळा**—वि० (कां०) दे० अगड़ौला।
**अगला**—वि० आगामी, आगे वाला; दूसरा।
**अगळा**—पु० (चं०) मेमनों की गोठ, मेड़-बकरियों के बच्चे रखने का साधारण कमरा।
**अगळा**—वि० (कां०, चं०) उत्पाती, शरारती।
**अगळेवर**—पु० (कां०) कटाई का उपकरण, फसल या घास काटने का औज़ार।
**अगवांद**—पु० (कां०, बि०) चूल्हे का अग्रभाग।
**अगहण**—पु० (सि०) अग्रहायण, मार्गशीर्ष मास।
**अगहण**—पु० (चं०) निर्मल आकाश।
**अगांह**—अ० आगे, आगे की ओर।
**अगाई**—स्त्री० अगाड़ी, आगे, अगला भाग; भविष्य।
**अगाड़ी**—अ० (कां०) आगे, सामने।
**अगार**—पु० (कां०) तीन सूत्र वाला यज्ञोपवीत, जनेऊ।
**अगारू**—पु० (चं०) चिनगारी, छोटा अंगारा।
**अगारे**—पु० (शि०) जुगनू।
**अगाळ**—पु० (शि०) भ्रमर, भौंरा।
**अगुआ**—पु० अग्रणी, मुखिया, मार्गदर्शक।
**अगुआई**—स्त्री० अगवानी, मार्गदर्शन।
**अगुआड़ी**—स्त्री० (कां०) घर की वाटिका, घर के सामने की भूमि।
**अगुआन्ना**—पु० अग्रणी, मुखिया, मार्गदर्शक।
**अगुआन्नी**—स्त्री० आगे बढ़कर स्वागत करना, अभ्यर्थना, अगवानी।
**अगुआळ**—पु० (शि०) आगे का भाग।
**अगुणा**—वि० (शि०) गुणहीन, गुणरहित।
**अगुरा**—वि० (चं०) गुरु रहित; बड़ों का मान न करने वाला।
**अगूंह**—अ० (चं०) आगे, आगे की ओर।
**अगू**—पु० (कु०) अंगरखा।
**अगूरा**—वि० (सि०) दूसरा; अग्रगामी।

**अगूरा**—वि० गुर-रहित।
**अगेड़दे**—अ० आगे, सामने; और।
**अगेत**—स्त्री० आगम, आगा; किसी चीज़ का समय से पूर्व होने का भाव।
**अगेतपछेत**—स्त्री० (कां०) आगापीछा।
**अगेत्तरपछेत्तर**—स्त्री० (कां०) आगापीछा।
**अगेर**—पु० (कां०) घर का अगला निचला भाग, नीचे की मंज़िल।
**अगोअग**—अ० आगे-आगे, आगे ही आगे।
**अगोच**—वि० (चं०) अपच।
**अगोचरा**—वि० (चं०)निस्सहाय, बेसहारा।
**अगोचरी**—स्त्री० (चं०) अधिक खाया भोजन।
**अगोल**—पु० (कां०) अर्गला, सिटकिनी, दरवाज़े को अंदर से बंद रखने के लिए दीवार से लगी लकड़ी की सलाख।
**अग्ग**—स्त्री० आग, अग्नि।
**अग्गड़**—वि० अग्रगामी।
**अग्गड़पिच्छड़**—स्त्री० आगापीछा।
**अग्गफक**—पु० (कां०) डींग।
**अग्गर**—पु० (कां०) यज्ञोपवीत के तीन सूत्र।
**अग्गरबत्ती**—स्त्री० अगरबत्ती।
**अग्गा**—पु० (सि०) भविष्य; परलोक; आगा।
**अग्गापीछा**—पु० (कां०) आगापीछा।
**अग्गे**—अ० (कां०) आगे, पहले।
**अग्गो-अग्गी**—अ० आगे-आगे।
**अग्नपुराण**—पु० अग्नि पुराण।
**अग्नबाण**—पु० (कां०) दे० अगणबाण।
**अग्या**—स्त्री० (कां०) आज्ञा।
**अग्याळी**—स्त्री० (कां०) घर का अगला भाग।
**अग्रीहणा**—अ० क्रि० (चं०) आगे आकर स्वागत करना।
**अग्रे**—अ० (चं०) आगे।
**अग्रेहणं**—पु० (चं०) अग्रभाग।
**अग्रेहणा**—अ० क्रि० (चं०) आगे चलना, आगे बोलना।
**अघोर**—पु० संन्यास का अघोर मार्ग।
**अघोरी**—वि० सर्वभक्षी; अघोरमार्गी; घोर पापी।
**अचना**—स्त्री० (सि०) पूजा, अर्चना।
**अचरज**—पु० (चं०) हैरानी, आश्चर्य।
**अचर्ण**—पु० (चं०) जुल्म, अत्याचार; दुराचार।
**अचोणा**—वि० (सि०) अपरिचित।
**अच्छत**—पु० अक्षत, पूजा के लिए अखंडित चावल।
**अच्छमाला**—स्त्री० (कां०) रुद्राक्ष माला।
**अच्छर**—पु० अक्षर।
**अच्छरकुंड**—पु० अक्षर कुंड, पवित्र स्नान स्थान।
**अच्छरा**—स्त्री० (कां०) अप्सरा।
**अच्छरी**—स्त्री० अक्षरी। एक लोक गीत की नायिका।
**अच्छाई**—स्त्री० (कु०) भलाई, सद्‌गुण।
**अच्छू**—पु० (कां०, चं०) उत्तम धान, धान की एक किस्म।
**अच्छू**—पु० (सि०) आंसु, अश्रु।
**अछना**—अ० क्रि० (कां०) होना।
**अछरी**—स्त्री० (सि०) परी, अप्सरा।
**अछल**—वि० (चं०) कम पानी वाला नदी का स्थल, ऐसा स्थल जहाँ पानी का बहाव कम हो। निश्छल।
**अछूत**—वि० न छूने योग्य।
**अजंट**—पु० एजेंट, आढ़ती, अभिकर्ता।
**अजंसी**—स्त्री० एजेंसी, आढ़त, अभिकरण।
**अज**—अ० आज।
**अजकणा**—वि० आज वाला।
**अजकल**—पु० वर्तमान काल।
**अजका**—वि० दे० अजकणा।
**अजगंधी**—स्त्री० (कां०) वन तुलसी, कर्कटशृंगी पौधा।
**अजगी**—पु० (कां०) अजगर।
**अजट**—स्त्री० (सि०, शि०) रुकावट; चुभन।
**अजब**—वि० अनोखा, विचित्र।
**अज़माणा**—स० क्रि० आजमाना, परखना।
**अजमाला**—स्त्री० बकरी के गले में लटकने वाले थन के आकार के अवयव।
**अजमैस**—स्त्री० (कां०) आज़माइश, परख, जांच, परीक्षा।
**अजमोदा**—वि० (कां०) परीक्षित, परखा हुआ।
**अजमोदा**—पु० अजवायन की एक किस्म।
**अजर**—वि० वृद्ध न होने वाला, परमात्मा।
**अजां**—अ० अभी तक।
**अजाजत**—स्त्री० इजाज़त, अनुमति।
**अजाण**—वि० (चं०) अनभिज्ञ।
**अजाणपणा**—पु० अनजानपन।
**अजाद**—वि० आज़ाद, स्वतंत्र।
**अजादी**—स्त्री० स्वतंत्रता।
**अजी**—अ० संबोधन सूचक शब्द।
**अजीब**—वि० विचित्र, अद्‌भुत, अनोखा।
**अजीर्न**—पु० अजीर्ण, अपच।
**अजूह**—अ० (सि०) आज ही।
**अजे**—अ० (चं०) अभी।
**अजेहा**—वि० ऐसा।
**अजै**—वि० अजय।
**अजैग**—अ० (सि०) अकस्मात्।
**अजो**—अ० (सि०) और, अधिक, दोबारा।
**अजोका**—वि० (चं०) दे० अजकणा।
**अजोग**—वि० (चं०) अयोग्य।
**अज्ज**—अ० (कां०) आज।
**अज्जड**—वि० (कां०) विवेकहीन।
**अज्हा**—अ० अभी, अभी तक।
**अज्हीं**—अ० अभी, अभी तक।
**अझीं**—अ० (मं०) अभी।
**अझें**—अ० (कां०) दे० अझीं।
**अट**—पु० (सि०) रोड़ी या मिट्टी का ढेर।
**अटक**—स्त्री० अड़चन, रोक, रुकावट।
**अटकण**—स्त्री० दे० अटक।
**अटकणा**—अ० क्रि० रुकना, ठहरना; रुक-रुक कर बोलना।

**अटकणी**—स्त्री० सिटकिनी।
**अटकळ**—स्त्री० अनुमान, अंदाज़ा।
**अटका**—पु० भेंट, तीर्थ पर दिया जाने वाला दान।
**अटकाणा**—स० क्रि० रोकना, उलझाना, अपने पास रोकना।
**अटकावणो**—स० क्रि० (सि०, शि०) दे० अटकाणा।
**अटकु**—वि० (कां०) ठहरने वाला।
**अटपटा**—वि० (कां०) अनोखा, अस्पष्ट, अजीब।
**अटम**—पु० एटम, परमाणु।
**अटमटसट**—पु० बच्चों द्वारा खेला जाने वाला मुट्ठियों का खेल।
**अटमबंब**—पु० एटमबम, अणुबम।
**अटरा**—वि० (सि०) रुष्ट; सख्त।
**अटळ**—वि० अचल, अडिग।
**अटळ**—वि० (सि०, शि०) चुपचाप, अडिग।
**अटळी**—स्त्री० (कां०) घर के साथ पत्थर व मिट्टी से बना छोटा बरामदा; कच्चे घर के आस-पास पानी आदि से बचाव के लिए पत्थर और मिट्टी से बनाई गई जगह।
**अटळी**—स्त्री० (सि०) गठरी, पोटली।
**अटसल**—पु० (कां०) कार्यभार, जबरदस्ती दिया कार्य।
**अटारी**—स्त्री० झरोखा, खिड़की, छज्जा।
**अटाल**—पु० रीठा।
**अटाला**—पु० (सि०) घर के बाहर उत्सव आदि के अवसर पर बनाया गया चूल्हा।
**अटाळा**—पु० (चं०) चबूतरा।
**अटीणा**—अ० क्रि० (चं०) वर्षा के कारण पत्थर मिट्टी आदि का बह कर एक स्थान पर एकत्रित होना।
**अटेरन**—पु० (चं०) धागा बटने का काष्ठ-उपकरण, तकला जिस द्वारा कता हुआ धागा बटा जाता है।
**अटेरना**—स० क्रि० (चं०) सूत की अट्टी बनाना।
**अटेरनी**—स्त्री० (चं०) चरखी।
**अटेरनू**—पु० (कां०) यज्ञोपवीत बनाने का पीतल या तांबे का उपकरण।
**अटेरा**—पु० (चं०) ऊसर खेत।
**अट्ट**—स्त्री० (सो०) दुकान।
**अट्ट**—पु० (चं०) बाढ़ के बाद इकट्ठा हुआ मलबा।
**अट्टण**—पु० (चं०, सि०) रक्तपात के बिना चोट का उभार।
**अट्टा**—पु० (कां०) आटा।
**अट्टा**—पु० (चं०) ऊनी धागा लपेटने का उपकरण। सूत या ऊन की लच्छी।
**अट्टी**—स्त्री० (चं०) कलाई की गोल हड्डी।
**अट्टी**—स्त्री० (कां०, बि०) सूत या ऊन की लच्छी। अटेरन पर लपेटा सूत।
**अट्टीभूं**—पु० बच्चों द्वारा ऊंची तथा नीची भूमि में खेला जाने वाला छू-पकड़ का खेल।
**अट्टू**—पु० (चं०) भूमि का नाप विशेष।
**अट्ठ**—वि० आठ।
**अट्ठकूण**—पु० अष्टकोण।
**अट्ठभुज**—वि० अष्टभुज।
**अट्ठा**—पु० चारपाई बुनने का एक प्रकार, चारपाई में रस्सी की विशेष बुनाई जिसमें आठ-आठ लड़ियों के खाने बनते हैं। अष्टक।
**अट्ठाई**—वि० अट्ठाईस।
**अट्ठेयां**—पु० अष्टमी तिथि।
**अठताळी**—वि० अड़तालीस।
**अठती**—वि० अड़तीस।
**अठबाड़ा**—पु० आठ दिनों की बेगार।
**अठमाशी**—स्त्री० (सि०) स्वर्ण मुद्रा; आठ माशे का तोल।
**अठमी**—स्त्री० दे० अट्ठेयां।
**अठरना**—अ० क्रि० (चं०) अकड़ जाना।
**अठरना**—अ० क्रि० (कां०) पानी का सूखना।
**अठरा**—वि० (चं०) मूर्ख।
**अठळ**—स्त्री० (सि०) पहेली; रुकावट।
**अठळाई**—स्त्री० (चं०) अष्टपदी, आठवां फेरा; आठ फेरों का संस्कार।
**अठळाई**—वि० (सि०) अकड़ी हुई, नाराज़।
**अठाका**—वि० (सि०) रुका हुआ।
**अठाछठा**—पु० (कु०) आठवां तथा छठा ग्रह; वैर-विरोध।
**अठानी**—स्त्री० (चं०) आठ आने का सिक्का, आधा रुपया।
**अठानुए**—वि० अट्ठानबे।
**अठानुवे**—वि० अट्ठानबे।
**अठारा**—वि० अठारह।
**अठाहट**—वि० अड़सठ।
**अठुआं**—वि० आठवें मास में उत्पन्न बच्चा; आठवां।
**अठुआंस्सा**—वि० दे० अठुआं।
**अठुंजा**—वि० अट्ठावन।
**अठोछटी**—स्त्री० दे० अठाछठा।
**अठोरू**—पु० (कां०) कृषि उपज का आठवां भाग लेने वाला व्यक्ति।
**अड़ंगा**—पु० अड़चन, बाधा।
**अड़**—स्त्री० हठ, ज़िद।
**अड़**—स्त्री० (चं०) मेंड़, दीवार, रोक।
**अड़ईला**—पु० (सि०) वन बिलाव।
**अड़क**—स्त्री० (चं०) कुहनी, बाहु और भुजा का जोड़।
**अड़क**—स्त्री० (बि०) प्रतीक्षा, इंतज़ार।
**अड़कण**—स्त्री० (सि०) कुहनी।
**अड़कण**—स्त्री० (सि०) अटकाव, अड़चन।
**अड़कणा**—अ० क्रि० (बि०) अटकना, रुकना।
**अड़कणी**—स्त्री० (बि०) कुहनी।
**अड़कणी**—स्त्री० (सि०) लकड़ी की सिटकिनी, अड़ने वाली कोई वस्तु।
**अड़का**—पु० (सि०) अटका, रुकावट।
**अड़काणा**—स० क्रि० (कु०) फेंकना, पटकना।
**अड़की**—स्त्री० (सि०) अस्थि, हड्डी।
**अड़कून्नी**—स्त्री० रुकावट, बाधा।
**अड़गल**—पु० (सि०) ततैया की एक किस्म जिसका डंक बड़ा ज़हरीला होता है।
**अड़गोड़ा**—पु० (कां०) ठेंगुर, उद्दत पशु के गले में बांधी जाने

वाली लकड़ी ताकि वह अधिक उछल-कूद न करे।
**अड़चण**—स्त्री० अडचन, बाधा।
**अड़णा**—अ० क्रि० (चं०) हठ करना।
**अड़णा**—स० क्रि० (कां०) फैलाना।
**अड़णा**—अ० क्रि० (बि०) ससुराल में ठहरना, घर जामाता बनना।
**अड़णा**—अ० क्रि० (सि०) अटकना।
**अड़ताली**—वि० अड़तालीस।
**अड़तीस**—वि० (सि०) दे० अठती।
**अड़दल**—स्त्री० सेवा।
**अड़दली**—वि० सेवक।
**अड़न**—स्त्री० (सि०) टस से मस न होने का भाव।
**अड़पट्ट**—अ० सख्ती से, पूरी तरह से (बंद)।
**अड़बंग**—वि० (चं०) हठी; विकट।
**अड़ब**—वि० (बि०) हठी; अड़ियल।
**अड़बेग**—वि० (कां०) मूर्ख; विकट।
**अड़भ**—वि० (सि०) शठ, मूर्ख।
**अड़मड़**—पु० (सि०) अटकाव, कठिनाई, बाधा।
**अड़मूड़**—वि० मूर्ख, अड़ियल।
**अड़वास**—पु० (मं०) आसरा, बसेरा।
**अड़वाहटा**—अ० शक्तिपूर्वक, सवेग।
**अड़हल**—वि० (बि०) अतिश्रांत, बहुत थका हुआ, श्रमयुक्त।
**अड़हल**—स्त्री० (सि०) कठिनाई, रुकावट।
**अड़ा**—अ० रोक, बाधा, आड़।
**अड़ागड़ा**—वि० (चं०) अज्ञानी, नासमझ।
**अड़ाणा**—स० क्रि० रोकना, बाधा डालना, अटकाना, अंदर धकेलना।
**अड़ाणों**—स० क्रि० (शि०) अड़ाना; फैलाना।
**अड़ाव**—पु० (सि०) कठिनाई, मुश्किल।
**अड़िंगा**—पु० (कां०) रुकावट।
**अड़िक्का**—पु० (कां०) अड़ंगा, अटकाव, अड़चन, रुकावट।
**अड़िग**—वि० (शि०) अटल।
**अड़िजंग**—वि० (कां०) ज़िद्दी। शत्रुता को याद रखने वाला।
**अड़ियल**—वि० हठी, ज़िद्दी।
**अड़िये**—अ० स्त्री० अरी, स्त्री के लिए संबोधन।
**अड़ी**—स्त्री० हठ, ज़िद।
**अड़ीखोर**—वि० (कां०) हठी, ज़िद्दी।
**अड़ू**—पु० (मं०) पत्थर तोड़ने का लोहे का उपकरण। इसके पतले व चौड़े मुख को पत्थर की दरार में फंसा कर ऊपर से घन की चोट की जाती है।
**अड़े**—स्त्री० (सि०) रुकावट, रोक।
**अड़ेका**—पु० (चं०) रोक, अवरोध।
**अड़ेया**—अ० (कां०) अरे, पुरुष के लिए प्रयुक्त संबोधन।
**अड़ेयो**—पु० (कां०, चं०) अजी (संबोधन)।
**अड़ेलणा**—स० क्रि० (सि०) निचोड़ना, पानी सुखाना; धकेलना।
**अड़ेसपड़ेस**—पु० आस-पास।
**अड़ेस्सी पड़ेस्सी**—पु० पड़ोस में रहने वाला।
**अड़ैकळू**—वि० (चं०) कठिन।
**अड़ैस**—स्त्री० (कां०) इच्छा, तृष्णा।
**अड़ैस**—वि० (सि०) अकड़ने वाला, ज़िद करने वाला।
**अड़ोल**—वि० (चं०) अचल; चुपचाप।
**अड़ोली**—स्त्री० (कां०) अटकाव, बाधा।
**अड्ड**—अ० पृथक्।
**अड्डना**—अ० क्रि० (कां०) गिड़गिड़ाना, हाथ फैलाना।
**अड्डा**—पु० ठहरने या मिलने का स्थान।
**अड्डी**—स्त्री० एड़ी।
**अड्डीटप्पा**—पु० (कां०) बच्चों का खेल विशेष।
**अड्डू**—पु० (सि०) पत्थर तोड़ने का लोहे का उपकरण।
**अड्डोअड्ड**—अ० पृथक्-पृथक्।
**अड्ढळ**—स्त्री० (बि०) प्रतीक्षा।
**अढोसणा**—स० क्रि० (मं०) ठूंसना; गाड़ना।
**अण**—उप० निषेधार्थक पूर्वपद, "बिना", "रहित" आदि भावाभिव्यक्ति दर्शाने वाला उपसर्ग।
**अणआई**—स्त्री० अनागत घटना, मृत्यु।
**अणकाल**—पु० (चं०) अकाल, दुर्भिक्ष।
**अणकूत**—वि० अनुमान रहित, अनिश्चित।
**अणख**—स्त्री० (सि०) सोच-विचार।
**अणख**—स्त्री० (मं०) ग्लानि, जलन, खीज, ऊब।
**अणखिज्या**—वि० (बि०) अनथक।
**अणखी**—वि० घमंडी, अभिमानी।
**अणखीला**—वि० (कां०) क्रोधी, मानी, आन रखने वाला।
**अणगाध**—वि० (कां०, चं०) अगाध, अथाह, बेशुमार।
**अणगिण**—वि० अगणित।
**अणगिणत**—वि० अनगिनत।
**अणघड़ेया**—वि० (सि०) नासमझ, अज्ञानी, अनगढ़।
**अणघेर**—पु० एक जंगली मधुमक्खी जो आदमी, पशु आदि को काटती है।
**अणछट्टा**—वि० साफ न किया हुआ (अनाज)।
**अणजम्या**—वि० (बि०) अजन्मा; न जमा हुआ।
**अणजल**—पु० अन्नजल।
**अणजाण**—वि० अनजान।
**अणजोक्खा**—वि० अनतोला, बिना तोला हुआ; बिना देखा-सुना हुआ।
**अणझंबा**—वि० (कां०) साफ न किया हुआ।
**अणझंबा**—वि० (चं०) नपुंसक न किया हुआ (पशु)।
**अणत**—वि० (शि०) अनंत।
**अणत**—वि० पथभ्रष्ट।
**अणताजा**—पु० (कु०) अंदाज़ा, अनुमान।
**अणताळेया**—वि० (बि०) बिना छांटा हुआ।
**अणतोल**—वि० अनतोल, भारी, सीमा से बाहर।
**अणदाज्जा**—पु० अंदाज़ा, अनुमान।
**अणदिक्खा**—वि० अनदेखा।
**अणनहोतया**—वि० बिना नहाया हुआ।
**अणना**—स० क्रि० (चं०) लाना, ले आना।
**अणनेशा**—वि० (चं०) लाने योग्य।

अणपढ़—वि० अनपढ़।
अणबाया—वि० बिना बीजा हुआ।
अणबिन्हा—वि० जो बींघा हुआ न हो।
अणबुआलेया—वि० बिना उबाला हुआ।
अणभागा—वि० अभागा।
अणमांजेया—वि० बिना धोया हुआ।
अणमित्थ—वि० अचिंतित।
अणमुक—वि० न समाप्त होने वाला।
अणरंदेया—वि० (वि०) ऊबड़-खाबड़, साफ न किया हुआ, रंदे औज़ार से साफ न किया हुआ।
अणरिनेहा—वि० बिना पकाया हुआ, कच्चा, उबाल कर न पकाया हुआ।
अणलंघ—वि० अलंघनीय, अलंघ्य।
अणलग्ग—वि० अनलग, न लगने वाला, कोरा।
अणवासा—पु० (चं०) ब्रह्ममुहूर्त।
अणशण—वि० उपवास, अनशन।
अणशुणो—वि० (शि०) न सुना हुआ, अनसुना।
अणसाफ—पु० इंसाफ, न्याय।
अणसुणेया—वि० जो न सुना हो।
अणहोणी—स्त्री० अनहोनी, असंभव।
अणादर—पु० (बि०) अनादर।
अणिजा—वि० (कु०) उन्निद्र, जो पूरी तरह सोया न हो।
अणिदा—वि० (बि०, मं०) दे० अणिजा।
अणिद्रा—वि० दे० अणिजा।
अणी—स्त्री० धातुखंड; नोक।
अणी—स्त्री० (सि०) मोरचा।
अणेरो—वि० (शि०) कठिन, प्रतिकूल।
अणो—वि० (शि०) होनहार।
अणोत—अ० (चं०) आगम, काम करने का समय।
अत—अ० अति।
अतबाद—पु० अतिवाद, उग्रवाद।
अतर—पु० इत्र, पुष्पसार।
अतरदानी—स्त्री० (कां०, चं०) इत्रदान।
अतलस—पु० (सि०) एक प्रकार का कोमल वस्त्र।
अतसबाज्जी—स्त्री० आतशबाज़ी, बारूद का खिलौना।
अतापता—पु० (कु०) परिचय, पता।
अति—स्त्री० अधिक, अतिशय।
अति—स्त्री० (कु०) तंग आने या तंग करने का भाव; कष्ट कठिनाई, मुश्किल।
अतिमति—स्त्री० घमंड, हठ।
अतियें—अ० (कां०) अभी तक।
अतें—अ० (कां०) अभी।
अतै—अ० (चं०) अतः, इसलिए, तो फिर।
अत्त—स्त्री० (कां०) अति, अधिकता।
अत्तरू—अ० (कां०) घास की पहली परत।
अत्थरी—स्त्री० (कां०)कूड़ा।
अत्रुट—वि० (चं०) अटूट, लगातार, न टूटने वाला।
अथरन—पु० घराट में पीसे आटे के गिरने का स्थान।
अथरा—वि० (चं०) चौड़े मुंह वाला।
अथरी—स्त्री० पानी रखने का पत्थर का बर्तन।
अथरी—स्त्री० (कां०) आधी सूखी मिट्टी।
अथरू—पु० (चं०) आंसू, अश्रु।
अथी—अ० यहीं।
अदजलो—वि० (सि०) आधा जला हुआ।
अदमुआ—वि० (सि०) दे० अधमूआ।
अदरंग—पु० पक्षाघात, लकवा।
अदळबदळ—स्त्री० हेरफेर, उलटा-सीधा।
अदळाबदळी—स्त्री० विनिमय, परिवर्तन।
अदसिटो—वि० (सि०) आधा पका हुआ (आग द्वारा)।
अदूं—अ० (कां०) तब, उस समय।
अदेआ—वि० (कां०) ऐसा, इस तरह का।
अदेहा—वि० (कां०) दे० अदेआ।
अद्ध—वि० आधा, अर्ध।
अद्धा—वि० दे० अद्ध।
अद्धाक—अ० तनिक, आधा।
अद्रवाती—अ० (चं०) अंदर ही अंदर।
अध—वि० आधा।
अधकचरा—वि० आधा कच्चा, अपक्व।
अधकार—पु० अधिकार, प्रभुत्व।
अधकारी—पु० अधिकारी, शासक।
अधकुंभी—स्त्री० अर्धकुंभी।
अधखड़—वि० अधेड़।
अधखेड़—वि० अधेड़।
अधगब्बें—अ० (कां०) बीच में, मझधार में।
अधपचद्धा—वि० अपूर्ण।
अधपागल—वि० आधा पागल।
अधपूणा—स० क्रि० (कां०) दिल को झटका लगना।
अधबरेसी—वि० अर्धवर्षीय; अधेड़।
अधबाजड़—वि० आधा पागल।
अधबाटड़ा—वि० (बि०) आधे मार्ग वाला।
अधभतूरा—वि० (कां०) आधा पागल।
अधमंझार—अ० (चं०) बीच, मंझधार में।
अधमूआ—वि० (बि०) अधमरा।
अधमोआ—वि० अधमरा।
अधराता—पु० (चं०) अर्धरात्रि, आधीरात।
अधसाली—वि० उपज का आधा भाग देने वाला (मुज़ारा)।
अधसिरी—स्त्री० अर्धशीर्षी, आधे सिर की पीड़ा।
अधसीस्सी—दे० अधसिरी।
अधिया—पु० आधा भाग; आधी बोतल।
अधीतू—पु० (कां०) कृषि का आधा भाग देने वाला व्यक्ति।
अधेऊ—पु० (कां०) दे० अधीतू।
अधेड़—वि० आधी उम्र का, ढलती उम्र का।
अधेल—वि० (चं०) आधे तेल वाला, आधा घी आधा तेल।
अधेरा—वि० (चं०) जिस धागे में आधी ऊन और आधे सूत का मिश्रण हो।

**अघोअघ**—वि० आधा-आधा।
**अघोगत**—स्त्री० अधोगति।
**अनंत**—वि० असीम, अपार।
**अनंतचौहदें**—स्त्री० अनंत चतुर्दशी।
**अनंता**—वि० असीम, अपार।
**अनंद**—पु० आनंद।
**अनंदकार्ज**—पु० उत्सव, विवाह आदि।
**अन**—पु० अन्न।
**अनख**—स्त्री० (सि०) लज्जा, ग्लानि, शर्म।
**अनजल**—पु० अन्नजल, दाना-पानी।
**अनढेओ**—वि० (शि०) चोरी करने वाला।
**अनदाणा**—पु० अन्न-दाना, जीविका।
**अनदान**—पु० अन्नदान।
**अनपान**—पु० अनुपान, औषधि के साथ या अनंतर ली जाने वाली वस्तु।
**अनप्रासन**—पु० अन्नप्राशन संस्कार, जिस दिन बच्चे को पहली बार अन्न ('लुगड्डू' आदि) खिलाया जाता है।
**अनमट**—पु० (कां०) अन्नम्मट, अधिक खाने वाला।
**अनमान**—पु० अनुमान, अंदाज़ा।
**अनळ**—स्त्री० (सो०) अंजलि।
**अनाड़ी**—वि० (शि०) अकुशल।
**अनाला**—वि० (कां०) अन्न वाला, ऐसा आहार जिसमें अन्न पड़ा हो (दाल, चावल आदि) जिसे व्रत के दिन नहीं खाते या ब्राह्मण लोग बिना यज्ञोपवीत धारण किए व्यक्ति द्वारा बनाए ऐसे भोजन को नहीं खाते।
**अनाहरू**—पु० अघर।
**अनिंजो**—वि० (मं०) उन्निद्र।
**अनिंदा**—वि० (सि०) उन्निद्र, जो सोया न हो।
**अनी**—अ० (कां०) अरी, स्त्रियों के लिए संबोधन-सूचक शब्द।
**अनीरा**—वि० (चं०) कच्चा, कोमल, जो अभी पका न हो।
**अनुष्ठान**—पु० (शि०) धार्मिक कृत्य, आचरण पद्धति।
**अनुहार**—वि० (चं०) आकृति-समानता, दूसरे की शक्ल का।
**अनेरना**—वि० (चं०) खाये-पीये बिना, भूखे पेट।
**अनेरा**—पु० (सो०) असुविधा।
**अन्नले**—पु० (शि०) बला।
**अन्नाध**—वि० (चं०) अंधा।
**अन्हा**—वि० अंधा।
**अन्हेरा**—पु० अंधेरा, अंधकार।
**अन्हेरी**—स्त्री० आंधी।
**अन्हेवाह**—अ० (कां०) अंधाधुंध।
**अपच्च**—वि० जो पचाया न जाए।
**अपड़**—वि० (चं०) पकड़ से बाहर।
**अपड़ना**—अ० क्रि० (कु०) समाना, किसी छोटी वस्तु का बड़ी वस्तु में आ जाना।
**अपण**—अ० (चं०) परंतु, किंतु, लेकिन।
**अपणा**—सर्व० अपना।
**अपणाओणा**—स० क्रि० (सि०, शि०) अपना बनाना।
**अपणीत**—स्त्री० अपनापन।
**अपरा**—वि० (सि०) अपरिचित, अनोखा।
**अपसकण**—पु० अपशकुन।
**अपा**—पु० (सि०) ससुर।
**अपान**—वि० (कां०) अपावन, अपवित्र, जो पूजा में न लगे।
**अपार**—वि० असीम, पार रहित, जिसके किनारे का कोई पता नहीं है, बेअंत।
**अपाहज**—वि० अपाहिज, शरीर के अंग में कमी वाला, लंगड़ा आदि।
**अपीष**—वि० (कां०) कंजूस।
**अपुट्ठ**—वि० (चं०) अत्यधिक, बहुत।
**अपुण**—वि० न छना हुआ, ऐसा (अन्न आदि) जिससे वायु प्रवाह द्वारा भूसा आदि अलग न किया गया हो।
**अपुण**—वि० (शि०) अपना, मेरा।
**अपूणा**—वि० (चं०) बिना साफ किया हुआ।
**अपोधापी**—स्त्री० (बि०) आपाधापी, धांधली।
**अप्पड़णा**—अ० क्रि० पहुंचना।
**अप्पू**—सर्व० आप, स्वयं।
**अप्पूहोरां**—पु० (कां०) अपने जी, पत्नी द्वारा पति के लिए प्रयुक्त शब्द।
**अप्रेणा**—स० क्रि० (कां०) विवाह के समय या बहुत दिन बाद घर में आये व्यक्ति के सिर पर न्योछावर कर कुछ पैसे दान देना।
**अप्रेसन**—पु० ऑप्रेशन, शल्य चिकित्सा।
**अप्सरा**—स्त्री० परी।
**अफड़ातफड़ी**—स्त्री० (चं०) अफरातफरी, आतंक।
**अफरना**—अ० क्रि० (सि०) रुष्ट होना।
**अफरना**—अ० क्रि० पेट का फूलना, सूजना।
**अफरीन**—अ० शाबाश, लाजवाब।
**अफल**—वि० फल रहित।
**अफशर**—पु० अफसर, प्रधान अधिकारी।
**अफसरी**—स्त्री० प्रधानता, अधिकार।
**अफारा**—पु० पेट फूलने का रोग, सूजन।
**अफू**—पु० (चं०) अफीम का पौधा।
**अबका**—वि० (सि०) वर्तमान समय का।
**अबतार**—पु० अवतार।
**अबद**—पु० (चं०) पहला युग, आरंभिक काल, परलोक।
**अबद**—पु० (बि०) मान-सम्मान, अदब का विपर्यय।
**अबधी**—स्त्री० अवधि, आयु, सीमा।
**अबर**—पु० (चं०) दोषारोपण।
**अबरक**—पु० अभ्रक, खनिज पदार्थ।
**अबरा**—पु० (सि०) रजाई में ऊपर की ओर लगने वाला वस्त्र।
**अबरी**—स्त्री० पुस्तक पर चढ़ाया जाने वाला रंगदार कागज़।
**अबळे**—स्त्री० (सि०) अचानक आई विपत्ति, गर्दिश।
**अबसर**—पु० (कां०, चं०) दे० अफशर।
**अबाक**—वि० (कां०) गूंगा, किंकर्तव्यविमूढ़।
**अबाजार**—वि० तंग आया हुआ, उकताया हुआ।
**अबाळा**—पु० (सो०) उबाल, उफान।

**अबाशा**—वि० (चं०) उजाड़, वीरान, कृषि रहित, जब खेत बोए बिना रह जाए।
**अबासा**—पु० ब्रहममुहूर्त, प्रातः का वह समय जब अभी कौआ भी न बोला हो।
**अबीर**—पु० (मं०) गुलाल।
**अबूझ**—वि० (शि०) अबोध।
**अबे**—अ० (मं०) अब, अभी।
**अबेर**—स्त्री० देर, अतिकाल।
**अबेल**—स्त्री० (चं०) दे० अबेर।
**अब्बो**—अ० अरे, अरी, स्त्री तथा पुरुष के लिए संबोधन।
**अब्बल**—वि० प्रथम, सर्वश्रेष्ठ।
**अब्बू**—पु० शरीर पर चोट लगने से आने वाला उभार।
**अब्बूहक्का**—पु० (बि०) कठिनता; अस्पष्टता।
**अब्बोसाही**—स्त्री० उत्सुकता, उत्कंठा, बेचैनी।
**अभज**—वि० न टूटने वाला।
**अभरक**—पु० (चं०, मं०) अभ्रक, अबरक।
**अभलाष**—स्त्री० (सि०) अभिलाषा, इच्छा।
**अभागण**—वि० (शि०) अभागिन।
**अभारी**—वि० आभारी।
**अभारी**—पु० (चं०) हाथी पर बैठने का आसन।
**अभै**—पु० अभय।
**अभैगत**—वि० अभ्यागत, भूला भटका (भिखारी, अतिथि)।
**अभैदान**—पु० अभयदान।
**अमंगल**—वि० अशुभ।
**अमक**—वि० (सि०) अहमक़, मूर्ख।
**अमको**—वि० (शि०) अमुक।
**अमखै**—सर्व० (शि०) हमें, हमको।
**अमचूर**—पु० सूखे आम का चूर्ण।
**अमड़ी**—स्त्री० (कां०) माता, मां।
**अमतेयान**—पु० इम्तिहान, परीक्षा।
**अमन**—पु० शांति।
**अमरत**—पु० (सि०) अमृत।
**अमरती**—स्त्री० मिठाई विशेष।
**अमरबेल**—स्त्री० पीले पत्तों वाली बेल।
**अमरलोक**—पु० स्वर्ग।
**अमल**—पु० प्रभाव, आचरण।
**अमलदार**—पु० (सि०) राजा का छोटा कर्मचारी।
**अमला**—पु० (कां०, चं०) खमीर, खट्टी छाछ द्वारा बनाई कढ़ी।
**अमला**—पु० कर्मचारी वर्ग।
**अमली**—वि० व्यसनी।
**अमली**—स्त्री० इमली।
**अमलोड़ा**—पु० चौड़ी पत्ती वाला एक खट्टा घास।
**अमलोड़ी**—स्त्री० दे० अमलोड़ा।
**अमां**—स्त्री० माता।
**अमांलमा**—वि० (कां०, चं०) व्यर्थ।
**अमाउस**—स्त्री० (शि०) अमावस्या।
**अमाकड़ी**—स्त्री० (कां०) आम की सुखायी फांक।
**अमाणत**—स्त्री० (शि०) अमानत, धरोहर।
**अमासी**—वि० (चं०) शाकाहारी।
**अमोत्रा**—वि० बिना माता के, जिसकी माता मर गई हो।
**अमोत्रा**—वि० अधिक लाड़ला।
**अम्मण**—पु० (चं०) गलगल।
**अम्बरपक्का**—पु० (कां०) लाल अंबर, सूर्यास्त का समय।
**अम्मा**—स्त्री० अंबा, माता।
**अम्माजाया**—वि० सहोदर, सगा।
**अयड़न**—पु० (सि०) वह स्थान जहाँ घराट में पीसा जा रहा आटा गिरता है।
**अयरन**—पु० दे० अयड़न।
**अयरा**—वि० (कां०) हठी, शरारती।
**अयरा**—पु० (शि०) घराट में ज्यादा मात्रा में अनाज डालने का भाव जब घराट के घूमने की गति धीमी हो जाती है।
**अयरी**—वि० (कां०) आधी सूखी (मिट्टी)।
**अयाणा**—पु० बच्चा; अज्ञानी।
**अर**—अ० (सो०) और।
**अरक**—पु० काढ़ा, रस, क्वाथ, अर्क।
**अरक**—स्त्री० (चं०) कुहनी, बाहु और भुजा का जोड़।
**अरखर**—पु० एक वृक्ष विशेष जिसे छूने या काटने पर शरीर में फोड़े निकल आते हैं।
**अरखा**—स्त्री० (चं०) कुहनी।
**अरगा**—पु० धूपदान।
**अरगू/घू**—पु० (कां०) नाक के आभूषण विशेष को डोर लगाने का यंत्र।
**अरघ**—पु० देवतादि के लिए अर्पण किया गया जल।
**अरघा**—पु० 'अरघ' देने का तांबे का एक पात्र।
**अरजण**—पु० (चं०, कु०) एक वृक्ष विशेष जिसके पत्ते हृदय रोग के लिए उपयोगी होते हैं।
**अरड़**—वि० कठोर, अनुभवी, परिश्रमी।
**अरड़**—स्त्री० (सो०) हरड़।
**अरड़**—पु० (बि०) अंतर, फर्क।
**अरड़पोप्पो**—पु० हस्तरेखा ज्ञाता।
**अरड़ा**—वि० दृढ़, कठिन, मज़बूत, सधा हुआ।
**अरड़ा**—वि० (सि०) टेढ़ा, अड़ियल।
**अरढा**—पु० लोहे की सलाखों का बना पिंजरा जिसमें हिंसक जानवर को रखा जाता है।
**अरढ़ीणा**—अ० क्रि० (कां०) मन में कुढ़ते रहना।
**अरढोणा**—अ० क्रि० दे० अरढ़ीणा।
**अरणटू**—पु० (सि०) हिरन का बच्चा।
**अरदली**—पु० (सो०) सेवक, चपरासी।
**अरदास**—स्त्री० प्रार्थना, निवेदन।
**अरदासिया**—वि० प्रार्थना करने वाला।
**अरन**—स्त्री० (कां०) कुल्या में से निकाल कर एकत्रित किया गया पानी।
**अरन**—पु० छोटी कुल्या।
**अरन**—पु० अरण्य, बंजर भूमि।
**अरना**—पु० जंगली भैंसा।

**अरना**—वि० हठी, ज़िद्दी।
**अरनी**—स्त्री० (कां०) पानी के अभाव में कोंपल के मुरझाने की स्थिति।
**अरन्ह**—पु० (कां०) लोहे का बड़ा खंड जिस पर रख कर लुहार बन रही चीज़ पर चोट करता है।
**अरब**—पु० सौ करोड़ की संख्या।
**अरबखरब**—पु० ज़्यादा संपत्ति।
**अरबी**—स्त्री० एक कंद विशेष जिसकी सब्जी बनती है। अरब देश की भाषा।
**अरला**—पु० (कां०) कंटीली झाड़ियों का बना गेट।
**अरलू**—पु० (सि०) वृक्ष विशेष।
**अरवा**—पु० (मं०) बुलावा।
**अरसा**—पु० समय, अवधि।
**अरा**—अ० अरे, संबोधन शब्द।
**अरान**—पु० (मं०) खड़े वृक्षों का कटान।
**अरुहर**—पु० (चं०) बलि-वध में पशु का रक्तपान; बलि में दिए गए पशु का ताज़ा खून जिसे 'चेला' पी जाता है।
**अरोतरी**—पु० (चं०) पतले, लंबे पत्तों वाला जंगली पौधा जिसका साग बनता है।
**अर्क**—पु० रस।
**अर्कामर्का**—पु० उलटी हथेली का खेल।
**अर्ज**—स्त्री० निवेदन।
**अर्जण**—पु० अर्जुन, श्वेत वृक्ष।
**अर्जी**—स्त्री० प्रार्थना पत्र।
**अर्जीनवीस**—पु० प्रार्थना पत्र या याचिका लिखने वाला व्यक्ति।
**अर्थ**—पु० अभिप्राय, प्रयोजन, काम।
**अर्थी**—स्त्री० सीढ़ी, शवयान।
**अर्धंग**—पु० पक्षाघात, लकवा।
**अर्पन**—पु० अर्पण, दान, भेंट।
**अर्ला**—पु० अर्गल, बांस या अन्य काष्ठ का बना अवरोध।
**अर्ली**—स्त्री० अर्गली, आंगन-द्वार में लगा काष्ठ का अवरोध।
**अर्शणा**—अ० क्रि० (शि०) जल का रिसना।
**अल**—स्त्री० (बि०) उतराई। बुरी आदत।
**अळ**—पु० (सो०) हल।
**अलक**—पु० (सि०) हल में न लगाया गया बछड़ा।
**अलकणा**—स० क्रि० (सि०) सिर पर से किसी वस्तु को वारना।
**अळकस**—पु० आलस्य।
**अलकी**—वि० (कां०) आलसी।
**अळकुणा**—अ० क्रि० (सो०) पागल होना।
**अलकेड़**—स्त्री० (ह०) आलस्य, लापरवाही, सुस्ती।
**अळक्वाहश**—पु० (चं०) भार कम होने या आराम मिलने का भाव, हलका होने का भाव।
**अलख**—वि० (चं०) अलक्ष्य, अगोचर।
**अळख**—पु० आलस्य, ग्लानि।
**अलखणा**—अ० क्रि० (सो०) पागल होना।
**अलगर्ज़**—वि० (कां०) उपेक्षा करने वाला, स्वार्थी, लापरवाह।
**अलगर्ज़ी**—स्त्री० उपेक्षा, लापरवाही।
**अलगेजा**—वि० (मं०) निकम्मा।
**अळगोजा**—पु० (चं०) बांसुरी की तरह का एक वाद्य।
**अलट्वाणा**—अ० क्रि० (सि०) हिलना, इधर-उधर घूमना, अपने स्थान से सरकना।
**अलणा**—वि० अलूना, जिसमें नमक न हो या कम हो।
**अलणा**—वि० (बि०) कच्चा।
**अळणा**—अ० क्रि० (शि०) झड़ना।
**अलणा धागा**—पु० (बि०) कच्चा धागा।
**अलणी**—स्त्री० (सि०) तृण विशेष।
**अलतेरा**—पु० जी मतलाने का भाव, वमन का भाव।
**अळना**—अ० क्रि० पत्तों और फलों का गिरना।
**अळना**—अ० क्रि० असफल होना।
**अलपटा**—पु० (कां०) अस्त-व्यस्तता, बिखरा हुआ सामान।
**अलुफ़**—पु० (कु०) उर्दू-फारसी का पहला अक्षर।
**अलफी**—स्त्री० (कु०) मुसलमान फकीर का चोला।
**अळबळू**—पु० जंगली अरवी।
**अलबा**—पु० (सि०) मलबा, कूड़ा-करकट का ढेर।
**अलबेला**—वि० मनमौजी, अद्भुत।
**अलबेल्लू**—पु० प्रेमी नायक; लोक गीत का नायक।
**अळभोट**—वि० (बि०) भोला।
**अलमपलम**—वि० (बि०) अनर्गल।
**अलमस्त**—वि० निश्चिंत, बेफ़िक्र, मनमौजी।
**अळयाणा**—स० क्रि० झाड़ियों को काट कर ज़मीन साफ करना।
**अलवा**—पु० (सि०) कांटों का ढेर।
**अळवावना**—स० क्रि० (सि०) कंटीली झाड़ियों को जलाना।
**अलशेट**—स्त्री० शिथिलता, आलस्य, लापरवाही।
**अलस**—पु० (सि०) हल चलाते समय बैलों को जोड़ने के लिए लगाया जाने वाला डंडा।
**अलसाहन**—पु० वृक्ष विशेष।
**अलसी**—पु० तेल का पौधा।
**अलसेट**—स्त्री० आलस्य, टालमटोल।
**अलसेटी**—पु० (चं०) आलसी।
**अला**—अ० अरे, मना करने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**अलाचार**—वि० (कु०) मजबूर।
**अलाज**—पु० (चं०) इलाज, उपचार।
**अलाद**—स्त्री० औलाद, संतान।
**अलान**—पु० ऐलान, घोषणा।
**अलाप**—पु० आलाप।
**अलामत**—स्त्री० लक्षण, पहचान, निशानी।
**अळाम्मा**—पु० उपालंभ।
**अलिया**—पु० (कां०) एक वृक्ष विशेष जिसकी फलियों का काढ़ा पशुओं को 'दिम' नामक रोग लगने पर पिलाया जाता है।
**अली**—पु० अमलतास, एक पौधा जिसके पीले फूल और लंबे फल होते हैं।
**अलीहा**—पु० (चं०) छत के पानी का टपका जिसे स्लेट पर

अंगुली से बाहर निकाला जा सकता है। अंगुली को स्लेट के साथ घसीटने से पानी उसी दिशा में बदल कर बाहर निकाला जाता है।

**अलूआ**—वि० (चं०) रुई रहित, जिस पर रुई न हो।

**अलूआ**—वि० (चं०) नवजात, कोमल शरीर वाला।

**अलूचा**—पु० आलूचा, एक फल विशेष।

**अलूणा**—वि० (चं०) अलवण, नमक रहित।

**अलूबखारा**—पु० आलूचे की प्रजाति का एक फल।

**अलेख**—वि० (चं०) असंख्य, जिसकी कोई गिनती न हो।

**अलेणा**—वि० (चं०) उतावला, तिलमिलाने वाला।

**अलेतरा**—पु० मतली, वमन।

**अलेदणा**—स० क्रि० मसलना; खंड-खंड करना।

**अलेयोग**—स्त्री० (सि०) विषैली डाली।

**अलै**—अ० अरे, पशुओं को बुलाने का संबोधन।

**अलैट**—पु० (चं०) गिरा हुआ फल।

**अलो**—अ० (बि०) ओ, (संबोधन शब्द)।

**अलोक**—पु० (चं०) आलोक; अनुमान।

**अलोकणा**—स० क्रि० (मं०) वारना।

**अलोकणी**—स्त्री० (चं०) गाल।

**अलोका**—पु० (चं०) आड़, ओझल; किसी की ओर न होने का भाव।

**अलोप**—पु० (चं०) लोप, अप्रत्यक्ष।

**अलौं**—पु० (बि०) कनक में उगने वाला घास।

**अल्ल**—स्त्री० (कां०, बि०) लंबा घीया। अधिक वर्षा से खेतों में हुई दलदल।

**अल्ल**—स्त्री० (बि०) बुरी आदत। वंश के संबंधित गुणों पर आधारित नामकरण, उपनाम।

**अल्लड़जल्लड़**—पु० अंडबंड, व्यर्थ प्रलाप।

**अल्लपल्ल**—पु० खरा-खोटा, ऊट-पटांग।

**अल्ली**—वि० (बि०) आधी सूखी आधी हरी (कृषि)। गीली (भूमि)। कच्ची (रोटी आदि जो तवे से उतारी न जा सके)।

**अल्हड़**—वि० अज्ञानी, अनुभवहीन; भोला।

**अल्हड़पण**—पु० भोलापन; अनुभवहीनता।

**अल्हणा**—पु० (बि०) घोंसला।

**अल्हा**—पु० (चं०) घोंसला।

**अल्हाई**—स्त्री० (सो०) हल की सीता।

**अल्हेदटा**—पु० (कां०) अलसी का भूसा।

**अल्हेरना**—स० क्रि० (चं०) मीठी-मीठी बातों द्वारा वश में करना।

**अल्हेळ**—पु० अलसी का तेल।

**अल्है**—पु० (चं०) अलसी।

**अवडेस**—अ० (सि०) अभी जैसे।

**अवांज**—स्त्री० ओझे की विष उतारने की प्रक्रिया।

**अवांजणा**—स० क्रि० मंत्र द्वारा विष उतारना।

**अवाड़ा**—पु० (मं०) प्रातःकाल।

**अवाण**—पु० (कां०) बैठक, बैठने का कमरा।

**अशगंध**—पु० (सि०) अष्टगंध, धूप।

**अशटा**—स्त्री० (कु०) छोटा यज्ञ।

**अशटा**—वि० (सो०) कठोर, सख्त।

**अशण**—पु० (चं०) ओले।

**अशति**—स्त्री० (मं०) औषधि, दवाई।

**अशनान**—पु० स्नान।

**अशरी**—स्त्री० (मं०) अलसी।

**अशी**—वि० अस्सी।

**अशूश**—पु० (चं०) आशीर्वाद।

**अशेगत**—वि० (वं०) कठोर।

**अशौज**—पु० (सि०) आश्विन मास।

**अश्शु**—अ० दे० एशू।

**असंख**—वि० असंख्य, अगणित।

**अस**—अ० क्रि० (सो०) होना, है।

**असअ**—अ० क्रि० (सि०) है।

**असकळी**—स्त्री० (सि०, सो०) चावल के आटे आदि का भोज्य पदार्थ जो 'असकाळी' में पकाया जाता है।

**असकळू**—पु० (मं०) चावल के आटे का गुलगुला। छोटे आकार की 'असकळी'।

**असकाळी**—पु० गोलाकार छोटे गढ़ों वाला पत्थर का तवा।

**असगंध**—पु० अश्वगंधा एक औषधि विशेष।

**असगात**—पु० (कां०) लकड़ी की सीढ़ी।

**असतर**—पु० कोट आदि गर्म कपड़ों के अंदर लगने वाला सूती कपड़ा।

**असतर**—वि० (मं०) चतुर।

**असदिया**—अ० (सि०) ''यहां पर है'' भाव व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त शब्द।

**असबाव**—पु० (चं०) आवश्यक सामग्री।

**असमाण**—पु० (चं०) आसमान, आकाश।

**असमानी**—वि० (मं०) आसमानी, नीला।

**असर**—पु० प्रभाव, परिणाम।

**असल**—पु० मूल।

**असली**—वि० मौलिक, सच्चा।

**असलीत**—स्त्री० (बि०) असलियत, वास्तविकता।

**असां**—सर्व० हम।

**असाजा**—वि० (चं०) अप्रयुक्त पदार्थ, कोरा।

**असाढ़**—पु० आषाढ़ मास।

**असान**—वि० आसान, सरल।

**असार**—पु० आसार, आभास।

**असारा**—पु० इशारा, संकेत।

**असीस**—स्त्री० आशीष, आशीर्वाद।

**असुर**—पु० राक्षस।

**असूज**—पु० आश्विन मास।

**असूल**—पु० नियम।

**असै**—सर्व० हम, हमने।

**असो**—अ० क्रि० (शि०) है।

**अस्के**—पु० (मं०) चावल का आटा।

**अस्ट**—वि० अष्ट, आठ।

**अस्टग्रही**—स्त्री० अष्टग्रही, संकट काल।

**अस्टधात**—स्त्री० अष्टधातु।

**अस्टभुजा**—स्त्री० अष्टभुजा, दुर्गा।
**अस्टमी**—स्त्री० अष्टमी।
**अस्टसिदि**—स्त्री० अष्टसिद्धि, पूर्ण सफलता।
**अस्तबल**—पु० अश्वशाला।
**अस्तर**—पु० (चं०) खच्चर का बच्चा।
**अस्तावो**—पु० (चं०) सुराही की तरह का लोटा।
**अस्ती**—स्त्री० अस्थि, हड्डी।
**अस्तू**—पु० अस्थि, अवशेष।
**अस्त्र**—पु० मंत्र प्रेरित अग्नि, वायु आदि बाण।
**अस्त्र-सस्त्र**—पु० अस्त्र-शस्त्र, सब प्रकार के हथियार।
**अस्सळना**—अ० क्रि० (बि०) शीत के कारण शरीर का अकड़ जाना।
**अस्सां**—सर्व० (बि०) हम।
**अस्सू**—पु० आश्विन मास।
**अहं**—पु० अहंकार।
**अह**—अ० (बि०) कराह, कष्ट सूचक शब्द।
**अहणं**—स्त्री० बिच्छूबूटी, एक प्रकार की घास जिसको छूने से छाले पड़ जाते हैं।
**अहण**—पु० (सि०) हिमवात, बर्फीली हवा।
**अहां**—सर्व० (कां०) दे० अस्सां।
**अहां**—अ० इधर।
**अहा**—अ० विस्मयबोधक शब्द।
**अहें**—अ० विस्मयबोधक शब्द।
**अहेरी**—पु० (सि०) शिकारी।
**अहो**—अ० हे, संबोधन; खेदसूचक शब्द।
**अहोई**—स्त्री० अनहोनी।
**अहोई अदठे**—स्त्री० दीपमाला के आठ दिन पूर्व अष्टमी के दिन संतान प्राप्ति के लिए किया जाने वाला पूजन।
**अड्डाजड्डा**—पु० व्यर्थ वस्तु, घासपात।
**अह्ना**—वि० (चं०) अंधा।
**अह्र**—पु० (कां०) पानी की कुल्या, छोटी नदी।
**अह्लकणा**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) कुत्ते का पागल हो जाना।
**अह्लणा**—दे० अल्हणा।
**अह्ळी**—पु० दे० अली।

## आ

**आ**—वर्णमाला का दूसरा स्वरवर्ण और 'अ' का दीर्घ रूप।
**आंउदा**—पु० दे० आउंदा।
**आंओंळा**—पु० (शि०) आंवला, एक फल विशेष जिसका मुरब्बा बनाया जाता है।
**आंगटी**—स्त्री० (सि०) बाहों का घेरा; गोद।
**आंगशे**—पु० (शि०) अंकुश, लोहे के दांत वाला कृषि उपकरण जिससे घास या अन्न आदि इकट्ठा किया जाता है।
**आंगी**—वि० (कु०) अलग, जुदा, पृथक्, भिन्न।
**आंगोरो**—पु० (शि०) अंकुर।
**आंछा**—स्त्री० (कु०) कांटेदार झाड़ियों में लगे खट्टे मीठे फल विशेष जो कच्ची अवस्था में हरे और पकने पर लाल और कुछ झाड़ियों के काले हो जाते हैं।
**आंज**—स्त्री० (कु०) आंत।
**आंट**—स्त्री० (कु०) मज़ा, आनंद, मौज-मस्ती।
**आंट**—स्त्री० (कां०, चं०) चाल, रहस्य, भेद।
**आंटण**—स्त्री० (कु०) प्रेमिका।
**आंटी**—पु० (कु०) दोस्त।
**आंडा**—अ० (शि०) इधर, इस ओर।
**आंदरी**—स्त्री० हल चलाते समय हल की दो लकीरों के बीच में बिना हल चली भूमि।
**आंधरे**—अ० (कु०) अंदर।
**आंब**—पु० (शि०) आम।
**आंबल**—पु० (कु०) नशा।
**आंबळ**—पु० (कां०) आंवला।
**आंःरशो**—पु० (सि०) देवी का चढ़ावा।
**आंःळ**—स्त्री० (कु०) वह कड़ी (कड़ियां) जिस पर दूसरी-तीसरी मंज़िलों के फर्श के तख्ते बिछाए जाते हैं।
**आ**—अ० क्रि० (शि०, मं०) है।
**आइड़ा**—वि० (कु०) गूंगा और बहरा।
**आइण**—स्त्री० (कु०) दे० आंःळ।
**आइनमाइन**—अ० (कु०) हूबहू, अनुरूप, वैसा ही।
**आइया**—अ० (कु०) हाय, पीड़ा सूचक शब्द।
**आइर**—पु० (कु०) ताना, करघे में लंबाई की ओर से बुना जाने वाला सूत।
**आइरना**—स० क्रि० (कु०) करघे में बुनने के लिए 'आइर' तैयार करना।
**आइरू**—वि० (सि०) परदेसी, बाहर से आया हुआ।
**आइलू**—दे० आइरू।
**आईंचे**—अ० (कु०) शायद, कदाचित्, संभवतः।
**आईड**—स्त्री० (शि०) धुआं निकलने का स्थान, चिमनी।
**आई**—स्त्री० (सि०) आयु, मृत्यु।
**आईचयोली**—स्त्री० (कां०) इमारती लकड़ी।
**आईजा**—अ० (सि०) दे० आइया।
**आईड़**—पु० (शि०) दे० अएड़।
**आईब**—पु० दोष, व्यसन।
**आउंगळ**—वि० अंगुलि मात्र।
**आउंदड़**—स्त्री० (कु०) आने की संभावना।
**आउंदा**—पु० (कु०) चूल्हे का पिछला भाग, बर्तन रखने के लिए चूल्हे पर बना गोल स्थान।
**आउंलेदुपैरी**—अ० (सि०, चं०) पूर्वाह्न।
**आउआ**—पु० (कु०) आवाँ, कुम्हार का बर्तन पकाने का स्थान, भट्ठा।
**आउण**—स्त्री० आगमन, पहुँचने की आशा।
**आउणाजाणा**—पु० मेल-जोल; आवागमन।
**आउणो**—अ० क्रि० (चं०, सि०) आना।
**आउपळाउ**—पु० उद्विग्नता, बेचैनी।

**आउळा**—पु० (कु०) गेहूं, जौ या मक्की के कच्चे भुने हुए दाने।
**आऊं**—पु० आमाशय रोग, अनपचा अन्न जो संग्रहणी आदि में शौच के साथ निकलता है।
**आऊंद**—स्त्री० प्रतीक्षा; आमदनी।
**आऊंदा**—पु० दे० आउंदा।
**आऊबाऊ**—पु० (कु०) प्रलाप, निरर्थक बात, अनर्गल बात।
**आएला**—वि० गीला, पतला।
**आओली**—स्त्री० पानी पिलाने का मिट्टी का टोंटीदार बर्तन।
**आकणा**—अ० क्रि० (मं०) थक जाना।
**आकती**—अ० (कु०) पहले जैसा, पूर्वोक्त।
**आकरो**—वि० (शि०) कच्चा।
**आकसाक**—पु० सगा-संबंधी।
**आक्षौर**—पु० दे० अक्खर।
**आखटी**—स्त्री० (सि०, शि०) आंख, अक्षि; छोटी आंख, सुंदर आंख।
**आखर**—पु० (कु०) अक्षर, वर्ण।
**आखला**—पु० (सि०) अदरक की क्यारी।
**आखला**—पु० दे० आंछा।
**आखा**—पु० कांटेदार झाड़ी का फल विशेष जो स्वाद में खट्टा-मीठा होता है।
**आखा**—पु० (चं०) घोड़े आदि के बोझ का एक भाग।
**आखुड़ी**—स्त्री० (कु०) तख्तों की जोड़ी।
**आखुर**—पु० (चं०) आंसू।
**आखे**—स्त्री० (कु०) दे० आंछा।
**आख्यां**—स्त्री० (सि०) कांटेदार झाड़ी का फल विशेष।
**आग**—पु० (कां०) ईख का अगला भाग।
**आगड़ा**—पु० (सि०) अंदाज़ा, अनुमान।
**आगड़ी**—अ० (सो०) आगे, पहले।
**आगडू**—पु० (सि०) आगे सरकने का भाव।
**आगने**—स्त्री० (सि०) आग, अग्नि।
**आगमिगरी**—स्त्री० (कु०) दौड़ में प्रतिस्पर्धा, दौड़ाई में आगे निकलने की कोशिश।
**आगरिना**—अ० क्रि० (कु०) आगे होना, आगे निकल जाना।
**आगळ**—स्त्री० (कु०) अर्गला, द्वार बंद करने का डंडा।
**आगला**—अ० (कु०) अगला, पहले का।
**आगळा**—वि० शरारती।
**आगली**—वि० (सि०) अग्रिम, समूह में प्रथम।
**आगली**—अ० (कु०) आगामी वर्ष।
**आगळी**—स्त्री० (कु०) देवरथ अथवा पालकी को कंधे पर उठाने के लंबे डंडे।
**आगळूदेई**—पु० (कु०) वर्ष में पहली बार गेहूं, जौ या चावल का भोजन करते हुए आगामी वर्ष में पुन: प्राप्ति की कामना करने का भाव।
**आगळूबीखाई**—पु० (कु०) 'आगळूदेई' मनोकामना की पूर्ति हेतु उपस्थित लोगों द्वारा उत्तर में "आगे भी खाना" कहने की क्रिया।
**आगलो**—वि० (सि०) दे० आगला।
**आगवे**—अ० (सि०) अगली तिथि, पहले दिन।
**आगा**—पु० अगला भाग।
**आगातागा**—पु० (बि०) वंशज।
**आगाध**—वि० अथाह।
**आगिया**—पु० (मं०) शिवरात्रि से एक दिन पूर्व का उत्सव।
**आगुवा**—पु० (सि०) नेता।
**आगू**—वि० (कु०) आगे चलने वाला।
**आगूजागू**—वि० (कु०) ऊटपटांग, उलटा सीधा, बेतुका।
**आगे**—पु० (सि०) नासिका का ऊपरी भाग।
**आगै**—अ० (कु०) आगे।
**आग्घा**—पु० आगे का भाग।
**आग्हार**—पु० (सि०) लक्ष्य, निशाना।
**आघरीमीघरी**—स्त्री० (कु०) दे० आगमिगरी।
**आघला**—अ० (कु०) दे० आगला।
**आघे**—अ० (चं०) दे० आगे।
**आघोरी**—वि० (मं०, कां०) अघोर पंथी।
**आछ**—स्त्री० (कु०) आंख, अक्षि।
**आछडू**—वि० (शि०) स्वस्थ।
**आछड़े**—वि० (सि०) अच्छे।
**आछयो**—स्त्री० (सि०) जंगली रसभरी, एक फल विशेष।
**आछी**—वि० (सि०) अच्छी।
**आज**—पु० वर्तमान दिवस, आज।
**आजणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) प्रवेश करना।
**आज़त**—स्त्री० (कु०, सि०) स्वभाव, आदत।
**आट**—पु० (सि०) भूस्खलन, भूक्षरण।
**आटणा**—स० क्रि० (कु०) गिरता हुआ पानी आदि बर्तन में ग्रहण करना।
**आटा**—पु० (सि०) आटे को गुड़ के पानी में मिलाकर तैयार किया गया पकवान विशेष जो घी के साथ खाया जाता है।
**आटा**—पु० (चं०) अनाज का घास रखने का कमरा।
**आटिणा**—स० क्रि० (कु०) गिरता हुआ पानी आदि बर्तन में भरा जाना।
**आटुणा**—अ० क्रि० (मं०) दब जाना।
**आटू**—पु० (सि०) दीवार के बीच चिनाई में प्रयुक्त लकड़ी का टुकड़ा।
**आठ**—स्त्री० (कु०) छड़ी द्वारा पीटने से शरीर पर उभरी रेखा।
**आठवीं**—स्त्री० (कु०, मं०) गर्भवती स्त्री द्वारा आठवें माह में किया जाने वाला दान संबंधी संस्कार।
**आठुणा**—अ० क्रि० (कु०) दे० आटुणा।
**आठुवां**—वि० आठवां।
**आठेओ**—स्त्री० (सि०) अष्टमी।
**आठौ**—स्त्री० (सि०) आठवां।
**आड़**—स्त्री० ओट, सहारा।
**आड़की**—स्त्री० (सो०) हड्डी।
**आड़खल**—पु० (शि०) हल में लगने वाली विशेष लकड़ी।
**आड़ती**—पु० आढ़ती।
**आड़ते**—पु० (सि०) आढ़ती।

आड़बंद—पु० लंगोट।
आडर—पु० (बि०) खेतों का समूह।
आडरा—पु० (मं०) नाले में पानी का एकत्रीकरण।
आडल—स्त्री० (कां०) प्रतीक्षा।
आडळ—पु० (सि०) बाढ़।
आड़्व्याड़—स्त्री० (कां०) बिवाई।
आडा—पु० (कु०) अड्डा।
आड़ा—पु० (कु०) लकड़ी चीरने के लिए बना लकड़ी का शिकंजा।
आड़ागुआड़ा—अ० (बि०) आस-पास, आगे-पीछे।
आड़ी—स्त्री० (सि०, सो०) हल की हत्थी।
आड़ी—पु० (कां०) सहयोगी, साथी।
आड़ीखुर्स—पु० (कु०) वंशावली।
आडु—पु० पत्थर व लकड़ी को तोड़ने वाली छोटी छैनी।
आडू—पु० (सि०) आडू का फल।
आडूगाडू—पु० (मं०) झूले का खेल।
आण—स्त्री० (चं०) तीखी धार।
आण—स्त्री० (कां०) मान, मर्यादा।
आणकाण—पु० (कु०) मेदभाव।
आणख—स्त्री० कटुभाव, ईर्ष्या, बदले की भावना।
आणन—स्त्री० विधिवत् न ब्याही गई स्त्री।
आणना—स० क्रि० (कु०) लाना।
आणाजाणा—पु० आवागमन।
आणो—पु० (शि०) ओले।
आण्ह—स्त्री० (बि०) ओला, ओलावृष्टि।
आत—स्त्री० (कां०) आदत, स्वभाव।
आतेड़—पु० (मं०) बंजर।
आथका—वि० (सो०) एक मुट्ठी घास।
आथरा—पु० (सि०) पत्थर की ओखली।
आथरा—पु० गुड़ बनाने का पात्र।
आथरी—स्त्री० (कां०) कुम्हार का उपकरण जिससे वह बर्तन बनाते समय थपथपाने का कार्य करता है।
आदंगरी—स्त्री० (सि०) अदरक की गट्ठी।
आद—वि० (सि०) आधा।
आद—स्त्री० (कु०) याद।
आदड़ा—वि० (शि०, सो०) आधे के लगभग।
आदफुकया—वि० (मं०) अधजला।
आदम—वि० (मं०) प्राचीन।
आदर—पु० मान।
आदरखातर—स्त्री० मान-सम्मान।
आदरना—स० क्रि० (सि०) आदर देना।
आदरा—पु० दे० आदा।
आदरो—पु० (शि०) दे० आदा।
आदा—पु० अदरक।
आदिया—पु० (शि०) आधी बोतल शराब।
आदेश—पु० (मं०) नाथों का मुजरा।
आधकाचा—वि० (कु०) आधा कच्चा आधा पक्का।
आधव्याध—स्त्री० (कां०) आधिव्याधि।
आन—पु० (कां०) मछली का अंडा।
आनणे—पु० (शि०) धान का एक प्रकार; बिना पानी के पैदा होने वाला धान।
आनन—पु० (सि०) हल में प्रयुक्त लकड़ी की हत्थी।
आपण-पोपण—पु० (कु०) अपना-अपना, आपाधापी।
आपणा—सर्व० अपना।
आपणी-पोपणी—स्त्री० (कु०) आपा-धापी।
आपणे-बगाने—वि० (मं०) स्वजन-परिजन।
आपर—पु० (सि०) जूते के ऊपरी भाग का चमड़ा।
आपि- सर्व० (शि०) स्वयम्।
आपू—सर्व० स्वयम्।
आपोणो—सर्व० (सि०) अपना।
आफरना—अ० क्रि० (कां०) फूलना, स० क्रि० हवा भरना।
आफिए—सर्व० (सि०) स्वयम्।
आबू—पु० (सि०) उभार, शरीर की सूजन।
आमड़ी—स्त्री० (मं०) माँ।
आमड़ी—स्त्री० (कां०) आम की डाली।
आमी—स्त्री० (सि०) खट्टा पौधा।
आमे—सर्व० (शि०, सि०) हम।
आय्या-देय्या—अ० (कु०) हाय-दैया, दर्दसूचक अव्यय शब्द।
आर—पु० (कां०) जूता बनाने वाले का चमड़ा काटने का औज़ार विशेष।
आर—स्त्री० (कु०) रोटी पकाते समय बनाया जाने वाला आटे का पेड़ा।
आरखण—स्त्री० (कु०) कुहनी।
आरण—स्त्री० (कु०) धान के खेतों में कुल्या का इकट्ठा पानी।
आरति बेड़ा—पु० (सो०) दूल्हे के स्वागत के लिए तैयार किया गया एक विशेष पूजा पात्र।
आरन—पु० (सि०, शि०) ऐसा स्थान जहाँ औज़ार बनाए जाते हैं, लुहारखाना।
आरन—पु० (कां०) आडू का पौधा।
आरशू—पु० (कु०) शीशा, दर्पण।
आरसी—स्त्री० (कां०) अंगूठी में जड़ा शीशा।
आरहा—पु० (कु०) प्रत्याशा, आशा, उम्मीद।
आरा—पु० (सि०) रसोई में खोदा हुआ गहरा गड्ढा जिसमें उपले रखकर दूध गर्म करते हैं।
आरा—पु० (कां०) कलह।
आरा—पु० लकड़ी काटने का औज़ार।
आरिये—अ० (कु०) झूठ-मूठ ही, यूँही।
आरी—अ० (सि०) अपनी ओर।
आरी—स्त्री० (कु०) लकड़ी काटने का छोटा औज़ार।
आरी—स्त्री० (बि०) गूंधे आटे को रोटी के रूप में फैलाने के लिए उंगलियों से दबाने का भाव।
आरू—पु० (कु०) आडू फल।
आर्क—पु० पितरों के निमित्त भोजन।
आर्कणा—वि० (कु०) झूठा, बनावटी, कपटी।
आर्न—पु० (कु०) लुहारखाना।
आल—स्त्री० लौकी।

आळ—स्त्री० (कु०, बि०) ठहरा हुआ गहरा पानी।
आळ—पु० (चं०) वृक्षों का एक रोग जिसमें फल पकने से पहले ही गिर जाते हैं।
आळ—पु० (शि०) अरवी।
आळकोस—वि० (सि०) सुस्ती रहित।
आलख—पु० आलस्य, सुस्ती।
आलदू—पु० (सि०, शि०) घी देने का बर्तन।
आलड़ो—वि० (सि०) नर्म।
आलणा—दे० अल्हणा।
आळपटी—स्त्री० (बि०) सूई धागा रखने की थैली।
आलबलाल—पु० अव्यवस्था, ऊट-पटांग।
आलर—पु० (मं०) मसूड़ा।
आला—वि० अव्वल, प्रथम, सर्वश्रेष्ठ।
आला—वि० (कु०) दो वर्ष से नीचे की आयु वाला (शिशु)।
आला—पु० (चं०) वस्तु रखने के लिए दीवार में बनाया गया छिद्र।
आळा—अ० (बि०) वाला।
आलागर्द—वि० (शि०) आवारागर्द।
आला चांब—पु० (मं०) तांत्रिक क्रिया के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला कच्चा चमड़ा।
आळा-दोआळा—पु० अगल-बगल।
आली—वि० (कु०) ठीक से न पकी (रोटी आदि)।
आलुआ—पु० (कां०) भट्ठी का धुआं निकलने की चिमनी।
आळू—पु० आलू।
आलेरना—अ० क्रि० (चं०) आलस्य करना।
आलो—वि० (शि०) ताज़ा।
आळो—स्त्री० (सो०) एक शाक।
आल्हसी—वि० (सि०) आलसी।
आल्हा—पु० (कु०) तिनका।
आल्हा—पु० (मं०) कूड़ा।
आल्हा—पु० (बि०) मधुमक्खी का डंक; मधुमक्खी का छत्ता।
आवजी—पु० (सि०) पुराना अदरक।
आवबैठ—पु० स्वागत, पूछ।
आवभगत—स्त्री० स्वागत।
आवरा—पु० (सि०) दे० अबरा।
आवलू—पु० (सि०) आगंतुक, बाहर से आया हुआ, परदेसी।
आवा—पु० मछुआ।
आवा—पु० भट्ठी।
आवोंटी—पु० (सि०) थन।
आवोल—पु० (सि०) ठहरा हुआ गहरा पानी।
आश—स्त्री० आशा, उम्मीद।
आशकरा—वि० (कु०) आशा रखने वाला, लालची।
आशण—स्त्री० (कु०) किसी वस्तु की धार, पत्थर आदि सख्त वस्तु का उभरा हुआ तेज भाग।
आशरा—पु० (कु०) आसरा, सहारा।
आशू—पु० (सि०, शि०) आंसू।
आश्का—पु० (सि०) खाना खाने के बाद उच्चारित मंत्र।
आस—स्त्री० (चं०, शि०) आशा।
आसण—पु० (कां०) बैठने का स्थान।
आसतौ—अ० (कु०) किसी चीज़ का पहले से मौजूद होना फिर भी मांग करने का भाव।
आसरी—स्त्री० (मं०) सरसों की तरह का अनाज।
आसा—स्त्री० (कां०) आशा।
आसा—सर्व० (कु०) हम।
आसु—स्त्री० (मं०) देवता को अर्पण करने हेतु नया अन्न।
आस्ते—अ० (शि०) आहिस्ता।
आहड़—पु० (कु०) करघे पर चढ़ाने के लिए तैयार ताना।
आहण—स्त्री० (मं०) दे० आण्ह।
आहण—स्त्री० (कु०) दे० अहण।
आहला—दे० अल्हणा।
आहिदू—पु० (कु०) यमदूत।
आहो—अ० (शि०) हां।
आहोत—स्त्री० (मं०) आहुति।
आहोती—स्त्री० (मं०) आहुति।

## इ

इ—देवनागरी वर्णमाला का तीसरा स्वरवर्ण। इसका उच्चारण स्थान तालु है।
इंख—स्त्री० (शि०) ईख।
इंगरना—अ० क्रि० देवशक्ति से शरीर का कांपना; आवेश में हिलना।
इंगरी—अ० (सि०) इधर से।
इंगिदा—अ० (शि०) दे० इंगरी।
इंगिदा-तिंगिदा—अ० (शि०) इधर-उधर।
इंगी—अ० (शि०) इधर।
इंच—पु० नाप, फुट का बारहवां भाग।
इंचिये—अ० इधर से।
इंची—अ० (कां०) दे० इंचिये।
इंचीटेप—पु० मापक, फीता।
इंछ—स्त्री० (शि०) देवता के प्रसाद की इच्छा।
इंज—अ० (कां०) ऐसे।
इंजण—पु० भाप, बिजली आदि से चलने वाला यंत्र।
इंजनियर—वि० (शि०, कां०) इंजीनियर, अभियंता।
इंडरा—पु० (कां०, कु०) कुलथ, मोठ या उड़द के आटे का पकवान।
इंतकाल—पु० मृत्यु। संपत्ति का हस्तांतरण।
इंतजाम—पु० प्रबंध, उपाय।
इंतहा—स्त्री० अंत, सीमा।
इंदर—पु० इंद्र देवता।
इंदरकीला—पु० (कु०) भृगुतुंग की पृष्ठ भूमि में इंद्रासन पर्वत।
इंदरजाल—पु० माया बंधन, जादू का खेल।

**इंदरधनस**—पु० (मं०) इंद्रधनुष, सतरंगी आकाश रेखा।
**इंदरार**—पु० (सो०) कुलथ का पकवान।
**इंदरिया**—स्त्री० इंद्रिय।
**इंदी**—अ० (शि०) यहां।
**इंदे**—पु० (सो०) माप में तैयार की गयी कुलथ की छोटी रोटी।
**इंद्री**—स्त्री० इंद्रिय।
**इंधन**—पु० जलाने की लकड़ी।
**इंबली**—स्त्री० (कु०) इमली।
**इंबू**—स्त्री० (शि०, कु०) नर्म ऊन, ऊन विशेष।
**इंयां**—अ० (मं०) ऐसे, इस प्रकार।
**इंयू**—पु० (शि०, सि०) हिम।
**इंयो**—पु० (शि०) दे० इंयू।
**इंह**—अ० (चं०) इस प्रकार से।
**इंहां**—अ० दे० इंहयां।
**इंहयां**—अ० (कां०, चं०) ऐसे।
**इ**—सर्व० (सो०) यह।
**इआं**—अ० (कु०) ऐसे।
**इआ**—अ० (चं०) इस।
**इआबाद**—पु० (शि०) झगड़ा।
**इउआं**—सर्व० (कु०) ये।
**इए**—अ० (सि०) यही।
**इऐ**—अ० (सि०) प्रशंसा सूचक शब्द।
**इओं**—अ० (सि०) अरी, पत्नी के लिए प्रयुक्त संबोधन।
**इक**—वि० एक।
**इकअख**—वि० एकाक्ष।
**इक-इक**—वि० एक-एक, प्रत्येक।
**इकटक**—अ० अनिमेष, निरंतर दृष्टि।
**इकताल**—अ० (मं०) एक जैसा, तालमेल।
**इकताली**—वि० इकतालीस।
**इकती**—वि० इकतीस।
**इकदम**—अ० एकदम, तुरंत।।
**इकम**—वि० एक।
**इकरार**—पु० अनुबंध।
**इकल**—वि० (चं०) अकेला।
**इकलागा**—अ० (चं०) एक साथ, निरंतर।
**इकलाचा**—वि० (चं०) अकेला।
**इकांत**—वि० एकांत।
**इकादिहा**—अ० (चं०) एक जैसा।
**इकारा**—वि० (चं०) अकेला।
**इकासी**—वि० इक्यासी।
**इकाहट**—वि० इकसठ।
**इकिये**—सर्व० (चं०) एक ने।
**इकूंजा**—वि० इक्यावन।
**इकूणा**—वि० (चं०) इक्का-दुक्का।
**इकूहरा**—वि० (चं०) एक ही परत वाला, इकहरा।
**इकोइक**—वि० एक मात्र।
**इकोतरा**—वि० (चं०) एक-अधिक सौ।
**इकोदेआ**—वि० (कां०) एक जैसा।
**इक्क**—वि० (चं०) दे० इक।
**इक्कड़**—वि० एक।
**इक्कड़**—पु० (मं०) गिद्धा तथा भजनों की एक ताल।
**इक्कड़-दुक्कड़**—वि० (कां०) एक-दो।
**इक्का**—पु० (मं०) दे० अक्का।
**इक्की**—वि० इक्कीस।
**इक्कूहरा**—वि० (चं०) इकहरा।
**इक्खरी**—स्त्री० (मं०) सिर की रूसी।
**इक्खांसी**—वि० (चं०) एक ओर से पकाई हुई (रोटी)।
**इखर**—स्त्री० (कु०) बालों में सिर की खुश्की से निकले सफेद कण।
**इगला**—पु० (चं०) मक्खन से घी बनाते समय मेथी-आटा आदि जो घी के नीचे रह जाता है।
**इगलो**—पु० (शि०) भुना हुआ चौलाई का दाना।
**इचिणा**—अ० क्रि० (कु०) बच्चों द्वारा पैसों या अखरोटों के खेल में बाजी आरंभ करना।
**इची**—वि० (कु०) एक।
**इचे**—अ० (कु०) हे, (संबोधन), आह्वान के लिए प्रयुक्त शब्द यथा 'इचे देवा' (हे भगवान्)।
**इच्छणा**—स० क्रि० मनौती करना, वचन देना।
**इच्छरे जांदें**—पु० (मं०) अतिथि।
**इच्छाणा**—स० क्रि० (मं०) चाहना।
**इच्छिया**—स्त्री० (कु०) इच्छा।
**इच्छे**—अ० (शि०) यहां।
**इच्छेया**—स्त्री० (कां०) इच्छा, मनौती।
**इछ**—अ० क्रि० (कु०) आ (केवल धातु रूप में)।
**इज**—स्त्री० माता।
**इजणो**—सर्व० (सि०) यह, ऐसे।
**इज़्त**—स्त्री० (शि०) आदर।
**इजा**—सर्व० (सि०) यह व्यक्ति (विशेष)।
**इजी**—स्त्री० (चं०) माता।
**इजेहा**—वि० (कां०) ऐसा।
**इझ**—अ० (कु०) गत दिवस।
**इट**—स्त्री० ईंट।
**इटका**—वि० (कु०) सख्त गुंधा हुआ (आटा)।
**इट-सिट**—स्त्री० (कां०) खट्टे फल वाली झाड़ी।
**इटिणा**—अ० क्रि० (कु०) अंदर ही अंदर घुट जाना।
**इठलाणा**—अ० क्रि० (मं०) नखरा करना।
**इठी**—अ० (चं०) यहां।
**इड्डर**—स्त्री० (चं०) धान के खेत में उगने वाला जंगली घास।
**इण**—स्त्री० (कु०) दे० ईण।
**इणसा**—पु० कंबल, आच्छादन, ढक्कन।
**इणा**—वि० (शि०) विकलांग।
**इणागिणा**—वि० (चं०) इना-गिना।
**इणो**—वि० (शि०) ऐसा।
**इत**—अ० (कां०) यहां।
**इतखा**—अ० (कां०) इस ओर।
**इतणा**—वि० (चं०, कु०) इतना।

**इतणीक**—वि० (बि०) थोड़ी सी।
**इतमीनान**—पु० (चं०) तसल्ली।
**इतराज**—पु० (शि०) विरोध, आपत्ति, एतराज़।
**इतराणा**—अ० क्रि० (चं०) इतराना, इठलाना।
**इतलाह**—स्त्री० (चं०) सूचना।
**इतां**—अ० (चं०) इधर।
**इता**—अ० (सि०) यहां।
**इति**—स्त्री० अंत, समाप्ति।
**इतुणा**—अ० (चं०) इतना।
**इते**—अ० (चं०) यहां।
**इतैग**—अ० (कु०) यहां तक।
**इतो**—अ० (सि०) यहां पर।
**इत्तर**—पु० इत्र, सुगंध।
**इत्तेअ**—दे० इतो।
**इत्यु/थे—अ० (कां०) यहां, इधर।**
**इथ**—अ० (शि०) यहां।
**इथूड़ा**—वि० (चं०) इतना।
**इथोड़े**—दे० इतो।
**इदा**—सर्व० (कां०) इसका।
**इदारा**—पु० (मं०) क्षेत्र, भाग।
**इदी**—अ० (चं०) यहां, इस ओर।
**इदेहा**—अ० (चं०) ऐसा, एतादृश।
**इदों**—अ० (शि०) यहीं।
**इधाका**—अ० (चं०) इस ओर का।
**इधी**—अ० यहां।
**इधे**—अ० (सि०) इधर।
**इनदेहा**—अ० (सि०) इधर को, थोड़ा सा आगे।
**इनारो**—पु० (शि०) अंधेरा। दे० निहारा।
**इनियें**—अ० इस ओर।
**इनी**—सर्व० इसने।
**इन्नें**—सर्व० (शि०) इन्होंने।
**इन्हा**—सर्व० इन्हें।
**इबजू**—पु० (कु०) किसी दूसरे व्यक्ति के स्थान पर उसके आग्रह पर काम (विशेषत: बेगार) करने वाला व्यक्ति।
**इब्बे**—अ० अभी।
**इमका**—अ० इस समय का।
**इमा**—अ० (मं०) अब।
**इमे**—अ० (मं०) अब, अभी।
**इमीभर**—अ० (सि०) कम मात्रा में, रत्तीभर।
**इमूल**—स्त्री० (चं०) खट्टा घास।
**इयां**—अ० इस प्रकार, ऐसे, यों ही।
**इयां**—सर्व० (सि०) इस (केवल स्त्रीवाचक रूप)।
**इयांही**—अ० (चं०) ऐसे ही।
**इये**—अ० (सि०) यही।
**इयों**—वि० (शि०) ऐसा।
**इयो**—पु० (शि०) हृदय।
**इरख**—स्त्री० (शि०) ईर्ष्या।
**इरसा**—स्त्री० (मं०) ईर्ष्या।
**इरावती**—स्त्री० रावी।
**इर्था**—अ० (सि०) यही।
**इल**—स्त्री० (चं०) चील।
**इलकण**—स्त्री० (कु०) गिद्ध।
**इलकना**—अ० क्रि० (सो०) हिलना।
**इलड़ी-खिलड़ी—स्त्री० (कु०) टाल-मटोल।**
**इलण**—दे० इलकण।
**इलणा—पु० (सो०) भूकंप।**
**इलणी**—स्त्री० (चं०) चितकबरी चील, क्षेमकरी।
**इलत**—स्त्री० बुरी आदत।
**इलती**—वि० शरारती, बुरी आदत वाला।
**इलम**—पु० (कु०, चं०) विद्या, तरीका।
**इलमान**—अ० (कु०) तुरंत।
**इलाका**—पु० क्षेत्र।
**इलोत**—स्त्री० (शि०) बुरी आदत।
**इशाके**—अ० (शि०) इधर को।
**इशाकेख**—अ० (सि०) थोड़ा सा आगे।
**इशाड़ा**—अ० (सि०) इस तरह, इतना।
**इशा**—अ० (सो०) ऐसा।
**इश्ना**—अ० क्रि० (सो०) बुझना।
**इस**—पु० (शि०) दिन, दिवस; सूर्य।
**इसड़ी**—अ० (सि०) इधर से।
**इसतरी**—स्त्री० औरत।
**इसतरी**—स्त्री० गरम लोहा।
**इसी/से—अ० (कु०, शि०) इधर।**
**इसीए**—अ० (कु०) यहां से।
**इस्तबल**—पु० (चं०) घोड़े बांधने का स्थान।
**इस्सर**—पु० (मं०) ईश्वर।
**इहे**—अ० (शि०) यहाँ।
**इहो**—अ० (कु०) ऐसा, यही।
**इहज़**—अ० (कु०) दे० हिज़।
**इहणा**—अ० क्रि० (कु०) आना।

## ई

**ई—देवनागरी वर्णमाला का चौथा स्वरवर्ण, इ का दीर्घ रूप।**
**ईंए**—सर्व० (सि०) इसने।
**ईंग**—पु० (शि०) हींग।
**ईंड**—पु० (सि०) एरंड।
**ईंडरा**—पु० (सि०) कुलथ की दाल का पकवान।
**ईंढा**—स्त्री० (कु०) ठेस पहुंचाने वाली बात।
**ईंदाले**—अ० (कु०) इधर, यहाँ।
**ई:क**—स्त्री० (सि०) छाती, पसली।
**ई:कदू**—पु० (सि०) बच्चे की छाती।
**ई:छ**—स्त्री० (सि०) इच्छा, किसी देवता की प्रसन्नता के लिए

की गई मनौती।
**ई**—सर्व० (सि०) यह।
**ई**—स्त्री० (कु०) मां, माता।
**ईआ**—स्त्री० (कु०) मां, माता।
**ईऊ**—अ० (च०) इस प्रकार।
**ईए**—अ० (सि०) यही।
**ईखनी**—सर्व० (मं०) कोई।
**ईज**—स्त्री० (चं०) चमगादड़।
**ईज़**—स्त्री० (मं०, कु०) मां, माता।
**ईट**—स्त्री० (कां०) दे० इट।
**ईटा**—वि० (शि०) बिना खमीर का आटा।
**ईड**—स्त्री० (चं०) चमगादड़।
**ईण**—स्त्री० (कु०) गिद्ध।
**ईणा**—अ० क्रि० (चं०) आना।
**ईणो**—वि० (शि०) ऐसा।
**ईणोत्र**—अ० (चं०) आने का समय।
**ईतिया**—अ० (सि०) यहां से, इधर से।
**ईन्हारो**—पु० (सि०) अंधेरा।
**ईयोठाई**—अ० (शि०) इस जगह पर।
**ईरख**—स्त्री० (बि०) ईर्ष्या।
**ईरिदा**—अ० (शि०) बायीं ओर।
**ईल**—स्त्री० (बि०) गिद्ध।
**ईलक**—स्त्री० (कु०) दे० 'इलकण'।
**ईश**—पु० (मं०) भगवान्।
**ईशर**—पु० ईश्वर।
**ईशरालो**—पु० (शि०) देवगीत।
**ईशा**—अ० (सि०) ऐसा, ऐसे।
**ईश्वरी**—स्त्री० (मं०) देवी।
**ईसर**—पु० (कां०) ईश्वर।
**ईसै**—अ० (कु०) इस ओर, इधर।
**ईहां**—अ० (मं०) ऐसे।

## उ

**उ**—देवनागरी वर्णमाला का पांचवां स्वरवर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
**उंआंरंढा**—पु० सिर पर पैसे घुमाने की क्रिया।
**उंआरा**—सर्व० (चं०) उनका।
**उंइंसा**—अ० (सि०) तनिक।
**उंगळ**—स्त्री० (चं०) अंगुलि। अ० एक अंगुलि के बराबर माप।
**उंगळी**—स्त्री० अंगुलि।
**उंगाई**—स्त्री० (सि०) नींद, ऊंघ।
**उंगाल**—पु० (शि०) गोद, अंक।
**उंघ**—दे० ऊंघ।
**उंघणा**—अ० क्रि० नींद में झूमना, झपकी लेना।
**ऊंघेई**—स्त्री० (चं०) अंगुलि में फटी बिवाई।
**उंज**—अ० (कु०, चं०) वैसे।
**उंजळ**—स्त्री० (चं०) अंजलि।
**उंझ**—अ० (कु०) ''ले ले'', ''पकड़ ले'' आदि भावाभिव्यक्ति के लिए अव्यय शब्द।
**उंडला**—वि० (चं०) ढलानदार।
**उंडणा**—अ० क्रि० (कु०) चलना।
**उंडे**—अ० (कु०) ऐसे ही, यूं ही।
**उंदड़**—पु० (शि०) अधःपतन।
**उंदळ**—वि० दो बाजू में समा जाने योग्य (बोझ आदि)।
**उंदळा**—वि० निचला, कम ऊंचाई वाला।
**उंदा**—अ० नीचे, उतराई की ओर।
**उंदे**—अ० (सो०) नीचे।
**उंदे-उंदे**—अ० बैलों को नीचे उतारने के लिए संबोधन।
**उंघल**—वि० (चं०) अंजलि, करसंपुट, दो हाथ भर कर।
**उंघा**—वि० (चं०) निम्न, झुका हुआ।
**उंघा**—वि० उलटा।
**उंघे**—अ० (सि०) उधर।
**उंघे**—अ० (कु०) नीचे।
**उंघेरना**—स० क्रि० (चं०) उड़ेलना, उलट देना।
**उंबर**—पु० (चं०) छाती का ऊपरी भाग।
**उंबला**—वि० उलटा।
**उंबलाका**—पु० (कु०) उलटा लटकने वाला कौआ।
**उंबला-सुंबला**—अ० (कु०) उलटा-सीधा।
**उंबलो**—वि० (शि०) नटखट।
**उंमल**—वि० (सो०) होनहार।
**उंलगा**—पु० (कां०) मनकों वाली डोरी।
**उंह**—स्त्री० (मं०) हुंकार।
**उंह**—अ० (कु०) स्वीकृति सूचक शब्द।
**उंहज**—स्त्री० (बि०) खिड़की।
**उंहा**—अ० वैसे ही।
**उ**—अ० (कु०) किसी को गुप्त रूप से बुलाने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**उआग**—पु० (सि०) दे० ओग।
**उआरे**—अ० (चं०) इस ओर।
**उआंज**—पु० बलि देने के उद्देश्य से किसी वस्तु या पक्षी को सिर के ऊपर से फेर देने का भाव।
**उआंजणा**—स० क्रि० (ह०) पवन गति में अनाज से कूड़ा अलग करना।
**उआंज़णा**—स० क्रि० (कु०) जुदा करना, अलग करना।
**उआंज़णा**—स० क्रि० (कु०) 'भेखळ' की टहनी से कटोरी में रखे तेल को घोलते हुए और मंत्र उच्चारण करते हुए किसी रोगी का उपचार करना।
**उआंस**—स्त्री० अमावस्या।
**उआ**—पु० (चं०) आवां, मिट्टी के बर्तन पकाने का भट्ठा।
**उआई**—स्त्री० (कु०) प्रसिद्धि।
**उआका**—वि० (कु०) सीधा-सादा, हक्का-बक्का।
**उआका**—पु० (कां०) किंवदंती, अफवाह।
**उआज**—स्त्री० आवाज़।

**उआड़ना**—स० क्रि० (बि०) आरंभ करना।
**उआण**—पु० (कु०) लता को दिया जाने वाला लकड़ी का सहारा।
**उआथणा**—अ० क्रि० (कु०) पशुओं का गर्भपात होना।
**उआन**—पु० बैठने का कमरा।
**उआबाई**—स्त्री० व्यर्थ, उलटी-सीधी बात।
**उआर**—अ० (कु०) इस ओर।
**उआरणा**—पु० (कां०) दे० उंआरंडा।
**उआरला**—वि० इस ओर का।
**उआरिना**—स० क्रि० (कु०) शुभावसर पर पैसा वारा जाना।
**उआर्ना**—पु० (कु०) देवी-देवता या वर-वधू के सिर पर घुमा कर फेंका जाने वाला बलि का बकरा, मेढ़ा, कोई पदार्थ और पैसे आदि।
**उआल**—स्त्री० (कु०) उतराई।
**उआस**—पु० (कु०) घोंसला, वास।
**उइण**—वि० (सि०) बांझ (बकरी आदि)।
**उइयां**—अ० ऐसे ही।
**उई**—सर्व० (कु०) इस।
**उईजेबो**—अ० (सि०) थोड़ा सा।
**उकड़ा**—पु० (मं०) रुष्ट।
**उकड़ा**—वि० (कां०) टेढ़ा, कठोर।
**उकड़ूं**—पु० (मं०) घुटने जोड़ कर बैठने का ढंग।
**उकणा**—अ० क्रि० (कां०) अवसर चूक जाना, खेल में हारना।
**उकणा**—अ० क्रि० (चं०) अधीर होना।
**उकतणा**—अ० क्रि० थकना, तंग होना।
**उकता**—अ० पूरा हिसाब।
**उकती**—स्त्री० युक्ति, उपाय, तरकीब।
**उकरना**—स० क्रि० (कु०) धागों का गोला बनाना।
**उकरना**—स० क्रि० निशान बनाना।
**उकरना**—स० क्रि० (कां०) घड़े से पानी निकालना।
**उकरिना**—स० क्रि० (कु०) धागों का गोला बनाया जाना।
**उकलणा**—अ० क्रि० (कां०) खेतों से घास-फूस का नष्ट होना।
**उकळना**—अ० क्रि० (कु०, चं०) चढ़ना।
**उकला**—पु० (शि०) मशाल।
**उकळिना**—अ० क्रि० (कु०) ऊपर चढ़ा जाना।
**उकसाणा**—स० क्रि० (मं०) भड़काना, उत्तेजित करना।
**उकसावणों**—स० क्रि० (शि०) उकसाना।
**उकाब**—पु० (चं०) बाज़।
**उकाळ**—वि० उकसाने वाला।
**उकीरना**—स० क्रि० (चं०) घास के पूले को खोलना, उत्कीर्ण करना।
**उकीरना**—स० क्रि० पत्थर या लकड़ी पर किसी की मूर्ति या चित्र बनाना।
**उकैहणा**—अ० क्रि० (चं०) चढ़ना।
**उकोत**—पु० (सि०) पाखंडी।
**उक्फाळ**—पु० (ह०) नाश।
**उक्फलमत**—स्त्री० (ह०) विपरीत बुद्धि।
**उक्का**—वि० सारा, समूचा।
**उक्का**—वि० (कां०) चुकता।
**उक्खल**—पु० ओखली।
**उक्खळ**—वि० अति सीधा-सादा (लाक्षणिक अर्थ में)।
**उक्खळ**—पु० (सो०) मोटे चावल की एक किस्म।
**उक्खा**—अ० (बि०) उस तरफ।
**उक्खू**—अ० (बि०) बच्चे को हंसाने के लिए प्रयुक्त वात्सल्य बोधक शब्द।
**उक्म**—पु० (सो०) हुक्म।
**उखीखणा**—स० क्रि० (चं०) मिट्टी हटा कर जगह साफ करना।
**उखड़ना**—अ० क्रि० (मं०) टूट कर निकलना।
**उखड़ू**—दे० उकड़ूं।
**उखड़े**—वि० (शि०) बंजर, ऊसर।
**उखमुख**—अ० (चं०) आदि-अंत।
**उखरना**—अ० क्रि० (कु०) निर्मल होना, मैल निकलना।
**उखरा**—पु० (शि०) जूं।
**उखरिना**—अ० क्रि० (कु०) स्वच्छ किया जाना, मैल का निकल जाना।
**उखलटू**—पु० (सि०) छोटी ओखली।
**उखली**—स्त्री० (ह०) भूमिगत पत्थर या लकड़ी की ओखली।
**उखलू**—पु० (सि०) काले रंग का जंगली फल।
**उखाड़णो**—स० क्रि० (शि०) उघेड़ना।
**उखाण**—स्त्री० आख्यान, कहावत।
**उखाणना**—स० क्रि० (चं०) उन्मूलन करना।
**उखाह**—पु० (चं०) आटा मोटा पीसने के लिए घराट के ऊपर वाले पाट की थोड़ी सी उठान।
**उखाहण**—स्त्री० (चं०) जूठन, पशुओं का जूठा घास।
**उखिल**—पु० (सि०) चावल की एक किस्म।
**उखुड़नो**—स० क्रि० (शि०) उखाड़ना।
**उखोड़**—पु० (सि०) अखरोट।
**उखोल**—पु० (सि०) ओखली।
**उग**—पु० (चं०) दे० ओग।
**उगड़ना**—स० क्रि० (सो०) बड़े पात्र से छोटे पात्र में किसी वस्तु को उड़ेलना।
**उगड़ना**—अ० क्रि० (सि०) बिखरना, टूटना।
**उगड़ा**—वि० (सि०, सो०) खुला, निखरा हुआ, साफ।
**उगणा**—अ० क्रि० अंकुरित होना, जमना।
**उगणा**—अ० क्रि० (मं०) घृणा करना।
**उगणा**—अ० क्रि० (सो०) तंग आना।
**उगम**—पु० (मं०) सूर्य या चाँद निकलने से पहले का प्रकाश।
**उगलणा**—अ० क्रि० साफ होना।
**उगळना**—स० क्रि० उलटी करना।
**उगळना**—स० क्रि० बात बताना, भेद खोलना।
**उगसणा**—स० क्रि० (सो०) कपड़े धोते समय कपड़े को साबुन वाले पानी में हलके-हलके दबाना।
**उगा**—दे० उगू।
**उगाठणा**—स० क्रि० (चं०) पशु के मुख में कोई वस्तु जबर्दस्ती

डालना।
**उगाड़ना**—स० क्रि० (शि०, सि०) निकाल देना, खोल देना।
**उगाबाई**—स्त्री० (कु०) किंवदंती, अफवाह।
**उगार**—पु० (सि०) कोयला।
**उगारना**—स० क्रि० (सि०) उतारना।
**उगाल**—पु० (चं०) जुगाली।
**उगालना**—स० क्रि० (चं०) निकालना।
**उगाह**—पु० (चं०) साक्षी, गवाह।
**उगाह**—पु० (चं०) उन्नति, बढ़ावा।
**उगाहणा**—स० क्रि० (चं०) बढ़ाना, बढ़ावा देना।
**उगाही**—स्त्री० वसूली।
**उगाही**—स्त्री० (चं०) गवाही, साक्ष्य।
**उगीरना**—स० क्रि० (चं०) डराना, मुक्का दिखाना।
**उगू**—वि० (कु०) समाज से बहिष्कृत।
**उगेरना**—स० क्रि० (चं०) दे० उगीरना।
**उगोलणो**—अ० क्रि० (शि०) वंश का नाश होना।
**उगोली**—स्त्री० (सि०) अन्न भंडार का स्थान।
**उग्गूं**—अ० (कां०) वात्सल्य बोधक शब्द।
**उग्ग**—पु० (कां०) हल का पुर्जा विशेष।
**उग्राहका**—पु० (चं०) रजवाड़ों के समय लगान वसूल करने वाला अधिकारी।
**उग्राहणा**—स० क्रि० (चं०) इकट्ठा करना, वसूल करना।
**उग्राही**—स्त्री० (चं०) एकत्रित वस्तु।
**उग्राही**—पु० (चं०) लोक गायक व वादक।
**उघड़ना**—अ० क्रि० (मं०, कु०) अपराध स्वीकारना।
**उघड़ा**—वि० (चं०) खुला, प्रत्यक्ष, नग्न।
**उघण**—स्त्री० (कु०) बहुमंज़िला मकानों में भंडार आदि के लिए बनी मध्यवर्ती मंज़िल।
**उघरना**—स० क्रि० (कां०) घड़े को टेढ़ा करके पानी निकालना।
**उघलणा**—स० क्रि० (कु०, चं०) अवशेष रहना, बचा रहना, बच जाना।
**उघळना**—अ० क्रि० (कु०) बाकी रह जाना, पर्याप्त होना।
**उघसुघ**—पु० (कां०) पता, ठिकाना।
**उघाई**—स्त्री० (शि०) तंद्रा।
**उघाड़णा**—स० क्रि० (चं०) खोलना, ढक्कन आदि उतारना, आवरण रहित करना।
**उघार**—स्त्री० (चं०) बोने से पहले खेत तैयार करने की क्रिया।
**उघारणा**—स० क्रि० (चं०) बोने के लिए पहला हल चलाना।
**उघीरणा**—स० क्रि० (चं०) पानी उड़ेलना, निकालना।
**उचकंजू**—पु० (कु०) ऊपर को उछलने का भाव।
**उचकणा**—अ० क्रि० ऊंचे होना, ऊंचे होकर झांकना।
**उचकणो**—अ० क्रि० (शि०) बिदकना, उछलना।
**उचक्का**—वि० (कां०, चं०) चालाक, तिकड़मी।
**उचट**—वि० (कु०) शरारती।
**उचटणा**—स० क्रि० (चं०) खोलना।
**उचटणो**—अ० क्रि० (शि०) उचाट होना।
**उचटा**—पु० (सि०) ऊंची वस्तु।
**उचड़ना**—अ० क्रि० सूख कर अलग होना, टूटना।
**उचड़ना**—अ० क्रि० (कु०) उखड़ना, दीवार आदि का पलस्तर उखड़ना।
**उचड़ा**—वि० (सि०) थोड़ा सा ऊंचा।
**उचणु**—पु० (कु०) बाल उखाड़ने का छोटा सा यंत्र।
**उचमा**—पु० (शि०) पुतले।
**उचरना**—अ० क्रि० (मं०) बोलना।
**उचलना**—अ० क्रि० (शि०) थोड़ा ऊपर उठना।
**उचला**—पु० (सो०) चूल्हे पर बर्तन के नीचे रखा जाने वाला पत्थर।
**उचला**—पु० (शि०) छाला।
**उचा**—पु० (चं०) चिमटा।
**उचाई**—स्त्री० ऊंचाई।
**उचाट**—पु० (मं०) उदास।
**उचाटन**—पु० (मं०) जादू-टोने द्वारा विरक्ति पैदा करने का भाव।
**उचाड़ना**—स० क्रि० खाल उतारना, छिलके उतारना।
**उचाणा**—स० क्रि० (चं०) उठाना। संभाल कर रखना।
**उचारन**—पु० (मं०) उच्चारण।
**उचारना**—स० क्रि० (मं०) बोलना, उच्चरित करना।
**उचिच**—पु० (कु०) मणिकर्ण के पास का स्थान जहाँ चाँदी की खान है।
**उचेट**—वि० (चं०) चमड़ी रहित, छिलका रहित।
**उचेटणा**—स० क्रि० (चं०) छिलका निकालना; चमड़ी या खाल अलग करना।
**उच्चड़ना**—अ० क्रि० (कां०) खाल या चमड़ी का अलग होना।
**उच्चड़ा**—वि० ऊंचा।
**उच्चण गिट्टी**—स्त्री० पाँच छोटे गोल पत्थरों से खेला जाने वाला खेल।
**उच्चा**—वि० (कां०) ऊंचा।
**उच्चान**—स्त्री० (चं०) ऊंचाई; मचान।
**उच्ची**—स्त्री० (कु०) खेलने की गुल्ली।
**उच्चू**—पु० (कां०) आंख आदि से बाल या तिनका निकालने वाला छोटा चिमटा।
**उच्छकुडु**—वि० (शि०) घुटनों के बल।
**उच्छटा**—वि० ऊंचा।
**उच्छली**—स्त्री० (शि०) उलटी, कै।
**उच्छलू**—पु० (कु०) छोटे बच्चे की दूध की उछाल या उलटी।
**उच्छव**—पु० (कु०) त्योहार, उत्सव।
**उछगणा**—स० क्रि० (कु०) उलटी करना।
**उछटी**—(कु०) ऊंची।
**उछड़बाल**—पु० (कां०) बच्चे की बिना सहारे खड़े होने की क्रिया।
**उछलो**—पु० दे० उच्छलू।
**उछाड़**—पु० (चं०) पितृ तर्पण या देव अर्पण के समय दिया जाने

वाला छोटा कपड़े का टुकड़ा।
**उछाणो**—पु० (सि०) सूर्यास्त होने का समय।
**उछात्र**—पु० (चं०) वृक्ष की छाया वाला भाग।
**उछालणा**—स० क्रि० (चं०) उगलना।
**उछाला**—पु० (कां०) गरमी के कारण शरीर पर निकलने वाली फुंसियां।
**उछाली**—स्त्री० (चं०) दे० उच्छलू।
**उछेका**—पु० (चं०) संबंध-विच्छेद, अलग बैठने का भाव।
**उजंग**—पु० (चं०) जोश, मद।
**उज**—अ० (कु०) दे० उजे।
**उजकड़ना**—स० क्रि० प्रहार करना; धक्का देना, छेड़ना।
**उजकणा**—स० क्रि० तंग करना, उकसाना।
**उज़कणा**—अ० क्रि० (कु०) उत्सुक होना।
**उजका**—पु० (सि०) धमाका होने पर अस्त-व्यस्त; जमीन में हुआ धमाका।
**उजगणा**—अ० क्रि० (चं०) थोड़ा आगे बढ़ना।
**उजड़**—पु० (कां०) बंजर ज़मीन।
**उजड़खेड़ा**—पु० (कु०) वीरान बस्ती।
**उजड़णा**—अ० क्रि० (कां०) नष्ट होना, उजड़ना।
**उजड़ा**—पु० (सि०) बर्तन टांगने की रस्सी।
**उजड़ू**—पु० चारे का घास।
**उज़ड़ू**—पु० (कु०) उल्लू; उल्लू के बोलने का शब्द जो बुरा माना जाता है; बरबादी, सर्वनाश।
**उजड्ड**—वि० गंवार, मूर्ख, जड़।
**उजणो**—वि० (कु०) जागृत।
**उजबक**—वि० (कां०) सूझ-बूझ रहित।
**उजर**—पु० (चं०) उड़ान।
**उज़र**—स्त्री० विरोध; आपत्ति, एतराज़।
**उज़रत**—स्त्री० मज़दूरी।
**उजरती**—वि० मज़दूरी पर काम करने वाला।
**उज़रदार**—पु० आपत्तिकर्ता।
**उजरना**—स० क्रि० (सो०) प्राप्त होना।
**उजरा**—पु० (शि०) दे० ओजरा।
**उजरो**—वि० (शि०) बहुत खाने वाला।
**उजला**—वि० उज्ज्वल, सफेद, चमकदार।
**उजलोपख**—पु० शुक्ल पक्ष।
**उज़ा**—पु० (मं०) अनाज का उधार।
**उजाड़**—वि० उजड़ा हुआ, वीरान।
**उजाड़ना**—स० क्रि० (चं०) ऊपर उठा कर फेंकना।
**उजाड़ना**—स० क्रि० पशुओं द्वारा फसल को नष्ट किया जाना।
**उजाडू**—वि० (कां०) चोरी से दूसरों की खेती उजाड़ने वाला।
**उजार**—पु० औज़ार।
**उजारिणो**—अ० क्रि० (शि०) अंगड़ाई लेना।
**उज़ालणो**—स० क्रि० (शि०) गहने चमकाना।
**उज़ालो**—पु० (शि०) प्रकाश, उजाला।
**उजावला**—वि० (सि०) फुर्तीला।
**उजीऐ**—अ० (कु०) ऊपर से।
**उजीह**—अ० (कु०) ऊपर को।
**उजुए**—अ० (सि०) विश्वास के साथ।
**उजुणा**—अ० क्रि० (सो०) जूझना, लड़ने के लिए उद्यत होना।
**उजू**—अ० (कु०) बच्चे को वर्जित करने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**उजे/जै**—अ० (कु०) ऊपर।
**उजो**—सर्व० उसको। दे० उइजो।
**उजोरिणो**—अ० क्रि० (शि०) अंगड़ाई लेना।
**उज्ज**—पु० उत्साह, उद्यम। ऊर्जा।
**उज्जड़**—दे० उजड़।
**उज्जड़ना**—अ० क्रि० (शि०) फोड़े होना।
**उज्जती**—वि० (शि०) शरारती।
**उज्जरना**—अ० क्रि० दे० उजरना।
**उज्जल**—वि० दे० उजला।
**उझ**—अ० (कु०) ऊपर।
**उझकणा**—अ० क्रि० (मं०) बिदकना।
**उझकीजात**—स्त्री० (मं०) ऊंची जाति।
**उझड़ना**—अ० क्रि० (चं०) फल समाप्त होना।
**उझड़ना**—अ० क्रि० (कु०) नाराज़ होना।
**उझड़ू**—पु० (बि०) दे० उज़ड़ू।
**उझला**—वि० (कु०) ऊपर का।
**उझाए**—स्त्री० (कु०) गौ।
**उझाट**—वि० (कु०) शरारती।
**उझी**—स्त्री० (कु०) ऊपर का इलाका; व्यास नदी का ऊपरी क्षेत्र।
**उझे/झै**—अ० (मं०) दे० उजे/जै।
**उट**—पु० (मं०) ऊंट।
**उटकंडा**—पु० 'पुठकंडा', एक जड़ी-बूटी विशेष जिसके कांटे उलटे होते हैं।
**उटकणा**—अ० क्रि० उछलना। क्रुद्ध होना।
**उटकणी**—स्त्री० हथकरघा के ताने के धागे को ऊपर नीचे खींचने वाला विशेष उपकरण।
**उटकरू**—वि० (कु०) कच्चा मुजारा।
**उटकाण**—स्त्री० (चं०) उछलने की क्रिया।
**उटकाल**—स्त्री० (चं०) छलांग।
**उटणा**—स० क्रि० (सि०) अधिक खाना।
**उटणा**—अ० क्रि० (सि०) काम में जुटना।
**उटणी**—स्त्री० (मं०) ऊंटनी।
**उटणो**—स्त्री० (शि०) दे० उटणी।
**उटपटांग**—वि० (कु०) मनगढ़ंत, व्यर्थ, उलटा-सीधा, बेतुका, असंगत।
**उटमला**—वि० (सि०) उलटा।
**उटवाण**—पु० (मं०) ऊंट वाला।
**उटा**—अ० (सि०) नीचे।
**उटाड़ा**—वि० (मं०) उलटा।
**उटादल**—पु० (चं०) हल का वह निचला भाग जहाँ लोहा नहीं लगता।
**उटाल**—पु० (चं०) खोज, छानबीन।
**उटालह**—पु० (चं०) भेड़-बकरियों की गिनती करने की क्रिया।
**उटास**—स्त्री० (चं०) ऊंचाई।

**उटाह**—स्त्री० (चं०) ऊपर उठाने की क्रिया; धंसी हुई वस्तु को ऊपर उठाने का भाव।
**उटाहलणा**—स० क्रि० (चं०) गिनना।
**उटुंगरू**—पु० दे० उकड़ूं।
**उटे**—अ० (शि०) नीचे।
**उटेकणा**—स० क्रि० (चं०) झांकना।
**उटेरनू**—पु० (चं०) ऊनी धागा बटने की तकली।
**उटो**—अ० (सि०) नीचे।
**उट्ठक-बैठक**—स्त्री० व्यग्रता, उछलकूद।
**उट्ठण**—स्त्री० विकास, उठने की प्रक्रिया।
**उट्ठबैठ**—स्त्री० (मं०) मेल-मिलाप।
**उट्ठबैठ**—स्त्री० अधीरता।
**उठड़ा**—वि० (चं०) ऊंचा।
**उठणा**—अ० क्रि० जागना, खड़े होना।
**उठणो**—अ० क्रि० (शि०) उठना।
**उठलना**—अ० क्रि० (चं०) स्वयं निकलना,, निकल जाना।
**उठलो**—वि० (सि०) मूर्ख मंडली।
**उठवाई**—स्त्री० उठाने का पारिश्रमिक।
**उठवाळना**—स० क्रि० उठवाना।
**उठाउणा**—स० क्रि० (शि०) उठाना।
**उठाणा**—स० क्रि० उठाना।
**उठाबेशी**—स्त्री० (कु०) तंग करने का भाव।
**उठाळना**—स० क्रि० उठाना, जगाना।
**उठाव**—पु० (मं०) उभार।
**उठील**—वि० (सि०) बेवकूफ, मूर्ख।
**उठोमुड़**—पु० (मं०) बराबरी।
**उठोल**—पु० (चं०) कुदाल या कुल्हाड़ी का डंडा।
**उठोलना**—स० क्रि० (चं०) निकालना।
**उडंत**—वि० (सो०) चालाक, तेज, चुस्त। उड़ने वाला।
**उड़**—पु० (बि०) खेत की सीमा पर गाड़ा गया पत्थर।
**उड़क**—स्त्री० (सि०) उलटी, वमन।
**उड़कडंडा**—वि० (कु०) बेकार (मनुष्य), व्यर्थ में दौड़-भाग करने वाला।
**उड़कणा**—अ० क्रि० (कु०) दे० उटकणा।
**उड़कनाटी**—स्त्री० (कु०) उछलकूद।
**उड़का**—पु० चूल्हे पर बर्तन रखने की टेक।
**उड़कोणा**—अ० क्रि० (कां०) किनारे होना।
**उडगर**—पु० (बि०) आकाश के साफ होने की क्रिया।
**उडगार**—स्त्री० (कां०) पुष्प गंध।
**उड़गाहन**—वि० (चं०) बेढंगा।
**उड़गो**—वि० (शि०) उजड्ड।
**उडणखटोलू**—पु० यान, उड़न-खटोला।
**उड़णा**—स० क्रि० (सो०) कमरे में बंद करना। दे० हुड़ना।
**उड़दंग**—पु० ऊधम।
**उड़द**—पु० माश।
**उड़दबाहू**—वि० (मं०) नुकसान करने वाला, एक जगह न टिकने वाला, अत्यंत चंचल।
**उड़दू**—पु० उर्दू।
**उडना**—अ० क्रि० (कु०) उड़ना, पक्षियों का उड़ना।
**उड़ना**—अ० क्रि० (कु०) सूर्य का अस्त होना।
**उडनो**—अ० क्रि० (शि०) उड़ना।
**उडमुड**—स्त्री० (मं०) बराबरी।
**उडरना**—अ० क्रि० (सि०) उड़ना।
**उडला**—वि० (चं०) औंधा, उलटा।
**उड़वारी**—स्त्री० दे० उडारी।
**उडा**—पु० (सि०) टोकरा।
**उडाई**—स्त्री० (कां०) पिटाई।
**उडाई**—स्त्री० (सि०) उड़ान।
**उड़ाक**—वि० उड़ने में दक्ष।
**उड़ाका**—पु० (चं०) सूखी उलटी, वमन।
**उडाका**—पु० (मं०) उड़ाने वाला, हवाबाज़।
**उडार**—स्त्री० (चं०) बहुत बड़ी ढलान।
**उडार**—स्त्री० दे० उडारी।
**उडारकू**—पु० पक्षी का उड़ने योग्य बच्चा।
**उडारी**—स्त्री० (बि०) उड़ान, उड़ान भरने की क्रिया।
**उड़ाह**—पु० (चं०) चलते हुए हल के रास्ते में पड़ने वाली बाधा।
**उडाहणा**—स० क्रि० (चं०) खाट को खड़ा करना।
**उडिया**—वि० (शि०) डींगें मारने वाला।
**उड़ीक**—स्त्री० प्रतीक्षा।
**उड़ेलना**—स० क्रि० एक पात्र से दूसरे पात्र में उलटाना।
**उड़ो**—पु० (मं०) उल्लू।
**उडोइला**—पु० (सि०) बिलाव।
**उड्ढण**—पु० (कां०) वस्त्र या कपड़े जो पहने जा सकते हैं।
**उड्ढल**—पु० (मं०) ऐसा देवता जिसने अपना स्थान छोड़ दिया हो।
**उढकणा**—अ० क्रि० (सि०) चारों टांगों के बल कूदना।
**उढकलणा**—स० क्रि० (बि०) दरवाज़े को थोड़ा सा बंद करना।
**उढलना**—अ० क्रि० (बि०) किसी विवाहिता का परपुरुष के साथ भाग जाना।
**उढ़ालना**—स० क्रि० खाल को सीना।
**उढास**—स्त्री० गरमी की घुटन।
**उढी**—अ० (चं०) वहां।
**उणाख**—स्त्री० (चं०) ईर्ष्या।
**उणताळी**—वि० उनतालीस।
**उणत्ती**—वि० उनतीस।
**उणश**—स्त्री० (मं०) किसी की उपस्थिति के कारण उत्पन्न घृणा।
**उणस**—स्त्री० (कां०) प्यार का भाव।
**उणसाण**—पु० (चं०) ऊनी धागा बटने की तकली।
**उणसाणा**—स० क्रि० (चं०) धागों को 'उणसाण' द्वारा बटना।
**उणहत्तर**—वि० उनहत्तर।
**उणा**—वि० (मं०) न्यून, थोड़ा; जो अधिक बुद्धि वाला न हो।
**उणाई**—स्त्री० (चं०) अनाज में से कंकर अलग करने की

क्रिया।
**उणानुए**—वि० नवासी।
**उणारी**—स्त्री० (चं०) एक खेत से दूसरे खेत में पानी डालने की क्रिया।
**उणाव**—वि० दूध देती भैंस जो गाभिन हो जाए।
**उणासठ**—वि० (बि०, चं०) उनसठ।
**उणासी**—वि० (बि०, चं०) उन्नासा।
**उणिंद्रा**—वि० (बि०, चं०) उनींदा, उन्निद्र, जो सोया न हो।
**उणियर**—वि० भयंकर, डरावना।
**उणूंजा**—वि० उनचास।
**उणेसाज**—पु० (चं०) सूत बटने का उपकरण।
**उत्त**—वि० (कु०) मूर्ख।
**उतक**—पु० (कु०) स्रोत, पानी का झरना।
**उतकू**—पु० (कु०) लघु स्रोत।
**उतड़ा**—वि० (चं०) थोड़ा सा ऊंचा।
**उतणा**—वि० (चं०) उतना।
**उतमा**—अ० (शि०) ऊपर।
**उतरणा**—अ० क्रि० नीचे जाना, उतरना।
**उतरना**—अ० क्रि० (कु०) उलटी करना।
**उतरना**—अ० क्रि० (शि०) देवता का भाव आने पर कंपन होना।
**उतरायण**—पु० (मं०) मकर संक्रांति, लोहड़ी।
**उतराहल्ला**—वि० (कां०) उथला।
**उतरैहड़**—वि० (चं०) डरपोक, भीरु।
**उतरैहड़**—पु० रेवड़ की बिदक।
**उतलना**—अ० क्रि० (कु०) किसी वस्तु का पानी की ऊपरी तह तक आना।
**उतला**—वि० (सि०, मं०) ऊंचा, ऊपर उठा हुआ।
**उताउला**—वि० उतावला।
**उताक**—पु० (कां०) द्वार-वंदना।
**उताड़**—स्त्री० (चं०) उबकाई।
**उताणा**—अ० क्रि० (चं०) पीठ के बल लेटना।
**उताणा**—वि० (चं०) पीठ के बल पड़ा (व्यक्ति)।
**उतार**—वि० (चं०) पुराना कपड़ा, उतार कर फेंका गया।
**उतारणो**—स० क्रि० (शि०) उतारना।
**उताहला**—वि० (चं०) उत्सुक।
**उताहीं**—अ० (चं०) उधर।
**उतू**—पु० (कु०) दो व्यक्तियों द्वारा किसी अन्य को हाथ पांव से पकड़ कर झुलाने की क्रिया।
**उतैणा**—स० क्रि० (चं०) कड़ाही में कम मात्रा में उबालना।
**उत्ते**—अ० (चं०) वहां।
**उत्रणा**—अ० क्रि० (चं०) मधुमक्खी का छत्ते से भाग जाना।
**उत्राड़ना**—स० क्रि० (चं०) डराना।
**उत्रीड़**—स्त्री० (चं०) खेत के अगले भाग में बोया गया बीज।
**उथड़ा**—वि० (कु०) ऊंचा।
**उथला**—वि० (मं०) कम गहरा।
**उदड़ना**—अ० क्रि० (सो०) दे० उघड़ना।
**उदमी**—वि० मेहनती।
**उदर**—दे० उद्र।
**उदरणा**—अ० क्रि० (चं०) उदास होना।
**उदरणा**—अ० क्रि० (चं०) चिनी हुई दीवार आदि का गिरना।
**उदरना**—अ० क्रि० (बि०) विमुक्त होना, उत्रृण होना।
**उदरना**—अ० क्रि० चिनी हुई दीवार आदि का गिरना।
**उदराण**—स्त्री० उदासी।
**उदराल**—दे० उद्राला।
**उदलणा**—अ० क्रि० (सि०) उघड़ना।
**उदली**—स्त्री० (सि०) काष्ठ की परात।
**उदली**—स्त्री० (चं०) खाल सीने की मोटी सूई।
**उदलू**—पु० (कां०) बाहों का घेरा।
**उदा**—अ० (सि०) नीचे।
**उदाकी**—स्त्री० (मं०) ढलान।
**उदान**—वि० (चं०) उदास।
**उदायतोल**—अ० (सि०) नीचे।
**उदार**—वि० दिलेर।
**उदालटी**—स्त्री० (शि०) उतराई।
**उदालना**—स० क्रि० (चं०) खाल को सीना।
**उदाली**—स्त्री० (चं०) दे० उदली।
**उदाळी**—स्त्री० (शि०) उतराई।
**उदासण**—वि० (चं०) उदासीन, रुचि न लेने वाला।
**उदाह**—अ० (चं०) "वैसा अच्छा नहीं" भाव दिखाने के लिए प्रयुक्त अव्यय शब्द।
**उदियाळी**—अ० (कां०) उस दिन।
**उदी**—अ० (चं०) उस ओर।
**उदुसणा**—अ० क्रि० धीरे-धीरे नष्ट होना।
**उदुसणा**—अ० क्रि० (चं०) रूठ कर औरत द्वारा पति का घर छोड़ देना।
**उदू**—वि० (चं०) वैरी।
**उदेहा**—वि० (कां०) वैसा ही।
**उद्र**—पु० (चं०) जलचर जंतु जो मछलियां खाता है; ऊद-बिलाव।
**उद्रालना**—स० क्रि० (चं०) पहले बोये खेत को दोबारा बोना।
**उद्राला**—पु० (चं०) खेत का कोना जो हल लगे बिना रह जाए।
**उधकवाद**—पु० (कु०) अनावश्यक बहस।
**उधड़न**—स्त्री० (कां०) सिलाई के खुल जाने का भाव।
**उधड़ना**—अ० क्रि० कपड़े आदि से सिलाई का खुल जाना, अलग होना, बिखरना।
**उधणना**—अ० क्रि० (कु०) उत्तेजित होना। मधुमक्खियों का छत्ते से भागना।
**उधमतुधु**—वि० (कु०) अनोखे आकार का।
**उधमाण**—पु० (चं०) कोलाहल, शोर।
**उधाड़ी**—अ० उस दिन।
**उधाळ**—स्त्री० (चं०) बिना विवाह किए घर में रखी औरत।
**उधे**—अ० (कु०) नीचे।
**उधो**—पु० (सि०) ऊधम।

**उना**—अ० क्रि० (चं०) गाय या भैंस का गर्भधारण करना।
**उनाड़ना**—स० क्रि० (चं०) तिथि निश्चित करना; कार्य प्रारंभ करना।
**उनाणी**—स्त्री० (चं०) आटा गूंधने की लकड़ी की परात।
**उनाणे**—स्त्री० (शि०) कहावत।
**उनाळा**—वि० (चं०) ऊनी।
**उनाव**—पु० (चं०) एक दवाई।
**उनियाव**—पु० (सि०) बादल।
**उनीश**—वि० (शि०) उन्नीस।
**उन्गोठ**—पु० (चं०) कोठे का रोशनदान।
**उन्नी**—वि० उन्नीस।
**उन्नीइक्की**—स्त्री० (बि०, चं०) आनाकानी; थोड़ा अंतर।
**उन्नू**—अ० (बि०) उधर से, उस रास्ते से।
**उन्हतर**—वि० उनहत्तर।
**उंपउपड़ा**—पु० (कु०) कठफोड़ा पक्षी।
**उपजाणा**—स० क्रि० (मं०) पैदा करना।
**उपड़णा**—अ० क्रि० (चं०) उखड़ना, पपड़ी निकलना; पत्थर के दो टुकड़े होना।
**उपड़ना**—अ० क्रि० चेचक आदि रोग का मुंह और शरीर पर निकलना।
**उपते**—वि० (शि०) जो इंतजार न कर सके।
**उपना**—पु० (कु०, मं०) जागृत अवस्था।
**उपनाण**—स्त्री० (चं०) लोकोक्ति।
**उपनो**—पु० (सि०) दे० उपना।
**उपरकंडा**—पु० (चं०) पगडंडी।
**उपरला**—वि० (कां०) ऊपर का।
**उपराली**—स्त्री० (सि०) चांदी का गहना।
**उपराही**—अ० (चं०) ऊपर की ओर।
**उपराहला**—अ० (चं०) ऊपर रखा हुआ।
**उपरूह**—अ० (चं०) दे० उपराही।
**उपरेजा**—अ० (मं०) ऊपर जैसा।
**उपरेडणा**—स० क्रि० (चं०) जादू टोने में पशु आदि को वारना।
**उपरेड़डे**—अ० ऊपर की ओर।
**उपरेणा**—पु० (चं०) अंतिम संस्कार के समय सिर पर लपेटा श्वेत वस्त्र।
**उपरोल**—पु० (चं०) फसल के ऊपर डाली खाद।
**उपलद**— **पु० (चं०) अतिरिक्त कार्य, अधिक भार।**
**उपशणा**—अ० क्रि० (कु०) **रोटी का फूलना। सूजना।**
**उपा**—पु० (चं०, कु०) उपाय।
**उपाड़णा**—स० क्रि० (मं०) उखाड़ना।
**उपाड़ा**—पु० (चं०) अड़चन, मुसीबत, झंझट।
**उपाड़ी**—वि० (चं०) अड़चन डालने वाला।
**उपाणा**—स० क्रि० (चं०) उपज लेना।
**उपाध**—पु० (चं०) उत्पात।
**उपास**—पु० (चं०, कु०, मं०) उपवास।
**उपेड़ना**—स० क्रि० (चं०) छिलका उतारना।
**उपेतड़**—वि० बाहर का व्यक्ति जो किसी स्थान पर स्थायी निवास प्राप्त करे।
**उपोड़ना**—स० क्रि० (चं०) दो पाट करना। फर्श को उखाड़ना।
**उप्पड़ना**—अ० क्रि० (कां०) फूटना।
**उप्रेड़ना**—स० क्रि० (चं०) न्योछावर करना।
**उफड़ना**—अ० क्रि० (कु०) उखड़ना; फूलना, उमरना।
**उफणना**—अ० क्रि० उबाल आना।
**उफरना**—अ० क्रि० (सो०) फूलना।
**उफलना**—अ० क्रि० (शि०) उमरना;, गेंद का उछलना।
**उफली**—स्त्री० (शि०) उछाल।
**उफाइंदा**—वि० (सि०) दुष्ट।
**उफाण**—पु० (चं०) उफान, उबाल; गुस्सा।
**उफाणा**—स० क्रि० ऊपर को फैलाना।
**उबका**—अ० (सि०) ऊपर।
**उबकाई**—स्त्री० (मं०) उलटी।
**उबड़-खाबड़**—वि० (कु०) ऊंची-नीची।
**उबड़ा**—वि० (सि०) थोड़ा ऊपर।
**उबड़ो**—वि० (सि०) ऊसर (ज़मीन)।
**उबण**—स्त्री० (कु०) गेहूं के साथ उगने वाला घास जिसके दाने मिलकर गेहूं को खराब कर देते हैं।
**उबताखबती**—वि० (कु०) शरारती।
**उबल**—स्त्री० (चं०) बरसात में वस्तुओं पर जमने वाली फफूंदी।
**उबळना**—अ० क्रि० उबलना; गुस्से होना।
**उबले**—पु० (शि०) खतरा।
**उबा**—अ० (शि०) ऊपर, ऊंचा।
**उबाळ**—पु० (कां०) गर्मी; उबलने की क्रिया।
**उबिये**—अ० (सो०) ऊपर से।
**उबी**—अ० (सि०) ऊपर।
**उबू**—अ० (सि०) ऊपर।
**उबे**—अ० (शि०) ऊपर।
**उबेल**—पु० (चं०) प्रातःकाल देवार्चना के लिए नगाड़े आदि बजाने का समय।
**उब्बड़**—पु० (चं०, कां०) स्वयं उगने वाले पौधे।
**उब्बड़**—वि० किसी अन्य गांव का निवासी जो दूसरे गांव में बस गया हो।
**उभका**—पु० (कु०) उभरा हुआ भाग।
**उभड़**—वि० (सि०) नासमझ।
**उभड़**—वि० (कु०) छिलका उतरा हुआ।
**उभड़नी**—वि० (सि०) महामूर्ख।
**उभरना**—अ० क्रि० (मं०) ऊंचा उठना।
**उभरना**—अ० क्रि० (कु०) गूर में देवता की शक्ति आना।
**उभाणतर**—स्त्री० (चं०) किसी के अशुभ के लिए देवता के पास की गई मनौती।
**उभाणना**—स० क्रि० (चं०) गाली-गलौज करना।
**उभाणना**—स० क्रि० (चं०) देवी-देवता के पास किसी के अपकार के लिए मनौती करना।
**उभाणी**—स्त्री० दे० उभाणतर।

**उमार**—पु० (सि०) मंत्र द्वारा इलाज।
**उमेड़णा**—स० क्रि० (चं०) सिली या बनाई वस्तु को उधेड़ना।
**उमचूंडा**—पु० (चं०) आवारागर्दी।
**उमजुमड़ा**—पु० (सि०) खट्टा घास।
**उमड़ना**—अ० क्रि० (मं०) उछाल आना।
**उमड़ाव**—पु० (मं०) फैलाव, उछाल।
**उमदा**—वि० (कु०) सुंदर।
**उमबोल**—पु० (कु०) धान को बोने के लिए एकत्रित जनसूमह।
**उमर**—स्त्री० आयु।
**उमरावणो**—स० क्रि० (शि०) आटा गूंधना।
**उमरें**—पु० (कां०) एक वृक्ष विशेष।
**उमळका**—पु० (कु०, चं०) चमगादड़ की जाति का एक पक्षी।
**उमलना**—अ० क्रि० (सि०) दर्द होना।
**उमळा**—वि० (चं०) उलटा।
**उमलाणा**—स० क्रि० (चं०) बहकाना, उलटी मति देना, उलटी बात सिखाना।
**उमली-कूरी**—स्त्री० (कु०) एक पौधा विशेष जो दवाई के काम आता है।
**उमलैत**—वि० (चं०) उलटी, विरोधयुक्त।
**उमलोडू**—पु० (शि०) एक प्रकार का पौधा।
**उमेकणा**—स० क्रि० (चं०) घुमाना, मरोड़ना।
**उमेची**—पु० (सि०) बड़ा पतीला।
**उमेद**—स्त्री० (सि०) उम्मीद।
**उमैल**—पु० (चं०) कोयला, जलती हुई लकड़ी, अधजली लकड़ी।
**उमोर**—स्त्री० (शि०) उमर, आयु।
**उम्ही**—स्त्री० (मं०) कच्ची भुनी हुई कनक।
**उर**—अ० (सि०, शि०) और, इसके अतिरिक्त।
**उरणी**—स्त्री० (चं०) भेड़ की बच्ची।
**उरणी**—वि० ऋण रहित।
**उरणू**—पु० (चं०) भेड़ का बच्चा।
**उरणू**—वि० (चं०) वश में किया हुआ।
**उरला**—वि० (कां०) इधर का, इस ओर का।
**उरली**—स्त्री० (मं०) छाछ की मैल।
**उरली**—स्त्री० मछलियां पकड़ने की विशेष टोकरी।
**उरलू**—पु० (कु०) धान के पौधों का गट्ठा।
**उरहीं**—अ० इधर।
**उरह्याण**—स्त्री० (चं०) धान की पनीरी।
**उरमुरू**—अ० (मं०) अल्प मात्रा में, थोड़े अंश में।
**उरेखे**—अ० (शि०) बिना देखे।
**उरेडा**—वि० (चं०) इस ओर वाला, पास का।
**उरे-पुरे**—अ० (शि०) इधर-उधर, यहां-वहां।
**उर्स**—पु० मुसलमानों का त्योहार।
**उर्हणा**—अ० क्रि० (चं०) बातचीत में मस्त होना।
**उर्हना**—अ० क्रि० (चं०) वर्षा का आरंभ होना।
**उर्हना**—अ० क्रि० गाय का घास के लालच में दूध देना।
**उलकापात**—पु० अनर्थ।
**उलखड़**—वि० (चं०) मूर्ख।
**उलखण**—वि० (कु०) चपला, चंचल।
**उलखणा**—अ० क्रि० चंचल होना।
**उलजणो**—अ० क्रि० (शि०) उलझना।
**उलट**—वि० विपरीत।
**उलटणा**—स० क्रि० बात बदलना।
**उलटफेर**—स्त्री० (मं०) अदला-बदली।
**उलटभेद**—पु० विपरीत काम, कुशिक्षा।
**उलटा**—वि० विपरीत।
**उलटाओणो**—स० क्रि० (शि०) उलटाना।
**उलटापलटी**—स्त्री० (मं०) गड़बड़।
**उलटाव**—पु० (मं०) बदलाव।
**उलटीणा**—अ० क्रि० (चं०) उलट जाना।
**उलटो**—वि० (शि०) उलटा।
**उलड़ना**—अ० क्रि० (कु०) चमड़ी उतरना, शरीर से बाल उतरना।
**उलदणा**—स० क्रि० (चं०) खेत को दोबारा बोना, खेत में दोबारा हल चलाना।
**उलरना**—स० क्रि० (मं०, चं०) उछालना।
**उलसू**—वि० (चं०) सुस्त।
**उला**—पु० (चं०) खेत में उगी अनावश्यक झाड़ियों का कटान।
**उळा**—पु० (शि०) नस्ल का मेढा।
**उलाद**—स्त्री० औलाद।
**उलारना**—स० क्रि० (चं०) गेंद की तरह ऊपर उछालना।
**उलाहना**—पु० उपालंभ।
**उलीकणा**—स० क्रि० (चं०) सिर के गिर्द कोई वस्तु किसी पर फेरना, वारना।
**उलीकना**—स० क्रि० (चं०) मरोड़ना।
**उलीच**—स्त्री० (चं०) दिल के खराब होने का भाव, घृणा।
**उलीचणा**—स० क्रि० (चं०) उतारना।
**उलू**—पु० उल्लू।
**उलू**—पु० पैर तथा टांग का जोड़।
**उळू**—पु० (कु०) उल्लू।
**उलेकणा**—स० क्रि० मोड़ना। बार-बार घुमाना।
**उलेटणा**—अ० क्रि० (चं०) उलटी को दिल करना।
**उलेढ़ना**—स० क्रि० (चं०) हाथ से सीना।
**उल्खणा**—अ० क्रि० (सि०) ओछापन दिखाना।
**उल्टाण**—स्त्री० (सि०) दूसरी मंज़िल की छत।
**उल्टा-सुल्टा**—वि० उलटा-सीधा।
**उल्टी**—स्त्री० वमन।
**उल्टो**—वि० (शि०) उलटा।
**उल्लण**—स्त्री० (कां०) व्याकुलता।
**उल्लरना**—अ० क्रि० (बि०) कूदना।
**उल्ला**—पु० (सि०) शोर।
**उल्ला**—पु० (चं०) खेत के आस-पास की बढ़ी हुई घास।
**उल्ली**—स्त्री० फफूंदी।
**उल्लै**—अ० (शि०) पीड़ा सूचक शब्द।
**उल्ह**—पु० (कु०) थन।

**उवेल**—स्त्री० देर।
**उश**—अ० (शि०) विस्मयादिबोधक शब्द।
**उशकणा**—अ० क्रि० ऊपर उठना, रोटी का पक कर फूलना।
**उशड**—पु० (सि०) कंदरा।
**उशड़ना**—अ० क्रि० (कु०) निवृत्त होना, फारिग होना।
**उशनिशी**—स्त्री० (कु०) बेचैनी।
**उशर**—वि० (कु०) ऊंचा। प्रथम।
**उशरा**—वि० (शि०) **रूखे स्वभाव वाला।**
**उशळना**—अ० क्रि० (सो०) जलने या विजातीय द्रव पड़ने से छाला पड़ना।
**उशी**—अ० (शि०) तनिक।
**उशे**—अ० (सो०) यूं ही।
**उशे आशे**—अ० (सो०) वैसे ही, मिथ्या भाव से।
**उष्टणा**—अ० क्रि० (शि०) उछलना।
**उसर**—वि० (मं०) बंजर।
**उसर**—वि० (कु०) कोमल, नाज़ुक।
**उसरणा**—अ० क्रि० (चं०) मूत्र आना।
**उसरना**—अ० क्रि० (कु०) देवता का आवेश कम होना, देव-शक्ति का उतर जाना।
**उसरना**—अ० क्रि० (कु०, कां०) बड़ा होना।
**उसरना**—अ० क्रि० (चं०) गाय-भैंस का दूध देने की स्थिति में आना।
**उसरपुसर**—स्त्री० फुसफुसाहट।
**उसलणा**—अ० क्रि० (बि०) रस्सी का बट निकलना।
**उसाह**—पु० (चं०) बहकावा।
**उसाहणा**—स० क्रि० (कु०, चं०) घराट के ऊपर वाले पाट को थोड़ा ऊपर करना।
**उसाहल**—स्त्री० (चं०) उतराई।
**उसीकणा**—स० क्रि० (चं०) ऊपर चढ़ाना; बत्ती को ऊपर उठाना।
**उसीकणा**—स० क्रि० बहकाना।
**उसीक्का**—पु० (चं०) चढ़ाई।
**उसीणा**—अ० क्रि० (चं०) गाय-भैंस के बच्चे का पेट में गल जाना।
**उसीरणा**—अ० क्रि० (चं०) निकलना।
**उसीरना**—अ० क्रि० सूर्य का उदय होना।
**उसू**—पु० (शि०) घास की आग का खेल।
**उस्तरा**—पु० उस्तरा, बाल मूंड़ने का औज़ार।
**उस्सड़**—पु० (बि०) बरसात में वर्षा के बाद धूप निकलने से हुई गर्मी।
**उहां**—अ० (ऊ०, चं०) वैसे।
**उहारू**—पु० (कु०) कांसे का एक बर्तन।
**उहकणा**—अ० क्रि० चूक जाना, भूल जाना।
**उहका**—पु० (कु०) रात के समय बोलने वाला पक्षी।
**उहजो**—सर्व० उसको।
**उहड़ी**—स्त्री० (कां०) भैंस के बोलने का स्वर।
**उहण**—स्त्री० (चं०) न्यूनता, कमी।
**उहणा**—वि० (कु०,चं०) थोड़ा भूखा।
**उहलड़ना**—अ० क्रि० (बि०) शरीर का बढ़ना।

## ऊ

**ऊ**—देवनागरी वर्णमाला का छठा स्वरवर्ण। उच्चारण स्थान ओष्ठ। उ का दीर्घ रूप।
**ऊंआ**—अ० (बि०) उस तरफ से।
**ऊंई**—अ० यूंही।
**ऊंघ**—पु० (कु०) बहाना।
**ऊंचड़ा**—वि० (सि०) ऊंचा।
**ऊंचणो**—स० क्रि० (शि०) चुनना।
**ऊंछ**—वि० (मं०) उच्च।
**ऊंज़**—पु० (सि०) मंत्र।
**ऊंडा**—अ० (सि०) इधर, इस ओर।
**ऊंधा**—वि० (कु०) औंधा।
**ऊंधे**—अ० (कु०) नीचे।
**ऊंबलणो**—अ० क्रि० (शि०) दर्द होना।
**ऊंबळा**—पु० (शि०) पीड़ा, सारे शरीर में भीतर ही भीतर खारिश होने की बीमारी।
**ऊंबी**—स्त्री० (कु०) अधपका भूना गेहूं।
**ऊंरी**—स्त्री० (चं०) पनीरी।
**ऊंहू**—अ० नहीं, असहमति व्यक्त करने के लिए शब्द।
**ऊ**—अ० (सि०) किसी को पुकारने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**ऊआं**—अ० (बि०) उस प्रकार से।
**ऊई**—अ० (शि०) अरे (संबोधन)।
**ऊक**—स्त्री० (शि०) छाती की पीड़ा।
**ऊख**—पु० (सो०) केले का पेड़।
**ऊख**—पु० (मं०) गन्ना।
**ऊखळ**—पु० ओखली।
**ऊखूल**—पु० (शि०) ओखली।
**ऊखोटा**—पु० (शि०) अखरोट।
**ऊगरना**—अ० क्रि० (मं०) कोंपल निकलना।
**ऊच**—वि० ऊंच।
**ऊचा**—वि० (मं०) ऊपर उठा हुआ, ऊंचा।
**ऊचो**—पु० (चं०) चिमटा।
**ऊच्चू**—पु० (चं०) छोटा चिमटा।
**ऊज**—पु० (सो०, सि०) गीदड़ की जाति का जंगली जानवर।
**ऊजड़**—वि० (मं०) उजाड़, वीरान।
**ऊजली**—स्त्री० (बि०) नुकसान।
**ऊजलो**—वि० (शि०) साफ।
**ऊजे**—अ० (मं०) ऊपर।
**ऊट**—पु० (सि०) ऊंट।
**ऊटका**—वि० (शि०) औंधा।
**ऊटणा**—स्त्री० (मं०) ऊंटनी।

**ऊटणे**—स्त्री० (शि०) ऊंटनी।
**ऊटा**—अ० (शि०) नीचे।
**ऊटू-मूटू**—पु० (कु०) बराबर, पूर्ण। एक पुरानी प्रथा के अनुसार जब ऋण लेने वाला ऋण वापिस करता था तो दोनों व्यक्ति एक तिनका एक-एक हाथ में पकड़ कर यह कह कर हिसाब बेबाक करते थे कि 'ऊटू-मुटू तेरा मेरा ऋण चूटू', इसके साथ ही तिनके को तोड़ दिया जाता था।
**ऊठ**—पु० (चं०) बैल की ककुद।
**ऊणा**—वि० (बि०) थोड़ा कम, पूर्ण से थोड़ा कम।
**ऊणीणा**—अ० क्रि० (चं०) थोड़ा कम हो जाना।
**ऊणी-दूणी**—स्त्री० (चं०) किसी की कमियों को बढ़ा-चढ़ा कर दोहराने की क्रिया।
**ऊत**—वि० नि:संतान, बेकार, अर्थहीन।
**ऊत**—वि० मूर्ख।
**ऊतखाता**—पु० (कु०) व्यर्थ।
**ऊथड़ा**—वि० (बि०) बहुत ऊंचा।
**ऊना**—स्त्री० (कु०) ऊन का बहुवचन, प्रायः इसी रूप में ऊन के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता है।
**ऊफ**—वि० (बि०) गर्म वातावरण युक्त।
**ऊबड़**—वि० (सो०) ऊंची (ज़मीन)।
**ऊबण**—स्त्री० (कु०) गेहूं के बीच पैदा होने वाला घास जो गेहूं जैसा ही होता है।
**ऊबणों**—अ० क्रि० (शि०) उकताना।
**ऊबतो**—वि० (कु०) शुष्क (ज़मीन)।
**ऊबा/बी/बू/बे**—अ० (सि०, शि०) ऊपर।
**ऊम**—पु० (सो०) हवन।
**ऊर**—पु० (कां०) धान की पनीरी को दूसरे खेत में लगाने का भाव।
**ऊरा**—वि० (बि०) कम भरा हुआ।
**ऊरी**—स्त्री० (कां०) पनीरी।
**ऊशाईणों**—अ० क्रि० (शि०) फूल जाना, सूजना।
**ऊशी**—वि० (शि०) थोड़ा।
**ऊशीजे**—अ० (शि०) थोड़ा सा।
**ऊशोद**—स्त्री० (शि०) औषध, दवाई।

## ए

**ए**—देवनागरी वर्णमाला का सप्तम कंठतालव्य संधिस्वर।
**एंकट**—पु० (बि०) भूमि का उभरा हुआ भाग।
**एंकली**—स्त्री० (बि०, कां०) छोटे-छोटे गोलाकार गढ़ों वाला पत्थर का तवा।
**एंकळी**—स्त्री० 'एंकली' में बना चावल के आटे का विशेष पकवान।
**एंकळू**—पु० (बि०, कां, मं०) छोटी 'एंकळी'।
**एंग**—पु० (कु०) दे० अंग।
**एंहा/णो**—वि० (कु०) ऐसा।
**एंबरु**—पु० (कु०) एक जंगली पशु (बैल) जो बहुत ऊँचाई पर होता है।
**एंशू**—अ० (चं०, शि०) इस वर्ष।
**एंस**—पु० अंश, हिस्सा।
**एंस**—पु० (बि०) उत्तराधिकारी।
**ए**—सर्व० (कु०, चं०) यह।
**एअखी**—अ० (शि०) इसलिए।
**एआ**—सर्व० (शि०) ये।
**एइदो**—अ० (सि०) यहां से।
**एइब**—पु० (कु०) दोष, खोट, ऐब, बुराई।
**एऊ**—सर्व० (शि०) ये।
**एई**—अ० (कु०) पुरुष के लिए प्रयुक्त संबोधन शब्द।
**एईबे**—सर्व० (कु०) इसको।
**एऊ**—अ० (कु०) स्त्री के लिए संबोधन।
**एओले**—पु० (मं०) नंगा जौ।
**एक**—वि० संख्या में प्रथम; अकेला।
**एकड़**—स्त्री० (कु०) अकड़, अभिमान।
**एकड़**—वि० अकेला।
**एकड़**—वि० (सो०) दे० कलोक्कड़।
**एकणा**—वि० (कु०) एक तह वाला।
**एकध्याई**—अ० एक दिन।
**एकपाणी**—स्त्री० (सि०) जूते का एक पैर।
**एकळ**—वि० अकेला चरने वाला (जानवर यथा बंदर)। खूंखार।
**एकला-दुकला**—वि० (कु०) अकेला, कुछेक।
**एकविश**—वि० (शि०) बीस।
**एकसा**—वि० बराबर, समतल।
**एकसार**—वि० समान, समतल। लगातार।
**एकहरा**—वि० एकपर्ती।
**एका**—पु० एकता, संगठन।
**एका**—पु० (कु०) कई लोगों का समूह।
**एकाखर**—पु० ओंकार, सर्वस्व, मूलतत्त्व।
**एकी**—स्त्री० (सि०) चमड़ा काटने का औज़ार।
**एकीएकीए**—अ० (कु०) एक-एक करके।
**एकु**—वि० (मं०) एक।
**एके**—वि० (कु०) एक ही।
**एकेरी**—पु० (सो०) मासांत।
**एको**—सर्व० (शि०) कोई।
**एको**—पु० (शि०) एकता।
**एकौ**—सर्व० (शि०) कुछ।
**एक्का**—पु० (चं०) एकता, संगठन।
**एख**—वि० (सि०) एक।
**एखणो**—वि० (सि०) कुछ एक।
**एखनी**—सर्व० (सि०) किसी को।
**एखनो**—सर्व० (सो०) कोई।
**एखनो-एखने**—सर्व० (सो०) कोई-कोई।
**एखलो**—वि० (शि०) अकेला।

**एख्ना**—अ० (शि०) इधर, इस ओर।
**एख्ना**—अ० (शि०) इधर-उधर।
**एख्ना-उख्ना**—अ० (मं०) इधर-उधर।
**एख्रो**—वि० (सि०) कोई।
**एगड़ा**—वि० (कां०) इस वाला।
**एचड़ा**—वि० (कु०) इतना।
**एज़णा**—अ० क्रि० (कु०) आना।
**एज़ला**—वि० (सो०) इस ओर वाला।
**एजा**—सर्व० (सि०) यह (पुरुष)।
**एजा**—वि० (शि०) ऐसा।
**एज़िणा**—अ० क्रि० (कु०) आया जाना।
**एजी**—सर्व० (सि०) यह।
**एजे**—सर्व० (शि०) ये, इस।
**एजो**—सर्व० (मं०) इसको।
**एटो**—वि० (मं०) इतना।
**एठ**—अ० (सो०) नीचे।
**एठीए**—अ० (कु०) नीचे की ओर।
**एड़**—स्त्री० घोड़े को तीव्र गति से चलाने के लिए एड़ी मारने की क्रिया।
**एड़क**—स्त्री० (चं०) कुहनी।
**एड़लो**—वि० (सि०) इतना सा।
**एंड़ा**—पु० (शि०) शिकार, आखेट।
**एड़ातेड़ा**—अ० (मं०) ऐसा-वैसा।
**एड़ियाला**—पु० (कां०) धान की पनीरी तैयार करने के लिए घने रूप में बोया हुआ बीज।
**एडीकांग**—पु० (बि०) ऐसा व्यक्ति जो हर बात पर आगे आता है, चौधरी।
**एड़े**—स्त्री० (शि०) एड़ी।
**एड्डा**—वि० (चं०, बि०) इतना बड़ा।
**एंढ़ा**—वि० (मं०) ऐसा।
**एणा**—अ० क्रि० (कु०) आना।
**एत**—अ० (कु०) यहीं, इधर।
**एतका**—सर्व० इसका।
**एतड़ा**—अ० (चं०) इतना।
**एतड़ी**—अ० (सो०) यहाँ जैसे, लगभग यहाँ।
**एतणा/णो**—अ० (सि०) इतना।
**एतफेरे**—अ० (कु०) इस ओर।
**एतरा**—अ० (शि०) आज।
**एतरा/रो**—वि० (कु०) इतना।
**एतरूएक**—अ० (कु०) इतना सा।
**एता**—अ० (सि०) यहां।
**एता**—वि० इतना।
**एता**—अ० (चं०) "यह लो" भावाभिव्यक्ति का आश्चर्यबोधक शब्द।
**एति**—स्त्री० (कु०) अधिकता।
**एति**—अ० (कु०) इतने।
**एति/ती**—अ० (सो०) यहां।
**एतिसार**—पु० (कु०) अतिसार।
**एतीजेये**—अ० (शि०) इतने जैसे।
**एत्थी**—अ० यहां।
**एत्थू**—अ० दे० एत्थी।
**एथ**—अ० (कु०) यहां, इसमें।
**एथो**—अ० दे० एत्थी।
**एनको**—स्त्री० (सि०) ऐनक।
**एने**—सर्व० (सि०) इन्होंने।
**एबका**—वि० (कु०) अब का, इस बार का।
**एबकिए**—अ० (सो०) इस बार।
**एबको**—वि० (शि०) दे० एबका।
**एबड़ा**—वि० (कु०) इतना बड़ा।
**एबड़े**—अ० (सि०) थोड़ी देर से, अभी जैसे।
**एबरे**—अ० (कु०) अब, अभी।
**एबि/बी/बु**—अ० (सो०, शि०) अभी।
**एबे/भे**—अ० (कु०) अब।
**एभकणा**—वि० (मं०, कु०) अब का।
**एभका**—वि० (मं०, कु०) अब का।
**एभी**—अ० अभी।
**एरंड**—पु० एक कांटेदार झाड़ी।
**एरका/को**—अ० (सि०) इधर।
**एरण**—पु० (चं०) एरंड; आडू का पेड़।
**एरण**—पु० (मं०) वृक्ष विशेष जिसकी लाठी से चैत्र में प्रतिपदा को पशुओं को हांकने या पत्तियां खिलाने की परंपरा है ताकि इसे खाने से पशुओं को सामान्य विष न लगे।
**एरना**—स० क्रि० (सो०) कार्य करना।
**एरनी**—स्त्री० (चं०) दे० एरण।
**एरा**—वि० (सि०) ऐसा, इस तरह का।
**एरिए**—अ० (शि०) व्यर्थ, वैसे ही।
**एरिसो**—अ० (सि०) ऐसे ही।
**एल**—स्त्री० (चं०) एक बकरी विशेष।
**एळा**—वि० (चं०) ढीला-ढाला।
**एळा**—पु० (सि०) भवन निर्माण में स्वैच्छिक योगदान जिसमें योगदाताओं को मात्र भोजन दिया जाता है।
**एलु**—पु० (चं०) एक वृक्ष जिस की लंबी-लंबी फलियों की चटनी और अचार बनाया जाता है।
**एलुआं**—पु० (ह०) बीज।
**एळू**—पु० (कु०) नंगा जौ, बिना छिलके का जौ।
**एलो**—वि० (चं०) गिरे हुए फूल।
**एल्लण**—स्त्री० (कां०) पौधा।
**एल्लू**—पु० (कां०) बीज।
**एवज**—अ० (शि०) बदले में।
**एश**—अ० (कु०) पशुओं को बुलाने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**एशका**—अ० (कु०) इस वर्ष का।
**एशड़ी**—अ० (शि०) ऐसे ही।
**एशणा**—वि० (शि०) ऐसा।
**एशा**—वि० (शि०) ऐसा।
**एशि**—अ० (शि०) इधर।
**एशू**—अ० (कु०, सो०) इस वर्ष।

एशेआ—अ० (सि०) वस्तुतः।
एशो—वि० (शि०, सि०) ऐसा।
एस/सी—सर्व० (सि०) 'ए' (यह) का कारकीय रूप।
एसा—सर्व० (कु०) 'ए' का स्त्रीवाचक कारकीय रूप यथा- 'एसाबे' (इस स्त्री को), 'एसारा' (इस स्त्री का)।
एस्सी—अ० (सो०) इधर।
एस्सीए—अ० (सो०) इधर से।
एहरा—अ० (चं०) यहां।
एहरी—वि० (सि०) आलसी।
एहलकार—पु० (मं०) कर्मचारी।
एह—सर्व० यह।
एहड़ा—स्त्री० भेड़ों का झुंड।

## ऐ

ऐ—देवनागरी वर्णमाला का अष्टम कंठतालव्य संधि स्वर।
ऐंई—अ० (शि०) यही।
ऐंकलु—पु० (कां०, ह०) दे० एंकलू।
ऐंचली—स्त्री० (चं०) सृष्टि-उत्पत्ति से संबंधित गद्दियों के धार्मिक लोकगीत।
ऐंचा—वि० (कु०) तिरछी नज़र वाला।
ऐंठ—स्त्री० (चं०) अकड़, घमंड।
ऐंठण—स्त्री० (मं०) मरोड़ वाली दर्द।
ऐंठणा—स० क्रि० (मं०) वसूलना, जबरदस्ती वसूल करना।
ऐंढा—वि० (कु०) दे० एंडा।
ऐंधा—वि० (चं०) जो एहसानमंद न हो, कृतघ्न।
ऐंलो—अ० (सि०) आज।
ऐ—सर्व० (सि०) ये।
ऐऊ—सर्व० (शि०) इस।
ऐकडा—पु० (कां०) फर्मा खोलने का टेढ़ा सरिया।
ऐकल—दे० एकळ।
ऐको—सर्व० (शि०) कोई, किसी ने।
ऐखो—सर्व० (सि०) कई।
ऐगल-बेगल—अ० (कु०) दायें-बायें।
ऐचा—वि० (चं०) आसान काम।
ऐजी—स्त्री० (चं०) दे० इजी।
ऐजी—स्त्री० (चं०) सास।
ऐटकणा—अ० क्रि० (कु०) ठहरना, रुकना।
ऐड़ा—वि० (चं०) कुरूप।
ऐड़ागड़ा—वि० (चं०) मूर्ख; शरारती।
ऐडोट—पु० (चं०) घर की प्रथम मंज़िल पूरी होने पर फर्श के लिए रखे जाने वाले स्तंभ।
ऐड्डा—पु० (कु०) स्टेशन, अड्डा।
ऐढ़णा—अ० क्रि० (कि०) ईर्ष्यावश किसी से बात-बात पर झगड़ना।
ऐढ़ा—स्त्री० (चं०) ईर्ष्या, डाह।
ऐणा—वि० (सि०) युवा।
ऐणो—वि० (सि०) छोटा (बच्चा), अबोध।
ऐतर—पु० (कु०) फूलों का अर्क।
ऐतोड़ो—वि० (सि०) इतना।
ऐदकी—अ० (कु०, चं०) इस बार।
ऐन—वि० अधिक।
ऐन—वि० (चं०) स्वच्छ, अच्छा, उचित।
ऐना—पु० (सो०) शीशा, दर्पण।
ऐनाटियों—अ० (सि०) आजकल।
ऐपण—पु० मांगलिक अवसरों पर भूमि या भित्ति पर बनाए चित्र, अल्पना।
ऐपणा—स० क्रि० 'ऐपण' लगाना।
ऐब—पु० दोष, अवगुण, दुर्व्यसन।
ऐबड़ा—वि० (सि०) इस बार का, अभी का।
ऐबण—वि० दुर्व्यसन वाली।
ऐबा—अ० (शि०) अब।
ऐबी—वि० ऐब करने वाला, दोष करने वाला।
ऐमरी/रे—अ० (कु०) अभी।
ऐयोड़ा—वि० (सो०) इतना बड़ा।
ऐर—पु० (मं०) दे० आइर।
ऐर—पु० एक प्रकार का जंगली वृक्ष।
ऐर—स्त्री० (कां०) बांस की पत्तियां।
ऐरना—अ० क्रि० (कां०) बेकार बैठना।
ऐरना—स० क्रि० (मं०) तने पर मिट्टी चढ़ाना।
ऐरा—पु० सरकंडा। काई।
ऐरा—स्त्री० एक झाड़ी जिसके पत्ते 'पिंदड़ी' तैयार करने हेतु प्रयुक्त होते हैं।
ऐरो—अ० (सि०, शि०) ऐसा, इस तरह का।
ऐलफी—स्त्री० (कु०) केवल किनारों से सिला हुआ साधुओं का वस्त्र, अलफी।
ऐश—स्त्री० सुख, भोग-विलास।
ऐशा—वि० (सि०) ऐसा।
ऐशी—अ० (शि०) यहां।
ऐशे—अ० (सि०) ऐसे।
ऐसे—सर्व० (मं०) इस (नारी) ने।
ऐहरा—वि० बच्चा।
ऐहल—स्त्री० अधिक पानी वाली भूमि।
ऐहड़णा—अ० क्रि० (कां०) अपनी बात पर अड़ना।
ऐहण—स्त्री० (कां०) बिच्छू बूटी।
ऐहपणा—स० क्रि० (कां०) दे० ऐपणा।
ऐहरा—वि० (कां०) बिगड़ैल।

## ओ

ओ—देवनागरी वर्णमाला का नवम कंठोष्ठ्य संधि स्वर।
ओं—सर्व० (सि०) मैं।
ओंग—पु० (कु०) शरीर के अवयव, प्रमुखतः हाथ।
ओंग—पु० (कां०) पवित्र पौधा विशेष जिसकी दातुन भी की

जाती है।
**ओंगबाह**—पु० (कु०) अंग-बांह, हाथ-पैर।
**ओंगळ**—स्त्री० (बि०) अंगुलि।
**ओंगळ**—वि० अंगुलि के बराबर माप।
**ओंगू**—पु० (कु०) एक प्रकार का वृक्ष।
**ओंगूर**—पु० (मं०) द्राक्षा, अंगूर।
**ओंचा**—पु० (कु०) तृप्ति, संतुष्टि, पसंद।
**ओंठी**—स्त्री० (कु०) अंगुलि।
**ओंठो**—पु० (शि०) अंगूठा।
**ओंडा**—अ० (सि०) इधर।
**ओंडू**—पु० (मं०) ओंठ।
**ओंढणा**—अ० क्रि० (कु०) पैदल चलना।
**ओंत**—स्त्री० अन्तिम स्थिति, पराकाष्ठा।
**ओंत-मेता**—पु० (कु०) परिचय, अंत-भेद।
**ओंतरा**—पु० (मं०) देवता आने का भाव।
**ओंतिणा**—अ० क्रि० (कु०) भूख से व्याकुल होना।
**ओंद**—स्त्री० (कां०) आगमन।
**ओंद-जांद**—स्त्री० (कां०) आना-जाना, आवागमन।
**ओंदणी**—स्त्री० आय, आमदनी।
**ओंदा**—पु० चूल्हे का पिछला भाग।
**ओंवास**—स्त्री० (शि०) अमावस्या।
**ओंबे**—अ० (सि०, सो०) आहा (उल्लास सूचक शब्द)।
**ओंस**—पु० (कु०) किसी वंश का अंश, आनुवंशिक, नस्ल।
**ओंस**—अ० (कु०) थोड़ा, अंश मात्र।
**ओंहणना**—स० क्रि० (मं०) खेत में बीज बोना।
**ओःछटा**—वि० छोटा, कम लंबाई वाला।
**ओ**—सर्व० (बि०) वह।
**ओ**—अ० (सि०) हां।
**ओ**—अ० (चं०) ओह।
**ओअट**—पु० (कु०) निचली मंज़िल का बरामदा।
**ओआज**—स्त्री० (मं०) आवाज़।
**ओआन**—पु० (मं०) घर का मध्यवर्ती विशाल कक्ष, बैठक।
**ओइड़**—स्त्री० (सि०) बकरी की खाद, मेंगनी।
**ओइर**—पु० (कु०) मुंह पर पड़ी झांईं, छाई।
**ओइर**—स्त्री० (शि०) चूहों द्वारा निकाला मिट्टी का ढेर।
**ओइल**—स्त्री० (सि०) कसर, कमी।
**ओई**—अ० (सि०) थोड़ा सा।
**ओई**—स्त्री० (मं०) एक वृक्ष विशेष।
**ओई**—स्त्री० (चं०) बेल विशेष जिसके पत्तों के पकौड़े भी बनाए जाते हैं।
**ओईये**—अ० (शि०) समझ में, विचार में।
**ओउ**—अ० (कु०) अच्छा! आश्चर्यजनक भावाभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त विस्मयादिबोधक शब्द।
**ओउड़ना**—अ० क्रि० (कु०) दे० उड़ना।
**ओउश**—स्त्री० (कु०) धान के खेतों को सींचने वाली छोटी कुल्या।
**ओए**—अ० अरे, हे (संबोधन)।
**ओएला**—अ० (शि०) अरे, हे (संबोधन)।
**ओक**—पु० (मं०) अंजलि।
**ओक**—स्त्री० (शि०) हकलाहट।
**ओकड़**—पु० (चं०) बंधन, शर्त; घमंड।
**ओकत**—स्त्री० (कां०) औषधि, दवाई।
**ओकती**—स्त्री० (कु०) दवाई, औषधि।
**ओकला**—पु० (सो०) खेत में बना गड्ढा।
**ओकळा**—वि० (शि०) हकलाने वाला।
**ओका**—अ० (सि०) "और क्या" भावाभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द।
**ओकू**—पु० (मं०) चूल्हे का पिछला भाग।
**ओकोल**—स्त्री० (शि०) अक्ल, बुद्धि।
**ओक्का**—वि० (सि०) दूसरा, अन्य।
**ओक्खा**—वि० (बि०) कठिन, मुश्किल।
**ओख**—स्त्री० (बि०) कठिनाई।
**ओखत**—दे० ओकत।
**ओखती**—दे० ओकती।
**ओखर**—पु० (शि०) बर्तन।
**ओखरना**—अ० क्रि० (सि०) अखरना।
**ओखरा**—वि० (सि०) अधपागल; अति भोला।
**ओखरे**—वि० (सि०) मासूम या अनजान।
**ओखळ**—पु० ऊखल, ओखली।
**ओखा**—वि० (कां०) कठिन।
**ओखा-सोखा**—अ० सुख-दुःख।
**ओखी-सोखी**—स्त्री० विपत्ति।
**ओखे**—अ० (कु०) दे० औखे।
**ओग**—पु० (कां०) फर्मे का अगला भाग।
**ओग**—पु० (कु०) हल और 'शांज' को मज़बूती से कसने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का टुकड़ा।
**ओगड़**—वि० (कां०) मूर्ख।
**ओगण**—स्त्री० (चं०) अचानक पशुमृत्यु।
**ओगण**—पु० अवगुण।
**ओगणा**—स० क्रि० (कु०) किये हुए उपकार को बार-बार याद दिलाना।
**ओगणी**—स्त्री० (सि०) गुदा।
**ओग-पाछियों**—अ० (सि०) आगे-पीछे।
**ओगरा**—पु० (कु०) दूध व घी में पकाये हुए चावल जो प्रसूता स्त्री को खिलाये जाते हैं।
**ओगळ**—पु० (सि०) गड्ढा जो अचानक बन गया हो।
**ओगळ**—पु० (मं०, कु०) ऊंचे स्थानों पर उगाया जाने वाला विशेष अनाज।
**ओगली**—स्त्री० (सि०) अन्न भंडार।
**ओगलीठो**—पु० (मं०) 'ओगळ' का आटा।
**ओगियानो**—पु० (शि०) अलाव, आग का अंबार।
**ओगुण**—पु० (बि०) अवगुण, दोष, बुराई।
**ओगुल**—पु० (शि०) सीढ़ी।
**ओघ**—पु० (कु०) दे० ओग।
**ओघळू**—वि० (बि०) ऐसा व्यक्ति जिसके पास कोई काम न हो।

**ओघामेचा**—पु० (कु०) कमी-बेशी।
**ओचणा**—अ० क्रि० (मं०) उदय होना।
**ओचा**—पु० (कु०) कम नमक वाला पतला पकवान।
**ओच्छा**—वि० छोटा, कमीना।
**ओछण**—पु० (कु०) दाल आदि को गाढ़ा करने के लिए डाला जाने वाला आटे का पतला घोल।
**ओछुणा-बाव**—पु० (कु०) चाचा।
**ओछुणी-ईया**—स्त्री० (कु०) चाची।
**ओछमोछ**—अ० (चं०) एक सिरे से दूसरे सिरे तक।
**ओछ्रा**—पु० (कु०) छत से टपकता पानी।
**ओछा**—वि० (कु०) छोटा।
**ओछे**—स्त्री० (सि०) छोटी बात।
**ओछो**—वि० (सि०) दे० ओच्छा।
**ओज**—पु० (मं०) प्रकाश।
**ओज़**—पु० (सि०, सो०) बहाना।
**ओजड़**—वि० (सि०) बंजर (भूमि)।
**ओजरा**—पु० (सो०, सि०) पेट, विशेषतया पशुओं का पेट।
**ओजे**—अ० (कां०) मां के लिए संबोधन।
**ओज़े-सोज़े**—अ० (सि०) बहाने बनाकर।
**ओजो**—स्त्री० (चं०) माता।
**ओज़ो**—अ० (सि०) दोबारा।
**ओझ**—पु० (बि०, चं०) पौधों के चारों ओर उगी घास जो पौधों को बढ़ने से रोकती है।
**ओझकरा**—वि० (कां०) अधिक सफाई पसंद।
**ओझा**—पु० (मं०) झाड़-फूंक करने वाला, चेला।
**ओझा**—पु० (शि०) चेहरे का त्वचा-रोग।
**ओट**—पु० (सि०) तना।
**ओट**—स्त्री० (सि०) किसी चीज़ का पर्दा, परोक्ष, आड़, साया, सहारा।
**ओटका**—पु० (सि०) छोटा आंगन।
**ओटण**—पु० (कां०) दाल, कढ़ी आदि को गाढ़ा बनाने हेतु डाला गया आटे का पतला घोल।
**ओटणा**—स० क्रि० (सि०, चं०) कपास से बिनौले अलग करना।
**ओटणा**—स० क्रि० (कु०) एक बर्तन से गिरते पानी आदि द्रव पदार्थ को दूसरे छोटे बर्तन में थामना या भरना।
**ओटणा**—स० क्रि० (कां०) काढ़ना, दूध उबालना।
**ओटा**—पु० (चं०) झरोखा।
**ओटाणा**—स० क्रि० (चं०) मिलाना।
**ओटाळी**—स्त्री० (सि०) छोटी खिड़की।
**ओटू**—पु० (मं०) थालियां रखने का स्थान।
**ओटेरिणो**—अ० क्रि० (शि०) पेट में दर्द होना।
**ओठ**—पु० होंठ।
**ओठड़ू**—पु० (शि०, चं०) दे० ओठ, 'ओठ' का लघुता वाचक शब्द।
**ओठी**—वि० (कु०) मोटे होंठ वाला।
**ओड़**—पु० (बि०) भेड़ों और बकरियों को बंद करने का कमरा।
**ओड़**—स्त्री० (चं०) छाया।
**ओड़**—स्त्री० (कु०) श्रद्धा से खड़ा किया गया पत्थर। ज़मीन में धंसा पतला, नुकीला, लम्बा पत्थर।
**ओड़क**—पु० (कु०) भेद, उत्तर, संदेश।
**ओड़कण**—पु० (सि०) खेत में हल चलाते समय व्यवधान पैदा करता पत्थर।
**ओड़कणी**—स्त्री० (सि०) कुहनी।
**ओड़की**—स्त्री० (सि०) छोटी टोकरी।
**ओड़खन**—स्त्री० (सो०) लकड़ी का टुकड़ा जिस पर घास के छोटे-छोटे टुकड़े किये जाते हैं।
**ओड़चन**—स्त्री० बाधा, रुकावट।
**ओड़णा**—स० क्रि० (सि०) तानना।
**ओड़णो**—अ० क्रि० (शि०) अड़ना।
**ओड़ना**—स० क्रि० (बि०, मं०) ढकना, बंद करना।
**ओडला**—पु० (सो०) टोकरा।
**ओड़ला**—अ० (सि०) थोड़ा अपनी तरफ।
**ओडळी**—स्त्री० (सि०) रसोईघर से धुआं निकालने की जगह, चिमनी।
**ओड़ली**—स्त्री० (चं०) चक्की के नीचे की खाली जगह।
**ओडशण**—वि० (सि०) परिवार नाश से एकाकी (व्यक्ति)।
**ओडांग**—वि० (सि०) तंग (जगह)।
**ओडा**—पु० (सि०) टोकरा।
**ओड़ा**—पु० भेड़-बकरियों या छोटे पशुओं के लिए बनाया गया कठघरा। मुर्गियों को रखने का स्थान।
**ओड़ा**—पु० (कु०) सीमा सूचक पत्थर, दो खेतों के बीच सीमा निर्धारित करने के लिए खड़ा किया पत्थर।
**ओड़ा**—अ० (शि०) इधर।
**ओडा-जेंआं**—अ० (कु०) थोड़ा सा।
**ओडी**—स्त्री० (कां०, ह०) घराट के ऊपर बनी कीप के आकार की बांस की टोकरी जिसमें दाने डाले जाते हैं।
**ओड़ी**—स्त्री० (चं०) लंबा तथा कम चौड़ा खेत।
**ओड़ी**—स्त्री० (कां०) सामग्री-सूची।
**ओडी**—स्त्री० सीढ़ियों के नीचे का प्रकोष्ठ। औज़ारों का कमरा।
**ओडु-मोडु**—पु० (मं०) बच्चों का एक खेल।
**ओडू**—पु० (सि०) खेत का अंतिम किनारा।
**ओड़ू**—पु० (सो०) छोटी किंतु ऊंची टोकरी।
**ओडू**—पु० (सि०) भेड़-बकरियों के बच्चे रखने का छोटा स्थान।
**ओडू**—पु० (कु०) वह छोटी बही जिसमें सरकारी ज़मीन का लगान नंबरदार स्वयं लिखता है।
**ओडू-मोडू**—अ० (कां०) झुंड बना कर बैठने की क्रिया।
**ओड़े**—अ० (सो०) ऐसे ही।
**ओड़े**—स्त्री० (सि०) मुसीबत, तंगी।
**ओड़े**—पु० (सि०) पक्षियों या पशुओं को मारने की फांसी।
**ओड़ो**—पु० (कु०) देवता के क्षेत्र की अंतिम सीमा।
**ओड्डो**—अ० (शि०) और जैसा।
**ओढ़ळण**—पु० (कां०) ओढ़ने का वस्त्र।
**ओढण**—पु० (बि०, चं०) पहनने का वस्त्र, परिधान।
**ओळणा**—स० क्रि० (सि०) किसी चीज़ को ढक देना।
**ओळणा**—स० क्रि० (चं०) पहनना। ओढ़ना।

**ओढणु**—पु० (चं०) चुनरिया, अनसिला वस्त्र।
**ओढ़नो**—अ० क्रि० (शि०) सूर्य का अस्त होना।
**ओढीघेरे**—अ० (कु०) आमतौर पर।
**ओणख**—स्त्री० (कु०) झुंझलाहट, दिल ऊबना।
**ओणजाण**—स्त्री० (शि०) आना-जाना, आवागमन।
**ओणत**—अ० (सि०) अचानक।
**ओणा**—अ० क्रि० (सि०, सो०) होना।
**ओणावणो**—स० क्रि० (शि०) मंगवाना।
**ओणी**—वि० (सि०) नोकदार।
**ओणे**—स्त्री० (सि०) नोक।
**ओणे**—स्त्री० (सि०) फौज का नेतृत्व।
**ओतड़**—वि० (कां०, चं०) ऐसी भूमि जहां पानी न लगता हो और वर्षा ही सिंचाई का आधार हो।
**ओतड़ी**—वि० (कां०) बंजर (भूमि)।
**ओत्थू**—अ० (कां०, ह०) वहां।
**ओथल**—पु० (सि०) खेत का ऊपरी हिस्सा।
**ओद**—पु० (चं०) दीवार को वर्षा से बचाने के लिए वढ़ाया गया छत का बाहरी भाग।
**ओदमों**—अ० (सि०) बीच में, आधे रास्ते में।
**ओदयावणी**—स्त्री० (शि०) आधे फाल्गुन में आने वाला त्यौहार।
**ओदरना**—अ० क्रि० (कु०) गिरना, वर्षा के पानी का घर के अंदर गिरना; घड़े का टूट जाना।
**ओदरानो**—पु० (सि०) अदरक का खेत।
**ओदल**—पु० (कु०) लकड़ी का फाड़।
**ओदा**—पु० (सो०) पद, ओहदा।
**ओदियाळा**—पु० (मं०) आधा हिस्सा।
**ओदी**—स्त्री० (शि०) याद।
**ओदे**—अ० (सि०) इधर से।
**ओदोम**—अ० (शि०) बीच में।
**ओधकड़**—वि० (कु०) दे० औधकड़।
**ओधमुआं**—वि० (कु०) दे० औघमुआं।
**ओधमो**—अ० (सि०) आधे रास्ते में।
**ओधरातो**—वि० (सि०) आधी रात का।
**ओधरोग**—पु० (शि०) पक्षाघात।
**ओनण**—स्त्री० (चं०) आमदनी।
**ओनार**—पु० (शि०) अनार।
**ओप**—पु० (बि०, चं०) वर्षा के पानी से मिट्टी आदि के स्वयं घुलने की क्रिया।
**ओप**—पु० (कां०) कुहरा।
**ओपड़ना**—अ० क्रि० (कु०) दे० औपड़ना।
**ओपड़िगा**—वि० (शि०) नासमझ।
**ओपणा**—स० क्रि० (चं०) पहली बार पौधे नष्ट हो जाने पर उसके स्थान पर दूसरी बार पौधे लगाना।
**ओपणा**—अ० क्रि० (कु०) जंचना, ठीक लगना।
**ओपत**—स्त्री० (कां०) समूची उपज या पूंजी।
**ओपर**—पु० (सो०) किसी व्यक्ति को अचानक बीमारी लग जाने का भाव।
**ओपरा**—वि० (मं०) नया, दूसरा।
**ओपरा**—पु० (कु०) आधिदैविक या भूतप्रेत का प्रभाव।
**ओपरा**—वि० (सो०) अपरिचित, अलग।
**ओपरा**—वि० (बि०) कम गहरा।
**ओपराणो**—अ० क्रि० (शि०) शर्माना।
**ओपराली**—स्त्री० (शि०) कान में लगाने का आभूषण।
**ओपरी**—स्त्री० (कां०) भेदभाव।
**ओपळा**—पु० (चं०) मुख पर पड़ने वाली झाइयां या काला दाग।
**ओपाई**—स्त्री० (चं०) एक ही स्थान पर दूसरा बूटा लगाने की क्रिया।
**ओपात**—पु० (बि०) उपज का कुछ भाग जो मुज़ारे को दिया जाता है।
**ओफाद**—स्त्री० (सि०) शरारत।
**ओबक्का**—पु० (सि०) दिल को लगा धक्का।
**ओबड़**—स्त्री० (सि०) बिना पानी की ज़मीन।
**ओबड़**—पु० (चं०) अपने आप उगने वाले पौधे।
**ओबण**—स्त्री० गेहूं के खेत में उगने वाला घास।
**ओबणू**—वि० (कां०) बरसाती।
**ओबरा**—पु० (कु०) कमरा।
**ओबरा**—पु० पहली मंज़िल का पिछला कमरा, पशुशाला, घर का भीतरी भाग।
**ओबरी**—स्त्री० बड़ा 'ओबरा', भीतरी कक्ष जहाँ गृहस्थी का सामान रखा जाता है।
**ओबळी**—स्त्री० (सि०) ग्रहदशा।
**ओबशा**—वि० (सो०) अवश, पराधीन।
**ओब्भा**—पु० (कां०) कोने में बना कमरा।
**ओभड्ड**—पु० (कु०) धान रोपते हुये स्त्री-पुरुषों द्वारा गाया जाने वाला समूहगान।
**ओभा**—पु० (कां०) बरामदे के साथ बना कमरा।
**ओयन**—अ० (सि०) वैसा ही।
**ओयर**—पु० (सि०) गोड़ाई के समय फसल पर मिट्टी चढ़ाने की क्रिया।
**ओयरा**—पु० (सि०) घराट में चक्की तक चढ़ा आटा।
**ओयरी**—स्त्री० (सि०, सो०) पनीरी, पौध।
**ओर**—अ० (कु०) खेत के किनारे पर बैल को मुड़ने के लिए बोला जाने वाला शब्द।
**ओरका**—वि० (सो०) इस तरफ का।
**ओरके**—अ० (सि०) इधर की ओर।
**ओरछोर**—पु० (मं०) किनारा।
**ओरज़**—स्त्री० (सि०) प्रार्थना।
**ओरति**—अ० (सो०) अन्यत्र, और स्थान पर।
**ओरला**—वि० थोड़ा इधर वाला।
**ओरा**—अ० (सि०) इधर।
**ओरा**—पु० (कां०) देवता के नाम पर रखा अन्न का भाग।
**ओरा**—वि० (बि०) कम भरा हुआ।
**ओराड़**—स्त्री० (सि०) गुफा।
**ओरी**—स्त्री० (कु०) पनीरी, धान या सब्जी के छोटे पौधे।
**ओरू**—अ० (शि०, कु०) इधर।

**ओरे**—अ० (कु०, सो०) इधर।
**ओरे-पोरे**—अ० (कु०) आस-पास, इधर-उधर।
**ओरो**—अ० (कु०) इधर की ओर, इस ओर।
**ओर्खल**—पु० (कु०) एक प्रकार का वृक्ष।
**ओर्लू**—पु० (कु०) धान की पनीरी का गट्ठा।
**ओर्ह**—अ० (कु०) से लेकर।
**ओळंग**—पु० (मं०, कु०) शराब पीते समय सलाद के रूप में खाया जाने वाला कोई नमकीन खाद्य।
**ओल**—स्त्री० (बि०) किसी प्रकार की बाधा।
**ओल**—पु० (सि०) गरमी।
**ओळ**—पु० (कु०) वर्षा के कारण खेत में पड़ा गड्ढा; बड़ा छेद।
**ओळ**—वि० (कां०) अटपटा, प्रतिकूल।
**ओळजी**—स्त्री० (शि०) हलदी।
**ओलड्डू**—अ० (शि०) इस ओर, इधर।
**ओलड्डू-पोलड्डू**—अ० (शि०) इस ओर, उस ओर, इधर-उधर।
**ओलण**—पु० (सि०) दाल, सब्जी आदि।
**ओलणा**—स० क्रि० (कु०) पानी से भिगोना, किसी को पानी से तर-बतर करना।
**ओलणा**—स० क्रि० दाल, भात आदि को मिश्रित करना। मथना, मथ कर नर्म करना।
**ओळना**—स० क्रि० (सि०, सो०) कांटों की सफाई करना, घास, फसल आदि को काटना।
**ओळनो**—स० क्रि० (शि०) मिश्रित करना।
**ओलरना**—अ० क्रि० (कु०) सड़ जाना।
**ओलसणा**—अ० क्रि० (कु०) पेट में भोज्य पदार्थ का नीचे उतरना, खाली होना।
**ओला**—पु० (चं०) चूल्हे का एक हिस्सा।
**ओळा**—पु० (मं०) छेद।
**ओळा**—पु० मुंह में पड़ा छाला, फोड़ा।
**ओलावो**—पु० (सि०) एक प्रकार के जूते।
**ओळिआ**—पु० (मं०) बर्तन के गले में बंधी रस्सी।
**ओळिज**—स्त्री० (सि०) हलदी।
**ओलिहचड़ा**—पु० (चं०) कुलथ और चावल का बना भोजन।
**ओली**—स्त्री० (कां०) विवाह आदि के समय पूजन में प्रयुक्त होने वाला टोंटी-युक्त मिट्टी का कलश।
**ओली**—स्त्री० (कां०) टूटी हड्डी।
**ओले**—पु० (मं०) सहारा।
**ओलै**—पु० (कु०) ज़मीन का कोना।
**ओलैहरा**—पु० (चं०) ओले।
**ओल्ला**—पु० (बि०) ओट, आड़, छिपाव।
**ओल्ला**—पु० (सि०) अंतराल।
**ओल्ले**—अ० (सि०) अरी, पति द्वारा पत्नी को पुकारने का शब्द।
**ओल्ह**—अ० (चं०) किनारे।
**ओल्ह**—पु० (चं०) एक प्रकार की दाल की फसल।
**ओल्हड़ा**—वि० (कु०) अधूरा कार्य करने वाला।
**ओल्हडू**—पु० (चं०) गाय का लेवा, थन।
**ओल्हा**—वि० (चं०) कम बाट वाला सूत।
**ओल्हु**—अ० (कु०) बच्चे को सुलाने के लिए लोरी देते हुए प्रयुक्त शब्द।
**ओवड़**—पु० (कां०) एक प्रकार की घास।
**ओवांजणा**—स० क्रि० (सि०) मंत्रों द्वारा उपचार करना।
**ओश**—स्त्री० (कु०, सि०) ओस।
**ओश**—अ० (कु०) गाय-बैल को बुलाने के लिए प्रयुक्त अव्यय शब्द।
**ओशराड़ा**—वि० (सि०) हठी।
**ओशू**—अ० (सि०) दे० एशु।
**ओशे**—वि० (सि०) अस्सी।
**ओशेज**—स्त्री० (सि०) प्रार्थना।
**ओशो**—पु० (मं०) आंसू।
**ओश्ती**—स्त्री० (मं०) औषधि, दवाई।
**ओसणा**—अ० क्रि० (कु०) उतरना।
**ओसरा**—पु० (चं०) रायता।
**ओसान**—पु० (चं०) एहसान।
**ओसारी**—स्त्री० (मं०) धान इकट्ठा करने की क्रिया।
**ओसो**—अ० क्रि० (सि०) है।
**ओह**—अ० (कु०) आश्चर्य प्रकट करने के लिए प्रयुक्त विस्मयादि-बोधक शब्द।
**ओह**—सर्व० (कां०, सि०) वह।
**ओही**—सर्व० वही।
**ओही**—स्त्री० (बि०) सुस्ती।
**ओहो**—अ० (बि०) निराशाजनक शब्द।
**ओहडणू**—पु० (कां०, ह०) चादर, दुपट्टा।
**ओहड़ा**—वि० (कु०) थोड़ा, मामूली।
**ओहन**—स्त्री० (कु०) दे० हौर्न।
**ओहरा**—पु० (बि०) चेतना, होश।
**ओहरी**—स्त्री० (बि०) राई के दाने।
**ओहरी**—स्त्री० (शि०) झुर्रियां।
**ओहल**—पु० (चं०) सोयाबीन की तरह का अनाज।
**ओहलर**—वि० नवजात शिशु।
**ओहलरना**—अ० क्रि० (चं०) प्रसव होना।
**ओहला**—पु० (कु०) बचाव, छुपाव, ओट।
**ओहला**—पु० (चं०) एक वृक्ष।
**ओहळा**—पु० टहनियों सहित हरे चने को भूनकर प्राप्त छिलकायुक्त चना।
**ओहलै**—अ० पश्चाताप सूचक शब्द।
**ओहल्ला**—पु० (कां०) गहरा दलदला स्थान।

## औ

**औ**—देवनागरी वर्णमाला का दशम कंठोष्ठ्य संधि स्वर।
**औंगड़**—स्त्री० (मं०) अंगुलि।
**औंगण**—पु० (बि०) आंगन।
**औंगळ**—स्त्री० (सि०) अंगुलि।

**औंगळी**—स्त्री० (कां०) दे० **औंगड़।**
**औंजळ**—स्त्री० (सि०) अंजलि, दोनों हाथों में उठाया गया अनाज या पानी आदि।
**औंठा**—पु० (कु०) अंगूठा।
**औंठी**—स्त्री० (कु०) अंगुली।
**औंतिणा**—अ० क्रि० (कु०) अत्यधिक भूख लगना।
**औंत्र**—पु० (कु०) अमृत।
**औंदक-जांदक**—स्त्री० (कां, ह०) आना-जाना, आवागमन।
**औंदण**—स्त्री० (चं०) आमदनी, आय।
**औंदणी**—स्त्री० आमदनी, आय।
**औंदर**—स्त्री० (चं०) अंत्र, आंत।
**औंदळ**—स्त्री० (शि०) अंजलि।
**औंदी-पौंदी**—स्त्री० (कु०) इधर-उधर की झूठी बात।
**औंधा**—वि० उलटा।
**औंस**—स्त्री० (कु०) अमावस्या।
**औंसा**—अ० (शि०) इस बार।
**औंहल**—स्त्री० (चं०) आकाश बेल।
**औंहला**—पु० (चं०) घोंसला।
**औआ**—अ० क्रि० (शि०, कां०) आईए।
**औइछिणो**—स० क्रि० (शि०) परिश्रम करना।
**औइठणो**—अ० क्रि० (शि०) एक स्थान पर पड़े रहना।
**औइणू**—पु० (कु०) धान का गट्ठा।
**औउज़**—स्त्री० (कु०) झिझक, वहम।
**ओउज़िणा**—अ० क्रि० (कु०) झिझकना, वहम करना।
**औकड़**—स्त्री० (चं०) कमी।
**औकड़**—स्त्री० (सि०) लकड़ी का टुकड़ा।
**औकड़**—पु० (चं०) पकड़।
**औकड़**—स्त्री० (कां०) कठिनाई।
**औकड़ना**—अ० क्रि० (शि०) सिकुड़ना।
**औकडु**—पु० (सि०) लकड़ी का टुकड़ा जिस पर रख कर कोई चीज़ काटी जाए।
**औकत**—स्त्री० (मं०) दे० ओकत।
**औक-मौके**—अ० (चं०) चुपचाप।
**औकल**—स्त्री० (कु०) अक्ल, बुद्धि।
**औका**—वि० (चं०) चुप।
**औख**—अ० (कु०) "अच्छा हुआ" भावाभिव्यक्ति दर्शाता हुआ विस्मयादिबोधक शब्द।
**औखत**—स्त्री० (सो०) दे० ओकत।
**औखर**—पु० (कु०) एक ऐसा वृक्ष जिसके स्पर्श से मनुष्य का शरीर फूल जाता है।
**औखर**—पु० (शि०) बर्तन।
**औखला**—वि० (कु०) यहां का।
**औखले**—स्त्री० (सि०) ओखली।
**औखा**—वि० (कु०, चं०) कठिन, मुश्किल।
**औखी**—स्त्री० (कु०) मुसीबत।
**औखे**—अ० (कु०) यहां।
**औग**—स्त्री० (कु०) अग्नि।
**औगडु**—पु० (सि०) एक बार में बाजुओं में उठाई जाने वाली लकड़ी आदि की मात्रा।
**औगण**—पु० अवगुण।
**औगण**—पु० (कु०) अपशकुन।
**औगण-बाण**—पु० (कु०) अग्नि-बाण।
**औगम**—पु० (कु०) अपशकुन।
**औगर**—पु० (कु०) जरायु, गर्भनाल।
**औगू**—पु० (कु०) एक प्रकार का वृक्ष।
**औगोणिया**—अ० (शि०) पहले।
**औघड़**—पु० (कु०) साधुओं का एक संप्रदाय।
**औघड़**—वि० (मं०) मस्त, प्रसन्न।
**औचा**—पु० (कु०) मांस या चर्बी डालकर बनाया चावल का तरल पदार्थ।
**औच्छी**—स्त्री० (मं०) आंख।
**औछरा**—पु० (कु०) दे० ओछरा।
**औछु**—पु० (कु०) अश्रु, आंसू।
**औज़**—अ० (कु०) आज।
**औज़**—पु० (शि०) हल।
**औज़का**—वि० (कु०) आज का।
**औज़काल**—अ० (कु०) आजकल।
**औजा-गौजा**—पु० (चं०) बेचैनी।
**औझ**—पु० वृक्ष की छाया। रुकावट।
**औटा**—पु० (सि०) आंगन।
**औठ**—वि० (कु०) आठ।
**औठल**—स्त्री० (चं०) बाधा।
**औठी**—स्त्री० (शि०) अंगुलि।
**औड़**—स्त्री० (बि०) अनावृष्टि, सूखा।
**औड़**—पु० (कु०) हड्डियों की पीड़ा।
**औड़**—स्त्री० (सि०) आवश्यकता।
**औडणा**—अ० क्रि० समाना, स्थान मिलना।
**औड़ा**—पु० (बि०) मक्की के खेत में पानी के लिए बनाई गई नालियां।
**औड़िना**—अ० क्रि० (कु०) शरीर का जोड़ों की दर्द के कारण हिल-डुल न कर सकना।
**औड़ी**—स्त्री० (शि०) इच्छा, चाह।
**औढी**—वि० (कां०) वृक्षों की छाया वाली (भूमि)।
**औण**—फसल आदि से दाने निकालते समय हवा के रुख के अनुसार स्थान तथा दिशा निर्धारित करना तथा इसकी प्रक्रिया।
**औण**—पु० (चं०) घराट के पाट का मध्य का छेद जिसमें पीसने के लिए दाने गिरते रहते हैं।
**औण**—पु० (कां०) आगमन, आमद।
**औणख**—स्त्री० दे० ओणख।
**औणना**—अ० क्रि० (कु०) दिन डूब जाना, सूर्य अस्त होना।
**औणा**—अ० क्रि० (कां०) आना।
**औणू**—पु० (कु०) 'पेच्छी' के नीचे रखा छिद्र जिससे अनाज निकलता है।
**औत**—वि० (बि०) निःसंतान, अपुत्र।
**औतर**—वि० (चं०) निःसंतान, अपुत्र।

औतर—पु० (कु०) मृत व्यक्ति की आत्मा का किसी जीवित व्यक्ति में प्रवेश होने का भाव।
औतर—पु० (चं०) देवी-देवता की मूर्ति।
औतार—पु० (चं०) अवतार।
औथी—अ० क्रि० (कु०) नकारात्मक अभिव्यक्ति में "है"।सर्वदा 'नी' के साथ प्रयुक्त होता है—यथा 'नी औथी' (नहीं है)।
औद—पु० (सो०) हौद।
औदमी—पु० (कु०) लकड़ी के अधिक लंबे टुकड़े।
औदरी—स्त्री० (कु०) गाय का पेट जब खाली लगने लगे।
औदल—पु० (कु०) बड़ा सांप।
औदवाया—स्त्री० (शि०) आधे सिर का दर्द।
औधकड़—वि० (कु०) ढलती जवानी का।
औधकार—वि० (कु०) आधा जैसा।
औध-परौध—अ० (कु०) आधा-पूरा।
औध-पाका—वि० (कु०) आधा पका।
औधमुआं—वि० (कु०) अधमरा।
औधळा—वि० (कु०) आधा।
औधा—वि० (कु०) आधा।
औधा—पु० (शि०) पदवी, पद।
औनणो—स० क्रि० (शि०) फैलाना।
औनणो—स० क्रि० (शि०) बीज बोना।
औनी—अ० (शि०) और, अन्य।
औन्हणा—स० क्रि० (शि०) अनाज को खेत में फैलाना।
औपड़ना—अ० क्रि० (कु०) समा जाना।
औबकड़—स्त्री० (चं०) कठिन कार्य।
औब्त—अ० (चं०) समस्त।
औबे—अ० (शि०) अब।
औम्या—स्त्री० (शि०) लालच।
औरज—स्त्री० (कु०) अर्ज़, विनती, आवेदन।
औरजी—स्त्री० आवेदन पत्र, प्रार्थनापत्र।
औरड़ी—अ० (बि०) इस तरफ, निकट।
औरन—स्त्री० (कु०) दे० हौर्न।
औरया—वि० (चं०) कठिन।
औरस—वि० (मं०) असली।
औरा—वि० (चं०, मं०) कम मरा हुआ।
औरा—वि० अधूरा, अपूर्ण।
औरा—वि० (कां०) पौना भाग, अनाज की भेंट।
औरा-जाणा—अ० क्रि० गर्भपात होना।
औरी—वि० (सि०) अधूरी, अधमरी।
औरी—वि० (सि०) समय से पहले पैदा हुई।
औरी-पुरी—स्त्री० (कु०) बच्चों का एक खेल जिसमें एक बच्चा अपने हाथों में कुछ चीज़ों (अखरोट आदि) को रख कर दूसरे से पूछता है कि उसके हाथ में वस्तुएं सम गिनती में हैं या असम गिनती में।
औरी-पौरी—अ० (शि०) आरपार, आसपास।
और्घ—स्त्री० (कु०) अर्घ्य।
और्ज—पु० (शि०) हर्ज।
औल—वि० (चं०) बीभत्स, घिनौना।
औळ—पु० (सो०, सि०) हल।
औलख—वि० (मं०) अलख।
औलणा—वि० (कु०) कम नमक वाला।
औळना—अ० क्रि० (कु०) गिरना।
औळसी—वि० (कु०) आलसी।
औला—पु० (चं०) बच्चे को नहलाने के लिए प्रयुक्त टोंटी-युक्त पात्र।
औळिया—पु० (बि०, मं०) किसी पात्र को सुविधा से पकड़ने हेतु बांधी गई रस्सी।
औळिया—पु० मुसलमान संत।
औलीणा—अ० क्रि० (चं०) घृणा उत्पन्न होना।
औलू—पु० (कु०) दे० ओर्लू।
औल्का—वि० (शि०, सो०) हलका।
औलखड़ा—वि० (कु०) अधूरा कार्य करने वाला, लापरवाह।
औवणा—अ० क्रि० (मं०) आना।
औशर—स्त्री० (कु०) नि:संतान भेड़ या बकरी।
औशी—वि० (कु०, सि०) अस्सी।
औष्टा—स्त्री० (कु०) गृह यज्ञ या हवन जिसमें घी के साथ आठ प्रकार के अन्नों की आहुति डाली जाती है।
औसर—पु० (चं०) अवसर।
औसरा—पु० (चं०) राई युक्त भोज्य पदार्थ।
औसली—वि० (शि०) असली, शुद्ध।
औसा/सो—अ० क्रि० (शि०, सो०) है।
औस्तोणा—अ० क्रि० (शि०) अस्त होना।
औहंड़ी—स्त्री० (मं०) हल के अग्रभाग में लगी पत्ती।
औहणी—अ० (चं०) इस बार।
औहत—स्त्री० आहुति।
औहरा—पु० राई के पत्ते, विशेष प्रकार का साग।
औहुळ—स्त्री० (कु०) चिता।

## क

क—देवनागरी वर्णमाला के कवर्ग का पहला (व्यंजन) वर्ण। उच्चारण स्थान कंठ।
कंऊं—अ० (बि०, सो०) क्यों।
कंकन—पु० (शि०, मं०) छिपकली।
कंकाल—पु० अस्थिपंजर, कंकाल।
कंग—स्त्री० (चं०, बि) बुद्धिभ्रम।
कंगहोणा— अ० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) ठिठुरना।
कंगण—पु० हाथ में पहना जाने वाला सोने या चांदी का कड़ा शादी पर दूल्हा-दुलहन को बांधा जाने वाला मौली क धागा।
कंगणयाठ—पु० (मं०) फसल के तने।
कंगणा—पु० दे० कंगण।
कंगणी—स्त्री० धान-प्रजाति का अन्न विशेष, छोटा कंगन।
कंगणु—पु० छोटा कंगन।

**कंगयारी**—स्त्री० (मं०) बारीक कांटेदार झाड़ी।
**कंगयारी**—स्त्री० (चं०, बि०) गेहूं में लगने वाला काले रंग का रोग। कुमकुम रखने का पात्र।
**कंगर**—स्त्री० (बि०, ह०, ऊ०) पथरीली ज़मीन।
**कंगरमाला**—पु० (बि०) घोड़े-खच्चरों की घंटियों की माला।
**कंगला**—वि० निर्धन, फक्कड़।
**कंगाळ**—वि० निर्धन, गरीब।
**कंगावणो**—स० क्रि० (शि०) कंघी करना।
**कंगियारी**—स्त्री० (बि०) केसर डालने का लकड़ी या मिट्टी का बर्तन।
**कंगूरा**—पु० मीनार, गुंबद।
**कंगोथर**—पु० (सि०) शिला विशेष जिस पर भीगे हुए माश को पीसते हैं।
**कंघू**—पु० बांस की लकड़ी से बना जुलाहों का उपकरण विशेष।
**कंघेरना**—स० क्रि० (चं०) दीवार पर लंबा शहतीर डालना।
**कंच**—पु० कांच।
**कंचा**—पु० कांच, बिल्लौर, गोली।
**कंची**—स्त्री० कैंची।
**कंचुआ**—पु० आवरण, चोला।
**कंच्वाल**—पु० (चं०) मस्तिष्क में कान का समीपवर्ती भाग।
**कंज**—स्त्री० सांप की केंचुली।
**कंजक**—स्त्री० कन्या।
**कंजड़खेहड़ा**—पु० (बि०) मुजराखाना।
**कंजड़ा**—पु० (चं०) सब्जी बेचने वाला।
**कंजर**—पु० लंपट, दुष्ट आदमी।
**कंजरा**—वि० झगड़ालू।
**कंजरी**—स्त्री० वेश्या।
**कंजरेड़ा**—पु० (शि०, सि०) वह स्थान जहां लड़ाई झगड़ा हो।
**कंजेड़**—पु० (बि०) कनपटी।
**कंझक**—स्त्री० (चं०) अच्छा न लगने का भाव।
**कंटका**—वि० (शि०) कमीना।
**कंटकी**—स्त्री० धागे में लोहे की तार बांध कर मछली पकड़ने की क्रिया।
**कंठ**—पु० गला, स्वर।
**कंठशोख**—पु० (सो०) प्यास।
**कंठा**—पु० गले का हार।
**कंठी**—स्त्री० हार, गले का आभूषण।
**कंठीलन**—स्त्री० (मं०) चील।
**कंड**—पु० कांटे की तरह चुभने वाला धूली मिश्रित भूसा।
**कंड**—पु० गर्व।
**कंडकी**—पु० (मं०) कोढ़ी।
**कंडयारी**—स्त्री० (चं०) कंटकी। दु:खदायिनी।
**कंडयाला**—वि० कंटीला।
**कंडयाहड़ी**—स्त्री० (मं०) कांटेदार झाड़ी जिसके फल खाए भी जाते हैं।
**कंडली**—स्त्री० (बि०, मं०) पत्थर की कुंडी।
**कंडलू**—पु० (सि०) कमर।
**कंडवार**—पु० (सि०) मकान का कोना।
**कंडा**—पु० कांटा। तराजू।
**कंडाहना**—अ० क्रि० तालु के मांस की वृद्धि होना।
**कंडी**—वि० (शि०) अकड़बाज।
**कंडूखी**—स्त्री० (कां०, ऊ०) एक ओर से मुड़ी लंबी लाठी।
**कंडेई**—स्त्री० (चं०) भूमि को सुहागे से समतल करने की क्रिया।
**कंडेरे**—पु० (सि०) जन्माष्टमी के समय मनाया जाने वाला शीतला माता का त्यौहार।
**कंडेला**—पु० (मं०) परिचालक।
**कंढा**—पु० ऊंचा स्थान, चोटी।
**कंढी**—पु० (कां०, ह०) गले का एक रोग। किनारा।
**कंढी**—स्त्री० (कां०) पर्वत की ढलान पर बसा गांव। बच्चों के गले में बांधी जाने वाली दवाई की पोटली।
**कंढू**—पु० (कां०, ह०) सोने के सिक्कों का रेशमी धागे में मढ़ा हुआ हार।
**कंढोणा**—अ० क्रि० कुदना।
**कंत**—पु० पति।
**कंताळि**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) कर्णाभूषण।
**कंद**—पु० पति।
**कंद**—पु० (मं०) भूमि के नीचे पैदा होने वाला फल।
**कंद**—पु० देवी पूजन के लिए प्रयुक्त लाल वस्त्र।
**कंदए**—स्त्री० (कां०) गुफा।
**कंदरा**—स्त्री० गुफा।
**कंध**—स्त्री० दीवार।
**कंधकड़ी**—स्त्री० (बि०) छिपकली।
**कंबणा**—अ० क्रि० (कां०) कांपना।
**कंया**—स्त्री० (चं०) जीवन। काया, शरीर।
**कंरक**—पु० (चं०) एक प्रकार का रोग।
**कंवारपाठा**—पु० सरकंडे का एक प्रकार।
**कंस**—पु० (चं०) दुष्ट व्यक्ति।
**कंसणी**—स्त्री० दुष्टा, अत्याचारिणी, कर्कशा।
**क:ला**—वि० अकेला।
**कईट**—पु० (शि०) गर्द, धूल।
**कईणो**—स्त्री० (सो०) चरागाह।
**कउंलू**—स्त्री० (सि०) कमर।
**कऊं**—पु० (चं०) जैतून।
**कऊ**—पु० काग।
**कऊ**—पु० (सो०) काई, काई वाला पानी।
**कऊडयो**—पु० (सि०) कंद फल।
**कऊल**—पु० (मं०) चढ़ाई।
**कएड़**—पु० (सि०, शि०) बहुत बड़ा पत्थर।
**कऐ**—सर्व० (सि०) कोई।
**कओंथा**—पु० रेशम का कीड़ा।
**कक**—पु० (चं०) पिता, चाचा, ताया।
**ककड़**—पु० मृग जाति का जंगली पशु।
**ककड़**—पु० वृक्ष विशेष।
**ककड़छोले**—पु० (मं०) सफेद चने।
**ककड़सींगी**—स्त्री० एक वन्य औषधि विशेष।

**ककड़ा**—पु० काकड़ासींगी का वृक्ष।
**ककड़ी**—स्त्री० खीरा।
**ककड़े**—पु० (सि०) दे० ककड़ा।
**ककड़ेयो**—पु० (सि०) दे० ककड़ा।
**ककड़ेरण**—स्त्री० (चं०) दे० ककड़ा।
**ककड़ै**—पु० (चं०) एक पौधा विशेष।
**ककड़ो**—पु० (सो०) चारे का एक वृक्ष।
**ककड़ोट**—पु० (सि०, शि०, सो०) मक्की की रोटी।
**ककड़ोटी/ली**—स्त्री० (सो०) मक्की की पतली रोटी।
**ककणहार**—पु० (कु०) गले का आभूषण।
**ककतालू**—पु० (सि०) तालु।
**ककन**—पु० (सि०) दे० कंकन।
**ककर**—स्त्री० (सि०) छाज बनाने की डोरी।
**ककरेड़**—पु० (सि०, शि०) कुत्ता।
**ककरेड़े**—स्त्री० (सि०, शि०) कुतिया।
**ककरोळू**—पु० (सो०) 'ककड़' वृक्ष के बीज।
**ककहरा**—पु० (मं०) वर्ण विशेष, रंग।
**ककुआ**—पु० साग, शाक।
**ककूड़ी**—स्त्री० (सि०) मुर्गी।
**ककोटा**—पु० गिरगिट।
**ककोड़**—पु० एक वृक्ष विशेष।
**ककोड़**—पु० 'ककोड़' पर लगने वाला फल जिसकी सब्जी बनती है।
**कक्कड़**—पु० (चं०) सिलाई के लिए बारीक काटा गया चमड़ा।
**कक्कड़**—पु० एक जंगली फल।
**कक्कड़**—पु० (कां०, ह०, ऊ०) तंबाकू के सूखे पत्ते।
**कक्कड़ोली**—स्त्री० (चं०) 'ककड़' की खाल।
**कक्ख**—पु० तिनका, घास।
**कक्ख**—अ० कुछ भी नहीं।
**कक्याड़णो**—स० क्रि० (सि०) धक्का देना।
**कख**—पु० (चं०) मधुमक्खी के शहद भरे छत्ते की एक टुकड़ी।
**कख**—पु० (सि०) ककड़ी का छोटा रूप।
**कखटी**—स्त्री० (चं०) कष्ट, दुःख।
**कखड़ा**—वि० (चं०) कठिन।
**कखणी**—अ० (चं०) कब।
**कखणोका**—वि० (चं०) कब का।
**क़खाड़**—स्त्री० दाढ़।
**कखाड़ी**—स्त्री० (चं०) बच्चे के गाल।
**कखाड़ी**—वि० (मं०) सख्त।
**कखाण**—वि० बेस्वाद भोजन।
**कख्यार**—पु० पक्षी विशेष।
**कगर**—स्त्री० (चं०) रीढ़ की हड्डी।
**कगली**—स्त्री० कलगी।
**कग़ार**—पु० (मं०) चोटी, किनारा।
**कचक**—स्त्री० (मं०, कां०) चोट में होने वाली पीड़।
**कच-कच**—स्त्री० निरर्थक शब्द।
**कचडांगा**—वि० (सो०) बेडौल।
**कचड़ा**—वि० अधपका।
**कचड्डल**—वि० गंदा। अव्यवस्थित।
**कचपक**—वि० कच्चा-पक्का।
**कचयाळू**—पु० अरबी।
**कचराड़ी**—स्त्री० (कां०) अरबी का खेत।
**कचराड़ी**—स्त्री० (शि०, सो०) बच्चे की चिल्लाहट।
**कचरि**—स्त्री० (सो०) चिल्लाने की आवाज़।
**कचरी**—स्त्री० छोटा टुकड़ा।
**कचरू**—पु० (कां०, सि०, ऊ०) आलू की बारीक डालियां। 'चलेरी' के पकौड़े।
**कचरेयाला**—पु० (सो०) शोर।
**कचरेर**—स्त्री० (बि०) लकीर।
**कचळा**—वि० नर्म, कोमल; अधपका। अल्पायु।
**कचळाड़**—पु० (सो०) गलत ढंग से भोजन करने की क्रिया।
**कचाडला**—वि० (सो०) गंदा।
**कचापड़**—वि० (कु०) लड़ाई करने वाला। लड़ाकू।
**कचावळी**—स्त्री० (सो०, शि०) अरबी।
**कचियाई**—स्त्री० कच्चापन। लज्जा।
**कचियाइन**—स्त्री० (बि०, ह०, कां०) अधपके की गंध।
**कचींडणा**—स० क्रि० तरल पदार्थ को मसलना।
**कचीख़**—स्त्री० (कु०) चीख।
**कचीहट**—वि० (कु०) गंदा।
**कचुर**—स्त्री० (शि०) उदरपीड़ा की औषधि।
**कचूंमड़**—वि० (कु०) कंजूस।
**कचूर**—पु० (सि०) हल्दी की तरह का एक पौधा जो खाने में कड़वा होता है और शीत के लिए औषधि है।
**कचेड़**—स्त्री० (कु०, मं०) शरारत।
**कचेड़ा**—पु० (कु०) खमीर।
**कचेल्हड़**—पु० (कु०) उच्छिष्ट अन्न, जूठन।
**कचेल्हड़ू**—वि० (कु०) मैला-कुचैला।
**कचेढू**—पु० (मं०) ग्रीष्म ऋतु में प्रातः काल चहकने वाला पक्षी।
**कचैरी**—स्त्री० कचहरी।
**कचैह्‌न**—स्त्री० (चं०) अधपके भोजन या फलादि की गंध।
**कचोंद्रा**—वि० (सि०) तेज़ मिजाज़ वाला, तीक्ष्ण स्वभाव का।
**कचोटिणा**—स० क्रि० (कु०) मिलावट किया जाना।
**कचोळी**—स्त्री० (सो०) भाप में पकाई हुई गेहूं की रोटी जिसमें अन्य खाद्य पदार्थ भी डाला जाता है।
**कचोसणा**—स० क्रि० (कु०) बलात् डुबो देना।
**कचौरी**—स्त्री० (मं०) पीठी वाली रोटी।
**कच्च**—पु० कांच।
**कच्छ**—स्त्री० (बि०, सो०) खेत का किनारा, कक्ष, बगल।
**कच्छड़ो**—पु० (मं०) करेला।
**कच्छणा**—स० क्रि० पटवारी का ज़मीन को नापना।
**कच्छालटु**—पु० (सि०, सो०) दही बिलोने का बर्तन।
**कच्छाळी**—स्त्री० बाजू के नीचे होने वाला फोड़ा।
**कच्छेणा**—स० क्रि० बगल में दबा लेना।
**कच्छेवणा**—स० क्रि० (सो०) बोझ को रस्सी से बांधना।
कच्छोरा—वि० मापा हुआ।
**कच्छौड़**—वि० (मं०) घर-घर जाकर सौदा बेचने वाला।

**कच्छोड़िया**—वि० (मं०) दे० कच्छौड़।
**कच्याई**—स्त्री० कच्चापन।
**कच्याहन**—स्त्री० (मं०, बि०) दे० कचैहन।
**कच्वाल**—पु० (सो०) अरवी।
**कच्छूड**—पु० (बि०) अवगुण।
**कछडेई**—स्त्री० (शि०) चिड़िया।
**कछनाळि**—स्त्री० बगल में होने वाला फोड़ा।
**कछयारा**—वि० (मं०, कां०) किनारे वाला।
**कछराली**—स्त्री० (मं०, कां०) दे० कच्छाळी।
**कछाज**—स्त्री० (बि०) शरारत, दुष्कर्म।
**कछाला**—पु० (सि०) घड़ा।
**कछाली**—स्त्री० (सि०) दही मथने का बर्तन।
**कछियान**—स्त्री० बगल के पसीने से आने वाली गंध।
**कछेणा**—स० क्रि० (कु०) बोझ को रस्सी से बांध कर पीठ पर उठाना।
**कछेयारड़ी**—स्त्री० (मं०) दूर पार का स्थान।
**कजणा**—अ० क्रि० अंगड़ाई लेना।
**कजणा**—अ० क्रि० (कु०) डरना।
**कजळी**—स्त्री० सुंदर गाय।
**कजळोटी**—स्त्री० (चं०) काजल की डिबिया।
**कज़ा**—स्त्री० (बि०) काल, मृत्यु।
**कज़ा**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) शरारत, कलह।
**कजाइण**—स्त्री० (कु०) बुरी जगह, निंदनीय स्थान।
**कजाइश**—स्त्री० (कु०) गुंजाइश।
**कजाई**—वि० उत्पाती।
**कज़ाई**—स्त्री० (कु०) लड़ाई।
**कजाए**—स्त्री० (बि०, ह०, कां०) शरारत।
**कजाटणो**—स० क्रि० (सि०) मिश्रित करना।
**कजात**—स्त्री० (बि०) नीच जाति।
**कज़ात**—वि० (कु०) दुष्ट, शरारती।
**कज़ातला**—वि० (कु०) जाति से भ्रष्ट।
**कज़िया**—पु० (कु०) झंझट, विपत्ति।
**कजीण**—पु० (कु०, शि०) बुरा जीवन, निष्प्रयोजन जीवन।
**कज़ीणा**—स्त्री० (शि०) कांटेदार झाड़ी।
**कजूण**—वि० (कु०, बि०, मं०) बुरा जीवन।
**कजेड़ा**—पु० (शि०) कूड़ा।
**कजेवटे**—पु० (सि०) चावल का विशेष पकवान जो लस्सी डाल कर बनाया जाता है।
**कजेण**—वि० (मं०) अपरिचित।
**कजेश**—दे० कजोश।
**कजेशतला**—वि० दे० कज़ोशतला।
**कजो**—अ० क्यों, किसलिए।
**कजोड़ी**—वि० खराब जोड़ी।
**कजोलणा**—स० क्रि० (सो०) गंदा करना।
**कजोलणे**—स्त्री० (सि०) जलन, ईर्ष्या।
**कजोश**—पु० (कु०) अपयश।
**कज़ोशतला**—वि० (क०) अपयश वाला, यशरहित।
**कज्जल**—पु० काजल।
**कज्जाक**—वि० (चं०) लुटेरा।
**कज्जारहट**—स्त्री० (चं०) कृष्णवर्ण की चिड़िया।
**कझालु**—वि० (सो०) वर्णसंकर।
**कझे**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) अनर्थ, उपद्रव।
**कटंब**—पु० कुटुंब।
**कट**—पु० कसैलापन।
**कट**—पु० (बि०) आम के सिरे से निकलने वाला रस।
**कटकट**—स्त्री० दांतों की आपस में बजने की क्रिया।
**कटकटा**—वि० (कु०) सख्त।
**कटको**—स्त्री० (चं०) विपदा।
**कटणा**—अ० क्रि० कटना।
**कटणा**—स० क्रि० बिताना।
**कटणी**—स्त्री० पीड़ा।
**कटफोड़वा**—पु० कठफोड़ा।
**कटमूसणा**—स० क्रि० (कु०) मारना। पीटना।
**कटयोली**—स्त्री० (सि०) गिलहरी।
**कटरा**—पु० (मं०) कटोरा।
**कटरागी**—वि० (कु०) फरेबी।
**कटलमांजरू**—पु० (मं०) पयाल की छोटी चटाई।
**कटला**—पु० (सि०) धान के घास का गट्ठा।
**कटवा**—पु० (चं०) सब्जी में लगने वाला कीड़ा।
**कटवारी**—स्त्री० (मं०) एक चिड़िया का नाम।
**कटवाल**—पु० (चं०) 'नवाला' अनुष्ठान के नौ व्यक्तियों में से एक व्यक्ति।
**कटवाळ**—पु० कोतवाल।
**कटवाला**—पु० (मं०) वनरक्षक।
**कटवाली**—स्त्री० कोतवाली।
**कटसणा**—अ० क्रि० (कां०, ह०, ऊ०) पानी का गर्म होना।
**कटाई**—स्त्री० काटने की प्रक्रिया।
**कटाणा**—स० क्रि० कटाना।
**कटान**—पु० काटने का काम।
**कटार**—पु० (कु०) डकार।
**कटारड़ू**—पु० मिट्टी का घोंसला बनाने वाला पक्षी।
**कटारा**—पु० (कु०, मं०) नुकीली दो-धार वाला शस्त्र।
**कटाळ**—पु० (कु०) थानेदार।
**कटाळा**—पु० (कु०) छलांग।
**कटाळी**—स्त्री० (कु०) कोतवाली।
**कटाह**—पु० (कु०) अधजले कपड़े का दाग।
**कटिंझ**—स्त्री० (कु०, बि०, मं०) शरारत, छेड़-छाड़।
**कटिन्ह**—स्त्री० (कु०) बदबू।
**कटियाला**—पु० (कु०) देवताओं के अन्न के भंडार का रक्षक।
**कटीचर**—वि० महाकंजूस।
**कटीहणी**—स्त्री० (चं०, कां०) समय न काटे जाने का भाव।
**कटुंआं**—वि० कटा हुआ।
**कटुंब**—पु० दे० कटंब।
**कटुस**—पु० (कु०) घना धुआं।
**कटूड़ा**—पु० (चं०) न्यायालय का दरवाज़ा।

कटेट—स्त्री० (कु०, मं०) अकड़।
कटेटा—वि० (कु०, मं०) मज़बूत, तगड़ा।
कटेवा—पु० (कु०) कंजूसी, मितव्ययिता।
कटेबी—वि० (कु०) मितव्ययी।
कटेर—पु० भैंस का बच्चा।
कटेरू—पु० (मं०) उस्तरा।
कटेलणा—स० क्रि० (सो०) मिट्टी आदि को कूटना।
कटेळी—स्त्री० (सि०) गिलहरी।
कटैकरा—पु० (चं०) काम भुगताने की विधि।
कटैहड़ा—पु० कटघरा।
कटैहड़ा—पु० (बि०) पिटाई, झगड़ा, लड़ाई।
कटोण—स्त्री० (कां०, ह०, ऊ०) कटाई, पृथक् होना; धान कूटने की मज़दूरी।
कटोरन—पु० (कु०, मं०) चांदी या सोने का सिर में लगाने का आभूषण।
कटोरी—स्त्री० कटोरी।
कटोरू—पु० धातु की छोटी कटोरी।
कट्ठ—पु० कसैला स्वाद।
कट्ठर—वि० पक्का, दृढ़।
कट्ठरपंथी—वि० अपनी विचारधारा का पक्का।
कट्ठळ—पु० (बि०, ह०) तिनके वाला घास।
कट्ठा—पु० भैंस का बच्चा; बोरी, बोझ।
कट्ठा—पु० (मं०) घास का पूला।
कट्ठ—पु० इकट्ठा, भीड़, एकता, समूह।
कट्ठा—वि० इकट्ठा।
कट्ठो—वि० (शि०) दे० कट्ठा।
कठंगा—वि० (कां०, ह०, ऊ०) बेढंगा, अस्त-व्यस्त।
कठ—पु० (सि०) श्रम।
कठघरा—पु० कठघरा।
कठड़ा—पु० (सि०) लकड़ी की परात।
कठड़ू—पु० (मं०) छोटा 'कठड़ा'।
कठण—वि० कठिन, जटिल।
कठमाल—स्त्री० (कु०) कंठमाला।
कठमुठ—वि० सिकुड़ा हुआ।
कठमुल्ला—वि० अंधविश्वासी। नास्तिक।
कठम्मण—स्त्री० (बि०, ऊ, ह०) जामुन प्रजाति का वृक्ष।
कठम्मणु—पु० (बि०, ऊ०, ह०) 'कठम्मण' के फल।
कठयाई—स्त्री० (मं०) अन्न-मापक पात्र, लकड़ी का बर्तन।
कठयाई—स्त्री० (कां०) नाई का अधिकार स्वरूप पारिश्रमिक।
कठयाओणा—अ० क्रि० एकत्रित होना।
कठयाड़ा—पु० (मं०) भवन या मंदिर का रक्षक।
कठयार—पु० खाद्य सामग्री का भंडार।
कठयाला—पु० (बि०, ह०) भंडारी। विवाहोत्सव में खाद्य सामग्री आदि का निरीक्षक।
कठराला—पु० (बि०) बैलों को जोतने का जुआ।
कठरोणा—अ० क्रि० एकत्रित होना।
कठला—वि० (सि०) कसैला।
कठली—स्त्री० धान की एक घटिया किस्म।

कठवाण—पु० (मं०) संग्रह।
कठां:डा—पु० (सि०) दूध रखने का लकड़ी का बर्तन।
कठागळी—स्त्री० (कु०) भारी वस्तु को उठाने में प्रयुक्त होने वाली लंबी लकड़ी।
कठाणा—पु० (कां०) अपशकुन।
कठाणा—वि० (सि०) भद्दा, गंदा।
कठाणो—पु० (सि०) खराब वस्तु।
कठार—पु० (कु०, सो०) अन्नभंडार।
कठारी—स्त्री० (कु०) अनाज़ का बड़ा बर्तन।
कठाली—स्त्री० (कु०) सोना पिघलाने के लिए मिट्टी की बनी कटोरी।
कठाहर—स्त्री० (बि०, ह०) बुरी जगह।
कठिया—स्त्री० (शि०) भट्ठा लगाने की मशीन।
कठिया—वि० (सि०) परिश्रमी।
कठियाला—पु० (कु०) खजांची, देवता के अन्न आदि का भंडारी।
कठियाळू—पु० (कु०) मछली पकड़ने का कांटा।
कठी—अ० (चं०) कहां।
कठीड़ा—पु० (सि०) शहतूत का कीड़ा।
कठीड़ी—स्त्री० (कां०) काले रंग का धान।
कठीड़ी—पु० (सो०) एक जहरीला कीड़ा।
कठीणा—अ० क्रि० (चं०) इकट्ठे होना।
कठुआ—पु० (मं०) कठफोड़ा।
कठुगा—पु० (चं०) हलकी किस्म की वस्तु।
कठुग्गा—पु० (कां०, ह०) नकारा तोता।
कठुणा—अ० क्रि० (सो०) इकट्ठे होना।
कठुम्मा—पु० (मं०) भंडारी।
कठे—वि० (शि०) कठिन, सख्त।
कठेआ—वि० (सि०) इकट्ठे ही।
कठेई—वि० (कु०) बारह छटांक का तीसरा भाग।
कठेई—स्त्री० (सो०, शि०) चटनी।
कठेउड़—पु० (शि०) कच्चे चावल की 'मूड़ी'।
कठेउड़ो—पु० (कु०) 'डूगरी' को 'पनराह' से जोड़ने वाला लक्कड़।
कठेड़ा—पु० (कां०, ह०) लकड़ी का बना टुकड़ा जिस पर रख कर घास काटा जाता है।
कठेर—स्त्री० (बि०) बेर की तरह का फल।
कठेरना—स० क्रि० इकट्ठा करना।
कठेरनू—पु० तकली।
कठेरा—पु० (कां, ह०) जूतों के माप का लकड़ी का फर्मा।
कठेरा—पु० (चं०) कच्चे चमड़े को पक्का करने का अड्डा।
कठेरू—पु० (शि०) कार्तिक में पकने वाले आड़ू।
कठैंठा—पु० (कु०) सांस लेने में कष्ट होने का भाव।
कठैड़ी—स्त्री० (मं०) लाल चावल।
कठैर—पु० (कां०, बि०) बेर की प्रजाति का एक वृक्ष।
कठैरल—स्त्री० (कां०, बि०) 'कठैर' के वृक्ष की गोंद।
कठोबरू—पु० (मं०) घरातल मंजिल का छोटा कमरा।
कठोरा—पु० (चं०) लकड़ी का बड़ा गड्ढा।

**कठोलड़ो**—पु० (सि०) सख्त अखरोट।
**कठोलण**—पु० (मं०) शाकाहारी भोजन।
**कठौउल**—पु० (मं०) पशुओं का बिछौना।
**कठोउळ**—स्त्री० (कु०) जलाने की लकड़ियों की ढेरी।
**कठोगण**—पु० (मं०) कटुवचन, अप्रिय बोल।
**कठोण**—पु० (बि०, ह०) अपशकुन, बुरी शुरूआत।
**कठोता**—पु० (मं०, बि०) लकड़ी की परात।
**कड़ंदा**—पु० दांत का कीड़ा।
**कड़**—स्त्री० गर्व, घमंड, अकड़।
**कड़क**—स्त्री० ज़ोर की झिड़की।
**कड़कड़**—अ० टूटने की ध्वनि।
**कड़कड़ाट**—स्त्री० कठोर अनाज को चबाने की क्रिया। व्यर्थ की बकवास।
**कड़कड़ाणा**—अ० क्रि० किटकिटाना।
**कड़कणा**—अ० क्रि० बिजली का कड़कना, नाराज़ होना, जोर से बोलना।
**कड़की**—स्त्री० तंगी।
**कड़कोठा**—पु० (कु०) कुक्कुट रखने के लिए बनाया कोठा।
**कड़कौड़ा**—वि० (मं०) करारा।
**कड़गेली**—स्त्री० (सि०) मछली की एक किस्म।
**कड़ची**—स्त्री० (मं०) 'बगड़' घास की रस्सी।
**कड़चेओट**—पु० (बि०) पक्षी विशेष।
**कड़छ**—पु० कलछी।
**कड़छा**—पु० बड़ी कलछी।
**कड़छी**—स्त्री० छोटी कलछी।
**कड़छे**—स्त्री० (सि०) कलछी।
**कड़ण**—पु० (सि०) पशुओं को खाने वाला खटमल।
**कड़ताली**—स्त्री० (सि०) मजीरा।
**कड़सन**—स्त्री० कड़वाहट।
**कड़थैया**—पु० कड़ाह का पलटा।
**कड़थोड़ू**—पु० कुलथ का 'भल्ला'।
**कड़पाहट**—स्त्री० (कु०) शरारत, गलत काम।
**कड़पोटा**—पु० (कु०) कुत्ते के गले में बांधा जाने वाला लोहे का कांटेदार पतरा।
**कड़फा**—पु० (चं०) पकड़, दांव।
**कड़ब**—पु० (चं०) मक्की का घास।
**कड़बे**—स्त्री० कड़वी झाड़ी विशेष।
**कड़बेठी**—स्त्री० (कु०) चैन से न बैठने देने की प्रवृत्ति।
**कड़म**—पु० (चं०) एक प्रकार का साग।
**कड़मसहरू**—स्त्री० (बि०) कड़वी सरसों की एक किस्म।
**कड़माई**—स्त्री० सगाई।
**कड़मेटा**—पु० दामाद का भाई। 'कुड़म' का बेटा।
**कड़मेटी**—स्त्री० 'कुड़म' की बेटी।
**कड़मेटू**—पु० समधियों के घर का छोटा लड़का।
**कड़मेणी**—स्त्री० (शि०, सि०) समधिन।
**कड़यांगा**—वि० (मं०) कड़वा।
**कड़यागी**—स्त्री० (मं०) गलफांस।
**कड़याड़ी**—स्त्री० (कां०) बांस की बनी छड़ी।
**कड़याठी**—स्त्री० (कां०, मं०) धान को गाहते समय 'पराळ' को हिलाने की छड़ी।
**कड़यारी**—स्त्री० (कां०) एक प्रकार की ईख।
**कड़याल**—वि० (कां०) कंटीला।
**कड़याव**—पु० (मं०) खेत का भीतरी व पहाड़ी की ओर का भाग।
**कड़याहड़ा**—पु० (मं०) एक झाड़ी विशेष जिसके पत्तों में बारीक कांटे होते हैं।
**कड़व**—पु० (कां०, ह०) दाने रहित मक्की।
**कड़वांघी**—स्त्री० (मं०) बांस।
**कड़विश**—वि० (कु०) बहुत कड़वा।
**कड़श**—पु० (मं०) मंदिर के ऊपर लगा कलश।
**कड़हण**—पु० (मं०) देवदार का जंगल।
**कड़ांदा**—पु० (शि०) दांतों में लगा कालापन और कीड़ा।
**कड़ा**—पु० (कां०) लोहे का कंगन।
**कड़ाई**—स्त्री० (मं०) मोरनी, मादा मोर।
**कड़ाऊ**—पु० (सो०) छोटी कड़ाही।
**कड़ाओ**—पु० (मं०) स्थानीय कठोर दाल।
**कड़ाक**—अ० टूटने की आवाज़।
**कड़ाक**—स्त्री० (कु०) मज़ा, आनंद।
**कड़ाक**—स्त्री० (सि०) गुस्सा या तेजी, जोश।
**कड़ाकड़**—वि० सख्त।
**कड़ाकणा**—अ० क्रि० (चं०) कड़कड़ करना।
**कड़ाकणा**—स० क्रि० (कु०) किसी पदार्थ को कड़कड़ शब्द होने तक गरम करना।
**कड़ाका**—पु० टूटने की ध्वनि।
**कड़ाका**—पु० चोट लगने का भाव।
**कड़ाकी**—स्त्री० चूहे मारने का यंत्र।
**कड़ाटा**—पु० (सि०) मक्की का आटा।
**कड़ाण**—स्त्री० (सि०) खट्टी गंध।
**कड़ामणू**—पु० (कु०) लोहे की चिमटी जिसे 'पुहाल' गड़रिये पैर आदि से कांटा निकालने के लिए सर्वदा साथ रखते हैं।
**कड़ाह**—पु० (कु०) हलवा। बड़ी कड़ाही।
**कड़ाहटा**—पु० (कु०) पालकी।
**कड़ाहटी**—स्त्री० (चं०) कड़ाही।
**कड़ाहटू**—पु० (कां०, कु०) छोटी कड़ाही।
**कड़िंघा**—पु० (कां०) सूखने की क्रिया।
**कड़िमणु**—पु० (कु०) दे० कड़ामणू।
**कडिमले**—वि० (मं०) अनुभवी।
**कड़ियाठ**—पु० (कु०) ढोल बजाने की छड़ी।
**कड़ियाठी**—स्त्री० (कु०, मं०) छोटा 'कड़ियाठ'।
**कड़ींड**—पु० (सि०) मक्की का वह भाग जो दाने निकालने के बाद बचता है, गुल्ली।
**कड़ी**—स्त्री० (बि०, मं०) हथकड़ी, ज़ंजीर। छत बनाने के लिए शहतीरों के मध्य रखा जाने वाला डंडा।
**कड़ी**—स्त्री० शहतीर।
**कड़ीड़**—पु० (सि०) दे० कड़ींड।
**कड़ीण**—पु० (सि०) पेट का दर्द।

**कड़ीमणू**—पु० (कु०) कान से मैल निकालने के लिए बना लोहे का यंत्र।
**कड़ीयूत**—वि० (सि०) एक हाथ का माप।
**कड़ीलणा**—स० क्रि० (मं०) कीलना।
**कड़ीलोठी**—स्त्री० (बि०) काजल रखने के लिए बनी गुड़िया।
**कडुआ**—पु० चांदी या लोहे की बाली।
**कडुआ**—वि० कड़वा।
**कडुवो**—पु० (शि०, मं०) कटुता।
**कडू**—पु० एक प्रकार की जड़ी-बूटी।
**कडू**—पु० (बि०) कान की बाली।
**कडूइपा**—पु० (कां०) बिनौले।
**कड़ेंकड़ें**—स्त्री० अनावश्यक बोल।
**कड़ेंचण**—वि० (कु०) अत्यंत कमज़ोर, दुर्बल स्त्री।
**कड़ेंडा**—पु० (सि०) मक्की का घास।
**कड़े**—पु० (सि०) बांस के चीरे हुए लंबे टुकड़े। चूड़ियां।
**कड़े**—पु० (मं०) साधारण पाजेब।
**कड़ेओ**—पु० (मं०) नज़र लगने से बचाने के लिए बच्चे की गाल पर लगाया काला टीका।
**कड़ेओट**—पु० (मं०) कोयल प्रजाति का काला पक्षी।
**कडेठा**—पु० (सि०) मक्की के पौधे का निचला हिस्सा।
**कड़ेड़**—स्त्री० (सि०, शि०) अपने को ऊंचा मानने की भावना। अभिमान।
**कडेणा**—स० क्रि० (कु०, सो०, शि०) बटना, ऐंठना।
**कडेतेड़ी**—स्त्री० (कां०) टोकरे के ऊपरी ओर की सख्त बुनाई।
**कडेयाओ**—पु० (मं०) खेत का किनारा।
**कड़ेलू**—पु० (सो०, शि०) मक्की की गुल्ली।
**कड़ेल्लू**—पु० (सो०, शि०) पैर और टांगों के जोड़ की हड्डी, टखना।
**कड़ेल्ह**—पु० (कु०) बंदूक से गोली चलने का शब्द, वृक्ष के गिरने की आवाज़, बिजली गिरने की आवाज़।
**कडेवळा**—वि० (सो०) भद्दे अंगों वाला।
**कड़ेवी**—स्त्री० (मं०) मोरनी।
**कड़ेशा**—पु० (कु०) जंगली मुर्गा।
**कड़ें-कड़ें**—अ० बत्तख या मेंढक की आवाज़।
**कड़ैंदा**—पु० (मं०) कौआ।
**कडैड़**—पु० (शि०) बाड़।
**कड़ैतु**—पु० (शि०) जिसके पास बीजने के लिए जमीन दी गई हो।
**कड़ैली**—स्त्री० (चं०) कांटे वाली।
**कड़ोंक**—पु० (कु०) हड्डियों का ढांचा।
**कड़ोंघ**—वि० (कु०) वृद्धावस्था में अस्वस्थता और निर्बलता के कारण अस्वाभाविक बर्ताव करने वाला वृद्ध।
**कड़ोंचा**—पु० (कु०) नीलकंठी नाम की बूटी।
**कड़ोट**—पु० (सि०, शि०, सो०) मोटी रोटी।
**कड़ोटी**—स्त्री० मक्की की रोटी।
**कड़ोला**—पु० (सि०) कड़ाही का कड़ा।
**कड़ोले**—पु० (सि०) कद्दू की एक किस्म।
**कड़ोल्ह**—पु० (मं०) मुर्गीखाना।
**कड़ोशणा**—स० क्रि० (कु०) पक्का बांधना।
**कड़ोहलू**—पु० (मं०) बाजूबंद, नासिकाभरण।
**कड़ौंची**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) मिठाई बनाने की लकड़ी।
**कड़ौण**—स्त्री० (सो०) जलन, ईर्ष्या।
**कडौळा**—वि० (बि०, शि०, सो०) विकलांग, भद्दा।
**कढणा**—स० क्रि० निकालना, कपड़े पर फूल बनाना।
**कढ़ना**—अ० क्रि० अनुभवी होना, पक्का होना।
**कढब्ब**—पु० बुरी आदत।
**कढयामणू**—पु० (मं०) कांटा निकालने की छोटी चिमटी।
**कढार**—वि० वस्त्रों पर कढ़ाई करने वाली।
**कढ़ाला**—वि० (कु०) बेढब, विचित्र।
**कढ़ी**—स्त्री० लस्सी से बना व्यंजन।
**कढ़ीहणा**—स० क्रि० (चं०) निकाला जाना।
**कढेरू**—पु० (सि०) आड़ू।
**कढेणा**—स० क्रि० (सि०) काढ़ना, उबालना।
**कढेलू**—पु० (सि०) टखना।
**कढोल**—पु० (सि०) घोंसला।
**कण**—पु० अंश।
**कण**—पु० (सि०) छोटी वस्तु। बीमार की कराह।
**कण**—पु० (चं०) टोने में गणना हेतु प्रयुक्त अनाज के दाने।
**कणक**—स्त्री० गेहूं।
**कणकूसा**—पु० गेहूं के बीच उगने वाला घास।
**कणकेर**—स्त्री० गर्दन की पीड़ा।
**कणकोळ**—पु० (चं०) स्वादिष्ट भोजन।
**कणकोलें**—स्त्री० (शि०) गेहूं की रोटी।
**कणखजूरा**—पु० कनखजूरा।
**कणछणा**—अ० क्रि० (मं०) कठिन कार्य के प्रति प्रवृत्त न होना।
**कणछी**—स्त्री० (सो०, शि०) कनिष्ठिका।
**कणणा**—अ० क्रि० (सो०) कराहना।
**कणतरा**—पु० (बि०) शीत से हुई कंपन।
**कणतेरना**—स० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) तंग करना।
**कणत्याहणा**—अ० क्रि० तंग आना।
**कणादेयो**—पु० विवाह में पूजा स्थल पर बना चित्र।
**कणना**—अ० क्रि० (चं०, बि०) बूंदाबांदी होना। खुजली होना। कराहना।
**कणला**—पु० (चं०) सिलाई।
**कणास**—स्त्री० (चं०, कां०) शीत; कंपन।
**कणसारी**—स्त्री० (कां०) दीवार का ऊपरी सिरा।
**कणसी**—स्त्री० (कु०) रेती।
**कणहां**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) मकड़ी।
**कणहैणा**—स० क्रि० (चं०) बात करना, बोलना।
**कणांदा**—पु० (बि०) दांत का कीड़ा।
**कणा**—पु० काले मटर। टोने के लिए प्रयुक्त दाने।
**कणाउटा**—वि० (कु०) टेढ़ा।
**कणाय**—पु० (मं०) कषाय।
**कणाश**—स्त्री० (कु०) देवता द्वारा आह्वान।
**कणिया**—पु० (सो०, शि०, सि०) कराह।
**कणिहाणा**—अ० क्रि० (चं०) कराहना। बोलना।

**कणी**—स्त्री० (सि०, चं०) मांस का टुकड़ा।
**कणी**—स्त्री० नमक का ढेला।
**कणू**—पु० छोटा टुकड़ा।
**कणेओ**—पु० (शि०) पसीना।
**कणेच**—स्त्री० (कु०) कठिनता, वक्रता।
**कणेचा**—स्त्री० (कु०) विवशता।
**कणेट**—पु० (कु०) कान।
**कणेठा**—पु० (कु०, मं०) 'काउणी' का घास।
**कणेण**—स्त्री० (कु०) वक्रता, टेढ़ापन।
**कणेपी**—वि० (कु०) जिसे कम दिखता हो, अल्पदर्शी।
**कणेसा**—पु० (शि०) छोटा भाई, कनिष्ठ।
**कणेहुना**—अ० क्रि० (सि०) व्यर्थ की आवाज़ सुनकर खिन्न होना।
**कणेहज**—वि० (कां०) दानेदार, अधपका।
**कणोरी**—स्त्री० (चं०) जोड़ों की पीड़ा।
**कणोड़ा**—वि० (सो०) निकम्मा।
**कणोण**—स्त्री० (चं०) शर्म, लज्जा।
**कणोणा**—अ० क्रि० (चं०) शर्माना।
**कण्हे**—अ० (चं०) कब।
**कत**—स्त्री० (चं०) खट्टे फल से तैयार चाट।
**कतकारू**—पु० (मं०, बि०) कार्तिक में पकने वाला आड़ू।
**कतड़छ**—स्त्री० (मं०, बि०) बेचैनी।
**कतणा**—स० क्रि० कातना।
**कतणी**—स्त्री० (सि०) तीलियों की टोकरी।
**कतणेरू**—पु० (सो०) कातते समय तकली रखने का पात्र।
**कतनांहड़**—वि० (कु०) अच्छी ऊन कातने वाला।
**कतनोषु**—पु० (मं०) दे० कतणेरू।
**कतरणा**—स० क्रि० काटना।
**कतरन**—स्त्री० (सि०) कपड़े का कटा हुआ टुकड़ा।
**कतरना**—स० क्रि० काटना।
**कतरनी**—स्त्री० कैंची।
**कतरबतर**—स्त्री० (सो०, शि०) फुसफुसाहट; गुदगुदी।
**कतरा**—पु० टुकड़ा।
**कतरा**—पु० पानी की बूंद।
**कतरा**—अ० (मं०) थोड़ा सा।
**कतराण**—स्त्री० कपड़ा जलने की गंध।
**कतराणा**—अ० क्रि० संकोच करना।
**कतराहज**—पु० ऐसी स्थिति जब फसल रहित खेत में पशु चराये जाते हैं।
**कतरीन**—स्त्री० (सो०) दे० कतराण।
**कतरोड़ना**—स० क्रि० खरोंचना, कुरेदना।
**कतरोळना**—स० क्रि० (कु०) उथल-पुथल करना।
**कतळा**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) छील कर निकाला हुआ टुकड़ा।
**कतलू**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) तवे पर तला हुआ साग का पकौड़ा।
**कतलू**—पु० (चं०, बि०) पतीले में पकाए गए कद्दू के टुकड़े।
**कतांह**—अ० (बि०) कहां।
**कताई**—स्त्री० कातने का पारिश्रमिक।
**कताउण**—स्त्री० दे० कताई।
**कतांच्छे**—स्त्री० (मं०) कुत्ते की मक्खियां।
**कताणी**—स्त्री० (चं०) दे० कताई।
**कताब**—स्त्री० किताब।
**कताबडू**—पु० छोटी किताब।
**कतार**—स्त्री० पंक्ति।
**कताळी**—वि० इकतालीस।
**कताहण**—वि० (कां०, ऊ०, ह०) कातने वाली।
**कताहर**—वि० कातने में कुशल।
**कतीरा**—पु० कैंची।
**कतीरा**—पु० (कु०) चिमटा।
**कतीरी**—स्त्री० (ह०, कां०) छोटी कैंची।
**कतून**—पु० (सि०) कताई की गई ऊन, ऊन का धागा।
**कतेड़**—पु० भद्दा कुत्ता।
**कतेरड़**—पु० (कु०) कुत्तों का समूह।
**कतेरा**—वि० (सो०) कताइ करने वाला।
**कतेरू**—पु० (सि०) वन्य आड़ू।
**कतैड़**—स्त्री० (मं०) दे० कतड़छ।
**कतैड़ी**—स्त्री० (कु०) मुसीबत।
**कतौण**—स्त्री० (बि०) दे० कताई।
**कतौणी**—स्त्री० तकली।
**कत्तक**—पु० कार्तिक मास।
**कत्तर**—स्त्री० कपड़े की कतरन।
**कत्ती**—वि० इकतीस।
**कत्थरंगा**—वि० कत्थे के रंग का।
**कत्था**—पु० खैर वृक्ष के रस से बना पदार्थ।
**कत्याणा**—स० क्रि० (कु०) कतवाना।
**कत्रंकना**—स० क्रि० (कु०) इधर-उधर बिखेरना।
**कत्वान**—पु० (सि०) तोतली बोली।
**कत्वार**—वि० (चं०) सूत व ऊन कातने वाला।
**कथ**—पु० (कां०) कत्था।
**कथक्कड़**—पु० कथा सुनाने वाला।
**कथणा**—स० क्रि० गीत या कथा को गढ़ना।
**कथरा**—पु० (सि०) कस्तूरी मृग।
**कथरे**—स्त्री० (सि०) कस्तूरी।
**कथरेव**—पु० (सो०) अव्यवस्था।
**कथा**—स्त्री० कहानी।
**कथाणा**—स० क्रि० (चं०) गीत को गढ़वाना।
**कथाणी**—स्त्री० (चं०, बि०) लंबी गाथा।
**कथुरी**—स्त्री० (सि०) बालों की लट।
**कथूरल**—पु० (मं०) एक प्रकार की झाड़ी।
**कथोगा**—वि० (कु०) अनजान, भोला-भाला।
**कथोगा**—वि० (कु०) शोकग्रस्त। किसी संबंधी की मृत्यु से पीड़ित जिसके छूने से परहेज किया जाता है।
**कथोगा**—वि० (सो०) अनुमान रहित।
**कथोळिया**—वि० (सि०) कीचड़ आदि से भीगा वस्त्र या शरीर।
**कदका**—अ० (कां०) कब का।

**कदकाठ**—पु० कद-शरीर।
**कंदकी**—अ० कब, कभी।
**कदम**—पु० पग।
**कदर**—स्त्री० (बि०) ज़रूरत, मूल्यांकन।
**कदर**—स्त्री० सम्मान।
**कदरयागड़ा**—पु० (मं०) कोदो अन्न का तना।
**कदरयाल**—पु० (सि०) कोदो का घास।
**कदरयाला**—पु० (सि०) कोदो का डंठल।
**कदराठा**—पु० (कु०) दे० कदरयाल।
**कदराणा**—अ० क्रि० डरना, झिझकना।
**कदरीठ**—पु० (मं०) दे० कदरयागड़ा।
**कदरोटी**—स्त्री० (मं०) कोदे की रोटी।
**कदर्ना**—वि० (मं०) असुंदर।
**कदर्सणा**—वि० मद्दा, बुरे दर्शन वाला।
**कदवाड़**—पु० (मं०) कुदाल, कुदाली।
**कदवामी**—स्त्री० (मं०) अलगोज़ा।
**कदवाळी**—स्त्री० (बि०) कुदाली।
**कदाड़ी**—स्त्री० (मं०) दे० कदवाळी।
**कदाळ**—पु० कुदाल।
**कदाव**—पु० (सो०) धोखा।
**कदी**—अ० कमी, कब।
**कदी-कदाइ**—अ० कमी-कमार।
**कदीठ**—पु० (सि०, सो०) कोदो का आटा।
**कदीम**—वि० पुराना।
**कदूं**—अ० (बि०) कब।
**कदूशणी**—वि० (शि०) मनहूस।
**कदेहा**—वि० (कां०, ह०) कैसा।
**कदो**—अ० (सि०) कब।
**कदो**—पु० (मं०) कद्दू।
**कदोली**—स्त्री० (सि०) दे० कदरोटी।
**कदोसळा**—पु० (सो०, शि०) कोदो के पतले आटे की रोटी।
**कदौणा**—स० क्रि० (सो०) जल आदि का दुरुपयोग करना।
**कदौळ**—पु० (मं०) कुदाल।
**कदौळ**—पु० (सो०) धान की पौध लगाने के लिए तैयार किया गया खेत।
**कदौळना**—स० क्रि० (सो०) धान रोपना।
**कदोइड़ी**—वि० (सो०, शि०) छिनाल, निकम्मी स्त्री।
**कधका**—वि० दे० कदका।
**कधयाड़ा**—पु० बुरा दिन।
**कधांड़ा**—पु० (कां०) खंडहर मकान।
**कधाड़ी**—अ० (चं०) कब, किस दिन।
**कधारी**—स्त्री० (कु०) एक जंगली वनस्पति जिसके पत्ते पशुओं के नीचे बिछाने के काम आते हैं।
**कधेड़ा**—वि० (चं०) कैसा।
**कधैकड़ा**—अ० (कां०, ह०) किस दिन का।
**कधोकणा**—अ० (बि०, चं०) कब का।
**कधोका**—अ० कब से, कब का।
**कधोरा**—वि० जो ठीक न हो।
**कध्याड़ी**—अ० किस दिन।
**कन**—पु० कान।
**कन**—अ० (चं०) प्रति।
**कनऊ**—पु० (मं०) कान का मैल।
**कनओ**—पु० (मं०) उपनाम।
**कन-कन**—स्त्री० (सो०, सि०) गुन-गुन।
**कनकवारी**—स्त्री० (मं०) कुंवारी।
**कनकालो**—पु० (शि०) गेहूं के आटे की कढ़ी।
**कनकुंबी**—स्त्री० (सि०) कान के सुराख।
**कनकेर**—स्त्री० गर्दन की दर्द।
**कनकेरू**—पु० (सो०) कड़वा खीरा।
**कनकैड़े**—पु० (मं०) कनपेड़े।
**कनकोतणू**—पु० कान साफ करने की सिलाई।
**कनकोतरा**—वि० (सो०) चुगलखोर।
**कनकोली**—स्त्री० (चं०) अमलतास।
**कनक्वारू**—पु० (मं०) दे० कनकवारी।
**कनखी**—स्त्री० कटाक्ष।
**कनखोरनू**—पु० (शि०) कान साफ करने की सलाई।
**कनगुच्छु**—पु० (चं०) गुच्छी।
**कनगुह**—पु० कान की मैल।
**कनघोड़ी**—स्त्री० (कु०) कनपटी।
**कनचाल**—पु० (चं०, बि०) कनपटी।
**कनचूण**—पु० (चं०) दे० कनचाल।
**कनचूमी**—स्त्री० (मं०) लड़कों द्वारा कान बंद करके की जाने वाली जल क्रीड़ा।
**कनचूल**—पु० (चं०) कर्णशूल।
**कनजड़ा**—पु० (सि०) कान के अंदर का भाग।
**कनटणख्वाणो**—अ० क्रि० (सि०) कान का फरकना।
**कनटाइ**—स्त्री० (सो०) कान की असह्य पीड़ा।
**कनड़ी**—स्त्री० (चं०) चरखे में लगे सूए को थामने के लिए बनाई गई धागे की गुच्छी।
**कनताळी**—स्त्री० (सो०) बाली, कर्णाभूषण।
**कनफड़ी**—स्त्री० (चं०) कानों का अंतर।
**कनफुल**—पु० कर्णाभूषण, कर्णिका।
**कनबीच**—पु० (कु०) कान में लगाया जाने वाला एक आभूषण।
**कनबूचरा**—वि० (सो०) बिना कान का व्यक्ति।
**कनबेदणी**—स्त्री० (सि०, शि०, सो०) कान का दर्द।
**कनयाबड़**—पु० (मं०) कंगनी के कूटे हुए चावल, चावल कण।
**कनरगु**—पु० (शि०) दे० कनगुह।
**कनराड**—स्त्री० (शि०) वस्त्र का टेढ़ा कटाव।
**कनरोचौ**—पु० (कु०) प्रपौत्र।
**कनलू**—पु० (सि०) कगर।
**कनवाला**—पु० (मं०) लकड़ी की परात।
**कनवालू**—पु० (मं०) कान का गहना।
**कनविच्छी**—स्त्री० (मं०) कान के भीतरी भाग में पहनने की छोटी बाली।
**कनवीचा**—स्त्री० (कु०) कान का स्वर्ण-आभूषण।

**कनशेर**—पु० (शि०, सि०) कान में घुसने वाला कीड़ा।
**कनशेळी**—स्त्री० कान की बीमारी जिसमें कान से पीप निकलता है।
**कनसंई**—स्त्री० (मं०, बि०) कर्णशूल।
**कनसलो**—पु० कान में घुसने वाला कीड़ा।
**कनसलोहा**—पु० केंचुआ।
**कनसीवण**—स्त्री० (सो०) दे० कनसलो।
**कनसूड़**—पु० (मं०) कनखजूरे की छोटी प्रजाति।
**कनसेली**—स्त्री० कर्णस्राव।
**कनसोत**—स्त्री० गहरी नींद।
**कनाऊ**—पु० दे० कनऊ।
**कनाओं**—पु० बदनामी, कुनाम।
**कनागत**—वि० (सि०) पितृ पूजन पक्ष, कन्या राशि गत सूर्य।
**कनाचीऊट**—स्त्री० (चं०) दे० कनटाह।
**कनाटी**—स्त्री० (कां०) मिट्टी की कड़ाही।
**कनादू**—पु० (कां०, ह०) मिट्टी के बर्तन।
**कनाड़ची**—पु० (मं०) करनाल वाद्ययंत्र बजाने वाला।
**कनादरू**—पु० (बि०, शि०, सो०) कमीज़ के चाक।
**कनादला**—पु० (कु०) हलके बादलों से ढका आकाश।
**कनादली**—स्त्री० (कु०) बादलों से ढकी चांदनी।
**कनारा**—पु० किनारा।
**कनारी**—स्त्री० (चं०) पितृ-तर्पण में जलाई जाने वाली बत्ती।
**कनारी**—स्त्री० गोटा।
**कनारू**—पु० 'ब्यूहल' वृक्ष की टहनियां जिनको पानी में डाल कर उनसे रेशा निकाला जाता है जिससे रस्सी बनती है।
**कनारो**—पु० (मं०) दे० कनारा।
**कनाल**—पु० भूमि का माप।
**कनालियां**—स्त्री० (बि०) लड़कों का कर्ण-बेध संस्कार।
**कनाल्डू**—पु० (मं०) पोता।
**कनाहू**—पु० (बि०) शोर, कोलाहल, कर्णकटु।
**कनाहकड़ी**—स्त्री० (मं०) छिपकली।
**कनियाणा**—स० क्रि० (कु०) बात को समझना, दूर से कही गई बात को समझना।
**कनियाबड़ी**—स्त्री० बांस की बनी टोकरी।
**कनियार**—पु० (कु०) वृक्ष विशेष।
**कनियारा**—पु० (कु०) भेड़-बकरियों द्वारा पत्तियां खाने के बाद बची टहनियां जो जलाने के काम आती हैं।
**कनी**—स्त्री० (कु०) किनारा।
**कनीत**—स्त्री० कुनीयत, बुरी नीयत।
**कनीता**—वि० बुरी नीयत वाला।
**कनीफडू**—पु० (कु०) भूमि में स्वयं उत्पन्न होने वाला एक कंद जिसकी शक्ल कान जैसी होती है।
**कनीरा**—पु० (सो०) कनेर का पेड़। आंगन आदि का किनारा।
**कनु**—पु० (कु०) धान की ढेरी।
**कनुड़े**—पु० (मं०) धान का घास।
**कनुरू**—पु० (बि०, ह०) बाल।
**कनू**—अ० (चं०) कैसा।
**कनून**—पु० कानून।
**कनूनी**—वि० कानूनी।
**कनूरू**—पु० (मं०, ऊ०) कान तक के बाल।
**कनूह**—पु० कान की मैल।
**कनें**—अ० और, साथ।
**कनेउटा**—वि० (कु०) टेढ़ा।
**कनेऊड़ा**—पु० (शि०) बरामदे का कोना।
**कनेड़ी**—स्त्री० कनिष्ठिका।
**कनेड्डा**—पु० कान का रोग।
**कनेया**—पु० (सो०) कोलाहल।
**कनेरना**—स० क्रि० (कु०) कपड़े में चुन्नटें डालना।
**कनेरू**—पु० (सि०) तीर के अग्रभाग की लोहे की नोक। कुम्हार के पास मिट्टी के बर्तन ठोकने के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला मिट्टी का औज़ार।
**कनेवणा**—स० क्रि० (सो०) सुनना।
**कनैंहा**—पु० (सि०) दे० कनेया।
**कनैगत**—स्त्री० (सि०) परिवार की दिवंगत आत्माएं।
**कनैवणी**—स्त्री० (मं०) खुजली।
**कनैहमनो**—स० क्रि० (मं०) कान खुजलाना।
**कनोणा**—स० क्रि० (सि०) खुजलाना।
**कनोयू**—पु० (सि०) कान का निचला हिस्सा।
**कनोलटी**—स्त्री० (शि०) छोटे बच्चे के बाल।
**कनोळा**—पु० (कु०) धान का लंबा और साफ सुथरा घास जिससे चटाई और 'पूळ' बनती हैं।
**कनोवण**—स्त्री० (कु०) गोह।
**कनौड़**—स्त्री० (कु०, मं०) झिझक।
**कनौड़ला**—पु० (सि०) स्त्रियों के कान के पीछे के बाल।
**कन्न**—पु० कान।
**कन्नी**—स्त्री० वस्त्र की किनारी।
**कन्नी**—स्त्री० (चं०) भेड़-बकरियों का रेवड़।
**कन्नी**—स्त्री० शाल व पट्टू में डाली जाने वाली धारी।
**कन्नी**—स्त्री० तराजू की डंडी।
**कन्ने**—अ० (बि०) दे० कनें।
**कन्ह**—पु० (चं०) कंधा। विलंब से बीजी गई फसल।
**कन्हा**—वि० सबसे छोटा, कनिष्ठ।
**कन्हाकड़ी**—स्त्री० (मं०) दे० कनाहकड़ी।
**कन्हेरन**—पु० (चं०) छत पर डाला गया शहतीर।
**कन्होर**—पु० (कु०) अखरोट की प्रजाति का वृक्ष जिसका छिलका काला होता है, परन्तु अखरोट की तरह सख्त नहीं होता। इसका स्वाद कड़वा होता है।
**कप**—पु० (बि०) श्लेष्म, कफ।
**कप**—पु० (कां०) कतरन।
**कप**—पु० केशकर्तन, हजामत।
**कपच्छ**—पु० कुपथ।
**कपट**—पु० धोखा।
**कपटी**—वि० धोखेबाज़।
**कपड़छवाई**—स्त्री० (मं०) प्रेत कर्म, तेरहवें दिन का क्षौर कर्म।
**कपड़छाण**—पु० पिसी हुई वस्तु को कपड़े से छानने की प्रक्रिया।

**कपड़घुवाई**—स्त्री० (बि०) मृत्यु के दसवें दिन वस्त्र धोने का संस्कार।
**कपड़ेयां औणा**—अ० क्रि० मासिक धर्म आना।
**कपड़ेयाहन**—स्त्री० कपड़े जलने की गंध।
**कपड़ैचा**—पु० (बि०) मृतक को लपेटा जाने वाला कपड़ा, कफन।
**कपणा**—स० क्रि० (बि०) कैंची से कपड़ा काटना।
**कपत्त**—स्त्री० (बि०) दुष्टता, शरारत।
**कपत्तपणा**—पु० दुष्टता।
**कपत्ता**—वि० दुष्ट, शरारती।
**कपत्थ**—पु० दे० कपच्छ।
**कपत्थी**—वि० कुपंथी; परहेज़ न करने वाला।
**कपला**—वि० कपिल वर्ण का।
**कपला**—स्त्री० कपिला गाय।
**कपली**—स्त्री० (मं०) भूरी चींटी।
**कपस्सा**—वि० (मं०, बि०) एक ओर का।
**कपाः**—स्त्री० (सो०, मं०) कपास।
**कपाट**—पु० किवाड़, द्वार।
**कपाटियां**—स्त्री० (बि०) कपास के सूखे पौधे।
**कपाड़**—पु० (कु०) शरारत।
**कपाड़ी**—वि० (चं०) बिना विचारे कहने वाला, शरारती।
**कपाद**—वि० (कां०) दे० कपत्त।
**कपादी**—वि० (कां०) दे० कपत्ता।
**कपाल**—पु० खोपड़ी, सिर।
**कपाल**—पु० तालु।
**कपालक्रिया**—स्त्री० शवदाह के समय कपाल फोड़ने की क्रिया।
**कपालमोचन**—पु० दे० कपालक्रिया।
**कपाली**—स्त्री० (कां०) भाग्य।
**कपास**—स्त्री० रुई।
**कपाहड़ू**—पु० (चं०) खद्दर का वस्त्र।
**कपुत्तर**—पु० कुपुत्र, कुपूत।
**कपूर**—पु० कपूर, सुगंध।
**कपूरी**—वि० कपूर से संबंधित।
**कपेरो**—अ० (मं०) अग्रिम।
**कपैड़**—स्त्री० शरारत, अनुचित कार्य।
**कपैड़ी**—वि० शरारती, काम बिगाड़ने वाला।
**कपैड़टियां**—स्त्री० (बि०) दे० कपाटियां।
**कपोल**—पु० गाल।
**कप्पड़**—स्त्री० (बि०) दे० कपड़घुवाई।
**कप्फल**—पु० कायफल, कायफल।
**कप्यारा**—वि० अप्रिय।
**कफ**—पु० बलगम। कमीज़ की बाजू का अग्रभाग।
**कफणा**—पु० कफन।
**कफारा**—वि० (मं०, बि०) कम पड़ने वाला, अपर्याप्त।
**कफी**—स्त्री० (कां०) सूखा घास।
**कफूहड़**—वि० (चं०) गंदा।
**कफेर**—स्त्री० कुमार्ग।
**कफेरी**—स्त्री० (मं०) खराबी। वि० कुमार्गी।
**कफैत**—स्त्री० मितव्ययिता, किफ़ायत।
**कबका**—अ० कमी का।
**कबकू**—अ० (शि०, मं०) कब तक।
**कबक्थी**—स्त्री० (सो०) शामत, मार, दुर्दशा।
**कबट**—पु० (चं०) कपट।
**कबड़े**—अ० (सि०) कमी; कब जैसे।
**कबड़ेजा**—अ० (सो०) कब जैसा।
**कबड्ढ**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) फसल की असमय कटाई।
**कबत्त**—स्त्री० कुमार्ग।
**कबरना**—वि० बुरे वर्ण का, असुन्दर।
**कबरा**—वि० सफेद धब्बों वाला।
**कबलो**—अ० (मं०) लगातार।
**कबल्ला**—वि० अधिक, लगातार।
**कबा**—वि० (चं०) चितकबरा।
**कबा**—वि० धोखेबाज़।
**कबाग**—पु० (शि०) दुर्भाग्य।
**कबाट**—पु० (सि०) कुपथ।
**कबाड़**—पु० कूड़ा-करकट।
**कबाड़ना**—स० क्रि० (सो०) खोलना, उघाड़ना।
**कबाड़ा**—पु० बिगाड़, सर्वनाश।
**कबाड़ा**—पु० (मं०, बि०) कलह।
**कबाद**—पु० व्यर्थ बात, कुवाद।
**कबादकरा**—वि० बातूनी, कुवादी।
**कबादी**—वि० व्यर्थ बोलने वाला।
**कबायली**—पु० कबीले का सदस्य।
**कबार**—वि० अशुभ दिन, बुरा दिन।
**कबार**—पु० (शि०) कुम्हार।
**कबीड़ा**—वि० (बि०) कुलघातक।
**कबीला**—पु० कुटुंब, वंश, टोली।
**कबुद्द**—स्त्री० दुर्बुद्धि।
**कबूलणा**—स० क्रि० कबूल करना, स्वीकारना।
**कबे**—अ० (सि०) कब।
**कबेड़**—अ० (शि०) दे० कबे।
**कबेल**—स्त्री० विलंब, देर।
**कबैल**—वि० (कु०) नकारा, बिगड़ा हुआ।
**कबोल**—पु० बुरे वचन।
**कबौत**—वि० (कु०) अनुचित मार्ग।
**कब्ज़ा**—पु० द्वार-शाख से कपाट जोड़ने का उपकरण।
**कब्बे**—अ० (सि०) दे० कबे।
**कब्बा**—वि० (मं०) कपटपूर्ण, धूर्त।
**कमद्दर**—वि० विपरीत कार्य।
**कमे**—अ० (मं०) कब।
**कमंद**—स्त्री० (मं०) रस्सी।
**कम**—पु० कार्य।
**कमखर**—वि० (चं०) कर्तव्य परायण, कर्मशील।
**कमगोह**—वि० (कु०) अनावश्यक कार्य।
**कमचूश**—वि० (शि०) कंजूस।

कमजात—वि० एक गाली, दुराचारी।
कमटस्करा—वि० (कां०, ह०) कामचोर।
कमणा—अ० क्रि० (चं०) देवी शक्ति से कांपना, कांपना।
कमणी—स्त्री० कंपकंपी, कंपन।
कमती—वि० कमी।
कमत्ता—वि० (सो०) दुर्बुद्धिपूर्ण।
कमत्ति—स्त्री० दुर्बुद्धि, कुमति।
कमरकस—पु० एक औषधि विशेष।
कमरख—पु० (मं०) एक फल विशेष।
कमरा—पु० (चं०) बैल या बछड़े के शरीर के लाल व सफेद धब्बे।
कमरा—पु० घर का एक भाग, कक्ष।
कमरी—स्त्री० (शि०) वास्कट।
कमरो—स्त्री० (शि०) वास्कट।
कमला—स्त्री० (कां०) लक्ष्मी।
कमला—वि० (कां०) उन्मत्त।
कमलाणा—अ० क्रि० (चं०) प्यास से कलेजा सूखना।
कमलायिया—पु० (सि०) देवता का नाम।
कमलावणा—अ० क्रि० (सि०) कुम्हलाना।
कमली—स्त्री० छोटा कंबल।
कमलू—पु० छोटा पट्टू।
कमलो—पु० (शि०) तोता।
कमलोआ—पु० (शि०) पक्षी विशेष।
कमशल—पु० (शि०) दे० कशमळ।
कमांडू—पु० (बि०, मं०) दानव, अमानुष।
कमांद—स्त्री० (मं०) पशुओं की महामारी।
कमांदी—स्त्री० (बि०, ऊ०) ईख की खेती।
कमाई—स्त्री० आय।
कमाउ—वि० अधिक कार्य करने वाला।
कमाए—स्त्री० (शि०) दे० कमाई।
कमाण—स्त्री० (कां०) धनुष। काम करने की विधि।
कमाणत्ता—पु० (सि०) बरमा चलाने की रस्सी और लकड़ी।
कमाणा—स० क्रि० कमाना।
कमार—पु० (सि०) कुम्हार।
कमारबाज—पु० (चं०) जुआरी।
कमार्ग—पु० कुमार्ग।
कमार्गी—वि० कुमार्गी, दुराचारी।
कमावणा—स० क्रि० (सो०) कमाना।
कमी—स्त्री० न्यूनता, घाटा।
कमीण—पु० (बि०) काम करने वाला।
कमीणा—वि० कमीना, कंजूस।
कमीला—पु० (का०) 'कामळे' के वृक्ष के दानों से बना लाल चूर्ण।
कमु—पु० (सि०) घुन।
कमूर्ख—वि० (कु०) अतिमूर्ख।
कमे—स्त्री० (सि०) न्यूनता।
कमेट—स्त्री० (चं०) किसी कार्य विशेष के लिए संबंधीजनों व ग्रामीणों द्वारा दिया जाने वाला सहयोग।
कमेटी—स्त्री० समिति।
कमेत—स्त्री० (चं०) कार्य करने का पारिश्रमिक।
कमेह—स्त्री० (चं०) दे० कमेत।
कमोह्णा—स० क्रि० (कु०) कमाया जाना।
कमोझा—वि० (बि०, मं०) अत्यंत परिश्रमी।
कमोठडू—पु० (कु०) बड़ा टोकरा।
कमोड़ी—स्त्री० (कु०) चींटी।
कमोणा—स० क्रि० (कु०) कमाना।
कमोळ—स्त्री० (सि०) सफेद मिट्टी।
कमोहड़ा—वि० (सि०) दे० कमाउ।
कमौत—स्त्री० असमय होने वाली मृत्यु।
कमौति—स्त्री० (कु०) विपरीत मति।
कम्म—पु० काम।
कम्मल—पु० (मं०, शि०) कमीले का पेड़।
कम्याणा—स० क्रि० (कु०) कार्य करवाना।
कम्हार—पु० कुम्हार।
कयूं—पु० (चं०) भेड़ का बच्चा।
कयेआ—अ० (बि०) कैसा।
कयोली—स्त्री० (बि०) पुरानी कमीज़।
करंक—पु० (चं०) फुंसियों का बढ़ा हुआ रोग।
करंग—वि० हड्डियों का ढांचा।
करंग—पु० मृत पशु का अस्थिपंजर।
करंगाल—पु० (मं०) करनाल।
करंगोरा—पु० (चं०) एक कांटेदार झाड़ी।
करंड—स्त्री० (कां०) बीजे हुए खेत में मिट्टी की ऊपरी सतह पर जमी पपड़ी।
करंडी—स्त्री० रोटियां रखने के लिए बनी बांस की टोकरी।
करंडी—स्त्री० मिट्टी या सीमेंट लगाने का औज़ार।
करंडू—पु० बांस की छोटी टोकरी।
कर—पु० सिर की रूसी।
कर—पु० लगान।
कर—पु० (मं०) कंधा।
करउणो—स० क्रि० (शि०) दाल आदि छांटना।
करओं—पु० (सि०) धुएं से घर की छत पर लगी कालिमा।
करक—स्त्री० टूटी हुई हड्डी की पीड़ा।
करकट—पु० (मं०) बिच्छू।
करकरा—स्त्री० (चं०) एक जड़ी-बूटी।
करकरा—वि० (कु०) खुरदरा।
करकरी—स्त्री० (शि०) खुजली।
करको—वि० (मं०) अपना।
करखा—अ० (चं०) कहीं।
करखी—अ० (चं०) कहीं।
करखें—अ० (चं०) दे० करखी।
करख्त—वि० क्रोधी, निर्दय।
करचालटी—स्त्री० (सो०) कचनार के फूल; कचनार का व्यंजन।
करजैता—वि० जिसके घर उत्सव हो। ऋणी।
करजोये—वि० (सि०) दे० करजैता। कर्ज़दार।

करड़—स्त्री० ऊंची आवाज़।
करड़ा—वि० कठिन।
करड़ा—पु० (सि०) मज़बूत।
करड़ा—वि० (चं०) भूरे रंग का।
करढी—स्त्री० (कु०, चं०) पक्षी विशेष, मोनाल पक्षी की मादा।
करढोणा—अ० क्रि० (कां०, ह०) कुढ़ना, चिड़चिड़ाना।
करतूत—स्त्री० योग्यता। करनी, निंद्य कर्म।
करतूतला—वि० सुयोग्य। निंद्य काम करने वाला।
करथ—पु० (कु०, चं०) वन्य बकरा।
करथेब—स्त्री० (सि०) रुकावट।
करद—स्त्री० छुरी।
करनाई—स्त्री० (सि०) चिड़िया विशेष।
करनाळची—वि० करनाल बजाने वाला।
करनी—वि० (मं०) गूंगा।
करनीक—स्त्री० (सो०) कार्य कुशलता।
करनेह—स्त्री० (मं०) छोटी झाड़ी।
करपालू—वि० कृपालु।
करमंडल—पु० कमंडलु।
करम—पु० मृतक के संस्कार।
करमण—पु० (बि०) मृतक के संस्कार।
करमात—स्त्री० करामात, चमत्कार।
करम्म—पु० (कां०) कदंब जाति का वृक्ष।
करयाड़ी—स्त्री० (बि०) बेसन।
करयाड़ा—पु० (मं०) कचनार।
करयाड़ा—पु० (मं०) लोकानुरंजन, 'करयाळ' की विशेष धुन।
करयाळ—स्त्री० (सो०) कचनार का वृक्ष।
करयालची—पु० 'करयाळ' लोक नाट्य कराने वाला, 'करयाळ' का निर्देशक।
करयाळटी—स्त्री० (सो०) कचनार की कली।
करयालटू—पु० 'करयाळ' लोक नाट्य का कलाकार।
करयाळा—पु० हिमाचली लोक नाट्य विशेष।
करयाळी—स्त्री० (सो०) कचनार।
करयाल्लु—पु० (बि०) कच्चा पत्थर।
करयासणा—अ० क्रि० (मं०, बि०) खुलना।
करयासणा—अ० क्रि० (सि०) वर्षा का बंद होना।
करलाणा—अ० क्रि० रोना, चिल्लाना।
करवाड़ा—वि० (सि०, बि०) दे० कराड़ा। कठोर छिलके वाला।
करवाने—पु० (शि०) कमीज़ के पल्लों का विभाजन।
करवारी—पु० (कां०) एक पक्षी विशेष।
करवीहणा—अ० क्रि० (चं०) कसैला स्वाद होना।
करशाण—पु० (कु०) कृषक।
करशाणे—स्त्री० (सि०) ढोल में बांधी जाने वाली सूत की रस्सी।
करष्टा—स्त्री० (कु०) कष्ट।
करसण—स्त्री० (चं०) बहुमूत्र रोग।
करसाणा—स० क्रि० (सि०) गेहूं काटने के पश्चात् हल चलाना।
करसाणी—स्त्री० खेती संबंधी कार्य।
करहा—पु० (चं०) ऊपरी छत में प्रकाश के लिए रखा छेद।
करांऊं—पु० (कु०) धुएं के कारण छत पर बने लंबे रेशे, जमा हुआ धुआं।
करांघड़—पु० (चं०) दोनों हाथों से पूर्ण बल से पकड़ने का भाव, बाहुपाश।
करांटी—स्त्री० (चं०) कड़ाही।
करा:ड़ी—स्त्री० (सि०, शि०, सो०) कुल्हाड़ी।
करा:डू—पु० (मं०) छोटी कुल्हाड़ी।
करा—वि० (सि०) कटु, कड़वा स्वाद।
करा—पु० तीक्ष्ण धार में विकार।
कराइया—पु० (कु०) किराया।
कराऊणा—स० क्रि० (शि०) करवाना।
कराखड़ा—वि० (बि०) उजड़ा हुआ स्थान।
कराखा—पु० (कां०) मकान का कोना।
कराखी—स्त्री० (सि०) कुत्ते की मक्खी।
कराटका—पु० (सि०) छोटी कुल्हाड़ी।
कराटड़ा—पु० (सो०) तोता।
कराड़—पु० (शि०) डकार।
कराड़—पु० (कु०) वह खत्री जो दुकानदारी करता है।
कराड़—पु० कुल्हाड़ा।
कराड़टू—पु० (सो०) छोटी कुल्हांड़ी।
कराड़ा—वि० (कां०, ऊ०, ह०) कठोर, निर्दय।
कराण—वि० (सि०) नया।
कराणा—वि० (कु०) अकेला।
कराया—पु० किराया।
करार—पु० वादा, चैन, शांति।
करार—पु० (मं०) पश्चात्।
करारनामा—पु० प्रतिज्ञा पत्र, शर्तनामा।
करारा—वि० अधिक भुना हुआ, चटपटा।
करारा—वि० स्पष्टवादी।
कराल—स्त्री० कचनार।
करालची—वि० (शि०, सि०) 'करयाळ' लोक नाट्य करने वाला।
करालटू—पु० 'करयाळ' का कलाकार।
करालू—पु० (कु०) भूमि से उठाए गए अन्न के सिट्टों का गट्ठा।
कराश—पु० (कु०) एक प्रकार का घास जो देखने को अच्छा होता है, परंतु पशु उसे खाते नहीं हैं।
कराह—पु० (कां०) आम का घोल।
कराहज—पु० (मं०) कुल्हाड़ा।
कराहड़ा—पु० (कु०) दे० कराहज।
कराहड़ो—पु० (कु०) कुल्हाड़ी।
कराहा—पु० (चं०) दीवार में शहतीर डालने के बाद रहा रिक्त स्थान।
करिंगशा—स्त्री० (कु०) चिल्लाहट।
करिपणा—स० क्रि० (कु०) कैंची से कपड़े आदि काटना।
करियाना—पु० दैनिक प्रयोग की सामग्री।

**करिश**—स्त्री० (कु०) बारीक तिनका (जैसे दांत में फंसा तिनका)।
**करिश**—वि० (कु०) बारीक; दुबला, कमज़ोर।
**करिशणा**—स० क्रि० (सो०, शि०, सि०) सब्जी आदि को छीलना।
**करिशणा**—स० क्रि० (कु०) किसी औज़ार से लकड़ी साफ करना या सब्जी छीलना।
**करींच**—स्त्री० (कु०) बच्चों की एक खेल जिसमें ज़मीन में गाड़ी छड़ पर बीच में छेद वाली छड़ रख कर बच्चे झूलते हैं।
**करींडण**—वि० (कु०) अगुआ स्त्री।
**करींदा**—पु० (शि०) कलाकार।
**करीऊट**—स्त्री० (सि०) दे० करिंगशा।
**करीन**—पु० (कां०, ह०) छप्पर छाने का घास।
**करीना**—पु० (सि०) अफीम निकालने का उपकरण।
**करीलणा**—स० क्रि० (चं०) चावल परोसना।
**करीशणो**—स० क्रि० (शि०) खुरचना।
**करुंगटी**—वि० (कु०) आगे से टेढ़ी (छड़ी)।
**करुंडणा**—स० क्रि० (कु०) पौधे या फूल को नाखून से तोड़ना।
**करुंडयो**—पु० (सि०) कांटदार झाड़ी।
**करुंदु**—पु० (सो०, शि०) एक जंगली फल विशेष।
**करु**—वि० कृपण, चालाक, दक्ष।
**करु**—पु० (मं०) छोटा खीरा।
**करुआ**—पु० (कु०) छत के साथ की दीवारें।
**करुआ**—पु० मिट्टी का टोंटीदार पात्र।
**करुनी**—स्त्री० (मं०) कुहनी।
**करुपगी**—वि० (कां०) देवता की नाराज़गी। कुरूपता।
**करूला**—वि० (कु०) स्वाद रहित।
**करूळा**—पु० कुल्ली, चुल्ली।
**करूली**—स्त्री० (बि०) उपहास।
**करूशिया**—पु० (सि०) कपड़े पर कढ़ाई करने की सूई।
**करेंगटा**—वि० (कु०) टेढ़ा, टेढ़ा-मेढ़ा।
**करेंचणा**—स० क्रि० (कु०) कैंची से बाल या ऊन काटना।
**करेअर**—स्त्री० (चं०) कांटेदार झाड़ी।
**करेउपा**—पु० (सि०) क्रोधित होने का भाव।
**करेओट**—पु० (सि०) तोते जैसा पक्षी।
**करेओड़ा**—पु० (सो०) सांप।
**करेड़**—पु० (सि०) कुत्ता।
**करेड़**—स्त्री० गर्व, अभिमान।
**करेड़ा**—वि० (शि०, सो०) सख्त।
**करेड़ी**—वि० घमंडी, अभिमानी।
**करेयाटी**—स्त्री० (सो०) बेसन का आटा।
**करेर**—स्त्री० (चं०) अभिमान। कांटेदार झाड़ी।
**करेरा**—वि० (कु०) सख्त; विमुख।
**करेळ**—स्त्री० (सि०) कचनार।
**करेला**—पु० करेला।
**करेवड़ा**—पु० (सो०) दे० करेओड़ा।
**करेशी**—स्त्री० (मं०) पानी के भीतर धान की जड़ों को खाने वाला कीट।
**करेष्टी**—स्त्री० विपत्ति।
**करेहट**—पु० (चं०) भेड़ का बच्चा।
**करेहा**—पु० (मं०) दूसरी मंजिल से छप्पर तक का गृहभाग।
**करैंई**—स्त्री० (सि०, सो०, शि०) काले व भूरे रंग की चिड़िया जिसकी चोंच पीली होती है।
**करैंटू**—पु० (सि०) 'करैंई' के बच्चे।
**करैंस**—स्त्री० (बि०) हलका बुखार।
**करैऊ**—पु० (शि०) घुमाव।
**करैरा**—वि० (चं०) खुरदरा।
**करैल**—पु० (शि०) वृक्ष विशेष।
**करोंक**—पु० (कां०) चौकीदार।
**करोकणा**—स० क्रि० (कु०) दाने अलग करना।
**करोचणा**—स० क्रि० (मं०) कुरेदना।
**करोचो**—पु० (शि०) प्रपौत्र।
**करोट**—स्त्री० (बि०) खरोंच।
**करोडिओ**—वि० (सि०) कठोर, सख्त।
**करोणा**—स० क्रि० (सि०) दानों से कूड़ा निकालना।
**करोतणा**—स० क्रि० (सि०) दे० करोचणा।
**करोतरी**—स्त्री० (चं०, ऊ०, ह०) छोटी आरी।
**करोपणा**—अ० क्रि० (कां०) क्रोधित होना।
**करोपी**—स्त्री० देवता का रोष।
**करोवा**—पु० (सि०) छत के दोनों भागों के मिलने का स्थान।
**करौंड़ा**—पु० कंटीली झाड़ी।
**करौंदा**—पु० (कां०) दे० करौंड़ा।
**करौउड़ी**—स्त्री० (चं०) चने का घास।
**करौलटा**—पु० (कु०) अन्न इकट्ठा करने का लकड़ी का उपकरण।
**कर्क**—स्त्री० (बि०) किचकिचाहट।
**कर्करा**—पु० (बि०) एक पौधा, जिसका फूल दांतों के विष को दूर करता है।
**कर्ज**—पु० ऋण।
**कर्जई**—वि० ऋणी।
**कर्जा**—पु० दे० कर्ज।
**कर्जोई**—वि० दे० कर्जई।
**कर्थ**—पु० (चं०) जंगली बकरा।
**कर्धा**—पु० मछलियां पकड़ने का उपकरण।
**कर्मरू**—पु० (बि०) एक वृक्ष विशेष जिसके पत्ते बारीक और छोटे होते हैं।
**कर्ह**—स्त्री० (कां०) लोहे की कटार विशेष।
**कर्हा**—अ० (चं०) कहां।
**कर्हा**—पु० घर का कोना।
**कलंक**—पु० कलंक, दोष।
**कलंकी**—वि० दोषी, पापी।
**कलंकुटिया**—पु० (चं०) कालकूट विष का पौधा।
**कलंघरना**—स० क्रि० (मं०) लोम करना।
**कलंत**—स्त्री० (सो०) सिंचाई वाली भूमि।
**कलंदर**—पु० मुसलमान संत।
**कलंदर**—पु० बंदर नचाने वाला।

कल—अ० आने वाला या पिछला दिन।
क़ल—पु० पुर्जा।
कळ—स्त्री० (चं०) कनपटी।
कळ—स्त्री० (सो०) कलह।
कळ—पु० (कु०) बेईमानी।
कळका—वि० अधिक नमक वाला।
कळकुर—पु० (चं०) अंधकार।
कलकोटा—पु० (चं०) गिरगिट की तरह का छोटा जंतु।
कलकोड़ू—पु० (चं०) रीठे की गुठली।
कळख—स्त्री० (चं०, ऊ०, ह०) कालिमा, काला रंग।
कलखर—पु० (चं०) दे० कळख।
कलखीचड़ा—पु० (सि०) कुलथ की खिचड़ी।
कळखोदा—वि० (सो०) कलहकारी।
कलग—वि० (सि०) अलग। बहिष्कृत।
कळगी—स्त्री० कलगी।
कलगोट—स्त्री० (चं०) कनपटी पर लगी चोट।
कलचीट—स्त्री० (मं०) काली चींटी।
कलच्छ—पु० (सि०, सो०) व्यसन, बुरी आदत।
कलच्छण—पु० बुरे लक्षण, अवगुण, चरित्रहीनता।
कलछा—पु० (सि०) पेड़ की पत्तियां काटने का भाव।
कलजुग—पु० कलियुग।
कलझणा—अ० क्रि० (बि०, सि०) दुःख होना।
कलझणी—स्त्री० (चं०) वेदना, छटपटाहट।
कलझणो—स्त्री० (चं०) दया की भावना।
क़लझर—वि० (चं०) अत्यंत दुर्लभ।
कलड़ा—वि० (मं०) मैला, गंदा।
कलड़ी—वि० (कु०) कठिन।
कलढींग—वि० बहुत काला।
कळतर—पु० (चं०) संतान।
कळतर—पु० (चं०) बड़ा परिवार।
कलत—स्त्री० (कां०) बुरी आदत।
कलत्थर—पु० ढेर।
कलथाणी—स्त्री० (सि०) दे० कलथीचड़ा, कुलथ के उबालने के बाद निकाला पानी जो जुकाम के लिए इस्तेमाल किया जाता है।
कलथीचड़ा—पु० (मं०, सो०) चावल व कुलथ का मिश्रित पकवान।
कलथोड़े—पु० (सि०) कुलथ में मसाले डाल कर पत्तों से बंद करके पकाया हुआ व्यंजन।
कलदूधी—स्त्री० (कु०) एक फूल विशेष।
कलना—अ० क्रि० (बि०) चिंतित होना।
कलपंती—स्त्री० (चं०, ह०) शताब्दी।
कळप—स्त्री० तड़प, चाहत।
कळप—पु० युगगणना, कल्प।
कळपणा—अ० क्रि०, तड़पना, चाहना।
कळपणा—अ० क्रि० पश्चात्ताप करना।
कळपणो—अ० क्रि० (शि०) दुःखी होना।
कळपाणा—पु० (मं०) पीली चोंच वाला पक्षी।
कळपावणो—स० क्रि० (शि०) दुःखी करना।
कलपीश—वि० (मं०) पश्चात्ताप करने वाला।
कलपौणा—स० क्रि० (चं०) अत्यंत दुःखी करना।
कलफ—स्त्री० (मं०) कपड़े की माया।
कलफ—पु० बाल आदि काला करने की सामग्री।
कळफा—पु० (कां०, चं०) ज़िम्मेदारी।
क़लबल्ला—पु० शोर, कोलाहल।
कळबुज्जी—वि० (शि०) अत्यंत काली।
कलबुत्तर—पु० (चं०) कबूतर।
कलबूड़—वि० (सो०) अत्यधिक काला।
कलबूत—वि० निर्बल, ढांचा जैसा।
कलबूत—पु० (सि०) जूते का फर्मा।
कलम—स्त्री० वृक्ष की टहनी काट कर उस पर अन्य वृक्ष की लगाई शाखा, प्यूंद।
कलम—स्त्री० चाय, सेब आदि के पौधों की ऊपर से कटाई करने की क्रिया।
कलमड़धान—पु० (कां०) धान का एक प्रकार जिसका तना काला और फल आगे पीछे से काले तथा बीच में पीले होते हैं।
कलमणा—स० क्रि० (बि०) प्यूंद लगाना।
कलमदानी—स्त्री० कलमपात्र।
कलमां—स्त्री० कनपटी के बाल।
कलमा—पु० मुसलमानों का मंत्र।
कलमुंहा—वि० काले मुंह वाला, चरित्रहीन।
कलरी—स्त्री० (मं०) दोपहर से पूर्व का भोजन।
कलले—पु० (मं०) आम का साधारण अचार।
कळवाद—पु० (सि०) कुटुंब की भीतरी कलह।
कलश—पु० (सि०) पूजा में प्रयुक्त जल पात्र।
कलश—पु० (सि०) जंग।
कलस—पु० (बि०) कलश।
कलसणा—अ० क्रि० (कां०) अधिक गरम हो जाना।
कलसा—पु० (मं०) जंगली मुर्गा।
कलसा—पु० (सि०) गागर।
कळह—स्त्री० कलह, शोर।
कळहयारा—वि० (कां०) सदा दुःखी रहने वाला।
कलहा—स्त्री० (बि०) दे० कळह।
कलां—स्त्री० (कां०) मोठ जैसी दाल, मटर की एक किस्म।
कला—स्त्री० (बि०) युवावस्था में मुंह पर निकलने वाली फुंसियां।
कळा—स्त्री० (चं०) चिल्लाहट।
कळा—स्त्री० (सि०) देवशक्ति।
कलाई—स्त्री० (कां०) मिट्टी पलटने की क्रिया।
कळाई—स्त्री० (सि०) मयूरी।
कळाई—स्त्री० कलाई।
कलाउ—पु० (शि०) मटर की छोटी किस्म।
कलाए—स्त्री० (मं०) मयूरी।
कळाए—स्त्री० (सि०) दुःखी को देखकर हुई वेदना।
कलाकड़ी—स्त्री० (कां०) कमल का बीज।

कलागा—पु० (चं०) समूह।
कलाचा—वि० (कु०) अकेला।
कळाट—पु० (कां०) लुकाट का फल।
कलाड़—स्त्री० (कां०) दे० कलार।
कलाड़—स्त्री० (सि०) कोयल।
कलाणा—अ० क्रि० चोट लगने पर कुत्ते का चिल्लाना।
कलाणा—अ० क्रि० पशु पक्षियों का बोलना।
कलाणी—स्त्री० (सो०) निर्जन भूमि।
कलाथर—पु० काला पत्थर।
कलाद—वि० (सि०) कुपुत्र। वर्ण संकर।
कलानी—स्त्री० (चं०) कुंडी।
कलापणा—पु० अकेलापन।
कलार—स्त्री० (कु०, चं०) मध्याह्न का भोजन।
कलारी—स्त्री० (मं०) दे० कलार।
कलाळ—पु० (कां०) सुरा विक्रेता।
कलावंत—वि० (मं०) कला का ज्ञाता।
कलावा—पु० (सो०) क्यारियों के बीच में सींचने के लिए खोदी गई छोटी कुल्या।
कलास—पु० (कां०, ऊ०, ह०) कैलाश पर्वत।
कलाह्—वि० (सि०) पानी लगने वाली भूमि।
कलिचड़ी—स्त्री० (कु०) अंगुली में पहनने का सोने का आभूषण।
कली—स्त्री० (बि०) हुक्का।
कली—स्त्री० (बि०) कपड़े की लीर।
कली—स्त्री० बर्तनों में की जाने वाली कलई।
कळी—स्त्री० सिले कपड़े का जोड़।
कलीअ—पु० (सि०) दोपहर का भोजन।
कलीऊ—पु० (सि०) दे० कलीअ।
कलीओ—वि० (शि०) शरारती।
कलीचड़ा—वि० गंदा।
कळीखण—स्त्री० (कां०, ह०) घृणा।
कलीचपण—पु० (कां०, ह०) गंदगी।
कलीड़ा—पु० (सि०) वधु के हाथ में बंधा छत्र।
कळीन—स्त्री० (सो०) बर्तनों की कालिमा।
कळीबड़ा—वि० गंदा।
कलीरा—पु० (बि०) दे० कलीड़ा।
कलीहर—स्त्री० (कु०) पंक्ति, लकीर।
कलु—पु० (शि०) देवता।
कलुआ—पु० (कां०) कच्चा घड़ा।
कलुकहड़—वि० (मं०) एकांत प्रिय।
कलुखर—वि० गंभीर, स्थिर, एकांतप्रिय।
कलू—पु० (चं०) छोटी कलियां।
कलूकड़—वि० (सि०) दे० कलुकहड़।
कलूटा—वि० (मं०, ह०, ऊ०) काला।
कलूटी—स्त्री० (कु०) कैल या देवदार का छोटा पौधा।
कलूळ—स्त्री० (कां०) चीख, शोर, कलह।
कळूळा—पु० (कु०) कुल्ली।
कलूळी—स्त्री० (कां०) खुशी की चीख।
कलें—स्त्री० (चं०) देवदार।
कळेंच्छेओ—पु० (सि०) कांटेदार जंगली फल।
कलेंशो—पु० (मं०) दे० कलेशा।
कलेई—स्त्री० (बि०) बर्तनों में नौशादर की परत लगाने की क्रिया, कलई।
कलेख—स्त्री० (चं०) कालिख।
कळेज—पु० (सि०) वृक्ष विशेष।
कळेजा—पु० दिल, कलेजा।
कळेजी—स्त्री० कलेजे का मांस।
कळेजी—स्त्री० रंग विशेष।
कलेत्तर—पु० (मं०) पश्चात्ताप।
कलेप्पण—पु० (सि०) अकेलापन।
कलेरना—स० क्रि० (बि०) अकेला करना।
कळेल—स्त्री० (चं०) सायंकाल गोधूलि वेला।
कळेळ—स्त्री० (कां०) कसैलापन।
कलेलू—पु० (चं०) संध्याकाल में उदय होने वाला तारा।
कलेवण—पु० (सि०) देवदार का वन।
कलेवा—पु० (सि०) दे० कलावा, पानी की नहर।
कलेश—पु० (चं०) कलंक। कलह, दुःख।
कलेशा—पु० (कु०) जंगली मुर्गा।
कलेस—पु० (बि०) दे० कलेश।
कलेसण—वि० (मं०, चं०) कलह कराने वाली।
कलेसर—पु० (मं०) कुल का मुखिया।
कलै—स्त्री० (चं०) दे० कलें।
कलैख—स्त्री० (चं०) काली मिट्टी।
कलैण—पु० (मं०) सफेदे का वृक्ष।
कळैणा—पु० (सि०) ग्राम देवता का उपासक।
कलैर—स्त्री० (शि०), मध्याह्न का भोजन।
कलोःडू—पु० (कां०) पानी में तैरने वाला एक छोटा सा जीव।
कलो—अ० (सि०) कमी।
कलोकड़—वि० एकांतप्रिय।
कलोकणा—वि० अगले या पिछले कल का।
कलोका—वि० दे० कलोकणा।
कलोक्कड़—पु० (सो०) एकांतवासी।
कलोटा—वि० (चं०) काला।
कलोटी—स्त्री० (कां०) खलिहान से श्रमिकों को मिलने वाला अन्न।
कलोड़ा—पु० (सो०) युवा बैल।
कलोड्डू—पु० (कां०, ह०, ऊ०) रीठे की गुठली।
कलोण—स्त्री० (च०) पीड़ा।
कलोतर—पु० (कु०) लकड़ी के कारीगर द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली आरी।
कलोतरी—स्त्री० (मं०) छोटा 'कलोतर'।
कलोत्तड़—पु० (सि०) केले के पत्ते।
कलोरी—स्त्री० (मं०) लकड़ी के जोड़ को कसने के लिए प्रयुक्त लकड़ी की कीली।
कलोहड़ा—वि० (सि०) दे० कलोड़ा।
कलोहड़ू—पु० (मं०) बछड़ा।
कलौए—स्त्री० (शि०) कलाई।

कलोच्छणो—वि० (शि०) बेईमान।
कलौण—स्त्री० (कु०) देवदार के वृक्षों का समूह।
कल्प—पु० युग।
कल्पणा—अ० क्रि० (बि०) तड़पना।
कल्फ—पु० (चं०) धुले कपड़े में अकड़ाव तथा चिकनाई लाने हेतु लगायी गई लेई या मांड़।
कल्ब—वि० (मं०) बुरी आदत।
कल्म—पु० (चं०) बहाना। असत्य।
कल्याई—स्त्री० (मं०) कालापन।
कल्याठ—वि० (मं०) काली।
कल्यान—स्त्री० (मं०) कोयल।
कल्यार—स्त्री० (मं०) बुरी नस्ल।
कल्लस—स्त्री० (बि०) विलाप।
कल्लर—पु० (चं०) वह चट्टानी भाग जिससे नमक सी सफेदी उत्पन्न होती है।
कल्लर—वि० (कां०) रेतीली (भूमि)।
कल्लर—पु० (चं०) भैंस के दूध से तैयार व्यंजन।
कल्ली—स्त्री० (शि०) मध्याह्न का भोजन।
कल्वाचण—पु० (मं०) नुकसान, हानि।
कल्वाण—पु० (मं०) विपरीत कार्य।
कल्वार—स्त्री० (मं०) दे० कलैर।
कल्वार—स्त्री० (बि०) छोटी कुल्या।
कल्वारका—वि० (चं०) मध्याह्न काल का।
कल्वाला—वि० (मं०) शरारती, उत्पाती।
कल्ला—वि० अकेला, एकाकी।
कल्हाणा—अ० क्रि० (कां०) करुण क्रंदन करना।
कल्हाळ—पु० (कु०) तेली।
कल्हेरना—स० क्रि० (चं०) कलह कराना।
कल्हेशा—वि० (बि०) कलह कराने वाला।
कल्हैणा—वि० (बि०) झगड़ालू।
कल्होण—वि० (कां०, ह०, बि०) दयालु।
कल्होणा—स० क्रि० (बि०, कां०, ह०) दया करना।
कल्हौड़ा—पु० (कु०) कुलथ का बड़ा 'मल्ला'।
कवच—पु० लोहे का कवच।
कवट—पु० कपट।
कवड़ा—पु० (मं०) कौआ।
कवड़ा—पु० (सं०) कड़वा, कटु।
कवल्ला—अ० (कां०) अधिक, लगातार।
कवाग—वि० (सि०) विपरीत (कार्य)।
कवाची—वि० (मं०) बुरे काम करने वाला।
कवाट्ट—पु० (मं०) कौआ।
कवाड़—पु० (सि०) कूड़ा-करकट।
कवाड़ी—स्त्री० (सि०) कुल्हाड़ी।
कवाब—पु० (चं०) बाज़ की तरह का पक्षी।
कवायद—स्त्री० (मं०) परेड, व्यायाम।
कवारठ—स्त्री० (सि०) कन्या, अविवाहिता।
कवारपाट्ठा—पु० (सि०) एक प्रकार का पौधा।
कवारा—वि० (सि०) अविवाहित युवक।
कवारी—वि० (मं०) दे० कवारठ।
कवाल—पु० (बि०) चढ़ाई वाला मार्ग, चढ़ाई।
कवाले—स्त्री० (शि०) दे० कवाल।
कवाश—वि० (सि०) उखड़ी (वस्तु)।
कवाश—पु० (सि०) सिर के बालों से निकलने वाली सफेद धूलि, 'सिकरी'।
कवाशणा—स० क्रि० (सि०) धक्के से खोलना।
कवित्त—पु० छंद, अलंकार, गीत।
कविया—पु० (मं०) कवि, भाट।
कवेड़—स्त्री० (सि०) घुंघ।
कवेड़ू—पु० (सि०) कुकुरमुत्ता।
कवेरू—पु० (शि०) तीर।
कवे—पु० (मं०) कबूतर।
कशंगत—स्त्री० (चं०, शि०) कुसंगति।
कशंगता—वि० (सि०) भद्दा।
कश—पु० (कु०, चं०) शहद के छत्ते की लड़ी।
कश—पु० (मं०) कसैलापन।
कश—पु० सिगरेट, बीड़ी का कश।
कशअ—पु० (शि०) तैयार करने की क्रिया।
कशाई—स्त्री० (सो०) चिंता।
कशाक—स्त्री० (सि०) पीड़ा। कड़वाहट।
कशट्टू—पु० (सि०) छोटी कुदाली।
कशाड़—पु० (सि०) कुल्हाड़ा।
कशणा—स० क्रि० (कु०) कसना।
कशणो—स० क्रि० (शि०) दे० कशणा।
कशतूरा—पु० (मं०) कस्तूरी हिरन।
कशत्रे—पु० (शि०) क्षत्रिय।
कशम—स्त्री० कसम।
कशमळ—पु० (सि०) काले खट्टे फल वाली कांटेदार झाड़ी।
कशमळे—पु० (सो०) रसौत का वृक्ष।
कशर—स्त्री० (शि०) दुःख, पीड़ा।
कशला—वि० (मं०) कसैला।
कशला—पु० (सि०) बड़ा कुदाल।
कशलिया—पु० (शि०) चीख।
कशांबळ—स्त्री० (कु०) एक कांटेदार झाड़ी जिसके लाल रंग के खट्टे फल होते हैं जो पकने पर काले हो जाते हैं।
कशालौ—वि० (शि०) कसैला।
कशावट—स्त्री० (मं०) पर्णकुटीर।
कशिणो—अ० क्रि० (शि०) तैयार होना।
कशी—अ० (कु०) डट कर, बहुत, पर्याप्त।
कशीणा—अ० क्रि० (चं०) कसैला होना।
कशे—स्त्री० (सि०) कुदाली।
कशैइलो—वि० (शि०) दे० कशालौ।
कशैणा—स० क्रि० (मं०) कसना।
कशोगन—पु० (सि०) अपशकुन।
कशोमा—वि० (कु०) कुरूप।
कशोळना—स० क्रि० (कु०) मैला करना।
कशौण—स्त्री० (मं०) चौड़े पत्ते वाली घास।

कश्टा—पु० (सो०) चीड़ का फल।
कश्टी—स्त्री० (चं०) दर्द। थकावट।
कश्तर—स्त्री० (मं०) कबूतरी।
कष—पु० (चं०) लकड़ी।
कसंखड़ा—वि० (कां०) दूसरों के प्रति असहिष्णु।
कसंग—पु० कुसंगति।
कसंगी—वि० कुसंगति करने वाला।
कस—सर्व० (चं०) किसने।
कस—पु० (चं०, मं०) पीतल में रखे व्यंजन का कसैलापन।
कस—पु० (कां०) दानों व भूसे का ढेर।
कस—स्त्री० (कां०, चं०) जकड़न।
कस—पु० (बि०) शहद के छत्ते की लड़ी, मधुलहरी।
कस—पु० (बि०, चं०) अधिक कार्य।
कसगण—पु० अपशकुन।
कसण—स्त्री० (मं०) दबाव।
कसणा—स० क्रि० (बि०, चं०) कसना।
कसणे—स्त्री० (शि०) गर्भवती।
कसनूणी—स्त्री० (कु०) नासाछिद्र।
कसब—पु० काम।
कसमड़े—स्त्री० (मं०) कांटेदार झाड़ी के फल।
कसमलू—पु० (बि०) 'कशमळ' में लगने वाले छोटे फल।
कसमले—स्त्री० (मं०) रसौत की जड़।
कसमसाट—स्त्री० (मं०) बेचैनी।
कसमसाणा—अ० क्रि० (मं०) उतावला होना।
कसमीरा—पु० (मं०) मशीनी गरम कपड़ा, कश्मीर का बना कपड़ा।
कसर—स्त्री० बीमारी। कमी, न्यूनता।
कसरना—अ० क्रि० (सो०) रुग्ण होना। कमी होना।
कसरमसर—अ० थोड़ा-थोड़ा।
कसराट—स्त्री० (कु०) गलती।
कसराल—स्त्री० (कां०) रेत।
कसरालू—वि० (कां०) रेत का, रेतीला।
कसराळू—पु० (सो०) रेत का पत्थर।
कसरेयायी—पु० (सो०) अस्वस्थ व्यक्ति।
कसरोड़ना—स० क्रि० (कु०) घुसेड़ना, डालना।
कसरोड़—पु० (चं०) एक पौधा विशेष जिसके तनों का अचार बनता है।
कसला—वि० (मं०) कसैला।
कसला—पु० (चं०) नई कोंपल।
कसलाणा—स० क्रि० (कां०) घास के बने घर में अन्न रखना।
कसली—स्त्री० (कां०) नई कोंपल।
कसलू—पु० (कां०) जले चावल की पपड़ी।
कसा—वि० (मं०) सख्त, कठोर।
कसाओ—वि० (शि०) कठिन।
कसाकड़ा—पु० (कां०) जलजीव।
कसाण—पु० (कां०) किसान।
कसाथ—पु० (कां०) बुरी संगत।
कसाये—पु० (सि०) कसाई।
कसार—पु० (कां०) घी में पकाया गया प्रसाद, शर्करा।
कसार—पु० बुरे लक्षण।
कसारा—पु० कमी, शेष।
कसाला—वि० एक वर्षीय।
कसाळा—पु० (चं०) पीड़ा, कष्ट।
कसीदा—पु० कढ़ाई।
कसीरा—पु० (चं०) चंबा का पुरातन सिक्का।
कसीस—स्त्री० आयुर्वेदिक औषधि।
कसीस—पु० (सि०) काला रंग।
कसुगन—पु० (सि०) अपशकुन।
कसुती—वि० (बि०) बिगड़ा हुआ।
कसुत्रा—वि० (मं०) बेढंगा। बिगड़ा हुआ।
कसुथरा—वि० (चं०) अस्वच्छ, मैला।
कसुन्ना—पु० (बि०) बर्तन साफ करने की कूची।
कसूत—पु० (बि०) अड़चन।
कसूता—वि० (बि०) बिगड़ा हुआ।
कसूतो—वि० (सि०) विपरीत।
कसूर—पु० दोष।
कसेरा—पु० (शि०) प्रबंध।
कसेरा—वि० (चं०) किसका।
कसेस—स्त्री० (कां०) कमी।
कसोटी—स्त्री० (चं०) सोना परखने का पत्थर, कसौटी।
कसोणा—स० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) कसा जाना।
कसोथा—पु० (कु०) कठिनाई। व्यस्तता।
कसोरा—पु० (सि०) मिट्टी का छोटा पात्र।
कस्टी—स्त्री० (मं०) चीड़ का छिलका।
कस्टुंडा—पु० (कां०) कस्तूरी मृग।
कस्वाद—वि० स्वाद रहित।
कस्सण—स्त्री० (कां०) चक्र से तने धागे जिन पर 'माहल' घूमती है।
कस्सर—स्त्री० (चं०) वह रस्सी जो हल की लठ को थामती है।
कस्सल—स्त्री० (कां०) बड़ी कोंपल। डंठल।
कहण—स्त्री० (मं०) धान लगाने की क्रिया।
कहणा—स्त्री० (कां०) दे० कणहां।
कहणी—स्त्री० (मं०) खारिश।
कहणू—अ० (चं०) कैसा।
कहणे—वि० (मं०) पर्याप्त।
कहणो—स० क्रि० (शि०) फसल से घास निकालना।
कहत्तर—वि० इकहत्तर।
कहन्न—पु० (चं०) बैल का कंधा।
कहमी—वि० (मं०) कंजूस।
कहर—वि० बला, आफत; जुल्म।
कहाकणी—स्त्री० (चं०) खीरा।
कहाणी—स्त्री० कहानी।
कहार—पु० पालकी उठाने वाला।
कहार—वि० (कां०) उकसाने वाला।
कहालो—वि० (शि०) कसैला।
कहिणो—अ० क्रि० (शि०) तैयार होना।

कहु—पु० (मं०) कार्य।
कहु—पु० (चं०) जैतून जाति का पेड़। एक तान्त्रिक संप्रदाय।
कहु—पु० (बि०) आधी पूली घास।
कहें—पु० (शि०) कुदाली।
कहे—स्त्री० (मं०) 'चन्ने' की चिनाई।
कहेरा—पु० (मं०) छप्पर का सबसे ऊंचा हिस्सा।
कहोरी—अ० (चं०) कहां से।
कहोलू—पु० (चं०) जैतून के वृक्ष पर लगने वाले दाने।
कां—अ० (सि०) क्या।
कां—पु० (मं०) कौआ।
कांइयो—वि० (सि०) धूर्त।
कांइशा—वि० (कु०) ऐसा परिवार जहां काम अधिक हो और काम करने वाले कम हों।
काउज—पु० (शि०) कमल।
कांउश—स्त्री० (चं०) घृणा, अनमनाभाव।
कांउशा—वि० (कु०) अकेला।
कांका—स्त्री० (कु०) माला, छोटे बच्चों के गले की माला।
कांक्षा—स्त्री० (सि०) इच्छा।
कांखच—वि० (चं०) परिश्रमी।
कांग—पु० (सि०, कु०, सो०) कान को अप्रिय लगने वाला शोर। छोटी-छोटी बातों को लेकर किया गया झगड़ा।
कांग—पु० (बि०) वातावरण।
कांग—पु० (सो०) टेढ़ापन।
कांगड़ा—पु० (मं०) पके चावल को बर्तन से निकालने का बड़ा चम्मच।
कांगड़ी—स्त्री० (मं०) अंगीठी।
कांगड़ू—पु० (शि०) बड़ी कंघी।
कांगण—पु० (मं०) दे० कंगण।
कांगणी—स्त्री० (सि०) दे० कंगण।
कांगणी—स्त्री० बर्तन की हत्थी।
कांगणी—स्त्री० (मं०) एक अनाज विशेष।
कांगणे—स्त्री० (शि०) अंगूठी।
कांगणो—स्त्री० (सि०) दे० कांगड़ी।
कांगर—स्त्री० (शि०) चट्टान।
कांगर—पु० (सि०) पक्का कंकड़, चट्टान।
कांगरी—स्त्री० (मं०) दे०किंगरी।
कांगळी—स्त्री० (सो०) मूत्र।
कांगशा—स्त्री० (मं०) आकांक्षा।
कांगशी—स्त्री० (मं०) घास व पत्तियां एकत्रित करने का तीन सिरों वाला लोहे का उपकरण।
कांगा—पु० कंघा।
कांगी—स्त्री० कंघी।
कांगू—पु० (सि०) धागा तैयार करने की तकली।
कांगू—पु० (कां०, कु०, बि०) एक वृक्ष विशेष।
कांगे—स्त्री० (मं०) दे० कांगी।
कांगोई—स्त्री० (सि०) दे० कांगी।
कांघा—पु० (कु०) पट्टू बुनने का कंघा।
कांघी—स्त्री० कंघी।
कांघी—स्त्री० (बि०) रेंगकर चलने वाला जीव जो फसलों में रहता है। इसकी पीठ पर जहरीले कांटे होते हैं।
कांघी—पु० (कां०) कलगीधारी पक्षी।
कांघी—स्त्री० (मं०) केलों का गुच्छा।
कांघू—पु० (कु०) जुलाहे का छोटा कंघा।
कांच—स्त्री० (मं०, बि०) लंगोटी।
कांचण—वि० (मं०) वेश्यावृत्ति करने वाली।
कांचण—पु० (मं०) मोती।
कांचण—पु० (सि०) देवता का चढ़ावा, मुद्रा, सोना।
कांचनी—स्त्री० (सि०) वेश्या।
कांचा—पु० शीशा, कांच की गोली।
कांची—स्त्री० (चं०) चालाक स्त्री।
कांचो—स्त्री० (शि०) दे० कांची।
कांछ—स्त्री० (चं०) चाह।
कांछ—स्त्री० (कां०) कुश्ती।
कांछा—वि० (शि०) छोटा।
कांछा—पु० (सि०) देवर।
कांजण—पु० (सि०) लस्सी में बना चावलों का पकवान।
कांजर—स्त्री० (शि०) लड़ाई-झगड़ा करने वाला।
कांजरे—स्त्री० (शि०) वेश्या।
कांजी—स्त्री० (चं०) एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी जलाना पशुपालक अनिष्ट समझते हैं।
कांजी—स्त्री० गाजर का खट्टा पेय।
कांझ—स्त्री० (बि०) काले रंग का छोटा पक्षी।
कांझी—स्त्री० (कुं०) घास विशेष।
कांटा—पु० कान का आभूषण।
कांटा—पु० बड़ा तराजू।
कांटी—स्त्री० (सि०) खेत।
कांटो—स्त्री० (सो०) गिलहरी।
कांठा—पु० (मं०) किनारा।
कांठी—स्त्री० (मं०) कंठाभूषण।
कांठो—पु० (सि०) कमीज़ या कोट का कालर।
कांडा—स्त्री० (मं०) रीढ़ की हड्डी; कमर।
कांडा—पु० (सि०, सो०, शि०) कांटा।
कांडा—वि० (कु०) काना।
काडा—पु० (सि०, शि०) उपत्यका, पहाड़ के पास की समतल भूमि।
कांडी—स्त्री० (शि०) माला।
कांडू—पु० (सि०) कुत्ता।
कांडो—पु० (शि०) जंगल।
कांडो—पु० (कु०) गोल पत्थर।
कांत—वि० एकांत।
कांतरी—स्त्री० (सि०) मुर्गे की उन्नत किस्म।
कांतरी—वि० (सि०, सो०) नकली, घटिया वस्तु।
कांथण—वि० (कु०) बछड़े के बिना दूध न देने वाली गाय।
कांद—स्त्री० (सो०) दीवार।
कांद—स्त्री० (शि०) घर में सामान रखने के लिए बनाई गई जगह।

**कांद**—वि० (चं०) दे० कांत।
**कांदल**—स्त्री० (चं०, मं०) सांप की गर्दन का पीछे का भाग।
**कांदल**—स्त्री० (चं०) कोमल घास।
**कांदळ**—स्त्री० (कां०) अरबी के पत्तों का डंठल।
**कांदू**—पु० (चं०) आटे का चोकर।
**कांध**—स्त्री० (मं०) मिट्टी की दीवार।
**कांधड़**—स्त्री० (चं०) कंधों का मध्य भाग।
**कांधा**—अ० (मं०) अंदर।
**कांप**—स्त्री० (चं०) दाब, भार।
**कांपा**—वि० (चं०) चालाक।
**कांब**—स्त्री० (मं०) धुएं की कालिमा।
**कांबण**—स्त्री० (शि०) कंपन।
**कांबणी**—स्त्री० (शि०, मं०) कंपकंपी।
**कांबणे**—स्त्री० (कु०) दहल।
**कांबणो**—अ० क्रि० (सि०) कांपना।
**कांबळ**—पु० (मं०) एक वृक्ष विशेष।
**कांबळ**—पु० (सो०) कंबल।
**कांबिल**—स्त्री० (सि०) जड़ी-बूटी, पौधा विशेष।
**कांमल**—पु० (मं०) पशुचारे का एक वृक्ष।
**कांयेस**—स्त्री० (मं०) चिंता।
**कांवणे**—स्त्री० (मं०) दे० काउणी।
**कांवळ**—पु० (सि०) कमल का फूल।
**कांवळी**—स्त्री० (शि०) शीघ्रता।
**कांसा**—पु० कांस्य धातु।
**कांह**—अ० (मं०) क्यों।
**कांहला**—पु० (मं०) घोंसला।
**कांहे**—अ० (मं०) कब।
**काःणी**—स्त्री० (सो०, शि०) सगाई।
**काःना**—वि० (सि०) बौना।
**का**—पु० (कां०) कौआ।
**का**—अ० (सि०, सो०, शि०) क्या।
**काइण**—स्त्री० (शि०) कहानी।
**काइणो**—अ० क्रि० (शि०) तंग होना।
**काइथ**—पु० (मं०) देवता का उप प्रबंधक।
**काइल**—स्त्री० (शि०, मं०) कालिख।
**काइल**—पु० (मं०, कु०) देवदार प्रजाति का वृक्ष।
**काई**—पु० (कां०) लंबे घास वाला पौधा।
**काई**—स्त्री० (चं०) पानी के किनारे उगने वाली औषधि।
**काई**—स्त्री० (सि०) मछलियां पकड़ने का उपकरण।
**काई**—अ० (मं०) पास, नज़दीक।
**काईड़**—स्त्री० (मं०) कोयल।
**काउं**—अ० (बि०) क्यों।
**काउंशा**—वि० (कु०) अकेला।
**काउड़पंची**—स्त्री० (कु०) काकपंचायत। माघी के दूसरे दिन का त्योहार। उस दिन प्रकाश होने के पहले ही भोजन करना पड़ता है।
**काउड़ा**—पु० (कु०) कौआ।
**काउणा**—स० क्रि० (शि०) कंघी करना।
**काउणी**—स्त्री० (कु०) कंगनी, चावल प्रजाति का एक अन्न विशेष, जिसके दाने अधिक बारीक होते हैं।
**काउळ**—स्त्री० (शि०) जल्दी।
**काए**—अ० (सो०) के पास।
**काए**—वि० (मं०) कच्चा।
**काओ**—पु० (सि०) कौआ।
**काओथा**—पु० रेशम का कीड़ा।
**काओल**—पु० (मं०) मृतक के निमित्त कौओं को भोजन देने संबंधी संस्कार; श्राद्ध के दिन खिलाया जाने वाला भोजन।
**काक**—पु० (मं०, कु०) मौसा, ताया।
**काकजंघी**—स्त्री० (चं०) कौए की टांग की तरह की एक जड़ी।
**काकड़**—पु० दे० ककड़।
**काकड़छोले**—पु० (कु०) काबुली चने।
**काकड़शिंघी**—स्त्री० (कु०) एक औषधि जिसके पत्ते ककड़ पशु के सींग की तरह होते हैं।
**काकड़ा**—पु० (मं०, सि०, शि०) चेचक की तरह की एक बीमारी।
**काकड़ी**—स्त्री० (कु०, चं०) दिल।
**काकड़ी**—स्त्री० खीरा।
**काकड़ीपकणा**—अ० क्रि० (कां०) कमज़ोर होना।
**काकड़ें**—स्त्री० (चं०) काकड़ासींगी।
**काकर**—पु० (मं०) केले का दंड।
**काकर**—पु० (सि०) पनचक्की का पंखा।
**काकरा**—पु० (मं०) जोहड़। बर्फ का जमा शीशा।
**काकरु**—पु० (सि०) सफेद मिट्टी।
**काकरु**—पु० (मं०) चूना।
**काका**—पु० (मं०) छोटा बच्चा।
**काका**—पु० (शि०) चाचा।
**काका**—पु० (बि०) ताया।
**काका**—अ० (चं०) नकारात्मक शब्द।
**काकुड़ा**—पु० (सि०) एक वृक्ष विशेष जिसके रेशे से रस्सी तैयार की जाती है।
**काकू**—पु० (कु०) चाचा।
**काके**—स्त्री० (शि०) चाची, ताई।
**काखड़ा**—वि० (कु०) कठिन।
**काखला**—वि० (चं०) कमज़ोर (बच्चा)।
**काग**—पु० बोतल का ढक्कन।
**काग**—पु० कौआ।
**कागज**—पु० कागज़।
**कागजे**—वि० (सि०) पतला।
**कागट**—पु० (शि०) कागज़।
**कागडू**—पु० (शि०) कंघी।
**कागद**—पु० कागज़।
**कागळी**—स्त्री० (सि०) संदेश।
**कागळे**—पु० (मं०) पत्र।
**काच**—स्त्री० (चं०) मणिवाली कंठी।
**काच**—पु० (चं०) कच्चापन।
**काचड़**—पु० (मं०) चुगली।

**काचड़ा**—वि० (सि०) कच्चा।
**काचरा**—वि० भूरी आंखों वाला; सफेद धब्बों वाला।
**काचा**—वि० (सो०) कच्चा।
**काचापीचा**—पु० (कां०) क्रियाकर्म।
**काची**—वि० (कु०) बुरी नज़र रखने वाला।
**काचे**—स्त्री० (कु०) महिलाओं का कंठाभूषण।
**काचो**—वि० (सि०, शि०) कच्चा; अधूरा।
**काचो**—पु० (शि०) आटा।
**काच्छ**—स्त्री० (सो०, मं०) बगल।
**काच्छड़ी**—स्त्री० (सो०, शि०) पीठ पर सामान उठाने के लिए लगाई जाने वाली रस्सी।
**काच्छी**—स्त्री० (चं०) दे० काच्छड़ी।
**काच्छू**—पु० (मं०) दे० काच्छड़ी।
**काछटी**—स्त्री० (सि०) दे० काच्छड़ी।
**काछड़े**—स्त्री० (शि०) धान की क्यारी।
**काछला**—वि० (कु०) अनभिज्ञ; छोटा।
**काछा**—पु० (चं०) पटवारी।
**काज**—पु० कार्य।
**काज़**—पु० बटन लगाने का छेद।
**काजड़**—वि० (सि०) कचरा।
**काजरी**—वि० सांवली।
**काजळ**—पु० (कु०) काजल।
**काजलु**—वि० (मं०) काजल लगाने वाला।
**काज़ी**—पु० (सि०) संदेश।
**काज़ी**—पु० (शि०) प्रारंभ।
**कजेरा**—वि० (चं०) काम का (व्यक्ति)।
**काट**—स्त्री० कटाई। पेचिश, पेट दर्द।
**काट**—पु० सिले गए कपड़ों के अवशिष्ट टुकड़े।
**काटडू**—पु० (सि०) भैंस का छोटा बच्चा।
**काटणा**—स० क्रि० (कु०) काटना। भुगतना।
**काटणू**—पु० (शि०) लड़का।
**काटळ**—पु० (सि०) नदी का तट।
**काटो**—स्त्री० (सो०) गिलहरी।
**काठ्ठी**—स्त्री० (मं०) तिनका या छोटी लकड़ी।
**काठ**—पु० लकड़ी, सूखी लकड़ी।
**काठ**—वि० (चं०) दे० काहट।
**काठचमेंड़ा**—पु० (कु०) चमगादड़।
**काठड़ा**—पु० (कु०) लकड़ी की परात।
**काठड़ी**—स्त्री० (कां०) मसालादानी।
**काठड़ू**—पु० (मं०) अरथी।
**काठडू**—पु० (कु०) लकड़ी की छोटी परात।
**काठर**—वि० (मं०) कठोर (भूमि)।
**काठा**—वि० कठिन; बलवान; सख्त।
**काठा**—वि० (सो०) ऐसी वस्तु जिसमें द्रव का अंश कम रह गया हो।
**काठालूण**—पु० (बि०, कु०) गुम्मा नमक।
**काठी**—स्त्री० (कु०, मं०) छोटी लकड़ी या तिनका।
**काठी**—स्त्री० चौखट।
**काठी**—स्त्री० (चं०) खुबानी की छोटी किस्म जिसकी गुठली कड़वी होती है।
**काठी**—स्त्री० घोड़े की पीठ पर बैठने के लिए बना लकड़ी का विशेष ढांचा।
**काठीणा**—स० क्रि० (कु०) काटा जाना।
**काठीणा**—अ० क्रि० (चं०) विकास रुकना।
**काठु**—वि० (सि०) सख्त, कठोर।
**काठुणा**—अ० क्रि० (सो०) सख्त होना।
**काठू**—पु० (कु०) एक अनाज विशेष जो बहुत ऊंचाई पर उगता है।
**काठो**—वि० (शि०) कठोर।
**काठोग**—वि० (चं०) जिसकी वृद्धि रुक गई हो।
**काठोत्तरा**—वि० (चं०) छोटा।
**काड़**—स्त्री० (कु०) मुसीबत।
**काड़ख**—स्त्री० (मं०) कालिख।
**काड़जा**—पु० (मं०) कलेजा।
**काडणा**—स० क्रि० (सो०) निकालना।
**काड़णा**—स० क्रि० (सो०) पकाना।
**काड़ी**—वि० (सि०) दक्ष।
**काढ**—पु० बदला।
**काढ**—स्त्री० खोज, भेद।
**काढणा**—स० क्रि० (कु०) निकालना।
**काढणो**—स० क्रि० (सि०) निकालना।
**काढ़ना**—स० क्रि० उबालना।
**काढ़ा**—पु० औषधियों को उबाल कर बनाया गया पेय।
**काढ़ा**—पु० (शि०) छोटा सा मकोड़ा।
**काढू**—पु० काढ़ा।
**काण**—स्त्री० (बि०) कमज़ोरी।
**काण**—स्त्री० (कां०, ह०, ऊ०) अंधापन।
**काण**—स्त्री० अनबन।
**काण**—स्त्री० टेढ़ापन। कमी।
**काण**—स्त्री० (बि०, मं०) घास लाने वाली स्त्री।
**काण**—पु० (शि०) काल।
**काण**—स्त्री० (सि०) क्रियाकर्म।
**काणकी**—स्त्री० (सि०) गेहूं का तना।
**काणछा**—वि० (सि०, सो०) छोटा भाई; देवर।
**काणा**—वि० काना।
**काणी**—स्त्री० (शि०) कहानी।
**कात**—स्त्री० (कु०, चं०) भेड़ों की ऊन काटने की कैंची।
**कात**—स्त्री० (मं०, कु०) लकड़ी की कड़ी, छत बनाते समय खड़ी दिशा में बिछाई गई कड़ियां।
**कात**—स्त्री० (सि०) बकरे की खाल से लगता मांस।
**कात**—वि० (चं०) काती गई ऊन।
**कात**—पु० (कां०) फ़ाका।
**कातक**—पु० कार्तिक।
**कातण**—स्त्री० (सि०) छत बनाते समय खड़ी दिशा में बिछाई गई कड़ियां।
**कातणा**—स० क्रि० (सो०) कातना।

**कातणु**—पु० (मं०) तकला।
**कातणो**—स० क्रि० (सि०) कातना।
**कातर**—वि० (मं०) डरपोक।
**कातर**—पु० (कु०) कपड़े।
**कातरना**—अ० क्रि० (मं०) भयभीत होना।
**कातरी**—स्त्री० (सि०) अच्छा मुर्गा।
**कातरे**—पु० फटे कपड़े में लगाई गई टांकी।
**कातरो**—पु० (शि०) चिथड़ा।
**कालरो**—पु० (सि०) देव वस्त्र।
**काता**—वि० (चं०) कातने वाला।
**कातिया**—पु० (सि०) सोना चांदी काटने का यंत्र।
**काते**—पु० (शि०) दे० कातक।
**कात्ती**—स्त्री० (सो०) लकड़ी की कड़ियां।
**कात्ती**—पु० दे० कातक।
**कात्तू**—वि० (मं०) कातने वाला।
**कात्थू**—वि० (कां०) कथावाचक।
**कात्थू**—पु० (चं०) एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियां पशु खाते हैं।
**काथी**—स्त्री० (मं०, कु०) झाड़ी विशेष जिसके पत्ते चौड़े और भारी होते हैं, जिन्हें केवल नर्म और कच्ची होने पर ही पशु खाते हैं।
**काथू**—पु० (चं०) दे० काथी।
**काद**—पु० (बि०) कीचड़।
**कादर**—वि० (चं०) दयामय।
**कादश**—स्त्री० एकादशी।
**कादशो**—स्त्री० (शि०) दे० कादश।
**कादस**—स्त्री० दे० कादश।
**कादसी**—स्त्री० दे० कादश।
**कान**—पु० (चं०) धनुष-बाण।
**कान**—पु० (शि०) कंधा।
**कान**—पु० दे० कान्ना।
**कानकी**—स्त्री० (बि०) घास के पौधे का अग्रभाग।
**कानटी**—स्त्री० (सि०) खेत।
**कानटी**—स्त्री० (सि०) बच्चों का कान।
**कानु**—पु० (सो०) धान का छिलका।
**कानुअण**—स्त्री० (सि०) खुजली।
**कानू**—पु० (कु०) दे० कानु।
**कान्ना**—पु० तिनका। गन्ने की पोरी।
**कान्नी**—स्त्री० तराजू की डंडी।
**कान्या**—स्त्री० (चं०) गेहूं काटने के पश्चात् बचे भाग को जलाने की क्रिया।
**कान्ह**—पु० (सि०) कंधा।
**काप**—स्त्री० (मं०) कपड़े के छोटे टुकड़े।
**काप**—स्त्री० (सि०) लोहे की पट्टी।
**कापड़ा**—पु० (सि०) कपड़ा।
**कापड़ा**—पु० (कु०, शि०) कफन।
**कापणा**—स० क्रि० (सो०, सि०, शि०) सिलाई के लिए वस्त्र को काटना। कतरना।
**कापना**—वि० (सि०, सो०) दुर्बल, कृश, पतला।
**कापाल**—पु० (मं०) खोपड़ी से मस्तक तक का हिस्सा।
**काफड़पाको**—पु० (मं०) ग्रीष्म ऋतु में बोलने वाला एक पक्षी।
**काफरा**—पु० कपड़ा।
**काफळ**—पु० (सो०) लाल रंग का फल विशेष।
**काफा**—पु० (सि०) कठिनाई।
**काफो**—पु० लाल रंग का फल विशेष।
**काफोली**—स्त्री० (चं०) कोयल।
**काब**—पु० (मं०) श्रम करते समय गाये जाने वाले गीत।
**काबड़ी**—स्त्री० (कु०) देव नृत्य।
**काबल**—वि० काबिल, योग्य।
**काबला**—स्त्री० (मं०) पूंजी।
**काबला**—पु० (सि०, सो०) लोहे की कील।
**काबू**—पु० नियंत्रण।
**काबे**—वि० (सि०) योग्य।
**काब्बा**—वि० (सि०) दुर्बल (आदमी)।
**काभी**—पु० (सो०) छोटे-छोटे लाल फूल जो जंगल में पैदा होते हैं।
**काम**—पु० (सि०) कार्य।
**काम-कणोड़ा**—वि० (सो०) कामचोर।
**कामकार**—पु० (सो०) काम-काज।
**कामगीर**—वि० (सि०) कठिन परिश्रमी।
**कामणा**—अ० क्रि० ठिठुरना।
**कामणी**—स्त्री० कंपकंपी।
**कामदेव**—पु० विवाह के समय पूजा-स्थल पर बनाया रति कामदेव का चित्र।
**कामळ**—पु० झाड़ी विशेष जिसके फलों से कुमकुम निकाल कर महिलाएं लगाती हैं।
**कामळ**—पु० (सि०) कंबल।
**कामळी**—स्त्री० (सो०) गाय।
**कामळी**—स्त्री० (सो०, शि०, सि०) बैल की गर्दन के नीचे लटकता मांस।
**कामा**—पु० नौकर।
**कामा**—वि० (सि०) भयभीत।
**कामी**—पु० (चं०) काम करने वाला।
**कामू**—पु० (मं०) धान के छिलके।
**कामेट**—स्त्री० (चं०) मिलजुल कर किया कार्य, सामूहिक कार्य।
**काम्मी**—पु० (सि०) विवाह में कार्य करने वाला।
**कायणे**—पु० (सो०) लोहे के उपकरण पर पत्थर या सूखी लकड़ी से पड़ने वाला चिह्न।
**कायथा**—पु० (सि०) हाथ मारने का भाव।
**कायथा**—पु० (सो०) सुरक्षित वस्तु।
**कायदा**—पु० किताब। नियम।
**कायरा**—वि० (सो०) वक्र।
**कायल**—पु० दे० काइल।
**कायली**—स्त्री० (सि०, सो०) भूख के कारण होने वाली बेचैनी।
**कायलुणा**—अ० क्रि० (सो०) भूख से बेचैन होना।
**काया**—स्त्री० शरीर।

कारंगा—पु० (मं०) हड्डियों का ढांचा।
कार—स्त्री० तांत्रिक रेखा।
कार—स्त्री० (मं०) बरामदे का शहतीर।
कार—पु० काम।
कार—स्त्री० (सि०) विवाह की एक रस्म।
कार—स्त्री० (सि०) मनौती। देवता के पुजारी, भंडारी या वादक को दिया जाने वाला पारिश्रमिक।
कारक—स्त्री० आर्त गीत।
कारका—स्त्री० (चं०) चुगली।
कारगल—वि० (कु०) अचूक, सही।
कारगुजारी—स्त्री० कार्य परिपाटी, काम-धंधा।
कारघा—पु० (मं०) खड्डी का कंघा।
कारछा—वि० (सि०) तिरछा, वक्र।
कारछो—वि० (शि०) टेढ़ा।
कारज—पु० (कां०, ह०, कु०) उत्सव, सामाजिक समारोह।
कारटा—पु० (मं०) कष्ट।
कारढ़ा—पु० (मं०) तेज।
कारण—पु० (मं०) टोना।
कारदार—पु० (मं०) देवताओं का कार्यकर्ता।
कारपणी—स्त्री० (बि०) कटारी।
कारऊआई—स्त्री० (कु०) कार्यवाही।
कारल—पु० (मं०) एक पौधा विशेष। बरसात में इससे बीमार पशुओं को झाड़ा जाता है।
कारवाई—स्त्री० कार्यवाही।
कारश—पु० (कु०) असह्य दृश्य।
कारशा—वि० (शि०) जिसे फुर्सत न हो, व्यस्त।
कारसाजी—स्त्री० शरारत।
कारसानी—स्त्री० (चं०) कार्यविधि।
कारसेज—पु० (चं०) कार्य।
कारस्तानी—स्त्री० चालाकी।
कारा—वि० (चं०) किनारे होने की क्रिया।
कारियारा—वि० (मं०) ज़ोरदार।
कारी—स्त्री० देवता-प्रसाद। सुख; उपचार।
कारीगर—पु० शिल्पी, बढ़ई।
कारीगिर—वि० (मं०) चतुर।
कारीछाडणा—पु० (कु०) देवता द्वारा बलि का बकरा स्वीकृत होना।
कारूंवा—वि० (सि०) योग्य।
कारू—पु० (बि०) एक पौधा विशेष।
कारो—वि० (शि०) काना।
कार्ळ—स्त्री० (कु०) बिच्छूबूटी।
काल—अ० कल।
काळ—पु० अकाल।
काळ—पु० मृत्यु।
काळका—स्त्री० दुर्गा, काली।
काळकूट—पु० विष।
काळकूट—वि० (शि०) अत्यंत काला। काली शक्ल वाला।
कालके—पु० (शि०) कटहल।
कालकेआ—स्त्री० (शि०) स्थानीय कुलदेवी।
काळख—स्त्री० (मं०, शि०) कालिमा।
कालज़—पु० (सि०) काले रंग का धान।
काळजा—पु० कलेजा।
कालजीरी—स्त्री० (शि०) एक पर्वतीय औषधि।
काळजू—पु० दे० काळजा।
कालटूमामा—पु० (सि०) रीछ।
कालण—पु० (सि०) काला धान।
काळने—स्त्री० (सो०) मोटे चावल का एक प्रकार।
काळमुंह—वि० बहुत काला।
काळमुंडा—वि० काला (आदमी)।
कालरा—वि० (सि०) तोतला बोलने वाला।
काला—स्त्री० (चं०) वाद्ययंत्र।
काला—वि० (कु०) नासमझ, अल्पज्ञ।
काळा—वि० (सो०) भावुक।
काळा—वि० काला।
कालाई—स्त्री० (चं०) करुण रुदन।
काळाबेजा—पु० (मं०) सर्पभक्षी देवता।
काळाभाऊ—पुं० (कु०) दे० काळाभोऊ।
काळाभोऊ—पु० (सो०) आंख का काला भाग।
काळामौछ—पु० (कु०) जलती हुई लाश की खोपड़ी के फटने की क्रिया।
कालि—स्त्री० (चं०) कंघा।
काली—स्त्री० (चं०) एक वृक्ष जिसके फूलों की सब्जी बनाई जाती है।
कालो—अ० (मं०) घृणायुक्त शब्द।
कालोए—पु० (सि०) कालर।
काल्डे—वि० (शि०) काली।
काल्हयो—वि० (चं०) प्यासा।
काल्हा—वि० उतावला, जल्दबाज़।
काल्छी—स्त्री० मूर्च्छा।
काल्छेसा—वि० मूर्च्छित।
काव—पु० (मं०) कौआ।
कावड़ा—पु० (सि०) कोना।
कावड़ा—पु० (सि०) कौआ।
कावड़ी—स्त्री० (कु०) देवी का नृत्य।
कावन—वि० (शि०) इक्यावन।
कावरा—वि० (मं०) चितकबरा।
कावलो—वि० (शि०) उत्सुक।
कावे—वि० (सि०) चालाक।
काश—स्त्री० (मं०, शि०) चौड़े पत्ते वाली घास।
काश—स्त्री० (मं०) भवन की ऊपरी मंज़िल में सामान रखने का स्थान।
काश—पु० (सि०) आकाश।
काश—अ० इच्छासूचक शब्द, "ईश्वर करता"।
काशट—वि० (शि०) इकसठ।
काशण—स्त्री० (मं०) मधुमक्खियों का छत्ता।
काशबेल—स्त्री० (सि०, सो०) अमरबेल।

**काशा**—स्त्री० (कु०) शहद के छत्ते की लड़ी।
**काशी**—स्त्री० (कु०) हाथ में आने योग्य घास।
**काशी**—स्त्री० (सो०) पत्तियों का बोझ।
**काशु**—पु० (कु०) पशुओं को दिया जाने वाला पत्तियों का छोटा गट्ठा।
**काशे**—स्त्री० (सि०) लकीर।
**काश्त**—स्त्री० खेती।
**काश्तकार**—पु० (सि०) किसान।
**कास**—स्त्री० (कां०) धान के पूलों का चौकोर ढेर।
**कासणी**—वि० (चं०) कड़वी।
**कासद**—वि० (चं०) संदेश वाहक।
**कासनी**—स्त्री० (चं०) एक प्रकार की जड़ी-बूटी।
**कासा**—पु० (मं०) मुट्ठी भर घास।
**कासी**—स्त्री० (कां०) फसल की एक पूली।
**कासी**—वि० इक्यासी।
**काहिका**—पु० (कु०) कुल्लू में मनाया जाने वाला एक मेला।
**काहिया**—वि० (मं०) विनष्ट।
**काही**—स्त्री० (कां०) काई।
**काहू**—पु० (कां०) चमड़ा रंगने का रंग।
**काहू**—पु० (चं०, कु०) एक वृक्ष जिस पर जैतून की कलम की जाती है।
**काह्**—पु० (मं०) मरोड़।
**काह्कड़**—वि० (कां०) काई वाली भूमि।
**काह्के**—अ० (शि०) किसलिए।
**काह्ट**—वि० (मं०) इकसठ।
**काह्ड़**—स्त्री० (बि०) ऊंचाई।
**काह्ड़**—स्त्री० (कु०) मौज, आनंद।
**काह्ड़णू**—पु० (बि०) दूध उबालने का मिट्टी का पात्र।
**काह्ड़ू**—पु० जोशांदे का काढ़ा।
**काह्णा**—स० क्रि० (सो०) मारना।
**काह्तरी**—स्त्री० दांती।
**काह्रग**—स्त्री० (बि०) खड्डी।
**काह्रड़ी**—वि० (सि०) कम मिट्टी वाली **(भूमि)**
**काह्ली**—अ० (कां०) कभी।
**काह्ळी**—स्त्री० अकस्मात् हुई पीड़ा। व्याकुलता।
**काह्लु**—अ० (कां०) कब।
**किंकर**—पु० कंकड़।
**किंकरी**—स्त्री० (मं०) बजाने की घंटी।
**किंगर**—पु० (कां०) दुर्गम स्थान, पर्वत की चोटी।
**किंगर**—स्त्री० (शि०) रीढ़ की हड्डी।
**किंगराड़ी**—स्त्री० (सि०) रीढ़ की हड्डी।
**किंगरि**—स्त्री० (सो०) कंगूरे जैसी शिखा।
**किंगरी**—स्त्री० (सि०, मं०) घड़े का टुकड़ा।
**किंगसणा**—अ० क्रि० (मं०) चिल्लाना।
**किंगिरी**—अ० (सि०, सो०) किस ओर से।
**किंडणा**—अ० क्रि० (शि०) सुस्ताना।
**किंदरी**—स्त्री० किन्नरी, एक वाद्ययंत्र।
**किंदा**—अ० (सि०, सो०, चं०) किधर।
**किंदा**—सर्व० (सि०) किस में।
**किंदी**—अ० (शि०) कहां।
**किंब**—पु० खट्टा फल, नींबू प्रजाति का फल।
**किंबू**—पु० (सो०) शहतूत।
**किंमड़ा**—पु० (मं०) कोदो के आटे का पकवान जिसे सब्जी के रूप में खाया जाता है।
**किंहरा**—पु० (मं०) घर में लगी धुएं की कालिख।
**कि**—अ० या, अथवा।
**किऊं**—अ० (सि०) क्यों।
**किएं**—सर्व० (सि०) कुछ।
**किकड़**—वि० (चं०) कड़वी।
**किके**—स्त्री० (मं०) घृणा।
**किक्कर**—पु० कीकर।
**किखा**—अ० (सो०) किस ओर।
**किचराल**—स्त्री० (शि०) चीख।
**किचरिड़ी**—स्त्री० (चं०) छोटे बच्चे।
**किच्चड़**—पु० कीचड़।
**किच्छ**—सर्व० कुछ।
**किछक**—सर्व० कुछ।
**किछकर**—सर्व० (चं०) कुछ।
**किछकी**—सर्व० (कु०) कुछ, कोई चीज़।
**किजणा**—वि० (सो०) कौन सा।
**किजा**—वि० (सि०) दे० किजणा।
**किजे**—वि० (सि०) कौन सी।
**किजो**—अ० (चं०) क्यों।
**किजो**—सर्व० (सि०) कौन।
**किझिवै**—अ० (कु०) किसलिए।
**किटक**—स्त्री० (कां०) घृणा।
**किटराली**—स्त्री० (शि०) चीख।
**किट्टा**—पु० (सि०) कीड़ा।
**किट्टा**—पु० (सो०) सड़ा हुआ गोबर।
**किड़कणा**—अ० क्रि० (चं०) किटकिटाना।
**किड़टा**—पु० (सि०) छोटा कीड़ा।
**किड़नू**—पु० पौधे की रक्षार्थ बनाया गया बांस का जाल।
**किडांलो**—पु० (सि०) बर्तन रखने का स्थान।
**किड़ा**—पु० (कां०) बांस की बनी चटाई।
**किड़ी**—स्त्री० बांस का बना पर्दा, ओट।
**किड्डण**—स्त्री० (चं०) पशुओं का रक्त चूसने वाला कीड़ा।
**किढ**—पु० (कु०) धूलियुक्त वायु।
**किण**—पु० कण।
**किणना**—अ० क्रि० (कां०, चं०) बूंदाबांदी होना।
**किणना**—अ० क्रि० (चं०) पशुओं का गर्भपात होना।
**किणमिण**—स्त्री० टाल-मटोल।
**किणस**—स्त्री० (मं०) पहाड़ी पर उगने वाली एक जड़ी।
**किणा**—वि० (शि०) कैसा।
**किणास**—स्त्री० (चं०) दे० किणस।
**किणी**—स्त्री० वर्षा की बूंद।
**किणीमिणी**—स्त्री० बूंदाबांदी।

**कित**—सर्व० (मं०) किस।
**किता**—अ० या तो, अथवा।
**किदा**—अ० (शि०) कहां।
**किनी**—अ० (चं०) क्यों नहीं।
**किने**—सर्व० किसने।
**किन्नरा**—पु० (शि०) एक वाद्ययंत्र।
**किबे**—अ० (कु०) क्यों।
**किबो**—अ० (चं०) 'अरी ओ' संबोधन शब्द।
**किमलें**—स्त्री० (शि०) चींटी।
**किमु**—पु० (सि०) शहतूत का वृक्ष।
**किमोली**—स्त्री० (सि०) दे० किमु।
**किमोली**—स्त्री० (शि०) बैल व बकरी के गले का मांस।
**कियांरा**—वि० (चं०) किसका।
**कियांऊं**—पु० (कु०) सब्जी विशेष, जंगली खुंब जो विशेष वृक्षों के सड़े तनों में उगते हैं।
**कियाड़ी**—स्त्री० (कु०) कृकाटिका, ग्रीवा।
**कियूं**—पु० (बि०) एक प्रकार की सब्जी।
**कियें**—अ० (सि०) कुछ।
**कियोड़**—पु० (कां०) चौड़े पत्तों वाला पौधा।
**कियोड़ा**—वि० (शि०) कितना, कैसे।
**कियोड़ा**—पु० (शि०) एक सुगंधित पौधा।
**किरक**—स्त्री० भोजन में पड़ा कंकर। घृणा।
**किरक**—स्त्री० दया का भाव।
**किरकिटी**—स्त्री० (कु०) सात तारों का समूह।
**किरकोणा**—वि० (चं०) घृणित।
**किरच**—स्त्री० (मं०) छुरी।
**किरचों**—पु० (सि०) टुकड़े।
**किरड़**—पु० (चं०) दे० किरडा।
**किरड़ना**—अ० क्रि० (चं०) व्यर्थ बोलना।
**किरड़या**—स्त्री० (बि०) बांस की झाड़ी।
**किरडा**—पु० (कु०) बांस का बना स्तूपाकार बड़ा टोकरा जिसमें अनाज या घास आदि डाल कर पीठ पर उठाया जाता है।
**किरणा**—स्त्री० गोटा-किनारी।
**किरत्थणा**—वि० (चं०) धोखेबाज़।
**किरना**—अ० क्रि० किसी पात्र से अन्नादि का थोड़ा-थोड़ा करके गिरना।
**किरपा**—स्त्री० कृपा।
**किरपाण**—स्त्री० खड्ग, तलवार।
**किरबिर**—स्त्री० (चं०) बर्फ गिरने की क्रिया।
**किरम**—पु० कृमि।
**किरमाण**—पु० (चं०) मृतक कर्म से संबंधित (गाली)।
**किरया**—स्त्री० मृतक का संस्कार।
**किरला**—पु० (सो०) काले रंग का भ्रमर।
**किरला**—पु० (चं०) गिरगिट प्रजाति का जंतु।
**किरली**—स्त्री० गिरगिट।
**किरस**—पु० (चं०) कंजूसी, मितव्ययिता।
**किरसाण**—पु० (चं०) किसान।
**किरसी**—वि० (चं०) परिश्रमी।
**किरहणा**—अ० क्रि० (चं०, मं०) अलग होना। रास्ते में आगे निकलना।
**किरहा**—पु० (बि०, कां०) तिनका।
**किरहा**—पु० (बि०) खटका, किसी अवांछित व्यक्ति की उपस्थिति का बुरा लगने का भाव।
**किरहू**—पु० (मं०) छोटा टुकड़ा। तिनका।
**किरात**—पु० (मं०) तोल।
**किराथा**—पु० (मं०) व्यवसाय।
**किर्ड**—पु० (चं०) एक प्रकार का 'किरडा'।
**किर्ड-किर्ड**—अ० (चं०) वृथालाप।
**किर्त**—पु० श्रम।
**किर्म**—पु० कृमि।
**किर्या**—स्त्री० क्रियाकर्म, अंतिम संस्कार।
**किर्स**—स्त्री० (चं०, सो०) योग्यतापरक कार्य।
**किर्सी**—वि० (सो०, चं०) कुशल।
**किर्हना**—अ० क्रि० (चं०) भीड़ के मध्य से निकलना।
**किर्हना**—अ० क्रि० (चं०) बिरादरी से अलग होना।
**किर्हा**—पु० (कां०) बाधा। तिनका।
**किळंज**—स्त्री० (चं०) छाते में लगी लोहे की छड़।
**किल**—स्त्री० (बि०) कली।
**किलक**—स्त्री० चीख।
**किलकणा**—अ० क्रि० चिल्लाना।
**किलकारी**—स्त्री० चीख।
**किलखोरा**—वि० (कां०) अकेला, संग रहित।
**किलडू**—पु० (कु०) छोटा 'किरडा'।
**किलण**—स्त्री० (कु०) कुदाल का छोटा रूप। बहुत छोटी कुदाली जिससे खेत में गोड़ाई की जाती है।
**किलणो**—स० क्रि० (सि०) खड़ा करना। गाड़ना, पक्का करना।
**किलणो**—स० क्रि० (सि०) हल बनाना।
**किलणो**—स० क्रि० (सि०) रोकना, बंद करना।
**किलत**—स्त्री० मुश्किल।
**किलबिल**—पु० व्यग्रता।
**किलर**—पु० (मं०) एक झाड़ीदार वृक्ष।
**किला**—पु० दुर्ग।
**किली**—स्त्री० (कु०) खूंटी।
**किलु**—वि० (कु०) किलो।
**किलूण**—पु० (चं०) छाते की शलाका।
**किले**—अ० (कु०, मं०) क्यों, किसलिए।
**किल्टा**—पु० पीठ पर उठाया जाने वाला टोकरा। दे० किरडा।
**किंल्टू**—पु० (सि०) लोहे की सबसे छोटी कील।
**किल्ला**—वि० (चं०) अकेला।
**किल्ली**—स्त्री० (मं०) बगल।
**किल्हणा**—अ० क्रि० (चं०) कराहना।
**किल्हा**—वि० दे० किल्ला।
**किवाड़**—पु० द्वार।
**किवे**—सर्व० (मं०) किसके।
**किशरा**—पु० (सो०) छिलका।
**किशरा**—पु० (कु०) जौ और गेहूं के छिलके का बारीक और

तेज अग्रभाग।
**किशा**—वि० (सि०) कैसा।
**किश्कटारू**—पु० (मं०) चमगादड़।
**किश्ती**—स्त्री० नाव।
**किश्पड़**—स्त्री० (कु०) यत्न।
**किसकै**—अ० (कु०) कहीं।
**किसमत**—स्त्री० किस्मत, भाग्य।
**किसरी**—स्त्री० (चं०) बिना दाने का उगा मक्की का भुट्टा।
**किसी**—अ० (कु०, सि०) किधर।
**किसै**—अ० (कु०) दे० किसी।
**किस्मौत**—स्त्री० (शि०) भाग्य।
**किहंट**—स्त्री० (सि०) पशु की पूंछ।
**किह**—पु० (चं०) जौ और गंदम के सिट्टे का खुरदरा बाल।
**किह**—अ० (चं०) क्यों।
**किहां**—अ० (कु०) कैसे।
**किहार**—स्त्री० (चं०) जौ और गेहूं के सिट्टों का समूह।
**किहारणा**—स० क्रि० (चं०) गोड़ाई करना।
**किहारी**—स्त्री० (कां०) दे० किहार।
**किहाळे**—पु० (कां०) धान।
**किहल़णा**—अ० क्रि० दर्द से कराहना।
**कींकरी**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) नोकदार कंकड़।
**कींखे**—अ० (चं०) क्यों।
**कींगर**—स्त्री० (मं०) रीढ़ की हड्डी।
**कींगरा**—पु० (कां०) दे० किंगर।
**कींगरा**—वि० (बि०) बेढंगी (वस्तु)।
**कींगरी**—स्त्री० छोटी झालर या लेस।
**कींगरी**—स्त्री० निरंतर बुराई का वर्णन।
**कींगा**—पु० (बि०) जन्मदिन पर बनने वाला भोज्य पदार्थ।
**कींगा**—पु० (कां०) उलझन, समस्या।
**कींडा**—वि० (कु०, सि०) कठिन, दृढ़, सख्त।
**कींद**—स्त्री० (सि०) हमदर्दी।
**कींदा**—अ० (सि०, सो०, शि०) कहां।
**कींबळी**—स्त्री० (शि०, सि०) चींटी।
**कींह**—पु० (चं०) गेहूं और जौ के दानों में लगे बाल।
**कींहा**—अ० (चं०) कैसे।
**की**—अ० (चं०) क्यों, क्या।
**की**—स्त्री० (सि०) इच्छा।
**की**—स्त्री० (सि०) गेहूं का चुभने वाला हिस्सा।
**कीऊ**—अ० (सि०) कैसा।
**कीखें**—अ० (चं०) क्यों।
**कीच**—पु० (मं०) कीचड़।
**कीच**—पु० (शि०) दवा।
**कीजो**—अ० किस लिए।
**कीटा**—पु० (सि०) गोबर की पकी हुई बारीक खाद पकी खाद।
**कीट्टि**—स्त्री० (सि०) दे० कीटा।
**कीड़**—पु० (बि०) छोटे कीड़े।
**कीड़न**—पु० (सि०) बांस की चटाई।
**कीड़ा**—पु० (कु०, बि०) सांप, कीट।
**कीड़ाकंडू**—पु० (चं०) सांप आदि जंतु।
**कीड़ी**—स्त्री० (सि०, बि०) चींटी। सर्पिणी।
**कीड़ू**—पु० छोटे कीड़े।
**कीढ़**—पु० ब्याने के बाद पहली बार दुहा जाने वाला दूध।
**कीण**—पु० (सि०, सो०, कु०) मुंहासे।
**कीण**—स्त्री० (सि०) दे० कीटा।
**कीणा**—स्त्री० बिवाई।
**कीणा**—पु० सर्प।
**कीणो**—स्त्री० बिवाई।
**कीणो**—वि० (शि०) कैसा।
**कीती**—स्त्री० (कु०) गुदगुदी।
**कीथी**—अ० (बि०) कहां।
**कीन**—पु० यकीन, विश्वास।
**कीमत**—स्त्री० मूल्य।
**कीमले**—स्त्री० (शि०) चिट्ठी, पत्र।
**कीमू**—पु० शहतूत का वृक्ष।
**कीरड़या**—पु० (बि०) बांस।
**कीरतन**—पु० कीर्तन।
**कीरना**—अ० क्रि० (बि०) विलाप करना।
**कीरने**—पु० (कां०) शोक गीत।
**कीरा**—पु० (शि०) जमे हुए धुएं की परत।
**कीरे**—स्त्री० (सि०) कंपन।
**कील**—पु० मुंहासा।
**कील**—पु० (सो०) दे० किरडा।
**कील**—स्त्री० कपड़े टांगने की खूंटी।
**कीलकांटा**—पु० (चं०) विविध वस्तुएं।
**कीलणा**—स० क्रि० (कु०, बि०) भूतप्रेतादि को ठिकाने लगाना, मंत्रादि के प्रयोग से भूतप्रेत को वशीभूत करना।
**कीलणी**—स्त्री० (कु०, बि०) छोटी कुदाली जिसका सिरा आगे से चौड़ा न होकर नोकदार होता है।
**कीलने**—पु० (मं०) गोड़ाई करने का भाव।
**कीलहणा**—अ० क्रि० (मं०) दे० किल्हणा।
**कीलां**—स्त्री० (कां०) थनों के बीच के छेद।
**कीली**—स्त्री० कपड़े टांगने की खूंटी।
**कीली**—स्त्री० (मं०) हल में लगने वाली लकड़ी की कील।
**कीलू**—पु० (चं०) चक्की घुमाने की कील।
**कीलौ**—स्त्री० (मं०) दरवाज़ा बंद करने के लिए नीचे कोने पर लगने वाली लकड़ी।
**कील्टु**—पु० (सि०) छोटा 'किरडा' (टोकरा)।
**कील्लणा**—अ० क्रि० (सि०) दर्द से कराहना।
**कील्ली**—स्त्री० (कां०) बांस के डंडे के अग्रभाग में लगी लकड़ी।
**कील्लू**—पु० (मं०) चक्की का हत्था।
**कीश**—पु० (कु०) तिनका।
**कीश**—पु० (कु०, सि०, सो०) गेहूं के छिलके का बारीक, सख्त, नुकीला अग्रभाग।
**कीशा**—वि० (शि०) कैसा।
**कीशियो**—वि० (शि०) विषैला।

**कीस्सा**—पु० (कां०) एक घास विशेष।
**कीह**—अ० (चं०) कैसे।
**कीह**—पु० (बि०) धान का छिलका।
**कीह**—अ० (चं०) क्यों।
**कीह**—पु० (कां०) गेहूं या जौ के सिट्टे।
**कीह्ड़**—पु० ब्याने के बाद पहली बार दुहा जाने वाला दूध।
**कुंअर**—पु० कुंवर, कुमार, राजा का छोटा भाई।
**कुंआरा**—वि० कुंवारा, अविवाहित।
**कुंऐं**—सर्व० (सि०) कोई।
**कुंकणा**—वि० (शि०) झुक कर बैठने की प्रक्रिया, टेढ़ा, कुबड़ा।
**कुंकली**—स्त्री० (मं०) कुबड़ी।
**कुंकुआ**—पु० (सि०, मं०) बिच्छूबूटी।
**कुंगड़ा**—वि० टेढ़ा-मेढ़ा।
**कुंगरा**—पु० (मं०) पैना सिरा।
**कुंगला**—वि० नर्म, कोमल।
**कुंगशा**—वि० (कु०) मुड़ा हुआ।
**कुंगशी**—स्त्री० (मं०) बिच्छूबूटी।
**कुंगी**—स्त्री० (कां०) गंदम में लगने वाला रोग।
**कुंगू**—पु० कुमकुम।
**कुंघड़ना**—अ० क्रि० (मं०) उकडूं सोना।
**कुंघडू**—पु० (चं०) उकडूं।
**कुंचियैं**—अ० (कां०) किस तरफ से।
**कुंजड़ा**—पु० फूल विक्रेता।
**कुंजा**—वि० (बि०) इक्यावन।
**कुंजी**—स्त्री० चाबी।
**कुंज़ी**—स्त्री० (कु०) पट्टू या चोले की चुनट।
**कुंझारू**—पु० (चं०) पालतू कबूतर।
**कुंठ**—पु० (कु०) बहुत ऊंचाई पर उगाई जाने वाली विशेष जड़ी।
**कुंड**—पु० (कां०) जल उत्पत्ति स्थान, कुंड।
**कुंड**—पु० (कां०) गड्ढा।
**कुंडणा**—स० क्रि० (चं०, बि०) साफ करना।
**कुंडणी**—स्त्री० (कां०) सर्दियों के लिए काटकर रखे गए घास का व्यवस्थित ढेर।
**कुंडल**—पु० घुंघराले बाल।
**कुंडल**—पु० कान का गहना।
**कुंडली**—स्त्री० जन्मपत्री।
**कुंडली**—स्त्री० (कां०) धान का ढेर।
**कुंडली**—स्त्री० (चं०) मिट्टी की बनी कटोरी।
**कुंडळी**—स्त्री० (सि०) रस्सी में लगाया जाने वाला लोहे का कड़ा।
**कुंडळी**—स्त्री० सांप की कुंडली।
**कुंडा**—पु० (मं०) दांत का दर्द।
**कुंडा**—पु० (सो०) सिटकिनी।
**कुंडा**—पु० (सि०, कु०) हल के अग्रभाग में फाल के ऊपर लगने वाला मुड़ा हुआ लोहा।
**कुंडापड़ो**—पु० (मं०) धूमकेतु-आगमन।
**कुंडी**—स्त्री० (बि०) बटन।
**कुंडी**—स्त्री० (कु०) कड़ाही।
**कुंडी**—स्त्री० (बि०) दही जमाने का बर्तन।
**कुंडी**—स्त्री० मसाला आदि पीसने के लिए बनी पत्थर की ओखली।
**कुंडी**—स्त्री० सिटकिनी।
**कुंडु**—पु० (कां०) मिट्टी की कटोरी।
**कुंडू**—पु० मिट्टी का छोटा कटोरा।
**कुंडू**—पु० (मं०) नाक का आभूषण, बाली।
**कुंडे**—पु० (मं०) परात।
**कुंडो**—पु० (शि०) कुंडा।
**कुंढ**—वि० (चं०) तेज।
**कुंढी**—स्त्री० (चं०) कुकुरमुत्ते की एक किस्म।
**कुंढी**—स्त्री० (बि०) ऐसा पशु जिसके सींग नीचे को मुड़े हुए हों।
**कुंढीर**—स्त्री० (चं०) एक रीति।
**कुंण**—स्त्री० (चं०) कोना, किनारा।
**कुंणा**—पु० दे० कुंण।
**कुंदड़ा**—पु० (मं०) नदी का भंवर।
**कुंदड़ा**—पु० (सि०) अरबी उबालने का पात्र, बर्तन।
**कुंदड़ी**—पु० (मं०) धान का तने सहित ढेर।
**कुंदड़ो**—पु० (मं०) दे० कुंधड़ी।
**कुंदरोडू**—पु० (चं०) अन्न रखने का बांस का पात्र।
**कुंदल**—पु० (चं०) चूल्हे के साथ बना हुआ गोलाकार अंगीठा।
**कुंदला**—पु० (कां०) चूल्हे का वह भाग जहां लकड़ियां लगाई जाती हैं।
**कुंदली**—स्त्री० (कां०) घास का गोल ढेर।
**कुंदळै**—स्त्री० (सि०) रस्सी में लगाई जाने वाली टेढ़ी लकड़ी।
**कुंदा**—पु० बंदूक का कुंदा।
**कुंदा**—पु० (मं०) लोहे की फाल को जकड़कर रखने के लिए लोहे का बना अंग्रेज़ी अक्षर 'यू' के आकार का औज़ार।
**कुंदी**—स्त्री० (बि०) अरहर।
**कुंदु**—पु० (चं०) मक्की के घास का गोल ढेर।
**कुंदु**—पु० (बि०) एक सब्जी विशेष।
**कुंधड़ी**—स्त्री० घी रखने का मिट्टी का पात्र।
**कुंभ**—पु० कुंभ का मेला।
**कुंबड़ा**—पु० (सि०) गोद।
**कुंबड़ी**—स्त्री० (मं०) वृक्ष की चोटी।
**कुंबर**—पु० (सि०) घास में लगने वाला काले रंग का क़ांटा।
**कुंबल**—स्त्री० (बि०) कोंपल।
**कुंबल**—पु० सेंध।
**कुंबली**—स्त्री० (कां०) दे० कुंबल।
**कुंबारी**—स्त्री० (सि०) एक विशेष प्रकार का कीट जो मिट्टी से अपना घर बनाता है।
**कुंभ**—पु० (मं०) दे० कुंबारी।
**कुंभड़ो**—पु० (मं०, बि०) दे० कुंबारी।
**कुंमला**—वि० (सि०) कुनकुना।
**कुंमी**—स्त्री० (कु०) कान का छेद।
**कुंमी**—स्त्री० (कां०) दे० कुंबारी।
**कुंवाई**—स्त्री० (सि०) लोहे का एक विशेष यंत्र।
**कुंवातरे**—पु० (मं०) वसंत ऋतु।

**कुआ**—पु० (सि०) कुआं।
**कुआ**—पु० (चं०) लड़का।
**कुआई**—स्त्री० (कां०) मोची का कील आदि लगाने का औज़ार।
**कुआठ**—पु० (कां०) अपशकुन।
**कुआड़ी**—स्त्री० (सि०, सो०) कुल्हाड़ी।
**कुआणा**—वि० (सि०) बुरा, खराब।
**कुआणा**—स० क्रि० (चं०) मृतक के घर शोक व्यक्त करना।
**कुआदड़ा**—पु० (कां०) एक वृक्ष विशेष।
**कुआरगंदलू**—पु० (कां०, चं०) एक पौधा विशेष जिसके तने की औषधि बनती है।
**कुआरतणू-तमोल**—पु० (बि०) वधू के गृह पहुंचने पर वर को सास द्वारा लगाया जाने वाला टीका।
**कुआरपण**—पु० कौमार्य।
**कुआरा**—पु० (कां०, बि०) कुंवारा।
**कुआरू**—वि० (मं०) दे० कुआरा।
**कुआरे**—पु० (कां०, बि०) एक पौधा विशेष।
**कुआळ**—पु० चढ़ाई।
**कुआळना**—स० क्रि० (कु०) सहारा देकर चढ़ाना।
**कुआळी**—स्त्री० चढ़ाई।
**कुआळू**—पु० बड़ी चढ़ाई।
**कुआशिणा**—अ० क्रि० (कु०) आकाश का निर्मल होना।
**कुआहण**—पु० (कां०) पशुओं के नीचे बिछाया जाने वाला घास या पत्ते।
**कुइण**—स्त्री० (शि०) कुहनी।
**कुइनी**—स्त्री० (सि०) दे० कुइण।
**कुईटियाळो**—पु० (शि०) एक जानवर।
**कुईनळ**—स्त्री० (शि०) कोयल।
**कुईयों**—पु० (शि०) कपित्थ के फल, कैथ।
**कुईल**—स्त्री० (चं०) दे० कुईनळ।
**कुएंड**—स्त्री० (शि०) फफूंद।
**कुएड़**—स्त्री० (शि०, सि०) धुंध, कुहरा।
**कुऐंर**—स्त्री० (चं०) गेहूं और जौ के बालों का भूसा।
**कुऐ**—अ० (शि०) क्यों।
**कुकटांडा**—पु० (सि०, चं०) मक्की का तना।
**कुकटा**—पु० (सि०) छोटा कुत्ता।
**कुकटू**—पु० (सि०) दे० कुकटा।
**कुकड़**—पु० (बि०, कु०) मुर्गा।
**कुकड़टू**—पु० (शि०) चूज़ा।
**कुकड़याळा**—पु० (चं०) मक्की का घास।
**कुकड़याळी**—स्त्री० (चं०) मक्की की फसल।
**कुकड़ाच**—स्त्री० (सि०) मक्की के बीजने का समय।
**कुकड़ाठे**—स्त्री० (सि०) मक्की का पौधा।
**कुकड़ी**—स्त्री० (शि०, सो०) मक्की।
**कुकड़ीट**—स्त्री० (चं०) मक्की की रोटी।
**कुकड़ू**—पु० (कां०, चं०) कते सूत का गोला।
**कुकड़ू**—पु० (कु०) मक्की का भुट्टा।
**कुकड़े**—स्त्री० (शि०) मक्की।
**कुकड़ेठ**—पु० (सि०) मक्की का आटा।
**कुकड़ैठा**—पु० (चं०) मक्की का घास।
**कुकड़ैला**—पु० (चं०) दे० कुकड़ैठा।
**कुकड़ोल**—पु० (चं०) दे० कुकड़ीट।
**कुकड़ोह्ल**—पु० (मं०) मुर्गी-खाना।
**कुकण**—पु० (चं०) मुर्गा।
**कुकणाटू**—पु० (चं०) मुर्गी के बच्चे।
**कुकणादी**—स्त्री० (सि०) मक्की का भीतरी भाग।
**कुकर**—पु० (सि०, शि०) कुत्ता।
**कुकरणियो**—वि० (शि०) बातूनी।
**कुकरी**—स्त्री० (सि०) पलकों के बाल।
**कुकरोड़**—पु० (सि०) डंठल।
**कुकरोली**—स्त्री० (शि०) दे० कुकड़ीट।
**कुकू**—पु० (चं०) आंख के बीच का काला भाग।
**कुकू**—पु० (चं०) पौधा, पुष्प।
**कुकू**—पु० (चं०) दे० कुपू।
**कुके**—अ० (सि०) कहां।
**कुक्कड़**—पु० मुर्गा।
**कुक्कूमाटा**—पु० (बि०) बच्चों का खेल।
**कुख**—स्त्री० गोद।
**कुखड़**—पु० (सि०) बड़ी मक्की।
**कुखड़ा**—पु० (सि०) मुर्गा।
**कुखड़ोला**—पु० (शि०) मुर्गों को रखने का स्थान।
**कुखाड़ी**—स्त्री० (चं०) गाल, कपोल।
**कुखाण**—पु० (कां०, चं०) अस्वादिष्ट भोजन।
**कुखी**—स्त्री० (शि०) कमर, पेट।
**कुगरा**—पु० (चं०) बुर्ज, चोटी।
**कुगला**—वि० (कु०) नर्म।
**कुगशे**—स्त्री० (शि०) बिच्छूबूटी।
**कुगस**—स्त्री० (मं०) बिच्छूबूटी।
**कुचज**—पु० (बि०) बुरा कार्य।
**कुचज्जा**—वि० (बि०) निकम्मा।
**कुचळा**—वि० (चं०) टेढ़ी टांग वाला।
**कुचळा**—पु० (सि०) झाड़ू।
**कुचळा**—पु० (सि०) फल विशेष जो खच्चर को खिलाया जाता है।
**कुचळा**—पु० (सि०) लिपाई करने का कपड़ा।
**कुचाळ**—पु० (सो०) अरवी।
**कुचावळी**—वि० (सि०) बुरी चाल वाला।
**कुचैला**—वि० गंदा।
**कुच्ची**—स्त्री० (सि०) लिपाई करने का घास।
**कुच्छड़**—स्त्री० गोद।
**कुछ**—स्त्री० (कु०) कमर, पेट, कोख।
**कुछळाई**—स्त्री० (सि०) बगल।
**कुछाळू**—पु० (सि०) मिट्टी खोदने का औज़ार।
**कुछो**—स्त्री० (सि०) कमर।
**कुजयो**—स्त्री० (सि०) एक झाड़ी जिस पर सफेद फूल लगते हैं।
**कुजा**—स्त्री० मिश्री।
**कुजा**—पु० पूजा के लिए पानी लाने का बर्तन।

**कुजा**—पु० (कु०) दे० कुजयो।
**कुजाइड़ी**—स्त्री० (शि०) कुसंतान।
**कुजात**—वि० (शि०) कुजीव; उजड्ड।
**कुजिये**—वि० (मं०) घिसकर (गाय-बैल)।
**कुजीण**—पु० (बि०) संकटपूर्ण जीवन।
**कुजे**—स्त्री० (चं०, शि०) एक झाड़ी जिसमें सफेद फूल लगते हैं।
**कुजो**—सर्व० (बि०) किसे।
**कुज्जा**—पु० (बि०) सकोरा।
**कुज्जू**—पु० (मं०) मिट्टी की छोटी गड़वी।
**कुज्जू**—पु० (सि०) मिट्टी के दीपक।
**कुट**—स्त्री० (बि०) धातु विशेष।
**कुट**—स्त्री० (ह०) ऐसी भूमि जिसमें कभी-कभी खेती की जाये।
**कुटकार**—स्त्री० (ह०) बंजर भूमि।
**कुटड़ा**—पु० (सि०) फटा-पुराना कपड़ा।
**कुटडू**—पु० (शि०) खिलने का भाव।
**कुटणा**—स० क्रि० कूटना, पीसना।
**कुटणीया**—वि० (बि०) चालाक (औरत)।
**कुटळा**—पु० (कु०) बहुत ऊंचाई पर स्थित खेत जहां वर्ष में केवल एक फसल होती है।
**कुटळू**—पु० (मं०) कठफोड़ा।
**कुटाई**—स्त्री० (कां०, चं०, बि०) कूटने की क्रिया।
**कुटार**—पु० (ह०) दानों रहित मक्की का भुट्टा।
**कुटावणो**—स० क्रि० (शि०) लोहे के औज़ार से फसल की गोड़ाई करना।
**कुटी**—स्त्री० कुटिया।
**कुटुआ**—पु० (शि०) रस्सी बनाने का यंत्र।
**कुटू**—पु० (मं०) रस्सी बाटने का यंत्र।
**कुटे**—पु० (मं०) वृक्षों से फल तोड़ने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली लंबी डंडी।
**कुटेव**—स्त्री० (मं०) बुरी आदत।
**कुटैंजा**—पु० (कां०) अधिक मार पड़ने का भाव।
**कुठार**—पु० (चं०) अन्न भंडारन के लिए बना स्थान विशेष।
**कुठाहर**—स्त्री० (चं०, कां०) बुरी जगह।
**कुठुग्गा**—पु० ऐसा तोता जो पढ़ाने पर भी न पढ़े।
**कुठेई**—स्त्री० (चं०) छोटी टोकरी।
**कुठेला**—पु० (कां०) मिट्टी के ढेले तोड़ने का लकड़ी का उपकरण।
**कुठैई**—स्त्री० (चं०) भिक्षा।
**कुड**—स्त्री० (चं०, कां०) गुफा।
**कुड़क**—वि० (चं०) कड़वा।
**कुड़क**—स्त्री० (कां०) मुर्गी द्वारा अंडे देना बंद करने की स्थिति।
**कुड़का**—पु० (सि०) दाना।
**कुड़की**—स्त्री० कुर्की।
**कुड़कू**—पु० (शि०) न पकने वाला माश।
**कुड़ज**—पु० (मं०) कुलदेवता, कुलदेवी।
**कुड़ण**— स्त्री० (मं०) घुन।
**कुड़णा**—अ० क्रि० (चं०) बीमारी निकलना।
**कुड़णा**—स० क्रि० (चं०) साफ करना।
**कुड़ती**—स्त्री० (चं०) कमीज़।
**कुड़ना**—अ० क्रि० (कां०) निकलना।
**कुड़ना**—अ० क्रि० (कां०) मादा पशु के ब्याने से पूर्व उसके गाभिन होने के लक्षण।
**कुड़ना**—अ० क्रि० (कां०) धरती से पानी की धारा का फूट निकलना।
**कुड़बा**—पु० (सि०) कुटुंब, कुनबा, परिवार।
**कुड़म**—पु० समधी।
**कुड़मण**—स्त्री० समधिन।
**कुड़माई**—स्त्री० सगाई।
**कुड़माणा**—अ० क्रि० (चं०) लड़की के माता-पिता का शादी के बाद दामाद के घर जाना।
**कुड़मेटा**—पु० (मं०) समधी का बेटा।
**कुड़याणी**—पु० (ह०) बरसात में खेतों में निकलने वाला पानी।
**कुड़विया**—पु० (सि०) वंशज।
**कुड़ा**—पु० (मं०) कुलदेवता।
**कुड़ाणी**—पु० (कां०) दे० कुड़याणी।
**कुड़ियांजी**—स्त्री० (सि०) पानी के बर्तन रखने का स्थान।
**कुड़ी**—स्त्री० (चं०) दोनों आंखों के आसपास का स्थान।
**कुड़ी**—स्त्री० लड़की, कन्या।
**कुडु**—पु० (कां०) दांती में लगी पत्ती।
**कुडों**—पु० (शि०) छोटा मकान।
**कुडोल**—स्त्री० (मं०) बुरी हालत।
**कुढंगा**—वि० (कां०, बि०) बेढंगा।
**कुढणा**—अ० क्रि० (बि०) मन में दु:खी होना।
**कुढमुई**—स्त्री० (मं०) वह भूमि जहां घर बनाया गया हो।
**कुढोणा**—स० क्रि० (सि०) दूध को गर्म करना।
**कुण**—स्त्री० (शि०) नोक।
**कुण**—सर्व० कौन।
**कुणक**—सर्व० (चं०) कोई।
**कुणका**—पु० (चं०) तिनका।
**कुणख**—सर्व० (चं०) दे० कुणक।
**कुणजा**—अ० (सि०, सो०, शि०) कौन सा।
**कुणणो**—अ० क्रि० (शि०) कराहना।
**कुणस**—स्त्री० (कां०) कई दिनों से बंद कमरे को खोलने पर आने वाली विशेष प्रकार की गंध।
**कुणसर**—पु० (मं०) अन्न में लगने वाला कीड़ा।
**कुणसर**—पु० (चं०) चूल्हे पर लकड़ी रखने का स्थान।
**कुणह**—पु० (चं०) गेहूं का बीज।
**कुणा**—पु० (कु०) अनाज में लगने वाला एक कीड़ा, घुन।
**कुणा**—पु० (चं०) जंगली अनाज।
**कुणाक**—सर्व० (चं०) दे० कुणक।
**कुणाका**—पु० (चं०) 'कुणा' अन्न का आटा।
**कुणाड़**—स्त्री० (चं०) एक सुगंधित जड़ी।
**कुणिए**—सर्व० (कु०, सो०, शि०) किसने।
**कुणियां**—सर्व० (शि०) दे० कुणिए।
**कुणी**—स्त्री० (शि०) कोना।

कुणी—सर्व० (चं०) किसने।
कुणीछ—पु० (शि०) पेड़।
कुण्डी—स्त्री० (कु०) कमरे का कोना।
कुतकी—अ० (मं०) कहां, कहीं।
कुतटू—पु० (शि०) कुत्ते का बच्चा।
कुतठू—पु० (चं०) दे० कुतटू।
कुतमाखी—स्त्री० (सो०, चं०) कुत्ते की मक्खी।
कुतली—स्त्री० (सो०, कु०, सि०) गुदगुदी।
कुतलेटु—पु० (सि०) दे० कुतटू।
कुतांह—अ० (चं०, बि०) कहां।
कुताखी—स्त्री० (कां०) दे० कुतमाखी।
कुताल—स्त्री० (ह०) कभी-कभी बोई जाने वाली भूमि।
कुताली—स्त्री० (ह०) सीमांकन करने वाला स्तंभ।
कुती—अ० कहां।
कुते—अ० (चं०) कहां।
कुता—पु० (कां०) पानी का एक कीड़ा।
कुता—पु० (कां०, कु०) खड्डी की गरारी के साथ फंसा एक लकड़ी का टुकड़ा।
कुत्थकी—अ० (मं०) कहां जैसे।
कुत्थी—अ० (कां०) कहां पर।
कुत्थू—अ० (मं०) कहां।
कुथळ—स्त्री० (कु०) थैली।
कुथीड़ी—स्त्री० (ह०) घटिया चावल।
कुथूर—पु० (सि०) ब्यूहल की रस्सी बनाने के बाद बचे हुए रेशे।
कुदकणा—अ० क्रि० (मं०) कूदना।
कुदको—अ० (चं०) कहीं।
कुदणू—पु० (बि०) देवता के निमित्त छोड़ा गया मेमना।
कुदरोडू—पु० (चं०) अन्न रखने का बांस का बर्तन।
कुदारी—स्त्री० (चं०) मिट्टी खोदने की क्रिया।
कुदाळ—पु० (चं०) कुदाल।
कुदालणो—स० क्रि० (शि०) क्यारी में मिट्टी तथा पानी मिलाना।
कुदाळी—स्त्री० गोड़ाई करने का छोटा उपकरण।
कुदिक्खणा—वि० (कां०) कुरूप।
कुधरना—अ० क्रि० (मं०) बिगड़ना।
कुधा—अ० (चं०) कहां।
कुधेड़ा—अ० (चं०) बुरा दिन।
कुनणू—पु० (मं०) नाक की नथ।
कुनला—पु० कटी घास का ढेर।
कुनली—स्त्री० (ह०) घास को एक स्थान पर एकत्रित करने की क्रिया।
कुनळी—स्त्री० (सि०) सांप का बैठने का ढंग, कुंडली।
कुनळी—स्त्री० (सि०) रस्सी में लगा लकड़ी का मुड़ा हुआ भाग।
कुनश—पु० (मं०) जंगली वृक्ष।
कुनार—पु० (शि०) खेत का पीछे वाला भाग।
कुनाला—पु० (चं०) लकड़ी की परात।
कुनास—पु० (चं०) दुरावस्था।
कुनी—स्त्री० (चं०) दूध दुहने का लकड़ी का बर्तन।
कुनेहर—पु० (चं०) कमरा।
कुन्नु—पु० घास का व्यवस्थित ऊंचा ढेर।
कुन्हेरा—सर्व० (चं०) किनका।
कुन्हैर—पु० (चं०) चूल्हे का कोना, कोना।
कुप—पु० (सो०) सूखे घास का ढेर।
कुपछ—पु० (चं०) बदपरहेज़ी।
कुपड़ी—स्त्री० (कु०) देवी का एक रूप।
कुपड़ो—स्त्री० (सि०) आग जलाने के लिए प्रयोग होने वाली पत्ती से निकाला गया रेशा।
कुपत्थ—पु० बदपरहेज़ी।
कुपत्था—वि० (मं०) कुमार्गी।
कुपा—पु० (बि०) घड़ा।
कुपाल—पु० (चं०) सिर, खोपड़ी।
कुपुचिड़ी—स्त्री० (कु०) एक चिड़िया विशेष जो वसन्त ऋतु के आगमन पर पहाड़ों में आती है और वर्षा ऋतु आरंभ होने पर चली जाती है।
कुपुत्र—पु० (मं०) दुष्ट पुत्र।
कुपू—पु० (बि०) रस्सी बाटने का छोटा डंडा।
कुपू—स्त्री० (मं०) वसंत ऋतु में बोलने वाला पक्षी। पहली बार बोलते हुए इसकी बोली सुनना शुभ मानते हैं।
कुप्प—पु० (कां०) भुरभुरा पत्थर।
कुप्पा—वि० (बि०) फूला हुआ।
कुप्पी—स्त्री० तेल की कुप्पी।
कुप्पी—स्त्री० लकड़ी की बनी बोतल।
कुफड़ो—स्त्री० (कु०) दे० कुपड़ो।
कुफर—पु० (मं०) जोहड़।
कुफल—वि० (मं०) बुरा।
कुफेर—पु० (चं०) उलट बात।
कुबड़ा—वि० कूब वाला, जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई हो।
कुबत्त—पु० (चं०) कुमार्ग, बुरा रास्ता। कुपथ।
कुबत्तर—स्त्री (चं०) फसल के लिए कम नमी, कम आर्द्रता।
कुबुद्धि—स्त्री० (चं०) कुबुद्धि, दुर्बुद्धि, नासमझी।
कुबुध—स्त्री० (मं०) कुबुद्धि।
कुबेला—स्त्री० (मं०) कुसमय।
कुब्बा—वि० (चं०) दे० कुबड़ा।
कुमड़ा—वि० (कु०) कुबड़ा।
कुमुंजा—वि० (मं०) एक मंज़िल का (घर)।
कुमक—स्त्री० (मं०) सहायता।
कुमटु—पु० (कु०) दे० कुमा।
कुमटु—पु० (सि०) घी बांटने का बर्तन।
कुमठा—वि० (कु०) कुनकुना, थोड़ा गरम।
कुमठा—पु० (कु०) बोझ उठाने का एक तरीका।
कुमत्त—स्त्री० (चं०) कुमति, बुरी मति, दुर्बुद्धि।
कुमना—वि० (कु०) कुनकुना, थोड़ा गरम।
कुमर—पु० (मं०) घास में उत्पन्न कांटे।
कुमल—स्त्री० (सि०) 'कशमळ', एक कांटेदार झाड़ी जिसमें खट्टे लाल फल लगते हैं, जो पकने पर कुछ काले हो जाते हैं।

कुमळ—स्त्री० (सि०) कोंपल।
कुमला—वि० (सो०) कोमल।
कुमलाणा—अ० क्रि० (बि०) मुरझाना।
कुमलि—स्त्री० (सो०) कली।
कुमली—स्त्री० (बि०) नाक का अग्रभाग।
कुमा—पु० (कु०) दोनों बाजुओं के बीच जितनी वस्तु (लकड़ी आदि) आ जाये वह भार या मात्रा।
कुमाइसू—वि० (मं०) पैसे कमाने वाला।
कुमौ—स्त्री० (मं०) बुरी मौत।
कुरंकलो—वि० (शि०) भद्दा।
कुरंग—पु० (चं०) रंग में भंग, बुरा रंग, गड़बड़ी।
कुरंड—स्त्री० (मं०) छत डालने के लिए प्रयुक्त कड़ियां।
कुरंड—स्त्री० (बि०) अंगूठे और तर्जनी के फैलाव के समान माप।
कुर—पु० (बि०) अंकुर।
कुरकणा—अ० क्रि० (चं०) पसरना।
कुरका—स्त्री० काली छोटी मछली।
कुरकी—स्त्री० (कु०) कब्ज़े में लेने की क्रिया। कुर्की।
कुरघ—पु० (चं०) पिछवाड़ा।
कुरजाणा—स० क्रि० (चं०) साफ करना।
कुरड़ा—पु० (सो०) कूड़ा।
कुरड़ा—पु० (चं०) अन्न में लगने वाला कीड़ा।
कुरड़ाणा—अ० क्रि० (चं०) कौए का बोलना।
कुरड़ी—स्त्री० (सि०) गोबर का ढेर।
कुरदा—पु० (चं०) पेड़ में कोंपल आने का भाव।
कुरना—स० क्रि० (चं०) पीछे हटकर टक्कर मारना।
कुरना—अ० क्रि० (सि०) छोटे बच्चे का ज़मीन पर घुटने के बल सरकना।
कुरम—पु० (ह०) बढ़िया चमड़ा।
कुरयाल्लू—पु० (बि०) भुरभुरा पत्थर।
कुरल—पु० (चं०) नदी में भंवर का स्थान।
कुरल—पु० (मं०) सारस।
कुरल—पु० (बि०) हंस के प्रकार का एक पक्षी।
कुरलणा—अ० क्रि० (मं०) सारस का बोलना।
कुरला—पु० (मं०) कुल्ला।
कुरलाणा—अ० क्रि० रोना।
कुरलाणी—स्त्री० (कां०) श्रावण मास के अंतिम आठ दिन और भाद्रपद मास के प्रारंभिक आठ दिन।
कुरल्हाग—पु० (बि०) मक्की की फसल में से जानवरों को भगाने का यंत्र।
कुरशे—स्त्री० (शि०) कुर्सी।
कुरस—पु० गृह निर्माण के लिए बनाई गई समतल भूमि की प्रमुख दीवार, नींव।
कुरसणा—स० क्रि० (मं०) खुरचना।
कुरा—पु० (सि०) पालतू पशु के शरीर में पड़ने वाला कीड़ा।
कुराड़—पु० (शि०) कुल्हाड़ी।
कुराड़ा—वि० (बि०) ज़्यादा पका हुआ।
कुराड़ा—वि० (चं०) कठोर।
कुराण—पु० (चं०) बर्फ हटाने हेतु प्रयुक्त लकड़ी का बेलचा।
कुराह—पु० (चं०) कुमार्ग, बुरा रास्ता।
कुराहणा—स० क्रि० (चं०) सुनार का जेवर धोना।
कुरीह—पु० (चं०) कोस।
कुरू—पु० (चं०) शहतूत।
कुरू—पु० (सि०) दरवाज़े का एक हिस्सा।
कुरूआ—पु० (बि०) दो मकानों की सांझी छत।
कुरूड़—पु० (सि०) मंदिर की छत पर पत्थरों को थामने के लिए लगाई गई लकड़ी।
कुरेडना—अ० क्रि० (चं०) दे० कुरड़ाणा।
कुर्द—पु० (कु०) माश अन्न का घास।
कुर्हीणा—अ० क्रि० (चं०) दुःखी होना।
कुर्लीहणा—अ० क्रि० (चं०) छिप जाना।
कुर्स—स्त्री० (कां०) नींव।
कुर्हआ—पु० (कां०) नुक्कड़।
कुर्हणा—अ० क्रि० (चं०) धीरे-धीरे धन का समाप्त होना।
कुर्हना—स० क्रि० (चं०) खोद कर निकालना।
कुर्हुआ—पु० (कां०) घर का बाहरी कोना।
कुलंजणा—स० क्रि० (ह०) हाथ या पात्र से तरल पदार्थ को इकट्ठा करना।
कुलंदर—पु० (बि०) बंदर।
कुल—पु० (शि०) घोंसला।
कुल—पु० वंश।
कुलक—स्त्री० (मं०) प्रसन्नता।
कुलक—स्त्री० (बि०) किलकारी।
कुलकणा—अ० क्रि० (मं०) चीखना।
कुलकोड्डू—पु० (चं०) रीठे की गुठली।
कुलक्खर—वि० (बि०) शर्मीला।
कुलच्छण—वि० (ह०) अशुभ संकेत वाला, बुरे लक्षण वाला।
कुलज़—स्त्री० कुलदेवी।
कुलजड़ो—वि० (शि०) थोड़ा गरम, कुनकुना।
कुलजणा—अ० क्रि० (सि०) घुलना।
कुलजा—स्त्री० कुलदेवी।
कुलज़ा—वि० (मं०) कुलीन।
कुलजाओ—पु० (सि०) कपड़े से मैल निकलने का भाव।
कुलझाट—वि० (शि०) गंदा (पानी)।
कुलणा—स० क्रि० (चं०) बाहर करना।
कुलत—स्त्री० बुरी आदत।
कुलथ—पु० उरद की जाति का एक अन्न।
कुलथाणी—स्त्री० (शि०) कुलथ की खिचड़ी।
कुलथैंजी—स्त्री० (बि०) कुलथ का पकवान।
कुलफ—स्त्री० (बि०) 'कोका' आभूषण की कीली।
कुलफी—स्त्री० (बि०) पीतल के हुक्के की नली।
कुलमंडू—पु० (ह०) धान का बीज।
कुला—पु० (चं०) मधुमक्खियों का दूसरा परिवार बनाकर पृथक होने का भाव।
कुळा—पु० (शि०, सि०) कुलदेवता।
कुलाइणो—पु० (सि०) सफेद रंग का पत्थर।

**कुलार**—पु० (मं०) दोपहर का भोजन।
**कुली**—स्त्री० (शि०) दातुन।
**कुळी**—स्त्री० (चं०) कन्या, लड़की।
**कुळी**—वि० (सि०, बि०) नर्म।
**कुलीक**—स्त्री० (चं०) कलंक।
**कुलीख**—स्त्री० (चं०) ज़ोर की चीख।
**कुलीजा**—पु० (चं०) एक प्रकार का अन्न।
**कुलीरा**—स्त्री० (चं०) चीख।
**कुलू**—पु० (चं०) देवदार की लकड़ी का तेल।
**कुळू**—पु० (चं०) चमगादड़।
**कुलेरणा**—स० क्रि० (चं०) तंग करना।
**कुलेला**—वि० (चं०) बुरा (स्वाद)।
**कुल्लर**—पु० (ह०) तिलों से बना पदार्थ।
**कुल्ली**—स्त्री० (चं०) दे० 'कोका'।
**कुल्ले**—स्त्री० (सि०) पीर की छड़ी।
**कुल्वाकड़ी**—स्त्री० (सो०) कमल के फूल का बीज।
**कुल्वार**—स्त्री० (चं०) मध्याह्न का भोजन।
**कुल्हार**—वि० (कां०) सींचने वाला।
**कुवा**—पु० (शि०) कुआं।
**कुवेटी**—स्त्री० (शि०) छोटा कुआं।
**कुवैड़**—स्त्री० (सि०) धुंध।
**कुश**—पु० (मं०) जूं के अंडों का समूह।
**कुशणा**—पु० (सि०) किसी वस्तु को साफ करने के लिए प्रयुक्त घास का गुच्छा।
**कुशणा**—पु० (सि०) आग जलाने के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला घास।
**कुशते**—स्त्री० (सि०) कुश्ती।
**कुशना**—पु० (कां०) मोची।
**कुशले**—वि० (सि०) मिलावटी।
**कुशा**—पु० (मं०) बर्तन।
**कुश्क**—स्त्री० (कु०) बिच्छूबूटी।
**कुसकणा**—अ० क्रि० (चं०) शब्द करना। ध्वनि करना।
**कुसत**—पु० असत्य।
**कुसरा**—सर्व० (ह०) किसका।
**कुसरोहड़**—स्त्री० (चं०) सब्जी विशेष। जंगली सब्जी जिसके बाहर मोटे बाल होते हैं। बाल उतारने के बाद इसे पकाया जाता है।
**कुसुती**—वि० (मं०) बिगड़ी हुई।
**कुसोबत**—स्त्री० (चं) बुरी आदत।
**कुस्तरा**—वि० (चं०) गंदा।
**कुहकणी**—स्त्री० (मं०, सि०) गीदड़, सियार।
**कुहकी**—स्त्री० (सि०) कलश व रंगीन वस्त्र, पुष्प माला आदि से युक्त अरथी।
**कुहकू**—अ० छिपने का संकेत दर्शाने वाला शब्द।
**कुहड़ा**—पु० (सि०) कंबल।
**कुहणी**—स्त्री० कुहनी।
**कुहमोल**—पु० (मं०) एक जंगली फल।
**कुहर**—पु० (मं०) बौर।
**कुहरा**—पु० दो मकानों की दीवारों को मिलाने का कोना।
**कुहरा**—पु० (मं०) पाला।
**कुहरी**—वि० (मं०, बि०) इकहरी।
**कुहरू**—पु० (कां०) एक नदी के प्रवाह से दूसरी नदी के जल के रुकने का भाव।
**कुहाड़मार**—वि० (बि०) कर्णकटु (बात)।
**कुहाड़ा**—पु० (कां०) चौकोर चिनकर रखी हुई घास।
**कुहाड़ी**—स्त्री० कुल्हाड़ी।
**कुहाणा**—वि० (मं०) बुरी नस्ल का।
**कुहाणा**—स० क्रि० कहलाना।
**कुहार**—स्त्री० (कां०) कटाई के बाद खेत जोतने की क्रिया।
**कुहिठ**—स्त्री० (चं०) निराशा।
**कुहीड़ी**—स्त्री० (चं०) कुल्हाड़ी।
**कुहू**—पु० (चं०) तरतीब से अंदर को खोदने का भाव।
**कुह्ल**—स्त्री० कुल्या, छोटी नहर।
**कूं**—पु० (चं०) शहतूत का फल।
**कूंकी**—स्त्री० (शि०, सो०) बिच्छूबूटी।
**कूंचा**—पु० (कां०) बर्तन साफ करने के लिए प्रयुक्त घास का गुच्छा।
**कूंज**—पु० (कां०) क्रौंच पक्षी।
**कूंजड़ी**—स्त्री० (चं०) चंबा का वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला गीत।
**कूंठ**—पु० (मं०) दिशा।
**कूंड**—पु० (मं०, सि०) दाढ़ी या सिर के बाल पर उस्तरा फेर कर साफ करने की क्रिया। भद्रा।
**कूंडा**—पु० (चं०, कां०) मिट्टी का चौड़ा परातनुमा पात्र।
**कूंडी**—स्त्री० (कां०, ह०) पत्थर की कुंडी।
**कूंडू**—पु० (चं०) दे० कुंडू।
**कूंबलू**—पु० (कु०) कोंपल।
**कूंकरा**—वि० (सि०) कठोर।
**कू**—पु० (चं०) चीं-चपड़।
**कू**—पु० (चं०) वृक्ष विशेष।
**कू**—स्त्री० (सि०) गुफा, कंदरा।
**कूआ**—पु० (चं०) बर्तन कर पड़ी खरोंच।
**कूकणा**—अ० क्रि० (सि०) चहकना।
**कूकू**—पु० दे० कुपू।
**कूकू**—पु० (कां०) चूल्हे के ऊपर के उभरे भाग।
**कूखड़ा**—पु० (मं०) मुर्गा।
**कूचळा**—पु० (सि०) कूड़ा-करकट।
**कूचापणा**—स० क्रि० (कां०) चुगली करना।
**कूचो**—पु० (कां०) आग जलाने के लिए लकड़ियों के नीचे रखी जाने वाली घास।
**कूच्चा**—पु० दे० कूंचा।
**कूछ**—स्त्री० (कु०) कमर।
**कूज**—पु० (चं०) पहाड़ी सफेद गुलाब।
**कूजणा**—स० क्रि० (मं०) आवाज़ देना।
**कूजा**—पु० (मं०) दे० कूंज।
**कूजा**—स्त्री० (मं०) मिश्री।

कूशी—स्त्री० (कां०) लकड़ी में सुराख करने का पैना सरिया।
कूजू—पु० (कां०) दे० कुज्जु।
कूट—पु० (चं०) कांसा, मिश्रित धातु।
कूट—वि० (मं०) चालाक।
कूट—पु० (कु०) माश अन्न का घास।
कूटकड़ाह—पु० (सि०) ज़ोर की पिटाई।
कूटणा—स० क्रि० कूटना, मारना, पीटना।
कूटणा—स० क्रि० ओखली में डाल कर धान से चावल अलग करना।
कूटरू—पु० (मं०) खिलने का भाव।
कूटी—स्त्री० (चं०) चुगली।
कूठ—पु० (कां०) लकड़ी का अड्डा।
कूड़—पु० (कां०) काटा हुआ घास। मिट्टी में घास मिलाने का भाव।
कूड़—पु० (मं०) गुफा।
कूड़—पु० (सि०) हल का एक हिस्सा।
कूड़ना—अ० क्रि० (सि०) बुड़बुड़ाना।
कूड़ा—पु० (कां०) धान की कटी हुई फसल की छोटी सी ढेरी।
कूहा—पु० (ह०) खलिहान।
कूड़ी—स्त्री० (चं०) ऐसी छड़ी जिसका सिरा मुड़ा हुआ होता है।
कूड़ी—स्त्री० (कां०) बांस की चपटी लाठी।
कूड़ो—पु० (मं०) अनाज के पौधे पीले पड़ने का भाव।
कूड़ो—पु० (मं०, ह०) कूड़ा।
कूहड—पु० गुफा, जन्तुओं के रहने का स्थान।
कूह—पु० (सि०) हल।
कूहणा—स० क्रि० (चं०) उठा-उठा कर फेंकना।
कूड़मगज—वि० (मं०) बेवकूफ।
कूण—पु० (कु०) घुन।
कूण—पु० (चं०, कां०) कोना।
कूणना—स० क्रि० (चं०) बात करना।
कूणा—सर्व० (सि०) कौन।
कूणा—पु० (ह०) खड़ी फसल।
कूणा—पु० (ह०) बातचीत।
कूणा—पु० (सि०, बि०) कोना।
कूणी—स्त्री० (कां०, बि०) किनारा, कोना।
कूत—पु० (मं०) ब्याज।
कूत—पु० (सि०) देवता का लगान।
कूत—पु० (कु०) देवी-देवता की भूमि में फसल उगाने पर देवी या देवता को फसल का दिया जाने वाला भाग।
कूतणा—स० क्रि० (मं०) बताना।
कूदणा—अ० क्रि० (सि०, कु०) कूदना।
कून—पु० (सि०) चमड़ा रंगने का स्थान।
कूनड़ा—पु० (सि०) अरबी उबालने का मिट्टी का बर्तन।
कूनो—पु० (शि०) कोना।
कून्नू—पु० (मं०) वस्तुओं का ढेर।
कून्नू—पु० मक्की के घास का व्यवस्थित ढेर।
कून्नू—पु० (सि०) घास सहित धान का ढेर।
कूपी—स्त्री० (मं०) शीशे का कंकर।
कूपू—पु० (मं०) नींबू प्रजाति का एक फल।
कूब—पु० (सि०) किसी चीज़ का थोड़ा झुका हुआ रूप, कूबड़।
कूबड़ा—वि० (सि०) झुकी हुई रीढ़ की हड्डी वाला, कुबड़ा।
कूबत—स्त्री० (मं०) शक्ति।
कूम—पु० (सि०) बाहों का घेरा।
कूम—पु० (सि०) एक बांह के अंदर आने वाला बोझ।
कूमें—पु० (सि०) आपस में गले मिलने की क्रिया।
कूयनी—वि० (सि०) कुहनी।
कूर—पु० (मं०) बौर।
कूरड़णा—अ० क्रि० (सि०) चिढ़ना, कुढ़ना, संतप्त होना।
कूरा—पु० (सि०) शिकारी।
कूरी—स्त्री० (कु०, मं०) एक जंगली पौधा जिसके बीज से भरे कांटेदार फल कपड़ों में फंस जाते हैं।
कूर्णा—स० क्रि० (सि०) छोटे बच्चे को चलने का अभ्यास कराना।
कूल—पु० (मं०) शूल।
कूळ—स्त्री० (सि०) कुल्या।
कूळक—स्त्री० (सि०) ज़ोर की चीख।
कूळा—वि० कोमल।
कूलाड़ो—पु० (मं०) सिंचाई करने का कार्य।
कूलित—पु० (मं०) एक प्रकार की दाल, कुल्माष।
कूल्ह—स्त्री० (चं०) मोटी औरत।
कूल्ह—पु० (चं०) दो बड़ी टोकरियों को जोड़ कर बनाया गया बर्तन।
कूल्ह—स्त्री० दे० कूहल।
कूवेड्डू—पु० (सि०) कुकुरमुत्ता की एक प्रजाति।
कूशी—स्त्री० (कु०) अट्टी, धागे की लच्छी।
कूश्ड़णा—अ० क्रि० (सि०) दिल में गाली देना।
कूहकू—पु० (कां०) सेमल का फूल; केले की लाल कली।
कूहकू—पु० (कां०) हल के मध्य निचली और उभरा हुआ भाग।
कूहकणा—अ० क्रि० किलकारी मारना।
कूहकू—पु० (कां०) एक पक्षी।
कूहणी—स्त्री० (चं०) बाजू का जोड़, कुहनी।
कूहरी—स्त्री० (बि०) कद्दूकश किया हुआ घीया।
कूहल—स्त्री० (कु०) कुल्या।
केंई—अ० (शि०) क्यों।
केंकणा—वि० (कु०) टेढ़ा-मेढ़ा, बेढंगा।
केंगशु—पु० (कु०) आगे से टेढ़ी लकड़ी; ऐसा उपकरण जिसमें सीधी लकड़ी के आगे तीन या चार टांगों वाला लोहा लगा हो। जो घास को इकट्ठा करने के काम आता है।
केंगा—वि० (सि०) जाति या बिरादरी से बहिष्कृत।
केंठी—स्त्री० (चं०) चीड़ के बीज।
केंडा—वि० (कु०) कैसा, किस तरह का।
के—अ० (मं०) या।
केअरबी—अ० (मं०) किसलिए।
केअरो—अ० (मं०) कैसा, किस तरह।
केआ—अ० (मं०) कहां।
केंआक—अ० (सि०) कितना।

**केइड़ी**—स्त्री० (चं०) गर्दन।
**केई**—अ० (मं०) क्यों।
**केईखे**—अ० (सो०) किधर को।
**केईमा**—अ० (मं०) क्यों।
**केउटी**—स्त्री० (कु०) पुरुष के कान का ज़ेवर।
**केऊं**—पु० (कां०) एक फलीदार सब्जी।
**केऊं**—अ० (मं०) क्यों।
**केऊल**—पु० (मं०) देवदार।
**केए**—अ० (मं०) कहां।
**केओला**—पु० (मं०) कोयला।
**केकड़ा**—पु० केकड़ा।
**केकी**—वि० (बि०) कुछ।
**केची**—वि० (कु०) अकेला।
**केछो**—अ० (शि०) कहां।
**केजरा**—वि० (सि०) दुष्ट।
**केजा**—पु० (चं०) कोदरा, कोदो अन्न।
**केजा**—अ० (मं०) कौन सा।
**केझो**—सर्व० (मं०) किस को।
**केटी**—स्त्री० (चं०) काली मिर्च।
**केट्ठा**—पु० (मं०) ठोड़ी।
**केड़ना**—स० क्रि० (मं०) ज़ोर से बांधना।
**केड़ा**—पु० (मं०) केला।
**खेड़ा**—पु० (मं०) ठोड़ी।
**केड़ा**—अ० क्या, कैसा।
**केड़ा**—स्त्री० (सि०) मोटी तराशी हुई खूंटी।
**केड़ी**—स्त्री० (सि०) गर्दन का पिछला भाग।
**केड़ू**—वि० (सि०) कड़वा।
**केड़ो**—पु० (मं०) देवदार।
**केड्डा**—वि० कितना।
**केणो**—वि० (शि०) कैसा।
**केतका**—अ० (मं०) किधर।
**केतकी**—अ० (मं०) कहीं।
**केतकी**—स्त्री० फूल की एक किस्म।
**केतखा**—अ० (मं०) किस ओर।
**केतणा**—वि० (सि०) कितना।
**केतरा**—वि० (कु०, मं०) कितना।
**केतरा**—अ० (मं०) कब।
**केतल**—पु० (ह०) पत्थर व रेत भरी नदी।
**केतलटु**—पु० (मं०) दवात।
**केती**—अ० (कु०) कितने।
**केती**—अ० (सो०) कहां।
**केतोड़ा**—वि० (सि०) कितना।
**केथख**—अ० (मं०) किसलिए।
**केथरा**—अ० (मं०) कहां का।
**केथा**—अ० (सि०) कहां।
**केथी**—अ० (सो०) कहां।
**केथु**—अ० (सि०) किस लिए।
**केथुखे**—अ० (मं०) दे० केथु।
**केथे**—अ० (सि०, मं०) कहां।
**केदारौ**—पु० (मं०) एक देवता का नाम।
**केबकणा**—अ० (कु०) कबका।
**केबकी**—अ० (कु०) कभी-कभी।
**केबड़ा**—वि० (कु०) कितना बड़ा।
**केबड़ी**—अ० (मं०) कभी।
**केबड़े**—अ० (सि०) कब जैसे।
**केबी**—अ० (शि०) कभी।
**केबे**—अ० (कु०) कब।
**केमका**—अ० (मं०) किस समय का।
**केमरे**—अ० (मं०) कब।
**केयौखु**—अ० (मं०) कहां से।
**केर**—पु० (बि०) ढलानदार खेत।
**केर**—पु० (सि०) गर्दन।
**केरका**—अ० (सि०) कहां।
**केरखा**—अ० (शि०) कहां।
**केरा**—पु० (कां०) चूरा।
**केरा**—वि० (सि०) कैसा।
**केरापाणा**—स० क्रि० (सो०) घेरा डालना।
**केरालगणा**—अ० क्रि० एक एक करके गिनते रहना।
**केरे**—पु० (कु०) हल की सीता में बीज का एक-एक दाना दूर-दूर फेंकने की क्रिया।
**केलटू**—पु० (सि०) देवदार।
**केला**—वि० (सि०) अकेला।
**केला**—अ० (मं०) क्यों।
**केळा**—पु० केला।
**केलार**—पु० (चं०) देवदार।
**केलि**—स्त्री० (मं०) खेल।
**केलु**—पु० (ह०, कु०) देवदार वृक्ष।
**केलेयो**—पु० (सि०) देवदार।
**केलो**—पु० (मं०) केला।
**केलो**—पु० (सो०) देवदार।
**केलो**—पु० (सो०) किलो।
**केलौ**—पु० (मं०) दयार का तेल।
**केल्ला**—वि० (सि०) अकेला।
**केल्हो**—वि० (चं०) अकेला।
**केशणा**—वि० (सि०) कैसा।
**केशणो**—वि० (सि०) कैसा।
**केशर**—पु० (मं०) केसर।
**केशा**—वि० (सि०) कैसा।
**केशी**—अ० (मं०) कहां।
**केशी**—वि० (मं०) कैसा।
**केस**—पु० (चं०) बाल।
**केस**—सर्व० (सो०) किस, किसने।
**केसमेर**—पु० (मं०) गर्दन।
**केसरिचा**—स्त्री० (मं०) सिंदूरी।
**केसी**—अ० (कु०) किधर से।
**केसै**—सर्व० (कु०) किसने।

केह—स्त्री० (ह०) पत्थरों या बजरी से ढकी भूमि।
केहकी—अ० (मं०) किसलिए।
केहरणा—स० क्रि० (चं०) पृथक् करना, छांटना।
केहरणी—स्त्री० (चं०) घनी फसल को विरला करने की क्रिया।
केहरो—अ० (मं०) क्या।
केहां—वि० (कु०) कैसा।
केहकी—अ० (कां०) कुछ।
केहड़ा—वि० (बि०, मं०) कैसा।
केहला—वि० (कु०) अकेला।
कैं—अ० (सि०) क्यों।
कैं—स्त्री० (कां०) लज्जा।
कैंइ—अ० (मं०) पास।
कैंइथ—पु० (चं०) कैथ वृक्ष।
कैंका—वि० (कु०) अकेला।
कैंगशी—स्त्री० (कु०) आगे से मुड़ी हुई डंडी।
कैंची—स्त्री० (कु०) अंग्रेज़ी के बड़े अक्षर ए (A) के आकार का तीन लकड़ियों का ढांचा जिस पर आरी से लकड़ियां चीर कर तख्ते आदि बनाए जाते हैं।
कैंची—स्त्री० लकड़ी की तीन कड़ियों को जोड़ कर बनाया गया त्रिभुजाकार जिस पर छत बनाई जाती है।
कैंज़र—वि० (कु०) कंजर।
कैंट—स्त्री० (कां०) घुंघ।
कैंठा—पु० (कां०) हार।
कैंठी—स्त्री० (कु०) कंठी।
कैंडा—पु० (ह०) लकड़ी से बना माप।
कैंड़ी—स्त्री० (मं०) गर्दन।
कैंथ—पु० (सो०) दे० कैंईथ।
कैंदड़—स्त्री० (मं०) कोयल।
कैंनाका—वि० (शि०) मूर्ख।
कैंबल—पु० (ह०) एक विशेष जाति का वृक्ष।
कैंलगी—स्त्री० (कु०) कलगी।
कैंस—स्त्री० (चं०) चिंता।
कैंह—अ० (बि०) क्यों।
कैंहते—पु० (मं०) चीड़ के फल।
कै—अ० (मं०) कितने।
कै—अ० (चं०) क्या।
कैई—वि० (कु०) बहुत, बहुत से।
कैई—अ० (मं०) क्यों।
कैठ—वि० (कु०) इकट्ठा।
कैठी—स्त्री० (चं०) न्योज़ा।
कैड़—स्त्री० (मं०) कोयल।
कैड़का—वि० (चं०) कड़वा।
कैड़ा—पु० (मं०, सि०) गर्दन।
कैड़ाल—पु० (ह०) गाय, भैंस का बाड़ा।
कैड़ी—स्त्री० (चं०, शि०) गर्दन।
कैड़ी—स्त्री० (चं०) शहतीर।
कैडुआ—वि० (कु०) कड़वा।
कैण—स्त्री० (सि०) देवभूमि।
कैणसीं—स्त्री० (कु०) औज़ार आदि तेज करने की रेती।
कैत—अ० (कां०) क्या; कहां।
कैत—अ० (बि०) किसलिए।
कैतीबे—अ० (सि०) कितनी बार।
कैथ—पु० (मं०) देवताओं का मंदिर। कायस्थ।
कैदी—अ० (कु०) कब, किस दिन।
कैनी—स्त्री० (कु०) भेड़ों का बहुत बड़ा समूह।
कैपट—पु० (कु०) छल, कपट।
कैमटी—स्त्री० (मं०) नींबू प्रजाति का फल।
कैम्हल—स्त्री० (चं०) झाड़ी विशेष।
कैर—स्त्री० (चं०) काले रंग की चिड़िया विशेष।
कैर—स्त्री० (मं०, सि०) धान की क्यारी।
कैरकाटे—पु० (मं०) कसम खाने की क्रिया।
कैरड़ा—वि० (कु०) कठिन।
कैरी—स्त्री० (चं०) क्यारी।
कैलंग—पु० (चं०) कार्तिक स्वामी।
कैल—पु० (कु०, चं०) देवदार प्रजाति का वृक्ष।
कैलवाला—पु० (सि०) देवदार का जंगल।
कैले—अ० (मं०) क्यों।
कैलो—वि० (मं०) बहरा, गूंगा।
कैलो—पु० (सि०) देवदार का वृक्ष।
कैशी—पु० (सि०) काम-काज में व्यस्त अकेला व्यक्ति।
कैशो—वि० (मं०) कैसा।
कैस—स्त्री० (चं०) दुश्मनी।
कैसी—अ० (सो०) कहां से।
कैसो—वि० (शि०) कैसा।
कैह—अ० (चं०, मं०) क्या।
कैहणी—सर्व० (चं०) किसने।
कैहणी—स्त्री० (मं०, सि०) सगाई, वाग्दान।
कैहमुलु—पु० (चं०) दे० कशांबळ।
कैहर—पु० (बि०, मं०) प्रकोप।
कैहर—वि० (चं०) अत्यधिक।
कैहरने—पु० (मं०) एकांत घर।
कैहल—पु० (चं०) बड़ा तवा।
कैहजो—अ० (कां०) किसलिए।
कोंउळा—वि० (कु०) कोमल, नर्म।
कोंठ—पु० (मं०) गला।
कोंठी—स्त्री० (कु०) हार, माला।
कोंडली—स्त्री० (बि०) सब्जी विशेष।
कोंडळु—पु० (सि०) बांस की छोटी टोकरी जिसमें ऊन कातने का सामान रखते हैं।
कोंडा—पु० (कु०) कांटा।
कोंडी—स्त्री० (सि०, कु०) करंडिका, करंडी, देवता का छोटा सिंहासन।
कोंडू—पु० (कु०) दे० कोंडळु।
कोंढा—पु० (कु०) कालर।
कोंतरा—वि० (चं०) चितकबरा।
कोंथा—पु० (कां०) रेशम के कीड़े का कोश।

**कोंघा**—पु० (कु०) कंधा।
**कोंपणो**—अ० क्रि० (सि०) घबराना।
**कोंफ**—पु० (कां०) मानसिक दु:ख।
**कोंहकण**—अ० (मं०) कमी का।
**कोंहच**—स्त्री० (चं०) उकताहट।
**कोंहद**—स्त्री० (कु०) आटा या अन्न रखने के लिए बकरे की खाल का बनाया थैला।
**कोंहुरा**—पु० (कु०) ककुद, पशुओं का कंधे पर का ऊंचा स्थान।
**को:णी**—स्त्री० कुहनी।
**को**—पु० (कां०) कौआ।
**को**—सर्व० (मं०) कौन।
**को**—वि० (सि०) कितने।
**कोअला**—पु० (चं०) कोयला।
**कोआ**—पु० (बि०, कां०) आम की गुठली का बीज।
**कोआ**—पु० (सि०) गेहूं का ऐसा दाना जो पूरी तरह से छिलके से बाहर न हो।
**कोइदा**—अ० (सि०) कहां से।
**कोइल**—पु० (बि०) मीठा आम।
**कोइल**—स्त्री० कोयल।
**कोइला**—पु० (कु०, कां०) कोयला।
**कोई**—स्त्री० (कां०) एक पक्षी विशेष, घुग्घी।
**कोई**—स्त्री० (चं०, मं०) हल को फंसाने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का टुकड़ा।
**कोई**—अ० (सि०) क्यों।
**कोई**—स्त्री० (कु०) लकड़ी फाड़ने के लिए प्रयुक्त लकड़ी के टुकड़े।
**कोई**—सर्व० (शि०, कु०) कुछ, अनिर्दिष्ट वस्तु या व्यक्ति।
**कोईए**—सर्व० (शि०, कु०) किसी ने।
**कोईक**—अ० (सि०) कहां।
**कोईड़**—पु० (सि०) बड़ा पत्थर।
**कोईया**—वि० (सि०) हठी (व्यक्ति)।
**कोईलाड़**—पु० (शि०) एक पक्षी।
**कोउवा**—पु० (सि०) कौआ।
**कोए**—वि० (सि०) कई।
**कोकड़ा**—पु० (कां०) पटसन प्रजाति का पौधा।
**कोकड़ी**—स्त्री० (चं०) हल के साथ लगी हत्थी जिसे पकड़कर हल चलाया जाता है।
**कोकतालू**—पु० (शि०) तालू।
**कोकवाटा**—पु० (सि०) फूंक मारने का काम।
**कोका**—वि० (मं०) अनजान।
**कोका**—पु० (मं०) केले का फूल।
**कोका**—पु० नाक में पहनने का आभूषण।
**कोकी**—अ० (ह०) कोई व्यक्ति।
**कोकूरणो**—स० क्रि० (शि०) कुतरना।
**कोके**—पु० (मं०) सेमल के फूल।
**कोकोन**—स्त्री० (शि०) छिपकली।
**कोख**—स्त्री० गोद।
**कोगटेल्नू**—पु० (शि०) कौए का बच्चा।
**कोगड़ा**—पु० (सो०) भूत।
**कोगिण**—स्त्री० (सि०, शि०) मादा कौआ।
**कोगो**—पु० (शि०) कौआ।
**कोचूर**—पु० (शि०) औषधि में प्रयुक्त पदार्थ विशेष।
**कोछड़**—स्त्री० (कु०) लंबा खेत।
**कोछड़ा**—पु० (शि०) दे० कोछड़।
**कोछड़ी**—स्त्री० (शि०, कु०) क्यारी।
**कोछलाये**—स्त्री० (सि०) बाजू के जोड़ का नीचे का स्थान, बगल।
**कोछा**—पु० (सि०) कच्छा, निकर।
**कोछू**—पु० (मं०) छोटा खेत।
**कोजणी**—स्त्री० (सि०) जम्हाई।
**कोजर**—पु० (शि०) माथे पर उगे बाल।
**कोज़ला**—वि० (कु०) जिसके मन में संदेह हो।
**कोजार**—वि० (सि०) गंदा (पानी)।
**कोट**—पु० बाज़ी।
**कोट**—पु० मकान का उच्च शिखर।
**कोट**—पु० (मं०) स्थान।
**कोट**—पु० एक परत।
**कोटणा**—अ० क्रि० (सि०) कटना।
**कोटणी**—स्त्री० (मं०) दे० कौटण।
**कोटलटू**—पु० (सि०) छोटा कोट।
**कोटलु**—पु० (कां०, कु०) दे० कोटलटू।
**कोटाई**—स्त्री० (शि०) निकालने का भाव।
**कोटी**—वि० (मं०) स्पष्ट।
**कोटो**—पु० (शि०) भैंस का बच्चा।
**कोटोरो**—पु० (मं०, शि०) कटोरा।
**कोठ**—पु० (बि०) लकड़ियों का ढेर।
**कोठ**—स्त्री० (कु०) कुल्हाड़ी के लोहे का सपाट भाग।
**कोठ**—पु० (सि०) मेहनत।
**कोठड़**—स्त्री० (कु०) अन्न रखने के लिए लकड़ी का बना बड़ा संदूक।
**कोठड़ी**—स्त्री० अंधेरा छोटा कमरा।
**कोठड़ी**—स्त्री० (सि०) मृतक बच्चे को दफनाने का स्थान।
**कोठडू**—पु० (कु०) छोटा संदूक, दीवार में बनी छोटी अलमारी।
**कोठली**—स्त्री० (चं०) लकड़ी रखने का स्थान।
**कोठा**—पु० (कु०, बि०) लकड़ियों का ढेर।
**कोठा**—पु० (मं०) मलेरिया से बचाव की बूटी।
**कोठा**—अ० (मं०) कहां।
**कोठा**—अ० चौबारा।
**कोठा**—पु० (मं०) पक्का मकान।
**कोठा**—पु० (मं०) घास का एकत्रीकरण।
**कोठार**—पु० (मं०) भंडार।
**कोठाले**—पु० (मं०) भंडार के भीतर की कोठरी।
**कोठी**—स्त्री० (सि०, मं०) लकड़ी का संदूक, अलमारी।
**कोठी**—स्त्री० (मं०) अनाज से भरी थैली।
**कोठी**—पु० (कु०, शि०, मं०) देवताओं का भंडार।
**कोठी**—स्त्री० ग्राम प्रशासन में कुछ 'फाटियों' का समूह। ग्राम

प्रशासन का चौथा चरण—पहला घर, दूसरा गांव, तीसरा फाटी और चौथा कोठी।
**कोठी**—स्त्री० (चं०) भंडार गृह।
**कोठे**—वि० (सि०) इकट्ठे रहने वाले।
**कोठो**—वि० (शि०) इकट्ठा।
**कोठौ**—पु० (कु०) अनाज का बड़ा बर्तन।
**कोठौह**—पु० (मं०) कोठार।
**कोड़**—पु० (कु०) खेत का ऊपर का हिस्सा।
**कोड़फू**—वि० दाल के बीच के ऐसे दाने जो न पकें।
**कोड़थ**—पु० (मं०) कुलथ, स्थानीय दाल।
**कोड़मा**—पु० (मं०) कुटुंब।
**कोड़याली**—स्त्री० (मं०) एक वाद्ययंत्र।
**कोड़ा**—वि० (कां०) कड़वा।
**कोड़ा**—वि० (चं०) लाल, और सफेद रंग का मिश्रित रूप।
**कोड़ाई**—स्त्री० (सि०) कड़ाही।
**कोड़ाओ**—पु० (सि०) कड़ाह।
**कोड़ी**—स्त्री० (कां०) सरसों की खली।
**कोड़ी**—स्त्री० (चं०) हड्डी।
**कोड़ी**—स्त्री० (सि०) फल वाली कांटेदार झाड़ी।
**कोड़ुवो**—वि० (सि०) कड़वा।
**कोड़े**—स्त्री० (सि०) सलीपर; तख्ते।
**कोढ़**—पु० कुष्ठ रोग।
**कोढ़ी**—पु० (कां०) कुष्ठरोगी; वि० कंजूस।
**कोढ़ीणा**—अ० क्रि० (चं०) रुष्ट होना।
**कोढु**—पु० (मं०) ढेर।
**कोण**—पु० (मं०) अनाज के बीज में लगने वाला कीड़ा।
**कोण**—स्त्री० (कु०) सख्त वस्तु (यथा नमक का टुकड़ा)।
**कोण**—स्त्री० (सि०) कराह।
**कोणबाई**—स्त्री० (कु०) पीलिया जैसा एक रोग।
**कोणा**—पु० (मं०) कोना।
**कोणी**—स्त्री० (चं०) धान प्रजाति का एक अन्न।
**कोत**—वि० (चं०) कम।
**कोत**—स्त्री० (कु०) व्यंग्यपूर्ण चुटीली बात।
**कोत**—स्त्री० (चं०) मंदबुद्धि।
**कोतणा**—स० क्रि० (कु०, मं०) खोदना।
**कोतणा**—स० क्रि० चुभाना; छेद करना।
**कोतणा**—स० क्रि० (सो०, बि०) कुरेदना।
**कोतणा**—स० क्रि० (चं०) भेद लेना।
**कोतणो**—स० क्रि० (शि०) खुरचना।
**कोतरसौ**—वि० (मं०) एक सौ आठ।
**कोतल**—पु० (मं०) घोड़ा।
**कोता/ते**—अ० (सि०) कहां।
**कोताब**—स्त्री० (सि०) पुस्तक।
**कोतु**—वि० (मं०) हर बात में टांग अड़ाने वाला।
**कोथ**—पु० (सि०) बगल, कक्ष।
**कोथणा**—अ० क्रि० (सि०) व्यर्थ बोलना, उलझना।
**कोथरा**—पु० (सि०) कस्तूरी मृग।
**कोथा**—वि० (मं०) नर्म।
**कोथूरा**—पु० (शि०) दे० कोथरा।
**कोथूरी**—स्त्री० (शि०) कस्तूरी।
**कोथे**—अ० (सि०) कहां।
**कोद**—पु० (मं०) तना।
**कोदरा**—पु० (कु०) कोदो अनाज।
**कोदरा**—वि० (मं०) कठोर (वृक्ष)।
**कोदराठा**—पु० (कु०) 'कोदरा' अनाज का घास।
**कोदरी**—स्त्री० (कां०) एक प्रकार का घास।
**कोदरूड़**—पु० (चं०) दे० कोदराठा।
**कोदा**—पु० (सि०) कोदो अन्न।
**कोदालो**—पु० (शि०) 'कोदे' के आटे का बनाया गया पकवान।
**कोदास**—पु० (शि०) दे० कोदराठा।
**कोदिठो**—पु० (शि०) 'कोदे' का आटा।
**कोदू**—पु० (कु०) सोना-चांदी डाल कर गरम किया गया विशेष जल।
**कोधरा**—वि० (कु०) लाक्षा की तरह रंग वाला।
**कोन**—पु० (कु०) कान।
**कोनछा**—वि० (सि०) छोटा।
**कोनाली**—स्त्री० (शि०) परात।
**कोनिया**—पु० (सि०) झगड़ा।
**कोनी**—अ० (सि०) क्यों।
**कोनो**—वि० (शि०) सबसे छोटा।
**कोन्हा**—वि० (कु०) कनिष्ठ।
**कोन्हीणा**—अ० क्रि० (कु०) बैल के कंधे दुखना।
**कोप**—पु० क्रोध।
**कोपड़ो**—वि० (सि०) कटु, कड़वा।
**कोपणा**—अ० क्रि० (चं०) कुपित होना।
**कोपणा**—स० क्रि० (कां०) दुःख देना।
**कोपणा**—स० क्रि० (शि०) पक्षियों का चोंच मारना।
**कोपर**—स्त्री० (मं०) खोपड़ी।
**कोपरणा**—स० क्रि० (शि०) छेद करना।
**कोपल**—स्त्री० (मं०) कोंपल।
**कोपा**—स्त्री० (ह०) छोटी नदी।
**कोपाली**—स्त्री० (सि०) भाग्य।
**कोफ**—पु० (मं०) दे० कोप।
**कोफ**—पु० (मं०) कफ, बलगम।
**कोबाड़ी**—स्त्री० (सि०) कब्ज़।
**कोबाड़ो**—पु० (सि०) विषहीन मच्छर।
**कोबी**—अ० (सि०) कभी।
**कोबे**—अ० (सि०) कब।
**कोम**—पु० (कु०) काम।
**कोमण**—वि० (कु०) मेहनती, काम करने में चुस्त, कर्मठ।
**कोमणा**—अ० क्रि० (कु०) कांपना।
**कोमणी**—स्त्री० (कु०) कंपन।
**कोमी**—वि० (कु०) काम करने वाला।
**कोमुशी**—स्त्री० (शि०) नाराज़गी।
**कोयड़**—पु० (सि०) चट्टान।
**कोयलौ**—पु० (शि०) कोयला।

**कोर**—पु० (मं०) लकड़ी के तख़्तों को जोड़ने के लिए लोहे की एक बारीक पत्ती वाला औज़ार।
**कोर**—पु० (चं०) ताला।
**कोर**—पु० (सो०) छेद।
**कोर**—पु० (सि०) थाली का ऊपरी हिस्सा।
**कोर**—पु० (चं०) लाल धागे की डोरी।
**कोर**—पु० (चं०) किलेनुमा मकान।
**कोरडा**—वि० (कु०) उच्छिष्ट, जूठा, अपवित्र।
**कोरड़ा**—पु० (मं०) कोड़ा।
**कोरड़ा**—पु० (चं०, बि०) एक खेल जिसमें बच्चे गोलाकार में बैठते हैं और एक बच्चा भागता है।
**कोरणो**—स्त्री० (सि०) करतूत।
**कोरद**—पु० (सि०) लोहे, पत्थर या कांच का तीखा टुकड़ा।
**कोरदेणा**—अ० क्रि० (कां०) भीड़ में घुसना।
**कोरना**—स० क्रि० कुरेदना।
**कोरम**—पु० (सि०) कर्म।
**कोरला**—पु० (मं०) उच्छिष्ट (भोजन), अशुद्ध।
**कोरलु**—पु० पत्थर का स्तंभ।
**कोरलू**—पु० ऊंची पहाड़ी पर बने चबूतरे।
**कोरा**—पु० (कु०) कफ़न।
**कोरा**—वि० (बि०, चं०, कु०) पहले न बरता हुआ, नया, जिसमें पहले पानी न पड़ा हो (जैसे घड़ा), अप्रयुक्त (बर्तन या कपड़ा)।
**कोरा**—पु० (चं०) ताज़ी मक्की के पकाए लड्डू।
**कोरा**—वि० (बि०) बेदाग़; स्पष्टवादी।
**कोरा**—पु० (बि०) सर्दियों में जमने वाला पाला।
**कोरा**—वि० (शि०, सो०) इकहरा।
**कोरा**—वि० जिसमें कुछ लिखा न हो; सफेद।
**कोरा**—वि० (बि०, चं०) अनजान।
**कोरान्हीओण**—पु० (मं०) तांत्रिक विधि से किया जाने वाला स्नान।
**कोरास**—स्त्री० (चं०) एक प्रकार की सब्जी।
**कोराह**—वि० (सो०) एक ओर का।
**कोरू**—वि० (मं०) पेटू।
**कोरेंडी**—स्त्री० (सि०) कुंडी।
**कोरेला**—पु० (सि०) करेला।
**कोरोरा**—वि० (चं०) छिद्र वाला।
**कोरोल**—पु० (सि०) लकड़ी की कड़ी।
**कोल**—स्त्री० (मं०) छत की कड़ी।
**कोल**—पु० (सि०) पुर्ज़े।
**कोळ**—पु० (शि०) रौंगी की दाल।
**कोलचिचड़ा**—पु० (चं०) कुलथ और चावल का पकवान।
**कोळथ**—पु० (कु०) कुलथ।
**कोलथी**—स्त्री० (सि०) चावल और कुलथ की खिचड़ी।
**कोलथैट**—पु० (चं०) कुलथ का घास।
**कोलर**—पु० दांत का छेद।
**कोलर**—पु० (सि०) छोटा बच्चा।
**कोलरा**—पु० (कु०) घास के बीच बैठने से बना गड्ढा।
**कोलला**—अ० (सि०) कब।
**कोलश**—पु० (शि०) मंदिर के ऊपर लगा कलश।
**कोळश**—पु० (कु०) नदी के किनारे उगने वाला वृक्ष विशेष।
**कोलहा**—पु० (चं०) जंगली मुर्गा।
**कोलहैर**—स्त्री० (चं०) वन्य मुर्गी।
**कोला**—पु० कोयला।
**कोळा**—पु० (कां०) गुच्छा।
**कोलाड़**—स्त्री० (शि०) कोयल।
**कोळाव**—पु० (सि०) जंगली मटर।
**कोली**—स्त्री० (सि०) हुक्का।
**कोली**—स्त्री० (कां०) 'कोके' का 'कुलफ'।
**कोळी**—स्त्री० (सि०) स्लेट।
**कोलू**—पु० (कु०) मक्की के आटे में भांग के दाने डाल कर भाप में पकाए लड्डू।
**कोलू**—पु० (शि०) झूला।
**कोलू**—पु० (शि०, सि०) कोल्हू।
**कोले**—स्त्री० (सो०) कोयल।
**कोलेट**—स्त्री० (शि०) बछिया।
**कोलो**—पु० (शि०) घोंसला।
**कोल्ह**—पु० (कु०) घोंसला, कुलाय।
**कोश**—पु० मधुमक्खी का छत्ता।
**कोशा**—पु० (सि०) कुदाल।
**कोशा**—पु० (मं०) फसल को काटने वाला कीड़ा।
**कोश्रा**—पु० काठ का कटोरा।
**कोशु**—पु० (कु०) घास का ढेर।
**कोसणा**—स० क्रि० (कु०) अंदर डालना।
**कोसत**—स्त्री० (कां०) कोशिश।
**कोसना**—वि० (बि०, चं०) कुनकुना, थोड़ा गरम (पानी)।
**कोसना**—अ० क्रि० (सि०) अनिष्ट कामना करना।
**कोसमोस**—वि० (कां०) कुनकुना।
**कोसा**—वि० (कां०, बि०) थोड़ा गरम, कुनकुना।
**कोसिया**—अ० (सि०) किसके पास।
**कोसिस**—स्त्री० (कां०) कोशिश, प्रयत्न।
**कोस्त**—स्त्री० (मं०, बि०) प्रयत्न।
**कोह**—पु० (मं०) कोस।
**कोह**—पु० (मं०) चढ़ाई।
**कोहरा**—वि० (मं०, बि०) इकहरा।
**कोहरा**—पु० (मं०) सीधे होने का भाव।
**कोहिकी**—सर्व० (मं०, कु०) कोई।
**कोही**—स्त्री० (चं०) पानी के किनारे उगने वाला वृक्ष।
**कोहेल**—स्त्री० (मं०) चक्की के बीच घुमाने हेतु छेद वाली लकड़ी।
**कोहट**—पु० (चं०) औषधि विशेष।
**कोहदु**—पु० (सि०) चीड़ आदि के पेड़ में लगा बीज युक्त लकड़ी का गुच्छा।
**कोहदु**—पु० (शि०) छोटी कुदाली।
**कोहड़**—पु० (मं०) दे० कोढ़।

**कोहड़बाई**—स्त्री० (चं०) पशु-थन की बीमारी।
**कोहड़ा**—वि० (मं०, कु०) भूरा।
**कोहणा**—स्त्री० (कु०) एक प्रकार का घास।
**कोहणा**—अ० क्रि० चढ़ना।
**कोहन्ना**—पु० (शि०) बैल का ककुद।
**कोहला**—वि० (बि०) छोटा।
**कोहल**—पु० घोंसला।
**कोहळ**—पु० (मं०, कु०) एक प्रकार की 'रौंगी'।
**कोहला**—वि० (चं०) कुल्या साफ करने वाला।
**कोहली**—स्त्री० (चं०) धान का खेत।
**कोहली**—स्त्री० (कां०) सिंचाई वाली भूमि।
**कोहली**—स्त्री० (कां०) कुल्या।
**कौं**—पु० कौआ।
**कौं**—पु० (बि०, कां०) तालु में लटका मांस, अलिजिह्वा।
**कौंइथो**—पु० (सि०) कैथ के फल।
**कौंउणी**—स्त्री० (चं०, कु०) दे० काउणी।
**कौंच**—पु० पलंग; तख्त।
**कौंछा**—वि० (शि०) कनिष्ठ।
**कौंटक**—वि० (शि०) कंजूस।
**कौंटा**—पु० (ह०) बड़ी नाव।
**कौंटा**—पु० (सि०) ढेला।
**कौंटा**—पु० (सि०) काटते हुए मुट्ठी भर घास।
**कौंठी**—स्त्री० (सि०, मं०) कंठी।
**कौंड**—पु० (सि०) देवता की छोटी पालकी।
**कौंडा**—पु० (मं०) कांटा।
**कौंडा**—पु० (मं०) हाथ में उठाई जाने वाली बांस की टोकरी जिसमें ऊन, तकली आदि रखते हैं।
**कौंतका**—वि० (मं०) कब तक।
**कौंतर**—पु० (चं०) कबूतर।
**कौंथी**—स्त्री० (सि०) जुल्फें।
**कौंथू**—पु० (शि०) कान।
**कौंध**—पु० (कु०) कमरे की दीवार के ऊपर सामान रखने की खाली जगह।
**कौंर**—पु० (मं०) कुंवर।
**कौंल**—पु० (सि०) कमल।
**कौंलबाय**—स्त्री० पांडुरोग।
**कौंला**—वि० नर्म।
**कौंहरा**—पु० (मं०) विवाह संस्कार का विशेष कक्ष।
**कौ**—अ० (कु०) कहां।
**कौ**—वि० (सो०, मं०) कितने।
**कौ**—स्त्री० (सि०) आंखों के बालों में पड़ने वाली जूं जो प्रायः दैव प्रकोप से पैदा हुई मानी जाती है।
**कौइंचे**—अ० (कु०) कहीं, कहीं पर; शायद।
**कौइंठलागणा**—अ० क्रि० (कु०) काम करने की इच्छा न होना।
**कौई**—अ० (मं०, सि०, शि०) क्यों।
**कौई**—स्त्री० (कु०) कली।
**कौई**—वि० (शि०) कई।
**कौऊ**—पु० (शि०) जैतून।
**कौऊ**—पु० (सि०) एक प्रकार की लाल मिट्टी।
**कौए**—वि० (शि०) कई।
**कौएड़**—स्त्री० (सि०) चट्टान।
**कौकड़सिंगी**—स्त्री० (कु०) काकड़सिंगी।
**कौकड़ी**—स्त्री० (कु०) हृदय, दिल।
**कौकड़ी**—स्त्री० (कु०) खीरा फल।
**कौकड़ी**—स्त्री० (शि०) काकड़सिंगी का वृक्ष।
**कौकड़ेया**—पु० काकड़ासिंगी का वृक्ष।
**कौकरू**—पु० (कु०) चूना के प्रकार की मिट्टी।
**कौखे**—अ० (कु०) कहां।
**कौछ**—पु० (कु०) बगल।
**कौजणा**—अ० क्रि० (शि०) सुस्ताना।
**कौज़िया**—पु० (कु०) कष्ट, तकलीफ।
**कौटण**—स्त्री० (कु०) एक प्रकार का कीट जो पशुओं के शरीर से खून चूसता है।
**कौठमठ**—वि० (शि०) मिश्रित, मिला-जुला, गड्डमड्ड।
**कौठा**—वि० (शि०) इकट्ठा।
**कौठेण**—वि० (सि०) कठिन।
**कौड़**—पु० (मं०) पशुओं का चारा जो गेहूं के साथ पैदा होता है।
**कौड़छा**—पु० (कु०) बड़ी कलछी।
**कौड़छी**—स्त्री० (कु०) कलछी।
**कौड़ा**—पु० (सि०) स्त्रियों का सिर का आभूषण।
**कौड़ा**—पु० (शि०, कु०) कड़ा।
**कौड़ा**—वि० कड़वा।
**कौड़ी**—स्त्री० जुआ खेलने में प्रयुक्त सीप।
**कौड़ी**—स्त्री० (कां०) छोटी हांडी।
**कौड़ी**—स्त्री० (मं०) कान के पास का स्थान।
**कौड़ी रोटी**—स्त्री० (मं०) वधुपक्ष की ओर से विधवा और अन्य संबंधित लोगों को दिया जाने वाला मृत संस्कार का भोज।
**कौडू**—पु० (कु०) पहाड़ों की बहुत ऊंचाई पर उत्पन्न जड़ी जो औषधि के काम आती है।
**कौड्डे**—पु० (मं०) पानी में तैरने वाले काले रंग के कीड़े।
**कौढ़णा**—स० क्रि० (कु०) निकालना।
**कौढ़णी**—स्त्री० (मं०) आंखों की जलन।
**कौण**—सर्व० (मं०) कौन।
**कौण**—पु० (मं०) घुन।
**कौणक**—स्त्री० गेहूं।
**कौणाना**—अ० क्रि० (मं०, सि०) कराहना।
**कौणी**—स्त्री० (सो०) दे० कोणी।
**कौणें**—सर्व० (शि०) किसने।
**कौत**—पु० (सि०) किसी के मरने पर रिश्तेदारों द्वारा एक समय भोजन करने की प्रथा।
**कौतणा**—स० क्रि० (कु०) कातना।
**कौतीश**—वि० (शि०) इकतीस।
**कौत्र**—पु० (चं०) कबूतर।
**कौथा**—अ० (सि०) कहां।
**कौथा**—स्त्री० (कु०, सि०) कथा, कहानी।

**कौथा**—पु० (मं०, बि०) रेशम का कीड़ा।
**कौथा**—वि० (मं०) कितना।
**कौथा**—अ० (सो०, बि०) कौन सा।
**कौदा**—वि० (चं०) गंजा।
**कौदी**—अ० (सि०) कभी।
**कौदू**—पु० (कु०) कद्दू।
**कौधी**—अ० (शि०, कु०) कब।
**कौनझुल्ली**—स्त्री० (सि०) कर्णफूल।
**कौनिश**—पु० (सि०) पानी के किनारे उगने वाला एक प्रकार का पेड़।
**कौन्ह**—पु० (कु०) कंधा।
**कौन्ही**—वि० (कु०) किसी भारी वस्तु को कंधे पर उठाने वाला।
**कौपी**—स्त्री० (कु०) जड़ों समेत साग को चावल में डालकर बनाया गया विशेष पकवान।
**कौफ**—पु० (चं०) मानसिक कष्ट।
**कौफीहण**—स्त्री० (चं०) मानसिक दुःख।
**कौबे**—अ० (सि०) कब।
**कौर**—पु० (मं०) ग्रास।
**कौर**—पु० (कु०) कर, देवी-देवता की भूमि की पैदावार में से देवता का भाग।
**कौर**—पु० (शि०) छिद्र।
**कौरड़ा**—वि० (कु०) ऐसा धान जिसका छिलका उतारना मुश्किल हो।
**कौरड़ा**—वि० (कु०) सख्त, कठिन, अधपका।
**कौरडू**—पु० (कु०) कोटि, करोड़।
**कौरणा**—स० क्रि० (सि०) करना।
**कौरम**—पु० कर्म।
**कौरा**—पु० (चं०) घड़े के आकार का मिट्टी का छोटा पात्र।
**कौरू**—पु० (शि०) कौरव।
**कौरे**—सर्व० (शि०) किसकी।
**कौल**—पु० (कु०) गाय, भैंस, बकरी के **ब्याने** पर पहला दूध, जो गाढ़ा होता है।
**कौल**—पु० (बि०) बड़ी कटोरी।
**कौल**—पु० (चं०) प्रतिज्ञा, प्रण।
**कौल**—पु० (चं०) ग्रास।
**कौल**—पु० (मं०) गोत्र।
**कौळका**—वि० (शि०) तेज नमक वाला (पदार्थ)।
**कौलगी**—स्त्री० (कु०, सि०, शि०) कलगी।
**कौलड़ा**—पु० (कु०) घी में पका पकवान।
**कौलडू**—पु० (कु०) सिर पर उठाया जाने वाला देवता।
**कौळतर**—पु० (सि०) नुकीला तिरछा पत्थर।
**कौलतराण**—स्त्री० (शि०) कालिमा; गंदगी।
**कौलरा**—वि० (कु०) कम गरम।
**कौला**—पु० (सि०) द्वार का अग्रभाग।
**कौली**—स्त्री० कटोरी।
**कौली**—स्त्री० (कां०) मुट्ठी भर पौधे।
**कौली**—वि० (चं०) वचन निभाने वाला।
**कौळी**—स्त्री० (सि०) बरामदे में लगाया जाने वाला जंगला।
**कौलू**—वि० (बि०) छोटा (खेत)।
**कौलू**—पु० (शि०) देवता का वजीर जो बावन वीरों में से माना जाता है।
**कौल्ला**—वि० (शि०, सो०) अकेला।
**कौवारी**—स्त्री० (मं०) दो शहतीरों या कड़ियों को परस्पर जोड़ने के लिए प्रयुक्त लकड़ी की चौड़ी पट्टी।
**कौश**—पु० (सि०) घी का पुराना माप। कसम, सौगंध।
**कौशणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) कसना।
**कौशला**—पु० (सि०) छोटी कुदाली।
**कौशा**—स्त्री० (कु०) मधुकोश।
**कौशी**—स्त्री० (सि०) बड़ी कुदाली।
**कौसखि**—सर्व० (शि०) किसे।
**कौसखे**—सर्व० (सि०) किसको।
**कौसरा**—सर्व० (कु०) किसका।
**कौसू**—पु० (कु०) जूं के बच्चे।
**कौहरा**—पु० (मं०) विवाह में पूजा स्थल पर बनाए गए लोक-कला के चित्र।
**कौहरा**—सर्व० (कु०) किसका।
**कौहल**—पु० (चं०) बड़ा तवा।
**कौहा**—पु० (बि०, चं०) दूधरहित चाय।
**कौहाड़ी**—स्त्री० (चं०) जैतून के पेड़ों वाला स्थान।
**कौही**—स्त्री० (कु०) कुदाल की आकृति का एक उपकरण जो कुदाल से अधिक चौड़ा होता है।
**कौहुत**—स्त्री० (कु०) मृतक के शोकाकुल परिवार द्वारा किया जाने वाला भोजन।
**कौहू**—पु० (ह०) खुदाई के लिए प्रयुक्त बड़ा कुदाल।
**कौहू**—पु० (कु०) जैतून प्रजाति का एक वृक्ष विशेष।
**क्तांह**—अ० (कां०, बि०) कहां।
**क्याऊंकेऊ**—पु० (कां०) एक सब्जी विशेष।
**क्याछिओ**—स्त्री० (सि०) एक जंगली फल।
**क्यार**—पु० धान बीजने की भूमि।
**क्यारिक**—स्त्री० सिंचित भूमि जिसमें प्रायः धान की खेती की जाती है।
**क्यारू**—पु० (चं०) आंगन में तुलसी का पौधा लगाने का स्थान।
**क्यालको**—पु० (शि०) एक जंगली फल।
**क्योड़ा**—पु० (चं०) सफेद केतकी; उसका पुष्प।
**क्योली**—स्त्री० (कां०) पनचक्की को घुमाने वाली लोहे की पत्ती।
**क्रठ**—पु० (चं०) बेकार कार्य।
**क्रठ**—पु० (चं०) परिश्रम।
**क्रढीणा**—अ० क्रि० (चं०) अंदर ही अंदर जलना।
**क्रणींदीरना**—अ० क्रि० (चं०) पछताना।
**क्रणी**—स्त्री० (चं०) कराह।
**क्रतब्रता**—वि० (कु०) खराब, गंदा।
**क्रम**—पु० (बि०) अस्थिपंजर।
**क्रम्मड़**—वि० (चं०) दुर्बल।
**क्रयाटी**—स्त्री० (बि०) बेसन।

क्लहा—स्त्री० (कां०) कलह।
क्रश—स्त्री० (कु०) कष्ट, कठिनाई, तकलीफ।
क्रष्ट—पु० (कां०) दुःख।
क्रष्टा—स्त्री० (कु०) कष्ट, मुसीबत, बुरी दशा।
क्रष्टी—स्त्री० (शि०) चीड़ वृक्ष का फल।
क्रां—पु० (कु०) धुएं की जमी कालिख।
क्रांईआंई—पु० (चं०, कु०) कालिख, ज़ंग।
क्रांऊ—वि० (चं०) करारी (रोटी)।
क्राळी—स्त्री० (चं०) कचनार।
क्रास—स्त्री० (मं०) वर्षा के बाद निकलने वाली धूप।
क्रिगड़—पु० (चं०) पिंजर।
क्रींच—स्त्री० (कु०) दे० करींच।
क्रीकड़—वि० (कु०) कमज़ोर।
क्रीठ—स्त्री० (चं०) धूल।
क्रीणा—वि० (कु०) देखने में कमज़ोर परंतु बलवान।
क्रीन—वि० (चं०) दुर्बल; बारीक।
क्रीशो—स्त्री० (शि०) प्रण, कसम।
क्रीहा—वि० (चं०) स्वल्प।
क्रुंगटा—वि० (कु०) टेढ़ा, झुका हुआ।
क्रुंदू—पु० (सो०) कंटीली जंगली झाड़ी जिसमें छोटे फल लगते हैं।
क्रुलक्रुला—वि० (कु०) स्वादरहित।
क्रुल्ला—पु० (कु०, बि०) मुख में पानी भर कर अंगुलि से दांत साफ करने की क्रिया।
क्रुस्खड़—पु० (चं०) कूड़ा।
क्रुहणा—अ० क्रि० (कु०) गलना।
क्रूं—पु० (चं०) शहतूत।
क्रूमड़—पु० (चं०) टुकड़ा, खंड।
क्रूरू—पु० (चं०) लकड़ी में गोल छिद्र करने का उपकरण।
क्रेंई—स्त्री० (सि०, सो०) एक चिड़िया जो काले व भूरे रंग की होती है तथा जिसकी चोंच पीली होती है।
क्रेंखड़—वि० (कु०) कमज़ोर।
क्रेंगटा—वि० (कु०) टेढ़ा।
क्रेंड़—स्त्री० (सो०, सि०) अकड़।
क्रेपणा—स० क्रि० (कु०) ऊपरी भाग काट देना या छील देना।
क्रेर—स्त्री० (बि०) मनोबल।
क्रेरा—वि० (कु०) सख्त स्वभाव वाला।
क्रैं—स्त्री० (चं०) व्यर्थ की बोलचाल।
क्रैंकड़—वि० (कु०) कमज़ोर।
क्रोओ—स्त्री० (शि०) रेखाएं।
क्रोढ़ी—स्त्री० (चं०) चीख।
क्रोतणा—स० क्रि० (सो०) नाखून से खोदना।
क्रोधा—वि० (चं०) क्रोध करने वाली (स्त्री)।
क्रोह—पु० (चं०) कोस।
क्लांछ—स्त्री० (सि०) बुरी आदत।
क्लाड़—स्त्री० (चं०) कोयल।
क्लुन्ना—पु० (चं०) दे० क्लेऊ।
क्लेऊ—पु० (चं०, कु०) जौ व कनक की फसल में लगी बीमारी जिसमें दाने की बजाए धूल पैदा होती है।
क्वा—स्त्री० (चं०) आवाज़, पुकार।
क्वाई—स्त्री० (बि०, सो०) दे० क्वाळी।
क्वाच—वि० (बि०) मूर्ख।
क्वाज—वि० (बि०) बेपर्दा।
क्वाट—स्त्री० (बि०) भेड़-बकरी की खाल से बनी बोरी।
क्वाड़ी—स्त्री० (सो०) कुल्हाड़ी।
क्वाथ—वि० (मं०, सो०) काढ़ा।
क्वाथ—पु० (मं०) शरारत।
क्वारा—पु० अविवाहित।
क्वारी—स्त्री० (सि०) छत की कैंची; छत में लगने वाली लकड़ी।
क्वाळ—पु० (कां०) दे० क्वाळी।
क्वालना—स० क्रि० (बि०) उजाड़ना।
क्वाळना—स० क्रि० (कु०) चढ़ाना।
क्वाळी—स्त्री० (मं०) चढ़ाई।
क्वाश—स्त्री० (सि०) सिर की रूसी।
क्वाशणा—स० क्रि० (सो०) कील, द्वार आदि उखाड़ना।
क्वाह—स्त्री० (मं०) चढ़ाई।
क्षां—पु० (कु०) ज़ंग।
क्षार—पु० (बि०) आटे का सूखा प्रसाद।
क्षेशा—वि० (शि०, सि०) खुरदरा।

## ख

ख—देवनागरी वर्णमाला के कवर्ग का दूसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान कंठ है।
खंखर—वि० (चं०) खाली, पिंजर मात्र, सूखा।
खंखार—वि० (चं०) ऊबड़-खाबड़, भद्दा।
खंखारू—पु० (चं०) कैथ, जंगली कसैला फल।
खंखालना—स० क्रि० (मं०) पानी में कपड़े हिलाना।
खंग—स्त्री० खांसी।
खंगयारी—स्त्री० (मं०) कुमकुम घोलने का बर्तन।
खंगराड़—पु० (सो०) अधिक वर्षा होने से हुआ भूमि का कटाव।
खंगालना—अ० क्रि० (कां०, ह०) खांस कर ध्यान आकृष्ट करना। स०, क्रि० कपड़े मांडना।
खंगाश—पु० (मं०) कफ।
खंघ—स्त्री० (चं०) दे० खंग।
खंघ—पु० (बि०) खेत के किनारे का छोटा तिकोना भाग।
खंघरोलना—स० क्रि० (मं०) हिलाना, मिलाना।
खंघा—पु० (चं०) चीड़ के फल का खोल।
खंघार—स्त्री० (कां०, चं०) ज़ोर से खांसने की आवाज़।
खंघार—वि० (चं०) खांसने वाला।
खंघारना—अ० क्रि० (मं०) खांसना।

**खंघारा**—पु० (बि०) खांसने की आवाज़।
**खंघीरी**—स्त्री० (बि०) गले में होने वाली जलन।
**खंघु**—पु० (त्र०) पेड़ की कटी हुई टहनी का शेष भाग।
**खंघूई**—स्त्री० (मं०) बड़ी सूई।
**खंजणा**—स० क्रि० (मं०) खींचना, निकालना।
**खंजना**—अ० क्रि० (सि०) ऊंची आवाज़ में हंसना।
**खंजर**—पु० कटारा।
**खंजरी**—स्त्री० डफली के आकार का वाद्ययंत्र।
**खंजाई**—स्त्री० (मं०) खिंचाई, डांट-डपट।
**खंजाणा**—स० क्रि० (मं०) खिंचवाना।
**खंजीणा**—अ० क्रि० (कां०) पास आना।
**खंझोणा**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) बचना, दूर जाना।
**खंड**—स्त्री० चीनी।
**खंड**—पु० भाग, टुकड़ा।
**खंडखेड़ा**—पु० (मं०) अलगाव।
**खंडत**—वि० (मं०) टूटा हुआ, खंडित।
**खंडला—वि० (चं०) टूटे हुए दांत वाला।**
**खंडा**—वि० (चं०) कटे हुए होंठ वाला।
**खंडा**—वि० (चं०) जिसका एक भाग टूटा हुआ हो।
**खंडा**—पु० (शि०) बकरे की खाल।
**खंडा**—पु० (बि०) भेड़-बकरियों का समूह।
**खंडा**—पु० खड्ग विशेष, दोधारा शस्त्र जो विशेषतः देवकर्म में प्रयुक्त होता है।
**खंडा**—पु० (मं०) गंडासा।
**खंडी**—स्त्री० (मं०) भूखंड।
**खंडू**—वि० (चं०) दे० खंडला।
**खंडे**—स्त्री० (मं०) एक विशेष तलवार जो पुत्र के प्रथम जन्मदिवस पर बनाई जाती है और उसके दाहसंस्कार में उसी के साथ जला दी जाती है।
**खंडे**—पु० (मं०) होली के त्योहार पर काष्ठ खंडों का पूजन।
**खंडेउलड़**—वि० (सि०) खूंटे पर बंधी रहने वाली (गाय, भैंस)।
**खंडेरना**—स० क्रि० अलग-अलग करना, बिखेरना।
**खंडोणा**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) बिखरना।
**खंढा**—वि० (चं०) आधा।
**खंद**—पु० (सि०) बिछौना।
**खंद**—स्त्री० (शि०) शत्रुता।
**खंदक**—स्त्री० खाई।
**खंदा**—पु० (चं०) **भेड़-बकरियों का रेवड़।**
**खंदूई**—स्त्री० बड़ी सूई।
**खंदूस**—वि० (कां०, चं०) मृत्यु-समय कष्ट भोगने वाला, जानबूझ कर हानि पहुँचाने वाला।
**खंदेजाणा**—अ० क्रि० (मं०) गाय द्वारा गर्भधारण किया जाना।
**खंदोलु**—पु० (बि०) बिछौना, तलाई, कपड़े के टुकड़ों से बनाया हुआ शय्या-वस्त्र।
**खंघोजाणा**—अ० क्रि० (बि०) दे० खंदेजाणा।
**खंब—पु० (कां०, ह०) स्तंभ।**
**खंबना**—अ० क्रि० (मं०) लटकना।
**खंबरू**—पु० (मं०) पतीला।
**खंभ**—पु० (चं०) पंख।
**खंराड़**—पु० (मं०) भूमि का कटाव।
**खंसारा**—पु० (चं०, कु०) कमी, न्यूनता।
**खंई**—स्त्री० (शि०) जंग।
**खउवा**—पु० (चं०) कंघा।
**खक्खर**—वि० (कां०) चालाक।
**खक्खर**—पु० (बि०) भिड़ों का छत्ता।
**खक्खर**—वि० (बि०) बिल्कुल खुश्क।
**खक्खा**—वि० (चं०) हकलाने वाला।
**खख**—स्त्री० (मं०) मुख।
**खखड़ोला**—पु० (शि०) मुर्गों को रखने का स्थान।
**खखतावड़ी**—स्त्री० (सि०) जबड़ा।
**खखना**—स० क्रि० (सि०) किसी के बोलने की नकल करना।
**खखरोला**—पु० (चं०) कलगी वाला पक्षी विशेष।
**खखांठ**—वि० (मं०) चपल।
**खखा**—पु० (मं०) क्षत्री, क्षत्रिय।
**खखाड़ी**—स्त्री० (चं०) गाल।
**खखाण**—पु० (मं०) पकाते हुए बर्तन में नीचे लगे चावल।
**खखानी**—स्त्री० (बि०) पत्थर को दूर मारने का एक साधन।
**खखी**—स्त्री० (मं०) बिना तला पकवान।
**खखोड़ू**—पु० (बि०) गाल।
**खख्यार**—पु० (बि०) वृक्ष विशेष।
**खग**—पु० (मं०) खरगोश।
**खगार**—पु० (शि०) बलगम।
**खगाश**—पु० (मं०) कफ, बलगम।
**खचखचाक**—पु० (बि०) वृथालाप, कोलाहल।
**खचनोल**—पु० (शि०) मछली पकड़ने के कांटे में लगे दाने।
**खचरा**—वि० धूर्त।
**खचरोला**—पु० (सि०) खच्चर हांकने वाला।
**खचरेड़**—वि० (बि०) चतुर, चुस्त, चालाक।
**खच्चराई**—पु० (बि०) खच्चरों का काम करने वाला।
**खछला**—वि० (मं०) मटमैला।
**खछा**—वि० (मं०) कृपण, कंजूस।
**खजणा**—स० क्रि० (सो०) खाली पात्र को भरना। कान में किये गए छेद का बंद होना।
**खजरा**—पु० (मं०) जहरीला कीड़ा, **कनखजूरा।**
**खजरेवणा**—स० क्रि० (शि०, सो०, सि०) खिझाना।
**खजलखवारी**—स्त्री० (चं०) अपयश, बेआबरू, बेइज़्ज़त।
**खजाना**—पु० निधि, कोश।
**खज़ेड़ना**—स० क्रि० (शि०) पीछा करना।
**खजेरना**—स० क्रि० (कां०, ह०) खीज दिलवाना, खिझाना।
**खज्जर**—पु० (चं०) एक जंगली घास।
**खज्जल**—वि० (सि०) बदनाम।
**खट**—स्त्री० (बि०) चारपाई।
**खट**—स्त्री० (बि०) भानजे की शादी में मामा द्वारा दिया जाने वाला भोजन।
**खटका**—पु० (मं०) दे० खड़का।

**खटण**—पु० (कु०, सि०) ढक्कन।
**खटणा**—स० क्रि० (चं०, कु०) कमाना, अर्जित करना। ढकना।
**खटनाऊ**—पु० (बि०, कां०) पशु की खाल जिसमें हवा भर कर नदी आदि पार की जाती है।
**खटनालू**—पु० (कां०) मोतिया फूल।
**खटपट**—स्त्री० मतभेद, अनबन।
**खटमरोड़ा**—पु० (चं०) खट्टी पत्तियों वाला घास।
**खटयाड़ा**—पु० (मं०) पशुओं के खुरों में पड़ा कीड़ा।
**खटयोड़**—स्त्री० (शि०) कच्चे धान की 'मूड़ी'।
**खटरसा**—वि० (मं०) खट्टे रस वाला।
**खटिअण**—पु० (सि०) पहनने तथा ओढ़ने का वस्त्र।
**खटिन**—स्त्री० (सि०) खट्टी गंध।
**खटी**—स्त्री० (कु०) कमाई।
**खटैसर**—वि० (कां०) अधिक खट्टा।
**खटैहूण**—स्त्री० खट्टी वस्तु की गंध।
**खटोणी**—वि० (शि०) गंदी (स्त्री)।
**खटोणो**—वि० (शि०) गंदा व्यक्ति।
**खटोला**—पु० (मं०) छोटी खाट।
**खटौडा**—पु० (शि०) घर के आगे लगा जंगला।
**खट्टश**—पु० (मं०) मृत्यु से पूर्व व्यक्ति द्वारा किया गया दान।
**खट्टी**—स्त्री० कमाई।
**खट्टेई**—स्त्री० (शि०) चटनी।
**खठणा**—अ० क्रि० (मं०) तंग होना।
**खठी**—स्त्री० (मं०) दुःखी स्त्री।
**खडंग**—वि० (शि०) कठोर स्वभाव वाला।
**खड़**—पु० (मं०) खलिहान।
**खड़**—पु० (कां०) छप्पर में प्रयुक्त सूखा घास।
**खड़**—पु० (शि०) घास, तिनका।
**खड़**—पु० (चं०) अन्न व घास का मिश्रण।
**खड़क**—स्त्री० एक वृक्ष विशेष जिसके पत्ते चौड़े होते हैं।
**खड़कणा**—अ० क्रि० खटकना।
**खड़कन्ना**—पु० (चं०) गधा।
**खड़कन्नू**—पु० (बि०) खरगोश।
**खड़का**—पु० आहट। खटका।
**खड़काई**—स्त्री० डांट।
**खड़की**—स्त्री० (शि०) एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
**खड़कोलू**—पु० (सो०) 'खड़क' वृक्ष के फल।
**खड़खंडी**—स्त्री० (मं०) एक कांटेदार औषधि।
**खड़खोट**—पु० (मं०) खड़े पौधे से मक्की निकालने का भाव।
**खड़गाही**—स्त्री० (मं०) अन्न को खलिहान में डालने की क्रिया।
**खड़गैती**—स्त्री० (मं०) विशेष युद्ध के नृत्य की धुन।
**खड़जंत्र**—पु० (चं०) माया जाल, षड्यंत्र।
**खड़जा**—पु० (मं०) बिरोजा।
**खड़ताल**—स्त्री० वाद्ययंत्र।
**खड़ना**—अ० क्रि० (सो०, शि०) दे० खौड़ना।
**खड़पंच**—वि० हस्तक्षेपकारी, दखलअंदाज़।
**खड़पंची**—वि० जबरदस्ती पंचायत या हस्तक्षेप करने वाला।
**खड़पक**—पु० (कां०) वृक्ष पर ही पकने वाला फल।
**खड़पत**—पु० (सि०) वृक्ष विशेष।
**खड़पा**—पु० अधिक विषभरा सांप।
**खड़प्पका**—पु० (कु०) बात में से बात, गप्प, इधर-उधर की बातें।
**खड़बड़ी**—स्त्री० (मं०) अव्यवस्था।
**खड़बा**—पु० (सो०) टांगों की थकान।
**खड़याथा**—पु० (मं०) बटलोई से भात निकालने के लिए प्रयुक्त बड़ा कलछा।
**खड़यायत**—स्त्री० (कु०) खड्ग (तलवार) द्वारा किया जाने वाला नृत्य।
**खड़याली**—स्त्री० (सो०) चूल्हे का अगला भाग।
**खड़यालू**—पु० (बि०) छोटी बरसाती ''खड्ड''।
**खड़राह**—पु० (कां०) नदी किनारे का खेत।
**खडांघ**—वि० (कु०) ऊबड़-खाबड़।
**खड़ाइतर**—स्त्री० (कु०) दे० खड़यायत।
**खड़ाउण**—स्त्री० (सि०) माघ के आठ प्रविष्टे को होने वाला उत्सव।
**खड़ाउणा**—स० क्रि० (सि०, शि०) बिखेरना।
**खड़ाऊं**—पु० (कु०) काठ की पादुका।
**खड़ाका**—पु० (चं०) ठहाका।
**खड़ाकी**—स्त्री० (कु०) चूहेदानी, पिंजरा, तारों और लकड़ी का फंदा।
**खड़ाचण**—पु० (सि०) एक त्योहार का नाम।
**खड़ाटा**—पु० (सि०) मक्की का आटा।
**खड़ाड़ना**—स० क्रि० (मं०) मिश्रित करना।
**खड़ाण**—स्त्री० (सि०) खटाई की गंध।
**खड़ाणी**—स्त्री० (चं०) नाले का रुका पानी।
**खड़ावणो**—स० क्रि० (शि०) थकाना।
**खडियारी**—स्त्री० (कां०) घास वाली भूमि।
**खडियेखड़ा**—पु० (मं०) सीधी चढ़ाई।
**खड़ीआइत**—स्त्री० (कु०) दे० खड़यायत।
**खड़ीआन**—स्त्री० (कु०) इमारत में प्रयुक्त बड़ी शहतीर।
**खड़ीतर**—स्त्री० (कु०) नक्काशी।
**खड़ीहणा**—अ० क्रि० (चं०) खड़ा होना।
**खडुंबा**—पु० (कां०) मोटी सिलाई या कटाई।
**खड़ना**—अ० क्रि० (सो०) थक जाना।
**खडूंड**—पु० (सि०) जानवर का सिर।
**खडूनू**—पु० (कु०) रक्षाबंधन का त्योहार।
**खडून्नी**—स्त्री० श्रावणी-पर्व, रक्षाबंधन।
**खड़ेरना**—स० क्रि० खड़ा करना।
**खड़ेरिना**—स० क्रि० (कु०) खड़ा किया जाना।
**खड़ेहणी**—स्त्री० (मं०) सहारा देने के लिए लगाई लकड़ी।
**खड़ैप**—अ० (कु०) एकदम।
**खड़ैपका**—पु० (कु०) दे० खड़प्पका।
**खड़ैहत्तर**—स्त्री० चरागाह।
**खड़ोड़ी**—स्त्री० (ह०) फसल काटने हेतु लगाए गए लोगों की

टोली।
**खड़ोणा**—अ० क्रि० (कां०, ह०) खड़े होना।
**खड़ोत्या**—पु० (मं०) काम के बदले दिया जाने वाला अनाज़।
**खड़ोल**—पु० (शि०) काटी हुई फसल को सुरक्षित रखने का स्थान।
**खड़ोशी**—स्त्री० (शि०) बड़ी कुदाली।
**खड़ौआं**—पु० (बि०) खड़ाऊं।
**खड़ौली**—स्त्री० (सि०) खलिहान के निकट का छोटा अन्न भंडार।
**खड्ड**—स्त्री० छोटी नदी, बड़ा नाला।
**खड्डी**—स्त्री० (मं०) बकरी।
**खड्डी**—स्त्री० वस्त्र बुनने का यंत्र, विशेष प्रकार का करघा।
**खड्डू**—पु० (शि०) मेढ़ा, मेष।
**खड्डे**—पु० (चं०) मक्की के भुने हुए दाने।
**खढ़ा**—पु० (मं०) गढ़ा, गड्ढा।
**खण**—पु० (मं०) समुद्री लवण।
**खणकेरू**—पु० (सि०) कड़वा खीरा।
**खणना**—स० क्रि० खोदना।
**खणाई**—स्त्री० खुदाई।
**खणार**—पु० (चं०) खोदने वाला।
**खणारी**—स्त्री० (चं०) खुदाई।
**खणियार**—पु (कु०) ऐसा क्षेत्र जहां कुदाल से खोद कर ही बीज बोया जाता है।
**खणीण**—स्त्री० (सि०) मिठास। लज़्ज़त। खुशबू।
**खणेज़ा**—पु० (कु०) ऐसे दाने जिन्हें खाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है और बीजा नहीं जाता।
**खणेठा**—वि० (कु०) एक ओर से कटा हुआ या टूटा हुआ।
**खणेणा**—स० क्रि० (सो०) खोदना।
**खतपरता**—वि० (कु०) मलिन, मैला।
**खतरोड़ना**—स० क्रि० (सो०) छेद करना, कुरेदना।
**खती**—स्त्री० (कां०, ह०) भूमि में बनाया गया जलसंग्रह का स्थान।
**खत्याणा**—स० क्रि० (कां०, ह०) लकड़ी पर पेंसिल से निशान लगाना।
**खदला**—वि० (कु०, चं०) मैला, गंदा (पानी)।
**खदा**—पु० (मं०) कलह।
**खदारे**—स्त्री० (शि०) भोजन पकाने वाली स्त्री।
**खदारो**—पु० (शि०) रसोइया।
**खदेड़ना**—स० क्रि० भगाना।
**खदेरे**—स्त्री० (शि०) दे० खदारे।
**खदोड़**—वि० (मं०) दर्दमंद।
**खदोलना**—स० क्रि० गंदा करना।
**खद्दर**—पु० सूती वस्त्र।
**खघल**—वि० (मं०) मैला।
**खघूसा**—वि० (चं०) अधिक खाने वाला, पेटू।
**खनखन**—स्त्री० (मं०) खनक।
**खनाड़े**—स्त्री० (मं०) आंख का फोड़ा, फुंसी।
**खनालटी**—स्त्री० (शि०) पलकों का फोड़ा।
**खनाळी**—स्त्री० (बि०) दे० खनालटी।
**खनुलटी**—स्त्री० (सि०) दे० खनालटी।
**खनेढ़**—स्त्री० (कु०) पहाड़ी पर स्थित खुली जगह।
**खनेरना**—स० क्रि० (कु०) साफ करना, मैल निकालना।
**खनेरना**—स० क्रि० (मं०, चं०) उड़ेलना, खाली करना।
**खनेवणी**—स्त्री० (शि०) खुजली।
**खनेसरा**—वि० (कु०) एक ओर से टूटा हुआ (बर्तन, औज़ार आदि)।
**खनोढ़ी**—स्त्री० (मं०) वाग्दान, सगाई।
**खनोतर**—पु० (मं०) खान के पत्थर।
**खनोर**—पु० (मं०, कु०) एक जंगली वृक्ष एवं उसका फल।
**खन्ना**—वि० (कु०) कटे हुए होंठ वाला।
**खन्यार**—पु० (कु०) खोदने के लिए खाली स्थान।
**खन्ह**—पु० (चं०) 'लहासा' गिरने से रिक्त हुआ स्थान।
**खन्हां**—वि० (चं०) आधा।
**खप**—स्त्री० शरारत।
**खपका**—पु० (कु०) कुदाल की चोट।
**खपणा**—अ० क्रि० समा जाना। हिलमिल जाना।
**खपणा**—अ० क्रि० (चं०) तंग आना।
**खपती**—वि० (मं०) सनकी, ख़ब्ती, जिसे ख़ब्त हो।
**खपर**—पु० (सि०) खोपड़ी। मिट्टी का बर्तन, लकड़ी का पात्र विशेष।
**खपरा**—वि० (मं०) बूढ़ा।
**खपराल**—पु० (चं०) खुला मकान।
**खपरैल**—पु० खपड़ा, छत बनाने के लिए नालीनुमा बनाए मिट्टी के टुकड़े। झोंपड़ी।
**खपरौढ़**—वि० (मं०) वृद्धा।
**खपरौढ़ा**—वि० (मं०) जिस वृद्धा से सब तंग आ जाएं। अ० घृणासूचक शब्द।
**खपाणा**—स० क्रि० (मं०, कु०) खपत करना।
**खपैत**—स्त्री० (सि०) बचत, क़िफ़ायत।
**खप्प**—स्त्री० शरारत।
**खप्पणा**—स० क्रि० (बि०, चं०) अधिक दिमाग लगाना।
**खप्पर**—पु० दे० खपरैल।
**खप्पराल**—वि० (चं०) भूखा। पु० अधिक हानि।
**खप्पी**—वि० शरारती।
**खफरना**—अ० क्रि० (मं०) वृद्ध होना।
**खफलना**—अ० क्रि० (मं०) सठियाना।
**खफैण**—पु० (मं०) कफन।
**खबचू**—वि० बायें हाथ से काम करने वाला।
**खबड़ा**—वि० (सि०) दे० खबचू।
**खबर**—स्त्री० समाचार।
**खबेऊंणा**—स० क्रि० (कु०) चुमाना।
**खबेरना**—स० क्रि० (कु०) गाड़ना।
**खबेरिना**—स० क्रि० (कु०) गाड़ा जाना।
**खबोइणा**—स० क्रि० चुमाया जाना।
**खबोणा**—स० क्रि० चुमाना।
**खबोहड़ी**—स्त्री (मं०) सगाई।

**खब्बड़**—वि० (चं०) दे० **खबचू**।
**खब्बल**—पु० हरा घास, दूब।
**खब्बली**—स्त्री० (कां०, ह०) दर्भ वाली भूमि।
**खब्बा**—वि० वाम, बायां।
**खब्बा**—पु० (कां०) पत्तों का दोना।
**खब्बीखान**—वि० (कां०, ह०) धनवान्।
**खब्भर**—वि० (चं०) समतल।
**खमकणा**—अ० क्रि० (वि०, चं०) कीचड़ में घुसना।
**खमाणा**—स० क्रि० (कां०, ह०) चुभाना।
**खमयाणा**—स० क्रि० (मं०) परिणाम भुगतना।
**खमरखोल**—वि० (चं०) ऊबड़-खाबड़।
**खमस**—स्त्री० (बि०) डांट।
**खमसड़**—वि० (चं०) ढीला-ढाला। वृद्ध।
**खमानी**—स्त्री० खूबानी फल।
**खमार**—पु० गरमी, उष्णता, ताप।
**खमीर**—पु० खट्टा आटा।
**खमोध**—पु० (चं०) मांस का विशेष पकवान।
**खम्सड़**—वि० (चं०) अधिक बूढ़ा।
**खम्हाण**—स्त्री० (चं०) खराबी।
**खरंदल**—पु० (ह०) Ficus clavata.
**खर**—पु० (मं०) गधा।
**खरकड़ा**—वि० (सि०) खड़-खड़ करने वाला (हल)।
**खरकणा**—पु० (बि०) बांस आदि का बना झाड़ू।
**खरकनी**—स्त्री० (शि०) खुजली।
**खरका**—वि० (सो०) अधिक गहरा जाने वाला (हल)।
**खरकाउण**—स्त्री० (कु०) खारिश।
**खरखत**—स्त्री० (मं०) जनसमूह।
**खरखरा**—वि० (सि०) ऊबड़-खाबड़, खुरदरा।
**खरगोह**—पु० (मं०) खरगोश।
**खरजणी**—स्त्री० (शि०) खुजली।
**खरजेउणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) परेशान करना, तंग करना, मज़ाक करना।
**खरड़**—स्त्री० (चं०) डांट।
**खरड़घंडोली**—स्त्री० (बि०) तोरी प्रजाति की सब्जी।
**खरड़ना**—स० क्रि० (चं०) रगड़ना।
**खरड़बाट**—स्त्री० (चं०) रस्सी की कसी हुई बाट।
**खरड़ा**—वि० खुरदरा।
**खरड़ा**—पु० (कु०) पशुओं का खारिश का रोग।
**खरड़ावणा**—स० क्रि० (सो०) घसीटना।
**खरड़ियाखणा**—अ० क्रि० (बि०) छटपटाना।
**खरड़ी**—स्त्री० (मं०) कुल्हाड़ी।
**खरडीणा**—स० क्रि० (चं०) डांट खाना।
**खरदाल**—पु० (कां०) Trema Politoria
**खरना**—पु० (सि०) घर, कुल, खानदान।
**खरना**—अ० क्रि० क्षरित होना, गलना।
**खरनाडु**—पु० (मं०) एक जंगली झाड़ी।
**खरनु**—पु० (मं०) जंगली फल।
**खरबरावणा**—स० क्रि० (सो०) दही बिलोना।
**खरबाड़**—पु० (मं०, कु०) Habenarea densa, दवा के काम आने वाली लता विशेष।
**खरबावणा**—स० क्रि० (सो०) उखाड़ना।
**खरमला**—पु० (मं०) खुले मुंह का बर्तन।
**खरमस्ती**—स्त्री० शरारत, उद्दंडता।
**खरमाणी**—स्त्री० (कां०) खूबानी।
**खरमुंडळा**—वि० (शि०) बिना सींगों का (पशु)।
**खरमुंडळो**—वि० (शि०) गंजा, खल्वाट।
**खरमुंडी**—स्त्री० (शि०, सो०) उलटबाजी, सिर के बल पलटा।
**खरमुही**—स्त्री० (बि०) पशुरोग।
**खरयाई**—स्त्री० (कां०, चं०, ह०) अच्छाई।
**खरयाटणा**—स० क्रि० (बि०) कठिनाई से मंज़िल पार करना।
**खरयाड़ी**—स्त्री० (मं०) पशुओं के पावों में कीड़े पड़ने का रोग।
**खरयाली**—स्त्री० (कु०, मं०) दे० खरयाड़ी।
**खरल**—पु० पत्थर की नोकाकार कुंडी जिसमें औषधि पीसते हैं।
**खरलूण**—पु० (मं०) समुद्री नमक।
**खरलौ**—पु० (मं०) विनाश।
**खरल्याउणा**—अ० क्रि० (मं०) छटपटाना।
**खरश**—स्त्री० (सो०) खुजली।
**खरशू**—पु० (शि०, कु०) ऊंचाई पर होने वाली इमारती लकड़ी।
**खरशू**—वि० (शि०) दुष्ट, दुर्जन।
**खरस**—स्त्री० (मं०) दे० खरश।
**खरांउता/ती**—वि० (कु०) जिसके साथ कोई निकट का रिश्ता न हो और जिससे विवाह किया जा सकता हो।
**खरांट**—वि० (कु०) हठी, अनुभवी, होशियार।
**खरांवक**—पु० (सो०) सत्तु के लिए अधिक भुनी हुई मक्की।
**खरा**—वि० अच्छा।
**खराइणा**—अ० क्रि० (कु०) दे० खराळिणा।
**खराई**—स्त्री० (चं०) अच्छाई।
**खराक**—स्त्री० खुराक, संतुलित भोजन।
**खराकणा**—स० क्रि० (चं०, कु०) साफ करना, पानी के लिए रास्ता बनाना।
**खराकणा**—स० क्रि० (सि०) खुजलाना, खुजली करना।
**खराकणा**—पु० झाड़ी के तिनकों से बना झाड़ू।
**खराकणू**—पु० झाड़ी के तिनकों से बना छोटा झाड़ू।
**खराकार**—पु० (मं०) शुभ कार्य।
**खराकिणा**—स० क्रि० (कु०) साफ किया जाना।
**खराकी**—वि० खाने-पीने का शौकीन।
**खरा-खासा**—वि० स्वस्थ, भला-चंगा।
**खराट**—स्त्री० (सि०) मकान या दीवार की नींव में नुकसान पहुंचाने वाली खाई।
**खराट**—स्त्री० (शि०) मक्की के पौधों के आस-पास खोदने की क्रिया।
**खराटड़**—पु० (मं०) नाले का किनारा।
**खराटणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) हाथ-पैर चलाना।
**खराटळ**—पु० (कु०) नाले के साथ की पत्थरों वाली जगह।
**खराड़ा**—पु० (सि०) फसल की पहली गोड़ाई।

**खराड़ा**—वि० (सि०) मज़बूत।
**खराड़ी**—स्त्री० (कु०, शि०) कुल्हाड़ी।
**खराण**—स्त्री० (मं०) चावल की पपड़ी।
**खराणी**—स्त्री० (कु०) नमक वाला पानी, खारा पानी।
**खरात**—स्त्री० (चं०) दान, खैरात।
**खराद**—पु० लकड़ी आदि को तराशने का औज़ार।
**खरादणा**—स० क्रि० लकड़ी आदि को तराशना, खुरचना।
**खरादी**—पु० लकड़ी को तराशने वाला।
**खरार**—पु० (मं०) कटाव।
**खराल**—स्त्री० दे० खराट।
**खरालना**—स० क्रि० किसी वस्तु को बचाकर या सुरक्षित रखना।
**खराळिणा**—अ० क्रि० (कु०) जिसके साथ नज़दीक का रिश्ता न हो उससे हंसी मज़ाक करना या ठट्ठा करना।
**खरालो**—वि० (सि०) नमकीन।
**खराश—स्त्री० (सि०, सो०) जुकाम आदि से गले में हुई खारिश।**
**खराश**—स्त्री० (कु०) गाय को दुहते समय उसकी टांग में बांधी जाने वाली रस्सी।
**खरास**—पु० (चं०) खुरदरापन।
**खरिंउणा**—स० क्रि० (सो०) कांटे को सुई आदि से निकालना।
**खरिंगण**—स्त्री० (सि०) तेज धार वाला पत्थर।
**खरिंघट**—स्त्री० (बि०) श्वास नली में भोजन आदि पड़ने पर विवशता से हुई उलटी।
**खरिःडू**—पु० (कु०) एक पक्षी विशेष।
**खरिःरा**—वि० (सि०, कु०) तिक्त, कड़वा, तीखा।
**खरिःरी**—स्त्री० (कु०) गले में होने वाली खारिश, जलन।
**खरिआड़ू**—पु० (कु०) भेड़ के बच्चे रखने का स्थान।
**खरिउंकड़ा**—वि० (सि०) अधिक गहरा जाने वाला हल।
**खरिस्त**—पु० (कां०) साथ-साथ चलने वाला व्यक्ति।
**खरींडा**—पु० (कु०) खुर।
**खरी**—वि० (शि०) तेज।
**खरीचणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) खुरचना।
**खरीणा**—स० क्रि० (शि०) घिसना।
**खरीत**—वि० (कु०) अधिक नमक वाला।
**खरीदी**—स्त्री० (मं०) अच्छी घास पैदा होने का स्थान।
**खरूक**—स्त्री० (शि०) खुजली।
**खरूट्ट**—पु० (सो०) खरगोश।
**खरूद**—पु० (कां०, कु०) झंझट, समस्या, दु:खदायी वस्तु महामारी।
**खरूहडी**—स्त्री० (सि०) देव मंदिर की छतों के साथ लगी लकड़ी की झालर।
**खरूहड़ी**—स्त्री० (कु०) एक पक्षी विशेष जो बरसात में प्रात: सायं बोलता है।
**खरेऊ**—पु० (सि०) जंगली वृक्ष जिसके पत्ते चारे के काम आते हैं।
**खरेचाली**—स्त्री० (मं०) पशुओं के खुर में होने वाला रोग।
**खरेट**—स्त्री० (कु०) लंबा शहतीर।
**खरेटणा**—स० क्रि० (कु०) छिलके उतारना।
**खरेठण**—पु० (सि०) भूत-प्रेत।
**खरेठणा**—अ० क्रि० (बि०, सि०, मं०) तड़पना।
**खरेड़ना**—स० क्रि० खड़ा करना।
**खरेड़ा**—पु० (मं०) कुल्हाड़ा।
**खरेड़ा**—पु० (मं०) लकड़ी या अनाज का बोझ।
**खरेड़िना**—स० क्रि० (कु०) खड़ा किया जाना।
**खरेड़ी**—स्त्री० (सि०) भेड़-बकरी की टांग।
**खरेड़ुवा**—पु० (बि०) दे० खरेचाली।
**खरेड़ू**—पु० (चं०) दे० खरेचाली।
**खरेढ़ा**—पु० (चं०) दे० खरेचाली।
**खरेतड़**—स्त्री० (कां०, ह०) बंजर भूमि।
**खरेतड़ी**—स्त्री० (कां०, ह०) कृषि के अयोग्य एवं घास वाली भूमि।
**खरेदण**—स्त्री० (कु०) पशुओं के मुंह और खुरों में होने वाली बीमारी।
**खरेदिणा**—अ० क्रि० (कु०) पशुओं में 'खरेदण' रोग लग जाना, 'खरेदण' रोग से पशुओं का पीड़ित होना।
**खरेरना**—स० क्रि० (कु०) दे० खरेड़ना।
**खरेरिना**—स० क्रि० (कु०) दे० खरेड़िना।
**खरेवड़ा**—पु० (सि०) रस्सी का टुकड़ा।
**खरेही**—स्त्री० (चं०) घोड़े के बाल साफ करने का कंघा।
**खरेहु**—स्त्री० (चं०) सरसों।
**खरैंटी**—स्त्री० (सि०) Sida spp, वाट्यपुष्पी।
**खरैघड़—पु० (कु०) ऐसा बछड़ा जिसे अभी पशुशाला से बाहर न निकाला हो।**
**खरैहत्तड़**—स्त्री० (कां०, ह०) घास वाली भूमि।
**खरैहो**—पु० (चं०) एक वृक्ष जिसके पत्ते चारे के काम आते हैं।
**खरों**—पु० (सि०) पलकों के बाल।
**खरोखण**—स्त्री० (मं०) खारिश।
**खरोग**—पु० (कु०) खुर-रोग, पशुओं के खुरों का रोग।
**खरोगिणा**—अ० क्रि० (कु०) पशुओं में 'खरोग' फैलना, 'खरोग' से पशुओं का पीड़ित होना।
**खरोचणा**—स० क्रि० (कु०) खरोंचना।
**खरोड़**—स्त्री० (चं०) खरोंच।
**खरोड़ना**—स० क्रि० (कु०, बि०, चं०) खुरचना, ऊपर-ऊपर से खोदना।
**खरोड़ना**—स० क्रि० (चं०) मुर्गी का अंडे सेना।
**खरोड़ना**—स० क्रि० मक्की के भुट्टे से दाने निकालना।
**खरोड़ा**—पु० (कु०) साधारण सी गोड़ाई, हलकी गोड़ाई।
**खरोढ़ा**—पु० (मं०) ऐसा पत्थर जो चलते हल से फंस जाए।
**खरोढ़ा**—पु० बकरे की टांग का घुटने से नीचे का भाग।
**खरोतणा**—स० क्रि० खुरचना, कुरेदना।
**खरोल**—पु० (शि०) फसल एकत्रित करने का स्थान।
**खरोलणा**—स० क्रि० आग और धूल को हिलाना मिलाना।
**खरोलणा**—स्त्री० (बि०, चं०) उबकाई।
**खरोळना**—स० क्रि० (सो०) मक्की आदि के दाने निकालना।
**खरोळा**—पु० (सि०) कुछ चीज़ों को इकट्ठे कलछी आदि से

मिलाने की क्रिया।
खरोइड़ी—स्त्री० (चं०) भूमि आसन।
खरोइलणा—स० क्रि० (कां०, ह०) कुरेदना।
खरौंटा—पु० (मं०) छप्पर के नीचे दीवार का खाली रहने वाला स्थान।
खरौ—पु० (कु०) पलकों के बाल।
खरौड़ना—स० क्रि० (कु०) छिलका उतारना।
खरौडू—पु० (मं०) छोटी कुल्हाड़ी।
खरौड़ो—पु० (मं०) कुल्हाड़ा।
खर्चालु—वि० (चं०) खर्चीला।
खळ—स्त्री० (चं०) खली, सरसों का तेल निकालने पर शेष बचा पदार्थ।
खळ—स्त्री० (मं०) खलिहान।
खळ—स्त्री० (कां०) खाल, धौंकनी।
खलक—स्त्री० (सि०, सो०) जनसमूह।
खलकत—स्त्री० (चं०) प्रजा, लोग, जनसमूह।
खलखलाट—स्त्री० (बि०, मं०) हलचल।
खलजग्गण—स्त्री० (सो०) वस्तुओं को व्यवस्थित ढंग से रखने का व्यापार।
खळज़ा—पु० बिरोजा।
खलद्यान—पु० (सो०) कलाबाजियां।
खलड़ा—पु० (कु०) भेड़ या बकरी की खाल का बना थैला।
खलड़ा—पु० (सो०) चमड़ा।
खलड़ी—स्त्री० (चं०, सो०, सि०) भेड़-बकरी आदि की खाल, शरीर की ऊपरी चमड़ी।
खलडू—पु० (कु०) खाल का छोटा थैला।
खळणा—अ० क्रि० (सि०) व्यर्थ जाना।
खलदरा—पु० (चं०) दे० खळज़ा।
खलधोणा—स० क्रि० (कां०) धौंकनी से हवा करना।
खलबली—स्त्री० हलचल।
खलबेड़—पु० (सि०) लपेट।
खलयाण—पु० (सो०) खलिहान।
खलयाणा—स० क्रि० खेल करवाना।
खलवाड़ा—पु० (कां०) खलिहान।
खला—पु० (शि०) खुजली, कुत्तों में बाल झड़ने का रोग।
खला—पु० (कु०) आवाज़।
खलाइणा—अ० क्रि० (कु०) आपस में उपहास करना।
खलाइत—पु० (शि०) रक्षक, बच्चों की देखरेख करने वाला।
खलाउणो—स० क्रि० (सि०, शि०) खिलाना।
खलाड़ा—पु० (चं०) खलिहान।
खलाड़ी—पु० खिलाड़ी।
खलाणा—स० क्रि० (कु०, मं०) खिलाना, खेल में शामिल करना।
खलाना—पु० (बि०) वृक्ष विशेष।
खलापा—पु० (कु०) उपहास, कठिनाई।
खलार—पु० फैलाव, विस्तार।
खलारना—स० क्रि० बिखेरना।
खलारा—पु० फैलाव।
खलास—वि० (चं०) समाप्त।
खलासा—पु० (बि०, चं०) छुटकारा।
खलासी—पु० सेवक, नौकर।
खलाहड़ा—पु० (सि०) तीर-कमान से खेलने वाला। 'ठोडा' नामक लोक नाट्य का दक्ष खिलाड़ी।
खलाहर—स्त्री० (मं०) छोटी नहर।
खलिंजा—पु० (सि०) उलझन।
खलित्ति—स्त्री० (सो०) सूई धागा आदि रखने का कपड़े का थैला।
खलिपड़ा—पु० (कु०) मोटी सूखी खाल।
खलिहाण—पु० (कां०, ह०) खेत में ऐसी जगह जहां फसल गाही जाती है।
खली—स्त्री० (बि०) धान, घास आदि का ढेर।
खलीतड़ी—स्त्री० (चं०) चमड़े या कपड़े का बटुआ जिसमें तंबाकू रखा जाता है।
खलीदरा—पु० (चं०) बिरोजा।
खलीहल—स्त्री० (चं०) दर्द, पीड़ा।
खलूहा—पु० (चं०) सर्वनाश।
खलेकड़ा—पु० (सि०) अनार का छिलका।
खलेचड़ा—पु० (सि०) दे० खलेकड़ा।
खलेड़ना—स० क्रि० (कु०) चमड़ी उधेड़ना, खाल उतारना।
खलेड़िना—स० क्रि० (कु०) चमड़ी उधेड़ी जाना, खाल उतारी जाना।
खलेडू—पु० (मं०) जलविहार, आनंददायक खेल।
खलेपड़—पु० दीवार आदि का टूटा या उखड़ा पलस्तर या लेप।
खलेपड़ना—स० क्रि० (कु०) छीलना, चमड़ी छीलना।
खलेपड़ा—वि० (कु०) खाल या चमड़ी आदि का उखड़ा हुआ भाग।
खलेपड़िना—स० क्रि० (कु०) चमड़ी आदि का उतारा जाना।
खलेरना—स० क्रि० बिखेरना।
खलेरना—स० क्रि० (चं०) उलटाना।
खलेण—पु० खलिहान।
खलेर—पु० (मं०) खेल।
खलैल—स्त्री० (कां०, चं०) कलह, शोर।
खलो—पु० (शि०) खलिहान।
खलोड़ी—वि० (चं०) बंजर (भूमि)।
खलोडु—पु० (मं०) छोटा बछड़ा।
खलोथा—वि० (मं०) अनाड़ी, नासमझ, मंदबुद्धि वाला।
खलोथा—पु० 'खलोथी' लेने वाला।
खलोथी—पु० बढ़ई और लुहार आदि को दिया जाने वाला अनाज।
खलोम—पु० (सि०) ग्राम देवता विशेष।
खलोआ—पु० (बि०) एक वृक्ष विशेष।
खलोठ—पु० (कु०) खलिहान में लगाया जाने वाला बड़ा व चौड़ा पत्थर।
खलोणा—पु० खिलौना।
खल्लर—स्त्री० (मं०) गड़बड़ी, खलल।
खल्ला—पु० (कां०) धौंकनी।

**खल्ला**—पु० (चं०) ठोकर।
**खल्वाख**—पु० (मं०) गोबर में पैदा होने वाला कीड़ा।
**खल्ह**—पु० (चं०) फसल के दूर-दूर उगने की स्थिति, रिक्त स्थान।
**खल्हड़**—स्त्री० बड़ी खाल।
**खल्हड़खां**—वि० अधिक वस्त्र फाड़ने वाला।
**खल्हड़ी**—स्त्री० आटा आदि रखने के लिए बनाई गई खाल की थैली। धौंकनी।
**खल्हारी**—पु० (मं०) खिलाड़ी।
**खल्ही**—स्त्री० (चं०) फल विशेष।
**खल्ही**—स्त्री० (चं०) खंडहर। सूखे घास का व्यवस्थित ढेर।
**खल्हीउंड**—स्त्री० (कु०) खलिहान की दीवार।
**खल्हे-फल्हे**—पु० (चं०) गुण-दोष।
**खवा**—पु० (मं०) कंधा।
**खवाखा**—वि० (सि०) अधिक बोलने वाला, बातूनी।
**खवाड़ना**—स० क्रि० (सो०) उखाड़ना।
**खवाड़ा**—पु० (सि०) खलिहान।
**खवाड़ा**—पु० (मं०) संगृहीत वस्तुओं का अपव्यय के कारण नष्ट होने का भाव।
**खवाणा**—स० क्रि० खिलाना।
**खवादा**—पु० (मं०, कां०, ह०) जादू करके खिलाया गया कोई पदार्थ।
**खवानी**—स्त्री० (चं०) खूबानी।
**खवारा**—पु० (कु०) रीठा।
**खवास**—स्त्री० (मं०) रखैल, रनिवास की स्त्री।
**खश**—वि० (सि०) एक जाति विशेष।
**खशाखशा**—वि० (कु०) खुरदरा।
**खशपशाट**—स्त्री० (कु०) किसी वस्तु के समाप्त होने का भाव।
**खशपशाट**—स्त्री० (सो०) कानाफूसी, धीमी-धीमी आवाज़।
**खशबु**—स्त्री० सुगंध।
**खशमंतर**—पु० (कु०) चालाकी।
**खशरा**—वि० (कां०) तहों वाला।
**खशवैद**—स्त्री० (सि०) ईर्ष्या।
**खशांबल**—स्त्री० (कु०) एक झाड़ी विशेष जिसमें खट्टे-मीठे छोटे फल लगते हैं।
**खशामद**—स्त्री० खुशामद।
**खशीटणा**—स० क्रि० (कु०) घसीटना।
**खशेंशा**—पु० (शि०) दम फूलने का भाव।
**खशेषी**—स्त्री० (शि०) ऊनीवस्त्र की चुभन।
**खसका**—पु० (बि०) दीवार की चिनाई को कम करने का स्थान।
**खसकाइणा**—स० क्रि० (कु०) चुराया जाना, सरकाया जाना।
**खसकाणा**—स० क्रि० (कु०, मं०) चुराना; सरकाना।
**खस-खस**—पु० (मं०) पोस्तदाना, अफीम का बीज।
**खसम**—पु० पति।
**खसरा**—पु० (सो०) खुरदरा।
**खसरा**—पु० (बि०, चं०) अंजीर।
**खसरा**—वि० (मं०) खुश्क (व्यक्ति), कठोर।
**खसरा**—पु० ज़मीन का नक्शा, मानचित्र, राजस्व पत्र।
**खसरा**—पु० एक रोग-विशेष जो प्रायः बच्चों में अधिक होता है और जिसमें शरीर में फुंसियां निकलती हैं।
**खसराल**—पु० (बि०) कच्चा पत्थर।
**खसराली**—स्त्री० जिस भूमि की ऊपरी तह पतली हो।
**खसरीढ़**—वि० (मं०) झगड़ालू।
**खसरैलणी**—स्त्री० (कां०) रेतीली, भूमि।
**खसरैहणा**—वि० (बि०) कामचोर।
**खसलत**—स्त्री० (चं०) आदत।
**खसापसा**—पु० (चं०, कु०) हेरा-फेरी।
**खसीरना**—स० क्रि० (चं०) खींचना।
**खसुट**—पु० (सि०) दोष।
**खस्ता**—वि० (कु०, चं०) खराब, टूटा-फूटा।
**खस्सर**—पु० (कां०, ह०) खुजली का रोग।
**खहड़**—पु० (मं०) खलिहान।
**खहरू**—पु० (मं०) वृक्ष विशेष।
**खहल**—पु० (मं०) खलियान।
**खांग**—स्त्री० (मं०) खांसी।
**खांगणा**—अ० क्रि० (मं०) खांसना।
**खांचा**—पु० (बि०) लकड़ी कसने का यंत्र, सांचा।
**खांचा**—पु० (मं०) टोकरा।
**खांची**—वि० (कु०) पेटू।
**खांज़णा**—स० क्रि० (कु०) निकालना।
**खांद**—स्त्री० (सो०) देवता को अभिमंत्रित करके पारस्परिक व्यवहार व खानपान को बंद करने की प्रथा।
**खांदा**—पु० (शि०) अनाज रखने का बड़ा पात्र।
**खांदो**—पु० (सि०) अनाज का भंडार।
**खांबर**—पु० (कु०) गहरा छेद।
**खांबा**—पु० (शि०, सि०, सो०) खंभा, स्तंभ।
**खांबी**—स्त्री० (मं०) वर्षा से अन्न के बचाव के लिए खेत के समीप बना गृह।
**खांबो**—पु० (शि०) खंभा, स्तंभ।
**खाःणी**—स्त्री० (शि०) प्रतिज्ञा, कसम।
**खाइणा**—अ० क्रि० (सि०) कलह करना।
**खाइणा**—स० क्रि० (कु०) खाया जाना।
**खाई**—स्त्री० गड्ढा, खाई, खंदक।
**खाई**—स्त्री० (कु०) दरार।
**खाईणो**—अ० क्रि० (शि०) झगड़ना, लड़ना।
**खाउंका**—पु० (कु०) खाने की लालसा।
**खाउंशा**—पु० (कु०) दे० खाउंका।
**खाउणा**—अ० क्रि० (सो०) लड़ना, झगड़ना।
**खाउशड़**—पु० (शि०) काटने वाला कुत्ता।
**खाऊ**—वि० (बि०, सि०) बहुत खाने वाला।
**खाऊआ**—वि० (शि०, सि०) बदमाश, दुष्ट, रिश्वतखोर।
**खाऊमित्तर**—वि० (कु०, मं०) स्वार्थी।
**खाऊश**—वि० (शि०) बहुत खाने वाला, पेटू।
**खाक**—पु० (मं०) मुख।
**खाक**—पु० (शि०) गाल, कपोल।
**खाका**—पु० चित्र, रेखांकन, नक़्शा।

खाख—स्त्री० (कु०) मुख, खुला मुंह।
खाखड़ु—पु० (कु०, चं०) बच्चे के कपोल, मुख।
खाखपाटा—पु० (कां०) गोलगप्पा।
खाखमरोकणा—अ० क्रि० (मं०) व्यंग्यपूर्वक मुसकराना।
खाखी—वि० ख़ाकी (रंग)।
खाखे—वि० (सि०) दे० खाखी।
खाग—पु० (सि०) देवयज्ञ।
खागोइणो—अ० क्रि० (शि०) एक साथ होना।
खाच—पु० (कु०) गड्ढा, गहरा घाव।
खाच—स्त्री० (सि०, शि०) नींव।
खाच—वि० (कु०) ऊबड़-खाबड़, असमतल।
खाचणा—अ० क्रि० (कां०, ह०) अशुद्ध होना।
खाचर—स्त्री० (सि०, शि०) खच्चर।
खाचरू—स्त्री० (सि०, शि०) छोटी खच्चर।
खाचा—स्त्री० (कां०) खाई।
खाची—स्त्री० (शि०) अनाज रखने का स्थान।
खाची—स्त्री० (कु०) दे० खाचा।
खाज—स्त्री० खारिश।
खाजरा—वि० (शि०) धूर्त, शैतान।
खाजा—पु० (मं०) सूखे मेवे।
खाजा—पु० पकवान।
खाजी—स्त्री० कुत्ते के बाल झड़ने का रोग।
खाज़ी—स्त्री० (कु०) चर्म रोग जो प्रायः नितंब में अधिक होता है।
खाजूरो—वि० (शि०) स्वादिष्ट।
खाझ—स्त्री० (शि०) मिट्टी की गुफा।
खाट—स्त्री० (सि०) किसी स्थान को गिराने के लिए खोदी गई नाली।
खाट—स्त्री० चारपाई।
खाटकैऊ—स्त्री० (मं०) घाट।
खाटण—पु० (शि०) ढक्कन।
खाटणा—स० क्रि० (सि०) प्राप्त करना।
खाटणो—स० क्रि० (शि०) दे० खाटणा।
खाटळ—वि० (कु०, शि०) पथरीला खेत, नदी किनारे का पथरीला खेत।
खाटा—पु० (सि०) खटाई।
खाटिणा—स० क्रि० (कु०) ढका जाना।
खाटो—वि० (सि०) खट्टा।
खाटोणी—स्त्री० (शि०) ढक्कन।
खाड—स्त्री० (मं०) छोटी नदी।
खाड—पु० (चं०) जबड़ा।
खाड़—स्त्री० (सि०) गुफा, कंदरा।
खाडलू—पु० (कां०, ह०) नाले का पत्थर, घास आदि।
खाडा—पु० (चं०) दुर्बलता के कारण गालों का धंसा हुआ आकार।
खाड़ा—पु० अखाड़ा, मल्लयुद्ध का स्थान।
खाड़ा—पु० (सि०) किनारा।
खाड़ा—पु० (सि०) तमाशा, दृश्य।
खाड़िया—स्त्री० (शि०) खड़िया मिट्टी।
खाड़ो—पु० (शि०) अखाड़ा।
खाड्डा—पु० (शि०, सि०) अधिक वर्षा से बनने वाला गड्ढा।
खाण—पु० भोजन।
खाणका—वि० (सो०, शि०, चं०) काटने वाला (कुत्ता)।
खाणका—वि० (सि०) पागल (व्यक्ति)।
खाणका—वि० भुक्खड़। पेटू।
खाणको—वि० (सि०) पागल (जानवर)।
खाणपीण—पु० खानपान।
खाणपीणी—स्त्री० (कु०) ज़ियाफत, दावत।
खाणसरा—वि० (सो०) पेटू।
खाणा—पु० भोजन।
खाणाहार—वि० (ऊ०) खाने योग्य वस्तु।
खाणू—वि० दायें हाथ से काम करने वाला।
खाणो—पु० (सि०, शि०) भोजन।
खात—स्त्री० (सि०, शि०) अन्न-भंडार।
खात—स्त्री० (मं०, बि०) खाई, गड्ढा।
खातर—स्त्री० (चं०, कु०) गड्ढा, आलू रखने के लिए भूमि में बनाई गई खाई।
खातर—अ० के लिए।
खातर—स्त्री० सम्मान।
खातरदारी—स्त्री० आतिथ्य।
खातरा—पु० (मं०) खतरा।
खाता—पु० गड्ढा।
खाता—पु० लेखा, लेखा-जोखा।
खातिया—पु० (मं०) भंडार।
खाती—स्त्री० अरबी आदि रखने के लिए ज़मीन खोद कर बनाया गड्ढा।
खातो—स्त्री० (सि०) अदरक रखने का स्थान।
खातो—स्त्री० (सो०) चूल्हे के साथ बना गड्ढा।
खाद—स्त्री० (सि०) कीचड़।
खाद—स्त्री० (मं०) खाई।
खादड़—वि० (ऊ०, कां०) रिश्वतखोर, घूसखोर।
खादड़—वि० (बि०) उच्छिष्ट, जूठा, आधा खाया हुआ।
खादर—पु० (सि०) खबर।
खादर—पु० (शि०, सि०) धान की क्यारी।
खादर—पु० (सि०) घास विशेष।
खाद-विरोध—पु० (मं०) ईर्ष्या-द्वेष।
खादा—वि० खाया हुआ।
ख़ादा—पु० (चं०) अभिमंत्रित करके खिलाया गया पदार्थ।
खादा—वि० (ऊ०) वश से बाहर, अभिभूत।
खाधेड़ा—वि० (मं०) मटमैला।
खान—स्त्री० खनिज पदार्थों या पत्थर आदि का भंडार।
खानखेड़ा—पु० (कु०) अस्त-व्यस्त।
खानगर—पु० (सि०) खान में कार्य करने वाला।
खानदान—पु० कुल, वंश।
खानसामा—पु० रसोइया।
खानाबदोश—वि० जिसका कोई घर, ठौर ठिकाना न हो।

**खानुआ**—पु० (सि०) गेहूं के बीच पैदा होने वाला घास।
**खापण**—पु० (सो०, शि०) बेकार का काम, व्यर्थ का काम, समस्या, व्यर्थ वस्तु।
**खापण**—पु० (मं०) कफन।
**खापरा**—पु० (कु०) बूढ़ा।
**खापी**—स्त्री० (चं०) कुल्हाड़ी से दोनों ओर से काटने का निशान।
**खाफतूही**—स्त्री० (सि०) पारस्परिक शत्रुता।
**खाब**—पु० (शि०, सि०) मुख, मुंह।
**खाबड़**—वि० (सो०) नीची (भूमि)।
**खाबड़ा**—पु० (सो०) तालाब।
**खाबा**—पु० (मं०) पत्तों का दोना।
**खाम**—पु० (चं०) गहरा गड्ढा।
**खामखा**—अ० व्यर्थ।
**खामचा**—पु० (कु०) बड़ा पतीला।
**खामणि**—स्त्री० (सो०) रक्षाबंधन का धागा।
**खाया**—पु० (सि०) तंग करने का भाव।
**खाये**—स्त्री० (सि०, शि०) खाई।
**खार**—पु० (सि०) चमड़ा रंगने का स्थान।
**खार**—पु० (सो०) कपड़े धोने के लिए साबुन आदि का घोल।
**खार**—स्त्री० क्षरण।
**खार**—स्त्री० शत्रुता।
**खार**—वि० तीस 'भार' के बराबर अन्न।
**खार**—वि० (सो०) बीस द्रोण भूमि का मांप।
**खार**—स्त्री० (कु०) शीत, सर्दी।
**खारचा**—पु० (शि०, सो०, सि०) बकरे के बाल से बना बिछौना।
**खारतो**—वि० (सि०) नमकीन।
**खारना**—स० क्रि० (कु०) रुके हुए पानी को आगे निकालने के लिए खाई खोदना।
**खारना**—स० क्रि० (कु०, कां०, ह०) गलाना।
**खारश**—स्त्री० खुजली।
**खारशा**—वि० (मं०, कु०) बीस 'खार' अन्न की मात्रा।
**खारशी**—स्त्री० (सि०) पत्थर की कुंडी।
**खारा**—पु० बांस का बना एक विशेष टोकरा।
**खारा**—वि० (सि०) नमकीन।
**खारिना**—अ० क्रि० (कु०) क्षरित होना।
**खारी**—स्त्री० (कां०, चं०) चीजें रखने के लिए प्रयुक्त बांस या गेहूं की डंडी से बनी टोकरी।
**खारू**—पु० (मं०) बिचौलिया।
**खारू**—पु० छोटा टोकरा।
**खारूशा**—वि० (शि०) बीस 'खार' अन्न।
**खारो**—वि० (सि०) अधिक नमकीन।
**खारो**—पु० (कु०) सर्दियों में अंगीठी में लगाई जाने वाली बड़ी लकड़ी।
**खारो**—वि० (कु०) सख्त, कठोर।
**खाल**—स्त्री० (सि०) चमड़ी।
**खाळ**—पु० (शि०, सो०) पानी के गिरने से बना गड्ढा, पोखर।
**खालड़ा**—पु० (मं०) भेड़-बकरियों की खाल का बना थैला।
**खालडू**—पु० (मं०) छोटा 'खालड़ा'।
**खालड़ो**—पु० चमड़ी।
**खालस**—वि० (चं०) शुद्ध।
**खाला**—स्त्री० मौसी।
**खाळा**—पु० (सि०) छोटी नदी, खाई।
**खाली**—वि० रिक्त।
**खालीरी**—स्त्री० (कु०) दे० खल्हड़ी।
**खालेरणा**—स० क्रि० (चं०) खाली करना।
**खाव**—पु० (शि०) झगड़ा।
**खावड़ा**—वि० (शि०) लड़ाकू, झगड़ालू।
**खावा**—वि० (शि०) लोभी, लालची।
**खाविंद**—पु० पति।
**खाश**—पु० (सि०) चोट।
**खाशड़े**—वि० (शि०) खास।
**खाशणा**—स० क्रि० (सो०, सि०) ठूंस-ठूंस कर भरना।
**खाशणा**—स० क्रि० (सि०) गालियां देना।
**खाशिणो**—स० क्रि० (शि०) डराना-धमकाना।
**खास**—वि० विशेष।
**खासना**—स० क्रि० (शि०) डांटना।
**खासरे**—पु० (सि०) आडंबर।
**खासा**—पु० कपड़ा विशेष।
**खासा**—वि० (कु०) अधिक।
**खासा**—पु० (कां०, ह०) पालकी, सुखपाल।
**खासू**—वि० काटने वाला (कुत्ता)।
**खाह**—स्त्री० (बि०) गुप्त चिंता, फिक्र।
**खाहखाही**—स्त्री० (मं०) कलह।
**खाहणा**—अ० क्रि० (मं०) कलह करना।
**खाहमखाह**—अ० व्यर्थ ही।
**खाहरा**—पु० (चं०) पशु को दफनाने का स्थान।
**खाहले**—स्त्री० (शि०) उतराई।
**खाहळ**—स्त्री० (कु०) गढ़े में कई दिनों का एकत्रित गोमूत्र।
**खिंखर**—स्त्री० (कु०) कांच या पत्थर के तेज टुकड़े।
**खिंखारी**—स्त्री० (चं०) भयंकर ढलान।
**खिंगर**—स्त्री० (कां०, ऊ०) पत्थर के तेज़ टुकड़े।
**खिंगा**—पु० (कु०, कां०) वृक्ष की शाखा कट जाने से शेष बचा खूंटा।
**खिंचर**—पु० (चं०) सूखी लकड़ी; खुरदरी लकड़ी।
**खिंचिणा**—स० क्रि० (कु०) खींचा जाना। तैयार होना।
**खिंज**—स्त्री० (कां०, ऊ०) आकर्षण, खिंचाव, लूट-घसूट।
**खिंज़**—पु० (कु०) भेड़-बकरी के नवजात बच्चे का मल।
**खिंजणा**—स० क्रि० (कां०, ऊं०) खींचना, खेंचना।
**खिंजणा**—अ० क्रि० (मं०, बि०) थकना।
**खिंजाई**—स्त्री० (मं०) खिंचाई।
**खिंटा**—पु० (शि०, सो०) कपड़े का बना मोटा गद्दा।
**खिंदू**—पु० (सो०) पुराने कपड़ों की कतरनों से बना छोटा बिछौना।
**खिंडणा**—अ० क्रि० (मं०, शि०) गिरना।
**खिंडणा**—अ० क्रि० बिखरना। बिछुड़ना।

**खिंडा**—पु० (शि०, सि०) गेहूं का आटा और गुड़ साथ मिलाकर बनाया गया हलवा।
**खिंडाणो**—स० क्रि० (सि०, शि०) गिराना।
**खिंडू**—पु० (मं०) अनामंत्रित अतिथि, बिना बुलाया मेहमान।
**खिंडू**—पु० (कु०) देवता के भ्रमण पर आए देवता के लोग जिन्हें भोजन और रिहाइश के लिए गांव वालों में बांटा जाता है।
**खिंढिणा**—अ० क्रि० (कु०) बिखरना।
**खिंद**—स्त्री० पुराने वस्त्रों से तैयार किया गया बिछौना या गद्दा।
**खिंदड़/ड़ा/ड़ी/ड़ू**—पु० दे० खिंद।
**खिंदड़-बोदड़**—पु० (बि०, कां०) बेमेल पहनावा।
**खिआ**—पु० श्राद्ध।
**खिचकणा**—अ० क्रि० (चं०) दांत निकालना, हंसना।
**खिचखिच**—स्त्री० व्यर्थ में हंसने की क्रिया।
**खिचड़ी**—स्त्री० खिचड़ी, नमकीन चावल, दाल भात का मिश्रण।
**खिचणा**—स० क्रि० खींचना।
**खिछड़**—पु० (बि०) कीचड़।
**खिज**—स्त्री० (चं०) थकावट।
**खिजकुरा**—वि० (शि०) किसी दूसरे की प्रसिद्धि न सहने वाला।
**खिजणा**—अ० क्रि० तंग आना।
**खिजणो**—स० क्रि० (सि०) डांटना, गुस्से होना।
**खिजा**—वि० (सि०) कमज़ोर।
**खिजाउणो**—स० क्रि० (शि०) तंग करना।
**खिज्जा**—वि० (मं०) बायां।
**खिझ**—स्त्री० घृणा, जलन।
**खिड्ड**—स्त्री० दौड़, तेज दौड़।
**खिड़क**—स्त्री० (कु०, बि०, ह०) दे० खड़क।
**खिड़खड़ा**—वि० (सि०) पथरीला; ढलानदार।
**खिड़ना**—अ० क्रि० खिलना।
**खिड़ना**—अ० क्रि० (सि०, मं०, सो०) हाथ पांव का फटना।
**खिड़ाउणा**—स० क्रि० (शि०) बिखेरना।
**खिणकणा**—अ० क्रि० (कु०) लुढ़कना।
**खिणकणा**—अ० क्रि० (सि०) हिनहिनाना।
**खिणस**—स्त्री० वैर, विरोध, ज़िद।
**खितड़ू**—पु० (चं०) गुदगुदी।
**खितला**—वि० (कां०) निर्जन। ऊसर। व्यर्थ।
**खितो**—पु० (शि०) टुकड़ा।
**खित्येपूरणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०) बेकार में समय बरबाद करना।
**खिथड़ालिरड़ा**—पु० (मं०) फटा हुआ वस्त्र।
**खिथड़ी**—स्त्री० (चं०) एक घास जो कपड़े के साथ फंस जाता है।
**खिथी**—स्त्री० (मं०) ज़मीन में बनाया गड्ढा जिसमें खेलती बार बच्चों में अखरोट या पैसे डालने की स्पर्धा रहती है।
**खिथुआ**—पु० गुलेल में लगी चमड़े की तनी।
**खिदकणा**—अ० क्रि० (सि०) उफान आना।
**खिद्दक**—वि० (कां०) गदला (पानी)।
**खिद्दड़**—स्त्री० (कां०) मैल।
**खिनुआ**—पु० कपड़े की गेंद।
**खिनू**—पु० दे० खिनुआ।
**खिन्नु**—पु० (कां०) गेहूं के खेत में उगने वाला घास।
**खिमणी**—स्त्री० (कां०) रस्सियों से बुनी हुई विशेष प्रकार की गुलेल।
**खियाइणा**—स० क्रि० (कु०) खाने के लिए आपाधापी करना।
**खियाड़ा**—पु० (कु०) बछड़े रखने का स्थान।
**खियाणा**—स० क्रि० (कु०) खिलाना।
**खियूड़**—पु० (कां०) निथार।
**खिरखिरी**—स्त्री० (कु०) धूएं या साबुन से आंख में हुई जलन।
**खिरपु**—पु० अन्नप्राशन संस्कार।
**खिरू**—पु० (मं०) गाय या भैंस के स्तनों का फैलाव।
**खिरूआ**—वि० (शि०) जो अधिक पका न हो।
**खिल**—स्त्री० भुना हुआ मक्की का दाना।
**खिल**—स्त्री० (शि०) खूंटी।
**खिलकणा**—अ० क्रि० (कु०) हिलना।
**खिलकणा**—अ० क्रि० (शि०) हंसना।
**खिलकत**—स्त्री० जनसमूह, खिलक़त।
**खिलका**—पु० (शि०) कमीज़, ढीला-ढाला वस्त्र।
**खिलकूपिन**—पु० (शि०) सुआ।
**खिलको**—पु० (शि०) कमीज़।
**खिलखुंडा**—वि० (मं०) अकेला।
**खिलड़ी**—स्त्री० (सि०) कम उपजाऊ भूमि।
**खिलणटू**—पु० (सो०) छोटी कुदाली।
**खिलणा**—पु० ज़मीन खोदने का एक उपकरण।
**खिलदरी**—स्त्री० (चं०) Dioscoria deltoidia.
**खिलरना**—अ० क्रि० बिखरना।
**खिला**—वि० (कु०, मं०) अनबीजा (खेत)।
**खिलिपड़**—पु० (चं०) बिना जोता भूमि-भाग।
**खिलो**—पु० (शि०) पशुओं को बांधने का खूंटा।
**खिलोड़ी**—वि० (चं०) बेकार (भूमि)।
**खिल्ल**—वि० (कां०) बंजर, वीरान, उजाड़ (धरती)।
**खिल्लरना**—अ० क्रि० (कां०) नीचे फैल जाना।
**खिल्ला**—स्त्री० (शि०) मक्की, गेहूं, चावल आदि के भुने हुए दाने।
**खिशकिणो**—स० क्रि० (शि०) क्रोधित होकर कहना।
**खिसकणा**—अ० क्रि० खिसकना, चुपके से उठ कर चले जाना।
**खिसकरो**—वि० (शि०) ईर्ष्यालु।
**खिसा**—पु० जेब।
**खिसो**—पु० (शि०) दे० खिसा।
**खिहणा**—अ० क्रि० (मं०) खाकर तंग होना।
**खींगर**—पु० (बि०) दे० खिंगर।
**खींचणा**—स० क्रि० खींचना।
**खींचणा**—स० क्रि० (कु०) खींचना।
**खींड**—स्त्री० (कु०) ग्वालों द्वारा वर्ष में एक बार इकट्ठे मिल

कर किया जाने वाला खान-पान या ज़ियाफत।
**खींडिया**—अ० क्रि० (कु०) 'खींड' के लिए शामिल होना।
**खींड्थ**—पु० (कु०) दे० खिंदड़ा।
**खीज**—स्त्री० (मं०) थकान।
**खीज**—स्त्री० ईर्ष्या।
**खीत**—स्त्री० (सि०) विवाह के अवसर पर वर पक्ष की ओर से वधु के पिता को दिया जाने वाला धन।
**खीमा**—स्त्री० (बि०) क्षमा, धीरज।
**खीर**—पु० (सि०, कां०) अंत, आखिर।
**खीरा**—वि० (बि०) जिस बछड़े के दांत न हों।
**खीरा**—पु० ककड़ी।
**खील**—पु० (कु०) बंजर भूमि।
**खीलो**—पु० (सि०) खूंटा।
**खीश**—पु० (शि०) लकड़ी पर निशान लगाने का उपकरण।
**खीस**—पु० लकड़ी पर निशान लगाने का उपकरण।
**खीस**—पु० नए ब्याए दुधारू पशु का पहला दूध।
**खीसा**—पु० (चं०) जेब।
**खीहण**—स्त्री० (मं०) खीज।
**खुखरी**—स्त्री० एकधारा शस्त्र।
**खुंग**—स्त्री० (कु०) खांसी।
**खुंगखड़ेरना**—स० क्रि० (कु०) बलगम को बाहर निकालना।
**खुंगड़**—पु० (सि०) जुकाम।
**खुंगणा**—अ० क्रि० (कु०) खांसना।
**खुंगर**—पु० (सि०) पेड़ में बना खोल, पेड़ का खोखला अंश।
**खुंगा**—पु० (सि०) छोटी टहनी।
**खुंगा**—पु० (बि०) बांस के लंबे डंडे पर लगा हुआ खूंटा।
**खुंगी**—स्त्री० (सो०) खांसी।
**खुंग्गा**—पु० (बि०) अड़चन, पेड़ की कटी टहनी का शेष भाग।
**खुंघा**—पु० (चं०) दे० खुंग्गा।
**खुंघी**—स्त्री० (चं०) चीड़ का फल।
**खुंघी**—स्त्री० (चं०) अड़चन।
**खुंजणा**—अ० क्रि० (कां०) पिछड़ जाना।
**खुंजणा**—अ० क्रि० (सो०) खेल में हार जाना।
**खुंजा**—पु० सिलवट। किनारा।
**खुंजा**—वि० (शि०) बायां।
**खुंटी**—स्त्री० (शि०) रहस्य।
**खुंटी**—स्त्री० (कु०) गद्दी (गड़रिया) का चोला।
**खुंठला**—पु० (कु०) बकरे की ऊन का कोट।
**खुंड**—पु० (कां०) पशुओं को बांधने का खूंटा।
**खुंड**—वि० बेलिहाज़, कठोर, अनुभवी।
**खुंडणा**—स० क्रि० (मं०) खोदना।
**खुंडणा**—स० क्रि० (सि०) फूलों को तोड़ना।
**खुंडणा**—स० क्रि० (मं०) ऊन कातना।
**खुंडरा**—वि० (मं०) खूंटे पर पाला जाने वाला (मेढ़ा या बकरा आदि)।
**खुंडलियां**—स्त्री० (कां०) चरखें के तकले के साथ लगी दो या तीन खड़ी लकड़ियां।
**खुंडा**—वि० कुंद, जो तेज न हो (औज़ार आदि)।
**खुंडा**—पु० खूंटा।
**खुंडावाला**—पु० (सि०) ऐसा देवता जो पशु के 'खुड़' में निवास करता है।
**खुंडी**—स्त्री० (कु०) स्त्रियों के कान का आभूषण।
**खुंडु**—पु० (मं०) नाक के बीच में पहनने की छोटी व हलकी बाली।
**खुंडुई**—वि० (कु०) बढ़िया।
**खुंडू**—पु० (कां०, बि०) चरखे की तीन कीलें जिन पर तकली लगती है।
**खुंडेल**—वि० (कां०) बंधा रहने वाला (पशु)।
**खुंढ**—वि० (चं०) मूर्ख।
**खुंढ**—वि० (मं०) पक्का।
**खुंढू**—पु० (कु०) छोटा खेत।
**खुंथ**—स्त्री० (शि०) टक्कर।
**खुंदक**—स्त्री० ईर्ष्या, वैमनस्य।
**खुंदकी**—वि० प्रतिघाती।
**खुंदला**—वि० (शि०) टेढ़े पैर वाला।
**खुंदळा**—वि० (कां०) बेढंगा।
**खुंदळा**—पु० (मं०) बड़ा बिल्ला।
**खुंदा**—पु० (मं०) वंश।
**खुंब**—पु० (मं०) खूंटा।
**खुंब**—पु० (मं०) वंश।
**खुंबड़ा**—पु० (सि०) बड़ी देगची, देगचा।
**खुंबड़ा/ड़ी**—वि० (कु०) जिसका मुंह अंदर को पिचका हो।
**खुंबले**—स्त्री० (शि०, सि०) बैठक।
**खुंबा**—पु० (चं०) खेत, भू-भाग।
**खुंबी**—स्त्री० (कु०) बगल वाला छोटा कमरा।
**खुंमा**—पु० (चं०) खेत।
**खुंहजणा**—अ० क्रि० अवसर से चूकना।
**खु:ण**—पु० खेत का नुक्कड़।
**खु:ण**—पु० (कां०) सड़ने या गलने का दाग।
**खु:मलो**—वि० (सि०) थोड़ा गरम, कुनकुना।
**खुआंची**—वि० (कु०) बहुत खाने वाला।
**खुआकटा**—पु० (कु०) जंगली मुर्गे की प्रजाति का पक्षी जो 'कड़ेशा' से अधिक बड़ा होता है और लंबी उड़ान भरता है।
**खुआखा**—पु० (कु०) दे० खुआकटा।
**खुआजा**—पु० जलदेवता।
**खुआड़ा**—पु० अनाज को साफ करने का स्थान, खलिहान।
**खुआड़ा**—पु० (कु०) भेड़-बकरियों को घास पत्ते आदि खिलाते समय बंद रखने के लिए बनाया गया बाड़ा।
**खुआण**—स्त्री० कहावत, लोकोक्ति।
**खुआन्ना**—पु० मिट्टी खोदने से पड़ा गड्ढा।
**खुआरा**—पु० (कु०) रीठा।
**खुआसी**—पु० (कु०) खलासी, सेवादार।
**खुआह**—पु० अफवाह।
**खुइणो**—अ० क्रि० (शि०) बिगड़ना।
**खुईतला**—वि० (सि०) बिगड़ा हुआ।
**खुईद**—पु० (कु०) हरे जौ का घास।

**खुक्खल**—स्त्री० (चं०) धूलि, गर्म राख।
**खुक्खु**—पु० (सि०) दर्द, पीड़ा।
**खुक्खू**—पु० (सो०) बच्चों की एक बीमारी।
**खुखनी**—स्त्री० (बि०) एक प्रकार का साग।
**खुखरमुख्खर**—वि० (कु०) पूरी तरह नष्ट।
**खुखलोर**—पु० (चं०) गरम राख में दबाया गया आटे का पेड़ा।
**खुखाड़ी**—स्त्री० (चं०) गाल।
**खुगड़ो**—पु० (मं०) पुराना कोट।
**खुजलाणा**—स० क्रि० खुजलाना।
**खुट**—पु० (कां०) कुदाल।
**खुटका**—पु० (शि०) खटका।
**खुटपटणी**—स्त्री० (बि०) बेकार के कार्य में धन व समय का नाश।
**खुटळ**—वि० (बि०) शर्मिंदा।
**खुटला**—पु० (बि०) शर्मिंदगी।
**खुटी**—स्त्री० (शि०, सो०, सि०) टांग।
**खुट्टळ**—वि० (कां०) शर्मिंदा, लज्जित।
**खुट्टा**—पु० (शि०, सि०) पशुओं की टांग।
**खुट्टी**—स्त्री० (कां०) मक्की आदि गोड़ने का उपकरण।
**खुट्टी**—स्त्री० (मं०) 'किलण' का लोहे वाला भाग।
**खुट्टू**—पु० (सि०) अखरोट।
**खुट्टुल**—पु० (बि०) धार रहित औज़ार।
**खुड**—पु० (कु०) मकान की सबसे नीचे की मंजिल जिसमें पशु रखे जाते हैं।
**खुड़**—पु० (कां०, बि०) गठिया का दर्द।
**खुड़**—पु० (कां०) पथरीला खेत।
**खुड़क**—स्त्री० (कु०) हड्डी का जोड़।
**खुड़क**—स्त्री० (चं०) चुभन।
**खुड़कणा**—स० क्रि० (कां०) शक पैदा करना।
**खुड़कणा**—अ० क्रि० (कां०) रड़कना, चुभना। बुरा लगना, याद आना।
**खुड़की**—स्त्री० (सो०) खेत को जोतते समय हल से टकराने वाली जड़ या पत्थर।
**खुड़कू**—पु० रस्सी के सिरे पर बना हुआ फंदा।
**खुड़णा**—अ० क्रि० (बि०) खुलना। स० क्रि० फूल तोड़ना।
**खुडतर**—पु० (चं०) दीवारों व दरवाज़ों पर की गई नक्काशी।
**खुड़तिपी**—स्त्री० (चं०) छोटी ढोलक।
**खुड़ाटी**—स्त्री० चरागाह।
**खुड़ाल**—स्त्री० (सि०) खाल।
**खुड़ी**—स्त्री० (सि०) बांस की लाठी।
**खुड़ी**—वि० (कु०) चलने में असमर्थ।
**खुडु**—पु० (मं०) गोशाला।
**खुडू**—पु० (चं०) उकडूं बैठने का भाव।
**खुड़ोळी**—स्त्री० (सि०) फसल भंडार जो खलिहान के साथ बना हो।
**खुड्डा**—पु० (सो०) कोठा।
**खुड्डा**—पु० मुर्गीखाना।
**खुड्डी**—स्त्री० (मं०) दे० खुरली।
**खुड्डी**—पु० (चं०) दीवार में रखा खाली स्थान।
**खुढ़णा**—अ० क्रि० (चं०, कां०) खुलना।
**खुणणा**—स० क्रि० खोदना।
**खुणणो**—स० क्रि० (सि०) खोदना।
**खुणास**—स्त्री० (शि०) वैर भाव।
**खुणाई**—स्त्री० (मं०, सि०) खुदाई।
**खुत्ती**—स्त्री०(कां०) गुच्ची, गुल्ली-डंडा खेलने के स्थान पर खुदी जगह।
**खुदखुद**—स्त्री० (शि०) आदत।
**खुदरा**—वि० (चं०) शरारती।
**खुद्दा**—वि० (चं०) जिसकी ठोड़ी पर बाल न हों।
**खुद्पा**—स्त्री० (शि०) भूख।
**खुनेवड**—पु० (सि०) मंदिर की छत पर लगी लंबी लकड़ी।
**खुन्नस**—स्त्री० (बि०) दुश्मनी, शत्रुता।
**खुन्ना**—वि० (कां०) धार रहित, कुंद, जो शस्त्र तेज न हो।
**खुप**—पु० (शि०) सूई, शरीर में तरल दवाएं पहुंचाने की पिचकारी।
**खुपा:णो**—स० क्रि० (शि०) हज़म करना।
**खुबणा**—अ० क्रि० चुभना।
**खुबणा**—अ० क्रि० (सि०) प्रवेश होना।
**खुबणाड़**—वि० (शि०) तीखा।
**खुबाउणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) चुभाना।
**खुब्बणा**—अ० क्रि० धंसना, धंस जाना।
**खुभड़**—स्त्री० (चं०) भद्दी सिलाई।
**खुभणा**—अ० क्रि० (बि०, चं०) जलना।
**खुमळी**—स्त्री० (शि०, सि०) सभा।
**खुमानी**—स्त्री० खूबानी; एक प्रकार का फल जो खाने में खट्टा-मीठा होता है और जिसकी गुठली से तेल निकाला जाता है।
**खुमार**—पु० नशे का प्रभाव।
**खुमार**—पु० गर्मी, ताप, तपिश।
**खुम्मण**—पु० (मं०) दबाव।
**खुर**—पु० पशु के पैर।
**खुरक**—स्त्री० (बि०, कु०) खारिश।
**खुरकणा**—स० क्रि० खुजलाना, खुजली करना।
**खुरकिणा**—अ० क्रि० (कु०) स्वयं खुजली करना।
**खुरखुर**—पु० जल्दी-जल्दी आंख घुमाकर देखने का भाव।
**खुरचण**—स्त्री० (सो०) खुरची गई वस्तु।
**खुरचणा**—स० क्रि० खुरचना, कुरेदना।
**खुरजी**—स्त्री० (सि०) बरामदे के जंगले में लगने वाली लकड़ी।
**खुरटु**—पु० (सो०, सि०) छोटे खुर, पशुओं के छोटे बच्चों के पैर।
**खुरडणा**—स० क्रि० खुरचना।
**खुरड़ना**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०) जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष करना।
**खुरड़े**—पु० (सि०) पशु के पैर।
**खुरड़े**—पु० (सो०, सि०) भद्दे पैर।
**खुरणी**—स्त्री० (मं०) द्वार का एक भाग।
**खुरपा**—पु० खुरपा, घास खुरचने का उपकरण।

**खुरपू**—पु० छोटा खुरपा।
**खुरपैर**—पु० आदि-अंत।
**खुरफुर**—पु० अस्पष्ट शब्दावली में वार्तालाप।
**खुरमुंहा**—पु० (कां०) पशुओं के मुंह और खुरों में होने वाली बीमारी।
**खुरली**—स्त्री० (शि०) चारा डालने का स्थान।
**खुरली**—स्त्री० (शि०, सो०) पशुओं को पानी पिलाने का छोटा हौद।
**खुरशा**—पु० (सि०, शि०) बकरी की ऊन से तैयार किया गया जूता।
**खुरशी**—स्त्री० (सि०) कुर्सी।
**खुरस**—पु० (कु०) मूल स्थान, मूल वंश।
**खुरस-नामा**—पु० (कु०) वंशावली।
**खुरसी**—स्त्री० (कु०, मं०) कुर्सी।
**खुरसुड़ी**—स्त्री० (चं०) पांव की ऊपरी हड्डी।
**खुराःर**—स्त्री० (कां०) मलाल।
**खुरा**—पु० (कां०) बर्तन साफ करने के लिए रसोई में बनाया गया स्थान।
**खुराखुरी**—स्त्री० (कु०) इधर-उधर देखने का भाव।
**खुराणा**—स० क्रि० (चं०, मं०) नकल करना।
**खुराफत**—स्त्री० (चं०) शरारत, खुराफात।
**खुरार**—पु० (चं०) अनुभव।
**खुरी**—स्त्री० (कु०) पांव के निशान, विशेषतः पशु-पक्षियों के पांव के निशान।
**खुरी**—स्त्री० एड़ी।
**खुरेढ़ा**—पु० (चं०, कां०) पशुओं का खुर और मुख का रोग।
**खुरेवड़ा**—पु० (शि०) पशुओं के पैर बांधने की रस्सी।
**खुरैतड़**—स्त्री० (कां०) चरागाह, 'घासनी'।
**खुरोःलणा**—स० क्रि० (सि०, सो०, शि०) मक्की आदि के दाने उतारना।
**खुरोचणो**—स० क्रि० (शि०) खुरचना।
**खुरोलणा**—स० क्रि० (चं०) थोड़ा खोदना।
**खुर्दबुर्द**—पु० (चं०) नष्टप्रायः, इधर-उधर करने का भाव।
**खुर्मानी**—स्त्री० खूबानी, एक विशेष फल जो खाने को खट्टा-मीठा होता है और जिसकी गुठलियों से तेल तैयार किया जाता है।
**खुर्सिनांऊआ**—पु० (कु०) वंशावली।
**खुल**—स्त्री० पाबंदी हटने का भाव, स्वतंत्रता।
**खुलटु**—वि० (शि०) गंजे सिर वाला।
**खुलणा**—अ० क्रि० (चं०) झड़ना।
**खुलणा**—अ० क्रि० खुलना।
**खुळना**—अ० क्रि० (कु०) पिघलना, घुलना।
**खुळना**—अ० क्रि० (कां०) बहुत बीमार रहना।
**खुलाउणो**—स० क्रि० (सि०) मरे हुए पशु की खाल उतारना।
**खुलायणो**—स० क्रि० (शि०) मक्की के दाने गुल्ली से अलग करना।
**खुलासा**—पु० (चं०) निचोड़, संक्षेप, व्याख्या।
**खुलूरा**—वि० (चं०) बाल रहित, गंजा।
**खुलूरा**—वि० (चं०) कमज़ोर, गरीब।
**खुलो**—वि० (शि०) खुला।
**खुल्ल**—स्त्री० कोई पाबंदी न होना, स्वतंत्रता।
**खुल्लणा**—स० क्रि० (ऊ०) मरे हुए पशु की खाल उतारना।
**खुल्ह**—स्त्री० (चं०) दे० खुल्ल।
**खुवाण**—स्त्री० (कां०) कहावत, लोकोक्ति।
**खुशक**—वि० (कु०) कठोर स्वभाव वाला।
**खुशटी**—स्त्री० (कु०) Spireae canescens.
**खुसणा**—अ० क्रि० (ऊ०) ढीला-ढाला होना।
**खुसणो**—स० क्रि० (शि०) छीनना।
**खुसरा**—पु० (सि०) खसरा।
**खुसामद**—स्त्री० खुशामद।
**खुसी**—स्त्री० (कां०) खुशी, इच्छा, पसंद।
**खुह**—पु० कुआं।
**खुहखाता**—वि० बेकार, निरर्थक।
**खुहनड़ा**—वि० (कां०) धार रहित, कुंद, जो शस्त्र तेज न हो।
**खुहाड़ा**—पु० (कां०) गेहूं रखने का पक्का स्थान।
**खुही**—स्त्री० (बि०, चं०) छोटा कुआं।
**खूंझ**—पु० (चं०) दोष।
**खूंट**—पु० (मं०) सीधे डंडे वाला कुदाल।
**खूंटी**—स्त्री० (ऊ०) लाठी।
**खूंड**—स्त्री० (सि०) दो नाखूनों से जूं मारने का भाव।
**खूंडणा**—स० क्रि० (मं०) नाखून से किसी चीज़ को तोड़ना।
**खूंडी**—स्त्री० (बि०) लाठी।
**खूंडी**—स्त्री० (कु०) कम चौड़ा और छोटा सा खेत।
**खूंडेरा**—पु० (बि०) ऐसा मेढ़ा या बकरा जो खूंटे पर घर में ही पाला गया हो।
**खूक्खा**—वि० (शि०) अंदर से खाली, खोखला।
**खूजकोड़**—वि० (शि०) झगड़ालू।
**खूड**—स्त्री० (सि०) हल की सीता।
**खूड**—पु० मकान की मिट्टी वाली छत का बाहरी भाग। घास रखने वाले घर का सबसे निचला कमरा। पशुशाला।कोठा।
**खूड़**—स्त्री० (सि०) घुटने का दर्द।
**खूड़खूड़ी**—स्त्री० (कु०) उतराई में चलते समय घुटनों में होने वाली दर्द।
**खूण**—पु० (मं०) किसी देवता का दोष।
**खूद**—पु० (सो०, सि०) हरा घास।
**खूद**—पु० (कां०, बि०) पशुओं की खुराक।
**खूनीकाट**—स्त्री० खून वाले मरोड़।
**खूप**—अ० (चं०) खूब।
**खूब**—अ० बहुत।
**खूबकला**—स्त्री० एक वन औषधि।
**खूबावणो**—स० क्रि० (शि०) चुभाना।
**खूम**—पु० (कु०) बर्तन में चोट लगने से पड़ा निशाना।
**खूर**—पु० खुर, पशुओं के पैर।
**खूरा**—पु० (कु०) बारीक कटा हुआ घास।
**खूरा**—पु० (कु०) गड्ढा।
**खूराड़ौ**—पु० (कु०) बड़ी कुल्हाड़ी।

खूरी—स्त्री० (कु०) पदचिह्न, कदम के निशान।
खूसर—वि० (चं०) बूढ़ा; भद्दा; मूर्ख।
खूहा—पु० (मं०, कां०) कुआं।
खूही—स्त्री० (बि०, चं०) छोटा कुआं।
खेंजू—वि० (कु०) बायें हाथ से काम करने वाला।
खेंदू—पु० (शि०, सो०, सि०) खिलौने।
खे:—स्त्री० राख, गंदगी।
खे:ल—स्त्री० किसी में देवशक्ति का प्रवेश होने पर उसके शरीर में हुआ विशेष प्रकार का कंपन।
खे—अ० (सो०) को।
खेआ—पु० (कां०) नस्ल।
खेआ—पु० (चं०) पीढ़ी।
खेउट—पु० (कु०) खेवट, भूमि के टुकड़ों का समूह जो एक के हिस्से में हो।
खेउटदार—पु० (कु०) खेवटदार, जमीन का मालिक।
खेउड़—पु० (सि०) राख।
खेउणा—स० क्रि० (सि०) चलाना।
खेऊ—पु० (कु०) क्षेम, थकने वाला काम, मुश्किल काम, कष्ट, थकावट।
खेऊटला—पु० (शि०) बिना दानों का भुट्टा जिसमें काली धूल होती है।
खेऊणा—स० क्रि० (मं०) खिलाना।
खेओ—पु० (मं०) परिश्रम।
खेओट—पु० (शि०) अविभाजित भूखंड।
खेच—पु० (सि०, सो०, शि०) खेत।
खेचदू—पु० क्यारी, छोटा खेत।
खेचयारे—पु० (शि०) काम के लिए बुलाए गए संबंधी जन।
खेचर—स्त्री० (शि०) खच्चर।
खेचर—पु० (मं०) आकाशगामी।
खेचळ—स्त्री० अतिरिक्त प्रयत्न, झमेला।
खेचला—पु० (चं०) झगड़ा।
खेचळा—पु० (सि०) झंझट, कष्ट, तकलीफ़।
खेची—स्त्री० (सि०, शि०) घर के किसी सदस्य की अपनी निधि, निजी संपत्ति।
खेची—स्त्री० (सि०) खेती।
खेछरना—अ० क्रि० (मं०) शरारत करना, बहुत उछल-कूद करना।
खेज—स्त्री० (बि०, कां०) थकावट।
खेजळ—स्त्री० (कु०) उलझन।
खेज़ा—पु० (कु०) शोर, लड़ाई।
खेज़्ज़ा—पु० (शि०, कु०) थकावट।
खेझ—स्त्री० (चं०) दे० खेज।
खेटणा—स० क्रि० (कु०) मक्की के दानों को नाखून से निकालना।
खेटणा—स० क्रि० (कु०, मं०) मुर्गी या पक्षियों का अंडे सेना।
खेटवाणी—स्त्री० (शि०) कपड़े धोने के लिए बनाया पदार्थ।
खेटिणा—स० क्रि० (कु०) कमाया जाना। मुर्गी द्वारा अंडे सेया जाना।
खेड़—पु० (मं०) खेल।
खेड़तर—स्त्री० (मं०) आकृति।
खेड़ना—अ० क्रि० खेलना।
खेड़ना—स० क्रि० (कु०) चित्रकारी करना।
खेड़शा—वि० (चं०) फोड़े वाला।
खेड़ा—पु० फोड़े या घाव का ऊपरी हिस्सा, घाव भरने पर जमी पपड़ी।
खेड़ा—पु० (सि०, सो०) देवता। खेतों का समूह, क्षेत्रफल।
खेड़ी—स्त्री० (कु०) सूप।
खेड़ो—पु० (सि०) डेरा।
खेणा—स० क्रि० (मं०) चलाना। थकाना।
खेतड़—पु० (बि०) छोटा खेत।
खेतर—पु० खेत, क्षेत्र।
खेतरी—स्त्री० (कु०) अपनी कमाई।
खेतरू—पु० (कां०) छोटा खेत।
खेद—पु० दुःख।
खेदणा—स० क्रि० हांकना।
खेदाइळो—स्त्री० (सि०) भगदड़।
खेदिणा—स० क्रि० (कु०) हांका जाना।
खेप—स्त्री० (कु०, मं०) खज़ाना।
खेप—स्त्री० सि० बड़ा भारी काम।
खेप—स्त्री० (चं०) भेद। अत्यधिक प्राप्ति। हानि।
खेप—स्त्री० (बि०) बहादुरी।
खेप—पु० (मं०) व्यापार।
खेपण—पु० (कु०) कुदाल आदि औज़ार से लगाई गई चोट।
खेपरा—पु० (कु०) मुखौटा।
खेपरा—पु० (सो०) टूटी ठीकरी।
खेपरा—पु० (सि०) गलगल।
खेपे—वि० (सि०) सशक्त, बहादुर।
खेब्बड़—वि० (कां०) बायें हाथ से काम करने वाला।
खेमा—पु० शिविर।
खेरला—पु० (सि०) पशु समूह।
खेल—पु० (सो०) एक आयोजन जिसमें धुनर्विद्या या भैंसों की लड़ाई करवाई जाती है।
खेल—स्त्री० (बि०) किसी देव या देवी का शरीर में प्रवेश।
खेळ—पु० उप-गोत्र।
खेलणु—पु० खिलौना।
खेलणो—अ० क्रि० (सि०) खेलना।
खेलफी—स्त्री० (शि०) Chacrophllum Villosum.
खेलमेल—स्त्री० (शि०) सभा।
खेळा—वि० (सि०) सीधा-सादा।
खेलिणा—अ० क्रि० (कु०) खेला जाना।
खेले—पु० (सि०) राजपूत दल।
खेल्ह—पु० (मं०) व्यायाम।
खेवा—पु० (सि०) गुजारा। नदी पार करने का एक तरीका।
खेश—पु० खेस, मोटे सूत के धागों की बनी चादर।
खेश—पु० (कु०) देवता के नीचे बिछाने का कपड़ा।
खेश—पु० (मं०) एक झाड़ीदार वृक्ष।

**खेशटी**—स्त्री० (कु०) छोटा खेस।
**खेशटी**—स्त्री० (सि०) लंगोटी।
**खेशड़ी**—स्त्री० (कु०, सो०) दे० खेशटी।
**खेसायड़ो**—पु० (शि०) मच्छर आदि।
**खेसूरवान**—वि० (शि०) धनवान।
**खेह**—पु० (मं०) धोखा, दुश्मनी।
**खेह**—स्त्री० (कु०) गंदगी। राख, क्षार।
**खेहड़ा**—पु० (चं०) एक पौधा विशेष।
**खेहु**—पु० एक वृक्ष।
**खेहडु**—पु० (मं०, चं०) पशु रोग।
**खेहणा**—अ० क्रि० (मं०, कां०) दुश्मनी रखना।
**खेहल**—पु० (कां०) खेल।
**खेहलणु**—पु० खिलौना, शिशु के लिए प्रयुक्त प्यार भरा शब्द।
**खेहलार**—पु० खिलाड़ी।
**खेंखर**—पु० (कां०) लंबी पूंछ वाला पीला पक्षी।
**खेंच**—पु० (सि०) खेत।
**खेंच**—स्त्री० खिंचाव।
**खेंची**—वि० (कु०) अधिक खाने वाला।
**खेंचोर**—स्त्री० (सि०) खच्चर।
**खे**—अ० (शि०) को।
**खे**—पु० (चं०) रामफल।
**खेई**—स्त्री० (चं०) अधिक मात्रा में होने का भाव।
**खेई**—स्त्री० (कु०) घराट में वह स्थान जहां पर आटा गिरता है।
**खेई**—स्त्री० (चं०) लोहे का ज़ंग, लोहे के खराब होने की स्थिति।
**खेऊ**—पु० (शि०) आलस।
**खेओ**—स्त्री० (चं०) थकावट।
**खेखर**—पु० (बि०) एक लंबी पूंछ वाला पक्षी विशेष।
**खेड़खड़ाहट**—स्त्री० (कु०) खड़खड़ाहट।
**खेडणा**—अ० क्रि० (चं०) खेलना।
**खेणणू**—पु० (कां०) वरी, पिटारी, सुहागपिटारी।
**खेणा**—स० क्रि० (सि०) पनीरी लगाना।
**खेणी**—स्त्री० वृक्ष विशेष।
**खेणी**—स्त्री० खाने का चूनायुक्त तंबाकू।
**खेतापेता**—पु० (कु०) फेर-बदल।
**खेदणा**—स० क्रि० (चं०) हांकना, भगाना।
**खेदशीं**—स्त्री० (कु०) दु:ख, तकलीफ।
**खेप**—स्त्री० (कु०) शरारत।
**खेपी**—वि० (कु०) शरारती।
**खेम्ह**—पु० (चं०) थकावट।
**खेर**—पु० एक वृक्ष विशेष जिससे कत्था बनाया जाता है।
**खेरकथ**—पु० (चं०) दे० खैर।
**खेरलनो**—स्त्री० (शि०) छलनी।
**खेरा**—वि० भूरे रंग का।
**खेरात**—स्त्री० दान।
**खेरू**—पु० (शि०) लस्सी से बना विशेष खाद्य।
**खेल**—पु० (शि०) ध्यान, ख्याल।
**खेळ**—पु० (सि०) खानदान, उपगोत्र।
**खेला**—वि० (सि०, चं०) मैला।
**खेवा**—पु० (मं०) प्रसूता के लिए बनाया गया विशेष पकवान।
**खेशखेशा**—वि० (कु०) चुभने वाला।
**खेसम**—पु० (कु०) पति।
**खेह**—पु० होड़, शत्रुता, डाह।
**खेहक**—स्त्री० (बि०) शत्रुता, दुश्मनी, डाह की स्थिति।
**खेहणा**—अ० क्रि० भीतर ही भीतर जलते रहना। आपस में लड़ना।
**खेहणा**—पु० (कां०) एक पौधा विशेष।
**खेहम**—पु० (चं०) कष्ट।
**खेहमाण**—स्त्री० (चं०) गड़बड़, अव्यवस्था।
**खेहुड़**—वि० (मं०) खाने वाला, काटने वाला।
**खोंज़णा**—स० क्रि० (कु०) निकालना।
**खोंज़िणा**—स० क्रि० (कु०) निकाला जाना।
**खोंरा**—पु० (चं०) वृक्ष की छाया, धुंध।
**खोंशड़ा**—पु० (चं०, शि०, सो०) जूता।
**खो:ड़**—पु० (शि०) भेड़-बकरी का बाड़ा।
**खो:रू**—पु० (कां०) लस्सी का छौंका हुआ खाद्य।
**खो**—पु० (सि०) चुगली।
**खोआ**—पु० खोया।
**खोआ-खेड़ा**—वि० (सि०) विलासी (व्यक्ति)।
**खोइजार**—पु० (शि०) किस्मत फूटने का भाव।
**खोइणा**—अ० क्रि० (सि०) खड़े होना।
**खोइणा**—अ० क्रि० (कु०) खोया जाना, गुम हो जाना। खराब हो जाना।
**खोइणो**—अ० क्रि० (शि०) गुम होना। खराब हो जाना।
**खोई**—स्त्री० (सि०) खाना, खाद्य।
**खोई**—स्त्री० (सि०) आरोप।
**खोईणा**—अ० क्रि० (ऊ०) गुम होना।
**खोउटू**—पु० (सि०) अखरोट।
**खोउणा**—अ० क्रि० (शि०) खराब होना, बिगड़ना।
**खोऊणो**—स० क्रि० (सि०) गंवाना।
**खोकर**—पु० (शि०) छेद।
**खोक्ख**—स्त्री० दे० खोख।
**खोख**—स्त्री० गोद।
**खोखटा**—पु० (सि०) गाल।
**खोखना**—पु० फसल में उगने वाला फालतू घास।
**खोखरा**—वि० (सो०) खोखला।
**खोखरे**—स्त्री० (शि०) शस्त्र विशेष, खुखड़ी।
**खोखळा**—वि० (मं०) दांत रहित (मुख)।
**खोखळा**—वि० खाली।
**खोखा**—पु० काष्ठ निर्मित घर, लकड़ी का बना ढांचा, दुकान।
**खोखा**—पु० (सि०) शिखर, चोटी।
**खोखुआ**—पु० (बि०) एक पौधा विशेष जिसके पत्तों का साग बनाया जाता है।
**खोगणु**—पु० (चं०) जुराब।
**खोघर**—पु० (शि०) बछड़ा।

**खोज़णा**—स० क्रि० (कु०) बताना।
**खोज़िणा**—स० क्रि० (कु०) बताया जाना।
**खोज़ी**—वि० (कु०) शिकायत करने वाला।
**खोजु**—वि० खोज करने वाला, तलाश करने वाला, अन्वेषक।
**खोजोल**—वि० (शि०) अपमानित।
**खोट**—पु० दोष, अवगुण।
**खोट**—पु० (कु०) देवता का प्रकोप।
**खोट**—पु० मिलावट।
**खोटकरा**—वि० (शि०) असत्य-भाषी।
**खोटण**—पु० (सि०) ढक्कन।
**खोटणा**—स० क्रि० छीलना, मक्की के दाने निकालना।
**खोटणा**—स० क्रि० (कु०) ओढ़ाना, ढांपना।
**खोटणो**—पु० (सि०) वस्त्र।
**खोटा**—वि० बुरा।
**खोटा**—वि० नकली, झूठा।
**खोटि**—स्त्री० (शि०) झूठ।
**खोटिणा**—स० क्रि० (कु०) दाना अलग किया जाना।
**खोटिणो**—अ० क्रि० (शि०) विपरीत होना, मुकर जाना।
**खोटियणा**—स० क्रि० (सि०) ओढ़ना।
**खोटियोण**—पु० (सि०) ओढ़ा जाने वाला वस्त्र।
**खोटी**—स्त्री० (मं०) दुकान या मकान के बाहर बना चबूतरा।
**खोटी**—वि० झूठी।
**खोटे**—वि० (शि०) एक (संख्या वाचक)।
**खोटो**—वि० (शि०) झूठा।
**खोटोण**—पु० (सि०) ढक्कन।
**खोड्डी**—स्त्री० (शि०) कटोरी।
**खोड़**—पु० अखरोट।
**खोड़क**—स्त्री० (सि०) 'खड़क' का वृक्ष।
**खोड़खाउळी**—स्त्री० (कु०) भेड़ मालिकों द्वारा भेड़ें घर लाने पर अखरोट और भुने हुए चावल उन पर फैंकने की परंपरा।
**खोड़तर**—स्त्री० (मं०) चित्रकारी, कलात्मकता।
**खोड़दूबा**—स्त्री० 'सायर' उत्सव के अवसर पर संबंधियों आदि को अखरोट व दूर्वा भेंट करने की परंपरा।
**खोड़ना**—स० क्रि० पक्षियों का अंडों से बच्चे निकालना।
**खोड़ना**—स० क्रि० चित्रित करना।
**खोड़ना**—स० क्रि० खोलना, निकालना।
**खोड़ना**—अ० क्रि० (सि०) थक जाना।
**खोड़शावणिया**—पु० (शि०) ऐसा अनचाहा व्यक्ति जो पीछा न छोड़े।
**खोड़ा**—वि० (शि०) लंगड़ा, लूला।
**खोड़ा**—पु० खेत में हल के साथ फंसने वाला पत्थर।
**खोड़ा**—पु० (मं०) दो खेतों की सीमा पर गड़ा पत्थर।
**खोड़ायल**—स्त्री० (सि०) भेड़ की खाल।
**खोड़ावण**—स्त्री० (शि०) पशुओं के गले व टांगों में होने वाली बीमारी।
**खोड़िणा**—अ० क्रि० (सि०) थकना।
**खोड़ी**—स्त्री० (कु०) एक विशेष पर्व जब अखरोट फैंके और बांटे जाते हैं।
**खोड़ीक**—स्त्री० (सि०) पशुओं के चारे के लिए प्रयुक्त होने वाला वृक्ष विशेष।
**खोड़ु**—पु० (मं०) पत्थर तोड़ने के लिए प्रयुक्त लोहे की छैनी।
**खोड़ू**—पु० (सि०) एक पहाड़ी देव।
**खोड़ोक**—वि० (शि०) कठोर।
**खोढ**—पु० (चं०) खाई, खंदक।
**खोणना**—स० क्रि० (कु०) खोदना।
**खोणा**—स० क्रि० खोना, बिगाड़ना, गुम करना।
**खोणा**—स० क्रि० (कु०) व्यय करना।
**खोणा**—वि० (सि०) अच्छा।
**खोत**—स्त्री० एक खेल में भूमि में बनाया गया गड्ढा जिसमें अखरोट या सिक्के डालने की स्पर्धा रहती है।
**खोत**—पु० (सि०) जूते बनाने का पारिश्रमिक।
**खोतड़**—पु० (सो०) छिद्र।
**खोतड़जुट**—स्त्री० (बि०) खींचातानी।
**खोतड़ा**—वि० (कां०, ह०) मूर्ख।
**खोतड़ु**—पु० गधे का बच्चा।
**खोता**—पु० गधा।
**खोतड़**—पु० (चं०) मक्की काटने के बाद बचे तने।
**खोद**—पु० (कु०) चेचक आदि का टीका।
**खोदणा**—स० क्रि० खोदना।
**खोदणा**—स० क्रि० (कु०) चेचक का टीका लगाना।
**खोदणो**—स० क्रि० (शि०) खोदना।
**खोदणो**—स० क्रि० (शि०) रहस्य जानना।
**खोदा**—वि० (चं०) जिसकी दाढ़ी मूंछ न उगती हो।
**खोदिणा**—स० क्रि० (कु०) चेचक का टीका लगाया जाना।
**खोदिणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) खोदा जाना।
**खोधळ**—स्त्री० (चं०) गड़बड़।
**खोपच**—पु० (सि०) गड्ढा।
**खोपड़ा**—पु० सिर।
**खोपड़ी**—स्त्री० सिर, कपाल।
**खोपण**—वि० (कु०) मूर्ख।
**खोपणा**—स० क्रि० (कु०) हथियार से घाव करना।
**खोपणा**—स० क्रि० (मं०) छेद करना।
**खोपरी**—स्त्री० (कु०) खोपड़ी।
**खोपा**—पु० नारियल।
**खोप्पर**—पु० (कां०) सिर। खोपड़ी।
**खोप्पर**—पु० (कां०) नारियल का टुकड़ा।
**खोबड़**—पु० (कां०) फूलों को रखने के लिए बना पत्तों का दोना।
**खोबडू**—पु० (मं०) एक पकवान विशेष।
**खोबरू**—पु० (शि०) संदेशवाहक।
**खोबरू**—पु० (कु०, शि०) दीवार में सामान रखने के लिए निर्मित छिद्र, आला।
**खोबरू**—पु० (कु०) ऐनक, चश्मा।
**खोबली/ले**—स्त्री० (शि०) भाप में पकाई गई विशेष रोटी।
**खोबी**—स्त्री० (शि०) चुंबन।
**खोबेट**—पु० (सि०) कपोल, गाल।
**खोम**—पु० (चं०) छेद।

**खोभला**—पु० (मं०) छिद्र।
**खोमचा**—पु० (शि०) गड्ढा।
**खोमथा**—पु० आग निकालने का साधन।
**खोमळे**—स्त्री० (सि०) गोष्ठी।
**खोयर**—स्त्री० (सि०) 'खैर' का वृक्ष।
**खोर**—पु० दुःख। चिंता।
**खोर**—स्त्री० (चं०) लगन।
**खोर**—पु० (शि०) दोषारोपण करने का भाव।
**खोर**—पु० (सि०) ढकने का भाव।
**खोर**—स्त्री० (सो०) ईर्ष्या, डाह, दुश्मनी।
**खोरखरो**—वि० (सि०) ऊबड़-खाबड़।
**खोरच**—पु० (सि०) व्यय, खर्च।
**खोरचना**—स० क्रि० (शि०) कुरेदना।
**खोरचा**—पु० (कु०) रसोई का एक कोना।
**खोरठ**—पु० (बि०, कां०) गन्ने का रस निकालने के बाद कड़ाही में चिपका हुआ पदार्थ।
**खोरड़**—पु० परात में आटा गूंथने के बाद चिपके हुए पदार्थ का धोवन।
**खोरड़**—पु० (शि०) लस्सी आटे व नमक का मिश्रण।
**खोरड़ा**—वि० (कां०, ऊं०) खुरदरा।
**खोरड़ा**—पु० (बि०) किसी पदार्थ की पात्र में लगी सख्त चिपकन।
**खोरयाळो**—वि० (शि०) नमकीन।
**खोरशी**—स्त्री० (सि०) कुर्सी।
**खोरा**—पु० (चं०) चूल्हे का अग्रभाग।
**खोरा**—पु० (शि०) कटोरा।
**खोरा**—पु० (सि०) ईंटों का चूरा।
**खोरा**—पु० (कु०) गड्ढा।
**खोरा**—पु० (ऊ०) कपड़े धोने का सोडा।
**खोराड़**—पु० (शि०) कुरेदने या ज़मीन की पपड़ी उतारने की क्रिया।
**खोराड़िना**—स० क्रि० (शि०) परिश्रम करना।
**खोरानी**—स्त्री० (शि०, सि०) शिला, नमक आदि पीसने की खुरदरी शिला।
**खोराब**—वि० (सि०) बुरा, खराब।
**खोरी**—स्त्री० (चं०) छोटी गुफा।
**खोरी**—स्त्री० (कु०) तल, ऊखल का तल।
**खोरी**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) गन्ने के बाहर का सूखा हुआ छिलका।
**खोरी**—वि० (सि०) अपवित्र मन वाला, कपटी, द्वेष रखने वाला।
**खोरी**—पु० (मं०) गढ़ा हुआ पत्थर जिसमें ओखली के आकार का भाग कुरेदा हुआ हो।
**खोरी**—पु० (मं०) गढ़ा हुआ पत्थर।
**खोरी**—स्त्री० (कां०) ओखली।
**खोरी**—स्त्री० (चं०) पदचिह्न।
**खोरू**—पु० (कु०, चं०) मिट्टी का विशेष पात्र जो कुलफी, दही आदि बनाने के काम आता है।
**खोरू**—पु० (कां०, ह०, ऊ०) भेड़, बकरी व कुत्ते आदि द्वारा खुर से मिट्टी हटाने की स्थिति।
**खोरूश**—स्त्री० (शि०) खारिश।
**खोरे**—स्त्री० (शि०) कटोरी।
**खोरेऊ**—वि० (सि०) खैर का वृक्ष।
**खोरेऊड़ा**—पु० (शि०) गाय को दुहते समय उसकी टांग में बांधी जाने वाली रस्सी।
**खोरेनीज़**—स्त्री० (शि०) गहरी नींद।
**खोरो**—पु० (शि०) कटोरा।
**खोरोच**—पु० (सि०) व्यय, खर्च।
**खोल**—पु० (कु०) अन्न का ढेर।
**खोल**—पु० (शि०) गिलाफ।
**खोल**—पु० गड्ढों वाली भूमि।
**खोळ**—पु० (मं०, ऊ०, कां०) ऊपरी भाग, ढक्कन।
**खोळ**—स्त्री० (कु०) घर के सामने की खुली जगह।
**खोळ**—पु० (चं०, कां०, शि०) छिद्र।
**खोळडी**—स्त्री० (शि०) पशुओं को पानी पिलाने के लिए वृक्ष के तने को कुरेद कर बनाया गया पात्र।
**खोलणा**—स० क्रि० (कु०) खोलना, खोल देना।
**खोलणा**—स० क्रि० (शि०) मक्की के दानों को भुट्टे से अलग करना।
**खोलरा**—वि० (कु०) खोखला।
**खोला**—पु० गड्ढा।
**खोला**—पु० (मं०) बाल झड़ने का भाव।
**खोला**—पु० (कां०, ऊ०) बंजर भूमि।
**खोलिणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) खोला जाना।
**खोलिणो**—अ० क्रि० (शि०) खड़ा होना।
**खोली**—स्त्री० (सि०) गांव का प्रवेश द्वार।
**खोली**—स्त्री० (चं०, कां०, ऊ०) झोंपड़ी।
**खोळी**—स्त्री० (शि०) देवालय अथवा प्रासाद का चौखट।
**खोलू**—वि० (सि०) ढलानदार।
**खोळू**—पु० छोटा छिद्र।
**खोल्ही**—स्त्री० (चं०) कम ढलानदार स्थान।
**खोल्हु**—पु० (मं०) छोटा गड्ढा।
**खोशा**—पु० (चं०) मक्की के बाहर के पत्ते।
**खोसणा**—स० क्रि० छीनना।
**खोसणा**—स० क्रि० (सो०, शि०) ठूंसना।
**खोसळा**—वि० (कु०) ऐसा व्यक्ति जिसके दांत टूटे हों।
**खोसळे**—वि० (कु०) छिद्रयुक्त।
**खोस्सण**—स्त्री० (सो०) औकात, शक्ति।
**खोह**—स्त्री० (चं०) थकान।
**खोह**—पु० (कु०, सि०) खाई।
**खोहड़ना**—स० क्रि० खोलना।
**खोहणा**—स० क्रि० छीनना।
**खोहदळ**—पु० (ऊ०) गंदा पानी, अशुद्ध जल।
**खोहदळ**—स्त्री० (कां०) गड़बड़।
**खौंखरा**—वि० (चं०) खोखला।
**खौंखरा**—पु० (सि०, शि०) चिड़चिड़ा।

**खोंचा**—पु० शिकंजा।

**खोआ**—पु० कंघा।

**खोई**—स्त्री० (कु०) ज़ंग।

**खोईसर—स्त्री० (कु०) भूमि में बनाया गया बड़ा गड्ढा जिसमें रोगी को डालकर 'गूर' रोगी का इलाज करता है।**

**खोक्ष**—पु० (मं०) भय।

**खोटण**—पु० (कु०) ढक्कन।

**खोटणा**—स० क्रि० (शि०) बंद करना।

**खोड़**—स्त्री० (मं०) सूखी घास जो सर्दियों में काटी जाती है।

**खोड़**—पु० (शि०) दे० खड़।

**खोड़क**—स्त्री० (कु०) 'खड़क' वृक्ष विशेष जिसकी पत्तियां चारे के काम आती हैं।

**खोड़ना**—अ० क्रि० (शि०) उठना।

**खोड़ना**—अ० क्रि० (शि०) थकना।

**खोड़विशांओं**—पु० (शि०) खड़े-खड़े आराम करने की क्रिया।

**खोड़ा:री**—स्त्री० (शि०) घास काटने वाली स्त्री।

**खोड़ाहूंदा**—वि० (शि०) थका हुआ।

**खोड़िआ— वि० (सि०) चकित।**

**खोड़िना**—अ० क्रि० (कु०) खड़े **होना,** प्रतीक्षा करना।

**खोड्डा**—पु० (चं०) टखना।

**खोड़ू**—पु० (चं०) बहुत छोटा गड्ढा।

**खोतम— वि०** (सि०, कु०) समाप्त।

**खोतरा**—पु० (सि०, कु०) खतरा।

**खोस**—स्त्री० (चं०) चुभने वाली बात।

**खोत्तड़**—पु० (चं०) दे० खोत्तड़।

**खोद**—पु० (चं०) छोटा गड्ढा।

**खोदणे**—स्त्री० (शि०) जागरण।

**खोदळ**—स्त्री० (कां०, ऊ०) कलह।

**खोदळा**—वि० (कु०) गदला, मिट्टी या कीचड़ मिला हुआ (पानी)।

**खोधला**—वि० (बि०, चं०) दे० खोदळा।

**खोपर**—पु० (शि०) **टूटे हुए घड़े का आधा भाग।**

**खोपू**—स्त्री० पक्षी की चोंच मारने की क्रिया।

**खोबर**—स्त्री० (कु०, शि०) समाचार।

**खोबरू**—पु० (शि०) संवाददाता।

**खोबरू**—वि० (बि०) गंदा (स्थान)।

**खोर**—पु० (ऊ०) वृक्ष के नीचे की छाया।

**खोरकुणा**—स० क्रि० (शि०) खुजलाना।

**खोरखरा**—वि० (सि०) खुरदरा।

**खोरटा**—पु० (शि०) नाला।

**खोरड़ा**—पु० (कु०) भेड़-बकरियों का चमड़ी रोग।

**खोरल**—स्त्री० (कु०) लंबी लकड़ी जिसमें पशु पंक्ति में बांधे जाते हैं।

**खोरळा**—पु० (शि०) चूल्हे के पीछे सामान रखने का स्थान।

**खोर व्याध**—स्त्री० (शि०) चर्म रोग।

**खोरशु**—पु० (कु०) एक वृक्ष जो पहाड़ों पर बहुत ऊंचाई में होता है, **जिसके** पत्ते चर्मरोग के इलाज के काम आते हैं।

**खोरा**—वि० (कु०, सि०) अच्छा।

**खोरा**—वि० (शि०) नफरत करने वाला।

**खोरा**—पु० (बि०) धूल मिली हवा।

**खोरा**—पु० (ऊ०) डर।

**खोरिक**—स्त्री० (शि०) खारिश।

**खोरी**—वि० (शि०) तेज।

**खोरी**—वि० (ऊ०) दबंग।

**खोरे**—वि० (शि०) कुपित।

**खोर्चणो**—स० क्रि० (शि०) खर्च करना।

**खोर्हू**—पु० (चं०) धान के खेतों में से घास निकालने की क्रिया।

**खोल**—स्त्री० (कु०) खाल, पशुओं की खाल जो अन्न रखने के बजाए किसी और काम में लाई जाती है।

**खोळ**—स्त्री० (शि०, कु०) खली।

**खोळ**—पु० (कु०) खलिहान।

**खोलचु**—पु० (सि०) बिरोज़ा।

**खोलटा-पोलटी**—स्त्री० (शि०) हेरा-फेरी।

**खोलटु—पु० (सि०) अन्न भरने के लिए प्रयुक्त बकरे की खाल** का थैला।

**खोलटुबाजा**—पु० (सि०) चमड़े से मढ़ा वाद्ययंत्र।

**खोलड़ा**—पु० (कु०) बकरे की खाल को साफ करके आटा या अन्न रखने के लिए बनाया गया थैला। एक से अधिक बकरे अथवा भेड़ की खाल से बना पात्र।

**खोलणी**—स्त्री० (शि०) खली।

**खोळो**—पु० (शि०) आंगन।

**खोशड़ा/सड़ा—पु०** (कु०) फटा पुराना जूता।

**खोसम**—पु० (शि०) पति।

**खोहरा**—वि० (मं०, कां०) खुरदरा, कठोर।

**खोह्गड़**—वि० अधिक खाने वाला।

**खोह्ड़**—वि० (बि०, मं०) खूंखार, कठोर स्वभाव वाला।

**खोह्ड़ा**—पु० (बि०) कुत्तों के बाल झड़ने का रोग।

**खोह्णा**—पु० (शि०, सि०) बर्फ में रास्ता लगाने की क्रिया।

**खोह्रा**—पु० (कु०) कष्ट, तकलीफ, दूसरों द्वारा दिया गया ऐसा कष्ट जिसकी व्यक्ति विशेष अपने संबंधियों के पास चर्चा करता है।

**खोह्रू**—पु० लस्सी का व्यंजन।

**ख्याउणा**—स० क्रि० (शि०) खिलाना।

**ख्याड़ी**—स्त्री० (सि०) चूल्हे का अगला भाग।

**ख्यानणू**—पु० छोटी पिटारी।

**ख्यार**—पु० (शि०) घिसने से बना निशान।

**ख्यो**—पु० (बि०) ज़ोर, परिश्रम; क्षेम।

**ख्योड़ना**—स० क्रि० (कां०) मक्की के दाने निकालना।

**ख्यौ**—पु० (शि०) थकावट।

**ख्राउटणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) मिट्टी में लोटना।

**ख्राटिणा**—अ० क्रि० (शि०) बेचैनी में हाथ पैर मारना।

**ख्राड़**—पु० (सो०) ऊपर-ऊपर से खोदने का व्यापार।

**ख्राड़ना**—स० क्रि० (सो०) ऊपर-ऊपर से खोदना।

**ख्रावटणा**—स० क्रि० (सो०) ऊन या पशम के दो धागों को एक तकली विशेष से मिलाना।

**खिंगड़**—स्त्री० (चं०) वृक्ष पर चढ़ने की प्रक्रिया।

**खिंगणा**—स० क्रि० (चं०, कु०) गाय को इतना दुहना कि थन में दूध न रहे।
**खिंघा**—पु० (चं०, कां०, ऊ०) उलझी हुई टहनियां।
**खिंडकिणा**—अ० क्रि० (शि०) बंदरों का बोलना।
**खिंडणा**—स० क्रि० (सो०) कांटा निकालना।
**खिद**—पु० (चं०) आग का समूह।
**खिदार**—पु० (चं०) जले हुए कोयलों का समूह।
**खी**—वि० (कु०) मजबूर।
**खीगणा**—स० क्रि० (चं०) नाक साफ करना।
**खूगड़ी**—स्त्री० (चं०) टांगों की छटपटाहट।
**खेचना**—स० क्रि० (सो०) खुरचना।
**खोड़**—स्त्री० (चं०) ज़ख्म की लकीर।
**खोड़ना**—स० क्रि० (चं०) मक्की के भुट्टे से दाने निकालना।
**खोड़ा**—पु० (चं०) निशान डालते समय खींची गई लकीर।
**खोड़ा**—पु० (शि०, कु०) बर्तन में पकाने के लिये डाली वस्तु को पानी के बिना कलछी आदि से हिलाने की क्रिया।
**खोलना**—स० क्रि० (ऊ०) मृत पशुओं की चमड़ी उतारना।
**खोळना**—स० क्रि० (शि०) मिट्टी को कुरेदना।
**खोळना**—स० क्रि० (कु०) पानी में पकाई जाने वाली वस्तु को कलछी से हिलाना।
**खोलिणा**—स० क्रि० (कु०) मिट्टी को कुरेदा जाना।
**ख्वाजा**—पु० जलदेवता, पीर।
**ख्वाड़ा**—पु० (मं०) तबाही।
**ख्वाड़ा**—पु० गेहूं गाहने का स्थान।
**ख्वार**—वि० बदनाम।
**ख्वाह**—स्त्री० अफवाह।
**ख्वाह**—अ० चाहे कुछ भी हो।

## ग

**ग**—देवनागरी वर्णमाला के कवर्गका तीसरा वर्ण। उच्चारण स्थान कंठ।
**गंएं**—स्त्री० कदम, पग।
**गंखी**—स्त्री० (सो०) पानी के कटाव से बनी खाई।
**गंगड़—पु० (कां०, चं०) पशुओं को काटने वाली मक्खी जिसके काटने से पशु बहुत तेज भागता है।**
**गंगा**—स्त्री० भारतवर्ष की एक प्रधान और पवित्रतम नदी।
**गंगाजमनी**—वि० (कां०) मिली-जुली दालें।
**गंगाजल**—पु० गंगाजल।
**गंगाजली**—स्त्री० (कां०) सौगंध उठाने के लिए सिर पर रखा गंगाजल से भरा छोटा कमंडलु।
**गंगाणी**—पु० (चं०) गंगाजल।
**गंगारड़ी**—स्त्री० (चं०, बि०) भूमि से निकलने वाला एक कंद जिसकी सब्जी बनाई जाती है।
**गंगाल**—वि० (चं०) बहुत गहरा।
**गंगी**—स्त्री० (बि०) एक लोक गीत, लोक गीत की नायिका।
**गंगेराम**—पु० (कां०) तोता।
**गंगोज**—पु० (मं०, चं०) गंगाजल की प्रतिष्ठा।
**गंगोलरू**—पु० (बि०) अरबी।
**गंघोल**—स्त्री० वृद्धावस्था के कारण मानसिक शक्ति के ह्रास होने का भाव।
**गंज—पु० सिर के बाल झड़ जाने का रोग।**
**गंज**—पु० ढेर।
**गंजार**—पु० ढेर।
**गंठ**—स्त्री० (मं०) गांठ।
**गंठगोभी**—स्त्री० गांठ गोभी।
**गंठीर**—वि० (चं०) अभिमानी, अकड़बाज।
**गंड**—पु० (ऊ०) हल के मध्य का जोड़।
**गंड**—पु० (चं०) बड़ा फोड़ा।
**गंडपत्रू**—पु० (चं०) रुईदार जड़ी।
**गंडयाली**—स्त्री० अरबी की एक किस्म।
**गंडवास**—पु० (सि०) घास को बारीक काटने का तेज औज़ार।
**गंडविहणी**—स्त्री० (मं०) एक बूटी।
**गंडांत**—पु० (कां०, ऊ०) तिथि, नक्षत्र।
**गंडा**—पु० (चं०) तावीज़।
**गंडा**—पु० (ऊ०) प्याज़।
**गंडासा**—पु० पशुओं के लिए चारा काटने का औज़ार।
**गंडुआ**—पु० (सि०) केंचुआ।
**गंडेरी**—स्त्री० (मं०) गन्ने के छीले हुए टुकड़े।
**गंडेह—पु०** (कां०) हल के मध्य का जोड़।
**गंढ**—स्त्री० (चं०) दे० गंठ।
**गंढणा**—स० क्रि० (चं०) जूते की सिलाई करना।
**गंढीणा**—अ० क्रि० (चं०) किसी तरह का लाभ होना।
**गंढीरा**—पु० एक जहरीला पौधा।
**गंढू**—पु० (बि०) प्याज का गट्ठा।
**गंढे**—पु० (चं०) अंगुलियों की गांठें।
**गंढेर**—स्त्री० (कां०) बैलों को बांधने की रस्सी।
**गंढोल**—पु० (चं०) कद्दू प्रजाति की एक सब्जी।
**गंढोली**—स्त्री० (चं०) दे० गंढोल।
**ग़ंतरयाड़ा**—पु० (मं०) प्रसव के ग्यारहवें दिन का संस्कार।
**गंतौगे**—वि० (सि०) गाना गाने वाला।
**गंत्रयाला**—पु० (मं०) दे० गंतरयाड़ा।
**गंदल**—स्त्री० (बि०, ऊ०) हरा व कोमल तना।
**गंदाई**—स्त्री० (चं०) मधुमक्खी पालने के लिए बना लकड़ी का गोल डिब्बा।
**गंदीरी**—स्त्री० (कु०) Daphne papyracea.
**गंदोरू**—पु० (सि०) छोटा हुक्का।
**गंदौणा**—स० क्रि० (सि०) दे० गुंदणा।
**गंधरी**—स्त्री० तालाब में उगने वाला जहरीला पौधा।
**गंधेरा**—पु० (बि०) घीया, तोरी।
**गंनरू**—पु० (कु०) गलगल।
**गंभरू—पु० (कु०) गलगल।**

**गंलाउडे**—पु० (सि०) गाल।
**गंवार**—वि० (चं०) गंवार, मूर्ख।
**ग:ण**—पु० (सो०) भारी हथौड़ा।
**ग:र**—पु० (सो०) घर।
**ग:राट**—पु० (शि०) घराट।
**गअड़**—पु० (शि०) आंगन।
**गअड़े**—अ० (शि०) आगे।
**गअणी**—स्त्री० (शि०) रानी मक्खी।
**गइणा**—पु० (शि०) गहना, आभूषण।
**गईण**—पु० (शि०) आकाश।
**गईर**—पु० (शि०) महल।
**गऊं**—पु० (चं०) इच्छा।
**गऊंच**—पु० (शि०, कु०) गोमूत्र।
**गऊंतरीया**—पु० गाय से संबंधित व्रत का नाम।
**गऊ**—स्त्री० गाय।
**गऊग्रास**—पु० भोजन करने से पहले रखा गया गाय का भाग।
**गऊणा**—स० क्रि० (बि०) गाना।
**गऊदान**—पु० गोदान।
**गऊरो**—पु० (चं०) घर।
**गऊला**—पु० (चं०) लंगूर।
**गओं**—पु० (कु०) इच्छा।
**गओहण**—स्त्री० (मं०) सिर धोने के लिए विशेष बेल की फलियां।
**गऔयण**—स्त्री० (बि०) पशुओं को बांधने का स्थान।
**गक्खू**—पु० (चं०) लाभ।
**गगटेड़ोआ**—स्त्री० (सो०) गेहूं या मक्की के आटे में अरबी डालकर बनाई गई रोटी।
**गगरा**—वि० मोटी धातु का।
**गगरा**—वि० (चं०) न्यूनता।
**गगरा**—वि० अधपका।
**गगा**—स्त्री० (शि०) डायन।
**गगूई**—स्त्री० (सि०) अरबी।
**गगळ**—पु० (कां०, ऊ०) पत्थरों का ढेर।
**गगु**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) खिलौनानुमा रोटी, छोटी रोटी।
**गच**—वि० लबालब भरा हुआ, खूब भरा हुआ।
**गच**—वि० गीला।
**गचगच**—स्त्री० बार-बार बोलने की क्रिया।
**गचनहल**—स्त्री० (मं०) तंग गली।
**गचपच**—पु० उलट बात।
**गचपचा**—वि० (कां०, मं०, ऊ०) बहुत शरारती।
**गचमंड**—पु० (कां०, ऊ०, बि०) बिल्कुल गीला।
**गचींचणा**—स० क्रि० (सो०) मींचना, जोर से मींचना।
**गचींचिणा**—स० क्रि० (बि०) गीले आटे को हाथ से मलना।
**गचीचा**—वि० अधपका।
**गचीमड़ा**—वि० (सो०) भद्दा।
**गचीमणा**—स० क्रि० दबाना।
**गचु:ली**—स्त्री० तंग गली।
**गचूमणा**—स० क्रि० डुबोना।
**गचेड़ा**—पु० (कु०) खमीर, देर तक रखने से गूंधे आटे में पैदा होने वाली खटास और उभार।
**गच्चक**—पु० गुड़ से बनी मिठाई।
**गच्चल**—पु० तंबाकू में डाला जाने वाला शीरा।
**गच्छणा**—स० क्रि० (कां०, मं०) पकड़ना।
**गच्याणा**—स० क्रि० (कु०) गोमूत्र लेना।
**गछयाउणा**—स० क्रि० (कु०) घास या लकड़ी को एक रस्सी में बांधना।
**गछेवणा**—स० क्रि० (सो०) घास या अन्न की बोरी आदि को रस्सी से बांधना।
**गज**—पु० (सि०) लकड़ी का द्वार।
**गज**—पु० (कां०) छत पर स्लेट डालते समय प्रयुक्त पतली लकड़ी।
**गज**—पु० कपड़े मापने का पैमाना।
**गजणा**—अ० क्रि० गूंजना।
**गजबड**—पु० (शि०) बहुत बड़ा।
**गजर**—पु० (सि०, बि०) गोधूलि का समय।
**गजरा**—पु० फूलों का कंगन।
**गजरू**—पु० हाथ में पहनने का चांदी का आभूषण।
**गजलेट**—पु० (कु०) धागे आदि में उलझने से पड़ी हुई गांठ।
**गजाई**—पु० (चं०) त्रिशूल।
**गज़ाल**—पु० (कु०) जुगाली।
**गजू**—पु० (कु०) चारपाई बनाने या छत डालने की लकड़ी।
**गज़ेड़**—स्त्री० (कु०) शरारत।
**गज़ेड़ी**—वि० (कु०) शरारती।
**गजोरा**—पु० (सि०) गुजारा।
**गजोहळा**—पु० (कु०) शोर।
**गज्जर**—पु० (शि०) समूह।
**गझेळणा**—स० क्रि० (कु०) छुपाना।
**गझेरना**—स० क्रि० आदत डालना।
**गफ्फोरड़**—वि० हिला हुआ।
**गट**—पु० बड़े आकार का फूल, गेंदा।
**गटकोरना**—अ० क्रि० (कां०) मधुर ध्वनि करना।
**गटड़ा**—पु० थोड़ा मोटा पत्थर।
**गटण**—पु० (सि०) ढक्कन।
**गटणो**—स० क्रि० (सि०) बंद करना।
**गटपर**—स्त्री० (मं०) मित्रता।
**गटाकड़ी**—स्त्री० (कां०) गेंदे की छोटी किस्म।
**गटागट**—अ० एक सांस में पीने की क्रिया।
**गटी**—स्त्री० बारीक पत्थर।
**गटे**—पु० (शि०) दवाई की गोली।
**गटेयाहली**—वि० (मं०) कंकर-पत्थर वाली।
**गट्ट**—वि० गठीला।
**गट्टा**—पु० छोटा पत्थर।
**गट्टी**—स्त्री० दे० गटी।
**गट्टू**—वि० (बि०) छोटे कद का।
**गट्ठ**—स्त्री० गांठ।

गट्ठणा—स० क्रि० सिलाई करना, मिलाना, जोड़ना, गांठना।
गट्ठी—स्त्री० हलदी या अदरक का टुकड़ा।
गट्ठी—अ० (मं०) पास।
गठ—स्त्री० दे० गट्ठ। संचित धन राशि।
गठड़ी—स्त्री० पोटली।
गठड़ु—पु० छोटी गठरी।
गठणा—अ० क्रि० समृद्ध होना।
गठाई—स्त्री० मुरम्मत; जूते मुरम्मत करने की मज़दूरी।
गठाली—स्त्री० सोना पिघलाने का पात्र।
गठिया—पु० एक रोग।
गठिरा—वि० समृद्ध।
गठेश—पु० (मं०) चूल्हे के चारों ओर लगे पत्थर।
गठेहम—पु० (कु०) पीठ के पीछे का सहारा।
गठोणा—अ० क्रि० किसी की सहायता से निर्धनता का दूर होना।
गड—पु० गला।
गड—पु० (चं०) वह बैल जो हल चलाना न सीखे।
गड़क—स्त्री० गर्जना, कड़क।
गड़कणा—अ० क्रि० गरजना।
गड़कणा—अ० क्रि० (कां०) सब्जी, दाल आदि के उबलने की आवाज़ आना, उबलना।
गड़कना—अ० क्रि० (कां०) कूदना।
गड़कना—अ० क्रि० बजना।
गड़काइणा—स० क्रि० (कु०) डंडों द्वारा पीटा जाना।
गड़काणा—स० क्रि० (कु०) डंडे से पीटना।
गड़कोना—अ० क्रि० गरजना।
गड़क्षी—स्त्री० (मं०) माला।
गड़गड़ाणो—अ० क्रि० (सि०) ठिठुरना।
गड़गिच्ची—स्त्री० मुसीबत।
गड़गोजू—पु० (कु०) अलगोजा, बांसुरी के प्रकार का एक वाद्ययंत्र।
गड़घोटू—पु० गले का फोड़ा।
गड़चोपा—स्त्री० (मं०) खूबानी की कच्ची गुठलियों की चटनी।
गड़णा—अ० क्रि० (सो०) कुश्ती करना।
गड़दना—स० क्रि० (बि०) जोर से मुक्का मारना।
गड़ना—स० क्रि० गाड़ना।
गड़पाटो—पु० (शि०) कुत्ते के गले में बांधा जाने वाला लोहे का कांटेदार पट्टा।
गड़प्पणा—स० क्रि० (कु०, मं०) निगलना।
गड़बंघ—पु० (कु०) गुलूबंद।
गड़बा—पु० लोटा।
गड़बिल्लियां—स्त्री० (कां०) औंधे मुंह शरीर को उलटाने-पलटाने की क्रिया।
गडमड—पु० (कु०) अच्छे व बुरे का मिश्रण, गड़डमड़ड।
गड़मोच्छिया—वि० (कु०) बड़ी मूंछों वाला।
गडयार—पु० (बि०) कनक या धान की गडिडयों का ढेर।
गड़यार—पु० (कां०) वह स्थान जहां घास को इकट्ठा करके रखते हैं।
गड़याली—स्त्री० (बि०) अरवी।
गड़याह—पु० (कु०) आग की लपटें, अलाव।
गड़ल्ला—पु० दे० गड़ाका।
गड़वांस—पु० नवरात्रे से एक दिन पूर्व का उत्सव।
गडवा—पु० (सि०) केंचुआ।
गड़वाई—स्त्री० गोड़ाई।
गड़वाणा—स० क्रि० (चं०) काढ़ना।
गड़वाना—पु० गुड़ का घोल।
गड़वाहन—स्त्री० (कु०) मवेशियों की भीड़।
गड़श्री—स्त्री० (मं०) गले की साधारण माला।
गड़सपड़स—स्त्री० (मं०) उठ-बैठ।
गड़हेरना—स० क्रि० (कु०) भेद निकलवाना।
गडांजे—पु० (शि०) गुड़ का शरबत।
गड़ा—पु० पत्थरों का भंडार।
गड़ा—पु० (सो०) घड़ा।
गड़ाई—स्त्री० दे० गड़वाई।
गड़ाउड़ा—पु० (कु०) बादलों की गर्जन।
गड़ाऊ—पु० (मं०) मकड़ी।
गड़ाका—पु० दे० गड़ाउड़ा।
गड़ाका—पु० (कु०) डंडे की चोट; टूटने की आवाज़।
गड़ाणी—स्त्री० गुड़ की चाशनी।
गड़ान—पु० (कु०) इमारती लकड़ी को ज़मीन पर रगड़ कर लाने की क्रिया।
गड़ाळना—स० क्रि० (सो०) आटे आदि में पानी मिलाना।
गडाहरू—पु० फसल की गट्ठियों का ढेर।
गड़िकणा—अ० क्रि० (कु०) लड़ना-भिड़ना, उछलना-कूदना।
गड़िकणा—अ० क्रि० (सो०, शि०) बादलों का गरजना।
गड़िम्म—पु० पेट के भरे होने का भाव।
गड़िम्ह—स्त्री० धड़ाम।
गड़िम्हका—पु० धमाका।
गड़िम्हका—पु० (कु०) सिर पर चोट आदि लगने से उभरा भाग।
गड़ियाचिणा—अ० क्रि० (कु०) लड़ाई करना।
गड़िहन—स्त्री० (कु०) मिट्टी का ढेला।
गड़ी—स्त्री० (बि०) ग्राम देवता का स्थान विशेष।
गड़ीग्रह—वि० (मं०) आलसी।
गड़ीलण—स्त्री० (कु०) गिद्ध।
गडुआ—पु० गेहूं व अलसी में उगने वाला फूल।
गडुआ—पु० (कां०) फूलगोभी।
गडुआ—पु० वर्षा के लिए किया जाने वाला शिव पूजन जिसमें शिवलिंग पर डाला गया जल नदी में मिलाया जाता है।
गडुहर—पु० (कां०) पालतू सूअर।
गड़ू—पु० (मं०) पत्थर।
गड़ूच्छा—पु० (कां०) गुच्छा।
गड़ूड़ू—पु० (कु०) दे० गड़ाउड़ा।
गडेंचिणा—अ० क्रि० (कु०) भिड़ना।
गड़ेड़ा—वि० (कु०) जूठन या तरल पदार्थ से मलिन (बर्तन आदि)।

**गड़ेणी**—स्त्री० (चं०) नदी के किनारे पाई जाने वाली लाल चिड़िया।
**गड़ेना**—पु० (कु०) 'गांघड़ी' अन्न विशेष का घास।
**गड़ेर**—स्त्री०। (बि०) धान को एक बार मोटा कूट कर छानने की प्रक्रिया।
**गड़ेव**—पु० (सो०) गैर ज़रूरी सामान।
**गड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) घड़े से पानी निकालना।
**गड़ैड़ा**—वि० (चं०) थोड़ा कच्चा।
**गड़ो**—पु० (मं०) शिखर।
**गड़ोई**—वि० गुड़ बनाने वाला।
**गड़ोई**—पु० (कां०) कीड़ा विशेष।
**गड़ोड़ा**—पु० (बि०) बादल व वर्षा के बाद का उजाला।
**गड़ोपणा**—स० क्रि० गटकना।
**गड़ोल्ला**—वि० अगुआ, अग्रगामी।
**गडोहळू**—पु० गट्ठर।
**गडौंजा**—पु० (मं०) टोटका।
**गडौखल**—वि० (कु०) पथरीला।
**गडौम**—पु० (कु०) गम।
**गड़ौहड़ी**—स्त्री० (कु०) खर्राटे।
**गड्डणा**—स० क्रि० गाड़ना।
**गड्डर**—पु० (बि०) किसी चीज का बहुतायत में होने का भाव।
**गड्डी**—स्त्री० (चं०) गाड़ी।
**गड्डोलू**—पु० (कां०) छोटा बोझ।
**गढ़**—पु० प्राचीन किला।
**गढ़कणा**—अ० क्रि० (कां०) गरजना।
**गढ़जुप**—पु० (बि०) गांठ, जोड़।
**गढमह्‌जा**—पु० घड़ों को रखने के लिए बनाई गई लकड़ी की चौखट।
**गढम्हेली**—स्त्री० (बि०) उलटबाजी।
**गढ़ा**—पु० (चं०) नीचा स्थान।
**गढ़ाक**—पु० धमाका।
**गढ़िन**—स्त्री० (कु०) दुर्गंध।
**गढिमका**—पु० (कु०) दे० गड़िम्हका।
**गढ़ी**—स्त्री० (चं०) सिर की वेणी।
**गढ़ेड़ी**—स्त्री० (कु०) दे० गंडयाली।
**गढ़ेया**—वि० तराशा हुआ।
**गढ़ेहं**—पु० (सि०) इलाका।
**गढैडे**—पु० (मं०) अरबी की एक किस्म।
**गण**—पु० (मं०) आकाश।
**गण**—पु० मधुमक्खियों का समूह।
**गण**—पु० (चं०) देव वाहन।
**गणगांट**—पु० (मं०) कुंडली।
**गणती**—स्त्री० गिनती।
**गणना**—स० क्रि० गिनना।
**गणना**—स० क्रि० (सो०, चं०) विशेष गिनती करके देव दोष का पता करना।
**गणनाटा**—वि० (सो०) गंभीर।
**गणयाह्‌ड़ा**—पु० (चं०) तांत्रिक।
**गणा**—पु० (सो०) कटाव को रोकने के लिए दी गई पत्थर की दीवार।
**गणाई**—स्त्री० गिनती।
**गणाखी**—स्त्री० (चं०) मधुमक्खी को आत्मा का प्रतीक मानने का भाव।
**गणाट**—पु० गर्जना, कठोर आवाज़।
**गणाढा**—पु० (चं०) तांत्रिक।
**गणाणा**—स० क्रि० गिनवाना।
**गणार**—पु० गिनती करने वाला।
**गणाह्‌ड**—पु० (चं०) मधुमक्खियां बिठाने हेतु दीवार में बनाया गया छत्ता।
**गणी**—स्त्री० (शि०) नम।
**गणीण**—स्त्री० बस या जहाज़ के आने की ध्वनि।
**गणीला**—पु० (चं०) फिसल जाने की क्रिया।
**गणूणा**—पु० दे० गणीण।
**गणेवणा**—स० क्रि० (सो०) दही को बिलोने के लिए घड़े में डालना।
**गणोउटी**—स्त्री० (कु०) छोटे बछड़े को बांधने की रस्सी।
**गणोटा**—पु० (सो०) हथौड़ा।
**गण्णाटा**—पु० (सो०) बहुत जोर का गर्जन।
**गत**—पु० गति, अवस्था।
**गत**—पु० मुरम्मत।
**गतरालू**—पु० (शि०) गला।
**गति**—स्त्री० दे० गत।
**गती**—स्त्री० (बि०) अवस्था।
**गती**—स्त्री० क्रिया कर्म संस्कार।
**गतीखती**—स्त्री० अंत्येष्टि।
**गते**—पु० (सो०) प्रविष्टे।
**गतोआ**—पु० पशुओं को दिया जाने वाला खलीमिश्रित चारा।
**गतोलू**—पु० छोटा गढ़ा।
**गत्रीरा**—वि० (मं०) बहुत बड़ा।
**गदड़ावणा**—अ० क्रि० (सो०) चिल्लाना।
**गदर**—पु० (बि०) अत्यधिक शोर-शराबा, असंभव सी बात।
**गदरपाणा**—स० क्रि० (कां०) नाश कर देना।
**गदरा**—वि० (कां०) पकने के करीब।
**गदरा**—वि० (बि०) दो रंगों वाला।
**गदरेटी**—स्त्री० गद्दी युवती।
**गदवड़णा**—स० क्रि० (सि०) झूठ बोलना।
**गदवाम**—पु० (सि०) गोदाम।
**गदाम**—पु० (कु०) गोदाम।
**गदारना**—स० क्रि० (सो०) प्रहार करना।
**गदावरी**—स्त्री० (कु०, सि०) पटवारी, कानूनगो द्वारा खेतों में बोई फसल का अपने अभिलेखों में इंदराज करने की क्रिया।
**गदीऊड़ा**—पु० (मं०) जुगनू।
**गदीहण**—स्त्री० (मं०) मोरनी।
**गदूकीड़ा**—स्त्री० (मं०) छिपकली।
**गद्दद**—पु० (कु०) गाढ़ा खून।

**गटूब**—पु० (बि०) अनचाहा व्यक्ति।
**गटूस**—पु० वसूटी जाति का पौधा।
**गटूसड़**—पु० (कु०) कूड़ा-करकट।
**गड़ेरन**—पु० (मं०) गड़रियों का क्षेत्र।
**गदेला**—पु० छोटा गद्दा, बिछौना।
**गदोड़**—पु० (कु०) गोबर के बीच रहने वाला कीड़ा।
**गदोड़ना***—स० क्रि० (कु०) मगाना।
**गदोड़ा**—पु० (कु०) शोर-शराबा, भीड़।
**गदोहड़ा***—वि० सफाई से काम न करने वाला।
**गद्दर**—पु० (बि०) तह करके रखी हुई फसल।
**गद्दरा**—वि० (मं०) स्लेटी। भरा हुआ शरीर।
**गधाका**—पु० धमाका।
**गधाला**—पु० (कां०) गढ़ा बनाने का उपकरण।
**गधाळा**—वि० (ऊ०) लंबा आदमी।
**गधुसड़**—वि० (कु०) खर्चीला।
**गधोबरू**—पु० अंधेरा और तंग मकान।
**गधोली**—स्त्री० (कां०) ब्याई भैंस के पहले दिन का दूध।
**गन**—पु० (कां०) बहुत बड़ा पत्थर।
**गनशान**—पु० (कु०) हानि, नुकसान।
**गना**—पु० (सो०) ईख।
**गनाद**—पुं० (चं०) शहद की मक्खी रखने का डिब्बा।
**गनियर**—पु० (बि०) बहुत बड़ा सांप।
**गनीरा**—पु० (बि०) पीले फूल वाला पौधा विशेष।
**गनूचा**—पु० (सो०) मैले कपड़े को असावधानी से कहीं रख देने की क्रिया।
**गन्न**—स्त्री० (बि०) एक बढ़िया किस्म का पत्थर।
**गन्नळ**—स्त्री० (सि०) सांप की कमर।
**गन्ना**—पु० ईख।
**गप**—अ० (कु०) अतिशयोक्तिपूर्ण बात।
**गपछणा**—स० क्रि० (मं०) पकड़ना।
**गपोड़िया**—वि० बातूनी, लंबी-चौड़ी बातें करने वाला।
**गप्प**—स्त्री० (कां०) झूठी, मनगढ़ंत बात।
**गप्प**—अ० (कु०) बहुत, अत्यधिक।
**गप्फा**—पु० बड़ा ग्रास, एक साथ मुंह में डालने का भाव।
**गप्फा**—पु० (चं०) बड़ा लाभ।
**गफ**—पु० गाढ़ा कपड़ा।
**गफा**—पु० (मं०) घूंस, रिश्वत।
**गबरयाई**—स्त्री० (मं०) दे० गबराई।
**गबराई**—स्त्री० (सि०) खेत में सामूहिक रूप से खाद डालने की प्रक्रिया।
**गबराऊश**—स्त्री० व्यवस्थित ढंग से रखा गोबर।
**गबरीन**—स्त्री० (सो०, चं०) गोबर की गंध।
**गबरीशी**—स्त्री० (शि०) दे० गबराऊश।
**गबरैहड़**—पु० (सि०) खाद फेंकने वाले लोग।
**गबरोठा**—पु० (मं०) गोबर को उठाने के लिए प्रयुक्त टोकरा।
**गबरोळ**—पु० (सो०) गोबर का लेप।
**गबरोलजा**—पु० (सि०) गोबर का लेप।
**गबींदी**—स्त्री० गाने वाली।
**गबैया**—पु० गाने वाला।
**गबोर**—पु० (सि०) गोबर।
**गब्बर**—वि० बड़ा।
**गब्बी**—स्त्री० (कां०) टहनी का मध्यवर्ती भाग।
**गब्बु**—पु० (सि०) भेड़ का बच्चा।
**गब्भरू**—पु० (सि०) पुत्र।
**गब्भला**—वि० बीच का।
**गभरना**—अ० क्रि० (कां०) युवा होना।
**गभरू**—पु० (कां०) जवान।
**गभला**—वि० (मं०) बीच का।
**गभू**—पु० (कु०) भेड़ का बच्चा।
**गभोलू**—पु० (चं०) अभी-अभी पैदा हुआ या मध्यम बच्चा।
**गमक**—पु० (कां०) गंभीर गर्जन।
**गमक**—स्त्री० (मं०) गर्मी।
**गमकणा**—अ० क्रि० (चं०) आग का प्रज्वलित होना।
**गमकणा**—अ० क्रि० महकना, गर्मी से लाल होना।
**गमकाय**—पु० गर्माहट।
**गमकावणा**—स० क्रि० (सो०) झटका देकर मारना।
**गमढोळना**—स० क्रि० (सो०) सूखे पदार्थ को द्रव में हाथ से मिलाना।
**गमढोलू**—पु० (कां०) आटे अथवा हलवे में पानी मिलाते समय शेष रहे गोले।
**गमणा**—अ० क्रि० पसंद आना।
**गमणा**—अ० क्रि० (मं०) स्वादिष्ट लगना।
**गमताव**—पु० (कु०) गर्मी।
**गमरोला**—पु० (मं०) गर्मी का उबाल।
**गमसुटिणा**—अ० क्रि० (कु०) गर्मी से घुटन होना।
**गमसुळणा**—अ० क्रि० (मं०) घुट-घुट कर रोना।
**गमसेरना**—स० क्रि० (सो०, सि०) कूटना, मारना।
**गमाका**—पु० (मं०) गर्मी का झोंका।
**गमास्ता**—पु० (कु०) नौकर, गुमाश्ता।
**गमी**—स्त्री० संकट का समय, मृत्यु का शोक।
**गमेर**—पु० (सि०) सिर चकराने का भाव।
**गमोरियां**—स्त्री० (सि०, सो०) चोरियां।
**गम्ज**—पु० (चं०) सामान रखने का कमरा।
**गम्भीरी**—स्त्री० (मं०) अंधेरा कमरा।
**गम्हीर**—पु० (बि०) गलगल की तरह का एक फल।
**गम्हीरी**—पु० (कां०, ह०) पालकी वाहक।
**गम्होर**—पु० (कु०) शरीर का चोट आदि लगने से उभरा भाग।
**गयणे**—पु० गहने, आभूषण।
**गयरा**—वि० (सि०) गहरा।
**गरंध**—पु० (कु०) पशुओं की एक बीमारी।
**गरंधर**—पु० (बि०) जोर की आवाज़।
**गरंयाठ**—पु० (मं०) बड़ा सा भुट्टा।
**गरंहाणा**—स० क्रि० (सो०) ज़ोर से फेंकना।
**गर**—पु० (कां०) दबाव।
**गरक**—पु० (सि०) नष्ट।
**गरकड़े**—वि० (सि०) गर्भवती।

गरका—वि० भारी।
गरकायरे—वि० (सि०) गर्भवती।
गरको—वि० (सि०) दे० गरका।
गरखोड़—पु० (कां०) पशुओं को बांधने की रस्सी में लगी गांठ।
गरगरा—वि० (मं०) सख्त, अधपका।
गरगाबी—स्त्री० बिना तसमे के जूते।
गरघोलण—पु० (कां०) सभी खाद्य पदार्थों को इकट्ठा मिलाने का भाव।
गरज—स्त्री० आवश्यकता, स्वार्थ।
गरजणा—अ० क्रि० गरजना।
गरजूल—पु० (शि०, सि०) भिड़ने का भाव।
गरठाट—पु० (मं०) जीवन के अंतिम क्षणों की इकहरी सांस।
गरड़—पु० (कां०) केले का गुच्छा।
गरड़—पु० (बि०) घराट की घिरनी।
गरड़—पु० गरुड़ पक्षी।
गरड़—पु० (कां०) चरखे के दो चक्करों को जोड़कर रखने वाला अंदर का पहिया।
गरड़ावणा—स० क्रि० (सो०) पानी को लापरवाही से गिराना।
गरड़ाहट—स्त्री० (मं०) गर्जन।
गरड़ी—स्त्री० (चं०, कां०) दो रंग की चादर।
गरड़ु—पु० (चं०) दोहरा कंबल।
गरड़ैन—स्त्री० (बि०) भेड़-बकरियों से आने वाली गंध।
गरणा—अ० क्रि० (चं०) सड़ जाना।
गरदा—पु० कूड़ा, धूल।
गरदानणा—स० क्रि० (मं०, सि०) दंडित करना।
गरदावर—पु० कानूनगो।
गरदावरी—स्त्री० फसल का इंदराज।
गरदेणा—स० क्रि० (कां०) मली हुई चाय को दबाव में रखना।
गरना—अ० क्रि० (बि०) किसी वस्तु का पानी आदि से गल जाना।
गरना—अ० क्रि० (मं०) बिना धूप के सूखना।
गरना—स्त्री० (कां०) एक कंटीली झाड़ी।
गरनाट—पु० (कु०) ऊंची आवाज, रोब से बोलने का भाव।
गरनाट—स्त्री० प्रतिध्वनि।
गरनाटा—पु० (कु०) चक्कर।
गरनी—स्त्री० (सि०) देवी या देवता का किसी पुरुष में प्रवेश।
गरनु—पु० एक जंगली कंद।
गरपेशी—स्त्री० (कु०) गृहप्रवेश।
गरबीड़ा—पु० (कां०) गंदगी का कीड़ा।
गरबोड़ू—पु० (कां०) गोबर उठाने का टोकरा।
गरमाणा—स० क्रि० उत्तेजित करना।
गरमाल—पु० पलस्तर करने का उपकरण।
गरमेट—पु० (कु०, शि०) लकड़ी में छेद करने के लिए प्रयुक्त औज़ार।
गरमैश—स्त्री० गर्मी।
गरमोलू—पु० गर्मी के कारण निकलने वाले फोड़े।
गरम्यास—स्त्री० गर्मी।
गरयस—वि० तंग।
गरल—पु० (मं०) गरुड़।
गरला—वि० (कां०) प्रिय।
गरलु—स्त्री० (मं०) एक वन्य फल।
गरवाछणा—स० क्रि० (मं०, सि०) कर या चंदा इकट्ठा करना, उगाहना।
गरवाहा—पु० (मं०) उगाही करने वाला।
गरशणा—अ० क्रि० (मं०) गुर्राना।
गरशणा—स० क्रि० (शि०) रगड़ना।
गरसाट—पु० (मं०) सांप की एक किस्म।
गरसाठणा—अ० क्रि० (मं०) फिसलना।
गरहणी—स्त्री० (मं०) तकिया।
गरां—पु० गांव।
गरांई—पु० (मं०) एक ही गांव के निवासी।
गरांचड़—पु० ग्रामीण।
गरांफड़—पु० ग्रामीण।
गरा:इ—स्त्री० (सो०) ग्रास।
गरा:ढु—पु० खर्राटे।
गरा:न—स्त्री० (कां०, ऊ०) बदबू।
गरा—पु० (कु०, सि०) पत्तों सहित कटी मक्की का ढेर।
गराकड़ी—स्त्री० (बि०) गेंदे की छोटी किस्म का फूल।
गरागड़ा—पु० बादलों की गड़गड़ाहट।
गराच—पु० (सि०) खंडहर।
गराच—पु० वह स्थान जहां पशु बांधे जाते हैं।
गराट—पु० (सि०) घराट।
गराड़—वि० (कां०) अधिक खाने वाला।
गराड़ी—वि० (सो०, मं०) पियक्कड़, नशाखोर।
गराड़ी—वि० (कु०) बड़ी उमर की।
गराडू—पु० एक विशेष प्रकार की चिड़िया।
गराढड़ा—पु० (कु०) बादलों की गड़गड़ाहट।
गरान—पु० (कु०) गिराने की क्रिया। वृक्षों का कटान।
गरानी—पु० (कु०) वृक्षों का कटान करने वाला।
गराबी—पु० (कु०) रबड़ के बूट।
गराबुड़ियां—स्त्री० (बि०) आग के अंगारे।
गरारा—पु० (सि०) घाटी।
गरारा—पु० स्त्रियों का कटि से नीचे पहनने का वस्त्र विशेष।
गरारी—स्त्री० घिरनी।
गरारी—स्त्री० (कां०) खड्डी के दोनों ओर की चरखियां।
गरावो—पु० (सि०) गांव।
गराशड़—पु० (शि०, सो०) अंगारों का ढेर।
गराशण—पु० (कु०) दे० गराशड़।
गराह—पु० ग्रास, कौर, निवाला।
गराहड़—पु० (कु०) घर की जगह तैयार करने से पहले दिया गया 'डंगा'।
गराही—स्त्री० उगाही।
गरिंड—पु० अंगुलियों का जोड़।
गरिन—स्त्री० (शि०) बदबू।

**गरियाहन**—स्त्री० (बि०) सड़ने की बदबू।
**गरींजणा**—अ० क्रि० (कु०) गरजना।
**गरींद**—पु० (कु०) चोट लगने पर खून के जम जाने से शरीर का उमरा हुआ भाग।
**गरीब**—वि० निर्धन।
**गरीला**—वि० (चं०) गरिष्ठ, भारी।
**गरीह**—पु० (कु०, शि०, सि०) घर की प्राणवान सत्ता।
**गरूड़ना**—स० क्रि० गटागट पीना।
**गरूड़**—पु० (कु०) बादल की गरज।
**गरूड़**—पु० (कां०, ऊ०) फाका, उपवास।
**गरूळ**—पु० (कां०) मक्की की जड़ में मिट्टी इकट्ठी करने की क्रिया।
**गरूशड़**—पु० (कु०) शोले, अंगारे।
**गरूहरू**—पु० (कु०) गले में रस्सी कस जाने का भाव।
**गरेंघड़**—पु० (कु०) पीठ का निचला भाग।
**गरे:ण**—पु० (सि०) ग्रहण।
**गरे:वणा**—स० क्रि० (सो०) पशुओं को जंगल में इकट्ठा करना।
**गरेखणा**—स० क्रि० (शि०) तिरछी नज़र से देखना।
**गरेड़**—पु० (सि०, सो०) पालतू पशु, पालतू पशुओं का समूह।
**गरेड़**—पु० (चं०) मकड़ी।
**गरेत**—स्त्री० (सि०) दे० अगेत।
**गरेळू**—स्त्री० (सि०) गोधूलि की बेला।
**गरेह**—पु० (चं०) ग्रह।
**गरै:त**—पु० (सो०) एक ही परिवार के वंशज, सगोत्र।
**गरो:कडू**—वि० (सो०) घर से बाहर न निकलने वाला व्यक्ति।
**गरो**—पु० (मं०) जंगली बांस।
**गरोखड़**—पु० (बि०) आग के अंगारे।
**गरोटणा**—स० क्रि० (कु०, कां०) घेर कर इकट्ठा करना।
**गरोटणू**—पु० (कु०, कां०) गोल दायरा।
**गरोड़**—स्त्री० (चं०) मकड़ी।
**गरोड़पी**—स्त्री० (कु०) रीठे की गुठली।
**गरोरा**—पु० (मं०) सलवार।
**गरोलणा**—स० क्रि० (बि०) धूल धूसरित करना।
**गरोष्टा**—पु० (सि०) बुझा हुआ कोयला।
**गरोहड़**—पु० (बि०) दे० गरोखड़।
**गरोहण**—पु० (कु०) ग्रहण।
**गर्का**—वि० दे० गरका।
**गर्खी**—स्त्री० (चं०) गाय या ब्राह्मण के लिए दिया जाने वाला भोज्य पदार्थ।
**गर्खू**—पु० (चं०) लंबा व घेरेदार विशेष कोट।
**गर्ज**—स्त्री० (चं०) छोटा कोट।
**गर्ज़**—स्त्री० ज़रूरत।
**गर्जणा**—अ० क्रि० ज़ोर की आवाज़ होना।
**गर्ड**—वि० (चं०) ताज़ा।
**गर्ड**—पु० घराट की घिरनी।
**गर्ड़हा**—पु० (चं०) वर्षा ऋतु के सोलह दिन।
**गर्ड़ा**—वि० (चं०) काला व सफेद।
**गर्ड़ाणा**—अ० क्रि० चिल्लाना।
**गर्ड़ाणी**—पु० (चं०) घराट की चरखी का पानी।
**गर्ड़ीणा**—अ० क्रि० (चं०) नशे में धुत्त होना।
**गर्त**—पु० (मं०) गढ़ा।
**गर्दस**—स्त्री० (मं०) गर्दिश।
**गर्दानणा**—स० क्रि० (सि०) किसी पर दबाव डालना।
**गर्नाई**—स्त्री० (कु०) कलमें बनाने की लकड़ी, बांस की प्रजाति की लकड़ी जिससे टोकरियां आदि बनाई जाती हैं।
**गर्माइस**—स्त्री० (बि०) गर्मी।
**गर्याइड़**—स्त्री० (कु०) काले रंग की चिड़िया।
**गर्हणा**—स्त्री० (चं०) कांटेदार झाड़ी।
**गल**—स्त्री० बात।
**गळ**—पु० गला।
**गलकुहडू**—पु० (कां०) पशुओं का गला बंद होने का रोग।
**गलकोरना**—अ० क्रि० (कां०) कौए का धीरे-धीरे बोलना।
**गलक्कड़**—वि० (मं०) बातूनी।
**गलखंदा**—पु० (मं०) मकान में प्रकाश हेतु बना गोल छेद।
**गलखा**—पु० (सि०) रिश्वत।
**गलगल**—पु० नींबू प्रजाति का फल।
**गलगोजा**—पु० (मं०) अलगोजा।
**गलघुटू**—पु० (कु०) पशुओं का गले का एक रोग।
**गलचुटु**—पु० (बि०, चं०, कु०) मुंह में आया थूक निगलने की क्रिया।
**गलचोपा**—पु० (कु०) खूबानी आदि की कच्ची गुठलियों की चटनी।
**गळछड़ा**—वि० गले तक भरा हुआ।
**गलछापा**—पु० (कु०) मुंह की झांइयां।
**गलठैणा**—स० क्रि० (सि०) आलिंगन करना।
**गलण**—वि० (कु०) बातूनी (स्त्री)।
**गळणा**—अ० क्रि० गलना, सड़ जाना।
**गळणो**—अ० क्रि० (शि०) गलना।
**गलतगोळा**—पु० (सि०) खिड़कियों आदि पर विशेष प्रकार की नक्काशी।
**गलते**—स्त्री० (सि०) गलती।
**गलथ**—पु० (मं०) दे० झब्बल।
**गलदऊ**—पु० (मं०) एक गहरी सुगंधि वाला फूल।।
**गलदहू**—पु० (कां०) कसाईयों की कुल्हाड़ी।
**गलदाह**—स्त्री० अपच आदि के कारण गले व छाती में होने वाली जलन।
**गलदेहा**—पु० (बि०) बड़ा फरसा।
**गलपट्टा**—पु० (कु०) गले का पट्टा।
**गलफाह**—पु० (बि०, चं०, सो०) गले में डाला फंदा।
**गलफाही**—स्त्री० (चं०) गले की फांसी।
**गलबंद**—पु० गुलूबंद।
**गलब**—पु० (बि०) हानि।
**गलबेंघ**—पु० (कु०) गुलूबंद।

गलमंडा—पु० (कां०) किसी भी बर्तन का गला।
गलमा—पु० कालर, गल पट्ट।
गलमा—पु० (बि०) एक वृक्ष विशेष।
गलमाइणा—अ० क्रि० (कु०) घबराना।
गलवा—पु० (मं०) सामूहिक विद्रोह।
गलवाणा—स० क्रि० (मं०, बि०) पिघलाना।
गलवाणा—स० क्रि० (मं०, कां०) कहलवाना।
गलवास—पु० एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ें ज़मींकंद जैसी होती है।
गलसरा—स्त्री० गले की नसें।
गलसाट—पु० (कां०) कम विषैला सांप।
गलसाटा—पु० (कु०, ऊ०) गले में ग्रास के फंसने का भाव।
गलसीरा—स्त्री० (चं०, बि०) गले की नसें।
गलसुंढा—वि० (मं०) गाली देने वाला।
गलसुट्टू—वि० (मं०) गुमसुम।
गलसूई—स्त्री० (कां०, ऊ०) मक्की के पौधे की बीमारी।
गलसोशन—पु० (मं०) बसंत में खिलने वाला फूल।
गलांग—पु० (कु०) बात।
गलांढी—स्त्री० (मं०) कालर, गलपट्ट।
गळा—पु० (बि०, चं०, कु०) दो पहाड़ियों के बीच का संकरा रास्ता।
गळाऊ—पु० मकड़ी।
गळाऊड़े—पु० (शि०) गाल।
गलाकणा—अ० क्रि० (मं०) निगलना।
गलाखा—पु० झरोखा, बड़ा छिद्र।
गलाखा—पु० (सि०) तेज बुखार की क्षुब्धावस्था।
गलाढ़—पु० (कां०) गला सूजने का रोग।
गलाण—पु० (मं०, कां०) निंदा, चर्चा।
गलाण—पु० बोल चाल।
गलाण—पु० कथन, कहावत, सूक्ति।
गलाणा—स० क्रि० बोलना, कहना।
गळाणा—स० क्रि० (कु०, बि०) पिघलाना।
गलादरो—पु० (शि०) तेजपत्र।
गलापूफू—पु० (मं०, बि०) गाल।
गलाफ—पु० रजाई के बाहर का कपड़ा, गिलाफ।
गलाबंद—पु० गुलूबंद।
गलाब—पु० (कु०) गुलाब।
गलाबड़ी—स्त्री० (कां०) जंगली गुलाब की झाड़ी।
गलाबरी—पु० (मं०) अधिक बातें करने वाला।
गलाबर्न—स्त्री० (मं०) अधिक बातें करने वाली।
गलाबाता—स्त्री० (कु०, मं०) वार्तालाप।
गलाबी—वि० गुलाबी।
गलाम—पु० गुलाम।
गलाम—स्त्री० (कु०) घोड़े की लगाम।
गलारू—पु० (चं०) गले की गिलटी।
गलाल—पु० (बि०) एक वृक्ष विशेष।
गलाल—पु० (सो०) पुष्प विशेष।
गळावां—स्त्री० (सो०, सि०) बर्तन को खूंटी पर लटकाने वाली गांठयुक्त रस्सी।
गळावां—पु० (बि०, सो०) पशुओं को बांधने की रस्सी।
गळाशु—पु० (कु०) गांठ।
गलास—पु० (चं०) एक विशेष गुठलीदार फल।
गळाहू—पु० (कु०) मकड़ी।
गलिआ—वि० (शि०, सि०) मंद, ढीला काम करने वाला।
गलिया—वि० (कु०) बातूनी।
गलियो—पु० (सि०) नष्ट-भ्रष्ट हो जाने का भाव।
गलींढी—स्त्री० (चं०) गलरोग।
गली—स्त्री० गुठली, गिलटी।
गलीच़—पु० (कु०) खूबानी या अखरोट की गिरी की चटनी।
गलीटी—स्त्री० (बि०, ऊ०, कां०) चिकनी मिट्टी।
गलीड़े—पु० (कु०) गुठलियां।
गलीड़ौ—पु० (कु०) गले में होने वाली गुठलियों की बीमारी।
गळीतळी—स्त्री० (सि०) जिस घर में सभी मर गए हों।
गलीबड़—वि० (कु०) गंदा, मैला-कुचैला।
गलीला—वि० (चं०) बहुत स्वादिष्ट।
गलुबड़—पु० (सि०) गाल।
गलूंगड़ू—पु० (बि०) दवात।
गलूंबरा—वि० (मं०) गुनगुना।
गळू—पु० दर्रा, संकरा मार्ग।
गलूआड़ा—पु० (कु०) पशुओं का रंभाना।
गलूड़ा—पु० (चं०) मुंह में इकट्ठी डाली कोई चीज़।
गलूफे—पु० (शि०) गाल।
गलेंदरा—पु० (चं०) जोतते समय हल में फंसने वाला घास।
गलेटा—पु० (कु०) गाल।
गलेटा—पु० (ऊ०) उलटी को मन करने का भाव।
गलेफ—पु० (सि०) गिलाफ।
गलेर—वि० (कु०) कामकाज न करने वाला।
गलेरना—स० क्रि० (कु०) गलाना। कहलवाना।
गलेल—स्त्री० गुलेल।
गळेल—पु० एक विशेष वृक्ष।
गलेली—स्त्री० (कां०) धागों का छोटा गोला।
गलैई—स्त्री० (मं०) पशुओं को बांधने की जगह।
गळैऊंच—स्त्री० (शि०) पशुओं को बांधने की जगह।
गलैण—पु० (चं०) ऐसा स्थान जहां पत्थर ही पत्थर हों।
गलों—स्त्री० (चं०) गिलोय, गुडूची।
गलो—पु० (मं०) उबाल।
गळोआ—स्त्री० (कां०) पशुओं के गले में बांधी जाने वाली रस्सी।
गलोई—पु० (बि०, ह०) दे० गलों।
गलोउजा—पु० (सि०) बुरी तरह काटने का भाव।
गलोटू—वि० (कां०) गीला।
गलोड़—पु० (बि०, कां०) बातूनी।
गलोणा—स० क्रि० (सि०) बच्चे द्वारा खाद्य पदार्थ को बाहर निकालना।
गलोर—वि० (ऊ०) बातूनी।
गलोल—स्त्री० (शि०) गुलेल।

गलौंटा—पु० (शि०) गाल।
गलौणा—स० क्रि० (सि०) बच्चे का खाद्य पदार्थ को बाहर निकालना।
गल्याचड़ा—पु० ऊंचा गला।
गल्याट—पु० (कां०, ऊ०) गन्ने के पौधे का ऊपरी हिस्सा।
गल्याण—स्त्री० नफ़रत।
गल्याण—स्त्री० (ऊ०, कां०) पानी से नर्म हुई मिट्टी।
गल्याणा—स० क्रि० (कु०) मुंह में डालकर खिलाना।
गल्ला—पु० दैनिक कमाई को रखने का डिब्बा, खाद्यपदार्थ रखने का बर्तन।
गल्ला—पु० (सि०) ब्राह्मी बूटी।
गल्ह—पु० (चं०) गर्मी।
गल्हमा—पु० (कां०) पशु के गले में लटकी झालर।
गल्हारा—पु० (चं०) बड़ी सी टोकरी।
गल्होलू—पु० (बि०) दे० गल्हारा।
गवाईण—स्त्री० (बि०) पशुओं का कमरा।
गवाचणा—अ० क्रि० गुम होना।
गवाणा—स० क्रि० खोना।
गवालतन—पु० (कां०, शि०) ग्वाले को दिया जाने वाला पारिश्रमिक।
गवित्री—स्त्री० (कां०, ऊ०) गाने वाली स्त्री।।
गवेंण—स्त्री० (सि०) पशु बांधने की खूंटी।
गवेड़ी—वि० (कु०) गालियां देने वाली।
गवैण—स्त्री० (मं०) गोशाला।
गवैया—पु० गायक।
गश—पु० बेहोशी।
गशीटणा—स० क्रि० (शि०) घसीटना।
गस—पु० (बि, चं०) दे० गश।
गसणा—अ० क्रि० (सो०) मिट्टी में धंसना।
गसणा—स० क्रि० (बि०) पिटाई करना।
गसरेअ—पु० (शि०) फिसलन।
गसीगी—स्त्री० (मं०) व्यंग्य, हास्य।
गसुन्न—पु० मुक्का।
गसूंकड़—वि० (कु०) रोने वाला।
गसूना—पु० (सि०) दे० गसुन्न।
गसेगास—वि० (कां०) आवारा।
गस्टवारा—पु० (मं०) उपलों का ढेर।
गहणा—पु० आभूषण, गहना।
गहरा—वि० गंभीर।
गहरी—स्त्री० (मं०) काटने वाली मक्खी।
गहरे—पु० (कां०, मं०) दुर्गम क्षेत्र।
गहला—पु० (मं०) बिना पत्थरों का खेत, उपजाऊ खेत।।
गहलाए—स्त्री० (शि०) दे० घासनी।
गहूणा—अ० क्रि० (मं०) खराब होना।
गहूर—पु० (मं०) जंगल।
गहोड़ी—वि० (चं०) लड़ाका पशु।
गहंडू—पु० (कां०, ऊ०) प्याज़।
गहड—स्त्री० (मं०) खाई।

गहम्हेली—स्त्री० (कां, ऊ०) कलाबाजी।
गां—स्त्री० (ऊ०) गाय।
गांई—अ० (चं०, बि०) इधर।
गांऊड़ो—अ० (शि०) आगे।
गांगचा—पु० (कु०) कांटेदार झाड़ी को इकट्ठा करने के लिए प्रयुक्त विशेष लकडी।
गांगा—स्त्री० (शि०) गंगा।
गांघड़ी—स्त्री० (कु०) धान प्रजाति का अन्न विशेष जिस के दानों का छिलका काला होता है और स्वाद में कुछ कड़वाहट होती है।
गांचो—पु० (शि०) भंडार के भीतर का स्थान।
गांजड़े—पु० (शि०) दे० गांचो।
गांजा—पु० सूखी भांग, नशीला पदार्थ।
गांजा—वि० (सि०, शि०) गंजा, जिसके सिर पर बाल न हो।
गांठड़ी—स्त्री० गांठ, पोटली, गठरी।
गांठडू—पु० दे० गांठड़ी।
गांठणा—स० क्रि० (सो०) जूते की मुरम्मत करना।
गांठा—पु० (सि०) प्याज़।
गांठिया—पु० (शि०) लहसुन।
गांठिया—पु० (शि०) जोड़ों का रोग।
गांडडी/डू—स्त्री० (कु०, मं०) दही मथने का बर्तन।
गांद—स्त्री० (सि०) गंध।
गांदो—वि० (शि०) गंदा।
गांधणा—स० क्रि० (मं०) मिट्टी आदि को पांव से गूंधना।
गांधला—पु० (बि०, ऊ०, कां०) एक पौधा विशेष।
गांबरू—पु० (कु०) गलगल।
गांमणा—अ० क्रि० (कु०) पसंद आना।
गांवजड़ी—स्त्री० (सि०) ग्रामीणता।
गांवले—स्त्री० (सि०) गन्ने के ऊपर का घास।
गांवशे—स्त्री० (सि०) मेहमानी।
गांह—अ० (कां०, ऊ०) आगे।
गाःक—पु० ग्राहक।
गाःठा—पु० (शि०) कोयला।
गाःल्ले—पु० (शि०) मटर।
गा—स्त्री० गाय।
गाइणु—पु० (कु०) एक प्रकार का विशेष खाना।
गाई—अ० (शि०, सि०) ऊपर, पर।
गाई—स्त्री० गाय।
गाईघ—पु० (बि०) गाय का घी।
गाईमेलणा—स० क्रि० (कु०) मरते हुए गोदान करना।
गाउणा—पु० (सि०, सो०) गाया जाना।
गाऊंरो—अ० (शि०) थोड़ा सा आगे।
गाऊ—स्त्री० (शि०) गाय।
गाखड़—पु० (कां०) गर्मधूल।
गाखणा—स० क्रि० (सि०) परखना।
गागड़—पु० (सि०) केंकड़ा।
गागर—स्त्री० गगरी।
गागरू—पु० छोटी गगरी।

**गागळ**—पु० (सि०) पत्थरों का ढेर।
**गागली**—स्त्री० (सि०) अरवी।
**गागुई**—स्त्री० (सि०) गगरी।
**गागुटी**—स्त्री० (सो०) अरवी।
**गागुवी**—स्त्री० (सि०) दे० गागली।
**गागोळी**—स्त्री० (शि०) दे० गागली।
**गाघा**—स्त्री० (कु०) खून की धारा।
**गाच**—स्त्री० (मं०) मिट्टी।
**गाचली**—स्त्री० (मं०) मुलतानी मिट्टी।
**गाची**—स्त्री० (कु०) **कमरबंद;** कमर को बांधने के लिए ऊनी कपड़े का बना दुपट्टा।
**गाची**—स्त्री० (सि०, सो०) पेट को बांधने का **भाव;** कमर में बांधने का दुपट्टा।
**गाची**—स्त्री० (मं०) रथ में लगाई जाने वाली चांदी की करधनी।
**गाचे**—स्त्री० (शि०) कसम।
**गाचे**—स्त्री० (शि०) दुपट्टा।
**गाच्ची**—स्त्री० (बि०) दे० गाचली।
**गाज**—पु० (सि०) धमाका।
**गाज**—स्त्री० आसमान की बिजली।
**गाज**—पु० (सि०) गेहूं और जौ का मिश्रण।
**गाजण/णी**—स्त्री० दे० गाचली।
**गाजळबेल**—स्त्री० (कां०) एक प्रकार की बेल।
**गाजला**—वि० (बि०) शरारती।
**गाजळा**—वि० (कां०, ऊ०) उतावला।
**गाजळा**—वि० (कु०) कसैला।
**गाजळी—स्त्री० (कां०, ऊ०) खुजली; ज़मींकंद कच्ची रह जाने** से मुंह में होने वाली खुजली।
**गाजळे**—वि० (सं०, कां०) मुंह में लगने वाला कसैलापन।
**गाजळो**—वि० (शि०) कसैला।
**गाजा**—पु० (शि०) अनाज का भंडार।
**गाजाबाजा**—पु० ढोल-ढमाका।
**गाजोर**—स्त्री० (शि०) गाजर।
**गाटी**—स्त्री० (बि०, चं०) मेल-मिलाप।
**गाटौ**—वि० (शि०) तंग।
**गाट्टा**—पु० (चं०, कां०) कंकड़।
**गाठ**—पु० (मं०) गांठ।
**गाठड़ी**—स्त्री० (सि०, सो०) गठरी।
**गाठणा**—स० क्रि० सीना, जोड़ना।
**गाठा**—पु० (मं०, शि०) जोड़।
**गाड़**—पु० (शि०, कु०) नाला, बड़ा नाला।
**गाड़णा**—स० क्रि० (सो०) गाड़ना।
**गाडणा**—स० क्रि० (सि०, शि०) निकालना।
**गाड़ना**—स० क्रि० (मं०) गलाना।
**गाडर**—पु० (कु०, शि०) विवाह की एक रीति।
**गाडलू**—पु० (कु०) छाछ निकालने का बड़ा घडा।
**गाड़ा**—पु० (सि०) गट्ठा, बोझ।
**गाड़ा**—वि० घना, गाढ़ा।
**गाड़ा**—पु० (सि०) भार। **गंभीर; घमंडी।**
**गाड़ा**—पु० (कु०) कॉलर में लगा तेल का दाग।
**गाडू**—पु० (सि०) देवता को चढ़ाए जाने वाले जल का पात्र।
**गाडू**—पु० (मं०) **मथानी।**
**गाडूआ**—पु० (सि०) बकरा।
**गाडूपचाडू**—अ० घर के आगे-पीछे।
**गाडे**—पु० (कां०) पशुशाला।
**गाड़ो**—स० क्रि० (सि०) गाड़ना।
**गाढ़**—पु० (शि०, कु०) नाला, छोटी नदी।
**गाढ़णो**—स० क्रि० (शि०) फसल से दाने तथा भूसा अलग करना।
**गाढ़ा**—वि० (सि०) अभिमानी।
**गाढ़ो**—वि० (सि०) गाढ़ा।
**गाण**—स्त्री० (कु०) भेड़-बकरी के झुंड की गिनती में किसी एक के गुम या अलग हो जाने से आई कमी।
**गाण**—स्त्री० (सि०) बारी।
**गाण**—पु० (सो०) लकड़ी का एक उपकरण जिससे मिट्टी की पपड़ी तोड़ी जाती है तथा बेकार का घास उखाड़ा जाता है।
**गाणा**—स० क्रि० (बि०, कां०) हलचल पैदा करना।
**गाणा/णो**—पु० (कु०, शि०, सि०) गाना, गीत।
**गाणी**—स्त्री० (कु०) सहेली।
**गाण्हा**—अ० क्रि० (चं०) जाना।
**गात**—पु० (मं०) शरीर।
**गात**—पु० (सि०, शि०) पेट।
**गातणा**—स० क्रि० (शि०) गाड़ना, दबाना।
**गातर**—स्त्री० (मं०, चं०) 'ठोडा' के खिलाड़ियों द्वारा शरीर के गिर्द बांधा जाने वाला वस्त्र विशेष।
**गातरी**—स्त्री० (चं०) ऊन की डोर।
**गातलो**—वि० (शि०) लुभावना।
**गात्रट**—स्त्री० (शि०) मिट्टी में मिला देने की क्रिया।
**गाद**—स्त्री० (कां०) पीठ।
**गाद**—स्त्री० मिट्टी मिला पानी, ऊंचा स्थान।
**गाद**—स्त्री० (सो०) तालाब की **तलछट;** तालाब के नीचे का कीचड़।
**गाद**—पु० (शि०) **भेड़-बकरियों** की पीठ पर लादा जाने वाला बोझ।
**गादड़ो**—पु० (शि०) गीदड़।
**गादळा**—वि० गंदा पानी।
**गादा**—पु० गड़रिये का कुत्ता।
**गादा/दो**—पु० (शि०) गधा।
**गाधा**—पु० (चं०) गद्दियों का पीठ पर उठाया बच्चा।
**गान**—पु० (सि०) एहसान।
**गानक**—पु० (कां०) कुत्ते को दिया जाने वाला रोटी का टुकड़ा।
**गानक**—पु० (ऊं०) अत्यंत निर्धन व्यक्ति को गांव के प्रत्येक घर से दिया जाने वाला भोजन।
**गानण**—पु० (सि०) तना।

गाना—पु० (सि०) मोटा वस्त्र।
गाना—पु० (ऊ०) गले का आभूषण विशेष।
गानी—स्त्री० (कु०, बि०) मक्की का मीठा तना, गन्ना।
गानी—स्त्री० (ऊ०) गले का विशेष आभूषण।
गानू—पु० (कु०) अनाज के दाने।
गानोल—पु० (शि०) पेड़ का तना।
गान्ना—पु० गन्ना।
गान्ना—पु० (सि०) मोटा कंबल।
गापणा—स० क्रि० (कु०) ढांपना।
गाब—पु० (शि०) भेड़ का बच्चा।
गाब—पु० (मं०) गर्मी।
गाब—पु० (कु०) मुर्गी की अंडों पर बैठने की क्रिया।
गाबदू—पु० (शि०) नवयुवक।
गाबड़—पु० (मं०) गाय, भैंस का खून।
गाबड़—पु० (कु०) मृत पशु को दबाने का स्थान।
गाबड़े—पु० (शि०) भेड़ का बच्चा।
गाबणा—स० क्रि० (कु०) ढांपना, ढंक देना।
गाबरू—पु० (सो०) जवान लड़का, नवयुवक।
गाबी—स्त्री० (सि०) जवान भेड़ जिसका बच्चा न हुआ हो।
गाभण—वि० गाभिन, गर्भवती (मादा पशु)।
गाभरू—पु० (कु०, मं०) खुलने के लिए तैयार कोंपल।
गाभु—पु० (मं०) भेड़ का बच्चा।
गायण—पु० (सि०, शि०) गीत।
गायेण—स्त्री० (मं०, शि०) गायिका।
गार—पु० (मं०) गुफा।
गार—पु० अंगारा।
गार—स्त्री० (सि०, सो०) कीचड़।
गार—स्त्री० (सो०) लिपाई के लिए तैयार किया गया गोबर और मिट्टी का घोल।
गारखसन्नण—स्त्री० (बि०, कां०) एक बूटी जो औषधि के काम आती है।
गारठा—पु० (मं०) कोयला।
गारटू—पु० (बि०) छोटा अंगार, जलता हुआ छोटा कोयला।
गारड़—स्त्री० (चं०) तांत्रिक पाठ।
गारड़ी—पु० (चं०) झाड़-फूंक करने वाला, ओझा।
गारा—पु० (सि०) परगना।
गारा—पु० मिट्टी तथा गोबर को मिला कर तैयार किया घोल।
गारू—पु० (सि०) पालतू पशु।
गाल—पु० (मं०) वृक्ष की गांठ।
गाळ—पु० (चं०) गाली।
गालगायंगरे—पु० (सि०) मुंह पर होने वाले मुंहासे।
गाळना—स० क्रि० (मं०) पिघलाना।
गालमुआल—स्त्री० (कां०) गाली-गलोच।
गालसिंढ—वि० (कां०, ऊ०) गाली देने वाला व्यक्ति।
गाळसी—स्त्री० (कु०, कां०) एक छोटा सा कीडा जो पौधों के तनों को काटता है।
गाला—स्त्री० (कां०) छोटी नहर।
गाला—पु० (चं०) चक्की में डाला जाने वाला मुट्ठी भर अनाज, मशीन में काटने के लिए डाला जाने वाला घास।
गाळा—पु० पशुओं को दिया जाने वाला आटे का पेड़ा।
गाळा—पु० (चं०) शव के दाह संस्कार के बाद बचाया गया अवशेष जो नदी को अर्पित किया जाए।
गाळा—पु० (चं०) मछली पकड़ने के लिए कांटे में लगाया जाने वाला चारा।
गाळा—पु० (कां०) ग्रास।
गाळा—पु० (चं०) फोड़े के चारों ओर का पीप और लहू युक्त अत्यधिक सड़ा हुआ भाग।
गाळा—पु० (मं०, कां०, ऊ०) घूंस, रिश्वत।
गाल्ड़ी—वि० (कां०, ऊ०) बातूनी।
गाल्ला—पु० (कां०) पत्थर वाला रास्ता।
गाल्हा—वि० (चं०) उपजाऊ।
गाल्हा—वि० (कु०) ओट, जहां हवा न चले।
गाल्हा—वि० (मं०, कां०, चं०) पशुओं के मुंह में होने वाली बीमारी।
गाल्ही—स्त्री० (मं०, कां०, ऊ०) ज़ंग।
गाव—स्त्री० (सि०, सो०) गाय।
गावगटी—स्त्री० (सि०) अरबी।
गावगी—स्त्री० (सि०) दे० गावगटी।
गावटे—स्त्री० (शि०) छोटी गाय।
गावळा—वि० (सो०) धुंधला।
गावशी—स्त्री० (सि०) मेहमानी।
गावशू—पु० (सि०) मेहमान।
गाशा—पु० (सि०) आकाश।
गाश/स—अ० (सि०) ऊपर।
गाश—पु० (कु०) वर्षा।
गाशबेल—स्त्री० अमरबेल, आकाशबेल।
गास—पु० (सि०) चार मुख वाला दीपक।
गास—पु० (सि०) पूजा के लिए चढ़ाया गया गेहूं का आटा।
गास—पु० (सि०) रोटी का टुकड़ा जो मुंह में खाते समय डालते हैं, ग्रास।
गास—पु० (चं०) आकाश।
गासखा—अ० ऊपर की तरफ।
गासडु—पु० (सि०) खाद्य सामग्री।
गासडु—वि० (कां०) ऊपर की ओर बसने वाले।
गासणा—स० क्रि० (सि०, सो०) ज़मीन में किसी चीज़ को डालना, मिट्टी में दबाना, गाड़ना।
गासणी—स्त्री० (मं०) चील।
गासबेल—स्त्री० आकाशलता।
गासमादड़ो—पु० (शि०) गीदड़।
गाह—पु० (सि०) गेहूं गाहते समय बैल जोड़ने की प्रक्रिया।
गाहक—पु० दे० गा:क।
गाहज—पु० (सि०) सामर्थ्य।
गाहड़—स्त्री० (सि०) घुनाई।
गाहड़ी—स्त्री० (मं०) दे० गाळसी।
गाहढ—स्त्री० (कां०, ऊ०) भीड़।
गाहण—पु० (कु०) नदी को पैदल चल कर पार करने

की क्रिया।
**गाहण**—पु० (सि०) लकड़ी का औज़ार विशेष।
**गाहणा**—स० क्रि० गाहना, खलिहान में बैलों द्वारा गेहूं को गाहना।
**गाहणा**—अ० क्रि० (चं०) जाना।
**गाहनक**—पु० (बि०) खाना खाने से पहले कुत्ते को रखा जाने वाला रोटी का टुकड़ा।
**गाहर**—पु० (मं०) गहरी मिट्टी वाला खेत।
**गाहर**—पु० पहाड़ का ऊपरी भाग।
**गाहरी**—स्त्री० (कु०) चर्मरोग जो विषैले घास को छूने से होता है।
**गाहरी**—पु० (मं०) 'मुंडा' उत्सव पर चढ़ाए गए गोदान को स्वीकार करने वाले ब्राहमण।
**गाहला**—पु० (कु०, ऊ०) ऐसा स्थान जहां हवा कम आती हो।
**गाहळीं**—स्त्री० (बि, ऊ०, कां०) दांतों का खोखलापन।
**गाहले**—अ० (शि०) ऊपर।
**गाहलो**—पु० (शि०) गहरी मिट्टी वाला खेत।
**गाहश**—पु० (सि०) धान लगाते समय क्यारियां सीधी करने का उपकरण।
**गाही**—स्त्री० (कां०) ताक।
**गाही**—पु० (बि०) फसल गाहने वाला।
**गाहे**—अ० (शि०) पर।
**गाह्‌ण**—स्त्री० (कां०, बि०) मीड़।
**गाहर**—पु० (चं०) चरागाह।
**गाह्‌र**—स्त्री० (कां०) तलहटी।
**गाह्‌ली**—स्त्री० (कां०, बि०) पशुओं की पूंछ को खाने वाला विशेष कीड़ा।
**गाह्‌ळी**—स्त्री० (कु०) दे० गाळही।
**गाह्‌ळी**—स्त्री० (कां०) तंग खाई।
**गिंगरेज**—पु० (चं०) आलूचा प्रजाति का एक फल।
**गिंडणा**—स० क्रि० (शि०) मिलाना।
**गिंडा**—पु० बिलाव, बड़ा बिल्ला।
**गिंदडु**—पु० (सि०) छोटी गेंद।
**गिंदरू**—पु० (कां०) कपड़े का टुकड़ा।
**गिआई**—स्त्री० (बि०, कां०, चं०) चूल्हे के आगे अंगारे रोकने के लिए फर्श पर बनी छोटी सी मेंड़।
**गिआना**—पु० (सो०) दे० गै:ना।
**गिआन्हा**—पु० (कां०, ऊ०) दे० गै:ना।
**गिआरा**—वि० (कु०, चं०) ग्यारह।
**गिआरी**—स्त्री० (कु०) गाय के ब्याने के तीसरे दिन किया जाने वाला संस्कार विशेष।
**गिईणआला**—वि० (शि०) दयालु।
**गिऊ**—पु० (सो०) घी।
**गिक्खी**—स्त्री० संचित धन।
**गिगड़/ड़ू**—पु० (चं०) बच्चों का बढ़ा हुआ पेट।
**गिगा**—पु० (बि०, कां०, ऊ०) लड़का।
**गिगा**—पु० (शि०) पिता।
**गिचंटा**—वि० चिपकने वाला।
**गिचटा**—वि० (मं०) कच्चा।
**गिचड़**—पु० आंख का मैल।
**गिचा**—पु० (कु०) सोयाबीन और 'सरयारा' आदि का पेय पदार्थ बनाते समय न घुलने के कारण पड़ी गांठ।
**गिचै**—पु० (कु०) त्योहारों में बनाया जाने वाला विशेष पकवान।
**गिच्चा**—पु० (मं०) चूल्हा।
**गिच्चा**—वि० (सो०) अधिक पका हुआ।
**गिच्ची**—स्त्री० (चं०) अंगुलियों का मध्य भाग।
**गिच्ची**—वि० (चं०) अधपकी (रोटी)।
**गिच्चे**—स्त्री० (सि०) अरवी के पत्तों की सब्जी।
**गिजगिज**—अ० (चं०) हिल-डुल।
**गिज़ा**—स्त्री० बलवर्द्धक भोज्य पदार्थ, खुराक।
**गिजूरा**—वि० (सि०) अभ्यस्त।
**गिझणा**—अ० क्रि० अभ्यस्त होना, किसी वस्तु के प्रति आसक्त होना, चसका लगना।
**गिझेया**—वि० (मं०) अभ्यस्त।
**गिटक**—स्त्री० (बि०) 'गनीरा' के फल की गुठली।
**गिटक**—स्त्री० गुठली।
**गिटकली**—स्त्री० (चं०) कंकरी।
**गिटणा**—अ० क्रि० (कु०) कुश्ती लड़ना।
**गिटमिट**—स्त्री० (कां०) कानाफूंसी।
**गिटी**—स्त्री० (शि०) टिक्की।
**गिटै**—स्त्री० (चं०) अंगुली, अंगुली के पोर।
**गिट्‌टा**—पु० (बि०, चं०) उभरी हुई हड्डी।
**गिट्‌टा**—पु० घुटने की हड्डी।
**गिट्‌टा**—पु० (बि०) कंकर।
**गिट्‌टी**—स्त्री० (मं०) लकड़ी का टुकड़ा।
**गिट्‌टु**—वि० (बि०) ठिगना।
**गिट्‌टू**—पु० पत्थर का टुकड़ा।
**गिट्‌ठ**—स्त्री० बालिश्त।
**गिट्‌ठा**—वि० (चं०) ठिगना। एकत्रित।
**गिट्‌ठी**—स्त्री० (कां०) अंगीठी।
**गिट्‌ठी**—वि० छोटे कद की।
**गिठ**—स्त्री० (चं०) दे० गिट्‌ठी।
**गिठमुठी**—स्त्री० (बि०) दे० गिट्‌ठी।
**गिठी**—स्त्री० (मं०, कु०) अंगीठी।
**गिठीह्‌णा**—अ० क्रि० (चं०) एकत्रित होना।
**गिठेरना**—स० क्रि० (चं०) एकत्रित करना।
**गिठो**—पु० (शि०) ठिगना, बौना।
**गिड**—स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली।
**गिड़क**—स्त्री० (चं०) दौड़। डांट।
**गिड़कणा**—अ० क्रि० (कु०) गरजना।
**गिडकाईणो**—अ० क्रि० (शि०) पशुओं का आपस में लड़ना।
**गिड़किणा**—अ० क्रि० (कु०) गड़गड़ाना।
**गिड़कु**—वि० (शि०) छोटा।
**गिड़गड़ाट**—स्त्री० (कु०) गड़गड़ाहट। खुशामद।
**गिड़गिड़**—स्त्री० (चं०) कंपकंपी।
**गिड़गिड़**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) अपने आप में बोलने

का भाव।
गिहठ—पु० (शि०) दे० किरडा।
गिड़ाठा—पु० (सि०) धमाका।
गिढ़—स्त्री० (कु०) पंक्ति।
गिणती—स्त्री० गिनती।
गिणना—स० क्रि० (शि०) गिनना।
गिणिना—स० क्रि० (कु०) गिना जाना।
गिणु—पु० (शि०) दया।
गिणोणो—स० क्रि० (सि०) गिनना।
गितळु—पु० गुदगुदी।
गितांगी—पु० गायक।
गिद—स्त्री० गिद्ध।
गिदड़—पु० गीदड़।
गिदलू—पु० (शि०) फलों के बीज, गांठ के रूप में बीज।
गिधिहारा—पु० (कु०) दे० घंगियारा।
गिनणा—स० क्रि० (शि०) खरीदना।
गिन्नू—वि० (कु०, चं०) छोटा सा।
गिपणा—अ० क्रि० (शि०) ध्यानमग्न रहना।
गियारी—स्त्री० (कु०) दे० गिआरी।
गियो—स्त्री० (सि०) पहाड़ी गीत।
गिरकणा—अ० क्रि० (चं०) धिर जाना।
गिरजा—स्त्री० पार्वती।
गिरझण—स्त्री० चील।
गिरठ—वि० दे० गिट्ठ।
गिरड—पु० (चं०) सलवार या पाजामे का आसन, ऊपरी भाग।
गिरड़—स्त्री० (चं०) गिद्ध।
गिरड़—पु० (चं०) पनचक्की का पंखेदार पहिया।
गिरदिया—अ० (सि०, चं०) चारों ओर।
गिरदीए—अ० (सि०, चं०) वापसी में।
गिरदेआ—पु० (सि०) बरसात में निकलने वाला कीड़ा।
गिरवी—स्त्री० धरोहर, अमानत।
गिरमिट—पु० लकड़ी में छेद करने का औज़ार।
गिरह—स्त्री० (कु०) लगभग चार अंगुल के बराबर माप।
गिरि—स्त्री० (सि०) वापस आने का भाव।
गिर्दा—अ० (सो०) चारों ओर।
गिलटी—स्त्री० गिलटी।
गिलटु—पु० (सि०) गला, कंठ।
गिलड़ा—वि० 'गिल्हड़' वाला।
गिळना—स० क्रि० (चं०) उगलना।
गिल्ला—वि० भीगा हुआ।
गिल्हड़—पु० (कु०) गलगंड, घेघा।
गिवानी—स्त्री० (ह०) अन्न छानने की छलनी।
गिश—अ० (कु०) ऊपर।
गिशणा—स० क्रि० (कु०) घसीटना।
गिह—पु० (चं०) घर।
गिह—स्त्री० मसूड़ा।
गिहणा—स० क्रि० (मं०, कु०) स्वागत करना।
गिहणा—स० क्रि० (सि०) प्रार्थना करना।
गिहणा—स्त्री० (शि०) दया।
गिहणो—स० क्रि० (सि०) घिसना।
गिहा—स्त्री० (चं०) पांव की हड्डी।
गिहाणा—स० क्रि० (कु०) बच्चे को शौच कराना।
गिहाना—पु० (कु०) दे० गैःना।
गिहाळी—स्त्री० (कां, ऊ०, ह०) भवन का सामने वाला भाग।
गिहु—पु० (चं०) चातक।
गिहलटी—स्त्री० (चं०) गले, बाजू व टांग के जोड़ों में होने वाली गुठलियां।
गीं—स्त्री० (कु०) मसूड़ा।
गींऊं—पु० (सो०, शि०, सि०) गेहूं।
गींड—स्त्री० (कु०) गेंद।
गींड—पु० (सि०) आटे का शरबत में पकाकर बनाया जाने वाला विशेष भोजन।
गींडा—पु० (सो०) बड़ा बिल्ला।
गींडा—वि० (चं०) ठिगना।
गींद—स्त्री० (सो०, सि०) गेंद।
गींदू—पु० (शि०) गेंद।
गीःड—वि० (सो०) ऐसी भैंस या गाय जिसके दूध में अधिक घी निकलता है।
गी—पु० (सि०) घृत।
गीअ—स्त्री० (शि०) मसूड़ा।
गीइ—स्त्री० (शि०) घुटने और पांव का मध्य भाग।
गीगा—पु० (कां०, ऊ०, ह०) नवजात शिशु।
गीचा—वि० (कु०) पक्का।
गीचू—स्त्री० (सि०) गेहूं।
गीज—स्त्री० (सो०) गिद्ध।
गीझा—पु० (मं०) कीड़ा।
गीझा—पु० (चं०) जेब।
गीटा—पु० (चं०) टखना।
गीटू—पु० (मं०) शहतीर।
गीट्टी—स्त्री० कंकर।
गीट्ठा—पु० मिट्टी की बनी बड़ी अंगीठी।
गीठा—पु० शीतकाल में सेंकने के लिए बरामदे या कमरे के बीच में खोदी गई बड़ी अंगीठी।
गीड़—पु० (शि०) घी।
गीड़कणा—अ० क्रि० (सि०) बैल का हुंकारना।
गीड़ा—पु० (मं०) खेत की मेंड़।
गीण—स्त्री० (शि०) गले मिलने का भाव।
गीतारा—पु० (सि०) गायक।
गीत्वार—पु० (चं०) गीत गाने वाला।
गीत्वारण—स्त्री० दक्ष गायिका।
गीत्वारी—स्त्री० (चं०) गायिका।
गीयं—पु० (सि०) मसूड़े।
गीर—अ० (सि०) दूसरी बार।
गीरमिट—पु० (कु०, बि०, शि०) बरमा। लकड़ियों में छेद करने का उपकरण।

**गीरी**—स्त्री० (कु०) गुठली के अंदर का बीज।
**गीर्ही**—स्त्री० (चं०) गंभीर गर्जन।
**गीलटू**—पु० (शि०) गला।
**गीह**—पु० (कु०) गीत।
**गीह**—पु० (सि०) नृत्य।
**गीह्णा**—अ० क्रि० (कु०) गले मिलना।
**गुंआर**—वि० (शि०, कु०) मूर्ख।
**गुंआह**—पु० (बि०) वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी **ईंधन** के काम आती है।
**गुंइंटा**—पु० (शि०) गैंडा।
**गुंगली**—स्त्री० (कां०) एक तरह की छोटी मछली।
**गुंगलु**—पु० शलजम।
**गुंघणा**—अ० क्रि० (कु०) भौंकना।
**गुंछा**—पु० गमछा।
**गुंज**—स्त्री० (मं०) मूंछ।
**गुंजरी**—स्त्री० (शि०) मूंछ।
**गुंजह्**—स्त्री० (सि०) दे० गुंजरी।
**गुंजी**—पु० (सि०) कांटेदार धान।
**गुंझा**—पु० (मं०) स्त्रियों द्वारा आराधित एक **बौना** देवता जो दूसरों के घर से दूध, घी चुराकर अपने आराधक के घर पहुंचाता है।
**गुंझी**—स्त्री० धागे की गुच्छी।
**गुंझी**—वि० (शि०) बड़ी मूंछों वाला।
**गुंठी**—स्त्री० (सि०) अंगूठी।
**गुंडा**—पु० (शि०) घुटना।
**गुंडा**—वि० बदमाश।
**गुंडिणो**—स० क्रि० (शि०) नाचने के लिए पंक्ति लगाना।
**गुंडेदेणे**—स० क्रि० (मं०) 'मांड़' के त्योहार पर गाय का पूजन करके उसे बाहर ले जाकर पकवान आदि खिलाना।
**गुंतरयाला**—पु० (बि०) प्रसव के ग्यारह से सत्रह दिनों के बीच किसी दिन प्रसूता व बच्चे को प्रसूता गृह से बाहर निकालने का संस्कार।
**गुंथ**—पु० (मं०) गेंदे का फूल।
**गुंदणा**—स० क्रि० गूंथना।
**गुंदणा/णो**—स० क्रि० (सो०, शि०) बुनना।
**गुंदा**—पु० (सि०) हुक्का।
**गुंदी**—स्त्री० फांक।
**गुंद्रा**—पु० (बि०, चं०) कटा हुआ चारा।
**गुंधणा**—स० क्रि० गूंथना।
**गुंबड़**—पु० (सि०) फोड़ा।
**गुंबद**—पु० कलश।
**गुंबर**—पु० दे० कुंबर।
**गुंबरा**—पु० (सि०) सत्तू **रखने** का पात्र।
**गुआंडी**—पु० पड़ोसी, प्रतिवेशी।
**गुआ**—पु० (सि०) दाना, अन्न का दाना।
**गुआइण**—स्त्री० पशु बांधने का कमरा।
**गुआइण**—स्त्री० (कु०) हानि।
**गुआइणा**—स० क्रि० (कु०) नष्ट किया जाना, खराब होना।
**गुआई**—पु० (शि०) साक्षी, गवाही देने वाला।
**गुआऊ**—वि० गंवाने वाला।
**गुआऊ**—पु० कपूत।
**गुआड**—पु० (चं०) गोशाला।
**गुआड़ा पुछाड़ा**—अ० (कां०) इधर-उधर, घर के आगे-पीछे।
**गुआड़ू**—पु० (कां०, ह०) घर के सामने के छोटे खेत।
**गुआण**—स्त्री० (कां०) हानि।
**गुआणा**—स० क्रि० गुम करना।
**गुआथणा**—स० क्रि० (बि०) खोदना।
**गुआर**—वि० (बि०) गंवार।
**गुआलण**—स्त्री० ग्वालिन।
**गुआळा**—पु० (कु०, चं०) ग्वाला।
**गुआलियां**—स्त्री० (कां०) धोंकनी में लगी हत्थियां।
**गुआळी**—स्त्री० (कां०) गोरक्षा, गोचारण।
**गुआलु**—पु० (कां०) ग्वाला।
**गुआह**—पु० साक्षी, गवाह।
**गुआहणा**—स० क्रि० चढ़ाना।
**गुआही**—स्त्री० (कु०) गवाही, साक्ष्य।
**गुइंत्र**—पु० (मं०) गोमूत्र।
**गुइडास**—पु० (शि०) गैंडे का मांस।
**गुईत**—पु० (बि०) दे० गुइंत्र।
**गुई**—पु० (चं०) गाय का दूध।
**गुउड़ा**—वि० (शि०) दबा हुआ।
**गुक्खु**—पु० चोट, घाव।
**गुखु**—पु० (सि०) दे० गुक्खु।
**गुगण**—स्त्री० (सि०) लंबी गुफा।
**गुगली**—स्त्री० लोक नृत्य की एक शैली।
**गुगर**—पु० (कां०, ह०) शराब निकालने में **प्रयुक्त** लकड़ी विशेष का पात्र।
**गुगल**—पु० गुग्गुल।
**गुगली**—स्त्री० (सि०) आंख की एक बीमारी।
**गुग्गा**—पु० एक देवता विशेष जिसका **संबंध** सांपों का विष उतारने से है।
**गुघू**—पु० (कु०) कबूतर प्रजाति का एक पक्षी विशेष।
**गुच**—वि० (बि०) नशे में धुत्त, मदमस्त।
**गुचणा**—स० क्रि० (चं०) सिलना, सीना।
**गुचलू**—वि० (बि०, कां०) अस्थिर।
**गुच्चू**—वि० (चं०) दे० गुचलू।
**गुच्छा**—स्त्री० (कां०, ऊ०) नाई का थैला।
**गुच्छी**—स्त्री० कुकुरमुत्ता।
**गुच्छी**—स्त्री० (कां०) साधुओं की थैली। किसी वस्तु का छोटा गुच्छा।
**गुछटी**—स्त्री० (कु०) बालों की चोटी, वेणी।
**गुछड़**—पु० (सो०, शि०) पुराने वस्त्र।
**गुछमुछी**—स्त्री० एक दूसरे के बाल पकड़ कर लड़ने की क्रिया।
**गुछा**—पु० (कु०) बड़ा कौर, ग्रास।

**गुजरतोता**—पु० (बि०, कां०, ऊ०) पक्षी विशेष जो रात को बोलता है।
**गुजरा**—स्त्री० (सि०) भेड़-बकरी की पूंछ।
**गुजु**—पु० कीड़े-मकोड़े।
**गुजोटी**—स्त्री० (शि०) वेणी, चोटी।
**गुज्ज**—स्त्री० (कां०, बि०) चक्र को घुमाने वाली धुरी।
**गुज्ज फुटणा**—अ० क्रि० (कां०, ह०) मक्की के तने से फल निकलना।
**गुज्जा**—पु० (बि०) कीड़ा।
**गुज्जा**—पु० (शि०) जेब।
**गुज्झ**—स्त्री० (कां०, चं०, ऊ०) रिश्वत।
**गुज्झां**—स्त्री० (कां०, बि०) चरखे में लगी दो सुराख वाली छोटी लकड़ियां जिनमें तकला पिरोया जाता है।
**गुज्झा**—वि० (कां०) गहरा।
**गुज्झू**—पु० (मं०, शि०, सि०) एक प्रकार का डमरू।
**गुझा**—वि० (बि०, कां०, ऊ०) घुन्ना, बात को मन में रखने वाला।
**गुझैग**—वि० (चं०, कां०) रिश्वत लेने वाला।
**गुझेहरा**—वि० (मं०) 'गुज्झू' बजाने वाला।
**गुट**—पु० धागे का गोला।
**गुट**—पु० (ऊ०, कां०) कलाई।
**गुट**—पु० (सो०) नारियल का भीतरी भाग।
**गुटका**—पु० (कां०) 'गरारी' में प्रयुक्त लकड़ी का खोल वाला टुकड़ा।
**गुटका**—पु० छोटी पुस्तक।
**गुटका**—पु० लकड़ी का छोटा सा टुकड़ा।
**गुटकारी**—स्त्री० हंसी।
**गुटणा**—स० क्रि० (सो०) निगलना।
**गुटळी**—स्त्री० गुठली।
**गुटिणा**—अ० क्रि० (कु०) घुटना, घुट जाना।
**गुटी**—स्त्री० (कु०) गुठली।
**गुटी**—स्त्री० (सो०) घुट्टी।
**गुटी**—स्त्री० (कां०, ऊ०) बालों का जूड़ा।
**गुट्ट**—पु० घूंट, पानी का घूंट।
**गुट्टा**—पु० (बि०) जूड़ा।
**गुट्टी**—स्त्री० धागे की गुच्छी।
**गुट्टी**—स्त्री० (मं०) गुठली।
**गुटदू**—पु० (सि०) तंबाकू के पौधों को बांधने की क्रिया।
**गुट्ठा**—पु० अंगूठा।
**गुट्ठी**—स्त्री० अंगुली।
**गुट्ठू**—पु० (चं०) घूंसा, मुक्का।
**गुठ**—पु० (चं०) घोड़े पर बैठने से लगने वाला धक्का।
**गुठकुं**—पु० (सि०) पांव की अंगूठी।
**गुठडू**—पु० (शि०) छोटा अंगूठा।
**गुठली**—स्त्री० (सि०) बीज।
**गुठा**—पु० (सो०) दे० गुट्ठा।
**गुठी**—स्त्री० (सो०) अंगूठी।
**गुठीघटाणा**—स० क्रि० (मं०, कां०) नवजात शिशु का अन्नप्राशन संस्कार करना।
**गुडंबा**—वि० बहुत मीठा।
**गुड़कणा**—स्त्री० गर्जन।
**गुड़कणा**—अ० क्रि० (सो०) बादलों का गरजना।
**गुड़कणो**—अ० क्रि० (सि०, शि०) गरजना, बादलों का गरजना।
**गुड़पतराज**—पु० मीठे पत्तों वाला वृक्ष।
**गुड़पत्री**—स्त्री० मीठे पत्तों वाली लता।
**गुड़फना**—पु० गुड़ का घोल।
**गुडरी**—स्त्री० तितली।
**गुडरू**—पु० (कु०) स्नान कक्ष।
**गुडळा**—वि० मीठा।
**गुड़वाणी**—स्त्री० गुड़ का घोल।
**गुड़सत**—पु० नवजात शिशु को दिया जाने वाला पंचामृत।
**गुडसूर**—पु० (चं०) एक ही नगाड़े को तीव्र गति से बजाने का स्वर।
**गुड़ाका**—वि० (ऊ०, कां०) गोड़ाई करने वाला।
**गुड़ाना**—अ० क्रि० (सि०) बकरे में देवता का प्रवेश होना।
**गुडाळ**—पु० (शि०) पशुओं के बाल।
**गुड़ि**—स्त्री० (शि०, सो०) झुर्री, सलवट।
**गुडुब्बा**—पु० (कां०) घूंसा मारने की क्रिया।
**गुडूछ**—पु० एक प्रकार की बेल जिसका अर्क औषधि में प्रयुक्त होता है।
**गुड्ड**—पु० (कां०) घुटने का दबाव।
**गुड्डी**—स्त्री० (सि०) कड़ाही के भीतरी भाग में चिपका हुआ अशुद्ध गुड़।
**गुड्डी**—स्त्री० गुड़िया।
**गुड्डी**—स्त्री० (चं०) दीवार का अंतिम भाग जहां से छत प्रारंभ होती है।
**गुढणा**—स० क्रि० बाल गूंथना।
**गुढणा**—स० क्रि० पति की मृत्यु के बाद पति के भाई से पुनः विवाह करना।
**गुढा**—वि० घना, गहरा।
**गुढोझ**—पु० (चं०) पुनर्विवाह।
**गुण**—पु० (कु०) देवी-देवता से मिला आशीर्वाद, अच्छाई।
**गुणगुनाणा**—अ० क्रि० गुनगुनाना।
**गुणना**—स० क्रि० (मं०, सि०) मन में विचारना।
**गुणस**—स्त्री० (सो०) एक प्रकार का हरे रंग का सुस्त सांप।
**गुणसड़ा**—पु० (सि०) जहरीला सांप।
**गुणाह**—स्त्री० (चं०) सांप की एक किस्म।
**गुणा**—पु० (सो०) पारंपरिक विभाजन के दस्तावेज़।
**गुणा**—पु० (शि०) अन्न में लगने वाला कीड़ा।
**गुणा**—पु० (कां०, बि०) विवाह के अवसर पर बनाया जाने वाला गेहूं के आटे का गुलाब-जामुन की शक्ल जैसा खाद्य पदार्थ।
**गुणाओणो**—स० क्रि० (शि०) दे० गणना।
**गुणिया**—पु० पत्थर के कोने बनाने एवं चिनाई करने के लिए प्रयुक्त लोहे का मापक।

**गुणिया**—वि० गुणवान्, चतुर।
**गुणी**—पु० (कु०, मं०) लंगूर।
**गुणो**—पु०। (कु०) 'पट्टू' के दोनों किनारों पर धागों में दी गई गांठ ताकि धागे उघड़ें न।
**गुणे-खुणे**—पु० (मं०) देवता की प्रसन्नता से प्राप्त संतान।
**गुत**—स्त्री० वेणी।
**गुतड़ी**—स्त्री० छोटी वेणी।
**गुतळी**—स्त्री० (सो०) गुदगुदी।
**गुतळू**—पु० गुदगुदी।
**गुत्थमगुत्था**—पु० हाथापाई।
**गुथणा**—स० क्रि० फटे पुराने कपड़ों को सीना।
**गुधणा**—स० क्रि० मींच देना।
**गुद**—वि० (चं०) दूध पीकर संतुष्ट हुआ पशु का बच्चा।
**गुदगुदो**—वि० (शि०, सि०) नर्म।
**गुदड़**—पु० फटे-पुराने कपड़े।
**गुदड़ी**—स्त्री० कई चिथड़ों का बना चोगा। कन्था। सैंन्यासियों की झोली।
**गुदडू**—पु० (बि०) पुराने कपड़े का टुकड़ा।
**गुदरणा**—अ० क्रि० (चं०) समाप्त होना, मर जाना।
**गुदरना**—अ० क्रि० (बि०) सम्पन्न होना, पूरा होना।
**गुदला**—वि० (कां०, ऊ०) मोटा और नर्म।
**गुदाम**—पु० गोदाम, भंडार।
**गुदुणू**—वि० (चं०) गोड़ाई करने वाला।
**गुद्दड़**—पु० (कां०) दे० गुदड़।
**गुद्दा**—पु० फल या सब्जी का अंदर वाला हिस्सा।
**गुनणा**—स० क्रि० आटा गूंधना।
**गुनणू**—पु० (मं०) पानी के किनारे उगने वाली जंगली अरबी।
**गुनाळ**—पु० (सि०) अरबी की तरह का एक कंद।
**गुने**—स्त्री० (सि०) एक प्रकार की घास जिससे रस्सियां बनती हैं।
**गुन्ना**—वि० (शि०, सो०, मं०) गहरा, गंभीर, मन के भावों को प्रकट न करने वाला।
**गुन्हण**—वि० गूंधने योग्य आटा आदि।
**गुन्हणा**—स० क्रि० गूंधना, गूंधना।
**गुन्हणा**—स० क्रि० (कु०) बुनना।
**गुप**—वि० (चं०) घना, अंधकारमय।
**गुपचुप**—वि० चुपचाप।
**गुप्ती**—स्त्री० गुप्ती, बांस की लाठी जिसके भीतर दोधारी तलवार छिपी हो।
**गुबार**—पु० (कां०) क्रोध, गुस्सा।
**गुब्त**—वि० (चं०) गुप्त।
**गुब्भणा**—स० क्रि० (कां०, ह०) मारना, पशु अथवा आदमी द्वारा मारा जाना।
**गुमाणी**—स्त्री० (चं०) सामान रखने का छतरहित कमरा।
**गुमणी**—स्त्री० (सि०) मृत व्यक्ति की टांगें।
**गुमणे**—स्त्री० (शि०) बकरे की टांगें।
**गुमला**—वि० (मं०) गुनगुना, कोसा।
**गुमसुड़ुंदा**—वि० (कु०) थोड़ा सड़ा हुआ (घास)।
**गुमोहरना**—अ० क्रि० (मं०) बदली छाए रहना।
**गुम्म**—वि० (शि०) दुःखी।
**गुम्मद**—पु० गुंबद।
**गुम्हणा**—स० क्रि० मसलना, मारना, सींग मारना।
**गुम्हणा**—स० क्रि० (चं०) दबा देना।
**गुर**—पु० उपाय।
**गुर**—पु० (कां०, ऊ०) गुरु।
**गुर**—पु० गुण।
**गुर**—पु० (मं०) देवता का प्रतिनिधि जिसके द्वारा देवता बोलता है।
**गुरगड़ी**—स्त्री० पीतल की छोटी कली, पीतल का छोटा हुक्का।
**गुरगुज**—पु० (चं०) गूदा।
**गुरनु**—पु० एक जंगली फल।
**गुरम**—पु० (सो०) गर्मी का अनुभव।
**गुरमर**—पु० (कां०, ह०) मिट्टी बिठाने का लोहे का औज़ार।
**गुरमाला**—पु० (कां०, ह०) दीवारों में मिट्टी, सीमेंट आदि लगाने तथा समतल करने का औज़ार।
**गुरा**—वि० (शि०) गोरा।
**गुराण**—स्त्री० (शि०) गंध।
**गुराळा**—पु० (कां०, ऊ०) उजाला, वर्षा के उपरांत हुआ निर्मल आकाश।
**गुराहना**—स० क्रि० (कां०) उगाहना, एकत्रित करना।
**गुराही**—पु० (चं०) लोक गायक जो खंजरी बजाकर भक्ति गीत सुनाता है।
**गुरीटी**—स्त्री० कंकड़, पत्थर रहित लाल मिट्टी, चिकनी मिट्टी।
**गुरु**—पु० शिक्षक।
**गुरूहल**—स्त्री० (कां०, ह०) तंग गली।
**गुरैंट**—वि० (चं०, कां०) लाल व चिकनी मिट्टी वाली (ज़मीन)।
**गुर्ज**—पु० गदा।
**गुर्भण**—स्त्री० (कु०) गर्भवती।
**गुर्भणी**—स्त्री० गर्भवती।
**गुल**—पु० (चं०) जलते दीपक की राख।
**गुल**—पु० शरीर के अस्वस्थ या रुग्ण भाग में लगाया जाने वाला लेप।
**गुलगुला**—पु० गुड़ और आटे के घोल से तैयार विशेष पकवान।
**गुलघुट्ट**—पु० (कां०) निगलने की क्रिया।
**गुलघुट्टड़**—पु० (चं०) छोटे बच्चे को दूध पीते-पीते हिचकी आने की क्रिया।
**गुलघुहण**—स्त्री० (चं०, कां०) तंग गली।
**गुळछ**—स्त्री० (कां०) दूध पीने वाले बच्चे को आने वाली उलटी।
**गुळछी**—स्त्री० (कु०) मृत पशु का पृष्ठ भाग।
**गुलज**—स्त्री० (कां०, ह०) एक लता विशेष जो औषधि के रूप में प्रयोग की जाती है।
**गुलटा**—पु० (मं०) पकाए मांस का एक खट्टा व्यंजन।
**गुलटी**—स्त्री० (सि०) बढ़ा हुआ मांस।
**गुलटी/टे**—स्त्री० (शि०) दाना, अन्न का दाना।
**गुलणा**—स० क्रि० (बि०, ऊ०, कां०) उगलना।

गुलणा—पु० (सि०) मक्की के मुट्टे का भीतरी भाग जिस पर दाने लगते हैं।
गुळणा—वि० (सि०) मीठा।
गुलनारी—वि० लाल जामुनी।
गुलप—पु० (कु०) दे० गुळम्ब।
गुलफा—पु० खांसी के समय गले में अटकने वाला कफ।
गुळफाह—स्त्री० पानी निकालने हेतु घड़े को बांधने के लिए लगाई जाने वाली विशेष गांठ।
गुलबा—पु० (शि०) आटा गूंधते समय पानी बिना रहा गोला।
गुलबाखू—पु० एक वृक्ष विशेष जिसमें अधिक फूल लगते हैं जिसमें औषध गुण होते हैं।
गुलबुली—स्त्री० (बि०, कां०) गुलदाऊदी का फूल।
गुलमा—पु० (शि०) झुंड, समूह।
गुलमी—स्त्री० (सो०) आटे और गुड़ के घोल में बिना घुला गोला।
गुलमुळा—वि० (सो०) गुनगुना।
गुलमैंहदा—पु० (कां०, ह०) एक वृक्ष विशेष।
गुलयाणा—वि० (कां०, ह०) चिकनी मिट्टी वाला।
गुलरा—पु० (बि०) जन्म दिन पर बनने वाला विशेष भोजन।
गुलरू—पु० (कु०) चावल के आटे का बना मीठा पकवान।
गुलल—पु० (कां०, ह०) दाना रहित मक्की का कच्चा मुट्टा।
गुळवा—पु० (शि०) मालपुए।
गुलवो—वि० (शि०) मीठा।
गुलशन—पु० (कां०) नग या मोती बैठाने का औज़ार।
गुलसंब—पु० (कां०, ऊ०) चमड़ा छेदने का औज़ार।
गुलसब्बो—पु० (चं०) सफेद रंग का फूल।
गुलसु—पु० (शि०, सि०) पशुओं की जांघ।
गुलांचा—पु० (सि०) Tinospora Cordifolia.
गुला—वि० (कु०) मीठा।
गुलाट—पु० गन्ने का पत्ते वाला ऊपर का भाग।
गुलाड़ी—पु० (चं०) पड़ोसी।
गुलाबंद—पु० (सो०) गुलूबंद, मफलर।
गुलाह—पु० (बि०) एक वृक्ष विशेष।
गुलिंद—पु० (चं०) गिद्ध जाति का पक्षी।
गुलियाला—पु० (शि०) लंगूर।
गुली—स्त्री० (कां०) चाय की विशेष किस्म।
गुली—स्त्री० (कु०) गुल्ली।
गुळी—स्त्री० (कां०, ऊ०) गुठली।
गुलीद—पु० (चं०) उच्च शिखरों पर रहने वाला पक्षी।
गुलुआ—वि० (शि०) मीठा।
गुलुह—स्त्री० (शि०) मिट्टी।
गुलू—पु० (कां०) गुल्ली, जिसमें मक्की के दाने लगते हैं।
गुले—स्त्री० चारे का एक वृक्ष विशेष जिसके पत्ते चौड़े होते हैं।
गुलेन—वि० (कां०, ह०) वृत्ताकार।
गुलेल—स्त्री० (चं०) यंत्र विशेष जिससे चिड़ियों का शिकार किया जाता है।
गुल्फा—पु० (चं०) हाथ और बाजू का जोड़।
गुल्यान—स्त्री० (कां०, ह०) चिकनी मिट्टी।
गुल्ल—पु० (चं०) बिस्तर।
गुल्लर—पु० (कां०) मक्की के दानों की अंदर की गुल्ली।
गुल्लियान—पु० (कां०, ह०) कम दानों वाली मक्की।
गुल्ली—स्त्री० (चं०) बच्चों के पालन पोषण का व्यय।
गुल्ली—स्त्री० (चं०) गुल्ली-डंडा खेल में प्रयुक्त लकड़ी का छोटा टुकड़ा।
गुल्ली—स्त्री० मक्की के मुट्टे से दाने निकाल कर शेष बचा भाग।
गुल्लु—पु० मक्की का छोटा मुट्टा।
गुल्ह—पु० (चं०) प्रसूता के लिए लगाया गया बिस्तर।
गुल्हरु—पु० (कु०) मक्की का छोटा मुट्टा।
गुल्हैण—पु० (कां०) Hemiltonia suqveolans.
गुवाया—पु० (शि०) बीज बोने वाला।
गुशणा—स० क्रि० (सो०) बालों को गूंथना।
गुशाड़—पु० (शि०) बेकार का सामान।
गुशाल—पु० (शि०) गोशाला, विशाल कक्ष।
गुश्ती—स्त्री० (सि०) कुश्ती।
गुसांई—पु० भगवान्, मठाधीश।
गुस्सैल—वि० क्रोधी, गुस्से वाला।
गुह—पु० पाखाना, विष्ठा।
गुहणो—स० क्रि० (शि०) साफ करना।
गुहाई—स्त्री० गाहने की क्रिया; गाहने के लिए दिया गया पारिश्रमिक।
गुहाड़ना—स० क्रि० खोलना।
गुहार—पु० (कां०, ह०) घास का विशेष प्रकार से व्यवस्थित ढेर।
गुहारड़—पु० (कां०, ह०) एक प्रकार के सत्तू।
गुहाखड़—पु० शौचालय, शौच का स्थान।
गुहेडू—पु० (चं०) एक कीट विशेष।
गुहेल—स्त्री० (चं०) पशु-मवेशी रखने का स्थान।
गुह्ज—स्त्री० (चं०, कां०, ऊ०) रिश्वत।
गुह्ज—पु० (मं०) मूसल।
गुह्ज—स्त्री० (कां०, ऊ०, बि०) चरखे के तकले को सीधा रखने वाली घास अथवा चीथड़ों की बनी डंडी।
गुह्मा—पु० (कु०) मुक्का।
गूं—पु० (चं०) एक फलदार वृक्ष।
गूंगर—पु० (शि०) घुंघरू।
गूंज—स्त्री० प्रतिध्वनि।
गूंठ—पु० (मं०) छोटे कद का घोड़ा।
गूंड—पु० (शि०) पशु।
गूंढा—वि० (मं०) शृंगाररहित।
गूंत—पु० गोमूत्र।
गूंत—पु० गोमूत्र से किया गया शुद्धिकरण।
गूंत्तर—पु० गोमूत्र।
गूंद—स्त्री० गोंद।
गूंद—स्त्री० (शि०) गंध।
गूंदणा—स० क्रि० (सो०) गूंथना।
गूंदला—वि० (शि०) सुगंधित।

**गूंदो**—पु० (कां०) विशेष प्रकार का हुक्का।
**गूंबर**—पु० (मं०) घास का कांटा।
**गूंहूतर**—पु० (ऊ०, कां०) गोमूत्र।
**गूगा**—पु० दे० गुग्गा।
**गूच्चू**—पु० (मं०) बच्चे के दूध उगलने की बीमारी।
**गूच्छौ**—पु० (कु०) लंगोटी।
**गूज**—पु० (सि०) खच्चर पर लदा हुआ भार।
**गूज़र**—पु० गुर्जर जाति।
**गूजा**—पु० कीड़ा।
**गूजा**—पु० (सि०) भीतरी जेब।
**गूजे**—पु० (कां०) आटे के पके शकरपारे।
**गूजेबाण**—पु० व्यंग्य, चुपके से नुकसान पहुंचाने की क्रिया।
**गूझू**—वि० (कु०) उबला हुआ।
**गूटणो**—अ० क्रि० (सि०) घुट जाना।
**गूठी**—स्त्री० (कु०) अंगुली।
**गूठी**—स्त्री० (बि०) अंगूठी।
**गूड़**—पु० गुड़।
**गूड़ना**—स० क्रि० सख्ती से बांधना।
**गूडा**—पु० (कु०) गुड्डा, खिलौना।
**गूड्ड**—पु० (कां०) एक ही सांस में पीने की क्रिया।
**गूढ़ा**—वि० (कां०) गाढ़ा।
**गूण**—पु० (कु०) गुण, लाभ, देवता द्वारा दी गई सांत्वना, कामना-सिद्धि।
**गूण**—पु० (कु०) बड़ा रस्सा।
**गूण**—स्त्री० गोन, खच्चर पर दोनों ओर लादी जाने वाली सामान से भरी बोरियां।
**गूतड़ी**—स्त्री० (सि०) दे० गुत।
**गूताह**—पु० पशुओं को मूत्र में रक्त आने की बीमारी।
**गूत्तू**—पु० (शि०) एक पत्थर जिसे खोद कर उसमें ऊनी वस्त्र धोए जाते हैं।
**गूद**—पु० (कु०) मज्जा।
**गूफी**—स्त्री० (कु०) गुफा।
**गूर**—पु० (कु०) देवता का प्रतिनिधि जिसके द्वारा देवता बोलता है।
**गूर**—स्त्री० (शि०) गली।
**गूरना**—स० क्रि० (कां०, ऊ०) इशारे से रोकना, घूरना।
**गूल**—पु० (शि०) अनाज गृह।
**गें**—अ० (सि०) पर, ऊपर।
**गें**—स्त्री० कदम।
**गेंठी**—स्त्री० (सि०) अंगीठी।
**गेंती**—स्त्री० कुदाली।
**गेंदल**—पु० (मं०) वृक्ष का बीच का भाग।
**गेंदू**—पु० (सि०) गेंद।
**गेंहोली**—स्त्री० (सि०) गेहूं की रोटी।
**गेंहपड़ी**—स्त्री० (सि०) सम्मिलित होकर कार्य करने की क्रिया।
**गे**—अ० क्रि० (कां०, ह०) गए।
**गे**—अ० (सि०) के।
**गेइर**—अ० (कु०) पराया।
**गेऊं**—पु० (कां०, ऊ०, बि०) गेहूं।
**गेऊ**—वि० (कु०) बेकार।
**गेछा**—पु० (कां०) काटने या छीलने से निकलने वाला कूड़ा।
**गेठा**—पु० (कु०) चूल्हा।
**गेठाल**—पु० (शि०) अंगीठी जलाने वाला देवता का सेवक।
**गेठी**—स्त्री० (सो०) अंगीठी।
**गेठे**—स्त्री० (शि०) अंगीठी।
**गेठौ**—पु० (शि०) चूल्हा।
**गेड़**—पु० (कां० मं०) चूल्हे के साथ लकड़ी रखने का स्थान।
**गेड़**—पु० (मं०) सीढ़ियों के ऊपर बना लकड़ी का ढक्कन।
**गेड़**—पु० (सो०) कठिनाई, हानि।
**गेड़देणा**—स० क्रि० (कां०) सामूहिक भोजन हेतु पंक्ति में बिठाना।
**गेड़ना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०) चलाना, घुमाना।
**गेड़ा**—पु० (कु०) घर के भीतर एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल में चढ़ने-उतरने के लिए सीढ़ी पर बनाया गया ढक्कन।
**गेड़ा**—पु० (सि०) खेप, भार ढोने की क्रिया।
**गेडू**—वि० (सि०) बलवान।
**गेडे**—अ० आगे।
**गेड़े**—पु० (शि०) खानदान।
**गेड्डा**—अ० (कां०, ऊ०) आगे।
**गेणा**—वि० (चं०) ठिगना।
**गेत**—अ० (कां०, ऊ०) शीघ्र, जल्दी।
**गेत**—स्त्री० (सो०) फसल बोने की पहल।
**गेता**—वि० (सो०) पहले का।
**गेती**—स्त्री० समय पर बीज बो देने का भाव।
**गेप**—पु० (सो०) गले के फूलने का रोग।
**गेपणा**—स० क्रि० (सो०) लापरवाही से पीना।
**गेर**—पु० (चं०) मोड़।
**गेर**—पु० (सि०) खेत का किनारा।
**गेरकणा**—अ० क्रि० (सि०) गाय-भैंस का रंभाना।
**गेरणा**—स० क्रि० (चं०) घुमाना।
**गेरना**—स० क्रि० (सि०) दे० गेरणा।
**गेरना**—स० क्रि० (सो०) पशुओं को एकत्रित करना।
**गेरना**—स० क्रि० (शि०) घेरना।
**गेरनु-फेरनु**—पु० (सो०) दे० घेरनूफेरनु।
**गेर-फेर**—पु० (सो०) हेर फेर, रहस्य।
**गेरा**—पु० (कां०, चं०) घेरा, घुमाव।
**गेरा**—पु० (सो०) सिर चकराने का भाव।
**गेरी**—स्त्री० लाल मिट्टी।
**गेरू**—वि० (सि०) गेरुआ बैल।
**गेरू**—पु० लाल खड़िया मिट्टी।
**गेरूआं**—वि० भगवां।
**गेर्का**—पु० (कु०) भारी।
**गेर्ज़**—स्त्री० (कु०) आवश्यकता, गर्ज़।
**गेल**—स्त्री० (मं०) लकड़ी की छाल।
**गेल**—स्त्री० (कु०, कां०) वृक्ष का तना।
**गेलणी**—स्त्री० गर्दन।

**गेला**—पु० लकड़ी का लट्ठा।
**गेला**—पु० (बि०) एक जंगली फल।
**गेली**—स्त्री० शहतीरी।
**गेलू**—पु० (कां०, ऊ०) एक जंगली फल।
**गेलू**—पु० (कां०) खड्डी के दोनों ओर लगी लंबी गोल लठें।
**गेश**—स्त्री० (कु०) कुशलता पूछने का भाव।
**गेसू**—पु० (कां०) पलाश वृक्ष के लाल फूल।
**गेह**—पु० घर।
**गेह**—स्त्री० (चं०, कां०) दीवार में सामान रखने हेतु निर्मित स्थान।
**गेह**—पु० (शि०) क्रोध।
**गेहणा**—पु० (बि०) आभूषण।
**गेहता**—वि० (चं०) ठिगना।
**गेहती**—स्त्री० (चं०) गली।
**गेहु**—पु० (शि०) गोबर का उपला।
**गैं**—स्त्री० (बि०, चं०) दे० गें।
**गैंट**—पु० (चं०) ओबरा, गोशाला।
**गैंठा**—वि० बौना।
**गैंती**—स्त्री० खुदाई करने का औज़ार, कुदाली।
**गैंदा**—वि० (कु०) गंदा।
**गैःना**—पु० (सो०) अलाव, तापने के लिए जलाई गई अधिक आग।
**गैटा**—पु० (कु०) छोटा गोल पत्थर।
**गैड**—पु० (शि०) जानवरों का समूह।
**गैण**—स्त्री० (सो०) आकाश।
**गैण**—स्त्री० पशुओं को बाहर बांधने का स्थान।
**गैणकूआ**—वि० (शि०) प्रथम।
**गैणु**—पु० (चं०) दे० ओड़ा।
**गैती**—स्त्री० (कु०) क्रियाकर्म।
**गैत्ता**—पु० (कु०) गत्ता।
**गैफा**—पु० (कु०) अत्यधिक लाभ।
**गैब**—वि० गुम, गायब।
**गैर**—वि० जीर्ण। कमज़ोर। पराया।
**गैरटी**—स्त्री० (शि०, सो०) मिट्टी का पात्र जिससे घी बांटा जाता है।
**गैरबखत**—पु० (सो०) सायंकाल।
**गैरमरू**—पु० (कु०) Hedero helise.
**गैरा**—वि० (शि०) ग्यारह।
**गैरी**—स्त्री० (शि०) गरी।
**गैल**—स्त्री० (चं०) संभाल।
**गैल**—स्त्री० (चं०) याद।
**गैलड़ु**—पु० (शि०) ग्वाला।
**गैला**—पु० (मं०, कां०) भूमिगत कीड़ा।
**गैलण**—स्त्री० (कां०, ह०) दान के रूप में दी जाने वाली रोटी।
**गैसी**—स्त्री० (कु०) बेहोशी, गशी।
**गैहण**—स्त्री० धरोहर।
**गैहणा**—पु० आभूषण।
**गैहरा**—वि० गहरा, गाढ़ा।
**गों**—स्त्री० (कां०, ऊ०, कु०) इच्छा।
**गोंऊ**—स्त्री० (कु०) गाय।
**गोंगलू**—पु० (कां०, ह०, ऊ०) शलजम।
**गोंच**—पु० (सि०, कु०) गोमूत्र।
**गोंछा**—पु० (सि०) अपने अधीन करने का भाव।
**गोंछू**—पु० (चं०) देव।
**गोंजा**—वि० (चं०) मूर्ख।
**गोंठ**—स्त्री० (कु०) ग्रंथि, गांठ।
**गोंठणा**—स० क्रि० (कु०) गांठना।
**गोंठणा**—स० क्रि० (कु०) ताना-बाना लगाना।
**गोंठा**—पु० (कु०) जोड़, गांठ।
**गोंठिदार**—पु० (कु०) कोषाध्यक्ष।
**गोंड**—पु० (कु०) बालतोड़।
**गोंत**—पु० (सि०) अगला जन्म।
**गोंत**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) गोमूत्र, पशुओं का मूत्र।
**गोंत्री**—स्त्री० एक पारंपरिक पर्व।
**गोंभरू**—पु० (कु०) गलगल।
**गोःचणा**—स० क्रि० (सो०) तंग करना, अंगुली चुभाना।
**गोःड़ा**—पु० (सो०) घोड़ा।
**गो**—स्त्री० (चं०) ऊंची दीवार बनाने हेतु शिल्पियों द्वारा दीवार के मध्य भाग में कार्य करने हेतु लगाई गई लकड़ियां।
**गो**—पु० (सि०) गला।
**गो**—पु० (सि०) काहू वृक्ष के बीज।
**गोआ**—पु० (बि०) गोबर।
**गोइटा**—पु० (सो०) उपला।
**गोइली**—अ० (सि०) साथ।
**गोई**—स्त्री० (कु०) दे० गें।
**गोईण**—पु० (सि०) आकाश।
**गोउतरी**— स्त्री० (कु०) शिव विवाह में प्रयुक्त नरगिस नामक घास विशेष।
**गोउल**—स्त्री० (सि०) गर्मी।
**गोएली**—स्त्री० (सि०) दासी।
**गोका**—पु० (कां०, ऊ०) गाय का घी।
**गोखड़ू**—पु० (कु०) कर्णाभूषण।
**गोखरी**—स्त्री० (सि०) बड़ी छुरी।
**गोखरू**—पु० (कां०, ऊ०) कंगन।
**गोखा**—वि० (चं०) गाय की जाति का।
**गोगड़**—स्त्री० बढ़ा हुआ पेट।
**गोची**—स्त्री० (सि०) गोभी।
**गोच्छा**—पु० अंगोछा।
**गोज़**—स्त्री० (सि०) गिद्ध।
**गोज़**—स्त्री० (शि०) बंदूक की गज़।
**गोज़**—पु० (शि०) गज़, मापक।
**गोजरू**—पु० हाथ का आभूषण।
**गोज़ा**—पु० (सि०) जेब।
**गोजूणा**—स० क्रि० (कुं०) खो जाना।

**गोझिणा**—अ० क्रि० (कु०) छिपना।
**गोट**—पु० (सि०) पनचक्की।
**गोट**—स्त्री० (कां०, ह०) घुटनों के बल सोने की क्रिया।
**गोटणा**—स० क्रि० (कु०) रोकना, पानी रोकना।
**गोटणा**—स० क्रि० (सो०) गला घोंटना।
**गोटना**—स० क्रि० पशु को हटाना।
**गोटा**—पु० गोटा-किनारी।
**गोटिणा**—स० क्रि० (कु०) रोका जाना।
**गोटी**—स्त्री० (सि०) गुठली।
**गोट्ट**—पु० (शि०) खबर लेने का भाव।
**गोट्ठू**—पु० (सि०) नेवले की तरह का एक जीव।
**गोठ**—स्त्री० (बि०) चादर में लगी गाँठें।
**गोठ**—पु० (कु०) विशेष उत्सव, ज़ियाफत।
**गोठ**—पु० (सि०) बकरी का मांस।
**गोठ**—पु० भेड़-बकरियों का झुंड।
**गोठण**—स्त्री० (कां०) सगाई, वाग्दान।
**गोठू**—पु० (कु०) काले रंग का छोटा जानवर विशेष।
**गोड़**—पु० (कां०, ह०) पशुओं को बांधने का स्थान।।
**गोड़**—पु० (कां०, मं०) चिड़िया का शिकार करने की विशेष कमान।
**गोड़**—वि० (कु०) गोल।
**गोड़णा**—स० क्रि० (सो०) निराई करना, गोड़ाई करना।
**गोड़णी**—स्त्री० निराई करने का औज़ार।
**गोड़णू**—पु० (कां०) दे० गोड़णी।
**गोडा**—पु० (बि०) चिकनी मिट्टी।
**गोडा**—पु० घुटना।
**गोड़ा**—पु० (कु०) टखना।
**गोड़ा**—पु० (सि०) वेणी।
**गोढ़ा**—पु० (कां०) नीबू प्रजाति का एक फल।
**गोढ़ा**—पु० (कां०) ऊन या रुई को कातने के लिए बनाए फाहे।
**गोड़ा**—पु० (मं०) गोलाकार शहतीर।
**गोड़िया**—पु० (कु०) चावल पकाने का बड़ा बर्तन।
**गोडी**—स्त्री० (चं०) गोड़ाई।
**गोढ़ी**—वि० (कां०) चिकनी।
**गोडुंआ**—पु० (शि०) कीड़े-मकोड़े।
**गोडो**—पु० (मं०) टखना।
**गोढ़**—पु० (बि०) एक खट्टा फल।
**गोढ़**—स्त्री० (बि०) सर्पाकार मछली।
**गोढ़**—वि० गहरा (स्थान)।
**गोढ़**—पु० पशुशाला।
**गोढणो**—स० क्रि० (सि०) निगलना।
**गोढ़ा**—वि० (सि०) खट्टा।
**गोण**—पु० (कु०) शहद की मक्खियों का छत्ता।
**गोणचा**—पु० (सि०) ज्योतिषी।
**गोणना**—स० क्रि० (कु०) गिनना।
**गोणा**—पु० (सि०) आंगन।
**गोत**—पु० गोत्र।
**गोला**—पु० डुबकी।
**गोता**—पु० (कु०) गुलेल में प्रयुक्त छोटा पत्थर।
**गोताखोर**—पु० तैराक।
**गोताला**—वि० (शि०) हृष्ट-पुष्ट।
**गोती**—वि० सगोत्रीय।
**गोथरा**—पु० (मं०) चबूतरा।
**गोद**—पु० (शि०) तना।
**गोद**—स्त्री० गोद।
**गोद**—स्त्री० (सो०) कोंपल।
**गोद**—स्त्री० (कां०) सर्पाकार मछली।
**गोदड़**—स्त्री० मोरनी।
**गोदड़ी**—स्त्री० (कां०) देवस्थान।
**गोदळ**—वि० आलसी।
**गोदळा**—पु० (कु०) प्रातःकाल।
**गोदी**—स्त्री० (सि०) शकरकंदी।
**गोध**—पु० (कु०) सायंकाल।
**गोधण**—स्त्री० गोवर्धन पूजा।
**गोधली**—स्त्री० गोधूलि।
**गोनणी**—स्त्री० (बि०) एक जंगली वृक्ष जिसके पत्ते चारे के काम आते हैं।
**गोनी**—स्त्री० (शि०) याद।
**गोपणा**—अ० क्रि० (सि०) सहना।
**गोपणा**—स० क्रि० (सो०) घोंपना।
**गोपणा**—स० क्रि० (मं०) सिलना।
**गोफ्फा**—वि० (चं०) मूर्ख।
**गोब**—स्त्री० (बि०) कोंपल।
**गोबणा**—स० क्रि० (कां०, ऊ०) धकेलना।
**गोबराण**—स्त्री० (शि०) गोबर से की गई लिपाई।
**गोबरारो**—पु० (शि०) गोबर ढोने वाला व्यक्ति।
**गोबराश**—पु० (सि०) गोबर का ढेर।
**गोबरेणट्टु**—पु० (शि०) उपला।
**गोबरेशा**—वि० (चं०) गोबर से सना हुआ।
**गोबरेहड़ा**—पु० (शि०) गोबर रखने का स्थान।
**गोबरोता**—पु० (चं०) गोबर की लिपाई।
**गोबला**—पु० (शि०) लिफाफा।
**गोबिश**—पु० (शि०) दे० गोबराश।
**गोबी**—स्त्री० गोभी।
**गोबू**—पु० अरवी का डंठल।
**गोबे**—स्त्री० (शि०) गोभी।
**गोबोर**—पु० (सि०) गोबर।
**गोब्दू**—पु० (शि०) अरबी के पत्तों की सब्जी।
**गोभरू**—पु० (चं०) लड़का।
**गोमणा**—अ० क्रि० पसंद आना।
**गोमुखी**—स्त्री० (कु०) एक प्रकार की टोपी।
**गोयरा**—पु० (सि०) पशुओं के चलने का रास्ता।
**गोयली**—अ० (सि०) साथ-साथ।
**गोयेढ़**—स्त्री० (बि०) पशुशाला।
**गोर**—स्त्री० (बि०) चरागाह।
**गोरजां**—स्त्री० पार्वती।

गोरता—वि० (सि०) समीपवर्ती।
गोरन—स्त्री० (कां०, ह०, ऊ०) गोशाला।
गोरां—पु० (सि०) बैल।
गोरा—वि० गौरवर्ण का।
गोराड़ा—पु० (सि०) सूखा गोबर।
गोरू—पु० पशु।
गोरूहणा—पु० (चं०) अधिक पशु।
गोरेली—स्त्री० (चं०) पशु चराने का समय।
गोरोज़—स्त्री० (शि०) आवश्यकता।
गोरोण—पु० (शि०) ग्रहण।
गोरोम—वि० (सि०) गर्म।
गोरोह—पु० (शि०) ग्रह।
गोर्ही—स्त्री० (चं०) पदचिह्नों की पंक्ति।
गोलटू—पु० (कु०) गोलदायरा।
गोलव्रत—पु० (मं०) कृष्ण जन्माष्टमी।
गोलयांवा—पु० (शि०) छींका।
गोळा—पु० गोला।
गोली—पु० (सो०) लंगूर।
गोळी—स्त्री० गोली।
गोलुआं—वि० (कां०) आसमानी रंग की मिट्टी जिससे घर की लिपाई की जाती है।
गोलू—पु० सफेद मिट्टी।
गोल्टणू—पु० (कु०) घेरा।
गोल्दु—पु० (सि०) अन्नकण।
गोल्ली—स्त्री० (कां०, ऊ०) लुगदी से बनाई गई परात।
गोल्ली—स्त्री० (चं०) गुठली।
गोल्ह—स्त्री० (चं०) कानों की बालियां।
गोशटण—पु० (शि०) मित्र।
गोशटा/टू—पु० (मं०, कु०) सूखा गोबर, उपला।
गोशड़ा—पु० (सि०, सो०) उपला।
गोसर—स्त्री० (कु०) पशुओं के चलने का मार्ग।
गोह—स्त्री० छिपकली जाति का एक जहरीला जंतु।
गोहटू—पु० उपले।
गोहड़—स्त्री० (सि०) मेंढक।
गोहड़—स्त्री० गोशाला।
गोहड़े—पु० (कां०, ऊ०) मक्की की भुनी हुई खीलें।
गोहणा—अ० क्रि० चढ़ना।
गोहणा—स० क्रि० (सि०) मनाना।
गोहर—स्त्री० रास्ता।
गोहरन—स्त्री० पशुशाला।
गोहरी—स्त्री० (कां०) तंग गली।
गोहल—पु० ज्येष्ठ मास के बाईस प्रविष्टे से आषाढ़ मास के पंद्रह दिन तक का समय।
गोहला—पु० चूल्हे का अग्रभाग।
गोहा—पु० गोबर।
गोहा—पु० (कां०) लकड़ी, जिससे धुनकी पर चोट की जाती है।
गौं—पु० गांव।
गौं—स्त्री० (सो०) तालाब की तलछट।
गौं—पु० (कां०, ऊ०, कु०) इच्छा।
गौंइ—स्त्री० (शि०, कु०) कदम।
गौंच—पु० (सो०) गोमूत्र।
गौंचणा—अ० क्रि०, (कु०) गाय द्वारा मूत्र किया जाना।
गौंच्छ—स्त्री० (मं०) गोहत्या।
गौंड—पु० (कु०) गंड व्याधि।
गौंडी—वि० (कु०) आलसी (मनुष्य)।
गौंत्री—स्त्री० (मं०) गौरी तृतीया।
गौंघणी—स्त्री० (चं०) दे० गौणी।
गौ—स्त्री० गाय।
गौ—पु० (सो०) बीज, सब्जी के बीज।
गौइरो—पु० (शि०) बाज़ार।
गौइले—अ० (सि०) साथ।
गौऊंषा—पु० (सि०) नमूना।
गौऊलड़ा—वि० (सि०) आगे।
गौऊला—वि० (चं०) वानराकृति वाला।
गौका—पु० बछड़ा।
गौखा—वि० (शि०) गर्म।
गौगरे—वि० (कु०) अधपकी (फसल)।
गौग्रास—पु० भोजन या पूजा आदि में गाय के लिए रखा गया भाग।
गौचणा—अ० क्रि० (चं०) गुम हो जाना।
गौज—पु० (सि०) दे० गाज।
गौज़—पु० (शि०) गज़।
गौटणो—स० क्रि० (सि०) ढकना।
गौटा—पु० (सि०) पत्थर।
गौठू—पु० (मं०) जंगली बिल्ली।
गौड़—स्त्री० (बि०) एक प्रकार की मछली।
गौड़गू—पु० (कु०) छोटा घड़ा।
गौड़ी—स्त्री० (शि०) छाछ।
गौड़े—स्त्री० (शि०) कुल, वंश।
गौढ़—पु० (शि०) आंगन।
गौण—वि० (सि०) सघन।
गौणनो—स० क्रि० (शि०) प्रश्न लगाना।
गौणा—पु० (सि०, सो०) गहना।
गौणा—स० क्रि० (कां०) विवाह की तिथि निश्चित करना।
गौणी—स्त्री० (चं०) मक्की के साथ उगने वाली बेल।
गौतं—स्त्री० (शि०) गति, अवस्था।
गौत्ता—पु० (शि०) गत्ता।
गौप—स्त्री० (शि०, कु०) गप्प, बात।
गौभण—वि० (कु०) गाभिन।
गौभी—स्त्री० (कु०) भेड़ की बच्ची।
गौभू—पु० (कु०) भेड़ का बच्चा।
गौर—पु० (सि०) मकान, घर।
गौर—स्त्री० देखभाल।
गौरका—वि० (कु०) भारी।
गौरको—वि० (सि०) भारी।
गौरज़—स्त्री० (कु०) आवश्यकता, गर्ज़।

**गौरते**—वि० (शि०) प्रिय।
**गौरम**—वि० (शि०) गर्म।
**गौरमे**—स्त्री० (शि०) उष्णता।
**गौरा**—स्त्री० पार्वती।
**गौल**—पु० (चं०) काले मुंह वाला बंदर।
**गौळ**—पु० (कु०) गला।
**गौळणा**—अ० क्रि० (कु०) गल जाना। पारी हारना।
**गौलत**—वि० (शि०) अनुचित, गलत।
**गौळी**—स्त्री० (सि०) गली।
**गौळी**—स्त्री० (कु०) गिलटी।
**गौळू**—पु० (कु०) संकीर्ण मार्ग।
**गौष्टण**—पु० (शि०) साला, श्यालक।
**गौह**—पु० (कु०) शराब निकालने के लिए बनाया गया चावल का खट्टा मीठा रूप।
**गौहण**—स्त्री० (कु०) गली।
**गौहाणा**—स० क्रि० उतारना।
**गौही**—स्त्री० (कु०) खाई।
**गौहुणा**—अ० क्रि० (कु०) नष्ट होना।
**गौहज़**—पु० (कु०) गज़।
**गौहर**—पु० (कु०) पर्वतीय प्रदेश।
**गौहला**—वि० (कां०) निकम्मा।
**ग्हेरिना**—अ० क्रि० (कु०) सत्य बोलना।
**ग्हेर्ना**—स० क्रि० (कु०) सत्य बोलने हेतु विवश करना।
**ग्यांठा**—वि० (सि०) मोटा (आदमी)।
**ग्याई**—स्त्री० (मं०, कां०) चूल्हे की सीमा जिसके भीतर आग जलती है।
**ग्याठा**—पु० (शि०) कोयला।
**ग्यारदु**—पु० (सो०) घी का पात्र।
**ग्यारटू**—पु० (कां०) छोटा अंगारा।
**ग्यारसुधान**—पु० (शि०) धान की एक किस्म।
**ग्यारा**—वि० ग्यारह।
**ग्यारूआं**—वि० ग्यारहवां।
**ग्याल**—स्त्री० (शि०) गोदी।
**ग्यासण**—दे० गौग्रास।
**ग्रंबरी**—स्त्री० (सि०) दीवार में बनाई गई छोटी अलमारी।
**ग्रट**—पु० जमघट।
**ग्रब्बड़**—पु० (चं०) पशु।
**ग्रब्बु**—वि० (चं०) भद्दा आदमी।
**ग्रमणा**—अ० क्रि० (सि०) मन को न माना।
**ग्रहणा**—वि० ग्रहण से प्रभावित।
**ग्रां**—पु० गांव।
**ग्रांई**—वि० (कु०) ग्रामीण, अपने गांव का।
**ग्रांउज़ी**—वि० (कु०) ग्राम्य।
**ग्राओंजड़**—वि० (मं०) ग्रामीण, ग्राम्य, गांव का।
**ग्राफ**—पु० (शि०) जिराफ।
**ग्राह**—पु० कौर, ग्रास।
**ग्राहणा**—स० क्रि० (कु०) उगाही करना।
**ग्राहणु**—पु० (चं०) देवता का चेला।
**ग्राहिणा**—स० क्रि० (कु०) उगाही किया जाना।
**ग्रिठ**—पु० (चं०, कां०) बालिश्त।
**ग्रिठ-मुठलु**—वि० (चं०) बौना।
**ग्रिन्ह**—स्त्री० (कु०) दुर्गंध।
**ग्रिहा**—स्त्री० (कु०) रेखा।
**ग्रीहा**—स्त्री० (मं०) वह भूमि जिस पर घर बनाया गया हो।
**ग्रेंघड़**—वि० (कु०, कां०) टेढ़ी-मेढ़ी मोटी लकड़ी।
**ग्रेंजका**—पु० (कु०) सींग से मारने की क्रिया।
**ग्रेंहका**—पु० (कु०) गर्जन।
**ग्रेड़**—पु० (सि०, सो०) पशुओं का समूह।
**ग्रेह**—पु० ग्रह।
**ग्रोट**—पु० (चं०, कु०) रोक।
**ग्रोट**—पु० (कां०, ऊ०) गटगट पीने की क्रिया।
**ग्रोटणा**—स० क्रि० (चं०, कु०) रोकना, चारों ओर घेरा डाल कर रोकना।
**ग्रोटणा**—स० क्रि० (सो०) बंद करना।
**ग्रो:**—पु० (सो०) ग्रह।
**ग्रोण**—पु० (शि०, सो०) ग्रहण।
**ग्रोणुना**—अ० क्रि० (सो०) ग्रहण से प्रभावित होना।
**ग्रोह**—पु० (कु०) ग्रह।
**ग्रोहण**—पु० (कु०) ग्रहण।
**ग्लब**—पु० (सि०) भार।
**ग्ळाऊ**—पु० (सो०, बि०) मकड़ी।
**ग्ळाखा**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) कम स्थान।
**ग्ळाखा**—पु० (सो०) खुला बड़ा छेद।
**ग्लाणा**—स्त्री० (सि०) ग्लानि।
**ग्लाणा**—स० क्रि० कहना।
**ग्लाब**—पु० (कां०) गुलाब।
**ग्लावां**—स्त्री० (कां०, ऊ०) हवन सामग्री में प्रयोग होने वाली एक विशेष बेल।
**ग्लास**—पु० (कु०) गिलास।
**ग्ळाहू**—पु० (कु०) मकड़ी।
**ग्लेफ**—पु० (सि०) गिलाफ।
**ग्लोंदो**—स्त्री० (सि०) ग्लानि।
**ग्लोए**—पु० (सि०) दे० गलों।
**ग्लोटू**—पु० (सो०) गाल।
**ग्वाउणो**—स० क्रि० (सि०) खोना।
**ग्वाड़**—स्त्री० (चं०) गोशाला।
**ग्वाणा**—स० क्रि० बिगाड़ना, गंवाना।
**ग्वाळा**—पु० (सि०) टिड्डा। ग्वाला।
**ग्वाळू**—पु० (कां०) छोटी रस्सी।
**ग्हीड़ी**—वि० (चं०) ऊधम मचाने वाला (पशु)।
**ग्होड़**—स्त्री० (चं०) पशुओं की भगदड़।

## घ

घ—देवनागरी वर्णमाला के कवर्ग का चौथा वर्ण। उच्चारण स्थान कंठ।
**घंइडो**—पु० (शि०) गेहूं के आटे को पानी में पकाकर बनाया गया पकवान।
**घंघयारी**—स्त्री० (सि०) काली डोरी।
**घंघराल**—स्त्री० (सि०) घुंघरू।
**घंघरालू**—पु० (कां०) बच्चे द्वारा घुटनों के बल चलने की क्रिया।
**घंघालू**—पु० (कां०) बच्चे द्वारा घुटनों के बल चलने की क्रिया।
**घंघेरी**—स्त्री० तोरई।
**घंघेरी**—स्त्री० (कु०) कद्दू प्रजाति की एक सब्जी।
**घंचाल**—पु० (कां०) गहरा स्थान।
**घंटी**—स्त्री० घंटी।
**घंड**—स्त्री० (मं०) गांठ।
**घंड**—वि० (कां०, ह०) सरल स्वभाव वाली स्त्री।
**घंडयाली**—स्त्री० बड़े आकार की अरबी।
**घंडार**—पु० (चं०) दंत रहित मुख।
**घंहिर/डेद**—पु० (बि०) धान का ढेर।
**घंडी**—स्त्री० (कां०) दांतों का बाहरी भाग।
**घंडी**—स्त्री० पूजा के समय बजाई जाने वाली घंटी।
**घंडु**—पु० (मं०) दुपट्टा।
**घंडू**—पु० गला।
**घंडेर**—स्त्री० (कां०) चींटियों का समूह।
**घंडेर**—स्त्री० (कां०, ऊ०) सात विभिन्न अनाजों का मिश्रण जो चींटियों को डाला जाता है।
**घंडेला**—पु० (कां०, ऊ०) एक काले रंग का जंगली फल।
**घंडैर**—पु० (कां०) गर्म लोहे को हथौड़े से मारने की क्रिया।
**घंडोआ**—पु० (कां०) केंचुआ।
**घंडोली**—स्त्री० तोरई।
**घंडोलू**—पु० (कां०) भिंडी।
**घंढेर**—पु० (कां०) आधे कूटे हुए धान।
**घंतरी**—पु० (मं०) षड़यंत्रकारी।
**घंसु**—पु० (शि०) पीटने का भाव, मुक्का।
**घइण**—पु० (मं०) पशुओं के नीचे बिछाने का घास।
**घई**—पु० (सि०) कीचड़।
**घई**—पु० (चं०) रीछ की तरह का जंगली जानवर।
**घऊण**—पु० (चं०) साग।
**घखणा**—स० क्रि० (चं०) घिसना।
**घगरालू**—पु० (बि०) दे० घंघरालू।
**घगलू**—पु० (बि०) बच्चों की घुटने के बल सरकने की क्रिया।
**घगेलिया**—पु० (मं०) चने का खट्टा।
**घघयाणा**—अ० क्रि० दीनता प्रकट करना।
**घघर**—पु० (चं०) अधिक हानि।
**घघरा**—पु० (चं०) घाघरा।
**घघरी**—स्त्री० छोटा घाघरा।
**घचघचात**—स्त्री० (बि०) व्यर्थ की हंसी।
**घचपच**—स्त्री० हेराफेरी; अस्त-व्यस्त।
**घचरोड़ना**—स० क्रि० (शि०, सि०) बार-बार पूछ कर तंग करना।
**घचींडणा**—स० क्रि० असभ्य ढंग से खाना।
**घचीमड़ा**—वि० (बि०) धोखेबाज।
**घचैनां**—स्त्री० (कां०) ताने।
**घचोल**—पु० गड़बड़।
**घचोळणा**—स० क्रि० पानी को गंदा करना।
**घचोळणा**—अ० क्रि० (बि०) झगड़ा करना।
**घचोल्लण**—वि० (कां०) स्वाद रहित भोजन।
**घच्च**—वि० (चं०) भीगा हुआ। शराब के नशे में धुत्त।
**घट**—पु० (चं०) शिवमाला।
**घट**—वि० कम।
**घटक**—पु० (चं०) एक भाग।
**घटडू**—पु० (सो०) छिपकली की एक जाति।
**घटडोह**—स्त्री० (मं०) छोटी बटलोई।
**घटणा**—अ० क्रि० घटना, कम होना।
**घटणा**—स० क्रि० (चं०, कां०) ढकना, ढक देना।
**घटन्नी**—पु० (चं०, कां०, ऊ०) चूड़ीदार पायजामा।
**घटमह**—स्त्री० (चं०) निराशा।
**घटमाण**—पु० (चं०, ऊ०, कां०) घटने की क्रिया।
**घटा**—पु० (मं०) अभ्रक; पत्थर।
**घटा**—पु० (चं०) अंधकार; गर्द।
**घटाइणा**—स० क्रि० (कु०) घटाया जाना।
**घटाटोप**—पु० घनघोर घटा।
**घटाणा**—स० क्रि० कम करना।
**घटारडू**—पु० (मं०) एक पक्षी विशेष।
**घटारा**—पु० (शि०) पनचक्की का मालिक।
**घटारी**—स्त्री० एक चिड़िया विशेष।
**घटी**—स्त्री० (बि०, ऊ०, कां०) चढ़ाई।
**घटीणा**—अ० क्रि० (चं०) कम होना।
**घटीहणा**—स० क्रि० (चं०) ओढ़ना।
**घटेरना**—स० क्रि० घटाना।
**घटोणा**—अ० क्रि० कुढ़ना, घुटन सी होना, दिल ही दिल में दुःख महसूस करना।
**घटोल**—स्त्री० बच्चे को दी जाने वाली घुट्टी।
**घटोरूमटोरू**—वि० (चं०) गोलमटोल।
**घड़काउणा**—स० क्रि० (शि०) डांटना।
**घड़णा**—स० क्रि० बनाना, रूप देना।
**घड़ना**—स० क्रि० 'भटूरु' बनाना।
**घड़मेज**—पु० (चं०) ताश का एक खेल।
**घड़याल**—पु० बड़ी घंटी।
**घड़याली**—स्त्री० घड़ा रखने के लिए बनाया गया लकड़ी का ढांचा।
**घड़ाई**—स्त्री० घड़ने का पारिश्रमिक, घड़ने की क्रिया।
**घड़ाऊ**—पु० (सि०) घास का ढेर।

**घड़ाकणा**—अ० क्रि० (कां०, ह०, ऊ०) खर्राटे लेना।
**घड़ाका**—पु० जोर का धमाका।
**घड़िंब**—वि० मरा हुआ।
**घड़ीउन**—पु० (शि०) समूह।
**घड़ीघड़ी**—अ० बार-बार।
**घड़ीमसी**—स्त्री० (सि०, शि०) भीड़, धक्का-मुक्की।
**घड़ीमुड़ी**—अ० (कां०, ऊ०) बार-बार।
**घड़ीसणा**—स० क्रि० रगड़ना।
**घड़ूसणा**—स० क्रि० (शि०) पीटना।
**घड़ेपणा**—स० क्रि० (कु०) घेरना।
**घड़ेया**—पु० (कां०, ह०, ऊ०) मक्की के घास का ढेर।
**घड़ेरना**—स० क्रि० (कु०) भेद लेना।
**घड़ेर्ना**—पु० (कु०) 'काठू' या 'घांघड़ी' का घास।
**घड़ेला**—पु० (का०, ऊ०) गांठों वाली लकड़ी।
**घड़ेलू/ढेलू**—पु० (सि०) टखना।
**घड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) दही को बिलोने के लिए घड़े में डालना।
**घड़ैण**—स्त्री० (चं०) घड़ा रखने का स्थान।
**घड़ैतर**—पु० गढ़े हुए पत्थर।
**घड़ैना**—स० क्रि० (सि०) पूजा की क्रिया में घड़े के ऊपर थाली रख कर बजाना।
**घड़ोटी**—स्त्री० (कां०) बिना तला हुआ 'भटूरु'।
**घडोड़टी**—स्त्री० (कु०) दही मथने का बर्तन।
**घड़ोणा**—स० क्रि० (कां०) छीना-झपटी करना।
**घड़ोपणा**—स० क्रि० शीघ्रता से पीना।
**घड़ोला**—पु० बड़ा घड़ा।
**घड़ोली**—स्त्री० छोटा घड़ा।
**घड़ोलु**—पु० (सि०) छोटा घड़ा।
**घड़ोलो**—पु० (मं०) दहीं मथने का बर्तन।
**घड़ौंजी**—स्त्री० (कां०, ह०) दे० घड़याली।
**घड़ौत**—स्त्री० (चं०) शहद, चीनी या गुड़ जो नवजात शिशु को दिया जाता है।
**घण**—पु० (कां०) पशुओं का समूह।
**घण**—पु० लोहा कूटने या पत्थर तोड़ने का बड़ा हथौड़ा।
**घणकूट्टू**—पु० (मं०) लोहे का बना औज़ार जो चट्टानों पर छेद करने के लिए प्रयुक्त होता है।
**घणचक्कर**—वि० (कां०, चं०) मूर्ख।
**घणचाल**—पु० (बि०) ग्वालों का मुखिया।
**घणचोपा**—पु० (मं०) खूबानी की गुठलियों की चटनी।
**घणना**—स० क्रि० (चं०) घड़ना।
**घणमार**—स्त्री० (कां०, ऊ०) 'घण' की मार।
**घणयार**—स्त्री० (चं०) 'घण' की मार।
**घणा**—वि० (सि०) घना।
**घणा**—पु० (कां०, ऊ०) गेहूं के बीच उगने वाला हरा घास।
**घणा**—पु० (सि०, शि०) खेतों की दीवार।
**घणाटा**—पु० (मं०) अस्पष्ट आवाज़।
**घणासा**—पु० (कां०) बकरा काटने का 'दराट'।
**घणी**—पु० (कां०) कोल्हू में डाली गई तिलहन की एक मात्रा।
**घणेदो**—वि० (सि०) घनघोर, नाराज़।
**घणेर**—पु० (कां०) आधे कूटे हुए चावल।
**घणैठो**—स्त्री० (मं०) पशुशाला के द्वार को बंद करने के लिए लगी लकड़ी।
**घणैर**—स्त्री० (चं०) दे० घणमार।
**घणैसर**—स्त्री० (कां०) लोहा कूटने का लोहे का बड़ा टुकड़ा।
**घणो**—वि० (शि०) घना।
**घणोत्थर**—पु० (कां०, ऊ०) भूमि में गाड़ा गया पत्थर।
**घणोर**—स्त्री० (बि०) दे० घणमार।
**घत्थी**—स्त्री० (चं०) कांच की गोली खेलने के लिए ज़मीन पर ऐड़ी के बल घूम कर बनाया गया गोल व छोटा सा गड्ढा।
**घनका**—पु० (ह०) हींग।
**घनाकड़ी**—स्त्री० (बि०) छिपकली।
**घनाड़े**—पु० (बि०) गिरे मकान की दीवारें।
**घनियार**—पु० (कां०, ऊ०) पत्थर की स्लेट की खान।
**घनीरा**—पु० एक विशेष पौधा।
**घनैंकड़ी**—स्त्री० (मं०) छिपकली।
**घनोटू**—पु० (मं०) मुंह से बजाया जाने वाला पहाड़ी वाद्ययंत्र।
**घनोणा**—वि० (चं०) भयानक, दर्दनाक।
**घनौआरी**—स्त्री० (सि०) विवाह में गीत गाने वाली स्त्री।
**घनौई**—स्त्री० (कु०) हथेली।
**घपड़ना**—स० क्रि० (चं०) पकड़ना।
**घपला**—पु० हेरफेर।
**घपीड़ना**—स० क्रि० (बि०, चं०) कसना।
**घप्पड़चौथ**—स्त्री० गड़बड़।
**घबराऊणो**—अ० क्रि० (शि०) घबराना।
**घमगला**—पु० (बि०, कां०) बंदूक का ज़ोर का शब्द।
**घमटाहरी**—स्त्री० (चं०) एक चिड़िया।
**घमरोल**—पु० (कां०, ऊ०) पेट में पड़ने वाला मरोड़।
**घमरोल**—पु० (शि०, सि०) दुःख।
**घमसाण**—पु० अस्त-व्यस्त वस्तुओं का समूह, गड़बड़, भीड़, बेतरतीब वस्तुएं।
**घमसाण**—पु० (सि०) मृत्यु के समय बजने वाला एक ताल।
**घमाऊणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) घुमाना।
**घमाका**—पु० (सि०) घूंसा।
**घमाचौखड़**—स्त्री० (मं०) शोर।
**घमाट**—पु० (कां०, ऊ०) शोर।
**घमार**—पु० (कां०, बि०, ऊ०) कुम्हार।
**घमारू**—पु० (बि०, कां०, ऊ०) एक जीव विशेष, बरसात में निकलने वाला लाल रंग का कीड़ा।
**घमीरड़ी**—स्त्री० (कां०, ऊ०) संतरा प्रजाति का खट्टा फल।
**घमीरी**—स्त्री० (चं०) दे० घमीरड़ी।
**घमेरना**—स० क्रि० (कु०) घुमाना।
**घमेवाल**—पु० (कु०) देवता का छोटा मंदिर।
**घमोणा**—अ० क्रि० (कां०) विदाई के समय कन्या का रोना।
**घमोर**—पु० (कु०) गुमटा, चोट लगने से उभरा हुआ मांस।
**घमयाणा**—स० क्रि० (कां०) अर्चना करना। घुमाना।

**घयणो**—स्त्री० (सो०) घास का स्थान, चरागाह।
**घयाना**—पु० जलती लकड़ियों का समूह, अलाव।
**घयालु**—पु० घी रखने का मिट्टी का पात्र।
**घयू**—पु० (मं०) घृत।
**घयोणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) डट कर खाना देना।
**घयोर**—पु० (मं०) मैदे, घी और चीनी का बना पदार्थ।
**घर**—पु० (कां०) मधुमक्खियों के छत्ते में बने छेद। गृह।
**घर**—स्त्री० (कां०, ऊ०) राख, भस्म।
**घरकुदाल**—वि० (कां०) विश्वास घातक, घर को उजाड़ने वाला।
**घरकोणा**—अ० क्रि० (ह०) नाराज़गी प्रकट करना।
**घरगड़**—पु० (मं०) खंडहर।
**घरघोटणी**—स्त्री० (कां०) लकड़ी के जोड़ को बराबर करने का उपकरण।
**घरघोणा**—अ० क्रि० (कां०) उमड़ना।
**घरचिड़ू**—पु० (मं०) चिड़िया विशेष।
**घरची**—स्त्री० (शि०, सि०) पैतृक संपत्ति।
**घरचोड़ू**—वि० (सि०) शरारती।
**घरट**—पु० (शि०) पनचक्की, घराट।
**घरटाई**—वि० (शि०, सि०) अनाज को पीसने के लिए घराट ले जाने वाला।
**घरटी**—पु० (मं०) घराटी, पनचक्की का स्वामी।
**घरटू**—पु० (सि०) छोटा मकान।
**घरड़याणा**—अ० क्रि० (मं०) रेंगना।
**घरड़ा**—पु० (कां०, ऊ०) घिरनी।
**घरतसौंवा**—पु० (मं०) एक मंज़िला मकान।
**घरतु**—वि० (शि०) घर का, घर में ही रहने वाला।
**घरथ**—स्त्री० (मं०) घर के इर्द-गिर्द की भूमि।
**घरथली**—स्त्री० (कां०, ऊ०) घड़ा रखने की स्थली।
**घरथीण**—पु० (मं०) वंश का स्वामी।
**घरथो**—पु० (मं०) घरेलू।
**घरदरोहा**—वि० (शि०, सि०) घर को बिगाड़ने वाला।
**घरदा**—पु० (बि०) सूर्य के अस्त होने की स्थिति।
**घरपाहरी**—पु० (चं०) गृहरक्षक।
**घरपुदटु**—वि० घर को उजाड़ने वाला।
**घरपेशी**—स्त्री० (कु०) गृह प्रवेश के अवसर पर किया जाने वाला सहभोज।
**घरबारी**—स्त्री० गृहस्थी।
**घरमाहिणा**—अ० क्रि० (कु०) घबराना।
**घरयाना**—पु० (मं०, कां०) गृहस्थी से संबंधित सामान।
**घरयाहणें**—पु० (मं०) वंश का मूल स्वामी।
**घरवाड़ना**—अ० क्रि० (बि०) खर्राटे लेना।
**घरवाला**—पु० पति।
**घरवाली**—स्त्री० पत्नी।
**घरशेंठा**—पु० (मं०) क्रूर प्रवृत्ति का देवता।
**घरसाठण**—स्त्री० (मं०) फिसलने वाली जगह।
**घरसू**—वि० (सि०, कां०) घर में ही रहने वाला।
**घरहुणो**—पु० (मं०) घर का मालिक।
**घराआळा**—पु० पति: घर का कोई व्यक्ति।
**घराउ**—पु० (शि०) छोटी कड़ाही।
**घराउआ**—वि० (कु०)ग्रहण किया गया।
**घराउणा**—पु० (कु०) घर का व्यक्ति।
**घराकड़ा**—पु० खंडहर, सुनसान घर।
**घराका**—पु० (मं०) पशुओं की खांसी।
**घराखड़ा**—पु० (ह०) घर के पास की भूमि।
**घराखड़ा**—पु० (सि०) दे० घराकड़ा।
**घराछणा**—अ० क्रि० (सि०) वर्षा का बंद होना।
**घराट**—पु० (चं०) शिलापट्ट।
**घराट**—पु० पनचक्की।
**घराटी**—पु० पनचक्की का मालिक।
**घराटी**—पु० (कु०) दे० घरटाई।
**घराणा**—पु० मकान की खाली जगह।
**घराळ**—स्त्री० (कां०, ऊ०) गोशाला।
**घराश/च**—पु० (सि०) उजड़ा मकान।
**घराशणी**—स्त्री० दे० घरासणी।
**घराशो**—पु० (शि०) देवी-देवता को बैठाने का योग्य घर।
**घरासणी**—स्त्री० नव वधू का गृह प्रवेश संस्कार। नव गृह-प्रवेश।
**घराहुण**—पु० (चं०) दे० घराकड़ा।
**घरिंघणा**—अ० क्रि० घुट-घुट कर रोना।
**घरिंड**—वि० (कां०, ऊ०) महामूर्ख।
**घरिठ**—पु० (चं०) दे० गिट्ठ।
**घरिया**—पु० (शि०) दे० घरवाला।
**घरिशड़ना**—अ० क्रि० (शि०) फिसलना।
**घरींजणा**—अ० क्रि० (कु०) बैल का क्रोध में हुंकारना।
**घरीट**—स्त्री० (कां०) रेखा।
**घरीटणा**—स० क्रि० (कां०, ऊ०) रेखा लगाना, रगड़ना।
**घरीड़**—स्त्री० (मं०) द्वारशाखा।
**घरीड़**—स्त्री० (कां०, ह०) शरीर में लगी रगड़।
**घरीहुण**—स्त्री० (शि०, सि०) बदबू, दुर्गंध।
**घरीहुणा**—अ० क्रि० (चं०) अस्त होना।
**घरीहुणा**—स० क्रि० (चं०) बर्तन से अवशिष्ट भोजन निकालना।
**घरूंगणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०) गरजना।
**घरूंगा**—पु० हिंसक पशुओं का गर्जन।
**घरू**—पु० घर की वस्तु।
**घरू**—वि० घरेलू।
**घरूड़िया**—स्त्री० (कां०) खर्राटे।
**घरूढ**—स्त्री० एक दम से किसी चीज़ को पाने की क्रिया।
**घरूशका**—पु० (सि०) पक्की गांठ।
**घरेड़ना**—स० क्रि० (चं०) बर्तन में जले हुए पदार्थ को खुरचना।
**घरेंड़ा**—पु० (कां०) खंडहर, घर का नाश।
**घरेढी**—स्त्री० (चं०) घास काटने की जगह।
**घरेडू/ड़ी**—वि० (चं०, कां०) घर में खूंटे पर पलने वाला पशु।
**घरेणा**—अ० क्रि० (सि०) अस्त होना।
**घरेणा**—स० क्रि० (कु०) लुढ़काना।
**घरेत**—पु० वंशज।
**घरेत**—पु० पड़ोसी।

**घरेर**—स्त्री० (शि०) रेखा।
**घरेरना**—स० क्रि० (शि०) घूर कर देखना।
**घरेत**—पु० दे० घरेत।
**घरोंजड़ी**—स्त्री० (कां०, ऊ०) घर में ही रहने वाली औरत।
**घरोड़**—स्त्री० खरोंच।
**घरोड़ना**—स० क्रि० खरोंचना, कुरेदना।
**घरोड़ी/ड़ू**—स्त्री० दूध गर्म करने के पात्र में लगी हुई मलाई।
**घरोणा**—अ० क्रि० अस्त होना।
**घरोलुआ**—पु० (कां०) पानी या पसीने की धारा।
**घळणा**—स० क्रि० (कां०) भेजना।
**घळणा**—अ० क्रि० पिघलना।
**घळणो**—अ० क्रि० (शि०) पिघलना।
**घलना**—अ० क्रि० (चं०) मल्ल युद्ध करना।
**घळाटा**—पु० (सि०, चं०) पहलवान।
**घळाटा**—वि० (कां०, ऊ०) झगड़ालू।
**घळाटी**—स्त्री० (कां०) बेहूदा शोर, लड़ाई।
**घलान**—स्त्री० (मं०) किसी वस्तु को आग पर रखने के लिए प्रयुक्त लोहे का तिकोना पात्र।
**घलीहणा**—अ० क्रि० (चं०) दे० घलना।
**घळेंओ**—स्त्री० (शि०) 'किरड़ा' में लगी रस्सी।
**घलेटणा**—स० क्रि० (कु०) मनाना।
**घलेथड़ी**—स्त्री० (कां०, ऊ०) दे० घड़याली।
**घलेपड़ना**—स० क्रि० (कु०) पीना।
**घलेरना**—स० क्रि० बचत करना।
**घलोटी**—स्त्री० (चं०) फर्श को समतल बनाने के लिए प्रयुक्त पत्थर का गोल टुकड़ा।
**घलौःणा**—स० क्रि० (सि०) दो व्यक्तियों को लड़ाना, कुश्ती करवाना।
**घल्यांदर**—पु० (कां०) लंगूर।
**घल्हीठुणा**—अ० क्रि० (कु०) गले की रस्सी का तंग होना।
**घवटू**—स्त्री० (सो०) दे० दौंटु।
**घवाड़ना**—स० क्रि० खोलना।
**घवाड़ना**—स० क्रि० (सि०) पशुओं को गोशाला से बाहर करना।
**घशणा**—स० क्रि० (मं०) घिसना, मालिश करना।
**घशिणा**—स० क्रि० (मं०) रगड़ते हुए खींचना।
**घशीटणा**—स० क्रि० (कु०) घसीटना, घसीट कर ले जाना।
**घशीटिणा**—अ० क्रि० (कु०) घिसटना।
**घशुवो**—वि० (शि०) घिसा हुआ।
**घशो**—वि० (मं०) थोड़ा सा खुला हुआ।
**घस**—अ० (कु०) शीघ्रता दर्शाने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**घसणा**—स० क्रि० घिसना, रगड़ना।
**घसणा**—स० क्रि० मारना, पीटना।
**घसराउणा**—स० क्रि० (सि०, शि०) आगे ले जाना।
**घसराऊ**—पु० (शि०) पत्थर।
**घसराऊटे**—वि० (शि०) पथरीला।
**घसराट**—स्त्री० रगड़।
**घसराळा**—पु० (सो०) बड़ा कार्य।
**घसरावणा**—स० क्रि० (सो०) घसीटना।
**घसरेलणा**—स० क्रि० (कु०) मुक्के से मारना।
**घसरेलिणा**—अ० क्रि० (कु०) मुक्के पड़ना।
**घसारा/रो**—पु० (शि०) घास काटने वाला।
**घसारे**—स्त्री० (शि०) घास लाने वाली।
**घसुनणा**—स० क्रि० मुक्के मारना।
**घसुन्न**—पु० मुक्का।
**घसूत**—स्त्री० (कां०) फिसलन।
**घसूतड़ी**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) ऊंचा लंबा पत्थर जिस पर बैठ कर बच्चे फिसलते हैं।
**घसूलणे**—पु० (सि०) घास काटने के लिए एकत्रित जन।
**घसेवणा**—स० क्रि० (सो०) पैर से दबाना।
**घसोड़**—पु० (शि०) घास का ढेर।
**घसोड़ना**—स० क्रि० अंदर डालना।
**घसोणा**—अ० क्रि० (कां०) घिसना।
**घसोणा**—स० क्रि० (कां०) मेहनत करना। घिसा जाना।
**घस्टौना**—अ० क्रि० (कां०) रगड़ कर चलना।
**घस्सड़**—वि० घिसा हुआ, अनुभवी।
**घस्सा**—पु० चोट, मार।
**घहरदा**—वि० (मं०) अस्ताचल की ओर।
**घांऊरिणो**—अ० क्रि० (शि०) आकाश में बादल आना।
**घांक्ष**—पु० (शि०) मिट्टी में उत्पन्न होने वाला जहरीला फल।
**घांघड़ी**—स्त्री० (कु०) धान की प्रजाति का अन्न विशेष जो खाने में कुछ कड़वा होता है।
**घांघस**—पु० (मं०) आलू प्रजाति का कंद।
**घांटा**—पु० (शि०) घंटा।
**घांडु**—पु० (शि०, सि०) गल शुंडिका, जिह्वा का पीछे वाला भाग।
**घांडे**—स्त्री० (शि०, मं०) पूजा के समय बजाने की घंटी।
**घांदी**—अ० (शि०) डट कर, पेट भर कर।
**घांफ**—पु० (कु०) सामान रखने के लिए दीवार में बनाया सुराख या बड़ा छेद।
**घांश**—पु० (मं०) पकवान विशेष।
**घाःडू**—पु० (सि०) बकरे की विशेष जाति जिनके शरीर में ऊन कम होती है।
**घाःणा**—स० क्रि० (सो०, शि०) जान से मार देना।
**घा**—पु० (चं०) जख्म।
**घा**—पु० (शि०) घास।
**घाअट**—पु० (सि०) दर्रा।
**घाइणी**—स्त्री० (सो०, सि०) दे० घासनी।
**घाइणा**—अ० क्रि० (कु०) गर्व करना।
**घाइल**—वि० (कु०) घायल।
**घाई**—वि० (कां०) घसियारा, घास खोदने वाला।
**घाउ**—पु० (कु०) घाव।
**घाउओ**—वि० (शि०) बहुत क्रुद्ध।
**घाउगी**—स्त्री० (कु०) दुश्मनी।
**घाओ**—पु० जख्म, घाव।
**घाख**—स्त्री० (चं०) घिसावट।
**घागरो**—पु० (शि०) लहंगा, घाघरा।

**घाघरे/रो**—पु० (कु०) देवता के कपड़े।
**घाट**—पु० (कु०) देवता का सामान बनाने का स्थान, मंदिर में विशेष कार्य।
**घाट**—पु० स्थान, नदी या देव मंदिर के पास स्नान करने का स्थान, नावों के चलने का स्थान।
**घाट**—पु० (चं०) डोली उठाने वाले।
**घाट**—पु० काम करने का तरीका।
**घाट**—पु० (चं०) आकृति।
**घाटला**—वि० (कां०, बि०) सुंदर बनावट वाला।
**घाटा**—पु० हानि।
**घाटानौहुड़ा**—पु० (कु०) कमी, न्यूनता।
**घाटी**—स्त्री० (शि०) चढ़ाई।
**घाटीऔखी**—स्त्री० (कु०) अर्थ संकट, कमी, कष्ट।
**घाटो**—वि० (शि०) तंग, संकीर्ण।
**घाठी/ठौ**—वि० (कु०) तंग, संकीर्ण, कसा हुआ।
**घाड़**—स्त्री० (कां०) मार।
**घाड़**—स्त्री० (कु०, च०) काश्तकार के साथ अनाज का आधा-आधा भाग।
**घाड़ा**—पु० (चं०) इकट्ठा घास।
**घाड़ा**—पु० (कां०) घास रखने का स्थान।
**घाड़ा**—पु० (कां०) सपनों का महल।
**घाड़ा**—पु० (सि०) एक राजपूत कुल जो किसी दूसरे राजपूत कुल का कभी आश्रित रहा हो।
**घाण**—स्त्री० (कु०) भेड़-बकरियों का एक जून का घास।
**घाण**—स्त्री० अनाज की मंडाई या कुटाई करती बार डाली गई एक मात्रा।
**घाण**—स्त्री० (सि०, बि०) दे० घासनी।
**घाण**—पु० (चं०) अधिक मात्रा में पकाया भोजन।
**घाणना**—स० क्रि० (कु०) अनाज को घराट के ऊपर बनी टोकरी में डालना।
**घाणना**—स० क्रि० (कु०) भेड़ बकरियों को घास डालना।
**घाणा**—वि० (सि०) संतुष्ट।
**घाणिना**—अ० क्रि० (कु०) एक जगह इकट्ठा होना।
**घाणी**—स्त्री० कोल्हू में तेल निकालने के लिए एक बार डाली तिल या सरसों की मात्रा।
**घाणी**—स्त्री० ऊखल में कूटे जाने वाले अनाज की डाली एक बार की मात्रा।
**घात**—स्त्री० (कां०) एक बार का बोझ, वस्तु को छोड़ने का एक फेरा।
**घात**—स्त्री० ताक।
**घाती**—वि० (कु०) बेईमान, ताक में बैठा हुआ।
**घाम**—पु० (सि०, कु०) गर्मी।
**घायण**—स्त्री० (सो०) दे० घासनी।
**घायेण**—स्त्री० (सि०) दे० घासनी।
**घार**—पु० (सि०) चमड़ा काटने का औज़ार।
**घार**—पु० (कु०) पालकी उठाने वाले या देवता उठाने वाले कहार।
**घारठी**—पु० (कु०) घराट पर काम करने वाला।
**घारळा**—पु० (शि०, सि०) मसूर प्रजाति की एक दाल।
**घारा**—पु० (कां०, शि०) दोनों ओर से ऊंचे पर्वतों के बीच तेज़ बहने वाला पानी।
**घारा**—पु० (कां०) धब्बा, निशान।
**घारी**—स्त्री० (सि०) घास का एक तिनका; टहनी।
**घारीघूप**—पु० (मं०) गाय का दूध, घी देवता को चढ़ाने की क्रिया।
**घाळ**—स्त्री० नदी में बहा कर ले जाने के लिए डाले गए शहतीरों का समूह।
**घालण**—स्त्री० (शि०) घर से बाहर निकल कर रहने का भाव।
**घालणा**—स० क्रि० (सि०) पिघलाना।
**घाळणा**—स० क्रि० (कु०) कष्ट उठाना।
**घाळना**—स० क्रि० मुसीबत के समय सहायता देना।
**घाला**—पु० (चं०) ऐसा स्थान जहां घास अच्छा और अधिक पैदा होता है।
**घालिणा**—स० क्रि० (कु०) कष्ट उठाया जाना।
**घाळी**—वि० (कु०) कष्ट उठाने वाला।
**घालु**—पु० (मं०) 'घाळ' का काम करने वाला।
**घाळो**—पु० (सि०) जंगल।
**घावा**—पु० (मं०) झाड़ी विशेष जिसके फूल औषधि के काम आते हैं।
**घाशा/सा**—वि० ऐसा व्यक्ति जिसके गले से स्पष्ट आवाज़ न निकले।
**घास**—स्त्री० (कां०) रगड़।
**घासण/णे**—स्त्री० (सि०) दे० घासनी।
**घासनी**—स्त्री० पहाड़ की तलहटी में या गांव से दूर खाली क्षेत्र जहां केवल घास उगता है और जिस पर घास काटने के लिए व्यक्ति विशेष का अधिकार होता है।
**घासी**—वि० (शि०, सि०) घास काटने वाला।
**घासीपासी**—स्त्री० (कु०) सेवा।
**घाह**—पु० (कु०) घास।
**घाहण**—वि० (मं०, कु०) घास बेचने वाली।
**घाहली**—स्त्री० (चं०) चरागाह में सामूहिक रूप में घास काटने की क्रिया जिसमें सहयोगियों को मात्र भोजन दिया जाता है।
**घाहिण**—स्त्री० (कु०) दे० घासनी।
**घाही**—पु० (कु०, चं०) रीछ, भालू।
**घिंघड़ी**—स्त्री० (चं०) घी रखने का मिट्टी का पात्र।
**घिंघारी**—स्त्री० (मं०, कां०) छोटे आकार का कद्दू।
**घिंच्चड़**—स्त्री० (शि०) आंखों में उत्पन्न होने वाला मैल, दूषि।
**घि:ढ**—स्त्री० (कु०) पंक्ति।
**घिऊ**—पु० घी।
**घिऊकमोड़ी**—स्त्री० (कु०, कां०) लाल चींटी।
**घिऊंगढोली**—स्त्री० घीया तोरी, रामतोरी।
**घिऊबड़ाल**—पु० (शि०) एक प्रकार का जंगली घास।
**घिऊरा**—पु० (सि०) बिल्कुल छोटी मछली जो कि खड्ड में पाई जाती है।

**घिओ**—पु० दे० घिऊ।
**घिघाघिचा**—स्त्री० (कु०) घिचपिच।
**घिच्चड़**—स्त्री० (कां०, ऊ०) दे० घिंच्चड़।
**घिजणो**—स० क्रि० (शि०) कुचलना।
**घिटणा**—पु० (सि०) दूध के बर्तन के लिए बांस का बना ढक्कन।
**घिटणा**—स० क्रि० (कु०) धूनी देना।
**घिपणा**—अ० क्रि० (सि०) क्रोधित होना।
**घिमी**—स्त्री० (शि०) राजमाष की छोटी किस्म।
**घिम्म**—स्त्री० (कु०) मुक्के की ध्वनि, दूर से भारी पत्थर गिरने पर निकली ध्वनि।
**घिम्मीघिम्मी**—स्त्री० (कु०) मुक्केबाज़ी।
**घियांई**—स्त्री० (कु०) झाड़ी में लगे लाल रंग के जंगली फल जो खाने में खट्टे-मीठे होते हैं।
**घियाना**—पु० (कु०, सि०) लकड़ियों का जलता बड़ा ढेर, अलाव।
**घियानी**—स्त्री० (शि०) घी रखने का बर्तन।
**घियो**—पु० (चं०) घीया।
**घिरड़ा**—पु० (बि०) हुक्के की डंडी जिस पर चिलम रखी जाती है।
**घिरड़ी/णी**—स्त्री० (कां०, ह०, ऊ०) कुएं से पानी निकालने की फिरकी।
**घिरड़े**—स्त्री० (शि०) बांस से बनी एक टोकरी।
**घिरढ़णा**—अ० क्रि० (मं०) लंबे समय तक बीमार पड़ना।
**घिरना**—अ० क्रि० हटना, मुड़ना।
**घिरना**—अ० क्रि० (कु०) बैलों या मेढ़ों का लड़ने की तैयारी करना।
**घिरना-फिरना**—अ० क्रि० इधर-उधर जाना।
**घिरी-फिरि**—अ० दोबारा, बार-बार।
**घिलीणो**—अ० क्रि० (शि०) नखरे करना।
**घिल्ला**—पु० (सि०) जंगली बकरा।
**घिवडी**—स्त्री० (सि०) चींटी।
**घिशड़ना**—अ० क्रि० (कु०) घसिटना।
**घिशड़िना**—स० क्रि० (कु०) घसीटे मारना।
**घिशणा**—स० क्रि० घिसना।
**घिशणी**—स्त्री० (कु०) ढलानदार और नर्म पत्थर जिस पर बच्चे फिसलते हैं।
**घिशणो**—स० क्रि० (शि०) घिसना।
**घिःशिणा**—अ० क्रि० (कु०) घिस जाना।
**घिशोला**—अ० क्रि० (शि०) दिखना।
**घिसकणा**—अ० क्रि० (चं०) खिसकना।
**घिसणा**—स० क्रि० (चं०) घिसना।
**घिसरणो**—अ० क्रि० (सि०) फिसलना।
**घिसराउणो**—अ० क्रि० (सि०) फिसलते जाना।
**घिसरी**—स्त्री० (शि०) फिसलने वाली जगह।
**घिसारणो**—अ० क्रि० (शि०) सरकते हुए चलना।
**घिसेओण**—स्त्री० (मं०) मरे पशु को उठाने का पारिश्रमिक।
**घींगा**—पु० (कां०) पतला हलवा।
**घींघा**—पु० (कां०) विवाह के दूसरे दिन का भोजन।
**घींड**—पु० (सि०) चावलों के साथ किसी अन्य अन्न के घोल को पकाने की क्रिया।
**घींड**—पु० (सो०) हलवे जैसा मीठा पदार्थ जिसे घी के साथ खाया जाता है।
**घीउआं**—स्त्री० चमड़ी से चिपकी रहने वाली जुएं।
**घीट**—पु० (कु०) धूनी।
**घीटिणा**—अ० क्रि० (कु०) धुएं आदि में दम घुट जाना।
**घीड़िया**—पु० (सि०) घी का खरीददार।
**घीण**—स्त्री० (शि०, सि०) दया।
**घीण**—पु० (मं०) गले मिलने का भाव।
**घीण**—पु० (कु०) चक्की से उड़ रहा आटा।
**घीणे**—स्त्री० (सि०) हठ, ज़िद।
**घीयड़**—पु० (सि०) घी रखने का बड़ा बर्तन।
**घीयालू**—पु० (सि०) घी बांटने का एक बर्तन।
**घीरडो**—पु० (शि०) बांस से बना बड़ा टोकरा।
**घीरना**—अ० क्रि० (कु०) लुढ़कना।
**घीरा**—पु० (सि०) धीरे-धीरे कमजोर होने का भाव।
**घीला**—पु० (सि०) दे० किरड़ा।
**घीली**—स्त्री० (सि०) अनाज रखने का बांस का बना पात्र।
**घीश/शो**—स्त्री० (सि०) लकीर, रेखा।
**घीशण**—स्त्री० (कु०) दे० घिशणी।
**घीसी**—स्त्री० (कां०, मं०, ऊ०) चेहरे पर लगा काला निशान।
**घीसी**—स्त्री० (कां०) क्षमा।
**घुंइयों**—वि० (शि०) कुनकुना।
**घुंगट**—पु० (सि०, ऊ०) घूंघट।
**घुंगरू**—पु० घुंघरू।
**घुंगा**—वि० (सो०) कम आवाज वाला।
**घुंगाल**—पु० (कां०, ऊ०) पशुओं के गले में चमड़े के पट्टे से लगे घुंघरू।
**घुंघड़े**—वि० (शि०) घुंघराले।
**घुंघणा**—अ० क्रि० (चं०, कु०) भौंकना।
**घुंघणी**—स्त्री० (चं०) मक्की या अन्य अन्न को उबाल कर नमक के साथ मिला कर खाया जाने वाला भोजन।
**घुंघर**—पु० (मं०) रोशनदान।
**घुंजा**—पु० (सि०) 'लोइया' की जेब।
**घुंड**—पु० घूंघट।
**घुंडा**—वि० चालाक, बदमाश, चतुर।
**घुंडी**—स्त्री० धागे की गांठ।
**घुंडी**—स्त्री० गले में उभरा हुआ स्थान जिसे दबाने पर मृत्यु हो सकती है।
**घुंडी**—स्त्री० (कु०) घंटी जो विशेष कर देवता के **'गूर'** के पास होती है।
**घुंडी/डे**—स्त्री० (शि०, सि०) गुड़िया।
**घुंडी**—स्त्री० उलझन।
**घुंडी**—स्त्री० (कां०) बटन।
**घुंडीमुंडी**—अ० (कु०) सिर से पांव तक।
**घुंडू**—पु० (शि०) घटना।

**घुंडू**—पु० (कु०, मं०) दुपट्टा।
**घुंदड़**—वि० (कां०) अधिकतर चुप रहने वाला।
**घुंरड़ी**—स्त्री० (चं०) खर्राटे।
**घुंसणा**—स० क्रि० (सो०) पीटना।
**घुआट**—पु० (कां०) पक्षी विशेष जो नदी के किनारे रहता है।
**घुआड़ना**—स० क्रि० (कां०, ह०, कु०) खोलना।
**घुआड़ा**—पु० (कां०) शंकु आकार में सुरक्षित रखा सूखा घास।
**घुआड़ाबाड़ा**—वि० (कु०) खुला।
**घुआड़िना**—स० क्रि० (कु०, मं०) खोला जाना।
**घुआणी**—स्त्री० (सि०) जच्चा को दिया जाने वाला आहार।
**घुआर**—स्त्री० (चं०, कां०) पहली बार की गई जमीन की जुताई।
**घुआरना**—स० क्रि० (चं०, कां०) खेत में पहली बार हल चलाना।
**घुआळी**—वि० (कु०) देर से बीजी हुई (फसल)।
**घुआहबिल्ला**—पु० (चं०) वन बिलाव, जंगली बिलाव।
**घुईरना**—स० क्रि० (चं०) उड़ेलना।
**घुगड़ी**—स्त्री० पीठ पर उठाने की क्रिया।
**घुगता**—वि० (कु०) मूर्ख, भद्दा।
**घुगती**—स्त्री० (कु०, शि०) एक चिड़िया, घुग्घी।
**घुग्गू**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) कबूतर प्रजाति का छोटा पक्षी।
**घुगगणा**—अ० क्रि० (शि०) भौंकना।
**घुग्गू**—पु० (कां०) कान के नीचे होने वाली बीमारी।
**घुग्घी**—स्त्री० एक चिड़िया का नाम।
**घुघती**—स्त्री० (सो०, कु०) पनचक्की के ऊपर बनी हुई लकड़ी की पक्षी आकृति जिससे घराट में अनाज गिरता है।
**घुघते**—स्त्री० (शि०) दे० घुगती।
**घुघला**—पु० (कु०) ऊंची टोपी।
**घुघु**—पु० (कु०) कबूतर।
**घुजूड़**—पु० (चं०) झाग।
**घुझाड़ना**—अ० क्रि० (कु०) खौलना।
**घुटड़े**—पु० (शि०) घुटना।
**घुटणा**—स० क्रि० दबाना, अच्छी तरह से पीसना।
**घुटणा**—अ० क्रि० (कु०) सांस आदि घुटना, दम घुटना।
**घुटणा**—स० क्रि० (कु०) घूंट लेना, पीना, निगलना।
**घुटारियां**—स्त्री० (कां०) बीज के बीच थोथा अनाज।
**घुटारी**—स्त्री० (कां०) पक्षी विशेष।
**घुटिणा**—अ० क्रि० (कु०) अंदर ही अंदर घुट जाना, धुएं वाले बंद कमरे में घुट जाना।
**घुटीहण**—स्त्री० (चं०) घुटन।
**घुट्ट**—पु० (शि०) घूंट।
**घुड्ड**—पु० दे० घुट्ट।
**घुठणु**—पु० (कु०) गले की खराश।
**घुड़क**—पु० (मं०) धान का बारीक छिलका।
**घुड़की**—स्त्री० (चं०) धमकी भरी डांट।
**घुड़कू**—पु० (मं०) दरवाजे को बंद करने के लिए ऊपर से नीचे को लगाई जाने वाली मोटी लकड़ी।
**घुड़कोल**—स्त्री० (कां०) धान को पूरा कूटने की प्रक्रिया।
**घुड़नो**—अ० क्रि० (शि०) गरजना।
**घुड़पाघुघी**—स्त्री० (मं०) बड़े किस्म की घुग्घी, चिड़िया विशेष।
**घुड़ियारा**—पु० (शि०) पत्थर ढोने वाला।
**घुड़ी**—स्त्री० (शि०) पत्थर।
**घुण**—पु० अनाज में लगने वाला कीड़ा, घुन।
**घुण**—पु० (कां०) लकड़ी का कीड़ा, जो अनाज के कीड़े घुण से भिन्न होता है।
**घुणशील**—स्त्री० (शि०) लोहपट्टिका जिसके ऊपर लोहा कूटा जाता है।
**घुणाः**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) फसल के बीच में उगने वाला हरा घास।
**घुतघुतीलाणा**—स० क्रि० (कु०) तंग करना।
**घुतड़ो**—पु० (शि०) घुटना।
**घुन्ना**—वि० मन में बात रखने वाला, चापलूस।
**घुप**—वि० (चं०) गहरा, बिल्कुल (अंधेरा)।
**घुपणो**—स० क्रि० (शि०) पीना।
**घुपु**—पु० (कु०) घूंट, चुल्लू।
**घुब्बो**—पु० (कां०) बांस की नर्म तथा लंबी फट्टी।
**घुमक्कड़**—वि० (चं०) सैलानी, घूमने वाला।
**घुमटणा**—अ० क्रि० (चं०) घूमना।
**घुमटिणा**—अ० क्रि० (कु०) दम घुटना।
**घुमणा**—अ० क्रि० घूमना।
**घुमणी**—स्त्री० चक्कर, चक्कर आने का भाव।
**घुमत्तर**—पु० (कां०) पक्षी उड़ाने के लिए रस्सी से बना यंत्र जिसमें पत्थर डालकर घुमाकर फेंकते हैं।
**घुमां**—पु० (कां०) चार कनाल के बराबर ज़मीन का माप।
**घुमाटा**—पु० चक्कर आने का भाव।
**घुमार**—पु० (कां०) कुम्हार।
**घुम्हके**—पु० कुहनी से किसी को मारा धक्का, मुक्का।
**घुरका**—पु० (चं०) आसान गांठ।
**घुरकी**—स्त्री० (सि०) धमकी।
**घुरकी**—स्त्री० (कु०) घूर कर देखने का भाव।
**घुरखणा**—अ० क्रि० खा-पीकर आंख दिखाना।
**घुरचल**—पु० (कां०) तंग गली, तंग स्थान।
**घुरट**—पु० (मं०) चक्की।
**घुरटू**—पु० (मं०) दाल पीसने का पत्थर का गोल बेलन।
**घुरड़ना**—अ० क्रि० (कां०) खर्राटे मारना।
**घुरडाह**—पु० (चं०) गलफंदा।
**घुरड़ियां**—स्त्री० (कां०) खर्राटे।
**घुरडैहण**—स्त्री० (चं०) जंगली बिच्छूबूटी।
**घुरणा**—अ० क्रि० (सि०) घूरना।
**घुरणा**—अ० क्रि० (कु०) काम में लग जाना।
**घुरणो**—अ० क्रि० (शि०) पृथ्वी पर इधर-उधर लेटना।
**घुरना**—अ० क्रि० (कु०) लुढ़कना, किसी वस्तु का गोल-गोल होकर गिरना।
**घुरयाड़ी**—स्त्री० (कु०) वैशाखी के त्योहार पर गाने वाली महिला।
**घुरल**—पु० (कु०, कां०, ऊ०) जंगली बकरा।

**घुरशा**—पु० (कु०) आधी गांठ।
**घुरसणा**—स० क्रि० (सि०) मिट्टी को पैरों और हाथों से पानी डाल कर मलना।
**घुरांटी**—स्त्री० (चं०) बैल की सींग से मिट्टी उठा-उठा कर बोलने की क्रिया।
**घुराळ**—स्त्री० (कां०) पशुशाला।
**घुरिणा**—अ० क्रि० (कु०) धागों, रस्सी आदि में बुरी तरह से गांठ लगना, जिससे वह खोलनी मुश्किल हो।
**घुरुस्का**—पु० सख्त गांठ।
**घुरेई/ही**—स्त्री० (चं०) दे० घुरयाड़ी।
**घुरोणा**—पु० (सि०) घर के आगे का खेत।
**घुर्ठणु**—पु० (कु०) छोटा घराट, चक्की।
**घुर्ठू**—पु० पहिया।
**घुलकणा**—अ० क्रि० (कां०) प्रयास करना।
**घुलगठ**—स्त्री० उलटी गांठ।
**घुळगांठ**—स्त्री० दे० घुलगठ।
**घुलघेसा**—पु० (कां०) बहुत तंग करने का भाव, संघर्ष।
**घुळणा**—अ० क्रि० मल्ल युद्ध करना, लड़ाई करना, कुश्ती करना।
**घुळणा**—अ० क्रि० पिघलना।
**घुलणो**—स० क्रि० (शि०) घोलना।
**घुलाटा**—वि० लड़ाई करने वाला, लड़ाका, मल्लयुद्ध करनेवाला।
**घुलाटी**—स्त्री० मल्लयुद्ध, लड़ाई।
**घुल्लणा**—अ० क्रि० (कां०) बाकी बचना, शेष रहना।
**घुवाख्न**—पु० (मं०) सफेद नर चील।
**घुशणा**—स० क्रि० (कु०) रगड़ना।
**घुशणा**—स० क्रि० (सि०) पोंछना, साफ करना।
**घुशणो**—स० क्रि० (शि०) फर्श की सफाई करना।
**घुशरी**—स्त्री० (कु०) दे० घगलू।
**घुशी**—वि० (शि०) प्रश्न पर प्रश्न पूछने वाला।
**घुशी**—स्त्री० (मं०) अत्यधिक गप्प, अतिशयोक्ति।
**घुसड़ना**—अ० क्रि० बलात् प्रवेश करना, घुसना।
**घुसड़िना**—अ० क्रि० (कु०) दो व्यक्तियों या अधिक व्यक्तियों के बीच बलात् घुस जाना।
**घुसणा**—अ० क्रि० घुसना।
**घुसरफुसर**—स्त्री० कानाफूसी।
**घुसरिणो**—अ० क्रि० (शि०) घुसना।
**घुसाड़ना**—स० क्रि० (कां०) घुसाना।
**घुसाणा**—स० क्रि० प्रवेश कराना।
**घुसेड़ना**—स० क्रि० अंदर करना।
**घुस्सड़ना**—अ० क्रि० किसी तंग स्थान या भीड़ में प्रवेश करना।
**घुहणो**—स० क्रि० (शि०) दे० घुश्णो।
**घूंटा**—वि० (कां०, ऊ०) मन का मैला।
**घूंठा**—वि० (कां०) कपटी।
**घूंड**—पु० (मं०, कां०, ऊ०) घूंघट।
**घूघू**—पु० (कु०) पत्तों में बंद मक्की।
**घूणा**—अ० क्रि० (शि०) कबूतर का गुटर-गूं करना।
**घूदणा**—स० क्रि० (चं०) रौंदना।
**घूनूपरचा**—पु० (शि०) सारी जनता।
**घूम**—पु० मोड़, घुमाव।
**घूम**—स्त्री० (सि०, मं०, शि०) सिर चकराने का भाव।
**घूमणो**—अ० क्रि० (सि०) घूमना।
**घूरड़ी**—स्त्री० (कां०) ऊंघ।
**घूरण**—स्त्री० (मं०) घराट के पानी के लिए लकड़ी की बनाई नाली।
**घूरनो**—अ० क्रि० (शि०) खर्राटे मारना।
**घूलनौ**—अ० क्रि० (शि०) मन ही मन कुढ़ना।
**घेगुरी**—स्त्री० (शि०) दूध तथा अनाज से बनाई जाने वाली खीर।
**घेघरे**—स्त्री० (सि०) कोदो के आटे की कढ़ी।
**घेचपेच**—पु० (कां०) उलझाव।
**घेटबेघ**—स्त्री० (कु०) लाभ-हानि।
**घेड़**—स्त्री० (मं०) पंक्ति।
**घेढा**—पु० (चं०) घी का बर्तन।
**घेदलबेदल**—स्त्री० (कु०) हेरफेर।
**घेप**—पु० (शि०) गले में उभरा मांस, घेघा।
**घेपणा**—स० क्रि० (कु०) इधर-उधर से घेरा डालकर रोकना।
**घेपा**—पु० (कां०, ऊ०) स्वादरहित भोजन, ठीक ढंग से न पकाया भोजन।
**घेर**—पु० चक्कर, घुमाव।
**घेर**—स्त्री० (कु०) देर, देरी।
**घेरणा**—अ० क्रि० (शि०) एकत्रित होना।
**घेरणा**—स० क्रि० (शि०) घेरा डालना।
**घेरना**—स० क्रि० चारों ओर से रोकना।
**घेरना**—स० क्रि० (मं०) दरवाजा थोड़ा सा बंद करना।
**घेरनी**—स्त्री० (बि०, कां०, ऊ०) चरखे आदि को घुमाने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली लकड़ी की छोटी सी डंडी।
**घेरनूफेरनू**—पु० विवाह के तीसरे दिन वर-वधू का वधू के घर पहला प्रवेश।
**घेरा**—पु० (कु०, मं०) वह छोटा खेत जहां बैलों से जुताई न हो।
**घेरा**—पु० (कां०) गोल चक्कर।
**घेरा**—पु० कमीज़ की चौड़ाई।
**घेरा**—पु० (कां०) दांती का मुड़ा हुआ भाग।
**घेराफेरा**—पु० (कां०) दे० घेरनूफेरनू।
**घेरिना**—अ० क्रि० (कु०) चक्कर आना।
**घेरेकेरने**—स० क्रि० (मं०) धान के खेतों के कोने खोद कर समतल करना।
**घेल**—वि० (सि०) घायल।
**घेळणा**—स० क्रि० (कु०) हाथ से फेंट कर मिश्रित करना।
**घेवड़ी**—स्त्री० (सि०) मकड़ी।
**घेसका**—पु० (कु०) धक्का।
**घेसणा**—स० क्रि० (सि०, शि०) पैर से दबाना, पैरों तले रौंदना।
**घेसळा**—वि० चालाक, भोला बनने का अभिनय करने वाला।

**घेंचणा**—स० क्रि० (चं०) तंग करना।
**घेंटू**—पु० (कां०) छोटी घंटी।
**घैटी**—अ० (कु०) बिना, बगैर।
**घैण**—पु० (मं०, शि०) दे० घासनी।
**घैणा**—स० क्रि० (कां०) हाथ से फेंटना।
**घैयणो**—स्त्री० (सो०) दे० घासनी।
**घैर**—पु० (कां०) तंद्रा, धीमा नशा।
**घैई**—पु० (चं०) नाग देवता के निमित्त रखा घी।
**घैल**—वि० घायल।
**घैशघैशा**—वि० (कु०) चुभने वाला, खुरदरा।
**घोंडणू**—पु० (कां०) तकली।
**घोंडी**—स्त्री० (कु०) बकरी के गले में लटके अलिजिह्वा के आकार के मांस पिंड।
**घोंडी**—स्त्री० (कु०) घंटी जो विशेषकर देवता के 'गूर' के पास होती है।
**घोओणो**—स० क्रि० (शि०) घुलाना।
**घोखणा**—स० क्रि० किसी चीज़ से रोक देना, टोकना, किसी एहसान को बार-बार जताना।
**घोखणा**—स० क्रि० (मं०) रटना, बार-बार दोहराना।
**घोगड़ा**—पु० (सो०) डरावनी चीज़।
**घोघड़**—पु० (चं०) दे० घोर्ई।
**घोघड़**—पु० (कां०, ऊ०, बि०) काली घटा।
**घोच/चा**—स्त्री० (कु०) दिल दुखाने वाली बात।
**घोचणा/णो**—स० क्रि० कुरेदना; तंग करना।
**घोचणा**—स० क्रि० (कु०) डंडे के सिरे से धकेलना।
**घोट**—स्त्री० (कु०) बार-बार पूछ कर तंग करने का भाव।
**घोटकरना**—स० क्रि० हजामत करना, चेहरे के बालों को साफ करना।
**घोटणा**—स० क्रि० (कां०, कु०) घोटना, अच्छी तरह पीसना; रटना।
**घोटणा**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) पीसने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का डंडा।
**घोटणू**—पु० मिट्टी नर्म करने का पत्थर।
**घोटणो**—स० क्रि० (शि०) घोटना।
**घोटा**—पु० घोट कर तैयार किया भांग मिश्रित नशीला तरल पदार्थ।
**घोटाणा**—स० क्रि० (सि०) छेड़ना, खराब करना।
**घोटाणा**—स० क्रि० पिसवाना।
**घोटिया**—वि० (शि०) घटिया।
**घोटियाणो**—स० क्रि० (सि०) सफेद करना, साफ करना।
**घोड़**—स्त्री० एकत्रित की हुई सूखी घास का व्यवस्थित ढेर।
**घोड़**—स्त्री० (कु०, मं०) घराट के ऊपर लकड़ी का बना 'किरडे' के आकार का टोकरा जिसमें अनाज डाला जाता है।
**घोड़**—स्त्री० (सि०) केले का गुच्छा।
**घोड़**—स्त्री० (सो०) गिरगिट।
**घोड़चिड्डल**—पु० चींटी की एक जाति।
**घोड़सुआर**—पु० (कु०) घुड़सवार।
**घोड़िया**—स्त्री० वर पक्ष के विवाह गीत।
**घोड़ी**—स्त्री० (कां०) घराट के ऊपर लगी लकड़ी की कीली जो अन्न पात्र से दाने गिराती है।
**घोड़ी**—स्त्री० (सि०) घर की चिनाई में लगने वाला पत्थर।
**घोड़ी**—स्त्री० (शि०, कां०, ऊ०) नाक की हड्डी।
**घोड़ो**—पु० (शि०) घोड़ा।
**घोण**—पु० (कु०) मारतौल, बड़ा हथौड़ा।
**घोणा**—वि० (कु०) घना, गाढ़ा।
**घोणो**—वि० (सि०) गाढ़ा।
**घोता**—पु० (कु०) गोल पत्थर।
**घोदणा**—स० क्रि० उछल कूद द्वारा बिस्तर खराब करना।
**घोयड़ो**—पु० (सि०) घास का व्यवस्थित ढेर।
**घोर**—पु० (चं०) वह स्थान जहां बच्चे दफनाए जाते हैं।
**घोर**—वि० भयंकर; घटाटोप।
**घोरचे**—पु० (सि०) धन-संपत्ति।
**घोरल**—पु० (शि०) दे० घोर्ई।
**घोरवासणी**—स्त्री० (शि०) पहली बार नए घर में आने के उपलक्ष्य में दिया जाने वाला भोजन।
**घोरशणो**—अ० क्रि० (शि०) खर्राटे लेना।
**घोरी**—पु० तांत्रिक, साधु।
**घोरी**—वि० (कु०) कपटी।
**घोरी**—स्त्री० (मं०) सब्जी विशेष।
**घोर्ई**—पु० (कु०) जंगली बकरा।
**घोल**—स्त्री० लड़ाई, मल्ल युद्ध।
**घोळ**—पु० (मं०, चं०) लड़ाई-झगड़ा, खेलादि को विवादास्पद बनाने की क्रिया।
**घोलटु**—पु० (कु०) गोल दायरा।
**घोलण**—वि० (कां०, ऊ०, बि०) भारी-भरकम शरीर वाली महिला।
**घोलणा**—स० क्रि० (सि०) किसी काम के लिए किसी को तंग करना
**घोळणा**—स० क्रि० घोलना।
**घोलमघोल**—पु० (चं०, मं०) किसी खेल में उलझन।
**घोलमथोल**—पु० हाथापाई।
**घोळिणा**—अ० क्रि० (कु०) फसल आदि टूट जाना। स० क्रि० घोला जाना।
**घोली**—वि० मोटा व्यक्ति, भारी-भरकम शरीर वाला।
**घोलुआं बबरू**—पु० (कां०) आटे में मीठा डाल कर बनाया पकवान विशेष।
**घोल्हा**—पु० (चं०) चना।
**घोल्हा**—वि० मोटा।
**घोशणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) रगड़ना।
**घौंटु**—पु० (सो०) दे० दौंटू।
**घौंडी**—स्त्री० (कु०) अलिजिह्वा।
**घौंरूओ**—वि० नाराज़।
**घौआणो**—स० क्रि० (शि०) फेंटना।
**घौउता**—वि० (कु०) समय से पहले बोया (अनाज)।
**घौघरा**—पु० (कु०) घाघरा।
**घौटणा**—स० क्रि० (चं०) गला घोंटना।

**घौठणा**—स० क्रि० (चं०) ढांपना, कपड़े आदि से ढक देना।
**घौड़**—पु० (कां०, ऊ०) मध्यम वज़न का पत्थर।
**घौड़**—पु० (मं०) दूध-दही मथने का बर्तन।
**घौड़णी**—स्त्री० (मं०) पानी में तेज़ भागने वाले गोल बटन जैसे कीट।
**घौड़ना**—स० क्रि० (कु०) मारना, पीटना।
**घौड़ा**—पु० (सि०) मिट्टी का घड़ा।
**घौड़िना**—अ० क्रि० (कु०) मारपीट करना।
**घौड़ी**—स्त्री० (सि०) तैयार चमड़ा जो केवल जूते के नीचे लगाया जाता है।
**घौड़े**—स्त्री० (शि०) घड़ी।
**घौथ**—पु० (चं०) पत्थर।
**घौथेरणा**—स० क्रि० (चं०) पत्थरों से मारना।
**घौपणा**—स० क्रि० (चं०) गला दबोचना।
**घौर**—पु० (कु०) घर।
**घौरबार**—पु० (कु०) घरबार।
**घौरी**—स्त्री० (शि०) संपत्ति।
**घौरोट**—पु० (सि०) घराट।
**घौर्टणु**—पु० (कु०) छोटी चक्की।
**घौशणा**—स० क्रि० (कु०) दे० घोशणा।
**घौशिणा**—अ० क्रि० (कु०) घिस जाना।
**घौस्सा**—पु० (शि०) प्रहार।
**घ्यावला**—पु० (मं०) जंगली कुकुरमुत्ता।
**घ्याहर**—स्त्री० (चं०) घी का छोटा बर्तन, देवता को चढ़ाया जाने वाला पहला घी।
**घ्रंग**—अ० (चं०) बाघ की आवाज़।
**घ्रंगणा**—अ० क्रि० (चं०) बाघ का गरजना।
**घ्रचणा**—स० क्रि० (चं०) मसलना, गूंथना।
**घ्रचाहण**—पु० (चं०) जूठा छोड़ा भोजन, उच्छिष्ट भोजन।
**घ्राखड़ा**—पु० खंडहर।
**घ्राच**—पु० (कु०) अचानक मांस के फूल जाने की क्रिया।
**घ्राल**—स्त्री० (चं०) लार।
**घ्राश**—पु० (कु०) स्पर्श, रगड़, खरोंच।
**घ्रासनि**—स्त्री० (सो०) घर की प्रतिष्ठा।
**घ्रिपण**—पु० (शि०) मृत्यु से पूर्व बीमारी के कारण शय्या पर पड़े रहने का भाव।
**घ्रीखू**—पु० (चं०) कद्दूकस जो कांटेदार लकड़ी से बनाया जाता है।
**घ्रीठ**—स्त्री० (चं०) रेखा, लकीर।
**घ्रीश**—स्त्री० (कु०) लकीर।
**घ्रीहू**—पु० (चं०) कद्दूकस।
**घ्रीहणा**—स० क्रि० (चं०) पोंछना।
**घ्रुंघा**—पु० (चं०) फोड़े-फुंसियों का समूह।
**घ्रुस्सड़**—स्त्री० (चं०) उलझन।
**घ्रेकणा**—वि० (चं०) घिनौना (व्यक्ति)।
**घ्रेक्कड़**—पु० (चं०) गला।
**घ्रेघा**—वि० (चं०) दे० घ्रचाहण।
**घ्रेचणा**—स० क्रि० (चं०) हाथ-पांव से मसलना।
**घ्रेचार**—वि० (चं०) कुचलने वाला।
**घ्रेड़ा**—पु० (कां०, ऊ०) घर का नाश।
**घ्रेड़ा**—पु० (सि०) पानी के बर्तन रखने का स्थान।
**घ्रेपळ**—वि० (चं०) बदशक्ल, भद्दा।
**घ्रेस्सा**—वि० (चं०) अस्पष्ट आवाज वाला, हकलाने वाला।
**घ्रेहकणा**—अ० क्रि० (चं०) ज़ोर से बोलना।
**घ्रैहणा**—स० क्रि० (चं०) पिसी हुई दाल को खूब मिलाना।
**घ्रोसणा**—स० क्रि० (कु०) नीचे बैठे अगले व्यक्ति को धकेलना, धक्के देना।
**घ्रोसिणा**—अ० क्रि० (कु०) किसी द्वारा धक्के लगना।
**घ्रौला**—पु० (मं०) धब्बा, मैल का निशान।

## ङ

**ङ**—देवनागरी वर्णमाला के कवर्ग का अंतिम वर्ण। इसका उच्चारण स्थान कंठ और नासिका है।
**ङूंर**—पु० अंकुर। अंगूर।
**ङरोढा**—वि० अनभिज्ञ, मूर्ख।

## च

**च**—देवनागरी वर्णमाला में चवर्गका पहला वर्ण। उच्चारण स्थान तालु।
**चंऊट**—स्त्री० (शि०) पथरीली भूमि।
**चंगड़**—वि० (चं०) असभ्य।
**चंगर**—स्त्री० (कां०) रेतीली भूमि मरु भूमि।
**चंगरीश**—स्त्री० (सो०) ज़ोर से रोने या चिल्लाने की आवाज़।
**चंगरोढ़ा**—वि० (कां०) मरु भूमि का निवासी।
**चंगाःड़**—स्त्री० (सि०) चीख।
**चंगा**—वि० (चं०) खुला।
**चंगा**—वि० अच्छा, स्वस्थ।
**चंगी**—वि० (बि०) खुली, जो सघन न हो।
**चंगेर**—स्त्री० बांस की खुली बड़ी टोकरी।
**चंगेर**—स्त्री० (चं०) मक्की के घने पौधों को उखाड़ने की क्रिया।
**चंगेरटी**—स्त्री० (सि०) बांस की बड़ी टोकरी।
**चंगेरटू**—पु० बांस का बना छोटा टोकरा।
**चंगेरना**—स० क्रि० घने पौधों में से कुछ को उखाड़ कर दूर-दूर करना, विरल करना।
**चंगोतरा**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) गलगल प्रजाति का एक फल।

**चंग्याणा**—स० क्रि० छोटे बच्चे को तंग करना।
**चंचचणो**—वि० (शि०) ऐसी भूमि जिस पर हल कठिनाई से चलाया जा सके।
**चंज**—स्त्री० (कां०) चतुराई।
**चंजक**—स्त्री० (शि०) मकड़ी।
**चंज़यालो**—पु० (सि०) दे० चंजक।
**चंजवाड़ा**—पु० (शि०) मकड़ी का जाल।
**चंजुओ**—स्त्री० (शि०) दे० चंजक।
**चंट**—वि० चालाक।
**चंटाल**—वि० (चं०) लालची।
**चंटाळ**—वि० धूर्त।
**चंड**—स्त्री० (कां०,चं०) चपत, थप्पड़।
**चंड**—स्त्री० (कां०) गरम लोहे पर चोट लगाने की क्रिया।
**चंडकाणा**—स० क्रि० (मं०) रोटियां बेलना।
**चंडकाणा**—स० क्रि० चपत लगाना।
**चंडकू**—पु० (सि०) रोटी।
**चंडणा**—स० क्रि० थप्पड़ लगाना।
**चंडणा**—स० क्रि० लोहे को गरम करके चपटा करना।
**चंडणा**—स० क्रि० हाथ से रोटियां बनाना।
**चंडणा**—स० क्रि० तेज़ करना।
**चंडणा**—स० क्रि० मिट्टी के बर्तन बनाना।
**चंडयार**—पु० सिर के बालों में लगाया जाने वाला आभूषण।
**चंडरना**—अ० क्रि० बिगड़ना।
**चंडरूना**—अ० क्रि० क्रोधित होना।
**चंडरेवणा**—अ० क्रि० (सो०) क्रोधित होना।
**चंडा**—स्त्री० (कां०) भुट्टा रहित मक्की का पौधा।
**चंडाई**—स्त्री० दोनों हाथों से रोटी पकाने की क्रिया।
**चंडाई**—स्त्री० पिटाई।
**चंडाई**—स्त्री० लोहा कूटने का पारिश्रमिक।
**चंडी**—स्त्री० देवी का नाम।
**चंडु**—पु० नशा लेने की क्रिया, अफीम, गांजा आदि की पिनक।
**चंडुए**—स्त्री० (शि०) टांग।
**चंडेवणा**—स० क्रि० (सो०) थप्पड़ लगवाना।
**चंडेवुणा**—स० क्रि० (सो०) चांटा मारा जाना।
**चंडैणा**—स० क्रि० (कां०) गरम लोहे को हथौड़े से पीटना।
**चंडोल**—पु० (सो०) झूला।
**चंडोले**—पु० (कां०) चमड़े के जूते।
**चंढ**—पु० (कां०) शौक।
**चंढरना**—अ० क्रि० (सि०) बढ़-चढ़कर बोलना।
**चंदण**—पु० चंदन।
**चंदरा**—वि० चालाक, बिगड़ा हुआ, धूर्त।
**चंदराउळी**—स्त्री० (कु०) 'हौर्न' लोक नाट्य का पात्र, कुल्लू दशहरा के अंतिम दिनों में यह महादेव के सामने नृत्य करके उक्त लोकनाट्य का आरंभ करती है।
**चंदरो**—वि० (शि०) दे० चंदरा।
**चंदुआ**—पु० पशुओं के माथे पर बना सफेद तिलक।
**चंदुआ**—पु० चांदी का सिर का गहना।
**चंदुआ**—पु० वेदी, गद्दी आदि के ऊपर लगाया गया छोटा शामियाना, चंदवा।
**चंदुआ**—पु० (सि०) शिवरात्रि पर्व पर पत्तों से गूंथी माला जिसकी पूजा की जाती है। देवता की मूर्ति पर लटकाया जाने वाला विशेष कपड़ा जो विशेष पर्व में ही प्रयुक्त होता है।
**चंदूळी**—स्त्री० (कु०) खूबानी की ऐसी गुठली जो गूदे के साथ सड़ाने के पश्चात् मीठी हो जाती है।
**चंदोआ**—पु० (मं०) चंदवा, गद्दी आदि के ऊपर लगाया गया छोटा शामियाना।
**चंद्रसाणियोहार**—पु० (कु०) स्त्री के गले का रत्न जड़ित आभूषण।
**चंद्रसैनीहार**—पु० (मं०) दे० चंद्रसाणियो हार।
**चंद्रहार**—पु० चांदी का कंठाभूषण।
**चंद्रावळी**—स्त्री० (सि०, सो०, शि०) 'करयाळा' लोकनाट्य में सबसे पहले नृत्यारंभ करने वाला स्त्री पात्र।
**चंद्रोळी**—स्त्री० (कां०, ऊ०) लोक नाट्य का एक पात्र जो स्त्री रूप में पुरुष ही होता है।
**चंघरोणा**—अ० क्रि० (सो०) अंगों का अकड़ जाना।
**चंब**—पु० (मं०) तान्त्रिकों द्वारा प्रयुक्त गाय का कच्चा चमड़ा।
**चंब**—स्त्री० (कां०, ह०) पक्की लकड़ी।
**चंबड़जूं**—स्त्री० (चं०, कां०) चर्म के साथ लगी चपटी जूं।
**चंबड़नो**—अ० क्रि० (सि०) चिपकना।
**चंबड़ा**—पु० चमड़ा।
**चंबळ**—स्त्री० चर्मरोग।
**चंबा**—पु० चंपा फूल। एक वृक्ष विशेष।
**चंबाकड़ी**—स्त्री० (कां०, चं०) 'चंबा' नामक वृक्ष पर लगने वाली फलियां।
**चंबु**—पु० (सो०) बच्चों के दुग्धपान का पात्र।
**चंमड़**—वि० (मं०) सड़ा हुआ।
**चंमड़**—स्त्री० (कां०) भूतप्रेत की छाया।
**चंमू**—पु० (मं०) पूजा का एक गिलास विशेष।
**चइण**—स्त्री० (शि०) डगर।
**चइतर**—पु० (शि०) चैत्रमास।
**चई**—स्त्री० (चं०) दही मथने का लकड़ी का पात्र।
**चई**—स्त्री० (चं०) जड़।
**चउंरी**—स्त्री० (सि०) देवता का छोटा मंदिर।
**चउगुणा**—वि० (मं०) चारगुणा।
**चउड़ा**—वि० (सि०) चौड़ा।
**चऊंर**—पु० (कु०) देवता को हवा करने के लिए बनाया हुआ पंखा, चंवर।
**चऊ**—वि० (सि०) चार।
**चऊकी**—स्त्री० (मं०) कंठाभूषण।
**चकंदड़**—वि० (कां०) दूसरे की (संतान), वर्णसंकर (संतान)।
**चकंदर**—पु० (कां०, ऊ०) चुकंदर।
**चकंधा**—पु० बिना छत के मकान की खड़ी चार दीवारें।
**चक**—पु० सिर पर लगाने का आभूषण।
**चकघुंघरी**—स्त्री० (चं०) ओखलीनुमा लकड़ी की वह छोटी सी वस्तु जो दुलहन की 'परांदी' से बांधी जाती है।
**चकचाण**—वि० (मं०) असमय, चंचल।

चकचाण—अ० अचानक।
चकचाळ—वि० (सि०) बदमाश।
चकचास—पु० (मं०) पक्षी विशेष।
चकचीस—स्त्री० (मं०) काली चिड़िया।
चकचूंदर—स्त्री० चूहे की एक प्रजाति।
चकच्यूहार—स्त्री० (मं०) लंबा मादाचूहा।
चकछैदी—वि० (कां०, ह०) बदनाम।
चकण—स्त्री० गलत कार्य के लिए उकसाने का भाव।
चकणा—स० क्रि० (कां०) उठाना।
चकणाट—वि० (कु०) चिकना; भूरे रंग का; चिकनी (मिट्टी)।
चकणी—स्त्री० (मं०) बहकाने का भाव।
चकणेट—स्त्री० (मं०) चिकनी मिट्टी, चिकनाई।
चकणो—स० क्रि० (शि०) उठाना।
चकथल—स्त्री० (कां०, ऊ०) बेसब्री।
चकथै—स्त्री० (मं०, कां०) उठबैठ, अस्तव्यस्तता।
चकदा—पु० (कां०) चिनाई, निर्माण।
चकन्ना—वि० चौकन्ना।
चकमक—वि० चमकदार।
चकमको—वि० (शि०, सि०) चमकदार।
चकमा—पु० धोखा।
चकरयाह देणा—स० क्रि० (मं०) रोपाई किए गये धान से घास निकालना।
चकराःड़—स्त्री० (शि०) कीचड़।
चकरा—पु० (चं०) बकरे का पोटा।
चकराणा—अ० क्रि० चक्कर आना।
चकरावणो—स० क्रि० (शि०) चमकाना।
चकरी—स्त्री० गोलाकार वस्तु।
चकरी—स्त्री० Carpinus viminea. Carpinusfaginea.
चकरीघुमणा—अ० क्रि० भटकना।
चकरीन—स्त्री० (सो०) पकवान के खराब होने से आने वाली दुर्गंध।
चकरीनुणा—अ० क्रि० (सो०) पकवान का खराब होना।
चकरू—पु० (चं०) चकोर।
चकरूस—वि० (कां०) जकड़ा हुआ, चारों ओर से कसा हुआ।
चकरैहड़ा—पु० (मं०) चकमक, सफेद पत्थर।
चकला—पु० रोटी बेलने का चाका।
चकला—वि० (कां०) समतल।
चकली—स्त्री० (चं०) एक सिक्का जो पुराने चम्बा राज्य में प्रचलित था।
चकलोट्ट—पु० (कां०) छोटी चक्की।
चकवाणा—स० क्रि० (सि०) खत्म करना।
चकवास—पु० (मं०) पक्षी विशेष।
चका—पु० (चं०, कां०) घास का बैठने हेतु बनाया चकला।
चकाठ—पु० (बि०, सि०) चौखट।
चकादू—वि० (मं०) वर्णसंकर।
चकारा—वि० (चं०) स्पष्टवक्ता।
चकीड़—स्त्री० (कां०) खेतों की विभाजक रेखा, सीमा।
चकुंठ—वि० चौकोर।
चकुंठी—स्त्री० (कां०) चारों दिशाएं।
चकुंडा—पु० (मं०, कु०) Cassia occidentalis.
चकुआउणा—स० क्रि० (कु०) हिलाना।
चकूणा—वि० चार कोनों वाला।
चकोट्ठी—स्त्री० (चं०) कम चौड़ा पत्थर।
चकोठली—स्त्री० (कां०, ह०) चपटा पत्थर।
चकोड़ु—पु० (बि०) घर में प्रयोग की जाने वाली छोटी चक्की।
चकोणा—वि० (बि०) चार कोनों वाला।
चकोणा—स० क्रि० (बि०, मं०) उठाया जाना।
चकोतरा—पु० दे० चंगोतरा।
चकोता—पु० (कां०) भूमि का ठेका जो चार वर्ष के लिए होता है।
चकोथा—पु० (कु०) देवता को मनौती के रूप में दिया जाने वाला अन्न।
चकोर—पु० चकोर।
चकोर—वि० चार कोनों वाला।
चकोरा—वि० (सो०) चार तहों या कोनों वाला।
चकौता—पु० (कां०, बि०) निश्चित किया गया अन्न या पैसे।
चकौता—वि० (कां०) उऋण।
चक्क—पु० (कां०) चरखे का चक्र।
चक्कर—पु० मोड़। लोहे का गोल बड़ा थाल।
चक्का—पु० (चं०) चौड़ा तथा मोटा पत्थर।
चक्का दबाणा—स० क्रि० नींव रखना।
चक्की—स्त्री० घर में प्रयुक्त अनाज पीसने का दो पाटों वाला उपकरण।
चक्की—स्त्री० साबुन की टिकिया।
चक्खणा—स० क्रि० (बि०, कां०) स्वाद लेना।
चक्खणी—स्त्री० (कां०) भोजन चखने की प्रक्रिया।
चक्खमक्ख—स्त्री० (कां०, कु०) जूठा करने की क्रिया।
चक्रेम—पु० (मं०) दलदल।
चखांडी—स्त्री० (सो०, कां०) घर का दालान, अतिथिगृह।
चखटी—स्त्री० (चं०) चावल से तैयार किया गया नशीला पेय
चखटी—स्त्री० (सि०) मंज़िल पूरी होने पर दीवारों पर लगाई जाने वाली लकड़ी।
चखड़ी—स्त्री० (बि०) केलों का गुच्छा।
चखणा—स० क्रि० चखना।
चखर/रु—पु० (चं०) चकोर।
चखरी—स्त्री० (चं०) चकोरी।
चखरी—स्त्री० (चं०) बच्चों के खेलने का एक खिलौना।
चख लगणा—अ० क्रि० (कां०) बच्चे को बुरी नज़र लगना।
चखाट—पु० (कां०) खड्डी का बाहरी ढांचा; बिना बुनी हुई चारपाई, चारपाई का चौखट।
चखी—स्त्री० (चं०) चसका।
चखुंटा—वि० चार खूंटों वाला, चारों दिशाओं वाला।
चखूंटी—वि० (बि०) चारों दिशाओं में।
चगछा—वि० (चं०) चौड़ा सा।

**चगड़ी**—स्त्री० (मं०, कु०) Linicera angustifolia
**चगघड़**—वि० (चं०) ठिगना।
**चगरना**—स० क्रि० (बि०) महसूस करना।
**चगराः**—पु० (शि०) होशियार कर देने या सचेत होने का भाव।
**चगरोला**—पु० (सि०) तेज़ पीड़ा।
**चगलणा**—स० क्रि० (बि०, कां०) कुत्ते या बिल्ली का अकस्मात् दूध आदि पी जाना।
**चगान**—पु० (कां०) मैदान।
**चगावणा**—स० क्रि० (सो०) पशुओं को चरागाह में चुगाना।
**चगेरटू**—पु० (सि०) चौड़े आकार का छोटा बर्तन।
**चघाणा**—स० क्रि० चिढ़ाना।
**चघेटल**—वि० (कु०) लाड़ला, लाड़ली।
**चचड़**—वि० (कु०) पथरीली (भूमि)।
**चचड़**—पु० खटमल की तरह का जीव विशेष जो पशुओं के शरीर में चिपटा रहता है।
**चचलाणा**—अ० क्रि० छोटे बच्चों का चिल्लाना।
**चचाह**—पु० (कां०, चं०) अजीर्ण के कारण खाने की अनिच्छा।
**चचेवड़ी**—स्त्री० (सो०) मूंज की रस्सी जिसमें बरास के फूल लगे होते हैं जिसे वैशाखी के अवसर पर दरवाज़ों पर लटकाया जाता है।
**चचोड़**—पु० (कां०) चीड़ वृक्ष के छिलके।
**चच्या**—पु० (बि०) मुंह में छाले पड़ने का रोग।
**चज**—पु० सलीका, अच्छा काम, चतुरता, योग्यता।
**चज**—पु० (शि०) नियम।
**चजण**—वि० सुयोग्य स्त्री।
**चजरी**—स्त्री० (कां०, बि०) हुक्का।
**चज़रो**—वि० (शि०) खूबसूरत, सुंदर।
**चजवंती**—वि० निपुण, चतुर (स्त्री)।
**चजुआ**—पु० (शि०) मकड़ी।
**चजेऊड़**—पु० (शि०) मकड़ी का जाला।
**चटंड**—वि० (कां०) हृष्ट-पुष्ट।
**चटक**—स्त्री० आदत।
**चटक**—वि० (बि०) फुरतीला, तेज़।
**चटकणू**—पु० (चं०) पशुओं की जूं।
**चटकाणा**—स० क्रि० (कु०) मारना, पिटाई करना।
**चटकाबरा**—वि० (सो०) सफेद, चितकबरा।
**चटकारा**—पु० मज़ा लेने का भाव।
**चटकारी**—स्त्री० (बि०) खिल्ली उड़ाने की क्रिया।
**चटकीला**—वि० चमकदार।
**चटकीलो**—वि० (शि०) दे० चटकीला।
**चटकुलु**—पु० (सि०) पक्षी विशेष।
**चटकोड़ी**—स्त्री० एक पतली और छोटी च्यूंटी।
**चटखटा**—वि० (कु०) सख्त (जगह)।
**चटणा**—स० क्रि० (कां०) चाटना।
**चटणी**—स्त्री० चटनी।
**चटनेळणा**—स० क्रि० चांटे मारना, पीटना।
**चटपट**—अ० (कु०) जल्दी, झटपट, जल्दी-जल्दी।
**चटपूहंज**—पु० सब कुछ बचा हुआ चाटने की क्रिया।
**चटम**—पु० (कां०, ऊ०) सब कुछ खा कर समाप्त करने का भाव।
**चटयाणा**—स० क्रि० फेंकना, ज़ोर से फेंकना।
**चटरालना**—स० क्रि० (मं०) जल्दी-जल्दी खा जाना।
**चटराळना**—अ० क्रि० (शि०) मेघ का गरजना।
**चटराला**—पु० (बि०) अट्टहास, ठहाका।
**चटराळा**—पु० (कु०, शि०) दे० चंड।
**चटरींगणा**—अ० क्रि० (शि०) लटकना।
**चटाःरा**—पु० (सि०) धब्बा।
**चटाई**—स्त्री० (कु०) चटाई।
**चटाईसत**—स्त्री० (मं०) जायफल को दूध में रगड़ कर शिशु को चटाने की क्रिया।
**चटाक**—पु० चमड़ी पर पड़े निशान।
**चटाक**—पु० (कु०) दे० चटाक।
**चटाका**—पु० जीभ को तालु से लगाकर निकाली गई आवाज़।
**चटाका**—पु० तेज़ धूप।
**चटाका**—पु० मज़ा।
**चटाका**—पु० थप्पड़, चोट।
**चटाके**—पु० (मं०) दौड़ता दर्द, शरीर में चलती फिरती दर्द।
**चटाणा**—स० क्रि० (कु०) इधर-उधर ले जाना।
**चटाफटा**—पु० (मं०) धातु की वस्तुएं।
**चटींगणी**—वि० (बि०) छोटी सी।
**चटींगरी**—स्त्री० (कु०) वृक्ष की चोटी।
**चटी**—स्त्री० ज़रूरत, आवश्यकता।
**चटीकणा**—अ० क्रि० (शि०) ताप से वस्तु का उछलना।
**चटुआ**—वि० खाने-पीने का शौकीन।
**चटोर**—वि० (कां०, चं०) लालची।
**चटोरड़ा**—वि० (चं०) बार-बार खाने वाला।
**चटोरा**—वि० लालची, चटपटी चीज़ को खाने वाला।
**चटोरी**—वि० जिसे चाटने की आदत हो।
**चट्ट**—स्त्री० (कां०, मं०) मकान में प्रथम प्रवेश पर की जाने वाली प्रतिष्ठा।
**चट्ठ**—पु० (कां०) पट्टू आदि धोने हेतु बनाया गया काष्ठ का लंबा टब।
**चट्ठ**—पु० (कां०) पानी की छोटी बावली जिसमें लोहे को ठंडा किया जाता है।
**चट्ठा**—पु० (कां०, ऊ०) पशुओं को पानी पिलाने हेतु बनाया गया पत्थर या सीमेंट का चौकोर टब।
**चट्ठा**—पु० लकड़ियों अथवा ईंटों का क्रम से लगाया गया ढेर।
**चट्ठु**—पु० (चं०) चौड़ा खरल।
**चट्ठू**—पु० (कां०, सि०) मिट्टी आदि का बरतन जिसमें पानी डालकर चमड़ा भिगोया जाता है।
**चठ**—पु० (कां०) नमक का बड़ा ढेला।
**चठाई**—पु० (कु०) देवता का काम करने वाला हरिजन।
**चठेरना**—अ० क्रि० (कु०) छूट जाना, छोड़ा जाना।
**चड़**—पु० (चं०) विवाह या अन्य उत्सव पर उधार दिया गया अन्न जो ऐसे अवसर पर ही वापिस लिया जाता है।

**चड़काऊ**—पु० (शि०) छत का ऐसा स्थान जहां से वर्षा के पानी की बूंदें गिरती हैं।
**चड़की/कू/के**—स्त्री० (शि०) चिड़िया, पक्षी।
**चड़कैल्टु**—पु० (सि०) नन्हीं चिड़िया।
**चड़खु**—पु० (सी०) पक्षी।
**चड़ना**—अ० क्रि० (कु०) चढ़ना।
**चड़नो**—अ० क्रि० (सि०) दे० चढ़ना।
**चड़भुज्जण**—स्त्री० (सो०) अत्यधिक जलन।
**चड़भुज्जण**—स्त्री० (सो०) जल्दबाज़ी।
**चड़याट***—पु० (मं०) टांगें।
**चड़याट***—स्त्री० (कु०) कमर।
**चड़याटी**—वि० (मं०) आलसी, श्रम न करने वाला, निकम्मा।
**चड़याठ**—पु० (सो०) कर्मेंद्रिय।
**चड़याठी**—स्त्री० (कु०) 'चोर' वृक्ष की बारीक लकड़ी जो जलाने के काम आती है।
**चड़याती**—पु० (चं०) पसलियों का मांस।
**चड़याम**—स्त्री० (सि०) चौड़ाई।
**चड़यारा**—पु० (मं०) एक प्रकार का साग।
**चड़वाटी**—स्त्री० (चं०) टांग का घुटने से ऊपर का भाग।
**चड़वे**—पु० (शि०) पशु की सामने वाली टांग।
**चड़ा**—पु० (मं०) जल निकासी की नालियां।
**चड़ा**—पु० (मं०) बर्तन मांजने का स्थान।
**चड़ा**—पु० (शि०, सो०) बर्तन रखने का गोल चक्र।
**चड़ाकणा**—स० क्रि० (कु०) आग का सेंक लगाना।
**चड़ाकिणा**—अ० क्रि० (कु०) आग का सेंक लगना।
**चड़ाड़े**—पु० (कां०) चीड़ वृक्ष के छिलके के टुकड़े।
**चड़ाणा**—स० क्रि० (कु०) बूंद-बूंद करके गिराना।
**चड़िकनो**—अ० क्रि० (शि०) फटना।
**चड़ित**—अ० (कु०) गंदी वस्तु के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द।
**चड़िशा**—वि० (कु०) प्यासा।
**चड़िह**—स्त्री० (कु०) घृणा।
**चड़ींगणा**—अ० क्रि० (शि०) गुस्सा करना।
**चड़ींगणा**—अ० क्रि० (शि०) लटकना, चढ़ना।
**चड़ीशा**—स्त्री० (कु०, मं०) चिड़िया।
**चड़ू**—पु० (शि०, सि०) कबूतर।
**चड़ेना**—स० क्रि० (मं०) प्रतिलिपि उतारना।
**चड़ेनु**—पु० (सो०) पौधे या वृक्ष की चोटी में लगने वाला छोटा फल।
**चड़ेल**—स्त्री० (कु०, सि०) चुड़ैल।
**चड़ैणा**—वि० (चं०) चुगली करने वाला।
**चड़ेलर**—पु० (मं०) ईंधन रखने का स्थान।
**चड़ैन**—पु० (शि०) Myrsine africana.
**चड्ड**—पु० (कां०) उधार, ऋण।
**चड्डा**—पु० (कां०) रान व गुर्दे के बीच का स्थान।
**चढ़त**—स्त्री० (कां०) चढ़ावा।
**चढ़तर**—स्त्री० (बि०, मं०) दे० चढ़त।
**चढ़दा**—वि० उगता, उदय होता हुआ।
**चढ़ाइणा**—स० क्रि० (कु०) चढ़ाया जाना।
**चढ़ाई**—स्त्री० (कु०) चढ़ाई।
**चढ़ाणा**—स० क्रि० चढ़ाना।
**चढ़ाणा**—स० क्रि० (कु०) चढ़ाना।
**चढ़ीरी**—स्त्री० (कु०) पेड़ की फुनगी।
**चढेरना**—स० क्रि० (कां०) चिढ़ाना।
**चढेरना**—स० क्रि० (कु०) बिगाड़ना।
**चढ़ौणा**—वि० (कां०, चं०) गंदा।
**चण**—पु० (कां०, कु०) गन्ने की एक किस्म।
**चण**—स्त्री० (चं०, कु०) पीड़ा का दौर।
**चणकणा**—अ० क्रि० (मं०) चमकना।
**चणकणा**—अ० क्रि० (सि०) ज़ोर से बोलना।
**चणकदा**—वि० तेज़ आवाज़ वाला।
**चणकाणा**—स० क्रि० (चं०) चमकाना।
**चणचण**—स्त्री० धीमी-धीमी दर्द।
**चणचणो**—वि० (शि०) सख्त (भूमि) जिस पर हल चलाना कठिन हो।
**चणा**—पु० चना।
**चणाई**—वि० (शि०) भोजन तैयार करने वाला, रसोइया।
**चणाई**—स्त्री० चिनाई।
**चणाका**—पु० ज़ोर का दर्द; आघात।
**चणाघ**—पु० (कु०) बाघ जाति का एक जंगली जानवर।
**चणार**—पु० (कां०, चं०) राज मिस्तरी।
**चणि**—स्त्री० (सो०) छोटा सा टुकड़ा या कण।
**चणिया**—पु० (चं०) अन्न विशेष।
**चणी**—स्त्री० (चं०) चिड़िया।
**चणूण**—स्त्री० (बि०) आवेश।
**चणूण**—स्त्री० (कु०) 'सूर' को एक ही घूंट में पी जाने की क्रिया।
**चणे कडणा**—स० क्रि० (कां०) खेतों में नालियां निकालना।
**चणेठा**—स्त्री० (कु०) 'चीणी' का घास।
**चणेउणा**—स० क्रि० (शि०) झुठलाना।
**चणेडो**—स्त्री० (शि०) मकड़ी।
**चणेतर**—पु० (मं०) कारीगर, शिल्पी।
**चणेहरू**—वि० (चं०) सूखा।
**चणो**—पु० (चं०) अन्न विशेष।
**चतऊणी**—स्त्री० (चं०) चेतावनी।
**चतर**—वि० (कु०, सि०) चतुर।
**चतरफा**—अ० चारों ओर।
**चतराई**—स्त्री० चतुराई।
**चतराटू**—पु० (बि०) एक मछली विशेष जो चपटी होती है।
**चतरावड़ा**—वि० (बि०) चितकबरा।
**चतरूठिया-हवन**—पु० (बि०) विवाह के चौथे दिन होने वाला हवन।
**चतरेरा**—पु० (कां०) चित्र बनाने वाला कलाकार।
**चतहा**—वि० (मं०) चार तहों वाला।
**चताक**—पु० दाग।

**चतान**—वि० (कु०) होशियार, चालाक।
**चताना**—स० क्रि० (मं०) किसी बात से सावधान करना।
**चतारना**—स० क्रि० याद दिलाना।
**चतावनी**—स्त्री० चेतावनी।
**चती**—स्त्री० दाग, शरीर पर पड़े दाग।
**चतेषणा**—स० क्रि० (सो०) याद दिलाना।
**चतैन**—वि० (कु०) योग्य।
**चतैरटू**—पु० (मं०) मछली की एक किस्म।
**चतोणा**—अ० क्रि० आभास हो जाना।
**चत्ती**—स्त्री० (चं०) खाली स्थान; गंजापन।
**चत्थ**—स्त्री० चुगली, निंदा।
**चत्थणा**—स० क्रि० (सो०) बेवकूफ बनाना।
**चथणा**—स० क्रि० (कु०) छोटे-छोटे हिस्से करना।
**चनण**—स्त्री० (कु०) चांदनी; चंदन।
**चनणी**—स्त्री० (चं०) चांदनी।
**चनयाड़ी**—स्त्री० (चं०) चंदन की लकड़ी।
**चनाट**—पु० पत्थर बिछा कर बनाया गया रास्ता।
**चनाट**—वि० (कु०) चिकना।
**चनार**—पु० वृक्ष विशेष।
**चनालू**—पु० हृदय, दिल।
**चनाहड़ा/ड़ी**—पु० मकान चिनने वाला, मिस्तरी।
**चनाहर**—अ० (कु०) गुज़रा हुआ चौथा वर्ष।
**चनेली**—स्त्री० (कां०, चं०) स्त्री का घाघरा।
**चनोर**—पु० (मं०) रोटियां रखने हेतु बांस का बना टोकरा।
**चनौण**—स्त्री० (कु०) घर चिनने की मज़दूरी।
**चन्नण**—पु० चंदन।
**चन्नण डाल**—पु० चंदन का वृक्ष।
**चन्ना**—पु० (कां०, ह०, ऊ०) घर का किनारे वाला भाग।
**चपटासु**—पु० (कां०) चक्की।
**चपट्ट**—वि० पूर्ण रूप से बंद। आकस्मिक।
**चपट्ट**—वि० (कां०, ऊ०) चौड़ा, खुला।
**चपड़ा**—पु० (शि०) बात-चीत।
**चपड़ास**—पु० सेवादार का सरकारी चिह्नयुक्त कमरबंद।
**चपड़िहणा**—स० क्रि० (शि०) मालिश करना।
**चपड़िहणो**—पु० (मं०) मक्खन रखने का पात्र।
**चपड़ैणु**—पु० (बि०) मक्खन रखने का मिट्टी का पात्र।
**चपड़ोसू**—पु० (मं०) दे० चपड़ैणु।
**चपणा**—पु० पानी के घड़े पर लगाया जाने वाला मिट्टी या लकड़ी का ढक्कन।
**चपणा**—अ० क्रि० (बि०) लज्जित होना।
**चपणा**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०) क्रोधित होना।
**चपणेओं**—वि० (शि०) जिसकी आंखों से पानी बहता रहे।
**चपणोश**—पु० (कु०) मक्खन रखने का पात्र।
**चपर**—स्त्री० (चं०) लकड़ी में पड़ी हुई दरार।
**चपलुणा**—अ० क्रि० (सो०) चपल होना, चंचल होना।
**चपलेउणा**—स० क्रि० (सो०) चपल बनाना, चंचल बनाना, बातों में बहकाना।
**चपलेषणा**—स० क्रि० (सो०) उपहास करना।
**चपांच**—पु० (मं०) चक्रवृद्धि ब्याज़।
**चपाऊ**—वि० चौपाया।
**चपाड़**—पु० (कु०) छिपकली।
**चपाण**—स्त्री० (चं०) क्रोध।
**चपाया**—वि० (बि०) दे० चपाऊ।
**चपासरा**—वि० (कु०) विनीत।
**चपेट**—स्त्री० किसी चीज़ की पकड़।
**चपेड़**—स्त्री० दे० चंड।
**चपेरना**—स० क्रि० चुप कराना।
**चपेरना**—स० क्रि० (कां०, ऊ०) किसी को क्रोधित करना।
**चप्प**—पु० (कु०, मं०) क्रोध; उमंग।
**चप्पड़**—पु० (चं०) छप्पर।
**चप्पड़**—पु० टुकड़ा।
**चप्पड़ाणी**—पु० (चं०) छत का पानी।
**चप्पण**—पु० (कां०, ह०, ऊ०) मिट्टी के बर्तन पर रखने का मिट्टी का बना ढक्कन।
**चप्पण**—वि० (चं०) मसखरा।
**चप्पणकद्दू**—पु० छोटे आकार का कद्दू।
**चप्पणा**—अ० क्रि० (कां०) शर्माना।
**चप्पनी**—स्त्री० घड़े के ऊपर रखने का मिट्टी का ढक्कन।
**चप्पर**—स्त्री० (कां०, ऊ०) जलाने हेतु दो 'फाड़' की हुई लकड़ी।
**चप्पा**—पु० चार अंगुलियों के बराबर का माप।
**चफलना**—स० क्रि० (कु०) तह लगाना।
**चफिरद**—वि० चारों ओर।
**चफी**—स्त्री० (सि०) आलिंगन।
**चफेरदे**—वि० दे० चफिरद।
**चफेरा**—पु० गोबर में उत्पन्न एक प्रकार का कीड़ा।
**चफेरे**—वि० चारों ओर।
**चब**—स्त्री० टांगों में होने वाली अत्यंत पीड़ा, टांगों में रह-रह कर होने वाली पीड़ा।
**चब**—पु० (चं०) जल वाला स्थान।
**चबगला**—वि० (सो०) बहुरूपिया।
**चबट्टा**—वि० (मं०) चौड़ा।
**चबट्टा**—पु० चौराहा।
**चबणा**—स० क्रि० (कां०) चबाना।
**चबरख/खा**—पु० मृतक के निमित्त चार वर्ष के बाद किया जाने वाला धार्मिक कृत्य, चातुर्वार्षिक श्राद्ध।
**चबरखी**—स्त्री० (चं०) दे० चबरख।
**चबर-चबर**—स्त्री० (कां०) अधिक बोलने का भाव।
**चबरही**—स्त्री० (चं०) दे० चबरख।
**चबराक**—वि० बातूनी, चतुर।
**चबराकी**—स्त्री० अधिक बातें, चतुराई वाली बातें।
**चबरू**—पु० (चं०) गंदम के आटे का तला हुआ मीठा पकवान।
**चबरू**—पु० (शि०) विशेष प्रकार का अन्न जिसके दाने बारीक होते हैं।
**चबल**—स्त्री० (बि०) भारी वस्तु को उठाने के लिए बनी लोहे की मोटी छड़।

**चबलाटण**—स्त्री० फिसलन।
**चबलाटणा**—स० क्रि० मुंह में चबाना, चबाते रहना।
**चबाकणा**—स० क्रि० (सो०) पानी में भिगोना।
**चबाट**—पु० चौराहा।
**चबाटा**—पु० दे० चबाट।
**चबाटा**—पु० क्यारियों में बना रास्ता।
**चबाणा**—स० क्रि० चबाना।
**चबारदूधान**—पु० (शि०) लाल चावल, चावल की एक किस्म।
**चबारा**—पु० मकान की ऊपरी मंज़िल में द्वार के सामने का हिस्सा।
**चबारा**—पु० बरामदा।
**चबारू**—पु० जालियों वाली खिड़की।
**चबारू**—पु० (कां०, ऊ०) मिट्टी के पात्र में पंचगव्य डाल कर क्रियाकर्म तक मृतक के लिए पानी देने का संस्कार। नीचे से छिद्रयुक्त पात्र से कुशा के माध्यम से बूंद-बूंद गिरता पानी।
**चबावणो**—स० क्रि० (शि०) चबाना।
**चबीणा**—पु० चबाने की वस्तु।
**चबेहड़**—पु० चार मकानों का सामूहिक आंगन।
**चबोकणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) डुबोना।
**चबोकुणा**—अ० क्रि० (सो०) चुभना। डूबना; उतरना।
**चब्म**—पु० (चं०) पानी में कंकर फेंकने से हुई आवाज़।
**चब्मड़**—पु० गड्ढे में रुका हुआ वर्षा का पानी।
**चब्मी**—वि० (कां०, चं०) चपटे नाक वाली।
**चब्रचाप**—पु० (कां०, चं०) व्यर्थ का कोलाहल।
**चमण**—स्त्री० (चं०) नमी वाला स्थान।
**चमाणा**—स० क्रि० चुभाना।
**चमेरना**—स० क्रि० (कु०) चुभाना।
**चमंडणा**—स० क्रि० (सि०) बेकार की बातें करना।
**चम**—पु० (सि०) ईख।
**चम**—स्त्री० (कां०) चमड़ी।
**चमक**—स्त्री० (कु०) चमक।
**चमकणा**—अ० क्रि० (चं०) चमकना।
**चमकणा**—अ० क्रि० बहकना।
**चमकणु**—पु० (चं०) खुंब विशेष, कुकुरमुत्ते की एक किस्म।
**चमकणो**—अ० क्रि० (शि०) चमकना।
**चमकर**—पु० युद्ध के समय क्षत्रियों द्वारा पहना जाने वाला पायजामा।
**चमका**—पु० फूल विशेष जो टोपियों में लगाया जाता है।
**चमकाइणा**—स० क्रि० (कु०) चमकाया जाना।
**चमकाऊट**—वि० (शि०) चमक।
**चमकाण**—स्त्री० (चं०) नाराज़ होने की क्रिया।
**चमकारा**—पु० झलक, चमक।
**चमकावणो**—स० क्रि० (शि०) चमकाना, पीटना।
**चमकीलो**—वि० (शि०) चमकीला।
**चमको**—स्त्री० (शि०) चमक।
**चमकोरूखो**—वि० (शि०) बादल हटने पर हुआ निर्मल आकाश।
**चमखीरा**—वि० (सि०) बिगड़ा हुआ।
**चमचम**—स्त्री० चंचलता, बेसब्री।
**चमचीड़ा**—पु० (मं०) चमगादड़।
**चमचेड़**—वि० कमज़ोर (महिला)।
**चमचेड़ा**—स्त्री० (कां०, ह०) चमगादड़।
**चमचैड़ा**—वि० (कां०, मं०) पतला।
**चमज्यूड़ी**—स्त्री० (सि०) जुगनू।
**चमटाणा**—स० क्रि० (सि०) चिपकाना।
**चमड़ना**—अ० क्रि० चिपकना।
**चमड़ी**—स्त्री० त्वचा, खाल।
**चमड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) चिपकाना।
**चमड़ोना**—स० क्रि० दिखावा करना।
**चमड़ोल**—पु० (सो०) ततैया का छत्ता।
**चमरख**—स्त्री० (सि०) चोट दुखने का भाव।
**चमरख**—स्त्री० चरखे के तकले के साथ खूंटियों से लगी घास या कपड़े की छड़ें।
**चमरस**—पु० पांव के छाले में चमड़ा लगने का भाव।
**चमरोड़**—पु० (बि०, ह०) Ehrctia leovis.
**चमरोड़**—पु० (मं०, कां०, कु०) Cotoneaster microphylla.
**चमल**—स्त्री० (चं०) हाथ-पांव पर जमी मैल।
**चमलना**—अ० क्रि० (शि) चंचलता करना।
**चमळाकुणा**—स० क्रि० (सो०) व्यर्थ ही मुंह चलाना।
**चमलोणा**—अ० क्रि० (कां०, ह०) आवश्यकता से अधिक बोलना।
**चमाई**—पु० (शि०, सो०) Wikstroemia canescons.
**चमाका**—पु० देह के किसी अंग में अचानक हुई पीड़ा।
**चमाका**—पु० (कां०, ऊ०) बादलों से निकली सूर्य की चमक।
**चमाळ**—पु० (चं०) अनाज रखने का काष्ठपात्र।
**चमारठ**—पु० चमड़े का काम करने का स्थान।
**चमारसामा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Glochidion velutinum.
**चमासा**—पु० (बि०) बरसात के चार मास।
**चमासा**—पु० (कु०) चौमासा, चारमास।
**चमुखा**—वि० (कु०) चार मुख वाला।
**चमुडी**—स्त्री० (चं०) परात।
**चमूरा**—पु० (सि०) कील निकालने का यंत्र, जमूर।
**चमेड़णा**—स० क्रि० (सि०) चिपकाना।
**चमेड़ना**—स० क्रि० (सो०) दे० चमेड़णा।
**चमेड़ा**—वि० (मं०) दुर्बल, रुग्ण।
**चमेड़ा**—पु० (कु०) क्रोध में किसी को बोला जाने वाला हीनता बोधक शब्द।
**चमेड़ी**—स्त्री० (कु०) एक प्रकार का रोग, चेचक, छूत की महामारी।
**चमोचुमी**—वि० (चं०) पूरा।
**चमोड़**—पु० पौधा विशेष।
**चम्पा**—पु० Michelia champaca.

**चम्मड़**—पु० (चं०) जूं।
**चम्मड़पोथ**—वि० (सो०) अकुशल कारीगर।
**चम्मण**—पु० वृक्ष विशेष।
**चम्मळ**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) चमड़ी का विशेष रोग।
**चम्याखड़**—वि० (सि०) कमज़ोर (व्यक्ति)।
**चम्हाका**—पु० (बि०) झलक।
**चयाक**—पु० (सो०) चीड़ वृक्ष की छाल।
**चयारटू**—पु० (सि०) धान की एक किस्म जिसके लाल दाने होते हैं।
**चयाळ**—स्त्री० (कु०) किरण।
**चयाळी**—स्त्री० (सि०) चीड़ का जंगल।
**चये**—स्त्री० (मं०) मैल।
**चयोकड़**—पु० (सि०) चीड़ का छिलका।
**चर**—पु० (कां०) जन-समूह के लिए खाना बनाने हेतु बनाया गया लंबा चूल्हा जिस पर तीन-चार बर्तन रखे जा सकते हैं।
**चर**—पु० (मं०) वह स्थान जहां चमड़ा दवाई से पकाया जाए।
**चरक**—स्त्री० (सि०) किसी चीज़ का पांव के नीचे दब जाने का भाव।
**चरकटी**—स्त्री० (कां०, बि०, ऊ०) लोक नाट्य का एक रूप।
**चरकणा**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०, बि०) कपड़े का छीजना।
**चरकदा**—वि० (कु०) करारा, कुरकुरा।
**चरकेवणा**—स० क्रि० (सो०) दांत से रोटी आदि काटना, चबाना।
**चरखटा**—वि० (कां०) होशियार।
**चरखड़ी**—स्त्री० पंखे को घुमाने का चक्र।
**चरखड़ी**—स्त्री० (कां०) छोटा रंगदार चरखा।
**चरख बजणा**—अ० क्रि० (सि०) कमज़ोर होना।
**चरखोटडू**—पु० (कां०) छोटा सा चरखा।
**चरगटा**—वि० (कां०, बि०) चालाक।
**चरगाली**—स्त्री० (चं०) चिंगारी।
**चरचर**—स्त्री० (कु०) तीखी ज़ुबान।
**चरचराणा**—अ० क्रि० चर-चर्र करना।
**चरजीवणा**—पु० (मं०) चिरंजीव होने का आशीर्वाद।
**चरटू**—पु० (कु०) दही से छाछ बनाने का बर्तन।
**चरठयाट**—पु० (सि०) तंग होने का भाव।
**चरड़**—स्त्री० (मं०) पशुओं का चर्म रोग।
**चरड़याहट**—स्त्री० (सि०) बिल्कुल तंग करने की दशा।
**चरण**—पु० भाग। पांव।
**चरणा**—पु० (मं०) हल की नोक।
**चरणामत**—पु० चरणामृत।
**चरथेड़**—पु० (मं०) घर का स्थान।
**चरदी**—स्त्री० (सि०) पशु-चारा।
**चरना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०) खाना; पशुओं का खुली जगह में चरना।
**चरना**—स० क्रि० (मं०) अनाज को नापना।
**चरनाठ**—पु० (कां०, ऊ०) आंखों में पड़ा मकड़ी का जाला या विष।
**चरनाठी**—स्त्री० चंदन की लकड़ी।
**चरनामत**—पु० (मं०) चरणामृत।
**चरनैठी**—स्त्री० (चं०) गाल।
**चरनोख**—पु० (मं०) शुक्ल पक्ष।
**चरनोणा**—अ० क्रि० (सि०) रोंगटे खड़े होना।
**चरबराणा**—अ० क्रि० चहकना।
**चरबाहा**—पु० ग्वाला।
**चरबी**—स्त्री० (कु०) चर्बी।
**चरमख**—पु० चरखे में तकले को टिकाने हेतु तिनकों या कपड़े से बनी कूचियां।
**चरमर**—पु० (चं०) Artimisia Vulgaris.
**चरमराणा**—अ० क्रि० (कु०) टूट जाना।
**चरमाणा**—अ० क्रि० (सि०) ज़ोर से चिल्लाना।
**चरमोर**—पु० (मं०) Artimesia valgaris.
**चरयाठी**—स्त्री० (कु०) बारीक टहनियों की जलाने की लकड़ी।
**चरांगळा**—पु० (कु०) एक ऐसा डंडा जिसके आगे दो सिरे होते हैं जो कांटे आदि उठाने के काम आता है।
**चरांगळा**—पु० (कु०) जीव विशेष जो गर्मियों के दिनों में सुबह, दिन और शाम को समूह में बोलते हैं।
**चरांद**—पु० चरागाह।
**चराई**—स्त्री० लकड़ी को चीरने की क्रिया।
**चराई**—स्त्री० लकड़ी चीरने की मज़दूरी, पशु चराने की मज़दूरी।
**चराउणा**—स० क्रि० (कु०) चराना।
**चराक**—वि० (सि०) लगन से घास खाने वाला बैल।
**चराका**—पु० (शि०) चरागाह।
**चराखा***—वि० (शि०) चार आंखों वाला (जिसने ऐनक लगाई हो)।
**चराग**—पु० चिराग।
**चरागी**—स्त्री० (बि०) मल्लाहों द्वारा किश्ती में सवार व्यक्तियों से वसूल की गई बख्शिश।
**चराट**—पु० (मं०) मछली की एक किस्म।
**चराट**—स्त्री० (बि०) बच्चों की शरारत।
**चराटणा**—स० क्रि० (कु०) बोलने की नकल उतारना।
**चराटी**—स्त्री० (बि०) हिरनी, मृगी।
**चराणा**—स० क्रि० लकड़ी कटवाना। पशुओं को चराना।
**चरान**—स्त्री० (कां०, कु०) चरागाह।
**चरान**—पु० (कां०) लकड़ी चीरने का काम।
**चरानिल**—पु० (शि०) Rubus biflorus.
**चरानी**—पु० (कु०, मं०) लकड़ी चीरने का काम करने वाला, आराकश।
**चरानुंए**—वि० चौरानबे।
**चरारू**—पु० (चं०) मरमौर में पाया जाने वाला झाड़ू।
**चराहड़ा**—पु० (कां०, ऊ०) लकड़ी चीरने वाला।
**चराहा**—पु० (सि०) चार रास्तों का संगम, चौराहा।
**चरिगली**—अ० (कु०) आने वाला चौथा वर्ष।
**चरिपड़ी**—स्त्री० (सि०) धान कूटने के बाद बचा बारीक आटा।

**चरीयूंट**—पुं० (सि०) बिल्कुल तंग खेत।
**चरीरी**—स्त्री० (कु०) आंखों में साबुन लगने से हुई जलन।
**चरुंजा**—वि० चौवन।
**चरुआ**—पु० (कां०, चं०) नीचे से गोलाकार तथा ऊपर से लंबे गले का पात्र।
**चरुआ**—पु० (कु०) देवता द्वारा जनसाधारण को दिया जाने वाला भोज।
**चरूढ़ि**—स्त्री० (सो०) पानी का थोड़ा बहाव।
**चरूहु**—पु० (सो०) पानी का थोड़ा बहाव; चश्मा।
**चरूरू**—पु० (मं०, कु०) Deutzia staminea.
**चरेड़**—वि० (सि०) कजूंस (नौकर)।
**चरेड़ा**—पु० (कु०) पक्षी का बच्चा।
**चरेढ़ना**—स० क्रि० (बि०) जलाना।
**चरेढ़िना**—अ० क्रि० (शि०) अंगड़ाई लेना।
**चरेलड़**—पु० (कां०) ईंधन रखने का स्थान।
**चरेरी**—स्त्री० (चं०) दर्द, पीड़ा, रह-रह कर उठने वाला दर्द।
**चरेरी**—स्त्री० (शि०) कटे या जले अंग पर जल लगने से होने वाली पीड़ा।
**चरेली**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) एक साग विशेष।
**चरैता**—पु० Swerfia chirata. 2. swrita cordata. 3. Swerita paniculata.
**चरोकणा**—अ० चिरकाल से।
**चरोटी**—स्त्री० पानी लाने या चावल पकाने का बड़ा बर्तन।
**चरोटू**—पु० पानी लाने या चावल पकाने का छोटा बर्तन।
**चरोटू**—पु० (सि०) चीड़ प्रजाति का वृक्ष।
**चरोड़ू**—पु० (चं०) बड़ी जूं।
**चरोणा**—स० क्रि० (सि०) किसी चीज़ का चीरा जाना, चीरना।
**चरोलियां**—स्त्री० (कां०) पकवान विशेष।
**चरोली**—स्त्री० (मं०) खूबानी या 'चीर' की सुखाई फांकें।
**चरोलू**—पु० (चं०) खूबानी की जाति के फल की गिरी।
**चरोलू**—पु० (कां०) जलेबी बनाने का बर्तन।
**चरौंजी**—स्त्री० (कां०) Buchnania latifolia.
**चरौंठा**—पु० दे० चरौली।
**चरौटा**—पु० (मं०, कां०, ह०) बड़ा पतीला।
**चरौली**—स्त्री० बेढब आकार एवं छिद्रों वाली रोटी।
**चर्खी**—स्त्री० (सि०) गन्ना पेलने का यंत्र।
**चर्ज**—पु० (सि०) ज़ुल्म, झूठा इल्ज़ाम। हैरानी, आश्चर्य।
**चर्मड़**—पु० (कां०) एक वृक्ष विशेष।
**चर्ह**—स्त्री० (चं०) मोटे शहतीर का खोल जिसमें पशुओं के लिए पानी रखा जाता है।
**चर्ही**—स्त्री० खट्टे-मीठे फल का एक वृक्ष विशेष; उसके फल।
**चर्ही**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) गेहूं की फसल में उगने वाला घास।
**चलंगी**—स्त्री० तांत्रिक कार्य, ओझा, (चेला) का कार्य।
**चलकणा**—अ० क्रि० (कु०) चोट आदि लगने से थोड़ा सा खून निकलना।
**चलकदा**—वि० (मं०, कु०) जिसकी आंखों में पानी हो, पनीली आंखों वाला।
**चळकदा**—वि० (कु०) चमकदार, तेलयुक्त।
**चलकाणा**—स० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) अच्छी तरह साफ करना।
**चलकोर**—स्त्री० (सो०) प्रकाश की किरण, चमक।
**चलकोरूना**—अ० क्रि० (सो०) दिशाओं का प्रकाशित होना।
**चलगारा**—पु० (कु०) चुभा हुआ ऐसा कांटा जो बहुत सालों बाद दर्द करता है।
**चलचुक**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) हेराफेरी।
**चलचैना**—अ० क्रि० (मं०) चिल्लाना।
**चलटे**—स्त्री० (सि०) पीतल का बर्तन।
**चळण**—पु० (सि०) सफेदा की किस्म का एक पेड़।
**चलणा**—अ० क्रि० चलना।
**चलदेवणा**—पु० (सि०) चौका।
**चलपात्रू**—वि० (कां०, ऊ०) अस्थाई।
**चलयादू**—पु० (मं०) चीड़ का छोटा पौधा, चीड़ का फल।
**चळयालू**—पु० (कु०) चीड़ के पौधों की टहनी।
**चळशा**—वि० (सो०) ऐसा (पकवान) जिसमें पानी और चिकनाई अलग-अलग दिखाई दे, अस्वादिष्ट सब्जी या दाल आदि।
**चलांक**—स्त्री० (सि०) मादा बारहसिंगा।
**चळा**—पु० (कां०) खेतों में पानी के निकास के लिए बनाई गई नाली।
**चळा**—पु० (शि०, सि०) घर के भीतर स्नान करने का स्थान विशेष।
**चलाइणा**—स० क्रि० (कु०) चलाया जाना।
**चलाई**—स्त्री० अन्न विशेष।
**चलाक**—वि० चालाक।
**चलाकउणा**—स० क्रि० (सि०) खेत से पानी का निकास निकालना।
**चलाकड़ी**—स्त्री० (सि०) चीड़ का फल।
**चलाकी**—स्त्री० (कु०) चालाकी।
**चलाखड़ी**—स्त्री० (बि०) चीड़ का फल।
**चलाठो**—पु० (शि०) चौलाई का घास।
**चळाड़**—स्त्री० (सो०) बथुआ प्रजाति का पौधा, चौलाई।
**चलाण**—पु० (शि०, सो०) Populus ciliata.
**चलाणा**—स० क्रि० बेवकूफ बनाना।
**चलाथु**—पु० (सि०) लस्सी के साथ खाया जाने वाला भुना हुआ आटा।
**चलादरू**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) चीड़ की पत्तियां।
**चलाप/पू**—पु० (चं०) चीड़ के पत्ते जो पशुओं के नीचे बिछाए जाते हैं।
**चलाफ**—पु० (कु०) दे० चलाप।
**चलाफू**—पु० (शि०) चीड़ के डाली सहित हरे पत्ते।
**चलामत**—पु० दे० चरनामत।
**चलारू**—पु० (सि०) दे० चलाप।
**चलारू**—पु० (सि०) चीड़ का फल एवं पत्ते।
**चळाळो**—पु० (शि०) चीड़ का जंगल।
**चलिया**—वि० (सि०) गिरा हुआ व्यक्ति, चरित्रहीन।

**चलींता**—वि० (कु०) मैला-कुचैला।
**चलींतिणा**—अ० क्रि० (कु०) गंदा होना, मैला होना।
**चलींतुऔंदा**—वि० (कु०) गंदा, मलिन।
**चलीठा**—पु० चावल का आटा।
**चलीठो**—पु० (शि०) चौलाई का आटा।
**चलीफणा**—अ० क्रि० (कु०) फिसलना।
**चलील**—स्त्री० (कु०) चीख।
**चलीला**—वि० (चं०) तीव्र और कसैला (स्वाद)।
**चलू**—पु० (कां०, ह०) बहुत छोटा खेत।
**चलेई**—स्त्री० (मं०) चौलाई।
**चलेई**—स्त्री० (कां०) काई।
**चलेटू**—पु० (कां०, ह०) पौधे की सूखी डंडी।
**चळेपणा**—स० क्रि० (कु०) दबाना।
**चळेवणा**—स० क्रि० (सो०) गोबर, मिट्टी और गो मूत्र से चूल्हे को लीपना।
**चळेवुणा**—अ० क्रि० (सो०) कालिख लगना।
**चलेरी**—स्त्री० (मं०) दे० चरेली।
**चलोटु**—पु० चीड़ का छोटा पौधा।
**चळोथ**—पु० (सो०) बालों में चिकनाई की अधिकता।
**चलोथी**—स्त्री० (सि०) चौलाई की रोटी।
**चलोथे**—पु० (शि०) चौलाई तथा कोदे के मिश्रित आटे की रोटी।
**चलोला**—वि० (कां०, चं०, ह०) तीखा, चंचल।
**चलौंज**—पु० (चं०) Populsciliata.
**चलौण**—पु० (कु०, शि०) चीड़ का जंगल।
**चलोहण**—स्त्री० (मं०) चीड़ का जंगल।
**चल्हयाउड़णा**—अ० क्रि० (कु०) झूलना।
**चल्हा**—पु० (बि०) उड़द आदि दालों के पत्तों को हानि पहुंचाने वाला कीट।
**चल्ही**—स्त्री० (कां०, चं०, ह०) पानी के निकास की छोटी नाली।
**चळ्ही**—स्त्री० (चं०) छोटी मुर्गी।
**चल्हु**—पु० (चं०) मुर्गी के बच्चे, चूज़े।
**चल्होड़**—स्त्री० (कां०) मछलियां पकड़ने की क्रिया।
**चवकण**—स्त्री० (शि०, सि०) स्त्रियों का कोट।
**चवगला**—पु० (कु०) लंबा तथा खुला कुर्ता।
**चवणी**—स्त्री० (चं०) चांदनी।
**चवाखा***—वि० (सो०) चार आंखों वाला।
**चवेड़**—पु० (सि०) पक्षी-विशेष।
**चशुकु**—पु० (मं०) कमर लचकने का भाव।
**चशेणा**—अ० क्रि० (सि०) किसी चीज़ का चीरा जाना।
**चस**—स्त्री० कमर में विशेष प्रकार का दर्द।
**चस**—अ० (कु०) झट, शीघ्र।
**चसका**—पु० आदत।
**चसाका**—पु० (चं०) चिपकन; अचानक उठी 'चस' की दर्द।
**चस्कर**—वि० (शि०) बहुत ही सुस्त (आदमी)।
**चस्स**—स्त्री० कंधों की नस के खिसक जाने का भाव।
**चहकदा**—वि० (कु०) गीला, भीगा हुआ।
**चहकदा**—वि० चमकीला; प्रसन्न।
**चहणा**—स० क्रि० (कु०) सूखी घास का ढेर लगाना।
**चहू**—पु० (कां०) परशु, कुल्हाड़ा।
**चहगड़ा**—पु० (बि०, सो०) झगड़ा।
**चहगु**—पु० (बि०) कमीज़।
**चहल**—स्त्री० (सो०) आंच।
**चांई**—वि० (चं०) तेज़; कृश, कमज़ोर।
**चांऊं**—वि० (चं०) दुबला।
**चांऊ**—वि० (कां०, ऊ०, ह०) बहुत छोटा।
**चांएं-चांएं**—अ० खुशी-खुशी।
**चां:ग**—पु० (कु०) झाड़ी युक्त पहाड़ी।
**चांग**—स्त्री० मुर्गे की बांग।
**चांग**—पु० (कु०) शरीर।
**चांगड़**—पु० (सो०) मकान की छत के नीचे का हिस्सा।
**चांगड़**—पु० (शि०, सो०) छत के नीचे का स्थान जहां सामान रखा जाता है।
**चांगर**—स्त्री० (कां०, चं०) बारीक पत्थर।
**चांगर**—पु० (शि०) पीठ।
**चांगरू**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) पहाड़ी बैल।
**चांगरू**—वि० (चं०) चालाक।
**चांगा**—वि० अच्छा, सुंदर, बढ़िया।
**चांगा चुखा**—वि० ठीक-ठाक।
**चांगी**—वि० (सि०) स्वच्छ।
**चांगो**—वि० (मं०) अच्छा, स्वच्छ।
**चांचड़ा**—वि० (कु०) घायल।
**चांचिल**—वि० (मं०) पवित्र रहने वाला।
**चांटणो**—स० क्रि० (सि०) पीछा करना।
**चांटा**—पु० दे० चंड।
**चांड**—स्त्री० (कु०) नखरे।
**चांड**—स्त्री० (सि०) चिल्लाहट।
**चांड**—पु० (बि०) मज़ाक।
**चांडणा**—स० क्रि० (सो०) थप्पड़ मारना।
**चांडणा**—स० क्रि० गढ़ना, किसी धातु को गढ़ना।
**चांडणा**—स० क्रि० (कु०) निशाने पर मारना।
**चांडा**—पु० (शि०, सि०) चंड।
**चांडा**—वि० (बि०) बिल्कुल निकम्मा।
**चांडिणा**—अ० क्रि० (कु०) निशाना लगाया जाना।
**चांडुणा**—अ० क्रि० (सो०) थप्पड़ मारा जाना।
**चांडू**—वि० (कु०) नखरेबाज़।
**चांडू**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) नशा करने वाला।
**चांथला**—वि० (कु०) कमज़ोर।
**चांदणा**—पु० (शि०, सि०) मिट्टी के तेल का दीप। चांदनी, प्रकाश।
**चांदे**—स्त्री० (मं०) चांदी।
**चांप**—पु० (सि०) बदूंक का पुर्जा।
**चांप**—पु० स्त्री० छाती का मांस।
**चांफ**—पु० (कु०) एक चमकीला कागज़ विशेष।
**चांबड़**—पु० (बि०) बड़े बाल।

चांबड़—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) भूत प्रेत का प्रभाव।
चांबड़—पु० (कु०) पतीला।
चांबड़ा—पु० (कु०, सि०) खाल, चमड़ा।
चांबड़ी—स्त्री० (कु०) पतीली।
चांबड़ी—स्त्री० चमड़ी।
चांबड़ू—पु० (कु०) छोटा पतीला।
चांबे—पु० (सि०) मुर्गे की खास नस्ल।
चांबो—पु० (शि०, सि०) तांबा।
चांबो—पु० हैरानी।
चांळू—पु० (कु०) छलनी।
चांवा—पु० (ह०) लोहे का फावड़ा।
चांविया—पु० (सि०) पानी गरम करने का बर्तन।
चाःड़—पु० शिकार।
चाःणा—स० क्रि० चाहना।
चाःणी—स्त्री० (चं०) चाशनी।
चा—स्त्री० चाय।
चा—पु० (कां०) प्रसन्नता, चाव।
चा—अ० (सि०) पक्षियों को उड़ाने के लिए प्रयुक्त शब्द।
चाआ—स्त्री० (कु०) खारिश।
चाइना—पु० धान की एक किस्म।
चाइयो—अ० (सो०) चाहिए।
चाईत—पु० (सि०) पीड़ा, दुःख, गम।
चाईतो—पु० (सि०) दर्द।
चाईतो—वि० (सि०) कठिन, मुश्किल।
चाउंश—स्त्री० (कु०) एक झाड़ी विशेष जिसके आंगन साफ करने के लिए झाड़ू बनते हैं।
चाउ—पु० (कु०) इच्छा।
चाउड़—पु० (मं०) घंसने की क्रिया।
चाउड़—वि० (कु०, कां०, ह०) बिगड़ा हुआ।
चाउड़—स्त्री० (कु०) दूसरी मंज़िल का बरामदा जिसका फर्श लकड़ी का होता है।
चाउळ—पु० (कु०) चावल।
चाउला—वि० शौकीन।
चाऊथण—वि० (कां०, कु०, ह०) निर्लज्ज (औरत)।
चाऊथाज़ौर—पु० (कु०) चौथे दिन आने वाला ज्वार।
चाऊळ—पु० चावल।
चाओ—पु० शौक, इच्छा।
चाक—स्त्री० छेद, दरार।
चाक—पु० सिर में लगाया जाने वाला सोने या चांदी का आभूषण जो सुहाग की निशानी होती है।
चाक—पु० वह यंत्र जिससे मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं।
चाक—पु० एक लकड़ी या मिट्टी का पात्र जिसमें शकर बनाई जाती है।
चाक—स्त्री० (शि०, सि०) विवशता के कारण चबाते रहने की क्रिया।
चाकचिक—वि० (कु०) चकनाचूर।
चाकटी—स्त्री० (कु०, मं०) चावल का नशीला पेय पदार्थ।
चाकणा/णो—स० क्रि० (शि०, सि०) चबाना।
चाकणा—स० क्रि० (सो०) उठाना।
चाक फुल्लियां—स्त्री० सिर के गहने।
चाकर—पु० (चं०, मं०) सेवक, देवता की सेवा करने वाला।
चाकर—पु० (कु०) चकोर।
चाकरा—पु० (शि०, सि०) चकोर।
चाकराणे—स्त्री० (शि०) निम्न कार्य करने वाली नौकरानी।
चाकरी—स्त्री० नौकरी।
चाकरी—स्त्री० (कु०, मं०) किसी मेले में जब देवता आदि निकाला जाता है तो किसी घर से देवता के पास जाने वाला तथा देवता की सेवा करने वाला घर का मुखिया।
चाकरू—पु० (कु०) चकोर का बच्चा।
चाकळ—पु० (कु०) पशुओं को दिया जाने वाला अनाज।
चाकळा—पु० (सो०) रोटी पकाने का चकला।
चाकळा—पु० (कु०) बैठने का घास का बना आसन।
चाका—पु० (सि०) देवता का मुख्य पत्थर।
चाका—पु० (कु०) पैरों की उंगलियों के बीच में बरसात के मौसम में होने वाली खुजली।
चाका—पु० (कु०) मोटी स्लेट।
चाकी—स्त्री० (मं०) चक्की, घराट।
चाकी—स्त्री० साबुन की टिक्की।
चाकुंडा—पु० (ऊ०, कां०) Cassia occidentalis.
चाकुरो—पु० (शि०) चकोर।
चाकुळ—पु० (शि०) एक प्रकार की झाड़ी जिसके बेंत बनते हैं।
चाकू—पु० (कु०) एक प्रकार की झाड़ी जो जलाने के काम आती है तथा जिसके झाड़ू भी बनते हैं।
चाकौ—वि० (कु०) सधवा (शूद्राणी)।
चाक्का—पु० (मं०) स्लेट, चौड़ा व पतला पत्थर।
चाख—स्त्री० स्वाद।
चाख—पु० (कु०) अधिक संतान।
चाखणा/णो—स० क्रि० (कु०, शि०, सो०) चखना, स्वाद लेना।
चाखमाख—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) दे० जूठ-परीठ।
चाखा—वि० (बि०) चखने वाला।
चाखुआदा—वि० (मं०) सड़ा हुआ (भोजन)।
चाखू—पु० (कु०) चाकू।
चाखू—वि० (ऊ०, कां०, ह०) लालची।
चाखे—स्त्री० (सि०) इल्लत, बुरी आदत, व्यसन।
चागरोआ—अ० (शि०) पशुओं को बुलाने का संकेत।
चाङ—पु० (कु०) कांटों को इकट्ठा करने का लकड़ी का दो सिरों वाला डंडा।
चाच—पु० (कु०) 'पतराह' पकड़ने की रस्सी; जुए की रस्सी।
चाच़—पु० (कु०) लकड़ी का चौखटा जिस पर बर्तन रखते हैं।
चाच़—पु० (कु०) 'फाड़' की ऐसी स्थिति जब वह फट जाता है।
चाचड़—पु० पशुओं का खून चूसने वाला खटमल से बड़ा जीव विशेष जो पशुओं की चमड़ी के साथ चिपका रहता है।
चाचड़—पु० (सो०) ढेर, समूह।
चाचड़—पु० (शि०) कठफोड़ा।

**चाचा**—स्त्री० (मं०) बकरियों के बाल झड़ने की बीमारी।
**ज़ाज़ा**—पु० (शि०, सि०) टखने और पिंडली के बीच का भाग।
**चाची**—स्त्री० (कु०) दूध से मक्खन निकालने के लिए प्रयुक्त मिट्टी के घड़े के मुख पर लगाया जाने वाला घास का बना गोल ढक्कन।
**चाछी**—स्त्री० (कु०) दहलीज़।
**चाछी**—स्त्री० (कु०) चाची।
**चाचू**—पु० (कां०) चाचा।
**चाच्छी**—स्त्री० (कु०, मं०) पत्थर की चिनाई में बीच की मंज़िल पर पड़ने वाली कड़ियां।
**चाचड़ना**—अ० क्रि० (मं०) व्यर्थ हाथ-पांव मारना।
**चाचड़िना**—अ० क्रि० (कु०) कोशिश करना, हाथ-पांव मारना, संघर्ष करना।
**चाट**—स्त्री० (कु०) आदत, व्यसन।
**चाट**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) नमक का मोटा टुकड़ा जो पशु को चाटने के लिए दिया जाता है।
**चाट**—स्त्री० (बि०) बड़ी परात।
**चाटड़ा**—वि० (कां०, चं०, ह०) लालची।
**चाटड़ा**—वि० (सि०) तंग, कम चौड़ा, संकीर्ण।
**चाटणा**—स० क्रि० (कु०, शि०, सि०) चाटना।
**चाटणी**—स्त्री० (सि०) चटनी।
**चाटणे**—स्त्री० (शि०) चटनी।
**चाटणो**—स० क्रि० (सि०) चाटना।
**चाटनी**—स्त्री० (सो०) चटनी।
**चाटा**—पु० (कु०, सि०) लकड़ी या पत्थर का ढेर।
**चाटा**—पु० (कां०, बि०, ह०) पानी का बड़ा बर्तन।
**चाटा**—वि० (कु०) तंग (जगह)।
**चाटी**—स्त्री० दही बिलोने का मिट्टी का बर्तन।
**चाटी**—स्त्री० (कु०) थाली।
**चाटी**—स्त्री० हाथ की ताली।
**चाटु**—पु० (चं०) बच्चों को धीरे से लगाई जाने वाली चपत।
**चाटू**—पु० (चं०) कोड़ा।
**चाटो**—पु० (शि०) लकड़ी या पत्थर का ढेर।
**चाठड़ू**—वि० (कु०) चार-पांच प्रस्थ का माप।
**चाठा**—पु० (कु०) 'किरडे' का निचला भाग जिसके सहारे उसे खड़ा किया जाता है।
**चाठा**—पु० (सि०) पत्थर या लकड़ी का व्यवस्थित ढेर।
**चाठा**—पु० (शि०) माथा।
**चाठू**—पु० (कु०) घड़े या गोल बर्तन का निचला भाग जिसके सहारे उसे खड़ा किया जाता है।
**चाठे**—स्त्री० (शि०) खोपड़ी।
**चाड**—पु० (मं०) चाव।
**चाड़**—पु० (चं०) राजा का पदस्थ।
**चाड़**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) ठूंस(ना)।
**चाड़णा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) चढ़ाना।
**चाड़ना**—स० क्रि० (सो०) झाड़ना।
**चाड़नी**—स्त्री० (मं०) आटा छानने की छलनी।
**चाड़ा**—स्त्री० (कु०) गप्पें।
**चाड़ा**—पु० (कां०) नदी पार करने के लिए रखे पत्थर।
**चाड़ी**—स्त्री० ताली।
**चाडुआ**—पु० (सि०) लकड़ी की कलछी।
**चाड़े**—अ० (कु०) सिवा, अतिरिक्त।
**चाड़ोई**—स्त्री० (शि०) कलछी।
**चाड्डा**—पु० (कां०) धौंकनी।
**चाढ़**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) शिकार हेतु डाला घेरा।
**चाढ़**—स्त्री० चढ़ावा।
**चाढ़**—स्त्री० चूल्हे पर पकने हेतु रखा गया खाद्य पदार्थ।
**चाढ़णा**—स० क्रि० चढ़ाना।
**चाढ़ा**—पु० (चं०) उकसाने का भाव।
**चाण**—पु० (शि०) ज़ेवर, आभूषण।
**चाण**—पु० (मं०) औलाद, बालक।
**चाणक**—अ० अचानक।
**चाणका**—पु० (सि०, सि०) पीठ का दर्द।
**चाणचक**—अ० (सि०) अचानक।
**चाणचक**—वि० (सो०) बेकार, व्यर्थ।
**चाणना**—स० क्रि० (शि०, कु०) भोजन पकाना।
**चाणनी**—स्त्री० (मं०) छलनी।
**चाणनो**—स० क्रि० (शि०) बनाना, पकाना।
**चाणपड़ेओं**—पु० (मं०) औज़ार। आभूषण।
**चाणे**—पु० ओले।
**चाणोतरा**—वि० (कां०) चालाक।
**ज़ास**—पु० (शि०, सि०) स्थान।
**चातिया**—वि० (सि०) बीमारी या बुढ़ापे के कारण अशक्त (व्यक्ति) जो घर से दूर न जा सके।
**चाथड़ा**—पु० (शि०) शरीर पर पड़ा दाग।
**चाथर**—स्त्री० (कु०) चूल्हे के नीचे का मोटा पत्थर।
**ज़ाथर**—स्त्री० (कु०) आधार, लकड़ी के संदूकों में नीचे लगा मोटा तख़्ता, पतीले का निचला तला।
**चादर**—स्त्री० चुनरी, दुपट्टा।
**चादर**—स्त्री० लोहे की चादर।
**ज़ादर**—स्त्री० (कु०) चादर।
**चादरपाणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) पति की मृत्यु के पश्चात् उसकी स्त्री को दूसरे मर्द द्वारा चादर डालना और सबके सम्मुख उसका पति बनना।
**चादरपाणी**—स० क्रि० कफन डालना।
**चादरा**—पु० (सि०) रेशमी धोती।
**चादरू**—पु० (कु०, शि०, सि०) दुपट्टा, पट्टू, छोटा ऊनी कंबल।
**चादरू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) चुनरी।
**ज़ादरू**—पु० (कु०) फूल की कढ़ाई वाला पट्टू।
**चान**—स्त्री० (चं०) भूमि पर ऊपर-ऊपर से सफाई करने की क्रिया।
**चानज**—वि० (कां०) अनोखा।
**चानण**—पु० (मं०) उजाला, प्रकाश।
**चानणा**—पु० (सो०) दीपक।
**चानणी**—स्त्री० चांदनी।

**चानणी**—स्त्री० शामियाना, चंदोवा।
**चानणी**—स्त्री० (कां०, कु०) माश आदि पीसने की शिला पर किए गए छोटे-छोटे छेद।
**चानमारी**—स्त्री० बंदूक द्वारा निशाने लगाने का अभ्यास।
**चाना**—पु० (शि०, सि०) अखरोट आदि की गिरी।
**चाना**—पु० (सो०) अंश। बीज।
**चाना**—पु० (सि०) घर की बगल वाली जगह, घर के साथ का स्थान।
**च़ाना**—पु० (कु०) शरीर पर चमड़ी उतरने से पड़ा निशान, धब्बा।
**चानी**—स्त्री० (मं०) अखरोट आदि की गिरी।
**चानो**—पु० (ऊ०, कां०) एक विशेष देवता।
**चान्ने**—पु० (वि०) मछली के शरीर की गोल सी चमकदार चमड़ी।
**च़ाप**—पु० (सि०) बकरे के सीने की हड्डी।
**चापटा**—वि० (सि०) चौड़ा, चपटा।
**चापटी**—स्त्री० (शि०) पतली रोटी।
**चापणा**—स० क्रि० चबाना।
**च़ापणा**—स० क्रि० (कु०) चबाना।
**चापणी**—स्त्री० मिट्टी का ढक्कन।
**चापणू**—पु० (मं०) पशुओं का खाद्य।
**चापरचिन्ह**—स्त्री० (कु०) किसी भी जगह बिखरी हुई चीजें, गंदगी, कीचड़।
**चापरणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) परवाह न करना।
**चापरना**—अ० क्रि० (शि०, सि०) कठिन लगना।
**च़ापरनो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) विवश होना।
**चापली**—स्त्री० (कु०, शि०) चप्पल।
**च़ापिणा**—अ० क्रि० (कु०) चबाया जाना।
**चापीणा**—अ० क्रि० (चं०) कपड़े से मैल का साफ न होना।
**चाबणा**—स० क्रि० (सो०) चबाना।
**चाबणो**—स० क्रि० (शि०) चबाना।
**चाबना**—स० क्रि० (कां०, सि०) चबाना।
**चाबरे**—पु० (शि०) एक प्रकार का मोटा अनाज जो प्रायः ऊँचे स्थानों पर उगाया जाता है।
**चाम्ब**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) विशेष औषधिक गुण वाली जड़ी बूटी।
**च़ाम**—पु० (कु०) दलदल, दलदल भूमि।
**च़ाम्हड़**—पु० (कु०, सि०) पानी के गड्ढे, डाबर।
**चाम**—पु० चमड़ा।
**चामक**—पु० (कु०) चमत्कार।
**चामक**—पु० (कां०, चं०, ह०) चाबुक।
**चामकली**—स्त्री० (कु०, कां०, ह०) गले का ज़ेवर विशेष।
**चामचड़िक**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) एक विशेष प्रकार की छोटी चिड़िया।
**चामचीण**—पु० (चं०) अखरोट के फलों को नुकसान पहुंचाने वाला पक्षी।
**चामटोइला**—वि० (शि०) रंग-बिरंगा।
**चामड़ा**—पु० (शि०) चमड़ा।
**च़ामड़ी**—स्त्री० (कु०) चमड़ी।
**चामड़ो**—पु० (कु०) चमड़ा।
**चाम्बड़ो**—पु० (शि०) चमड़े की एक किस्म।
**चाम्हण**—स्त्री० (चं०) एक वृक्ष विशेष।
**चायता**—वि० (सो०) कठिन।
**चार**—पु० अचार।
**च़ार**—वि० तीन और एक का जोड़, चार।
**चारज**—पु० ऐसा व्यक्ति जिसे मृत व्यक्ति के नाम पर दान दिया जाता है और जो क्रिया-कर्म आदि कर्मकांड कराता है, आचार्य।
**चारटा**—वि० (ऊ०, चं०, मं०) चराने वाला।
**चारड़ा**—पु० (चं०) जंगली जानवरों को डराने के लिए बनाई गई नकली मनुष्याकृति।
**चारणा**—स० क्रि० (सो०) चुगाना।
**चारना**—स० क्रि० चराना। किसी को मूर्ख बनाना।
**च़ारना**—स० क्रि० (कु०) चराना।
**चारफाड़**—पु० बुरी तरह तहसनहस।
**चारबचार**—पु० सोच-विचार।
**चारबिहा**—वि० अस्सी।
**चारमेड़िना**—अ० क्रि० (कु०) पत्तों का सूखकर बारीक टुकड़े होना।
**चारा**—पु० (सि०) गोमूत्र व पानी का मिश्रण।
**चारा**—पु० उपाय, ढंग।
**चारा**—पु० (चं०) पेट का ऊपरी भाग।
**च़ारिना**—स० क्रि० (कु०) चराया जाना।
**चाल**—स्त्री० षड़यंत्र।
**च़ाल**—स्त्री० (कु०, मं०) नीति, चाल।
**चालचलण**—पु० चालचलन।
**चालणा**—पु० (सि०) तर्जनी में होने वाला फोड़ा।
**चाळणा**—स० क्रि० (सि०) छानना।
**च़ालणा**—अ० क्रि० (कु०) चलना।
**चालणे**—स्त्री० (शि०) आटा छानने की छलनी।
**चालणो**—अ० क्रि० (शि०) चलना।
**चालणो**—पु० (सि०) छलनी।
**चाळणो**—स० क्रि० (शि०) छान कर अनाज साफ करना।
**चाळन**—पु० (मं०) अनाज छानने की छलनी।
**च़ाळना**—स० क्रि० (कु०) छलनी से अनाज छानना।
**चालबाज**—वि० चालाक।
**चालबाजी**—स्त्री० जालसाजी, कई प्रकार की युक्तियां।
**चाला**—पु० (चं०) भेड़-बकरियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर बैठाने की क्रिया।
**चाळा**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) बहाना, नखरा।
**च़ाला**—पु० (कु०) रिवाज़।
**च़ाळा**—पु० (सि०) उलटा काम; भूचाल, उथल-पुथल।
**चालिणा**—अ० क्रि० (कु०) चला जाना।
**चाली**—स्त्री० (चं०) मासिक धर्म।
**चाळी**—वि० चालीस।
**चाळी**—स्त्री० (कां०, चं०) छत से पानी टपकने की क्रिया।

**चालु**—वि० (शि०) चलता पुर्ज़ा।
**चाव**—पु० शौक।
**चावड़**—पु० (मं०) चावल।
**चावणा**—स० क्रि० चबाना।
**चाश**—वि० (सि०) चालाक, चतुर, होशियार।
**चाशा**—स्त्री० चीनी अथवा गुड़ की चाशनी, पुट, लेस।
**चाशा**—पु० (शि०) पशु-चारा।
**चाशण**—स्त्री० (कु०) चाशनी।
**चाशणी**—स्त्री० (कां०, चं०, मं०) मेवे आदि से बनाई गई विशेष चाशनी।
**चाशी**—स्त्री० (शि०) ढेर।
**चाशोणी**—स्त्री० (शि०) दे० चाशण।
**चास**—स्त्री० (सि०) दे० चाशण।
**चाहंबड़**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) भूत-प्रेत का प्रभाव।
**चाह**—स्त्री० चाय।
**चाह**—स्त्री० (शि०) इच्छा।
**चाहक**—वि० इच्छुक।
**चाहड़**—स्त्री० (कां०, बि०) झिड़की।
**चाहड़**—स्त्री० (सि०) इकट्ठे हो कर किसी जंगली जानवर को भगाने की क्रिया।
**चाहड़**—स्त्री० भेड़-बकरियों का दल।
**चाहड़**—पु० (कु०, शि०) ढलानदार पहाड़, बड़ी चट्टान।
**चाहड़णा**—स० क्रि० चढ़ाना।
**चाहड़ां**—पु० (मं०) खरगोश।
**चाहड़ु**—वि० वृक्षों पर चढ़ने में प्रवीण।
**चाहडू**—पु० (मं०) एक विशेष देवता।
**चाहणा**—स० क्रि० (कु०) चाहना।
**चाहणी**—स्त्री० (कां०, चं०, ह०) शहद व चीनी का बना तरल पदार्थ।
**चाहरिणा**—स० क्रि० (कु०) चराया जाना।
**चाहल**—पु० (बि०) झरना।
**चाहितो**—वि० (शि०) कठिन।
**चाहुटा**—पु० (कु०) चार पदों का विशेष शैली में गाया जाने वाला गीत।
**चाहूं माहूं**—पु० (कां०, कु०) बाल-बच्चे।
**चाहड़**—स्त्री० (बि०) आखेट के अवसर पर मचाया जाने वाला शोर, व्यर्थ शोर।
**चाहड़न**—स्त्री० (बि०) व्यर्थ शोर मचाने वाली।
**चाहड़ी**—पु० (बि०) आखेट के लिए शोर मचाने वाला।
**चाहणो**—स० क्रि० (शि०) चाहना।
**चिंगणा**—अ० क्रि० चीखना, चिल्लाना।
**चिंगरे**—स्त्री० (शि०, सि०) रीढ़ की हड्डी।
**चिंगो**—पु० (सि०) सोने के लिए बनाया गया लकड़ी का मचान।
**चिंघणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०, चं०) चीखना।
**चिंडका**—पु० (सि०) चुटकी, हाथ से किसी अंग पर काटने की क्रिया।
**चिंडी**—स्त्री० (शि०) चिढ़।
**चिंडी**—स्त्री० (सि०) मनुष्य में देवता के प्रवेश होने की क्रिया।
**चिंथी**—स्त्री० (शि०) यों ही।
**चिंदणा**—अ० क्रि० (चं०) सोचना।
**चिंदणा**—स० क्रि० (कां०) विवाह उत्सव पर वर द्वारा वधु की मांग में सिक्कों को चिनना।
**चिंधका**—अ० (कु०) यों ही।
**चिंधिए**—अ० (कु०) व्यर्थ में।
**चिंबड़ना**—अ० क्रि० चिपकना।
**चिंबड़ना**—अ० क्रि० (कां०) भूत प्रेत का लगना।
**चिंबड़ाण**—स्त्री० (चं०, सि०) चिपकाने की लालसा।
**चिंबड़ी**—स्त्री० (सि०) मादा ततैया।
**चिंमड़ी**—स्त्री० (कु०) लाल रंग का कीट-पतंग जो छेड़ने पर डंक मारता है।
**चिंमड़ी**—स्त्री० (शि०, सो०) मधु मक्खी की तरह का एक कीट विशेष।
**चिअंक**—स्त्री० (शि०) घृणा।
**चिआऊलीए**—पु० (शि०) बाराती।
**चिऊंटा**—पु० (चं०) चिमटा।
**चिऊंटा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) एक कीट विशेष जो काटता है।
**चिऊंटी**—स्त्री० (चं०) चींटी।
**चिऊ**—पु० (चं०) बरास के फूल।
**चिऊ**—स्त्री० (सि०) चीड़।
**चिऊली**—स्त्री० (बि०) कांटेदार झाड़ी।
**चिक**—स्त्री० मिट्टी।
**चिक**—स्त्री० द्वार पर टांगने हेतु तीलियों का बनाया गया पर्दा।
**चिकचिक**—स्त्री० व्यर्थ का शोर।
**चिकची**—स्त्री० (सि०) गीला पदार्थ या मिट्टी।
**चिकटा**—वि० तैलीय, तेलयुक्त।
**चिकडू-मिकडू**—वि० (सि०) टेढ़ा-मेढ़ा।
**चिकड़ो**—पु० (शि०) कच्चे चावल।
**चिकड़ोमूड़ो**—पु० (शि०) कच्चे चावलों का बनाया गया 'मूड़ा'।
**चिकणा**—वि० चिकना, बारीक।
**चिकणा**—स० क्रि० (सि०) दबाना।
**चिकणोळो**—वि० (शि०) चिकना।
**चिकनाट**—स्त्री० चिकनी मिट्टी; चिकनाहट।
**चिकमिक**—स्त्री० (कु०) चकमक, झिलमिल।
**चिकरा**—पु० (मं०) कीचड़।
**चिकु**—पु० (कां०, बि०) चिड़िया।
**चिकू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) एक पक्षी विशेष का स्वर।
**चिकोणा**—वि० (मं०) त्रिकोणा।
**चिक्कड़**—पु० पशुओं का मलमूत्र।
**चिक्कड़**—पु० कीचड़।
**चिक्कणा**—वि० बारीक; फिसलने वाला।
**चिक्खा**—स्त्री० (मं०) चिता।
**चिक्टा**—वि० (सि०) लालची।
**चिख**—स्त्री० द्वार पर टांगने हेतु तीलियों का बनाया गया पर्दा।
**चिख**—स्त्री० चिता।

**थिखटा**—वि० (शि०) चिकना।
**थिखड़**—पु० (कां०) तलैया, छोटा ताल।
**थिखड़ी/ड़े**—स्त्री० दे० किलण।
**थ़िखड़ी**—स्त्री० (कु०) लकड़ी का छोटा व पतला टुकड़ा।
**थिखळी**—स्त्री० (कु०) मिट्टी खोदने की छोटी 'किलण'।
**थिखुड़ी**—स्त्री० (कु०, शि०, सि०) छोटी कुदाली।
**थिगड़**—पु० (शि०) कमर से पीठ तक का भाग।
**थिगिखणा**—स० क्रि० श्रृंगार करना।
**थिगु**—पु० (शि०) बकरी का बच्चा; छोटा बच्चा।
**थ़िगू**—पु० (कु०) पुराने समय में तिब्बत से आने वाले बकरों की एक किस्म जिसकी बारीक ऊन से पशम बनती है।
**थिचड़**—वि० (शि०, सि०) कंजूस।
**थिचड़**—वि० (ह०) टूटा-फूटा (सामान)।
**थिचड़**—पु० पशुओं का खून चूसने वाला कीट विशेष।
**थिचड़**—पु० (शि०) Rhammus purpureca.
**थिचड़ेआलू**—पु० (कु०) अरवी की एक किस्म।
**थिचला**—वि० तेज़ ज़ुबान वाला।
**थिचला**—वि० (शि०) बहुत कमज़ोर।
**थिचली**—वि० तेज़ (मिर्च), तेज़ ज़ुबान वाली।
**थिचली**—स्त्री० सबसे छोटी उंगली।
**थिचियाखण**—स्त्री० (चं०) मांस खाने की इच्छा।
**थिच्वी**—पु० (चं०) पकाया हुआ मांस।
**थिछरी**—स्त्री० (मं०, कु०) Plectranthus rugosis.
**थिजकणा**—स० क्रि० (कां०, बि०) बारीक-बारीक काटना।
**थिट**—स्त्री० चींटी।
**थिटकणी**—स्त्री० (कु०) सिटकिनी।
**थिटक-मिटक**—स्त्री० दिखावट, दिखावा।
**थ़िटका**—वि० (कु०) तैलीय, तेलयुक्त।
**थिटकोणी**—स्त्री० (सि०) सिटकिनी।
**थिटजोले**—स्त्री० (शि०) चींटी।
**थिटड़ा**—वि० सफेद।
**थिटण**—स्त्री० (कु०) पशुओं का खून चूसने वाला खटमल से बड़ा जीव विशेष जो पशुओं की चमड़ी के साथ चिपका रहता है।
**थिटणा**—अ० क्रि० कीड़े-मकोड़े द्वारा काटा जाना।
**थिटमकौड़ी**—स्त्री० (कु०) चींटी की एक किस्म जिसके काटने से ज़ख्म हो जाता है।
**थिटिणा**—अ० क्रि० (कु०) कीट आदि द्वारा काटा जाना।
**थिट्टू**—पु० (शि०) दे० किरडा।
**थिट्टू**—वि० (बि०, मं०) गौर वर्ण, सफेद।
**थिटो**—वि० (सि०) सफेद।
**थिट्टखरीटा**—वि० चितकबरा।
**थिट्टा**—पु० (मं०) बड़ी चींटी।
**थिट्टा**—वि० सफेद।
**थिट्ठा**—पु० लंबा पत्र।
**थिट्ठी**—स्त्री० पत्र।
**थिठा**—वि० (कु०) काला।
**थिड़ंग**—स्त्री० चिंगारी।
**थिड़**—स्त्री० घृणा।
**थिड़कणा**—अ० क्रि० अंकुरित होना, पुष्पित होना।
**थिड़कणा**—अ० क्रि० तिलमिलाना।
**थिड़गाणो**—अ० क्रि० (शि०) कान में पीड़ा होना।
**थिड़थिड़**—अ० व्यर्थ में ही बोलते रहने का स्वभाव।
**थिड़तरा**—स्त्री० (मं०) हरितालिका।
**थिड़न**—पु० (सि०, सो०) दे० चिटण।
**थिड़ना**—अ० क्रि० धूप से फली का फूटना।
**थिड़ना**—अ० क्रि० सर्दी में हाथ-पांव की चमड़ी का फटना।
**थ़िड़स**—स्त्री० गंदगी से पांव या हाथ की अंगुलियों में होने वाले फोड़े-फुंसियां जिनसे खारिश होती है।
**थिड़िणो**—अ० क्रि० (शि०) तंग आना।
**थिड़ी**—स्त्री० बालों में लगाया जाने वाला चांदी का गोलाकार आभूषण।
**थिड़ी**—स्त्री० चिड़िया।
**थिड़ीत्री**—स्त्री० (कां०, बि०, मं०) वन्य प्राणियों की मिट्टी की मूर्तियां।।
**थिड़ीमार**—पु० पक्षियों का शिकारी; एक पक्षी जो अन्य छोटे पक्षियों को मार कर खाता है।
**थिड़ीमार**—वि० आवारा (व्यक्ति), बेकार (व्यक्ति)।
**थिडू**—पु० छोटा पक्षी।
**थिड़ू-मिड़ू**—पु० छोटी-छोटी लकड़ियां।
**थिड़े**—स्त्री० (शि०) चिड़िया।
**थिडेरी**—स्त्री० घास का ढेर।
**थ़िढ़**—स्त्री० (कु०) घृणा।
**थिढ़ना**—अ० क्रि० ईर्ष्या करना।
**थ़िढ़िना**—अ० क्रि० (कु०) घृणा होना, छुआछूत अनुभव करना।
**थिढ़ैन्ह**—स्त्री० (कां०, चं०) मूत्र की दुर्गंध।
**थिणणा**—स० क्रि० (सि०) चिनाई करना।
**थिणतर**—स्त्री० चिनाई, निर्माण कार्य।
**थिणना/नो**—स० क्रि० चिनना।
**थिणया**—स्त्री० (कां०, चं०, बि०) एक प्रकार का अन्न जिसका भात बनता है।
**थिणा**—स्त्री० (सि०) दे० चीणी।
**थिणा**—पु० दीवार चिनने वाला।
**थिणोई**—स्त्री० (शि०) दे० चीणी।
**थ़ित**—वि० घायल, मूर्छित, बिल्कुल, पटकनेकी क्रिया।
**थितकबरा**—वि० रंग-बिरंगा।
**थितणा**—स० क्रि० चित्रकारी करना।
**थितबितरा**—वि० रंग-बिरंगा।
**थितरक**—पु० (चं०) Plumbago zeylanica.
**थ़ितरा**—वि० (कु०) रंग-बिरंगा, विभिन्न रंगों का बुना (कपड़ा)।
**थ़ितरिना**—अ० क्रि० (कु०) 'थितबितरा' होना।
**थ़ितरी**—वि० (कु०) चितकबरा।
**थितरी छाप**—स्त्री० (मं०) वर और वधु के हाथ-पांव में मेहँदी लगाने का लेप।

**चितरेड़ा**—पु० (कु०, कां०, ह०) चित्रकार।
**चितला**—वि० (सो०) रंग-बिरंगा।
**चितलावा**—वि० (शि०) सावधान किया हुआ, सूचित किया हुआ।
**चिता**—पु० एक पौधा विशेष जिसके पत्ते की फोड़ा पकाने के लिए औषधि बनाई जाती है।
**चिताणा**—स० क्रि० याद कराना।
**चितावणी**—स्त्री० चेतावनी, यादगार, स्मृति।
**चिती**—स्त्री० (कां०, चं०) एक जंगली वृक्ष।
**चिते**—स्त्री० (शि०, सि०) याद।
**चित्त**—वि० मरा हुआ।
**चिथ**—वि० (कां०, बि०, मं०) टुकड़े-टुकड़े हुआ।
**चिथड़ा**—पु० फटे पुराने वस्त्र।
**चिद**—स्त्री० चिंता।
**चिदणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०) सोचना।
**चिद्दा**—वि० छोटा।
**चिधकणा**—अ० क्रि० (कु०) अकारण बोलना।
**चिधड़ो**—स्त्री० (शि०) कमर।
**चिन**—वि० (शि०) तीन।
**चिनड़**—पु० निशान।
**चिनना**—स० क्रि० चिनाई करना, निर्माण करना, मकान आदि की दीवार बनाना।
**चिनबिहा**—वि० (शि०, सि०) साठ।
**चिन्ह**—पु० (कु०) भेड़ों को पहचानने के लिए लगाए गए चिह्न।
**चिन्हकरू**—वि० (कु०) अलग करने वाला, पहचान करने वाला।
**चिन्हणा**—स० क्रि० निशान लगाना, पहचानना।
**चिन्हणा**—स० क्रि० (कु०) अनेक भेड़ों के झुंड में से अपनी भेड़ की पहचान करना, भेड़ों की पहचान करना, पहचानना, चिह्नित करना।
**चिन्हिणा**—अ० क्रि० (कु०) अलग-अलग होना या किया जाना।
**चिप**—स्त्री० (ह०) मछली पकड़ने की टोकरी।
**चिप**—वि० (सि०) चुप।
**चिप**—पु० (कां०, चं०) गर्भावस्था के समय गाय के थन दुहने पर निकलने वाला चिपचिपा पदार्थ।
**चिपकणा**—अ० क्रि० चिपकना।
**चिपकणो**—अ० क्रि० (शि०) दे० चिपकणा।
**चिपकाउणा/णो**—स० क्रि० (शि०, सि०) चिपकाना।
**चिप-चिप**—स्त्री० चुसकी।
**चिपचिपा**—वि० (कु०) चिपचिपा, लेसदार।
**चिपड़**—पु० आँखों की मैल।
**चिपड़-चिपड़**—स्त्री० वाचालता।
**चिपड़ा**—वि० मैला-कुचैला।
**चिपड़ा**—वि० (कु०) जिसकी आँखों में मैल हो।
**चिपळू**—वि० चिकनाहट वाला।
**चिपळू**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) बहुत कमज़ोर।
**चिपळू**—वि० (शि०, सि०) लेसदार, फिसलने वाला।
**चिपलों**—वि० (शि०) फिसलन युक्त।
**चिपी**—स्त्री० छोटा पत्थर, बच्चों द्वारा खेल में प्रयोग किया जाने वाला छोटा पत्थर।
**चिपी**—स्त्री० (मं०) नाक का आभूषण।
**चिप्पड़**—स्त्री० (कां०, ह०) काटने वाली चींटी।
**चिफला**—वि० आसानी से वश में न होने वाला।
**चिफलो**—वि० (शि०) दुर्जन।
**चिफलोळ**—स्त्री० (कां०) फिसलन।
**चिबड़ू**—पु० (कां०) Clematis gouriana.
**चिबरू**—पु० (शि०) Clematis gouriana.
**चिब्ब**—पु० (कां०, बि०) बर्तनों में गिरने के कारण पड़ने वाला चिह्न।
**चिब्बड़**—वि० (कां०, ह०) बदसूरत।
**चिमड्डु**—पु० (बि०) तलैया, छोटा ताल।
**चिमकणा**—स० क्रि० (कु०) अस्वस्थ व्यक्ति का सिर-पांव आदि दबाना।
**चिमखड़**—वि० (चं०, बि०) दुर्बल।
**चिमखड़ी**—वि० (कां०, ह०) बदसूरत व कृशकाय (स्त्री)।
**चिमच**—पु० चम्मच।
**चिमटी**—स्त्री० (चं०) बहुत पतली स्त्री।
**चिमटी**—स्त्री० छोटा चिमटा।
**चिमड़**—वि० (सि०) कंजूस।
**चिमड़ना**—अ० क्रि० चिपक जाना।
**चिमड़ियां**—स्त्री० झुर्रियां।
**चिमड़ी**—स्त्री० मादा तलैया।
**चिमणी**—पु० (कु०) पशुओं का खून चूसने वाला कीड़ा।
**चिमळो**—पु० (सि०) एक जंगली फल।
**चिमेच**—स्त्री० (कु०, मं०) लकड़ी।
**चियांऊ**—स्त्री० कुकुरमुत्ता।
**चियाठ**—पु० (चं०) देवदार प्रजाति का वृक्ष।
**चियुळणा**—स० क्रि० (सि०) गोबर आदि से चूल्हा लीपना।
**चियोल**—पु० (मं०) फर्श साफ करने का कपड़ा।
**चिरंघट**—स्त्री० (चं०) कम चौड़ा खेत।
**चिरंढी**—स्त्री० (चं०, बि०) वृक्ष विशेष।
**चिरंपा**—पु० (शि०) लकड़हारा।
**चिरकणा**—अ० क्रि० बच्चे का बार-बार शौच करना।
**चिरड़**—स्त्री० कपड़ा फटने की आवाज़।
**चिरड़ा**—वि० (चं०) रंग-बिरंगा।
**चिरणो**—स० क्रि० (सि०) फाड़ना।
**चिरनी**—स्त्री० (चं०) Sapium misigne.
**चिरनी**—स्त्री० (शि०) Spium insigne.
**चिरनो**—स० क्रि० (शि०) चीरना।
**चिरमचे**—स्त्री० (शि०, सि०) चिलमची।
**चिरांगटी**—स्त्री० (कां०, बि०) चीड़ का जंगल।
**चिरांदरू**—पु० (चं०) Acer Villosum.
**चिरांरू**—पु० (चं०) जंगली आड़ू।
**चिराड़िणो**—अ० क्रि० (शि०) चीखना।

**चिरान**—पु० चिराई, लकड़ी चीरने का पारिश्रमिक।
**चिरानी**—पु० लकड़ी चीरने वाला।
**चिरीणो**—अ० क्रि० (सि०) फटना।
**चिरीहणा**—स० क्रि० (चं०) चीरा जाना।
**चिरूओं**—वि० (शि०) फटा हुआ।
**चिल**—स्त्री० (चं०) चीड़।
**चिलक**—स्त्री० सूर्य की किरण, चमक।
**चि़लक**—स्त्री० (कु०) सूर्य की हलकी किरण।
**चिलकणा**—अ० क्रि० (कु०) चोट आदि लगने से रक्त-स्राव होना।
**चिलकणा**—अ० क्रि० चमकना।
**चिलकदा**—वि० (सि०) चमकदार।
**चिलकदा**—पु० तारा।
**चिलकब्बारिणो**—अ० क्रि० (शि०) थोड़ी सी सांस लेना।
**चिलकरी**—स्त्री० (कां०) चीड़ का फल।
**चिलका**—पु० थोड़ी-थोड़ी धूप।
**चिलकाणा**—स० क्रि० (बि०) बरतन आदि को अच्छी तरह से साफ करना, गहने आदि साफ करके उज्ज्वल बनाना।
**चिलकुणा**—अ० क्रि० (सो०) प्रकाशित होना।
**चिलके**—स्त्री० (शि०) सूर्य की प्रथम किरण।
**चिलगोज़ा**—पु० (चं०, सि०) चीड़ का बीज।
**चिलटा/टू**—पु० (सि०) गंदम के पतले आटे की तवे पर बनाई रोटी जो पूजा में प्रयुक्त होती है।
**चिलडू**—पु० (कां०, बि०, मं०) चीड़ का फल।
**चिलडू**—पु० गंदम के पतले आटे की तवे पर बनाई गई पतली रोटी।
**चिलमदु**—पु० (सि०) छोटा हुक्का।
**चिल्माटी**—स्त्री० (शि०) हुक्के का पानी।
**चिलहणा**—स० क्रि० दबाना, कुचलना।
**चिलाई**—स्त्री० एक प्रकार का अन्न।
**चिलाणा**—अ० क्रि० चिल्लाना।
**चिल्ला**—पु० (सि०, सो०, शि०) Casearia tomentosa.
**चिल्ली**—स्त्री० Wend Landia exserta.
**चिल्लू**—पु० (कां०, चं०) गेहूं के आटे से बनाया जाने वाला मीठा पकवान।
**चि़ल्हड़ा**—पु० (कु०) आटे को घोल कर तवे पर बनाई गई पतली रोटी।
**चिल्हड़ू**—पु० (सि०) चावल के आटे से बनी रोटी।
**चिल्हणा**—अ० क्रि० दो भारी वस्तुओं के बीच हाथ और पांव आदि आने के कारण चोट लगना।
**चिल्हणा**—स० क्रि० (बि०) पांव से कुचलना।
**चिल्हाड़**—पु० चीड़ का वन।
**चिवड़ो**—पु० (शि०) चावल का 'मूड़ा'।
**चिशुणा**—अ० क्रि० (सो०) प्यास लगना।
**चिशो**—वि० (कु०) प्यासा।
**चिसा**—वि० (शि०) प्यासा।
**चिसी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) दर्द से निकली सीत्कार।
**चिसी**—वि० (चं०) हठी, दुराग्रही।
**चिह**—स्त्री० (कां०, चं०) पेट के किनारे होने वाली पीड़ा।
**चि़हक**—स्त्री० (कु०) जोड़ों या कमर में निकली अकस्मात पीड़ा।
**चि़हटू**—पु० (कु०) चीरी हुई बिरोज़ायुक्त बारीक लकड़ियों की मशाल।
**चिहड़**—स्त्री० कमर।
**चिहरी**—स्त्री० (चं०) Prunus armeniaca.
**चिहलू**—पु० (शि०) Albizzia chinensis.
**चिहाऊ**—पु० (बि०) चावल मापने का एक उपकरण।
**चिहुंकळ**—स्त्री० (कां०, चं०, बि०) एक खूंटे के ऊपर लंबे काठ को रखकर चक्कर में घुमाया जाने वाला विशेष झूला।
**चिहु**—पु० (चं०) 'बरास' का फूल।
**चि़हुड़ी**—स्त्री० (कु०) गेहूं की एक स्थानीय किस्म जिसका आटा कुछ काला होता है।
**चि़हू**—पु० (कु०) बिरोज़ायुक्त लकड़ी का टुकड़ा, ऐसी बारीक लकड़ियों की छोटी मशाल।
**चि़हड़**—स्त्री० घृणा।
**चींक**—स्त्री० (चं०) चीख।
**चींकू**—स्त्री० (शि०, सि०) चिड़िया का बच्चा।
**चींकू**—अ० (कां०, बि०) स्वर विशेष।
**चींकेरदा**—वि० (कु०) कमज़ोर, भयभीत।
**चींग**—स्त्री० (मं०, सि०) चीख।
**चींगण**—वि० दुर्बल (स्त्री)।
**चींगपटाका**—पु० रोना-चिल्लाना।
**चींगरपोट**—पु० (बि०) बच्चों का समूह।
**चींगाउट**—वि० (शि०) अस्वस्थ।
**चींघाड़**—स्त्री० ज़ोर की चीख।
**चींच**—स्त्री० (चं०) बकरी की एक जाति जो अधिक दूध देती है।
**चींचला**—पु० ऐसा टिड्डा जो किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाता।
**चींचला**—पु० (मं०) चमगादड़।
**चीं-चीं**—स्त्री० व्यर्थ का शोर।
**चींट**—वि० छोटी वस्तु।
**चींड**—स्त्री० (कां०, ह०) चीख।
**चींड**—स्त्री० दर्द की अनुभूति।
**चींडणा**—स० क्रि० (शि०) दूसरों की बातें बनाना।
**चींडी**—स्त्री० (मं०) चिड़िया।
**चींडी**—स्त्री० (कां०, बि०) चुटकी, तर्जनी और नाखून से किसी अंग पर काटने की क्रिया।
**चींडू**—पु० चुटकी।
**चींडू**—वि० ईर्ष्यालु।
**चींहक**—स्त्री० (चं०, बि०) दर्द भरी चीख।
**चींहक**—स्त्री० (शि०, सि०) ग्लानि।
**चींहडी**—स्त्री० (चं०) विशेष झाड़ियां जिनमें लगे दानों से तेल निकाला जाता है।
**ची**—स्त्री० (शि०) पीड़ा।

**ची**—स्त्री० (शि०) चीड़ का वृक्ष। चील पक्षी।
**चीई**—स्त्री० (चं०) खूबानी प्रजाति का फल।
**चीई**—स्त्री० (कु०) घास।
**चीऊं**—पु० (मं०) शहतूत।
**चीऊं**—पु० (कु०) मुर्गी तथा पक्षी के बच्चे।
**चीऊं**—वि० (कां०, बि०) थोड़ा सा।
**चीऊंटी**—स्त्री० (सि०) चिड़िया।
**चीऊर**—पु० (बि०, मं०) धीवर।
**चीऊल**—पु० (मं०) स्थान साफ करने का वस्त्र।
**चीओ**—वि० (मं०) तीसरा।
**चीक**—स्त्री० (कां०, चं०) चीख, पुकार।
**चीक**—स्त्री० (बि०) पीड़ा।
**चीकड़**—पु० कीचड़, पंक।
**चीकणा**—अ० क्रि० चिल्लाना।
**चीकणा**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) तैल युक्त चिकना।
**चीकणा**—स० क्रि० (कु०) मारना।
**चीकर**—स्त्री० (कु०) कीचड़।
**चीख**—स्त्री० जलने से हुई पीड़ा।
**चीखड़ा**—पु० (कु०) किसी बड़ी लकड़ी को सुदृढ़ करने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का टुकड़ा।
**चीखड़ी**—स्त्री० (शि०) छोटी कुदाली।
**चीखणो**—अ० क्रि० (शि०) चीखना।
**चीखा**—स्त्री० (कु०) चिंता।
**चीखा**—पु० (कु०) किसी हिलते हुए भाग या ढीली वस्तु को मज़बूत कसने के लिए बीच में प्रयुक्त लकड़ी आदि का टुकड़ा।
**चीखूणा**—अ० क्रि० (कु०) कलह करना।
**चीगू**—पु० (बि०) बकरियों की एक विशेष नस्ल जिसकी ऊन से पशम बनती है।
**चीगू**—वि० (कां०, कु०) छोटा, कनिष्ठ; कमज़ोर।
**चीच**—पु० कीचड़।
**चीची**—स्त्री० (कु०) शिकार, पकाया हुआ मांस।
**चीची**—स्त्री० कनिष्ठिका।
**चीज़**—स्त्री० (कु०, शि०) वस्तु।
**चीजा**—वि० (शि०, सि०) तृतीय, तीसरा।
**चीजी**—स्त्री० (कु०) बच्चों के साथ बोलते हुए मिठाई के लिए प्रयुक्त शब्द।
**चीट**—स्त्री० पीड़ा।
**चीट**—स्त्री० चींटी।
**चीट**—स्त्री० (कु०) ऊंची आवाज़।
**चीटणा**—स० क्रि० डसना।
**चीटा**—स्त्री० (कु०) टीस, चीस।
**चीटा-त्राटा**—स्त्री० (कु०) सख्त पीड़ा, सरकती हुई दर्द।
**चीटा पंछी**—पु० (सि०) बतख़।
**चीठी**—स्त्री० पत्र, चिट्ठी।
**चीठो**—स्त्री० (शि०, सि०) किसी वस्तु की हानि होने से उत्पन्न ग्लानि।
**चीड़**—स्त्री० (शि०) पीठ।
**चीड़**—स्त्री० छोटी दरार।
**चीड़कणा**—अ० क्रि० चिपकना।
**चीडण**—पु० (मं०, सि०) पशुओं का खून चूसने वाला जीव विशेष जो पशुओं के शरीर से चिपटा रहता है।
**चीड़नू**—पु० (कां०) दे० चीडण।
**चीड़नू**—पु० (बि०) एक पर्व विशेष।
**चीड़ा**—वि० कृपण।
**चीड़ा**—स्त्री० (कु०) दरारें।
**चीड़िणा**—अ० क्रि० (कु०) घृणा करना।
**चीड़ी**—स्त्री० (शि०) कमर।
**चीड़ी**—स्त्री० (कु०) चिड़िया।
**चीड़ू**—पु० (कु०) पक्षी, जंगली पक्षी।
**चीड़डण**—पु० (मं०) दे० चीडण।
**चीढ़**—वि० (कु०) कुरूप।
**चीढ़**—स्त्री० (चं०) भीड़।
**चीढ़ना**—अ० क्रि० (सि०) घृणा करना।
**चीढ़ना**—स० क्रि० (कां०, चं०) दीवार आदि के साथ लगा कर दबाना।
**चीण**—वि० (कु०) तीन।
**चीण**—पु० हरा घास।
**चीणना**—स० क्रि० (कु०) दे० चिनना।
**चीणनो**—स० क्रि० (शि०) दे० चिनना।
**चीणिना**—स० क्रि० (कु०) चिनाई की जाना, निर्मित किया जाना।
**चीणी**—स्त्री० (कु०) धान की प्रजाति का एक विशेष अन्न जिसके दाने बारीक और चिकने होते हैं और जल्दी कूटे नहीं जाते।
**चीणे**—स्त्री० (शि०) दे० चीणी।
**चीतरी**—स्त्री० (मं०) काई।
**चीदणा**—अ० क्रि० (कु०) सड़ना।
**चीदणा**—अ० क्रि० (कां०) भींचना।
**चीन**—वि० (शि०) तीन।
**चीनना**—स० क्रि० (मं०) दे० चिनना।
**चीना**—वि० (कां०, चं०) तेलिया रंग का (घोड़ा)।
**चीनू**—वि० स्वल्प, सूक्ष्म।
**चीन्हड़ू**—पु० (कां०, ह०) चुटकी, नखक्षत।
**चीप**—स्त्री० (सि०) गोंद।
**चीपड़**—पु० (मं०) कीचड़, आंख का मैल।
**चीपड़िना**—अ० क्रि० (कु०) आंख में मैल जमना।
**चीपड़ी**—स्त्री० (कु०) आंख का मैल।
**चीपणा**—स० क्रि० (कु०) दबाना।
**चीफ**—स्त्री० (कां०, बि०) चिपकने वाली वस्तु, वृक्ष की गोंद।
**चीफलना**—अ० क्रि० फिसलना।
**चीफला**—वि० चिपकने वाला, नमीयुक्त।
**चीफला**—वि० (कु०) फिसलने वाला, ऐसा स्थान आदि जहां से पैर फिसलने का डर हो या जहां से पैर फिसल जाता हो।
**चीबटा**—पु० (मं०) चिमटा।
**चीबा**—स्त्री० (कु०) अस्वस्थता, बीमारी।

**चीम**—स्त्री० (चं०) विलंब।
**चीमुआं**—पु० (मं०) तीन मंज़िला भवन।
**चीमटौ**—पु० (कु०) चिमटा।
**चीमणा**—स० क्रि० (कु०) किसी नुकीली वस्तु को चुभाना।
**चीमनी**—स्त्री० (कु०) चम्मच।
**चीमा**—पु० (चं०) हलके काले रंग की वस्तु।
**चीमिणा**—अ० क्रि० (कु०) कांटे, सूई आदि का चुभना।
**चीमू**—पु० (कु०, मं०) शहतूत।
**चीर**—स्त्री० (कां०, चं०) बाल संवारने के लिए सिर में बनाई गई विभाजक रेखा।
**चीर**—पु० लकड़ी चीरते समय बनने वाली दरार।
**चीर**—स्त्री० (कां०, बि०) कपड़ों की कतरन।
**चीर**—स्त्री० (चं०) खूबानी की छोटी किस्म जिसकी गुठली कड़वी होती है।
**चीर**—स्त्री० फांक।
**चीरणा/णो**—स० क्रि० चीरना।
**चीरना**—स० क्रि० (कु०) चीरना, फाड़ना।
**चीरा**—पु० चमड़ी आदि कट जाने से बना निशान या चिह्न, कटा हुआ स्थान।
**चीरिना**—अ० क्रि० (कु०, बि०, मं०) स्वतः ही किसी वस्तु का चिरना, कट जाना।
**चीर्खी**—वि० (कु०) चंचल (स्त्री)।
**चील**—पु० Pinus soxburgha.
**चील**—स्त्री० (कु०) चीड़ का वृक्ष।
**चीलकी**—स्त्री० (शि०) धूप की हलकी किरण।
**चीलखोप**—पु० (मं०) कठफोड़ा।
**चीलटी**—स्त्री० (कां०, शि०) चीड़ का छोटा वृक्ष।
**चीलणा**—स० क्रि० (कां०, ह०) पीसना।
**चीला**—पु० (कां०, ह०) एक विशेष जंगली वृक्ष।
**चीळा**—वि० (कु०) चमकीला (कागज़)।
**चीलू**—पु० (बि०) चिंगारी।
**चील्हणा**—स० क्रि० (कु०) शरीर के किसी अंग का दो सख्त चीज़ों द्वारा पिचक जाना, दबाना।
**चील्हिणा**—अ० क्रि० (कु०) पत्थर, लकड़ी आदि से हाथ-पैर आदि में चोट लगना या ज़ख्म होना।
**चीवडू**—पु० (सि०) चीड़।
**चीवी**—वि० (ऊ०, कां०) बदसूरत।
**चीश**—पु० (शि०, सि०) पानी।
**चीश**—स्त्री० (शि०) प्यास।
**चीशकी**—वि० (कु०) थोड़ा सा खट्टा।
**चीशा**—वि० (शि०) प्यासा।
**चीस**—स्त्री० (कां०, बि०, ह०) थोड़ी पीड़ा।
**चीसड**—वि० (कां०, बि०, ह०) हठी, दुराग्रही।
**चीसड़ा**—वि० कृपण।
**चीसड़ा**—पु० (चं०) किसी हिलती हुई वस्तु को टिकाने के लिए दिया सहारा।
**चीह**—स्त्री० (चं०) पीठी की नस सिकुड़ने से होने वाली वेदना।
**चीहक**—स्त्री० (कां०, चं०, बि०) थोड़ी पीड़ा।
**चीहठ**—स्त्री० (बि०) दया की भावना।
**चीहड़**—पु० (कां०, ह०) ऐसा स्थान जहां सदा पानी रहता है।
**चीहरण**—स्त्री० (चं०) खूबानी का वृक्ष।
**चीहक**—स्त्री० (कु०) चसक, हलकी पीड़ा।
**चीहड़ना**—स० क्रि० (चं०) दबाना।
**चीहड़ना**—स० क्रि० (चं०) तंग करना।
**चुंकेर**—स्त्री० (चं०) चूहों द्वारा निकाली गई मिट्टी।
**चुंग**—पु० (चं०) धनादि की आवश्यकता के लिए बेचा गया अन्न।
**चुंग**—स्त्री० पशुओं को हांकने या बैल को हल में जोतते समय प्रयुक्त नुकीली छड़ी।
**चुंग**—स्त्री० लड़ाई हेतु उकसाने वाली बात।
**चुंगचार**—वि० (सि०) स्वच्छ।
**चुंगणा**—पु० (कां०) लंबे मुख वाला चूहा।
**चुंगणा**—स० क्रि० बछड़े द्वारा दूध पीया जाना।
**चुंगणा**—स० क्रि० एकत्रित करना।
**चुंगणा**—स० क्रि० (मं०, शि०) चुनना।
**चुंगल**—पु० काबू में आ जाने का भाव। लड़ाई करने का बहाना।
**चुंगा**—पु० (सो०) थोड़ा सा अंश।
**चुंगादु**—पु० गाय व भैंस का चोरी से दूध पीने वाला भूत विशेष।
**चुंगादु**—पु० गाय या भैंस का दूध पीने वाला बच्चा।
**चुंगि**—स्त्री० (सो०) चुंगी, देवता के निमित्त प्रतिदिन रखा गया आटा आदि।
**चुंगी**—स्त्री० (चं०) बारी, बारी-बारी।
**चुंगी**—स्त्री० महसूल।
**चुंगू**—पु० (मं०) स्त्रियों द्वारा आराधित देवता विशेष।
**चुंघडू**—पु० (कु०) उकडू।
**चुंघणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) उठाना, चुनना।
**चुंघाटू**—पु० (कां०) दुधारू पशु का दूध पीने वाला बच्चा।
**चुंघिणा**—स० क्रि० (कु०) उठाया जाना।
**चुंघु**—पु० (चं०) दे० चुंघाटू।
**चुंचरी**—वि० (कु०) नुकीली, तीखी, तेज।
**चुंचियाला**—पु० (सि०) मकड़ी।
**चुंज**—स्त्री० (चं०) चोंच।
**चुंजर**—पु० (शि०) शिखर।
**चुंटा**—पु० (शि०) महाब्राह्मण।
**चुंटी**—स्त्री० चुनरी।
**चुंड**—पु० कंचों की खेल में बच्चों द्वारा गोल पत्थर की टिकिया से कंचों को मारने की क्रिया।
**चुंडकी**—स्त्री० वेणी।
**चुंडकू**—पु० (सो०) वेणी बनाने की डोरी।
**चुंडणा**—स० क्रि० चींटी या मच्छर द्वारा काटना।
**चुंडणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) कंचों की खेल में बच्चों द्वारा गोल पत्थर की टिकिया से कंचों को मारना।
**चुंडणा**—स० क्रि० ऊन या कपास की हाथ से पिंजाई

करना।
**चुंडणा**—स० क्रि० (चं०) भक्ष्य पदार्थ को खंडित करना।
**चुंडणा**—स० क्रि० (बि०) पीसी हुई दाल की बड़ियां बनाना।
**चुंडला**—पु० (कां०, बि०) वृक्ष के तने का ऐसा भाग जो काटा न जा सके।
**चुंडा**—पु० खुले केश।
**चुंडा**—पु० चुटकी काटने की क्रिया।
**चुंडी**—स्त्री० वृक्ष की चोटी।
**चुंडुयें**—पु० (मं०) गुलगुले।
**चुंढणा**—अ० क्रि० (कु०) लटकना।
**चुंढिणा**—अ० क्रि० (कु०) लटका जाना।
**चुंदड़ी**—स्त्री० (शि०, सो०) दुपट्टा।
**चुंदरी**—स्त्री० (सो०) दे० चुंदड़ी।
**चुंब**—स्त्री० चुभन।
**चुंबु**—पु० (चं०) पहाड़ की चोटी।
**चुंमट**—पु० (चं०) पूंछ।
**चुआड़ना**—स० क्रि० (कु०) उखाड़ना, छिलका उतारना।
**चुआड़िना**—स० क्रि० (कु०) छिलका उतारा जाना।
**चुआनी**—स्त्री० पचीस पैसे, चार आने का सिक्का, चवन्नी।
**चुआबत**—पु० उधार, ऋण।
**चुकंधा**—वि० चार दीवारों वाला।
**चुक**—स्त्री० कलह करने हेतु कही गई बात।
**चुक**—स्त्री० कमर और पुट्ठों का तेज़ दर्द।
**चुक**—वि० (कु०) थोड़ा, हमेशा 'धिख' के संयोग में प्रयुक्त होता है यथा 'धिख चुक' (थोड़ा)।
**चुकचुक**—अ० (शि०, सि०) बकरी को बुलाने की विशेष ध्वनि।
**चुकचुक**—स्त्री० (ऊ०, कां०) लगातार बोलते रहने की क्रिया।
**चुकड़-चुकड़**—पु० (कु०, कां०) थोड़ी-थोड़ी देर बाद भोजन करने का भाव।
**चुकड़ू**—वि० (कु०) चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाला।
**चुकणा**—स० क्रि० उठाना।
**चुकनी**—स्त्री० (सि०) मेमना।
**चुकन्ना**—वि० चालाक, सतर्क।
**चुकरी**—स्त्री० (शि०) Polygonum chinense.
**चुकरी**—स्त्री० (कु०) चक्षुरोग जिसमें आंख में फुंसी होती है।
**चुकरू**—पु० (चं०) एक प्रकार का जंगली शाक।
**चुकरू**—पु० (कां०, बि०) कुकरे, चक्षु रोग।
**चुकाई**—स्त्री० किसी वस्तु को उठाने का पारिश्रमिक।
**चुकाउणा**—स० क्रि० (शि०) कार्य को समाप्त करना।
**चुकाठ**—स्त्री० (चं०, बि०) चारपाई व पलंग की लकड़ी।
**चुकाणा**—स० क्रि० उठवाना।
**चुकाणा**—स० क्रि० ऋण की निवृत्ति करना।
**चुकोणो**—स० क्रि० (शि०) समाप्त करना।
**चुखंडी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) निर्जन स्थल।
**चुख**—स्त्री० गलगल के रस और लाल मिर्च से बना अचार।
**चुखड़ा**—पु० (कु०) टुकड़ा, खंड।
**चुखा**—वि० लेन-देन में ईमानदार।

**चुग**—स्त्री० चिड़ियों व मुर्गों का दाना।
**चुग**—स्त्री० (चं०) Hippophae rhamnoydes.
**चुगड़े**—पु० (सि०) मिट्टी के दीपक।
**चुगणा**—स० क्रि० चुनना, चुगना, चरना।
**चुगणो**—स० क्रि० (शि०) उठाना।
**चुगणो**—स० क्रि० (शि०) चरना।
**चुगल**—पु० चिलम के छेद में लगाया जाने वाला पत्थर या कोयले का कंकड़।
**चुगलखोर**—वि० चुगली करने वाला।
**चुगली**—वि० शिकायत।
**चुगलु**—वि० (कु०, शि०) चुगलखोर।
**चुगा**—पु० (शि०) पुरुष का विशेष वस्त्र।
**चुगा**—पु० पक्षियों को दिया जाने वाला दाना।
**चुगाणा**—स० क्रि० चुगाना।
**चुगान**—पु० राजाओं का उत्सव मनाने का विशेष स्थान, विस्तृत मैदान।
**चुगारी**—स्त्री० (चं०) चुगने की क्रिया।
**चुगै**—वि० (शि०) चौगुना।
**चुचड़ना**—स० क्रि० (कु०) खरोंचना, कुरेदना।
**चुचणा**—स० क्रि० (चं०) चुगना।
**चुचणा**—स० क्रि० (चं०) मारना।
**चुचन**—पु० (चं०) अलिजिह्वा।
**चुचनोर**—स्त्री० (शि०) चुहिया।
**चुचाई**—स्त्री० (मं०) बच्चे को स्तनपान कराने वाली मां।
**चुचुंदर**—स्त्री० चुहिया।
**चुचू**—अ० (चं०) बिल्ली के लिए प्रयुक्त संबोधन।
**चुच्चु**—पु० स्तन।
**चुट**—स्त्री० (कु०) कमी, न्यूनता।
**चुट**—स्त्री० (शि०) चोट; दरार।
**चुट**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ।
**चुट**—वि० (कु०) चुपचाप।
**चुटक**—वि० (शि०) चुप।
**चुटकचार**—वि० (शि०) चुपचाप।
**चुटका**—पु० चुटकी भर चीज़।
**चुटकी**—स्त्री० चुटकी, बीच की उंगली पर अंगूठे को दबाने और छटकाने से होने वाली आवाज़।
**चुटकी**—स्त्री० पांव की उंगलियों में पहना जाने वाला आभूषण।
**चुटकी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) घी की ज्योति।
**चुटकु**—वि० (सो०) थोड़ा सा।
**चुटणा**—स० क्रि० हाथ से पानी निकालना।
**चुटणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) कुएं व बावड़ी को साफ करना।
**चुटणो**—अ० क्रि० (शि०) टूटना।
**चुटारी**—स्त्री० (चं०) पानी निकालने की क्रिया।
**चुटी**—स्त्री० (कां०, ह०) भोजन के उपरांत कुल्ली करने की क्रिया।
**चुटुमुटु**—पु० (कु०) लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े।
**चुटै**—स्त्री० (शि०) थक कर चूर होने की क्रिया।

**चुटैही**—स्त्री० (चं०) गोशाला में पशुओं को बांधने के लिए लगाई गई लंबी लकड़ी को पक्का करने के लिए लगाए गए लकड़ी के टुकड़े।
**चुड़का**—पु० (शि०) पानी की बूंद।
**चुड़कु**—वि० (शि०) स्वल्प।
**चुड़कू**—पु० (ऊ०, कां०) पशुओं के पानी पीते समय पात्र में बार-बार पानी समाप्त होने की क्रिया।
**चुड़खा**—पु० (मं०) चीथड़ा।
**चुड़थु**—पु० (शि०, सि०) सिर के थोड़े से बाल।
**चुड़दा**—वि० भीगा हुआ।
**चुड़दा**—वि० (कु०) बरसने को तैयार; तैलयुक्त।
**चुड़ना**—अ० क्रि० रिसना।
**चुड़ना**—अ० क्रि० (कु०) रिसना, टपकना।
**चुड़याई**—स्त्री० चौड़ाई।
**चुड़ा**—पु० (मं०) छोटा झाड़ू।
**चुड़ा**—पु० बाजूबंद।
**चुड़ादर**—स्त्री० (कां०, चं०) बड़ी आंत।
**चुड़ाना**—स० क्रि० टपकाना।
**चुड़िया**—पु० (सि०) चूड़धार का देवता।
**चुड़ीमरीदड़ी**—स्त्री० (कु०) हस्ताभूषण।
**चुड्डु**—पु० (शि०, सि०) चोटी, शिखा।
**चुड्डमुड्ड**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) दे० चुटुमुटु।
**चुड़ेल**—स्त्री० चुड़ैल।
**चुड़ोत**—स्त्री० (चं०) मक्खन।
**चुण**—स्त्री० (कु०) पत्थर की तेज़ नोक, पैनीधार।
**चुणक**—स्त्री० (चं०) बिच्छुबूटी लगने से होने वाली पीड़ा।
**चुणक**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) अचानक होने वाली तेज़ पीड़ा।
**चुणकणा**—अ० क्रि० (सि०) मूर्च्छा के उपरांत होश आना। स० क्रि० थोड़ा खाना।
**चुणकणां**—अ० क्रि० (कां०, चं०) अंगों में सनसनी होना।
**चुणका**—पु० (कु०) छोटा टुकड़ा (रोटी आदि का)।
**चुणचुणी**—स्त्री० (कां०, कु०, बि०) शरीर में होने वाली सनसनी।
**चुणावन**—पु० (शि०) दाना।
**चुतकू**—पु० (कु०) पेशाब की बीमारी जिसमें बार-बार पेशाब आता है।
**चुतड़**—पु० (कु०) नितंब।
**चुतड़ीए**—वि० (कु०) कंगाल, मुहताज, निकम्मे।
**चुताळी**—वि० चौवालीस।
**चुत्थ**—स्त्री० मार, कूटने की क्रिया।
**चुत्थणा**—स० क्रि० किसी वस्तु पर ज़ोर से प्रहार करना।
**चुत्थी**—पु० (कु०) मांस का टुकड़ा।
**चुथढोरा**—वि० (सि०) बिगड़ा हुआ, भ्रष्ट।
**चुथणा**—स० क्रि० (सि०) फाड़ना, अखरोट आदि तोड़ना।
**चुथणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) कूटना, पीटना।
**चुथर**—पु० (शि०) मुख।
**चुन**—पु० (चं०) Lyrus melus.
**चुनड़ी**—स्त्री० दुपट्टा।
**चुनणा/णो**—स० क्रि० चुनना।
**चुनणा**—अ० क्रि० (सो०) लगना।
**चुनणो**—स० क्रि० (शि०) चुगना।
**चुनालु**—पु० (शि०, सि०) हृदय।
**चुन्नी**—स्त्री० दुपट्टा।
**चुप**—वि० (कु०) चुप।
**चुपकड़**—वि० (शि०, सि०) शांत स्वभाव वाला, चुप रहने वाला।
**चुपकेरणा**—स० क्रि० (चं०) स्नेह करना, चुप कराना।
**चुपचकड़**—वि० (कां०, ऊ०, ह०) चुप रहने वाला।
**चुपचणाके**—अ० चुपचाप।
**चुपचाप**—अ० (कु०) चुपचाप।
**चुपचुप**—वि० (ऊ०, कां०) भावुक।
**चुपड़ना**—स० क्रि० रोटी में घी या मक्खन लगाना।
**चुपड़ना**—स० क्रि० मालिश करना।
**चुपड़ीहणा**—स० क्रि० (कां०, चं०) मालिश करना।
**चुपड़ीहणा**—पु० (शि०) मक्खन रखने का पात्र।
**चुपड़ोत**—पु० (चं०) मक्खन।
**चुपली**—स्त्री० (शि०) थन।
**चुपाया**—वि० चौपाया।
**चुपी**—स्त्री० शांति।
**चुपैहल**—वि० (चं०) चार कोनों वाला।
**चुप्पी**—स्त्री० गुप्त बात, खामोशी।
**चुफ**—वि० (मं०) चुप।
**चुफाड़**—वि० चार खंडों में विभक्त।
**चुफेरी**—स्त्री० चारों ओर की परिक्रमा।
**चुफेर**—अ० चारों ओर।
**चुबणा**—अ० क्रि० चुमना।
**चुबयालटी**—स्त्री० (शि०) लंबे बालों वाली बकरी।
**चुबाटा**—पु० चौराहा।
**चुबारा**—पु० ऊपरी मंज़िल का बरामदा।
**चुबोणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) चुभाना।
**चुब्की**—स्त्री० डुबकी।
**चुब्मी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) घराट की चक्की का स्थान।
**चुमकेर**—स्त्री० (चं०) चलते हुए पशुओं को पुचकारने का भाव।
**चुमणा**—अ० क्रि० चुमना।
**चुमणा**—अ० क्रि० पीड़ा अनुभव करना।
**चुमलोणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०, सि०) पानी में भीगना।
**चुमाणा**—स० क्रि० चुभाना।
**चुमेड़**—स्त्री० (कां०, चं०) एक कमरे से दूसरे कमरे को जाने का भीतरी रास्ता।
**चुमक**—स्त्री० (कां०, मं०) हुक्के की नाल।
**चुमणा**—स० क्रि० चूमना।
**चुमन**—वि० (शि०) चौवन।
**चुमुखा**—वि० चार मुखों वाला।
**चुम्हर**—पु० (चं०) अनुचर।

**चुम्हरी**—स्त्री० (चं०) तंग खेत।
**चुरकणा**—स० क्रि० (सो०) रोटी, चने आदि को दांतों से काटना।
**चुरकदा**—वि० (सो०) कुरकुरा।
**चुरताली**—वि० (चं०) चौवालीस।
**चुरन**—पु० चूर्ण।
**चुरबरांदी**—वि० (कु०) चहकती हुई।
**चुरमुर**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) थोड़ा।
**चुरमरी**—वि० (कां०, बि०, ह०) गली सड़ी (लकड़ी)।
**चुरमा**—वि० बारीक पीसा हुआ।
**चुरमा**—पु० रोटी तथा गुड़-घी को मिलाकर बनाया पकवान।
**चुरमुरा**—पु० चूरा।
**चुरमुरो**—वि० (शि०) स्वादिष्ट।
**चुरली**—स्त्री० (मं०) चुर्र-चुर्र करके चहकने वाली चिड़िया।
**चुरली**—स्त्री० (मं०) गंदम की स्थानीय किस्म।
**चुराःड़ा**—पु० (कां०, चं०) चोर।
**चुरानुए**—वि० चौरानवे।
**चुरासी**—वि० चौरासी।
**चुराहा**—पु० (मं०) चौराहा।
**चुरिणो**—अ० क्रि० (शि०) छिपना।
**चुरूंजा**—वि० चौवन।
**चुर्हन**—स्त्री० (चं०) गहरा स्थान।
**चुल**—स्त्री० (शि०, सो०) चूल्हा।
**चुल**—पु० Prunus armeniaca.
**चुळकदा**—वि० (कु०) चमकीला।
**चुलघुस्सू**—वि० (कां०, बि०) घर से बाहर न निकलने वाला।
**चुलचुली**—वि० (कां०, ऊ०, बि०) चुनचुनाहट।
**चुलचुली**—वि० (कु०) रोने को तैयार।
**चुलचुली**—वि० (शि०) पानी से तर-बतर।
**चुलटे**—स्त्री० (शि०) जंगली खूबानी का पेड़।
**चुलड़ा**—पु० (कां०, शि०) चूल्हा।
**चुळफुळ**—अ० (कु०) लबालब।
**चुलबुला**—वि० चंचल।
**चुलवा**—पु० (सि०) मालपूआ।
**चुलहा**—पु० (मं०) खेत का कोना।
**चुलहा**—पु० (कां०) चूल्हा।
**चुळा**—पु० (कां०, चं०, बि०) दरवाज़े का चूल।
**चुळियर**—पु० (शि०) ककुद, बैल की पीठ पर का उभरा हुआ भाग।
**चुळी**—स्त्री० (चं०) संतरे आदि की फांक।
**चुळी**—स्त्री० कुल्ली, खाना खाने के बाद मुंह साफ करने की क्रिया।
**चुळी**—वि० स्वल्प, थोड़ा, चुल्लू भर।
**चुलीठ**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) दे० चलीठा।
**चुलीठ**—पु० (शि०) चौलाई का आटा।
**चुलु**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) पानी की अंजलि।
**चुलु**—पु० (कु०, शि०) कुल्ला, भोजन करने के बाद मुंह साफ करने की क्रिया।
**चुलेल्टु**—पु० (शि०) सुखाई गई जंगली खूबानी।
**चुलोली**—स्त्री० (शि०) दे० चुलेल्टु।
**चुल्टे**—पु० (शि०) जंगली खूबानी का वृक्ष।
**चुल्ह**—स्त्री० (चं०) चूल्हा।
**चुल्ह**—स्त्री० (कु०) चूल्हा।
**चुल्हकरू**—वि० (कु०) जो चूल्हे के पास ही आग सेंकता रहे, निठल्ला।
**चुल्ही न्यूंदर**—स्त्री० (कु०, बि०) घर के सभी सदस्यों को दिया जाने वाला निमंत्रण।
**चुल्हू**—पु० (कु०) घराट में आटा इकट्ठा करने का नर्म झाड़ू।
**चुवासी**—स्त्री० पत्थर का तवा।
**चुशकड़ा**—वि० (शि०) भड़कने वाला।
**चुशकु**—पु० (कां०, मं०) कमर लचकाने की क्रिया।
**चुशणा**—स० क्रि० (कु०) चूसना।
**चुशणो**—स० क्रि० (शि०) चूसना।
**चुशिणा**—स० क्रि० (कु०) चूसा जाना।
**चुश्ड़ा**—वि० (शि०) अंगूठा चूसने वाला।
**चुसकणा**—अ० क्रि० (कां०) धीरे से बोलना।
**चुसकणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) डरकर मुंह से कुछ न बोलना।
**चुसकणा**—स० क्रि० (कां०, चं०, बि०) बच्चे का रोते हुए रुक-रुक कर दूध पीना।
**चुस्की**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) ठहाका।
**चुस्त**—वि० चप्पल, चंचल।
**चुहक्खा**—वि० (कां०, चं०, बि०) चौकस।
**चुहक्खा**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) चार आंखों वाला (किसी को गाली देने का भाव)।
**चुहना**—अ० क्रि० (सो०) रिसना।
**चुहल**—स्त्री० (चं०) शरारत।
**चुहलबाज**—वि० शरारती।
**चुहली**—वि० दे० चुहलबाज।
**चुहली**—पु० एक वृक्ष विशेष।
**चुहाण**—स्त्री० (कु०) जवान गाय।
**चुहारा**—पु० छुहारा।
**चूंक**—वि० (कां०, बि०, ह०) थोड़ा, स्वल्प।
**चूंगटा**—वि० (शि०) कृपण।
**चूंगड़ा**—पु० (सि०) चूहा।
**चूंगणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) उठाना।
**चूगणा**—स० क्रि० (मं०, शि०) अन्न चुगना।
**चूंगणी**—स्त्री० बच्चे को चुप कराने हेतु मुंह में दी गई मीठी वस्तु।
**चूंगणो**—स० क्रि० (शि०) उठाना।
**चूंगल**—पु० पकड़।
**चूं-चूं**—स्त्री० मंद ध्वनि, चिड़ियों की ध्वनि।
**चूं-चूं**—अ० व्यर्थ में विरोध करने की क्रिया।
**चूंज**—स्त्री० चोंच।
**चूंज**—स्त्री० सिरा।
**चूंज़**—स्त्री० (कु०) चोंच।

**चूंजका**—पु० (कु०) किसी वस्तु का ऊपरी भाग।
**चूंजरे**—स्त्री० (शि०) चोंच।
**चूंड**—स्त्री० सिर।
**चूंडा**—पु० (चं०) वेणी।
**चूंडा-बंड**—स्त्री० संपति के विभाजन का एक नियम जिसमें बांट पत्नियों के आधार पर होती है।
**चूंडा बटाई**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) चुगलखोरी।
**चूंडिया**—स्त्री० (कां०, बि०, ह०) शिखर।
**चूंडी**—स्त्री० चोटी, वृक्ष की चोटी।
**चूंडी**—स्त्री० चुटकी, अंगूठे और तर्जनी से चमड़ी को पकड़ कर दबाने की क्रिया।
**चूंडू**—पु० (कु०) कुछ भाग, ज़रा सा भाग।
**चूंढ**—स्त्री० लगन।
**चूंढणा**—अ० क्रि० लटकना।
**चूंढा**—पु० (कु०) स्त्रियों द्वारा लंबी 'परांदी' में विशेष प्रकार से सजाई वेणी।
**चूंब**—स्त्री० (सि०) उदर वेदना।
**चूंभड़**—स्त्री० (सि०) कृपण, कंजूस।
**चूंळा**—वि० (सो०) अरवी या ज़मीकंद में विद्यमान चरपरा या तीखापन।
**चूंहगणा**—स० क्रि० चूसना।
**चूंहघाणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) दूध पिलाना।
**चूंहमुंह**—स्त्री० (बि०) अफवाह अथवा रहस्य की बात का कानों कान फैलना, कानाफूसी।
**चूंहल**—पु० (चं०) कंबल।
**चूंहल**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) व्यर्थ में लड़ने का भाव।
**चूःल**—स्त्री० (सि०) चूल्हा।
**चूआं**—पु० (कु०) शहतूत के पुष्प।
**चूआं**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) सब्ज़ी या फल का छोटा आकार।
**चूआ**—पु० चूहा।
**चूइ**—स्त्री० (सो०) एक वृक्ष विशेष, जिसका ईंधन के रूप में प्रयोग होता है।
**चूई**—स्त्री० (शि०) Albizza julibrissin.
**चूई**—स्त्री० चुहिया।
**चूईणा**—अ० क्रि० (शि०) गाय या भैंस का समय से पहले ब्याना।
**चूओ**—पु० (कु०) पिसे हुए नमक को इकट्ठा करने का छोटा झाड़ू।
**चूक**—स्त्री० भूल।
**चूकणा**—अ० क्रि० चूक जाना।
**चूख**—पु० (सि०) देवता का नाम।
**चूखा**—पु० (शि०) गलगल।
**चूगड़ा**—पु० (सि०) चूहा।
**चूचा**—पु० मुर्गी का बच्चा, चूज़ा।
**चूची**—स्त्री० स्तन का अग्रभाग।
**चूची**—स्त्री० (कु०) एक प्रकार की जड़ी-बूटी जो मोच आने पर नमक के साथ पीस कर लगाई जाती है।
**चूची**—स्त्री० (कु०) भेड़ बकरी का स्तन।
**चूज**—पु० (सि०) शस्त्र का कोना।
**चूज**—स्त्री० किनारा।
**चूट्**—पु० (मं०) चिनाई में पत्थरों का जोड़।
**चूट**—पु० (शि०) रेज़गारी।
**चूटणा/णो**—अ० क्रि० (कु० ) टूटना।
**चूटफूट**—स्त्री० (शि०, कु०) टूटफूट।
**चूटी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) खाना खा कर मुंह साफ करने की क्रिया, कुल्ली।
**चूटूक**—वि० (शि०) चुप।
**चूड़**—पु० (सो०) बैल का ककुद।
**चूड़का**—वि० (शि०) चौड़ा।
**चूड़का**—पु० (शि०) बूंद।
**चूड़दा**—वि० टपकता हुआ।
**चूड़ना**—अ० क्रि० (कु०, सि०) रिसना, टपकना।
**चूड़ा**—पु० विवाह में दुलहन द्वारा पहनी जाने वाली लाल चूड़ियां।
**चूड़ा**—पु० (सि०) जुए का ऊपरी हिस्सा।
**चूड़ी**—स्त्री० कांच, लाख, सोने, हाथी दांत आदि का बना वृत्ताकार आभूषण जिसे स्त्रियां कलाई पर पहनती हैं।
**चूण**—पु० (कां०, बि०) शौक।
**चूण**—पु० (कु०) मुर्गियों को दिया जाने वाला अनाज, चोगा।
**चूणणो**—स० क्रि० (शि०) चुगना।
**चूणनो**—पु० (शि०) पक्षियों को दिया जाने वाला अनाज, चोगा।
**चूणनो**—स० क्रि० (शि०) चुनना।
**चूणा**—पु० (सो०) धान के खेत में मिट्टी बराबर करने की प्रक्रिया।
**चूणा**—वि० (कां०, बि०) शौकीन।
**चूणा**—अ० क्रि० (चं०, सि०) रिसना।
**चूना**—पु० (कु०) चूना।
**चूनूने**—पु० (मं०) खास किस्म के कीड़े।
**चूनो**—पु० (शि०) दे० चूना।
**चूपणा**—स० क्रि० चूसना।
**चूभणा**—अ० क्रि० (सि०) चुभना।
**चूमणा**—स० क्रि० (सि०) चूमना।
**चूरण**—पु० (कु०) चूर्ण।
**चूरणा**—स० क्रि० मिलाना।
**चूरमा**—वि० चूरा।
**चूरली**—स्त्री० (मं०) पक्षी।
**चूरा**—पु० चूरा।
**चूरा**—पु० (कु०) बारीक कण।
**चूरी**—स्त्री० (कां०) गुड़-घी मिश्रित रोटी।
**चूरी**—स्त्री० (कु०) बारीक चूरी।
**चूरी**—स्त्री० सुरा गाय।
**चूरू**—पु० (कु०) सुरा गाय (नर)।
**चूरो**—पु० (शि०) चूरा।
**चूठीं**—स्त्री० (शि०) चावल की कणी।
**चूल**—पु० (सि०) खूबानी प्रजाति का फल।

**चूळ**—स्त्री० चूल, दरवाज़े को घुमाने की धुरी।
**चूळ**—स्त्री० (सो०) चारपाई की बाजुओं का वह भाग जो पाए के साथ जुड़ता है।
**चूळ**—वि० तेज़।
**चूळ**—स्त्री० नितंब का जोड़।
**चूळचूळा**—वि० (चं०) नर्म, पका हुआ।
**चूळचूळी**—स्त्री० (कां०, चं०) दर्द के साथ अंग सोने की क्रिया।
**चूला**—पु० (शि०, सो०) Nasturtuim officinala.
**चूला**—पु० (कां०) छोटे आकार का खेत।
**चूला**—पु० (मं०) रसोई घर का छोटा झाड़ू।
**चूळा**—पु० (शि०) मालपूआ।
**चूली**—स्त्री० (कु०, शि०) Prunus armeniaca.
**चूलू**—पु० खूबानी प्रजाति का फल।
**चूल्लू**—पु० (सि०) आलूचा।
**चूल्हणा**—अ० क्रि० (सो०) झूलना।
**चूशका**—पु० (कु०, शि०) अचानक कमर में उठी दर्द।
**चूशणा**—स० क्रि० चूसना।
**चूसणी**—स्त्री० बच्चों के मुंह में डाली जाने वाली चुसनी (निप्पल)।
**चूसणो**—स० क्रि० (सि०) चूसना।
**चूसा**—पु० (बि०) चूहा।
**चूसा**—वि० (बि०) दुबला-पतला व्यक्ति।
**चूहरी**—स्त्री० (चं०) चहकने का भाव।
**चूहरी**—वि० (चं०) चार तहों वाली।
**चूहली**—स्त्री० Albizzla chinensis.
**चूहीटला**—पु० (मं०) चूहा।
**चूहुल**—पु० (मं०) चूल्हा।
**चूहड़ी**—स्त्री० (मं०) पक्षियों की चोटी।
**चूहड़ो**—वि० (शि०) कंजूस।
**चूहणा**—पु० (कां०, बि०, ह०) खेत की तंग जगह वाला किनारा।
**चूहणा**—अ० क्रि० (कु०) पानी का रिसना।
**चूहणो**—स० क्रि० (शि०) चूसना।
**चूहरी**—स्त्री० (चं०) चुगली।
**चूहल**—स्त्री० शरारत।
**चेंई**—अ० (सि०) चाहिए।
**चेंगण**—स्त्री० (चं०) छोटी वस्तु।
**चेंड**—स्त्री० (कु०) ईर्ष्या।
**चेंडिणा**—अ० क्रि० (कु०) ईर्ष्या करना, किसी व्यक्ति को बैठा देखकर स्वयं भी काम न करना।
**चेंदरा**—वि० (कु०) चालाक।
**चेंहणा**—अ० क्रि० (चं०) पीड़ा की अनुभूति होना।
**चे**—स्त्री० (चं०) जड़।
**चेआड़ा**—पु० (सि०) चीड़। बुरी हालत।
**चेआल**—पु० (सि०) चीड़ का वन।
**चेइतर**—पु० (कु०) चैत्रमास।
**चेई**—स्त्री० (कु०) लड़की, कन्या।
**चेई**—स्त्री० (शि०) इच्छा।
**चेईतो**—वि० (शि०) कठिन।
**चेउल**—स्त्री० (कु०) दीवार में लगी शहतीरी।
**चेऊ**—पु० (शि०) कुकुरमुत्ता।
**चेऊल**—पु० (शि०) शहतीर।
**चेओ**—पु० (मं०) ओस।
**चेओ**—पु० (चं०, कां०) Rhadodenohon arboreum.
**चेकड़ी**—स्त्री० (कु०) पतली कमर।
**चेकणा**—स० क्रि० (शि०) पीटना।
**चेकणा**—स० क्रि० (कु०) उठाना।
**चेकनो**—स० क्रि० (शि०) दबाना।
**चेकमक**—स्त्री० (कु०) टिमटिमाहट।
**चेकळा**—पु० (कु०) चकला।
**चेका**—पु० (कु०) कमर का पिछला भाग।
**चेकुला**—पु० (शि०) पिटाई करने का भाव।
**चेकोड़ा**—पु० (सि०) चीड़ का छिलका।
**चेक्करा**—वि० (शि०) टेढ़े मुंह वाला।
**चेखणा**—वि० (मं०) असभ्य।
**चेगा**—पु० (शि०) पेड़ों को सहारा देने का डंडा।
**चेचोड़ा**—वि० (कां०) निकम्मा।
**चेचोड़े**—पु० (सि०) चावल का पकवान।
**चेटचेटा**—वि० (कु०) कठोर।
**चेटणा**—स० क्रि० (कु०) चाटना।
**चेटणी**—स्त्री० (कु०) चटनी।
**चेटपट**—अ० (कु०) शीघ्र।
**चेटपटा**—वि० (कु०) चटपटा।
**चेटपेटिया**—वि० (कु०) शीघ्र कार्य करने वाला।
**चेटा**—वि० (सि०) तंग रास्ता।
**चेटू**—पु० (कु०) डाकिनियों का जादू।
**चेड़ना**—स० क्रि० छिलका उतारना।
**चेड़ना**—स० क्रि० मक्की तोड़ना।
**चेड़ा**—वि० (कु०) टेढ़ा।
**चेड़ौ**—पु० (कु०) दरवाज़ा बंद करने का बाहर की ओर लगा लक्कड़।
**चेढ़ना**—अ० क्रि० (कु०) चढ़ना।
**चेढ़िना**—अ० क्रि० (कु०) चढ़ा जाना।
**चेढ़िना**—अ० क्रि० (शि०) बिगड़ जाना।
**चेतण**—स्त्री० (कां०, ह०, शि०) स्मृति, याद, चेतना।
**चेतणा**—स० क्रि० (कु०) दबाना।
**चेतणा**—स० क्रि० पता लगना।
**चेतणा**—स० क्रि० (कां०, बि०) याद करना।
**चेतर**—वि० (कु०) चतुर।
**चेता**—पु० (कां०, बि०) होश, स्मरण।
**चेता**—पु० (कु०) इलाज, उपचार, टहल-सेवा।
**चेता-चाइन**—पु० (कु०) सेवा।
**चेतिणा**—अ० क्रि० (कु०) दबना।
**चेते**—पु० (सि०) अजगर।
**चेतेऊणी**—स्त्री० (कां०, मं०, शि०) चेतावनी।
**चेत्रा**—पु० चैत्र मास।

**चेथणा**—स० क्रि० (सो०) उपेक्षा करना।
**चेथणा**—स० क्रि० (कु०) पैर से दबाना, धीमे से कुचलना।
**चेथा**—पु० (सो०) सारहीन बात।
**चेथिणा**—स० क्रि० (कु०) दबाया जाना।
**चेथिणो**—स० क्रि० (शि०) निंदा करना।
**चेथुणा**—अ० क्रि० (सो०) पत्थर या लोहे के नीचे आना।
**चेथोड़े**—पु० (सि०) चावलों का विशेष पकवान।
**चेघी**—वि० (मं०) चौथाई, चतुर्थ भाग।
**चेपटा**—वि० (कु०) चपटा।
**चेपटी**—स्त्री० (मं०) चपटी लकड़ी।
**चेपरा**—वि० (सि०) तिमंज़िला।
**चेपली**—स्त्री० (कु०) चप्पल।
**चेपु**—पु० (बि०) प्रातः काल चहकने वाला काले रंग का पक्षी।
**चेपू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) किसी को व्यर्थ में लूटने की क्रिया।
**चेप्पू**—पु० (कां०) मिट्टी का पात्र।
**चेफळा**—वि० (कु०) चपटा, अधिक चौड़ा, सपाट।
**चेबर्खा**—पु० (कु०, शि०) दे० चबरख।
**चेमक**—स्त्री० (कु०) चमक।
**चेमकणा**—अ० क्रि० (कु०) चमकना।
**चेमचा**—पु० (कु०) चम्मच।
**चेमटा**—पु० (शि०) चिमटा।
**चेया**—पु० (शि०) Carpinus Niminea.
**चेयोड़े**—पु० (सि०) चावलों का विशेष पकवान, पूआ।
**चेयोड़े**—वि० (कां०) छिला हुआ।
**चेरकदा**—वि० (कु०) करारा (रोटी का टुकड़ा)।
**चेरकदी**—वि० (कु०) तेज़ ज़ुबान वाली।
**चेरका**—पु० (शि०) धब्बा।
**चेरखड़ी**—स्त्री० (कु०) चरखी।
**चेरखा**—पु० (कु०) चरखा।
**चेरटा**—वि० (बि०) बिगड़ा हुआ, हठी।
**चेरड़**—वि० कृपण।
**चेरड**—वि० (कु०) शरारती।
**चेरसी**—स्त्री० (मं०) तीन वर्ष की अवधि।
**चेरा**—पु० चेहरा।
**चेरा**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) अतिसार से पहले होने वाली दर्द।
**चेरि**—स्त्री० (सो०) निंदा।
**चेलकू**—पु० (सि०) बकरी का बच्चा।
**चेलटा**—पु० (शि०) बकरी का एक से दो साल का बच्चा।
**चेलटी**—स्त्री० (शि०) बकरी की बच्ची।
**चेलटू**—पु० (शि०) बकरी का बच्चा।
**चेलरू**—पु० (कु०) पुत्र (स्नेह वाचक शब्द)।
**चेला**—पु० शिष्य; भूत-प्रेत को भगाने वाला, देवता का प्रतिनिधि पुरुष।
**चेलिया**—वि० (शि०) टेढ़े मुख वाला।
**चेली**—स्त्री० (कु०) बच्ची, पुत्री, छोटी लड़की।
**चेली**—स्त्री० शिष्या।
**चेली**—स्त्री० देवता की प्रतिनिधि स्त्री।
**चेळी**—स्त्री० (बि०) चीड़ का वन।
**चेली**—स्त्री० (कु०) देवता का लकड़ी का रथ।
**चेली**—स्त्री० (कु०) चिड़िया।
**चेलू**—पु० (कु०) पक्षी।
**चेले**—पु० (कु०) अंडे से ताज़ा निकले हुए बच्चे।
**चेले**—पु० (शि०) नाश्ता।
**चेलो**—पु० (मं०) शिष्य।
**चेवल**—पु० (शि०) लकड़ी का शहतीर।
**चेहड़ना**—अ० क्रि० (मं०) अंगड़ाई लेना।
**चेहड़ना**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) लड़ाई करने को तैयार होना।
**चेहुर**—पु० (कु०) 'सूर', 'लुगड़ी' बनाने के लिए सड़ाया गया अनाज।
**चैं**—स्त्री० (चं०) वृक्ष की जड़।
**चैं**—स्त्री० (कु०) शरीर की मैल।
**चैंघड़**—वि० (चं०) बहुत जोड़ों वाली (लकड़ी)।
**चैंघड़**—वि० (चं०) ठिंगना।
**चैंघड़**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) धूर्त।
**चैं-चैं**—स्त्री० बच्चों के चिल्लाने व पक्षियों के चहचहाने की ध्वनि।
**चैंभु**—पु० (चं०) ऊपरी मंज़िल से नीचे की मंज़िल में जाने के लिए बना रास्ता।
**चैंह**—अ० (शि०) चाहिए।
**चैऊ**—पु० (शि०, सि०) गुच्छा।
**चैओका**—पु० (मं०) शिवरात्रि से दो दिन पूर्व का उत्सव।
**चैकणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) ज़ोर से चिल्लाना।
**चैकणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) उकसाना।
**चैकणा**—स० क्रि० (कु०) उठाना।
**चैकरें**—पु० (मं०) लंबी पूंछ वाला पक्षी।
**चैकिणा**—स० क्रि० (कु०) उठाया जाना।
**चैक्कर**—पु० (कु०) चक्कर, परिक्रमा।
**चैक्कर**—वि० निरीक्षक।
**चैघन**—वि० कृतघ्न।
**चैटका**—पु० (कु०) किसी की नज़र लगने का भाव।
**चैट्टा**—वि० (शि०) तंग।
**चैड़**—स्त्री० (चं०) किसी विशेष वस्तु के प्रदर्शन एवं उसका गर्व करने का भाव।
**चैड़**—स्त्री० (मं०) प्रतिलिपि।
**चैड़**—स्त्री० (बि०, शि०) शिकार के समय लगाई जाने वाली विशेष प्रकार की आवाज़ें।
**चैड़**—स्त्री० (कां०, ह०, ऊ०) बच्चे द्वारा अकड़ दिखाने की क्रिया।
**चैड़ा**—वि० (चं०) चौड़ा।
**चैड़ूला**—वि० (ऊ०, कां०, चं०) अकड़बाज़, घमंडी।
**चैणा**—वि० (कां०, चं०) बहरा, बधिर।
**चैणी**—स्त्री० (कां०, चं०) मक्की व गंदम की पकने से पहले काटी गई फसल।
**चैणे**—स्त्री० (मं०) भेड़-बकरी।

**चैत**—पु० चैत्रमास।
**चैतर**—पु० दे० चैत।
**चैन**—स्त्री० शांति।
**चैन**—स्त्री० सोने की बनी गले की ज़ंजीर।
**चैनी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) धातु की बनी गले में पहनी जाने वाली पतली ज़ंजीर।
**चैन्हू**—पु० (मं०) कंटीली झाड़ियां काटने का औज़ार।
**चैफड़ा**—पु० (मं०) अकारण की जाने वाली चर्चा।
**चैमोर**—पु० (चं०) द्वार बंद करने के लिए प्रयुक्त तख्ता।
**चैमच्च**—स्त्री० (कु०) उकसाहट, बेचैनी।
**चैर**—स्त्री० (बि०) थोड़ी देर।
**चैर**—पु० (कां०, चं०) एक वृक्ष विशेष।
**चैला**—वि० (शि०, सि०) टेढ़ा।
**चैली**—स्त्री० (शि०, सि०) प्रातः का भोजन, नाश्ता, कलेवा।
**चैवल**—स्त्री० (सि०) दीवार में लगी लंबी लकड़ी।
**चैहरी**—स्त्री० (कु०) लाल रंग का एक छोटा फल।
**चैही**—स्त्री० (चं०) पक्का करने के लिए लगाया गया लकड़ी का टुकड़ा।
**चोंई**—स्त्री० (कां०) आम की सूखी फांक।
**चोंई**—स्त्री० (कु०) मैल, शरीर या कपड़े पर लगी मैल।
**चोंकटू**—पु० (सि०) चिड़िया।
**चोंठी**—स्त्री० (शि०) बांस की टोकरी।
**चोंतरा**—पु० चबूतरा।
**चोंतरू**—वि० (शि०) घमंडी।
**चोंदरा**—वि० (कु०, शि०) चतुर, सतर्क।
**चोंदरिणा**—अ० क्रि० (कु०) अकड़ना, रूठना।
**चोंरा**—पु० (सि०) गांव का सांझा आंगन।
**चोंरा**—पु० (शि०) छोटे देवता का मंदिर, देवता के मंदिर का सहन।
**चोंरू**—पु० (ऊ०, कां०) काले रंग का बैल जिसके मुंह पर सफेद धब्बे हों।
**चो**—पु० छोटा नाला जिसमें बरसात में पानी होता है।
**चो**—पु० (चं०) सेब की एक किस्म।
**चो**—पु० (कां०, बि०, ह०) कच्चे आम के मूल से निकलने वाला रस विशेष जिसके मुंह के बाहर लगने से छाले पड़ जाते हैं।
**चो**—पु० (सि०) चाव।
**चोआ**—पु० (सि०) स्नानगृह। पानी का स्रोत।
**चोआ**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) खेतों को सींचने के लिए बनी पानी की बड़ी धारा।
**चोआ**—पु० (कां०, बि०, ह०) मक्की के डंठलों या 'पराळ' की राख मिला पानी जो कपड़े धोने या नहाने के काम आता है।
**चोआ**—पु० (कु०) भांग के बीज।
**चोइच**—पु० (सि०) चैत्र मास।
**चोइतीर**—पु० (शि०) दे० चोइच।
**चोई**—स्त्री० छत से गिरा पानी।
**चोई**—वि० (मं०) चौड़ा।
**चोई**—स्त्री० भूमि कटाव से बनी छोटी खड्ड।
**चोई**—स्त्री० सेब की किस्म।
**चोई**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) आम की फांक।
**चोई**—स्त्री० (कु०) बिरोजायुक्त लकड़ी को गर्म करने पर निकला तरल पदार्थ।
**चोईत**—पु० (सि०) चैत्रमास।
**चोऊंरा**—वि० चार तहों वाला।
**चोऊंरा**—वि० (कु०) चितकबरा, दो रंगों वाला।
**चोऊ**—पु० (शि०, सि०) चारा।
**चोऊ**—पु० (कां०) दलदली भूमि।
**चोऊ**—वि० (शि०) चारों।
**चोऊथ**—अ० परसों।
**चोऊलाई**—स्त्री० चौलाई।
**चोऊश**—पु० (कु०) कांटेदार झाड़ी।
**चोए**—स्त्री० (कु०) भांग डाल कर बनाई गई रोटी।
**चोकट**—पु० (शि०) अरथी।
**चोकटू**—पु० (शि०) चिड़िया।
**चोकठ**—पु० (कां०) चौखट।
**चोकड़ा**—पु० (ऊ०, कां०) चार व्यक्तियों की टोली; खेल विशेष।
**चोकणा**—पु० (बि०) चपाती बनाते समय हाथों में लगाया जाने वाला पानी आदि तरल पदार्थ।
**चोकणा**—पु० (कु०) पकाई गई दाल, सब्जी या मांस आदि।
**चोकणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) किसी वस्तु में छिद्र करना।
**चोकणा**—स० क्रि० डुबाना; कलम में दवात में से स्याही लेना।
**चोकणा**—स० क्रि० (कु०) हलका सा डुबाना।
**चोकस**—वि० सावधान।
**चोकसी**—स्त्री० सावधानी।
**चोकांडा**—वि० चार कोनों वाला।
**चोक्खल**—पु० (कां०) एक जंगली फलीदार जड़ी-बूटी।
**चोखर**—पु० (बि०) चोकर।
**चोखला**—वि० चार तहों वाला।
**चोखला**—वि० (ऊ०, कां०) सुंदर।
**चोखा**—वि० चालाक, चुस्त, कुशल; उचित, साफ-सुथरा।
**चोखा**—पु० (कु०) पवित्रता; देवता के आयोजन से पूर्व 'हार' के लोगों द्वारा कपड़ों, घरों और आंगन-द्वार की की गई विशेष सफाई या शुद्धि।
**चोखा**—वि० (कु०, शि०) पवित्र, शुद्ध।
**चोखा**—पु० (शि०) मेहमान को दिए जाने वाले भोजन में घी डालने की क्रिया।
**चोखाचारा**—पु० (कु०) सफाई, शुद्धि।
**चोखारा**—वि० (कु०) देवता के लिए रखा घी।
**चोग**—स्त्री० मुर्गियों या पक्षियों को दिया जाने वाला दाना।
**चोगशाई**—स्त्री० (शि०) चौकसी।
**चोगा**—पु० (कां०, बि०, ह०) घूस। चुग्गा।
**चोगा**—पु० लंबा कोट।
**चोग्गु**—वि० (कां०) चार दांतों वाला। बहुत प्रेम से चरने वाला (पशु)।

चोच—पु० (कु०) लड़का, 'मीच' का विपरीतार्थक शब्द।
चोचल—स्त्री० (चं०) पक्षी विशेष।
चोचला—वि० (कां०, बि०) मृदुभाषी, मीठा बोलने वाला; चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाला।
चोचले—स्त्री० चिकनी चुपड़ी बातें, व्यर्थ का प्रदर्शन।
चोज—वि० (कां०) दक्ष, चतुर।
चोज—पु० (कां०, बि०) विविध प्रकार के खाद्य पदार्थ।
चोजणा—स० क्रि० (सि०) नाटक करना।
चोजला—वि० (कां०, बि०) दूसरों को चाहने वाला (व्यक्ति)।
चोट—स्त्री० (चं०) वेणी।
चोट—स्त्री० (कु०) फेंकने की क्रिया।
चोटक—स्त्री० (शि०) चिंगारी।
चोटकु—पु० (कां०) जाल के पास का रस्सी का भाग।
चोटा—पु० (शि०) कमी।
चोटिणो—अ० क्रि० (शि) कम होना।
चोटी—स्त्री० शिखर; शिखा।
चोटी—स्त्री० वेणी।
चोटीपीड़जा—पु० (कां०, बि०) पक्षी विशेष।
चोटू—पु० (चं०) मक्की के भुट्टे का सिरा।
चोटू—पु० (कां०, बि०) छोटी वेणी।
चोटू—पु० (कु०) डाकू, चोर।
चोट्टू—पु० (सि०) एक पक्षी विशेष।
चोठलू—पु० (शि०) टीन का बना पात्र।
चोठला—पु० (सि०) ऊनी कपड़ों को धोने का स्थान।
चोड़फू—पु० (सि०) चोटी।
चोड़चपट्ट—स्त्री० सर्वनाश।
चोड़णो—अ० क्रि० (सि०) चढ़ना।
चोड़ना—स० क्रि० (कु०) तोड़ना।
चोड़ना—स० क्रि० (कां, चं०) छिलका उतारना, उखाड़ना।
चोड़नो—स० क्रि० (शि०) तोड़ना।
चोड़ा—पु० छत से टपकता वर्षा का पानी।
चोड़ा—स्त्री० (कां०) चामुंडा देवी।
चोड़ा—पु० (कु०) छत से टपकता वर्षा का पानी।
चोड़ान—पु० (शि०) तोड़ाई।
चोड़ान—स्त्री० (कां०, बि०, मं०) चौड़ाई।
चोड़ी—स्त्री० (सि०) बर्तन रखने का मिट्टी का स्थान।
चोड़ी—स्त्री० (मं०) कमर से ऊपर का वस्त्र।
चोड़ी—स्त्री० (चं०) रान, जांघ।
चोड़ू—पु० (शि०) पक्षी।
चोड़े—स्त्री० (कु०) कलगी, चोटी।
चोढा—पु० (ऊ०, कां०, ह०) दाग, गंदा धब्बा।
चोढा—पु० (कु०) सिर के बाल (सर्वदा एक वचन में प्रयुक्त)।
चोणा—अ० क्रि० रिसना, छत से पानी का टपकना।
चोणा—स० क्रि० दुहना।
चोणा—स० क्रि० (कां, बि०, मं०) कृपण व्यक्ति से धन लेना।
चोणा—पु० (सि०) चना।
चोणा—स्त्री० (सि०) चांदनी।
चोत्या—पु० (चं०) मार-पीट।
चोत्या—पु० (चं०) किसी व्यक्ति के विषय में सामूहिक रूप से की जाने वाली व्यर्थ की टिप्पणी।
चोथणा—स० क्रि० (कु०) खूब खिलाना।
चोथा-पिथा—पु० (कु०) पालन-पोषण।
चोधा—वि० (चं०) मोटा डंडा।
चोन—वि० (शि०) तीन।
चोनण—पु० (सि०) चंदन।
चोप—स्त्री० (चं०) भेड़ की जूं।
चोपड़—स्त्री० मालिश; रोटी को चुपड़ने का भाव।
चोपड़—पु० मक्खन।
चोपड़—पु० (कु०) मक्खन।
चोपड़ना—क्रि० (शि०) रोटी में घी लगाना।
चोपड़ना—स० क्रि० मालिश करना; सहलाना।
चोपड़ना—स० क्रि० (सि०) प्यार करना; चमचागिरी करना; व्यर्थ की बातें करना।
चोपड़ना—स० क्रि० (कु०) रोटी में घी लगाना।
चोपड़िना—स० क्रि० (कु०) रोटी या फुलके में घी लगाया जाना।
चोपड़ुघाह—पु० (कु०) चिकने व चौड़े पत्ते वाला घास जिसे गर्म करके फोड़े पर लगाया जाता है जिससे सख्त फोड़ा जल्दी पक जाता है।
चोपड़ू—पु० (मं०, कु०) Flemingia fruticulosa.
चोपण—पु० (शि०) दे० चोपड़।
चोपनु—वि० (शि०) कमज़ोर।
चोपनू—पु० (ऊ०, कां०) चौड़े पत्तों से शंकु आकार की बनी पुड़ियां।
चोपरखिला—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Miliusa velutina.
चोपलणा—स० क्रि० (कु०) दे० चोपड़ना।
चोपली—स्त्री० (सि०) चप्पल।
चोपाई—स्त्री० (शि०) चौराहा। चारपाई।
चोपी—स्त्री० पत्तों से बनी शंकु आकार की पुड़ियां।
चोफिरी—अ० चारों ओर।
चोब—स्त्री० (कां०, चं०, बि०) नगाड़ा बजाने की विशेष चपटी लकड़ी।
चोबण—पु० (शि०) तरी, शाक।
चोबर—वि० (ऊ०) शरारती, शैतान; हृष्ट-पुष्ट।
चोबा—पु० (शि०) नमीयुक्त बीजों का ढेला।
चोबा—पु० (शि०, सि०) बड़ी कील। ज़ख्म।
चोबा—वि० (कां०, चं०) पेटू, बहुत भोजन खाने वाला।
चोबा—पु० (मं०) पौधों में डाला पानी।
चोब्बी—वि० चौबीस।
चोभ—पु० चुभन, सुई, कांटे आदि की चुभन।
चोभ—पु० (सो०) शोरबा।
चोभड़ा—पु० (सि०) कीचड़ से भरा हुआ थोड़े पानी वाला तालाब।
चोभड़ु—पु० (कां०, मं०) छोटा तालाब।
चोभा—पु० (चं०) पीप निकालने के लिए किसी नुकीली चीज़ से

घाव कुरेदने की क्रिया।
**च़ोभा**—पु० (चं०) खेत का पानी वाला भाग।
**च़ोभा**—पु० (कु०) गर्म तेल की मालिश।
**चोभी**—स्त्री० (कां०) घराट के पानी का निकास-मार्ग।
**चोभी**—स्त्री० (कां०) डुबकी।
**चोभू**—पु० (कां०, बि०) गोताखोर।
**चोमच**—पु० (सि०) चम्मच।
**चोमासा**—पु० (शि०) बरसात।
**चोर**—पु० (कु०) शहतूत की जाति का एक पेड़ जिसके पत्ते चौड़े और मोटे होते हैं और जिन्हें शाखाओं के साथ सुखा कर भेड़ों को खिलाने हेतु सर्दियों के लिए सुरक्षित रखा जाता है।
**चोर**—स्त्री० (चं०) जंगली गाय की पूंछ के बाल।
**च़ोर**—पु० (कु०) चोर।
**चोरखयाव**—पु० (सि०) दही मथने की रस्सी।
**चोरखी**—स्त्री० (सि०) मथानी।
**चोरटा**—पु० चोर।
**चोरड़ा**—पु० (सो०, शि०) Rhamnus variagata.
**चोरणा**—स० क्रि० चोरना, चोरी करना।
**च़ोरणो**—अ० क्रि० (कु०) छिपना।
**चोरना**—स० क्रि० चुराना।
**चोरनो**—स० क्रि० (शि०, सि०) चुराना।
**चोरपाई**—स्त्री० (शि०) चारपाई।
**चोरमुट्ठा**—पु० (मं०) चामर, चंवर।
**चोरस**—वि० वर्गाकार।
**चोरा**—पु० Angalica glouca.
**चोरा**—पु० मसाले के रूप में प्रयुक्त एक जंगली जड़ी।
**चोराढोल**—पु० (शि०) गोमूत्र एकत्रित करने का स्थान।
**चोरिणो**—अ० क्रि० (शि०) छिपना।
**चोरिना**—स० क्रि० (कु०) चुराया जाना, चोरा जाना।
**च़ोरी**—स्त्री० (कु०) चोरी।
**चोरोई**—स्त्री० (शि०) बड़ा बर्तन।
**चोरोण**—स्त्री० (शि०) चरने के लिए उपयुक्त घास।
**चोर्बे**—स्त्री० (शि०) चर्बी।
**चोलणा**—पु० (कां०, चं०) गद्दियों की वेशभूषा।
**चोलणु**—पु० (शि०) पेट के कीड़े।
**चोलछी**—स्त्री० (सो०) झोली।
**चोला**—पु० (सि०) देव मूर्ति का वस्त्र।
**चोळा**—पु० चोला, लंबा कोट।
**च़ोळा**—पु० (कु०) दे० चोळा।
**चोलाकी**—स्त्री० (सि०) चतुरता, चालाकी।
**चोलायण**—पु० (सि०) आटा छानने के बाद का कूड़ा, चोकर।
**चोलाह**—पु० (सो०) वेग, गति।
**चोली**—स्त्री० कमर से ऊपर पहना जाने वाला स्त्रियों का वस्त्र।
**चोली**—स्त्री० (ऊ०, कां०) विवाह के समय ननिहाल से वधु को दिया जाने वाला पीत-वस्त्र।
**च़ोळी**—स्त्री० (कु०) स्त्रियों की कमीज़।
**चोल्लु**—पु० (मं०) बीस गज़ की घघरी।
**च़ोळ्ळ**—पु० (कु०) बच्चे की कमीज़।
**च़ोल्हा**—पु० (कु०, शि०) किसी से (विशेषतया घर के अन्य सदस्यों से) छुपाकर बनाया गया मनपसंद भोजन।
**च़ोल्ही**—स्त्री० (कु०) मिट्टी की सुराही जो 'सूर' पिलाने के लिए प्रयुक्त की जाती है।
**चोल्ही***—स्त्री० (कु०) सिर।
**चोसा**—पु० ठठेरे का औज़ार।
**चोसा**—पु० (चं०) चूसने योग्य।
**च़ोसा**—पु० (कु०, मं०) लकड़ी को रगड़कर साफ करने के लिए प्रयुक्त लोहे का खुरदरा औज़ार।
**चोस्सा**—वि० (कां०) चूसने योग्य फलादि|लकड़ी में वर्गाकार छेद करने का चपटा औज़ार।
**चोहटा**—पु० (कां०) बिछौना।
**चोह**—अ० कुत्ते को पुकारने का शब्द।
**चोहगड़**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) चहल-पहल।
**चोहगड़**—वि० (कां०) खुला।
**चोहटा**—पु० चारों ओर मकानों और दुकानों के बीच की चौड़ी जगह।
**चोहटा**—पु० भैंसा।
**च़ोहड़**—स्त्री० (कु०) चोटी, कलगी।
**च़ोहड़ा**—पु० (कु०) दे० च़ोहड़।
**चोहड़ा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) दाग।
**चोहणना**—अ० क्रि० (कु०) दर्द में चिल्लाना, कराहना।
**चोहदें**—स्त्री० (कां०) चंद्र पक्ष की चतुर्दशी।
**चोहल**—स्त्री० (चं०) लिपाई के लिए प्रयुक्त मिट्टी।
**चोहल**—स्त्री० (चं०) शरारत।
**चोहलणा**—स० क्रि० (कां०) रौंदना।
**चोहलणू**—पु० (बि०) मिट्टी का खुले मुंह वाला पात्र।
**चोहलु**—पु० (कां०) ब्राह्मण।
**चौंक**—पु० सिर का आभूषण।
**चौंकड़ी**—स्त्री० चूल्हे का वर्गाकार स्थान।
**चौंकड़ी**—स्त्री० पद्मासन में बैठने की स्थिति, पालथी।
**चौंकली**—स्त्री० आभूषण विशेष, छोटा 'चौंक'।
**चौंका**—पु० रसोई का स्थान, चौका।
**चौंड**—स्त्री० (चं०) चामुंडा देवी।
**चौंसड़ा**—पु० चबूतरा।
**चौंतीश**—वि० (शि०) चौंतीस।
**चौंतीस**—वि० दे० चौंतीश।
**चौंद्रमा**—पु० (कु०, शि०, सि०) चंद्रमा।
**चौंर**—स्त्री० चंवर, चामर।
**चौंर**—पु० (सि०) जूड़े में लगाया जाने वाला धागा।
**चौंरमुट्ठा**—पु० देवयात्रा में देवता के ऊपर झुलाया जाने वाला चंवर।
**चौंरा**—पु० (शि०) देवता का मंदिर।
**चौंरा**—वि० नीले व सफेद रंग का (पशु या जानवर)।
**चौंरी**—स्त्री० चमरी, सुरागाय।
**चौंरी**—स्त्री० (मं०) रथ को वर्षा व धूप से सुरक्षित रखने के लिए बनाया गया गृह-विशेष।
**चौंरी**—स्त्री० (शि०) छावनी।

**चौ**—पु० सफाई करने वाला आदमी।
**चौआ**—पु० (शि०) दरार।
**चौआ**—पु० चौका, चार चीजों का समूह।
**चौइणा**—पु० (शि०) जानवर।
**चौईल**—पु० (सि०) चैत्रमास।
**चौउदा**—वि० चौदह।
**चौउदा**—वि० दे० चौउदा।
**चौउला**—पु० (चं०) दीवार में लगाई जाने वाली दीवार के बराबर की लकड़ी।
**चौउला**—वि० शौकीन।
**चौउला**—पु० (चं०) सफेद रंग का बारीक दाने वाला अनाज जो दलिया की तरह पकाकर खाया जाता है।
**चौऊ**—वि० (शि०) चार।
**चौऊणा**—वि० (कु०) चार गुणा।
**चौऊदरा**—वि० (शि०) चारों ओर।
**चौकड़ियापौणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०, ह०) तेज भागना।
**चौकड़ी**—स्त्री० चार खोरियों का खेल।
**चौकड़ी**—स्त्री० पशुओं की चारों टांगों को उछाल कर भागने की क्रिया।
**चौकणा**—अ० क्रि० (कु०) सड़ना।
**चौकणा**—स० क्रि० (चं०) भिगोना।
**चौकणा**—स० क्रि० (कु०, सि०) उठाना।
**चौकणो**—स० क्रि० (शि०) उठाना।
**चौकपुरना**—पु० (मं०) दीपावली का मंडप।
**चौकफुल**—पु० सिर पर लगाने का गहना।
**चौकरणो**—अ० क्रि० (शि०) चमकना।
**चौकला**—पु० रोटी बेलने का चकला।
**चौकळा**—वि० (ऊ०, कां०, कु०) वर्गाकार।
**चौका**—दे० चौका।
**चौका**—पु० (कु०) चूल्हे के चारों ओर किया गया मिट्टी या गोबर का लेप; देवता को पूछते समय गूर के आगे फर्श पर किया गया गोबर का गोल लेप।
**चौकिणा**—स० क्रि० (कु०) उठाया जाना।
**चौकी**—स्त्री० लकड़ी का पटरा।
**चौकी**—स्त्री० विवाह मंडप में बैठने का विशेष चौकोर आसन।
**चौकी**—स्त्री० पुलिस और सेना का चौकसी का स्थान।
**चौकी**—स्त्री० (कु०) सोने का चौकोर कंठाभूषण।
**चौकीदार**—पु० (कु०) चौकीदार।
**चौको**—पु० (कु०) रसोई।
**चौक्खर**—वि० (चं०) जिसकी टांगें काम न करें।
**चौक्खरिणा**—अ० क्रि० (चं०) बीमारी से अपंग होना।
**चौखट**—स्त्री० लकड़ियों का चौकोर ढांचा।
**चौखटा**—पु० आयताकार लकड़ियों का चौखट।
**चौखड़िना**—अ० क्रि० (कु०) बैठे-बैठे अकड़ जाना।
**चौखर**—वि० (चं०) जिस व्यक्ति के बीमारी के कारण अंग जुड़ गए हों।
**चौखरीण**—स्त्री० (चं०) 'चौक्खर' होने की दशा।
**चौखा**—पु० (कु०) दे० चोखा।
**चौखिणा**—अ० क्रि० (कु०) सड़ जाना।
**चौखिणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) उठाया जाना।
**चौखोवट**—पु० (सि०) चौखट।
**चौगणा**—वि० चार गुणा।
**चौगरो**—पु० (शि०) महसूस करने का भाव।
**चौगस**—वि० सतर्क, चौकस।
**चौगसी**—स्त्री० सतर्कता, चपलता।
**चौगा**—वि० चार दांतों वाला।
**चौगा**—पु० (कु०) षड्यंत्र, किसी के विरुद्ध वार्तालाप, निंदा।
**चौगाठ**—पु० दे० चौखट।
**चौगान**—पु० बड़ा मैदान।
**चौगुणो**—वि० चारगुणा।
**चौघा**—वि० (मं०) चौड़ा, खुला, विस्तृत (स्थान)।
**चौचड़ना**—स० क्रि० (कु०) कुतरना।
**चौच्रमणा**—स० क्रि० (कु०) पशुओं के द्वारा किसी की फसल उजाड़े जाने पर पंचों (पंचायत के नहीं) द्वारा नुकसान निर्धारित करना तथा पशुओं के मालिक से नुकसान वसूलना।
**चौचा**—पु० (कु०) रस्सी में लगा एक लोहे का गोलकार भाग जिससे रस्सी आसानी से खींची जा सकती है।
**चौचा**—पु० (कु०) घड़े आदि बर्तन रखने के लिए धान के घास का बनाया गोल चक्र।
**चौची**—स्त्री० (कु०) पालथी।
**चौटकण**—वि० (शि०) सुंदर व चपल (स्त्री)।
**चौटकणा**—अ० क्रि० (कु०) फर्श से तड़-तड़ की आवाज़ आना।
**चौटकणो**—अ० क्रि० (सि०) चिल्लाना। फुदकना।
**चौटू**—पु० (मं०) कुत्ता।
**चौठे**—स्त्री० (शि०) अनाज मापने का बांस का पात्र।
**चौड़**—स्त्री० (कु०) दरार।
**चौड़**—स्त्री० (मं०) लकड़ी का बरामदा।
**चौड़**—पु० (शि०) बर्तन के नीचे रखने के लिए बनाया घास या मूंज का गोल चक्र।
**चौड़**—स्त्री० अकड़, गर्व, दिखावा।
**चौड़की**—स्त्री० (शि०) चिड़िया।
**चौड़णा**—अ० क्रि० (कु०) सर्दियों में हाथ-पैर का फटना।
**चौड़ना**—अ० क्रि० अकड़ना।
**चौड़ना**—अ० क्रि० (शि०) चढ़ना।
**चौड़नो**—अ० क्रि० (सि०) चढ़ना, सवार होना।
**चौड़ा**—पु० (चं०) रान।
**चौड़ी**—स्त्री० (सि०) लकड़ी की कलछी।
**चौड़ी**—स्त्री० (चं०) पशु की टांग का ऊपरी भाग।
**चौड़ुणा**—अ० क्रि० (सो०) फैलना, नखरे करना, गर्व करना।
**चौड़े-मकौड़े**—वि० (कु०) ऐरा-गैरा, साधारण (मनुष्य)।
**चौड़ो**—वि० (शि०) चौड़ा।
**चौड़ो**—पु० (कु०) पानी का निकास।
**चौढ़ना**—अ० क्रि० (कु०) धूप से संतप्त होना।
**चौढ़ना**—अ० क्रि० (कु०) चढ़ना।
**चौण**—पु० (शि०) कच्चा तंबाकू।
**चौणचणो**—वि० (शि०, कु०) सख्त, ऐसी सख्त भूमि जिस पर

हल कठिनाई से चलाया जा सके।
**चौणा**—पु० पालतू पशुओं का समूह।
**चौणा**—पु० (शि०) चना।
**चौणा**—वि० (चं०) चार तहों वाला।
**चौणी**—स्त्री० (कु०) मांस के टुकड़े।
**चौणे**—पु० भेड़-बकरियों का समूह।
**चौणो**—अ० क्रि० (सि०) टपकना।
**चौती**—वि० चौंतीस।
**चौथ**—स्त्री० चतुर्थी।
**चौथ**—अ० नरसों।
**चौथड़**—वि० चौथी बार ब्याने वाली गाय या भैंस।
**चौथा**—पु० चौथे दिन का ज्वर।
**चौथा**—वि० चतुर्थ।
**चौथिया**—वि० (शि०) चौथा भाग, चौथाई।
**चौदश**—स्त्री० चतुर्दशी, चौदहवीं तिथि।
**चौदसी**—स्त्री० चतुर्दशी।
**चौदू**—वि० (कु०) ठिगना, कमज़ोर।
**चौधरी**—पु० मुखिया।
**चौन**—वि० (कु०, शि०) तीन।
**चौन**—स्त्री० (कु०) दे० चौंन।
**चौपट**—वि० नष्ट-भ्रष्ट।
**चौपड़**—स्त्री० चौसर का खेल।
**चौफड़**—वि० चार तहों वाला।
**चौब**—स्त्री० आंख में किसी चीज़ से मामूली चोट लगने का भाव।
**चौबी**—वि० चौबीस।
**चौमकणो**—अ० क्रि० (कु०) चमकना।
**चौमुड़नो**—अ० क्रि० (शि०) झपटना।
**चौरखा**—पु० (शि०) चरखा।
**चौरना**—स० क्रि० (कु०) चरना।
**चौरबी**—स्त्री० (कु०, शि०) चर्बी।
**चौरसी**—स्त्री० लोहा काटने व लकड़ी छीलने का औज़ार।
**चौरा**—वि० (सो०) स्फूर्ति से कार्य करने वाला।
**चौरा**—पु० (कु०) चरागाह।
**चौरू**—पु० (शि०) चरू।
**चौंर्न**—स्त्री० (कु०) जबड़ा।
**चौळ**—पु० चावल।
**चौळटी**—स्त्री० (कु०) मिट्टी का विशेष घड़ा जिसमें दही मथा जाता है।
**चौलटू**—पु० (कु०) छोटे आकार की 'चौळटी'।
**चौलणा**—अ० क्रि० (कु०) चलना।
**चौलरा**—वि० (कु०) फीका, जिसमें मीठा कम हो।
**चौला**—पु० चौलाई।
**चौळा**—वि० (बि०) कमज़ोर नज़र वाला।
**चौळा**—पु० (कु०, शि०) स्नानागार, बर्तन साफ करने का स्थान।
**चौश**—स्त्री० (कु०) चसक, अकस्मात् कमर में होने वाली दर्द।
**चौसर**—पु० (सि०) चार वस्तुओं का समूह।
**चौसा**—पु० (कु०) पानी निथारने पर बचे हुए कण।
**चौहगो**—वि० (मं०) चार दांतों वाला।
**चौहट**—वि० चौंसठ।
**चौहट**—पु० (कां०, चं०) चार सूतों से बनाया एक मोटा सूत।
**चौहरा**—वि० चार तहों वाला।
**चौहरी**—स्त्री० (कु०) चमड़ा भिगोने का स्थान।
**च्यूली**—स्त्री० (कां०, बि०) एक कांटेदार झाड़ी।
**च्योत**—पु० (चं०) Pinus waltichi
**च्योर**—पु० (चं०) Carpinusviminea.
**च्योल**—पु० (कु०, मं०, शि०) पत्थरों की चिनाई में लगभग दो-तीन फुट की ऊंचाई पर रखी गई शहतीरी।
**च्वौ**—पु० (सि०) दीवार।
**च्वोकणा**—वि० (चं०) पुरातन, पिछले वर्ष का।
**च्वाखिरा**—वि० (मं०) बिगड़ा हुआ, भयभीत।
**च्वाट**—पु० उच्चाटन मंत्र।
**च्वाटण**—स्त्री० (मं०) दे० च्वाट।
**च्होड़ा**—पु० (कां०, चं०) हल को चलाने हेतु पकड़ी जाने वाली हत्थी विशेष।

## छ

**छ**—देवनागरी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा वर्ण। उच्चारण स्थान तालु।
**छअटे**—स्त्री० (शि०, सि०) ठोड़ी।
**छअड़**—स्त्री० (शि०, सि०) अंजलि।
**छगाई**—स्त्री० टहनियों की कटाई।
**छगियाल**—स्त्री० (कु०) संकट, उलझन।
**छगोणा**—अ० क्रि० (बि०, ह०) दूर रहना।
**छघोणा**—अ० क्रि० (चं०, बि०) किसी व्यक्ति के प्रति अलगाव रखना।
**छछ**—पु० (शि०) कानून की पकड़ में लाने की क्रिया।
**छछोलणा**—स० क्रि० जोर से हिलाना।
**छछोलू**—पु० (चं०) ऊंची पर्वत-श्रेणी पर खिलने वाले बहुरंगी फूल।
**छंजराटा**—पु० (मं०) दे० झंजराड़ा।
**छंजोलना**—स० क्रि० (सो०) छलकाना।
**छंड**—स्त्री० (चं०) ढलानदार स्थान, पहाड़ की ढलान।
**छंड**—स्त्री० (कां०) बिखेर कर बीज बोने की क्रिया।
**छंड**—स्त्री० (चं०, कां०) घर के पृष्ठ-भाग में ढलानदार 'ढाक'।
**छंड**—स्त्री० (चं०) गहरी खाई।
**छंडणा**—स० क्रि० छोटना, बिखेरना।
**छंडणा**—स० क्रि० सूप से अन्न साफ करना।
**छंडाई**—स्त्री० (बि०) छटनी।
**छंडाकणा**—स० क्रि० (कु०, बि०) पटकाना, दूर फेंकना।

**छंडाकिणा**—अ० क्रि० (कु०) पटकाया जाना, दूर फेंका जाना।
**छंडार**—पु० (चं०) 'छंडाई' करने वाला।
**छंडार**—पु० (चं०) बदनामी, अपयश।
**छंद**—पु० पद्य रचना, छंद।
**छंदा**—पु० (कु०) निमन्त्रण।
**छंदा**—स्त्री० (कां०) याचना।
**छंदे**—अ० (कां०) कृपया।
**छंब**—पु० (ह०) मक्की बीजने के उपरांत 'दंदाल' से खेत को साफ करने की प्रक्रिया।
**छंब**—पु० (चं०) धोखा।
**छंब**—स्त्री० (चं०, कां०, शि०) एक हाथ को मुख से लगाकर दूसरे हाथ से गड़वी या गिलास से पानी उड़ेल कर पीने की क्रिया।
**छंबण**—पु० (शि०) साबुन।
**छंबाई**—स्त्री० (मं०) टहनियों की कटाई।
**छंभ**—पु० (कां०) ऊंचा किनारा, टीला, नदी का ऊंचा किनारा।
**छंह**—पु० (मं०) छूत।
**छंहब**—पु० (बि०) घात, आक्रमण करने के लिए ली गई आड़।
**छंहू**—अ० (शि०) पीछे।
**छअ**—वि० (शि०) छः।
**छई**—स्त्री० (बि०, मं०) तलवार या तेज धार के शस्त्र से एकदम काटने की क्रिया।
**छई**—स्त्री० (मं०) ईंधन।
**छई**—स्त्री० (कां०) विवाह में प्रयुक्त होने वाली शुभ मुहूर्त में काटी गई लकड़ी।
**छई**—स्त्री० (शि०) छत के एक भाग का नाम।
**छऊ**—पु० (चं०) झरना, स्रोत।
**छऊ**—स्त्री० (मं०) कुल्हाड़ी।
**छऊली**—स्त्री० (चं०) ठोड़ी।
**छक**—पु० (कां०, ह०) शक।
**छक**—वि० (मं०) इच्छा।
**छक**—स्त्री० (बि०) आहार, खुराक।
**छक**—स्त्री० (चं०, मं०) एक समय का भोजन।
**छक**—स्त्री० (चं०) विवाहादि के समय मामा या किसी अन्य संबंधी द्वारा दिया गया एक समय का प्रीतिभोज।
**छकड़ा**—वि० टूटा-फूटा।
**छकड़ी**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) पशुओं के मुंह पर लगाया जाने वाला रस्सियों से बना छीका।
**छकड़ी**—स्त्री० (चं०, मं०) कौड़ी का खेल।
**छकड़ी**—स्त्री० (शि०, सि०) होश-हवास।
**छकड़ा**—स० क्रि० भोजन करना।
**छकरैहदा**—पु० (बि०) बालकों का समूह।
**छकाली**—पु० (कां०) फसल हेतु लगाए ..ए मज़दूर।
**छकू**—पु० (बि०, मं०) बांस का बना छोटा सा पात्र।
**छकेरना**—स० क्रि० (कां०) किसी से पकवाना।
**छकेवणा**—स० क्रि० (सो०) छकाना। छींक दिलवाना।
**छकोणा**—अ० क्रि० (बि०, चं०) फटना।
**छक्कापंजा**—पु० कामकाज, उपाय।
**छखड़ी**—स्त्री० (शि०) दिमागी ताकत।
**छखड़ी**—स्त्री० छीका।
**छखूणा**—वि० छः कोनों वाला।
**छगना**—स० क्रि० (बि०) डराना।
**छग्गा**—वि० जिस पशु के छः दांत निकल आए हों।
**छचाटी**—स्त्री० (कु०) छत बनाने की लकड़ी।
**छच्छा**—पु० कच्चे आम की चटनी।
**छछकेरना**—स० क्रि० (कां०, बि०, चं०) छेड़ना।
**छछरा**—वि० (कां०, बि०) बांस को फाड़कर चपटा किया हुआ रूप।
**छछरा**—वि० (कां०, बि०) बुरी तरह से कुचला हुआ।
**छछरा**—वि० (कां०, मं०, बि०) कटी हुई टहनियों वाला।
**छछरा**—वि० (कां०, ऊ०, ह०) कटी हुई पत्तियों से युक्त (टहनी)।
**छछरे**—वि० (मं०) इकहरे।
**छछरे**—वि० (कां०, ऊ०, ह०) धूर्त, चपल, चंचल।
**छछरे**—पु० (बि०) शहतूत की काटी हुई पतली टहनियां।
**छछरोणा**—अ० क्रि० (बि०, कां०) बांस आदि का फटना।
**छछला**—वि० (चं०) दे० घुन्ना।
**छछलोणा**—अ० क्रि० (बि०, कां०) जोर से हिलना।
**छछलोणा**—अ० क्रि० (बि०, मं०, कां०) उतावला होना।
**छछोलणा**—स० क्रि० (मं०, कां०, बि०) निथारना।
**छज**—स्त्री० सूप, छाज।
**छजळी**—अ० (चं०) छनने की ध्वनि।
**छजाका**—स्त्री० छोटा सूप।
**छजाधारी**—वि० (सि०) धनवान।
**छज़ेणा**—स० क्रि० (कु०) छत से घर के अंदर पानी टपक रहा हो तो उसे ठीक करना।
**छजेवणा**—स० क्रि० (सो०) कर्ज़े आदि को निपटाना।
**छजैन**—पु० (शि०) डंडा।
**छजैहड़ा**—पु० (बि०, कां०) छाज बनाने और बेचने वाला।
**छजोळ**—पु० (शि०) मकड़ी।
**छजोली**—स्त्री० दे० छजळी।
**छजोळी**—स्त्री० (शि०, सि०) रगड़ाई।
**छज्जा**—पु० मकान की छत का अगला भाग।
**छट**—स्त्री० (कां०, चं०, बि०) घोड़े पर लादा जाने वाला बोझ।
**छटक**—स्त्री० (मं०) चटक।
**छटकारि**—स्त्री० (सो०) बूंद।
**छटणा**—स० क्रि० दे० छंडणा।
**छटणा**—स० क्रि० (चं०) भेद लेना।
**छटणा**—अ० क्रि० (कु०) घूमना।
**छटणा**—अ० क्रि० (शि०) सुधरना, सफाई करना।
**छटपटी**—स्त्री० बेहोशी की अवस्था में होने वाली बेचैनी।
**छटपणा**—पु० (चं०) छिपाने का भाव।
**छटपना**—स० क्रि० (मं०) छिपाना।
**छटया**—वि० चालाक, दुष्ट, बदमाश।
**छटरूणि**—स्त्री० (सो०) कपड़े धोने के लिए क्षार बनाने की एक प्रक्रिया।

**छटांकी**—वि० छोटे कद या दुर्बल शरीर वाली।
**छटांकी**—वि० माप तोल विशेष, एक सेर का सोलहवां भाग।
**छटा**—पु० (कां०, ऊ०) क्रोध।
**छटा**—स्त्री० देवशक्ति से देवता के प्रतिनिधि (चेले) के शरीर में होने वाला कंपन।
**छटा**—पु० (मं०) चांदी का कंठाभूषण।
**छटाक**—अ० टूटने की ध्वनि।
**छटाक**—पु० (कु०) दाग।
**छटार**—स्त्री० (कां०, चं०, बि०) छाज से दाने साफ करने वाली स्त्री।
**छटारा**—पु० (सो०) छोटे-छोटे दाग।
**छटिया**—स्त्री० (सि०) शादी की एक प्रथा।
**छटी**—स्त्री० मुंडन संस्कार।
**छटी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) गुरु या चेले में देवता का प्रवेश।
**छटी**—पु० (शि०) एक लोक नृत्य।
**छटी**—स्त्री० एक छोटी पतली छड़ी।
**छटेउड़**—पु० (सि०) पतली लकड़ियों का ढेर।
**छटेन**—पु० (बि०) फेंकने का व्यापार।
**छटेनणा**—स० क्रि० (सो०) फेंकना।
**छटेरना**—स० क्रि० (कु०) छोड़ा जाना, छूट जाना।
**छटेरि**—स्त्री० (सो०) पशुओं को फसल आदि चरने से रोकने के लिए बांस या रस्सी का बना छीका जो उनके मुंह में बांधा जाता है।
**छटैल**—वि० (कां०, बि०) कुलटा।
**छटोणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) छीटें लगना।
**छटोरड़**—वि० (कां०, चं०, बि०) कलंकित। चालाक।
**छटोरना**—स० क्रि० (कु०) 'किलण' से खेत का बड़ा-बड़ा घास और कूड़ा आदि दूर करना।
**छटो**—पु० (शि०) मुंडन संस्कार।
**छट्टुड़**—वि० (कां०, चं०, बि०) बहुत चालाक, दुराचारी।
**छट्ठा**—पु० छिड़काव की तरह बीज बोने की क्रिया।
**छट्ठी**—स्त्री० (सो०) उत्सव विशेष पर खेली जाने वाली एक विशेष क्रीड़ा।
**छट्ठी**—स्त्री० (सि०) एक लोक ताल, 'जंग' का सहयोगी ताल जिसे ढोल पर ही बजाया जाता है।
**छट्ठी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) हल में फाल के ऊपर लगी ककुदनुमा लकड़ी।
**छठ**—स्त्री० चंद्रमास के हर पक्ष की छठी तिथि।
**छठ**—पु० प्रसव के उपरांत छठे दिन किया जाने वाला पूजन।
**छठा**—वि० षष्ठ।
**छठियां**—स्त्री० (बि०) बालक के ग्यारह दिन का होने पर मनाया जाने वाला उत्सव।
**छड़**—पु० (कां०) सगाई करने के बाद संबंध तोड़ने की क्रिया।
**छड़**—पु० (मं०) पानी की तेज़ धार।
**छड़**—स्त्री० वस्त्रादि रखने के लिए बनाई गई बांस की टोकरी विशेष।
**छड़**—स्त्री० (कां०) भात परोसने की बांस की बनी विशेष टोकरी।
**छड़कंगण**—पु० (मं०, कां०, ऊ०) झुमके, कर्णाभूषण।
**छड़कणा**—स० क्रि० छांटना।
**छड़कणू**—पु० बच्चों का खिलौना।
**छड़कदा**—वि० (कु०) खाली हाथ, निर्धन।
**छड़कांगणी**—स्त्री० (बि०, कां०) छनकने वाले कंगन।
**छड़का**—पु० चौका लगाकर किया जाने वाला पानी का छिड़काव।
**छड़काइणा**—स० क्रि० (कु०) छिड़का जाना।
**छड़काओ**—पु० छिड़काव।
**छड़काणा**—स० क्रि० छिड़काना।
**छड़छड़**—अ० ऊंचाई से पानी गिरने की आवाज़।
**छड़छड़ा**—पु० (सि०) अधपका चावल।
**छड़छड़ा**—पु० (कां, बि०, मं०) छोड़ देने का भाव।
**छड़छड़ाक**—अ० छड़छड़ की ध्वनि।
**छड़णा**—स० क्रि० छोड़ना।
**छड़णी**—स्त्री० (मं०) छत पर स्लेट टिकाने के लिए डाली जाने वाली बांस या सेमल की लकड़ी।
**छड़ना**—स० क्रि० (सि०) धान को आखिरी बार कूटना।
**छड़प्पा**—पु० (बि०, कां०) चौकड़ी, छलांग।
**छड़या**—पु० (बि०) तेज दस्त।
**छड़या**—पु० (शि०, सि०) देवता की छड़ी उठाने वाला।
**छड़याक**—पु० (कु०, मं०) देवता की छड़ी उठाने वाला।
**छड़याड़ा**—पु० (कु०) चिल्लाहट।
**छड़यार**—वि० कुश्ती की व्यवस्था करने वाला।
**छड़याड़**—पु० (बि०) भारी वर्षा।
**छड़याह**—पु० (सि०) विवाह के उपरांत विशिष्ट संबंधियों को दिया जाने वाला प्रीतिभोज।
**छड़लंगड़ा**—पु० (बि०) लापरवाह।
**छड़ा**—वि० अकेला, जिसके बाल-बच्चे व पत्नी न हो।
**छड़ा**—पु० (सि०) सोने या चांदी का गले का आभूषण।
**छड़ाइणा**—स० क्रि० (कु०) छुड़ाया जाना।
**छड़ाउणा**—स० क्रि० (शि०) दौड़ाना, पीछा करना।
**छड़ाकणा**—स० क्रि० छाज द्वारा किसी वस्तु को साफ करना।
**छड़ाकिणा**—स० क्रि० (कु०) पटका जाना।
**छड़ाछड़ाक**—वि० अकेला।
**छड़ाणा**—स० क्रि० (कु०) छुड़ाना।
**छड़ामलंग**—वि० अविवाहित या अकेला।
**छड़ाहणा**—स० क्रि० (कु०) छीनना।
**छड़िग**—स्त्री० (बि०) लकड़ी का तिनका।
**छड़ींग**—स्त्री० (कु०) चिंगारी, अग्निकण।
**छड़ी**—स्त्री० कंधे पर उठाई जाने वाली देवता की सोने या चांदी की कलशदार छड़ी।
**छड़ी**—वि० (सि०) बांझ, अकेली, कुंआरी।
**छड़ी**—स्त्री० पसली।
**छड़ीवी**—स्त्री० (सि०) फेफड़े।
**छड़े**—स्त्री० (मं०) चांदी की छड़ी।
**छड़ेआट**—वि० (सि०, शि०) कामचोर।
**छड़ेऊणा**—स० क्रि० (मं०) छुड़ाना।
**छड़ेओ**—वि० (सि०, शि०) गंदा।

**छड़ेओळा**—वि० (शि०) घृणित, गंदा।
**छड़ेकटा**—पु० (कु०) छिलका।
**छड़ेड़ा**—पु० (मं०) भयंकर दृश्य, भूतप्रेत।
**छड़ेरना**—स० क्रि० (कु०) छुड़ाना।
**छड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) छुड़वाना।
**छड़ेहरू**—पु० (मं०, कां०) लकड़हारा।
**छड़ैठ**—पु० (चं०) जोर की वर्षा।
**छड़ैठ**—वि० (बि०, कां०, ह०) दुर्बल (स्त्री)।
**छड़ोऊ**—पु० (कां०, ह०) ईंधन के लिए प्रयुक्त लकड़ियां।
**छड़ोटो**—पु० (कु०) घिसा हुआ हल।
**छड़ोड्डा**—पु० (शि०) गोबर ढोने का बांस का पात्र।
**छड़ोडा**—पु० (सो०) विवाहादि उत्सवों पर चावल बांटने की बड़ी टोकरी।
**छड़ोड़**—पु० (चं०) भूतबलि।
**छड़ोल**—वि० (कां०, बि०, ह०) छोड़ा हुआ।
**छड़ोल**—स्त्री० (बि०) राजा की सबसे छोटी रानी।
**छड़ोला**—पु० बांस का बना बड़ा टोकरा।
**छड़ोली**—स्त्री० बांस की बनी छोटी टोकरी।
**छड़ोलू**—पु० बांस की छोटी टोकरी जिसमें रोटियां या अन्य वस्तुएं रखी जाती हैं। विवाह आदि में भात बांटने के काम भी आती है।
**छड़ोल्ला**—पु० (कां०, ह०) बाड़।
**छड़ोहड़**—वि० (कां०, शि०) उपेक्षित (पत्नी)।
**छड्डणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) तलाक देना, संबंध तोड़ना।
**छ्ड़ा**—पु० (शि०, सि०) बूंद-बूंद पानी।
**छढ़ोला**—पु० (कु०) दे० छड़ोला।
**छण**—पु० क्षण।
**छणकणा**—अ० क्रि० छन-छन शब्द होना।
**छणक-मणक**—स्त्री० छन-छन।
**छणछणात**—स्त्री० आभूषणों के खनकने की आवाज़।
**छणना**—अ० क्रि० कपड़े का बीच में से झीना होना।
**छणांदू**—पु० (चं०) चोकर।
**छणाका**—पु० झंकार।
**छणाका**—पु० (चं०) आश्चर्य, दुखद समाचार सुनकर सहसा आश्चर्य होने का भाव।
**छणाटना**—स० क्रि० (कु०) मारना, पीटना।
**छणाटा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) दूर से सुनाई देने वाली आभूषणों की झंकार।
**छणाटा**—पु० (कु०) पतला टीन, पपड़ी।
**छणाटा**—पु० (चं०) आटा छानने से बचा अवशेष।
**छणाटी**—वि० (कु०) सख्त।
**छणाटीखोड़**—पु० (कु०) सख्त अखरोट जिसके अंदर गिरी नहीं होती या बहुत कम होती है।
**छणाला**—पु० (मं०) दुग्धादि द्रव।
**छणोई**—स्त्री० किसी वस्तु के टूटने की ध्वनि।
**छणोई**—स्त्री० सहसा भयभीत होने का भाव।
**छणोश**—पु० (मं०) चील वृक्ष की पत्तियों का एकत्रीकरण।
**छत**—स्त्री० मकान का ऊपरी भाग, छत।
**छतकार**—पु० (चं०) एक नाग जाति।
**छतला**—स्त्री० द्वार अथवा खिड़की के ऊपर लगाई गई लकड़ियां।
**छतणां**—स० क्रि० छत डालना।
**छतर**—पु० छत्र, देवता के लिए सोने-चांदी का बना छत्र।
**छतरयाही**—पु० (मं०) देवता का छत्र उठाने वाले।
**छतरी**—स्त्री० जंगली कुकुरमुत्ता।
**छतरे**—स्त्री० (शि०) पीठ।
**छतरे**—स्त्री० (शि०) छाती, वक्षस्थल।
**छतरेवणा**—स० क्रि० (सो०) जूतों से पीटना।
**छतरैहणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) दे० छतरेवणा।
**छतरोड़ा**—पु० पत्तों और बांस का बना बड़ा छाता।
**छतरोड़ी**—स्त्री० (शि०) छतरी, छाता।
**छतरोड़ू**—पु० पत्तों तथा बांस का बना छोटा छाता।
**छतरोली**—स्त्री० (कां०) झगड़ा।
**छताळी**—वि० छयालीस।
**छतिया**—पु० (सि०) सर्वनाश।
**छती**—स्त्री० छतरी।
**छती**—स्त्री० (कां०) भेड़ का मादा मेमना।
**छतोड़ा**—पु० (कां०) धूप व वर्षा से बचाव के लिए मचान पर बनाया गया बांस का छाता।
**छत्तर**—पु० देवी देवता पर चढ़ाया जाने वाला सोने या चांदी का छत्र।
**छत्ता**—पु० (बि०) घोंसला।
**छत्ता**—पु० मधुमक्खियों का छत्ता।
**छत्ती**—स्त्री० छाता।
**छत्ती**—वि० (चं०) छत्तीस।
**छत्तु**—पु० (कां०, मं०, ह०) भेड़ का बच्चा, मेमना।
**छत्राण**—स्त्री० (कां०, बि०) टहनियों व पत्तों की छत।
**छत्री**—स्त्री० (शि०, सि०) कटे हुए बकरे की एक कोख का पूरा हिस्सा।
**छथ**—पु० (कां०) क्रोध।
**छदरौड़ा**—पु० (सो०) पशुओं को दी जाने वाली गाली।
**छदी**—वि० (कु०) सफेद।
**छन**—स्त्री० झोंपड़ी, मकान, घर।
**छन**—स्त्री० (बि०) घास-फूंस का छप्पर।
**छन**—स्त्री० (चं०) विवाहादि के समय भोजन बनाने के लिए बनाया गया स्थान।
**छनकू**—पु० छोटा सा मकान।
**छनणी**—स्त्री० छलनी।
**छनाटणा**—स० क्रि० (कु०) किसी को थप्पड़ और तमाचों से बुरी तरह मारना।
**छनार**—वि० (कां०, चं०) दही या छाछ रखने का मिट्टी का पात्र।
**छनाहडू**—पु० (कां०, बि०) स्वेच्छाचारिणी।
**छनेरना**—स० क्रि० (कु०) उलटाना, खाली करना।
**छन्न**—पु० (कां०) छंद।
**छन्न**—पु० झोंपड़ी।
**छन्ना**—पु० बड़ा कटोरा।

**छन्नी**—स्त्री० कटोरी।
**छप**—अ० (सि०) लबालब।
**छप**—स्त्री० (कां०) अवसर की ताक।
**छप**—अ० पानी में गिरने से हुई आवाज़।
**छपक**—पु० (मं०) चाबुक।
**छपकणा**—स० क्रि० (सो०) उबलते हुए द्रव पर पानी के छींटे देना।
**छपका**—पु० दरवाजे में लगने वाला कब्जा।
**छपका**—पु० (कु०) पानी का बड़ा छींटा।
**छपकी**—स्त्री० (सि०) छिपकली।
**छपकेवणा**—स० क्रि० (सो०) लिपाई करते समय पानी के छींटे देकर फर्श को गीला करना।
**छप-छप**—अ० पानी में किसी वस्तु के गिरने या तैरने से होने वाला शब्द।
**छपड़**—पु० (शि०) छत।
**छपड़**—पु० (कां०, बि०, मं०) छोटा तालाब।
**छपड़ी**—स्त्री० पोखर, तलैया।
**छपड़ू**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) पानी वाली (भूमि), दलदल।
**छपणा**—अ० क्रि० (बि०) मुद्रित होना।
**छपणा**—स० क्रि० छिपकर वार करना।
**छपना**—अ० क्रि० (बि०, चं०) छिप जाना।
**छपरयाह**—पु० (मं०) छप्पर पर दी गई बकरे की बलि।
**छपराटा**—पु० (सि०) छत में प्रयुक्त लकड़ियां।
**छपरादी**—स्त्री० (सि०) छत में प्रयुक्त लकड़ियां।
**छपराळा**—पु० (कु०) पानी की छींटों की बौछाड़।
**छपराळा**—पु० (कु०) छलांग।
**छपरोटी**—स्त्री० (कु०) घर की छत का अग्र भाग।
**छपलुक्की**—स्त्री० (कां०, चं०) छिपने-ढूंढ़ने का खेल।
**छपवाणा**—स० क्रि० (बि०) छिपाना।
**छपवाणा**—स० क्रि० मुद्रित करवाना।
**छपाका**—पु० (बि०) पानी को उछालकर किसी पर फेंकने की क्रिया।
**छपाकी**—स्त्री० शरीर पर पड़े सफ़ेद दाग।
**छपाकी**—स्त्री० (चं०) चालाकी।
**छपाड़·पूजा**—स्त्री० (मं०) बकरे की बलि देकर उसके चार टुकड़े चार दिशाओं में फेंकने की क्रिया।
**छपाछप**—अ० जल्दी-जल्दी।
**छपाणा**—स० क्रि० (कां०, बि०, मं०) छिपवाना, छिपाना; मुद्रित करवाना।
**छपाव्णा**—स० क्रि० (सि०, सो०) छपाना; बाल कटवाना।
**छपुआई**—स्त्री० मुद्रण के बदले दिया जाने वाला धन, मुद्रण का पारिश्रमिक।
**छपूंज**—पु० (चं०) कम मिट्टी से लीपी गई दीवार।
**छपूंजा**—वि० छप्पन।
**छप्पड़**—पु० गंदा तालाब।
**छप्पड़ा**—पु० (मं०) पोखर।
**छप्पर**—पु० छत।
**छप्परसाई**—स्त्री० छप्पर बनाने की क्रिया।
**छबड़ी**—स्त्री० बांस की टोकरी।
**छबणा**—अ० क्रि० (कु०) अच्छा लगना।
**छबलुकी**—स्त्री० (शि०) डुबकी।
**छबाड़**—पु० (कु०) छिपकली।
**छबाड़का**—पु० गिरगिट।
**छबाड़की**—स्त्री० छिपकली।
**छबाणा**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) बिछाना।
**छबारा**—पु० (सो०) छुहारा।
**छबी**—वि० छब्बीस।
**छब्बड़**—पु० (कां०, बि०) घास की जड़ों से जकड़ा हुआ मिट्टी का ढेला।
**छब्बड़**—पु० (चं०) अधिक लाभ।
**छब्बड़**—पु० (चं०) द्वेष।
**छब्बरगाह**—पु० सुखपाल, पालकी के ऊपर लगी लकड़ी या लोहे की जालीदार छत विशेष।
**छब्मण**—स्त्री० (चं०) शाखाओं का समूह।
**छम**—स्त्री० (चं०) एक हाथ को मुख से लगाकर दूसरे हाथ से गड़वी या गिलास से पानी उड़ेल कर पीने की क्रिया।
**छमकछल्लो**—स्त्री० आभूषणों से लदी हुई स्त्री।
**छमकणा**—स० क्रि० (कां०, बि०, मं०) सब्जी दाल को छौंक लगाना।
**छमकणा**—स० क्रि० (चं०) श्रृंगार करना।
**छमकणा**—अ० क्रि० (सि०) उतावला होना, तिलमिलाना।
**छम-छम**—अ० आभूषणों का स्वर।
**छम-छम**—अ० (चं०, बि०) सजी-संवरी स्त्री के लिए प्रयुक्त शब्द।
**छमछरेश्राद्ध**—पु० (बि०, मं०) मृत्यु की तिथि को किया जाने वाला श्राद्ध।
**छमण**—पु० (कां०, ह०) घास को इकट्ठा करने के लिए लगाया गया लकड़ी का सहारा।
**छमणिना**—अ० क्रि० (कु०) ज़ख्म भरना।
**छमा:ड़ी**—वि० (कां०, कु०) छः मास दूध देने के उपरांत पुनः गर्भधारण करने वाली (गाय, भैंस आदि)।
**छमा**—स्त्री० (चं०, बि०) क्षमा।
**छमाई**—स्त्री० (सि०) देवता के कारदारों को छः मास उपरांत काम के बदले दिया जाने वाला अन्न।
**छमाई**—वि० छठे मास किया जाने वाला कार्य।
**छमाछड़**—वि० (सि०) ऐसी गाय जो छः मास के बाद पुनः गर्भ धारण करे।
**छमासा**—पु० छः मास की अवधि।
**छमाही**—स्त्री० छः मास तक के गीतों का वर्णन।
**छमीनड़ा**—वि० (कां०, ह०) छः मास का।
**छमोही**—स्त्री० (कु०) दाढ़ी।
**छम्मण**—पु० (कां०, बि०) पशुओं के नीचे बिछाया जाने वाला घासफूंस।
**छम्मण**—पु० (कां०, बि०) घास की छत।
**छयत्तर**—वि० छिहत्तर।
**छयरोग**—पु० क्षयरोग।

छयाची—स्त्री० (कु०) बरसात में जंगल में उगने वाला कुकुरमुत्ता।
छयाण—पु० (मं०, शि०, सि०) चीड़ के पत्ते।
छयानुए—वि० छियानबे।
छयाळ—वि० (सि०) सुंदर।
छयोड़ी—स्त्री० (सि०, शि०) विवाहित युवती।
छरंछड़ी—पु० (ऊ०, कां०, चं०) एक पीला फूल जो नवम्बर-दिसम्बर में खिलता है।
छर—पु० (चं०) घोड़े पर रखा गया वजन।
छरका—पु० (कु०) पानी की बारीक व तेज़ धार।
छरकिया—वि० (सि०) ऐसा व्यक्ति जो झूठ तथा धोखे से अपने को बचाने की कोशिश करता है।
छरकू—वि० (शि०, सि०) चालाक।
छरछा—पु० (मं०) देवता को धूप देने का पात्र।
छरटी—स्त्री० (मं०) मथनी।
छरड़-छरड़—अ० (कां०, बि०) पानी गिरने का शब्द।
छरड़ा—पु० (कां०, ऊ०) ऊंचाई से तेज पानी गिरने का भाव।
छरण—स्त्री० (चं०) दस्त।
छरद—स्त्री० (शि०, सि०) उलटी, कै।
छरना—अ० क्रि० क्षरित होना।
छरना—अ० क्रि० (कां०, बि०) रिसना।
छरना—अ० क्रि० (कां०) खटाई मिलने से दूध का फटना।
छरबिजण—पु० (सो०) एक छीका विशेष जिससे पत्थरों को फेंक कर बंदरों आदि को खेत से हटाया जाता है।
छरमड़ी—स्त्री० एक फूल विशेष।
छरमरा—पु० (कां०, चं०) एक विशेष प्रकार का सुगंधित पुष्पित पौधा।
छरमरी—स्त्री० (बि०) डोमों द्वारा घर-घर गाया जाने वाला करुण-गीत।
छरमाणा—स० क्रि० (कु०) गाय द्वारा दूध बचाकर अपने बच्चे के लिए सुरक्षित रखा जाना।
छरए—पु० (शि०) तेज़ दस्त।
छरला—पु० (कां०, ह०) पशुओं का पतला दस्त।
छरह—पु० (कां०, ह०) नदी के पानी का कुछ गहराई पर गिरने का भाव।
छरहाड़ा—पु० (बि०) वेग से गिरने वाली जलधारा।
छरा—पु० छर्रा।
छरा—पु० (मं०) झरना।
छरा—पु० (कां०, ऊ०) दोष।
छराड़—पु० (चं०) गाली या उलाहना में प्रयुक्त शब्द।
छराडू—पु० (कु०) बच्चे (केवल गाली देते हुए 'चेले' के संयोग से प्रयुक्त होता है—'चेले छराडू खांदे' (चेले और बच्चे खाने वाले)।
छराड़—स्त्री० (चं०) बारीक वस्तु।
छराड़—स्त्री० (चं०) गरमधूलि।
छराबड़ी—पु० (शि०) Sarcococa salgne.
छराळ—पु० (सि०) छोटे-छोटे बच्चों का समूह।
छराळ—पु० (कु०) प्रसव।
छराळिदी—वि० (कु०) गर्भवती।
छराळिना—अ० क्रि० (कु०) प्रसव होना।
छराहड़ा—पु० (कां०) बड़ा झरना।
छरिई—स्त्री० (कु०) एक घास विशेष।
छरींजा—स्त्री० (कु०) बौछाड़, द्रव पदार्थ की तेज धारा।
छरूःड़ी—स्त्री० (सि०) छत से टपकने वाली पानी की धारा।
छरूःहू—पु० (कां०, बि०) झरना।
छरूःहू—पु० (कु०) बूंदा-बांदी।
छरेर—स्त्री० (चं०) पतला दस्त।
छरैन—पु० (मं०) जंगली साग।
छर्हाड़—पु० (कां०) छत।
छलःई—स्त्री०(कां०, बि०, मं०) सहसा भयभीत होने का भाव।
छल—पु० एक वृक्ष का नाम।
छल—पु० धोखा।
छळ—पु० भूतप्रेत, भूतप्रेत से अविभूत होने का भाव।
छळ—स्त्री० (कु०) सरसराहट, सनसनी।
छलऊ—पु० (शि०) छल, धोखा।
छलका—पु० छलकने का भाव।
छलका—पु० (मं०) किसी के द्वारा छल किए जाने का पूर्वाभास।
छळका—पु० (कु०) किसी को देखकर जलने का भाव।
छलकेरना—स० क्रि० (कु०) छलकाना।
छलकेरिना—स० क्रि० (कु०) छलकाया जाना।
छलछल—पु० कलकल की ध्वनि।
छळछलिंदर—पु० (कु०, सि०) भूतप्रेत का प्रभाव।
छलछिंधर—पु० (कां०) धोखा।
छलणा—स० क्रि० भेद लेना। धोखा देना।
छलणा—स० क्रि० दही मथना।
छलणा—स० क्रि० बर्तन धोना।
छलदुना—वि० (कां०) लज्जित।
छलना—स० क्रि० (चं०, बि०) धूल वाले पत्तों को पानी से साफ करना।
छळना—अ० क्रि० (कां०) भ्रांति होना।
छळना—अ० क्रि० (कु०) भूतप्रेत से डरना।
छलबले—पु० (ऊ०, कां०, ह०) हंसी-मजाक।
छलबले—पु० (सि०) हाथ का एक गहना।
छलयागड़ा—पु० (मं०) मक्की का तना।
छलयाठा—पु० (कां०) मक्की का घास।
छलयाड़—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मक्की का खेत।
छलयाड़ी—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) मक्की की खेती।
छलयाड़ी—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) खेतों में मिट्टी नर्म करने के लिए पहला हल फेरने की क्रिया।
छलवाड़—पु० (शि०) छिपकली।
छलाई—स्त्री० छीलने की क्रिया, छीलने का पारिश्रमिक।
छलाई—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) मारने की क्रिया।
छलाई—स्त्री० (सि०) गन्ने की सफाई।
छलाका—पु० पानी का उछाल।
छळाका—पु० (कु०) छलावा।
छलाणा—स० क्रि० साफ करवाना।

**छलाणा**—स० क्रि० (कु०) बर्तन साफ करना।
**छलाणी**—पु० (कु०) बर्तन धोया हुआ पानी।
**छलाणी**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) खड्ड में पत्थरों से निथर कर आया पानी।
**छलाव**—पु० (कां०, बि०, मं०) बर्तन आदि साफ करने की क्रिया।
**छलावा**—पु० धोखा।
**छलिंदर**—पु० (कु०) धोखा, आश्चर्य की बात।
**छलिओ**—अ० (शि०) बढ़कर।
**छलियासर**—पु० (कां०, बि०) मक्की की रोटी।
**छळींग**—स्त्री० (कु०) दे० छड़ींग।
**छलीट**—स्त्री० (कु०) देवमंदिर, देवस्थान या घर के किसी कारण अपवित्र हो जाने पर उसे शुद्ध करने के लिए दी जाने वाली बलि। किसी का सामर्थ्य न होने पर भेड़ का कान काट कर घर में उसका खून छिड़कने से भी काम चल जाता है।
**छलीठा**—पु० (शि०) मक्की का आटा।
**छलीरा**—पु० (शि०, सि०) आटे का चोकर।
**छलुकड़ा/रा/रू**—पु० (कु०) देवदार के पेड़ में लगे बीजकोश।
**छळुना**—अ० क्रि० (सो०) छल से प्रभावित होना।
**छलू**—पु० (बि०) माला।
**छलूफड़ू**—पु० (कु०) मक्की की गुल्ली।
**छले:डा**—वि० (कां०, बि०, मं०) कपटी।
**छलेडा**—पु० भूत, भूत का आभास, छल।
**छलेड़ा**—वि० (सि०) मूर्ख।
**छळेव्हणा**—स० क्रि० (सो०) छलपूर्वक प्रभावित करना।
**छलेट**—स्त्री० (कां०, बि०, मं०) मक्की की बड़ी रोटी।
**छलेटा**—पु० (कां०) मक्की के पौधों का घास।
**छलेटी**—स्त्री० (कां०) मक्की वाली भूमि।
**छलेठ**—पु० (बि०) मक्की का बहुत बड़ा खेत।
**छलेड़**—पु० (ऊ०, कां०, मं०) लस्सी रखने का बर्तन।
**छलेड़ी**—स्त्री० (चं०) मक्की वाली ज़मीन।
**छलेड़ी**—स्त्री० (कां०, ह०) मक्की के पौधों को काटने के पश्चात् ज़मीन में बचा तना।
**छलेड़ी**—स्त्री० (कां०, ह०) मक्की की फसल काटने के बाद उस खेत में की जाने वाली बोआई।
**छलैन**—स्त्री० (कां०) दही मथने का बर्तन।
**छलेपा**—पु० क्षणिक तथा कृत्रिम सौंदर्य से चमत्कृत होने का भाव।
**छलो**—पु० (चं०) खून के रुक जाने का भाव।
**छलोई**—स्त्री० (कु०) मक्की की रोटी।
**छलोड़ि**—स्त्री० (सो०) बालतोड़।
**छलोड़ी**—स्त्री० (कां०, मं०) मक्की, मक्की की रोटियां।
**छलोसर**—पु० (कां०) आषाढ़ मास की प्रथम भारी वर्षा।
**छलौली**—स्त्री० (कां०, बि०) मक्खन का पेड़ा।
**छल्पाठ**—पु० (मं०) मक्की के तने।
**छल्याणी**—स्त्री० (बि०) मक्की की फसल से खाली हुए खेत।
**छल्ल**—पु० (ऊ०, कां०) किसी चीज को धोने से निकला मैला पानी।
**छल्ला**—पु० उंगली में पहना जाने वाला आभूषण।
**छल्लू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मक्की का छोटा भुट्टा।
**छल्लू**—पु० (कां०) तकली अथवा चरखे से कात कर तकले पर लपेटा शंकु आकार का गोला।
**छल्हाणा**—स० क्रि० (कु०, कां०) बर्तन साफ करना।
**छल्हुना**—अ० क्रि० (कां०) लज्जित होना।
**छल्हेड़ा**—पु० भूतप्रेत आदि द्वारा किया गया छल।
**छल्हैण**—पु० मिट्टी का बड़ा मटका।
**छल्हैन**—स्त्री० (कां०) दही बिलोने का पात्र।
**छवा**—पु० (मं०) कमरे के बाहर का सहन।
**छवाड़**—पु० (सि०) धक्का।
**छवाणे**—स्त्री० (शि०) सूर्य के अस्त होने का समय।
**छवादम**—पु० (मं०) हैज़ा, उलटी तथा पेचिश।
**छवोड़ो**—पु० (कु०) अगल-बगल की छत।
**छशणा**—स० क्रि० (कु०, चं०) मालिश करना।
**छहऊ**—पु० (कां०, बि०) छोटी लकड़ी।
**छहा**—पु० (चं०) बारीक तीर।
**छहुई**—स्त्री० (मं०) कुल्हाड़ी।
**छहू**—पु० (मं०) छोटी कुल्हाड़ी।
**छहेड़ा**—पु० (चं०) भूतप्रेत का छल।
**छहोणा**—स० क्रि० स्पर्श करना।
**छहोत**—स्त्री० (बि०) छुआछूत।
**छहटा**—पु० (कां०, बि०, मं०) पत्तियों रहित लंबी व पतली टहनी।
**छां**—स्त्री० छाया।
**छां**—अ० (कु०) बकरियों को बुलाने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**छां**—स्त्री० (कु०, शि०, सि०) परछाई।
**छांउट**—स्त्री० (कु०) परछाई, छाया।
**छांउटा**—पु० (कां०, बि०) खच्चर या घोड़े की पीठ पर बिछाया गया वस्त्र।
**छांउण**—स्त्री० (कु०) धूप से बचने के लिए किसी ओट द्वारा तैयार की गई छांव।
**छांउरा**—पु० (कु०) नज़र लगने का भाव।
**छांए**—स्त्री० छाया।
**छांग**—स्त्री० कटी हुई टहनियां।
**छांग**—वि० शेष बचा हुआ।
**छांग**—पु० (चं०, कु०) काट-छांट।
**छांग**—स्त्री० (कु०) पानी के छींटे।
**छांगटी**—स्त्री० (शि०) जिस लड़की की शादी न हुई हो।
**छांगणा**—स० क्रि० वृक्ष की टहनियां काटना, वृक्ष की टहनियां काटकर उसे ठूंठ बनाना।
**छांगणा**—स०क्रि० तराशना।
**छांगणो**—स० क्रि० (शि०) वृक्षों की टहनियां अलग करना।
**छांगा**—वि० छः उंगलियों वाला।
**छांगो**—पु० (सि०) वृक्षों की कटी हुई पतली टहनियां।
**छांझा**—पु० (कु०) कच्ची खूबानी की चटनी।
**छांझू**—पु० (कु०) मच्छर।
**छांट**—पु० (चं०) पतला ढक्कन।

**छांट**— वि० अवशेष, बचा हुआ।
**छांट**— स्त्री० पसंद, छांटी हुई या चुनी हुई वस्तु।
**छांट**— वि० (शि०, सि०) अति सुंदर (स्त्री)।
**छांट**— वि० (कु०) छरहरा, पतला, चुस्त।
**छांटणा**— स० क्रि० अलग करना, काटकर विशेष आकार का बनाना।
**छांटणा**— स० क्रि० (कु०) छांटना, चुनना।
**छांटणो**— स० क्रि० (शि०, सि०) चुनना।
**छांटिणा**— अ० क्रि० (कु०) छांटा जाना, चुना जाना।
**छांटिनो**— अ० क्रि० (शि०) बिखरना।
**छांटू**— पु० (सि०) कटोरा।
**छांटू**— पु० (शि०, सि०) रसोईघर, छोटा मकान।
**छांटू**— वि० छांटने वाला।
**छांड**— स्त्री० आटा छानने की छलनी।
**छांड**— स्त्री० (सि०) घनी झाड़ियां।
**छांडण**— वि० (कां०) व्यभिचारिणी।
**छांडणा**— स० क्रि० अन्न की सफाई करना।
**छांडणा**— स० क्रि० (कु०) बिखेरना, फेंकना।
**छांडा**— स्त्री० (कु०) अन्न आदि के दाने गिराने का भाव।
**छांदा**— पु० (सि०) विवाहादि के अवसर पर की गई पैसों की बौछार।
**छांदा**— पु० खाना आरंभ करने से पूर्व देवताओं के लिए रखा गया भोजन का अंश।
**छांदा**— पु० (शि०) निमंत्रण, विवाहादि संस्कारों में रिश्तेदारों को दिया जाने वाला निमंत्रण।
**छांदू**— पु० (ऊ०, कां०, ह०) जोशांदा।
**छांदौड़**— स्त्री० (शि०) भीतरी छत, छत का भीतरी भाग।
**छांब**— स्त्री० (कां०, मं०) गहरी खाई।
**छांब**— स्त्री० (कां०) अंजलि को मुख से लगाकर जल पीने की क्रिया।
**छांब**— पु० (कु०) झाड़ियों वाला ढलानदार पहाड़ी क्षेत्र।
**छांबणा**— स० क्रि० काटना, छांटना।
**छांबना**— स० क्रि० (चं०) भेद निकालने के लिए फुसलाना।
**छांबरी**— वि० चितकबरी (गाय)।
**छांव**— स्त्री० (कु०) छाया।
**छांवोर**— पु० (शि०) एक प्रकार का घास जो पूजा के काम आता है और जिसकी कटे हुए स्थान पर लगाने के लिए औषधि बनती है।
**छांह**— स्त्री० (मं०) छाया।
**छाःणा**— पु० (सि०, शि०) बिछौना।
**छाःन**— स्त्री० (कु०) मक्की आदि के खेतों में अनाज की रक्षा हेतु बनाई गई कच्ची झोंपड़ी।
**छाःबी**— वि० (कु०) नुकसान पहुंचाने वाला।
**छा**— स्त्री० छाछ, लस्सी।
**छाआना**— पु० (सि०) कटोरा।
**छाइण**— पु० (कु०) पशुओं के नीचे बिछाए जाने वाले देवदार या 'काइल' वृक्षों के पत्ते।
**छाइणा**— स० क्रि० (कु०) पशुओं के नीचे घासफूंस बिछाया जाना।
**छाइबा**— अ० (ऊ०, कां०) शाबाश।
**छाई**— स्त्री० साया, परछाई।
**छाई**— स्त्री० मुंह पर पड़े काले धब्बे।
**छाई**— स्त्री० स्लेटों द्वारा छत डालने की क्रिया।
**छाई**— स्त्री० (कां०, मं०) गरम चिता को धोकर निकाली गई मृतक की अस्थियां।
**छाई**— स्त्री० (कु०) दे० छाळी।
**छाई धोणा**— स० क्रि० (कां०, मं०) मृतक के जलने के बाद राख धोकर अवशेष अलग करना, सर्वनाश करना।
**छाउका**— पु० (कु०, सि०) संदेह।
**छाऊं**— स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) छाया, छांव।
**छाओं**— स्त्री० छाया।
**छाक**— स्त्री० (कां०, बि०, मं०) रोज़ी, एक समय का भोजन।
**छाक**— पु० (शि०, सि०) हरिजनों को दिया जाने वाला भोजन।
**छाकड़ा**— पु० ट्रक, छकड़ा।
**छाकणा**— स० क्रि० (सो०) छकना।
**छाकी**— स्त्री० (सि०) बांस की छोटी टोकरी।
**छाकू**— पु० (मं०) गोबर से लिपा बर्तन।
**छाची**— स्त्री० (कु०) जंगली कुकुरमुत्ता।
**छाच्छ**— स्त्री० (शि०) तिरछी वर्षा।
**छाछ**— अ० बिल्कुल सही।
**छाछड़ू**— पु० (मं०) मच्छर।
**छाछा**— पु० (मं०) जलते हुए कोयले पर सरसों का तेल डालकर धूनी लगाकर बनाया गया स्वादिष्ट खट्टा।
**छाछा**— पु० (शि०) मच्छर।
**छाछी**— स्त्री० (मं०) जंगली कुकुरमुत्ता।
**छाछोलणा**— स० क्रि० (बि०) दही बिलोना।
**छाज**— पु० अनाज को साफ करने का एक उपकरण।
**छाज़ी**— स्त्री० (कु०) कपड़े धोने के लिए उबलते पानी में राख मिलाकर बनाया घोल।
**छाटकु**— पु० (सि० सो०) उछलने-कूदने की प्रवृत्ति, चंचलता।
**छाटछिट**— वि० (कु०) चकनाचूर।
**छाटणा**— स० क्रि० (कु०) पटकना।
**छाटणो**— स० क्रि० (सि०) बिलोना।
**छाटणो**— स० क्रि० (शि०, सि०) सफेदी करना।
**छाटबिट**— वि० (कु०) दे० छाटछिट।
**छाटा**— वि० (शि०) तितर-बितर।
**छाटा**— पु० (सो०, शि०) छड़।
**छाटा**— पु० (सि०) देवता का आवेश आने पर 'गुर' द्वारा रोगी पर किया जाने वाला जलाभिषेक।
**छाटा**— पु० (कु०) चांदी का गले में लगाया जाने वाला मोटा गहना जो लटकने के बजाए गले में सटा रहता है।
**छाटा-बीटा**— पु० (कु०) चारों ओर बिखेरा हुआ गंद।
**छाटिणा**— अ० क्रि० पटका जाना, छटपटाना।
**छाटिणो**— अ० क्रि० (सि०) इधर-उधर हाथ-पांव मारना।
**छाटी**— स्त्री० (सो०) लाठी।
**छाटुणा**— अ० क्रि० (कु०) सभ्य होना।

**छाड़**—स्त्री० (कां०, मं०) दूल्हे के ऊपर से पैसे फेंकने की क्रिया।
**छाड़**—पु० (चं०) पांव, कदम।
**छाड़**—पु० रजाई आदि का गिलाफ।
**छाड़**—पु० (बि०) नालों में पड़े बड़े-बड़े पत्थर।
**छाड़**—स्त्री० (कां०) किसी योगिनी आदि को दी गई बलि।
**छाड़**—वि० (बि०, कां०) बुरी (औरत)।
**छाड़**—पु० (बि०) ग्रह नक्षत्रों आदि के लिए किया गया तर्पण।
**छाड़**—स्त्री० (कां०, चं०) प्रेतात्मा को खुश करने के लिए अर्पण की ग . विभिन्न वस्तुओं से युक्त बांस की टोकरी।
**छाड़**—पु० (शि०) झरना।
**छाड़कर**—वि० (कां०, चं०) चंचल (पशु), भागने वाला, चुस्त।
**छाड़-छाड़लू**—पु० (कां०, ह०) भूतप्रेत के उपचार के लिए सामान इकट्ठा करके चौराहे पर फेंक देने की क्रिया।
**छाडणा/णो**—स० क्रि० (शि०, सो०) छोड़ना, मुक्त करना।
**छाड़ना/नो**—स० क्रि० (शि०) रखना, संभाल कर रखना।
**छाड़ना**—स० क्रि० (सि०) डालना, रखना।
**छाड़ा**—पु० (मं०) छलांग, बड़ी छलांग।
**छाड़ोंघा**—वि० (चं०, बि०, मं०) बिना देखरेख का, जल्दबाज।
**छाण**—पु० (ह०) चोकर।
**छाण**—पु० (कां०, शि०) मकान को छाने की क्रिया।
**छाणग**—स्त्री० (कु०) पवित्रता के उद्देश्य से शरीर के ऊपर या घर के अंदर गोमूत्र का या गोबर मिलाकर किया जाने वाला पानी का छिड़काव।
**छाणणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) छांटना।
**छाणना**—स० क्रि० छानना।
**छाणनी/ने**—स्त्री० छलनी जिससे आटा छाना जाता है।
**छाणबीन**—स्त्री० जांच-पड़ताल।
**छाणा**—स० क्रि० छप्पर छाना या छत बनाना।
**छाणा**—पु० (कु०) पतली परत, तवे पर रोटी का शेष पड़ा पतला टुकड़ा।
**छाणा**—वि० (मं०) छः उंगलियों वाला।
**छाणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) घास के तिनकों की छत बनाना।
**छाणा**—पु० (ह०) टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ी।
**छाणा**—पु० (कु०) मंदिर में बजाने का एक साज।
**छाणी**—स्त्री० (सि०) दूध को उबालने पर बर्तन में नीचे जमा दूध।
**छाणी**—स्त्री० (बि०, ह०) गुड़ की गोल टिक्की, गुड़ का पतीसा।
**छाणे**—स्त्री० (सि०) दूध को गर्म करने के बाद बर्तन में दूध की तह पर जमी मलाई।
**छाणो**—स० क्रि० (शि०) ढकना।
**छातिणो**—अ० क्रि० (शि०) नाराज़ होना।
**छाती**—स्त्री० (कु०) बरामदे के ऊपर की छत।
**छातेबिते**—वि० (कु०) तितर-बितर।
**छान**—स्त्री० (सि०, सो०) खड़, घासफूस का बनाया गया छप्पर।
**छान**—स्त्री० (कु०) छत के साथ की मंज़िल।
**छान**—स्त्री० (मं०) दे० छ़ान।
**छानकसी**—स्त्री० (सि०) एक उपकरण जिससे मिट्टी भरी जाती है।
**छानकौ**—पु० (कु०, मं०) घास तथा फसल रखने के लिए बनाया घर।
**छानदु**—पु० (सि०) रसोईघर।
**छानड़**—पु० (सि०) घास का घर। मकान की छत के साथ की मंज़िल।
**छानणमुंडे**—वि० (शि०) विधवा।
**छानणा**—स० क्रि० छानना।
**छानणा**—पु० (सि०) मिट्टी को साफ करने का उपकरण।
**छानणी**—स्त्री० छलनी की आकृति की गुड़ की डली।
**छानणी**—स्त्री० छलनी, आटा छानने की छलनी।
**छानणो**—स० क्रि० (शि०) छानना।
**छानी**—स्त्री० (सि०) कटोरी।
**छ़ाने**—वि० (सि०) गुप्त।
**छान्ना**—पु० (सि०) कटोरा।
**छाप**—स्त्री० (सि०, शि०) एक प्रकार की चांदी की बड़ी अंगूठी।
**छाप**—स्त्री० (बि०) दीवार की पुरानी मिट्टी गिर जाने पर उसके स्थान पर लगाई गई गीली मिट्टी।
**छाप**—स्त्री० (चं०) चिह्न।
**छ़ापटा**—पु० (कु०) उलटा, औंधा।
**छापड़ना**—स० क्रि० (ह०) चिपकाना।
**छापणा/णो**—स० क्रि० छापना।
**छ़ापर**—पु० (कु०) छत।
**छ़ापरछोई**—स्त्री० (कु०) नये मकान पर छत डालते समय किया गया विशेष आयोजन।
**छापरना**—स० क्रि० (कु०) रुके पानी को झाड़ू आदि से इधर उधर करना। छींटे देना, किसी के ऊपर पानी फेंकना।
**छ़ापरे**—स्त्री० (शि०) मलाई।
**छापा**—पु० (शि०) एक प्रकार का पक्षी।
**छापा**—पु० (कु०) लिखाई, अचानक निरीक्षण।
**छ़ापालाणा**—स० क्रि० (शि०) पानी के घराट को बंद करना।
**छ़ापिणा**—अ० क्रि० (कु०) घात में बैठना।
**छाप्पा**—पु० (सि०) घराट में पानी के बहाव को रोकने के लिए बनाया गया उपकरण।
**छाप्पा**—पु० उखड़ी हुई जगह पर लगाई गई गीली मिट्टी या सीमेंट।
**छाप्पा**—पु० (बि०) बेकार का काम।
**छाबदु**—पु० (सो०) रोटी रखने के लिए बांस की तश्तरी-नुमा टोकरी।
**छाबड़**—स्त्री० छोटी टोकरी।
**छाबड़ु**—पु० रोटी रखने का टोकरा।
**छाबा**—पु० (बि०) पलड़ा।
**छाबा/बो**—पु० (शि०, सि०) मंदिर की छत।
**छाबा**—पु० बांस का बड़ा टोकरा।
**छाबी**—स्त्री० रोटियां रखने की बांस की टोकरी।
**छाबू/बौ**—पु० (कु०) ऊन रखने के लिए बनाई गई टोकरी।

**छाबेगायेरी**—स्त्री० (सि०) काली मां।
**छाबो**—पु० (कु०) मकान के अगल-बगल की छत।
**छामका**—पु० (कु०) छौंक।
**छामछुकु**—पु० (कु०) एक प्रसिद्ध लोकगीत।
**छामण**—पु० (कु०) घास-फूंस की छत, घास-पत्तों का छत्ता।
**छामणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, मं०) 'दराट' द्वारा काटना।
**छामा**—पु० (कु०) पलड़ा।
**छायापौणी**—स्त्री० (कां०, बि०, मं०) भूतप्रेत की छाया का प्रकोप।
**छाया लगणा**—अ० क्रि० प्रेत छाया पड़ना।
**छाये**—स्त्री० (कां०, बि०, मं०) परछाई।
**छायेटडू**—पु० (बि०, मं०) लस्सी रखने का छोटा घड़ा।
**छार**—स्त्री० (मं०) इमारती लकड़ी।
**छार**—स्त्री० (कु०) अग्नियुक्त राख।
**छारकतारे**—अ० (चं०) टालमटोल।
**छारना**—स० क्रि० (कु०) पानी में तैरती या पानी की तह में पड़ी वस्तु को उंगलियों से निकालना।
**छारिना**—स० क्रि० (कु०) बर्तन में पानी की तह में पड़ी वस्तु का निकाला जाना।
**छारी**—वि० (शि०, कु०) बिल्कुल गरीब।
**छाल**—स्त्री० (शि०, सि०) अपने ऊपर पानी डालने की क्रिया।
**छाल**—पु० (कां०) गाय का विशेष आहार, एक वृक्ष विशेष।
**छाल**—पु० छिलका।
**छाळ**—स्त्री० छलांग।
**छाळ**—स्त्री० (कु०) छलांग।
**छालणा**—स० क्रि० (कु०) दूध को हिलाकर मक्खन निकालना।
**छालणो**—स० क्रि० (शि०, सो०) धोना, साफ करना।
**छालना**—पु० (शि०) छलनी।
**छाळना**—स० क्रि० (कु०) नष्ट करना, खो देना, मारना।
**छाला**—पु० मूसलाधार वर्षा।
**छाळा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मूसलाधार वर्षा से खड्ड में आया पानी।
**छाली**—स्त्री० (बि०, मं०, शि०) पानी की लहरें।
**छाली**—वि० (कु०) जिसके लंबे बाल हों।
**छाळी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) पानी की तरंगें।
**छाली**—स्त्री० (सि०) वर्षा ऋतु का आगमन।
**छाळी**—स्त्री० (कु०) छलांग, पानी की लहर।
**छालुआ**—पु० (कां०, बि०, मं०) मुंह में पड़ने वाला छाला, अधिक चलने से पांव में पड़ने वाला छाला।
**छालू**—पु० छाला।
**छाले**—पु० फफोले।
**छाले**—पु० (कु०) स्त्री के हाथ का गहना।
**छालो**—पु० (शि०) हाथ से फेंकने का भाव। शरारत। नदी की लहर का वेग।
**छालो**—पु० (सि०) बौछारें।
**छाल्ली**—स्त्री० (सि०) मक्की।
**छावडू**—पु० (शि०) कुत्ते का बच्चा।
**छावा**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) शाबाश।
**छावाळकू**—पु० (शि०) छोटी-छोटी छलांगें।
**छाश**—स्त्री० लस्सी।
**छास**—स्त्री० (सि०) लस्सी।
**छाह**—स्त्री० (कु०) लस्सी, छाछ।
**छाही**—स्त्री० (चं०) छत से गिरता पानी।
**छाही**—स्त्री० (मं०) लस्सी।
**छाहुछ**—पु० (कु०) मक्खन का एक छोटा सा टुकड़ा।
**छिंग**—पु० (कां०) किसी ठोस वस्तु का टुकड़ा।
**छिंगड़**—पु० (कां०, बि०, ह०) लकड़ी का कांटेदार टुकड़ा।
**छिंगणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) जाति से बहिष्कृत करना।
**छिंगणा**—स० क्रि० (कां०, ह०) खींचना।
**छिंछल**—स्त्री० (कु०) एक पक्षी विशेष जिसकी पूंछ बहुत लंबी होती है।
**छिंज**—स्त्री० गुस्सा, क्रोध, रोष।
**छिंज**—पु० गीतों की एक श्रेणी।
**छिंज**—स्त्री० ऐसा मेला जिसमें कुश्ती प्रतियोगिता होती है।
**छिं:जड़ी**—स्त्री० (बि०) धान कूटते हुए ओखली के गिर्द रखी जाने वाली टोकरी जो नीचे से टूटी हुई होती है।
**छिंजलडू**—वि० (कु०) गुस्सेबाज़, क्रोधी।
**छिंजमहीना**—पु० चैत्र मास।
**छिंजिणा**—अ० क्रि० (कु०) गुस्से होना।
**छिंझोटी**—स्त्री० एक प्रकार का लोकगीत जो ऊंचे स्वर में गाया जाता है।
**छिंड**—पु० (चं०) छेद।
**छिंडणा**—स० क्रि० (चं०) वृक्ष की शाखाएं काटकर पतली करना।
**छिंडा**—पु० (बि०) बर्तनों आदि में पड़ा सुराख।
**छिंडा**—पु० छेद, बड़ा छेद।
**छिंडे**—स्त्री० (सि०) दरार।
**छिंत**—वि० (मं०) लज्जित।
**छिंतर**—पु० (मं०) निरादर।
**छिंबड़े**—स्त्री० (सि०) छोटी-छोटी लकड़ियां।
**छिंबड़ोइया**—वि० (शि०) जिसके शरीर पर दाग हों।
**छिंबा**—पु० धोबी।
**छि:**—अ० घृणा या तिरस्कार सूचक शब्द।
**छिउड़ा**—पु० (सि०) मामूली टुकड़ा।
**छिक**—स्त्री० छींक।
**छिककरी**—स्त्री० (चं०) खींचने का कार्य।
**छिकछिकश**—स्त्री० (कु०) छिपने की क्रिया।
**छिकछिकी**—स्त्री० (कु०) एक बारीक गोल पत्तों वाला घास जो फोड़ों की दवाई के रूप में प्रयुक्त होता है।
**छिकड़**—पु० (ह०) अनाज रखने का बांस का टोकरा।
**छिकड़ा**—पु० (कां०, कु०) बांस की चपतियों या रस्सी से बनाई हुई जाली या टोकरी जो पशुओं (विशेषतः बैलों) के मुंह में बांधी जाती है ताकि वे घास या फसल आदि न उजाड़ सकें।
**छिकणा**—अ० क्रि० छींकना, छींक मारना।

**छिकणा**—स० क्रि० (चं०) खींचना।
**छिकणु**—पु० (चं०) भेड़ पालने वाले के सामान का बोझ।
**छिकणो**—अ० क्रि० (सि०) छींकना।
**छिकली**—स्त्री० (कां०) रस्सियों से बना हुआ गाय-बैलों के मुंह पर लगाया जाने वाला छीका।
**छिका**—पु० (मं०) गुच्छा।
**छिकाई**—स्त्री० (चं०) खिंचाई।
**छिकाबुजका**—पु० (मं०, शि०, सि०) सामान्य वस्तुओं का बोझ।
**छिकारी**—स्त्री० (चं०) खींचने की क्रिया।
**छिकी**—स्त्री० (कु०) छीका।
**छिक्का**—वि० छः का समूह।
**छिक्का**—पु० छीका; बैल के मुख पर बांधने के लिए बना रस्सी या लकड़ी का जाल।
**छिक्का**—पु० दूध-दही को ऊपर लटका कर रखने के निमित्त रस्सी का बना एक उपकरण।
**छिक्की**—स्त्री० (बि०) रस्सी से बनी गोल चटाई जो छिद्रयुक्त होती है तथा घास आदि इसमें बांधकर एक जगह से दूसरी जगह तक लाया जाता है।
**छिक्कू**—पु० (मं०) अखरोट रखने की रस्सी की बनी थैली।
**छिक्कू**—पु० (ऊ०, कां०) पेड़ से आम उतारने के लिए लंबे बांस के डंडे के साथ लगा छीका।
**छिखछाख**—वि० (कु०) चकनाचूर।
**छिखण**—स्त्री० (शि०, सि०) पत्थर फेंकने की रस्सी।
**छिगड़ा**—पु० (ह०) पत्थर की रोड़ी।
**छिग्गा**—पु० छः का समूह; छः दांतों वाला पशु।
**छिचटू**—पु० (चं०) धूप जलाने की कलछी।
**छिचलू**—पु० (सो०) चाय छानने की जाली।
**छिछकणा**—अ० क्रि० कपड़े का तार-तार निकलना।
**छिछड़ा**—वि० (चं०) ढीठ, बदमाश।
**छिछड़ा**—पु० (शि०, सि०) एक झाड़ी विशेष।
**छिछड़ाछाटणा**—स० क्रि० (सि०) दर-दर की ठोकरें खाना।
**छिछड़ी**—स्त्री० (कां०, मं०) एक बिना कांटे की झाड़ी जो बहुत कड़वी होती है।
**छिछड़े**—पु० (बि०) मांस के न पकने वाले टुकड़े।
**छिछड़ो**—वि० (कां०, ह०) तार-तार, टुकड़े-टुकड़े।
**छिछड़ो**—स्त्री० दे० छिछड़ी।
**छिछर**—पु० (कां०) श्राद्ध के बाद पुरोहित द्वारा यजमान को दिया जाने वाला पुष्प।
**छिछरा**—पु० (मं०) बांस को तोड़कर बनाई गई लकड़ी।
**छिछौ**—स्त्री० (कु०) हरी मिट्टी।
**छिज**—पु० (ह०) पानी वाली भूमि में उगने वाला एक घास।
**छिजकणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०) कपड़े का उधड़ना।
**छिजणा**—स० क्रि० (सो०) विश्वास करना।
**छिजणा**—अ० क्रि० (शि०, सो०, सि०) निपटना, समाप्त होना।
**छिज़णा**—अ० क्रि० (कु०) बर्तन में नीचे से छेद हो जाना।
**छिजाणो**—अ० क्रि० (शि०) नुकसान होना, पशु आदि की हानि होना।
**छिज्ज**—पु० (कां०) चाय के पौधों के बीच पैदा होने वाला घास।
**छिज्जणा**—अ० क्रि० (कां०, ह०) सिलाई उधेड़ना, कपड़े को जोर से खींचने पर ताने का उधड़ना।
**छिझकणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०, सि०) फटना, तार-तार होना।
**छिट**—वि० (बि०) चरित्रहीन (स्त्री)।
**छिट**—स्त्री० (बि०) अदरक की बनी सब्जी।
**छिट**—स्त्री० छींट का कपड़ा।
**छिट**—स्त्री० (कां०) हवा के कारण दीवार पर पड़ने वाली वर्षा की फुहार।
**छिट**—स्त्री० (कां०, ऊ०, बि०) बूंद।
**छिटकणा**—स० क्रि० (ऊं०, कां०, ह०) छिड़कना।
**छिटकणा**—अ० क्रि० उछलना।
**छिटकाउड़**—स्त्री० (शि०) छत से पानी गिरते हुए पड़ने वाले छींटे।
**छिटकी**—स्त्री० (शि०, सि०) तेज़ धूप; पतली छड़ी।
**छिटकू**—पु० (कु०) बिंदु, चित्रकारी के बिंदु।
**छिटणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) टहनियों को काटना।
**छिटणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) छींटे मारकर भिगोना।
**छिटणा**—स० क्रि० बेइज़्ज़त करना।
**छिटणा**—अ० क्रि० (सि०) कीचड़ के छींटे पड़ना।
**छिटणी**—स्त्री० (सो०) चाय या अन्य तरल पदार्थ छानने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली छलनी।
**छिटमुतरियां**—स्त्री० (बि०) किसी पदार्थ की दूर तक फैलाई छींटें।
**छिटा**—पु० (शि०, सि०) पशु हांकने का डंडा, छड़ी।
**छिटियां**—स्त्री० (कां०, बि०) पतली-पतली लकड़ियां।
**छिटियाणा**—स० क्रि० (शि०) डंडे से पीटना।
**छिटी**—स्त्री० (ऊ०, ह०) पतली हरी चाबुकनुमा डाली।
**छिटी**—स्त्री० (बि०) पूजन के समय देवता अथवा इष्ट को अर्पित किया जल।
**छिटी**—स्त्री० (कु०) छींटें, पानी की बूंदें।
**छिटी-छिटी**—वि० (बि०) तार-तार।
**छिटू**—पु० (बि०) इलज़ाम, आरोप।
**छिटे**—स्त्री० (सो०, सि०) बूंदाबांदी।
**छिटे**—स्त्री० (शि०, सि०) पतली लकड़ी।
**छिट्टा**—पु० वर्षा की बौछार।
**छिट्टा**—पु० (कां०, बि०, मं०) एक छींटा, बूंद।
**छिठुआ**—वि० (कां०) छठा।
**छिड़**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) वृक्ष पर निकली नई शाखा।
**छिड़कणा**—स० क्रि० छिड़कना।
**छिड़का**—पु० (ह०) छिड़काव।
**छिड़का**—पु० (शि०) पानी की बूंद।
**छिड़का**—पु० (सि०) बरसने का भाव।
**छिड़कावणो**—स० क्रि० (शि०) छिड़काना।
**छिड़णा**—स्त्री० (सि०) चलने का भाव।
**छिड़णो**—अ० क्रि० (शि०) बिखरना।

**छिड़दादू**—पु० (चं०) परदादा का पिता।
**छिड़ना**—अ० क्रि० शुरू हो जाना।
**छिड़ना**—स० (शि०, ऊ०, कां०) गाली देना।
**छिड़ा**—स्त्री० (कां०) छोटी-छोटी शाखाएं।
**छिड़िया**—स्त्री० (सो०) मुर्दा जलाने की लकड़ियां।
**छिड़ी**—स्त्री० (शि०, सि०) जलाने की लकड़ी।
**छिड्डा**—पु० (चं०) बहुत बड़ा छेद।
**छिड्डी**—स्त्री० (चं०) लकड़ी।
**छिणी**—स्त्री० छेनी, लोहे की मोटी कीली जो पत्थर तोड़ने व दीवार में छेद करने के लिए प्रयुक्त की जाती है।
**छिणी/णे**—स्त्री० (चं०, शि०) घास निकालने की बड़ी लाठी।
**छित**—अ० बिल्ली को भगाने के लिए बोला जाने वाला शब्द।
**छितकुरा**—वि० (शि०, सि०) जल्दी नाराज होने वाला।
**छितणा**—स० क्रि० (सि०) पीटना।
**छितरखू**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) Opunita monocantha
**छितरियां**—स्त्री० (कां०, बि०, मं०) महिलाओं के जूते।
**छितालीं**—वि० छियालीस।
**छिति**—स्त्री० (शि०, सि०) दंड के रूप में देवता को दिया जाने वाला धन।
**छित्तर**—पु० घटिया प्रकार का या टूटा हुआ जूता।
**छित्ता**—वि० (कां०) लज्जित, शर्मिंदा।
**छिदणा**—स० क्रि० (सि०) काटना।
**छिदणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) छेद करना।
**छिदर**—पु० (बि०) छेद, छिद्र।
**छिदर**—पु० (कां०, बि०, सि०) एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान जिसमें व्रत आदि का उद्यापन-समापन करते हैं।
**छिदरा**—पु० (कु०) पाप काटने का संस्कार जिसमें 'नड़' विशेष मंत्रादि पढ़कर देवता और लोगों को उन द्वारा किए पापों से मुक्ति दिलाता है।
**छिदरा**—स्त्री० (शि०, सि०) चौंसठ योगिनियों में से एक योगिनी जो 'नज़र' लगने के लिए प्रसिद्ध है।
**छिदराउणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान के अवसर पर व्रत आदि का उद्यापन करना।
**छिद्दर**—पु० (सो०) मरने के ग्यारहवें दिन होने वाला संस्कार।
**छिद्र**—पु० (चं०) दे० छिदर।
**छिन**—पु० क्षण।
**छिनणा**—स० क्रि० (सो०, बि०) पेड़ की टहनियां काटना।
**छिनणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) दे० छिनणा।
**छिन्न**—वि० (कां०) टूटा हुआ। थोड़ी देर।
**छिन्न-छिन्न**—अ० पल-पल।
**छिपणा**—स० क्रि० (आग या धूप) तापना, सेंकना।
**छिपणा**—अ० क्रि० छिपना।
**छिपा**—पु० (सो०) बाज़।
**छिप्पण**—स्त्री० सन की गुलेल।
**छिप्पा**—पु० (ह०) मिल जाने का भाव।
**छिबरा**—पु० (कां०) पशुओं का दस्त रोग, पतला गोबर।
**छिब्बर**—पु० (बि०) दे० छिबरा।
**छिब्बा**—पु० (शि०) धोबी।
**छिमक**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) शहतूत की चाबुकनुमा पतली छड़ी।
**छिमछी**—स्त्री० सायं काल, सांध्य बेला।
**छिमड़ी**—स्त्री० (शि०) पतली छड़ी।
**छिमणा**—स० क्रि० (कु०) चुभाना।
**छिमणा**—स० क्रि० (सि०) छोटे-छोटे टुकड़े करना।
**छिमा**—स्त्री० (कां०, मं०) क्षमा।
**छिमिणा**—अ० क्रि० (कु०) कांटे आदि का चुभना।
**छिमी**—स्त्री० (कां०) धोबिन।
**छिमी**—स्त्री० (शि०) छोटे राजमाश।
**छियाकड़ी**—स्त्री० (कु०) छत के नीचे डाली जाने वाली लंबी-लंबी लकड़ियां।
**छियाथी**—वि० छ: हाथ की (चादर)।
**छियानुएं**—वि० छियानवे।
**छियासी**—स्त्री० (चं०) नष्ट होने की क्रिया।
**छियासी**—स्त्री० छियासी।
**छियुंगड़**—स्त्री० (सि०) लकड़ी की फांस जो हाथ-पांव आदि में चुभ जाती है।
**छियूंजा**—वि० छप्पन।
**छिरड़ा**—पु० (सो०) भैंस के दूध से बना पदार्थ जो ब्याने से दूसरे दिन से लेकर तीन-चार दिन तक दूध फटने पर बनता है।
**छिरना**—अ० क्रि० (सो०) दूध का फट जाना।
**छिरहड़ा**—वि० (चं०) छेद वाला।
**छिरो**—स्त्री० (शि०) चंचल स्त्री।
**छिल**—पु० (चं०) लकड़ी का तिनका, छिलका। चमड़ी।
**छिलक**—पु० (सो०) छिलका।
**छिलकणा**—अ० क्रि० (कु०) छलकना।
**छिलकिणा**—अ० क्रि० (कु०) छलका जाना, झटका लगने पर बर्तन से पानी बाहर निकल जाना।
**छिलणा**—स० क्रि० छीलना।
**छिलणा**—स० क्रि० (चं०) तोड़ना।
**छिलणो**—स० क्रि० (शि०) छिलका उतारना।
**छिलणो**—स० क्रि० (शि०) नकल उतारना।
**छिलना**—अ० क्रि० कट जाना।
**छिला**—वि० (चं०) लज्जित।
**छिला**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) प्रतिज्ञा।
**छिल्ल**—स्त्री० चमड़ी, लकड़ी का छिलका।
**छिल्ल**—स्त्री० (कां०, बि०, मं०) छीलने का भाव।
**छिल्लणा**—स० क्रि० (कां०, बि०, मं०) छीलना।
**छिल्हरा**—वि० (कु०) छेद युक्त।
**छिवरा**—वि० (सि०) काले व सफेद रंग का।
**छिवियाणो**—स० क्रि० (शि०) गंदा करना।
**छिह/हा**—स्त्री० (कु०) पट्टू, कंबल आदि में डाली धारी/धारियां।
**छिहडू**—पु० (मं०) छाछ रखने का घड़ा।
**छिहत्था**—वि० एक प्रकार का इकहरा कंबल जिस की लंबाई छ: हाथ हो, छ: हाथ के माप का।

**छिहमटी**—स्त्री० (कां०, बि०) बहुत पतली हरी छड़ी।
**छिहोणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०) छुआ जाना।
**छींऔं**—पु० (शि०) सूखी व पतली लकड़ी।
**छींक**—स्त्री० (चं०) खींचने की क्रिया।
**छींकणा**—अ० क्रि० छींकना, छींक मारना।
**छींग**—स्त्री० (सो०) छाते की सींख।
**छींग**—स्त्री० (कां०, ऊ०) लकड़ी का कांटानुमा तिनका।
**छींगणा**—स० क्रि० (शि०) बहिष्कृत करना, किसी को अलग रखना अर्थात् लेन-देन आदि कामों से अलग रखना।
**छींगणा**—स० क्रि० (कु०) कमीज की बाजुओं को और पायजामे को ऊपर करना।
**छींछल**—स्त्री० (कु०) एक लंबी पूंछ वाली चिड़िया।
**छींज**—स्त्री० (मं०) बड़ी तथा मोटी छलनी।
**छींज**—पु० (मं०) दे० 'किरडा'।
**छींज**—स्त्री० दंगल।
**छींज**—स्त्री० (कु०) गुस्सा।
**छींज**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) भगदड़।
**छींट**—वि० (मं०) पतिता।
**छींट**—स्त्री० घटिया कपड़ा।
**छींत औज्ञा**—स्त्री० (शि०) देवता से किसी काम को करने के लिए ली गई आज्ञा।
**छींबीघाट**—पु० धोबीघाट।
**छींहनी**—स्त्री० (कां०) छत से गिरते पानी की धार।
**छी**—अ० बच्चों को गंदगी से रोकने के लिए कहा जाने वाला शब्द।
**छी**—वि० (चं०) छः।
**छीऊंआं**—वि० (कु०) चाबुक की तरह की छड़ी।
**छीऊंआं**—वि० (कां०, बि०, मं०) छठा।
**छीओछी**—स्त्री० (कु०) देवता के रथ के ऊपर बनी सोने या चांदी की छोटी सी छतरी।
**छीओछी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) गंदगी ही गंदगी।
**छीक**—स्त्री० (शि०, सो०) छींक।
**छीक**—स्त्री० (चं०) अपना मतलब सिद्ध करने का भाव।
**छीक**—पु० (बि०) एक प्रकार का घास विशेष जिसके पत्तों को सुखाने से छींकें आती हैं।
**छीकणो**—अ० क्रि० (कु०) छींकना।
**छीका**—पु० (कु०) बर्तन रखने का रस्सियों से बना थैला।
**छीकु**—पु० (कु०) पोटली।
**छीकु-बुचकु**—पु० (कु०) बोरी-बिस्तर।
**छीगणा**—स० क्रि० (मं०) बिखेर देना।
**छीचा**—वि० (कु०) बुरा।
**छीछकी**—स्त्री० (ह०) शहतूत की छड़ी।
**छीछड़ा**—पु० चीथड़ा।
**छीछा**—वि० (बि०, चं०) दे० छीचा।
**छीज**—पु० (मं०) पका हुआ घास।
**छीजणा**—अ० क्रि० कपड़े को जोर से खींचने पर ताने-बाने का ढीला पड़ना।
**छीज़णा**—अ० क्रि० (कु०) बर्तन में ज़ंग लगकर छेद होना।
**छीटकणे**—स्त्री० (शि०) कुंडी, सिटकिनी।
**छीटणा**—स० क्रि० छींटें डालना।
**छीटणा**—पु० (सि०) आटा छानने की छलनी।
**छीटणी**—स्त्री० (सि०) चाय-छलनी।
**छीटणू**—पु० (सि०) दूध छानने की छलनी।
**छीटा**—पु० (चं०) बेटा।
**छीटा**—पु० (शि०, सि०) बच्चों या पशुओं को मारने की हरी सीधी छड़ी।
**छीटा**—पु० पानी का छींटा।
**छीटा**—स्त्री० (कु०) छींट, पानी की बूंदें।
**छीटो**—स्त्री० (शि०) पशुओं को हांकने के लिए प्रयोग की जाने वाली छड़ी।
**छीड़**—स्त्री० (बि०, मं०) हाथ की उंगलियों में चुभी बारीक लकड़ी या कांटा।
**छीड़ी**—स्त्री० (कु०) जलाने की लकड़ी।
**छीड़ू**—पु० (सो०) इंधन, जलाने की लकड़ियां।
**छीण**—स्त्री० (चं०) पानी व दूध की बारीक धारा।
**छीण**—वि० दुबला-पतला, क्षीण।
**छीण**—स्त्री० (कु०) छेनी।
**छीणा**—अ० क्रि० (बि०, सो०) घटना, कम होना।
**छीणी**—स्त्री छेनी।
**छीणो**—स्त्री० (सि०) छेनी।
**छीतरा**—वि० (सि०) जोड़ा।
**छीता**—वि० (कु०) सफेद।
**छीद**—स्त्री० (शि०, सि०) इज़ाज़त।
**छीद**—स्त्री० (सि०) घूंट, पानी की घूंट।
**छीदा**—वि० (कु०, सि०) अलग, जुदा।
**छीद्रा**—पु० (कु०) प्रायश्चित्त।
**छीन**—स्त्री० (कु०) पाप से मुक्ति।
**छीप**—पु० (कु०) हलका बुखार।
**छीपणा**—स० क्रि० (कु०) (आग या धूप) सेंकना, तापना।
**छीपणा**—अ० क्रि० (कु०) गरम होना, क्रोधित होना।
**छीपिणा**—स० क्रि० (कु०) तपा जाना।
**छीयापड़ो**—पु० (कु०) मक्की के भुट्टे का छिलका।
**छीर**—पु० (कु०) दूध जमाने का मिट्टी का बर्तन।
**छीरना**—अ० क्रि० (कु०) लिखते समय स्याही का कागज़ पर फैल जाना।
**छील**—स्त्री० (कां०, बि०) चमड़ी।
**छील**—पु० (कु०) मलिन पानी। गाय, भैंस के लिए कद्दू, आलू आदि का पकाया पदार्थ।
**छीलणा**—स० क्रि० (कां०, बि०) निकालना।
**छीलणा**—स० क्रि० (कु०) मथना, दही या दूध को 'चौलटी' (विशेष प्रकार का छोटा घड़ा) में डालकर उसे देर तक जमीन पर आगे-पीछे हिलाते रहना जब तक मक्खन न बन जाए।
**छीलीणो**—स० क्रि० (शि०) किसी की नकल उतारना।
**छील्ल**—स्त्री० (शि०) किसी दूसरे की निंदा।
**छीह**—अ० भेड़ को हटाने तथा हांकने का शब्द।
**छीहनी**—स्त्री० (बि०) बढ़ी हुई छत जहां से वर्षा का पानी

गिरता है।
छुंगछेड़—स्त्री० (कु०) छुआछूत।
छुंगणा—स० क्रि० (सि०) किसी चीज को इकट्ठा करना।
छुंगणा—स० क्रि० (कु०) थोड़ा कूटना।
छुंगणा—स० क्रि० (कु०) छूना।
छुंगलु—पु० (बि०) गुच्छा।
छुंगाछेड़ा—पु० (कु०) शरारत, हस्तक्षेप।
छुंगिणा—स० क्रि० (कु०) छुआ जाना।
छुंगुआदा—वि० (कु०) छुआ हुआ।
छुंघणा—स० क्रि० (कां०, बि०) कपड़ों को समेटना।
छुंछणू—पु० (मं०) कुकुरमुत्ते की एक किस्म।
छुंछरू—पु० (कु०) गुच्छियां, खुंब की एक किस्म।
छुंजकणा—स० क्रि० (सो०) जलती हुई लकड़ियों के अंगारों को अलग करना, हिलाना।
छुंटु—वि० (कां०) छोटी।
छुंड—पु० (चं०) घी में पकाए चावल।
छुंडली—स्त्री० (बि०) समूह या जत्था।
छुंडिणा—अ० क्रि० (कु०) किसी कार्य या आयोजन के लिए शामिल होना।
छुंडी—स्त्री० (कां०) टोली।
छुंडू—पु० (कां०) छोटी टोली।
छुंबर—पु० (चं०) मुंह।
छुंबर—वि० (चं०) तिरस्कृत।
छुंबे—स्त्री० (ह०) घास की बनाई हुई रस्सी।
छुंह—स्त्री० एक कांटेदार झाड़ी।
छुःटा—पु० (शि०) बेटा, पुत्र।
छुआ—वि० (शि०) जाति से बहिष्कृत।
छुआई—स्त्री० घर के छप्पर डालने का कार्य, छप्पर डालने का पारिश्रमिक।
छुआटी—स्त्री० (सि०) फटा हुआ दूध।
छुआड़ी—स्त्री० (चं०) ईंधन इकट्ठा करने का भाव।
छुआण—स्त्री० (कु०, शि०) जवान।
छुआरा—पु० छुहारा।
छुआह—पु० (कु०) उत्साह, आराम।
छुआह—पु० (ऊ०, कां०, ह०) उकसाने का भाव।
छुइणा—अ० क्रि० (शि०) छूना।
छुई—स्त्री० (कां०, बि०) मक्की के छिलके या घास का गट्ठर।
छुई—स्त्री० (कां०, बि०, मं०) कांटेदार पौधा विशेष।
छुकराट—स्त्री० (ऊ०, कां०, शि०) नवयुवती, नवविवाहिता।
छुकरियादा—पु० बहुत बच्चे।
छुकिणा—अ० क्रि० (कु०) कोशिश करना।
छुक्कु—पु० (कां०) छोटी सी टोकरी।
छुक्खण—पु० (कां०) धुआं देकर शहद निकालने की क्रिया।
छुखिणा—अ० क्रि० (कु०) प्रयत्न करना, संघर्ष करना।
छुग—पु० (कु०) ऐसा पौधा जो ऊपर न बढ़ा हो।
छुच्छ—पु० (कां०, बि०, शि०) पानी में पैदा होने वाला एक घास, खड्ड में उगने वाला घास।
छुच्छा—वि० (चं०, सो०) लालची; दिखावा करने वाला।
छुच्छू—वि० (कां०, ऊ०) छोटा।
छुछंदर—पु० (सो०) एक प्रकार का जानवर।
छुछ—पु० (चं०) Nosturtion officinale.
छुछक—पु० (कां०, चं०) पतली छड़ी।
छुछपण—पु० प्रदर्शन की घटिया प्रवृत्ति।
छुछलापण—पु० (सि०) दे० छुछपण।
छुछा—वि० (ऊ०, कां०) दे० छुछा।
छुछा—वि० (कु०) तंग, घटिया, कंजूस, कमीना।
छुट—स्त्री० (कां०, बि०) अतिरिक्त, छूट।
छुटकणा—स० क्रि० (कां०, बि०) धान आदि को ओखली में कूटना।
छुटकाणा—स० क्रि० (कां०, बि०) अलग करना, छुड़ाना।
छुटड़ा—वि० छोटा।
छुटणा—स० क्रि० (सि०) कहना।
छुटणा—अ० क्रि० (कु०) छूटना, स्वतंत्र होना।
छुटाणा—स० क्रि० (चं०) छुड़वाना।
छुटिणा—स० क्रि० (कु०) छूट जाना।
छुटीणा—अ० क्रि० (चं०) छूट जाना।
छुटु—वि० (कां०, बि०) बचा हुआ।
छुटु—वि० (कां०, बि०) तोड़ी हुई (सगाई)।
छुटुणो—अ० क्रि० (शि०, सि०) गिरना, गुम होना।
छुड़क—पु० (कां०, बि०, मं०) पूरे कूटे धान; धान का छिलका।
छुड़कणा—स० क्रि० (कां०, बि०, मं०) थोड़ा कूटना, कूटकर अनाज की बाहरी पत्ती या छिलका निकालना।
छुड़कणा—अ० क्रि० (कु०) छूट जाना, खिसकना, निकलना, गिरना।
छुड़कणा—स० क्रि० (कां०) पिसाने से पूर्व गेहूं को ओखली में कूटना।
छुड़कदा—वि० (कां०, कु०) संक्षिप्त। खाली हाथ, जिसके पास कुछ न हो।
छुड़कारा—पु० (कां०, चं०) छुटकारा।
छुड़णा—स० क्रि० (चं०) छोड़ना।
छुड़णो—स० क्रि० (सि०) छुड़ाना।
छुड़ब—पु० (बि०) विवाह की एक रस्म।
छुड़ा—अ० (सि०) काफी।
छुढ़ा—अ० (कु०) पर्याप्त।
छुणकणा—स० क्रि० (कां०, चं०) बोझ को परखने के लिए हिला-डुलाकर देखना।
छुणकणा—पु० (कां०, बि०, मं०) एक खिलौना।
छुणकाणा—स० क्रि० छनकाना।
छुणकू—पु० बच्चों का एक खिलौना।
छुणकू—पु० (कां०, बि०, मं०) रुन-झुन चाल से चलने वाला बच्चा, रुनझुन की आवाज़।
छुणछुणी—स्त्री० (कु०) सनसनी।
छुणछुणू—पु० (कां०) झुनझुना।
छुणाका—पु० (कां०, बि०) गहनों से होने वाली मधुर ध्वनि।
छुणो—स० क्रि० (शि०) छूना।

**छुणो**—पु० (शि०) वायदा, वचन।
**छुत**—पु० (बि०) ऊंची छलांग।
**छुत**—अ० (सि०) एकदम।
**छुत्ता**—अ० (कां०) छलांग।
**छुत्तू**—पु० (कां०) छोटी छलांग।
**छुदी**—स्त्री० (कु०) फसल काटने के बाद पशुओं के एक-दो बार चरने के लिए छोड़ा गया खेत।
**छुद्र**—वि० क्षुद्र।
**छुनः**—पु० (शि०, सि०) पशुओं का घास।
**छुनकणा**—स० क्रि० हिलाना।
**छुनकणा**—स० क्रि० (सो०) थोड़े से अंश को लेना।
**छुनकनी**—स्त्री० (कां०, बि०, मं०) झुनझुना।
**छुनणा**—स० क्रि० (मं०) तोड़ना (घड़ा इत्यादि)।
**छुनणा**—स० क्रि० (शि०) बारीक करना।
**छुनाछड़**—स्त्री० (कां०) छाछ रखने की हंडिका।
**छुन्नी**—स्त्री० (कां०, बि०, मं०) ठोड़ी।
**छुन्नु**—पु० ठोड़ी।
**छुपणा**—पु० (शि०, सि०) चेचक का टीका।
**छुपाणो**—स० क्रि० (शि०) छुपाना।
**छुप्प**—स्त्री० (चं०) दूध मथने की मथानी।
**छुब/बी**—स्त्री० (कु०) बारीक, लंबी और लचकीली टहनी जिससे पत्तियों तथा लकड़ी के गट्ठे आदि बांधे जाते हैं।
**छुबकु**—पु० (कु०) दोनों पैरों को इकट्ठा उठाकर लगाई छलांग।
**छुब्बड़**—पु० (कां०, चं०) वृक्ष की टहनी से बना रस्सा जिससे लंबा शहतीर खींचा जाता है।
**छुब्बा**—पु० (कां०, कि०, सो०) हरी घास की बनाई हुई रस्सी, बांस की पतली नर्म चपती।
**छुमंकू**—वि० (शि०) खुशमिज़ाज।
**छुमंकू**—पु० (शि०) फलों आदि के गुच्छे।
**छुमकणा**—स० क्रि० (कां०, बि०, सो०) खंगालना, वस्त्रों को हाथ से धीरे-धीरे धोना।
**छुमकणा**—स० क्रि० (कां०, बि०, शि०) हिलाना।
**छुमकणा**—स० क्रि० (कु०) पानी के छींटे देना।
**छुमकिणा**—अ० क्रि० (कु०) थोड़ा सूख जाना।
**छुम्मक**—पु० (कां०) पतली छड़ी, पतली कमर वाली।
**छुम्हारा**—पु० (चं०) छुहारा।
**छुरकदा**—वि० (कु०) सुंदर, चुस्त।
**छुरछुर**—स्त्री० छरछर की ध्वनि।
**छुरला**—पु० (कु०) हिम-लंब, जमी हुई बर्फ की सलाख।
**छुरा**—पु० (कि०, सो०) रोटी, खाना।
**छुरा**—पु० (कां०) एक हरे घास का नाम।
**छुरा**—पु० खंजर।
**छुरी**—स्त्री० चाकू।
**छुल**—स्त्री० (शि०) 'ठोडे' का खेल खेलते समय अपनी टांगों को बचाने की क्रिया।
**छुलकणा**—अ० क्रि० (कु०, शि०) धीरे-धीरे या चोरी से इधर-उधर घूमना।
**छुलकणा**—अ० क्रि० (कां०, ह०) पानी का छलकना।
**छुलकु**—पु० (शि०) कूद कर तीर से बचने की क्रिया।
**छुलकू**—पु० (कु०) पट्टू के दोनों किनारों पर खुले धागों की गांठों का एक विशेष रूप जब धागों की गांठें फूल सा बनाती हैं।
**छुलणु**—पु० (शि०, सि०) 'ठोडे' के खेल में टांगों की बचाव-क्रिया।
**छुलणो**—स० क्रि० (शि०) छीलना।
**छुला**—पु० (कु०) मंदिरों की छत के नीचे के भाग के सिरों पर लटकती झालर या प्रगुच्छ।
**छुळान**—पु० (कां०, ह०) मिट्टी का बर्तन जिसमें दही डालकर मथा जाता है।
**छुलुकरू**—पु० (कु०) देवदार, चीड़ आदि वृक्षों के बीजकोश।
**छुलै-छुलै**—अ० (कु०) नाचते हुए समय समय पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बोला जाने वाला शब्द।
**छुलैहन**—पु० (चं०) लकड़ी का बर्तन जिसमें दूध बिलोया जाता है।
**छुलोन**—पु० (कां०, बि०, मं०) बर्तन में अवशिष्ट तथा चिपका हुआ पदार्थ।
**छुल्यान**—पु० (कां०, ह०) दही बिलोने का बर्तन।
**छुवन**—पु० (चं०) रोटी रखने का बर्तन।
**छुहड़**—पु० (बि०, मं०) प्राकृतिक जलस्रोत, छोटा नाला।
**छुहणा**—स० क्रि० (चं०) छूना।
**छुहनी**—स्त्री० (कां०, ह०) ठोड़ी।
**छुहा**—पु० (कु०) सेहत, उत्साह।
**छुहाणा**—स० क्रि० (कां०, मं०) स्पर्श कराना।
**छुहाराखुख**—स्त्री० (मं०) गुच्छियां, कुकुरमुत्ते की एक किस्म।
**छुहारू**—पु० (कां०, मं०) छुहारे का वृक्ष।
**छुहीणा**—अ० क्रि० (चं०, शि०, सि०) स्पर्श होना।
**छूं**—स्त्री० (शि०, सि०) छूत।
**छूंछ**—स्त्री० (कां०, बि०) एक शाक जो पानी के किनारे होता है।
**छूंज**—स्त्री० (शि०) किसी से दुश्मनी, दुश्मनी का बहाना।
**छूंज**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) गले में पानी या भोजन के अटकने से होने वाला कष्ट।
**छूंड**—पु० (कु०) झुंड, समूह।
**छूंडी**—स्त्री० (सि०) सिरा, ऊपरी हिस्सा।
**छूंब**—स्त्री० (मं०) लगभग तीन फुट लंबी लकड़ी जिसमें सात या नौ लकड़ी के दांत लगाए होते हैं। सुहागा देने के बाद ज़मीन का घासफूस निकालने हेतु तथा सख्त मिट्टी तोड़ने के लिए इसका प्रयोग होता है।
**छूंब**—पु० (शि०) किनारा।
**छू**—पु० (शि०, सि०) दस्त।
**छूईणा**—स० क्रि० (चं०) छूना।
**छूओ**—पु० (शि०) दुश्मनी के कारण एक दूसरे से किया जाने वाला खाने-पीने का परहेज।
**छूछ**—स्त्री० (कां०, सि०, सो०) खड्ड के किनारे दलदल में उगने वाला शाक।
**छूछी**—स्त्री० (बि०, मं०) आचमनी, चरणामृत देने के लिए तांबे या चांदी की बनी छोटी कलछी विशेष।

**छूछूंय**—पु० (चं०) एक जानवर, छछूंदर।
**छूट**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) खाली समय, फुर्सत।
**छूट**—वि० (कां०) स्वच्छंदता।
**छूटणा**—अ० क्रि० (कु०) छूटना।
**छूटणो**—अ० क्रि० (शि०) छूटना।
**छूटापछीना**—वि० (कु०) शेष, बचा-खुचा।
**छूटी**—स्त्री० (कु०) छुट्टी।
**छूडौ**—वि० (शि०) कसा हुआ।
**छूणा**—स० क्रि० छूना।
**छूत**—पु० (कां०, बि०) अछूत।
**छूतळू**—वि० (शि०) अन्य काम छोड़कर जो काम किया जाए।
**छून**—स्त्री० (कु०) गाय दुहने की क्रिया।
**छूनी**—स्त्री० (कु०) सर्दियों में रात भर टपकते पानी के जमने से बना हिम लंब।
**छूप**—वि० (शि०) सूखा।
**छूब**—स्त्री० (कां०, मं०) 'छान' के ऊपर बिछाए जाने वाले घास को बांधने के लिए प्रयुक्त होने वाले रस्सी के टुकड़े।
**छूमक**—पु० (कु०) पानी के छींटे।
**छूरला/ले**—पु० (कु०) मंदिर की छत्त के चारों ओर किनारों पर लटकते लकड़ी के झालर।
**छूरा**—पु० (सि०) धान के बीच उगने वाला घास।
**छूरा**—पु० (कु०) छुरी।
**छूह**—स्त्री० एक प्रकार की कांटेदार झाड़ी जिसे काटने से दूध-सा निकलता है।
**छूहचोड़ना**—स० क्रि० (कु०) जी भरकर कोई काम करना।
**छूहछुहाण**—पु० (कां०, चं०) एक दूसरे को छूने का खेल।
**छुहछुहात**—स्त्री० (कां०) छुआछूत।
**छूहणा**—स० क्रि० (कां०, बि०) छूना।
**छूहनली**—स्त्री० (बि०) पानी में उगने वाला शाक।
**छूह-सियुंड**—पु० (कां०) कंटकी, नागफनी।
**छेंइ**—स्त्री० (सो०) छाया।
**छेंडी**—स्त्री० (सि०) तंग गली।
**छेःड़**—स्त्री० (चं०) ढोल आदि वाद्ययंत्र बजाने की पतली लकड़ी।
**छेःड़**—स्त्री० (कु०) ध्वनि।
**छे**—स्त्री० (कु०) वंश की समाप्ति, क्षय, नाश।
**छेइणो**—अ० क्रि० (शि०) तंग आना, कोई चीज रास न आना।
**छेई**—स्त्री० (कां०) विवाह के शुभ मुहूर्त में काटा गया ईंधन।
**छेउड़ी**—स्त्री० (शि०) लकड़ियों का ढेर।
**छेउड़ी**—स्त्री० (कु०, शि०) स्त्री।
**छेउस**—पु० (कु०) शिलान्यास।
**छेऊआं**—वि० छटा।
**छेऊकड़ा**—पु० (सो०) छड़ी।
**छेऊणा**—स० क्रि० (मं०) बिछाना।
**छेओणा**—स० क्रि० (कां०, बि०, मं०) छप्पर या छत बनाना।
**छेक**—पु० (कां०, शि०, सि०) निशान।
**छेक**—पु० (बि०, चं०) सिर की मांग।
**छेक**—पु० (कां०, चं०) फाड़ने की क्रिया।
**छेक**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) सुराख।
**छेक**—पु० (सि०) सीधी लिपाई।
**छेक**—पु० (ऊ०, चं०) बिरादरी से बहिष्कार।
**छेकछेकी**—स्त्री० (कु०) डर।
**छेकड़ी**—स्त्री० (शि०) लकड़ी।
**छेकण**—पु० (मं०, शि०) भोजन।
**छेकणदेणा**—स० क्रि० (सो०) रोटी खाना।
**छेकणा**—स० क्रि० फाड़ना, लकड़ी चीरना।
**छेकणा**—स० क्रि० (कु०) घराट बंद करना; भुगताना, चुकाना।
**छेकणा**—स० क्रि० (कु०) समाप्त करना।
**छेकला**—वि० (कु०) जल्दबाज, उतावला।
**छेका**—पु० (चं०) दूरी, सीमा।
**छेका**—पु० (कु०) शीघ्रता, जल्दी।
**छेकिःणा**—अ० क्रि० (चं०) जोर से चिल्लाना।
**छेकीरा**—वि० फटा हुआ (कपड़ा); बहिष्कृत।
**छेको**—अ० (चं०) जल्दी।
**छेक्का**—पु० (शि०) दीवार के निचले भाग में दी जाने वाली काली मिट्टी।
**छेक्का**—पु० (चं०) बहिष्कार, अलगाव।
**छेखड़**—वि० (बि०) फटा हुआ।
**छेखणा**—स० क्रि० (मं०) फाड़ना।
**छेग**—पु० (कु०) ढेला।
**छेगी**—वि० (कु०) दरिद्री।
**छेघड़ा**—पु० (कु०) घुला हुआ पदार्थ।
**छेच**—स्त्री० (कु०) स्त्री, पत्नी।
**छेचार**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) चालाक, बहुत चालाक।
**छेळी**—स्त्री० (शि०) धूप वाली छाया।
**छेड़**—स्त्री० लड़ाई, दंगा, छेड़खानी।
**छेड़**—स्त्री० आवाज़, ध्वनि, आहट।
**छेड़ऊणी**—वि० (मं०) तुच्छ।
**छेड़क**—पु० (सि०) धान का छिलका।
**छेड़छुड़का**—पु० (कु०) ध्वनि, आवाज।
**छेड़छुणका**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) आहट।
**छेड़ना**—स० क्रि० हिलाना, शरारत करना, परेशान करना, छेड़ना, तंग करना।
**छेड़ना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) कार्य आरंभ करना।
**छेड़ना/नो**—स० क्रि० (शि०, सि०) पतली वस्तु पकाना।
**छेड़ा**—पु० किसी वस्तु को हिलाने की क्रिया, कलछी से हिलाने की क्रिया।
**छेड़ा**—पु० गेहूं का गाहन करते समय गेहूं को दांती आदि से हिलाने की क्रिया।
**छेड़ाक**—वि० (कु०) 'छेड़ा' देने वाला।
**छेड़ाणी**—स्त्री० (चं०) अधपकी वस्तु।
**छेड़ादेणा**—स० क्रि० (चं०, बि०, कां०) किसी बात को दबाना, उकसाना।
**छेड़ापा**—वि० (चं०) छेड़खानी करने वाला।
**छेडु**—पु० (बि०) आवाज़।
**छेडू**—वि० (चं०) उपहास करने वाला।
**छेडू**—वि० (ऊ०, ह०) उकसाने वाला; चिड़चिड़ा।

**छेणा**—अ० क्रि० (सि०) एकत्र होना।
**छेणिया**—अ० (शि०) बाद में।
**छेणी**—स्त्री० छेनी।
**छेत**—पु० (कु०) खेत।
**छेतखोळ—पु० (कु०) खेत-खलिहान।**
**छेतणा**—स० क्रि० मारना, पीटना, मार-पीट करना।
**छेतणा**—स० क्रि० (कां०, ह०) दबाना।
**छेतदे**—अ० (शि०) अलग।
**छेतर**—पु० (कां०) क्षेत्र, पवित्र स्थान, मंदिर में यात्रियों आदि के लिए भोजन की व्यवस्था का स्थल।
**छेती**—स्त्री० (कु०) कमाई, निजी संपत्ति।
**छेती**—स्त्री० (कु०) छत पर देवता को दी बलि।
**छेद**—पु० सुराख।
**छेदणा**—स० क्रि० काटना, सुराख करना।
**छेनाश**—पु० (कु०) सर्वनाश।
**छेप**—पु० (चं०) धान बीजने की एक विधि।
**छेपकी**—स्त्री० (सि०) छिपकली।
**छेपण**—पु० (कु०) **पशु-पक्षियों** को भगाने के लिए पत्थर फेंकने का रस्सी का बना उपकरण।
**छेपणा**—स० क्रि० (सि०) गोड़ाई करना।
**छेपा/पे**—पु० (मं०, शि०) गरुड़।
**छेब**—पु० (कां०, बि०) घास युक्त मिट्टी का बड़ा ढेला जो प्रायः पानी रोकने के लिए लगाया जाता है।
**छेबड़ा**—पु० (कु०) घास युक्त मिट्टी का ढेला।
**छेबाड़**—पु० (शि०, सि०) छिपकली।
**छेमां**—वि० छठा।
**छेर**—स्त्री० (चं०, बि०) भूतप्रेत के प्रभाव के कारण बच्चे के रोने की क्रिया।
**छेर**—पु० अतिसार।
**छेरड़**—वि० (मं०) पतिता, लड़ाकी।
**छेरड़ा**—पु० (कां०) फटा हुआ दूध।
**छेरड़ा**—पु० (बि०) गाय-भैंस के ब्याहने के छः दिन बाद तक का दूध।
**छेरना**—अ० क्रि० (मं०) देवता की खेल आना।
**छेरना**—स० क्रि० (कां०, बि०, ह०) सिल को छेनी से छेदना।
**छेरिना**—अ० क्रि० (कु०) किसी में देवशक्ति के प्रवेश होने पर शरीर में कंपकंपी आना।
**छेलछलाणी**—स्त्री० (कु०) पानी वाली दाल-सब्जी आदि।
**छेलटू**—पु० (कां०) दे० छेलू।
**छेलडू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) दे० छेलू।
**छेलणा**—स० क्रि० (कु०) साफ करना।
**छेला**—वि० (सि०) अच्छा।
**छेला**—पु० (चं०) छोटा बकरा।
**छेला**—पु० (कां०, बि०, ह०) जवान बकरा।
**छेलिणा**—स० क्रि० (कु०) धोया जाना।
**छेली**—स्त्री० बकरी की बच्ची।
**छेली**—स्त्री० (मं०) भूतप्रेत की छाया का प्रकोप।
**छेलू**—पु० (कां०, बि०) मेमना, बकरी का छोटा बच्चा।
**छेलू**—पु० (कु०) बकरी का बच्चा।
**छेले**—स्त्री० (शि०) छोटी बकरी।
**छेल्ला**—पु० (कां०) रोग का आक्रमण।
**छेवड़ा**—पु० (सि०) पति। वि० ताकतवर।
**छेवड़ी/डे**—स्त्री० (सो०, सि०, शि०) पत्नी।
**छेवड़ो**—पु० (शि०) पुरुष।
**छेवणा**—अ० क्रि० (मं०) फैलना।
**छेवणा**—स० क्रि० (सो०) चुकाना, कर्ज आदि चुकाना।
**छेशणी**—स्त्री० (मं०) पहली बार नया अन्न खाने का संस्कार।
**छेहचार**—वि० (कु०) बदमाश।
**छेहा**—पु० (कु०) मरने का खतरा।
**छै**—स्त्री० (शि०) छाया।
**छैबर**—पु० (मं०) दवाई के काम आने वाला एक पौधा।
**छैल**—वि० (चं०) अच्छा, सुंदर।
**छै**—पु० (कां०) नाश।
**छैओण**—पु० (मं०) बिस्तर।
**छैओणा**—स० क्रि० (मं०) छाया प्रदान करना।
**छैओणा**—स० क्रि० (शि०) बिछाना।
**छैकड़ा**—पु० (कु०) ट्रक, छकड़ा।
**छैण**—पु० (मं०) छप्पर।
**छैण**—पु० (शि०) पशुओं के नीचे बिछायी जाने वाली चीड़, देवदार आदि की पत्तियां या घास।
**छैण**—पु० (कु०) बिस्तर।
**छैणकदा**—वि० (कु०) छन-छन करता।
**छैणा—पु० एक वाद्ययंत्र, हाथों से बजाई जाने वाली कांसियां।**
**छैणी**—स्त्री० (मं०) कड़ियां, छप्पर टिकाने हेतु क्रम से लगाई कड़ियां।
**छैणी**—स्त्री० (बि०) छेनी।
**छैतीश**—वि० (शि०) छत्तीस।
**छैनुए**—वि० (मं०) छियानबे।
**छैबका**—पु० (कु०) दे० छौबका।
**छैरी**—पु० (मं०) गायक।
**छैरोग**—पु० (कां०) क्षय रोग।
**छैळ**—वि० (कां०, बि०) सुन्दर, खूबसूरत, अच्छा।
**छैलका**—पु० (कु०) पानी का छलका।
**छैलड़ी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) नई नवेली वधू।
**छैलबैल**—स्त्री० (कु०) छलछल की ध्वनि।
**छैवणा**—स० क्रि० (मं०) बिछाना।
**छैसी**—वि० (मं०) छियासी।
**छैह**—पु० (कां०, बि०) अवसर की ताक।
**छैहगड़ा**—पु० (कां०) घटिया प्रकार की हरकत, झूठा अभिनय।
**छैहठ**—वि० (मं०) छियासठ।
**छैहणा**—स० क्रि० (कां०, बि०) अवसर की ताक में रहना, आड़ लेना, खिसियाना।
**छैहणी**—स्त्री० (मं०) छत की स्लेट के नीचे लगने वाली लकड़ी।
**छोंका**—पु० (सि०, कां०) छौंक।
**छोंगणा**—स० क्रि० (कु०) छिलके वाले दानों को कूटकर

छिलका उतारना।

**छोंगणा**—अ० क्रि० (कां० बि०) सिकुड़ना।

**छोंजसजाई**—स्त्री० (मं०) चैत्र मास में सर्वप्रथम गाए जाने वाले बसंत ऋतु गीत।

**छोंटी**—स्त्री० (सि०) ठोड़ी।

**छोंठा**—पु० (चं०) छाया।

**छोंदा**—पु० (कु०) निमंत्रण।

**छोंदी**—अ० (शि०) डटकर।

**छोंदीशोर**—पु० (शि०) एक देवता।

**छोंदू**—पु० (कु०) निमंत्रण देने वाला।

**छो:टा/टू**—पु० (सि०, शि०) लड़का, बेटा।

**छो:टी/टे**—स्त्री० (सि०, शि०) लड़की, बेटी।

**छो:तळी**—वि० (कां०, बि०) मासिक धर्म में आई (स्त्री)।

**छो:रू**—पु० लड़का।

**छो**—पु० (कां०, कु०, चं०) जलप्रपात, ऊपर से गिरने वाला पानी।

**छो**—पु० (कां०, ह०) गन्ने का छिलका।

**छोआं**—पु० (कां०, ह०) कांटा।

**छोइचू**—स्त्री० (सि०) बिना दूध की खीर।

**छोइण/णी**—स्त्री० (कु०) लंबी शहतीरी; कड़ियां जिन पर छत के चौड़े पत्थर टिकाए जाते हैं।

**छोइलो**—पु० (सि०) ऐसी टोकरी जिसमें ऊन रखी जाती है।

**छोई**—पु० (सि०, सो०) राख से निथारा हुआ पानी, कपड़े धोने का घोल।

**छोई**—स्त्री० (चं०) विवाह के समय के लिए काटी लकड़ी।

**छोई**—स्त्री० (चं०) जलप्रपात के गिरने का स्थान।

**छोई**—स्त्री० (मं०) भयंकर 'ढांक'।

**छोई**—स्त्री० (कु०, सि०) छत के एक तरफ का हिस्सा।

**छोईछों**—पु० (सि०) चावल का विशेष पकवान।

**छोए**—पु० (कां०, चं०) बिवाई।

**छोओटा**—पु० (शि०) बेटा।

**छोओटे**—स्त्री० (सि०) छोटी बच्ची।

**छोओड़े**—स्त्री० (सि०) चमड़ी।

**छोक**—स्त्री० (सि०) लिपाई।

**छोकणो**—अ० क्रि० (शि०) हट जाना।

**छोकरबादा**—पु० लड़कपन।

**छोकरमत**—स्त्री० उतावली बुद्धि।

**छोकरा**—पु० नवयुवक, किशोर।

**छोकरा**—पु० (कु०) नौजवान, युवक।

**छोकरियां**—स्त्री० (मं०) ऐसी कन्याएं जो रानी को ऋतु के अनुसार फल-फूल भेंट करती हैं।

**छोकरी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) लड़की, युवती, किशोरी।

**छोकरू**—पु० (बि०, शि०) लड़का।

**छोका**—वि० (सि०) छ:।

**छोचणा**—स० क्रि० (बि०) बार-बार बिना कारण किसी चीज़ को छूना।

**छोछा**—वि० (चं०) घटिया।

**छोछी**—स्त्री० (कां०) जाल के बाहरी दायरे में घना और दोहरा किया हुआ भाग।

**छोट**—स्त्री० (शि०) फ़ुर्सत।

**छोट**—स्त्री० (कां०) छूट।

**छोटका**—वि० (कु०) छोटे कद का।

**छोटड़ा**—वि० कुछ छोटा।

**छोटणार**—पु० (सि०) वर्षा आने का भाव।

**छोटबड़ाई**—स्त्री० (कां०, बि०) छोटा बड़ा होने का भाव।

**छोटांग**—वि० (शि०) छटांक।

**छोटा बेऊतरणा**—पु० (मं०) ओछापन।

**छोटा मैहंदड़ू**—पु० (बि०) Maesa martiana.

**छोटियाणो**—स० क्रि० (शि०) सफेदी करना।

**छोटी**—स्त्री० (सि०) वाद्ययंत्र बजाने की छड़ियां।

**छोटी गुलाब**—पु० (सो०, शि०) Rosa serrata.

**छोटीबसरोई**—पु० (शि०, सो०) Salix elegans.

**छोड़**—पु० (शि०, सि०) लकड़ी का बारीक हिस्सा।

**छोड़**—पु० (कां०) विवाहादि उत्सव का अंतिम दिन।

**छोड़**—अ० जल्दी, शीघ्र।

**छोड़चारे**—अ० (कां०, बि०, सि०) जल्दी-जल्दी।

**छोड़णा**—स० क्रि० (सि०) (लकड़ी पत्थर आदि की) कटाई करना।

**छोड़ना**—स० क्रि० (कु०) समाप्त करना।

**छोड़नो**—स० क्रि० (शि०) छोड़ना।

**छोड़ा**—पु० (सि०) पवित्र जल।

**छोड़ा**—पु० (मं०) भाज।

**छोड़ा**—पु० (कु०) जल्दी, शीघ्रता।

**छोड़े**—स्त्री० (शि०) पशुओं की खाल।

**छोड़े**—पु० (सि०) चप्पल।

**छोड़े**—स्त्री० (सि०) चांदी की बनी देव छड़ी।

**छोड़े**—स्त्री० (सि०) दूध बिलोने की मथनी में लगी रस्सी।

**छोण**—पु० (चं०) घासफूस आदि बिछाकर बनाया बिस्तर।

**छोण**—पु० (कु०) खाली समय, वक्त, फुर्सत।

**छोणकाणो**—स० क्रि० (शि०) खनकाना, घंटी बजाना।

**छोणा**—स० क्रि० (बि०) छूना।

**छोणा**—स० क्रि० (सि०) एकत्रित करना, मकान की छत डालना।

**छोणा**—स० क्रि० (कु०) छत डालना।

**छोत**—स्त्री० (चं०) किसी संबंधी के मर जाने पर क्रिया संस्कार होने तक का समय।

**छोते**—वि० अपवित्रता, अस्पृश्यता।

**छोत**—स्त्री० (कु०) क्रियाकर्म।

**छोतला**—वि० (सो०) अस्पृश्य।

**छोतिशा**—वि० (शि०) सब कामों में चतुर।

**छोतेसा**—वि० (चं०) दाह संस्कार के लिए साथ गया व्यक्ति, मृतक का पूरा परिवार।

**छोतेसी**—वि० (चं०) दे० छो:तळी।

**छोतोर**—पु० (शि०) छत्र।

**छोदा**—पु० (कु०) कांसे की थाली में अक्षत-धूप डालकर 'गुर' द्वारा देवता से पूछताछ करने की क्रिया।

**छोप**—स्त्री० (कां०, बि०, ह०) किसी नोकदार वस्तु के चुभ जाने का भाव।
**छोप**—पु० गन्ने के छिलके।
**छोप**—पु० चेचक का टीका।
**छोपके**—स्त्री० (सि०) मोरनी की चाल।
**छोपणा**—स० क्रि० (सि०) गोड़ाई करना।
**छोपणा**—स० क्रि० चेचक का टीका लगाना।
**छोपराठी**—स्त्री० (शि०) छत में लगने वाली लकड़ी।
**छोपालाणा**—स० क्रि० चेचक का टीका लगाना, हानि पहुंचाना।
**छोबटी**—स्त्री० (सि०) छिप जाने की क्रिया।
**छोमकिणा**—अ० क्रि० (कु०) सूखना, नमी दूर होना।
**छोया**—स्त्री० (सि०) किसी देवी-देवता की छाया।
**छोर/री**—पु० (कु०) तेज़धार वाला ऊपर से गिरता बड़ा पत्थर।
**छोरगण**—स्त्री० (कु०) चकमक पत्थर जिस पर 'साज़' टकरा कर आग पैदा की जाती है।
**छोरणा**—स० क्रि० (चं०) बचाकर रखना, थोड़ा-थोड़ा निकालना।
**छोरना**—स० क्रि० (कु०) अन्न बीजने के तुरंत बाद वर्षा आने पर जमी हुई मिट्टी की सतह को छोटी कुदाली से खोदना या उखाड़ना।
**छोरपोण**—पु० (शि०) बचपन।
**छोरार**—वि० (चं०) निकलने वाला।
**छोलंग**—पु० (बि०) मीठे छिलके वाला खट्टा फल।
**छोल**—वि० मथा हुआ, अधपका, नियार।
**छोळ**—पु० (कु०) घराट के लिए आने वाले पानी की नाली में लगाया जाने वाला तख्ता जिसको लगाने से घराट चलना बंद होता है।
**छोलकू**—पु० (कु०) पट्टू या कंबल के दोनों सिरों पर धागों में लगी हुई विशेष प्रकार की गांठें।
**छोलकोलिणो**—अ० क्रि० (सि०) थोड़ा सा पानी गिराकर जल्दी से स्नान करना।
**छोलगर**—पु० (शि०) दे० छोलंग।
**छोलगुटे**—पु० (शि०) गलगल।
**छोलण**—पु० (मं०) चने का बनाया खट्टा खाद्य।
**छोलणा**—स० क्रि० (सि०) ठगना।
**छोलणा**—स० क्रि० दूध बिलोना।
**छोलणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) छिलका उतारना, छीलना।
**छोंलणा**—स० क्रि० (मं०) मिलाना।
**छोलणा**—अ० क्रि० (कु०) ठोकर लगाना; पत्थर को घड़ना।
**छोळणा**—स० क्रि० (कां०, चं०) भेद लेना।
**छोळणार**—वि० (चं०) भेद लेने वाला।
**छोळणारण**—वि० (चं०) भेद लेने वाली; मथने वाली।
**छोलणो**—स० क्रि० (सि०) घास की जड़ें निकालना।
**छोलदारी**—स्त्री० छोटा तंबू।
**छोळना**—स० क्रि० (कां०, चं०) हिलाना।
**छोळना**—स० क्रि० (सो०) दही बिलोना।
**छोळनो**—स० क्रि० (शि०) छिलका उतारना।
**छोलफलाणो**—स० क्रि० (शि०) इधर-उधर पानी फेंकना।
**छोला**—पु० चना।
**छोलिणा**—अ० क्रि० (कु०) पत्थर आदि से पांव में चोट लगना, रगड़ लगना।
**छोलिणो**—अ० क्रि० (शि०) ठगा जाना।
**छोलिया**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) हरे चने जो कच्चे खाए जाते हैं; चनों की सब्जी।
**छोलिया**—पु० (शि०) शोषण।
**छोलीक**—पु० (सि०) गलगल।
**छोलुणा**—अ० क्रि० (सो०) पत्थर आदि से चमड़ी छिलना।
**छोवा**—पु० (सि०) नदी का किनारा।
**छोवा**—वि० (मं०) छाया में।
**छोविया**—वि० (शि०) राजा सदृश।
**छोह**—पु० (कां०) क्षोभ, खेद।
**छोहटी**—स्त्री० (सो०) लड़की।
**छोहटू**—पु० (सो०) लड़का।
**छोहड़ा**—पु० (बि०) जानवर की खाल जो रंगी अथवा साफ न की गई हो।
**छोहत**—स्त्री० (कां०, ह०) संक्रामक रोग, अस्पृश्यता।
**छोहदा**—वि० (कां०) घटिया किस्म का व्यक्ति।
**छोहमछोह**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) इधर-उधर की।
**छोहमोह**—वि० (कु०) अच्छा-बुरा (काम)।
**छोहरा**—पु० लड़का।
**छोहरी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) ऐसी लड़की जिसके पिता की मृत्यु हो गई हो।
**छोहरू**—पु० (ऊ०, कां० ह०) ऐसा लड़का जिसके पिता की मृत्यु हो गई हो।
**छौं**—स्त्री० छाया।
**छौंकणा**—स० क्रि० तड़का लगाना।
**छौंका**—पु० तड़का।
**छौंग**—पु० (कु०) लड़का।
**छौंटा**—पु० (कां०, चं०, बि०) घोड़े आदि की पीठ पर बिछाने हेतु सन का बना बिछौना।
**छौंटा-पलाण**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) बोरिया-बिस्तर।
**छौंटे**—स्त्री० (शि०) ठोड़ी। वि० सुनसान।
**छौंठा**—पु० (चं०) शरीर की छाया।
**छौंड**—स्त्री० (सि०) हाथों को मुंह से लगाकर पानी पीने की क्रिया
**छौंरा**—पु० अभद्र छाया, प्रतिछाया।
**छौंहटी**—स्त्री० (मं०, सि०) ठोड़ी।
**छौः**—वि० (कु०, चं०, सि०) छः।
**छौ**—स्त्री० (कु०) छत।
**छौआं**—वि० (कु०) छठा।
**छौई**—वि० (शि०) छः।
**छौओ**—वि० (मं०) छः।
**छौक**—स्त्री० (कु०) गलती, त्रुटि।
**छौक**—स्त्री० (कु०) एक समय का भोजन।
**छौकणा**—स० क्रि० (सि०) अपनी हांकना; खाना।
**छौका**—पु० (सि०) मौज मस्ती में समय बिताने का भाव।
**छौखा**—वि० (चं०) चुस्त (पशु), जल्दी चलने वाला; डरपोक।

**छोछ/छी**—स्त्री० (कु०) देवता के रथ के ऊपर बनी सोने या चांदी की छोटी सी छतरी, कलश।
**छोछी**—स्त्री० (कु०) जंगली खुंब।
**छोठा**—वि० (कु०) जिसके हाथ में छः उंगलियां हों।
**छोड़**—स्त्री० (शि०, सि०) बारीक लकड़ी।
**छोड़**—स्त्री० (शि०) बिल।
**छोड़ना**—स० क्रि० (कु०) छोड़ देना।
**छोड़ा**—पु० (सि०) गले का हार विशेष।
**छोड़ा**—वि० (शि०) अकेला (व्यक्ति)।
**छोड़िना**—स० क्रि० (कु०) छोड़ा जाना।
**छोणा**—स० क्रि० (कु०) नष्ट करना।
**छोणी**—स्त्री० (कां०, चं०, बि०) छावनी।
**छोतर**—पु० (कु०, शि०, सि०) छत्र।
**छोता**—पु० (कु०, शि०, सि०) छाता।
**छोतो**—पु० (कु०) छतरी, बड़ा छाता।
**छोपणा**—अ० क्रि० (कु०) बर्तन में उबल कर पानी का सूख जाना।
**छोबका**—पु० (कु०) छलांग।
**छोबीश**—वि० (शि०, सि०) छब्बीस।
**छोर**—स्त्री० (मं०) घर के बड़ों के मरने पर छोटों के बाल बेतरतीब काटने का संस्कार।
**छोरबेरू**—वि० (चं०) जल्दबाज़, चुस्त।
**छोरी**—स्त्री० (कु०) पसलियां।
**छोल**—पु० (सि०) छल, प्रेत।
**छोल**—पु० (कु०) प्रायश्चित्त, देवता के सामने 'नड़' द्वारा की जाने वाली संस्कार-क्रिया जिससे प्रायश्चित्त करके मुक्ति प्राप्त होती है।
**छोलकणा**—अ० क्रि० (कु०) छलकना।
**छोला**—पु० (कु०) तेज़ वर्षा।
**छोल्ल**—पु० (शि०) प्रेत प्रेमी।
**छोशणा**—पु० (कु०) मक्खन।
**छोशणा**—स० क्रि० (कु०) मालिश करना।
**छोशिणा**—स० क्रि० (कु०) मालिश की जानी।
**छोहड़ा**—वि० (मं०) जिस बैल के छः दांत निकले हों।
**छोही**—स्त्री० (मं०) बड़ा कुल्हाड़ा।
**छ्रबड़**—पु० (सो०) छत से टपकने वाला पानी, ज़मीन पर इकट्ठा हुआ पानी।

## ज

**ज**—देवनागरी वर्णमाला के चवर्ग का तीसरा अक्षर। उच्चारण स्थान तालु; अल्पप्राण।
**जंईड**—वि० (शि०, सि०) मज़बूत (बैल)।
**जंग**—पु० (चं०) मुंह से लगाकर बजाया जाने वाला बाजा जो स्थानीय लुहार द्वारा बनाया जाता है।
**जंग**—पु० (सि०, सो०) वाद्ययंत्रों की ताल विशेष जिसे विवाह उत्सव पर बजाया जाता है।
**ज़ंग**—पु० ज़ंग, धातु की मैल।
**जंगड़दुआळ**—पु० (कां०) बड़ा यज्ञ, भोजन के लिए आमंत्रित विशाल जन समूह।
**जंगनी**—स्त्री० (चं०) दयार की लकड़ी की मशाल।
**जंगबड़ेंघा**—वि० (कां०, कु०) टेढ़ा-मेढ़ा।
**जंगम**—पु० शिव-पार्वती से संबंधित लोक-गीत का गायक।
**जंगराल**—पु० (कां०) मकड़ी का जाल।
**जंगराल**—पु० (कां०) छत या चूल्हे के ऊपर धुएं के लिए बनी चिमनी।
**जंगरी**—स्त्री० (शि०) कटोरी।
**ज़ंगला**—पु० जंगला, बरामदे आदि के आगे लगी हुई बाड़ जिसमें लोहे या लकड़ी के छड़ या जाली जड़ी हो।
**जंगलाती**—वि० (शि०) वन विभाग के (कर्मचारी आदि)।
**जंगा**—पु० (सि०) Elaodendron glavenor.
**जंगाल**—पु० (चं०) गौ की तरह का जंगली पशु।
**जंगाळ**—स्त्री० (कां०) जुगाली।
**जंगीहरड़**—स्त्री० एक औषधि।
**जंघ**—स्त्री० टांग।
**जंघ**—पु० (कां०) यक्ष, राक्षस।
**जंछणी**—स्त्री० (ऊं०, कां०) यक्षिणी।
**जंज**—स्त्री० बारात।
**जंजाळ**—पु० झंझट।
**जंजीर**—स्त्री० सांकल, श्रृंखला।
**जंजेवणा**—स० क्रि० (सो०) तंग करना, रुलाना।
**जंझोड़ना**—स० क्रि० (शि०) झंझोड़ना।
**जंडणो**—स० क्रि० (मं०) जोतना।
**जंडिया**—पु० (शि०) मुसलाधार वर्षा।
**जंडी**—स्त्री० (ऊ०, बि०, ह०) बरसात में होने वाला एक त्योहार जो बच्चों की कुशलता के लिए मनाया जाता है।
**जंडु**—पु० (कां०) कुकुरमुत्ते की एक किस्म।
**जंडू**—वि० (शि०) बौना, ठिंगना।
**जंढा**—पु० (कां०) अंग, शरीर का कोई अंग।
**जंत**—पु० (कां०, बि०) भारी पत्थर, भरकम पत्थर।
**जंतर**—पु० यंत्र, ताबीज़।
**जंतरी**—स्त्री० पंचांग पुस्तिका।
**जंत्र**—पु० यंत्र।
**जंदड़**—पु० (चं०) बाराती।
**जंदड़ू**—पु० (चं०) दे० जंदड़।
**जंदर**—पु० (चं०) कठिनाई, विवशता।
**जंदर**—पु० बड़े जानवरों को पकड़ने का फंदा।
**जंदरा**—पु० ताला।
**जंदराल**—पु० (चं०) वह भूमि जिससे फसल काट ली गई हो।
**जंदरी**—स्त्री० (कां०) कसने का यंत्र।
**जंदा**—पु० ताला।
**ज़ंदाल**—पु० (कु०) खेत में घने पौधों को छितराने के लिए प्रयुक्त लकड़ी के लंबे दांतों वाला हल।
**ज़ंदालना**—स० क्रि० (कु०) 'ज़ंदाल' से खेत के घने

पौधे छितराना।
**जंदेवणा**—स० क्रि० (सो०) ताला लगाना।
**जंपरो**—पु० (मं०) यमदूत।
**जंबा**—वि० (कां०, बि०) गूंगा।
**जंबी**—वि० (कां०, बि०) गूंगी।
**ज़ंबूर**—पु० (शि०) कील को उखाड़ने का लोहे का औज़ार।
**जंभड़**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) सीधा-सादा, विकृत आकृति वाला।
**जंभरी**—स्त्री० (सि०) दे० जमीरी।
**जइण**—स्त्री० (कां०, शि०) अजवायन।
**जई**—पु० (मं०) दामाद।
**ज़उड़**—पु० (शि०) वर्षा।
**जऊ**—पु० (कां०, मं०) जौ।
**ज़कज़का**—वि० (शि०) ढीठ।
**जकजोड़ना**—स० क्रि० (शि०, सो०) झंझोड़ना।
**जकड़णो**—स० क्रि० (शि०) जकड़ना।
**जकड़ना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, चं०) पकड़ना, अ० क्रि० अस्वस्थ होना।
**ज़कड़ूण**—स्त्री० (शि०) जकड़न।
**जकड़ोणा**—स० क्रि० (कां०, बि०) पकड़ा जाना।
**जकड़ोरना**—स० क्रि० (कां०, बि०, ह०) झंझोड़ना।
**जकणा**—स० क्रि० (कां०, चं०, ह०) दबाना।
**जकणा**—स० क्रि० (शि०) ऊन के कपड़े धोना।
**जकणा**—स० क्रि० (कां०) कूटना, पीटना।
**जकदड़**—वि० (शि०, सो०) मंद बुद्धि।
**जकपक**—पु० (शि०, सो०) कीड़ों की अधिक संख्या।
**जकपक**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) बहुत बातें करने का भाव।
**जकपका**—वि० (शि०) जल्दबाज़।
**जकरिंड**—वि० (कां०) खूंखार, मूर्ख, बलवान।
**जकरिण**—स्त्री० (सि०) बासी भोजन से आने वाली दुर्गंध।
**जकरैंडा**—पु० (कु०, मं०) Jacaranda ovaliplia.
**जकाणा**—स० क्रि० (बि०, मं०) किसी अन्य के माध्यम से किसी वस्तु को दबाने की क्रिया।
**ज़कारना**—स० क्रि० (कु०) जयकार बोलना, किसी को कष्ट देने के लिए देवता का आह्वान करना।
**जकीन**—पु० विश्वास, यकीन।
**जकुड़णो**—स० क्रि० (शि०) जकड़ना।
**जकेरना**—स० क्रि० (कां०, ह०) पिटवाना।
**जकोणा**—स० क्रि० (कां०) पीटना, दबाया जाना।
**जकोणा**—स० क्रि० (सो०) उबालना।
**जकोत्था**—पु० (कां०) धक्के के साथ दिया हुआ दबाव।
**जकोथणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) झंझोड़ना, झकझोड़ना।
**जक्कड़**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) व्यर्थ कोशिश।
**जक्कड़**—स्त्री० (ऊ०, कां०) झूठी या कल्पित बात।
**जक्कना**—स० क्रि० (चं०, मं०) दबाना।
**जक्कर**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) बहुत से पत्थरों का भंडार।
**जक्कर**—वि० (कां०, चं०) मंदबुद्धि, नासमझ।
**जक्कळ मक्कळ**—अ० (कां०, ह०) ऊटपटांग।
**जक्ख**—पु० (ऊ०, कां०, कु०) यक्ष, पशुओं का देवता।
**जक्खर**—पु० (शि०) बकवास।
**जख**—पु० (चं०) घराट का एक पुर्जा।
**जख**—वि० (कां०) जो हिलने वाला न हो, ढीठ।
**जखणा**—वि० (शि०) शक्तिशाली।
**जखणा**—वि० (बि०) बुद्धिमान्, अक्लमंद।
**जखणी**—अ० (चं०) जब, जिस समय।
**ज़खम**—पु० घाव।
**जखयारण**—स्त्री० (कु०) लकड़ी काटने वाली।
**जखयारी**—पु० (कु०) लकड़ी लाने वाला व्यक्ति, लक्कड़हारा।
**ज़खाड़ी**—वि० (सि०) जबरदस्त, दक्ष।
**जखाणा**—वि० (सि०) शक्तिशाली।
**ज़खाम**—पु० जुकाम।
**ज़खीरा**—पु० ढेर, भंडार।
**ज़खीरी**—स्त्री० (कां०, कु०) पौधे लगाने का स्थान। संचित धन।
**जग**—पु० यज्ञ।
**जग**—पु० (कां०, बि०) बारात को दिया जाने वाला प्रथम भोजन।
**जग**—पु० (मं०) मेला।
**जगटू**—पु० (शि०, सो०) कमीज़।
**जगड़दुआ**—पु० (कां०) सदाव्रत।
**जगड़ना**—अ० क्रि० (शि०) झगड़ना।
**जगड़ालू**—वि० (शि०) झगड़ालू।
**जगणाह**—पु० (कु०) पहाड़ में रहने वाला देवता।
**जगणु**—पु० (बि०) चीड़ आदि वृक्ष की लकड़ी का एक बिरोज़ा-युक्त टुकड़ा जिसे जलाकर रोशनी करने के काम में लाया जाता है।
**जगतर**—पु० (कां०) संसार।
**जगतीपट**—पु० (कु०) जगत का पट्ट, नगर में बड़ा पत्थर जिसे देवता माना जाता है, जिसे मधुमक्खियों ने दूर पहाड़ से लाकर स्थापित किया था।
**जगतेर**—पु० (ऊ०) Aspidoptorys wallichu.
**जगथोम्ह**—पु० (कु०) एक देवता।
**जगनाड़**—पु० (कु०) लंबी टांगों वाला काले रंग का जाल बुनने वाला कीड़ा।
**जगनी**—स्त्री० (मं०) जेठानी।
**जगनू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) दे० जगणु।
**जगमाला**—स्त्री० (ऊ०, कु०) आम के पत्तों को 'बगड़' घास की रस्सी में पिरो कर बनाई गई यज्ञ-माला।
**जगयाड़**—स्त्री० (मं०) जुगाली।
**जगरनाथ**—पु० जगन्नाथ।
**जगरमगर**—अ० (शि०) अव्यवस्थित।
**जगरयाड़**—पु० (मं०) मकड़ी का जाल।
**जगरा**—वि० (शि०) गंदा।
**जगराता**—पु० जागरण।
**जगराहड़ो**—पु० (मं०) मकड़ी।
**जगरीड़ा**—पु० (सो०) काकड़ा नामक वृक्ष में ग्रीष्म ऋतु में होने वाला सफेद बालों वाला कीड़ा।
**जगरू**—पु० (ऊ०, कां०) Desmodiom velutinum.

**जगळैटणा**—स० क्रि० धीरे-धीरे चबाना।
**जगळोणा**—स० क्रि० (बि०) कुचला जाना।
**जगा**—पु० (सि०) पृथ्वी का भाग, मिल्कीयत।
**जगा**—स्त्री० स्थान, जगह।
**जगाउणा**—स० क्रि० (शि०) जगाना।
**जगाड़**—पु० प्रबंध, प्रयत्न।
**जगाणा**—स० क्रि० सोए हुए को उठाना, जगाना।
**जगात**—वि० (कां०) जागा हुआ, जागृत।
**ज़गात**—पु० राजा द्वारा लगाया कर, महसूल।
**ज़गाती**—पु० महसूल लेने वाला।
**जगाथरू**—पु० (मं०) स्थानीय वासी।
**जगाथेर**—वि० (मं०) निकम्मा।
**ज़गाधर**—पु० (कु०) ऐसा स्थान या दुकान जहां पीतल, तांबे, लोहे आदि के बर्तन मिलते हैं।
**जगारा**—पु० (ऊ०, कां०, कु०) गुज़ारा।
**ज़गाळ**—पु० (कु०, सि०) जुगाली।
**जगाळना**—अ० क्रि० (कां०, मं०) जुगाली करना।
**जगाळना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) भेद लेना।
**ज़गाला**—वि० (शि०) रखवाला।
**जगाळि**—स्त्री० (सि०, सो०) बंदर आदि से फसल की रखवाली करने का स्थान या झोंपड़ी, रखवाली।
**जगावणा**—स०क्रि० (सि०, सो०) जगाना।
**जगीर**—स्त्री० जागीर।
**ज़गेवणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) बचा कर रखना।
**जगैण**—पु० (कां०, ह०) दूध जमाने के लिए प्रयुक्त दही।
**जगैणु**—पु० (कां०) दही जमाने का बर्तन।
**जगैर**—पु० (शि०) दे० ज़गाळ।
**जगोणा**—स० क्रि० (मं०) पालना।
**जगोथर**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) निकम्मा।
**जग्गर**—वि० (सि०) मूर्ख, भोला।
**जग्गा**—पु० (सो०) मोटी कमीज़।
**जग्याळ**—पु० (बि०) दे० ज़गाळ।
**जग्याळना**—अ० क्रि० (बि०) जुगाली करना।
**जघूड़**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) मुंह से निकलने वाला झाग।
**जचणा**—स० क्रि० अच्छा लगना, पसंद आना।
**जचणा**—स० क्रि० (सि०) जांचना, सूझना।
**जचा**—पु० (कां०) जिह्वा में छाले पड़ने का रोग।
**जचाऊ**—पु० (कां०) मज़बूत रस्सी का एक छोटा टुकड़ा।
**जचोरा**—वि० (चं०) सुशोभित।
**जच्छण**—स्त्री० (मं०) यक्षिणी।
**जच्छ**—पु० (कु०) यक्ष।
**जच्छणे**—स्त्री० (मं०) चुड़ैल।
**जजे**—पु० (मं०) बच्चे के कुल देवता के नाम पर रखे जाने वाले केश जिन्हें तीन या पांच साल में काटा जाता है।
**जजोई**—वि० (कां०, चं०) विवाह में लेन-देन करने वाला।
**जजोड़ी**—स्त्री० (सि०) वधु।
**जट**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) जटा।
**जट**—वि० (शि०) महामूर्ख।
**जटकणा**—स० क्रि० (सो०) झटकना।
**जटका**—पु० (सो०) झटका।
**जटका**—वि० (कां०, चं०) असुंदर, भद्दा रंग (प्रायः कपड़े के रंग के लिए प्रयुक्त होता है)।
**जटकाणा**—स० क्रि० (कां०, मं०) डराना।
**जटणा**—स० क्रि० (सो०) पुकारना, बुलाना।
**जटणा**—स० क्रि० (कां०) बांधना।
**जटलु**—पु० (कां०, शि०) बच्चों के प्रथम लंबे बाल।
**जटां**—पु० (कां०, बि०) बच्चे के प्रथम बाल, जटाएं, लंबे बाल।
**जटांमळा**—पु० (कां०, बि०) फल विशेष।
**जटा**—स्त्री० केश।
**जटाधारी**—पु० शिवजी।
**जटाधारी**—वि० लंबे बालों वाला।
**जटामळा**—पु० (कां०) बकरी के बालों से बनी चटाई।
**जटार**—पु० (सि०) पशुओं द्वारा बंधन से मुक्त होने के लिए किया जाने वाला प्रयास।
**जटाळी**—पु० (ह०) चौकीदार।
**ज़टी**—वि० (कु०) लंबे बालों वाला, ज़िद्दी।
**जटेर**—पु० (शि०) जाट।
**जटैह**—स्त्री० (कां०) जूतों की मार।
**जट्टी**—स्त्री० (चं०) जन्म शिखा, नरभेड़ की पीठ पर रखी लंबी जटा।
**जट्टी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) हृष्ट-पुष्ट औरत।
**जट्टु**—पु० (बि०) हृष्ट-पुष्ट बालक।
**जट्टु**—पु० छोटे बच्चे के कुल देवता के नाम से रखे बाल जो तीसरे या पांचवें वर्ष देवता के सामने काटे जाते हैं।
**जठ**—पु० (मं०) जौ।
**जठर**—पु० (मं०) ज़ुकाम।
**जठर**—वि० (कां०, बि०) मज़बूत, गठीला, ऐसा व्यक्ति जो कठिन से कठिन कार्य करने की क्षमता रखे।
**जठाई**—पु० (कु०) देवता के साथ काम के लिए नियत हरिजन व्यक्ति।
**जठाणी**—स्त्री० जेठानी।
**जठाल**—स्त्री० (ह०) पत्नी की बड़ी बहिन।
**ज़ठाली**—पु० (कु०) देवता का एक कर्मचारी।
**जठाह्ल**—स्त्री० (कां०) दे० जठाल।
**जठिड़कू**—पु० (शि०) जौ के आटे के 'सिड्डू'।
**जठियां**—वि० छोटे कद का, गठीला।
**जठी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) जेठ की बेटी।
**ज़ठुणा**—अ० क्रि० (कु०) बालों का उलझना।
**जठुत्त**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) जेठ का पुत्र।
**जठुत्तर**—पु० (चं०) दे० जठुत्त।
**जठूंग**—वि० (शि०) ज्येष्ठ पुत्र।
**जठेड़ा**—पु० (सि०) उच्छिष्ट।
**जठेरा**—पु० कुल देवता।
**जठेरा**—पु० (कु०) जमलू देवता के ऊपरी सदन 'जेष्ठांग' का सदस्य।
**जठेरे**—पु० (कां०, बि०) कुल के बड़े-बूढ़े लोग।

**जठोला**—पु० (शि०) बिना घी या तेल का बना जौ के आटे का पूआ।
**जठोळी**—स्त्री० (सि०, शि०) जौ की रोटी।
**जड**—वि० (कु०) उजड्ड।
**जड़**—पु० (चं०) जौ।
**जड़**—पु० (चं०) बकरी के बाल।
**जड़**—पु० (शि०) भेड़ का बच्चा।
**जड़कदा**—वि० (सो०) खूब गर्म (पानी)।
**जड़कदा**—वि० (कु०, चं०) भारी बोझ।
**जड़का**—वि० (सि०, सो०) दोनों खुले हाथों को मिला कर माप का परिमाण।
**जड़का**—पु० (सि०) मुट्ठी भर मिर्चें, मिर्चें जितनी हाथ में आयें।
**जड़जड़ा**—वि० (कां०, कु०) सख्त, निराई करने के लिए कठिन।
**जड़जड़े**—वि० (शि०) ढीठ; अधिक जड़ वाला।
**जड़जुट**—वि० (सि०, सो०) पूरी तरह भीगा हुआ, बंधा हुआ।
**जड़डो**—पु० (मं०) घास लटकाने के लिए छत से लगी रस्सी।
**जड़णा**—स० क्रि० जडना।
**जड़तबाज**—वि० (कां०) क्रोधी स्वभाव वाला, जल्दबाज़।
**जड़तर**—स्त्री० (कां०, चं०) जोड़ने की क्रिया।
**जड़ना**—स० क्रि० पैदा करना। व्यवस्थित करना।
**जड़ना**—स० क्रि० (शि०) चिपकाना। थप्पड़ मारना।
**जड़नी**—स्त्री० (मं०) गुस्सा, क्रोध।
**जड़पटोणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) नाश होना।
**जड़पीड़**—स्त्री० (कां०, चं०) दांत का दर्द।
**जड़मूहियां**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) मुंडन से पहले शिखा में कुशा बांधने की क्रिया।
**जड़ल्ल**—स्त्री० टक्कर।
**जड़ा**—पु० (कु०) कपड़े टांगने की जगह।
**ज़डाइणा**—स० क्रि० (कु०) किसी से कोई चीज़ मांगी जानी।
**जड़ाऊ**—वि० नगों से जड़ा हुआ।
**जड़ाओ**—पु० (शि०, सि०) गहने, आभूषण।
**जड़ाकणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) खाना, दांतों से काटना, झटकना।
**जड़ाका**—पु० धमाका। चोट।
**जड़ाका**—अ० (शि०, सि०) अधिक संख्या में।
**जड़ाखणा**—स० क्रि० (बि०, मं०) टकराना।
**जड़ाज्जड़**—पु० (कां०) इकट्ठा होने का भाव।
**जड़ाणा**—स० क्रि० गहनों आदि में नग इत्यादि जड़वाना।
**जड़ाणा**—स० क्रि० (कां०) शुभ कार्य के लिए अच्छा दिन निश्चित करवाना, मुहूर्त निकालना।
**जड़ापण**—पु० (सि०) बैलों को जोतने की रस्सी।
**जड़िंग**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) मूर्ख।
**जड़िकिणा**—स० क्रि० (कां०, कु०) दबाया जाना।
**जड़िया**—वि० (मं०) गुस्सैल (व्यक्ति)।
**जड़ींग**—पु० लंबा जवान।
**ज़ड़ींघिणा**—अ० क्रि० (कु०) ठोकर से गिर पड़ना।
**जड़ीःली**—वि० (कु०) चीथड़े पहनने वाला।
**जड़ी**—स्त्री० जड़ी-बूटी।
**जड़ीकणा**—स० क्रि० (कु०) दबाना।
**जड़ीकणा**—अ० क्रि० (शि०) कूदना, छलांगे लगाना, शोर मचाना।
**जड़ीलण**—पु० (कु०) मुंडन संस्कार।
**जड़ील्हा**—पु० (कां०, कु०) फटा पुराना कपड़ा।
**ज़ड़ुहणु**—पु० (कु०) कंपकंपी।
**जड़ू**—स्त्री० (सि०) मिट्टी का ढेला।
**जड़ूकणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) बैल का रंभाना।
**जड़ूल**—स्त्री० (सि०) टक्कर।
**जड़ूला**—पु० (चं०) दे० जड़ौल।
**जड़ूली**—स्त्री० (सि०, सो०) बालक के प्रथम बाल जो देव मंदिर में ही तीसरे या पांचवें वर्ष काटे जाते हैं।
**जड़ेऊ**—पु० (सि०) दे० जणेऊ।
**ज़ड़ेओ**—वि० (शि०) जड़ों वाली भूमि।
**ज़ड़ेणा**—स० क्रि० (कु०) जोड़ना।
**ज़ड़ेणो**—स० क्रि० (शि०) दे० ज़ड़ेणा।
**ज़ड़ेलू**—पु० (शि०, सि०) मिट्टी का ढेला।
**जड़ेही**—स्त्री० (मं०) मछली पकड़ने का जाल।
**जड़ेही**—स्त्री० (मं०) मछुआ।
**जड़ों**—पु० (मं०) पहली बार शिशु के बाल देवता को अर्पण करने की क्रिया।
**जड़ो**—पु० (मं०) क्रोध।
**जड़ोलण**—पु० (कु०) दे० ज़ड़ीलण।
**जड़ोलू**—पु० (मं०) कड़ाही उठाने के लिए दोनों किनारों पर लगे गोल हत्थे।
**जड़ोलू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) टक्कर।
**जड़ौल**—पु० (चं०) बकरे के बाल से बनी जुराब जो बर्फ पर चलते समय पहनी जाती है।
**जड्डी-बड्डी**—स्त्री० विवाह आदि संस्कार।
**जढ़**—पु० (मं०) एक जलीय देवता।
**जढ़**—स्त्री० (चं०) जड़ी-बूटी।
**जढ़घूणा**—अ० क्रि० (कां०, चं०) सर्वनाश होना।
**ज़ढ़ाकणा**—स० क्रि० (कु०) किसी द्वारा निशान लगाते हुए बाधा डालना।
**ज़ढ़ाणा**—स० क्रि० (कु०) किसी से कोई वस्तु आग्रह-पूर्वक लेना।
**जढ़ा-मढ़ा**—पु० (चं०, बि०) व्यर्थ की वस्तुएं, शेष, मिली जुली वस्तुएं।
**ज़ढ़िंगिणा**—अ० क्रि० (कु०) ठोकर लगना।
**ज़ढ़ेःल**—पु० (शि०) मिट्टी-युक्त जड़।
**ज़ण**—पु० (कु०) आदमी, जन।
**जणतर**—स्त्री० (ह०) संतान, जनसंख्या।
**जणता**—स्त्री० जनता।
**जणदी**—स्त्री० (कां०, बि०) माता (बुरे अर्थों में)।
**जणदे**—पु० (बि०, ऊ०, कां०) माता-पिता, मायका।
**जणना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) जनना, पैदा करना।
**जणा**—पु० व्यक्ति।

जगाणा—स० क्रि० (ऊ०, सि०) उत्पन्न कराना।
जणास—स्त्री० पत्नी।
जणि—अ० (ऊ०, कां०) जैसे, अर्थात्।
जणिक—वि० (कु०) भूमि या फर्श के साथ सटा हुआ या चिपका हुआ।
जणी—स्त्री० (कां०) स्त्री, महिला, स्त्री के लिए संबोधन शब्द।
जणीत—स्त्री० (कु०, मं०) बारात।
जणीला—पु० (कु०) नाते-रिश्तेदार।
जणीवणी—स्त्री० (मं०) जनसमूह।
जणु—पु० (शि०) जलने का भाव।
जणोऊ—पु० यज्ञोपवीत।
जणेत—स्त्री० बारात।
जणेती—पु० बाराती।
जणोली—स्त्री० (शि०) जौ की रोटी।
जणेरना—स० क्रि० जन्म दिलवाना।
जणोत्रा—स्त्री० (मं०, ह०) बारात।
ज़णाहाटणा—स० क्रि० (कु०) तंग करना।
ज़णाहाटिणा—अ० क्रि० (कु०) तंग होना।
जतन—पु० यत्न, कोशिश।
जतर—पु० (ह०) बैलों को जोतने की रस्सी।
जतरना—स० क्रि० (कां०, चं०) कसना, लगाना, जोतना, लादना।
ज़ताइणा—स० क्रि० (कु०) जिताया जाना।
जताणा—स० क्रि० (कां०, बि०, ह०) अनुभव करवाना।
ज़ताणा—स० क्रि० (कु०) जिताना।
जति—पु० तपस्वी, यति।
जतिया—पु० (कां०, बि०, ह०) यति, ब्रह्मचारी।
ज़तीपती—स्त्री० (कु०) अति दुःख।
जतूण—पु० (कां०, चं०) जैतून।
जतेयोणा—स० क्रि० (सि०) दे० ज़ताइणा।
जत्था—पु० समूह।
जथरेयाणी—स्त्री० (मं०) जुए की रस्सी।
जथा—वि० (कां०) यथा।
ज़थी—अ० (कु०) बेशक।
जथोकणा—वि० (कां०, ह०) जिस समय का।
जद—अ० (ऊ०, कां०, चं०) जिस समय।
जदाणी—स्त्री० (कु०) बड़े भाई की पत्नी।
ज़दाली—स्त्री० (कु०, शि०) लकड़ी का एक उपकरण जिससे गेहूं गाहने के बाद भूसा इकट्ठा किया जाता है।
जदी—अ० (मं०) जब।
ज़दीआल—पु० (कु०) धान के खेत में ढेले फोड़ने के लिए बना हल की तरह का लकड़ी का एक उपकरण।
जदीरियाळना—स० क्रि० (कु०) पौध के बीच से घास आसानी से निकालने के लिए पांच-सात तीखी नोकदार लकड़ी की कीलियों वाले हल का प्रयोग करना।
जदुआ—पु० (चं०) जड़ से पनपा पौधा।
जदेणा—स० क्रि० (सो०) ज़िद्दी बनाना।
जदेहा—अ० (कां०) जैसा।
ज़देहा—वि० (शि०, सि०) जादू-टोना करने वाला।
जदोई—स्त्री० (बि०) जुदाई।
जद्दी—वि० पैतृक।
जधाड़ी—अ० (चं०) जब।
जधी—अ० (कु०, मं०) जब।
ज़धु—अ० (कु०) जब।
ज़धेड़ी—अ० (कां०, बि०) जिस दिन।
जधौणा—स० क्रि० (कु०) छोटे बछड़े-बछड़ी को बाहर चरने की आदत डालना।
जन—स्त्री० (कां०) बारात। व्यक्ति।
जन—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) बड़ा पत्थर।
जनई—स्त्री० (कां०) बारातियों को दी जाने वाली विशेष भेंट।
जनखा—पु० (सि०) घुटने का पिछला हिस्सा।
जनग्बड़—पु० (कां०, मं०) चट्टानों युक्त भूमि।
जनमी—वि० (शि०) पैदाइशी, जन्मजात।
ज़नमुरीद—वि० (शि०) पत्नी भक्त।
जनान/नी—स्त्री० (मं०) स्त्री।
ज़नार—वि० (शि०) पेटू, अधिक खाने वाला।
जनास—स्त्री० स्त्री।
जनी—स्त्री० (मं०) यौवनावस्था।
जनी—स्त्री० (ऊ०, कां०) स्त्री, नारी।
जनीतर—स्त्री० (मं०) बारातियों को दिया जाने वाला भोजन।
जनीत्रू—पु० (मं०) बाराती।
जनेई—स्त्री० (चं०) अल्पायु में विवाह करने के पश्चात युवावस्था में पुनः विवाह करने की प्रक्रिया।
जनेऊ—पु० (ह०) जणेऊ।
जनेत—स्त्री० दे० जणेत।
जनेतड़—पु० (कां०, बि०) दे० जणेती।
जनेत्रू—पु० (ऊ०, कां०, बि०) बाराती।
जनेवता—वि० (मं०) यज्ञोपवीत से युक्त।
जनोलू—पु० (कु०) 'पोळू' का निरर्थक समासयुक्त शब्द
जनौर—पु० (बि०) जानवर।
जनौर—वि० मूर्ख।
जन्न—पु० (कां०, बि०) बड़ा पत्थर।
जन्य—वि० (शि०) साधारण मनुष्य।
जप—पु० जाप, यज्ञ, हवन।
जपड़ेल—स्त्री० (बि०) जकड़।
जपणा—स० क्रि० जपना, बोलना।
ज़पणा—स० क्रि० (कु०) जपना।
जपतफ—पु० (कां०, चं०) हाथ-पांव से टटोलने की क्रिया।
जपमाली—स्त्री० (कां०) माला रखने की थैली।
जपलोटा—पु० (कु०) Jatropha curcar.
ज़पाणा—स० क्रि० (सि०) बुलवाना।
जपानीफल—पु० एक लाल रंग का फल विशेष।
जपार—वि० (चं०) जाप करने वाला।
जपी—वि० (चं०, बि०) जाप करने वाला।
जपोक—वि० (सो०) मूर्ख।
जपोकुणा—अ० क्रि० (सो०) मूर्ख की तरह खड़े रहना।

**जपोटा**—पु० (कां०) Jatropha curcas.
**जपोड़**—वि० (शि०, सि०) मूर्ख।
**जप्पड़**—पु० (बि०) ऊनी वस्त्र जो जुड़ कर मोटा हो गया हो।
**जप्पड़**—पु० (ऊ०, कां०) सख्त भूमि।
**जप्पण**—पु० (शि०, सि०, सो०) चर्चा।
**जप्पा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) जड़ों के साथ मिट्टी युक्त उखड़ा पौधा।
**जप्पू**—वि० (चं०) मूर्ख।
**जप्पे**—पु० (चं०) मछली की एक किस्म। कुछ भी हाथ न लगने का भाव।
**जप्फा**—वि० (कां०) गूंगा, सीधा-सादा।
**जप्फा**—पु० आलिंगन, बाहों का घेरा।
**जप्फी**—स्त्री० (मं०, बि०) बाहों का घेरा।
**जफड़**—वि० सीधा-सादा।
**जफड़पैरी**—वि० बड़े-बड़े पैरों वाली।
**जफलोटा**—पु० (चं०, सि०, मं०) पेट साफ करने की दवाई विशेष।
**जफहान**—स्त्री० (कां०) झांकी।
**जफा:ण**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) आलिंगन।
**जबजेड़**—वि० (शि०) मूर्ख।
**ज़बत**—पु० (शि०) नियंत्रण।
**ज़बर**—वि० (कु०, शि०, सि०) बलवान।
**जबर-जंग**—वि० भारी-भरकम शरीर वाला, शक्तिशाली।
**जबरजस्त**—वि० (शि०, सि०, सो०) जबरदस्त।
**जबरण**—अ० (शि०) बलात्।
**ज़बरदसत**—वि० (शि०) शक्तिशाली।
**जबरा**—वि० बूढ़ा।
**जबरी**—वि० अनिवार्य।
**जबरी**—वि० बूढ़ी।
**जबरी**—स्त्री० (कां०, चं०) सास।
**ज़बरीए**—अ० (कु०, शि०, सि०) बलपूर्वक।
**जबरैठ**—वि० (बि०) वृद्धा।
**जबलोटा**—पु० (कां०, बि०) बाड़ लगाने का एक छोटा वृक्ष।
**जबलोटा**—पु० (सि०) दे० जपोटा।
**जबांइण**—पु० (कां०, ह०) अजवायन।
**जबा**—पु० (बि०) सामर्थ्य।
**जबाखड़**—पु० (कु०) फसल के बीच में उगा अधिक घास।
**जबान**—स्त्री० वायदा, वचन।
**जबान**—स्त्री० जिह्वा, जीभ।
**जबालकरा**—वि० (शि०) बातूनी।
**जबूड़**—पु० (सि०, सो०) मुंह से निकलने वाली झाग।
**जब्त**—पु० ज़ब्त।
**जब्बल**—स्त्री० (सि०) लोहे की मज़बूत लंबी छड़ जिससे गड्ढा खोदा जाता है।
**जभ**—पु० (कां०, बि०) झंझट।
**जभ**—स्त्री० (चं०) जीभ।
**जभखाना**—पु० व्यर्थ का झमेला या झंझट।
**जभड़**—पु० (चं०) तालाब।
**जभली**—स्त्री० (कां०, बि०) डुबकी। गप्प।
**जभाब**—पु० (कु०) उत्तर, जवाब।
**जम**—पु० यम।
**जम**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) फसल के पैदा होने का भाव।
**जमखेड़ि**—स्त्री० (सो०) जबड़ा।
**जमखेड़ा**—पु० (शि०) जबड़ा।
**जमघंट**—वि० (बि०) हट्टा-कट्टा, मूर्ख।
**जमघड़**—वि० (चं०) मूर्ख, गंवार।
**जमजफी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) कड़ा आलिंगन।
**जमजूरना**—स० क्रि० (सो०) चूर्ण करना।
**जमजोड़ना**—स० क्रि० (सो०) झकझोरना, झकझोर कर जगाना।
**जमझेड़**—वि० (शि०) लीचड़, चिपटने वाला।
**जमटाह्णा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) देर करना।
**जमदु**—पु० (सो०, सि०) नींबू प्रजाति का एक फल।
**जमण**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) जामुन का पेड़।
**जमणा**—स० क्रि० जनना।
**जमणा**—अ० क्रि० जन्म लेना, उग आना। तरल पदार्थ का जम जाना।
**जमणो**—अ० क्रि० (शि०) जमना।
**जमणोतरू**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) जन्मजात, जन्म से।
**जमताकणा**—स० क्रि० (कु०) किसी को अचानक रोकना।
**जमताकिणा**—अ० क्रि० (कु०) अचानक रुक जाना।
**जमताकू**—वि० (कु०) अचानक रोकने वाला।
**जमदर**—पु० (मं०) भंडारी।
**जमदीवा**—पु० (सि०) दीवाली से दो दिन पहले मनाया जाने वाला त्योहार।
**जमदूत**—पु० विशालकाय, यमदूत।
**जमनोटा**—पु० (ऊ०) दे० जपोटा।
**जमपरू**—वि० (मं०) यम की तरह।
**जमपुरी**—स्त्री० यमपुरी।
**जमरे**—स्त्री० (मं०) लंबी तोप।
**जमळी**—स्त्री० (कां०) व्यर्थ बात।
**जमळी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) आयु, जन्म।
**जमळी**—स्त्री० (कां०) डुबकी।
**जमह्याळ**—पु० (बि०, मं०) जबड़ा।
**जमां**—पु० (ऊ०, कां०) सारा, पूरा, जमा।
**जमा:ई**—स्त्री० अंगड़ाई, उबासी।
**जमाइण**—स्त्री० (शि०) परख।
**ज़माइणा**—अ० क्रि० (कु०) जम्हाई लेना, उबासी लेना।
**ज़माई**—स्त्री० (कु०, शि०) दे० जमा:ई।
**जमाउणो**—स० क्रि० (शि०) जमाना।
**जमाण**—स्त्री० (मं०, सि०) विवाह की पालकी।
**जमाणत**—स्त्री० ज़मानत।
**जमाणा**—स० क्रि० पैदा करना, उत्पत्ति करना, बीज बोना।
**ज़माणा**—स० क्रि० जमाना, दही आदि जमाना।
**ज़माणी**—पु० (कु०) पालकी उठाने वाले।
**ज़माणी**—स्त्री० (कु०) देवता को कंधे पर उठाने के लिए बनाए गए दो लंबे डंडे।

**जमात**—स्त्री० श्रेणी, वर्ग।
**ज़मात**—पु० (शि०) मुनियों का समूह।
**जमाती**—पु० सहपाठी।
**जमानदू**—पु० (शि०, सि०) डोली।
**ज़माना**—पु० वक्त, जमाना, समय।
**जमालगोटा**—पु० (शि०) दे० जपोटा।
**जमालघोटा**—पु० एक विरेचक बीज।
**जमाळू**—पु० (कां०, बि०) मुंडन संस्कार।
**ज़माहिणा**—अ० क्रि० (कु०) जम्हाई लेना।
**जमीणा**—अ० क्रि० (चं०) जन्म लेना।
**जमीरी**—स्त्री० (कां०) खट्टा, नींबू प्रजाति का फल।
**जमुसना**—अ० क्रि० (मं०) हिलना।
**जमूर**—पु० कील उखाड़ने का एक उपकरण।
**जमूहा**—वि० (मं०) गरम।
**जमेख**—वि० (कां०) बुद्धि रहित।
**जमेर**—पु० (मं०) दही।
**जमेरना**—स० क्रि० (कां०) दही आदि जमाना।
**जमेरनु**—पु० (ऊ०, कां०, सि०) दही जमाने का बर्तन।
**जणेणु**—पु० (ऊ०, कां०, सि०) दही जमाने का पात्र।
**जमैन**—पु० (मं०) दे० जगैण।
**जमोचौ**—स्त्री० (कु०) 'शमांई' और 'शांज' को जोड़ने की गोल रस्सी।
**जमोण**—पु० दही जमाने के लिए दूध में मलाई जाने वाली खटास या दही की मात्रा।
**जमोत्रा**—वि० (कु०) जमा हुआ, पुराना।
**जम्दु**—पु० (शि०) एक विशेष प्रकार की कटोरी।
**जम्मण**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) जामुन का पेड़।
**जम्मण**—पु० (कां०, बि०) प्रसव।
**जम्मु**—पु० (कु०, चं०) अखरोट की तरह का वृक्ष जिसके पत्ते रंगदार होते हैं।
**जम्ह**—पु० (कां०, चं०) इकट्ठा, समूह।
**जम्हाका**—पु० (ऊ०, कां०) झलक।
**जम्हाका**—पु० (कु०) झलक।
**जम्हीरी**—स्त्री० खट्टा फल।
**जयफळ**—पु० (बि०) दर्दनाशक घरेलू दवा, जायफल।
**जयाणपन**—पु० (मं०) बच्चों की हरकतें।
**जयांणा**—पु० (मं०) बच्चा।
**ज़यार**—पु० (कु०) निशाना।
**ज़यालू**—पु० (कु०) मकड़ी।
**जयूक**—स्त्री० (चं०) रोज़ी।
**जर**—पु० (सि०) ज़ंग।
**जर**—पु० (कां०, बि०) बुखार।
**जर**—पु० (ऊ०, कां०) ज़ोर।
**ज़र**—पु० (बि०) धन, दौलत।
**जरकणा**—स० क्रि० (सो०) दांतों से काटना या चबाना।
**जरकणा**—अ० क्रि० डरना या घबराना।
**जरका**—पु० (बि०) धमकी।
**जरकाइणा**—स० क्रि० (कु०) धमकाया जाना।
**जरकाणा**—स० क्रि० किसी को धमकाना, डराना, रोब डालना।
**जरकान**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) पीलिया रोग।
**जरकेवणा**—स० क्रि० (सो०) चबाना।
**जरकेवणा**—स० क्रि० (शि०) धमकाना।
**ज़रखेज़**—वि० (शि०) उपजाऊ।
**ज़रगर**—पु० (चं०, शि०) सुनार।
**जरड़ा**—पु० (शि०) फल या वनस्पति का सूखता भाग।
**जरड़ा**—वि० सख्त, कठोर।
**जरणा**—स० क्रि० (चं०) सहन करना।
**जरत्कारु**—पु० (चं०) नागों का रक्षक।
**जरब**—स्त्री० चोट, हानि।
**जरब**—स्त्री० गुणा।
**जरबर**—अ० (शि०) कुरकुरी चीज़ चबाने से हुई आवाज़।
**ज़रबाना**—पु० (शि०) दंड, जुर्माना।
**जरम**—पु० (मं०) जन्म दिन, जन्म।
**जरमहैंठ**—पु० (चं०) परंपरागत बर्फ के ढेर जो कभी पिघले न हों।
**जरमाना**—पु० जुर्माना।
**जरल**—वि० (कां०) पानीयुक्त (भूमि)।
**जरल**—वि० (ह०) ठंडी (जगह)।
**जरहड़ा**—पु० (कां०, मं०) विवाह संस्कार का एक रूप।
**जरह**—वि० (कां०, बि०) थोड़ा।
**जरा**—पु० (सो०) दीवाली के दिन रात्रि के समय खुले स्थान में मक्की के डंठलों को एकत्र करके जलाई जाने वाली आग।
**जरा**—पु० (चं०) व्याधि।
**ज़रा**—अ० थोड़ा।
**जराकर**—अ० (कां०, चं०, बि०) थोड़ा सा।
**ज़राका**—पु० (सो०) धक्का, झटका।
**ज़राख**—अ० (सि०, चं०) थोड़ा सा।
**जराजरा**—अ० थोड़ा-थोड़ा।
**ज़राज़रा**—स्त्री० (कु०) घास या फसल को तेज़ उपकरण से शीघ्रता से काटने की क्रिया।
**जराथणा**—स० क्रि० (कां०) संभालना।
**ज़राब**—स्त्री० (बि०) जुराब।
**ज़राब**—स्त्री० (कु०, शि०) जुराब।
**जराभर**—अ० थोड़ा सा।
**जराहण**—स्त्री० (कु०) बिच्छू-बूटी।
**जरीटणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) यों ही पैर को रगड़ना, रगड़ना।
**जरेड़ा**—पु० (शि०) जौ वाला पानी।
**जरेड़ा**—वि० (सि०) सख्त, कठोर।
**जरेब**—स्त्री० (शि०, सि०) पटवारी की भूमि मापने की रस्सी, जरीब।
**जरैंथ**—पु० (सो०) एक जंगली फल।
**जरै**—पु० (शि०) कण।
**जरैड**—पु० (बि०) जंगली बेर।
**जरैड़ी**—स्त्री० (कां०, बि०) जंगली बेर की झाड़ी।

**जरोई**—स्त्री० (कु०) भोजन।
**जरोखा**—पु० (शि०) रोशनदान।
**ज़रोळी**—स्त्री० (शि०) जौ की रोटी जो भाप में पकाई जाती है।
**जरोड़ा**—पु० (कु०) ठंड, बुखार।
**जर्का**—पु० धमकी।
**जर्ब**—वि० (शि०) चोर।
**जर्म**—पु० (शि०) किटाणु।
**ज़र्रा**—पु० (शि०) कण।
**जलंगा**—पु० (शि०, सो०) Phytolocea acinosa.
**जल**—पु० (चं०) तिरस्कार।
**जल**—पु० (कां०) जाल जिससे मछली पकड़ी जाती है।
**जळ**—स्त्री० (सो०) चूल्हे में समिधाओं का ठीक प्रकार से जलने का भाव।
**जलकणा**—वि० (सि०) बहुत आकर्षक (स्त्री)।
**जलका**—पु० (बि०) चक्कर।
**जळकाणा**—स्त्री० बर्तन में पकते समय जले हुए पदार्थ की खुरचन।
**ज़लगा**—पु० (शि०) एक हरी सब्जी का नाम।
**जलघरा**—पु० (शि०) कटे पत्तों और पीले फूलों वाला एक घास।
**ज़लज़ला**—पु० भूकंप।
**जलजलात**—पु० (कां०, बि०) उतावला स्वभाव।
**जलजली**—स्त्री० (ऊ०, कां०) बेसब्री, उतावलापन।
**जलज़ली**—स्त्री० (शि०) बकबक।
**जलझुटणी**—स्त्री० (मं०) लड़कियों की जलक्रीड़ा।
**जलड़**—वि० (ऊ०, कां०, कि०) पागल, गूंगा, सीधा-सादा।
**जलण**—स्त्री० ईर्ष्या, जलन।
**जलणा**—अ० क्रि० जलना, कुढ़ना, ईर्ष्या करना।
**जलणी**—स्त्री० गुस्सा।
**जळणे**—वि० (शि०, सि०) नखरा, घमंड, जलन।
**ज़लधर**—पु० (कु०) चावल की एक किस्म।
**जलधाहा**—पु० (शि०, सो०) दे० जलंगा।
**जळब**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) मानसिक कष्ट, संकट, ईर्ष्या।
**जळबखोरा**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) दुःखदायी, ईर्ष्यालु।
**जलबाह**—पु० (कां०) मछलियां पकड़ने का भाव।
**ज़लम**—पु० (कु०) जन्म।
**जलवा**—पु० (कु०) तमाशा।
**जलहैन**—स्त्री० (कां०, बि०) जले हुए खाद्य पदार्थ की गंध।ईर्ष्या का भाव, क्रोधी स्वभाव।
**जलहैरी**—स्त्री० (चं०) घराट के नीचे का स्थान जहां से जल बहता है।
**ज़लांघरा**—पु० (शि०) फेफड़ों में पानी भर जाने का रोग।
**जलाकड़**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) ईर्ष्यालु।
**जलाकड़ी**—स्त्री० (कां०) जल के आस-पास की झाड़ियों में रहने वाला मुर्गी जैसा पक्षी जो बहुत तेज़ दौड़ता है।
**जलाखड़े**—स्त्री० (मं०) वृक्ष की जड़ें।
**जळाजळा**—पु० (कां०, बि०) उतावलापन।
**ज़लाड़ा**—पु० (कु०) बड़ी जड़।
**ज़लाड़ा**—पु० (कु०) कुदाल का लकड़ी वाला भाग, हत्था।
**ज़लाथर**—स्त्री० (कु०) चूल्हे के मध्य रखा लंबा पत्थर जो जलती हुई लकड़ियों को राख से ऊपर रखता है।
**जलापड़ी**—स्त्री० (सि०) नदी के किनारे लगने वाली एक सब्जी जो अरबी के पत्तों की तरह होती है।
**ज़लापा**—पु० (शि०, कु०) ईर्ष्या, जलन।
**जलाब**—पु० अतिसार।
**ज़लाब**—पु० (शि०) अतिसार।
**जळाभुना**—वि० (शि०) चिड़चिड़ा।
**जलारा**—पु० (शि०) झूलने की क्रिया।
**ज़लाल**—पु० (शि०) मुंह की रौनक।
**जलास**—पु० (कां०, कु०, सि०) न्यायालय, पंचायत, कचहरी आदि की बैठक।
**ज़लाहा**—पु० (कु०) जुलाहा।
**जलियाःण**—स्त्री० (कां०, बि०) जलने की गंध।
**जळीःण**—स्त्री० (सि०) जलने की गंध।
**जळीण**—स्त्री० (सो०) दे० जळीःण।
**जलीलपणा**—पु० (सि०) बेइज्ज़ती।
**जलेड़**—पु० (कां०) घमंड।
**जळेबा**—पु० (कां०, बि०, सो०) झंझट।
**जलेरना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) चिढ़ाना।
**जलेरना**—स० क्रि० (सो०) सहना।
**जळेवा**—पु० (कां०, चं०) दुःख।
**जलैरी**—स्त्री० (सो०) एक पात्र जिससे शिवलिंग पर पानी गिरता है।
**जलैहरी**—स्त्री० (चं०) पानी देने का बर्तन।
**जलोकड़**—वि० (ऊ०, कां०) सीधा-सादा।
**जलोट**—पु० (कां०) घराट के 'गरड़' को रखने का पत्थर।
**जलोड़**—पु० (कां०) घराट के 'गरड़' को टिकाने के लिए भूमि में गाड़ा हुआ लकड़ी का टुकड़ा।
**ज़लोत**—स्त्री० (कु०) एक विशेष काला पत्थर जिसे पीस कर लड़के तख्ती पर लिखने के लिए स्याही बनाते हैं।
**जलोथर**—पु० (कां०) जल का पत्थर।
**जलोथर**—पु० (बि०) वह पक्का पत्थर जो घड़ा न हो।
**जलोथरा**—पु० (बि०) नदी से निकले हुए बड़े पत्थर जो नदी के किनारे होते हैं।
**जलोद्दर**—पु० (कां०, बि०) शरीर में पानी भर जाने का रोग जब खून के पानी बनने का विश्वास किया जाता है।
**जलोरा**—पु० (सि०) बेल विशेष जो झाड़ियों पर फैली होती है।
**जलोहड़**—पु० (कां०) जली हुई पपड़ी।
**ज़लोहा**—वि० (कु०) धुएं वाली (लकड़ी)।
**ज़ळौणो**—स० क्रि० (सि०) सोने-चांदी के जेवरों को सुनारों द्वारा विशेष विधि से चमकाना।
**ज़ल्याड़ौ**—पु० (कु०) जड़।
**जल्सा**—पु० समारोह, जनसमूह।
**जल्हड़**—वि० (बि०) अल्पबुद्धि वाला।
**जल्हा**—वि० (कि०) गूंगा, बहरा, सुस्त, अल्पबुद्धि वाला।
**जल्हारा**—पु० (कां०) टोकरी को लटकाने के लिए बनाया

हुआ जाल।

**ज़ल्हारा**—पु० (कु०, सि०) हवा में वृक्ष आदि के झूलने की क्रिया, नींद की झपकी।

**जल्हींगड़**—वि० (बि०) अल्पबुद्धि वाला।

**जवंद**—पु० (कां०) दीवार आदि में मिट्टी लगाने का यंत्र।

**जवांई**—पु० दामाद।

**जवाए**—पु० (सि०) हल चलाते हुए बैलों के कंधे पर रखी जाने वाली लकड़ी।

**जवाणस**—स्त्री० (बि०, शि०, सि०) औरत, पत्नी।

**जवाने**—स्त्री० (शि०) यौवन, जवानी।

**जवार**—पु० (शि०) एक अनाज।

**ज़वार**—पु० (शि०) बुखार।

**ज़वारना**—स० क्रि० (शि०, सि०) प्रणाम करना।

**जवाल**—पु० (चं०) जौ का घास।

**जवाळ**—पु० (बि०) जोश।

**जवाला**—पु० (चं०) एक समारोह जब गद्दी लोग ऊन की माला लटका कर रात को जागरण करते हैं।

**जवाला**—पु० (शि०) उजाला।

**जवालु**—वि० (शि०) सनकी।

**जव्वळी**—स्त्री० इधर-उधर की बातें।

**जश**—पु० (कु०, शि०) यश।

**ज़श**—पु० (कु०) शक्ति, जोश।

**जशे**—वि० (मं०) काम करने वाला।

**जस**—पु० (कां०, बि०) यश।

**जसूस**—पु० जासूस।

**जसोधा**—स्त्री० (कां०, बि०) यशोदा।

**जस्त**—पु० धातु का नाम।

**जहर**—पु० (बि०) विष। क्रोध।

**जहरमोहरा**—वि० (कां०, चं०) हलका हरा रंग।

**जहरी**—वि० (बि०) क्रोधी, विषैला।

**जहलणा**—अ० क्रि० (मं०) झुंझलाना।

**ज़हीन**—वि० (शि०) बुद्धिमान।

**जहीरा**—वि० (मं०) बीमार।

**ज़हेज**—पु० (शि०) दहेज।

**जहलनी**—स्त्री० (मं०) क्रोध।

**जहलु**—अ० (कां०) चिड़-चिड़ की आवाज़।

**जहलु**—वि० (चं०, बि०) क्रोधी।

**जां**—अ० (कां०, चं०) जब।

**ज़ां**—अ० (कु०, शि०, सि०) जिस वक्त, जब।

**ज़ां**—वि० (कु०) बरबाद, नष्ट, ज़ाया, व्यर्थ।

**जांइडू**—पु० (कु०) छोटा सा पक्षी जो घरों के आस-पास उड़ता रहता है। लक्षणार्थ में प्रियतम।

**जांइणा**—अ० क्रि० (कु०) जाया जाना।

**जांक-जींक**—अ० (कु०, शि०) टुकड़े-टुकड़े।

**जांका**—वि० (कु०) मूर्ख।

**जांखां**—वि० (कां०) चालाक, मूर्ख।

**जांग**—स्त्री० (शि०, बि०, चं०) टांग। ज़ंग।

**जांग**—पु० (शि०) झुंड।

**जांग**—स्त्री० (शि०) खीरे, कद्दू आदि की बेलों को सहारा देने के लिए गाड़ा टहनियों युक्त लंबा डंडा।

**ज़ांगई**—वि० (कु०) दाहिनी ओर।

**जांगणा**—स० क्रि० (कां०) बलात्कार करना।

**ज़ांगल**—पु० (कु०, शि०, सो०) जंगल।

**ज़ांगळ**—पु० (शि०) खेत का अगला भाग जहां से हल चलाया जाए।

**जांगलियां**—पु० (शि०, सि०) वन-रक्षण।

**जांगली**—वि० (कां०, चं०, बि०) जंगली।

**जांगली**—अ० (कु०) नीचे की ओर।

**ज़ांगली**—वि० (शि०) जंगली, मूर्ख।

**जांगिया**—पु० जांघिया।

**ज़ांगी**—स्त्री० (सि०) दीवार।

**जांगी खोली**—स्त्री० (शि०) चार दीवारी।

**जांघ**—स्त्री० (कां०, मं०, ह०) टांग।

**जांचणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) परखना।

**ज़ांचणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) छांटना, चुपके से देखना।

**जांजणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) किसी चीज़ को छांटना, अलग-अलग करना।

**जांजळा**—वि० (बि०) पारदर्शी (कपड़ा)।

**जांजा**—पु० (शि०) हाथ से चलने वाली पत्थर की चक्की।

**ज़ांझणा**—स० क्रि० (कु०) अलग करना, लड़ते हुए पशु आदि को अलग करना।

**जांढ़े**—पु० (कु०) कुकुरमुत्ता की एक किस्म जो बरसात में बिजली की कड़क के साथ ज़मीन में पैदा होता है।

**ज़ांतु**—पु० (कु०) पेट के कीड़े।

**जांद**—स्त्री० (कां०) जामन, दूध को जमाने के लिए डाला जाने वाला दही या खट्टी चीज़।

**जांदक**—पु० (कां०, बि०, ह०) किसी के जाने का समय।

**जांदरा**—पु० (मं०) ताला।

**ज़ांदा**—पु० (शि०, सि०) ताला।

**जांदु**—वि० (सि०) कार्य पूर्ण करने वाला, पराक्रमी।

**जांदू**—वि० (शि०) किसी काम से भी न हिचकिचाने वाला। मूर्ख।

**जांद्रे**—पु० (चं०) एक जाति विशेष।

**ज़ांबला/ले**—पु० (कु०) उबले हुए कुलथ या राजमाश जिन्हें नमक के साथ खाया जाता है।

**ज़ांबळा/ले**—पु० (शि०) भूने हुए राजमाश आदि।

**ज़ांबळा**—पु० (कु०) एक जंगली फल।

**जांबले**—पु० (मं०) चने की सब्जी।

**जांबका**—पु० (सो०) हलकी नींद।

**जांवां**—पु० (सि०) नस्ल।

**जांवां**—पु० (सो०) पैर रगड़ने का कुम्हार द्वारा बनाय खुरदरा उपकरण।

**ज़ा:ज़**—पु० (कु०) हवाई जहाज़।

**ज़ा:त**—अ० (कु०) बिल्कुल।

**ज़ा:त-नुआं**—वि० (कु०) बिल्कुल नया।

**ज़ा:ल**—वि० (सि०, सो०) जाहिल, निर्दय।

जाःली—वि० (ऊ०, कां०, ह०) झूठा।
जा—अ० (चं०) या।
जा—पु० (चं०) नवजात शिशु।
जाअज—अ० (शि०) अचानक।
ज़ाइ—स्त्री० (शि०) बेटी।
ज़ाइका—पु० (कु०) स्वाद।
ज़ाइग—स्त्री० (कु०) जगह।
जाइज़—वि० सही, उचित।
जाइणा—अ० क्रि० (कु०) जाया जाना।
जाइणो—अ० क्रि० (सि०) चले जाना।
जाइदाद—स्त्री० संपत्ति।
जाइदाद—स्त्री० (कु०) संपत्ति, जायदाद।
जाइफौळ—पु० (कु०) जायफल।
जाइरू—पु० (कु०) पानी का चश्मा।
जाइल—वि० (कां०, बि०, मं०) कठोर।
जाइल—वि० (कु०) घायल।
ज़ाइला—वि० (कु०) कठोर, सख्त।
जाई—स्त्री० (कां०, मं०) बेटी, पुत्री।
जाईग—स्त्री० (बि०) जगह।
जाई—स्त्री० (कु०) पति की बड़ी बहन।
जाउका—वि० (कु०) कुछ ऊंचा सुनने वाला।
जाऊंगड़—वि० (ऊ०, कां०, ह०) महामूर्ख।
जाऊंगड़—स्त्री० (मं०) जाने की इच्छा।
जाऊ—पु० (कु०) वाष्प, भाप।
जाऊका—पु० (कां०, बि०) ख़याल।
ज़ाऊका—पु० (कु०) ख़याल।
जाऊणा—स० क्रि० (कु०) गर्मी देना, हाथ गर्म करके फिर उस गर्म हाथ को बच्चे पर रख कर उसकी ठंड को दूर करना।
ज़ाएणा—अ० क्रि० (शि०) पैदा होना।
जाएदात—पु० (बि०) संपत्ति।
ज़ाएदाद—पु० (शि०) संपत्ति।
ज़ाएरू—पु० (शि०, सि०) औलाद।
जाओका—पु० (शि०) बार-बार एक ही ख़याल आने का भाव।
जाओ—पु० (बि०) गाय या भैंस का बच्चा।
ज़ाओ—पु० (शि०) बालक।
ज़ाओ—पु० (शि०) बच्चे के पैदा होने का भाव।
ज़ाओण—पु० (सि०) जामन।
ज़ाक—पु० (कु०) हाथों को फैलाकर बैठने की क्रिया।
ज़ाक—स्त्री० (शि०, सो०) चिंता।
जाकण—स्त्री० (मं०) जबड़ा।
ज़ाकण—स्त्री० (कु०) दाढ़।
जाकणा—स० क्रि० (चं०) मुंह खोलना।
ज़ाकणा—स० क्रि० (शि०, सि०) धोना, दबाना, पांव से ऊनी कंबल आदि को धोना।
ज़ाकरना—स० क्रि० (कु०) पत्थर से रगड़ना।
जाकरी—स्त्री० (सो०) दूध गर्म करने या जमाने का मिट्टी का बर्तन।
जाकरू—पु० Spiraea canesuns
जाकाछेठी—स्त्री० (मं०) किसी वस्तु को लांघते हुए निकल जाने का भाव।
जाको—वि० (शि०) कच्ची आयु का।
ज़ाख—स्त्री० (शि०) तृप्ति।
जाखण—स्त्री० (कु०) ठोड़ी।
जाग—स्त्री० नींद खुलने की अवस्था।
जागड़ी—वि० (मं०) बेचैन, चंचल स्वभाव वाला।
जागणा—अ० क्रि० जागना।
जागणा—स० क्रि० (शि०, सो०) रखवाली करना, देख-भाल करना।
जागत—पु० लड़का।
जागरा—पु० रात्रि जागरण का उत्सव।
ज़ागरा—पु० (शि०) देवता का वार्षिक यज्ञ, जिसमें भजन कीर्तन करते हुए रात बिताई जाती है।
ज़ागरा—पु० (कु०) जागरण।
जागरू—पु० (मं०) मुंडन।
जागरू—पु० (चं०) ऐसा व्यक्ति जिसके घर में जागरण हो।
जागरू—पु० (शि०, सि०) देवता के यज्ञ यात्रा में आए हुए आदमी।
जागळा—पु० (कु०) एक कीड़ा जो ज़मीन में आलुओं को खाता है।
जागळी—स्त्री० (सो०) अरबी, ज़मींकंद आदि का तीतापन।
जागलो—पु० (शि०) जंगल।
जागा—वि० (बि०) अधपागल।
जागा—स्त्री० (कु०, शि०) स्थान, जगह।
जागिया—वि० (शि०) जागने वाला।
जागुला—पु० (सि०) सब्ज़ी विशेष।
जाच—स्त्री० (कु०) मेला, यात्रा।
जाच—स्त्री० पहचान, परख।
ज़ाच—स्त्री० (कु०, शि०, सि०) समझ, सावधानी, परख।
जाचकार—वि० (कां०, चं०, बि०) अनुभवी, जांच रखने वाला।
जाचणा—स० क्रि० (कां०, चं०, बि०) समझना, परखना।
जाचणा—स० क्रि० (कु०) जांचना।
जाचणो—स० क्रि० (चं०, सि०) जांचना।
जाचू—पु० (कु०) मेले में आए लोग, मेले के लोग।
जाचू-टौल्हे—पु० (कु०) मेले के कपड़े, उत्सवों के दिन पहने जाने वाले कपड़े।
ज़ाच्छणो—स० क्रि० (कु०) जांचना।
जाछणी—स्त्री० (कु०) यक्षिणी।
जाज—स्त्री० (सि०) दाद, एक चर्म रोग।
जाजड़—पु० (कु०) बहुत घनी झाड़ियां।
जाजड़ा—पु० (शि०, सि०, सो०) विवाह, शादी की एक किस्म जिसमें लड़की के संबंधी लड़की को साथ लेकर दूल्हा के घर जाते हैं।
जाजड़—पु० (शि०) 'जाजड़ा' विवाह के बाराती।
जाजत—स्त्री० आदेश, हुक्म, इजाज़त।
जाजरा—पु० (कां०) Desmodium tilae folum.
जाजरी—स्त्री० (मं०) भूकंप।

**जाजरू**—पु० (मं०) शौचालय।
**जाजरू**—पु० (शि०, सि०) मकान का छोटा भाग, छोटा कमरा, स्नान घर।
**जाजांदी**—वि० (सो०) निकम्मी (स्त्री)।
**ज़ाजो**—स्त्री० (शि०) घर की चक्की जिसे हाथों से चलाया जाता है।
**जाझ**—वि० (कु०) बिल्कुल हरा।
**जाझ**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) हवाई जहाज़।
**जाट**—पु० (शि०) दानव।
**जाटीगाव**—स्त्री० (शि०) दोगली नस्ल की गाय।
**ज़ाटू**—वि० (कु०) चावल की एक किस्म।
**जाटेनसल**—वि० (शि०) अच्छे नस्ल की।
**जाड**—वि० (शि०) उजाड़।
**जाड़**—पु० झाड़ी।
**जाड़**—स्त्री० (सो०) दाढ़।
**जाड़**—पु० (मं०) मछली पकड़ने का जाल।
**जाड़**—पु० (कां०, बि०) जड़ों का समूह।
**जाड़**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मिट्टी खोदने के लिए बना लकड़ी का मुड़ा हुआ यंत्र।
**जाड़न**—पु० (सो०) झाड़ा गया कूड़ा, कालिख आदि। झाड़न।
**जाड़ना**—स० क्रि० (सो०) झाड़ना, डंडे से कूट कर मक्की आदि के दानों को 'गुल्ली' से अलग करना।
**जाड़ना**—स० क्रि० (शि०) लीपना।
**जाडपन**—वि० (शि०) मूर्खता।
**जाड़बूट**—पु० (कां०, ह०) खेती में उगने वाला घास-पात, झाड़झंखाड़।
**जाड़ा**—पु० (चं०, बि०, सि०) सर्दी।
**जाड़ा**—वि० (कु०) गूंगा।
**ज़ाड़ा**—पु० (कु०) कुदाल की हत्थी।
**जाडाबाडी**—स्त्री० (शि०) कार्यगति की शीघ्रता।
**जाड़ी**—स्त्री० (सो०) झाड़ी।
**जाड़ी**—स्त्री० (कां०, बि०) पौधों की निराई करने का लड़की का यंत्र जिसके आगे फाल लगा होता है।
**जाड़ुआ**—पु० (ह०) मुड़ा, हत्था।
**जाडू**—पु० (कां०, मं०) कुदाली का मुड़ा डंडा।
**ज़ाड़ै**—स्त्री० (कु०) लकड़ी की कलछी।
**जाड़ो**—पु० (सि०) ठंड, सर्दी।
**जाड्डा**—पु० (कां०, सो०) ठंड।
**जाढ़ा**—वि० (कु०) स्पष्ट न बोल सकने वाला, सीधा-सादा, जड़वत्, मूर्ख।
**जाण**—स्त्री० (बि०) शारीरिक शक्ति।
**जाण**—पु० (शि०) रोग से उत्पन्न खिन्नता। जीवन।
**जाण**—स्त्री० (कां०) पहचान का भाव।
**जाणकार**—वि० समझदार, चतुर।
**जाणकारी**—स्त्री० ज्ञान, परिचय, समझदारी, चतुराई।
**जाणकीर**—वि० (शि०, बि०) जानकार, माहिर।
**जाणणा**—स० क्रि० जानना।
**जाणणो**—स० क्रि० (शि०) दे० जाणणा।
**जाणता**—पु० (कु०, चं०) जादू जानने वाला, ज्योतिषी।
**जाणदा**—वि० प्रतिष्ठित (व्यक्ति)।
**जाणना**—स० क्रि० (कां०, कु०, बि०) जानना।
**जाणना**—स० क्रि० (सि०) पहचानना।
**जाणनो**—स० क्रि० (शि०) जानना।
**जाणपछ्याण**—स्त्री० जान पहचान।
**जाणपछाण**—स्त्री० जान पहचान।
**जाणा**—अ० क्रि० जाना, चले जाना।
**जाणामाना**—वि० (शि०, सो०) प्रतिष्ठित।
**ज़ाणिना**—स० क्रि० (कु०) पहचाना जाना, ज्ञान किया जाना।
**ज़ाणियां**—वि० (सि०) जानने वाला, समझदार।
**ज़ाणिया/ये**—अ० (कु०) जान-बूझ कर।
**जाणी**—अ० (शि०) जैसे, मानो।
**जाणीए**—अ० (सो०) जैसा कि, जानबूझ कर।
**ज़ाणीऐ**—अ० (कु०) जानबूझ कर।
**जाणीजाण**—वि० (कां०, बि०, ह०) अंतर्यामी।
**जाणीजुहऐ**—अ० (शि०) जानबूझ कर।
**जाणीबूझिया**—अ० जानबूझकर।
**जाणु**—पु० (कां०, चं०) घुटना।
**जाणुना**—स० क्रि० (सो०, सि०) महसूस करना, जानना।
**जाणे**—अ० (कु०) 'पता नहीं' भाव व्यक्त करने वाला अव्यय शब्द।
**जात**—स्त्री० (चं०) दांती।
**जात**—पु० (शि०, सि०) मुंह।
**ज़ात**—स्त्री० (कु०) स्वभाव, फितरत, प्रकृति।
**ज़ात**—स्त्री० (शि०, सि०) देवयात्रा या मेला।
**जातक**—पु० (कां०, चं०, बि०) लड़का।
**जातक**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) एक ही जाति का।
**ज़ातका**—अ० (कु०) हूबहू।
**जातमलाण**—स्त्री० दूसरी जाति से विवाह या अन्य संबंध।
**जातर**—स्त्री० देव यात्रा।
**जातरा**—स्त्री० यात्रा।
**जातरा**—स्त्री० (कु०, मं०) मेला।
**जातरू**—पु० यात्री, तीर्थ-यात्री।
**जातला**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) जाति से संबंधित।
**जाता**—स्त्री० (कां०, बि०) देवयात्रा।
**जातीण**—वि० (शि०) बड़े मुंह वाली औरत।
**जातून**—पु० (शि०) जैतून।
**जात्र/त्रा**—स्त्री० यात्रा।
**जात्री**—पु० यात्री, मेले के लोग।
**जात्रू**—पु० देव स्थान को जाने वाले यात्री।
**जाथरेरना**—स० क्रि० (चं०) संभाल कर रखना।
**जाद**—स्त्री० (कां०, सो०) याद।
**जाद**—वि० (सो०) आज़ाद।
**जाद**—वि० (कां०, बि०) जो अंकुश में न हो।
**ज़ाद**—अ० (कु०, शि०, सि०) आज़ाद।
**जादड़ा**—वि० (शि०) कुछ अधिक।
**जादती**—स्त्री० ज़्यादती।

**जादर**—स्त्री० (कां०, बि०) चर्म रोग।
**ज़ादा**—वि० अधिक, ज्यादा।
**जादातर**—अ० अधिकतर।
**जादी**—स्त्री० आज़ादी।
**जादू**—पु० जादू-टोना।
**ज़ादो**—अ० (शि०) ज़्यादा।
**जान**—स्त्री० प्राण, शक्ति।
**ज़ान**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) चट्टान।
**जानकार**—वि० ज्ञानी, समझदार, सिद्धांती।
**जाननहार**—वि० (शि०) ज्ञाता, जानने वाला।
**ज़ानितौ**—अ० (शि०) 'ऐसा लगता है' भाव व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**जानी**—पु० (चं०) बारात, बाराती।
**जानी**—अ० प्रिय-प्रियतम के लिए प्रयुक्त शब्द।
**जानु**—पु० घुटना।
**जानुअर**—पु० पशु।
**ज़ानू**—पु० (शि०, सि०) घुटना।
**जानूमानू**—पु० (कु०) संतान, बच्चे।
**जानो**—पु० (मं०) दे० जानु।
**जान्हू**—पु० (बि०) दे० जानु।
**ज़ान्हू**—पु० (कु०) दे० जानु।
**जाप**—पु० जप।
**ज़ापणा**—स० क्रि० (कु०) मंत्र से चुप, शांत या स्थिर कराना।
**ज़ापिणा**—अ० क्रि० (कु०) तंत्र-मंत्र द्वारा चुप होना या चुप कराया जाना।
**जापी**—वि० (शि०) जप करने वाला।
**जापुणा**—अ० क्रि० (सो०) बालों में मैल जमना या बालों का उलझ जाना।
**ज़ाफल**—स्त्री० (शि०) प्रीति भोज।
**ज़ाफल**—पु० (शि०) जायफल।
**ज़ाफी मारना**—स० क्रि० (शि०) गले मिलना।
**जाबर**—वि० (शि०) निर्दय।
**जाबरें**—पु० (शि०) एक अन्न विशेष जो 'ओगले' की किस्म का होता है।
**जाबल**—स्त्री० 'झब्बल', गड्ढा खोदने के लिए प्रयुक्त लोहे का यंत्र।
**जाबळ**—पु० (सि०, सो०) कीचड़ वाली भूमि, दलदली भूमि।
**जाबळ**—वि० (शि०, सि०) मूर्ख।
**जाबळो**—वि० (सि०) ऐसा स्थान जहां पानी अधिक हो।
**जाबू**—पु० (शि०) जंगली जानवर के पांव।
**जामळ**—स्त्री० (कु०) दे० जाबल।
**जाम**—पु० (चं०) संतान।
**जाम**—पु० (कां०, बि०, मं०) उगने की क्रिया।
**जाम**—पु० (शि०) गर्मी, ताप।
**जाम-जीर**—स्त्री० (सो०) जोर की वर्षा, भीड़ कम होने का भाव।
**जामण**—पु० जामुन।
**जामण**—पु० (सो०) पालकी या डोली के ऊपर का कपड़ा।
**जामणा**—स० क्रि० (सि०) पुत्र जन्म पर नवजात शिशु के मामा द्वारा उपहार देना।
**जामणा**—अ० क्रि० (सि०) उगना।
**जामणिओ**—पु० (सि०) छोटे जामुन।
**जामणी**—स्त्री० (चं०) जन्मदिन, वर्ष पूरा होने पर जन्मदिन मनाने की प्रथा।
**जामणी**—वि० जामुनी रंग का।
**जामणी**—स्त्री० (कां०) जमानत।
**जामणु**—वि० जन्मजात, पैदायशी।
**जामणु**—पु० जामुन।
**जामणू**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) जन्म का महीना।
**जामन**—पु० (ऊ०, कां०) किसी तरल खाद्य पदार्थ को बनाते समय उसमें छौंक कर डाले गए चने या कद्दू इत्यादि।
**जामन**—पु० (चं०) जमानत करने वाला।
**जामनी**—वि० जामुनी रंग का।
**जामह**—पु० (कु०) पकाए मांस की इतनी मात्रा जो दोनों हाथों के बीच आ जाए।
**जामा**—पु० (बि०, चं०) विवाह के समय दूल्हे को पहनाया जाने वाला सुनहरी चोगा।
**ज़ामा**—वि० (कु०) जमा।
**जामिन**—पु० (शि०) जमानत करने वाला।
**ज़ामीर**—पु० (शि०) गलगल।
**जामु**—पु० (शि०, सि०, चं०) यात्री।
**जामु**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) जन्म से संबंधित दिन अथवा मास।
**जामुण**—पु० जामुन।
**जामुन**—पु० (सि०) दे० जामुण।
**जामुनखुंब**—पु० (ऊ०) Cryptolepis buchanain. एक जड़ी जिसकी जड़ से कपूर की गंध निकलती है।
**जामू**—पु० (चं०) Prunus cornuta.
**ज़ामू**—पु० (कु०) एक जंगली फल, जंगली जामुन।
**जाम्हा**—पु० (कु०) बारीक लकड़ियों का ढेर।
**जायत**—स्त्री० (शि०) औलाद।
**जाया**—पु० (सो०) मूल निवासी।
**जाया**—पु० बच्चा।
**जायेरा**—वि० (सि०) बहरा।
**जार**—पु० (मं०) फोड़ा।
**ज़ार-ज़ीर**—वि० (कु०) टुकड़े-टुकड़े।
**ज़ारन**—पु० (शि०) धातु इत्यादि को भस्म करने की क्रिया।
**जारना**—पु० (सो०) निचोड़ने का उपकरण।
**जाल**—पु० (सि०) शरारत। पागलपन।
**जाळ**—पु० जाली, मछली पकड़ने का जाल।
**ज़ाळ**—पु० (कु०) जाल, मकड़ी का जाला।
**जालकाल**—अ० (ऊ०, कां०) कभी-कभी।
**जालणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, चं०) जलाना।
**ज़ालणा**—स० क्रि० (शि०) गाय, भैंस, बैल का सींग मारना।
**जालणो**—स० क्रि० (शि०) जलाना, अंत्येष्टि करना।
**जालन**—पु० (शि०) ईंधन।
**जालना**—स० क्रि० जलाना।

**जाळना**— स० क्रि० (कु०) जलाना।
**ज़ालपा**— स्त्री० (चं०) एक देवी जो जल में रहती है।
**जालम**— वि० दुष्ट।
**ज़ालहकरा**— वि० (शि०) आधा पागल।
**जाला**— वि० (शि०, सि०) भोला, जिसे कुछ भी मालूम न हो।
**ज़ाळा**— पु० (ऊ०, कां०, ह०) खड्डी में हत्थे को लटकाए रखने वाली रस्सियों का जाल।
**ज़ाला**— पु० (कु०) कालिख, तवे की कालिख।
**ज़ाळा**— पु० (शि०) उजाला।
**ज़ाळा**— पु० (शि०) जाला।
**जालि**— स्त्री० (सो०) तवे के नीचे की कालिख।
**जाळिणा**— स० क्रि० (कु०) जलाया जाना।
**जाळिणा-फूकिणा**— स० क्रि० (कु०) जलाया जाना। अ० क्रि० जल जाना, अत्यंत कष्ट उठाना।
**जाली**— स्त्री० (कां०) जालीदार टोपी जिसे शहद निकालते समय पहनते हैं।
**जाळी**— वि० (शि०) झूठा (आदमी)।
**ज़ाली**— स्त्री० (शि०, सि०) दे० जालि।
**ज़ाळी**— स्त्री० (शि०) जाली।
**जालु**— अ० (कां०) जब।
**ज़ालो**— वि० (शि०) पागल।
**जालोम पत्रे**— स्त्री० (शि०) जन्मकुंडली।
**जाल्लीं**— स्त्री० (चं०) दूध की मलाई। तार की बनी जाली।
**जाल्ह**— वि० (कु०) अपंग।
**जाल्हा**— वि० (कां०, ह०) गूंगा।
**जाल्हा**— वि० (कु०) कमज़ोर, निकम्मा, नालायक।
**जाल्हिणा**— अ० क्रि० (कु०) नालायक होना, निकम्मा होना।
**जाल्ही**— वि० (कां०, चं०, बि०) अनधिकृत।
**जाल्ही**— स्त्री० (कु०) गलती, जाहिलपन, जाहिली।
**जाल्हू**— अ० (कां०, ह०) दे० जालु।
**जावंश**— वि० (चं०) वृद्ध।
**जाधत्तरी**— स्त्री० (शि०) जावित्री।
**ज़ावरना**— स० क्रि० (कु०) चबाना, मीठी चीज़ को चबाना।
**जावळा**— वि० (मं०) कोमल, हरियाली युक्त।
**ज़ाहरी**— वि० (शि०) नज़र आने वाली।
**ज़ाहिल**— वि० (शि०) गंवार।
**जाहंग**— स्त्री० (सि०) टांग।
**ज़ाइटा**— वि० (शि०) वर्ण संकर।
**जाहड़**— स्त्री० (चं०) दाढ़।
**ज़ाहणा**— पु० शरीर के अंग, हाथ-पैर।
**जाहणी**— वि० (कां०) झूठा।
**ज़ाहणीए**— अ० (कु०) जान बूझ कर।
**जाहणी-मूहणी**— अ० जान-बूझ कर।
**जाहनु**— पु० घुटना।
**जाहमणी**— स्त्री० (शि०) रीछ के बाल।
**जाहमत**— स्त्री० हजामत।
**जाहर**— पु० प्रकट, बिल्कुल, स्पष्ट।
**जाहरपीर**— पु० जाहरपीर, गुग्गा।
**ज़ाहरा**— वि० (शि०) बहरा।
**जाहल**— वि० जाहिल, निर्दय।
**जाहला**— वि० (सि०) शरारती।
**जाहली**— वि० नकली।
**जिंअर**— पु० (शि०, सि०) मछुआ।
**जिंआ**— अ० जैसे कि।
**जिंऊ**— अ० (ऊ०, कां०, चं०) जैसे कि, यूं।
**जिंओर**— पु० (शि०) मछुआ।
**जिंगड़**— वि० (बि०, ह०) बेवकूफ।
**जिंघणा**— स० क्रि० (शि०) पशु का सींग मारना।
**जिंचै**— अ० (कां०) जिस तरफ से।
**जिंजराड़ा**— पु० (ऊ०, चं०, ह०) स्त्री के दूसरे विवाह की रस्म विशेष।
**जिंझण**— पु० (कां०, चं०) लाल रंग के चावल।
**ज़िंझण**— पु० (कु०) चावल और कुलथ की खिचड़ी।
**जिंझरा**— पु० (कु०) लंबी-लंबी टांगों वाला जीव।
**जिंठा**— वि० (शि०) सुंदर।
**जिंड**— वि० (कां०, चं०, बि०) मूर्ख।
**जिंडलपिंडल**— अ० (ऊ०, कां०, ह०) शोर शराबा, जमघट।
**जिंडा**— पु० (कां०, सि०) मक्की काटने के बाद बचे भूमि से लगे तने।
**जिंढा**— पु० (कु०) जड़, मूल-जड़।
**जिंद**— स्त्री० (ऊ०, कां०, चं०) जीवन, ज़िंदगी।
**जिंद**— वि० (शि०) प्यारा, प्यारी, (संबोधन)।
**जिंदड़**— पु० (चं०) बाराती।
**जिंदड़ी**— स्त्री० ज़िंदगी।
**जिंदा**— पु० जीवित।
**जिंदा**— सर्व० (सि०, सो०) जिसमें।
**जिंपरी**— स्त्री० (शि०, सि०) यमपुरी।
**जिंवदा**— वि० (सो०) शक्तिशाली, जीवित।
**जिंस**— स्त्री० अन्न।
**ज़िंह**— स्त्री० (कु०) खिन्नता।
**ज़िंहिणा**— अ० क्रि० (कु०) तंग होना, खिन्न होना।
**जि:डणो**— स० क्रि० (शि०) खींचना।
**जिआं**— अ० (कु०, कां०, चं०) जैसे।
**जिउ**— पु० (शि०, सो०) दिल।
**जिउटू**— पु० (शि०) दे० जिउ।
**ज़िउड़ा/डु**— पु० (कु०) तबीयत।
**जिउणा/णो**— अ० क्रि० (शि०, सि०) जीना।
**जिऊंदा**— पु० (कां०, ह०, बि०) जीवित रहने की कामना, जीवित।
**जिऊ**— पु० चित्त।
**जिऊक**— पु० (चं०) जीने के लिए आजीविका।
**जिओला**— पु० (ह०) सेवक।
**जिक**— वि० (बि०) तंग।
**जिकट**— वि० (कां०) भारी, जल्दी न पचने वाला (भोजन)।
**जिकण**— पु० दबाव।
**जिकणा**— स० क्रि० (शि०) कपड़ों को पांव से धोना।

**जिकणा**—स० क्रि० दबाना।
**ज़िकणा**—स० क्रि० (कु०) दबाना।
**ज़िकर**—पु० चर्चा, वर्णन।
**जिकार**—वि० (कां०, चं०, ह०) दबाने वाला।
**ज़िकिणा**—स० क्रि० (कु०) दबाया जाना।
**जिक्कड़**—पु० (ह०) घना वन।
**जिक्कड़**—वि० (कां०, ह०) सख्त ज़मीन, कठोर भूमि।
**जिक्कड़**—वि० (बि०) दे० जिकट।
**जिक्कण**—वि० (चं०) हंसोड़।
**जिखो**—अ० (बि०) जिस तरफ।
**जिगमिग**—स्त्री० (कां०, ह०) चमक, जगमगाहट।
**जिगर**—पु० ज़िगर।
**जिगरा**—पु० दिल, साहस, हिम्मत।
**जिगरा**—पु० (सि०) आपसी तनाव।
**ज़िगरा**—पु० (कु०) बदहज़मी।
**जिगरी**—वि० (ऊ०, चं०, बि०) घनिष्ठ, भीतरी।
**जिगळ्णा**—स० क्रि० (बि०) कुचलना।
**ज़िगला**—पु० (कु०) छोटा सा कीड़ा।
**जिघड़**—वि० (कु०) सुस्त।
**जिच**—वि० (कां०, चं०, शि०) तंग या दुखी।
**जिचकरा**—वि० (कां०, बि०) असभ्य (बालक)।
**जिचग**—वि० (बि०, ह०) उकताया हुआ।
**जिचैं**—अ० (कां०) जिस तरफ से।
**जिजणी**—स्त्री० (शि०) तंग होने का भाव।
**जिजरा**—पु० (कु०) हवा के साथ बर्फ बारी।
**जिजी**—स्त्री० (शि०) रोटी।
**जिजी**—स्त्री० (कां०, शि०, सि०) बहिन।
**ज़िजो**—सर्व० (ऊ०, कां०) उसको।
**जिठिड़कू**—पु० (शि०) जौ के आटे के 'सिड्डू'।
**जिठेऐं**—स्त्री० (शि०) डाइन, जादू करने वाली स्त्री।
**जिठोली**—स्त्री० (शि०) जौ के आटे की रोटी। '
**जिड़**—स्त्री० (बि०) लेस।
**जिड़कणा**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) झिड़कना।
**जिड़ना**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) खींचना।
**जिड्डा**—वि० (कां०, चं०) मज़बूत, मूर्ख।
**जिढ़/ढ़ी**—स्त्री० (कु०) घनी झाड़ियां।
**जिढड़ा/ड़े**—पु० (मं०) मिट्टी के बड़े-बड़े ढेले।
**ज़िण**—पु० (कु०) जन, आदमी।
**जिणका**—अ० (शि०) जिस ओर।
**जिणणा**—स० क्रि० (शि०) तानना।
**जिणना**—अ० क्रि० (चं०) निर्भर होना।
**जिणस**—स्त्री० अनाज, पैदावार।
**जिणे/णो**—अ० (शि०) जैसा, जैसे।
**जिणो**—अ० क्रि० (शि०) जीना।
**जिणोन्नु**—वि० (कां०, चं०) जीने योग्य।
**जित**—अ० (कां०) जहां।
**जित**—स्त्री० विजय।
**जितड़ा**—वि० जितना।
**जितणा**—स० क्रि० जीतना, विजय पाना।
**जितणा**—वि० जितना।
**जितणो**—स० क्रि० (शि०) जीतना, विजय पाना।
**जितवाणा**—स० क्रि० (शि०) जिताना।
**जितूणा**—वि० (चं०) जितना।
**जित्त**—स्त्री० (ऊ०, कां०) जीत।
**जित्ते**—अ० (चं०) जहां।
**जित्थू**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) जहां।
**जिथूड़ा**—वि० (चं०) जितना।
**जिदकरा**—वि० ज़िद्दी।
**जिदकरू**—वि० (कु०) ज़िद्द करने वाला।
**जिदखोर**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) ज़िद करने वाला।
**जिदणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०) हठ करना।
**जिदुणा**—अ० क्रि० (सो०) हठ करना।
**जिधेरा**—सर्व० (कां०, चं०) जिसका।
**जिधेहा**—वि० (चं०) जैसा।
**जिनी**—सर्व० (चं०) जिसने।
**ज़िनो**—वि० (सि०) सख्त।
**जिन्ना**—वि० (चं०) जो दांत से आसानी से न काटा जाए।
**जिन्नी**—सर्व० (ऊ०, कां०) जिसने।
**जिन्ने**—सर्व०, (कां०, शि०) जिसने।
**जिन्हों**—सर्व० (सि०) 'जू' (जो) के बहुवचन 'जिन्हें' का कारकीय रूप 'जिन्हों-खे' (जिनको), 'जिन्होंरा' (जिनका), 'जिन्हरों-दा' (जिन पर) आदि।
**जिबका**—वि० (शि०, सि०) झेंपा हुआ, डरा हुआ।
**जिब-जिबड़ा**—अ० (कु०) प्रातः काल का समय जब अभी न अधिक अंधेरा न अधिक उजाला होता है।
**जिबटे**—स्त्री० (शि०) जिह्वा।
**जिबड़ा**—वि० (शि०) बड़बोला।
**जिबरोले**—पु० (शि०) 'जाबरें' के आटे का पकवान।
**जिबला**—वि० (सो०) लेसदार।
**जिभ**—स्त्री० (कु०) जीभ।
**जिभड़ा**—पु० (चं०) लंबी जीभ।
**जिभला**—वि० (कु०) झगड़ालू, बातूनी, (बुरे अर्थ में) बकवासी।
**जिभाकड़**—वि० (शि०) मुंहफट, बदज़बान।
**जिभठिरा**—वि० (मं०) मुरझाया हुआ।
**जिमणा**—स० क्रि० (सो०, सि०) भोजन ग्रहण करना।
**ज़िमदार**—पु० किसान, ज़मींदार।
**जिमाइत**—स्त्री० (शि०) शादी या भगवान् की कथा के उपरांत दिया जाने वाला भोजन।
**जिमाईतू**—पु० (शि०) भोज में भाग लेने वाले आदमी।
**जिमाणा**—स० क्रि० (शि०) बीज उगाना।
**जिमाणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) पंडित को भोज करवाना।
**जिमी**—स्त्री० ज़मीन।
**जिमीदार**—पु० ज़मींनदार।
**जिमीर**—पु० (शि०) आत्मा।
**जिम्मां**—पु० ज़िम्मेवारी, उत्तरदायित्व।

**ज़िम्मां**—पु० (ऊ०, कु०) दे० जिम्मां।
**ज़ियां**—अ० (ऊ०, कां०, बि०) जिस प्रकार।
**जियांडु**—पु० (शि०, सि०) बैठक के कमरे या बरामदे में सहारा देने वाली कड़ी।
**जिया**—पु० (शि०) हृदय।
**ज़ियाणा**—स० क्रि० (कु०) जीवित किया जाना, पालन-पोषण करना।
**जियालणा**—स० क्रि० (शि०) जिंदा करना।
**ज़ियू**—पु० (कु०) तबीयत।
**जिरगल**—वि० (सि०) फटा-पुराना (कपड़ा)।
**जिरड़ना**—स० क्रि० (कां०, बि०) ज़िद करना।
**जिरड़ा**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) शक्तिशाली, सब कुछ सह लेने वाला, सहनशील।
**ज़िरड़ा**—पु० (मं०) चिक, बांस की तीलियों का बना हुआ झीना पर्दा जिसे खिड़की-दरवाज़ों पर लटकाते हैं।
**जिरढ़ा**—वि० (कां०, ह०) मज़बूत, शक्तिशाली।
**ज़िरह**—स्त्री० (कु०) प्रतिपरोक्षा, जिरह।
**ज़िरा**—पु० जीरा।
**ज़िराड़ा**—पु० (शि०) ऊंचे 'बान' आदि के वृक्ष से चारे की पत्तियां काटने वाला।
**जिळका**—पु० (सि०) नींद से तुरंत आई जाग।
**जिलकाणा**—स० क्रि० (शि०) धातु पर सोने-चांदी का पानी फेर कर उज्ज्वल बनाना।
**ज़िलड़ा/ड़े**—स्त्री० (कु०) बहुत शाखाओं वाली टहनी-टहनियां।
**ज़िलदर**—स्त्री० (शि०) जिल्द।
**जिलफलो**—वि० (शि०) चिकना, फिसलन युक्त।
**जिलहणा**—स० क्रि० (चं०) दबाना।
**ज़िला**—पु० (शि०) प्रकाश।
**जिलालत**—पु० (शि०) अपमान।
**जिलाशा**—पु० (शि०) पौ फटने पर होने वाला प्रकाश।
**ज़िल्हणा**—स० क्रि० (कु०) पत्थर आदि सख्त चीज़ से शरीर का कोई भाग (उंगली आदि) चीथना।
**जिल्हा**—पु० (कु०) गोमांस।
**जिवटा**—पु० (सि०) दिल।
**जिशा**—वि० (सि०, सो०) जैसा।
**जिशी जाश**—स्त्री० (शि०) प्रातःकाल।
**जिश्का**—अ० (शि०, सि०, सो०) जिस ओर।
**जिसरा**—सर्व० (ऊ०, कां०, बि०) जिसका।
**ज़िसी**—अ० (कु०) जिस तरफ।
**ज़िसे**—अ० (कु०) जिधर।
**जिस्म**—पु० शरीर।
**जिह/हा**—स्त्री० (कु०) बारीक जड़ें, बारीक धागा।
**जिहा**—अ० (चं०) जैसा।
**ज़िहा**—अ० (कु०) जैसा।
**ज़िहू**—अ० (कु०) और भी, फिर भी।
**ज़िहउणा**—पु० (कु०) खीरे, कद्दू आदि की बेलों को सहारा देने हेतु भूमि में गाड़ा शाखाओं सहित विशेष खंभा।
**जींगरिणो**—स० क्रि० (शि०) दुश्मन के विनाश के लिए भगवान् से पूजा करना।
**जींढा**—पु० उखड़े हुए पौधे तथा पेड़ का मिट्टी और जड़ों वाला भाग।
**जींदा**—वि० (कां०, बि०) जीवित, धनाढ्य।
**जी**—पु० मन, दिल, तबीयत।
**जी**—अ० (कां०, ह०, बि०) सास-ससुर को बुलाने का संबोधन।
**ज़ी**—अ० जी, आदर सूचक शब्द।
**जीआ**—पु० (मं०) ससुर।
**ज़ीइणा**—अ० क्रि० (कु०) जीया जाना।
**जीउणा**—पु० (कु०) जीवन।
**जीऊं**—स्त्री० (मं०) जूं, भैंस की काली जूं।
**जीऊ**—पु० दिल।
**जीऊ**—पु० (शि०, सो०) आत्मा, जंतु।
**ज़ीऊ**—पु० (कु०) तबीयत, मन।
**जीऊणा**—अ० क्रि० (कां०, शि०, सि०) जीना।
**ज़ीगरा**—पु० (कु०) सहनशीलता।
**जीचोर**—पु० (शि०) प्रेमी।
**जीजला**—वि० (शि०) जला भुना।
**जीजा/जु**—पु० (कां०, चं०, कु०) कीड़ा मकोड़ा, जंतु।
**जीजा**—पु० बहिन का पति।
**ज़ीज़ा**—पु० (कु०) जीजा।
**जीजू**—पु० सर्प, छोटे कीड़े।
**जीजू-कंडू**—पु० (ऊ०, बि०, ह०) कीड़ा-मकोड़ा, सांप, बिच्छू आदि।
**जीट**—पु० (सि०, सो०) कंटीली झाड़ियां।
**जीट्टे**—स्त्री० (शि०) हल के नीचे की छोटी लकड़ी जिसमें 'हळीश' लगाई जाती है।
**जीठ**—स्त्री० (शि०) नज़र।
**ज़ीड़**—वि० (कु०) सहनशील।
**जीड़णा**—स० क्रि० (शि०) घसीटना।
**ज़ीढ़ा**—वि० (कु०, सो०) सख्त, जो पकाया जाने योग्य न हो।
**ज़ीढ़ा**—वि० (सो०) सहनशील।
**जीणा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) जीवन।
**ज़ीणा**—पु० (कु०) जीवन, जीवन निर्वाह।
**ज़ीणाकज़ीणा**—पु० बुरा जीवन।
**जीणणो**—स० क्रि० (शि०) खींचना।
**जीतणा/णो**—स० क्रि० जीतना।
**ज़ीतणा**—स० क्रि० (कु०) जीतना।
**ज़ीतिणा**—स० क्रि० (कु०) जीता जाना।
**जीतोड़**—वि० (शि०) बेवफा।
**जीद**—स्त्री० (मं०) दुश्मनी।
**ज़ीद**—स्त्री० (कु०) हठ, ज़िद, शत्रुता।
**ज़ीदिणा**—अ० क्रि० (कु०) ज़िद करना।
**जीघ/घा**—स्त्री० (मं०) टांगें।
**जीन**—स्त्री० घोड़े की काठी के नीचे रखा जाने वाला मोटा विशेष कपड़ा।
**ज़ीन**—स्त्री० (सि०) काठी।
**जीन्हा**—वि० (कु०) सख्त।

**जीपोड़**—वि० (शि०) मूर्ख।
**जीफ**—पु० (कु०) घना घास।
**जीब**—स्त्री० जीभ, जिह्वा।
**ज़ीब**—पु० जीव-जंतु, पशु-पक्षी।
**जीबकणा**—अ० क्रि० (शि०) डर कर चौंकना।
**जीबलटा**—पु० (शि०) पशुओं की जीभ।
**जीबला**—पु० (बि०) भिंडी, तोरई।
**जीबला**—वि० (सि०, सो०) लेसदार।
**ज़ीबाण**—अ० (कु०, मं०) कृपया, विनम्रता पूर्वक अभिवादन करने संबंधी शब्द।
**जीमला**—पु० (कां०, बि०) बोलचाल का असभ्य ढंग।
**जीया**—स्त्री० (शि०, सो०) सास।
**जीयों**—पु० (शि०) बरामदा।
**ज़ीरना**—स० क्रि० (कु०) सहना।
**जीरपु**—वि० (कु०) हज़म होने योग्य।
**जीरा**—पु० जीरा।
**जीरी**—स्त्री० (कां०) चूरे से कुछ मोटी चाय।
**जीरी**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) धान की एक किस्म।
**ज़ीरो**—पु० (सि०) जीरा।
**जीर्णा**—पु० (कां०, कु०) पेट का रोग, बदहज़मी।
**जील**—पु० (चं०) बाल, बकरी का बाल।
**जील**—स्त्री० (कां०, बि०) लेस।
**ज़ील**—पु० (कु०) ताकत।
**जील्ही बाहुड़**—स्त्री० (मं०) ऊपर से नीचे को दूसरी मंज़िल का कमरा।
**जीवटे**—स्त्री० (शि०) संजीवनी बूटी।
**जीवणी**—स्त्री० (शि०) जीवनी।
**जीवणो**—अ० क्रि० (शि०) उन्नति करना।
**जीवदाल**—वि० (शि०) ज़्यादा बोलने वाला।
**जीवाणी**—स्त्री० (कु०, मं०) प्रार्थना, विनती, निवेदन।
**जीवी**—वि० (शि०) प्राणी।
**जीवो-जाएरू**—पु० (सि०) जीव-जंतु।
**ज़ीश**—अ० (शि०, सि०) आने वाला कल।
**जीहण**—स्त्री० (सि०) पेड़ पर चढ़ने के लिए प्रयुक्त लकड़ी।
**जीहां**—अ० (कां०, चं०) जैसे।
**ज़ीहां**—अ० (कु०) दे० जीहां।
**ज़ीहां-कीहां**—अ० (कु०) जैसा-कैसा।
**जीहार**—पु० (शि०) नाश्ता।
**जुं**—पु० (मं०) जुआ।
**जुंआं**—स्त्री० जुएं।
**जुंखड़ी/डु**—वि० (कु०) बहुत कमज़ोर (बूढ़ी/बूढ़ा)।
**जुंग**—पु० उद्रेक, सनक, आवेश।
**जुंगकिंच**—पु० (ऊ०) Dioscorea deltaidea.
**जुंगड़ा**—पु० (सि०, सो०, बि०) जुआ, हल चलाते समय बैलों के कंधे पर रखा जाने वाला लकड़ी का यंत्र।
**जुंगणा**—स० क्रि० (सो०) किसी वस्तु को भूमि या राख में दबाना।
**जुंगणा**—स० क्रि० (सो०) बच्चों को थपकी देकर सुलाना।
**जुंगला**—पु० जुआ।
**जुंगळा**—पु० (कां०) दे० जुंगड़ा।
**जुंछ**—वि० (कु०) मोटा (आदमी)।
**जुंछण**—स्त्री० (कु०) चुड़ैल, राक्षसी।
**जुंजकणा**—अ० क्रि० (शि०) झुंझलाना। स० क्रि० झकझोरना।
**जुंजका**—पु० (शि०) झगड़ा।
**जुंटी**—स्त्री० (शि०) 'परांदी'।
**जुंड**—पु० (कां०) खिलाड़ी दल का नेता।
**जुंड**—पु० (बि०) तने का मूल, ठूंठ।
**जुंडड़ा**—पु० (मं०) एक देवता जो भार हरने वाला माना जाता है, भारी वस्तु से जूझने से पूर्व इसकी पूजा की जाती है।
**जुंडणा**—स० क्रि० (कु०) जोतना।
**जुंडणो**—स० क्रि० (कु०) जोतना।
**जुंडा**—पु० (सो०) मटकी आदि के गले में बांधी गई रस्सी।
**जुंडा**—पु० (शि०) जलती हुई लकड़ी। बैंगन, मिर्च आदि की डंडी जो फल को पौधे के साथ जोड़े रखती है।
**जुंडिणा**—अ० क्रि० (कु०) साथ मिलना, किसी काम के कार्यान्वयन के लिए कुछ आदमियों का साथ मिलना।
**जुंडू**—पु० (कु०) 'कोठड़' का एक भाग जिसके द्वारा 'कोठड़' का ढक्कन 'कोठड़' से जुड़ा रहता है।
**जुंबीर**—स्त्री० (सि०) नींबू।
**जुंवाई**—पु० (शि०) दामाद।
**जुःआरी**—स्त्री० (सि०) प्रणाम।
**जुःक**—पु० (सि०) मन ही मन खुश होने का भाव।
**जुअण**—पु० (चं०, सि०) झरना।
**जुअण/णे**—स्त्री० (शि०) दे० जुएण।
**जुआं**—पु० (मं०) छप्पर का मुख्य मोटा शहतीर।
**जुआं**—पु० (कु०) मकान के कमरे की मुख्य शहतीर।
**जुआंई**—पु० दामाद।
**जुआंखी**—वि० (कु०) बहुत खाने वाला।
**जुआंगड़**—वि० (कु०) जिसे मज़ाक करना न आता हो, सीधी-सादी।
**जुआंगी**—वि० (कु०) उजड्ड, सीधा-सादा।
**जुआंलिखा**—पु० (शि०) एक प्रकार का जंगली साग।
**जुआई**—पु० (चं०, बि०) दामाद।
**जुआग**—पु० (कु०) बुरा स्वप्न, नींद में दबाव पड़ने का भाव।
**जुआगी**—वि० (कु०) जिसे खाने का ढंग न हो।
**जुआघिणा**—अ० क्रि० (कु०) नींद में बोलना।
**जुआड़**—पु० (बि०) पशुओं द्वारा किया गया फसल का नुकसान, उजाड़।
**जुआड़**—पु० (कु०) दे० जुआड़।
**जुआड़करू**—वि० (कु०) फसल नष्ट करने वाला (पशु)।
**जुआड़ू**—वि० उजाड़ने वाला।
**जुआणे**—स्त्री० अजवाइन।
**जुआन**—वि० जवान।
**जुआन**—पु० (कु०) दे० जुआन।
**जुआनड़ा**—अ० (बि०) सम आयु के या अपने से छोटे को

संबोधित करने का शब्द।
**जुआनड़ा**—वि० नवयुवक।
**जुआनड़ी**—स्त्री० (कु०) जवान लड़की।
**जुआनी**—स्त्री० यौवन, जवानी।
**जुआप**—पु० (कु०) शब्द, तर्क।
**जुआब**—पु० जवाब, उत्तर।
**जुआब**—पु० (कु०) जवाब, उत्तर।
**जुआर**—पु० (कां०, कु०) सामूहिक रूप से कार्य करने की क्रिया।
**जुआरी**—पु० जुआ खेलने वाला।
**जुआरी**—वि० (कु०, शि०) जुआ खेलने वाला।
**जुआरू**—पु० (कु०) 'जुआर' में काम पर आए लोग जिन्हें सिर्फ खाना दिया जाता है।
**जुआरू**—पु० (चं०) जुआ हारने या खेलने वाला।
**जुआला**—पु० उजाला, प्रकाश।
**जुआला**—स्त्री० (कु०) ज्वाला।
**जुआळी**—स्त्री० (कु०) जौ काटने के बाद उसी खेत में बीजी मक्की की फसल।
**जुएण**—स्त्री० (सि०, शि०) चांदनी।
**जुओण**—स्त्री० (सि०) दे० जुएण।
**जुक**—अ० (कु०) नीचे, धरती पर।
**जुक-जुक**—स्त्री० (कां०, ह०) बड़बड़ाने की क्रिया, गुनगुनाने की क्रिया।
**जुकणा**—स० क्रि० (मं०, सि०) पीटना, दबाना।
**जुकणा**—अ० क्रि० (सो०) उबलना।
**जुकणा**—पु० (शि०) पेट के कीड़े, कृमि।
**जुकणा**—स० क्रि० (कु०, सि०) मारना।
**जुकु-मुकु**—पु० (कु०) छोटी और बारीक लकड़ियां।
**जुक्क/क्कै**—स्त्री० (मं०) जोंक।
**जुक्खळ**—पु० (कां०) जोखिम, कठिन काम को बिना सोचे-समझे आरंभ कर देने का भाव।
**जुक्ती**—अ० संभालकर।
**जुखड़े**—स्त्री० (शि०) लकड़ी।
**जुग**—पु० युग।
**जुगजुगेंतर**—अ० (कु०) युगयुगांतर।
**जुगटू**—पु० (शि०) अरथी जिस पर सती हो जाने वाली स्त्री को ले जाया जाता है।
**जुगणु**—पु० जुगनू।
**जुगत**—वि० (कां०, चं०, शि०) स्वस्थ, ठीक।
**जुगत**—पु० उपाय।
**जुगत**—पु० (कां०) नियंत्रण।
**जुगति**—स्त्री० (सो०) युक्ति, संभाल कर रखने की क्रिया।
**जुगती**—वि० ठीक प्रकार से।
**जुगली**—स्त्री० संतुष्टि, युक्ति, यत्न।
**जुगलु**—वि० (कां०, चं०) संभाल कर रखने वाला।
**जुगनी**—स्त्री० (कां०, चं०, बि०) जुगनू। आभूषण विशेष।
**जुगनू**—पु० (शि०) एक आभूषण विशेष।
**जुगल**—पु० (बि०) बेढंगे कपड़े।
**जुगल**—वि० (शि०) युगल।
**जुगाड़**—पु० काम बनाने की युक्ति।
**जुगाड़**—पु० (शि०) प्रबंध।
**जुगुट**—पु० (शि०) युक्ति।
**जुगैर**—स्त्री० (शि०) जुगाली।
**जुग्गल**—पु० (मं०) चूहे का बिल।
**जुघळ**—स्त्री० (कु०) छेद, सुराख, जंगली जानवरों के रहने का बिल।
**जुघु**—पु० (बि०) सांप का छोटा बच्चा।
**जुजरा**—पु० (शि०) बाल, उलझे बाल।
**जुजरू**—पु० (कु०) 'सरयारा' अन्न का घास।
**जुजळी**—स्त्री० (कु०) शरीर के बाल।
**जुजूराणा**—पु० (कु०) बहुत ऊंचाई पर रहने वाला पक्षी जिसे पक्षियों का राजा माना जाता है।
**जुज्झ**—पु० (शि०) युद्ध।
**जुझणा**—अ० क्रि० जूझणा, संघर्ष करना, लड़ना, भिड़ जाना।
**जुझवाना**—स० क्रि० (शि०) लड़ाना।
**जुझाऊ**—पु० (शि०) युद्ध संबंधी।
**जुट**—पु० (कां०, ह०, बि०) तीन 'मौलियों' की एक गड्डी।
**जुट**—पु० (कां०) नारियल का आधा भाग, नारियल के बाल।
**जुट**—पु० मंडली, बराबर के चार आदमी, दल।
**जुटकु**—पु० (कां०) छोटे जूते।
**जुटणा**—स० क्रि० (कां०) ऊन काटने के लिए भेड़ों की चारों टांगों को इकट्ठा बांधना।
**जुटणा**—अ० क्रि० (शि०, बि०) जुट जाना।
**जुटा**—पु० (कां०, कु०) जूता।
**जुटावणा**—स० क्रि० (शि०) जोड़ना, इकट्ठा करना।
**जुटी**—स्त्री० (कां०) जूती।
**जुटू**—पु० (कु०) 'परांदी'।
**जुटेरणा**—स० क्रि० (कां०, चं०) जूते मारना।
**जुटैह**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) जूतों से की जाने वाली पिटाई।
**जुट्ट**—पु० (ऊ०, कां०) बंधन।
**जुट्टा**—पु० (कां०, चं०) जूता।
**जुट्टा**—पु० (कां०, बि०) बालों का जूड़ा।
**जुट्टा**—पु० (कु०) जूता।
**जुठ**—पु० (कु०) धर्म का उल्लंघन।
**जुठा**—पु० जूठन।
**जुठा/ठी**—वि० (कु०) शीघ्र आग पकड़ने वाली (बिरोजा-युक्त लकड़ी)।
**जुठाउणा**—स० क्रि० (शि०) रोटी खाने के पश्चात् हाथ धुलाना।
**जुठीशौली**—स्त्री० (कु०) चीड़ या देवदार की बिरोजायुक्त लकड़ी की मशाल जो तुरंत जलती है।
**जुठुई**—स्त्री० (शि०) भोजन करने के बाद हाथ धोने, कुल्ली करने का भाव।
**जुठुणा**—अ० क्रि० (सो०) कुल्ली करना।
**जुठेरा**—वि० (शि०) सबसे बड़ा बेटा।
**जुड़ैल**—वि० (शि०) जुड़ा हुआ।
**जुड़कणा**—अ० क्रि० (शि०) पशुओं का मस्ती में कूदना।

**जुड़का**—पु० (शि०) बैल के रंभाने की क्रिया।
**जुड़का**—पु० (शि०) कपड़ा।
**जुड़की**—स्त्री० (शि०) स्त्रियों द्वारा पहना जाने वाला कोट विशेष।
**जुड़खा**—पु० (मं०) फटे कपड़े।
**जुड़णा**—अ० क्रि० (चं०, बि०, सो०) जुड़ना, गठिया रोग के कारण शरीर के जोड़ों में दर्द होना।
**जुड़णो**—अ० क्रि० (शि०) चिपकना।
**जुड़दा**—अ० (मं०) मुताबिक, अनुसार।
**जुड़ना**—अ० क्रि० (कु०, चं०) प्राप्त होना।
**जुड़ना**—अ० क्रि० इकट्ठे होना, जुटना।
**जुड़ावनो**—स० क्रि० (शि०) मिलाना, जोड़ना।
**जुड़ी**—स्त्री० (मं०, शि०) भेड़-बकरियों के लिए इकट्ठी की गयी वृक्षों की पत्तियां।
**जुड़ी**—स्त्री० (मं०, शि०) गुच्छा, छोटा झाड़ू।
**जुड्डी**—स्त्री० (ह०) दो व्यक्तियों की लड़ाई।
**जुण**—सर्व० (कु०) जो।
**जुणकरू**—वि० (चं०) जुड़वां।
**जुणास**—स्त्री० (ह०) पत्नी।
**जुणी**—सर्व (कु०) 'जुण' (जो), का कारकीय रूप 'जुणीए' (जिसने), 'जुणी-बें' (जिसको), 'जुणी-रा' (जिसका) आदि।
**जुणू**—पु० (चं०) पुरानी चादर।
**जुणेऊ**—पु० (शि०) जनेऊ।
**जुतड़ी**—स्त्री० (शि०, सि०) स्त्री के पैर का जूता।
**जुतपताण**—स्त्री० लड़ाई-झगड़ा।
**जुतवाना**—स० क्रि० (शि०) जोताई करवाना।
**जुतियाणा**—स० क्रि० (शि०) जूते मारना।
**जुत्था**—पु० (कु०, सि०) बालों का गुच्छा।
**जुत्थेड़ा**—पु० (चं०) अचानक मुठभेड़।
**जुदा/दो**—वि० (कु०, शि०) अलग।
**जुदाई**—स्त्री० वियोग, बिछोह।
**जुदाळी**—स्त्री० (कु०, शि०) हल के प्रकार का लकड़ी का यंत्र जिससे घनी फसल और घास को छितराया जाता है।
**जुध**—पु० युद्ध।
**जुधा**—पु० योद्धा।
**जुध्या**—स्त्री० अयोध्या नगरी।
**जुन**—स्त्री० (बि०) भानजे के विवाह के समय मामा के द्वारा दिया जाने वाला निमंत्रण।
**जुनण**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) घास की बनाई हुई रस्सी।
**जुनी**—स्त्री० (कु०) तंगी, मुश्किल, कठिनाई।
**जुपोड़**—वि० (शि०) सीधा-सादा।
**जुफरा**—पु० (सि०) लंबे बाल।
**जुबड़ी**—स्त्री० (कु०, बि०, शि०) घास का मैदान।
**जुबड़े**—स्त्री० (शि०) हरी घास वाला मैदान।
**जुबाई**—स्त्री० (शि०) उबासी।
**जुबाल**—पु० (शि०) पक्षियों को बड़े पत्थर के नीचे दबा कर मारने का जाल।
**जुबोड़ बिऊड़णो**—अ० क्रि० (शि०) बिशू (पहाड़ी मेलों) का शुभारंभ होना।
**जुब्बड़**—पु० (सो०) घास वाला मैदान।
**जुब्बड़**—पु० (कु०, शि०) ऐसा स्थान जहां दूब ही दूब उगी हो, चौगान।
**जुमखणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) थोड़ी सी बात करना, धीरे से हिलना अर्थात् अपने अस्तित्व का ज़रा सा बोध कराना।
**जुमा**—पु० (कां०) ज़िम्मेवारी।
**जुमियारी**—स्त्री० (कु०, सि०) ज़िम्मेवारी।
**जुम्हणा**—स० क्रि० (कु०) नीचे दबाना।
**जुम्हाई**—स्त्री० (शि०) अंगड़ाई।
**जुम्ही**—स्त्री० (कां०) डुबकी।
**जुयेंकुयें**—अ० (शि०, सि०) हरकोई।
**जुर**—स्त्री० (शि०) दही से मक्खन बनने का सूचक।
**जुर**—पु० (सो०) बुखार।
**जुरकणा**—वि० (सि०) टूटने वाला।
**जुरका**—वि० (शि०) सूखा, टूटने वाला।
**जुरड़**—स्त्री० (सो०) सामर्थ्य से अधिक काम करने की स्थिति।
**जुरड़**—स्त्री० (चं०) डांट, झिड़की, घुड़की, गुस्से में बोलना, टक्कर मारने की क्रिया।
**जुरड़ना**—स० क्रि० (कां०) भद्दी सी काम चलाऊ सिलाई करना।
**जुरना**—अ० क्रि० (शि०, सि०) भटकना, तरसना।
**जुरबरा**—वि० (शि०) कुरकुरा।
**जुरबुरो**—वि० (शि०) खुरदरा।
**जुरा**—पु० (कां०) बाज़ पक्षी।
**जुराईमी**—वि० (शि०) अपराधी।
**जुराण**—स्त्री० (कां०, चं०) घृणा का भाव।
**जुराणा**—वि० (चं०) कोई।
**जुराणे**—अ० (कां०, कु०, चं०) किसी की बला से।
**जुराळी**—वि० (सि०) मुश्किल।
**जुरालो**—वि० (सि०) भारी, ताकतवर।
**जुरूरी**—वि० (शि०) ज़रूरी।
**जुरे**—अ० (शि०) जबरदस्ती ही।
**जुर्म**—पु० (शि०) अपराध।
**जुल**—पु० (कां०, चं०, बि०) फटे पुराने कपड़े, चीथड़े।
**जुलकणा**—अ० क्रि० (चं०) चमकना।
**जुलकणा**—अ० क्रि० (सो०) झूलना।
**जुलकणा**—अ० क्रि० (कां०, मं०, सि०) कीड़े वगैरह का हिलना।
**जुलका**—वि० (शि०) चमक वाला।
**जुळकू**—पु० (सि०) अचानक डर से होने वाली सिहरन।
**जुळकू**—पु० (शि०) बिजली की चमक।
**जुळ-जुळ**—स्त्री० (ऊ०, कां०) अंगों में होने वाली सरसराहट, रह-रह कर मंद पीड़ा की अनुभूति।
**जुलड़े**—पु० (चं०, सि०) झुर्रियां।
**जुलणा**—अ० क्रि० (शि०) झूलना।
**जुलणो**—अ० क्रि० (सि०) मेल-मिलाप करना।
**जुलफी**—वि० लंबे बालों वाला।

**जुलफीयां**—स्त्री० (कां०, मं०) लोक रुबाईयां, विशेष तर्ज़।
**जुलम**—पु० जुल्म, अन्याय।
**जुळमुळ**—स्त्री० आंखों में झिलमिलाहट की अनुभूति, ठीक न दिखाई देने की स्थिति, अंगों का सोने का भाव।
**जुलहणा**—स० क्रि० (चं०) घोटना, दबाना।
**जुला**—पु० (बि०) हल का भाग, दे० जुगड़ा।
**जुलाब**—पु० (शि०) अतिसार।
**जुले**—स्त्री० (सि०) सिर की ठोकर या सींगों की टक्कर।
**जुल्फा**—पु० (कां०) लटें, लंबे बाल।
**जुल्फां**—स्त्री० (कु०, सो०) दे० जुल्फा।
**जुल्हखणा**—स० क्रि० (चं०) मारना।
**जुल्हणा**—पु० (चं०) एक लंबा डंडा जिसमें बोझ को पिरो कर पीठ में उठाया जाता है।
**जुवाणियां**—स्त्री० (ऊ०, कां०) अजवाइन।
**जुवाणी**—स्त्री० (सि०) जौ छानने की छलनी।
**जुवार**—पु० (शि०) ज्वार।
**जुवाला**—स्त्री० (शि०) ज्वाला।
**जुस्सा**—पु० (कु०, शि०) शरीर।
**जुस्सा**—पु० (कां०, बि०) शक्ति, बल, नूर, ताकत, जोश।
**जुस्सा**—पु० (कां०) क्रोध।
**जुहकणा**—अ० क्रि० (कु०) धीरे-धीरे चलना।
**जुहण**—स्त्री० (शि०, सि०) दे० जुएण।
**जुहणा**—स० क्रि० (कु०) बिखेरना, जहां-कहीं फेंकना।
**जुहांकणा**—स० क्रि० (कु०) काटना, पेड़ आदि ऊपर-नीचे जैसे-कैसे काटना।
**जुहांकिणा**—स० क्रि० (कु०) कुत्ते द्वारा काटा जाना, बुरी तरह काटा जाना।
**जुहिणा**—स० क्रि० (कु०) बिखेरा जाना।
**जुही**—स्त्री० पीले रंग का फूल।
**जूं**—स्त्री० जूं।
**जूं**—स्त्री० (कु०) जूं।
**जूं**—पु० (कु०, सि०) जुआ, हल जोतते समय बैलों के कंधे पर रखा जाने वाला जुआ।
**जूंइलला**—वि० (कु०) जूओं वाला।
**जूंग**—स्त्री० (सि०) मूंछ।
**जूंगा**—पु० (शि०) हिलने का भाव।
**जूंगा**—पु० (शि०) दबाने का भाव।
**जूंजा**—अ० (शि०, सि०) जो, जो भी।
**जूंडणा**—स० क्रि० (कु०, मं०, शि०) जोतना।
**जूंदर**—वि० (कु०) साथ मिला हुआ।
**जू:ठ**—पु० (शि०, सि०) झूठ।
**जू:णे**—स० क्रि० (सि०) व्यथा में किसी द्वारा बिना आंसुओं के मनोभाव को प्रदर्शित करना।
**जू:न**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) पेट में पड़ने वाला सफेद रंग का पतला-लंबा कीड़ा।
**जू:शा**—पु० (शि०) चेहरे पर अप्राकृतिक ढंग से उगने वाले बाल।
**जू**—सर्व० (शि०) जो।
**जू**—स्त्री० (शि०, सि०) जूं।
**जूइड़ा**—पु० (सि०) जूं।
**जूइण**—स्त्री० (शि०) दे० जुएण।
**जूक**—स्त्री० (सि०) चिंगारी।
**जूक**—स्त्री० (शि०, सि०) जोंक।
**जूक**—वि० (सो०) उतावली। पु० उबाल।
**जूकड़े**—पु० (शि०, सि०) जूं के बच्चे।
**जूजणा**—अ० क्रि० (कां०, सि०) जूझना।
**जूट**—पु० पटसन।
**जूट**—स्त्री० (कां०, बि०) झाड़ी।
**जूट**—स्त्री० (ऊ०, कां०) जटा।
**जूट**—पु० (कां०) जूता।
**जूटो**—पु० (मं०) दे० जुट्टू।
**जूठ**—स्त्री० जूठन।
**जूठ**—स्त्री० विवाह के समय किसी मिष्टान्न को वर व वधु द्वारा तनिक सा लेने की क्रिया।
**जूठ**—स्त्री० (कु०) मन का कोई क्लेश, छुआछूत।
**जूठ-परीठ**—स्त्री० जूठा भोजन, जूठन। छुआछूत।
**जूठली**—स्त्री० (कु०) मिट्टी का दीप जो दीवाली को जलाया जाता है।
**जूठळी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) जूठी वस्तु।
**जूठा**—पु० (कु०) जूठा, जूठन।
**जूठिणा**—अ० क्रि० (कु०) जूठे होना।
**जूठिना**—स० क्रि० (शि०) खाने के पश्चात् हाथ मुंह धोना।
**जूठी**—स्त्री० (कां०) जेठ की बेटी।
**जूड**—स्त्री० (बि०) हाथ-पांव बांधने की क्रिया।
**जूड़ा**—पु० बालों का जूड़ा।
**जूड़ा**—पु० (सो०) झाड़ू।
**जूड़ा**—पु० (शि०, सि०) जुड़ जाने का भाव।
**जूड़ी**—स्त्री० (कां०, बि०) घास आदि का सफाई के लिए बनाया गया झाड़ू।
**जूड़ी**—स्त्री० (कु०) जोड़ी।
**जूडू**—पु० (कां०, कु०) बहुत छोटा झाड़ू।
**जूडू**—पु० (कां०) छोटा गट्ठा।
**जूडू**—वि० (कां०, चं०) जिसने लंबे बाल रखे हों।
**जूण**—स्त्री० (सो०) चांदनी।
**जूण**—स्त्री० द्रोणि, चालीस सेर का एक माप।
**जूणा**—पु० (सि०) राख से बर्तन साफ करने की कूची।
**जूणेशो**—स्त्री० (शि०) चांदनी।
**जूणो**—स० क्रि० (शि०) खोजना।
**जूत**—पु० (कां०, ह०) जूता।
**जून**—स्त्री० प्राणियों की योनि।
**जून**—पु० (सि०) पकवान विशेष, प्रसूता स्त्री को उसके संबंधियों द्वारा दिया विशेष भोजन।
**जूब**—स्त्री० (कु०, शि०) दूब, दुर्बा।
**जूबड़**—पु० (शि०) ऐसा मैदान जो सामूहिक सभा या मेले हेतु रखा होता है।
**जूम**—स्त्री० (सो०) वर्षा से बचाव के लिए सिर पर ली गई बोरी

या खेस आदि।

**जूमड़**—पु० (कु०) गुच्छा।

**जूरा**—पु० (कु०) दूर के खेतों में रहने के लिए बनाए गए मकान।

**जूल्फू**—पु० (शि०) लंबे बाल।

**जूशला**—वि० (शि०) जोशीला।

**जूह**—स्त्री० (मं०) चरागाह।

**जूह**—स्त्री० (ह०) उजाड़ भूमि, मरुभूमि।

**जूहण**—स्त्री० (कां०, मं०) तारों की मंद रोशनी।

**जूहशा**—स्त्री० (शि०, सि०) पशुओं की अतिसार की बीमारी।

**जूहशो**—पु० (सि०) आवेश।

**ज़ेंउरा**—पु० (सि०) यमदूत।

**ज़ेंओं**—अ० (सि०) जैसे ही।

**ज़ेंओं**—पु० (सि०) नुकसान।

**जेंकजेंका**—वि० (कु०) किसी काम से संतुष्ट न होने वाला।

**जेंगबड़ेंगा**—वि० (कां०, कु०) दे० जेंगबरेंगड़ा।

**जेंगबरेंगड़ा**—वि० (कु०) टेढ़ा-मेढ़ा।

**जेंजर**—स्त्री० (कु०) पायल, झांझर।

**जेंझर**—स्त्री० (कु०) दे० जेंजर।

**जेंढा**—अ० (कु०) जैसा।

**ज़ेंढा-केंढा**—अ० (कु०) जैसा-कैसा।

**जेंतरी**—स्त्री० (कु०) जंत्री।

**जेंती फूल**—पु० (मं०) वैजयंती फूल।

**ज़ेंहें**—अ० (कु०) जैसा।

**जे:ता**—वि० (शि०) सख्त, पक्का।

**जे:ल**—स्त्री० जेल।

**जे:लपणा**—पु० (सि०) दुष्टता।

**जे**—अ० (कु०) जो, अगर।

**ज़े**—अ० (शि०, सि०, सो०) यदि, अगर।

**ज़ेअल**—स्त्री० (शि०) अपमान, सामाजिक धब्बा, कलंक।

**जेअरा**—अ० (सि०) दे० ज़ेंढा।

**जेअल**—स्त्री० (ऊ०, कां०, चं०) जोती गई भूमि को पुनः जोतने की क्रिया।

**ज़ेअल**—पु० (शि०) थकान।

**जेईड**—वि० (कु०) सीधा-सादा, भद्दा।

**ज़ेई**—अ० (शि०) क्योंकि।

**ज़ेई**—अ० (शि०) जहां।

**ज़ेईए**—सर्व० (कु०) जिन्होंने।

**जेईठ**—पु० (चं०) ज्येष्ठ महीना।

**जेउड़ा**—पु० (कु०) पशु बांधने की रस्सी, छोटी रस्सी, रस्सी का टुकड़ा।

**जेउड़ी**—स्त्री० (शि०) छोटी और बारीक रस्सी।

**जेउड़ौ**—पु० (शि०, मं०) रस्सी का छोटा टुकड़ा।

**ज़ेउर**—पु० (कु०) ज़ेवर, आभूषण।

**ज़ेउर-गाहणा**—पु० (कु०) ज़ेवर-गहने, आभूषण।

**जेउला**—पु० (कु०) बड़ा परिवार।

**जेऐ**—अ० (शि०) जहां।

**ज़ेओ**—अ० (शि०) तरह।

**ज़ेओटा**—पु० (शि०) मोटी रस्सी।

**जेओड़**—स्त्री० (सि०) छोटी रस्सी।

**जेओर**—पु० (बि०) गहने।

**ज़ेओर**—पु० (सि०) गहने।

**जेकणो**—स० क्रि० (शि०) खाना।

**जेकर**—वि० (शि०) मूर्ख।

**ज़ेकरै**—अ० (कु०) ताकि।

**जेकळा**—वि० (शि०, सि०) अनभिज्ञ, मूर्ख।

**ज़ेकार**—पु० (कां०, कु०, शि०) जयकार।

**ज़ेकार**—अ० देवता से माफी मांगने के लिए प्रयुक्त शब्द।

**जेकुणा**—स० क्रि० (सो०) दबाया जाना।

**जेखड़ना**—स० क्रि० (कु०) जकड़ना।

**जेखड़ा**—पु० (शि०) रस्सी।

**जेखड़िना**—स० क्रि० (कु०) जकड़ा जाना।

**जेखड़ी**—स्त्री० (सि०) रस्सी, छोटी रस्सी।

**जेखड़े**—स्त्री० (शि०) बारीक रस्सी।

**ज़ेखम**—पु० (कु०) ज़ख्म।

**जेखरे**—अ० (चं०) यद्यपि।

**जेखि**—सर्व० (शि०) जिसको।

**जेखुड़ी**—स्त्री० (कु०) सूतली।

**जेखुणी**—अ० (शि०, सि०) जैसे ही।

**जेखे**—वि० (शि०) मूर्ख।

**ज़ेगज़गी**—वि० (कु०) जिस पर कोई असर न हो।

**जेगमेग**—वि० (कु०) जगमग।

**जेगळा**—वि० (शि०, सि०, सो०) गंदा, भद्दा, सीधा-सादा, बेढंगा।

**जेगा**—स्त्री० (मं०) जगह।

**जेगी**—स्त्री० (सि०) अरबी की घटिया किस्म।

**जेचिणा**—अ० क्रि० (कु०) जचा जाना।

**ज़ेज़ि**—सर्व० (शि०) जो, जो कोई।

**जेठ**—पु० पति का बड़ा भाई।

**जेठ**—पु० ज्येष्ठ मास।

**ज़ेठ**—पु० (कु०, शि०, सि०) जेठ।

**जेठा**—वि० सबसे बड़ा, उम्र में बड़ा, महत्वपूर्ण, विशेष।

**जेठाणी**—स्त्री० (चं०) जेठ की पत्नी।

**ज़ेठिया**—पु० (कु०, शि०, सि०) जेठ, पति का बड़ा भाई।

**जेठियौ**—पु० (कु०) दे० ज़ेठिया।

**जेठी**—स्त्री० (सि०) ऐसी फसल जो मई में बोई जाती है।

**जेठो**—पु० (सि०) दे० ज़ेठिया।

**जेठो**—वि० (शि०) दे० जेठा।

**जेड़क**—स्त्री० (कु०) निश्चित।

**जेड़ा**—पु० (कु०) ठोकर।

**जेड़ा**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) जैसा।

**जेड़ीबूटी**—स्त्री० (कु०) जड़ी-बूटी।

**जेड़ेंघाबेड़ेंघा**—वि० (कु०) दे० जेंगबरेंगड़ा।

**जेड़ेंघी**—वि० (कु०) टेढ़ा चलने वाला।

**जेड्डा**—वि० (कां०, ह०) जितना बड़ा।

**जेढ़मेढ़**—स्त्री० (चं०) संबंधी जनों का समूह।

**जेढ़ा**— अ० (कां०) जो, जैसा।
**जेढ़ाकेढ़ा**— अ० (कां०, कु०) जैसाकैसा।
**जेणजणाट**— स्त्री० (कु०) झनझनाहट।
**जेणो**— वि० (शि०) जैसा।
**जेत**— पु० (शि०) मुख, मुंह।
**जेतड़ा**— वि० (सो०) जितना।
**जेतड़े**— अ० (कां०, चं०) जितने।
**ज़ेतड़े**— अ० (सि०) जहां पर।
**जेतणे**— अ० (शि०, सि०, सो०) जितने, जितने समय में।
**जेतरा**— वि० (कु०) जितना।
**जेतां**— अ० (कु०, कां०, ह०) परिणाम स्वरूप।
**जेता**— अ० (कु०) जितना।
**ज़ेता**— अ० (कु०) यदि, यद्यपि।
**ज़ेती**— अ० (कु०, शि०) जितनी, के बराबर।
**जेती**— अ० (शि०, सो०) जहां।
**जेत्रा**— अ० (कु०) जितना।
**ज़ेथा**— अ० (शि०, सि०) जहां।
**जेथी**— अ० जहां।
**जेथे**— अ० जहां।
**जेन**— स्त्री० (शि०) ज्ञान।
**ज़ेनिए**— सर्व० (शि०) जिससे।
**ज़ेने**— सर्व० (शि०) जिससे।
**जेफड़**— वि० (कु०) सीधा-सादा।
**जेब**— पु० जेब।
**ज़ेबड़ा**— वि० (कु०) जितना, जितना बड़ा।
**ज़ेबड़े**— अ० (शि०) जब, जैसा।
**ज़ेबरजस्ती**— स्त्री० (कु०) ज़बरदस्ती।
**ज़ेबरिये**— वि० (कु०) ज़ोर वाले, ताकत वाले।
**जेबू**— पु० (कु०) झाग।
**ज़ेबे**— अ० (कु०, शि०) जब।
**ज़ेमरे**— अ० (कु०) जब।
**जेमे**— अ० (मं०) जब।
**जेमटणा**— स० क्रि० (कु०) पैर से दबाना।
**ज़ेयजात**— स्त्री० (कु०, शि०, सि०) जायदाद।
**जेया**— अ० (कां०) जैसा।
**ज़ेया**— अ० (सि०) जैसा।
**ज़ेयोड़ा**— अ० (शि०) जितना, बराबरी में।
**जेर**— वि० (ऊ०, कां०, ह०) बीमार।
**ज़ेर**— स्त्री० (कां०, सि०, सो०) जरायु।
**ज़ेर**— स्त्री० (शि०) तीखी गंध, श्लेष्मा।
**जेरकणा**— अ० क्रि० (कु०) डर जाना।
**जेरदल**— पु० (चं०) बरामदे का स्तंभ।
**ज़ेरा**— अ० (शि०, सि०) जैसे।
**ज़ेरां**— अ० (शि०, सि०) जैसे।
**जेल**— स्त्री० (कां०) खेत की जोताई।
**जेल**— स्त्री० (चं०) दोबारा हल चलाने की क्रिया।
**जेलणा**— स० क्रि० (सि०, सो०) झेलना।
**जेलसज**— पु० (मं०) बाजे का प्रबंधक तथा देवता को सूचना देने वाला।
**जेलता**— पु० (मं०) गांव का सचेतक, चौकीदार।
**ज़ेलदार**— पु० जेलदार।
**जेला**— वि० (कां०, बि०) कठोर।
**जेलू**— पु० (सो०, शि०) Rhododendron anthopogol. एक पहाड़ी वृक्ष जिसका पत्ता औषधि के काम आता है।
**जेवटी**— स्त्री० (सो०) छोटी रस्सी।
**जेश**— पु० (कु०) दे० जश।
**जेशणो**— अ० (शि०) जैसा।
**जेस**— सर्व० (कु०, मं०) जिस।
**जेसखे**— सर्व० (शि०, सि०, सो०) जिसे, जिसके लिए।
**जेसदा**— अ० (शि०, सि०) जिसमें।
**ज़ेहां**— अ० (कु०) जैसा।
**जेहूं**— अ० (मं०) आगे।
**जेहो**— अ० (शि०) जहां, जैसा।
**जेंका**— वि० (कु०) मूर्ख, बदसूरत।
**जेंच**— स्त्री० (कु०) देख-रेख, जांच।
**जेंट्टी**— वि० (कु०) धनी।
**जेंड**— वि० सीधा-सादा।
**जेंडा**— वि० (कां०, बि०, सो०) जो बोल न सके।
**जेंरणो**— स० क्रि० (शि०) किसी मुड़ी चीज़ को सीधा करना। अंगड़ाई लेना।
**ज़ेंरणो**— स० क्रि० (सि०) संचय करना।
**जेंहबड़**— वि० (कां०) दे० जैंड।
**जेंहमत**— स्त्री० (कां०, बि०) मुसीबत।
**जै**— स्त्री० जयकार।
**ज़ै**— अ० (कु०) यदि।
**जैइण**— स्त्री० (शि०) अजवाइन।
**जैई**— अ० (सि०) जैसी।
**ज़ैउणा**— स० क्रि० (शि०, सि०) स्वस्थ करना।
**जैएबड़**— पु० (कु०) छोटे-छोटे बच्चों से भरा परिवार।
**जैकार**— स्त्री० जयकार।
**जैग**— पु० (कु०) दे० जग।
**ज़ैगा**— स्त्री० (कु०) जगह।
**जैचणा**— अ० क्रि० (कु०) सुंदर लगना।
**जैज**— पु० (मं०) दर्जी।
**जैटु**— वि० (कु०) सख्त, निडर।
**जैड़जैड़ा**— वि० (कु०) दे० जड़जड़ा।
**जैड़ी**— स्त्री० (शि०) निजी वस्तु।
**ज़ैण**— पु० (कु०) दे० ज़ोण।
**जैणणा**— स० क्रि० (कु०, मं०) जानना।
**जैणता**— पु० (कु०, मं०) तंत्र-मंत्र विद्या का ज्ञाता।
**ज़ैणी**— स्त्री० (कु०) औरतें।
**जैदाद**— स्त्री० जायदाद, संपत्ति।
**ज़ैदी**— अ० (कु०) दे० ज़ौदी।
**जैदेआ**— अ० सम्मान प्रकट करने संबंधी अभिवादन, जयदेवा, राजाओं तथा सामंतों के लिए अभिवादन।
**जैन**— वि० (चं०) ठीक।

**जैपणा**—अ० क्रि० (कु०) जपना, बोलना।
**जैफड़**—वि० (कु०) दे० जेफड़।
**जैफल**—पु० (कि०) जायफल।
**जैबड़े**—अ० (शि०) जब।
**जैबा**—वि० (कु०) दलदल।
**जैबा**—वि० (कु०) दलदल।
**जैमटु**—पु० (मं०) एक चिड़िया।
**जैमा**—स्त्री० (कु०) जमा, इकट्ठा।
**जैमाला**—स्त्री० (शि०) जयमाला।
**ज़ैर**—पु० (शि०, सो०) ज़हर।
**ज़ैरा**—पु० (शि०, सि०) संपत्ति, गुज़ारा।
**जैराम**—पु० किसी के प्रति विनय सूचित करने के लिए सिर नवाने की क्रिया।
**जैलबरू**—पु० (कु०) ठंड के कारण पशुओं को होने वाली बीमारी।
**जैला**—वि० (कां०) सख्त, कठोर, पक्का।
**जैला**—वि० (ह०) क्रोधी।
**जैकू**—वि० (सि०) ढीला-ढाला।
**जैहमत**—स्त्री० मुसीबत, कष्ट, तकलीफ।
**जैहर**—पु० जहर, विष।
**ज़ैहर**—वि० (कु०) दक्ष, कुशल।
**जैहरन**—वि० (मं०) क्रोधी (स्त्री)।
**जैहरी**—वि० गुस्से वाला।
**ज़ैहा**—अ० (शि०, सि०) जैसा।
**जों**—पु० (ऊ०, ह०) जौ।
**जों**—पु० (कु०, शि०) यम।
**जोंई**—पु० (शि०) दामाद।
**ज़ोंक**—स्त्री० (कु०) जोंक, पानी में रहने वाला जीव जो शरीर में चिपकता है।
**ज़ोंख**—स्त्री० (कु०) चिंता।
**जोंगला**—पु० (ह०) जुआ।
**जोंगा**—पु० (शि०, चं०) जोकर, हंसोड़, सीधा-सादा, बेवकूफ।
**ज़ोंघ**—स्त्री० (कु०) टांग।
**ज़ोंघड़ू**—पु० (कु०) बच्चे की टांग, छोटी टांग।
**जोंठणा**—स० क्रि० (कु०) पकड़ना।
**जोंठिणा**—स० क्रि० (कु०) पकड़ा जाना।
**जोंढा**—वि० (ऊ०, कां०) सीधा-सादा।
**जोंतर**—स्त्री० (कु०, ह०) रस्सियां, दे० जोच।
**जोंतर**—पु० (कु०, शि०, सि०) ताबीज़।
**जोंतरी**—स्त्री० (कु०, शि०, सि०) जंत्री।
**जोंपर**—स्त्री० (कु०, शि०) यमपुरी।
**जोंबरा**—स्त्री० (सि०) नींबू का पेड़।
**जोंळ**—वि० (शि०, सि०) जुड़वां।
**जोंळ**—पु० (कां०, चं०) पशु के गले की झालर।
**जोंळ**—पु० (कां०, चं०) विवाह में पति-पत्नी की कमर में फेरों के समय बांधा जाने वाला वस्त्र विशेष।
**जोंळा**—पु० (कु०) मकान के कमरे की ऊपरी शहतीरियों में से मुख्य शहतीर जो अन्य से मोटी और बड़ी होती है।
**ज़ो:ड़ी**—स्त्री० (सि०) पशुओं का जलाशय।
**ज़ो:ल**—पु० (शि०, सि०) कालिख।
**जो**—स्त्री० (चं०) पत्नी।
**जो**—अ० यदि, अगर।
**जो**—अ० कर्मकारक का प्रत्यय 'को'।
**ज़ो**—सर्व० (कु०) जो।
**ज़ो**—पु० (कु०) लकड़ी का बना एक उपकरण जिससे हल चलाने के बाद मिट्टी नर्म की जाती है, सुहागा।
**जोअ**—पु० (कु०) विशेष जोताई जिससे धान का खेत पनीरी लगाने योग्य होता है।
**ज़ोअ**—स्त्री० (सि०) तलाश।
**जोआ**—पु० (सो०) लकड़ी को भट्ठी में लगाने का व्यापार।
**जोआड़**—पु० (सि०, बि०) उजाड़।
**जोआणोओ**—स्त्री० (सि०) अजवाइन।
**जोआन**—पु० (सि०) जवान।
**जोआनस**—स्त्री० (ऊ०, कां०, सि०) पत्नी।
**जोइ**—अ० (शि०, सि०) अलग।
**जोइठो**—पु० (शि०, सि०) जौ का आटा।
**ज़ोई**—स्त्री० (कु०) पत्नी।
**जोऊं**—पु० (कु०) यम।
**ज़ोओट**—पु० (शि०, सि०) झाड़ी। तना।
**जोक**—स्त्री० जोंक।
**जोकणा**—स० क्रि० (सो०) झोंकना।
**जोख**—पु० (कां०) तोल।
**जोखटी**—स्त्री० (कु०, शि०, सि०) चीर कर बनाई छोटी बारीक लकड़ी जो रोशनी के लिए प्रयुक्त होती है।
**जोखणा**—स० क्रि० (शि०) डांटना।
**जोखणा**—स० क्रि० तोलना, मापना, जांचना।
**जोखम**—स्त्री० जोखिम, हानि।
**जोग**—पु० (कु०) अधिकार।
**जोग**—पु० योग।
**जोग**—पु० (ऊ०, कां०) बैलों की जोड़ी।
**जोगजोगा**—वि० (कां०) लायक, योग्य।
**जोगठी**—स्त्री० (मं०) दे० जोखटी।
**जोगड़मोगड़**—पु० कूड़ा-करकट।
**जोगड़ा**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) योग्य।
**जोगड़ा**—अ० (ऊ०, कां०) के लिए।
**जोगड़ा**—पु० साधु, पाखंडी साधु।
**जोगड़ो**—पु० (शि०) योगी।
**जोगण**—स्त्री० (सो०) योगिनी।
**जोगण**—स्त्री० (कां०, ह०) चुड़ैल।
**जोगण**—स्त्री० (चं०) ऐसी स्त्री जो घरों में फूल की मालाएं लाती है।
**जोगणी**—स्त्री० योगिनी, वन की देवियां जो पहाड़ों में रहनें वाली मानी जाती हैं।
**जोगणी**—स्त्री० (सि०) सफेद गिद्ध।
**जोगणू**—पु० (ह०) प्रेत।
**जोगणू**—पु० (चं०) योगी।

**जोगन**—स्त्री० (चं०) 'नवाले' की माला बनाने वाली पुश्तैनी स्त्रियां।
**जोगमलाणा**—स० क्रि० विवाह का समय निर्धारित करना।
**जोगा**—अ० योग्य, मुकाबले का।
**जोगा**—पु० (सि०) मोटी कमीज़।
**जोगिया**—वि० (शि०) गेरुआ, गेरू के रंग का।
**जोगी**—पु० योगी।
**जोगी**—पु० (चं०) 'नवाले' का मुख्य पुजारी।
**जोघळ**—वि० (कां०, बि०) अल्पबुद्धि।
**जोच**—पु० जुए में लगी रस्सियां जो बैलों को जुए से बांधे रखती हैं।
**जोचणा**—स० क्रि० (कु०) बैल को हल-जुए से बांधना, रस्सी से बांधना।
**जोचणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) दे० जोचणा।
**जोचा**—पु० (कु०) रस्सा।
**ज़ोजड़ी/ड़ू**—पु० (मं०) पशुओं का बच्चा।
**जोट**—पु० (कां०, सि०) बराबरी की टक्कर।
**जोट**—पु० (सो०) तना।
**जोट**—पु० (कां०) जोड़ा, जूती।
**ज़ोट**—पु० (कु०) जोड़ा।
**जोटकु**—पु० (सो०) भैंस का बच्चा।
**जोटळी**—पु० (शि०) जड़ें।
**जोटलु**—वि० (कां०) जुड़वां।
**जोटा**—पु० स्वैटर बुनते समय दो फंदों को इकट्ठे बुनना।
**जोटे**—पु० (शि०, सि०) जोड़ी।
**जोठ्ठु**—पु० (शि०) जड़ या मूल का समीपवर्ती भाग।
**जोठ**—स्त्री० (शि०) नज़र।
**जोठ**—पु० (ह०) दर्रा।
**जोठोले**—स्त्री० (शि०) जौ के आटे की रोटी।
**जोड़**—पु० (सो०) कंबल तथा रजाई के ओढ़ने का मिलाप।
**जोड़**—पु० हड्डियों का जोड़, उंगलियों का जोड़।
**ज़ोड़**—पु० (कु०, शि०) जोड़।
**ज़ोड़**—पु० (शि०) वह स्थान जहां ज़मीन से पानी फटता है।
**जोड़ठे**—पु० (मं०) खेत का कूड़ा-करकट।
**जोड़ना**—स० क्रि० कमाना, संग्रह करना।
**जोड़नो**—स० क्रि० (मं०, शि०) बैल जोतना।
**जोड़वा**—वि० (शि०) जुड़वां।
**जोड़ा**—पु० (कां०) पशु बांधने की विशेष फंदे वाली रस्सी।
**जोड़ा**—स्त्री० (कां०) छोटी रस्सी जिससे 'मघाणी' खूंटे के साथ बांधी जाती है।
**जोड़ा**—वि० युगल।
**जोड़ा**—पु० (बि०, ऊ०) जूता।
**ज़ोड़ा**—वि० (कु०) युगल।
**जोड़ियां**—स्त्री० (कु०, सि०) दरवाज़े के तख्ते।
**जोड़ी**—पु० तबला, नगारा।
**जोड़ी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) जूती।
**ज़ोड़ी**—स्त्री० (कु०, शि०) भेड़-बकरी आदि को दी जाने वाली वृक्षों की पत्तियां।
**जोड़ू**—पु० (कां०) बंधन, छोटी रस्सी।
**जोड़ू**—वि० जोड़ने वाला।
**जोड़े**—पु० (चं०) रस्सी।
**जोड़े**—पु० (कु०, शि०, सो०) जूते।
**जोण**—पु० (कां०, बि०) जीवन, जीने की क्रिया।
**ज़ोण**—पु० (कु०) आदमी, मर्द।
**ज़ोणक**—पु० (कु०) संतान।
**ज़ोणना**—स० क्रि० (कु०) जन्म देना।
**जोणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) ढूंढना, खोजना, प्रतीक्षा करना।
**ज़ोणी**—स्त्री० (कु०) औरत, स्त्री।
**जोत**—स्त्री० दीपक।
**जोत**—स्त्री० ज्योति।
**जोत**—पु० (चं०) पर्वत।
**जोत**—पु० जुए में लगी रस्सियां, दे० जोच।
**ज़ोत**—पु० (कु०) पहाड़ की चोटी, पर्वत शिखर, दर्रा।
**जोतकी**—वि० (चं०) ज्योतिषी।
**जोतणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, चं०) जुताई करना, बैलों को जुए से बांधना।
**जोतर**—पु० (कु०) जुआ या 'पंजाली' की कीलों में लगी रस्सी जो बैलों के गले के नीचे से बांधी जाती है।
**जोतरना**—स० क्रि० (कां०, चं०) हल में जोतना।
**जोतरना**—स० क्रि० (कां०, चं०, बि०) किसी को काम में व्यस्त करना।
**जोतश**—पु० भविष्यवाणी, ज्योतिष।
**जोताई**—स्त्री० (शि०) जोताई।
**जोत्रा**—वि० (चं०, बि०) योग्य।
**जोथ**—पु० (कां०, मं०) चांद।
**ज़ोथ**—स्त्री० (कु०) चांद।
**जोदिया**—स्त्री० अयोध्या।
**जोद्दा**—(कु०) हृष्ट-पुष्ट।
**जोद्धा**—पु० योद्धा।
**जोघ**—पु० (शि०) युद्ध।
**जोघण**—वि० (कु०) शक्तिशाली (स्त्री)।
**जोधा**—वि० बलवान, मेधावी, मज़बूत, जिसमें चर्बी अधिक हो।
**जोधिणा**—अ० क्रि० (कु०) बलवान होना।
**जोधी**—वि० (कु०) हृष्ट-पुष्ट (स्त्री)।
**ज़ोन**—स्त्री० (कु०) बड़ा पत्थर, चट्टान।
**जोपणा**—स० क्रि० (सो०) सूई या कांटा चुभाना।
**जोपोड़**—वि० (शि०) सीधा-सादा।
**जोफ**—पु० (कु०) इल्ज़ाम।
**जोबन**—पु० यौवन।
**जोबनोड़ू**—पु० (कां०, चं०) यौवनावस्था में मुंह पर निकलने वाली फुंसियां।
**जोमटू**—पु० (सि०) दे० जमटु।
**ज़ोमणा**—अ० क्रि० (कु०) जम जाना।
**जोर**—पु० शक्ति, बल।
**ज़ोर**—पु० शक्ति, बल।

**जोरकणो**—अ० क्रि० (सि०) टूट-फूट होना।
**ज़ोरबरिए**—वि० (कु०) दे० ज़बरीए।
**जोरा**—पु० (कां०, चं०) वश।
**ज़ोराज़बरी**—स्त्री० (कां०, कु०) जबरदस्ती।
**जोराब**—पु० (कां०, सि०) जुराब।
**जोराबर**—वि० शक्तिशाली।
**जोराबरी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, चं०) ज़बरदस्ती।
**ज़ोराबरीए**—अ० (सि०, सो०) बलपूर्वक।
**जोरू**—स्त्री० पत्नी, औरत।
**जोरे**—अ० (कु०, सि०) ज़ोर से, खूब, ज़बरदस्ती।
**जोरोबरिय**—अ० (कु०) दे० ज़बरीए।
**जोल**—पु० (ह०) पानी वाली जगह।
**जोळ**—स्त्री० (कां०, बि०) खाई, नीची ज़मीन।
**जोळ**—पु० (ह०) लंबा भूभाग।
**जोळ**—पु० (कां०) पानी लगने वाला खेत जो घर से दूर हो।
**जोळ**—पु० (शि०) खेतों में नमी बनाए रखने के लिए मिट्टी के ढेलों को तोड़ने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला कृषि उपकरण।
**ज़ोळ**—पु० (कु०) सुहागा, एक विशेष हल जिससे हल चलाने के बाद मिट्टी को समतल किया जाता है।
**जोलणा**—स० क्रि० (सो०) झुलाना।
**ज़ोलना**—स० क्रि० (कु०) 'ज़ोळ' से मिट्टी समतल करना।
**जोळा**—पु० (सो०) थैला, झोला।
**जोलारो**—पु० (शि०) मृत्यु की सूचना देने वाला व्यक्ति।
**जोली**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) मोटा (व्यक्ति)।
**जोळी**—स्त्री० (चं०) पत्नी।
**जोळी**—पु० (शि०) सुहागा फेरने वाला व्यक्ति।
**ज़ोळी**—पु० (कु०) खेत को 'ज़ोळ' द्वारा समतल करने वाला व्यक्ति।
**जोळै**—पु० (शि०) शिमला का एक लोक नृत्य जिसमें नर्तक एक वृत्त में गाथा गाते हुए खंजरी की ताल पर नाचते हैं।
**ज़ोळो**—पु० (सि०) कान में पहने जाने वाले ज़ेवरों का जोड़ा।
**जोल्ही**—वि० (ऊ०, कां०, मं०) भोला, शरीफ।
**जोल्हें**—पु० (ह०) नीची समतल भूमि।
**जोवाई**—पु० (सि०) दामाद।
**जोवाड़**—पु० (सि०) छलांग।
**जोवी**—स्त्री० (मं०) स्थानीय कठोर दाल।
**जोश**—पु० उत्साह, ताकत।
**जोस**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) दे० जोश।
**जोहें**—अ० (कु०) पास।
**जोहेजाणा**—अ० क्रि० (कु०) बीमार को देखने जाना।
**जोह**—अ० (कु०) यहां।
**जोहकी**—वि० (कां०, कु०) क्रोधी।
**जोहड़**—पु० दलदल, तालाब।
**जोहड़ा**—पु० (मं०) बहता पानी।
**जोहड़ाजाड़ा**—पु० (मं०) दल-दल भूमि वासी देवता।
**जोहड़ी**—स्त्री० (सि०) छोटा तालाब।
**जोहड्ड**—पु० (ह०) ऊंचा स्थान।
**जोह्णा**—अ० क्रि० (बि०) जाना।
**जोह्म**—पु० (बि०) रंग।
**जोह्मणा**—स० क्रि० (बि०) रंग चढ़ाना।
**जोह्मणा**—स० क्रि० (कां०) किसी वस्तु को पानी में डालकर निकालना।
**जोह्ली**—वि० (ऊ०, कां०, कु०) निकम्मा।
**जोह्लीनाथ**—वि० (कां०, कु०, बि०) सीधा-सादा (आदमी)।
**जौं**—पु० (कां०) जौ।
**जौंएंटी**—स्त्री० (कां०, चं०) जौ की रोटी।
**जौंकथ**—वि० (सि०) जुड़वां।
**जौंगड़**—वि० (बि०) महामूर्ख।
**जौंज़र**—स्त्री० (कु०) झांझर।
**जौंट**—स्त्री० (सो०) प्रतिशोध की जलन।
**ज़ौंतणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) सफाई करना, मुरम्मत करना।
**जौंतरे**—स्त्री० (शि०) पंचांग, जंत्री।
**जौंद्वारे**—पु० (कां०, शि०) यमद्वार।
**जौंल**—स्त्री० (चं०) हरे रंग के सूती कपड़े की तीन-चार अंगुल चौड़ी और काफी लंबी पट्टी जिसे बांधकर वर-वधू के फेरे कराए जाते हैं।
**जौःकटू**—पु० (सि०) कमीज।
**ज़ौ**—पु० जौ।
**ज़ौ**—अ० (शि०) जब, यदि।
**जौआळी**—पु० (चं०) जौ का खेत।
**जौई**—स्त्री० (कां०, चं०) जड़ी विशेष।
**ज़ौऊ**—पु० (कु०) जौ।
**जौएरनी**—स्त्री० (चं०) जौ का खेत।
**जौक**—पु० (कु०) पकाए मांस आदि की इतनी मात्रा जो दोनों हाथों में आ सके।
**ज़ौकजक्का**—वि० (शि०) ढीठ।
**जौकड़ा**—पु० (कु०, सि०) हाथों द्वारा अधिक से अधिक वस्तु उठाने का भाव।
**जौकणा**—स० क्रि० (चं०) डुबाना।
**जौकणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) मारना, पीटना।
**जौकां देना**—स० क्रि० (सि०) शादी में हंसी के गीत गाना।
**ज़ौखम**—पु० (शि०) जख्म।
**जौखार**—पु० (शि०) जौ का शरबत।
**ज़ौखे**—अ० (कु०) जहां।
**जौखोर**—पु० (शि०) बकवास।
**जौगड़ा**—पु० (कु०) कनक और चावल को छोड़ कर किसी अन्य अन्न का भोजन।
**ज़ौगड़ा**—पु० (कु०, शि०) झगड़ा।
**जौगरा/रो**—वि० (शि०, सि०) गंदा।
**जौचड़ी**—पु० (कु०) अंकुर, जब जौ या गेहूं छः इंच के लगभग होता है।
**जौछणी**—स्त्री० (कु०) यक्षिणी।
**जौज**—स्त्री० (कु०) चर्म रोग, खुश्की से चेहरे पर पड़े सफेद दाग।

ज़ौज़रा—वि० (कु०) अधमरा, घायल।
ज़ौज़री—स्त्री० (कु०) भूकंप।
ज़ौजरी—वि० (कु०) अधपकी, ऐसी दही जो पूरी तरह जम न गई हो।
जौझड़ना—स० क्रि० (कु०) दांत से बुरी तरह चबाना।
जौट—पु० (कु०) एक वंश।
ज़ौट—स्त्री० (शि०, सि०) जटाएं।
ज़ौटळी—स्त्री० (शि०) बच्चों के बाल।
ज़ौटी—वि० (कु०) बड़ी-बड़ी जटाओं वाला।
ज़ौटू—पु० (कु०) मुंडन संस्कार।
जौटे—पु० (सि०) जौ।
ज़ौटो—पु० (सि०) जटाएं।
जौड़—स्त्री० (शि०, सि०) जड़।
जौड़—पु० (कां०) वृक्ष के तने का दो होकर उगना, दो बड़ी टहनियों का जोड़।
जौड़ा—वि० (ऊ०, कां०, सो०) जुड़वां।
ज़ौड़ा—पु० (सि०) घड़े पर थाली बजा कर पूजा करने वाला व्यक्ति, ज्योतिषी।
जौड़ाख—पु० (सि०) शुक्ल पक्ष।
जौड़ू—पु० (सि०) जड़युक्त मिट्टी के ढेले।
जौड़ू—वि० (बि०) जुड़वां।
जौड़े—पु० (कु०) चमड़े के जूते।
ज़ौढ़—पु० (कु०) सनक।
जौढ़ा—पु० (कु०) मोटा कांटा।
ज़ौणना—स० क्रि० (कु०) पैदा करना।
जौतन—पु० (कु०) यत्न, कोशिश।
ज़ौदी—अ० (कु०) जिस दिन, जब।
जौन—वि० (शि०) जवान।
जौपणा—स० क्रि० (सि०) जपना, बातचीत करना।
जौपणाए—पु० (शि०, सि०) भाषा, लहज़ा।
जौफिणा—अ० क्रि० (कु०) बालों का उलझ जाना।
जौबरिये—अ० (कु०, शि०, सि०) ज़बरदस्ती।
जौबे—अ० (शि०) जब।
जौमाळा—स्त्री० (कु०) चांदी का गले में लगाया जाने वाला गहना जिसके दाने जौ के आकार के होते हैं।
ज़ौर—पु० (कु०) बुखार।
ज़ौर—पु० (सि०) काई।
ज़ौरा/रे—पु० (कु०) अंधेरे में घड़े के अंदर मिट्टी गोबर में बोए जौ, जो पीले रंग के होने पर फूल की तरह गुच्छा बना कर टोपी, 'परांदी' आदि में लगाए जाते हैं।
ज़ौरिणा—अ० क्रि० (कु०) बुखार आना।
ज़ौरू—पु० (कु०) जूते के तले में लगी कीलें।
जौळ—पु० (कु०) पत्थरों और झाड़ियों से भरा क्षेत्र।
जौलकारा—पु० (शि०) चमक।
जौलड़े—पु० (कु०) मोटी चीज़ जो कूट कर बारीक बना दी गई हो।
ज़ौलणो—अ० क्रि० (शि०) जलना।
ज़ौलना—अ० क्रि० (सि०) जलना।
ज़ौळना—अ० क्रि० (कु०) जलना।
ज़ौलम—पु० (कु०) जन्म, युग।
जौळसा—पु० (शि०) सभा।
जौला—पु० (मं०) शहतीर।
जौला—वि० (शि०) मूर्ख।
ज़ौळू—पु० (सि०) आतंक, डर।
जौळे—स्त्री० (सि०) शहतीरनुमा लकड़ी।
ज़ौल्हणा—स० क्रि० (कु०) मारना, पीटना।
ज़ौल्हिणा—स० क्रि० (कु०) पीटा जाना, हाथों से पीटा जाना।
जौवांटी—वि० (शि०) नौजवान लड़कियां।
जौश—पु० (कु०) यश।
ज़ौस—सर्व० (कु०) 'जो' का कारकीय रूप 'ज़ौसा-बे' (जिसे), 'ज़ौसा-न' (जिससे), 'ज़ौसा-रा' (जिसका) आदि।
जौह—पु० (कु०) इतना घास जो बाजू में उठाया जा सके।
जौहकुदा—वि० (कु०) हिला हुआ।
जौहर—पु० जोश।
जौहर—पु० रत्न।
जौहरी—पु० जवाहरात का रोज़गार करने वाला।
ज्यूक—स्त्री० (चं०) भूमि का कुछ भाग या खेत जो कि माता-पिता द्वारा पुत्रों को ज़मीन बांटते समय अपने लिए रख लिया जाता है और बाद में उसी को मिलता है जो उनकी सेवा व अंतिम संस्कार आदि का दायित्व निभाए।
ज्वाड़—पु० उजाड़, नुकसान, जंगली जानवर व पक्षियों द्वारा पहुंचाई गई क्षति।
ज्वाड़ी—स्त्री० (मं०) एक घरौंदा जिसमें धनुष आकार की लकड़ी को ज़मीन में गाड़ कर उस पर पत्थर रखा जाता है और बीच में लकड़ियां तान दी जाती हैं जिन पर पक्षी के बैठते ही पत्थर गिर जाता है और पक्षी दब कर मर जाता है।
ज्वाड़ू—वि० हानिकारक।
ज्वार—पु० (कां०) पशुओं का चारा।
ज्वाला—स्त्री० दुर्गा मां, ज्वालामुखी।
ज्वाली—स्त्री० (कां०, चं०) युवा।
ज्वीण—स्त्री० (कु०) अजवायन।
ज्हाज—पु० (बि०) जहाज़।

## झ

झ—देवनागरी वर्णमाला में चवर्ग का चौथा वर्ण। उच्चारण स्थान तालु।
झंकार—स्त्री० (शि०) झनकार।
झंखड़—पु० (कां०, बि०, सो०) कंटीली झाड़ियां।
झंखे—वि० (शि०, सि०, सो०) सनकी।
झंगाटी—स्त्री० (कां०) जाल।
झंगाड़—वि० (शि०) सींग मारने वाला (पशु)।
झंगाड़—स्त्री० (ऊ०.कां०) चिंघाड़।

झंगी—स्त्री० (बि०) पेड़ों का घना समूह।
झंजट—पु० कष्ट, मुसीबत, झमेला।
झंजर—स्त्री० (चं०) झांझर।
झंजराटा—पु० (ऊ०, कां०, मं०) विधवा विवाह।
झंजलोरा—पु० (शि०) Samilax aspera.
झंझट—पु० (शि०) झमेला।
झंझणू—पु० (कां०, मं०) आटे में लगने वाला कीड़ा।
झंझणू—पु० (शि०) बच्चों का खिलौना जिसमें झनझन की ध्वनि होती है।
झंझरयाड़ा—पु० (मं०) नीच जातियों में विवाह की एक प्रथा।
झंझरा—स्त्री० (कु०) पायल।
झंझराड़ा—पु० (कां०, चं०) सूक्ष्म विवाह, पहले पति द्वारा त्यागे जाने पर किया गया दूसरा विवाह।
झंझरेड़ा—पु० (चं०) वृक्ष की नई कोपलों को खाने वाले कीट विशेष।
झंझाड़—पु० (बि०) झाड़ियों का समूह।
झंझीड़—पु० (बि०) झाड़ी विशेष में लगने वाला कंटीला फल जो कपड़ों से चिपक जाता है।
झंझीड़ी—स्त्री० (कां०) एक प्रकार का घास।
झंझोटी—स्त्री० (कां०, बि०, सो०) एक लोकगीत जो ऊंचे स्वर में गाया जाता है।
झंझोड़ना—स० क्रि० झकझोरना।
झंड—स्त्री० (कां०) अपमान, मारपीट।
झंडयाग—पु० (मं०) डांटने का भाव।
झंडा—पु० ध्वज।
झंडा—पु० (कां०, ह०, बि०) मक्की के खेत में उगने वाला मक्की जैसा घास।
झंथ—वि० (कां०) मूर्ख।
झंब—स्त्री० (कां०, बि०) वर्षा की बौछार जो दरवाज़े, खिड़की आदि से अंदर आती है। आंख में उंगली या तिनके से लगी मामूली चोट।
झंब—स्त्री० (ह०) तांत्रिक द्वारा लोहे की सांकल या झाडू से भूत झाड़ने की क्रिया।
झंब—पु० (ऊ०, कां०) झाडू।
झंबणा—स० क्रि० (ऊ०, कां०) झाडू से सफाई करना। पीटना।
झंबणा—स० क्रि० (चं०) गिराना।
झंबार—वि० (चं०) फलों को झाड़ने वाला।
झईयां—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) बार-बार गुस्से में दांत पीसने का भाव।
झईयां—स्त्री० (बि०) बेकार ही इधर-उधर भटकने का भाव।
झक—स्त्री० (कां०, चं०) मछली विशेष।
झक—पु० (कां०, चं०) भय, उत्साह, संकोच।
झक—स्त्री० (सि०) चमक का एकदम पड़ा प्रभाव।
झक—स्त्री० (शि०) सनक।
झकझक—स्त्री० (शि०) बकवास।
झकझोड़ना—स० क्रि० (कां०, शि०, सि०) झकझोरना।
झकझोर—पु० (कां०, कु०, चं०) वायु का वेग, झटका।
झकझोलर—पु० (ऊ०, कां०, ह०) कलख।
झकड़याल—पु० ऐसा स्थान जहां बहुत सी कांटेदार झाड़ियां हों।
झकणा—अ० क्रि० (कां०, चं०) संकोच करना।
झकणा—स० क्रि० (कां०) लाठी से चोट मारकर किसी वस्तु को झाड़ना।
झकमक—स्त्री० चमक, दीप्ति।
झकराल—पु० (बि०) खुला घर जिसमें हवा आती रहे।
झकरी—स्त्री० (सि०, बि०) 'अहोई' पूजन हेतु प्रयुक्त मिट्टी का बर्तन जिसमें पकवान डाला जाता है।
झकां:—अ० नीचे, नीचे की ओर।
झकाझक—वि० (शि०) चमाचम, अत्यधिक चमकीला।
झकाणा—स० क्रि० (कां०, बि०) दांत दिखाकर चिढ़ाना।
झकोरना—स० क्रि० (कां०, चं०) फटकारना।
झकोहण—पु० (कु०) रसोईघर में लकड़ी रखने का स्थान।
झक्की—वि० (शि०) सनकी, व्यर्थ बोलने वाला।
झक्ख—स्त्री० (कां०, बि०) आंधी।
झक्खड़—पु० तूफान।
झख—पु० व्यर्थ प्रयत्न।
झखीरा—पु० वृक्षों से युक्त वन, ज़खीरा।
झग—पु० (मं०) हौसला, उत्साह।
झग—पु० (कां०, चं०, बि०) झाग।
झगटू—पु० (सि०) बच्चे की कमीज़।
झगड़खोर—वि० झगड़ा करने वाला।
झगड़नो—अ० क्रि० (शि०, सि०) झगड़ा करना।
झगड़ा—पु० लड़ाई, बखेड़ा।
झगड़ालू—वि० झगड़ा करने वाला।
झगड़ाहणा—स० क्रि० (चं०) लड़ाना।
झगड़ीहणा—अ० क्रि० (चं०) लड़ना।
झगड़ू—वि० झगड़ालू।
झगड़ैल—वि० झगड़ालू।
झगा—पु० (शि०, सि०) लंबा कुर्ता।
झगा—पु० (ऊ०) कुर्ता, कमीज़।
झगी—स्त्री० (मं०) लोकनृत्य का पहनावा।
झगी—स्त्री० (ऊ०, कां०) बनियाइन।
झगू—पु० (बि०) छोटे बच्चे की कमीज़।
झगूड़—पु० (बि०) झाग।
झगूड़ू—पु० (कां०) झाग।
झग्गा—पु० (सि०) छोटे बच्चे की कमीज़।
झघड़णा—अ० क्रि० झगड़ा करना।
झजराड़ा—पु० (ह०) दे० झंजराटा।
झजरी—स्त्री० (कां०, ह०) मिट्टी का छोटा हुक्का।
झजरू—पु० (ऊ०, कां०) मिट्टी अथवा बांस का हुक्का।
झज्जा—पु० (ह०) चढ़ाई वाली भूमि।
झझरी—स्त्री० (कु०, मं०) विवाह के समय पानी भरने के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला पात्र विशेष।
झझरी—स्त्री० (कु०, मं०) मिट्टी की सुराही।
झट—अ० जल्दी।

**झटका**—पु० बकरे को एक ही प्रहार से काटने की विधि।
**झटकेई**—पु० (चं०) कसाई।
**झटचारे**—अ० झटपट।
**झटणा**—स० क्रि० (सि०) आवाज़ लगाना।
**झटपट**—अ० जल्दी, तुरंत।
**झटलुक्णी**—स्त्री० (कां०, बि०, मं०) घास में रहने वाली एक चिड़िया।
**झटाका**—अ० (ऊ०, कां०) जल्दी, अतिशीघ्र।
**झटाणा**—स० क्रि० (कां०, ह०) झुलाना।
**झटारा**—पु० (कां०, कु०, मं०) झूलने की क्रिया।
**झटाला**—अ० (सि०) एकदम।
**झटूंडा**—वि० (ह०) बड़े भाई को मिला पैतृक संपत्ति का अधिक भाग।
**झठेड़ा**—पु० (बि०) जूठे पात्र साफ करने का स्थान।
**झठेरना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) झुठलाना।
**झड़**—पु० आकाश पर कई दिन तक घने बादल छाए रहने तथा शीत लहर चलने की क्रिया।
**झड़**—स्त्री० (शि०) वर्षा।
**झड़काणा**—स० क्रि० (कु०) झंझोड़ना।
**झड़णा/णो**—अ० क्रि० झड़ना, गिरना।
**झड़ना**—अ० क्रि० (कु०) गिर जाना।
**झड़प**—स्त्री० क्रोधपूर्ण कहासुनी।
**झड़पाझड़पी**—स्त्री० (शि०) हाथापाई।
**झड़बड़ेइला**—वि० (शि०) चितकबरा।
**झड़म्म**—पु० (बि०) अस्त-व्यस्त, भारी काम।
**झड़वाना**—स० क्रि० (शि०) दूसरों से फल व पत्ते झाड़ने का कार्य करवाना।
**झड़ाक**—अ० (शि०) तुरंत।
**झड़ाकणा**—स० क्रि० (कु०) झिड़कना, टोकना।
**झड़ाका**—पुं० (कां०, मं०) बेहूदा ढंग से खाने की क्रिया।
**झड़ाका**—अ० (कां०, ह०) अतिशीघ्र।
**झड़ाछिणा**—अ० क्रि० (कु०) अड़चन पड़ जाना।
**झड़ी**—स्त्री० लगातार होने वाली वर्षा।
**झड़ेद**—पु० (शि०) नीचे गिरे हुए फल।
**झड़ोगा**—पु० (बि०, ह०) चारों ओर बादल घिरे रहने पर होने वाला घुटन भरा वातावरण।
**झड़ो**—पु० (शि०) वर्षा का दिन।
**झण**—स्त्री० (चं०) दे० झड़ी।
**झणकार**—स्त्री० (चं०, बि०) झनकार, झन-झन का स्वर।
**झणखड़ा**—वि० (चं०) कमज़ोर।
**झणझण**—स्त्री० (ऊ०, कां०, कु०) झन-झन।
**झणझण**—स्त्री० शरीर के अंगों के सो जाने पर होने वाली सरसराहट।
**झणा**—वि० (सि०) मायके का संबंधी।
**झणाका**—पु० (कां०, चं०, बि०) झनझनाहट। झांकी।
**झणाट**—स्त्री० (कु०) तंग आनेका भाव।
**झणाटणा**—स० क्रि० (कु०) डंडे की सहायता से वृक्ष से फल गिराना।
**झणाटणा**—स० क्रि० (कु०) तंग करना।
**झणाटिणा**— अ० क्रि० (कु०) तंग आ जाना।
**झणूःणू**—स्त्री० (कु०) कंपन, सिहरन।
**झणेरू**—वि० (मं०) पानी लाने वाला।
**झणो**—पु० (शि०) साथी, मित्र।
**झणो**—अ० (मं०) शायद।
**झनक**—स्त्री० (शि०) धातु आदि के परस्पर टकराने का शब्द।
**झनकोर**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) आवाज़।
**झनझन**—पु० छनछन।
**झनवास**—पु० (चं०) Pyrus aucuparia.
**झनाटणा**—स० क्रि० तंग करना।
**झनीणी**—स्त्री० (कु०) कठिनाई।
**झन्नाट**—स्त्री० (सि०) कंपकंपी।
**झन्नाहट**—स्त्री० (शि०) झनकार।
**झपका**—पु० (कु०, सि०) अकस्मात् नींद की झपक।
**झपका**—पु० (शि०) हवा का झोंका।
**झपझप**—स्त्री० (ऊ०, कां०, मं०) चमक, पलकों की झपकी।
**झपझपात**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) सिहरन।
**झपटणा**—स० क्रि० झपटना।
**झपणा**—स० क्रि० (कां०) लाठी से पत्ते आदि झाड़ना, पीटना।
**झपणा**—स० क्रि० (शि०) पलकें बंद करना।
**झपाका**—पु० (कां०, चं०) आंख झपकाने का भाव, झपकी।
**झपाका**—पु० (मं०) झलक।
**झपाटा**—पु० (शि०) आक्रमण, धावा।
**झप्फणा**—स० क्रि० पीटना, मारना, फल उतारना।
**झप्फा**—पु० पकड़, आलिंगन।
**झफ**—स्त्री० (कां०, बि०) झपट, पकड़।
**झफणा**—स० क्रि० (ह०, बि०) डंडे मार कर फसल से दाने निकालना।
**झफणा**—स० क्रि० (कां०, चं०, बि०) झाड़ना।
**झफाई**—स्त्री० (कां०, चं०, बि०) पेड़ पर लगे फूलों को झाड़कर नीचे गिराने की क्रिया, पिटाई।
**झफाणा**—अ० क्रि० (बि०) काम का बिखर जाना। स० क्रि० पिटवाना।
**झफान**—पु० (कां०) झांकी।
**झफारी**—स्त्री० (चं०) फल झाड़ने की प्रक्रिया।
**झब**—स्त्री० (चं०, बि०, सि०) किसी टहनी आदि से लगी चोट।
**झबड़ोणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) किसी को देखकर मुख की अद्भुत आकृति बनाना।
**झबदू**—वि० (शि०) बेवकूफ।
**झबलेरना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) पानी में डालना, शीघ्रता से पानी में कपड़ों को डुबोना।
**झबळ**—स्त्री० गड्ढा खोदने या ज़मीन से पत्थर निकालने का लोहे का उपकरण।
**झबळा**—पु० (चं०) धुंधला, थोड़ा अंधेरा।
**झबलोणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) अपने ऊपर थोड़ा

सा पानी डालना, नाममात्र का स्नान करना।
**झबाड़**—स्त्री० (मं०) शिशु के रोने का भाव।
**झबूड़**—स्त्री० (सि०, ह०) मुंह से निकलने वाली झाग।
**झबोणा**—स० क्रि० (कां०) झाड़ू द्वारा हटाना।
**झब्बल**—पु० ज़मीन से पत्थर निकालने का लोहे का उपकरण।
**झमक**—स्त्री० (शि०) चमक।
**झमकणा**—अ० क्रि० (शि०) कम होना।
**झमकणा**—अ० क्रि० (सि०) बेढंगा नाचना, झूमना।
**झमकणा**—अ० क्रि० (चं०) वर्षा का कम होना।
**झमकाणा**—अ० क्रि० (कां०) टिमटिमाना।
**झमणा**—पु० (बि०) दे० झमणा।
**झमणा**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) पालकी के ऊपर का विशेष पर्दा जिसमें गोटा-किनारी और चांदी इत्यादि के कलश जुड़े हों।
**झमलाना**—अ० क्रि० (शि०) रह-रह कर चमकना।
**झमलोश**—पु० (शि०) Lonicera Cngustifolia.
**झमाई**—स्त्री० उबासी।
**झमाकड़ा**—पु० (कां०, बि०) एक प्रकार का नाच जो विवाह पर वर या वधु को स्नान करवाते समय गाली देते हुए किया जाता है।
**झमाकणा**—स० क्रि० आंख को खोलना और बंद करना।
**झमाका**—पु० चमक।
**झमाक्का**—पु० (कां०) झलक।
**झमीरड़ी**—स्त्री० (मं०) अम्लीय फल।
**झमीरू**—पु० (कां०, चं०) संतरा प्रजाति का एक खट्टा फल।
**झमु**—पु० (कु०) थम जाने का भाव।
**झमेला**—पु० (कु०) अत्यधिक कार्य।
**झमेला**—पु० झंझट।
**झयावणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) जगाना।
**झयूणी**—स्त्री० (कां०, ह०) मछलियों को पकड़ने के लिए नदी में लगाया गया जाल।
**झर**—स्त्री० (कु०) देखकर ईर्ष्या होने का भाव।
**झरका**—पु० (कु०) लंबे-चौड़े पत्तों वाला एक पौधा जिसके कच्चे पत्तों की सब्जी भी बनती है।
**झरगड़**—पु० (बि०, ह०) नदी किनारे का पथरीला व दुर्गम रास्ता।
**झरझर**—स्त्री० (चं०) तीव्र गति से पानी गिरने का स्वर।
**झरड़ाणा**—स० क्रि० (कां०, चं०) किसी से उपहास करना।
**झरड़ाना**—स० क्रि० (कां०, चं०) छेड़ना।
**झरड़ोटी**—स्त्री० (चं०) चूल्हे के बीच में लगा पत्थर का एक टुकड़ा जो आग को आगे और पीछे धकेलने का काम करता है।
**झरना**—अ० क्रि० (मं०) मुरझाना, कमज़ोर होना; निचुड़ना।
**झरना**—पु० (कु०, सि०) तेल में तले पकवान को निकालने के लिए बनी दस्ते वाली छलनी।
**झरयाड़ी**—स्त्री० (चं०) घराट के नीचे का स्थान।
**झरलू**—पु० (कु०, चं०, बि०) वशीकरण।
**झरलू**—पु० (शि०) खमियाज़ा, बदला, दंड।
**झरलोधान**—पु० (शि०) कांटे वाला धान।
**झराःण**—स्त्री० (कु०) बिच्छूबूटी।
**झराकड़ा**—पु० (सो०) मक्की के जड़ों वाले डंठल में लगी लपटयुक्त आग।
**झरागड़**—पु० (बि०) फलों का गुच्छा।
**झराड़ा**—पु० (सि०) कपड़े फाड़ने का भाव।
**झराण**—स्त्री० (कु०) चिंता।
**झराळू**—वि० (कु०) दयालु।
**झरींग**—स्त्री० (सि०) खुरचन।
**झरींगणा**—अ० क्रि० (कु०) गुस्से में ज़ोर से बोलना।
**झरींदा**—पु० (सि०) दरवाज़े में लगे तख्ते।
**झरी**—स्त्री० लकड़ी में गहरी रेखा बनाने का एक उपकरण; लकड़ी में डाली रेखा।
**झरी**—स्त्री० (शि०) चिंतित होने का भाव; प्रेम।
**झरुणाना**—स० क्रि० (कु०) मसलना।
**झरे**—स्त्री० (शि०) चिंता।
**झरेर**—स्त्री० (सि०) जुकाम आदि में गले में होने वाली जलन।
**झरेला**—वि० (कु०) खुरदरा।
**झरोकणा**—स० क्रि० (कु०) तंग करना, चोंच से मारना।
**झरोखा**—पु० (कां०, बि०) दीवार में किया व्यवस्थित बड़ा सुराख।
**झरोड़ना**—स० क्रि० (कु०) दियासलाई जलाना, रगड़ना।
**झरोड़िना**—अ० क्रि० (कु०) किसी झाड़ी आदि से शरीर में खरोंच लगना, रगड़ लग जाना।
**झर्णा**—पु० (शि०) तले हुए पकवान को कड़ाही से निकालने की हत्थी वाली छलनी।
**झल**—स्त्री० (शि०) चमक।
**झल**—स्त्री० (चं०) धुएं की कालिख।
**झल**—पु० (ऊ०, कां०) पंखे से हवा करने की क्रिया।
**झलकणा**—अ० क्रि० (शि०) चमकना
**झलकदा**—वि० (कु०) इतना ज़्यादा गर्म जो जला दे।
**झलका**—पु० (कां०, चं०) तमाशा।
**झलका**—पु० (शि०, सि०) भय का साधारण आभास।
**झलकी**—स्त्री० (शि०) दृश्य; आंख झपकने की क्रिया।
**झलको**—वि० (शि०, सि०) ढीला (वस्त्र)।
**झलझल**—स्त्री० (शि०) चमक-दमक।
**झलणा**—स० क्रि० सहन करना।
**झलमल**—स्त्री० (शि०) अल्प प्रकाश।
**झलमल**—स्त्री० (ऊ०, कां०) झिलमिल।
**झलमल**—वि० (शि०) खूब चमकता हुआ।
**झलमलाणा**—अ० क्रि० (शि०) तेज़ प्रकाश से आंखों का बंद होना व खुलना।
**झलरांग**—स्त्री० (सो०) धुएं की कालिख जो रसोई की छत या दीवारों में लगी हो।
**झलसोणा**—अ० क्रि० झुलसना।
**झला**—पु० (ह०) एक विशेष कांटेदार सूंडी।

**झला**—पु० (ह०) फसलों की बीमारी।
**झळा**—पु० (चं०) आंसू।
**झलाकड़ा**—पु० (शि०) बारीक लकड़ियों में लगी भभकती आग।
**झलाका**—पु० (चं०) चमक।
**झलाका**—पु०(कु०) पानी आदि के छलकने का भाव।
**झलाणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) बच्चे को पालने में सुलाना।
**झलाणा**—स० क्रि० (कु०) शिशु को सुलाने के लिए गोद में लेकर धीरे-धीरे घुमाना।
**झलारा**—पु० (बि०) हवा का झोंका, झूले में दिया गया धक्का।
**झलारा**—पु० (कु०) नींद की झपकी, टहनियों के झूलने की क्रिया।
**झलारा**—पु० (शि०, सि०) चमक।
**झली**—वि० (कु०) सीधा-सादा।
**झळी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) हरी पत्तियां खाने वाला विशेष कीट।
**झलीहणा**—अ० क्रि० (चं०) पागल होना।
**झलूटा**—वि० (चं०) पागल।
**झलेया**—वि० (सि०) शरारती।
**झलैपड़ा**—वि० (कां०, चं०) पागल।
**झलोंगी**—वि० (कु०) ढीला-ढाला।
**झळो**—पु० (कु०) चावलों को धोते हुए निकला गंदा पानी।
**झलोगी**—वि० (कु०) दे० झलोंगी।
**झलोटी**—स्त्री० (कां०, चं०) आंच को चूल्हे के पिछले भाग में जाने से रोकने के लिए लगा पत्थर।
**झलोणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) झेलना।
**झल्ल**—पु० (कां०, कु०) वेग से नदी में आए पानी से उभरा झाग।
**झल्ल**—स्त्री० (शि०) दिमागी सनक।
**झल्ला**—वि० सीधा, मूर्ख।
**झल्ली**—स्त्री० (कां०) कृत्रिम वायु देने के लिए चादर हिलाकर वायु करने का भाव।
**झवाट्टी**—वि० (कां०, शि०) झगड़ालू।
**झवार**—पु० (मं०) वृक्षों का झुरमुट जिनके नीचे अनाज न उपजे।
**झश**—पु० (शि०, सि०) अचानक मन को लगा धक्का।
**झशका**—पु० (सि०) जादू, नज़र लगने का भाव।
**झशणा**— उ० क्रि० (सो०) टकोर देना, मालिश करना।
**झशवली**—स्त्री० (सि०) एकदम जलने का भाव।
**झस**—अ० (कु०) जल्दी, शीघ्र।
**झसका**—पु० (कु०) आग की झुलस।
**झसणा**—स० क्रि० (कां०, बं०, बि०) मलना, मालिश करना। पीटना।
**झसराट**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) मामूली सी रगड़।
**झसोणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) खुजलाना, खारिश करना।

**झांकणा**—अ० क्रि० झांकना।
**झांकी**—स्त्री० (शि०) दृश्य।
**झांग**—स्त्री० (कां०, बि०) मुर्गे की बांग।
**झांग**—स्त्री० (कु०) दे० झांग।
**झांगड़ा**—पु० (कु०) मंड़ाई के बाद बचा हुआ घास मिश्रित अन्न।
**झांगणा**—वि० (मं०) भोला।
**झांगणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) मारना, सींग मारना।
**झांगरी**—स्त्री० (शि०) देवता की पालकी में सजाए गए सुरा-गाय की पूंछ के लंबे बाल।
**झांगरी/रु**—स्त्री० (शि०) पुरुष के सिर के लंबे बाल।
**झांजर**—स्त्री० पैर में पहनने का चांदी का आभूषण।
**झांजरी**—स्त्री० (शि०) हुक्का।
**झांजी**—स्त्री० (शि०) एक प्रसिद्ध लोकगीत।
**झांजीहना**—अ० क्रि० (चं०) उदास होना।
**झांजे**—स्त्री० (शि०) कलगी।
**झांझ**—पु० (शि०) झंझट।
**झांझड़ी**—स्त्री० (शि०) पायल।
**झांझर**—वि० (शि०) पुराना।
**झांड़ा**—पु० (मं०) देवताओं का खेलने या प्रकट होने का भाव।
**झांडो**—स्त्री० (शि०) कुकुरमुत्ता की एक किस्म जिसमें विशेष प्रकार की गंध होती है।
**झांत**—पु० (सि०, शि०, सो०) Adiantum pedatum.
**झांती**—स्त्री० (कां०, बि०) झलक।
**झांपड़**—पु० (शि०) ज़ोरदार तमाचा।
**झांफू**—पु० (कां०, बि०) चीड़ और चाय के पौधों की कटी हुई टहनियां जो ईंधन के रूप में प्रयुक्त की जाती हैं।
**झांब**—पु० (शि०) सूर्य की किरणों का ताप।
**झांव**—पु० (मं०) पांव साफ करने के लिए मिट्टी का बना खुरदरा उपकरण जिससे एड़ियों की मैल साफ की जाती है।
**झांब**—पु० (ऊ०, मं०, बि०) कस्सी, बड़ा कुदाल।
**झांबड़**—स्त्री० (कां०) दरवाज़े या खिड़की से अंदर आने वाली वर्षा की बौछार।
**झांबड़**—पु० (कां०, मं०, सो०) बिखरे लंबे बाल।
**झांबड़ी**—स्त्री० (मं०) बिखरे बालों वाली।
**झांबड़ी**—स्त्री० (कां०) आलिंगन, गले मिलने का भाव।
**झांबडू**—वि० (शि०) लंबे बालों वाला।
**झांबरा**—पु० (मं०) परछाईं।
**झांबलगणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, मं०) आंख में किसी वस्तु का स्पर्श होना।
**झांबा**—पु० (सि०) बेलों को चढ़ाने के लिए भूमि में गाड़ा गया टहनियों युक्त लंबा डंडा।
**झांमण**—पु० (शि०) पालकी पर डाला जाने वाला रेशमी कपड़ा।
**झांवां**—पु० मिट्टी का बना एक खुरदरा उपकरण जिससे पैरों की मैल साफ की जाती है।
**झांसा**—पु० ठगी, धोखा।
**झा:क**—स्त्री० (सि०) फिक्र, चिंता।
**झा:का**—पु० (सि०) शोर, शोरशराबा।
**झा:ड़णा**—अ० क्रि० (सि०) छटपटाना।

**झा.र**—पु० (कु०) झाड़ी।
**झा.ल**—स्त्री० (शि०, सि०) शरारत। पागलपन।
**झा**—स्त्री० (सि०) आंच, ताप।
**झाउंशा**—पु० (कु०) चढ़ाई।
**झाऊं**—अ० (कु०) ऊपर।
**झाऊंनियाऊं**—अ० (कु०) ऊपर-नीचे।
**झाऊंमाऊं**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) इधर-उधर, बुड़बुड़ाने की क्रिया। आंखों से साफ न दिखाई देने का भाव।
**झाऊ**—पु० (चं०) एक पौधा जिसकी पत्तियां कूटकर पशु-रोगों के उपचार के लिए प्रयुक्त होती हैं।
**झाऊ**—पु० (सि०) एक प्रकार का घास जो ऊसर भूमि में पैदा होता है।
**झाऊ**—पु० (सि०) Tamarix dioice.
**झाए**—पु० (कां०) सूंड़ी के छोटे-छोटे ज़हरीले बाल, कांटे या रेशे।
**झाओड़ा**—पु० (मं०) बादलहीन आकाश में दामिनी की चमक।
**झाक**—पु० (कां०, बि०) दृष्टि।
**झाक**—स्त्री० (कु०) प्रतिबिंब, चमक।
**झाकड़**—पु० (शि०) झाड़ियां।
**झाकड़ी**—स्त्री० (सि०) लकड़ी।
**झाकणा**—अ० (कां०) प्रात:काल।
**झाकणा**—अ० क्रि० झांकना, किसी को खाते देखकर व्यर्थ में खाने की इच्छा करना।
**झाकली**—वि० (शि०) पागल।
**झाका**—पु० (मं०) शर्म।
**झाकीणो**—अ० क्रि० (शि०) डटना।
**झाकूओ**—पु० (शि०) भूत-प्रेत की छाया।
**झाखड़**—पु० (सि०) झाड़ियां।
**झाखड़े**—स्त्री० (शि०) काम के बदले दिया जाने वाला अनाज।
**झाखणा**—स० क्रि० बच्चे पर कुदृष्टि रखना।
**झागड़ू**—वि० (चं०) झगड़ालू।
**झाज़**—स्त्री० (कां०, कु०) जहाज़।
**झाझटी**—स्त्री० (मं०) मिट्टी का हुक्का।
**झाझड़ा**—पु० (कां०, सि०) दूसरा विवाह।
**झाट**—स्त्री० (कु०) शोभा।
**झाटदार**—वि० (कु०) शोभायुक्त।
**झाटा**—पु० (कु०, शि०, सि०) वर्णसंकर औलाद।
**झाटा**—पु० (सि०) लंबे बाल।
**झाटा**—पु० (बि०) खुले बिखरे बाल।
**झाटी**—स्त्री० (ह०) दही बिलोने का पात्र।
**झाटो**—वि० (कु०) शरारती।
**झाटो**—वि० (कु०) शैतान।
**झाटो**—स्त्री० (सि०) पीड़ा।
**झाठी**—स्त्री० (चं०) गर्मियों में रहने का कोठा।
**झाड़**—पु० (सि०) लंबे-लंबे बाल।
**झाड़**—स्त्री० डांट, डपट, मार।
**झाड़**—स्त्री० (सि०) उपज।
**झाड़**—पु० (शि०) झाड़ियों का झुंड।
**झाड़झखार**—पु० घनी झाड़ियां, घनी झाड़ियों वाला क्षेत्र।
**झाड़णा**—स० क्रि० (सि०) पोंछना।
**झाड़णा**—स० क्रि० नीचे गिराना, झाड़ना।
**झाड़न**—पु० धूल आदि साफ करने का कपड़ा।
**झाड़ना**—स० क्रि० (कु०, मं०) एक तांत्रिक क्रिया जिसमें आग के चमत्कार द्वारा पानी को एक बड़े घड़े में सोखकर एक विशेष शब्द उत्पन्न होता है जिसका अर्थ लोक धारणा में बाहर निकलना होता है।
**झाड़ना**—स० क्रि० झाड़-फूंक करना।
**झाड़ना**—स० क्रि० फटकारना, साफ करना।
**झाड़ना**—स० क्रि० (मं०) फल उतारना।
**झाड़ना**—स० क्रि० (कु०) इकट्ठा करना, सिकोड़ना।
**झाड़ना**—स० क्रि० (कु०) गिराना।
**झाड़पूंछ**—स्त्री० (शि०) झाड़पोंछ, घर की सफाई।
**झाड़फूंक**—स्त्री० (शि०) मंत्रों द्वारा बुरी छाया उतारने की क्रिया।
**झाड़ा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) शौच।
**झाड़ा**—पु० (कु०, मं०) किसी देवता के गूर द्वारा देवता तथा राक्षस के दोष का पता लगाने की क्रिया।
**झाड़िणो**—स० क्रि० (शि०) इनकार करना। अ० क्रि० क्रोध आना।
**झाड़िना**—अ० क्रि० (कु०) सिकुड़ जाना। स० क्रि० इकट्ठा किया जाना।
**झाण**—स्त्री० (चं०) एक ही काम से होने वाली उकताहट, झुंझलाहट।
**झाण**—पु० (कु०) गुस्सा।
**झाण**—स्त्री० (शि०, सि०) किसी व्यक्ति में देवशक्ति का प्रवेश।
**झाण**—स्त्री० (कां०, बि०) अनेक टांगों वाला रेंगकर चलने वाला कई रंगों का जीव जिसकी पीठ पर कांटे होते हैं जिनके लगने से सोजिश आ जाती है।
**झाण-माणा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) नज़र के कमज़ोर होने का भाव।
**झाणे**—अ० (चं०) न जाने, पता नहीं, सम्भवत:।
**झाती**—स्त्री० (कां०, ह०) झलक, झांकी।
**झाथर/रू**—वि० (कु०) उलझे हुए तथा बिखरे बालों वाला।
**झाथा**—पु० (शि०, सि०) अस्तव्यस्त केश समूह।
**झाथी**—वि० (कु०) लंबे केशों वाला।
**झानखां**—पु० (कां०, बि०) अत्यधिक चालाक।
**झापड़**—पु० (शि०) थप्पड़।
**झापणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) पतले पदार्थ को जल्दी-जल्दी खाना, पीना।
**झापिणों**—अ० क्रि० (शि०) गुदगुदी होना।
**झाफ**—पु० (कु०) प्रयत्न।
**झाफा-बाहणा**—स० क्रि० (कु०) झाड़फूंक करना।
**झाफी मारना**—स० क्रि० (सि०) गले मिलना।
**झाफू**—पु० (कां०) चाय के पौधों को काटकर झाड़े हुए सूखे पत्ते। कटी हुई लकड़ियां।
**झाबरा**—पु० (कां०) चौड़े मुंह वाला पतीला।

झाबरु—पु० (कां०) चौड़े मुंह वाला छोटा पतीला।
झाबळ—स्त्री० (कु०) दे० 'झब्बल'।
झाबा—पु० (शि०) आंख में पड़ा सफेद या लाल दाग।
झाबुळ—स्त्री० (शि०) दे० झाबळ।
झाबोल—स्त्री० (सि०) दे० झाबळ।
झामक—पु० (शि०) पैर साफ करने का खुरदरा पत्थर।
झामका—पु० (कु०) कुदृष्टि।
झामण—पु० (कु०) घूंघट, वर्षा में सिर के ऊपर लिया कपड़ा, ओढ़न।
झामण—पु० (सि०) पालकी के ऊपर का गोटे, किनारी से जड़ा कपड़ा।
झामण—पु० (कु०) दर्पण का प्रतिबिंब।
झामत—स्त्री० हजामत।
झामथा—पु० (शि०, सि०) वर्षा आदि के कम होने का भाव।
झामर—पु० (सि०, सो०, शि०) Ehretia laens.
झामर—पु० (शि०) एक प्रकार का आभूषण।
झामरो—वि० (शि० सि०) घायल, धुंधला।
झामला—वि० (शि०) धुंधला।
झामाका—पु० (कु०) चमत्कार।
झायणा—अ० क्रि० (कु०) संतुष्टि होना।
झार—पु० (कु०) आलू की जड़ें।
झारका—पु० (चं०) भ्रांति।
झारना—पु० (चं०, ह०) जाली लगी खिड़की।
झारना—पु० (सो०) निचोड़ने का उपकरण।
झारना—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मिठाई बनाने का हत्थी लगा लोहे का छिद्रयुक्त उपकरण।
झारी—स्त्री० (कु०) सुराही के आकार की एक लंबी गड़वी जिसमें देव स्नान के लिए पानी ले जाया जाता है।
झाल—वि० (ऊ०, कां०, ह०) कठिनाई, वेदना।
झाल—पु० (शि०, सि०, सो०) कांटेदार झाड़ियां।
झाळ—पु० (कां०) पराया बोझ।
झाळ—स्त्री० (कां०) सरसों आदि के तेल की तीखी गंध।
झाळ—पु० (सि०) झरना।
झालकरा—वि० (शि०) पागल।
झालणा—स० क्रि (चं०) गाही जा रही फसल के ऊपरी घास को अलग करना।
झालर—स्त्री० (मं०) लकड़ी की बनी झालर जो ऐतिहासिक इमारतों में सजी रहती है।
झालरै—स्त्री० (कु०) स्त्री के सिर का आभूषण।
झालरो—पु० (शि०) बहुत सी लकड़ियों को इकट्ठा जलाने का भाव।
झाला—पु० (मं०, शि०) वर्णसंकर संतान।
झाला/लू—पु० (शि०, सि०) पागल।
झालु—वि० (शि०, सो०) वर्णसंकर।
झालू—पु० (सि०) चिमनी।
झालू—पु० (शि०) समस्त वस्तुओं को नष्ट करने का भाव।
झाळू—पु० (कु०) पसीना।
झाशण—स्त्री० (कु०) दाद।
झाशण—स्त्री० ((शि०) कंबलकीड़ा।
झाशा—पु० (सो०) दिखावा।
झासणा—स० क्रि० (सि०) मलना।
झासणा—स० क्रि० (कु०) भूनना। गर्म तेल से मालिश करना।
झासौ—पु० (शि०) प्रलोभन।
झाह—पु० (चं०) एक कीट विशेष।
झाह—स्त्री० (कु०) धुएं की कालिख, भाप।
झाह—स्त्री० (कु०) साहस।
झाहणी—अ० (कु०, शि०) पता नहीं।
झिंउर—पु० (शि०) मछुआ।
झिंचणी—स्त्री० (कु०) रस्सी का झूला।
झिंजण—पु० (कां०, कु०, बि०) बासमती की स्थानीय किस्म।
झिंझण—पु० (चं०) दे० झिंजण।
झिंझोरा—पु० (सि०) Bauhinia malabarica. अश्मंतक, एक लता विशेष।
झिंबड़े—पु० (मं०) बारीक लकड़ियां।
झिंह—स्त्री० (कु०) उदासी।
झिंहिणा—अ० क्रि० (कु०) उदासी या मायूसी होना।
झिक—अ० (ऊ०, कां०, बि०) नीचे।
झिक—स्त्री० (कु०) घृणा।
झिकड़—पु० (कु०) ऊन का मोटा पट्टू।
झिकड़ा—पु० (मं०) बैलों के मुंह में लगाया जाने वाला छीका।
झिकडारू—पु० (चं०) जंगली आड़ू।
झिकथा—पु० (सि०) चियड़ा, फटा-पुराना कपड़ा।
झिकमिक— पु० (कां०, कु०) टिम-टिम, धीमा प्रकाश।
झिकला—वि० नीचे रहने वाला।
झिक्क—स्त्री० (मं०) छींक।
झिक्कड़—पु० (कां०) आंखों का मैल।
झिखणा—अ० क्रि० (सि०) संकोच या डर के बात करना, झिझकना।
झिखलु—पु० (सि०) कपड़े।
झिखले—पु० (सो०) पुराने कपड़े।
झिजक—स्त्री० संकोच, लज्जा।
झिजकणा—अ० क्रि० संकोच करना, डरना।
झिजड़ू—पु० (बि०) Xanthium strumarium. अर्जुन का पेड़।
झिझू—पु० (चं०) बच्चे द्वारा पकाई छोटी रोटी।
झिट्टी—स्त्री० (चं०) बोने के लिए खेत तैयार करने की प्रक्रिया।
झिट्टी—स्त्री० (चं०) बेकार झाड़ियां।
झिड़कणा— स० क्रि० डांटना।
झिड़की—स्त्री० डांट।
झिड़कू—पु० (चं०) छोटी सी रोटी।
झिड़कोण—स्त्री० (सि०) झिड़की।

**झिड़खणा**—स० क्रि (चं०) दे० झिड़कणा।
**झिडणो**—स० क्रि० (शि०) खींचना।
**झिड़ी**—स्त्री० (कां०) घनी झाड़ियों वाला स्थान।
**झिड़ी**—स्त्री० (कु०) घनी झाड़ियां।
**झिणी**—स्त्री० (कां०) लंबी किस्म का धान।
**झिणीणा**—अ० क्रि० (चं०) झुंझलाना।
**झिणु**—पु० (शि०) देवता, मिट्टी की बनी देवमूर्तियां।
**झिणुआं**—पु० (कां०) धान की एक किस्म।
**झिमटी**—स्त्री० (कु०) सिर के बीच उस्तरे से साफ और दोनों ओर लंबे बाल।
**झिमड़ी**—स्त्री० (शि०) मधुमक्खी प्रजाति की एक विषैली मक्खी।
**झिमा**—वि० (सि०) धुंधला।
**झियां**—स्त्री० (कु०) लीर।
**झिरकळ**—वि० (चं०) बहुत पतला कपड़ा।
**झिरखड़**—स्त्री० (कां०) झीवरों की बस्ती।
**झिरड़ा**—वि० (चं०) अनथक, सहनशील।
**झिल**—स्त्री० (कां०, मं०, चं०) कांटेदार झाड़ी।
**झिलमिल**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) चमक।
**झिलमिला**—वि० (शि०) नाम मात्र का प्रकाश।
**झिली**—स्त्री० (कु०) बारीक परत।
**झिल्ली**—स्त्री० चर्बी की परत।
**झिश**—स्त्री० (कु०) दे० झीश।
**झिशार**— पु० (शि०) नाश्ता।
**झिशि**—स्त्री० (शि०) दे० झीश।
**झिशो**—स्त्री० (सि०) दे० झीश।
**झिस**—स्त्री० (चं०) डांट, झिड़की।
**झिसो**—स्त्री० (चं०) दे० झीश।
**झिहरू**—पु० (कु०) माघ महीने में एक लोकनाट्य के बीच गाए जाने वाले अश्लील गीत।
**झिहल**—स्त्री० (ह०) कांटेदार झाड़ी।
**झींअर**—पु० (सि०) झीमर, मछुआ।
**झींउण**—पु० (कु०) खीरा, कद्दू आदि की बेलों को सहारा देने के लिए ज़मीन में गाड़ा गया टहनियों युक्त डंडा।
**झींग**—स्त्री० (कु०) ज़ोर से चीख मारकर बोलने की प्रक्रिया।
**झींगट**—पु० (कु०) घर के कार्य से अवकाश न होने का भाव।
**झींगड़**—वि० (ऊ०, कां०) महामूर्ख।
**झींगड़**—पु० (सि०, सो०, शि०) Lannea coromendelica.
**झींगणा**—स० क्रि० (शि०) पशुओं द्वारा सींग से मारना।
**झींगुर**—पु० (शि०) एक प्रकार का कीट जो वर्षा ऋतु में रात के समय झन-झन शब्द करता है।
**झींची**—स्त्री० (कां०, कु०, मं०) तीखी चोंच व तेज़ आवाज़ वाला पक्षी।
**झींची**—स्त्री० (कु०) एक चर्मरोग जिसमें शरीर में सफेद दाग पड़ जाते हैं, यदि काले दाग पड़ते हों तो 'काली झींची' कहते हैं।
**झींपू**—पु० (कु०) फांसी।
**झींझरा**—पु० (मं०) एक प्रकार का घास जिससे झाड़ू बनाए जाते हैं।
**झींझापरी**—स्त्री० (कु०) किसी चीज़ या काम के पीछे पड़ना जब तक वह पूरा न हो जाए।
**झींवर**—पु० (शि०, सो०) कहार, मछुआ, मांझी।
**झींहरू**—पु० (मं०) भारी वस्तु को ढोते समय सामूहिक रूप से गाए जाने वाले टप्पे।
**झींहरू**—पु० (सि०) अश्लील व बेढब नृत्य।
**झीक**—स्त्री० (कु०) क्रोध, गुस्सा।
**झीकड़**—पु० (कु०) कंबल।
**झीकड़े**—पु० (कु०) कपड़े।
**झीकणा**—अ० क्रि० (सि०) हिलना।
**झीकिणा**—अ० क्रि (कु०) गुस्सा होना, चिढ़ना।
**झीखड़**—पु० (मं०) शरीर पर लपेटने का पट्टू।
**झीखणा**—अ० क्रि (मं०, शि०) गुस्सा करना, चिढ़ना।
**झीखणा**—अ० क्रि (सि०) डरना, झिझकना।
**झीखूणा**— स० क्रि० (कु०) ज़िद करना।
**झीचा**—पु० (कु०) दो सिरों वाली लकड़ी।
**झीझक**—स्त्री० (कु०) झिझकने का भाव।
**झीझड़ा**— पु० (कु०) ऐसा भोजन जिसमें बहुत सी चीजें मिली होती हैं।
**झीट**—पु० (सि०, सो०) कांटेदार झाड़ी।
**झीडणा**—स० क्रि० (कु०) निभाना, खींचना।
**झीड़ना**—अ० क्रि० (कु०) कांपना।
**झीडिणा**—स० क्रि० (कु०) निभाया जाना, खींचा जाना।
**झीण**—स्त्री० (मं०) आलिंगन।
**झीणू**—पु० (मं०) धान की एक किस्म।
**झीफ**—पु० (कु०) घना घास या झाड़ियां।
**झीफिणा**— अ० क्रि० (कु०) खेत में अधिक घास-झाड़ियां उगना जिससे वहां खेती करना दूभर हो जाए।
**झीबड़ी**—स्त्री० (कु०, शि०) चितकबरी भेड़।
**झीबड़ो**—पु० (कु०, शि०) चितकबरा मेढ़ा।
**झीमझीम**—स्त्री० (कु०) रिमझिम।
**झीमड़ी**—स्त्री० (मं०) दे० झिमड़ी।
**झीयुण**—स्त्री० (मं०) दे० झींउण।
**झीर**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) पानी भरने वाला कहार, मछुआरा, मल्लाह।
**झीर**—पु० (मं०, बि०) हवाई जहाज़ की शक्ल का उड़ने वाला कीट।
**झीर**—पु० (कु०) मछुआरा।
**झीर**—स्त्री० (कु०) जलाने की पतली लकड़ी या ऐसी लकड़ी जिसे चीरकर बारीक-बारीक कर दिया गया हो।
**झीरक**—पु० (कु०) नस्ल के लिए पाला बकरा।
**झीरा**—स्त्री० (कु०) खीरे की लंबी-लंबी फांकें।
**झीरी**—स्त्री० (शि०) दरार।
**झील**—स्त्री० चारों ओर भूमि से घिरा एक प्राकृतिक जलाशय।
**झीलड़ा**—पु० (कु०) वृक्षों की बड़ी टहनियां।
**झीश**——स्त्री० (कु०) प्रातः, सुबह।

झीशा—वि० (कु०) प्रातः कालीन।
झीशा—स्त्री० (मं०) किरणें, रश्मियां।
झीशिदा—वि० (सि०) सूर्योदय से पहले का।
झीशी—स्त्री० (शि०) प्रातः काल।
झीशो—स्त्री० (सि०) दे० झीश।
झीह—स्त्री० (कु०) सिहरन।
झीहाठुणा—अ० क्रि० (कु०) झगड़ा करना।
झुं.क—स्त्री० (सि०) चिंगारी।
झुंग—स्त्री० (कु०) झोंपड़ी।
झुंगड़मुंगड़—पु० (सो०) सिर और टांगे इकट्ठी करके सोने का भाव।
झुंगड़मुंगड़—वि० (कां०, ह०) अनाप-शनाप।
झुंगणा—स० क्रि० (कां०) बाल काटना।
झुंगल—पु० (कां०) वाद-विवाद।
झुंगा—पु० (उ०, कां०, ह०) भिक्षा।
झुंगा—पु० (सि०) सामर्थ्य, औकात।
झुंगी—स्त्री० (चं०) कैंची की तरह का ऊन काटने का उपकरण।
झुंगीणा—अ० क्रि० (चं०) घाटा खाना।
झुंग्गी—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) अस्थाई झोंपड़ी।
झुंजकणा—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) हिलाकर देखना, झकझोरना।
झुंझका—पु० (शि०, सि०, सो०) धक्का।
झुंड—पु० (ऊ०, कां०, ह०) झाड़ी; तने से कटा जड़ समेत शेष भाग।
झुंडखरा—पु० (सो०) ठुंठ।
झुंड—वि० (ऊ०, कां०, ह०) पक्की उम्र का, बहुत आयु का।
झुंफड़ी/ड़े—स्त्री० (शि०, सि०) झोंपड़ी।
झुंब—पु० (ऊ०, कां०, ह०) वर्षा के समय ओढ़ा जाने वाला टाट या कपड़ा आदि।
झुंब—पु० (कां०, बि०) मक्की की काटी हुई फसल को एक जगह खड़ा और इकट्ठा करने की प्रक्रिया।
झुंबड़ी—स्त्री० (कु०, चं०) बस्ती।
झुंबड़ेल—पु० (चं०) एक प्रकार का मुज़ारा जो अपने ज़मींदार का काम आदि कर देता है और कुछ ज़मीन अपने लिए बोता है।
झुंबर—पु० (कां०, बि०, ह०) कान का आभूषण।
झुंहड़—स्त्री० (मं०) नंगे पैर में पत्थर आदि से ठोकर लगने का भाव।
झुआं—स्त्री० (कां०, चं०) चर्म जूं, पशुओं को लगने वाली जूं।
झुआंकणा—स० क्रि० (कु०) खाना, दांत से काटना, बुरी तरह से काटना।
झुआरा—पु० (कु०) छाया।
झुआरी—स्त्री० (कु०) मधुमक्खी का झुंड।
झुई—स्त्री० (मं०) कपड़ा फटने की ध्वनि।
झुएरना—स० क्रि० (कु०) गुस्सा दिलाना।
झुक—अ० (कु०) अचानक डरने का भाव।
झुकड़ी—स्त्री० (शि०) सूखी लकड़ियां।
झुकणा—अ० क्रि० झुकना।
झुकणो—अ० क्रि० (शि०) उबलना, खौलना।
झुका—पु० (कु०) बारीक लकड़ियां।
झुकार—पु० (शि०) हवा का झोंका।
झुखड़ारे—स्त्री० (शि०) ईंधन के लिए लकड़ी एकत्र करने वाली स्त्री।
झुखड़ारो—पु० (शि०) ईंधन लाने वाला पुरुष।
झुखा—पु० (कु०) उलझन, गुत्थी।
झुग्गा—पु० (बि०) घर।
झुझुड़—पु० (शि०) चिथड़ा।
झुटड़ी—स्त्री० (सि०) पहली बार ब्याने वाली भैंस।
झुटणा—अ० क्रि० (बि०) झूलना।
झुटणा—स० क्रि० (कु०) पीना।
झुटणा—अ० क्रि० (कु०) लटकना।
झुटणो—स० क्रि० (शि०) (तंबाकू आदि) पीना।
झुटाणा—स० क्रि० (बि०) झुलाना।
झुटी—स्त्री० (कु०) गुंथे हुए बालों की वेणी।
झुटूंगी—वि० (शि०) जटाओं वाला।
झुट्टु—पु० (चं०) बाड़।
झुट्टू—पु० (चं) अनाज विशेष।
झुठकरा—वि० (शि०) झूठ बोलने वाला।
झुठलाना—स० क्रि० झूठा ठहराना।
झुठालना—स० क्रि० (शि०) भोजन करने के पश्चात् हाथ धुलाना।
झुठेरना—स० क्रि० झुठलाना।
झुठो—वि० (कु०) झूठा।
झुड़कणा—स० क्रि० (चं०) उकसाना।
झुड़कणा—स० क्रि० (कां०, चं०) चूल्हे में लकड़ी को अंदर करना।
झुड़कणा—पु० (सि०) पानी, घी या तेल से भीगी हुई वस्तु।
झुड़कणा—स० क्रि० (कु०) झाड़ना।
झुड़का—पु० (शि०) वस्त्र।
झुड़कू—पु० (शि०) बच्चों के पहनने के वस्त्र।
झुड़ा—पु० (कां०) झाड़ी।
झुड़ा—पु० (कु०, सि०) फटा-पुराना वस्त्र।
झुणाका—पु० (कु०, सि०) बोरी या खाल में डाले अनाज को हिलाने की क्रिया ताकि उसमें और अनाज आ जाए।
झुणाकू—पु० (ऊ०, कां०, चं०) ठंड या डर से तन में हुआ अकस्मात् कंपन।
झुणाझुणी—स्त्री० (कु०, सि०) कंपकंपी।
झुणा—स्त्री० (कु०) प्रातःकाल वाद्ययंत्र बजाने का भाव।
झुणु—पु० (कां०, बि०) रोमांच।
झुयण—वि० (कु०) बिखरे बाल वाली।
झुया—पु० (कु०) लंबे-लंबे बिखरे बाल।
झुयी—वि० (कु०) बिखरे बाल वाला।
झुनझुना—पु० छोटे बच्चों का झुन-झुन शब्द करने वाला खिलौना।
झुनझुनी—स्त्री० (शि०) सनसनाहट, कंपकंपी।

झुपकु—पु० (कां०, कु०) झपक, पल, क्षण।
झुप्प—वि० (कां०, चं०) घोर अंधेरा।
झुफड़ा—पु० (शि०) झोंपड़ी।
झुफड़ू—पु० (कु०) झोंपड़ी।
झुमका—पु० स्त्रियों के कान का आभूषण।
झुमकू—पु० दे० झुमका।
झुमड़ा—पु० (सो०) घास की जड़ों का ज़मीन से लगा गुच्छा।
झुमण—पु० (कु०) पर्दा, वर्षा में सिर के ऊपर लिया कपड़ा आदि।
झुमणा—स० क्रि० (चं०) ऊन या सिर के बाल काटना।
झुमणी—स्त्री० (चं०) कैंची की तरह का उपकरण।
झुमणी—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) चक्कर आने का भाव।
झुमाना—स० क्रि० (शि०) घुमाना।
झुमारी—स्त्री० (मं०) ऊन काटने की क्रिया।
झुम्मी—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) सायंकाल।
झुम्मका—पु० (चं०) फल का गुच्छा।
झुम्मैलू—वि० (चं०) किसी के सहारे रहने वाला।
झुरकणा—अ० क्रि० (चं०) अचानक हैरान होना।
झुरकणा—स० क्रि० (सि०) जलती हुई लकड़ी को झकझोरना ताकि वह अच्छी तरह जले।
झुरझुरी—स्त्री० कंपकंपी।
झुरड़णा—स० क्रि० (ऊ०, कां०, चं०) भूनना, गर्म चूल्हे की धूल में किसी वस्तु को भूनना।
झुरड़ी—स्त्री० झुर्री।
झुरणा/णो—अ० क्रि० (शि०) किसी के प्रति संवेदना का भाव प्रकट करना।
झुरना—अ० क्रि० (ऊ०, कां०) रह रहकर चिंता में सूखना।
झुरना—अ० क्रि० (कु०) प्यार करना।
झुरसला—पु० (ऊ०, कां०, ह०) सायं और उषाकाल का समय।
झुरमुट—पु० घना जंगल।
झुरमुट—पु० (शि०) मनुष्यों का समूह। घनी झाड़ियां।
झुरलु—पु० (ऊ०, कां०) सम्मोहन, जादू।
झुरी—स्त्री० (कां०, कु०, सि०) दे० झुरड़ी।
झुरी—स्त्री० (शि०, सि०) प्रसिद्ध पहाड़ी गीत जिसमें गायक मौके पर गीत के बोलों की रचना करता है।
झुरे—पु० (शि०, सि०) पछताने का भाव।
झुर्ड—स्त्री० (चं०) भालू के रहने का स्थान।
झुलकणा—स० क्रि० (बि०) झाड़ना, साफ करना।
झुलकणा—अ० क्रि० (सि०) लटकना।
झुलकणा—अ० क्रि० (कु०) इधर-उधर घूमना।
झुलका—पु० (चं०) वायु का झोंका।
झुलड़ी—स्त्री० (शि०) गेहूं की एक किस्म।
झुलणा—अ० क्रि० (ऊ०, कां०) झूमना, वृक्षों का हवा में झूलना। स० क्रि० हवा करना।
झुलणा—अ० क्रि० (सि०, बि०) झूलना।
झुलणा—अ० क्रि० (चं०) सहन करना।
झुलणा—अ० क्रि० (कु०) झूलना, झूमना।
झुलमुला—पु० (कु०, मं०, शि०) दे० झुरमळा।
झुळमुळी—स्त्री० (सि०, सो०) उषाकाल; गोधूलि वेला।
झुलरदा—वि० (कां०) झूलता हुआ।
झुलसणा—अ० क्रि० (शि०, बि०) आग से झुलसना।
झुलसा—वि० (कां०) अधजला, गर्म राख में किसी वस्तु को रखने पर उसके अधपका रहने का भाव।
झुल्का—पु० (कां०, ह०, बि०) व्यर्थ बात बढ़ाने की क्रिया।
झुल्लण—पु० (कु०, चं०) रस्सियों से बना पुल।
झुल्लण—पु० (ऊ०, कां०) हवा का झोंका।
झुल्लणा—पु० (चं०) वृक्ष की टहनियों से रस्से बांधकर तैयार किया गया पुल।
झुल्ला—पु० (मं०) दे० झूला।
झुश्का—पु० (शि०, सि०) जलती लकड़ी या गर्म वस्तु छुआने की क्रिया।
झुहारा—पु० (कु०) दे० झवार।
झूंगा—पु० (कु०) घराना, व्यक्तित्व।
झूंझणू—पु० (कां०, मं०) आटे में लगने वाला कीड़ा।
झूंझी—वि० (कु०) जूओं वाला।
झूंझुणा—अ० क्रि० (शि०) लड़ाई करना।
झूंड—पु० (सि०) घनी झाड़ियां।
झूंड—पु० घूंघट।
झूंडो—वि० (ऊ०, कां०, ह०) घूंघट वाली।
झूं:ब—पु० (सि०) वर्षा से बचाव के लिए सिर पर ओढ़ी बोरी आदि।
झूंबड़—पु० (कु०) ततैया।
झूंबड़ी—स्त्री० (कु०) बस्ती।
झूंबो—पु० (सि०) घास के दो आपस में बंधे हुए 'पूले' जिन्हें पेड़ पर सर्दियों के चारे के लिए लटकाया जाता है।
झूंमा—पु० (बि०) बिखरे हुए बाल।
झूंमा—पु० (सि०) झूमने का भाव, बादलों के फैलने का भाव।
झू—अ० न, मना करने का सूचक, किसी गंदी वस्तु को न छूने का संकेत शब्द।
झू—स्त्री० (सि०) किसी के दंभ के कारण उस तक न पहुंचने या मिलने की झिझक।
झूअंक—स्त्री० (सि०) ललक।
झूई—अ० (कु०) बछड़े को पुकारने के लिए प्रयुक्त संबोधन शब्द।
झूक—स्त्री० (सि०) आग की चिंगारी।
झूक—स्त्री० (सो०) अत्यधिक लालसा।
झूका—पु० (कु०) जलाने की लकड़ी।
झूकैउठणा—अ० क्रि० (कु०) हड़बड़ाना।
झूकोणा—अ० क्रि० (सि०) उबलना।
झूखा—पु० (कु०) उलझे धागों का गुच्छा।
झूझड़ना—स० क्रि (कु०) पेड़ को हिलाकर फल गिराना।
झूटणा—अ० क्रि० झूलना।
झूटू—पु० (कु०) बालों में लगायी जाने वाली 'परांदी'।
झूठ—पु० (कु०, शि०) झूठ, असत्य।
झूठा—वि० (कु०, शि०) झूठ बोलने वाला।

**झूड़**—पु० (मं०) छोटी झाड़ी।
**झूड़कणा**—स० क्रि० (सि०) पूछ-पूछकर किसी को मारना।
**झूड़ी**—पु० (कु०) देवता के नाम रखा मेढ़ा जिसकी ऊन काटी नहीं जाती, बलि के बाद ही उसकी ऊन का प्रयोग किया जाता है।
**झूढ़ा**—पु० (मं०) बालों का जूड़ा।
**झूणा**—स० क्रि० (कु०) देवता को प्रसन्न करने के लिए ज़ोर से बाजा बजाना।
**झूमण**—पु० (कु०) घूंघट।
**झूमणा**—अ० क्रि० (सि०) नाचना।
**झूमणु**—पु० (कां०) मक्की के पौधे के सिट्टे की तरह का फूल।
**झूमर**—पु० (शि०) सिर में पहनने का एक आभूषण।
**झूमी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) सायंकाल।
**झूरना**—अ० क्रि०(कां०) बेकार बैठना।
**झूरना**—अ० क्रि० (कु०, मं०) चाहना।
**झूरी**—स्त्री० (कु०) प्रेमिका।
**झूलणा**—अ० क्रि० (कु०) टहलना।
**झूलसणा**—अ० क्रि० (कु०, सि०) जलना।
**झूला**—पु० (कु०) लोहे के रस्से में लगा पलना जिसमें बैठकर नदी के दूसरी ओर जाते हैं।
**झूलिणा**—अ० क्रि० (कु०) घूमा जाना।
**झेकड़**—पु० (शि०) बाड़।
**झेकमझेका**—वि० (कु०) चटकीला, रंगबिरंगा।
**झेकमझेका**—वि० (ऊ०, कां०) टेढ़ा-मेढ़ा।
**झेकमेक**—स्त्री० (कु०) एक झलक।
**झेगड़ना**—अ० क्रि० (कु०) झगड़ना।
**झेगला**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) नीचे की ओर रहने वाला।
**झेगळा**—वि० (बि०, सो०) मूर्ख।
**झेचा**—पु० (कु०) ऊपरी घाटी का व्यक्ति।
**झेच्छणा**—अ० क्रि० (मं०) दबना।
**झेट**—स्त्री० (शि०) दृष्टि।
**झेट**—पु० (शि०) तना।
**झेटपेट**—अ० (कु०) झटपट।
**झेठ**—स्त्री० (सि०) दृष्टि, निगाह।
**झेठो**—वि० (शि०) बड़ा।
**झेड़ना**—स० क्रि० (चं०) सहन करना।
**झेड़ा/ड़ो**—वि० (शि०) लंगड़ा।
**झेड़ा**—पु० (कां०) चर्चा, लंबा किस्सा, गाथा।
**झेड़ा**—पु० (शि०, सि०, सो०) उलझन, झंझट, समस्या।
**झेड़ाझेड़ी**—स्त्री० (कु०) शीघ्रता से फसल आदि को भूमि से उखाड़ने का भाव।
**झेड़िया**—पु० (कां०, मं०, ह०) कथावाचक।
**झेणझणाट**— स्त्री० (कु०) झनझनाहट।
**झेपड़े**—पु० (शि०) जूते।
**झेपणा**—स० क्रि० (कु०) हड़पना।
**झेपिणो**—अ० क्रि० (शि०) उलझना।
**झेप्पी**—वि० (शि०, सि०) मूर्ख।
**झेप्पी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) क्षणभर की नींद।
**झेर**—स्त्री० (कु०) चिंता।
**झेरा**—पु० (कु०) मानसिक कष्ट।
**झेलका**—पु० (कु०) छलका।
**झेलझलाट**—स्त्री० (कु०) पानी के तेज़ी से गिरने की ध्वनि।
**झेलणा**—स० क्रि० कठिनाई को सहन करना।
**झेला**—पु० (कु०) कठिनाई, मुसीबत।
**झेलाझेली**—स्त्री० (कु०) पानी का लापरवाही से प्रयोग करने या जल्दी-जल्दी किसी वस्तु पर पानी गिराने का भाव।
**झेव**—पु० (शि०) छाया होने के कारण किसी पौधे का न बढ़ना।
**झेसाझेसी**—स्त्री० (कु०) कभी एक चीज़ को कभी दूसरी चीज़ को छूने का भाव।
**झेंची**—स्त्री० (मं०) काले रंग की लंबी पूंछ वाली चिड़िया।
**झै**—अ० (कु०) यदि।
**झैड**—स्त्री० (कु०) ज़ोर की मार।
**झैण**—स्त्री० (कु०) क्रोध की लहर।
**झैपका**—पु० (कु०) एक क्षण।
**झोंकड़ी**—स्त्री० (मं०) झोंपड़ी।
**झोंकना**—स० क्रि० (शि०) किसी को आपत्ति में डालना। आग में लकड़ी झोंकना।
**झोंका**—पु० (शि०) नींद का झोंका, हवा का झोंका।
**झोंख**—स्त्री० (कु०) चिंता।
**झोंखिणा**—अ० क्रि० (कु०) चिंतित होना।
**झोंगड़**—पु० (कु०) घासयुक्त अनाज।
**झोंगळ**—पु० (कां०) वाद विवाद, झगड़ा।
**झोंझा**—वि० (चं०) वृद्ध।
**झोंट**—स्त्री० (चं०) बड़ी कुल्हाड़ी।
**झोंटू**—पु० (चं०) छोटी कुल्हाड़ी।
**झोंपड़ा**—पु० (शि०) कुटिया।
**झोंफू**—पु० (चं०) मूर्ख।
**झो**—पु० (बि०) एक बार में चक्की में डाली जाने वाली वस्तु।
**झोआं**—पु० (कां०) चूल्हे के ऊपर जमी धुएं की परत वाला कूड़ा। मिट्टी का बनाया खुरदरा यंत्र।
**झोआ**—पु० (सो०) चूल्हे में ईंधन डालने का व्यापार, हिलाने का व्यापार।
**झोइणा**—अ० क्रि० (कु०) पेट भरना।
**झोकणा**—स० क्रि० (कां०, बि०) झोंकना, डालना, धकेलना।
**झोकणा**—स० क्रि० (कु०) भेजना।
**झोका**—पु० (सि०, सो०) तेज़ आग जलाने का भाव।
**झोकी**—वि० (कु०) गुस्से वाला।
**झोकू**—पु० (शि०, सि०) मुर्दे के जलाने के काम में आने वाली लंबी लकड़ी जिससे जलती लकड़ियां जलते हुए शव पर इकट्ठी की जाती हैं।
**झोक्का**—पु० (बि०, कां०) दे० झोका।
**झोज्जा**—पु० (कां०) झूले की हिलोर।
**झोझर**—वि० (मं०) खोखला।
**झोझा**—पु० (बि०) दे० झोज्जा।
**झोट**—पु० (शि०, सि०, सो०) पेड़ का तना।

**झोटड़े**—पु० (शि०) भैंस का बच्चा।
**झोटा**—पु० भैंसा।
**झोटा**—वि० (कु०, बि०) ताकतवर, शक्तिशाली।
**झोटी**—स्त्री० चार-पांच वर्ष की भैंस जो गाभिन न हुई हो।
**झोड़**—स्त्री० (शि०) वर्षा।
**झोड़**—पु० (सि०) नदी की लहर; मन का उफान।
**झोढ़**—स्त्री० (कु०) ठेस, हलकी चोट।
**झोड़ना**— स० क्रि० (मं०) कंघी करना।
**झोड़ा**—पु० (कां०) जुकाम।
**झोणा**—पु० (मं०) धान।
**झोणे वाळी**—वि० (कां०) रजस्वला।
**झोपड़**—पु० (शि०) कुबुद्धि।
**झोमाका**—पु० (सि०) आंख दिखावा।
**झोर**—स्त्री० (चं०, बि०) गुफा।
**झोरना**—स० क्रि० (कु०) झाड़ना; टोकना।
**झोल**—पु० (कां०, ऊ०) Porana paniculata.
**झोल**—स्त्री० (ह०) नींद का झोंका।
**झोल**—पु० एक ओर को टेढ़ा वजन, एक तरफ को झुकाव।
**झोल**—स्त्री० (कां०, बि०) सिलवट।
**झोळ**—पु० (कां०, बि०, मं०) सुरा की एक किस्म जो प्रायः चावलों की बनती है।
**झोळ**—पु० (कु०) कढ़ी।
**झोलकणा**—स० क्रि० (कु०) झिंझोड़ना।
**झोलका**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मशाल। बात को बढ़ाने का भाव।
**झोलकिणा**—अ० क्रि० (कु०) धक्के लगना।
**झोळकी**—स्त्री० (शि०) अनाज की थैली या बोरी जो पूरी न भरी हो।
**झोल-झाल**—पु० (कु०) धक्का-मुक्की।
**झोलणा**—स० क्रि० (सि०) अदरक से सोंठ बनाना।
**झोलणा**—स० क्रि० (कु०) धक्का देना।
**झोलणा**—पु० (सि०) खुले मुंह का पात्र।
**झोलणा**—स० क्रि० (चं०) छानना।
**झोलणा**—स० क्रि० (कां०, बि०) झुलाना।
**झोलणु**—पु० (बि०) मिट्टी का बना पात्र जो आकार में गोल होता है और जिसका मुंह खुला होता है।
**झोलना**—स० क्रि० (चं०) पानी को गिराकर पत्थर निकालना, किसी खाद्य पदार्थ को पानी में डालकर पत्थर, कूड़ा आदि निकालना।
**झोलनूं**—पु० (कां०, ह०) पशुओं को पानी पिलाने का मिट्टी का पात्र।
**झोळा**—पु० (कु०, सि०) झोला, थैला।
**झोलिणा**—अ० क्रि० (कु०) धक्का लगना।
**झोलिया**—पु० (सि०) किसी व्यक्ति को बाहों और टांगों से पकड़कर हिलाने की क्रिया।
**झोळी**—स्त्री० थैली, भिक्षा लेने के लिए बनाई गई थैली।
**झोळी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) साधुओं द्वारा पहना जाने वाला लंबा व खुला कुर्ता।
**झोंकणा**—अ० क्रि० (सि०) असभ्य ढंग से टहलना, घूमना, नाचना आदि।
**झौंठ**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) बदसूरत, सीधा सादा, मूर्ख।
**झौंरा**—पु० (चं०, शि०) अंधेरा छाने का भाव।
**झौ**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) पशुओं को पानी पिलाते समय संकेतार्थक शब्द।
**झौ**—पु० (चं०) उकताहट।
**झौअणा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) बलात्कार।
**झौकड़**—पु० (कु०) कांटेदार झाड़ियों से भरा स्थान।
**झौके**—वि० (सि०) सनकी।
**झौकणी**—वि० (कां०, बि०, ह०) भट्ठी में लकड़ी डालने वाला।
**झौखा**—पु० (कु०) हल्ला-गुल्ला, शोर।
**झौगटु**—पु० (कु०, सि०) कमीज़।
**झौगडू**—वि० (शि०) झगड़ालू।
**झौगा**—पु० (कु०, सि०) चोला, कमीज़।
**झौगी**—वि० (कु०) जिसने लंबा चोला पहनाहो।
**झौटका**—पु० (कु०, सि०) झटका।
**झौटणा**—स० क्रि० (सि०) आवाज़ देना, 'ठोडे' के खेल में एक दूसरे को ललकारना।
**झौटणा**—स० क्रि० (कु०) काटना, तंग करना।
**झौटिणा**— स० क्रि० (कु०) कुत्ते द्वारा काटा जाना।
**झौट्ट**—अ० (शि०) जल्दी।
**झौड़**—स्त्री० (कु०) तंग परंतु लंबा खेत।
**झौड़**—स्त्री० (सि०) बहुत दिनों से लगी हुई वर्षा।
**झौड़**—पु० (शि०) बर्फ पड़ने की क्रिया।
**झौड़ना**—अ० क्रि० (कु०) गिरना।
**झौड़पौड़**—स्त्री० (कु०) गिरने का भाव।
**झौड़ी**—स्त्री० (कु०) सिलवट, शिकन।
**झौणा**—पु० (शि०) मनुष्य।
**झौणो**—पु० (शि०) पति।
**झौपटा**—पु० (शि०) झपटा मारने की क्रिया।
**झौफ**—पु० (कु०) इल्ज़ाम।
**झौफिणा**—अ० क्रि० (कु०) बालों का उलझना।
**झौर**—पु० (कु०) कांटा, बारीक लकड़ी का टुकड़ा या तिनका जो शरीर में घुस जाए।
**झौळ**—स्त्री० (कु०, शि०, सि०) आग की लपट, आंच।
**झौलो**—पु० (शि०) बड़ा पतीला।

# ञ

**ञ**—देवनागरी वर्णमाला में चवर्ग का पांचवां वर्ण। उच्चारण स्थान तालु।
**ञाणा**—वि० जवान।
**ञाणी**—वि० युवति।

# ट

ट—देवनागरी वर्णमाला में टवर्ग का पहला वर्ण। उच्चारण स्थान मूर्द्धा।
टंक-टंक—पु० (मं०) छोटे-छोटे टुकड़े।
टंकणा—स्त्री० (शि०) टीका-टिप्पणी।
टंकणा—स० क्रि० (शि०) सिलना, जोड़ा जाना।
टंकिकरा—वि० (शि०) जिस बर्तन में टांके लगे हों।
टंके—पु० (शि०) टांका, सीवन।
टंग—स्त्री० टांग।
टंगड़ी—स्त्री० (सि०) दे० टंग।
टंगड़ी—स्त्री० (ऊ०, कां०) टांग फंसाने की क्रिया।
टंगण—स्त्री० बांस की लंबी लकड़ी जिसमें कपड़े लटकाए जाते हैं।
टंगणा—स० क्रि० टांगना, लटकाना।
टंगणी—स्त्री० कपड़े टांगने की खूंटी।
टंगाणा—स० क्रि० लटकाना।
टंगार—वि० (चं०) टांगने वाला।
टंगोणा—अ० क्रि० (चं०) लटकना।
टंघा—स्त्री० (चं०) बड़ी बात।
टंट—स्त्री० (शि०, सि०) बहुत ठंड, सर्दी।
टंटघंट—पु० (शि०) प्रपंच।
टंटरमंत्र—पु० (शि०) तंत्रमंत्र।
टंटा—पु० समस्या, झमेला।
टंठ—स्त्री० (कु०) हठ, दुराग्रह।
टंडके—पु० (शि०, सि०) लड़के।
टंडके—पु० (शि०) शान, अंदाज़।
टंडयाखा—वि० (सि०) तिरछी नज़र से देखने वाला।
टंडरेणा—स० क्रि० (सि०) घसीटना।
टंडरोणा—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) ठिठुरना।
टंडा—पु० (शि०) संपत्ति।
टंडा—पु० (ऊ०, कां०, बि०) मक्की का पौधा।
टंडा—वि० (चं०) नीली आंखों वाला।
टंडाछ—स्त्री० (कु०) मरने से पूर्व एक जगह टिकी नज़र।
टंडाछिणा—अ० क्रि० (कु०) 'टंडाछ' लगना।
टंडार—पु० (कां० चं०) ग्रीष्म व वर्षा ऋतु में वृक्षों पर शब्द करने वाला एक कीट।
टंडार—स्त्री० (ऊ०, कां० ह०) टकटकी।
टंडार—पु० (शि०, सि०) अस्त-व्यस्त लकड़ी के तख्तों का फर्श।
टंडारे—पु० (बि०) पथराई आंखें।
टंडी—स्त्री० (कां०, ह०) फलरहित मक्की का कमज़ोर पौधा।
टंडी—वि० (चं०) नीले नेत्र वाली।
टंडू—पु० (ऊ०, ह०) गांठ वाली लकड़ी, मक्की के कटे ठुंठ।
टंडेर—स्त्री० (कां०, बि०) जूठे बर्तनों का ढेर।
टंडोणा—अ० क्रि० (मं०) खड़ा होना।
टंघर—वि० (चं०) मूर्ख।
टंब—पु० (कां०, चं०) सहारा देने के लिए लगाया गया खंभा, टेक।
टंमा—वि० (मं०) बहरा।
टइल—स्त्री० सेवा।
टइलू—वि० (शि०) परिश्रमी, कर्मठ, सेवा करने वाला।
टऊंट—पु० (शि०) सख्त पत्थर।
टऊणा—वि० दे० टंमा।
टऊरी—स्त्री० (बि०) पत्तल बनाने की हरे चौड़े पत्तों वाली बेल विशेष।
टऊल—स्त्री० (शि०) सेवा।
टक—वि० (कां०, चं०) सख्त (भूमि)।
टक—पु० (चं०) शहतीर।
टक—पु० निशान।
टक—स्त्री० (कां०) दृष्टि, नज़र, टकटकी।
टकटांडा—पु० (मं०) कठफोड़ा।
टकटोलणा—स० क्रि० (शि०) टटोलना।
टकटोलड़ा—पु० (चं०, शि०) दे० टकटांडा।
टकठोलड़ा—पु० (सि०) दे० टकटांडा।
टकणा—स० क्रि० (चं०) वृक्षों को निशान लगाना।
टकणी—स्त्री० (कां०, चं०) पक्षी विशेष।
टकरणा—अ० क्रि० मिलना, मुलाकात होना।
टकरा—पु० (मं०) उत्तर।
टकराणा—अ० क्रि० टकराना।
टकराह—स्त्री० (चं०) छेड़खानी।
टकरिणा—अ० क्रि० (कु०) मिलना।
टकरीह्णा—अ० क्रि० (चं०) टकराना, टकरा जाना।
टकरोणा—अ० क्रि० (ऊ०, ह०) भिड़ना।
टकरोणा—अ० क्रि० (कां०, बि०) सामना होना, टक्कर लगना।
टकला—पु० (चं०) Silene inflata.
टकशैलो—वि० (शि०) अतिशीतल।
टका—पु० धन, रुपया, दो पैसे का पुराना सिक्का।
टकाई—स्त्री० वृक्षों पर चिह्न लगाने की क्रिया, लकड़ी पर की गई खुदाई।
टकाई—स्त्री० माथा टेकने की क्रिया, माथा टेकने पर की गई भेंट।
टकाई—स्त्री० (चं०) मूल्य।
टकाकड़ा—पु० (मं०) छत से गिरने वाली पानी की बूंदों की ध्वनि।
टकाणा—स० क्रि० टिकाना, रोकना।
टकाणा—स० क्रि० वृक्ष को निशान लगवाना।
टकाणा—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) गर्भित करना।
टकाणा—पु० ठिकाना, स्थान।
टकाणा—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) गप्पे हांकना।
टकारा—पु० (कु०) कटारा।
टकालखणा—स० क्रि० (मं०) एकटक देखना।
टकीणा—स० क्रि० (चं०) फुसलाना।

**टकीणा**—पु० (सि०) उधार की स्थिति में ब्याज़ के अतिरिक्त दिया जाने वाला अधिभार, जो गहनों के आदान-प्रदान से भी लिया जाता है।
**टकोज**—पु० (कां०, ह०) निशाना।
**टकोजी**—स्त्री० (कां०) निशानेबाजी।
**टकोथर**—स्त्री० (कु०) चंदन घिसने की शिला।
**टकोथरी**—स्त्री० (कु०) चपटा पत्थर।
**टकोर**—स्त्री० (कां०, चं०) उकसाने के प्रयोजन से कही गई बात या किया गया संकेत।
**टकोर**—स्त्री० मोच या चोट आदि लगने पर घी, तेल और हलदी लगाने की क्रिया।
**टंकोर**—पु० (शि०) गिराये गए पेड़ में नाप कर लगाया गया निशान, आघात।
**टकोर**—पु० (कु०, सि०) निमोनिया हो जाने पर घी रखने के लिए मिट्टी के खाली बर्तन को गर्म करके सिर, हाथों में गर्मी देने की क्रिया।
**टकोरना**—स० क्रि० कपड़े आदि से पीड़ित अंग पर ताप पहुंचाना, सेंकना।
**टकोरा**—पु० आरी को तेज़ करने का उपकरण।
**टकोरी**—स्त्री० (शि०) दे० टकोरा।
**टक्कणो**—वि० (मं०) विस्तृत।
**टक्कर**—स्त्री० टक्कर।
**टखरना**—अ० क्रि० (बि०) टकरना।
**टगर**—पु० (कां०) Tabernae maritena.
**टगु**—वि० (कु०) ठिंगना।
**टगुर**—पु० (शि०) बड़ी चट्टान।
**टचकणा**—स० क्रि० (कु०) चोरी करते हुए को पकड़ना।
**टचटच**—स्त्री० व्यर्थ बोलने की क्रिया।
**टचटचात**—स्त्री० प्रतिदिन की लड़ाई।
**टटखड़ा**—वि० टूटा-फूटा।
**टटमंज**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) पाखंड, आडंबर।
**टटमज**—पु० (कां०) जोड़-तोड़।
**टटमूंड**—वि०(शि०) मूर्ख।
**टटमोर**—पु० (कां०) कुकुरमुत्ता।
**टटरसल्ल**—वि० (बि०) जड़वत्।
**टटरा**—वि० (सि०) सख्त।
**टटरा**—वि० (चं०) कम उपजाऊ (भूमि)।
**टटरा**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) गंजा।
**टटरी**—स्त्री० गंजापन।
**टटरू**—पु० तालु, सिर।
**टटार**—पु० (कु०) ठठेरा, धातु का कार्य करने वाली एक जाति।
**टटीहरी**—स्त्री० प्रायः पानी (नदी-नाले) के किनारे शब्द करने वाला एक पक्षी जो टांगें ऊपर करके सोता हुआ माना जाता है।
**टटोरना**—स० क्रि० (शि०) टटोलना।
**टटोरू**—पु० (शि०) खसरा।
**टट्ट-पलाणा**—पु० (सो०) बोरिया-बिस्तर।
**टट्टळ**—वि० (कु०, सि०) मूर्ख।
**टट्टू**—पु० टट्टू।
**टट्ठी**—वि० (सि०) मूर्ख।
**टडणा**—अ० क्रि० (कां०) गिड़गिड़ाना।
**टडणा**— स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) आंखे दिखाना।
**टडींडणो**— अ० क्रि० (कु०) गिरना।
**टणकणा**—अ० क्रि० (सि०) फंसना।
**टणकणा**—अ० क्रि० (बर्तनों का) खड़कना।
**टणकणू**—वि० (चं०) खूब गरम।
**टणकणू**—पु० (कां०, चं०) दाएं हाथ से बजाया जाने वाला नगारा जिससे टन की आवाज़ आती है।
**टणकदा**—वि० (सो०) बिल्कुल सूखा।
**टणकदा**—वि० तीखी आवाज़ वाला।
**टणका**—पु० (ऊ०, कां०) बुरी ख़बर।
**टणकाणा**—स० क्रि० बजाना।
**टणकाणा**—स० क्रि० चुगली करना, भेद लेना।
**टणकाणा**—स० क्रि० (कु०) सिक्के आदि की वास्तविकता जानने के लिए उसे अंगूठे द्वारा ध्वनि पैदा करके जांचना।
**टणकोर**—स्त्री० (सो०) धातु आदि के पात्र से किसी वस्तु के टकराने की ध्वनि।
**टणकोरना**—स० क्रि० (सो०) धातु आदि के पात्र में किसी उपकरण द्वारा ध्वनि पैदा करना। व्यक्ति विशेष की परीक्षा लेना।
**टणटणात**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) टनटन की आवाज़।
**टणटणहात**—वि० (चं०) खाली, समाप्त होने का भाव।
**टणा**—पु० (चं०) आंसू।
**टणा**—पु० (चं०, सि०) किसी वस्तु का अभाव।
**टणाका**—पु० प्रहार करते ही उत्पन्न 'टन' की ध्वनि।
**टणाकी**—स्त्री० (चं०) फसल की रक्षा के लिए खेत में लगाया गया टीन, जिसे दूर से रस्सी के साथ बांधा जाता है और रस्सी खींचने पर टीन बजने लगता है।
**टणाकु**—वि० (कां०) तेज़ श्रवणशक्ति वाला।
**टणाक्का**—पु० सहसा सुनाई देने वाली ध्वनि।
**टणाक्का**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) दे० टणका।
**टणाक्खा**—वि० तिरछा देखने वाला।
**टणाखा**—वि० (सि०) अकेले में रहने वाला बेसहारा व्यक्ति।
**टणापणा**—पु० (चं०, शि०) खाली-खाली अनुभव करने का भाव।
**टणिसरा**—वि० (कु०) बहरा।
**टणीण**—स्त्री० (शि०) दांतों में गरम ठंडा लगने की क्रिया।
**टणेपरा**—वि० तिरछा देखने वाला।
**टणेसरा**—वि० (कां०, शि०) बहरा।
**टनटणे**—वि० (मं०) काम कराने वाला।
**टनटना**—वि० (कु०, शि०, सि०) सख्त।
**टनटना**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) घंटा।
**टनण**—स्त्री० (चं०) सर्दी के कारण पानी की जमी हुई तह।
**टनां**—वि० (कु०) नासमझ, मूर्ख।
**टनेरो**—पु० (मं०) जादूगर।
**टप**—पु० टब, स्नान आदि के लिए पानी रखने का एक बड़ा बरतन।

**टप**—अ० घोड़े आदि के पैरों की आवाज़; पानी की बूंद गिरने की आवाज़।
**टपकणा**—अ० क्रि० टपकना।
**टपकणा**—अ० क्रि० सहसा उपस्थित होना।
**टपटोळना**—स० क्रि० (सो०) तलाशना, टटोलना।
**टपठेरा**—वि० (बि०) तिरछा देखने वाला।
**टपणा**—अ० क्रि० (कु०, शि०) नदी आदि पार करना, लांघना।
**टपणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) कूदना, नाचना।
**टपर**—पु० (मं०) छत।
**टपरा**—पु० (शि०) झोंपड़ी।
**टपराळा**—पु० असत्य वचन, गप्प, अफवाह।
**टपरी**—स्त्री० झोंपड़ी।
**टपरू**—पु० छोटा मकान।
**टपरेन**—पु० (सो०) छेद।
**टपरोळना**—स० क्रि० (सि०, सो०) हाथों से ढूंढना।
**टपरोळा**—पु० (सो०) सरसरी नज़र से देखने का भाव, हाथ लगने का भाव।
**टपळा**—पु० धोखा, गप्प।
**टपळा**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) भूल।
**टपळाणा**—स० क्रि० (सि०) ठगना।
**टपस**—पु० (कु०, शि०) कान का आभूषण।
**टपा**—पु० (चं०) लांघने या चढ़ाई चढ़ने के लिए बनाया गया पैर रखने का स्थान।
**टपाई**—स्त्री० नदी आदि पार कराने की मज़दूरी।
**टपाई**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) मृत्यु।
**टपाकड़ा**—पु० पानी की टपकती बड़ी बूंद।
**टपाकणा**—अ० क्रि० वर्षा में छत से पानी का रिसना।
**टपाकळा**—पु० (बि०) भूल।
**टपाका**—पु० चोट।
**टपाका**—पु० (कां०, चं०) फलों के गिरने की क्रिया।
**टपाणा**—स० क्रि० पार लगाना। मौत के घाट उतारना।
**टपार**—वि० (कां०, चं०) लांघने वाला।
**टपार**—स्त्री० (चं०) पानी के टपकने की क्रिया।
**टपार**—पु० (सि०) आडंबर।
**टपिणा**—अ० क्रि० (कु०) पार किया जाना, आगे निकला जाना।
**टपीस**—स्त्री० (कां०) आलोचना।
**टपीसा**—पु० (चं०) धक्का।
**टपूसी**—स्त्री० (बि०) कलाबाज़ी।
**टपेरना**—स० क्रि० (कां०, ह०) पार करवाना।
**टपैनी**—स्त्री० (शि०) व्यंग्य।
**टप्पड़**—स्त्री० (मं०) पशु की खाल।
**टप्पा**—पु० (कां०) पार करने योग्य खाई।
**टप्पा**—पु० (शि०) सिलाई का टांका।
**टप्पा**—पु० (बि०, सो०) रास्ते का पत्थर, नदी पार करने हेतु पैर रखने के लिए बनाया गया स्थान।
**टप्पा**—पु० गोत का बोल।
**टब्बर**—पु० परिवार।
**टब्बरखऊ**—पु० (मं०) कुलघाती।
**टब्बरटांक**—पु० (मं०) परिवार के सदस्य।
**टब्बरदार**—पु० परिवार वाला।
**टब्बरपाळ**—पु० (कां०) धान की एक किस्म।
**टब्भा**—वि० (चं०, मं०) तिरछा देखने वाला।
**टम**—पु० (चं०) बीज बोने के उपरांत वर्षा होने से खेत की मिट्टी की ऊपरी तह की कठोरता को हटाने के लिए सुहागा फेरने की क्रिया।
**टमक**—पु० मेलों में बजाया जाने वाला बड़ा नगाड़ा।
**टमकी**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) टमक बजाने वाला।
**टमक्याही**—वि० (मं०) टमक बजाने वाला।
**टमख्याणा**—स० क्रि० (मं०) शरारत करना।
**टमटमाणा**—अ० क्रि० टिमटिमाना।
**टमटीवा**—पु० (सो०) मध्यम रोशनी का दीपक।
**टमणा**—पु० (ह०) ऊंचे वृक्षों से पत्ते काटने का दांती जैसा औज़ार जिसके पीछे पतली लंबी बांस की हत्थी लगी होती है।
**टमराला**—पु० (कु०, सि०) गंभीर आवाज़।
**टमाका**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) टमक बजाने वाला व्यक्ति।
**टमाका**—पु० टमक पर मारी गई चोट।
**टमोकिणा**—अ० क्रि० (कु०) गिरने पर कुछ देर बेहोश रहना।
**टमोटा**—वि० (कु०) सख्त (जैसे आटा)।
**टम्मण**—स्त्री० पेड़ से अखरोट आदि गिराने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली लंबी लकड़ी।
**टयाळणी**—स० क्रि० (शि०) बुलाना।
**टयाळा**—पु० वृक्ष के नीचे बना चबूतरा।
**टयाले**—स्त्री० (शि०) आवाज़।
**टरंक**—पु० ट्रंक।
**टर**—स्त्री० (कु०) झूठी बात।
**टर**—स्त्री० (शि०) ऐंठ, घमंड।
**टरकणा**—अ० क्रि० टलना, खिसक जाना।
**टरकणो**—अ० क्रि० (शि०) दे० टरकणा।
**टरकाइणा**—अ० क्रि० (कु०) टाल-मटोल किया जाना।
**टरकाऊ**—वि० (शि०) टाल-मटोल करने वाला।
**टरकाणा**—स० क्रि० टालना, टाल-मटोल करना।
**टरटर**—अ० (सि०) ध्वनि विशेष।
**टरटर**—स्त्री० व्यर्थ की बात।
**टरटरा**—वि० (कु०) सख्त।
**टरटराउणा**—अ० क्रि० (शि०) टरटराना।
**टरड़याट**—वि० (सो०) शोर मचाने वाला।
**टरड़ा**—वि० (सो०) दे० कडोंघ।
**टरड़ा**—वि० (सो०) सख्त।
**टरड़ा**—वि० (चं०) आधा-आधा।
**टरड़ी**—स्त्री० (चं०) दूर-दूर उगी फसल।
**टरणा**—वि० (सि०) भोला-भाला, सीधा-सादा।
**टररा**—वि० (शि०) ऐसी दाल जिसमें पानी अधिक और दाने कम होते हैं।
**टरा**—पु० किसी चीज़ को टिकाने के लिए प्रयुक्त पत्थर का टुकड़ा।

**टराणा**—स० क्रि० गिराना।
**टरूर**—स्त्री० (कां०, चं०) पतली धारा।
**टरूर**—पु० (कां०) तालु।
**टल**—स्त्री० टलने का भाव।
**टळ**—पु० खच्चरों के गले में बांधी जाने वाली बड़ी घंटी; मंदिर में लटकी घंटी।
**टळक**—स्त्री० (चं०, बि०) चिकनाई की चमक।
**टळकणा**—अ० क्रि० (चं०, बि०) चमकना।
**टळकणा**—अ० क्रि० टलना, खिसकना।
**टळखणा**—अ० क्रि० (सि०) वर्षा के पश्चात् आकाश का निर्मल होना।
**टळणों**—अ० क्रि० (शि०) हट जाना।
**टळना**—अ० क्रि० (कु०, सि०, सो०) खिसकना।
**टळमळा**—वि० (कु०) खाली-खाली, खाली सा, सुनसान।
**टळाका**—पु० ज़ोर की आवाज़।
**टलीरास**—वि० (कु०) घुमक्कड़।
**टळेर**—स्त्री० (कु०) कपड़े की कतरनें।
**टलेरना**—स० क्रि० (कु०) टालना।
**टळेवणा**—स० क्रि० (सो०) बहलाना।
**टल्ल**—स्त्री० (ऊ०) बड़ी घंटी।
**टल्ला**—पु० (चं०) कपड़ा, कपड़े का टुकड़ा।
**टल्ली**—स्त्री० (कां०) शव पर डाला जाने वाला वस्त्र।
**टल्ली**—स्त्री० पैवंद, पहनने के वस्त्रों पर लगाई गई कपड़े की टांकी, कतरन।
**टल्ली**—स्त्री० (चं०) सिर का दुपट्टा।
**टल्ली**—वि० शराब के नशे में धुत्त (व्यक्ति)।
**टल्लीराम**—वि० (कां०, ऊ०) शराबी, मद्य व्यसनी।
**टल्लू**—पु० (कां०) कपड़ा, सिला हुआ कपड़ा।
**टल्लू**—पु० (चं०) शव पर डाला जाने वाला वस्त्र।
**टशक**—स्त्री० (शि०) टीस, रह-रहकर उठने वाली ज़ोर की पीड़ा।
**टशकणा**—अ० क्रि० (शि०) खिसकना, बच निकलना।
**टशण**—पु० (चं०) प्रेम करने का भाव।
**टशण**—पु० (सो०) मालिश का तेल या घी।
**टशणा**— स० क्रि० (सो०) मालिश करना।
**टशन**—पु० (ऊ०, कां०, सि०) प्रेम पाश।
**टशमश**—स्त्री० (शि०) खूब चमक-दमक।
**टशमश**—स्त्री० (सो०) आनाकानी।
**टशरोळणा**—स० क्रि० (कु०) शीघ्रता से लिखना।
**टशेवणा**—स० क्रि० (सो०) हल्का स्पर्श करवाना।
**टशेवणा**— स० क्रि० (सो०) साफ करना।
**टसकरा**—वि० (कां०) चतुर।
**टसकाणा**—स० क्रि० (शि०) खिसकाना।
**टसरी**—वि० (मं०) रेशमी।
**टसल्ला**—पु० ढकोसला।
**टसुए**—पु० (शि०) आंसू।
**टस्सर**—स्त्री० (चं०, मं०) द्वेष, ज़िद।
**टस्सर**—स्त्री० रेशम।
**टस्सर**—स्त्री० (चं०)वृक्ष से टहनियाँ काटने पर वृक्ष की वृद्धि के लिए रखी गई विशेष टहनी।
**टस्सा टूणा**—पु० जादू-टोना।
**टस्सू**—पु० (चं०, बि०) छोटा लड़का।
**टहणी**—स्त्री० शाखा।
**टहल**—स्त्री० सेवा।
**टहलकरू**—वि० (शि०) टहल करने वाला।
**टहलटकोर**—स्त्री० सेवा।
**टहळना**—अ० क्रि० टहलना।
**टहलबेहणी**—अ० क्रि० (बि०) प्रतिदिन का झगड़ा समाप्त होना।
**टहलुई**—स्त्री० (शि०) दासी।
**टहलू**—पु० नौकर।
**टांए**—स्त्री० (सि०) वृक्ष की शाखा।
**टांक**—पु० (शि०, सि०) खेत के बीच का पत्थर, पथरीली ज़मीन।
**टांक**—स्त्री० (चं०) थोड़ा-थोड़ा नशा।
**टांक**—पु० (सो०) विषम संख्या।
**टांकणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) टांकना।
**टांकणा**—स० क्रि० (कु०) निशान लगाना।
**टांकरी**—स्त्री० (कां०) टांकरी लिपि, एक प्राचीन लिपि जिसमें रियासतों के राजाओं का काम-काज चलता था।
**टांका**—पु० (चं०) टूटी हुई वस्तु को जोड़ने हेतु लगाया गया जोड़।
**टांका**—पु० (चं०) अवैध कमाई।
**टांकी**—स्त्री० पत्थर तोड़ने का औज़ार।
**टांकी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) मोची का चमड़ा सिलने का औज़ार।
**टांकी**—स्त्री० टंकी।
**टांके**—स्त्री० (सि०) टंकी, पानी तेल आदि रखने के लिए बनाया हुआ बक्से के आकार का बड़ा पात्र।
**टांग**—स्त्री० टांग।
**टांगटरन**—स्त्री० (सि०) शक्ल-सूरत।
**टांगणा**—स० क्रि० टांगना, लटकाना।
**टांगणों**—स० क्रि० (सि०) टांगना, लटकाना।
**टांगरा**—पु० लकड़ी या बांस जो मूल सुहागे से लेकर जुए तक होता है।
**टांगरी**—वि० (कु०) लंबी।
**टांगरे**—स्त्री० (सि०) ऐसी लकड़ी जिसे मरीज़ या बड़े बर्तन को उठाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।
**टांगरो**—वि० (कु०) लंबा।
**टांगिणा**—स० क्रि० (कु०) टांगा जाना।
**टांगिणों**—अ० क्रि० (शि०) लटकना।
**टांगी**—स्त्री० (कु०, मं०) लकड़ी के दस्ते वाला लोहे का बना तेज औज़ार जिससे घराट आदि का पत्थर खुरदरा किया जाता है।
**टांघरा**—पु० (कु०) लकड़ी का लंबा डंड।
**टांचणा**—स० क्रि० (सि०) अनुमान लगाना।
**टांची**—स्त्री० (कां०, बि०) हौज़।

**टांटा**—अ० (ऊ०, कां०) बिना रुचि के कार्य करने का भाव।
**टांटा**—पु० काम-धंधा, सेवाभाव।
**टांटी**—वि० (कु०) निश्चिंत। हठी।
**टांड**—पु० (सि०) दीवार में सामान रखने हेतु बनाया गया स्थान।
**टांड**—स्त्री० (सि०) इकट्ठी रखी हुई लकड़ियों का ढेर।
**टांड**—पु० (चं०) मक्की का डंठल।
**टांडरा**—वि० (कां०) अधखुला।
**टांडा**—पु० (शि०) संपत्ति।
**टांडा**—पु० मक्की के पौधे का सूखा तना।
**टांडा**—वि० (चं०) सूखा।
**टां-पां**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) टाल-मटोल काम से टलने के लिए कही गई इधर-उधर की बातें।
**टांपां**—वि० (कां०) थोड़ा पढ़ा हुआ।
**टांबा**—स्त्री० (सि०) देवता के आगमन पर बजने वाला ताल।
**टांस**—स्त्री० (सि०) लंबी लकड़ी।
**टांस**—पु० (सि०) ताना।
**टांहड़ा**—पु० (मं०) मक्की के पौधे का तना।
**टा.लकी**—स्त्री० (सि०) टांकी, फटे कपड़े में लगाया जाने वाला पैवंद।
**टा.लकू**—पु० (सि०) औरतों द्वारा सिर पर बांधा जाने वाला कपड़ा।
**टा.लके**—स्त्री० (शि०) दे० टा.लकी।
**टा.लटा**—पु० (सि०) दुपट्टा।
**टाई**—स्त्री० (बि०) चूल्हे के पास लकड़ी रखने का स्थान।
**टाक**—स्त्री० दांतों से काटने की क्रिया।
**टाकर**—स्त्री० (सि०) टक्कर।
**टाकरना**—स० क्रि० (कु०) गिरती हुई वस्तु को पकड़ना या थामना।
**टाकरा**—पु० आमना-सामना, मिलन, भिड़ंत।
**टाकराह**—पु० (चं०) दूर से किया गया वाद-विवाद।
**टाकी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) कपड़े या चमड़े की कतरन।
**टाके**—वि० (शि०) कसा हुआ।
**टाक्की**—स्त्री० (ऊ०, ह०) खिड़की।
**टागली**—स्त्री० (मं०) नदी पार करने के लिए लगे झूले की तार पर लगने वाली कुंडी।
**टाचणा**—स० क्रि० (सि०) अनुमान करना।
**टाट**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) दे० टाटपळांगा।
**टाट**—स्त्री० लंबी चटाई, टाट।
**टाट**—स्त्री० (ऊ०, ह०) पहाड़ी केला।
**टाटपळांगा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) वृक्ष विशेष जिसकी लंबी तथा चौड़ी फलियां होती हैं।
**टाटर**—पु० (मं०) सिर।
**टाटर**—स्त्री० (सि०) बासी खाद्य पदार्थ पर जमी कालिख, फफूंदी।
**टाटरी**—स्त्री० (मं०, सो०) गंजा सिर, गंजापन।
**टाटरी**—स्त्री० नीबू का सत्त।
**टाटा**—वि० (कु०) गूंगा।
**टाटा**—वि० (सि०) भोला।
**टाटी**—स्त्री० (सि०) गर्दन।
**टाटी**—वि० (कु०) गूंगी।
**टाटी**—स्त्री० मल।
**टाटू**—पु० (कु०) मुंह।
**टाटू**—पु० गला, गर्दन।
**टाटो**—पु० (शि०) तंग।
**टाटो**—पु० (शि०) सुख-दु.ख।
**टाटो**—वि० (कु०) मूर्ख।
**टाठ**—पु० (मं०) अनाज मापने का बर्तन विशेष जिसमें लगभग दो किलो अन्न आता है।
**टाठा**—पु० (सि०) पत्थर का ढेर।
**टाठा**—पु० (सि०) जंगल में पशुओं के लिए बनाया कच्चा मकान।
**टाठा**—पु० (सि०) भूमि नाप में सीमा के लिये लगाई गई पत्थर की दीवार, बुर्जी।
**टाड़ना**—स० क्रि० (मं०) घी आदि शुद्ध करना।
**टाण**—स्त्री० (सि०) कपड़े की कतरन।
**टाण**—पु० (मं०) छत का अंदर वाला भाग।
**टाण**—पु० (कु०) मंत्र।
**टाणगीरी**—वि० (कु०) मंत्र जानने वाला।
**टाणा**—पु० (शि०) भूमि का पूजन तथा देव मंदिर की प्रतिष्ठा।
**टाणाओं**—पु० (सि०) समस्या।
**टाणाटुण**—पु० (शि०, सि०) हल्ला-गुल्ला, बरतनों की खड़-खड़ाहट।
**टाणामाणा**—पु० (कु०) तंत्र-मंत्र द्वारा की गई चिकित्सा।
**टाणामाणा**—पु० (शि०) विशेष प्रकार की पूजा।
**टाणी**—स्त्री० (सि०) शाखा।
**टाणो**—पु० (शि०) दे० टाणामाणा।
**टान**—स्त्री० (मं०) फसल की रक्षा के लिए खेत में बनाई गई कुटिया या मचान।
**टान्हा**—वि० (कु०) बहरा।
**टापड़**—पु० (शि०) ऊसर भूमि।
**टापणा**—स० क्रि० लांघना।
**टापणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०, सो०) पूरा होना, गुज़र-बसर होना, मुकाबला होना।
**टापणो**—अ० क्रि० (शि०) पहुंचना।
**टापर**—पु० (मं०) घास-पत्तियों से बनाई गई झोंपड़ी।
**टापरा**—पु० (कु०) दे० टापर।
**टापरी**—स्त्री० (कु०, चं०) चार ऊंचे खंभे लगाकर खेत में बनाई गई कुटिया जिसमें केवल घास, पत्तियों से छत बनाई जाती है।
**टापरू**—पु० (कु०) दे० टापरी।
**टापरो**—पु० (मं०, बि०) छोटा मकान, झोंपड़ा।
**टापा**—पु० (कु०) कम पानी को लांघने के लिए एक-एक कदम की दूरी पर रखा गया पत्थर।
**टापा-टोहा**—पु० (कु०) सहयोग करने का भाव।
**टापु**—पु० (कु०) टापू, द्वीप।
**टापुणा**—अ० क्रि० (सो०) पूरा करने योग्य होना, पालन-पोषण करने योग्य होना।

**टापू**— पु० (चं०) टीन या लोहे की चादर में छेद करने का औज़ार विशेष।

**टापू**—पु० पहाड़ का शिखर।

**टापू**—पु० (शि०) वह भूमि जो सिंचाई के योग्य हो।

**टापोटापी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) चढ़ाई-उतराई।

**टापोटापी**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) छलांग मारने की क्रिया।

**टाबर**—पु० (शि०, सो०) परिवार।

**टाबरो**—पु० (शि०) परिवार।

**टामकी**—पु० (ह०) टमक बजाने वाला।

**टामेलटू**—पु० (शि०) फुंसियां, व्रण, खारिश।

**टामोलटू**—पु० (सि०) दे० टामेलटू।

**टार**—स्त्री० दरार, प्रकाश।

**टार**—स्त्री० (चं०) लंबा छेद।

**टारड़ा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) ईंट, खंभे बनाने का लकड़ी का बना चौखटा विशेष।

**टारणा**—स० क्रि० (सि०) किसी तरल पदार्थ की ऊपरी तह को निकालना।

**टारना**—स० क्रि० (शि०) अनाज से कंकर आदि छांटना।

**टारपीन**—पु० (शि०) तारपीन, वारनिश।

**टारा**—वि० थोड़ा सा खुला। अकेला।

**टार्क टीर्क**—वि० (कु०) गिने-चुने।

**टाल**—पु० लकड़ी का ढेर।

**टाळ**—स्त्री० टालने का भाव।

**टाळ**—पु० (सो०) उबाली गई राख से निथारा गया पानी जो कपड़े धोने के काम में लाया जाता है।

**टालटे**—स्त्री० (सि०) छोटा मकान।

**टाळणो**—स० क्रि० (कु०, शि०) छांटना, अन्न से कूड़ा करकट अलग करना।

**टाळणो**—स० क्रि० (शि०) टालना।

**टाळना**—स० क्रि० टालना।

**टालनो**—स० क्रि० (शि०) हटाना।

**टाला**—पु० (कु०) भूभाग, भूखंड।

**टाला**—पु० (मं०, शि०) बादल का टुकड़ा।

**टाला**—पु० (शि०) शव पर डाला जाने वाला कपड़ा।

**टाळा**—पु० (कु०) देवता द्वारा मनाया जाने वाला एक उत्सव जिसमें देवता गांवों का चक्कर लगाकर वहां के बुरे ग्रह आदि दूर करता है।

**टाळा**—पु० (चं०) अट्टालिका, चबूतरा।

**टाळा**—पु० (सि०) विवाह आदि में भोजन बनाने के लिए बनाया जाने वाला लम्बा चूल्हा।

**टाळा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) नखरा।

**टाळा**—पु० (सो०) पीछा छुड़ाने का भाव।

**टाळा**—पु० (कु०) मकान की सबसे ऊपर की मंज़िल का कमरा जिसे पवित्र समझा जाता है और तंबाकू, जूते आदि वहां ले जाना वर्जित होता है।

**टाळाटपाळा**—पु० (ह०) तांत्रिक मंत्रों के अनुष्ठान की क्रिया।

**टाळिणा**—स० क्रि० (कु०) छांटा जाना, अन्न से कूड़ा-करकट अलग किया जाना।

**टाली**—स्त्री० (कां०, मं०) एक वृक्ष विशेष जिसका फर्नीचर बनाया जाता है।

**टाली**—स्त्री० (सि०, सो०) कपड़े का टुकड़ा, फटे हुए कपड़े पर हाथ से सी कर लगाया गया दूसरा कपड़ा, पैवंद।

**टाले**—पु० (सो०) कपड़े, वस्त्र।

**टाळे**—स्त्री० (सि०) एक कमरे का घर।

**टाल्हा**—पु० (चं०) विशेष अवसर पर काम करवाने में सहायता करने वाला व्यक्ति।

**टाल्ही**—स्त्री० (कु०) पैवंद।

**टावडुआ**—वि० (कु०) बुढ़ापे में सठियाने का भाव।

**टावणा**—स० क्रि० (सो०) हटाना, लौटाना।

**टावळ**—पु० (सो०) राख आदि को उबाल कर कपड़े धोने के लिए तैयार किया गया घोल।

**टाशा**—पु० (सो०) धब्बा, हलका स्पर्श।

**टाशुणा**—स० क्रि० (सो०) हलका स्पर्श किया जाना।

**टासमटासी**—स्त्री० (मं०) दिखावा।

**टाहली**—स्त्री० (ऊ०) Dalbergia sissoo.

**टाही**—स्त्री० (चं०) पशु बांधने के लिए लगाई गई लकड़ी, खूंटा।

**टाहू**—पु० (कु०) घास आदि इकट्ठा करने के लिए आगे से मुड़े हुए लोहे के दांतों वाला उपकरण।

**टाहे-पटाहे**—अ० (ऊ०) इधर-उधर की।

**टाहे-पटाहे पढ़ना**—स० क्रि० (कां०, बि०, ह०) भिन्न-भिन्न बहाने बनाना।

**टाहड़**—स्त्री० (बि०) झंझट।

**टाहणा**—स्त्री० (सि०) टहनी।

**टाहुल**—पु० (मं०) मकान की दूसरी मंज़िल।

**टाहल**—स्त्री० (बि०) भंवरे का छत्ता।

**टाहला**—पु० (मं०) कमरे की छत तथा ऊपरी छत के बीच का स्थान।

**टाहली**—स्त्री० (ऊ०, चं०) एक वृक्ष विशेष जो फर्नीचर आदि बनाने के काम आता है।

**टिंड**—स्त्री० गंजापन। खोपड़ी।

**टिंड**—स्त्री० (बि०) अभिमान, हठ।

**टिंडडू**—पु० (शि०, सो०) टीन का छोटा सा डब्बा।

**टिंडफोड़ा**—पु० बरतन आदि।

**टिंडा**— पु० (शि०) मक्की का भुट्टा। आंख।

**टिंडे**—पु० (मं०) आंखें।

**टिंडो**—पु० (सि०) मक्की के दाने निकालने के बाद बचा भुट्टे का शेष भाग, गुल्ली।

**टिंबर**—पु० (कु०) एक कांटेदार झाड़ी जिसकी दातुन लगाई जाती है।

**टिंबरयो**—पु० (सि०) तेज़पत्र, तिरमल का पौधा।

**टिंबरा**—पु० (कु०) छेद।

**टिंबा**—पु० (शि०, सि०) चोटी।

**टिंबा**—पु० (कां०) बांस की कटी पतली परत।

**टि.ड**—पु० पेट।

**टिउण**—स्त्री० (शि०) विवाह आदि में रसोई बनाने के लिए

बनाया गया लंबा चूल्हा।
**टिक**—स्त्री० (ऊ०) हठ।
**टिकटा**—पु० (सि०) माथे की छोटी बिंदी।
**टिकड़**—पु० (कु०, शि०) मोटी रोटी।
**टिकड़ा**—पु० (चं०) बिल्कुल छोटी रोटी।
**टिकड़ा**—पु० (सि०) ढोल की पुड़ी पर लगा तेल और गुग्गुल का घोल।
**टिकड़ा**— पु० (चं०) टुकड़ा।
**टिकड़ा**—पु० (बि०, च०) गोल टुकड़ा।
**टिकड़ी**—स्त्री० (चं०, सो०) रोगग्रस्त स्थान पर लगाने के लिए बनाया गया औषधि के लेप का टुकड़ा।
**टिकड़ी/ड़ू**— स्त्री० (ऊ०) गोल वस्तु। छोटी रोटी।
**टिकड़े**—स्त्री० (सि०) छेद बंद करने की वस्तु।
**टिकणा**—अ० क्रि० ठहरना।
**टिकणा**—अ० क्रि० गाय भैंस आदि का गर्भ ठहरना।
**टिकणा**—स० क्रि० (सि०) मुकाबला करना।
**टिकनोई**—पु० (सो०, शि०) Lonicera orientalis.
**टिकमिक**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) गहनों से लदी (औरत), चमकी हुई।
**टिकरी**—स्त्री० (शि०) टिकिया।
**टिकला**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) माथे पर लगा बड़ा तिलक।
**टिकला**—वि० (कु०, शि०) ऐसा पशु जिसके माथे पर सफेद टीका हो। चितकबरा।
टिकलू—पु० (सि०) तकली में लगने वाला लकड़ी का एक उपकरण।
टिकलू—पु० बिंदी, छोटा टीका।
**टिकळू**—वि० (शि०) चितकबरा।
**टिक्स**—पु० (शि०) चपत, थप्पड़। महसूल।
**टिका**—पु० (कु०) राजा का बड़ा पुत्र।
**टिका**—पु० तिलक।
**टिका**—स्त्री० (सि०) मूर्ति, देवता की पुरातन मूर्ति।
**टिकाऊ**—वि० पक्का, स्थायी।
**टिकाणा**—स० क्रि० ठहराना।
**टिकाणा**—पु० (कां०, ऊ०) गंतव्य स्थान।
**टिकिणा**—अ० क्रि० (कु०) टिका जाना।
**टिकी**—स्त्री० (सि०) चांद।
**टिकोनी**—स्त्री० (सो०, शि०) Viburnum foetems.
**टिक्कड़**—पु० बड़े आकार की रूखी रोटी।
**टिक्का**—पु० राजा या महंत का ज्येष्ठ पुत्र।
**टिक्का**—पु० तिलक; विवाह के समय वर-वधू को दिया जाने वाला शगुन।
**टिक्की**—स्त्री० टिकिया।
**टिगू**—पु० (बि०) बंदर।
**टिच**—वि० (चं०, बि०) पूर्णरूप से सुसज्जित, सही, ठीक।
**टिचकणी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) सिटकिनी।
**टिचकरी**—स्त्री० (सि०) आलोचना, उपहास।
**टिचटिच**—स्त्री० व्यर्थ की बातें।
**टिचबटन**—स्त्री० (शि०, सि०) बटन।
**टिजोणी**—स्त्री० (सि०) अंगुलियों की हड्डियों का जोड़।
**टिट**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) टिड्डा।
**टिटक**—वि० (कु०, बि०) बहुत खट्टा।
**टिटकणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) बेरहमी से मारना-पीटना।
**टिटबिटलू**—पु० (शि०) बुलबुल के प्रकार की एक चिड़िया।
**टिटमिट**—वि० (बि०) छोटा सा।
**टिटळणा**— स० क्रि० (शि०) कीड़े को मसलना।
**टिटळा**—पु० (कु०, मं०) टिड्डा।
**टिटलूना**—अ० क्रि० (सो०) ओले आदि से प्रताड़ित होना।
**टिट्टा**—पु० (चं०) दे० टिटळा।
**टिट्टी**—स्त्री० (चं०) टिड्डी।
**टिठ**—अ० (शि०) बिल्कुल।
**टिणाका**—वि० (कु०) कसा हुआ, सख्त।
**टिणिमिणी**—स्त्री० (कु०) घंटी।
**टिनको**—पु० (मं०) टीन।
**टिनड़ा**—पु० (सो०) फटा-पुराना डिब्बा या कनस्तर।
**टिप**—अ० पानी के टपकने का स्वर।
**टिपटा**—पु० (सि०) पानी की बूंद।
**टिपड़ा**—पु० कुंडली, जन्मपत्री।
**टिपण**—पु० (कु०) लकड़ी का चौड़े मुंह वाला हत्था जिससे मिट्टी आदि को कूटा जाता है।
**टिपणा**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) बच्चों को पीटना।
**टिपणा**—स० क्रि० (चं०) वर्षा में छत टपकने पर छत की मिट्टी को पीटकर दबाना।
**टिपणा**—अ० क्रि० (कु०) भींचा जाना, दबना।
**टिपणा**—स० क्रि० (शि०) उठाना।
**टिपणा**—स० क्रि० (कु०) दीवार आदि के साथ चिपकाना।
**टिपणो**—स० क्रि० (शि०)उठाना, चुनना।
**टिपळा**—पु० मोटी बूंद। आंसू।
**टिपलू**—पु० आंसू की छोटी बूंद।
**टिपाणो**—स० क्रि० (सि०) दूर ले जाना।
**टिपिणा**—अ० क्रि० (कु०) दब जाना।
**टिपु**—पु० (शि०) मक्खन निकालने के लिए जमाया गया दूध।
**टिप्पा**—पु० छत से गिरता पानी, बूंद।
**टिब्बड़ी**—स्त्री० छोटी पहाड़ी।
**टिब्बा**—पु० ऊंचा स्थान, टीला।
**टिमकू**—पु० (चं०) बिंदु।
**टिमणा**—स० क्रि० (कु०) सूई आदि चुभाना, छेद करना।
**टिमणा**—स० क्रि० (कु०) पट्टू बांधती बार कंधों के पास सूई आदि से पट्टू को टिकाना।
**टिमणा**—स० क्रि० (कु०) घास की बनी जूती में घास का धागा लगाना।
**टिर**—स्त्री० (कां०) शिखा, पर्वत।
**टिरकणा**—अ० क्रि० खिसकना।
**टिरकी**—स्त्री० (चं०) खाना खाते समय सब्जी में डाला गया घी।
**टिरकी**—स्त्री० (शि०, सि०) मिट्टी का घड़ा।
**टिरकू**—पु० मिट्टी का छोटा बरतन।
**टिरकू**—वि० खिसकने वाला।

**टिरड़ी**—स्त्री० (सि०) पानी की गिरती पतली धार।
**टिरणा**—अ० क्रि० गिरना, वृक्ष से नीचे गिरना।
**टिरा**—पु० (कु०) अंकुर।
**टिराणा**—स० क्रि० (बि०) गिराना।
**टिलकणा**—अ० क्रि० (शि०) हिलना।
**टिलकाणा**—स० क्रि० (शि०) हिलाना।
**टिलड़े**—पु० (शि०) पानी की धारा।
**टिलणा**—अ० क्रि० (सि०) हिलना।
**टिलु**—पु० (सि०) खेलने की गुल्ली जो प्रायः मक्की के खाली भुट्टों से बनाई जाती है।
**टिल्ला**—पु० (कां०) टीला।
**टिल्ली**—स्त्री० (बि०) छोटा टीला।
**टिल्लू**—पु० (कां०) बादल का टुकड़ा। थोड़ा तीखा और ऊंचा टीला।
**टिल्हणा**—स० क्रि० (कु०) पत्थर आदि से शरीर के किसी अंग को दबाना।
**टिल्हिणा**—अ० क्रि० (कु०) शरीर के किसी अंग का पत्थर आदि से दब जाना।
**टिशकणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) भाग जाना।
**टिशकणा**—अ० क्रि० (शि०, सो०) फिसलना।
**टिशकणा**—वि० (सो०) फिसलन वाला।
**टिशकणा**—अ० क्रि० (कु०) किसी चीज़ का अपने स्थान से हट जाना।
**टिसणी**—स्त्री० (बि०) एक ही रट।
**टीं**—स्त्री० (कां०) गर्व, घमंड।
**टींड**—पु० (सो०) गंजा सिर।
**टींड**—पु० (सि०) मक्की की गुल्ली।
**टींडा**—वि० (सो०) गंजा।
**टींडा**—पु० (कां०) एक गोल बीज।
**टींडा**—पु० एक सब्जी।
**टींडू**—वि० (शि०) ठिंगना, छोटे कद का।
**टींबणो**—स० क्रि० (शि०) एकत्रित करना।
**टींबरा**—पु० (कु०) छेद।
**टींबरी**—स्त्री० (कु०) बारीक छेद।
**टींबा**—पु० (शि०) पर्वत की चोटी।
**टींहडा**—पु० (बि०) छोटी शाखाओं वाला पौधा।
**टीक**—स्त्री० (मं०) टीक, माथे पर लगाने का आभूषण।
**टीकणो**—स० क्रि० (शि०) सहारा देना।
**टीका**—पु० (सि०) मुख्यमूर्ति।
**टीका**—पु० (कां०) क्षेत्र विशेष।
**टीकू**—वि० (शि०) तिलकधारी।
**टीको**—पु० (शि०) राजा का ज्येष्ठ पुत्र।
**टीकोट**—पु० (सि०) टिकट।
**टीट**—पु० (कां०) कपड़ों व कागजों को खा जाने वाला एक कीड़ा।
**टीट**—वि० बहुत खट्टा।
**टीटणी**—स्त्री० (चं०) बाजा।
**टीण**—पु० (कां०) विवाह आदि में भोजन पकाने के लिए बनाया गया चूल्हा विशेष।
**टीणा**—वि० तिरछा देखने वाला।
**टीणीमीणी**—स्त्री० (कु०) घंटी जो देवतों के "गुर" के पास होती है।
**टीणू**—वि० (शि०) बहरा।
**टीन**—पु० टीन।
**टीनकु**—पु० (कु०) टीन का छोटा बरतन।
**टीनटू**—पु० (सि०) छोटा कनस्तर।
**टीप**—स्त्री० सूई से टांका लगाने की क्रिया।
**टीप**—पु० (मं०) अंकुर।
**टीप**—स्त्री० कुंडली। जन्मपत्री।
**टीप**—स्त्री० पत्थर और ईंट की चिनाई करते समय जोड़ों में किया गया पलस्तर।
**टीपण**—पु० (कु०) लकड़ी की बनी एक ऐसी थापी जो आगे से काफी मोटी होती है, जिससे 'खनोर' आदि तोड़े जाते हैं।
**टीपणा**—स० क्रि० (मं०) चुनना।
**टीपणा**—स० क्रि० (शि०) अंकित करना।
**टीपिणा**—अ० क्रि० (कु०) दो चीज़ों के बीच दब जाना।
**टीबड़ु**—पु० (शि०) चोटी।
**टीबू**—पु० (कु०) ठंड लगने का भाव।
**टीमणा**—वि० (शि०) ठिंगना।
**टीमरु**—पु० (कां०) छोटा सा सुराख।
**टीमा**—पु० (कु०) चट्टानें।
**टीमोणी**—स्त्री० (शि०) छोटी-छोटी अरबी।
**टीर**—स्त्री० (सि०, सो०) किनारा।
**टीर**—स्त्री० (कु०) अंकुर।
**टीर**—स्त्री० (कु०) छोटा और पतला वृक्ष।
**टीर**—स्त्री० (शि०, सि०) पर्वत शिखर, धार।
**टीर**—पु० (सि०) गांव से दूर का निवास।
**टीर**—पु० (चं०) आंख।
**टीरकु**—पु० (शि०) घड़ा।
**टीरा**—स्त्री० (मं०) वृक्ष की चोटी।
**टीरा**—पु० (सि०) शहतीर।
**टीरा**—स्त्री० (मं०) लकड़ी के किनारे की धारें।
**टीरोटीर**—वि० (सि०, सो०) भरपूर, लबालब।
**टीलड़ी**—स्त्री० (कु०, सि०) पहाड़ की छोटी चोटी।
**टील्ही**—स्त्री (मं०) गुल्ली डंडे का खेल।
**टीशणा**—स० क्रि० (कु०) छीलना, तेज़ औज़ार से लकड़ी की तह साफ करना।
**टीशिणा**—स० क्रि० (कु०) छीला जाना।
**टीस**—स्त्री० पीड़ा।
**टीस**—स्त्री० (मं०) स्पर्धा की भावना।
**टीहरका**—पु० (चं०) घर की छत में रखे गये सुराख जिनसे धूप की किरणें अंदर आती हैं।
**टुं**—पु० (कां०) चुभाने की क्रिया।
**टुंकु**—पु० बच्चों के छोटे हाथ।
**टुंखड़ा**—पु० (सि०) ऊंचे अनार के पेड़ से अनार उतारने का डंडा।

**टुंगड़ी**—पु० Holbellia Letifolia.
**टुंगणा**—स० क्रि० टांगना।
**टुंगणी**—स्त्री० टांगने की जगह, कीली, खूंटी।
**टुंघली**—स्त्री० (मं०) टांग।
**टुंज**—स्त्री० (कां, बि०, ह०) झगड़े का आरम्भ, छेड़खानी।
**टुंटगंठा**—पु० (शि०) Ephedra gerardian.
**टुंड**—पु० (कां०, चं०) पैर।
**टुंडणा**—अ० क्रि० (सि०) ठंड से कांपना।
**टुंडला**—वि० (कां०, कु०) टूटे हुए या कटे हुए बाजू वाला।
**टुंडा**—वि० जिसके हाथ न हो।
**टुंडी**—स्त्री० (कां०, बि०) मरी हुई भेड़-बकरी की टांग।
**टुंडीठरकणा**—अ० क्रि० (बि०) कहीं जाने या घूमने फिरने के लिए तैयार होना।
**टुंडीमुडी**—वि० (कु०) शाखाहीन (पेड़)।
**टुंडु**—पु० (ऊ०, कां०, कु०) हाथ।
**टुंडु**—पु० पशु पक्षियों के पैर, पैर।
**टुंब**—स्त्री० पेट दर्द, व्यंग्यात्मक रूप में इसका प्रयोग तब किया जाता है जब एक व्यक्ति दूसरे की हानि करने पर तुला हुआ हो; नखरा।
**टुंबलमुंडी**—स्त्री० (कु०) झुका सिर; एक जड़ी जिसका सिरा पृथ्वी की ओर झुका रहता है।
**टुंबला**—वि० (कु०) झुका हुआ।
**टुंबलिणा**—अ० क्रि० (कु०) झुक जाना।
**टुंसणो**—अ० क्रि० (शि०) किसी कारणवश रोना।
**टुंहक**—पु० (कु०) लंबे डंडे के चारों तरफ लगाया ऊंचा घास का ढेर।
**टुआंडरा**—वि० (कां०) अधखुला।
**टुआ**—पु० (कु०) जड़ का एक भाग।
**टुआटरा**—वि० (कां०) थोड़ा भूखा।
**टुइ**—अ० (सि०) एक ध्वनि।
**टुइआ**—पु० (शि०) कुत्ता।
**टुइया**—पु० (सि०) हाथ।
**टुक**—पु० (कां०) आंख में चोट लगने के कारण पड़ा धब्बा।
**टुक**—पु० (ऊ०, कां०) रोटी का टुकड़ा।
**टुकड़तोड़**—वि० (शि०) बेकार, आलसी।
**टुकड़ा**—पु० (सो०) कलेवा। किसी वस्तु का एक खंड़।
**टुकड़ू**—पु० छोटा टुकड़ा।
**टुकड़े**—पु० (कु०) कद्दू के पकाए हुए टुकड़े।
**टुकणा**—स० क्रि० काटना।
**टुकरा**—पु० (कु०) आधा टुकड़ा।
**टुकलाण**—पु० (ह०) पशु को चारे के साथ दिया जाने वाला अनाज।
**टुकोण**—पु० (शि०) बड़ा बर्तन।
**टुकोण-बढ़ोण**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मारपीट, झगड़ा।
**टुकोर**—पु० कहीं चोट लगने पर उस पर दिया जाने वाला घी और हलदी का टकोर, सेंक।
**टुकोर**—पु० (शि०) किसी चीज़ को उठाने के लिए प्रयोग की जाने वाली लकड़ी।
**टुगी**—स्त्री० (कु०) लड़की।
**टुचकरा**—वि० व्यर्थ की बातें करने वाला।
**टुचकरी**—स्त्री० छेड़छाड़, हंसी-मज़ाक।
**टुटका**—पु० (कु०) शेष भाग।
**टुटणा**—अ० क्रि० टूटना।
**टुटियायिणो**—अ० क्रि० (शि०) आपस में वाक्-युद्ध होना।
**टुटेल**—वि० (चं०) टूटा हुआ।
**टुणक**—पु० (चं०) परखने की क्रिया।
**टुणकाणा**—स० क्रि० (चं०) परखना, रुपया बजाकर परखना।
**टुणा**—पु० (कु०) जादू-टोना।
**टुणो**—वि० (शि०) नीच (व्यक्ति)।
**टुन**—वि० नशे में धुत्त।
**टुपचाणे**—अ० (कु०) चुपचाप से।
**टुपटणु**—पु० (मं०) थापी।
**टुपटुप**—अ० (कु०) धीरे से।
**टुपा**—पु० (कु०) टांका, हाथ से की गई मोटी सिलाई।
**टुपादुपी**—अ० (कु०) चुपके-चुपके।
**टुप्पा**—पु० (मं०) सुई से कपड़े सिलने का भाव।
**टुबणा**—अ० क्रि० (मं०) ज़मीन में दबना।
**टुमका**—पु० (चं०) अंग छू कर किया गया संकेत।
**टुमका**—पु० (सि०) ताना।
**टुमणा**—स० क्रि० (चं०) घुसेड़ना।
**टुम्मी रखणा**—स० क्रि० (चं०) किसी वस्तु को भूमि में मिट्टी में दबा कर रखना।
**टुरणा**—अ० क्रि० (सि०) धीरे-धीरे चलना।
**टुरा**—वि० (कु०) छोटे कानों वाला, झुके हुए कानों वाला।
**टुलक**—स्त्री (चं०) चिकनाई की चमक।
**टुलकणा**—अ० क्रि० मर जाना।
**टुलकणा**—अ० क्रि० (सि०, सो०) नींद में ऊंघना।
**टुलका**—पु० झपकी।
**टुलका**—वि० (शि०) बिना सींग का (बकरा)।
**टुलकुणा**—अ० क्रि० (सो०) झपकी आना।
**टुलड़ी**—वि० (कु०) एकतरफा चलने वाली।
**टुलणा**—अ० क्रि० (कां०) दे० टुलकुणा।
**टुलणा**—अ० क्रि० (सि०) मस्त होना।
**टुलनी**—स्त्री० (बि०) झपकी।
**टुलपुल**—स्त्री० दयनीय दृष्टि।
**टुला**—पु० (शि०) पत्थर।
**टुला**—पु० (कां०, कु०) गुल्ली डंडा के खेल में गुल्ली पर लगी चोट।
**टुळा**—पु० (कां०) अपनी भूमि की सीमा।
**टुली**—स्त्री० (कु०) झपकी।
**टुल्लूम**—पु० (कां०) टांग के बल पड़ने की क्रिया।
**टुल्ह**—पु० (मं०) सिर पर जूं मारने की क्रिया।
**टुल्हकू**—पु० (कु०) झपकी।
**टुल्हणा**—अ० क्रि० (कु०) ऊंघना।
**टुल्हा**—पु० (ह०) जांच।
**टुल्ही**—स्त्री० (कु०) नींद।

**टुवरू**—पु० (मं०) छोटा खेत।
**टुशणा**—स० क्रि० (कु०, सो०) पोंछना, साफ करना।
**टुशणा**—स० क्रि० (सि०) सुखाना।
**टुशिणा**—अ० क्रि० (कु०) कपड़े आदि से साफ किया जाना।
**टुसंगर**—पु० (ह०) गेहूं गाहने के बाद बचा भूसे का मोटा कचरा।
**टुसमकू**—पु० (सि०) सूई से छेद करने की क्रिया।
**टुहळा**—पु० (कां०) अनुमान।
**टुहाणिया**—पु० (कां०) दुकानदार।
**टूंकणा**—अ० क्रि० (सि०) गीदड़ का चीखना।
**टूंजणी**—स्त्री० (मं०) वृद्धावस्था में हाथ पांव तथा शरीर में होने वाली कंपन।
**टूंजो**—पु० (शि०) इंतज़ार।
**टूंड**—वि० (शि०) नुकीला, उभरा भाग।
**टूंड***—पु० (शि०, सो०) हाथ।
**टूंडा**—वि० (कु०) जिसका हाथ न हो।
**टूंडू**—वि० (शि०) टूटे हुए हाथ वाला।
**टूंबे**—पु० (मं०) पट्टू सिलने के लिए प्रयोग की जाने वाली सूइयां।
**टूंहक**—पु० (चं०) एक पक्षी विशेष।
**टूआ**—पु० (कु०, मं०) नई कोंपल।
**टूकन**—पु० (बि०) विवाह में दिया जाने वाला उपहार।
**टूकमासा**—स्त्री०(सि०) लंबी आवाज़ देने की क्रिया।
**टूका**—पु० (शि०) दांत मारने की क्रिया।
**टूचपण**—पु० (कां०) शरारत, धूर्तता।
**टूचा**—वि० शरारती।
**टूजंदा**—स्त्री० (शि०) प्रतीक्षा।
**टूट**—पु० (सि०) पशु का मुंह।
**टूट**—स्त्री०(शि०) कमी।
**टूटणा**—अ० क्रि० (सि०) टूटना।
**टूटिओ**—पु० (शि०, सि०) अरबी की सब्जी।
**टूटी**—स्त्री० नल।
**टूटी**—स्त्री० (मं०) कटोरी।
**टूटी**—वि० (चं०) चालाक।
**टूटुआ**—पु० (सो०) अरबी की छाछ में तड़की सब्जी।
**टूटू**—पु० (कां०) मक्की का भुट्टा।
**टूडू**—पु० (शि०) खेत का किनारा।
**टूणा**—वि० (कु०) जिसका कान न हो।
**टूणा**—पु० (कां०, शि०) जादू-टोना, अचरज।
**टूणा**—पु० (मं०) बच्चे को लगाया जाने वाला काला टीका।
**टूणो**—पु० (शि०) बात बनाने का भाव।
**टूम**—स्त्री० (मं०) शरारत।
**टूर**—वि० (चं०) बेलिहाज़।
**टूरना**—अ० क्रि० (कां०, बि०) झांकना।
**टूरा**—वि० (चं०) तिरछी नज़र वाला।
**टूरे**—वि० (शि०) बहरा।
**टूशाटाशि**—स्त्री० (कु०, सि०, सो०) ऊपरी लीपा-पोती।
**टूहक**—पु० (कां०) उल्लू जाति का पक्षी।
**टूहणा**—स० क्रि० (चं०) टटोलना।
**टूहक**—अ० (सि०) एक लंबी ध्वनि जिससे जंगल में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को अपनी उपस्थिति की सूचना देता है।
**टें**—स्त्री० अकड़।
**टेंई**—स्त्री० कुत्ते की चीख।
**टेंई**—स्त्री० (सि०) टहनी।
**टेंटें**—स्त्री० शोर।
**टेंड**—पु० (सि०) मक्की का डंठल।
**टेंडा**—पु० (कु०) आंख।
**टेंहिटा**—पु० (कु०) तंबू।
**टेऐं**—स्त्री० (सि०) टहनी।
**टेओं**—पु० (सि०) इंतज़ाम।
**टेओका**—पु० किसी वस्तु को टिकाने के लिए लगाया गया सहारा।
**टेक**—स्त्री० (सि०) सहारा। कसर।
**टेकण**—स्त्री० (शि०) रोक।
**टेकणा**—अ० क्रि० (कु०) ठहरना, रुक जाना, टिकना।
**टेकणा**—अ० क्रि० कदम रखना।
**टेकणा**—स० क्रि० सिर झुका कर अभिवादन करना, सहारा देना।
**टेकणो**—अ० क्रि० (शि०) मुकाबला करना।
**टेका**—पु० (शि०) सहारा, प्रतीक्षा।
**टेका**—वि० (बि०) मूर्ख।
**टेका**—पु० (सो०) ठहराव, टिकाव।
**टेकालणो**—स० क्रि० (शि०) टिकाना।
**टेकावणा**—स० क्रि० (शि०) सहारा देकर टिकाना।
**टेकावणो**—स० क्रि० (शि०) टिकाना।
**टेकिणा**—अ० क्रि० (कु०) टिका जाना।
**टेकी**—स्त्री० (बि०, ह०) गिरते हुए मकान को सहारा देने के लिए लगाई गई बांस आदि की लकड़ी।
**टेटरा**—पु० (शि०) पशु की गर्दन।
**टेटरा**—पु० (सि०)आंख की पुतली।
**टेटरो**—वि० (सि०) कड़ा, सख्त।
**टेटळे**—पु० (शि०) आंख की पुतली।
**टेड़**—पु० (कु०) अनाज में लगने वाला कीड़ा।
**टेडा**—वि० टेढ़ा।
**टेढ़ई**—स्त्री० (शि०) टेढ़ापन।
**टेढ़ाबांगा**—वि० (शि०) टेढ़ा-मेढ़ा।
**टेणकदा**—वि० (कु०) सख्त।
**टेणा**—वि० (कु०) ऐसा व्यक्ति जिसकी एक आंख बड़ी व दूसरी छोटी हो।
**टेननू**—पु० (ह०) सूत की अट्टी बनाने का लकड़ी का यंत्र।
**टेपका**—वि० (कु०) ऐसा खाद्य जिसका स्वाद अच्छा न हो और कुछ कड़वा हो।
**टेपटेप**—स्त्री० (कु०) ऊपर-ऊपर से देखने का भाव।
**टेपडू**—पु० (शि०) दही से मक्खन निकालने की क्रिया।
**टेपरा**—वि० (सि०, सो०) काना।
**टेपळा**—पु० आंसू।
**टेपा**—पु० (बि०, शि०, ह०) बूंद।

**टेपा**—पु० (कु०) गाने का बोल, टप्पा।
**टेफ**—पु० (कां०) ढलानदार जगह।
**टेर**—स्त्री० (चं०) छेड़।
**टेर**—स्त्री० (शि०) तान, गाने में ऊंचा स्वर।
**टेर**—स्त्री० (कु०) नस खिंच जाने से गर्दन में होने वाली अकड़न।
**टेर**—स्त्री० रुख, हठ, सनक।
**टेरक**—पु० (चं०) लड़का।
**टेरकदा**—वि० (बि०) शरारती (बालक)।
**टेरकी**—स्त्री० (चं०) लड़की।
**टेरकू**—पु० (चं०) लड़का।
**टेरकूहणा**—पु० (चं०) बच्चे।
**टेरणा**—पु० (सि०) सूत बाटने का उपकरण।
**टेरन**—पु० अटेरन, सूत की आंटी बनाने का यंत्र।
**टेरना**—स० क्रि० (कां०) छेड़ना। पुकारना।
**टेरना**—स० क्रि० (मं०) गलाना।
**टेरना**—स० क्रि० (कां०) आरंभ करना।
**टेरना**—स० क्रि० (ह०) अटेरना, सूत की आंटी बनाना।
**टेरना**—स० क्रि० (चं०, मं०) खेत को संवारनां।
**टेरनाबेल**—स्त्री० एक वन्य लता।
**टेरनी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) Tylophora hirsuta.
**टेरनू**—पु० (कां०) अटेरन।
**टेरवा**—वि० (सो०) हठी, ज़िद्दी।
**टेरा**—पु० (चं०) संवारने का कार्य।
**टेरु**—वि० (सि०) टेढ़ा।
**टेरुआ**—वि० (शि०) हठी।
**टेरेशा**—वि० (चं०) शरारती।
**टेल**—पु० (सि०) पक्षी का छोटा बच्चा।
**टेलणु**—पु० (शि०, सि०) मुर्गी का बच्चा।
**टेलर**—पु० (सि०) पक्षी का बच्चा।
**टेला**—पु० (ह०) विभिन्न प्रकार के खेतों का समूह।
**टेला**—पु० (शि०) हिंसक जानवर का बच्चा।
**टेलु**—पु० (कु०) साथी।
**टेलो**—पु० (शि०) छोटा बच्चा।
**टेलो**—पु० (शि०) चिड़िया का बच्चा।
**टेलो**—पु० (कु०) नींद का झटका।
**टेवका**—पु० (सि०, सो०) वस्तु टिकाने के लिए लगाया गया सहारा।
**टेवा**—पु० (शि०) जन्मकुंडली।
**टेवी**—स्त्री० (सि०) लकड़ी की टेक।
**टेहडू**— पु० (मं०) दालों में लगने वाला कीड़ा।
**टेहणां**—स्त्री० (कु०) टेक, सहारा।
**टेहफा**—पु० (कु०) मिट्टी का ढेर।
**टेहा**—पु० (कु०) सहारा।
**टैंचमैंच**—वि० (कां०) सजा-संवरा।
**टैंटा**—पु० (मं०) बखेड़ा।
**टैं-टैं**—अ० व्यर्थ की रट।
**टैओं**—पु० (शि०) प्रबंध।
**टैकणा**—स० क्रि० (कु०) आरोप लगाना।
**टैकणो**—स० क्रि० (शि०) पकड़ना।
**टैका**—पु० (कु०) पैसा।
**टैच**—स्त्री० (मं०) रात।
**टैची**—स्त्री० अटैची।
**टैड़ा**—पु० (मं०) पीपल या बरगद का चबूतरा।
**टैम**—पु० समय, फुरसत।
**टैमका**—पु० (कु०) धमाका।
**टैला**—पु० (सो०) दूध बादाम से बना शक्तिवर्धक पेय।
**टैली**—स्त्री० (शि०) दूर को लगाई गई आवाज।
**टैलीणो**—स० क्रि० (शि०) आवाज़ देना, बुलाना।
**टैहकणा**—अ० क्रि० चमकना। चहकना, चीखना।
**टैहकदा**—वि० चमकीला।
**टैहरा**—पु० जानबूझ कर अनजान बना हुआ।
**टैहल**—स्त्री० सेवा, उपचार।
**टैहलो**—पु० (कु०, मं०) विशेष उत्सव पर काम करने वाले।
**टोंक**—स्त्री० (कां०) इच्छा।
**टोंट**—पु० (सि०) बिल्ला।
**टोंडका**—पु० (सि०) लड़का।
**टोंडा**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) चालाक, खिल्ली उड़ाने वाला।
**टोंडा**—पु० (सि०) जवान व्यक्ति।
**टोंरा**—पु० (सि०) बाजरे का ऊपरी भाग।
**टोंराड़**—वि० (मं०) जहां 'टौर' (दाल) अधिक होती है।
**टो:णा**—स० क्रि० छूना, थाह लेना।
**टोआ**—पु० (सि०) छोटा घास जो हलकी सी हरियाली उभारता है।
**टोआ**—पु० गड्ढा।
**टोआ**—पु० (सि०) सहारा।
**टोहणा**—अ० क्रि० (कु०) किसी के आगे चुपचाप खड़े रहना।
**टोइणा**—स० क्रि० (कु०) पानी आदि का भरा जाना।
**टोक**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) सर्दी के कारण छाती में होने वाली पीड़ा।
**टोक**—स्त्री० नज़र लगने का भाव।
**टोकटकाई**—स्त्री० बाधा डालने की क्रिया।
**टोकणा**—स० क्रि० (कु०) काटना।
**टोकणा**—स० क्रि० जाते समय पूछताछ करना।
**टोकणा**—पु० (शि०, सि०, सो०) पीतल का एक बड़ा बर्तन जिसका प्रयोग बड़े आयोजनों के अवसर पर होता है।
**टोकणी**—स्त्री० (शि०, सो०) पानी ढोने का पीतल का घड़े के आकार का बरतन।
**टोकर**—स्त्री० (सि०) टेक।
**टोकरन**—पु० (सि०) मिट्टी ढोने का बांस का बड़ा टोकरा।
**टोकरा**—पु० बांस का बना हुआ टोकरा।
**टोकराणो**—स० क्रि० (शि०) टकराना।
**टोकरु**—पु० बांस की छोटी टोकरी।
**टोकलाणा**—स० क्रि० (शि०) किसी चीज़ को ठुकराना।
**टोका**—पु० (बि०) ज़िम्मेदारी।
**टोका**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मक्की के पौधे की जड़ों में लगने

वाला कीड़ा।

**टोका**—पु० लोहे का उपकरण, जिससे घास आदि काट कर छोटा किया जाता है।

**टोकिणा**—स० क्रि० (कु०) काटा जाना।

**टोकें**—पु० (चं०) लकड़ी के टुकड़े।

**टोकें**—पु० घास काटने की मशीन में लगे तेज़ उपकरण।

**टोकै**—पु० (कु०) चांदी के कंगन।

**टोक्का**—पु० (सि०) पैसा।

**टोक्का**—पु० (कां०) घुंघरू।

**टोचकड़ा**—पु० (चं०) हास्य वाक्य।

**टोट**—स्त्री० (कु०) पशुओं का मुंह, मद्दा मुंह।

**टोट**—स्त्री० कमी।

**टोटका**—पु० छोटा टुकड़ा, छोटी सी बात, हास्य वाक्य।

**टोटका**—पु० तंत्र-मंत्र से संबद्ध, नुस्खा।

**टोटण**—वि० (चं०) मुंडित सिर।

**टोटरा**—वि० (सि०) सख्त।

**टोटरिणो**—अ० क्रि० (शि०) ठंड के मारे सिकुड़ना।

**टोटरू**—पु० (कां०, ह०) कपाल।

**टोटरू**—पु० (कां०, ह०) पक्षी विशेष।

**टोटला**—वि० (मं०) दे० टोटण।

**टोटली**—स्त्री० (कु०) दे० टोटण।

**टोटा**—पु० (चं०) काटने के बाद बचा मक्की का तना।

**टोटा**—पु० (चं०, बि०) गाने का अंश।

**टोटा**—पु० (शि०) चावल का चूरा।

**टोटा**—पु० गट्ठा।

**टोटा**—पु० टुकड़ा।

**टोटा**—पु० हानि, कमी।

**टोटी**—स्त्री० (चं०) शहनाई।

**टोटी**— वि० (शि०) मद्दे मुंह वाला।

**टोटीण**—वि० (शि०) मद्दे मुंह वाली।

**टोटू**—पु० (शि०) डंडा।

**टोटो**—पु० (शि०) टुकड़ा।

**टोटो**—वि० (शि०) सुंदर चीज़।

**टोडा**—पु० (सो०) खेत के ऊपर या नीचे की दीवारनुमा भाग जिसमें घास उगा होता है।

**टोडा**—पु० (बि०) कच्चे मकान की दीवार में लगाई जाने वाली लकड़ी।

**टोडा**—पु० (चं०) पत्थर का अधगढ़ा टुकड़ा।

**टोडा**—पु० (सि०) खाली कारतूस।

**टोडी**—स्त्री० (सो०) मेंड़, खेत की हदबंदी।

**टोढ**—पु० (शि०) अनाज में लगने वाला बारीक कीड़ा।

**टोढ़ा**—पु० (चं०) उपवास।

**टोणण**—वि० (सि०) सूखा।

**टोणना**—स० क्रि० (ह०) ढूंढना।

**टोणा**—स० क्रि० (कु०) पानी आदि गिरते द्रव पदार्थ को किसी पात्र में एकत्र करना।

**टोणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) देखना या हाथ लगा कर परखना, छूना, ढूंढना।

**टोणेसर**—वि० बहरा।

**टोप**—पु० बड़ी टोपी।

**टोपणू**—पु० ढक्कन।

**टोपा**—पु० बड़ी टोपी।

**टोपा**—पु० (बि०) धान का एक परिमाण।

**टोपी**—स्त्री० टोपी।

**टोपी**—स्त्री० धातु का गहरा ढक्कन जिस पर बंदूक के घोड़े के गिरने से आग लगती है।

**टोपू**—पु० छोटी टोपी।

**टोपे**—स्त्री० (सि०) टोपी।

**टोभा**—पु० छोटा जलाशय।

**टोमा**—पु० बूंद।

**टोर**—पु० (मं०) स्थानीय कठोर दाल।

**टोर**—पु० (सि०) आंख से ऊपर का सिर का भाग।

**टोर**—पु० (कां०) पशुओं को बांधने का स्थान।

**टोरक**—वि० (कु०) अलग रहने वाला अकेला (बंदर)।

**टोरड़े**—पु० (सि०) ईंटों के टुकड़े।

**टोरणा**—स० क्रि० (शि०) पानी निथारना।

**टोरना**—स० क्रि० (ऊ०, मं०) भेजना।

**टोरना**—स० क्रि० (शि०) निराई करना।

**टोरा**—पु० (कु०) घराट की नाली में अकस्मात् पड़ा पत्थर जिससे पानी रुक जाता है।

**टोरा**—पु० (कु०) पक्की लकड़ी का टुकड़ा।

**टोरा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) ज़मीन की सीमा पर गड़ा पत्थर या लकड़ी, बुर्जी।

**टोरा**—पु० (सि०) शहतीर।

**टोरा**—पु० (शि०) भूखे मरने का भाव।

**टोरी**—स्त्री० (सि०) छत की स्लेट या पतली लकड़ी, घज्जी।

**टोरु**—पु० (कि०) छिद्र।

**टोल**—पु० (चं०, ह०) बड़ी चट्टान, बड़ा पत्थर।

**टोल**—स्त्री० (सि०) हठ।

**टोल**—पु० (शि०) समूह।

**टोल**—पु० (सि०) कार्य।

**टोल**—पु० कुटुंबों का समूह।

**टोलणा**—स० क्रि० ढूंढना।

**टोलणा**—अ० क्रि० (सि०) पागल होना।

**टोलना**—अ० क्रि० (सि०) हिलना।

**टोला**—पु० (शि०) छोटा समूह, मंडली।

**टोळा**—पु० (सो०) भौंला।

**टोली**—स्त्री० गिरोह।

**टोली**—स्त्री० (शि०) घास का व्यवस्थित ढेर।

**टोल्ला**—पु० (सि०) पत्थर।

**टोल्ह**—पु० (कु०) बड़ा पत्थर।

**टोल्हकू**—पु० (कु०) छोटा पत्थर।

**टोल्ही**—पु० (मं०) गुल्ली डंडे का खेल।

**टोल्हू**—पु० (चं०) मकान में बनाया छोटा सा छेद।

**टोवा**— पु० (सि०) अंकुर।

**टोह**—स्त्री० (बि०) थाह, अंदाज़ा, खोज।

**टोहण**—स्त्री० (मं०) जानकारी, परख।
**टोहण**—स्त्री० (कु०) सख़्त सर्दी के कारण हाथ-पांव में लगने वाली ठंड।
**टोहणा**—स० क्रि० (कु०) रोपना, पनीरी आदि लगाना।
**टोहणी**—स्त्री० थाह लेने की क्रिया।
**टोहर**—पु० (सि०) पहरावा।
**टोहरा**—पु० (कु०) छेद।
**टोहा**—पु० (कु०) लाठी।
**टोहाटाई**—स्त्री० (शि०) छानबीन।
**टोहिया**—पु० (शि०) जासूस।
**टोइल**—स्त्री० (बि०) बड़ी चट्टान।
**टोहवा**—पु० (ह०) पानी का गड्ढा।
**टौंटा**—वि० (शि०) मानसिक रूप से विकलांग।
**टौंडा**—वि० आवारा, लफंगा, बदमाश।
**टौइल**—स्त्री० (कु०) घर के छोटे-मोटे काम में हाथ बटाने का भाव।
**टौई**—वि० (कु०) सीधी-सादी।
**टौका**—पु० (शि०) पैसा, माल-टाल।
**टौगस**—पु० (मं०) कर्णफूल।
**टौच**—वि० (चं०) चकित (व्यक्ति)।
**टौटरा**—वि० (कु०) अधपका, सख़्त।
**टौटरा**—वि० (शि०) सीधा-सादा।
**टौटळ**—वि० (कु०) अस्थिर स्वभाव वाली।
**टौटळी**—स्त्री० (कु०) घराट में लगा लकड़ी का एक उपकरण जो घराट के ऊपरी पत्थर पर बजता रहता है और दाने गिराता है।
**टौडा**—वि० (मं०) चालाक।
**टौणका**—पु० (कु०) टुकड़ा।
**टौणा**—वि० बहरा।
**टौणेसर**—वि० दे० टौणा।
**टौपणा**—स० क्रि० (सि०) लांघना, पार करना।
**टौपणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) आगे बढ़ना, पार करना।
**टौफी**—स्त्री० टाफी, एक मीठी गोली।
**टौमणा**—अ० क्रि० (मं०) नींद में बोलना।
**टौर**—स्त्री० (शि०) शान।
**टौर**—पु० (मं०) एक जंगली बेल जिसके पत्ते की पत्तल बनाई जाती है।
**टौरे**—पु० (शि०) चावल आदि के छांटे हुए दाने जो खाये नहीं जाते, खाने के अयोग्य दाने।
**टौल**—पु० (शि०) काम।
**टौळ**—स्त्री० टहल, सेवा।
**टौळ**—स्त्री० (सो०) खाना आदि बनाने में हाथ बटाने का भाव।
**टौळना**—अ० क्रि० (शि०) खिसकना।
**टौळना**—अ० क्रि० (कु०) आत्मा का भटकना।
**टौलनो**—अ० क्रि० (शि०) दूध आदि का खराब होना।
**टौलरा**—वि० (कु०) ऐसा व्यक्ति जो ध्यान से बात न सुनता हो।
**टौलरुआदा**—वि० (कु०) घायल।
**टौली**—वि० (कु०) नासमझ।
**टौलुआ**—पु० (सो०) सेवा, टहल करने वाला व्यक्ति।
**टौळे**—स्त्री० (शि०) काम, सेवा।
**टौशकणा**— अ० क्रि० (शि०) बहाना बनाकर खिसकना।
**टौहर**—स्त्री० शानोशौकत।
**टौहक**—स्त्री० (कु०) सेवा शुश्रूषा।
**टौहला**—पु० (कु०) कपड़ा।
**ट्याऊ**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मकान का स्तंभ बनाने का लकड़ी का चौखटा।
**ट्याळे**—स्त्री० (शि०) आवाज़।
**ट्रिढ**—स्त्री० (चं०) चिकनाहट।
**ट्रीरख**—स्त्री० (मं०) ईर्ष्या।
**ट्रेहीलू**—वि० (मं०) परिश्रमी, कर्मठ।
**ट्हाणा**—स० क्रि० वापिस करना, हटाना।

## ठ

**ठ**—देवनागरी वर्णमाला में टवर्ग का दूसरा वर्ण। उच्चारण स्थान मूर्द्धा।
**ठंघर**—पु० (चं०) बंजर।
**ठंट**—पु० (सि०) जादू।
**ठंटमंठ**—पु० (सि०) जादू-टोना, आडंबर।
**ठंठणो**—स० क्रि० (शि०) ठीक करना, मुरम्मत करना।
**ठंठनाना**—स० क्रि० (शि०) ठन-ठन शब्द करना।
**ठंठपाल**—वि० (शि०) निर्धन।
**ठंठमंठ**—पु० (सि०) दे० ठंटमंठ।
**ठंठाई**—स्त्री० (शि०) मुरम्मत का पारिश्रमिक।
**ठंठी**—स्त्री० (शि०) मुरम्मत।
**ठंड**—स्त्री० सर्दी, ठंड।
**ठंडक**—स्त्री० (मं०) ज़मीन पर पहली बार हल चलाने की प्रक्रिया।
**ठंडयाई**—स्त्री० (चं०, सो०) मिस्री, मिस्री का शरबत, शीतल पेय।
**ठंडहुशी**—स्त्री० (मं०) जुकाम।
**ठंडाबार**—पु० (चं०) बुधवार।
**ठंडारा**—पु० (ह०) कुछ शांति।
**ठंडुणा**—अ० क्रि० (सो०) ठंडा होना।
**ठंडुरा**—वि० (मं०) जुकाम ग्रस्त।
**ठंडू**—वि० (मं०) बेगार करने वाला (आदमी)।
**ठंडेउणा**—अ० क्रि० (सो०) ठंडा होना।
**ठंडेरना**—स० क्रि० ठंडा करना; शांत करना।
**ठंडोणा**—अ० क्रि० ठिठुरना।
**ठंढणा**—अ० क्रि० (मं०) सर्दी से कांपना।
**ठंढाई**—स्त्री० (शि०) शरीर में ठंडक पहुंचाने वाला पेय विशेष।
**ठइरना**—अ० क्रि० (बि०) रुकना।

**ठई**—स्त्री० (शि०) कठिनाई।
**ठईका**—पु० (सि०) ठिकाना।
**ठऊळे**—पु० (चं०) लकड़ी और पत्थर के मेल से बनाए गए चौकोर खंभे।
**ठओकर**—पु० भगवान, ठाकुर।
**ठक**—अ० (शि०, सो०) एकदम।
**ठक**—स्त्री० टकराने की आवाज़।
**ठकठकाना**— स० क्रि० ठोंकना, खटखटाना।
**ठकड़ा**—पु० (सि०) कठफोड़ा।
**ठकणा**—स० क्रि० (बि०) रोकना।
**ठकरसुहाती**—स्त्री० खुशामद, चाटुकारिता।
**ठकवाली**—स्त्री० (सो०) चांदी पिघलाने का पात्र।
**ठकाणा**—पु० ठिकाना।
**ठकुराई**—स्त्री० (शि०) राज्य क्षेत्र, सल्तनत।
**ठकुराणी**—स्त्री० ठाकुर की पत्नी।
**ठगड़ा**—वि० (बि०) बूढ़ा।
**ठगड़ा**—वि० (शि०, सि०) मुखिया, बुद्धिमान्।
**ठगड़ा**—वि० (सो०) शरीफ।
**ठगड़ीन**—स्त्री० (सो०) बुद्धिमानी का दिखावा करने की प्रवृत्ति।
**ठगडु**—वि० (शि०) बुद्धिमान।
**ठगड़ो**—वि० (शि०) समझदार, होशियार।
**ठगणा**—स० क्रि० धोखा देना, ठगना।
**ठगपण**—पु० (शि०) छल-कपट।
**ठगारी**—स्त्री० (शि०) चिंगारी।
**ठगिणो**—अ० क्रि० (शि०) धोखे में आना।
**ठगी**—स्त्री० छल-कपट।
**ठचठचात**—स्त्री० (बि०) रोज़ का झगड़ा।
**ठटकोणा**—अ० क्रि० (ह०) किनारे हो जाना।
**ठट्ठा**—पु० (मं०) बांस के पत्ते।
**ठट्ठा**—पु० ज़ोर की हंसी, मज़ाक।
**ठठई**—स्त्री० (शि०) उपहास।
**ठठयार**—पु० बर्तन बनाने वाला व्यक्ति विशेष।
**ठठर**—पु० (चं०) लकड़ी के छोटे टुकड़े जो एक दीवार को दूसरी दीवार के साथ जोड़ते हैं।
**ठठरोणा**—अ० क्रि० ठिठुरना।
**ठठा**—पु० (कु०) मज़ाक।
**ठठारिण**—स्त्री० (शि०) ठठेरे की स्त्री।
**ठठेरा**—पु० पीतल आदि के बर्तन बनाने वाला।
**ठठोईर**—पु० (शि०) धनुष बाण खेलने का मेला।
**ठठोरे**—पु० (शि०) धनुष बाण के खिलाड़ी।
**ठठोलिया**—वि० (शि०) ठिठोली करने वाला।
**ठठोली**—स्त्री० (चं०) हंसी की बात।
**ठड़कोणा**—स० क्रि० (बि०) अपने शरीर से किसी वस्तु को भाड़ना।
**ठडेरा**—पु० (सि०, शि०, सो०) 'ठोडे' के खेल का खिलाड़ी।
**ठण**—स्त्री० बर्तन आदि गिरने से हुई आवाज़।
**ठण**—स्त्री० (मं०) चुभन देने वाली सर्दी, ठंड।
**ठणकदा**—वि० (कु०) स्वस्थ, हट्टा-कट्टा।
**ठणकदा**—वि० ठनकता हुआ।
**ठणका**—पु० (सि०) मलेरिया की तरह की बीमारी।
**ठणकाणा**—स० क्रि० जांच करना।
**ठणकाणा**—स० क्रि० (कु०) बर्तन को इधर-उधर पटकाना।
**ठणको**—पु० (शि०) बुखार, मियादी बुखार।
**ठणकोर**—स्त्री० ठनक।
**ठणकोरना**—स० क्रि० (सो०) ठनकाना, जांचना, परखना।
**ठणठणाट**—स्त्री० ठनकने की ध्वनि।
**ठणाका**—पु० टकराने की आवाज़, नगारे पर चोट की ध्वनि।
**ठणास्या**—पु० (मं०) गुड़ व खोए की मिठाई।
**ठणियां**—पु० (मं०) मलेरिया।
**ठत्तर**—वि० अठहत्तर।
**ठत्ती**—वि० अड़तीस।
**ठनना**—स० क्रि० (शि०) दृढ़ संकल्प से किसी कार्य को आरंभ करना।
**ठप**—वि० बंद।
**ठपका**—वि० (मं०) कड़वाहट वाला।
**ठपका**—पु० (शि०) ठोकर।
**ठपणा**— स० क्रि० ठोंकना, गाड़ना।
**ठपणी**—स्त्री० कपड़े धोने की थापी।
**ठपरा**—वि० (चं०) बहुत बूढ़ा।
**ठपा**—पु० छापा।
**ठपाका**—पु० (ह०, ऊ०) ऊपर से गिरने का भाव।
**ठपार**—वि० (चं०) ठोंकने वाला।
**ठपीणा**—अ० क्रि० (चं०) ठोंका जाना।
**ठप्प**—वि० बंद।
**ठप्पर**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) ऐसी जगह जहां पानी नहीं ठहरता।
**ठप्पा**—पु० मोहर।
**ठमक**—स्त्री० (शि०) ठहराव।
**ठमकणा**—अ० क्रि० (मं०) वर्षा का बीच में रुक जाना।
**ठयाहल**—स्त्री० (सि०) सेवा।
**ठर**—पु० (बि०) पशुओं की टांग।
**ठर**—स्त्री० सर्दी, ठंडापन।
**ठरक**—स्त्री० (कु०) सजधज, लालसा, व्यसन।
**ठरकणा**—अ० क्रि० (सो०, शि०) चिपकना, लगना।
**ठरकणी**—स्त्री० (चं०) कंपकंपी।
**ठरका**—पु० (चं०) शरीर कंपन का रोग।
**ठरकी**—वि० व्यसनी।
**ठरड़**—वि० (बि०) बहुत बूढ़ा।
**ठरड़ा**—पु० देसी शराब।
**ठरना**—अ० क्रि० सर्दी लगना।
**ठरनी**—स्त्री० (मं०) वृद्धावस्था में हाथ पांव की कंपकंपी।
**ठरमराना**—अ० क्रि० (शि०) ठंड से सिकुड़ जाना।
**ठराइणा**—स० क्रि० (कु०) उड़ाया जाना।
**ठराउणा**—स० क्रि० (सो०) ठहराना।
**ठराका**—पु० (बि०) सजधज।
**ठराणा**—स० क्रि० (कु०) उड़ाना।

**ठरोणा**—स० क्रि० (बि०) ठोंका जाना।
**ठलक**—पु० (मं०) एक विशेष आवाज़।
**ठलकणा**—अ० क्रि० (सो०) गिरना।
**ठलकाणा**—स० क्रि० खटखटाना।
**ठलगयार**—पु० (सो०) अंगारा।
**ठलठलात**—स्त्री० (बि०) बर्तनों के आपस में टकराने का शब्द।
**ठलड़े**—पु० (सि०) पैर।
**ठलणा**—स० क्रि० (कां०) मंत्र द्वारा रोकना।
**ठलना**—स० क्रि० (ह०) रोकना।
**ठलयासर**—वि० (सि०) ऐसी जगह जहां मिट्टी व पत्थर बराबर हों।
**ठल्ल**—वि० (बि०) बहुत मैले कपड़े।
**ठल्लणा**—स० क्रि० (बि०) तंत्र विद्या द्वारा 'कील' देना।
**ठसक**—स्त्री० अकड़।
**ठसकणा**—अ० क्रि० (सो०) पीछे रह जाना, खिसकना।
**ठसका**—पु० नखरा।
**ठसणा**—अ० क्रि० (मं०) पीछे रुक जाना।
**ठसबेहणी**—अ० क्रि० (बि०) अधिक चालाकी का भंडा-फोड़ होना।
**ठसरना**—अ० क्रि० (बि०) पीछे रह जाना, पीछे-पीछे रहना।
**ठसरोणा**—स० क्रि० (बि०) किसी काम के लिए आनाकानी करना।
**ठसाठस**—वि० बिल्कुल भरा हुआ।
**ठहक**—पु० (ह०) शुरु।
**ठहरणा**—अ० क्रि० ठहरना।
**ठहरना**—अ० क्रि० (चं०) खड़े होना।
**ठहराई**—स्त्री० (शि०) ठहरने की मज़दूरी।
**ठहराणा**—स० क्रि० ठहराना।
**ठहलणा**—अ० क्रि० (सि०) ऊनी वस्त्र को कीड़ा लगना।
**ठहाका**—पु० ज़ोर की हंसी।
**ठांई**—स्त्री० जगह, स्थान।
**ठांऊ**—पु० दे० ठांई।
**ठांओं**—पु० निर्दिष्ट स्थान।
**ठांकणा**—स० क्रि० मंत्र द्वारा बांध देना।
**ठांगी**—स्त्री० (चं०) बादाम की तरह का एक फल।
**ठांगी**—स्त्री० (चं०, कां०, कु०) Carylus colurna.
**ठांटा**—पु० (सि०) मज़ाक।
**ठांड**—स्त्री० (कु०, मं०, बि०) ठंड, जुकाम।
**ठांड**—वि० (शि०) शक्तिशाली मनुष्य।
**ठांड**—पु० (ह०) आग का अलाव।
**ठांडा**—वि० (मं०, कु०) ठंडा।
**ठांडो**—स्त्री० (सि०) ठण्ड।
**ठांव**—पु० (सि०) अपना स्थान।
**ठांवोड़**—स्त्री० (सि०) पकड़।
**ठांस**—स्त्री० (कु०) चमक।
**ठा.**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) चोट। कार्य में लगाने का भाव।
**ठा.का**—पु० ठहाका।
**ठा.णा**—स० क्रि० (सो०) रखना।
**ठा.र**—पु० पशु, पशुओं की संख्या।
**ठा**—पु० (शि०) गीत के सुरताल।
**ठाइ**—पु० (सि०) पशुओं का खून चूसने वाला खटमल की तरह का जीव।
**ठाई**—पु० (शि०) स्थान।
**ठाई**—वि० अट्ठाईस।
**ठाईकिणो**—अ० क्रि० (शि०) वृद्ध होना।
**ठाईश**—वि० (शि०) अट्ठाईस।
**ठाए**—स्त्री० (शि०) स्थान।
**ठाओ**—पु० (शि०) स्थान।
**ठाओ**—पु० (शि०) बिस्तर।
**ठाक**—स्त्री० मनाही, बंदिश।
**ठाकणा**—स० क्रि० (कु०) रोकना, मंत्र द्वारा रोग का निवारण करना।
**ठाकर**—पु० (कु०, कां०) मालिक, भगवान्।
**ठाकरदुआला**—पु० (कु०) ठाकुरद्वारा, भगवान् विष्णु का मंदिर।
**ठाकरद्वारा**—पु० विष्णु मंदिर।
**ठाकरी**—स्त्री० (शि०, सो०, सि०) आटा नापने के लिए बनी लोहे की गोल कटोरी, प्रस्थ का चौथाई भाग, आधे सेर का माप।
**ठाका**—पु० विवाह को पुष्ट करने का एक संस्कार, सगाई से पहले की रोक।
**ठाकिणा**—अ० क्रि० (कु०) रुक जाना।
**ठाकुर**—पु० देवी-देवता, विष्णु भगवान।
**ठाकुर फेरा**—पु० (चं०) मंदिर के इर्द-गिर्द की गई परिक्रमा।
**ठाकुरबाण**—स्त्री० (शि०) राजपूती हठ।
**ठाक्का**—पु० (शि०) ठोकर।
**ठाख**—पु० (चं०) इनकार।
**ठागळ**—स्त्री० (कु०) भारी सामान उठाने की लंबी लकड़ी।
**ठाटा**—पु० (सि०) मज़ाक।
**ठाटे**—स्त्री० (शि०) शर्मिंदा करने की बात।
**ठाट्ठी**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) दे० ठा.का।
**ठाठ**—पु० (चं०) फैशन, चटक-मटक, सज-धज।
**ठाठकरा**—वि० (कु०) बहाने बनाने वाला।
**ठाठकरा**—वि० (सो०, शि०) हास्योत्पादक, मज़ाक करने वाला।
**ठाठणा**—अ० क्रि० (सि०) सोचना।
**ठाठा**—पु० (सो०, सि०) मज़ाक।
**ठाठाठिकरा**—पु० (कु०) बरबादी।
**ठाठानेरणा**—अ० क्रि० (सि०) शानोशौकत में रहना।
**ठाठावाणी**—पु० (कु०) फटा हुआ दूध।
**ठाठीमाणा**—पु० (कु०) एक नशीली जड़ी।
**ठाठे**—पु० (सि०) खरगोश को डराने के लिए बनाया गया बुत।
**ठाठे**—पु० (शि०, सो०) मज़ाक।
**ठाठो**—पु० (सि०) सजधज।
**ठाट्ठ**—पु० (मं०) भेड़-बकरियों का दल।
**ठाडा**—पु० (सि०) गांव की सीमा की बुर्जी, इमारती लकड़ी का ढेर।

**ठाड़ा**—पु० (शि०) बंधुआ कार्य।
**ठाइडा**—पु० (शि०) टिड्डा।
**ठाण**—पु० (सि०) सजावट, शोमा, ढंग।
**ठाणना**—स० क्रि० (शि०) ठानना।
**ठाणवाण**—पु० (सि०) तौर-तरीका।
**ठाणा**—पु० थाना, पुलिस चौकी।
**ठाणा**—स० क्रि० (सि०) उठाना।
**ठाणा**—स० क्रि० (मं०) लूटना।
**ठाणाठूणी**—स्त्री० (सो०) खनखनाहट।
**ठाणी**—पु० (शि०) देवता के मंदिर का रसोइया, देवता को उठाने वाला।
**ठाणेदार**—पु० थानेदार।
**ठाणो**—स० क्रि० (शि०) उठाना।
**ठाणो**—पु० (शि०) सजावट।
**ठानी**—स्त्री० अठन्नी।
**ठानुए**—वि० अट्ठानवे।
**ठाप**—स्त्री० (कु०, कां०) छाप।
**ठापठाई**—स्त्री० (सो०) व्यवस्था, वस्तुओं को ढंग से रखने का व्यापार।
**ठापणा**—स० क्रि० (कु०) ठापना।
**ठापरठाळी**—स्त्री० (कु०) बांटने का एक ढंग जिसमें वस्तुओं को फेंका जाता है। जो जितनी वस्तुओं पर कब्जा करे वह उसकी होती है।
**ठापरना**—स० क्रि० (कु०) हथियाना, फैंकी हुई या गिरती वस्तु को प्राप्त करना।
**ठापरिना**—स० क्रि० (कु०) फैंकी या गिरती वस्तु को प्राप्त किया जाना।
**ठापा**—पु० छापा, निशान।
**ठापो**—पु० (मं०) लड़कियों का खेल।
**ठापो**—पु० (शि०) ठाप, निशान।
**ठाब—स्त्री० (कु०) वृक्ष के पूरे तने को कुरेद कर बनाया गया** खोलनुमा पात्र।
**ठाबळा**—पु० (कु०) लकड़ी का बना ऐसा पात्र जिसमें पशु को पानी पिलाया जाता है।
**ठामड़ना**—स० क्रि० (सि०) पकड़ना।
**ठामेरना**—स० क्रि० (बि०) द्रव को जमाना।
**ठामरू**—पु० (शि०) सामूहिक नृत्य।
**ठार**—स्त्री० (कु०) घुटने और पैर के बीच की टांग का अगला भाग।
**ठारना**—अ० क्रि० (शि०, सो०) रुकना।
**ठारना**—अ० क्रि० सर्दी में ठिठुरना।
**ठारा**—वि० (कु०) ज़्यादा।
**ठारा**—वि० अठारह।
**ठाराकरडु**—पु० (कु०) अनुश्रुति के अनुसार कुल्लू के अठारह करोड़ देवता।
**ठाराठींग**—पु० (कु०) अठारह व्यक्ति, अनेक पुरुष।
**ठारो**—वि० (शि०, सि०) अठारह।
**ठाल**—पु० (सि०) कसम।
**ठाल**—पु० (कु०, चं०) लकड़ियों का ढेर।
**ठालिए**—स्त्री० (सि०) औरत के नाराज़गी से मायके में रुके रहने की क्रिया।
**ठालु**—पु० (कु०) मिट्टी के ढेले तोड़ने का लकड़ी का हथौड़ा।
**ठावकर**—पु० (सो०) ईश्वर, विष्णु, भूमिपति के लिए मुज़ारे का संबोधन।
**ठावकर-द्वारा**—पु० (सो०) दे० ठाकरद्वारा।
**ठावन**—वि० अट्ठावन।
**ठाशणा**—स० क्रि० (सो०) ठूंसना।
**ठासी**—वि० अट्ठासी।
**ठाहणा**—स० क्रि० (बि०) लेना, वसूल **करना।**
**ठाहणा**—स० क्रि० (मं०) लूटना।
**ठाहणा**—स० क्रि० (चं०, कां०) गाड़ना।
**ठाहणा**—स० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) कपड़ा बुनते समय फंदों को यंत्र विशेष से दबाना।
**ठाहर**—पु० पशु-स्थान।
**ठाहर**—पु० अदद, संख्या (पशुओं की गिनती से संबंधित)।
**ठाहरी**—पु० (शि०) चबूतरे के ऊपर बीच में बना देवता का स्थान।
**ठाहल**—स्त्री० (कु०) लकड़ी का ढेर।
**ठाहू**—वि० (मं०) लूटने वाला।
**ठाहट**—वि० अड़सठ।
**ठिंगणा**—वि० छोटे कद का।
**ठिंगरी**—स्त्री० (मं०) वृक्ष का सबसे ऊपर वाला भाग।
**ठिंगा**—पु० अंगूठा, तिरस्कार सूचक शब्द।
**ठिंगा**—वि० (सो०) लंपट।
**ठिंजावणो**—स० क्रि० (शि०) काढ़ना, पानी सुखाना।
**ठिंठक**—पु० (मं०) पूंछ।
**ठिंड**—पु० (कु०) घरेलू नौकर।
**ठिंडी**—स्त्री० (चं०) श्वास नली।
**ठिंढ**—पु० किसी वृक्ष का पुराना तना, बड़ी उमर का व्यक्ति।
**ठिंढ**—वि० (चं०) जड़ बुद्धि।
**ठिंढ**—स्त्री० (चं०) विवाह के अवसर पर स्त्रियों द्वारा घेरे में किया जाने वाला नाच।
**ठिंढा**—पु० (बि०) मोटी गर्दन।
**ठिंढी**—स्त्री० (चं०) गर्दन।
**ठिंबू**—वि० ठिगना।
**ठिकर—पु० (कु०) मिट्टी के टूटे हुए बर्तन के टुकड़े।**
**ठिकरा**—पु० (शि०, कु०, बि०) मिट्टी का टूटा बर्तन।
**ठिकरी**—स्त्री० टूटे हुए मिट्टी के बर्तन का टुकड़ा।
**ठिकाना**—पु० निवास-स्थान।
**ठिक्कर**—पु० (बि०) बर्तन।
**ठिक्करे**—स्त्री० (शि०) चिलम में तंबाकू और कोयले के बीच रखी जाने वाली लोहे की गोलाकार पत्ती।
**ठिचठिच**—स्त्री० व्यर्थ की बकवास।
**ठिचणा**—स० क्रि० (बि०) निशाना लगा कर चोट करना।
**ठिट्ठर**—पु० (चं०) टूटा-फूटा मकान।
**ठिठकणा**—अ० क्रि० (सि०) रुकना।

**ठिकाणा**—स० क्रि० धमकाना।
**ठिठरा**—पु० (सि०) भैंस की पूंछ।
**ठिठरी**—पु० (मं०) भेड़।
**ठिठरु**—वि० (चं०) पुराना।
**ठिडकणा**—स० क्रि० (बि०, ह०, सो०) डांटना।
**ठिड्डी**—स्त्री० (बि०, कां०, ऊ०) शरीर पर जमी हुई मैल।
**ठिणकणा**—अ० क्रि० (सि०) रोना।
**ठिणकी**—स्त्री० (सि०) दीमक।
**ठिपठिप**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) छत से गिरते पानी की आवाज़।
**ठिपणा**—स० क्रि० (सि०, कां०) अच्छी तरह लगाना, दबाना।
**ठिमकणा**—स० क्रि० (कु०) पकड़ना, छूना, आगे चल रहे व्यक्ति को दौड़ कर या तेज चल कर पकड़ना।
**ठिमकिणा**—स० क्रि० (कु०) पकड़ा जाना।
**ठिया**—**पु० (शि०, सि०, सो०)** अड्डा।
**ठिरकू**—पु० (शि०) मिट्टी का छोटा घड़ा।
**ठिरकू**—वि० (कां०, ऊ०, ह०) दे० ठरकी।
**ठिरशू**—पु० (शि०, कु०) विशेष मेला या उत्सव जिसमें नर बलि दिए जाने की प्रथा रही है।
**ठिरसू**—पु० (मं०, कु०) बैशाख में लगने वाले ग्राम्य मेले जिनमें लोक नाट्य दिखाए जाते हैं।
**ठिरी**—स्त्री० (शि०) अनाज भूनने की लोहे की बड़ी कड़ाही।
**ठिलकणा**—अ० क्रि० (सि०) बेकार घूमना।
**ठिलकणा**—अ० क्रि० (चं०) दांत आदि का हिलना।
**ठिलठिल**—वि० (चं०) हिलने वाला।
**ठिलणा**—स० क्रि० (शि०) गाड़ना।
**ठिलणा**—पु० (कु०) लकड़ी का ठेला जिस पर बैठकर गाय को दुहा जाता है।
**ठिलणु**—पु० (कु०) छोटा 'ठिलणा' जो सामान्य बैठने के काम आता है।
**ठिला**—पु० (सि०) प्रीति भोज।
**ठिला**—पु० (शि०) देवता के साथ किसी गांव में आए व्यक्ति जिन्हें भोजन खाने व ठहराने के लिए गांव वालों में बांटा जाता है।
**ठिलो**—वि० (सि०) खुला।
**ठिसक**—स्त्री० (बि०) घमंड।
**ठिसरना**—**अ० क्रि० पीछे-पीछे रहना।**
**ठिहल्ल**—वि० (बि०, ह०) भरपेट।
**ठिहा**—पु० (शि०) ज़मीन में गाड़ी पक्की लकड़ी या पत्थर जिस पर लुहार ठोंकने का काम करता है।
**ठिह्या**—पु० स्थान, आधार, ठिकाना।
**ठींग**—पु० (कु०) अन्य व्यक्ति, लोग।
**ठींगरिना**—अ० क्रि० (कु०) चोटी तक पहुंचना, वृक्ष की चोटी की उस सीमा तक पहुंचना जब और आगे बढ़ना संभव न हो।
**ठींगरी**—स्त्री० (कु०) वृक्ष की चोटी।
**ठींगा**—पु० (कां०, चं०) अड़चन।
**ठींचकड़ी**—स्त्री० (चं०) व्यर्थ की बातें।
**ठीं.ड**—वि० (शि०) सुंदर।
**ठींड**—पु० (सो० शि०) पुरुष, मर्द, जवान आदमी।
**ठींडा**—वि० (कां०) गंवार।
**ठींबा**—वि० (चं०) मोटा।
**ठींबी**—स्त्री० धान का एक परिमाण।
**ठींह**—स्त्री० (चं०, कु०) बकरी की आवाज़।
**ठीकर**—पु० मिट्टी या पीतल के टूटे बर्तन।
**ठीकरफरोश**—वि० (कु०) दरिद्र।
**ठीकरा**—पु० (ऊ०, बि०, कां०) तोड़ा गया घड़ा जिसके नीचे मरणोपरांत दीपक रखा जाता है, मृत व्यक्ति के दाह संस्कार हेतु मृतक के घर से आग जला कर ले जाने का मिट्टी का पात्र विशेष।
**ठीकरी**—स्त्री० (कां०, सि०, ऊ०) छोटे-छोटे मिट्टी के बर्तन के टुकड़े।
**ठीकरु**—पु० (कु०, कां०, ह०) टूटे बर्तन।
**ठीको**—अ० (शि०) अच्छा न बुरा, ठीक-ठीक, मध्यम।
**ठीग**—पु० (मं०) पराया आदमी।
**ठीठा**—पु० (सि०) बुरा-भला।
**ठीपी**—स्त्री० (कु०) बच्चों का खेल विशेष जिसमें एक बच्चा दूसरे बच्चे की हथेली में थाप देकर भाग जाता है, और दूसरा उसे पकड़ता है।
**ठीमरु**—पु० (बि०) छेद।
**ठीस**—अ० (कु०) ज़रा सा, थोड़ा सा।
**ठीस**—स्त्री० (सो०) अकड़, धौंस।
**ठीह्या**—पु० (बि०) ठिकाना।
**ठुंग**—**पु० (चं०) पशुओं को बांधने के लिए गाड़ा गया लकड़ी का खूंटा।**
**ठुंग**—**स्त्री० पक्षी द्वारा चोंच से मारी हुई या जूं मारने के लिए की गई चोट।**
**ठुंगणा**—स० क्रि० चोंच मारना, खरोंचना।
**ठुंगणा**—स० क्रि० (सो०) बड़ियों को सूखने के लिए खुले बिछाए कपड़े पर डालना; टहनी से तोड़ना।
**ठुंगदेणा**—स० क्रि० (का०, ऊ०, ह०) दोनों अंगूठों के नाखूनों से सिर पर जूं मारना।
**ठुंघा**—वि० (कु०) कुंद, जो तीखा न हो।
**ठुंघिणा**—अ० क्रि० (कु०) तेज धार न होना, कुंद होना।
**ठुंजा**—वि० अट्ठावन।
**ठुंझा**—पु० (कु०) ऊंचा टीला।
**ठुंठ**—वि० (कु०) जिसमें शाखाएं न हों। जिसका कोई वारिस न हो।
**ठुंड**—पु० (शि०) वृक्ष का तना।
**ठुंढा**—**पु० काटे गए वृक्ष का तना।**
**ठुंबरु**—पु० (मं०, कु०) बूढ़ी दिवाली पर गाए जाने वाले टप्पे।
**ठुअर**—वि० (सि०) बेकार।
**ठुआउणा**—स० क्रि (कु०) उठाना।
**ठुआबासा**—पु० (कु०) ठिकाना।
**ठुआर**—स्त्री० (कु०) अष्टमी।
**ठुआळना**—स० क्रि० उठाना।

**ठुआसण**—पु० (कु०) उजाड़, उजड़ा हुआ ठिकाना, बरबादी।
**ठुकठुक**—अ०, ठक-ठक की ध्वनि।
**ठुकठुक**—अ० (मं०) ठाट-बाट।
**ठुकणा**—स० क्रि० (शि०) गाड़ना।
**ठुकर**—स्त्री० ठोकर।
**ठुकराणा**—स० क्रि० ठुकराना।
**ठुकवाणा**—स० क्रि० (शि०) पिटवाना।
**ठुक्कू**—पु० (चं०) एक ही बात की हठ।
**ठुगणी**—स्त्री० (कु०) कुहनी।
**ठुजणा**—अ० क्रि० (सि०) मरियल होना।
**ठुटकणा**—स० क्रि० (ह०, बि०) झाड़ देना।
**ठुट्ठळ**—वि० (बि०, सो०) पुराना, खाली।
**ठुट्ठु**—पु० (कां०, ऊ०) छोटा हल जिससे बिजाई की जाती है।
**ठुठ**—पु० (चं०) एक प्रकार का पौधा जिसे उखाड़ने से घूप की तरह की गाँठें निकलती हैं जो औषधि के काम आती हैं।
**ठुठ**—स्त्री० (ऊ०, कां०) बैल का ककुद।
**ठुठड़ा**—पु० (मं०) कठफोड़ा।
**ठुठड़ा**—पु० (सो०) मद्दा बर्तन।
**ठुठला**—वि० (कु०) जिसका कोई सिर-पैर न हो।
**ठुठिया**—पु० (सि०) मिट्टी का ढक्कन।
**ठुठी**—स्त्री० (कु०, शि०) चिलम, जिसमें तंबाकू डाला जाता है।
**ठुठी**—स्त्री० (मं०) मिट्टी की प्याली।
**ठुठी**—पु० (सि०) एक वृक्ष विशेष।
**ठुड**—स्त्री० पांव से लगाई हुई चोट या ठोकर।
**ठुड**—पु० (सि०) जड़।
**ठुड़कणा**—स० क्रि० (सि०) बीज निकालना।
**ठुड़कणा**—स० क्रि० (कु०) झाड़ना, खाली करना।
**ठुड़किणा**—स० क्रि० (कु०) झाड़ा जाना, खाली किया जाना।
**ठुड्डी**—स्त्री० (शि०) ठोड़ी।
**ठुण**—स्त्री० (चं०) ठोकर।
**ठुणका**— पु० गीत का टोटका, अकस्मात् हुई घटना।
**ठुणठुण**—अ० बार-बार रोने की ध्वनि।
**ठुणिया**—वि० मज़ाकिया।
**ठुनकणा**—स० क्रि० (शि०) उंगली से (दरवाज़ा आदि) ठोंकना।
**ठुमक**—स्त्री० नृत्यमयी चाल।
**ठुमकणा**—अ० क्रि० धीरे-धीरे नाचते हुए चलना।
**ठुमकणा**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) वर्षा का कुछ देर के लिए रुकना।
**ठुमका**—पु० नखरा, ठुमकती हुई चाल।
**ठुमका**—वि० (शि०) नाटा, ठिगना।
**ठुमणा**—स० क्रि० (कु०) ठोंकना, गाड़ना।
**ठुमरी**—स्त्री० (सि०) Phoebee Lanceolata.
**ठुमिणा**—स० क्रि० (कु०) ठोंका जाना।
**ठुमी**—पु० (शि०) Cornus capitata.
**ठुरड़ा***—पु० (कां०) पांव।
**ठुरंणी**—स्त्री० (कु०) तेज चाल।
**ठुर्हा**—पु० (कु०) पांव, पैर।
**ठुल**—वि० (कां०, ऊ०) भरपेट।
**ठुलठुल**—अ० (चं०) किसी वस्तु के हिलने का भाव।
**ठुळणा**—अ० क्रि० (कां०) मंद पड़ जाना।
**ठुलू**—वि० (कां०) मूर्ख आदमी।
**ठुस**—स्त्री० (कु०) चुपचाप निकलने का भाव।
**ठुस**—स्त्री० कुछ न होने का भाव, शून्य का भाव, विस्फोटक पदार्थ के बेकार होने का भाव।
**ठुसकणा**—स० क्रि० (शि०) थैले को ठुंस-ठुंस कर भरना।
**ठुसकिणा**—अ० क्रि० (कु०) एक दूसरे को कुहनी से धक्का मारना।
**ठुसकू**—वि० (शि०) धीरे चलने वाला, आलसी।
**ठुह**—पु० (कु०, चं०, कां०) किसी घर या छत आदि को थामने के लिए लगाया खंभा।
**ठुंग**—स्त्री० (कु०) दो नाखूनों के जोड़ से की गई मार, चोंच द्वारा किया गया प्रहार।
**ठूंग**—स्त्री० (शि०, सो०) चोंच, चोंच की मार।
**ठूंगणा**—स० क्रि० (शि०) दे० ठुंगणा।
**ठूंगी**—वि० (चं०) हृष्ट-पुष्ट।
**ठूंगे**—स्त्री० (सि०) चोंच से लगी चोट।
**ठूंचा**—वि० (चं०) मौके की बात कहने वाला।
**ठूंठ**—पु० (सि०) सूखी मोटी लकड़ी।
**ठूंठर**—वि० (चं०) बूढ़ा।
**ठूट्ठा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मिट्टी का कटोरा, टूटा-फूटा पात्र।
**ठूठी**—स्त्री० गरी के गोले का अधकटा भाग।
**ठूण**—स्त्री० (चं०) प्रथम शिशु के मरने से लगी ठेस।
**ठूणका**—पु० (सि०, सो०) मंत्र की तरह का असर।
**ठूम**—पु० (कु०) करघे में कपड़ा बुनते हुए कपड़े का इतना भाग कि उसे लपेटना ज़रूरी हो।
**ठूरना**—अ० क्रि० (मं०) भाग जाना।
**ठूले**—पु० (शि०) बकरे की टांगें।
**ठूस**—स्त्री० डींग।
**ठूसा**—वि० निकम्मा।
**ठूह**—पु० (चं०) खूंटा, वृक्ष का कटा हुआ तना।
**ठें**—स्त्री० (सो०) घर, स्थान।
**ठें**—पु० (सो०) प्रकार। पदार्थ।
**ठेंकणा**—स० क्रि० (सि०) हटा लेना।
**ठेंचा**—वि० (चं०, बि०) बड़ा सा, मोटा।
**ठेंड**—स्त्री० (कु०) ठंड।
**ठेंडिणा**—अ० क्रि० (कु०, चं०) ठंडा हो जाना।
**ठेंहा**—पु० (बि०, चं०) किसी कार्य में जुटने का भाव।
**ठेईं**—स्त्री० बंदूक चलने की आवाज़।
**ठेउड़होणा**—अ० क्रि० (कु०) थक कर चूर होना।
**ठेओ**—पु० (शि०) पता।
**ठेक**—पु० (शि०) राजाओं के काल में राजा के घर शोक होने पर सारी प्रजा को मातम मनाने का आदेश।
**ठेकठेक**—स्त्री० (कु०) ठक-ठक की ध्वनि।
**ठेकणा**—स० क्रि० (सो०) झाड़-फूंक करना।

ठेकणो—स० क्रि० (शि०) ठोंकना, मारना।
ठेकरे—स्त्री० (सि०)तख्ती, लकड़ी की लंबी तथा चौड़ी फाड़ी हुई तख्ती।
ठेका—पु० (शि०) निश्चित राशि पर देने की क्रिया।
ठेके—स्त्री० (सि०) रुपयों के ढेर।
ठेचा—पु० (सो०) धक्का, नसीहत, कटु अनुभव।
ठेट्ठा—पु० (कु०) मज़ाक।
ठेठ—पु० (शि०) गर्व।
ठेठी—वि० (शि०) अपने को दूसरे से बड़ा समझने वाला।
ठेठु—वि० (कु०) हंसी मज़ाक करने वाला।
ठेठू—पु० (चं०) नखरा, अभिनय।
ठेणकणा— अ० क्रि० (कु०) ठन-ठन करना।
ठेणका—पु० (कु०) ठनका।
ठेणकिणा—अ० क्रि० (कु०) ठन-ठन होना।
ठेणठणाट—स्त्री० (कु०) ठन-ठन की ध्वनि।
ठेणमणाट—स्त्री० (कु०) ठन-ठन की ध्वनि, खाली होने का भाव, अभाव।
ठेपी—स्त्री० (शि०) ढक्कन।
ठेर—पु० (चं०) छोटे पहाड़ का ऊपरी भाग।
ठेरना—पु० (कु०, मं०) अटेरन, सूत की आटी बनाने का यंत्र, बड़ा 'टेरनू'।
ठेरना—अ० क्रि० (बि०) सर्दी से ठिठुरना।
ठेरनू—पु० दोहरा धागा बाटने की तकली।
ठेरिणा—अ० क्रि० (कु०) पशुओं का भिड़ने की तैयारी करना।
ठेल—स्त्री० (कु०) पहाड़ों पर घास का मैदान, जहां गर्मियों में भेड़ें चरती हैं और वहीं रहती हैं।
ठेल—स्त्री० (कु०) लकड़ी का बड़ा शहतीर जिससे छोटी कड़ियां निकाली जाती हैं।
ठेल—स्त्री० धक्का देने की क्रिया।
ठेल—स्त्री० (कां०, ह०, ऊ०) ठेस।
ठेलकू—पु० लकड़ी का छोटा कटा भाग।
ठेलणा—स० क्रि० (शि०) कूटना।
ठेलणा—स० क्रि० (कां०) हिलाना।
ठेलरू—पु० (कु०) पहाड़ पर की ऊंची खुली जगह, समतल भूमि।
ठेला—पु० लकड़ी का कटा मोटा तथा बड़ा भाग।
ठेला—पु० हाथ से चलाने या बैलों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी।
ठेली—स्त्री० (सि०) खूंटी।
ठेली—स्त्री० गोल आकार की बड़ी कटी लकड़ी।
ठेले—स्त्री० (शि०) चिनाई के काम में प्रयुक्त होने वाला पत्थर विशेष।
ठेलो—पु० (सि०) पटरा।
ठेलो—पु० (शि०, सि०) लकड़ी का गुटका।
ठेस—स्त्री० आघात, चोट।
ठेसका—पु० (कु०) धक्का।
ठेसकुरा—वि० (शि०) दुःख देने वाला।
ठेसरा—वि० (शि०) अभिमानी।
ठेसरी—स्त्री० (सि०) नखरा।
ठेसरी—स्त्री० (शि०) अभिमान।
ठेसा—पु० (कु०) धक्का।
ठेसू—पु० (मं०) अटेरन, तकली।
ठेह—स्त्री० (कु०) अधिक देर तक ठहरने की क्रिया।
ठेहण—स्त्री० (बि०) हिला देने का भाव।
ठेहदेणी—स० क्रि० सहारा देना।
ठैंठी—वि० (मं०) बूढ़ा।
ठैउड़—पु० (कु०) पक्का पकड़ने का भाव।
ठैउडू—पु० (कु०) स्थान।
ठैगपोक—वि० (कु०) ठग।
ठैणा—वि० (चं०) गोल-मटोल, ठिगना।
ठैनी—स्त्री० (शि०) आठ आने का सिक्का।
ठैप—वि० (कु०) पूरी तरह बंद, ठप।
ठैरना—अ० क्रि० (सो०) ठहरना।
ठैराणा—स० क्रि० (शि०) ठहराना।
ठैसी—वि०(मं०) अट्टहासी।
ठैहकणा—अ० क्रि० (बि०) आ धमकना।
ठैहलू—वि० (मं०) टहल करने वाला।
ठों—पु० जगह।
ठोंठणा—स० क्रि० (शि०) मुरम्मत करना।
ठोंडा—वि० (ह०, बि०) ज़िद्दी, हठी।
ठोंःलू—पु० (कां०, ऊ०. ह०) मामूली सा धक्का।
ठोक—स्त्री० (सि०, शि०) ठेस, आघात।
ठोकणा—स० क्रि (शि०) कूटना, पीटना।
ठोकणा—स० क्रि० (कु०, शि०) डालना।
ठोकबढ़ैया— पु० (सि०) खंजन पक्षी।
ठोकर—स्त्री० चोट, पैर में लगी चोट, ठोकर।
ठोकलड़ा—पु० (सि०) कठफोड़ा।
ठोकार—पु० (चं०) ठोकने वाला।
ठोकिणा—स० क्रि० (कु०) डाला जाना।
ठोगणा—स० क्रि० (सि०) ठगना।
ठोठे—स्त्री० (सि०) तीर कमान का निशान।
ठोड—पु० (सि०) मंदिर।
ठोडा—पु० तीर कमान का खेल।
ठोढ़ा—पु० (चं०) धोखा।
ठोणी—वि० (कु०) चोंच मारने वाला।
ठोणी—स्त्री० (कु०) जोश में आने का भाव, शरीर में होने वाली कंपकंपी।
ठोतरा—वि० (सि०) महसूस; दुष्ट।
ठोर—पु० (कां०) बड़ा पत्थर।
ठोर—स्त्री० (कु०) दौड़।
ठोरका—पु० (बि०) उपेक्षा करने का भाव।
ठोरना—स० क्रि० (सो०) लाठी मारना।
ठोरना—स० क्रि० डांट कर समझाना, ठोंकना।
ठोरना—स० क्रि० (शि०) खोदना।
ठोल—पु० (कां०) मूर्वा, एक पौधा विशेष।
ठोळ—स्त्री० (सो०) तलाश।
ठोलणा—स० क्रि० (चं०) उखाड़ना।

**ठोळणा**—स० क्रि० (सो०) तलाश करना।
**ठोला**—पु० (सि०) पत्थर।
**ठोला**—पु० (सो०) धीमा सा धक्का देने की क्रिया।
**ठोलार**—वि० (चं०) उखाड़ने वाला।
**ठोली**—स्त्री० (मं०) छाल।
**ठोलू**— पु० (कु०) छोटा हथौड़ा।
**ठोले**—पु० (मं०) पेड़ के तने।
**ठोस**—पु० (बि०) गोबर का ढेर।
**ठोसणा**—स० क्रि० (कां०, सो०) ठूंसना।
**ठोसा**—वि० सुस्त।
**ठोसा***—पु० (कु०) अंगूठा, डंडा, बेतुकी बात।
**ठोहरला**—पु० (सि०) वृद्ध भैंस।
**ठोहलू**—पु० कोई बात बताने के लिए चुपके से धक्का देने की क्रिया।
**ठोकर**—पु० भगवान् विष्णु।
**ठोर**—पु० ठिकाना।
**ठोर ठकाणा**—पु० (कु०) ठिकाना।
**ठोरणा**—अ० क्रि० (सि०) ठहरना।
**ठोरणा**—अ० क्रि० (सो०, शि०) बीमार होना।
**ठोरा**—पु० (कु०) हाथ-पांव कांपने की बीमारी।
**ठोरा**—वि० (शि०) बीमार।
**ठौळ**—स्त्री० (चं०) शरीर पर जमी मैल, पत्थर का चिना स्तंभ।
**ठौलणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) इंतज़ार करना, प्रतीक्षा करना।
**ठौला**—स्त्री० (मं०) मक्की की गोड़ाई।
**ठौळा**—पु० (चं०) पत्थर का चिना पांच-छः फुट का स्तंभ।
**ठौहरना**—अ० क्रि० (शि०, कु०) बीमार होना।
**ठौहरा**—पु० (सि०) कोदे के पौधे का अन्न वाला भाग।
**ठ्वारू**—पु० अट्ठारह छटांक।
**ठ्वाळना**—स० क्रि० (सो०) उठाना, जगाना।
**ठ्वासणा**—अ० क्रि० (मं०) ख़ातिमा होना, मृत्यु होना।

## ड

**ड**—देवनागरी वर्णमाला में टवर्ग का तीसरा वर्ण। उच्चारण स्थान मूर्द्धा।
**डंक**—पु०(सो०) लेखनी, होल्डर।
**डंक**—पु० बिच्छू आदि का वह अंग जिससे वह काटता है।
**डंकण/णी**—स्त्री० डाइन।
**डंका**—पु० नगाड़ा। प्रसिद्धि।
**डंग**—पु० (मं०) दीवार के बीच का खाली स्थान। मकान के आंगन का नीचे का भाग।
**डंग**—पु० (बि०) गेहूं के पौधे में लगने वाली बीमारी।
**डंग**—वि० (कु०, चं०) बर्फ की तरह ठंडा।
**डंग**—पु० एक समय का भोजन, विवाहादि में एक समय का प्रीतिभोज।
**डंग**—पु० (कु०) दाग, धब्बा।
**डंगणा**—स० क्रि० (चं०, बि०) द्वेष करना, हानि पहुंचाना।
**डंगणा**—अ० क्रि० पैर के किसी भाग पर जूते से जख्म होना।
**डंगणा**—स० क्रि० डसना।
**डंगणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०) पेड़ से हरे पत्ते काटना।
**डंगर**—पु० पशु, सीधा-सादा। वि० छल कपट रहित व्यक्ति।
**डंगरडेला**—वि० बड़ी आंखों वाला।
**डंगरडेला**—वि० निकम्मा।
**डंगरबेला**—पु० गोधूलि वेला।
**डंगराएं**—वि० (शि०) बकरे काटने वाला।
**डंगा**—पु० भूमि, खेत या सड़क को समतल बनाने के लिए या गिरने से बचाने के लिए पत्थरों से बनाई गई दीवार।
**डंगारल**—पु० (मं०) एक झाड़ी विशेष जिससे वर्षा ऋतु में बीमार पशुओं का झाड़-फूंक द्वारा इलाज किया जाता है।
**डंगासा**—पु० घास काटने का औज़ार, गंडासा।
**डंगी**—स्त्री० (चं०, बि०) पत्थरों से बनाई छोटी सी दीवार।
**डंगी**—स्त्री० (चं०) गद्दी लोगों द्वारा किया जाने वाला एक लोकनृत्य।
**डंगी**—वि० (सो०) बहानेबाज़।
**डंगीणा**—अ० क्रि० (चं०) कोई आघात लगना।
**डंगू**—पु० (ऊ०, कां०) ह०) बिच्छू।
**डंगू**—वि० (चं०) हाथ आ जाने वाला (व्यक्ति), जिससे कोई काम लिया जा सके।
**डंगोणा**—स० क्रि० (मं०) मारना।
**डंगौर**—स्त्री० (कां०) ऊन की कटाई।
**डंच**—पु० (चं०) दबाव।
**डंची**—स्त्री० (चं०) जबरदस्ती।
**डंटया**—वि० (शि०) डांटने वाला।
**डंठल**—पु० तना।
**डंड**—पु० दंड।
**डंड**—पु० (बि०, ह०) शोर।
**डंड**—वि० (बि०) अविवाहित।
**डंडका**—पु० (सि०, सो०) डंडा।
**डंडकोली**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) गुल्ली डंडे का खेल।
**डंडखेरू**—पु० (ह०) छोटी लाठी।
**डंडणा**—स० क्रि० (कु०) किसी पर दंड लगाना, दंड देना।
**डंडया**—स्त्री० (ह०) कान में पहनी जाने वाली चांदी की छोटी बालियां जो नीचे से लेकर ऊपर तक पूरे कान में डाली जाती हैं।
**डंडयाणा**—स० क्रि० (कां०, चं०) मारना, धक्के देकर बाहर निकालना।
**डंडयार**—स्त्री० (कां०, चं०) डंडे की मार।
**डंडयारा**—पु० (सो०) रिसाव। अतिसार।
**डंडयारी**—स्त्री० (चं०) नाशपाती प्रजाति का एक फल।
**डंडल**—पु० फसल की बढ़ती कोंपलें।
**डंडल**—पु० (सि०) ऐसा पत्थर जो चिनने के काम न आए।
**डंडळ**—पु० डंठल।
**डंडली**—स्त्री० (मं०) कोंपल।

**डंडा**—पु० लाठी।
**डंडा**—वि० (कां०) आवारा (साधु)।
**डंडारस**—पु० (चं०) विवाह में गाने-बजाने या नाचने की क्रिया, एक नृत्य।
**डंडालटू**—पु० (मं०) एक कृषि औज़ार जिसमें लगभग आठ या नौ लंबी खूंटियां लगी होती हैं।
**डंडिणा**—अ० क्रि० (कु०) दंडित होना।
**डंडी**—स्त्री० (कां०) पंखे को घुमाने का साधन, पतली लकड़ी।
**डंडी**—स्त्री० (कां०) पगडंडी।
**डंडू**—पु० (ऊ०, कां०, कु०) 'भगत' लोकनाट्य का पात्र विशेष, हंसोड़।
**डंडू**—वि० (मं०) मृत संस्कार में शव की कपाल क्रिया (पिंडीछेदन) करने वाला।
**डंडू**—पु० छोटा गोल डंडा।
**डंडे**—वि० (शि०) मूर्ख।
**डंडेलगिर**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) आवारा।
**डंडोत**—स्त्री० (चं०) दंडवत् प्रणाम।
**डंडोलपोड़नो**—अ० क्रि० (सि०) झपटना।
**डंड्डू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) नाक में डालने का आभूषण।
**डंफ**—स्त्री० (कां०) मनगढ़ंत बात।
**डंब**—पु० (सो०) दिखावा, आडंबर।
**डंबर**—पु० (चं०) मनुष्य की छाती का भाग।
**डंबर**—पु० (शि०) उम्र, आयु।
**डःळना**—अ० क्रि० (सो०) मकान आदि का गिरना।
**डइडयात**—स्त्री०(बि०) किसी बात की अनावश्यक चर्चा।
**डई**—स्त्री० (बि०) खरगोश आदि जंतुओं के रहने का स्थान।
**डऊंड**—वि० (कु०) मूर्ख।
**डऊंरु**—पु० (कु०, सि०) डमरू।
**डओका**—पु० (मं०) काले रंग का जलजीव।
**डकंतरी**—वि० (सि०) इधर-उधर की हांकने वाला।
**डक**—पु० (कां०) लकड़ी का तख़्ता।
**डक**—पु० रुकावट, बांध, रोक।
**डकडेवणा**—स० क्रि० (सो०) दरवाज़ा खटखटाना, हिलाकर देखना।
**डकणा**—स० क्रि० रोकना।
**डकणा**—वि० (मं०) काली-कलूटी।
**डकणा**—पु० (सो०) ढक्कन।
**डकयानी**—स्त्री० (सो०) सियार।
**डकयानी**—स्त्री० (सि०) गिलहरी प्रजाति का एक जानवर।
**डकरा**—पु० बड़ा टुकड़ा।
**डकला**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) टुकड़ा।
**डकले**—स्त्री० (शि०) कलछी।
**डका**—पु० (कु०) टुकड़ा।
**डकानू**—पु० 'डेक' वृक्ष के फल।
**डकार**—पु० आवाज़ के साथ मुंह से निकली हवा।
**डकारना**—अ० क्रि० (सो०) डकार आना।
**डकारिना**—अ० क्रि० (कु०) डकार लेना।
**डकारूना**—अ० क्रि० (सो०) डकार लेना।
**डकीणा**—स० क्रि० (चं०) रुकवाना।
**डके**—स्त्री० (शि०) छोटी कलछी।
**डकेल**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) रोक लगाने वाला।
**डकेलणा**—स० क्रि० (कां०) धकेलना।
**डकोणा**—अ० क्रि० (मं०) ढक जाना, रुक जाना।
**डकोघ**—पु० (चं०) रोकने योग्य स्थान।
**डकोघा**—वि० (चं०) रोकने योग्य।
**डक्का**—पु० तिनका, दियासलाई की तीली।
**डक्खळ**—वि० (कां०, बि०) मंदबुद्धि वाला।
**डक्खा**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) तिनका, कुछ न होने का भाव।
**डख**—पु० (कां०, ह०) कण।
**डखळ**—वि० (मं०) नकारा।
**डखळ**—वि० (सि०) सीधा-सादा।
**डखाना**—पु० (कु०) मृत पशु को फेंकने का स्थान।
**डगंत**—वि० (कु०, मं०) पशु के समान, नीच प्रवृत्ति वाला।
**डग**—वि० मूर्ख।
**डग**—पु० आवारा कुत्ता।
**डगडगा**—वि० (कु०) सख़्त, खुरदरा।
**डगडगा**—पु० (कां०, ऊ०) एक वाद्ययंत्र, ढोल।
**डगर**—वि० (बि०) जादू करने वाला।
**डगरीच्छ**—वि० (शि०) मूर्ख।
**डगलीमाकड़ी**—स्त्री० (बि०) आम की ऐसी फांक जिसके साथ गुठली भी सुखा ली गई हो।
**डगांस**—स्त्री० भाद्रपद की अमावास्या।
**डगा**—स्त्री० ढोल बजाने की छड़ी विशेष।
**डगा**—पु० (कु०) धीमी गंभीर आवाज़ में बजने वाला नगाड़ा।
**डगा**—पु० (ऊ०, कां०) धोखा।
**डगाडगैणा**—स० क्रि० (बि०) अनमने होकर किसी कार्य को करना।
**डगार**—स्त्री० (कु०) जवान भेड़ जिसने अभी बच्चा न दिया हो।
**डगे**—स्त्री० (चं०) बहकावे की बातें।
**डगेर**—वि० (मं०) पशु के समान।
**डगेळा**—पु० (सि०) डाइन का इलज़ाम।
**डगेळि**—स्त्री० भादों की अमावास्या को पड़ने वाला डाकिनियों का पर्व।
**डगैरा**—पु० (मं०) गोधूलि वेला।
**डगैळे**—वि० (कां०, मं०) दाग़दार।
**डगैहन**—स्त्री० (कु०) दुर्गंध।
**डगोर**—वि० (सो०, शि०) जादू-टोना करने वाला।
**डगोहर**—स्त्री० (बि०) आवारा कुतिया।
**डगौशण**—स्त्री० (कु०) चील पक्षी।
**डग्गी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) टोपी।
**डग्रास**—पु० (शि०) दे० डंगासा।
**डज**—पु० (कु०) घाटा।
**डजडजात**—पु० (चं०) व्यर्थ का शोर। हिलने का भाव।
**डटके**—अ० काफी मात्रा में।
**डटणा**—स० क्रि० (कु०, चं०) टोपीदार बंदूक में या सुरंग में

बारूद डालना।
**डटणा**—अ० क्रि० अड़ना। व्यस्त हो जाना।
**डटणा**—अ० क्रि० (सो०) खूब खाना, डटना।
**डठीड़ी**—स्त्री० (चं०, बि०) जबड़ा।
**डठूरु**—पु० (बि०) डेढ़ वर्ष के अंतर पर जन्मे बालक।
**डड**—पु० (मं०) बीज बोने के उपरांत ही वर्षा होने से या बहुत देर तक वर्षा न होने से खेत में जमी मिट्टी की सूखी परत।
**डडणा**—अ० क्रि० ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना।
**डडरा**—वि० (कां०, कु०) जो (फल) पका न हो, अधपका।
**डडू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मेंढक।
**डडैओळ**—पु० (शि०) लालच।
**डडोर**—पु० (चं०) छाती।
**डड्डरा**—वि० (चं०) पथरीला (स्थान)।
**डड्डी**—वि० (कां०) जिसकी बारी अंत में आए।
**डड्डू**—पु० (कां०) 'चंगेर' की निचली व मोटी बुनाई।
**डड्डू**—पु० (चं०) घराट के ऊपर दाने डालने के लिए लगा चम्मचनुमा नालीदार उपकरण।
**डणडणात**—स्त्री० व्यर्थ का शोर, लड़ाई-झगड़ा।
**डणवांस**—स्त्री० (मं०) दे० डगांस।
**डणा**—पु० (चं०) डुगडुगी बजाने की लकड़ी।
**डणियाघ**—स्त्री० (कु०) डाइन।
**डथाण**—वि० (सि०) तंत्र-मंत्र जानने वाला।
**डन**—पु० दंड।
**डनचौड़ा**—वि० (सि०) लंबे कान वाला।
**डनणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०) दोष लगाना, ज़ुर्माना करना।
**डनणी**—स्त्री० (सि०) एक टांग।
**डफ**—वि० (कां०, कु०) मूर्ख।
**डफड़ा**—पु० (सि०) डफ।
**डफर**—वि० नालायक।
**डफला**—पु० वाद्ययंत्र, डफ।
**डफांग**—वि० (चं०) बुद्धिहीन।
**डफांग**—स्त्री० (कु०, सि०) झूठी बात, मनगढ़ंत बात।
**डफाण**—पु० (कां०) विस्तार।
**डफान**—स्त्री० (सि०) गप्प।
**डफाळ**—पु० (कु०) चमड़े का एक गोल चौड़ा वाद्ययंत्र।
**डफालची**—वि० 'डफाळ' बजाने वाला।
**डफोका**—वि० (मं०) जिसे कम दिखाई दे।
**डब**—पु० (चं०) टेढ़ापन।
**डब**—पु० कपड़ा रंगते समय पड़ने वाले फीके धब्बे।
**डब**—पु० (कु०, सो०) ढंग, आचरण।
**डबडाणो**—स० क्रि० (शि०) डुबाना।
**डबकणा**—अ० क्रि० (चं०) पानी या तरल पदार्थ का टपकना।
**डबकौणा**—स० क्रि० (सि०) डुबाना।
**डबणा**—अ० क्रि० (सो०) फबना। जन्मपत्री का विवाह के लिए मिलान होना।
**डबरा**—पु० (बि०) पशुओं को पानी पिलाने का पात्र।
**डबरू**—पु० (कां०) पीतल का पात्र जो विवाह आदि उत्सवों पर दाल-सब्जी बांटने के लिए प्रयुक्त होता है।
**डबरोळना**—स० क्रि० (सो०) डुबाना।
**डबरोला**—वि० (सो०) बेढंगा देखने या चलने वाला।
**डबल**—वि० दोहरा।
**डबला**—वि० (ह०) कुष्ठ रोग के दाग़ वाला।
**डबलाखा**—वि० (सि०) बड़ी आंखों वाला।
**डबाणा**—स० क्रि० (कां०) डुबाना।
**डबार**—स्त्री० (मं०) झपकी।
**डबावणा**—स० क्रि० (सो०) मिलाना, मिलान करना।
**डबुआ**—पु० (कु०) दे० ढबुआ।
**डबूसा**—पु० (कु०) अपव्यय।
**डबोइणा**—स० क्रि० (मं०) डुबाया जाना।
**डबोक**—वि० (कु०) मूर्ख।
**डबोका**—वि० अनजान, सीधा-सादा, निकम्मा।
**डबोणा**—स० क्रि० (सो०) डुबाना।
**डबोणा**—स० क्रि० (सि०) किसी को हानि पहुंचाना।
**डब्बकडब्बा**—वि० चितकबरा।
**डब्बळ**—पु० (कां०) तांबे का एक पैसे का सिक्का।
**डब्बला**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) रंगबिरंगा।
**डब्बलू**—वि० (बि०) दे० डब्बला।
**डब्बा**—पु० डब्बा।
**डब्बी**—स्त्री० डिबिया।
**डब्बू**—पु० छोटा डब्बा।
**डभेल**—वि० (बि०) मिलाजुला।
**डभोणा**—अ० क्रि० (बि०) मिलना या मिल जाना।
**डभोलू**—पु० (बि०) ऐसा गड्ढा जहां दैनिक प्रयोग के लिए कुल्या का जल एकत्रित करके रखा जाता है।
**डम**—पु० (कां०) दाग।
**डमडोलणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) थिरकना, हिलना।
**डमडोलणा**—स० क्रि० (सो०) छप्पर हिलाना।
**डमडोळना**—स० क्रि० (शि०) बिगाड़ना।
**डमडौका**—पु० (मं०) मेंढक का बच्चा।
**डमणा**—स० क्रि० (बि०) गर्म लोहा लगाना, जलाना।
**डमाडोल**—पु० (सि०) भूख से कुम्हलाने का भाव।
**डमाडोल**—अ० (कां०, ऊ०, ह०) शांति से, चुपके से।
**डमाणा**—स० क्रि० (सि०) दूसरी ओर भेजना।
**डम्ह**—पु० गर्म घी और हलदी आदि की टकोर, निशान, घाव।
**डम्ह**—पु० (चं०) पशुओं को अपच के कारण होने वाला रोग।
**डयाकणा**—स० क्रि० (शि०) भेजना।
**डयाणा**—स० क्रि० (कु०) समाप्त करना, पार करना।
**डयाणा**—स० क्रि० (ह०) रस्सी बाटना।
**डयार**—स्त्री० (बि०, सो०) गुफा।
**डयूडल्ली**—स्त्री० (सि०) दीवाली पर जलाए जाने वाले छोटे दीपक।
**डरणो**—अ० क्रि० (शि०) डरना।
**डरहेच**—पु० (सि०) नेफा।
**डरा:ली**—वि० (कु०) डरपोक।
**डराइंदा**—वि० (शि०) भयभीत।
**डराइणा**—अ० क्रि० (कु०) डराया जाना।

**डराउण**—स्त्री० (कु०) फसल को पशु-पक्षियों के उजाड़ से बचाने के लिए खेतों में बनाए गए बुत आदि।
**डराउणा**—वि० डरावना।
**डराउणी**—वि० डरावनी।
**डराउणो**—वि० (शि०) डरावना।
**डराकड़**—वि० (सो०) डरने वाला व्यक्ति।
**डराड**—पु० (मं०) भय।
**डराणा**—स० क्रि० डराना, भयभीत करना।
**डरालड़**—वि० (सो०) डरने वाला, डरपोक।
**डरालड़ू**—वि० (कु०) डरपोक।
**डरालू**—वि० (कां०) डरपोक।
**डरावणा**—स० क्रि० (सो०, शि०) डराना।
**डरावणा**—वि० भयंकर।
**डरू**—वि० डरपोक।
**डरू**—पु० (शि०) वरदान।
**डरेच**—पु० (सो०) नेफा, पाजामे में नाड़ा पिरोने का स्थान।
**डरेली**—वि० (मं०) डरपोक।
**डरोकळ**—वि० (चं०, बि०) डरपोक।
**डरोणा**—वि० (बि०) डरावना।
**डरोणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) डरना।
**डरौणा**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) भयानक।
**डल**—पु० (बि०) बांस की बनी टोकरी जो प्रायः गोबर उठाने के काम आती है।
**डळ**—पु० (कां०) ऐसा स्थान जहां झील की तरह पानी खड़ा रहता है, दलदली भूमि।
**डळक**—पु० (ऊ०, कां०) तिलचटा।
**डलकणा**—अ० क्रि० (सो०) हिलना।
**डळका**—पु० (बि०) आंख का पानी।
**डळकी**—स्त्री० (सो०) मांस आदि का टुकड़ा।
**डलखीर**—स्त्री० (सो०) खूबानी आदि की गुठलियों की गिरी की पकाई गई खीर।
**डळना**—अ० क्रि० (ह०) गिर जाना।
**डलयाह**—वि० (बि०) सांप-बिच्छू आदि के विष को झाड़ने वाला।
**डला**—पु० ढेला।
**डळाक्का**—पु० (कां०) जोर से प्रवाहित होने का भाव।
**डलाहड़ा**—पु० (कां०) बड़ा टोकरा।
**डलिया**—वि० (ह०) दे० डलयाह।
**डली**—स्त्री० (सि०) लोहे का गोला।
**डळी**—स्त्री० सोने या चांदी का टुकड़ा।
**डळी**—स्त्री० (बि०) ऐसा खेत जो चौड़ाई में कम और लंबाई में अधिक हो।
**डलू**—पु० छोटा सा टुकड़ा।
**डलेउणा**—स० क्रि० (सो०) ढीला करना।
**डलेरिना**—अ० क्रि० (कु०) ढीला हो जाना।
**डळैह**—वि० (कां०) दे० डलयाह।
**डळोका**—पु० (चं०) पालकी का रस्सा कसने का लकड़ी का उपकरण।
**डल्याही**—वि० (कु०) पेड़ पर चढ़ने में कुशल।
**डल्लू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) पीतल का पात्र विशेष जिसका मुंह चौड़ा और पेंदा छोटा होता है।
**डवावां**—पु० (शि०) छाया।
**डसणा**—स० क्रि० सांप का काटना, डंक मारना।
**डसलहड्डू**—वि० (सि०) कायर।
**डसाली**—वि० (ऊ०, कां०) पत्तलें देने वाला।
**डहौरा**—पु० (बि०) परछाईं।
**डहगड़ा**—वि० (सि०) गहरा।
**डहटण**—पु० (ह०) खिड़की पर डाली मोटी लकड़ी।
**डहम**—पु० (बि०) बहाना बनाने का भाव।
**डांऊ**—वि० (सो०, सि०) जादू-टोना करने वाला।
**डांक**—स्त्री० (शि०) पशुओं को काटने वाली मक्खी।
**डांखरीआलू**—पु० (शि०) आलू की एक प्रकार जो बड़ी स्वादिष्ट होती है।
**डांग**—पु० लाठी, सोठा।
**डांगणा**—स० क्रि० (कु०) डसना, डंक मारना।
**डांगणा**—स० क्रि० (बि०) टहनियों की छंटाई करना, वृक्षों से हरे पत्ते काटना।
**डांगणू**—स्त्री० (चं०) भेड़।
**डांगर**—पु० (मं०) गेहूं का मोटा घास जो गेहूं निकालने के बाद रह जाता है, मोटा भूसा।
**डांगर**—पु० (मं०, सो०) पशु।
**डांगरा**—पु० (शि०, सि०) लोहे का शस्त्र।
**डांगरो**—पु० (शि०) 'दराट'।
**डांगरौ**—पु० (कु०) फरसा।
**डांगा**—पु० (कु०, शि०) दाग।
**डांगा**—पु० (सि०) डंका, नगाड़े की चोट।
**डांगू**—पु० (कु०) डंडे वाला सिपाही, चौकीदार।
**डां:ज**—स्त्री० (सि०, सो०) खांसी, जुकाम।
**डां:जणा**—अ० क्रि० (सि०, सो०) खांसना।
**डांड**—पु० (शि०, सि०) दंड।
**डांडरा**—पु० (कां०) शोर।
**डांडा**—पु० (सि०) लाठी।
**डांडा**—पु० (शि०) पहाड़ की ऊंची चोटी।
**डांडा**—पु० (सो०) मक्की का तना, ठुंठ, दाने निकालने के बाद मक्की का शेष भाग, गुल्ली।
**डांडी**—स्त्री० (चं०, शि०) पालकी।
**डांडी**—स्त्री० (सि०, शि०) हत्थी, डंडी।
**डांडे**—स्त्री० (सि०) सोने की बाली।
**डांडो**—पु० (सि०) तूफान।
**डांढ**—पु० (कु०) पेट।
**डांढी**—वि० (कु०) ज़्यादा खाने वाला।
**डांफणा**—स० क्रि० (कु०) ठगना।
**डांबणाले**—स्त्री० (शि०) 'डाम' लगाने वाली विशेषज्ञ स्त्री।
**डांस**—स्त्री० (सि०) तराजू में लगा लकड़ी का डंडा।
**डांसणा**—स० क्रि० (कु०) ठगना।
**डांसरा**—वि० (सि०) ऐसा खेत जिसमें गेहूं काटने के बाद तुरंत

दूसरी फसल न लगाई जाए।
**डांसू**—पु० (चं०) पतीला।
**डाः**—स्त्री० (सो०) दाह, जलन, ईर्ष्या।
**डाःई**—वि० (शि०, सो०) ढाई।
**डाःक**—पु० (शि०, सि०, सो०) 'ढांक' बड़ी चट्टान।
**डाःकी**—वि० (शि०) ढोलक बजाने वाला।
**डाःकू**—पु० (सि०) बंदर।
**डाःट**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) दे० 'दराट'।
**डाःडा**—वि० घना, यथेष्ट, काफी, सख्त, कठोर।
**डाःणा**—स० क्रि० (सो०) किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए हाथ पसारना।
**डाःणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, चं०) बिछाना।
**डाःब**—पु० (सि०) किसी स्थान पर भरा पानी।
**डाःबली**—स्त्री० (शि०, सि०) कंबल।
**डाःरा**—पु० (शि०, सि०) ठहरने का अस्थाई स्थान, झोंपड़ी।
**डाःल**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) माथा झुकाने की क्रिया, अभिवादन की क्रिया, नमस्कार।
**डाःळ**—स्त्री० (सो०) गर्भपात।
**डाःलदू**—पु० (सि०) एक सीध में बहुत से खेत।
**डाःळना**—स० क्रि० (सि०, सो०) गिराना।
**डाःळमडोळि**—स्त्री० (सो०) वस्तुओं को इधर से उधर पटकने का व्यापार।
**डा**—पु० (सि०, शि०) मशाल।
**डाइण**—स्त्री० (कु०) डाकिनी।
**डाई**—स्त्री० (शि०) पीड़ा।
**डाउक**—वि० (शि०) कष्ट देने वाला।
**डाउड़ी**—स्त्री० (कु०) रीढ़ की हड्डी।
**डाऊ**—पु० (शि०) ऐसा व्यक्ति जिसमें देवता खेलता हो।
**डाऊ**—पु० दे० डांऊं।
**डाक**—पु० (सो०) बहती वस्तु में पड़ी रोक।
**डाकण**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) डाकिनी, यक्षिणी।
**डाकणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) बंद करना, रोकना।
**डाकणो**—स० क्रि० (सि०) बंद करना।
**डाकणो**—अ० क्रि० (सि०) उलटी करना।
**डाकना**—स० क्रि० (सि०) पशुओं को हांकना।
**डाकरा**—वि० (शि०) मोटा।
**डाकरी**—स्त्री० (मं०) चावल, दाल आदि मापने का पात्र विशेष।
**डाकी**—स्त्री० उलटी।
**डाकू**—पु० डाक ले जाने वाला कर्मचारी।
**डाक्का**—पु० डाका।
**डाखाना**—पु० डाकघर, डाकखाना।
**डाग**—स्त्री० (शि०, सि०) जादू करने वाली स्त्री।
**डागरे**—पु० (कां०) एक वृक्ष विशेष।
**डागा**—पु० (कु०) मृत पशु।
**डागिण**—स्त्री० (शि०) दे० डाग।
**डागी**—स्त्री० (बि०) दे० डाग।
**डागुरी**—वि० (शि०) बुरी नज़र वाली।
**डाट**—पु० बोतल का ढक्कन।
**डाटणू**—पु० (कां०, बि०, मं०) चूल्हे के ऊपर रखा हुआ पत्थर।
**डाटी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) दांती।
**डाठ**—स्त्री० (कां०) दाढ़।
**डाठणा**—अ० क्रि० (कां०) समझ लेना, आश्वस्त हो जाना।
**डाठी**—स्त्री० (सि०) जबड़ा।
**डाड**—पु० (मं०) वृक्ष विशेष।
**डाड**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) चीख।
**डाड़ठी**—स्त्री० (कु०) अन्न रखने का लकड़ी का बना छोटा पात्र।
**डाडा**—वि० (शि०) हृष्ट-पुष्ट।
**डाढ**—स्त्री० (कु०) अनाज आदि रखने के लिए लकड़ी का बना बड़ा गोल पात्र।
**डाढा**—वि० (कु०) मज़बूत, हृष्ट-पुष्ट।
**डाण**—स्त्री० (सि०) पेड़ से अखरोट झाड़ने की लाठी।
**डाणा**—पु० (सो०) बेकार का बोझ। एक लठ जिससे मक्की के दाने निकाले जाते हैं।
**डाणा**—पु० (मं०) बरामदे में लगी खड़ी लकड़ियां।
**डाणा**—पु० (सि०) निशाना।
**डाणाडूणि**—स्त्री० (सो०) बर्तनों की खनखनाहट।
**डाणू**—पु० (ह०) टहनी।
**डान**—पु० (बि०, मं०) दंड, जुर्माना।
**डाना**—पु० (सि०) गड्ढा, मृत बच्चे को दबाने का गड्ढा।
**डाना**—पु० (कु०) अंडा।
**डानी**—स्त्री० लौकी।
**डानू**—पु० (ऊ०, कां०, मं०) छोटी लौकी।
**डाफ**—स्त्री० (कु०) चौड़ा पत्थर जिसे पक्षियों को मारने के लिए एक शिकंजे पर रखा जाता है।
**डाफी**—स्त्री० (शि०, सि०) खिड़की।
**डाब**—पु० (कां०) तख्ता विशेष जो छत पर कड़ियों के ऊपर लगाया जाता है।
**डाब**—पु० (शि०) पानी का तालाब।
**डाबकू**—पु० (सि०) छोटा डब्बा।
**डाबणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) दूध आदि में पानी मिलाना।
**डाबर**—पु० तालाब।
**डाबरा**—पु० (कु०) बड़ी परात।
**डाबरो**—पु० (शि०) एक पात्र विशेष जो प्रायः हाथ धोने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।
**डाबा**—पु० (कु०, सि०, सो०) डब्बा।
**डाबा**—पु० (शि०) पतीला।
**डाबुर**—स्त्री० (सि०) बहती नदी का गहरे पानी वाला स्थान।
**डाबे**—स्त्री० (शि०, सि०) डिबिया।
**डाबो**—पु० (शि०) छोटा पतीला।
**डाभ**—पु० (कां०) एक झाड़ी विशेष।
**डामणा**—स० क्रि० (कां०) पहनना, लपेटना।
**डाम**—पु० (सि०, शि०) सन्निपात आदि तीव्र ज्वर में लोहे या सोने की वस्तु को गरम करके पेट आदि में कराया जाने वाला इसका स्पर्श।
**डाम**—पु० (चं०) पानी भरा स्थान।

**डाम**—पु० गरम वस्तु के स्पर्श से पड़ने वाला चिह्न।
**डामणा**—स० क्रि० (सि०, शि०) किसी धातु को गरम करके उपचार के लिए शरीर पर दागना।
**डामर**—पु० (चं०) मंत्र विशेष।
**डामर**—पु० (मं०) पेट।
**डामुणा**—अ० क्रि० (सो०) गरम वस्तु से छूआ जाना।
**डायण**—स्त्री० (मं०) लाल चोंच वाली काली चील।
**डायण**—स्त्री० डाकिनी।
**डार**—स्त्री० (शि०) डाल।
**डार**—स्त्री० पशुओं का समूह। कतार, पंक्ति, समूह।
**डार**—स्त्री० (कां०) घराट के चलने पर आटे के उड़ने की क्रिया।
**डारना**—स० क्रि० (सि०) अलग करना।
**डाल**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) कै, उलटी।
**डाल**—स्त्री० (सो०) बड़ा टोकरा।
**डाळ**—पु० पेड़।
**डाळ**—पु० (कां०, कु०, चं०) बड़ी टहनी।
**डालटा**—पु० (सि०) छोटा वृक्ष।
**डालटी**—स्त्री० (शि०) लताएं।
**डालण**—पु० (सि०) झूला, पलना।
**डालन**—पु० (शि०, सि०) झूला।
**डालना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) कै करना, उलटी करना।
**डाळयाळा**—पु० (चं०) जादू-टोने का उपचार करने वाला व्यक्ति विशेष।
**डाला**—पु० (सो०) बड़ी टोकरी। संदूक का ढक्कन।
**डाला**—पु० (बि०, ह०) वृक्ष, वृक्ष की मोटी शाखा।
**डालाई**—वि० (शि०) वृक्ष से पत्तियां काटने वाला।
**डाली**—स्त्री० (चं०) जादू-टोने का चेले द्वारा किया जाने वाला उपचार।
**डाली**—स्त्री० (ह०) भेड़-बकरियों को दिया जाने वाला हरा चारा जो वृक्षों की टहनियां काट-काट कर दिया जाता है।
**डाली**—स्त्री० उपहार, भेंट, घूस।
**डाळी**—स्त्री० टहनी।
**डाळू**—वि० (सि०) वृक्ष पर चढ़ने वाला।
**डाळू**—पु० छोटी टहनी।
**डाळे**—स्त्री० (शि०) टहनी।
**डाल्ली**—पु० (मं०) घाटा।
**डासणा**—स० क्रि० (शि०) डसना।
**डासणा**—स० क्रि० (शि०) प्रस्तुत करना।
**डासिणो**—स० क्रि० (शि०) किसी वस्तु से चोट खाना।
**डाह**—पु० (कु०) ऊंचे-ऊंचे वृक्षों से फल गिराने के लिए बनाया गया बहुत लंबा डंडा।
**डाह**—पु० (चं०) वर्षा का एक स्थान पर एकत्रित जल।
**डाह**—पु० (बि०) सुहागा जो धरती को समतल करने के लिए हल चलाने के उपरांत फेरा जाता है।
**डाह**—पु० (चं०) करचे में धागा कसने की क्रिया।
**डाह**—स्त्री० (ऊ०, कां०, चं०) ईर्ष्या, द्वेष, जलन, मानसिक पीड़ा।
**डाहट**—वि० (मं०) मज़बूत।
**डाहण**—स्त्री० (कु०) लंबी लाठी।
**डाहण**—पु० (मं०) लहसुन के आकार का एक कंद।
**डाहणा**—स० क्रि० (कु०) रखना।
**डाहणा**—स० क्रि० (शि०) जलाना, कष्ट देना।
**डाहणा**—स० क्रि० खाट आदि लगाना या बिछाना।
**डाहिणा**—स० क्रि० (कु०) रखा जाना।
**डाही**—स्त्री० (बि०) ताना मारने का भाव।
**डाहुली**—स्त्री० (मं०) गेहूं, जौ आदि फसल के दानों को झाड़ने के लिए प्रयुक्त डंडा।
**डाहुलौ**—पु० (कु०) डंडा।
**डाह्कटू**—पु० (शि०) 'डाह्की' का बच्चा।
**डाह्की**—पु० (शि०) वादक, तूरी।
**डाह्ट**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) 'दराट'।
**डाह्ड**—स्त्री० (कु०) पेड़ का खोखला तना जिसे काट-तराश कर मधुमक्खी पालने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
**डाह्र**—स्त्री० (चं०) पक्षियों का समूह।
**डिंउक**—पु० (सि०, सो०) दीमक।
**डिंगटा**—पु० (सि०) छोटा डंडा।
**डिंगर**—पु० (मं०, सि०) गंदम का एकत्रीकरण।
**डिंगर**—वि० (शि०) भद्दा, मोटा।
**डिंगा**—वि० टेढ़ा।
**डिंगा**—पु० (शि०, सि०) बड़ा डंडा।
**डिंगुर**—पु० (शि०) पत्थर।
**डिंगोले**—स्त्री० (सि०) रीढ़ की हड्डी।
**डिंझे**—स्त्री० (सि०) अंगुलियों के मध्य के जोड़।
**डिंझे-डिंझी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) कुश्ती के अवसर पर बजाए जाने वाले ढोल पर दी गई थाप विशेष।
**डिंड**—पु० (शि०) टखना।
**डिंड**—वि० (कां०, मं०, ह०) बेकार (व्यक्ति)।
**डिंडकी**—स्त्री० (सि०) ऊन या सूत की छोटी गुच्छी।
**डिंडकू**—पु० (शि०) धागे का गोला।
**डिंडर**—पु० (सो०) अच्छी तरह से गाहा गया गेहूं।
**डिंडी**—स्त्री० (सि०) वाद्ययंत्र बजाने की छड़ियां।
**डिंढरा**—पु० (मं०) पूंछ।
**डिंढी**—वि० (कु०) स्वांग रचने वाला।
**डिंबो**—स्त्री० (चं०) मिट्टी का बना छोटा सा पात्र।
**डिःक्की**—स्त्री० (मं०, सो०) हिचकी।
**डिःला**—वि० (सो०) ढीला।
**डिकचा**—पु० (सि०) पतीला।
**डिकचौ**—पु० (सि०) पतीला।
**डिकणा**—अ० क्रि० (चं०) हिलना।
**डिकणा**—अ० क्रि० (सि०) घमंड होना।
**डिकरी**—स्त्री० (शि०) आग की ऊंची लपट।
**डिकळी**—स्त्री० (कु०) हिचकी।
**डिकाणा**—स० क्रि० (चं०) हिलाना।
**डिक्खर**—वि० (चं०) भरा हुआ, रजा हुआ, तृप्त।
**डिखर**—वि० (चं०) खूब सजा हुआ।

**डिखरा**—पु० (चं०) बैठने के लिए बनाया गया लकड़ी का पटरा।
**डिखोल**—वि० (चं०) अशुभ।
**डिग**—स्त्री० (कां०, चं०) घराट के ऊपर वाले पाट को ऊपर-नीचे करने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का उपकरण।
**डिगची**—स्त्री० (शि०, सि०) सब्जी बनाने का पात्र।
**डिगणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, शि०) गिरना।
**डिगणो**—अ० (कु०) ''रहने दो'' भाव व्यक्त करने वाला अव्यय शब्द।
**डिगर**—पु० (चं०) मक्की के बड़े भुट्टे।
**डिगस**—स्त्री० (शि०) अधिक खाने के कारण हुआ पेट का भारीपन।
**डिगसा**—पु० (सि०) टांकियों से सिला हुआ पहनने का पुराना कपड़ा।
**डिग्गरपिट्ट**—पु० (चं०) झंझट।
**डिठेरू**—पु० (चं०) डेढ़ वर्ष के अंतर पर जन्मा बालक।
**डिठैआं**—वि० (शि०) ढीठ।
**डिडक**—स्त्री० (ऊ०, कां०) लाज, शर्म।
**डिडकणा**—स० क्रि० (चं०) किसी वस्तु को खाने की तीव्र इच्छा होना।
**डिडर**—पु० (चं०) टूटा हुआ पात्र।
**डिडरा**—वि० (बि०) अधपका।
**डिढ**—वि० (कां०) डेढ़।
**डिढ**—पु० (मं०) पेट।
**डिणकी**—स्त्री० (कु०) दीमक, कागज़ आदि को खाने वाले चमकीले कीड़े।
**डिन्ना**—पु० पानी में रहने वाला सर्प।
**डिन्हा**—वि० (चं०) सुस्त।
**डिन्हु**—पु० (चं०) ऐसा सांप जिसका ज़हर धीरे-धीरे चढ़ता है।
**डिबकी**—स्त्री० (कु०) घी रखने का मिट्टी का बना छोटा सा पात्र।
**डिबकी**—वि० (बि०) छोटे कद की।
**डिबडू**—पु० (सो०) मिट्टी का छोटा पात्र।
**डिबी**—स्त्री० (कु०) घी रखने के लिए मिट्टी का बना छोटा पात्र।
**डिबी**—स्त्री० (शि०) जुगनू।
**डिबुर**—पु० (शि०) कूआं।
**डिब्टू**—पु० (शि०) थोड़े से पानी के इकट्ठा होने का भाव।
**डिब्बर**—पु० (शि०) तालाब, जोहड़।
**डिम**—पु० (कां०) पानी युक्त गड्ढा, जोहड़।
**डिमणू**—पु० (कु०) भूमि में पानी का छोटा सा गड्ढा, छोटा जल संग्रह।
**डिमर**—पु० (मं०) दे० डिम।
**डिमडिमा**—पु० लकड़ी का ठेला जिससे प्रायः सेब की पेटियां तैयार की जाती हैं।
**डिमणा**—अ० क्रि० (चं०) मस्त होना।
**डिमणा**—पु० (शि०) टखना।
**डिमला**—पु० (चं०) कमज़ोर।
**डिमळा**—पु० (सि०, सो०) ढेला; मक्खन, मलाई आदि का गोल पेड़ा।
**डिम्मी**—स्त्री० (चं०) पशु के गले का निचला भाग।
**डिया**—पु० (बि०) नाले या छोटी नदी को पार करने का मार्ग।
**डियाइणा**—स० क्रि० (कु०) खत्म किया जाना, फेंका जाना।
**डियाउणा**—स० क्रि० (कु०) उड़ाना।
**डियाणा**—स० क्रि० (कु०) फेंकना; खत्म करना, संपन्न करना, पार कराना।
**डियाणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) फंसाना, अड़ंगा लगाना।
**डियाणा**—स० क्रि० (बि०) पार कराना।
**डियूट**—पु० (सि०) दीपक रखने का स्थान।
**डिरथा**—वि० (चं०) कमज़ोर व बूढ़ा।
**डिलकणा**—अ० क्रि० हिल जाना।
**डिलकणा**—अ० क्रि० (ह०) खिसकते रहना। मर जाना।
**डिलण**—पु० (सो०) भूचाल।
**डिला**—पु० (कु०) दरवाज़े की चौखट का एक ओर का भाग।
**डिलू**—वि० (शि०) ऐसा पशु जिसके सींग हिलते हैं।
**डिल्ली**—स्त्री० (सो०) खूबानी आदि की गुठली।
**डिहण**—स्त्री० (कु०) चूल्हे के बाहरी भाग की मेंड़।
**डिहर**—पु० (कु०) एक फोड़ा जो चारों ओर से सख्त होता है और ऊपर से लाल, बड़ा फोड़ा।
**डिहिणा**—अ० क्रि० (कु०) पार किया जाना, आगे निकलना।
**डिहिणी**—स्त्री० (मं०) चूल्हे की आगे की मेंड़।
**डींग**—स्त्री० (सो०) लाठी।
**डींग**—पु० (ह०) लंबी लाठी।
**डींगटा**—पु० (सि०, शि०) लाठी।
**डींगपडींग**—वि० टेढ़ी-मेढ़ी।
**डींगर**—वि० मूर्ख, अनपढ़।
**डींगाडोगरि**—स्त्री० (सो०) लाठियों से की जाने वाली लड़ाई।
**डींगामुश्ती**—स्त्री० (शि०) लड़ाई।
**डींगो**—पु० (शि०) मोटा डंडा।
**डींढ**—पु० (कु०) स्वांग।
**डी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) भैंस।
**डीओ**—अ० (ऊ०, सि०, ह०) भैंस को पुकारने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**डीक**—स्त्री० (चं०) हिलोर।
**डीक**—पु० (कु०) पानी जमा होने का भाव, पानी या अन्य द्रव से भरा गड्ढा।
**डीकणा**—स० क्रि० (कां०) जानवर को मारना।
**डीकणा**—अ० क्रि० (मं०) भैंस का बोलना, रंभाना।
**डीकी**—स्त्री० (शि०) हिचकी।
**डीगा**—पु० (शि०) कीड़ा।
**डीज़की**—स्त्री० (कु०) दे० डिगची।
**डीझा**—पु० (चं०) हंसोड़, जोकर।
**डीठणा**—स० क्रि० (सि०) झिड़कना।
**डीड**—पु० (मं०) बिल्ला।
**डीडल्लु**—पु० (कु०) झोंपड़ी, छोटा मकान।
**डीणा**—अ० क्रि० (कु०) चले जाना।
**डीब**—पु० (शि०) तालाब।

डीबरा—पु० (शि०) बड़ा पेट।
डीबुर—पु० (शि०) दे० डीब।
डीबे—स्त्री० (शि०) छोटी डिबिया।
डीम—पु० (सि०) किले की तरह का मंदिर।
डीमडाम—पु० (शि०) ठाट-बाट।
डील—पु० (सि०) बड़ा पत्थर, चट्टान।
डील—वि० (बि०) घाटा।
डील—पु० (ऊ०, कां०, ह०) शारीरिक गठन।
डीलग—स्त्री० (कु०) छत पर बलि देने की क्रिया।
डीलणा—अ० क्रि० (शि०) हिलना-डुलना।
डीलरा—पु० (कु०) लकड़ी का टुकड़ा।
डीला—पु० (ऊ०, कां०, बि०) धान या गेहूं के खेत में उगने वाला दूब जैसा हरा घास।
डीला—पु० (कु०) गाय की खूंटी।
डीला—स्त्री० (बि०) पानी की लहर।
डीह—स्त्री० (मं०) उड़ान।
डुंख—पु० (कु०) ठूंठ, कटे वृक्ष का ज़मीन से लगा पिछला भाग।
डुंख—वि० (ऊ०, कां०) महामूर्ख।
डुंगड़ू—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मिट्टी का बना दही या छाछ रखने का छोटा पात्र।
डुंगणा—स० क्रि० (ऊ०, कां०) ऊन काटना; वृक्षों से पत्तियां काटना।
डुंगा—पु० (सो०) बड़ा पत्थर।
डुंगा—पु० (चं०) दीवार।
डुंगा—वि० (सो०) गहरा।
डुंगार—पु० (चं०) छोटा मेढ़ा।
डुंगारा—पु० (कां०) आश्रय, सहारा।
डुंगारी—स्त्री० (चं०) छोटी भेड़।
डुंघलू—पु० (कु०) कुकुरमुत्ते की एक किस्म।
डुंड—पु० (कां०) बांस का टुकड़ा, बिना पत्तों का पौधा।
डुंड—स्त्री० (कु०) तलाश।
डुंड—स्त्री० (चं०) जांघ।
डुंडस—वि० (कां०) अंगहीन।
डुंडस—वि० (शि०, सि०, सो०) मूर्ख।
डुंडस—पु० (चं०) अन्न भूनने के लिए बनाया उपकरण।
डुंडसू—वि० (बि०) जिसके हाथ-पांव की अंगुलियां न हों।
डुंडा—वि० (ऊ०, कां०, चं०) जिसके हाथ न हों।
डुंडू—पु० (सि०) हस्तमूल।
डुंडू—पु० (कु०) कोदे की बालियां।
डुःलगा—पु० (सि०) नितंब।
डुआंपी—वि० (कु०) अल्पभाषी।
डुआण—स्त्री० (कां०) छत पर स्लेट डालने से पहले लकड़ी बिछाने की क्रिया।
डुआणा—स० क्रि० (मं०) उड़ाना।
डुआर—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) उड़ान।
डुआर—पु० (कु०, सि०, सो०) गुफा, कंदरा।
डुऊंज—पु० (शि०) गुफा।
डुक—पु० (शि०) मुक्का।
डुकण—पु० (कु०) पशुओं का मूत्र इकट्ठा करने के लिए बनाया गया गड्ढा। जहां पशु बांधे जाते हैं वहां यह गड्ढा बनाया जाता है, जिसमें सारा मूत्र इकट्ठा होता है और पशुओं के नीचे गीला नहीं होता।
डुकणा—अ० क्रि० (शि०) रुकना।
डुकरणा—अ० क्रि० (शि०, सि०) रंभाना।
डुगटू—पु० (शि०) हिचकी।
डुगड़ा—वि० अधिक गहरा।
डुगडुग—अ० डमरू की ध्वनि।
डुगर—स्त्री० (कु०) लकड़ी की टोंटी वाला पात्र जिसे शराब निकालने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
डुगर—पु० (ह०) जादूगर।
डुगरी—स्त्री० (कु०) लकड़ी का बना पात्र जिसमें दूध, दाल या सब्जी रखी जाती है।
डुगरू—पु० (कु०) लकड़ी का बना पात्र जिसमें दूध दुहा जाता है।
डुगली—स्त्री० (ह०) स्थानीय खेत।
डुगली—वि० (ऊ०, कां०, ह०) गहरी।
डुगली—स्त्री० (चं०) मिट्टी का कटोरा।
डुगलू—पु० (मं०) गुच्छी।
डुग्घ—पु० (चं०, बि०) छोटा सा गड्ढा।
डुघ—पु० (कु०) बड़ा समतल खेत।
डुघली—स्त्री० (मं०) श्मशान।
डुघा—वि० (कु०) गहरा।
डुघी—वि० गहरी।
डुड—स्त्री० चूहे का बिल।
डुडु—पु० (कु०) दूध से छाछ बनाने वाले घड़े का ढक्कन।
डुणा—वि० (शि०) छोटे कद का।
डुन्ना—पु० (शि०, सि०, सो०) दोना।
डुबकी—स्त्री० गोता।
डुबणा—अ० क्रि० डूबना।
डुबाएं—पु० (मं०) पीतल की मोटी पतीली।
डुमडुमे—अ० (कु०) चुपचाप, चुपके से।
डुलकणू—पु० (कु०) कर्णाभूषण।
डुळकणो—अ० क्रि० (सो०) आवारा घूमना।
डुलगे—स्त्री० (शि०) घी रखने का मिट्टी का बना विशेष पात्र।
डुलणा—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) तरल पदार्थ का गिरना।
डुस—पु० (शि०) मुक्का।
डुसकणा—अ० क्रि० सिसकना; कुछ न बोलना।
डुहंग—पु० (ह०) धान काटने के बाद बचा पौधे का जड़ वाला भाग।
डुहाई—स्त्री० (कु०) माड़ा, ढोने की क्रिया।
डुहू—वि० (चं०) निकम्मा।
डुहक—पु० (ऊ०, कां०, ह०) आम चूसने से पहले निकाला गया आम के मुंह का कसैला रस।
डूंजण—स्त्री० (सि०) गुफा।
डूंग—पु० (सि०, सो०) गहराई।
डूंगड़ा—पु० (मं०) वृक्ष का मूलभाग।

**डूंगा**—वि० गहरा।
**डू:ज़**—पु० (सि०) किसी खेत या सड़क में पड़ी छोटी चट्टान जो बाधक हो।
**डूट**—पु० (शि०) बिल्ला।
**डूटड़ा**—पु० (शि०) दे० डूट।
**डूंट**—पु० (सि०) अरबी के तने का निचला हिस्सा।
**डूंडो**—पु० (कु०, म०) लकड़ी की बनी झालर जो प्राचीन व ऐतिहासिक स्मारकों में सजी रहती है।
**डूंधू**—पु० (मं०) कुकुरमुत्ता की एक किस्म।
**डूंह**—पु० (सि०) चूहे का बिल।
**डू:रकू**—पु० (सि०) दालों में लगने वाला कीड़ा।
**डूगरी**—स्त्री० (कु०) घराट के ऊपर लगा लकड़ी का पात्र जिससे दाने घराट में गिरते हैं।
**डूगा**—वि० (बि०, ह०) गहरा।
**डूघा**—वि० (कु०, मं०) गहरा।
**डूह**—स्त्री० (बि०) चीख, लंबी चीख।
**डूना**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) दोना।
**डूबणा**—अ० क्रि० (कु०, बि०) डूबना।
**डूबणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) डूबना।
**डूबरो**—पु० (शि०) दूध रखने का पात्र।
**डूम**—पु० (सि०) सर्प की एक किस्म।
**डूलफ़ूर**—वि० (शि०) घुमक्कड़।
**डूलू**—पु० (शि०) दे० बाड़ी।
**डूसू**—वि० (शि०) पेटू।
**डूहकी**—स्त्री० (कां०) नदी के समीप ऊंचाई पर बसा गांव।
**डेंगळ**—स्त्री० (शि०) डंडी।
**डेंगा**—वि० (कु०) टेढ़ा।
**डेंठा**—पु० (कु०) ज़ोर की वर्षा।
**डेंठा**—पु० (कु०) मोटी लाठी।
**डेंठी**—पु० (कु०) साधू।
**डेंडा**—पु० (कु०) डंडा।
**डेंडलू**—पु० (कु०) डंठल।
**डे:र**—पु० (शि०, सि०, सो०) ढेर।
**डे:ल**—पु० (सि०, सो०) मिट्टी का ढेला।
**डे:लखे**—स्त्री० (शि०) डली, छोटा टुकड़ा।
**डेउणा**—अ० क्रि० (कु०, शि०) जाना।
**डेऊड़ी**—स्त्री० (शि०) अतिथि भवन।
**डेओची**—स्त्री० (शि०) बार-बार पूछने की क्रिया।
**डेओढा**—वि० डेढ़-गुना।
**डेओड़ी**—स्त्री० (मं०) लकड़ी की कलछी।
**डेओणा**—अ० क्रि० (सि०, सो०) जाना।
**डेक**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) वृक्ष विशेष जिससे हल का लंबा डंडा बनाया जाता है।
**डेकराण**—वि० (शि०) बदतमीज़।
**डेग**—पु० तांबे का एक बड़ा पात्र।
**डेग**—पु० (शि०) डब्बा।
**डेगचा**—पु० (मं०) खुले मुंह वाला पतीला।
**डेगची**—स्त्री० (सि०, सो०) पतीली।
**डेढ**—वि० (सि०, सो०) डेढ़।
**डेढ़ा**—वि० (चं०, बि०) ड्योढ़ा।
**डेढू**—पु० (कु०) कर्णाभूषण।
**डेणालदु**—पु० (शि०) जाते समय का भोजन।
**डेणालू**—वि० (शि०) जाने वाला।
**डेफा**—वि० थोथा।
**डेबरया**—पु० (कां०) एक वृक्ष विशेष।
**डेबरा**—पु० (चं०) Ficus hispida.
**डेबळे**—स्त्री० (सि०) बड़ी-बड़ी आंखें।
**डेम्बका**—पु० (कु०) धमाका।
**डेयोड़ी**—स्त्री० (मं०) महल का मुख्य प्रवेश द्वार।
**डेरा**—पु० किराए का मकान।
**डेरा**—पु० संतों का ठहरने का स्थान।
**डेरा**—पु० (सि०) घास का छप्पर; अस्थाई निवास।
**डेरा**—वि० (शि०, सि०, सो०) बायां।
**डेरू**—पु० (कु०) बेगार में भोजन करने वाला व्यक्ति।
**डेलरा**—पु० (कु०) टुकड़ा।
**डेला**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) एक फल विशेष।
**डेला**—पु० आंख का गोलक।
**डेलू**—पु० (कां०) छोटे बच्चे की आंख की पुतली।
**डेलू**—पु० (बि०) अरबी के तने।
**डेलू**—पु० (कां०) कच्ची घुइयां।
**डेल्लू**—पु० (कां०) रस्सी के दोनों सिरों पर बनाई गई गांठें।
**डेशीपडेशी**—पु० (कु०) पड़ोसी।
**डेह**—स्त्री० (कु०) हल जोतते समय हल को रोकता हुआ पत्थर।
**डेहरी**—स्त्री० (कु०) मंदिर।
**डेहुळ**—स्त्री० (कु०) दहलीज़।
**डेहुला**—वि० (चं०) कम गहरा।
**डैंगीदाह**—स्त्री० (मं०) आधे सिर का दर्द।
**डैंठ**—पु० (कु०, बि०) बैलों को हांकने की मोटी छड़ी।
**डैंठ**—पु० बड़ी और मोटी रोटी।
**डैंडल**—पु० Hypericum perforatum.
**डैंडी**—स्त्री० (शि०) हत्थी।
**डैंडी**—स्त्री० (शि०) कर्णाभूषण।
**डैकण**—स्त्री० (कु०) डाइन।
**डैकरा**—पु० (चं०) टुकड़ा।
**डैगड़ा**—पु० (मं०) घास या अनाज का तना।
**डैच**—स्त्री० (शि०) शरण।
**डैडे**—पु० (मं०) काले रंग के जीव विशेष।
**डैण**—स्त्री० डाइन।
**डैबो**—पु० (शि०) ढेर।
**डैमसी**—स्त्री० (शि०) जलती हुई लकड़ी।
**डैह**—स्त्री० (कां०, बि०) हठ।
**डैहजा**—वि० (चं०) लंगड़ा कर चलने वाला।
**डोंका**—स्त्री० (मं०) मछली जाति का पानी में रहने वाला जीव विशेष।
**डोंके**—वि० (शि०) घमंडी।
**डोंगणा**—स० क्रि० (कु०) फटे बरतन का टांका लगाना।

**डोंगणा**—अ० क्रि० (कु०) चुभना।
**डोंगर**—पु० (कु०) पशु।
**डोंगराई**—वि० (शि०) प्रहार करने वाला।
**डोंठा**—पु० (सि०) गेहूं का छोटा गट्ठा।
**डोंड**—पु० (कु०) दंड।
**डोंडी**—स्त्री० ढिंढोरा।
**डोंरा**—पु० (सि०) गेहूं या जौ का पूला।
**डोंरू**—पु० (कु०, सि०) डमरू।
**डो:क**—पु० (सि०) पत्थर।
**डो:णा**—स० क्रि० (सि०, सो०) ढोना।
**डो:रू**—पु० (का०, सो०) लकड़ी की हत्थी वाली बड़ी कलछी।
**डो:ल**—पु० (सि०, शि०) ढोलक।
**डो:ळ**—पु० (शि०, सि०) पत्थर।
**डोआ**—स्त्री० (शि०) एक ही रट।
**डोइका**—पु० (कु०) मछली जाति का एक जीव।
**डोई**—स्त्री० (कु०) लकड़ी का बना हुआ सांचा जिसमें स्त्रियां चलते हुए ऊन कातती हैं।
**डोई**—स्त्री० (कु०, चं०) लकड़ी की कलछी।
**डोई**—स्त्री० (का०, ऊ०, सो०) लकड़ी की हत्थी वाली कलछी।
**डोऊ**—पु० (का०) लकड़ी का चम्मच।
**डोऊकी**—स्त्री० (शि०) कलछी।
**डोए**—स्त्री० (मं०) लकड़ी की कलछी।
**डोक**—स्त्री० (मं०) रुकावट।
**डोक**—स्त्री० (चं०) कच्चे अखरोट का लगा रंग।
**डोका**—पु० (ऊ०, का०, सो०) दवात से लेखनी में ली स्याही की बूंद।
**डोके**—पु० (ऊ०, का०, ह०) भैंस या गाय के दोबारा गाभिन होने की स्थिति में थन से रुक-रुक कर आने वाला दूध।
**डोके**—पु० (सि०) दूध दुहने के बाद थन में बचा दूध।
**डोके**—स्त्री० (शि०) कलछी।
**डोको**—पु० (शि०) पहाड़।
**डोखरा**—पु० (शि०) खेत।
**डोखिरी**—स्त्री० (शि०) छोटा खेत।
**डोखै**—पु० (कु०) हाथ।
**डोगी**—स्त्री० (कु०) कम उम्र की भेड़।
**डोगू**—पु० (कु०) बड़ा मेमना।
**डोटी**—स्त्री० (शि०) छोटा सा खेत।
**डोठा**—पु० (शि०) पत्थर।
**डोठू**—पु० (मं०) बच्चे को नज़र से बचाने के लिए गाल पर लगाया जाने वाला काला टीका।
**डोडण**—स्त्री० रीठे का वृक्ष।
**डोडणी**—स्त्री० (कु०) रीठे की गुठली।
**डोडमाळा**—स्त्री० (कु०) गले में पहना जाने वाला चांदी का आभूषण।
**डोडर**—पु० (कु०, मं०) अंधकारमय गुफानुमा स्थान।
**डोडरू**—पु० (कु०) Machilus spp.
**डोडळ**—पु० (सि०) रोड़ा।
**डोडा**—पु० अफीम का फल।
**डोडा**—पु० (कु०) रीठा।
**डोडा**—पु० (ऊ०, का०) रीठे के बीच का काला गोल बीज।
**डोडी**—स्त्री० कली, पौधे का वह भाग जहां पर बाद में फूल व फल लगते हैं।
**डोडी**—स्त्री० (सि०) लहसुन की गांठ।
**डोडू**—पु० (मं०, कु०) Maliva solundifolia.
**डोढ**—वि० (कु०) अधिक काला।
**डोढर**—वि० (कु०) अंदर से खोखला।
**डोणा**—अ० क्रि० (सि०) जाना।
**डोफली**—स्त्री० (ह०) प्राकृतिक कुकुरमुत्ता की एक किस्म।
**डोब**—पु० (सि०) मूर्च्छा, गश।
**डोब**—स्त्री० (बि०) काले बादल जो बरसने के लिए तैयार हों।
**डोब**—स्त्री० (ऊ०, का०, ह०) पेट की जलन; अग्नि; विरहाग्नि।
**डोबणा**—स० क्रि० डुबाना।
**डोबदेणा**—स० क्रि० (कु०) दूसरी बार रमना।
**डोबन**—स्त्री० (शि०) तरी।
**डोबरा**—पु० (सि०) दूध दुहने का लकड़ी का पात्र।
**डोबरा**—पु० (सि०) छोटे आकार का खेत।
**डोबा**—पु० (सि०) छोटा खेत।
**डोबा**—पु० (शि०) डुबकी।
**डोबा**—पु० (सि०) कलम को दवात में डालकर स्याही लेने की क्रिया।
**डोबाणो**—स० क्रि० (सि०) डुबाना।
**डोबुणा**—अ० क्रि० (शि०) व्यर्थ का खर्च होना।
**डोबोण**—स्त्री० (सि०) दाल-सब्जी।
**डोब्बा**—वि० (का०) गोताखोर।
**डोब्भा**—वि० (चं०) पानी वाला स्थान।
**डोम**—पु० (मं०) डमरू वादक।
**डोर**—स्त्री० पतली रस्सी, धागा, डोरा।
**डोर**—स्त्री० (बि०) तार, टेलीग्राम।
**डोरना**—स० क्रि० (बि०) बहकाना।
**डोरा:**—पु० (सि०) पानी निकालने का हत्थी लगा पात्र।
**डोरा**—पु० (कु०) कमर में बांधी जाने वाली रस्सी जो करीब चालीस फुट लंबी होती है।
**डोरा**—पु० (ऊ०, का०, ह०) किसी को चंगुल में फंसाने का भाव।
**डोरा**—पु० (ऊ०, का०, ह०) आंख की लाल नस।
**डोरा**—पु० (शि०) लोहे की हत्थी वाली छोटी कड़ाही।
**डोरा**—पु० (कु०) स्त्री के सिर का आभूषण।
**डोरा**—पु० (सि०) नाड़ा।
**डोरा**—पु० वर की ओर से वधू को दिया जाने वाला चोटी बांधने का लाल धागा।
**डोराउणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) डराना।
**डोराउणो**—वि० (शि०, सि०) डरावना।
**डोराड़**—वि० (शि०) डरपोक।
**डोरी**—स्त्री० (बि०) बड़ा खेत।
**डोरी**—स्त्री० 'मौली', रंगदार सूत्र का डोरा।

**डोरु**—पु० (कां०, सो०) छोटा खेत।
**डोरु**—पु० (ह०) ऊनी कुर्ता।
**डोल**—पु० (कु०, मं०) पालना, झूला।
**डोल**—अ० (कां०, बि०) चुपचाप।
**डोल**—पु० कुएं से पानी निकालने का लोहे का पात्र, गोल पात्र।
**डोळ**—स्त्री० (कां०, सो०) झुकाव: बेचैनी।
**डोळ**—पु० (शि०) पत्थर।
**डोळ**—पु० (सि०) गेहूं बीजने के बाद वर्षा से खेत की मिट्टी में पड़े दबाव को हलका करने के लिए की गई जोताई।
**डोलडोल**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) धीरे-धीरे।
**डोळणा**—स० क्रि० (कां०) तरल पदार्थ को फेंकना, गिराना।
**डोलणौ**—पु० (कु०) चावल पकाने का बड़ा पात्र।
**डोला**—वि० (ऊ०, कां०) प्रिय।
**डोळा**—पु० पालकी, डोली।
**डोळी**—वि० (चं०) जादू-टोने से ग्रस्त रोगी।
**डोळी**—स्त्री० (बि०) जालीदार अलमारी; डोली।
**डोलू**—पु० (ह०) निम्न स्थानीय जगह।
**डोले**—पु० हिंडोला।
**डोळैओं**—वि० (शि०) पत्थर वाला, पथरीला।
**डोल्लू**—पु० दूध आदि रखने का पात्र।
**डोल्हरू**—पु० (कु०) पूरा खिला हुआ फूल।
**डोवाटा**—पु० (मं०) निम्न कक्ष से ऊपरी कक्ष को जाने का रास्ता।
**डोह**—पु० (कु०) आसरा, आश्रय (गाली देने के अर्थ में)।
**डोहाण**—पु० (कां०, बि०, मं०) ओढ़ने का वस्त्र।
**डोहु**—पु० (मं०) साधारण खेत।
**डोहुण**—पु० (कु०) लंबी बारीक लकड़ी।
**डोहरी**—स्त्री० (मं०) बड़ा खेत।
**डोहरू**—पु० (मं०) छोटा खेत।
**डोहला**—पु० (चं०) बाजू का कलाई से कुहनी तक का हिस्सा।
**डौं**—पु० (ऊ०, कां०) पेट में जलन; हूक, स्मृति की पीड़ा।
**डौंका**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) जलजीव।
**डौंका**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) मूर्ख।
**डौंड**—पु० (चं०) गेंदा प्रजाति का फूल।
**डौंड**—वि० नासमझ, मूर्ख।
**डौंड**—पु० (मं०) बर्फानी कबूतर।
**डौंडा**—वि० (ऊ०, कां०, सो०) मूर्ख; बदचलन; आवारा; नंगधड़ंग।
**डौंडी**—स्त्री० ढिंढोरा।
**डौंस**—वि० (ह०) निकम्मा।
**डौःकी**—स्त्री० (सि०) कलछी।
**डौइण**—स्त्री० (शि०) गुफा।
**डौका**—पु० (शि०) बड़ी कलछी।
**डौगे**—पु० (कु०, शि०) पालतू पशु।
**डौबणा**—अ० क्रि० (सि०) अच्छा लगना।
**डौबरी**—स्त्री० (कु०) छोटी परात।
**डौमरू**—पु० (शि०) डमरू।
**डौमहुण**—स्त्री० (शि०) आग का सेंक।
**डौर**—पु० (कु०, सि०) डर।
**डौरू**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) डमरू।
**डौल**—स्त्री० (सि०) मेंड़।
**डौल**—स्त्री० हालचाल।
**डौलकाच**—पु० (शि०) एक त्यौहार विशेष जिसमें मांस खाया जाता है।
**डौळकी**—स्त्री० (शि०, सि०) दे० डळकी।
**डौळे**—पु० बाजू का ऊपरी भाग।
**डौहरना**—अ० क्रि० (बि०) सुस्ती आना, शरीर में विकार आ जाना।
**ड्योडा**—वि० डेढ़ गुणा।
**ड्योढी**—स्त्री० दहलीज।
**ड्रामची**—वि० नाटक में अभिनय करने वाला।
**ड्वा**—स्त्री० (शि०) एक पौधे पर पड़ने वाली अन्य पौधे की छाया।
**ड्वाणा**—स० क्रि० उड़ाना।
**ड्वार**—पु० (कु०) गुफा।
**ड्वाहदेणा**—स० क्रि० (मं०) किसी वस्तु को तांत्रिक विधि द्वारा सिर पर फेर कर फेंकना।

## ढ

**ढ**—देवनागरी वर्णमाला में टवर्ग का चौथा वर्ण। उच्चारण स्थान मूर्द्धा।
**ढंकार**—वि० अत्यंत ढलान वाला, दुर्गम स्थान।
**ढंखर**—वि० (मं०) दे० ढंकार।
**ढंग**—पु० तरीका, प्रणाली।
**ढंग**—पु० (बि०, कां०, ऊ०) दुहते समय लात मारने वाली गाय की टांग को बांधने की क्रिया।
**ढंगणा**—स० क्रि० (कां०, ऊ०, बि०) भागने वाले पशु की टांग को रस्सी द्वारा दूसरी टांग या गले से बांधना।
**ढंगराई**—पु० (सि०) कसाई।
**ढंगी**—वि० चतुर।
**ढंघबाजा**—पु० (बि०) उलटा-सीधा काम।
**ढंचर**—स्त्री० (चं०) शैतानी, छेड़छाड़।
**ढंठड़ी**—स्त्री० (शि०) सुंदर स्त्री।
**ढंडो**—पु० (सि०) बिलाव।
**ढंढस**—पु० (सो०) झूठा दिखावा।
**ढंढा**—पु० (चं०) छाती।
**ढंढू**—पु० (चं०) अन्न रखने हेतु बनाया गया बांस का बड़ा पात्र।
**ढउआ**—पु० पैसा।
**ढऊओ**—वि० (शि०) ठगने वाला।
**ढक**—पु० (बि०) वृक्ष का तना।
**ढकटा**—पु० (सि०) हिचकी।
**ढकणा**—पु० (चं०) सोने हेतु ओढ़ा जाने वाला कपड़ा या

चादर आदि।
**ढकणा**—पु० (कु०) चूल्हे में जलाने की मोटी लकड़ी।
**ढकणा**—पु० ढक्कन।
**ढकणा**—स० क्रि० (सि०, चं०) ढांपना।
**ढकवारणा**—स० क्रि० (सि०) किसी के कार्य से द्वेष करना।
**ढकाई**—स्त्री० (कां०, ऊ०, चं०) ढांपने की मजदूरी।
**ढकाण**—पु० (कां०) दे० ढकाई।
**ढकाणा**—स० क्रि० (कु०) दूर फेंकना।
**ढकाणू**—पु० (कां०) रोटियां ढांपने का ऊनी या सूती कपड़ा।
**ढकु**—स्त्री० (शि०) कलछी।
**ढकैं**—अ० (कां०, ऊ०, बि०) प्रारंभ में, पास, समीप।
**ढकोणा**—स० क्रि० (कां०, ऊ०, बि०) ढका जाना।
**ढकोसळा**—पु० आडंबर, पाखंड।
**ढकोहरा**—वि० (चं०) ढका हुआ।
**ढक्कण**—वि० (कां०, ऊ०) महामूर्ख।
**ढक्की**—स्त्री० (चं०) चढ़ाई।
**ढखणा**—स० क्रि० (सि०) ओढ़ना।
**ढखे**—पु० (ह०) एक पौधा विशेष।
**ढग**—अ० (चं०) पास।
**ढग**—पु० (कु०, मं०) पर्वत।
**ढगळा**—वि० (कां०, चं०) ढलानदार, ढीला-ढाला।
**ढगेर**—पु० (ह०) पशु।
**ढगोसला**—पु० (कु०) दे० ढकोसळा।
**ढग्गा**—पु० (ऊ०) पशु।
**ढग्गा**—पु० (चं०) दे० ढकोसळा।
**ढच्चर**—पु० (मं०) पाखंड।
**ढच्चर**—स्त्री० (चं०, ह०) समस्या, अड़चन।
**ढटरयाणा**—स० क्रि० (मं०) धान में से घास काटना।
**ढटिगढ़**—वि० (शि०) बड़े डीलडौल वाला।
**ढट्ठा**—वि० (सो०) लंपट।
**ढट्ठा**—वि० (शि०) गरीब, लाचार।
**ढठणा**—स० क्रि० (मं०) रुकावट डालना।
**ढठणा**—अ० क्रि० (सि०, सो०) असमर्थ होना, बूढ़ा होना।
**ढठू**—पु० (कां०) सिर पर बांधने का कपड़ा।
**ढड**—स्त्री० (चं०) किसी की मृत्यु पर बजाया जाने वाला ताल विशेष।
**ढड**—पु० (बि०) बड़ा मेंढक।
**ढड**—स्त्री० (कां०, ऊ०) सर्दी से हुई सिकुड़न।
**ढड़**—स्त्री० (चं०) दे० ढांक।
**ढडन**—स्त्री० (मं०) पहाड़ी।
**ढडू**—पु० (मं०) मेंढक।
**ढडोडो**—स्त्री० (शि०) रीठे की गुठली।
**ढढभंज**—पु० व्यर्थ का काम।
**ढढा**—पु० (बि०) बरसात के दिनों में निकलने वाला बड़ा मेंढक।
**ढण**—स्त्री० (शि०) गुफा।
**ढणढणाट**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) ज़ोर की अवाज़। लड़ाई।
**ढणण**—स्त्री० (सि०) गूंजती हुई आवाज।
**ढणमणाट**—स्त्री० (कु०) किसी बरतन आदि के टकराने या गिरने से होने वाली आवाज़।
**ढणाइणा**—स० क्रि० (कु०) बच्चे या असमर्थ व्यक्ति को हाथ पकड़ कर चलाया जाना।
**ढणाउ**—वि० (शि०, सि०) मूर्ख।
**ढणाऊ**—पु० (सि०) जंगली मधुमक्खी जो पेड़ों में छत्ता बनाती है।
**ढणाका**—पु० (सि०, कु०) किसी चीज़ को ज़ोर से बजाने पर होने वाली आवाज़।
**ढणाख**—पु० (चं०) बरसात में होने वाली एक मक्खी जो पशुओं को काटती है।
**ढणाखा**—वि० (सि०) एकांत में रहने वाला।
**ढणाणा**—स० क्रि० (कु०) किसी को पैदल चलाना।
**ढणोखा**—पु० (कु०) दे० ढणाख।
**ढन**—स्त्री० (मं०) ढलान।
**ढन**—स्त्री० (चं०) उपहास की बातें।
**ढना**—स्त्री० (शि०) हड्डी।
**ढनियाणा**—स० क्रि० (कु०) पैदल चलाना।
**ढप**—स्त्री० (कां०, ऊ०) ढांपने की क्रिया। किसी वस्तु के गिरने से होने वाली आवाज़।
**ढप**—स्त्री० (चं०) पक्षी को धोखे से मार डालने के लिए बनाया गया पिंजरा।
**ढपड़ा**—पु० (सि०) बैंड, अंग्रेजी बाजा।
**ढपण**—पु० (चं०) अंदर बंद करने की क्रिया।
**ढपणयाठ**—पु० (चं०) बंद करने का उपकरण, तख्ता।
**ढपणा**—स० क्रि० (चं०) बांधना।
**ढपणा**—स० क्रि० (चं०) बंद करना, ढांपना।
**ढपीणा**—अ० क्रि० (चं०) बंद हो जाना।
**ढपैल**—पु० (कां०) पीठ के पीछे रखा हुआ सहारा।
**ढपैहल**—पु० (चं०) दीवार के सहारे पीठ लगाकर बैठने का भाव।
**ढप्पण**—पु० (बि०) सुनाई न देने का भाव।
**टफढफा**—पु० (मं०) डफली।
**ढफाली**—पु० (सि०) डफली बजाने वाला व्यक्ति।
**ढफेला**—पु० (सि०) पीठ का सहारा, ढासना।
**ढब**—पु० स्वभाव, तरीका, ढंग।
**ढब**—पु० (सि०) सजावट।
**ढबणा**—अ० क्रि० (सि०) अनुकूल होना, दिल लगाना।
**ढबणा**—स० क्रि० (बि०, ह०) मिलाना।
**ढबुआ**—पु० (कु०) पैसा।
**ढबेरना**—अ० क्रि० (कां०) मिलना।
**ढबेरना**—स० क्रि० (चं०) आदत डालना।
**ढबोणा**—अ० क्रि० (ह०) साथ मिल जाना।
**ढबोणा**—अ० क्रि० (बि०) गाय-भैंस आदि का गाभिन होना।
**ढबोसणा**—अ० क्रि० (बि०) मिलना।
**ढबोसा**—पु० गलती, धोखा।
**ढब्बटोण**—स्त्री० (कां०) असमंजस में पड़ने का भाव।
**ढब्बणा**—पु० (बि०) अधिक गरम पानी में मिलाया जाने वाला

ठंडा पानी।
**ढब्बलकांजी**—स्त्री० (बि०) बेढंगी मिलावट।
**ढब्बा**—वि० (चं०) आदी, अभ्यस्त।
**ढब्बे**—पु० (मं०) पैसे।
**ढब्बे-ढब्बे**—अ० (कु०, सो०) धीरे-धीरे, तरीके के साथ।
**ढब्मण**—स्त्री० (कां०) मिलावट।
**ढमलैंहज**—वि० (ऊ०, कां०) सीधी-सादी (औरत)।
**ढभोला**—पु० (मं०) जल संग्रह के लिए बनाया गया गड्ढा।
**ढमकदेहरिया**—पु० (मं०) एक दूसरे को छूने का खेल।
**ढमकाणा**—अ० अमुक, फलां, इत्यादि।
**ढमढाण**—वि० (कां०, चं०) खाली।
**ढमढाणा**—पु० (चं०, बि०) विशाल गृह।
**ढमराळा**—पु० पटाखा, धमाका।
**ढमरेळना**—स० क्रि० (कु०) बुरी तरह पीटना, डंडों से पीटना।
**ढमाका**—पु० ढोल की ध्वनि, बादलों की गर्जन, धमाका।
**ढमाल**—पु० (सि०, सो०) घमंड, अभिमान।
**ढमाल—पु० (सि०) मृत्यु पर बजाया जाने वाला लोक ताल जिसे** कई ढोलों के पूड़े पर डंके की चोट से बजाया जाता है।
**ढरारा**—वि० (शि०) तिरछा।
**ढरोणा**—अ० क्रि० (बि०) घूरना।
**ढलकणा**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०) कमज़ोर होना।
**ढलकणा**—वि० (सो०) हिलने वाला (पत्थर आदि)।
**ढळकणा**—अ० क्रि० (सि०) हिलना।
**ढलकदा**—वि० (कु०, कां०, चं०) हिलता हुआ, हिलने वाला।
**ढलकी**—स्त्री० (कु०) नमस्कार।
**ढलणा**—अ० क्रि० गिरना, पिघलना। वृद्ध होना।
**ढलमल**—स्त्री० (शि०) साफ इंकार न करने का भाव।
**ढळां**—स्त्री० (ह०) गोबर उठाने हेतु प्रयुक्त बांस की टोकरियां।
**ढळा**—पु० (चं०) एक साथ लगते खेत, वह पहाड़ी भूमि जहां अनेक परिवारों के खेत एक साथ लगे होते हैं।
**ढलाइणा**—स० क्रि० (कु०) गिराया जाना।
**ढलाका**—पु० जोर की आवाज़, गप्प।
**ढलाणा**—स० क्रि० (कु०) नीचे गिराना।
**ढलाणा—स० क्रि० पिघलाना।**
**ढली**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) हल चलाते समय दो सीता के बीच में छूटा बिना जुता स्थान।
**ढली**—स्त्री० (ह०) विस्तृत खेत।
**ढलुआं**—वि० ढलानदार।
**ढलेरना**—स० क्रि० (कु०) ढीला करना, कसी हुई वस्तु (जैसे ढोल की रस्सियां) को ढीला करना।
**ढलेल**—स्त्री० (बि०) विलंब।
**ढलेली**—स्त्री० (बि०) अपराहन।
**ढलोकरा**—पु० (शि०) देवता को चढ़ाई गई भेंट।
**ढवाड़**—पु० (मं०) लड़की का अपहरण।
**ढसका**—पु० (कु०) धक्का।
**ढसकाइणा**—अ० क्रि० (कु०) मुक्के से मारपीट की जानी।
**ढसकाणा**—स० क्रि० मारना, पीटना, मुक्कों से मारना, धक्का देकर गिराना।
**ढसकैउणा**—स० क्रि० (सो०) मारना, पीटना।
**ढसक्याहणा**—स० क्रि० (मं०) निकालना।
**ढसराळा**—पु० (बि०, कु०) प्रहार।
**ढसराळा**—पु० (बि०, सि०, सो०) अनहोनी बात, गप्प।
**ढसाका**—पु० (कां०) मुक्का, चोट, मुक्के का प्रहार।
**ढसाढसी**—स्त्री० (कु०) मारपीट।
**ढस्सर**—वि० (चं०) ऊंचा-नीचा स्थान।
**ढस्सर—पु० (चं०) जादू-टोना।**
**ढस्सरना**—अ० क्रि० (सो०) बैठे रहना, सुस्त रहना।
**ढस्सा—पु० धक्का, चपत, थप्पड़।**
**ढहल्ली**—स्त्री० (ह०) हल जोतते समय दो सीता के बीच में खाली रह जाने वाली छोटी सी जगह।
**ढां**—स्त्री० (ऊ०, कां०) ज़ोर की चीख।
**ढांक**—स्त्री० दुर्गम पहाड़।
**ढांकिणा**—स० क्रि० (शि०) बिस्तर में अपने आप को ढक लेना जिससे पसीना आ जाए।
**ढांखरी**—पु० (शि०) आलू की एक किस्म।
**ढांग**—पु० (मं०) बड़ा डंडा।
**ढांग**—स्त्री० (सि०, मं०) एक जंगली मक्खी जो पशुओं को काटती है।
**ढांग**—स्त्री० (सि०) **बोरियों**, लकड़ी आदि का ढेर।
**ढांगर**—स्त्री० (मं०) एक दल विशेष।
**ढांगू**—पु० रस्सियों में बल चढ़ाने का एक उपकरण।
**ढांगू**—पु० (कु०, बि०) गुलेल में 'वाई' के आकार की लगी लकड़ी की हत्थी।
**ढांगू**—वि० (कां०, चं०) विकट स्थान पर चलने वाला व्यक्ति या पशु।
**ढांगो**—पु० (मं०) चौड़ा फरसा।
**ढांच**—पु० (चं०) बड़ा ढांचा।
**ढांज**—स्त्री० (सि०, शि०) बीमारी, खांसी-छींके जुकाम।
**ढांजी**—स्त्री० (शि०) ज़ोर की आवाज़।
**ढांड**—पु० (सि०) धान के खेत में उगने वाला धान के पौधे की तरह का एक घास।
**ढांड**—पु० (कु०) पेट।
**ढांडी**—वि० (शि०) नीच, कुकर्मी **(स्त्री)**।
**ढांडू**—पु० (शि०) पर्वत।
**ढांढसे**—पु० (सि०) ढाढ़स, धीरज, सांत्वना।
**ढांपिणा**—अ० क्रि० (कु०) ठगा जाना।
**ढांफे**—स्त्री० (शि०) पटरा।
**ढाइणा**—स० क्रि० (कु०) मापा जाना।
**ढाइया**—पु० (सि०) अढ़ाई दिन बाद चढ़ने वाला बुखार।
**ढाइया**—पु० (सि०) मृत्यु-ताल।
**ढाई**—स्त्री० (शि०) दे० ढासण।
**ढाई**—वि० ढाई, 'दो और आधा।
**ढाई**—स्त्री० (शि०, सि०) सहारा।
**ढाई**—स्त्री० (सो०) खेल में निशाना लगाने के लिए फैंके गए

अखरोट आदि।

**ढाईणो**—अ० क्रि० (सि०) लेट जाना।

**ढाईया**—पु० (सि०) सांप।

**ढाईसर**—वि० ढाई सेर।

**ढाऊका**—पु० (सि०) छलांग।

**ढाऊरा**—पु० (मं०) छाया।

**ढाए**—स्त्री० (शि०) गड्ढा।

**ढाए**—स्त्री० (सि०) दे० ढांक।

**ढाक**—पु० (कु०) कमर, कमर में बांधने का लंबा कपड़ा।

**ढाक**—पु० एक पौधा विशेष जिसके पत्ते, गोंद व छिलकों का दवाई के रूप में प्रयोग होता है।

**ढाक**—पु० (सो०) ऊंचाई पर स्थित बड़ी चट्टान।

**ढाक**—स्त्री० (ह०) लात मार कर गिराने की क्रिया।

**ढाक**—स्त्री० (कां०, ऊ०) कंधे से कंधा भिड़ा कर दिया धक्का।

**ढाक**—पु० (ह०) खट्टी चीज़ रखने का बर्तन।

**ढाक**—स्त्री० (शि०) धाक, रोब।

**ढाकटी**—स्त्री० (शि०) 'ढाकि' की लड़की।

**ढाकणा**—स्त्री० (चं०) नर्तकी।

**ढाकणा**—पु० (सि०) ढक्कन।

**ढाकणा**—स० क्रि० (कु०, मं०) पकड़ना।

**ढाकणो**—स० क्रि० (शि०) बंद करके रखना।

**ढाकफाही**—स्त्री० (मं०) उपाय।

**ढाकलंबू**—पु० (शि०) 'ढांक' में उगने वाला चौड़े पत्ते वाला घास जिससे पत्तल बनती है।

**ढाका**—पु० (शि०) धक्का।

**ढाकि**—पु० (शि०, सि०) वाद्ययंत्र बजाने वाला।

**ढाकिणा**—स० क्रि० (कु०) पकड़ा जाना।

**ढाकिन**—स्त्री० (सि०) 'ढाकि' की स्त्री।

**ढाकुली**—स्त्री० (कु०) डमरू की तरह का एक वाद्ययंत्र।

**ढाकू**—पु० (कु०, मं०) शहतीर पर डाली जाने वाली कड़ियां।

**ढाकैथर**—वि० (चं०) कमर तक लंबा (घास या फसल)।

**ढाखरा**—पु० (मं०) विशेष प्रकार का फरसा।

**ढाखुणा**—स० क्रि० (कु०) पकड़ना।

**ढाग**—स्त्री० (मं०) जंगली मक्खी।

**ढागलू**—पु० (कु०) हाथ में पहना जाने वाला कड़ा।

**ढागुआ**—पु० (कु०) अर्गला।

**ढाठकू**—पु० (सि०) सिर में बांधा जाने वाला रुमाल।

**ढाठू**—पु० (शि०, सि०) दे० ढाठकू।

**ढाठो**—पु० (सि०) चोटी।

**ढाड**—स्त्री० (कु०) पेड़ के खोखले तने का बनाया गया पात्र जिसे एक ओर तख्ता लगा कर अनाज रखने के काम में लाया जाता है।

**ढाड**—पु० (मं०) बड़ा ढोल।

**ढाड**—स्त्री० (मं०) ढोने की मज़दूरी।

**ढाड़**—पु० (शि०) सामर्थ्य।

**ढाडका**—पु० (सि०) छोटा गड्ढा।

**ढाडना**—स० क्रि० (मं०) अन्न गिराना।

**ढाडौ**—स्त्री० (कु०) छत के साथ की मंज़िल।

**ढाळड़ा**—पु० (मं०) तना।

**ढाढी**—पु० (चं०) मृत्यु पर शोक ताल बजाने वाला व्यक्ति।

**ढाण**—वि० (सि०) बड़े पेट वाला।

**ढाणा**—स० क्रि० गिराना, पराजित करना, पीठ लगाना।

**ढाणा**—पु० (सो०) व्यर्थ का बोझ।

**ढाणा**—स० क्रि० (ऊ०, ह०) वापिस करना, हटाना।

**ढाणी**—स्त्री० (चं०) अधिक भोजन करने की प्रवृत्ति।

**ढाण्डी**—वि० (कु०) पेटू।

**ढान**—पु० (मं०) पेट।

**ढान्नी**—स्त्री० (चं०) खेत को समतल करने के लिए बनाया गया लकड़ी का एक उपकरण।

**ढाफ**—स्त्री० (कु०) एक चौड़ा पत्थर जिसे लकड़ी और बारीक रस्सी के शिकंजे पर रख कर पक्षियों को मारने के लिए झाड़ियों के बीच खुले स्थान पर विशेष ढंग से रखा जाता है।

**ढाब**—पु० (कु०, सि०) गरम पानी में डाला ठंडा पानी।

**ढाब**—स्त्री० (सि०) तालाब।

**ढाब**—पु० (सि०) बहुत बड़ा खेत।

**ढाबणा**—स० क्रि० (कु०) मथने के लिए दही को 'रागड़ु' से 'चौळटी' में उलटाना।

**ढाबणा**—स० क्रि० (मं०) दूध को जमाने के लिए बर्तन में रखना।

**ढाबणा**—स० क्रि० (कु०) अधिक गरम पानी को ठंडा करने के लिए उसमें ठंडा पानी मिलाना।

**ढाबणो**—स० क्रि० (शि०) दूध आदि जमाना।

**ढाबले**—स्त्री० (शि०, सि०) मोटा ऊनी कंबल।

**ढाबाठोआ**—वि० (कु०) एकत्रित वस्तु, जमघट।

**ढाबिणा**—अ० क्रि० (कु०) एकत्रित होना।

**ढामणा**—स० क्रि० (कु०) ठूंस-ठूंस कर खाना।

**ढारा**—पु० कच्चा घर, अस्थाई संरचना।

**ढाल**—स्त्री० ढाल, तलवार आदि के प्रहार को रोकने का अस्त्र।

**ढाल**—स्त्री० पानी की ढलान।

**ढाल**—स्त्री० (कां०) सामूहिक कार्य के लिए दिया गया दान।

**ढाल**—स्त्री० नमन, नमस्कार, भेंट।

**ढाळ**—स्त्री० ढलान।

**ढाळ**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) किसी धातु की ढलाई करने के बाद कोई रूप देने की क्रिया।

**ढाळ**—स्त्री० (कां०, ऊ०) दस्त, पेचिश।

**ढाळ**—स्त्री० गर्भपात।

**ढाल-ढलोकरा**—पु० (सि०) देवता को प्रणाम करने के साथ दी गई भेंट।

**ढालणा**—स० क्रि० (सि०) गिराना।

**ढाळणा**—स० क्रि० पिघलाना, किसी भी धातु को आभूषण या पात्र में बदलना।

**ढालणो**—स० क्रि० (शि०) दो भाग करना।

**ढालणो**—स० क्रि० (शि०) गिराना।

**ढाळना**—स० क्रि० मापना, नापना।

**ढालना**—स० क्रि० (कां०) अभिषेक करना।
**ढाळा**—पु० (कु०) नाप, बचत।
**ढाळिना**—स० क्रि० (कु०) नापा जाना।
**ढालुआं**—वि० (कां०, ऊ०) ढलानदार।
**ढाळुआ**—वि० धातु को पिघलाकर बनाया हुआ (औज़ार आदि)।
**ढाळू**—पु० (चं०, कां०) नितंब।
**ढालो**—स्त्री० (शि०) नमस्कार।
**ढाश**—पु० (कु०) अनुभव।
**ढास**—स्त्री० (चं०) हौसला।
**ढासण**—पु० पीठ को सहारा देने का साधन।
**ढासणा**—पु० दे० ढासण।
**ढाहण***—पु० (कु०) पेट।
**ढाहणा**—स० क्रि० गिराना, पराजित करना।
**ढाहना**—स० क्रि० (शि०) प्रस्तुत करना।
**ढाहरा**—पु० (चं०) रास्ते का ऊंचा भाग।
**ढिंग**—स्त्री० (शि०) धान के खेतों में पानी रोकने के लिए लगाई गई मिट्टी, मेंड़।
**ढिंगढच्चर**—पु० (ह०, कां०, ऊ०) औपचारिकता, व्यर्थ का कार्य विस्तार।
**ढिंगर**—वि० (चं०) बहुत काला।
**ढिंगरा**—पु० (कां०) अरहर का दाना या पौधा।
**ढिंगळिना**—अ० क्रि० (कु०) झुकना, गिरना, लड़खड़ाना, गोल या बिना आधार अथवा बिना पैंदे की वस्तु का इधर-उधर हिलना।
**ढिंगुली**—स्त्री० (सो०, सि०) टांग पर टांग रख कर बैठने की स्थिति।
**ढिंगुली**—स्त्री० (कु०) छोटे पत्थरों का ढेर।
**ढिंघ**—वि० (चं०) बड़ा (व्यक्ति)।
**ढिंढणा**—अ० क्रि० (चं०) लटकना।
**ढिंढला**—पु० (सो०) घटिया साधु, पाखंडी।
**ढिंढी**—स्त्री० (चं०) गला।
**ढिंढीणा**—अ० क्रि० (चं०) लटक जाना।
**ढिंब**—स्त्री० (कां०) पनीरी लगाने की क्रिया।
**ढिंबला**—वि० (कु०) बेडौल, भद्दा, मोटा, गोल-मटोल, कुरूप, मोटे-शरीर वाला।
**ढिंस**—स्त्री० (बि०, चं०) मोटी रोटी।
**ढिकरी**—स्त्री० (शि०) आग की लपट।
**ढिंकरी**—स्त्री० (बि०) शरद ऋतु में जंगलों में पाया जाने वाला काले रंग का कुकुरमुत्ता।
**ढिकलू**—पु० (कां०, चं०) काले मुंह वाला छोटा सा जंतु जो नेवले की तरह होता है।
**ढिकी**—स्त्री० (सि०) मृत्यु से पहले आने वाली हिचकी।
**ढिकेली**—वि० (शि०) विकट (रास्ता)।
**ढिक्की**—स्त्री० हिचकी।
**ढिग**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) ऊंची पहाड़ी।
**ढिगाढाणी**—स्त्री० (ह०) अनहोनी बातें।
**ढिगाध्याड़ा**—पु० (बि०) थोड़े दिनों का जीवन।
**ढिग्जी**—स्त्री० (सो०) अंगुलियों का जोड़।
**ढिच**—वि० (कु०) हठी, मूर्ख।
**ढिच्चकणा**—अ० क्रि० (ह०) व्यर्थ जगह पर फिरना, व्यर्थ घूमना।
**ढिड**—पु० पेट।
**ढिणाकी**—स्त्री० (कु०) दीमक।
**ढिणाकी**—स्त्री० (सि०) अधिक ठंड के कारण शरीर में होने वाली सिहरन।
**ढिफ**—स्त्री० (कां०) किसी वस्तु के गिरने की आवाज़।
**ढिबरी**—स्त्री० (शि०) दीपक।
**ढिबरी**—स्त्री० (शि०) लोहे का छिद्रयुक्त ढकना जिसे पेच पर कसा जाता है।
**ढिबरी**—स्त्री० (कु०) ढक्कन।
**ढिम**—पु० (बि०) बदहज़मी के कारण पशुओं के पेट में पड़ने वाली गांठ।
**ढिमकलू**—वि० (चं०) गोल-मटोल।
**ढिमरी**—स्त्री० पेच के साथ प्रयुक्त होने वाला छल्ला।
**ढिमरी**—स्त्री० (चं०) गले का उभरा भाग।
**ढिमळा**—पु० (सो०) चोट लगने पर होने वाली सूजन।
**ढिम्मा**—वि० (सो०) सुस्त, धीमा।
**ढिम्मा**—पु० (चं०) जमीन का ऊंचा भाग, उभरा स्थान।
**ढिलकणा**—अ० क्रि० खुला होना, ढीला होना।
**ढिलकणो**—वि० (सि०) कम कसा हुआ, हिलने वाला।
**ढिलकदा**—वि० हिलता हुआ।
**ढिलकाउणो**—स० क्रि० (सि०) हिलाना।
**ढिलड़ा**—वि० ढीला, अस्वस्थ।
**ढिलाउणो**—स० क्रि० (शि०) ढीला करना।
**ढिलिणा**—अ० क्रि० (कु०) ढीला होना, घराट के बहुत दिनों तक चलते रहने पर 'रोढ़े' (रोढ़ा) के गिर्द खाली जगह बन जाना।
**ढिल्लड़**—वि० (सि०) दे० ढिसू।
**ढिल्लमढिल्ला**—वि० सुस्त, कमज़ोर, अस्वस्थ।
**ढिल्ला**—वि० खुला।
**ढिस**—वि० मूर्ख, सीधा-सादा।
**ढिसणा**—स० क्रि० मारना, रगड़ना, पीटना।
**ढिसाढासी**—स्त्री० (कु०) मारपीट।
**ढिसिणा**—अ० क्रि० (कु०) पिटाई होना।
**ढिसू**—वि० (शि०) आलसी, सुस्त।
**ढिहखर**—वि० (कां०, ऊ०, ह०) मोटा, मूर्ख।
**ढिहणा**—वि० (ऊ०, कां०) समाप्त होने वाला अथवा डंवा-डोल।
**ढींग**—वि० लंबा।
**ढींग**—पु० (कां०, ऊ०) काले रंग और सफेद सिर वाला सारस जैसा पक्षी।
**ढींग**—पु० (कु०) सेब आदि के पेड़ में सहारे के लिए लगाया जाने वाला डंडा।
**ढींग**—पु० (कु०) बड़ा डंडा, उत्तोलक।
**ढींगर**—स्त्री० (ऊ०, ह०) अरहर की दाल, पौधा।
**ढींगळिना**—अ० क्रि० (कु०) हिलना।

**ढींडा**—पु० (सि०) गोला।

**ढींबी**—स्त्री० (कां०) धान मापने का पात्र।

**ढींढी**—वि० (बि०) मोटा आदमी।

**ढीकसै**—पु० (शि०) पुराने कपड़े।

**ढीखर**—वि० (ऊ०, ह०, कां०) निठल्ला, बेकार, सुस्त।

**ढीगू**—पु० (मं०) बंदर।

**ढीठ**—वि० निकम्मा, संकोच रहित, बेशर्म।

**ढीठु**—पु० (चं०) दाने निकालने के बाद मक्की के भुट्टे का अवशेष, गुल्ली।

**ढीपणा**—स० क्रि० (कु०) दबाना।

**ढीपी**—स्त्री० (कु०) बिना जंगले का कम चौड़ा पुल।

**ढीम**—पु० (मं०) स्रोत से निकलने वाले पानी के लिए बनाया गया कच्चा गड्ढा।

**ढीम**—पु० मिट्टी का बड़ा ढेला।

**ढीम**—पु० (सि०) ढेर।

**ढीमकुढामकु**—वि० (कु०) उबड़-खाबड़।

**ढील**—स्त्री० छूट।

**ढीला**—वि० (कु०) सुस्त, ढीला।

**ढीलाढौंसी**—वि० (कु०) ढीला।

**ढीलिणा**—अ० क्रि० (कु०) ढीला होना।

**ढीस**—पु० (चं०) बड़ा डंडा।

**ढीसैर**—स्त्री० (चं०) डंडे की मार।

**ढुंखर**—पु० (कु०) दुर्गम पहाड़।

**ढुंगर**—पु० (कां०) गेहूं की बाली।

**ढुंढ**—वि० (शि०) ठग, चोर-उचक्का।

**ढुंढू**—वि० (मं०) पहले से जानने वाला आदमी।

**ढुंबणा**—स० क्रि० (बि०, चं०) किसी भी प्रकार की पौध को भूमि में लगा देना।

**ढुंकणा**—स० क्रि० (कां०) खोंसना, फंसाना।

**ढुंबा**—पु० (बि०, चं०) सिलाई का टांका।

**ढुआई**—स्त्री० ढोने की क्रिया, ढोने का पारिश्रमिक।

**ढुआणा**—स० क्रि० (बि०, चं०) ढुलवाना, ओढ़ाना।

**ढुआन**—पु० (कु०) ढो कर ले जाने का भाव, ढोने की क्रिया।

**ढुआनी**—पु० (कु०) लकड़ी या किसी भारी वस्तु को ढोने वाला व्यक्ति।

**ढुकणा**—स० क्रि० (चं०, बि०) दरवाज़ा बंद करना।

**ढुकणा**—अ० क्रि० (बि०, चं०) पहुंचना, नज़दीक आना।

**ढुकणा**—अ० क्रि० (कु०) आरंभ करना, लगना, संलग्न होना, जुट जाना।

**ढुकणा**—अ० क्रि० (चं०) सिकुड़ना, शर्माना।

**ढुक्णा**—अ० क्रि० (सि०) नज़दीक लगना।

**ढुक्रू**—वि० (शि०) आवारा।

**ढुच**—स्त्री० (कां०) मनमानी, बेतुकी बात।

**ढुठ**—पु० (चं०) एक प्रकार की जंगली जड़ी।

**ढुणाकी**—स्त्री० (मं०) दीमक।

**ढुणाकू**—पु० (बि०) नींद की झपकी।

**ढुणना**—अ० क्रि० (कु०) बोलना, बात करना।

**ढुपणा**—स० क्रि० (बि०) बंद करना। अ० क्रि० छिपना।

**ढुप्पू**—पु० (कां०) दीवार में बनी छोटी अलमारी।

**ढुबणा**—स० क्रि० (कां०) दबाना।

**ढुमणा**—स० क्रि० (बि०, चं०) वस्त्र आदि को ऊपर टांगना।

**ढुमणा**—स० क्रि० (कु०) गाड़ना, दबाना, घुसेड़ना।

**ढुमसू**—पु० (चं०) धीरे से लगाया गया धक्का।

**ढुलणा**—अ० क्रि० (शि०) फिसलना।

**ढुवाणा**—स० क्रि० (सि०) ढुलवाना।

**ढुसकदी**—वि० (कु०) मरी हुई।

**ढुस्सू**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) हलका धक्का, बछड़े द्वारा दूध पीते हुए मुंह मारने की क्रिया।

**ढूंढ**—स्त्री० खोज, खबर।

**ढूंढ**—पु० (शि०, सो०) अरवी की गोल किस्म।

**ढूंढ**—स्त्री० (कु०, मं०) पूछताछ, तांत्रिक प्रश्नावली।

**ढू**—स्त्री० (शि०) शक्ति, योग्यता।

**ढूआ**—पु० नितंब।

**ढूठिया**—पु० (ह०) सब्जी रखने का बर्तन।

**ढूढकू**—पु० (कु०) अनाज रखने का पात्र।

**ढूडो**—वि० (मं०) तांत्रिक, तंत्र विद्या में कुशल।

**ढूणमढूणा**—वि० (कां०) सुस्त, उदास, किसी की याद में खोया हुआ।

**ढूणशूण**—स्त्री० (कु०) बोल-चाल, बातचीत।

**ढूणा**—स० क्रि० (चं०) ढुलाई करना।

**ढूणा**—अ० क्रि० (शि०) भेड़-बकरियों को छोड़ अन्य पशुओं का मरना।

**ढूणो**—स० क्रि० (शि०) ढोना।

**ढूबला**—पु० (सि०) टेढ़ा-मेढ़ा पत्थर।

**ढूमणा**—स० क्रि० (कु०) जबरदस्ती डालना।

**ढूमाका**—पु० (शि०) ढोलक की ध्वनि।

**ढूमिणा**—स० क्रि० (कु०) एक जगह भीड़ कराना, अच्छी तरह दबाया जाना।

**ढूरी**—स्त्री० (सि०) ठुड्डी।

**ढूरू**—पु० (शि०) कलह।

**ढूस**—वि० (शि०, सो०) मोटा-तगड़ा। निकम्मा।

**ढेंई**—अ० (कु०) बराबर, सदृश।

**ढेंई**—पु० (कु०) ढंग।

**ढेंगचा**—वि० (मं०) चाल में फर्क वाला।

**ढेक**—पु० (मं०, कु०) खेत के ऊपर का वह भाग जहां से दूसरे खेत के लिए मेंड़ शुरु होती है।

**ढेकनबीस**—वि० (कु०) ढीला-ढाला, सुस्त, निकम्मा।

**ढेका**—वि० मूर्ख, निकम्मा।

**ढेखला**—पु० (कु०) टुकड़ा।

**ढेचा**—पु० (कु०) धक्का, काम करते हुए व्यक्ति को किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा दिया गया धक्का।

**ढेटू**—पु० (कु०) स्त्रियों के कान का जेवर।

**ढेटू**—वि० (कां०) कमज़ोर।

**ढेणमणाट**—स्त्री० (कु०) दे० ढणमणाट।

**ढेणा**—स० क्रि० (कु०) किसी को काम करने के लिए बोलना, आदेश देना।

**ढेणाखा**—पु० (सि०) नर मधुमक्खी।
**ढेणीगिजी**—स्त्री० (कु०) ढोल आदि बाजे की आवाज़।
**ढेपणा**—स० क्रि० (कु०) जानवर आदि को इधर-उधर से रोक कर इकट्ठा करना।
**ढेपिणा**—स० क्रि० (कु०) इधर-उधर से रोक कर इकट्ठा किया जाना।
**ढेफ**—पु० (मं०) निचला हिस्सा।
**ढेफला**—वि० (सि०, कां०, सो०) ढलानदार, वक्र, टेढ़ा-मेढ़ा।
**ढेफी**—वि० (मं०) छोटे कद की।
**ढेबरा**—वि० (सि०) टेढ़ा, बदसूरत।
**ढेमणा**—स० क्रि० (कु०) चोट करना, पिटाई करना, मारना।
**ढेमाढमी**—स्त्री० (कु०) ढमढम की ध्वनि।
**ढेमिणा**—अ० क्रि० (कु०) मार-पिटाई की जानी, आपस में लड़ाई करना।
**ढेया**—पु० (शि०) ढाई किलो तोल का बट्टा।
**ढेर**—पु० (कां०, ऊ०) टेढ़ापन।
**ढेरनी**—स्त्री० (मं०) 'लोहड़ी' के उपलक्ष्य में लड़कों द्वारा गाया जाने वाला गीत।
**ढेरा**—वि० (मं०, बि०, चं०) टेढ़ा।
**ढेरू**—पु० छोटी सी ढेरी।
**ढेरू**—वि० टेढ़े मुंह वाला।
**ढेरे**—वि० (सि०) टेढ़े-मेढ़े।
**ढेल**—पु० (कु०, सि०, शि०) मिट्टी का ढेला।
**ढेलकी**—स्त्री० (सि०, शि०) थोड़ा सा भाग, छोटी डली।
**ढेलकू**—पु० दे० ढेलकी।
**ढेलखे**—स्त्री० (शि०) छोटा ढेला।
**ढेलना**—स० क्रि० (कु०) आग पर से नीचे उतारना।
**ढेलरू**—पु० (कु०) टुकड़ा।
**ढेलिणा**—अ० क्रि० (कु०) मुकाबला करना, तंत्र-मंत्र की क्रिया में मुकाबला करना।
**ढेली**—स्त्री० (कु०) जड़ी बूटियों से बनाया हुआ एक मादक पदार्थ जो शराब, 'सूर' आदि में डाला जाता है।
**ढेली**—स्त्री० (कां०, ऊ०, बि०) गुड़ की बनी डली।
**ढेलू**—पु० (कां०, ह०) अंश, टुकड़ी।
**ढेसणा**—स० क्रि० (कु०) ठूंस-ठूंस कर भरना।
**ढेसा**—पु० (कु०) धक्का।
**ढेहरा**—पु० (कु०) मूल मंदिर से दूर ऐसा छोटा मंदिर जहां मेले आदि के अवसर पर देवता का रथ कुछ समय तक रखा जाता है।
**ढैं**—स्त्री० (सो०, कां०) रोने की ध्वनि, ज़ोर की आवाज़।
**ढैंचीमारना**—स० क्रि० (कां०) बार-बार पूछना, पूछ-पूछ कर तंग करना। शिथिल करना।
**ढै**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) पराजय।
**ढैखरू**—स्त्री० (कां०) तलवार।
**ढैस्राणा**—स० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) पराजित होना।
**ढैणा**—अ० क्रि० (कां०, ह०, ऊ०) गिरना, पसरना, लेटना।
**ढैसकदा**—वि० (कु०) भरा हुआ पेट।
**ढोंऊसी**—वि० (कु०) 'ढोंऊसू' बजाने वाला।
**ढोंऊसू**—पु० (कु०) देवता का मुख्य वाद्ययंत्र, जिससे ताल में फेर-बदल की जाती है।
**ढोंग**—पु० दिखावा।
**ढोंगी**—वि० पाखंडी।
**ढोंच्चपची**—स्त्री० (चं०) सच्ची-झूठी बातें।
**ढोंट**—वि० (सि०) जाहिल, ताकतवर।
**ढोंटर**—पु० (सि०) मोटा जंगली बिल्ला।
**ढोंढ**—पु० (शि०) पोस्त का बीजकोश। साजिश।
**ढोंस**—पु० (कु०) दे० ढोंऊसू।
**ढो:**—स्त्री० (सि०, सो०, कु०) जगह, शरण का स्थान, आश्रय।
**ढोइणा**—स० क्रि० (कु०) ढोया जाना।
**ढोई**—स्त्री० (मं०) जगह।
**ढोई**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) किवाड़ बंद करने की क्रिया। ढोने की क्रिया।
**ढोऊळ**—स्त्री० (कु०) तबीयत।
**ढोक**—पु० (शि०) पहाड़।
**ढोक**—स्त्री० (चं०) समय की ताक।
**ढोको**—स्त्री० (शि०) दुर्गम पहाड़।
**ढोट**—पु० (सि०) जंगली बिल्ला।
**ढोड**—पु० (कां०, ऊ०) कोटर।
**ढोडा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) दे० ढोड।
**ढोडी**—वि० आवारा।
**ढोड़ी**—स्त्री० (शि०) नाभि। गाली।
**ढोडीढींगर**—वि० (ह०) दुत्कारा हुआ।
**ढोढर**—पु० (कु०) दे० ढोड।
**ढोढी**—स्त्री० (कां०) तालाब, पोखर।
**ढोणा**—स० क्रि० ढोना।
**ढोणो**—स० क्रि० (शि०) ढोना, उठाना।
**ढोपणा**—स० क्रि० (कु०) ढकना।
**ढोबली**—स्त्री० (शि०) अनाज के भंडारण के लिए मकान में फर्श के नीचे लकड़ी का बना कोठा।
**ढोर**—पु० पशु।
**ढोरनू**—पु० (मं०) मिट्टी का बड़ा कटोरा।
**ढोरा**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) खाद्यान्न में लगने वाला काला कीड़ा।
**ढोरू**—पु० (कां०) माश के दाने में लगने वाला कीड़ा।
**ढोल**—पु० (शि०) पेट।
**ढोल**—पु० पानी भरने का गोलाकार बड़ा पात्र।
**ढोळ**—पु० (शि०) पत्थर।
**ढोलका**—पु० (शि०) फटा हुआ ढोल।
**ढोलकिया**—पु० (शि०) ढोल बजाने वाला।
**ढोलणा**—पु० (बि०) हिंडोला।
**ढोलरू**—पु० एक लोकगीत जो चैत्र मास में नव वर्ष के आगमन पर गाया जाता है।
**ढोली**—वि० ढोल बजाने वाला।
**ढोलीढींगर**—वि० (बि०) निकम्मा। बिन बुलाया (मेहमान)।
**ढोलू**—पु० (मं०) बसंत-मल्हार, ऋतु गीत।
**ढोलो**—वि० (शि०) खोखला।

**ढोस**—वि० (कु०) आगे को फैला हुआ।
**ढोसणा**—स० क्रि० (कु०) पानी द्वारा बहा कर ले जाना।
**ढोसणा**—स० क्रि० (बि०) ठूंसना।
**ढोसिणा**—अ० क्रि० (कु०) बहा कर ले जाया जाना, बहाया जाना।
**ढोहणो**—स० क्रि० (शि०) ढुलान करना, ढोना।
**ढौंआ**—पु० परछाई, छाया।
**ढौंकला**—पु० (चं०) गोबर से उत्पन्न होने वाला एक सफेद कीट।
**ढौंग**—पु० (कु०, शि०, सि०) ढंग।
**ढौंठड़ा**—पु० (शि०) साधु।
**ढौंस**—पु० (कु०) दे० ढोंऊसू।
**ढौंस**—स्त्री० (चं०) छोटी ढोलकी जिसे मृत्यु संस्कार के समय बजाया जाता है।
**ढौ:बणा**—अ० क्रि० (शि०) सजना।
**ढौ**—अ० (कु०) बराबर, के बराबर।
**ढौआ**—पु० रुपया-पैसा।
**ढौऊक**—वि० (कु०) हम-उमर।
**ढौऊकर**—वि० (कु०) दे० ढौऊक।
**ढौऊणा**—पु० (कु०) मृत पशु को दबाने का स्थान।
**ढौक**—पु० (शि०) दे० ढांक।
**ढौकणा**—पु० (कु०, शि०) ढक्कन।
**ढौकणा**—पु० (कु०) किसी चीज़ को काटने के लिए उसके नीचे रखी गई लकड़ी, जलाने की मोटी व सख्त लकड़ी।
**ढौकणडाली**—स्त्री० (कु०) लकड़ी का बड़ा ढेला।
**ढौकणा**—स० क्रि० (कु०) पकड़ना।
**ढौकणो**—स० क्रि० (शि०) ढकना।
**ढौकिणा**—अ० क्रि० (कु०) पकड़ा जाना।
**ढौग**—पु० (कु०) दुर्गम पहाड़।
**ढौगडुखर**—पु० (कु०) दे० ढौग।
**ढौगपा**—पु० (कु०) दे० ढौग।
**ढौगीऐ**—पु० (कु०) बंदर।
**ढौढर**—पु० (चं०) वृक्ष का खोखला तना, कोटर।
**ढौढरू**—स्त्री० (चं०) एक चिड़िया विशेष।
**ढौणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) कमाना।
**ढौत**—स्त्री० (कु०) बुलावा।
**ढौनी**—वि० (मं०) ढुलान करने वाले।
**ढौबेओरा**—वि० (सि०, शि०) मनपसंद।
**ढौर**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) साया।
**ढौरा**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) खेतों में जंगली जानवरों को डराने के लिए बनाया बुत।
**ढौल**—स्त्री० (चं०) मैल की जमी तह।
**ढौल**—स्त्री० (कु०) मुजरा, नमस्कार।
**ढौलणो**—अ० क्रि० (शि०) गिरना, तरल पदार्थ का गिरना।
**ढौळना**—अ० क्रि० (कु०) गिरना।
**ढ्यूंगली**—स्त्री० (बि०) कुएं से पानी निकालने का साधन।
**ढ्यू**—पु० (हं०) एक पेड़ विशेष जिसके फलों का अचार बनाया जाता है।
**ढ्योळिया**—पु० (हं०) अचार व सब्जी।

# ण

**ण**—देवनागरी वर्णमाला में टवर्ग का पांचवां वर्ण, उच्चारण स्थान मूर्द्धा।
**णत्तर**—वि० (कु०, सो०) उनहत्तर।
**णत्ती**—वि० (कु०, सो०) उनतीस।
**णवासी**—वि० (सो०) उन्नासी।
**णिंदा**—वि० उनींदा, जो सोया न हो।
**णियाठ**—पु० (कु०) पहलवान।
**णियाठण**—स्त्री० (कु०) हृष्ट-पुष्ट स्त्री।
**णीश**—वि० (शि०) उन्नीस।
**णुंजा**—वि० (कु०, सो०) उनचास।

# त

**त**—देवनागरी वर्णमाला में तवर्ग का पहला वर्ण। उच्चारण स्थान दंत।
**तंई**—अ० (शि०, सि०) दोबारा।
**तंग**—पु० (शि०) घोड़े की पीठ पर सामान टिकाने का एक प्रकार का फीता।
**तंगअ**—पु० (सि०, शि०, सो०) ऊपर की मंज़िल का बरामदा।
**तंगड़**—पु० (कां०) पत्तों रहित शाखाएं।
**तंगड़**—पु० (बि०) बेढंगी चाल।
**तंगड़ा**—पु० (शि०) मकान का बरामदा।
**तंगड़ी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) कुम्हार का मिट्टी के बर्तनों को बांधने का जाल।
**तंगड़ी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) 'ब्यूहल' के पेड़ की पतली शाखाओं को सड़ाकर छाल उतारने के बाद का शेष भाग जो आग जलाने के काम आता है।
**तंगडू**—पु० (बि०) छोटी-छोटी लकड़ियां।
**तंगा**—वि० (चं०) अभावग्रस्त।
**तंगा**—वि० (बि०) कंचा, कांच की गोली।
**तंगी**—स्त्री० अभाव, कमी।
**तंगैरा**—पु० (बि०) धूपदानी।
**तंगोणा**—अ० क्रि० (बि०) बहुत अकड़ना, आनाकानी करना।
**तंघीणा**—अ० क्रि० (बि०) आगे की ओर लंबे होना, लपकना।
**तंजे**—पु० (मं०) मशालदानी।
**तंतर**—पु० जादू, तंत्र।
**तंता तौळा**—वि० जल्दबाज़।
**तंते धाए**—अ० तत्काल।

**तंत्री**—स्त्री० (शि०) वीणा आदि के तार।
**तंद**—स्त्री० (कां०) पूनी से निकला सूत या ऊन का धागा।
**तंद**—स्त्री० (चं०) बेल।
**तंदरन**—स्त्री० (शि०) बड़ा पत्थर।
**तंदी**—अ० (कु०) वहां।
**तंदी**—स्त्री० (शि०) ग्रीष्म ऋतु।
**तंदीरा**—पु० (कां०) आभूषण विशेष।
**तंदुआ**—पु० (चं०) जीभ का निचला भाग।
**तंदुआ**—पु० (मं०) तेंदुआ।
**तंदूरी**—वि० (शि०) तंदूर में पकाया हुआ।
**तंदेही**—स्त्री० (शि०) चित्त लगा कर परिश्रम करने का भाव।
**तंघी**—अ० (मं०) वहां।
**तंबा**—पु० (कां०) एक चादर।
**तंबिया**—पु० (सो०) बड़ा पतीला।
**तंबुतरा**—पु० (मं०) एकतारा, वाद्ययंत्र।
**तंबेड़**—पु० (बि०) दे० तपेड़।
**तंबोळ**—पु० (कु०, चं०) दे० तमोळ।
**तंरजेड़**—पु० (मं०) दे० तंजे।
**तंसड़ा**—पु० (मं०) पीतल की परात सा गहरा लोहे का बर्तन।
**तःलू**—अ० उसी वक्त, तब, उसी समय।
**त**—अ० (शि०) तब।
**तई**—वि० (शि०) अधिक।
**तई**—स्त्री० (सो०) मालपूए बनाने की तवी।
**तई**—स्त्री० (चं०) चाची।
**तईएं**—सर्व० (मं०) तूने।
**तईली**—पु० (बि०) सेवादार।
**तउआ**—पु० (कु०, मं०, सि०) तवा।
**तऊंदी**—स्त्री० (चं०) ग्रीष्म ऋतु।
**तऊ**—पु० (चं०) ताऊ।
**तऊळा**—पु० (सो०) सफेद बाल।
**तओ**—पु० (शि०) तवा।
**तकड़ा**—वि० (चं०) सानन्द, प्रसंन।
**तकड़ा**—वि० स्वस्थ, हट्टा-कट्टा।
**तकडारे**—स्त्री० (शि०) मज़बूती।
**तकड़ी**—स्त्री० (बि०) तराजू।
**तकणा**—स० क्रि० (बि०, शि०) चाहना, देखना, निहारना।
**तकणी**—स्त्री० (चं०) छोटा तराजू।
**तकते**—स्त्री० (शि०) तख्ती।
**तकदीर**—स्त्री० (शि०) भाग्य।
**तकपकाइणा**—अ० क्रि० (कु०) असमंजस में पड़ना।
**तकळा**—पु० (शि०) ऊन कातने का उपकरण।
**तकळा**—पु० चरखे में लगी लोहे की लंबी और पतली छड़।
**तकली**—स्त्री० (कु०, सि०, शि०) हाथ से ऊन या रेशम कातने का लकड़ी का यंत्र।
**तकलीफ**—स्त्री० (शि०) पीड़ा, आपत्ति।
**तकलु**—पु० (कां०) धागे का छोटा गुच्छा।
**तकवो**—पु० (सि०) चरखे में लगने वाला लोहे का एक उपकरण।
**तकसीम**—पु० बंटवारा, भाग।
**तकसीर**—स्त्री० (कु०) कसूर, दोष।
**तकाणा**—स० क्रि० (चं०, शि०) दिखलाना।
**तकाळा**—पु० (बि०) सायंकाल।
**तकीरा**—पु० (कां०) निशास्ता।
**तकुवा**—वि० (शि०) देखने वाला।
**तकूणा**—वि० (शि०) तीन कोने वाला।
**तकोणा**—वि० तीन कोने वाला।
**तकोणा**—स० क्रि० (शि०) किसी कार्य को सोचना।
**तक्कड़ू**—पु० (कां०) तराजू।
**तखणी**—अ० (चं०) तब, उस समय।
**तखत**—पु० सिंहासन, तख्त।
**तखतपोश**—पु० (शि०) लकड़ी का बड़ा संदूक जो सोने के काम आता है तथा जिसमें बिस्तर भी रखे जाते हैं।
**तखलीप**—स्त्री० (शि०) कष्ट, तकलीफ।
**तखीण**—स्त्री० (शि०) व्यर्थ घूमने का भाव।
**तखे**—अ० (मं०) उधर।
**तख्ता**—पु० लकड़ी का लंबा, चौड़ा परंतु कम मोटा टुकड़ा।
**तख्ती**—स्त्री० (शि०) बच्चों के लिखने की तख्ती।
**तगड़**—पु० (ह०) बारीक लकड़ी।
**तगड़ा**—वि० स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट।
**तगता**—पु० (चं०) दे० तख्ता।
**तगमा**—पु० (शि०) पदक, तमगा।
**तगार**—पु० (चं०) किसी चीज़ को पात्र में डाल कर पड़ा रहने देने की क्रिया।
**तगारी**—स्त्री० (शि०) गोबर ढोने का तसला।
**तगर**—पु० सफेद रंग का पुष्प।
**तचैणा**—स० क्रि० (चं०) गरम करना।
**तच्छ**—वि० (चं०) बिल्कुल जला हुआ।
**तज**—पु० दारचीनी की जाति का एक वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम आती है।
**तजणा**—स० क्रि० (बि०, शि०) छोड़ना।
**तजपत्तर**—पु० (बि०) सुगंधित पत्ते, 'तज' वृक्ष के पत्ते'
**तजब**—पु० (चं०) आश्चर्य, हैरानी।
**तजबीज**—स्त्री० (कु०, चं०) उपाय, ढंग।
**तजरबा**—पु० (कु०, मं०) अनुभव।
**तज़ाब**—पु० (कां०) तेजाब।
**तजुरबो**—पु० (शि०) अनुभव।
**तजे नजे**—पु० (मं०) दृश्य, नज़ारे।
**तजोरी**—स्त्री० (चं०) तिजोरी।
**तडंगा**—वि० (कां०) नंगधड़ंग।
**तडंगा**—पु० (कां०) अटकाव, रोक, रुकावट, बाधा।
**तड़**—स्त्री० हिम्मत, हठ, घमंड।
**तड़क भड़क**—पु० ठाट-बाट।
**तड़का**—पु० प्रातःकाल।
**तड़का**—पु० छौंक।
**तड़काना**—स० क्रि० (शि०) ताड़ना, क्रोध दिखाना।

**तड़के**—पु० (शि०) प्रातः।
**तड़च्छ**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) सोते हुए हाथ-पैर चलाने की क्रिया, बेचैनी।
**तड़छ**—स्त्री० (बि०) आंतरिक गर्मी, बेचैनी।
**तड़णा**—अ० क्रि० (चं०) घुसना।
**तड़णा**—स० क्रि० (सि०, चं०) टांगे पसारना।
**तड़तड़**—स्त्री० (शि०) बहुत बोलने की क्रिया।
**तड़थल्ल**—स्त्री० (बि०) शोर।
**तड़ना**—स० क्रि० (कु०) तलना।
**तड़ना**—स० क्रि० (मं०) आंगन आदि में पत्थर बिछाना।
**तड़प**—स्त्री० (शि०) चिंता।
**तड़फ**—स्त्री० (शि०) चिंता।
**तड़फ**—स्त्री० (चं०) इच्छा, लगन।
**तड़फना**—अ० क्रि० (चं०) छटपटाना, अत्यंत दुःखी होना।
**तड़ाई**—स्त्री० (कां०) चाय की पत्तियां तोड़ने की मज़दूरी।
**तड़ाई**—स्त्री० (मं०) विवाह की सौगात, उपहार।
**तड़ाओं**—पु० (सि०) फसल तैयार होने पर उसके काटने का समय।
**तड़ाओ**—पु० (कु०) तलवा।
**तड़ाक**—स्त्री० (शि०) दे० तड़ाका।
**तड़ाका**—पु० किसी चीज़ के टूटने की आवाज़, आघात।
**तड़ागणी**—स्त्री० (सि०) मेखला।
**तड़ागी**—स्त्री० मेखला।
**तड़ाणा**—स० क्रि० (कु०) फंसाना।
**तड़ाणा**—स० क्रि० (सि०, चं०, बि०) तुड़वाना।
**तड़ातड़**—अ० (शि०) फटाफट थप्पड़ मारने की क्रिया।
**तड़ात्तमणिया**—पु० बोरिया बिस्तर।
**तड़ाथर**—पु० (मं०) खलिहान में बिछाये जाने वाले मोटे स्लेट।
**तड़ानी**—पु० फल या पत्थर तोड़ने वाला व्यक्ति।
**तड़िया**—वि० (मं०) तली हुई (रोटियां)।
**तड़ी**—स्त्री० (कु०, बि०) मुसीबत।
**तड़ी**—स्त्री० गर्व, अभिमान।
**तड़ुआ**—पु० (सि०) उड़द में लगने वाला कीड़ा।
**तड़े**—पु० (शि०) पांव का पिछला भाग।
**तड़ेड़**—स्त्री० (बि०) दरार।
**तड़ोश**—पु० (मं०) तारों की मंद रोशनी।
**तढ़**—स्त्री० (चं०) दिखावा, आडंबर।
**तणकोणा**—अ० क्रि० (बि०) छोटी-छोटी बातों पर क्रुद्ध होना।
**तणटु**—पु० (सि०, शि०) बटन की जगह लगाई जाने वाली धागे की तनी (डोरी)।
**तणणा**—स० क्रि० (चं०) तानना, कसना।
**तणणो**—वि० (शि०) पतला, विरला।
**तणणो**—स० क्रि० (शि०) खींचना।
**तणना**—स० क्रि० (कां०) बुनाई के लिए ताना डालना।
**तणना**—स० क्रि० (चं०) खींच कर रखना।
**तणाई**—स्त्री० (ह०) पानी का तालाब।
**तणाए**—स्त्री० (कु०, चं०) ताना।
**तणी**—स्त्री० कपड़े के साथ बांधने हेतु लगाई डोरी।
**तणी**—स्त्री० (कु०, कां०) जाल के किनारे पर लगी हुई रस्सी।
**तणीण**—स्त्री० (कां०) अंगड़ाई।
**तणू**—पु० (कु०, मं०) बटन के स्थान पर लगी धागे की डोरी।
**तणेछ**—पु० (चं०) बाघ प्रजाति का एक जानवर।
**तणोणा**—अ० क्रि० (ह०) अंगड़ाई लेना।
**तणोशू**—पु० (कु०) ऊन कातने के लिए लकड़ी की बनी कटोरी जिस पर तकली घूमती है।
**तत**—पु० (चं०) शीघ्रता।
**तत**—पु० सार, निष्कर्ष।
**ततफड़ती**—अ० (चं०) जल्दी।
**ततराळणा**—स० क्रि० (सि०) निथारना।
**तता**—वि० (कु०) गरम।
**तताढ़**—पु० (चं०) अधिक गर्मी का समय।
**तताढ़**—पु० पानी गरम करने के लिए प्रयुक्त मिट्टी का बर्तन।
**तताहड़ा**—पु० (चं०) मिट्टी का बना पानी गरम करने का पात्र।
**ततूळा**—पु० (मं०) सिर में होने वाली एक बीमारी जिसमें गोल गोल धब्बे पड़ने से बाल झड़ जाते हैं।
**ततैहड़ा**—पु० (कां०, ऊ०) पानी गरम करने का बर्तन।
**तथ**—पु० तथ्य।
**तथ**—पु० (सि०) सुसमय।
**तथणो**—स० क्रि० (सि०) कहानी बनाना।
**तथतुहार**—पु० उत्सव, त्योहार।
**तथा**—पु० (कां०) मान, इज्ज़त।
**तदका**—वि० उस समय का।
**तदबीर**—स्त्री० प्रयास, उपाय।
**तदी**—अ० (कु०) उस दिन।
**तदेहा**—वि० (चं०, कां०) वैसा।
**तधोकणा**—वि० उस समय का।
**तध्याड़ी**—अ० उस दिन।
**तन**—स्त्री० (चं०, कां०) मचान।
**तनकोणा**—अ० क्रि० (कां०) लड़ने को तैयार होना।
**तनखाह**—स्त्री० वेतन।
**तनतना**—पु० (शि०) क्रोधी।
**तनतनाई**—स्त्री० (शि०) क्रोध।
**तनतनाउणा**—स० क्रि० (शि०) खींचातानी करवाना।
**तनतनाणा**—स० क्रि० (शि०) क्रोध में खींचातानी करना।
**तनहा**—वि० (कु०) अकेला।
**तनाजा**—पु० झगड़ा।
**तनात**—वि० (कु०, सि०) नियत, नियुक्त।
**तनाव**—पु० (कु०, चं०) टकराव, शत्रुता।
**तनोश**—पु० (कु०) दे० तणोशू।
**तप**—पु० तपस्या।
**तप**—पु० (कां०) कुल्या के पानी को रोकने या मोड़ने के लिए बनाया गया छोटा बांध।
**तपऊणो**—स० क्रि० (शि०) गरम करना।
**तपड़ी**—स्त्री० (कां०) बंजर भूमि।

**तपणा**—अ० क्रि० तपना, गरम होना।
**तपणा**—अ० क्रि० (सि०) गुस्से होना।
**तपणी**—स्त्री० चिता।
**तपणी**—स्त्री० (कां०, कु०) अंत्येष्टि क्रिया।
**तपणो**—अ० क्रि० (शि०) गरम होना।
**तपतपाना**—अ० क्रि० (चं०) क्रोध में आना।
**तपतोळना**—स० क्रि० (सो०, सि०) टटोलना।
**तपदी**—स्त्री० (कां०) ग्रीष्म ऋतु।
**तपश**—स्त्री० (सि०) गर्मी, तपिश।
**तपसी**—पु० तपस्वी।
**तप्पण**—स्त्री० (कां०) अधिक गर्मी।
**तपाई**—स्त्री० (मं०) चटाई।
**तपाक**—अ० (चं०) तत्काल।
**तपाणा**—स० क्रि० (कां०) गरम करना।
**तपाव**—पु० (शि०) गरमाहट।
**तपाहली**—स्त्री० (कां०) कुल्या से खेत को पानी देने वाली जगह पर लगाया हुआ बांध।
**तपिश**—स्त्री० (शि०) गर्मी, बुखार में जिस्म के गरम होने का भाव।
**तपेरना**—स० क्रि० (बि०) गरम करना।
**तपेड़**—पु० (बि०) पानी गरम करने के लिए प्रयुक्त लोहे का बर्तन।
**तपेणा**—स० क्रि० (चं०) दे० तपेरना।
**तपोणा**—स० क्रि० (सि०) गरम करना।
**तफणा**—स० क्रि० (मं०) तापना, सेंकना।
**तफरी**—स्त्री० (चं०) मनबहलाव; दिल्लगी; सैर।
**तफरीह**—स्त्री० दे० तफरी।
**तफाक**—पु० इत्तफाक। एकता।
**तबकणा—अ० क्रि० चौंकना, क्रोधित होना।**
**तबरी**—स्त्री० (कु०, चं०) पुरातन काल में युद्ध में प्रयुक्त कुल्हाड़ा, चौड़े मुंह की कुल्हाड़ी।
**तबसरा**—पु० समीक्षा।
**तबाकू**—पु० (शि०) तंबाकू।
**तबाख**—पु० तंबाकू।
**तबादला**—पु० (शि०) स्थानांतरण।
**तबार**—पु० (सो०, सि०) भरोसा, विश्वास।
**तबारा**—अ० (सि०) तीसरी बार।
**तबाही**—स्त्री० सर्वनाश।
**तबीज**—पु० ताबीज़ यंत्र।
**तबीत**—स्त्री० तबीयत, स्वास्थ्य।
**तबे**—अ० (शि०, सि०) तब।
**तबेब**—अ० (शि०) तथापि।
**तमक**—पु० क्रोध।
**तमकोणा**—अ० क्रि० क्रोधित होना।
**तमचेडणा**—स० क्रि० (सो०) पीटना।
**तमछ**—स्त्री० (कां०) व्याकुलता।
**तमतमोणा**—अ० क्रि० (ह०) दे० तमकोणा।
**तमतराक**—वि० (कां०, चं०) तेज।
**तमतोळणा**—स० क्रि० (सो०) हिलाकर बोझ का अनुमान लगाना।
**तमलपत्र—पु० (सि०) एक बेल विशेष जो दवा के काम आती है।**
**तमस्क**—पु० ऋणपत्र।
**तमा**—पु० मोह।
**तमाकची**—पु० (कु०, मं०) तंबाकू पीने वाला।
**तमाकड़**—पु० (चं०) अधिक तंबाकू पीने वाला।
**तमाकी**—पु० (कु०, मं०) दे० तमाकची।
**तमाकू**—पु० (कु०, मं०) तंबाकू।
**तमाखू**—पु० (शि०, बि०) तंबाकू।
**तमाचणा**—स० क्रि० थप्पड़ मारना।
**तमाचा**—पु० (सि०) लोहे की एक नाली की छोटी बंदूक जिसे विवाह या जन्म के समय धमाके के लिए प्रयुक्त करते हैं।
**तमाखा**—वि० (चं०) अधिक कड़वा या खट्टा।
**तमाचा**—पु० थप्पड़।
**तमाचा**—पु० (सि०) पक्षाघात।
**तमातड़**—वि० आप जैसा।
**तमाम**—पु० बुखार; गुस्से में आई गर्मी, क्रोध का आभास।
**तमाळा**—वि० (कु०) मतवाला, नशे में घुत्त।
**तमाशबीन**—पु० तमाशा देखने वाला।
**तमाशा**—पु० खेल, तमाशा।
**तमासा**—पु० हंसी मज़ाक।
**तमील**—स्त्री० अनुपालन, अमल करने का भाव, तामील।
**तमूर**—पु० (सि०) एक वाद्ययंत्र।
**तमेहड़ा**—पु० पानी गरम करने के लिए प्रयुक्त तांबे का बड़ा बर्तन।
**तमोळ**—पु० बहन द्वारा भाई को, सास द्वारा दामाद को और संबंधियों द्वारा वर को दिये जाने वाला वस्त्र, पैसे व मेवे आदि।
**तयार**—पु० (शि०) त्योहार।
**तयालु**—अ० (सि०) सवेरे का भोजन।
**तयूड़**—स्त्री० माथे की शिकन।
**तयूर**—पु० (सि०) क्रोध।
**तयोरा**—पु० (कां०) वर या वधू का ताया।
**तरंग**—स्त्री० क्रोध।
**तरंगड़**—पु० (मं०) बांस आदि का लंबा डंडा जिसमें उपशाखाएं भी होती है।
**तरंगड़ू**—पु० बांस की टहनियां जो ईंधन के रूप में प्रयुक्त होती है।
**तरंगा**—वि० तीन रंग का।
**तरंगोल**—पु० (चं०) ऊंची पहाड़ियों में पाया जाने वाला जंगली जानवर।
**तरंडा**—पु० (सि०) वृक्ष आदि के टूटने पर हुए टुकड़े।
**तरंडा**—पु० लगातार ज़ोर से बोलने की क्रिया।
**तरंमड़**—वि० (मं०) एकत्रित।
**तरंमड़**—पु० (चं०) बिच्छू बूटी लगने से होने वाली सूजन।
**तर**—वि० तरल पदार्थ से युक्त, चिकनाई युक्त।

**तर**—स्त्री० (मं०) लंबा खीरा।
**तर**—पु० (मं०) नदी का फैलाव।
**तरओआई**—स्त्री० (मं०) उतराई।
**तरकारी**—स्त्री० पकाई हुई सब्जी।
**तरकाळ**—स्त्री० तीसरा पहर।
**तरकीब**—स्त्री० युक्ति।
**तरकूणा**—वि० (सो०) दे० तरकोणा।
**तरकोणा**—वि० तीन कोनों वाला।
**तरकोरा**—पु० (चं०) बासी आटे से बनने वाली रोटी।
**तरक्कड़ू**—पु० छोटा तराजू, तुला।
**तरक्की**—स्त्री० (शि०) उन्नति।
**तरक्या**—वि० सड़ा हुआ भोजन।
**तरखाण**—पु० लकड़ी का काम करने वाला मिस्त्री।
**तरखानचिड़ा**—पु० एक पक्षी विशेष।
**तरगाल**—स्त्री० (सो०) चोट लगने से होने वाली तीव्र पीड़ा।
**तरगाळ**—स्त्री० (सि०) मंद रोशनी, सायंकाल।
**तरगूह**—पु० (सि०, सो०) उल्का पिंड।
**तरज़**—स्त्री० लय।
**तरटा**—पु० (कां०, ऊ०, बि०) झंझट, समस्या।
**तरट्ठा**—पु० (चं०) फसल से दाने निकालने पर शेष बचे दाने।
**तरड़**—पु० (ह०) पशुशाला की ऊपर की मंजिल।
**तरड़**—स्त्री० (चं०) आलू की तरह की एक जंगली सब्जी जिसकी बेल लंबी होती है।
**तरड़**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) दे० ढाफ।
**तरड़ी**—स्त्री० एक जंगली कंद जिसे फलाहार के रूप में प्रयोग किया जाता है।
**तरड़ी**—स्त्री० (मं०) Dioscoria deltoder.
**तरड़ी**—स्त्री० (बि०, ह०) Dioscoria belophylla. एक पुष्प विशेष।
**तरणा**—अ० क्रि० (मं०) तैरना।
**तरणो**—अ० क्रि० (शि०, कु०) तैरना, तर जाना, छुटकारा पाना।
**तरताखा**—पु० (बि०) धरती पर लगने वाला लाल रंग का फल विशेष।
**तरताली**—वि० तैंतालीस।
**तरन**—पु० (कां०) तरुण।
**तरना**—अ० क्रि० (मं०) उतरना।
**तरना**—अ० क्रि० तर जाना, भव बंधन से छुटकारा पाना।
**तरनापा**—पु० (शि०) मुंह पर निकलने वाले दाने।
**तरनी**—स्त्री० तरुणी।
**तरनी**—स्त्री० (शि०) नाव।
**तरपणा**—स० क्रि० तर्पण करना।
**तरपाई**—स्त्री० हाथ से सिलने की क्रिया।
**तरपाई**—स्त्री० (कां०, ह०, ऊ०) बड़े संदूक को रखने हेतु बनाई चौखट।
**तरपाई**—स्त्री० बैठने की चटाई।
**तरपाल**—स्त्री० मोटा, मज़बूत व सख्त कपड़ा जिसमें पानी भीतर नहीं आता, तिरपाल।
**तरपैड़**—पु० (बि०) एक बर्तन विशेष जिसमें नहाने के लिए पानी गरम किया जाता है।
**तरफड़ी**—वि० वक्र स्वभाव वाला।
**तरफदारी**—स्त्री० पक्षपात।
**तरफेन**—वि० (कां०, ऊ०, ह०) अपरिचित, अन्य।
**तरबग्ज**—पु० (सो०) उकसाए जाने का व्यापार।
**तरबाजुणा**—अ० क्रि० (सो०) बहकावे में आना।
**तरबीज**—स्त्री० (कु०, कां०) युक्ति।
**तरभका**—पु० (कु०) ऊपर से दी जाने वाली छलांग।
**तरमंजला**—वि० तीन मंज़िला।
**तरमड़ा**—पु० (सो०) मिट्टी का बना छिद्रयुक्त पात्र विशेष जिसमें दूध मिश्रित जल भरकर मृतक के निमित्त दूर्वा युक्त गोबर के पिंड के ऊपर क्रिया तक लटकाया जाता है।
**तरमर**—स्त्री० (शि०) हिचकिचाहट।
**तरमुड़ा**—वि० (ह०) त्रिकोण।
**तरमूंडा**—अ० (सि०) प्यार की गाली।
**तरमूंडी**—स्त्री० (चं०) बड़ी परात।
**तरमैहड़ा**—पु० (कां०) तांबे का गोल बर्तन जिसमें पानी गरम किया जाता है।
**तरमोड़ी कणक**—स्त्री० (ह०) विशेष प्रकार का गेहूं जिसका फल बिना कांटे का होता है।
**तरमोल**—पु० (मं०) दे० तमोळ।
**तरमौहड़ा**—पु० (कु०, सि०) दे० तरमैहड़ा।
**तरयांबड़**—पु० (मं०) अंजीर जाति का बड़े आकार का अति स्वादिष्ट फल।
**तरयानुएं**—वि० तिरानवे।
**तरयासी**—वि० तिरासी।
**तरयाहैया**—वि० (ह०) प्यासा।
**तरला**—पु० (सि०) लंबा घास।
**तरले**—पु० खुशामद, चापलूसी।
**तरलोकी**—स्त्री० (कां०) त्रिलोकी।
**तरशुंड**—पु० (मं०) त्रिशूल।
**तरश**—पु० (शि०) तरस, दया।
**तरस**—पु० (शि०) दया।
**तरसणा**—अ० क्रि० तरसना।
**तरसणो**—अ० क्रि० (शि०) तरसना।
**तरसाणा**—स० क्रि० (शि०) ललचाना, तरसाना।
**तरसूल**—पु० (कां०) त्रिशूल।
**तरहया**—स्त्री० (कां०) प्यास।
**तरांबा**—पु० (कु०) तांबा।
**तरांभड़**—पु० (सि०) तेज़ लकड़ी।
**तरा:ड़ना**—स० क्रि० (सि०) किसी को तंग करना।
**तराअमुल**—पु० (चं०) Ribes qrossularia.
**तराई**—स्त्री० (शि०) ढलान वाली भूमि, उतराई।
**तराई**—वि० (कु०) तीन।
**तराक**—पु० (कु०, चं०, शि०) तैराक।
**तराकड़ी**—स्त्री० (कु०, मं०) तराजू।
**तराकड़े**—स्त्री० (शि०, सि०) तराजू।

**तराज़**—पु० (सि०) एतराज़।
**तराटणा**—स० क्रि० (कु०) बारीक छड़ी से मारना।
**तराण**—पु० (कु०) शक्ति।
**तरातरा**—पु० (कु०, चं०) अत्यधिक चंचलता, उच्छृंखलता।
**तराना**—पु० गाना, **प्रणयगीत**।।
**तरापड़**—पु० (शि०, सि०) भेड़ या बकरी की खाल जिसे बैठने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।
**तरापड़**—पु० (शि०) बड़ा भूभाग जिस पर अधिक उपज नहीं होती।
**तरापड़ा**—पु० (कु०) चमड़ी, खाल।
**तराय**—स्त्री० (सि०) नदी पार करने के लिए दिया जाने वाला पारिश्रमिक।
**तरायण**—पु० (कु०) माघ महीने की अंतिम तिथि को मनाया जाने वाला त्योहार।
**तरार**—पु० (शि०, सि०) तलवार।
**तरार**—पु० अंगड़ाई। गुस्सा, जोश।
**तरारी**—वि० (चं०) गुस्सैल।
**तराश**—पु० (सि०) मरते आदमी की तड़पन।
**तरासणा**—स० क्रि० तराशना।
**तरासल्या**—पु० (बि०) एक चर्मरोग।
**तरिक्कड़**—पु० कमर के नीचे का भाग, नितंब।
**तरिगणा**—वि० तीन गुना।
**तरिड़**—स्त्री० (शि०, सि०) दरार।
**तरिफला**—पु० त्रिफला, तीन फलों का मिश्रण (हरड़, भेड़ा और आमला)।
**तरिहाड़ा**—पु० (चं०) मृतक का तीसरे दिन किया जाने वाला संस्कार।
**तरींगड़ना**—स० क्रि० (कु०) खींचना।
**तरी:**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) बांस की नाली।
**तरी**—स्त्री० सब्जी या पकाए मांस का चिकनाई युक्त तरल पदार्थ।
**तरी**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) लहसुन की फांक।
**तरीक**—स्त्री० तारीख, कचहरी की पेशी की तारीख।
**तरीजड़**—वि० (कु०) जो गाय या भैंस तीसरी बार बच्चा दे।
**तरीजा**—वि० (कु०, चं०) तीसरा।
**तरीटू**—पु० (चं०, कां०) Eunymus Fimbriatus. एक वृक्ष विशेष।
**तरीड़ा**—पु० (मं०) घड़ा या बर्तन टिकाने के लिए बनाया घास या लकड़ी का आधार।
**तरीण**—पु० (कु०, सि०, सो०) तिनका।
**तरीणना**—स० क्रि० (कु०, सि०) खींचना।
**तरीमड़ू**—पु० (बि०) छोटी लकड़ियां।
**तरीमत**—स्त्री० (चं०) औरत, नारी, पत्नी।
**तरीसना**—स्त्री० तृष्णा, पाने की इच्छा।
**तरुंगा**—पु० (चं०) टांग का जोड़।
**तरुंजा**—वि० (बि०) तिरपन।
**तरुड़ी**—स्त्री० (कां०) किसी पात्र में छेद होने से निकलने वाली पानी की धार, तेज धार।
**तरुणा**—अ० क्रि० समय से पहले भ्रूण का गिर जाना।
**तरुप**—स्त्री० (कु०, मं०) सिलाई का टांका।
**तरुपणी**—स्त्री० (मं०, कां०, ऊ०) सूई।
**तरुपा**—पु० लंबा टांका।
**तरेंठी**—वि० (कु०, कां०) दुर्बल, कमज़ोर।
**तरेइयां**—पु० (मं०) तीसरे दिन आने वाला ज्वर।
**तरेई**—वि० तेईस।
**तरेक**—वि० (सि०) तीन, प्रश्न आदि लगाते समय ही प्रयुक्त होता है।
**तरेची**—स्त्री० किसी संबंधी से मिली संपत्ति।
**तरेड़**—स्त्री० (कां०) दरार।
**तरेड़**—स्त्री० (सि०) जल्दी-जल्दी कार्य करने की क्रिया।
**तरेड़ना**—स० क्रि० (कु०, सि०) उतारना।
**तरेड़ना**—अ० क्रि० (सि०) किसी के साथ मुकाबला करने को तैयार होना।
**तरेड़ा**—पु० (चं०, कां०, ऊ०) कुंडली, सांप का गोलाकार मंडल। घड़े आदि के नीचे रखने का गोलाकार उपकरण।
**तरेढ़ा**—वि० (चं०) टेढ़ा।
**तरेदस**—स्त्री० (मं०) त्रयोदशी।
**तरेनुए**—वि० (मं०) तिरानवे।
**तरेयांबल**—पु० (मं०) गूलर, एक फल विशेष।
**तरेयोरा**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) तीन तहों वाला।
**तरेर**—स्त्री० (शि०) तलवार।
**तरेळ**—स्त्री० ओस।
**तरेलड़**—पु० तीन पुत्रियों के पश्चात् उत्पन्न हुआ पुत्र।
**तरेळा**—पु० वर्षा की बौछार।
**तरेली**—वि० (कु०) तीसरे नंबर का।
**तरेळी**—स्त्री० ठंडा पसीना।
**तरेशला**—**वि० (कु०) तीन शाखाओं वाला।**
**तरेस**—स्त्री० (ह०) नाराज़गी।
**तरेहट**—वि० **तिरसठ**।
**तरेहरा**—वि० (कु०, मं०) तीन तहों वाला, तीन बार का।
**तरैंबल**—पु० गूलर, एक वृक्ष विशेष।
**तरैंबलू**—पु० 'तरैंबल' में लगने वाला छोटा फल।
**तरैखड़**—वि० बिदकने वाला।
**तरैखड़ना**—अ० क्रि० बिदक जाना।
**तरैपा**—वि० तीन पांव वाला।
**तरैखणा**—स० क्रि० (सो०, सि०) तैयार करना।
**तरो:टा**—पु० (सि०) गट्ठा।
**तरोटा**—पु० (ह०) बड़ा छेद। हानि।
**तरोटा**—पु० (शि०) पुल का किनारा।
**तरोड़**—पु० (चं०) घाटा, हानि।
**तरोड़ा**—पु० (मं०) पौधे की छाल।
**तरोणा**—वि० (ह०) बहू का मायके से तीसरी बार गृह प्रवेश।
**तरोणा**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) उतरा जाना।
**तरोणा**—स० क्रि० (बि०) घुसेड़ना।
**तरोल**—वि० (कु०) ब्याने के लिए बिल्कुल तैयार।
**तरोळा**—पु० (शि०, कु०) जी मतलाने का भाव।

**तरोश**—पु० (सो०) शीशे का प्रतिबिंब।
**तरोशणा**—अ० क्रि० (सो०) प्रकाशित होना।
**तरौके**—स्त्री० तरक्की, उन्नति।
**तरोखा**—पु० (सि०) अचानक चौंकने का भाव।
**तरौट**—स्त्री० (कु०) बड़ी दरार।
**तरौड़ा**—पु० (कु०) वृक्ष आदि की बड़ी जड़।
**तरौणा**—स० क्रि० (सि०) दुखाना।
**तरौहटणा**—अ० क्रि० (कु०) फिसलना।
**तलंज**—पु० (चं०) Vibernum nervosum.
**तलकवास्ता**—पु० (कु०) संपर्क।
**तलकेदार**—पु० (कां०, चं०) हिस्सेदार।
**तलकोणा**—अ० क्रि० ऊपर उठने का प्रयत्न करना, किसी कार्य को करने को तत्पर होना, किसी को बहकाने या धन के मद में आकर कुछ काम करने को उतावले होना।
**तलखी**—स्त्री० खीफ, गुस्सा।
**तलछ**—स्त्री० चक्कर आने का भाव, मूर्छा।
**तलछणा**—स० क्रि० (कां०) दो वस्तुओं को ऊपर नीचे करके मिलाना।
**तलछेरना**—अ० क्रि० (कां०, चं०) चक्कर आना, गिर जाना।
**तलटा**—पु० (सो०) मक्की भूनने का बड़ा तवा।
**तलड़**—पु० (बि०) कक्ष जहां पशु बांधे जाते हैं तथा उसके ऊपर घास-फूंस,चारा आदि रखा जाता है, गोशाला।
**तलड़ी**—स्त्री० (कां०) गोशाला की दूसरी मंज़िल।
**तलड़ी**—स्त्री० (सो०) आलू की तरह की जंगली कंद।
**तलड़ू**—पु० (ह०) मकान की ऊपर की मंज़िल।
**तलण**—स्त्री० (सि०) खलिहान पर बना छोटा कमरा जहाँ अन्नादि रखा जाता है।
**तळना**—स० क्रि० (कु०) घराट को तराशना।
**तलना**—स० क्रि० घी या तेल में पकाना।
**तळप**—पु० नीचे का फर्श।
**तळपका**—स्त्री० तलने, पकाने, पकवान बनाने की क्रिया।
**तलफाड़डला**—पु० (मं०) शहतूत का वृक्ष।
**तलब**—स्त्री० (चं०) चाह, मांग।
**तलब**—पु० (बि०) बढ़िया सब्जी।
**तलमला**—पु० (कु०) बेचैनी।
**तलमलाट**—स्त्री० (शि०) व्याकुलता।
**तलमलाणा**—अ० क्रि० (शि०) छटपटाना।
**तलयाःना**—पु० (कु०) एक जंगली फूल जो बसंत ऋतु में सबसे पहले खिलता है।
**तलयाना**—पु० (ह०, ऊ०) तिल के पौधे की लकड़ी।
**तलयारनी**—स्त्री० (बि०, ह०, कां०) तिल का घास, तिल के पौधे के नीचे का हिस्सा जिसे जलाने के काम में लाया जाता है।
**तलयारू**—पु० तेल रखने का पात्र।
**तलवाई**—स्त्री० (चं०) तेल डाल कर ले जाने का पात्र।
**तलवाई**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) तलने का पारिश्रमिक।
**तलवाणा**—स० क्रि० वजन करवाना।
**तलवाना**—पु० (कु०, चं०) बुलाने की फीस।
**तलसणा**—स० क्रि० तलवे या हथेली को मलना।
**तलहैटी**—स्त्री० तलहटी, मैदानी जगह।
**तला**—पु० तालाब।
**तळा**—पु० पांव का निचला भाग। जूते का तला।
**तळा**—पु० (शि०) किसी वस्तु के नीचे का तल।
**तलाई**—स्त्री० (कां०) विवाह आदि शुभ अवसर पर रिश्तेदारों द्वारा दिया जाने वाला अन्न।
**तलाई**—स्त्री० (कां०) लकड़ी अलग करने की क्रिया।
**तलाई**—स्त्री० (कु०, चं०) छोटा तलाब।
**तलाए**—स्त्री० (शि०) छोटा तालाब।
**तलाओ**—पु० (सि०) सरोवर।
**तलाणा**—स० क्रि० तुलवाना, किसी वस्तु या पदार्थ में मिली दूसरी वस्तु को अलग करवाना।
**तलाथ**—पु० (शि०) पलटा, सब्जी चावल आदि हिलाने का उपकरण।
**तलारू**—पु० (मं०) तेल रखने का छोटा बर्तन।
**तलावणा**—स० क्रि० (सो०) तुलवाना।
**तलाशणा**—स० क्रि० (कु०, सि०) ढूंढना, तलाश करना।
**तलाशी**—स्त्री० तलाशी।
**तलाह**—स्त्री० इत्तलाह, सूचना।
**तलाहुला**—वि० (कु०, मं०) कम गहरा।
**तलियारा**—पु० (मं०, कु०) Sarcococca Saligna.
**तलिह्राना**—पु० (कु०) एक जंगली छोटा वृक्ष जिसमें हल्के नीले रंग के फूल लगते हैं।
**तली**—स्त्री० (कां०, चं०) पैर का निचला **हिस्सा, तलवा।**
**तली**—स्त्री० (ह०) भूमि को नर्म करने के उद्देश्य से बीज बोने से पहले की जाने वाली जोताई।
**तळी—स्त्री० (चं०) हथेली। पैर की तली**
**तळी**—स्त्री० (कु०, सि०, कां०) चक्की के दो पाटों में से निचला पाट, गोलाकार पत्थर जिस पर घराट घूमता है, चूल्हे का नीचे का पत्थर।
**तलीम**—स्त्री० तालीम, शिक्षा।
**तलीसूणा**—स० क्रि० (सि०) गोबर का ढेर जड़ से उठाना, गोबर साफ करना।
**तलुआं**—पु० तिल का लड्डू।
**तलुआर**—स्त्री० (कु०, कां०, ऊ०) तलवार।
**तलेरना**—स० क्रि० (कु०) अपने बश में करना।
**तलेवड़ी**—स्त्री० (शि०) तेल से बनी मिठाइयां।
**तलेह**—सर्व० (कु०) तुझे।
**तलेहरू**—पु० (कां०) छोटी किस्म की मछली।
**तलैड़ी**—स्त्री० दे० तलारू।
**तलोट**—वि० (चं०) निकृष्ट।
**तलोणा**—स० क्रि० (कां०, ह०, चं०) बराबरी करना, तोला जाना।
**तलोवां**—पु० (सो०) तिल का लड्डू।
**तलोशी**—स्त्री० (कु०) तेल रखने की कटोरी।
**तल्यारी**—स्त्री० (ह०) दे० तलारू।
**तल्लड़**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) दे० तलड़।

**तल्लड़**—पु० (मं०) तीसरी मंज़िल।
**तल्हणा**—स्त्री० बेचैन होकर किया जाने वाला प्रयत्न।
**तल्हणा**—अ० क्रि० (सि०) अभिमानी होना।
**तल्हणा**—अ० क्रि० (कु०) हिलना।
**तल्हाणा**—स० क्रि० (कु०) हिलाना।
**तल्होफना**—स० क्रि० ढूंढना, टटोलना।
**तवटू**—पु० (शि०, सि०, सो०) छोटा तवा।
**तवरसका**—पु० (मं०) मृत्यु के बाद तीसरे वर्ष किया जाने वाला श्राद्ध।
**तवी**—स्त्री० (सि०) मालपूए बनाने की तवी।
**तशपशिणो**—स० क्रि० (शि०) किसी वस्तु को खोजना, टटोलना।
**तशबीर**—स्त्री० (शि०, सो०, सि०) तस्वीर।
**तशमा**—पु० (सि०) तसमा, फीता।
**तसखरी**—स्त्री० चोर बाज़ारी, तस्करी।
**तसबीर**—स्त्री० तस्वीर, चित्र, मूर्ति।
**तसमो**—पु० (शि०) तसमा, फीता।
**तसमोई**—स्त्री० (शि०) खीर।
**तसला**—पु० लोहे का उथला बर्तन।
**तसिया**—पु० दुःख।
**तसीर**—स्त्री० तासीर, असर, प्रभाव, गुण।
**तसीर**—स्त्री० स्वभाव।
**तसील**—स्त्री० तहसील।
**तसौरा**—पु० (शि०, सि०) ताश खेलने वाला।
**तस्तरी**—स्त्री० प्लेट, तश्तरी।
**तस्मई**—स्त्री० खीर।
**तह**—स्त्री० परत।
**तहणो**—अ० (चं०) उस समय।
**तहत**—अ० अधीन।
**तहता**—पु० कड़ाही में खाद्य पदार्थ को उलटने-पलटने का उपकरण, पलटा।
**तहमत**—स्त्री० धोती की तरह बांधा जाने वाला वस्त्र विशेष।
**तहरना**—स० क्रि० (कु०) ताने के लिए लकड़ी में सूत पिरोकर रखना, ताकि उसे बांस की नली में डाला जा सके।
**तहलका**—पु० (चं०) शोर, खलबली।
**ताःईं**—अ० (बि०) तभी।
**ताःण**—अ० (सि०) तब।
**ताःथा**—पु० (सि०) हलवा भूनने के लिए बनी लोहे की विशेष कलछी।
**ताःलका**—वि० (कां०, ऊ०, ह०) तब का, उस समय का।
**ताःली**—अ० उसी वक्त, तब, उसी समय।
**ता**—अ० (कु०) तो, और।
**ता**—पु० आंच, गर्मी, ताप।
**ता**—पु० दोहरा कागज़।
**ताइ**—स्त्री० (शि०) चाची।
**ताइद**—पु० (शि०) सहमति।
**ताई**—सर्व० (सि०) तुझे।
**ताई**—अ० (कु०) तक।
**ताईं**—अ० (शि०) समीप, निकट।
**ताउटू**—पु० (शि०, सो०) रोटी बनाने का छोटा तवा।
**ताउटे**—स्त्री० (शि०) बड़ी कड़ाही।
**ताउणा**—स० क्रि० (सि०) खींचना।
**ताउरा**—वि० (मं०) लंबा पड़ा हुआ।
**ताउला**—वि० (सि०, कां०) जल्दबाज़।
**ताउहा**—वि० (कु०, सि०) कम गहरा।
**ताऊ**—पु० ताया, चाचा।
**ताऊरा**—पु० (शि०) ताया का लड़का।
**ताऊला**—वि० (शि०) धूप वाला भाग।
**ताऊळा**—वि० (शि०) उत्सुक।
**ताएं**—अ० (कां०, ह०) के लिए।
**ताओ**—पु० (चं०) पैर का निचला भाग, तलवा।
**ताओ**—पु० (सि०) हलवा बनाते समय भुने हुए आटे में पानी डालने का समय।
**ताओ**—पु० वस्तु निर्माण के लिए धातु के गरम होने की स्थिति।
**ताओरा**—पु० (मं०) पति या पत्नी का ताया।
**ताक**—स्त्री० प्रतीक्षा।
**ताक**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) नेफा, पायजामे, लहंगे आदि का वह ऊपरी भाग जिसमें इजारबंद पिरोया जाता है।
**ताक**—पु० कमरे की दीवार में बना छोटा सा झरोखा जिसमें सामान रखा जाता है।
**ताकड़ा**—वि० (शि०) स्वस्थ।
**ताकड़ी**—स्त्री० (मं०) तकली।
**ताकड़ी**—स्त्री० (सो०, सि०) तराजू।
**ताकड़ी**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) बहुत छोटी खिड़की।
**ताकड़े**—वि० (शि०, सि०) तेज, स्वस्थ।
**ताकणा**—स० क्रि० देखना, निहारना, चुपके से देखना।
**ताकणा**—स० क्रि० (शि०) कमज़ोर देखकर ललकारना।
**ताकत**—स्त्री० शक्ति।
**ताकला/डा**—पु० (मं०) चरखे में लगी लोहे की तकली।
**ताकली**—स्त्री० तकली।
**ताकळू**—पु० (सि०) तकली।
**ताकी**—स्त्री० खिड़की।
**ताकौली**—स्त्री० (सि०) तकली।
**ताखाण**—पु० (मं०) तरखान, बढ़ई।
**ताखे**—सर्व० (सो०) तुझे।
**ताखें**—अ० (मं०) उधर।
**तागड़ी**—स्त्री० (सि०) करधनी, धागे आदि की करधनी, कटिसूत्र।
**तागणी**—स्त्री० (सो०) दे० तागड़ी।
**तागत**—स्त्री० (शि०, सि०) ताक़त।
**तागा**—पु० (सो०) धागा।
**तागा**—पु० (सि०) यज्ञोपवीत, जनेऊ।
**तागो**—पु० (शि०) यज्ञोपवीत, जनेऊ।
**ताछणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) बसोले से किसी वस्तु की सफाई करना।
**ताछो**—वि० जो कुछ नहीं जानता हो, अनभिज्ञ।

**ताज़गे**—स्त्री० (शि०, सि०) ताज़गी।
**ताजड़ी**—वि० (सि०, कां०, ऊ०) ताज़ी।
**ताजपोशी**—स्त्री० राजतिलक।
**ताज़ा**—वि० ताज़ा।
**ताज़िणा**—अ० क्रि० (कु०) ज़ख्म भर जाना।
**ताजे**—पु० (मं०) गरम-गरम भोजन।
**ताजे**—स्त्री० (सि०, शि०) एक पक्षी विशेष।
**ताज़ो**—वि० (शि०, सि०) ताज़ा।
**ताटी**—स्त्री० (मं०) दुकान या मंदिर के आगे का छोटा आंगन।
**ताठी**—स्त्री० (मं०) बहाई हुई मिट्टी, बालू आदि से नदियों के मुहाने पर बनी तिकोनी भूमि जो इधर-उधर बहने वाली धाराओं से घिरी होती है, डेल्टा।
**ताड़**—अ० (ह०) एक के बाद तुरंत किया दूसरा काम।
**ताड़देणा**— स० क्रि० (सि०) खींचना।
**ताड़ना**—स० क्रि० (कु०) दूर से झांकना।
**ताड़ना**—स० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) मक्खन को गरम करके घी बनाना।
**ताड़ना**—स० क्रि० (मं०) फेंकना।
**ताड़ना**—स० क्रि० (कु०) बिछाना, अन्न के दानों को सुखाने हेतु फैलाना।
**ताड़ना**—स० क्रि० खरी खोटी सुनाना, डांटना, जांचना, मापना।
**ताड़बाजी**—स्त्री० (चं०, ऊ०, कां०) मापने की क्रिया, डांट डपट, दबाव डालने की क्रिया।
**ताड़ा**—पु० (सि०) बांस की चपती जिससे टोकरी बनती है।
**ताड़ा**—पु० (कु०) विस्तार, दूरी, फैलाव, फासला।
**ताड़ी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) समाधि, पालथी।
**ताड़ी**—स्त्री० (सि० सो०) ताली, पालथी मार कर बैठने की क्रिया।
**ताड़ी**—स्त्री० (चं०) चावल की शराब।
**ताण**—स्त्री० (कां०, ऊ०, चं०) अंगड़ाई। गुस्सा।
**ताण**—अ० (बि०, ह०) तब।
**ताण**—स्त्री० (कु०) खिंचाव।
**ताण**—स्त्री० (सि०, सो०, शि०) शक्ति, क्षमता।
**ताणना**—स० क्रि० (कु०, सि०) लंबा करना, फैलाना, तानना।
**ताणना—स० क्रि० (कां०) खड्डी में ताना लगाना। फैलाना।**
**ताणनो—स० क्रि० (सि०) धनुष आदि खींचना। ओढ़ना,** फैलाना।
**ताणा**—पु० (कु०, कां०) करघे में लंबाई की ओर फैलाया गया सूत।
**ताणा**—स० क्रि० (शि०) मक्खन से घी बनाना।
**ताणा**—स० क्रि० (ह०) छांटना।
**ताणाबाणा**—पु० ताना-बाना, षड्यंत्र।
**ताणिना**—स० क्रि० (कु०) खींचा जाना।
**ताणी**—स्त्री० (कु०) ताना, हथकरघा।
**तातड़ो**—वि० (सि०, शि०) थोड़ा गरम।
**ताता**—वि० गरम।
**तातो**—वि० (सि०) गरम।
**तादी**—अ० (कु०) उस दिन।
**तान**—पु० (कां०) नखरा, लय।
**तान**—स्त्री० संगीत, स्वरों की लय।
**तान**—पु० (शि०) विस्तार, फैलाव।
**तानाशाई—स्त्री० (शि०) तानाशाही।**
**तान्हा**—पु० ताना, उलाहना।
**ताप**—पु० बुखार।
**तापणा**—स० क्रि० (सि०) सेंकना, तापना।
**तापणा**—अ० क्रि० ज्वरग्रस्त होना।
**तापणी**—स्त्री० (शि०) आग।
**तापती**—स्त्री० (शि०) बहुत गरम मौसम।
**तापाई**—स्त्री० (शि०) छोटी मेज़।
**तापिणो**—स० क्रि० (शि०) सेंकना। अ० क्रि० गुस्से में आना।
**ताप्या**—वि० (बि०, चं०, कां०) ज्वर से पीड़ित।
**ताब**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) धातु को तपाने या पकाने के लिए पहुंचाई जाने वाली गर्मी।
**ताब**—स्त्री० (सो०) धैर्य, अनुकूलता की स्थिति।
**ताबड़ा**—पु० (शि०) गरदन से ऊपर का सिर का भाग।
**तामस**—पु० (कां०) शारीरिक गर्मी, गर्माहट।
**तामसी**—वि० क्रोधी।
**तामसु**—पु० (कु०) पतीला।
**तामसे**—पु० (शि०) पतीला।
**तामू**—सर्व० (शि०) तुम्हें।
**तायता**—पु० (सि०, सो०) पलटा।
**तायस**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) पति या पत्नी की ताई।
**तायसू**—स्त्री० (मं०) पति की ताई।
**ताया**—पु० (शि०) दे० ताऊ।
**तार**—स्त्री० बिजली की तार।
**तार**—स्त्री० (कां०) बांस का लंबा डंडा। रेशा।
**तार**—स्त्री० (कु०) क्रोध, खुमार, पागलपन। तार।
**तारकोळ**—पु० तारकोल, अलकतरा।
**तारगुह**—पु० (कु०) उल्कापिंड।
**तारण**—पु० (शि०) पार उतरने की क्रिया।
**तारणहार**—पु० (शि०) संसार सागर से पार कराने वाला, भगवान्।
**तारणी**—स्त्री० (शि०) नौका।
**तारना**—स० क्रि० (कु०) उबालना।
**तारना**—स० क्रि० (शि०, बि०) पार लगाना।
**तारपीन**—स्त्री० (शि०) चीड़ के बिरोज़े का तेल।
**तारला**—वि० (मं०) माथे पर सफेद निशान वाला बैल।
**तारलू**—पु० (सि०) Oroxylum indicum. स्योनाक, एक वृक्ष विशेष।
**तारसुर**—स्त्री० (शि०, चं०, कां०) धुन।
**ताराrति**—स्त्री० (मं०) शिव सगाई।
**तारी**—स्त्री० (कु०) तैरने की क्रिया।
**तारी**—वि० (कु०) क्रोधी स्वभाव का।
**तारीफ**—स्त्री० प्रशंसा।
**तारु**—पु० (मं०, सि०) पशु की खाल पर बैठकर नदी पार

करने वाला व्यक्ति, गोताखोर।

**तारूआ**—वि० (कु०) तला हुआ।

**तारो**—पु० (सि०) सितारा।

**तारो**—वि० (शि०, सि०) समूल नष्ट।

**ताल**—पु० (शि०) रुका पानी, तालाब। स्वर।

**तालका**—पु० (चं०) पाजामे का आसन।

**तालटा**—पु० (सि०) लोहे की सलाई जैसी छड़ जिसे गरम करके बीमार के शरीर में छुआते हैं।

**तालटी**—स्त्री० (सि०) दे० तिकतिक।

**तालटू**—पु० (सि०, शि०) खोपड़ी का मध्य भाग; छोटे बच्चे का तालू।

**तालडू**—पु० (सि०) गोशाला की ऊपरी जगह जहां लकड़ी, घास आदि रखते हैं।

**तालणा**—स० क्रि० (सि०) अनाज को घास से अलग करना, छांटना।

**तालना**—स० क्रि० छांटना, चुनना।

**ताळना**—स० क्रि० (कां०, बि०) कूड़ा करकट निकालना।

**तालमेल**—पु० (कु०) मेल-जोल।

**ताळा**—पु० ताला।

**ताळा**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) रजाई का गिलाफ।

**ताळा**—पु० (कां०) खेत में से घास आदि उखाड़ने की क्रिया, पलटने की क्रिया।

**ताळा**—पु० (सि०, शि०) लोहे का एक टेढ़ा उपकरण जो दरवाज़े को बंद करने या खोलने के काम आता है।

**ताळामोळा**—पु० (शि०) भेद, रहस्य।

**ताळी**—स्त्री० (शि०) चाबी, ताली।

**तालु**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) तालु, सिर।

**ताळु**—पु० (कु०) तालु, सिर।

**ताळु**—पु० (कां०) दिमाग, सिर का मध्य भाग।

**ताल्टे**—स्त्री० (शि०) चाबी।

**ताव**—पु० (शि०) गर्मी, क्रोध का आवेश।

**तावकली**—स्त्री० (सि०) गेहूं में लगने वाला घास।

**तावण**—पु० (मं०) पकवान तैयार करने की भट्ठी।

**तावणा**—स० क्रि० (मं०, सि०, सो०) गरम करना, भूनना, मक्खन को गरम करके घी बनाना।

**तावना**—स० क्रि० (शि०) तपाना।

**तावलो**—वि० (शि०) धूप वाला स्थान।

**तावळो**—वि० (शि०) तेज।

**तावळो**—वि० (शि०, सि०) उतावला।

**तावा**—पु० (शि०) तवा।

**तास**—स्त्री० ताश।

**तासल**—स्त्री० (कु०) तसली, कटोरे की शक्ल का बिना पेंदे का लोहे का पात्र।

**तासला/लू**—पु० (कु०, ह०) पशुओं को पानी पिलाने का लोहे का पात्र, तसला।

**तासली**—स्त्री० (सो०, सि०) सिर का मध्य भाग, गंजा सिर।

**तासली**—स्त्री० (मं०) चमड़े का वाद्य यंत्र।

**तासली**—स्त्री० (मं०) पतीले का ढक्कन।

**तासा**—पु० (सि०) बाजा।

**ताहिबे**—सर्व० (मं०) तुझे।

**ताहुला**—वि० (कु०) कम गहरा, छिछला।

**ताहेरा**—पु० (मं०) वर या वधू का ताया।

**ताइरना**—स० क्रि० (चं०) पट्टू बुनने के लिए नलिका में धागा डालना।

**ताइरा**—सर्व० (शि०) तुम्हारा।

**तिंआं**—सर्व० 'से' (वह स्त्री वाचक का कारकीय रूप) यथा 'तिंआंखे' (उस स्त्री को), 'तिंआंदा' (उस स्त्री में) आदि।

**तिंऊं**—सर्व० 'सेई' (वे, पुलिंग बहुवचन का कारकीय रूप) यथा 'तिंऊंरा' (उनका), 'तिंऊंखे' (उनको), 'तिंऊंरी' (उनकी) आदि।

**तिंए**—सर्व० (सो०) उस (स्त्री) ने।

**तिंगड़ना**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) अकड़ना, नाराज़ होना, घूरना।

**तिंथिये**—अ० (कां०) वहां से, उधर से।

**तिंदरो**—सर्व० (शि०) उनका।

**तिंदा**—सर्व० (सि०, सो०) उसमें।

**तिंदो**—वि० (शि०) गीला।

**तिंबर**—स्त्री० (चं०, सि०, कु०) एक छोटी सी झाड़ी जिसके दाने और पत्ते पीस कर नाखून लाल करने के लिए अंगुलियों पर लगाये जाते हैं।

**तिंबर**—पु० (चं०, मं०, कां०) Zanthoxylum alatum.

**तिंबर**—पु० (मं०) Impatiens thomsoni.

**तिंबर**—पु० (सो०, कु०) दे० टिंबर।

**तिंबरोल्टू**—पु० (सि०) 'तिंबर' के दाने।

**तिंबल**—पु० (सो०) गूलर का वृक्ष तथा उसके फल।

**तिइयां**—सर्व० (मं०) वे।

**तिउड़ी**—स्त्री० (सो०, सि०) तेवर।

**तिउरी**—स्त्री० (शि०) दे० तिउड़ी।

**तिऊ**—सर्व० (कु०) उसने।

**तिओं**—सर्व० (सि०) उसको (स्त्री वाचक)।

**तिओंगळ**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) खलिहान में काम आने वाला लंबी हत्थी का लकड़ी का पंजा।

**तिओण**—पु० (शि०) बड़े उत्सव में खाना बनाने का बड़ा चूल्हा।

**तिकड़म**—पु० (शि०) दावंपेंच।

**तिकड़मी**—वि० चालाक, होशियार, चुस्त।

**तिकतिक**—स्त्री० (कु०) सिर के ऊपर नाजुक सी जगह जो बचपन में काफी नरम होती है और बाद में सख्त हो जाती है।

**तिकर**—अ० (कां०) तक।

**तिकुणा**—वि० (शि०) तीन कोने वाला।

**तिकोड़ी**—स्त्री० (शि०) तीन कड़ियां।

**तिक्खा**—वि० तेज, नोकदार। तेज चलने वाला।

**तिक्खु**—वि० बहुत तेज, कुशल।

**तिखणा**—वि० (बि०, ऊ०, कां०) तीक्ष्ण, तेज (विशेष कर स्वाद के लिए प्रयुक्त होता है)।

**तिखणी**—स्त्री० (कां०, चं०, ऊ०) मिर्च।
**तिखा**—वि० (शि०) टेढ़ा।
**तिखुंटा**—वि० (शि०) दे० तिकुणा।
**तिगड़**—पु० (चं०) मोटा पेट।
**तिगड़िना**—अ० क्रि० (कु०) किसी चीज़ तक पहुंचने की कोशिश करना।
**तिगड़ी**—स्त्री० (सि०) कमर।
**तिगणा**—वि० तीन गुणा।
**तिच्छना**—स० क्रि० (सि०) टुकड़े-टुकड़े करना।
**तिछणा**—स० क्रि० (कु०) छीलना, तराशना।
**तिछा**—वि० (कु०) तीखा, तेज धार वाला।
**तिज़ड़**—वि० जो गाय या भैंस तीसरी बार गाभिन हुई हो।
**तिजा**—वि० तीसरा।
**तिजे**—अ० (शि०) तीसरे दिन।
**तिज्जो**—सर्व० तुझे।
**तिड़णा**—अ० क्रि० (सि०) दरार पड़ना।
**तिड़णो**—अ० क्रि० (शि०) दरार पड़ना।
**तिड़ना**—अ० क्रि० छोटी-छोटी दरारें पड़ना।
**तिड़िकना**—स० क्रि० (शि०) हड्डी से जुड़े मांस को दांतों से खींच कर खाना।
**तिड़ी फिड़ी**—स्त्री० (चं०) तड़पन, उदासी।
**तिढ़ी**—अ० (चं०) वहां।
**तिणकदा**—वि० (सि०) सख्त, तेज़।
**तिणका**—पु० तिनका।
**तिणनो**—स० क्रि० (शि०) खींचना।
**तिणिया**—वि० (सि०) खिंचा हुआ।
**तिणीएं**—सर्व० (सि०, शि०, सो०) उसने (पुरुष वाचक)।
**तितणा**—पु० (कु०) चीड़ आदि वृक्षों के बीज कोश।
**तितणा**—वि० उतना।
**तितर**—पु० तीतर पक्षी।
**तितर बितर**—अ० (शि०) इधर-उधर।
**तितरा**—सर्व० (बि०) उसका (नपुंसक लिंग में)।
**तितरी**—स्त्री० (मं०, कु०) एक वृक्ष विशेष जिसके फल खट्टे होते हैं।
**तितरी**—स्त्री० (चं०) तितरी फल से बनी दवाई जो खट्टे स्वाद की होती है।
**तितरी**—स्त्री० (सि०) एक पौधा जिसके पत्ते चारे के काम आते हैं।
**तितरो**—पु० (शि०) तीतर।
**तितला**—पु० (चं०) Aconitum Violaceum. एक विषैला पौधा।
**तिति**—स्त्री० (शि०) छाती।
**तित्थू**—अ० (बि०, कां०, ह०) उधर, वहां।
**तिथ**—स्त्री० (सो०) मृतक का मासिक श्राद्ध।
**तिथ**—पु० प्रविष्टे, देसी महीने की तिथि।
**तिदा**—अ० (शि०) वहां।
**तिदा**—सर्व० (कां०, बि०, ऊ०) उसका।
**तिधर**—अ० (शि०) उधर, उस ओर।
**तिधाड़ी**—अ० उस दिन, तब।
**तिधातिकर**—अ० वहां तक।
**तिधेरा**—सर्व० (चं०, कां०) उसका।
**तिन**—वि० तीन।
**तिनका**—सर्व० (शि०) उनका।
**तिनरा**—सर्व० (शि०) उनका।
**तिनाः**—सर्व० उन्होंने।
**तिनाखा/खे**—सर्व० (सि०, सो०) उनको।
**तिनी**—सर्व० उसने।
**तिनीए**—अ० (कां०, ऊ०, ह०) उस ओर।
**तिनीए**—सर्व० (सो०) उन्होंने।
**तिने**—सर्व० (बि०) उसने।
**तिने**—सर्व० (सो०) उन्होंने (पुंलिंग)।
**तिनोखे**—सर्व० (सि०) उनके लिए।
**तिन्हा**—सर्व० (कु०) 'ते' (उनका) कारकीय रूप, 'तिन्हे' (उन्होंने) 'तिन्हाबे' (उनको) 'तिन्हा-रा' (उनका) 'तिन्हा-न' (उनमें)।
**तिपतिप**—स्त्री० टिप-टिप का स्वर, द्रव पदार्थ के बूंद-बूंद गिरने की ध्वनि।
**तिपतिप**—स्त्री० (कु०) पलकें झपकाने की क्रिया।
**तिपतिपो**—वि० (शि०) बिना स्वाद वाला, अस्वादिष्ट।
**तिपाई**—स्त्री० (शि०) तीन पायों वाली छोटी चौकी।
**तिबारा**—अ० (शि०) तीसरी बार।
**तिमि**—अ० (बि०) वहां।
**तियां**—अ० (बि०) जैसा, वैसा, जैसे, वैसे।
**तियां**—सर्व० (शि०) उसने (स्त्रीवाचक)।
**तिया**—वि० तीसरा।
**तियार**—वि० तैयार।
**तियारी**—स्त्री० तैयारी।
**तियुण**—पु० (ह०) पकाई सब्जी।
**तियूं**—वि० (शि०) वैसा ही।
**तियूर**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) फसल में उगा एक हरा पौधा जिसके पत्तों को पीस कर मेहंदी तैयार की जाती है।
**तियो**—सर्व० (सि०) उसको।
**तियोड़ी**—स्त्री० (चं०) पीठ पर उठाया जाने वाला बोझ।
**तिरखणा**—स० क्रि० (शि०) नमक का स्वाद लेना।
**तिरखान**—पु० (शि०) तरखान।
**तिरगुला**—वि० (शि०) छिद्र वाला।
**तिरछा**—वि० टेढ़ा।
**तिरण**—पु० (सि०) मकान की छत पर मिट्टी डालने से पूर्व बिछाए घास पत्ते।
**तिरपट**—वि० (शि०) टेढ़ा।
**तिरपाई**—स्त्री० (शि०) कच्ची सलाई।
**तिरपाल**—पु० (शि०) तिरपाल।
**तिरपित**—वि० (शि०) तृप्त हुआ।
**तिरमळ**—पु० (सि०) एक बड़े पत्तों वाला वृक्ष विशेष जिसके पत्तों से पत्तलें बनाई जाती हैं।
**तिरमिरा**—पु० एक झाड़ी विशेष जिसकी दातुन लगाई जाती है।

**तिरमिरी**—स्त्री० 'तिरमिरा' की दातुन लगाने से मुंह में पड़ने वाला स्वाद।
**तिरवेणी**—स्त्री० (शि०) त्रिवेणी।
**तिरशूल**—पु० (शि०) त्रिशूल।
**तिरहानी**—स्त्री० (मं०) Geranuim nepalerse.
**तिरा**—पु० (सि०) दीवार में बनी छोटी अलमारी, मधुमक्खी के लिए दीवार में बनाया खोखला स्थान।
**तिराना**—पु० (शि०) तराना, गीत।
**तिरावट**—स्त्री० (शि०) चिकनाहट।
**तिरासना**—स० क्रि० (शि०) कष्ट देना।
**तिरिया**—स्त्री० (शि०) स्त्री।
**तिरी**—स्त्री० (कु०, सि०) दीवार में बनाया छोटा रोशनदान।
**तिरैर**—स्त्री० (शि०) तलवार।
**तिरो**—पु० (शि०) **दीवार में बनी छोटी अलमारी।**
**तिरोई**—स्त्री० (सि०) घरवाली, औरत।
**तिरोथ**—पु० (सि०) तीर्थ।
**तिल**—पु० शरीर पर निकला छोटा काला दाग।
**तिलक**—स्त्री० (मं०) बत्तीस गज मलमल की बनी घाघरी।
**तिलकणा**—अ० क्रि० फिसलना।
**तिलकणा**—वि० फिसलन वाला।
**तिलकु**—पु० माथे पर सफेद निशान वाला पशु।
**तिलखणा**—अ० क्रि० (सि०) पागल होना।
**तिलगरी**—स्त्री० (सो०) तिल की रेवड़ी।
**तिल चाउली**—स्त्री० (कु०) तिल-चावल। एक त्योहार जिसमें तिल और चावल मिलाकर खाए जाते हैं।
**तिल चौली**—स्त्री० (कां०, ह०) 'लोहड़ी' के त्योहार के अवसर पर बनाया तिल, चावल,गुड़ और घी का मिश्रण जिसे अग्नि पूजा के बाद खाया जाता है।
**तिल चोली**—स्त्री० (चं०) एक गीत जिसे विवाह में दूल्हा के जाने के बाद स्त्रियां गाती हैं।
**तिलछणा**—स० क्रि० (कां०) छीलना, छिलका उतारना।
**तिलटे**—स्त्री० (शि०) नाक का आभूषण जो सोने या चांदी का होता है।
**तिला**—पु० (कु०, सि०) तिल के आकार का काला दाग जो शरीर पर होता है।
**तिलाई**—स्त्री० (शि०) बिछौना।
**तिली**—स्त्री० नाक का आभूषण जो सोने या चांदी का होता है।
**तिली**—स्त्री० (शि०) प्लीहा।
**तिलु**—पु० (शि०, सो०) Juniperus squamata. अजगंधा।
**तिलो**—पु० (शि०) दे० तिला।
**तिलोड़ी**—स्त्री० (कां०, ऊ०, चं०) रेवड़ी।
**तिल्ला**—पु० (मं०) दे० तिला।
**तिल्ला**—पु० (ह०) पक्षी विशेष।
**तिल्ला**—पु० गोटा-किनारी, बादला।
**तिल्लापत्ती**—स्त्री० (ऊ०) Roylea Calycina.
**तिल्लापत्री**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) Roylea Cineerea.
**तिल्ली**—स्त्री० पसलियों के नीचे पेट की बाईं ओर उभरी नर्म गुठली।
**तिल्ली**—स्त्री० कद्दू या तोरी के बीच की झिल्ली।
**तिल्ली**—स्त्री० (चं०) पशु के मुंह का एक भाग।
**तिल्ली**—स्त्री० (चं०) दे० तिला।
**तिल्ली**—स्त्री० नाक का आभूषण जो सोने या चांदी का होता है।
**तिशा**—वि० (शि०, सि०) वैसा, उस प्रकार का, तैसा।
**तिशोई**—अ० (सि०) वैसे, उसी तरह ही।
**तिस**—सर्व० 'स' (वह) का पुरुषवाचक कारकीय रूप 'तिसजो' (उसको) 'तिसरा' (उसका) 'तिसकन्ने' (उसके साथ)।
**तिसा**—सर्व० 'स' (वह) का स्त्रीवाचक कारकीय रूप। 'तिसा जो' (उस स्त्री को), 'तिसरा' (उसका), 'तिसाकने' (उसके साथ)।
**तिसै**—अ० (कु०) उधर, उस ओर।
**तिह**—वि० तीस।
**तिहण**—स्त्री० (कु०) विवाह आदि उत्सव पर रसोई बनाने के लिए बनाया लंबा चूल्हा।
**तिहां**—अ० (कां०, चं०) उसी प्रकार, उसी तरह।
**तिहार**—पु० (कु०) वर्ष में विभिन्न त्योहार के अवसर पर निम्न जाति के लोगों को दिया जाने वाला भोजन।
**तिहार**—पु० त्योहार के अवसर पर विवाहित लड़कियों को दी जाने वाली भेंट (जैसे कपड़े, पकवान, चूड़ियां, पैसे आदि)।
**तींग**—वि० (बि०) बदमाश, गुंडा।
**तीं:गणा**—स० क्रि० (कां०) खींचना, वास्तविक आकार से खींच कर लंबा करना।
**तींबुर**—पु० (शि०) एक कांटेदार झाड़ी विशेष।
**तीक**—स्त्री० (कु०) सीधा निशाना।
**तीकै**—अ० (कु०) सामने।
**तीखणा**—वि० (मं०, ह०, कां०) तीखा।
**तीखणी**—वि० (मं०, ह०) तीक्ष्ण स्वाद वाली (मूली, मिर्च आदि)।
**तीग**—स्त्री० (ह०) लंबी भट्ठी।
**तीगुए**—वि० (कु०) चुने हुए, थोड़े से।
**तीछा**—वि० (मं०, कु०) तेज, तीक्ष्ण, तेज धार वाला।
**तीछू**—वि० (कु०) तीखे नैन नक्श वाला।
**तीज**—स्त्री० तृतीया तिथि; तीज का त्योहार।
**तीजा**—वि० तीसरा।
**तीड़**—स्त्री० (बि०, सि०) पतली दरार।
**तीणना**—स० क्रि० (कु०) खींचना, निकालना।
**तीणिना**—अ० क्रि० (कु०) अंगड़ाई लेना। स० क्रि० निकाला जाना, खींचा जाना।
**तीणो**—वि० (शि०) वैसा।
**तीतर**—पु० (कु०) एक पक्षी विशेष।
**तीथी**—अ० (मं०) वहां।
**तीथी**—स्त्री० तारीख।
**तीन माही**—वि० (मं०) त्रैमासिक।
**तीना**—पु० (शि०, सि०) लग्न। बुढ़ापे के कारण होने वाला

चिड़चिड़ापन।
**तीर**—पु० (चं०) निशाना।
**तीरकवाण**—पु० तीर कमान, धनुष बाण।
**तीरथ**—पु० तीर्थ।
**तीरसीर**—वि० (कां०) बहुत कम पानी।
**तीरा**—पु० (सो०) घर की छोटी वस्तुओं को रखने के लिए दीवार में बना छोटा आला। मधुमक्खियों को बिठाने के लिए दीवार में बना आला जिसमें बाहर की ओर छेद होता है।
**तीरा**—पु० कमीज़ का वह भाग जो कंधे पर जोड़ा जाता है।
**तीरा**—पु० (सो०) खिड़की।
**तीरी**—स्त्री० (कु०) छोटी खिड़की, दीवार में बना छोटा रोशनदान।
**तीरी**—स्त्री० (सि०) मकान की दीवार में बनी अलमारी।
**तीरू**—पु० (मं०) खिड़की, छोटी अलमारी जो दीवार में बनी होती है, दीवार में बना आला।
**तीलं**—पु० दे० तिला।
**तील**—पु० तिल।
**तीली**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) छड़ी; तृण।
**तीली**—स्त्री० (कु०, कां०, ह०) नाक का आभूषण विशेष।
**तीलो**—पु० (सि०) तिल।
**तीश**—वि० (सि०, शि०) तीस।
**तीह**—वि० तीस।
**तुंग**—पु० (कु०, सि०, चं०) एक झाड़ी विशेष जिसकी दातुन की जाती है।
**तुंगड़ी**—स्त्री० (शि०) Vitis Himalayan.
**तुंद—स्त्री० (शि०) पेट। बहुत तेज आँधी।**
**तुंदी**—स्त्री० (शि०) नाभि।
**तुंब—पु० (कां०, ऊ०, ह०) हाथ से की गई टेढ़ी-मेढ़ी सिलाई।**
**तुंबड़ा**—पु० घीया प्रजाति की एक सब्जी विशेष।
**तुंबड़ा**—पु० घीये का सूखा खोल जिसमें लस्सी आदि रखी जाती है।
**तुंबड़ा**—पु० (सो०) कद्दू।
**तुंबड़ी**—स्त्री० (सो०) घीया।
**तुंबड़ू**—पु० (शि०) एक बर्तन विशेष।
**तुंबणा—स० क्रि० ऊन या कपास को हाथ से धुनना। किसी शस्त्र को आर-पार करना।**
**तुंबल**—पु० क्रोध।
**तुंबा**—पु० (कां०) रुई की पूनी। एक वाद्य यंत्र।
**तुंबा**—पु० (शि०) घीया का खोखला भाग।
**तुंबा**—पु० (कां०) चोट पर लगाने के लिए दवाई में भिगोया फाहा।
**तुंबी**—स्त्री० (बि०, चं०) तालु।
**तुःकि**—सर्व० (ह०, बि०) तुझे।
**तुआक**—पु० (कां०) द्वारपूजा।
**तुआड़**—स्त्री० (कु०, कां०) वमन, उलटी।
**तुआणा**—वि० सीधा लेटा हुआ।
**तुआणिना**—अ० क्रि० (कु०) सीधा लेटना।
**तुआर**—पु० (चं०) शरीर से उतारा हुआ पुराना वस्त्र।
**तुआर**—पु० रविवार।
**तुआर**—पु० (कु०) जन्म, ज़िंदगी, अवतार।
**तुआरना**—स० क्रि० (कां०, बि०, ऊ०) उतारना।
**तुऐं**—सर्व० (शि०) आपने।
**तुऐ**—अ० (मं०, कां०, ऊ०) कुत्ते को बुलाने का संबोधन शब्द।
**तुक**—पु० (सो०) मेल, जोड़।
**तुक्का**—पु० अनुमान।
**तुखम**—पु० (चं०) कद्दू।
**तुच्छमुच्छ**—पु० (चं०) अंधाधुंध, मारकाट।
**तुज**—सर्व० तुमने।
**तुजो**—सर्व० (मं०) तुम्हें।
**तुड़कणा**—स० क्रि० छौंक लगाना, छौंकना, बघारना।
**तुड़का**—पु० बात को बढ़ाने का भाव।
**तुड़को**—पु० (शि०) छौंक।
**तुड़णा**—अ० क्रि० (सि०) बकना, बड़बड़ाना।
**तुड़ना**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) टूटना।
**तुड़ान**—स्त्री० फल तोड़ने की क्रिया।
**तुड़ानी**—वि० फल तोड़ने वाले, पत्थर तोड़ने वाले।
**तुण**—पु० (मं०) लकड़ियों में पड़ी गांठ।
**तुणक**—स्त्री० थोड़ी सी वृद्धि। उकसाहट।
**तुणकणा**—स० क्रि० (कु०) बोझ को उठाकर वजन का अनुमान लगाना।
**तुणीह**—स्त्री० एक वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत व फर्नीचर के काम आती है।
**तुण्हा**—पु० (कु०) दे० तुण।
**तुतरी**—स्त्री० (मं०) लगातार निकलने की क्रिया।
**तुतरी**—स्त्री० (सि०) मुंह से बजाया जाने वाला एक **वाद्ययंत्र**।
**तुतला**—वि० तोतला।
**तुध**—सर्व० (मं०) तूने, तुझे।
**तुधका**—पु० (कु०) ऊंचा स्थान।
**तुन**—पु० (चं०) चूहे के बच्चे।
**तुनकणा**—स० क्रि० (ह०, चं०) दे० तुणकणा।
**तुनका**—पु० (सो०, कां०) झटका, उकसाहट।
**तुनकाणा**—स० क्रि० (सो०, शि०, सि०) भड़काना, उकसाना।
**तुनकी—स्त्री० (कु०) चांदी का कर्णाभूषण।**
**तुनखणा**—स० क्रि० (सि०) हठ करना।
**तुन्नणा**—स० क्रि० (चं०, कां०, ऊ०) ठूसना, भरना, बुरी तरह से पीटना।
**तुन्नी**—स्त्री० (सो०) एक पेड़ विशेष।
**तुन्नी**—स्त्री० (चं०, मं०, कां०) नाभि।
**तुन्नु**—पु० (बि०, ह०) नाभि।
**तुन्हणा**—स० क्रि० (कु०) बांस आदि के टूटे टोकरे या 'किरडा' आदि की मुरम्मत करना।
**तुन्ही**—स्त्री० (सो०) धुंध।
**तुपक**—स्त्री० (कु०) बंदूक।
**तुपा**—पु० (सो०, कां०, ऊ०) टांका, सूई द्वारा लगाया टांका।
**तुप्पणी**—स्त्री० बड़ी सूई।
**तुबक**—स्त्री० (चं०) बंदूक।

**तुमकाण**—स्त्री० (चं०) तंबाकू पीने की इच्छा।
**तुमकाण**—स्त्री० (शि०) तंबाकू की दुर्गंध।
**तुमड़ी**—स्त्री० (सि०) दे० तुंबड़ी।
**तुमड़ी**—स्त्री० (सि०) Trewia nudiflora.
**तुमड़े**—पु० (शि०) घीया प्रजाति के फल का सूखा खोल।
**तुमार**—पु० (चं०) झूठा आरोप।
**तुमारी**—वि० (चं०) झगड़ालू।
**तुमें**—सर्व० (शि०) तुम लोग।
**तुमो**—सर्व० (सि०) आप, 'तुमोदो' (आपसे), 'तुमोरा' (आपका) 'तुमोलाइए' (आपके द्वारा), 'तुमोसिते' (आपके साथ)।
**तुम्मण**—पु० (चं०) ढेर।
**तुरक**—वि० (कां०, ऊ०, बि०) बेलिहाज़।
**तुरकी**—स्त्री० (मं०) खसरा।
**तुरड़ी**—स्त्री० (सि०) बिदारी कंद।
**तुरत**—अ० तुरंत।
**तुरना**—अ० क्रि० (कु०) घुसना, प्रवेश करना।
**तुरना**—अ० क्रि० चलना।
**तुरपणा**—स० क्रि० (सि०) कपड़ा मोड़ कर हाथ से सिलना।
**तुरपाई**—स्त्री० एक तरह की सिलाई।
**तुरफ**—स्त्री० (शि०) ताश के पत्तों का एक खेल।
**तुरशी**—स्त्री० (शि०) खटाई।
**तुरस**—वि० (मं०) हलका खट्टा।
**तुरिना**—अ० क्रि० (कु०) घुसा जाना।
**तुरीः**—पु० गंधर्व।
**तुरी**—स्त्री० (कां०, ह०) एक वाद्य यंत्र।
**तुरी**—स्त्री० (सि०) तोरी।
**तुरोई**—स्त्री० (सि०) तोरी।
**तुलकणा**—स० क्रि० (सि०) दे० तुणकणा।
**तुलका**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) उकसाहट।
**तुलका**—पु० (सि०) चाल।
**तुलटू**—पु० (शि०) छोटा तराजू।
**तुलणा**—अ० क्रि० (सि०) अड़ जाना।
**तुळणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) मकान को गिराये बिना पुनः मुरम्मत करना।
**तुळणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) मकान की मुरम्मत करना।
**तुलना**—वि० (शि०) तोतला।
**तुलना**—अ० क्रि० (शि०) तौला जाना।
**तुलषी**—स्त्री० (कां०) कृष्ण तुलसी।
**तुलार**—स्त्री० (सो०, कां०, ऊ०) तलवार।
**तुळी**—स्त्री० (सि०) घास का तिनका।
**तुळी**—स्त्री० (कु०) तिनका, दियासलाई।
**तुल्लू**—पु० (कां०, बि०, ह०) घराट में लगा हुआ लकड़ी का एक भाग जिस पर वह घूमता है।
**तुश**—पु० (कु०) अन्न का छिलका।
**तुशियारी**—स्त्री० (शि०) Debregeasia velutina.
**तुस**—पु० (मं०) धान का मोटा छिलका।
**तुसां**—सर्व० (कां०, ऊ०, चं०) आप, तुम।
**तुसा**—सर्व० (कु०) तुसे (तुम या आप) का कारकीय रूप, 'तुसा-बे' (तुम या आप को), 'तुसा-न' (तुम या आप से), 'तुसारा' (तुम्हारा या आपका)।
**तुसे**—सर्व० (मं०, सो०) तुम, आप।
**तुस्सा**—पु० (बि०) भगदड़।
**तुह**—पु० आटे का बूरा, चोकर।
**तुहणा**—स० क्रि० (मं०) जबरदस्ती भरना।
**तुहमत**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) दोषारोपण।
**तुहली**—स्त्री० (कां०, चं०, ऊ०) दियासलाई की तीली, तृण।
**तुहाड़ा**—पु० (ह०) गेहूं की फसल के बाद खेतों को जोतने की क्रिया।
**तुहार**—पु० त्योहार, उत्सव।
**तुहारखड़ू**—वि० (बि०, ह०, कां०) त्योहार के दिन पैसे व अन्न आदि मांगने वाले।
**तूंए**—सर्व० (सि०, शि०) तुम, आप।
**तूंग**—पु० (सि०, सो०, शि०) लकड़ी का बरामदा। जंगली पौधा विशेष।
**तूंबड़ू**—पु० (ह०, कां०, ऊ०) गोल घीया।
**तूंबड़ौ**—पु० (कु०) तूंबा, घीए के अंदर के बीज निकाल कर सुखाया गया खोल।
**तूंबा**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) कातने के लिए तैयार रुई या ऊन की बड़ी गोल पूनी।
**तूंबी**—स्त्री० (सि०) दे० तुंबड़ा।
**तूंबी**—स्त्री० (चं०, ह०) सिर का पिछला भाग।
**तूंहा**—पु० (सो०) धुआं।
**तू**—सर्व० तू, तुम।
**तूऐ**—सर्व० (शि०) आप।
**तूटणा**—अ० क्रि० (शि०) टूटना।
**तूड़**—पु० (शि०) टेक।
**तूड़**—पु० (सि०) तंबाकू या मिर्च का पुराना पौधा।
**तूड़बूड़**—वि० (कां०, ऊ०) संतुष्ट, हद से ज्यादा तृप्त।
**तूड़ा/ड़ी**—पु० (ऊ०, कां०) भूसा, अनाज को गाहने के बाद बचा घास।
**तूणा**—पु० (सि०) चीड़ की लकड़ी।
**तूणा**—पु० (ह०) एक तारा।
**तूत**—पु० शहतूत।
**तूनी**—पु० Cedrela toona. एक वृक्ष विशेष।
**तूपणू**—पु० (ह०) छोटी सूई।
**तूपा**—पु० (सो०) हाथ की सिलाई, सिलाई का टांका।
**तूमड़ी**—स्त्री० घीया।
**तूमना**—स० क्रि० (शि०) ऊन को छांटना।
**तूमू**—सर्व० (शि०) तुम्हें।
**तूरण**—पु० (चं०) तोरण।
**तूरन**—स्त्री० (शि०) 'तुरी' की स्त्री।
**तूळ**—स्त्री० (कु०) एक ओर पलड़े वाली और दूसरी ओर पत्थर वाली तराजू।
**तूळ**—स्त्री० घराट के साथ लगी लंबी, बारीक तथा मज़बूत लकड़ी जिससे घराट को ऊपर-नीचे किया जाता है। ताकि घराट मोटा या बारीक पीसे।

**तूलटु**—पु० (शि०) भारी वस्तु को उठाने के लिए प्रयोग की जाने वाली मज़बूत लकड़ी।
**तूलणो**—अ० क्रि० (सि०) मुकाबला करना।
**तूली**—स्त्री० दियासलाई, तिनका।
**तूश**—पु० (कु०, शि०) कूटने के बाद निकला धान का छिलका।
**तूष्णा**—अ० क्रि० (शि०) पछताना।
**तूसड़ा**—वि० अटपटा लगने वाला (वस्त्र आदि)।
**तूसणा**—स० क्रि० (कां०) जबरदस्ती ठूंसना।
**तूह**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) धान का छिलका।
**तूहणा**—स० क्रि० (कां०, ह०, बि०) जबरदस्ती खाना, ठूंसना। चुभाना।
**तेंई**—वि० (सो०, शि०) और, दोबारा।
**तेंईऐं**—अ० (कु०) लिए, खातिर।
**तेंओं**—अ० (सि०) उसी वक्त।
**तेंडा**—वि० (कु०) वैसा।
**तेंडाए**—अ० (कु०) वैसा ही।
**ते**—सर्व० (कु०) वे।
**ते**—सर्व० (सि०) उसको।
**तेई**—अ० (सो०, कां०, ऊ०) तक।
**तेई**—वि० तेईस।
**तेई**—सर्व० (कु०) 'सो' (वह) पुंलिंग पुरुषवाचक सर्वनाम का कारकीय रूप 'तेईए' (उसीने), 'तेईबे' (उसको), 'तेईन' (उससे), 'तेईरा' (उसका) आदि।
**तेईया**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) मियादी बुखार, तीसरे दिन आने वाला बुखार।
**तेईश**—वि० (शि०) तेईस।
**तेऊड़ी**—स्त्री० (चं०) रस्सी में बांधकर पीठ पर उठाया जाने वाला बोझ।
**तेएरी**—स्त्री० (चं०) ताया की लड़की।
**तेकड़ा**—पु० (कु०) दे० तकड़ा।
**तेकी**—सर्व० (चं०) आपको।
**तेखी**—सर्व० (शि०) उसके लिए।
**तेखो**—अ० (कु०) बाद में।
**तेगारी**—स्त्री० (सि०) तसला।
**तेगो**—पु० (शि०) खड्ग, एक विशेष प्रकार की तलवार।
**तेज**—वि० तीखा, तीक्ष्ण, तीव्र गति से चलने वाला।
**तेजणा**—स० क्रि० (कु०) औज़ार को तेज या तीखा करना।
**तेजणा/णो**—स० क्रि० (मं०, शि०) तीक्ष्ण करना।
**तेजिणा**—अ० क्रि० (कु०) औज़ार का तेज हो जाना।
**तेड़**—स्त्री० (शि०) हठ, ज़िद।
**तेड़तड़ट**—स्त्री० (कु०) तड़तड़ाहट।
**तेड़ा**—वि० वैसा।
**तेड़ा**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) बर्तन आदि टिकाने के लिए रस्सी या बेल इत्यादि का बनाया हुआ गोल आधार।
**तेड़ाई**—वि० वैसा ही।
**तेडडा**—वि० (कां०) उतना बड़ा।
**तेढ़ा**—वि० (मं०) वैसा।
**णो**—वि० (कु०) वैसा।
**तेत**—अ० (कु०) उसमें, उधर।
**तेतड़ी**—अ० (सि०, सो०) थोड़ी देर में। वहां जैसे।
**तेतणा**—वि० (सो०) उतना सा।
**तेतणे**—अ० (सो०) उतने समय में, थोड़ी देर में।
**तेतर**—वि० (मं०) तिहत्तर।
**तेतरा**—वि० (कु०) उतना।
**तेतरी-घेरे—अ० (कु०) उस समय।**
**तेतरो**—वि० (कु०) उतना।
**तेती**—अ० (सि०) उतने में।
**तेती**—अ० (सो०) वहां।
**तेती**—वि० तैंतीस।
**तेतीश**—वि० (शि०) तैंतीस।
**तेत्री**—वि० (चं०) तैंतीस।
**तेथ**—अ० (कु०) उधर, वहां।
**तेथी**—अ० वहां पर।
**तेथु**—अ० वहां पर।
**तेथे**—अ० (सि०, मं०, शि०) वहां पर।
**तेथो**—अ० (शि०) वहां।
**तेदी**—अ० (कु०) उस दिन।
**तेनिखे**—अ० (सो०) इसलिए।
**तेनिखे**—सर्व० (सि०) उनके लिए।
**तेने**—सर्व० (सि०) उसने।
**तेफ**—वि० (कां०) मोटी तह।
**तेबड़ा**—वि० (कु०) उतना, उतना बड़ा।
**तेबा**—अ० (कु०, शि०) तब, फिर।
**तेबू**—अ० (शि०) तभी।
**तेबे**—अ० तब।
**तेभरे**—अ० (कु०) तब।
**तेया**—सर्व० (मं०) वे।
**तेयाका**—अ० (मं०) उनके पास।
**तेरका**—अ० (सि०, शि०) उधर।
**तेरणो**—अ० क्रि० (सि०) तैरना।
**तेरमणीया**—स्त्री० (शि०) माला विशेष।
**तेरमेर**—स्त्री० अपने पराये की भावना।
**तेराः**—वि० तेरह।
**तेल**—पु० तेल।
**तेल**—पु० (मं०, सो०) विवाह का प्रथम संस्कार जिसमें तेल, उबटन आदि लगाया जाता है।
**तेळ**—स्त्री० ओस।
**तेलतुलाई**—पु० विवाह की एक रस्म जिसमें वर का कन्या पक्ष से मिलाप होता है और बारात आते ही दोनों घरों का तेल मिलाया जाता है।
**तेलमेली**—स्त्री० (कु०) जी भरने या तबीयत खराब होने से होने वाली बेचैनी।
**तेला**—पु० आम की बौर को लगने वाला कीट विशेष।
**तेलिया**—वि० हलके काले रंग का।
**तेलिया**—पु० (ह०) सरसों का कीड़ा।
**तेलिया**—वि० (सि०) विवाह में तेल ले जाने वाला।

**तेली**—पु० तेल निकालने वाला व्यक्ति।
**तेली**—वि० तीसरा, तीन लड़कियों के बाद उत्पन्न पुत्र।
**तेले**—पु० (मं०) तेली।
**तेल्ह तेल्ह**—वि० (कु०) हिलता-डोलता।
**तेशी**—अ० (शि०) वहां।
**तेशी**—वि० (सि०) बहमी।
**तेशी**—अ० (सि०) वैसे ही।
**तेसको**—सर्व० (सि०) उसका।
**तेसखे**—सर्व० (सो०, शि०) उसे, उसको।
**तेसजो**—सर्व० (मं०) उसको।
**तेसमा**—पु० (कु०) फीता, तसमा।
**तेसरा**—सर्व० (सि०, शि०, मं०) उसका।
**तेसा**—सर्व० (कु०) 'सो' (वह) का स्त्री वाचक विकारी रूप 'तेसा-बे' (उस लड़की को), 'तेसा-न' (उससे), 'तेसारा' (उसका), 'तेसै' (उसने)।
**तेसा**—पु० (कां०, ऊ०) बसोला।
**तेसि**—अ० (शि०, सि०, सो०) उधर से।
**तेसीख**—सर्व० (सि०) उसे।
**तेसीगेच्छ**—सर्व० (सि०) उसके पास।
**तेस्सी**—स्त्री० (सि०) औज़ार विशेष।
**तेह**—स्त्री० (शि०) तलाई।
**तेहज**—वि० जोश, चमक, तेज।
**तेहरा**—वि० तीन तहों वाला, तिहरा।
**तेहरी**—स्त्री० मृत्यु के तेरह दिन पश्चात् किया जाने वाला शुद्धि संस्कार।
**तेहा**—वि० (कु०) वैसा।
**तेहि**—सर्व० (शि०) उसको, उसे।
**तेहस**—स्त्री० (कां०) पति की ताई।
**तैं**—सर्व० (बि०) तुम।
**तैं**—सर्व० (कु०, कां०, ऊ०) तूने।
**तैंई**—सर्व० (चं०, कां०, ऊ०) तुम्हीं में।
**तैंया**—पु० (कां०, चं०) पलटा, चपटी कलछी।
**तैंस**—स्त्री० (मं०) ग्रीष्म ऋतु।
**तैअर**—पु० (शि०) त्योहार।
**तैइर**—पु० (चं०) ताया का लड़का।
**तैओड़ी—स्त्री० (चं०) दे० तेऊड़ी।**
**तैड़फणा**—अ० क्रि० (कु०) तड़पना।
**तैणे**—सर्व० (शि०) उसने।
**तैतु**—पु० (कु०) दे० तैंया।
**तैदी**—अ० (कु०) दे० तौधी।
**तैनका**—सर्व० (शि०) उनका।
**तैनाती**—स्त्री० (शि०) नियुक्ति।
**तैप**—पु० (कु०) तपस्या, तप।
**तैबले**—सर्व० (बि०) तुम्हारे पास।
**तैया**—पु० (सि०) तीसरे दिन आने वाला ज्वर।
**तैरंग**—स्त्री० (कु०) लहर, तरंग।
**तैर**—पु० (शि०) रविवार।
**तैरी**—स्त्री० (कु०) खाद्य पदार्थ की तरी।
**तैशेखे**—अ० (सि०) उस तरह।
**तैष—पु० क्रोध, तैश।**
**तैसी**—अ० (कां०) उसी तरह।
**तैहर**—पु० (शि०) त्योहार, उत्सव।
**तोंई**—अ० (सि०, शि०) फिर, दोबारा।
**तोंएं**—सर्व० (सि०, शि०, सो०) तुमने।
**तोंग**—पु० (कु०) एक विशेष प्रकार का रस्सा जो दुलहन के गांव के निकट रास्ते के दो वृक्षों के ऊपर बहुत ऊंचाई पर बांधा जाता है। बारात यदि उसे देखे बिना या तोड़े बिना उसके नीचे से गुज़र जाए तो बारात की बदनामी होती है।
**तोंग**—पु० (शि०, सि०) बरामदा।
**तोंगड़ा**—पु० (शि०) बरामदा।
**तोंगड़े—स्त्री० (शि०) बीच की मंज़िल का बरामदा।**
**तोंतर—पु० (कु०, सि०) तंत्र।**
**तोंदा**—पु० (सि०) तह।
**तोंदी**—स्त्री० (शि०) गर्मी।
**तोंदे**—स्त्री० (सि०, शि०) गर्मी का मौसम।
**तोंबड़ा**—पु० (कु०) घीए का सूखा खोल जिसमें लस्सी आदि रखी जाती है।
**तोंबड़ा**—पु० (कु०) घीया, कद्दू।
**तोंबड़ी**—स्त्री० (कु०) तूंबी।
**तोंबिया**—पु० (सि०) पतीला।
**तोंबी**—स्त्री० (कु०) सिर का पिछला भाग।
**तोंबे**—स्त्री० (सि०) दे० तोंबी।
**तो:ड़**—वि० (ह०) ऐसी गाय या भैंस जिसने दूध देना बंद किया हो।
**तो**—अ० (सि०) हां।
**तो**—अ० तो, तब।
**तोअ**—पु० (सि०) तह।
**तोआं**—सर्व० (शि०) तुमने।
**तोआंरा—सर्व० (सि०) तुम्हारा।**
**तोआ**—पु० (सो०, सि०) तवा।
**तोइला**—वि० (सि०) निचला।
**तोई**—अ० (सि०) फिर।
**तोई**—स्त्री० (कां०, ऊ०, चं०) जलेबी पकाने की समतल कड़ाही।
**तोकड़**—वि० लंबे समय तक दूध देने वाली भैंस या गाय जो **पुनः गामिन होने पर कम दूध देती है।**
**तोकलाठी**—स्त्री० (सि०) तकली की डंडी।
**तोकसीम**—स्त्री० (सि०) विभाजन, तकसीम।
**तोखता**—पु० (शि०, सि०) तख्ता।
**तोखमोख**—पु० (ह०) आवश्यकता।
**तोख्ती**—स्त्री० (सि०) तख्ती।
**तोग**—स्त्री० (शि०) तलाश।
**तोगटा**—पु० (सि०) आड़े समय का सहारा।
**तोड़**—अ० (कु०, मं०) नीचे।
**तोड़**—पु० (कु०) समय पर भोजन न खाने या कम भोजन खाने के फलस्वरूप शरीर पर हुआ प्रभाव।

**तोड़**—स्त्री० कमी, घाटा।
**तोड़**—स्त्री० (मं०) पत्थर में पड़ी दरार, दो पत्थरों के बीच की जगह।
**तोड़**—स्त्री० रेज़गारी।
**तोड़का**—वि० (सि०) निम्न।
**तोड़का**—पु० (शि०) छौंक।
**तोड़ा**—पु० (सि०) दो खेतों के बीच की खाली या बंजर जगह, खेतों की ऊपर वाली ऊंची मेंड़।
**तोड़ा**—पु० ऐसी बोरी जिसमें चालीस सेर वज़न हो।
**तोड़ा**—पु० (कु०) सिर पर लगाने का चांदी का जेवर।
**तोड़ाई**—स्त्री० (शि०) सेब आदि तोड़ने का कार्य।
**तोड़ाणा**—स० क्रि० (शि०) तुड़वाना।
**तोड़ी**—स्त्री० (कु०) कड़ी, छोटी धरण या शहतीर।
**तोडुआ**—वि० (ह०) तोड़ा हुआ।
**तोड़ू**—पु० (कु०) मकान का छज्जा, छज्जे के नीचे की कड़ियां।
**तोड़े**—पु० (कु०, चं०) गले में पहने जाने वाले चांदी के भारी गहने।
**तोड़े**—पु० (सि०) कान के गहने।
**तोड़े**—पु० (मं०) पैर में पहने जाने वाले चांदी के गहने।
**तोड़ो**—पु० (शि०) बरामदे के नीचे लगाई जाने वाली मोटी कड़ियां।
**तोणी**—स्त्री० (कु०) चप्पल में लगी तनी।
**तोतकी**—वि० तोते जैसे रंग का।
**तोतरणा**—स० क्रि० (शि०) पानी, दूध, लस्सी आदि को हड़प करना।
**तोतरू**—पु० (बि०) कान बींधने की क्रिया।
**तोतला**—वि० हकला कर बोलने वाला।
**तोता**—पु० तोता।
**तोता**—वि० (सि०) रूखा आदमी।
**तोते**—पु० विवाह के समय वेदी पर लगाए गए लकड़ी के बने तोते विशेष।
**तोते**—पु० (कां०) लकड़ी के आठ टुकड़े जो खड्डी में तारों के जाले के ऊपर संतुलनार्थ लगे रहते हैं।
**तोद**—स्त्री० तोंद।
**तोदा**—पु० बर्फ का ढेर।
**तोप**—पु० (कु०) मकान आदि बनाने के लिए समतल भूमि तैयार करने हेतु खड़ी की गई बड़ी दीवार।
**तोप**—स्त्री० (चं०, कु०) खोज, तलाश।
**तोप**—वि० (कु०) पूरा।
**तोपची**—वि० (शि०) तोप चलाने वाला।
**तोपड़ू**—पु० (सि०) दीवार में लगी पेटी।
**तोपणा**—स० क्रि० तलाश करना, ढूंढना, खोजना।
**तोपणाःर**—वि० (चं०) तलाशने वाला।
**तोपणो**—स० क्रि० टटोलना।
**तोपतलुआर**—पु० (कु०) तोप-तलवार।
**तोपा**—वि० (ह०) अन्न का एक माप विशेष।
**तोपार**—वि० (चं०) ढूंढने वाला।
**तोपारी**—वि० खोजी।
**तोपिणा**—स० क्रि० (कु०) इधर-उधर तलाश किया जाना, ढूंढा जाना।
**तोपोणा**—स० क्रि० (सि०) गरम करना।
**तोफ**—पु० (कु०) मकान आदि बनाने के लिए समतल भूमि तैयार करने हेतु खड़ी की गई पत्थर की दीवार।
**तोफ**—पु० (बि०) तोप।
**तोब**—अ० (सि०) तब।
**तोब**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) कांटे की चुभन।
**तोबरा**—पु० (सि०) प्यार की गाली।
**तोबरा**—पु० घोड़े को दाने खिलाने के लिए मुंह में लटकाने का थैला विशेष।
**तोबे**—अ० (शि०) तब, फिर, उसके बाद।
**तोमाचा**—पु० (सि०) थप्पड़, तमाचा।
**तोमूरी**—स्त्री० (सि०) वाद्य विशेष।
**तोर**—पु० (सि०) तट।
**तोर**—स्त्री० (चं०) चाल, दौड़।
**तोरकार**—स्त्री० (सि०) तरकारी।
**तोरकी**—स्त्री० छोटी चेचक, खसरा।
**तोरखाण**—पु० (शि०) तरखान, बढ़ई।
**तोरदू**—पु० (शि०) कद्दू।
**तोरण**—पु० विवाह के अवसर पर बांस, लकड़ियों या 'पाजे' की छड़ियों और पत्तों द्वारा निर्मित और सजाया गया स्वागत द्वार।
**तोरणा**—स० क्रि० (सि०) पशुओं आदि की चमड़ी उतारना।
**तोरना**—स० क्रि० भेजना। भांग की टहनियों से रेशा अलग करना।
**तोरबाण**—पु० (शि०) होश-हवास।
**तोरसूल**—पु० (सि०) त्रिशूल।
**तोरिया**—पु० (शि०) सरसों की एक किस्म।
**तोरी**—स्त्री० एक सब्जी विशेष।
**तोल**—पु० वज़न, माप।
**तोळ**—अ० नीचे।
**तोलकणा**—स० क्रि० (शि०) दे० तोलकालाणा।
**तोलकालाणा**—स० क्रि० थोड़ा ऊपर उठाना। उकसाना।
**तोलगाश**—अ० (शि०) नीचे-ऊपर।
**तोलदू**—पु० (सि०) मक्की भूनने का उथला पात्र।
**तोलणा**—स० क्रि० वजन करना, तौलना।
**तोला**—पु० (शि०) पैर के नीचे का भाग, तलवा।
**तोळा**—पु० एक तोला (माप विशेष)।
**तोलाणा**—स० क्रि० (शि०) परखना।
**तोलार**—वि० तौलने वाला।
**तोलिणा**—स० क्रि० (कु०) तौला जाना।
**तोले**—पु० (सि०) घराट में लगने वाला निचला पाट।
**तोष**—पु० (मं०) संतोष।
**तोस**—पु० (कु०) देवदार प्रजाति का एक वृक्ष विशेष।
**तोसक**—पु० (कां०, मं०) तलाई, बिछौना।
**तोहमत**—स्त्री० दे० तुहमत।
**तौंद**—स्त्री० बड़ा पेट।

**तौंदी**—स्त्री० ग्रीष्म ऋतु।
**तौंस**—स्त्री० गर्मी का प्रभाव।
**तौ:**—स्त्री० (शि०, सो०) तह।
**तौ**—सर्व० (शि०, कु०) तुम।
**तौ**—अ० (वि०, कां०, मं०) ताप।
**तौ**—सर्व० (शि०) सब।
**तौं**—अ० (शि०) उसके बाद।
**तौअटो**—पु० (शि०) तवा।
**तौआ**—पु० तवा।
**तौई**—अ० (शि०, सो०) दोबारा, फिर से।
**तौई**—स्त्री० तवी।
**तौउर**—पु० (कु०) जोर से बोलने का भाव।
**तौऐं**—सर्व० (शि०) तूने।
**तौकळा**—पु० चरखे में लगी लोहे की सलाख जिसके घूमने पर सूत काता जाता है।
**तौकळी**—स्त्री० (कु०) तकली।
**तौखला**—पु० क्रोध उतारने के लिए मारा गया ताना।
**तौखे**—अ० (कु०) वहां।
**तौछ्णा**—स० क्रि० (कु०) तराशना, छीलना।
**तौछिणा**—स० क्रि० (कु०) तराशा जाना।
**तौटणा**—स० क्रि० (कु०) मारना।
**तौड़ना**—अ० क्रि० (कु०) उलझना, चिपकना।
**तौड़ी**—वि० (कु०) निडर।
**तौतरू**—वि० (कु०) गरम स्वभाव का।
**तौता**—वि० (कु०) गरम।
**तौतीदाह**—स्त्री० (कु०) चोट लगने के समय की पीड़ा।
**तौतीलटू**—पु० (शि०) छोटा पतीला।
**तौदा**—वि० (कु०) कितना।
**तौघी**—अ० (कु०) उस दिन।
**तौबरी**—स्त्री० (कु०) विशेष कुल्हाड़ा जिसके दोनों कोने तेज हों।
**तौबरू**—पु० (कु०) छोटी 'तौबरी'।
**तौम्हे**—सर्व० (कु०) तुम, तुम्हें।
**तौर**—वि० (कु०) भरपूर।
**तौरणा**—अ० क्रि० (सि०) तैरना।
**तौरस**—पु० (सि०) तरस, दया।
**तौरसणा**—अ० क्रि० (सि०) तरसना।
**तौरा मौरा**—वि० व्याकुल।
**तौल**—पु० (कु०) वज़न।
**तौळ**—स्त्री० शीघ्रता।
**तौळकणा**—वि० जल्दबाज़, चंचल।
**तौलणा**—स० क्रि० (कु०) तौलना।
**तौलणो**—स० क्रि० (शि०) तलना।
**तौलराण**—स्त्री० (शि०) तेल की गंध।
**तौला**—पु० (शि०) बड़ा पतीला।
**तौला**—पु० (सो०) मिट्टी का खुले मुंह वाला गोल बर्तन जिसमें चावल आदि पकाए जाते हैं।
**तौळा**—वि० शीघ्रता वाला, जल्दबाज़।
**तौळा**—पु० (शि०) नीचे से चौड़ा बर्तन।
**तौळाथ**—पु० (शि०) लोहे, पीतल या काठ की चपटी कलछी।
**तौळी**—स्त्री० (कु०) चक्की का निचला पाट।
**तौल्हणा**—अ० क्रि० (कु०) हिलना।
**तौवा**—पु० (शि०) तवा।
**तौवे**—स्त्री० (शि०) मालपूआ बनाने का तवा।
**तौसमा**—पु० (शि०) तसमा।
**तौसला**—पु० (शि०) तसला।
**तौहरबाणा**—पु० (कु०) तौर-तरीका, चाल-ढाल।
**तौहरा**—पु० (मं०) पति का ताया।
**तौहितू**—पु० (कु०) लोहे, पीतल या काठ की चपटी कलछी।
**त्यांबल**—पु० एक प्रकार का चौड़े पत्तों वाला पेड़, गूलर।
**त्यामली**—स्त्री० (शि०) Ficus roxburghic.
**त्याय**—स्त्री० (सो०) प्यास।
**त्याया**—वि० (सो०) प्यासा।
**त्यार**—वि० तैयार।
**त्यारना**—स० क्रि० (कु०) तैयार करना।
**त्यारिना**—अ० क्रि० (कु०) तैयार होना।
**त्यारुना**—अ० क्रि० (सो०) तैयार होना।
**त्यारोत्यार**—वि० बिल्कुल तैयार।
**त्यूं**—अ० (शि०) उसी प्रकार, त्यों।
**त्यूड़ी**—स्त्री० तेवर।
**त्यूर**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) गुल मेहंदी के प्रकार का एक पौधा जो बरसात के दिनों में उगता है और स्त्रियां उसके पत्तों को पीस कर मेहंदी के रूप में प्रयोग करती हैं।
**त्यौंगल**—पु० (ह०) लकड़ी का बना लंबी हत्थी वाला पंजा जो खलिहान में फसल गाहते समय काम आता है।
**त्रंगड़**—वि० दुबला-पतला।
**त्रंगड़**—पु० वृक्ष से काटी गई पतली टहनियां।
**त्रंघ**—पु० (चं०) दे० ढीपी।
**त्रंड**—पु० तितर-बितर हुआ घर का सामान।
**त्रंडा**—पु० (कां०) झंझट, कार्य-विस्तार।
**त्रंढा**—वि० (कां०, ह०) लंबी-लंबी जड़ों या लंबी-लंबी टांगों वाला।
**त्रंढा**—वि० आलसी।
**त्रंभड़**—पु० (चं०) पीटने के लिए प्रयुक्त पतली टहनी।
**त्रंभड़**—स्त्री० (मं०) मूसलाधार वर्षा।
**त्रक**—स्त्री० बड़ी तुला।
**त्रकड़ी**—स्त्री० तराजू।
**त्रकणा**—अ० क्रि० (सि०) खराब होना।
**त्रकाल**—पु० शाम का समय जब अभी बहुत अंधेरा न हुआ हो, सांध्य काल।
**त्रकैण**—स्त्री० खमीर।
**त्रकैहण**—स्त्री० (कां०, ह०) किसी वस्तु के खराब होने या सड़ने से निकलने वाली गंध।
**त्रकोलू**—पु० (चं०) खमीरे आटे से तैयार रोटी।
**त्रक्कड़**—पु० (चं०) भेड़, बकरी चराने के लिए आरक्षण पर ली गई चरागाह।
**त्रगड़ी**—स्त्री० (चं०) नदी लांघने के लिए बना गया पुल।
**त्राघण**—पु० (चं०) नदी, नाले पार करने के लिए लगा शहतीर।

**त्रटणा**—स० क्रि० (चं०) मारना।
**त्रट्ठा**—पु० (कां०) जूठन, कूड़ा-करकट या जूठे बर्तनों आदि का ढेर।
**त्रड़**—स्त्री० (चं०) जंगली बेल।
**त्रड़ा**—पु० (मं०) जड़।
**त्रड़ाफसका**—पु० (मं०) सारा सामान।
**त्रड़ीणा**—अ० क्रि० (चं०) आलस्यवश पड़े रहना।
**त्रडू**—वि० (मं०) दुबला-पतला।
**त्रप**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) फसल काटने के उपरांत देवता के लिए दी गई पहली भेंट।
**त्रपड़**—पु० गाढ़ा बुना कपड़ा।
**त्रप्पड़**—वि० फटी पुरानी टाट या बोरी।
**त्रफबाड़णा**—स० क्रि० (कां०) कटाई आरंभ करना।
**त्रम्होड़ी**—स्त्री० मधुमक्खी प्रजाति का पीले रंग का कीट जिसके काटने से सूजन व अत्यंत पीड़ा होती है, ततैया।
**त्रय**—वि० (चं०) तीन।
**त्रयाहूं**—पु० (मं०) लोहे का बना तीन टांगों वाला बर्तन रखने का आधार।
**त्रयूठ**—पु० (कां०, बि०, ऊ०) माथे के बल।
**त्रयेइया**—पु० तीसरे दिन का बुखार।
**त्रांपढ़ी**—स्त्री० (शि०) एक ही जगह पर कई दिनों तक बैठे रहने की स्थिति।
**त्रांबड़ी**—स्त्री० पूजा की सामग्री, अक्षत, चंदन आदि रखने की तांबे या पीतल आदि की छोटी कटोरी।
**त्रांबा**—पु० तांबा।
**त्राक**—पु० (चं०) खमीर, शराब बनाने का खमीर।
**त्राकड़ी**—स्त्री० (कु०) तराजू।
**त्राकड़े**—स्त्री० (शि०) तराजू।
**त्राड़**—पु० (सि०) वस्तुओं का बिखराव।
**त्राड़ना**—स० क्रि० (सो०) तंग करना।
**त्राड़ना**—स० क्रि० (चं०) उठा-उठा कर फेंकना, पटकना।
**त्राड़ना**—स० क्रि० (चं०) बारीक लकड़ियों या झाड़ियों की आग में मक्की के भुट्टे भूनना।
**त्राड़ी**—स्त्री० (शि०) नींद उचटने से होने वाली बेचैनी।
**त्राण**—स्त्री० हिम्मत, साहस, शक्ति।
**त्राणी**—स्त्री० (चं०) 'पेच्छी' का ढक्कन।
**त्रापड़ा/ड़ी**—पु० (कु०) चमड़ा।
**त्राय**—वि० (मं०) तीन।
**त्रार**—स्त्री० (सो०) क्रोध की लहर।
**त्रारा**—वि० (कां०) तेज स्वभाव, नखरा।
**त्राला**—पु० (शि०, सि०) पुरानी शैली के दरवाजे को बंद करने का लकड़ी का बेलन।
**त्रास**—पु० भय।
**त्रासी**—स्त्री० (चं०) मुश्किल, कठिनाई।
**त्राह**—पु० डर।
**त्राहूं**—वि० (मं०) दे० त्रयाहूं।
**त्रिंबडू**—पु० (कां०) छोटी-छोटी पतली लकड़ियां।
**त्रिउणा**—वि० तीन गुणा।
**त्रिकचौक**—पु० (ह०) कार्तिक मास में फसल बीजने का विशेष समय।
**त्रिकणा**—अ० क्रि० (चं०) पक्षी का विष्ठा करना।
**त्रिकाष्ठा**—पु० (मं०, सो०) सायंकाल के समय आचार्य द्वारा करवाया जाने वाला मृतक का संस्कार।
**त्रिगणा**—वि० (कु०, मं०) तीन गुणा।
**त्रिगमिग**—स्त्री० (कां०) बारीक लकड़ियां।
**त्रिजा**—वि० तीसरा।
**त्रिट**—पु० (कां०, बि०) घास व फूलों पर उड़ने वाला छोटा कीट विशेष।
**त्रिटकणा**—अ० क्रि० (कु०, मं०) फटना, दाने भूनने पर त्रिड़-त्रिड़ करते हुए दानों का फटना।
**त्रिड़**—पु० (चं०) लकड़ी का समूह।
**त्रिड़ा**—पु० (बि०) घास-फूस या बेल इत्यादि का बनाया गया गोल आधार जिस पर बर्तन टिकाए जाते हैं।
**त्रिड्डा**—पु० टिड्डा।
**त्रिमत**—स्त्री० (चं०) पत्नी।
**त्रिमना**—स० क्रि० (चं०) चरना।
**त्रिमुंडा**—वि० (ह०, कां०, मं०) तीन कोनों वाला खेत आदि। तीन साल वाली गन्ने की फसल।
**त्रियांयी**—स्त्री० (मं०) चूल्हे के आगे के भाग में रखा जाने वाला लोहे का तीन टांगों वाला चूल्हा।
**त्रिया**—वि० तीसरा।
**त्रियानुवे**—वि० तिरानबे।
**त्रिशणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) बीमार पशु का मामूली सा घास खाना, गाय के बच्चे का प्रथम बार तिनका-तिनका करके घास खाना।
**त्रिशणा**—स० क्रि० (कु०) तराशना।
**त्रिशणा**—स्त्री० चाह, कामना।
**त्रिहरा**—वि० तीन गुणा, तीन धागों का बनाया गया गोला।
**त्रिहूड़ी**—स्त्री० (मं०) चिड़िया विशेष।
**त्रीजा**—वि० तीसरा।
**त्रीण**—पु० (सो०) तिनका।
**त्रीणना**—स० क्रि० (कु०) खींचना।
**त्रीण्हा**—वि० (चं०) प्यासा।
**त्रीया**—वि० (मं०) तृतीय।
**त्रीह**—वि० (चं०) तीस।
**त्रुंडणा**—स० क्रि० (चं०) फल तोड़ना, कांटा निकालना, पीक निकालना।
**त्रुंबेहड़ा**—पु० (चं०) टीके लगाने वाला।
**त्रुःणा**—अ० क्रि० (ह०) पशुओं का गर्भपात होना।
**त्रुईणा**—अ० क्रि० (सि०) भैंस, भेड़-बकरी आदि का गर्भ गिरना।
**त्रुकोल**—वि० खमीर डाल कर बनाई गई रोटी।
**त्रुकोल**—वि० फूला हुआ।
**त्रुगना**—अ० क्रि० (कां०) कमज़ोर होते जाना, शरीर का सूख जाना।
**त्रुटणा**—अ० क्रि० (सि०) फट जाना।

**त्रुटणाहर**—वि० (चं०) टूटने वाला।
**त्रुटी**—स्त्री० कमी।
**त्रुटोरा**—वि० (चं०) खंडित।
**त्रुड़णा**—स० क्रि० (चं०) तोड़ना।
**त्रुण**—स्त्री० सुई की चुभन। पीठ के निचले भाग की नसों का तनाव।
**त्रुणी**—स्त्री० दही बिलोने का मिट्टी का बर्तन।
**त्रुपणा**—स० क्रि० हाथ से सिलना।
**त्रुपणी**—स्त्री० सुई।
**त्रुमणा**—स० क्रि० (चं०, कां०) सुई से अटपटा सिलना।
**त्रुरणा**—अ० क्रि० कपड़े आदि का फटना।
**त्रुलकदा**—वि० (कु०) बिल्कुल पका हुआ या सड़ा हुआ।
**त्रुल्ह**—पु० (कां०) कष्ट के कारण शैथिल्य।
**त्रुहलणा**—अ० क्रि० मुरझाना, कुम्हलाना।
**त्रूणा**—पु० (चं०) बर्तन पकड़ने के लिए बर्तन के साथ लगाई गई रस्सी।
**त्रेंगी**—वि० (कु०) मनमर्जी करने वाला।
**त्रेंझका**—पु० (कु०) तेज भागने वाले पशुओं की टांग और गले में बांधी रस्सी।
**त्रेंठू**—वि० तीन शाखा खंडों का झुका रूप।
**त्रेई**—वि० तेईस।
**त्रेऊं**—पु० (शि०) ऊंची तिपाई।
**त्रेऊं देणा**—स० क्रि० (कां०) किसी के मरने पर चौथे दिन से नवें दिन तक शाम के समय सरकंडे की तीन लकड़ियों पर रखकर दीप दान करना।
**त्रेऊड़ा**—वि० (कां०) तीन का समूह।
**त्रेकणा**—स० क्रि० (चं०) वृक्ष की टहनियों को काटना।
**त्रेक्का**—पु० (कां०) वृक्ष के तने का ऊपरी भाग जहां से शाखाएं फूटती हैं।
**त्रेघड़ा**—वि० तीन टहनियों वाला।
**त्रेच्ची**—स्त्री० (कां०) निःसंतान की संपत्ति।
**त्रेट**—वि० सीधी समतल जगह।
**त्रेटणा**—स० क्रि० (सो०) बदलना, पलटना।
**त्रेड़ा**—वि० मंडलाकार।
**त्रेड़ा**—पु० (चं०) आकाश की बिजली की वृत्ताकार झलक। माथे की शिकन।
**त्रेडू**—स्त्री० कुंडली, सांप की कुडली।
**त्रेळ**—स्त्री० ओस।
**त्रेळाणी**—पु० (कां०, चं०) ओस का पानी।
**त्रेली**—वि० (कु०) तीसरे नंबर पर आने वाला।
**त्रेळी**—स्त्री० ठंडा पसीना।
**त्रेसात्रेसी**—स्त्री० (कु०) किसी तीखी चीज़ को जल्दी-जल्दी चुभाने की क्रिया।
**त्रेहरना**—स० क्रि० धागे को तेहरा करना।
**त्रै**—वि० तीन।
**त्रैकहड़ा**—पु० (चं०, कां०) बची हुई बासी सब्जी।
**त्रोगला**—पु० (ह०) तीन सिरों वाला लकड़ी या लोहे का डंडा।
**त्रोट्टा**—पु० कमी।
**त्रोड़**—पु० जंगली साग।
**त्रोड़**—पु० (चं०) सिलसिला टूटने का भाव।
**त्रोड़**—पु० (कां०) गड्ढा।
**त्रोड़**—वि० टूटकर अलग हुआ भाग।
**त्रोड़ना**—स० क्रि० तोड़ना।
**त्रोढ़**—पु० एक प्रकार की जड़ी विशेष।
**त्रोशा**—पु० (सो०) प्रकाश की चौंध।
**त्रोशुणा**—अ० क्रि० (सो०) प्रकाश से चौंधियाना।
**त्रौंक**—पु० पानी का छिड़काव।
**त्रौटणा**—स० क्रि० (कु०) सूई आदि चुभाना।
**त्रौटिणा**—अ० क्रि० (कु०) सूई आदि चुभ जाना।
**त्वा.र**—पु० (सो०) त्योहार।
**त्वाई**—स्त्री० (बि०) दे० कोठड़।
**त्वाड़**—पु० (ह०, बि०) मक्की की बीजाई के लिए खेत में पहली बार हल जोतने की क्रिया।
**त्वाणा**—वि० सीधे मुंह लेटा हुआ।
**त्वाप**—पु० (मं०) हरे धान को भून कर दाने निकालने और चबाने की क्रिया।
**त्वार**—पु० अवतार।
**त्वार**—पु० रविवार, इतवार।
**त्वार**—पु० (कु०, शि०) अगला जन्म।
**त्वार**—वि० उतारे हुए कपड़े।
**त्वार**—पु० एतबार, विश्वास।
**त्वारठी**—स्त्री० (सो०) त्योहारों पर बहनों को दी जाने वाली सौगात।
**त्वारना**—स० क्रि० उतारना।
**त्वारु**—पु० (शि०) जान से मारने की धमकी।
**त्वारु**—वि० (सि०) उतरा हुआ, पुराना।
**त्वाहला**—वि० (मं०) कम गहरा, उथला।
**त्वारी बुई**—अ० (कु०) हैरानी अभिव्यक्त करने के लिए प्रयुक्त आश्चर्य द्योतक शब्द।

## थ

**थ**—देवनागरी वर्णमाला में तवर्ग का दूसरा वर्ण। उच्चारण स्थान दंत।
**थंकणा**—अ० क्रि० (शि०) आहें भरना, किसी पीड़ा के कारण लंबी सांस लेना।
**थंगा**—वि० (कु०) कमज़ोर।
**थंथेळू**—पु० वह स्थान जहां पर विवाह आदि उत्सवों पर रसोई बनाई जाती है।
**थंदयाई**—स्त्री० चिकनाई।
**थंबणा**—अ० क्रि० (मं०) रुकना।
**थइली**—स्त्री० थैली।
**थई**—वि० स्थान विशेष।
**थक**—स्त्री० थकावट।

**थकड़**—स्त्री० (चं०) ऊन को साफ करने की गोल कंघी।
**थकणा**—अ० क्रि० थकना।
**थकाउट**—स्त्री० (कु०) थकावट।
**थकाणा**—स० क्रि० थकाना।
**थकालणो**—स० क्रि० (शि०) प्यार से चुप कराना।
**थकेंवा**—पु० थकान।
**थख**—वि० (चं०) अधिक काम।
**थखुना**—स० क्रि० (चं०) रगड़ना।
**थच**—स्त्री० किसी वस्तु के गिरने से उत्पन्न हुई आवाज़।
**थचका—पु० पकी हुई सब्ज़ी आदि की थाली में परोसी मात्रा।**
**थचका**—पु० (कु०) औज़ार की चोट।
**थचरुंडणा**—स० क्रि० (सो०) पीसना।
**थचाका**—पु० (सो०) गीली भूमि में गिरने की आवाज़।
**थचेवणा**—स० क्रि० (सो०) पत्थर से कुचलवाना।
**थट**—पु० (चं०) भेड़-बकरियों को रखने का स्थान।
**थटणा**—स० क्रि० (सो०, शि०) निपटाना, आपसी विवाद को बातचीत से निपटाना।
**थड़नीता**—वि० कंजूस, कमीना।
**थड़हना**—स० क्रि० (सि०) फसल के बीच से घास निकालना।
**थड़ा**—पु० (कु०) पत्थरों की दीवार या चबूतरा, खेत के चारों **ओर रखवाली के लिए बनाई गई पत्थर की दीवार।**
**थड़ा**—पु० देवता का विशेष स्थान, दुकान में बैठने का विशेष स्थान।
**थड़ी**—स्त्री० (सि०) पशु बांधने का स्थान।
**थड़ी**—स्त्री० (शि०) शराब रखने का स्थान।
**थड़ीदार**—पु० (चं०) ठेकेदार।
**थड़े**—स्त्री०(सि०) बैठने का विशेष स्थान।
**थण**—पु० थन।
**थणा**—पु० (सि०) दर्द के कारण कराहने का भाव।
**थणी**—स्त्री० (सो०) दुधारू पशुओं के थन।
**थणेरणा**—स० क्रि० (कां०) प्रोत्साहित करना।
**थणेला**—पु० (सि०) थन का रोग।
**थणौछी**—स्त्री० (कु०) आंख का रोग।
**थत्त**—स्त्री० (चं०) ठिकाना।
**थत्ती**—स्त्री० (चं०) दे० थत्त।
**थत्था**—वि० हकलाने वाला।
**थत्थू**—पु० कच्चे बर्तन को बाहरी भाग से रूप देने हेतु प्रयुक्त उपकरण।
**थत्थू**—पु० (ऊ०, कां०) कपड़े धोने का डंडा, थापी।
**थथलोणा**—अ० क्रि० हड़बड़ाना, हकलाना।
**थनपाळा**—पु० (कु०) गृह देवता का गांव से बाहर निर्धारित स्थान जहां उस के रुष्ट होने पर विशेष पूजा की जाती है।
**थनोला**—पु० (चं०) दे० थणेला।
**थपड़**—पु० (कु०) थप्पड़।
**थपड़ेरना**—स० क्रि० (कु०) थप्पड़ मारना।
**थपड़ेरिना**—स० क्रि० (कु०) थप्पड़ मारा जाना।
**थपड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) थप्पड मारना। रोटियां बनाना।
**थपड़ेवुणा**—अ० क्रि (सो०) एक-दूसरे को थप्पड़ मारा जाना।
**थपड़ैणा**—स० क्रि० थप्पड़ लगाना।
**थपणा**—स० क्रि० (कां०, चं०) मिट्टी या गोबर आदि को दीवार पर लगाना।
**थपणा**—स० क्रि० थोपना, छाप लगाना।
**थपणा**—स० क्रि० थापना, रोटी पकाना।
**थपलु—पु० (चं०) बच्चों द्वारा पकाई गई छोटी रोटी।**
**थपलु**—पु० गेहूं के आटे को घोल कर तवे पर घी या तेल लगाकर पकाई जाने वाली रोटी।
**थपलू**—पु० (कां०, ऊ०) समतल चरागाह।
**थपेड़**—स्त्री० (शि०) थप्पड़।
**थब्बी**—स्त्री० नोटों की नत्थी।
**थम**—पु० (चं०) स्तंभ।
**थमणा**—अ० क्रि० बंद होना, रुकना।
**थमहैरी**—स्त्री० (चं०) लकड़ी के (थम) खंभे के ऊपर लगा लकड़ी का ही विशेष टुकड़ा।
**थमाइणा**—स० क्रि० (कु०) थामा जाना, संभाला जाना।
**थमेरना**—स० क्रि० (ह०) शांत करना, रुकवाना।
**थमोःणा**—अ० क्रि० रुक जाना'
**थमोड़ा**—पु०(सि०) स्तंभ।
**थमोली**—स्त्री० (चं०) पेचिश बंद करने का नुसख़ा।
**थम्म**—पु० मोटी लकड़ी का खंभा।
**थम्मी**—स्त्री० मोटी लकड़ी जो छत को सहारा देने के लिए बीच में लगाई गई हो।
**थम्हाणा**—स० क्रि० थमाना, पकड़ाना।
**थम्हार**—वि० (चं०, कां०) थामने वाला।
**थरकणा**—अ० क्रि० हिलना, कांपना।
**थरकणो**—अ० क्रि० (शि०) जागना।
**थरका**—पु० (मं०) कृषि उपकरण।
**थरकावणो**—स० क्रि० (शि०) नींद से जगाना, सचेत करना।
**थरकोंदा**—वि० (शि०) कांपता हुआ।
**थरगी**—स्त्री० (सि०) चिनगारी।
**थरगे**—स्त्री० (शि०) दे० थरगी।
**थरट**—पु० (मं०) हाथ से चलाया जाने वाला घराट।
**थरथराउणा**—अ० क्रि० (शि०) थरथराना।
**थराका**—पु० थर-थर कांपने का भाव।
**थराड़ा**—वि० (कु०) आधा।
**थरी**—स्त्री० (ह०) अधिक वर्षा से फसल के सड़ने का भाव।
**थरी**—स्त्री० (कां०, ऊ०) दांती की हत्थी।
**थरी**—स्त्री० (शि०) कातने के लिए बनाई गई ऊन की पूनी।
**थरु—पु० (मं०) हत्थी।**
**थरुई**—स्त्री० (कां०) दांती की हत्थी।
**थरोटणबरोटण**—स्त्री० (शि०) वस्तुओं को सुव्यवस्थित करने की क्रिया।
**थरोटू**—पु० (सि०) लकड़ी का छोटा सा गट्ठा।
**थरौटणा**—स० क्रि० (शि०) सामान व्यवस्थित करना।
**थर्रा**—पु० (शि०) कंपन।

**थल**—पु० (शि०) ठिकाना।
**थलकणा**—अ० क्रि० लटकना।
**थलड़ा**—वि० नीचे वाला।
**थलपा**—पु० (कां०) आंगन के आगे का खाली भू-भाग।
**थळा**—पु० (चं०) गृह देव का घर की दीवार में बनाया गया छोटा मंदिर।
**थला**—पु० वृक्ष के नीचे बना चबूतरा।
**थली**—स्त्री० (शि०, कु०) देवता को बैठाने के लिए बनाई गई जगह, स्थान।
**थळी**—स्त्री० बड़ी क्यारी; मेंड़ से घिरा हुआ छोटा भू-भाग। देवस्थली।
**थळी**—स्त्री० मृत व्यक्ति की याद में रास्ते के किनारे बनाया पत्थरों का चबूतरा।
**थलु**—पु० (चं०) मसूड़ा।
**थलूं**—वि० (चं०) नीचे की ओर।
**थलू**—पु० क्यारी; छोटा खेत।
**थळेई**—स्त्री० (सो०) हथेली।
**थलौ**—पु० (कु०) घर की नींव।
**थल्ला**—पु० बर्तन का निचला हिस्सा।
**थसरणो**—अ० क्रि० (सि०) सरकना।
**थहाणा**—स० क्रि० (चं०) सहना।
**थही**—स्त्री० बंडल, गट्ठा।
**थह्ड़ा**—पु० (मं०) पीपल या बरगद के नीचे बना चबूतरा।
**थह्म**—पु० (कां०) केले के पेड़ का तना।
**थां**—स्त्री० स्थान।
**थांई**—स्त्री० (कु०) स्थान, निर्धारित स्थान।
**थांकुरू**—अ० (कु०, सो०, शि०) करनाल बजाने की ध्वनि।
**थांगाथांगी**—अ० (कु०) अस्त-व्यस्त।
**थांड़ी**—स्त्री० (कु०) विश्राम करने की जगह।
**थांबडू**—पु० (शि०) सहारे के लिए प्रयुक्त छोटा खंभा।
**थांबणा**—स० क्रि० (सो०) रोकना, थामना।
**थांबणो**—स० क्रि० (शि०) दे० थांबणा।
**थांम**—पु० (मं०) स्तंभ।
**थांवी**—वि० पत्थर का काम करने वाला।
**था.ई**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) उपद्रवी।
**थाक**—स्त्री० (सि०) हकलाहट।
**थाक**—पु० (शि०) काम के बदले दिया जाने वाला भोजन।
**थाकड़ना**—स० क्रि० (कु०) 'थकड़' से भेड़ की ऊन साफ करना। बाल सुलझाना।
**थाकडू**—पु० (कु०) दे० थकड़।
**थाकणा**—अ० क्रि० (सि०) बीमार होना।
**थाकणा**—अ० क्रि० (शि०) ठहरना।
**थाकणा**—अ० क्रि० (सो०) थकान महसूस करना।
**थाकपोड़ना**—अ० क्रि० (सि०) तुतलाना।
**थाकलागणा**—अ० क्रि० (कु०) चिकने पदार्थ खाने की इच्छा न रहना।
**थागणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) उठाना, बोझ उठाना।
**थागणो**—स० क्रि० (शि०) उठाना।
**थाच**—पु० (कु०) पर्वतीय चरागाह जहां गर्मियों में भेड़-बकरियां रखी जाती हैं।
**थाचणा**—स० क्रि० (सो०) मिट्टी को कूट कर लीपने या चूल्हा बनाने योग्य बनाना, कूटना।
**थाचि**—स्त्री० (सो०) पशुओं को बांधने का स्थान।
**थाचिणा**—अ० क्रि० (कु०) भेड़-बकरियों का 'थाच' में बैठना।
**थाट**—पु० (मं०) भेड़-बकरियों का दल।
**थाट**—स्त्री० (सि०) किसी को मनाने के लिए दी गई राशि, रिश्वत।
**थाट**—अ० (कु०) एक जैसा।
**थाटणा**—अ० क्रि० (सो०) निपटना, मुरम्मत करना।
**थाड़ा**—पु० (शि०, सि०) टिड्डा।
**थाणी**—स्त्री० (सि०, शि०) आंगन।
**थाणेदार**—पु० थानेदार।
**थाथाथीमा**—पु० (कु०) अव्यवस्था।
**थाथाबिथा**—स्त्री० (कु०) सेवा।
**थाथू**—वि० (कु०) अधिक पकी हुई (दाल आदि)।
**थान**—पु० (कु०, शि०) देवताओं की एक श्रेणी जो भूमि से उत्पन्न हुए माने जाते हैं।
**थान**—पु० मृत व्यक्ति पर डाला गया कफन।
**थान**—पु० कपड़े का थान।
**थान**—पु० देव स्थान, स्थान।
**थान**—पु० (सि०) विशेष प्रकार का पकवान।
**थानक**—वि० (सि०) अमीर (आदमी)।
**थानदेऊ**—पु० (कु०) स्थानीय देवता।
**थानी**—वि० (शि०) देवस्थान की देखभाल करने वाला।
**थाप**—स्त्री० थाप। शाबाशी।
**थापड़**—पु० (सि०) थप्पड़।
**थापणा**—स० क्रि० गोबर के उपले बनाना।
**थापणा**—स० क्रि० दबाना, थपथपाना। किसी पर जिम्मेवारी थोपना।
**थापणो**—स० क्रि० (शि०) गोबर या मिट्टी को लगाना या चिपकाना, दोनों हथेलियों के बीच गोबर थापना; रोटी बनाना।
**थापथीप**—वि० (कु०) बहुत घना।
**थापना**—स्त्री० स्थापना।
**थापरना**—स० क्रि० (कु०) हथियाना, बलपूर्वक कब्जा करना।
**थापरा**—पु० (सि०) बलि का बकरा जिसे मंत्र बल से शून्य किया जाता है।
**थापी**—स्त्री० शाबाशी।
**थापी**—स्त्री० कपड़े धोने का चपटा डंडा।
**थापे**—पु० (सि०, शि०) थप्पड़।
**थाम**—पु० (सि०, शि०) खंभा।
**थाम**—पु० (बि०) केले का तना।
**थामड़ा**—पु० (सि०) स्तंभ।
**थामणा**—स० क्रि० थामना।
**थामणो**—स० क्रि० (सि०) पकड़ना।
**थामला**—पु० (सि०) लकड़ी का खंभा।

**थार**—स्त्री० (शि०, सि०) भाप से रोटियां पकाने की व्यवस्था, बर्तन में लकड़ियां फंसा कर बनाई जाली।
**थार**—पु० (सि०) राख का ढेर।
**थारना**—स० क्रि० (सो०) मिट्टी में दबाना।
**थारा**—पु० (सो०) भाप से रोटियां पकाने की व्यवस्था।
**थारा**—सर्व० (कु०) तुम्हारा।
**थाळ**—पु० बड़ी थाली।
**थालटु**—पु० छोटी थाली।
**थालला**—वि० (सो०) निचला।
**थाला**—पु० दे० थल्ला।
**थाळी**—स्त्री० थाली।
**थाळू**—दे० थालटु।
**थाले**—अ० (कु०) नीचे।
**थाळे**—स्त्री० (शि०) दे० थाळी।
**थालेपरियाले**—अ० (कु०) ऊपर-नीचे।
**थाह**—स्त्री० पता, गहराई, रहस्य।
**थाह**—पु० ढेर।
**थाहणी**—स्त्री० (कु०) टहनी।
**थाहथुह**—वि० (कु०) अधिक पकी हुई (दाल आदि)।
**थिंगणा**—स० क्रि० ऊन या रुई को कातने योग्य बनाना।
**थिंगणा**—स० क्रि० थोड़ा-थोड़ा खाना।
**थिंगली**—स्त्री० (सि०) हथेली।
**थिंद**—स्त्री० चिकनाई।
**थिंदा**—वि० चिकना।
**थिगणा**—स० क्रि० छीलना, कुतरना, छुरी आदि से गोदना; निर्दयता से काटना।
**थिगळे**—स्त्री० (शि०) हथेली।
**थिघड़**—वि० मिट्टी, गोबर आदि से लिपटा पदार्थ।
**थिचड़ना**—स० क्रि० (कु०) दे० थिगणा।
**थिचणा**—स० क्रि० बुरी तरह से काटना।
**थिचणा**—स० क्रि० (सो०) पत्थर से कूटना।
**थिड़कणा**—स० क्रि० डांटना।
**थिड़ना**—स० क्रि० किसी खाद्य पदार्थ से ऊबना।
**थिड्ड**—पु० (चं०) हुक्के में तंबाकू के धुएं से बना काला पदार्थ।
**थिड्ड**—वि० मैला-कुचैला, अधिक मैला।
**थिथाना**—स० क्रि० (शि०) बच्चे को साफ कपड़े पहनाना।
**थिथेरणा**—स० क्रि० (शि०) दे० थिथाना।
**थिपु**—पु० (कु०) सिर पर बांधने का कपड़ा।
**थिप्पड़ा**—वि० (चं०) मैला-कुचैला।
**थिया**—अ० क्रि० (सि०, शि०, चं०) था।
**थियार**—पु० हथियार।
**थियोणी**—स्त्री० (चं०) अमानत, धरोहर।
**थिर**—वि० (शि०) स्थिर, स्थाई, शांत।
**थिरके**—अ० क्रि० (शि०) जागना।
**थिराना**—स० क्रि० (शि०) तरल पदार्थ को स्थिर करना।
**थिहाळी**—स्त्री० हथेली।
**थीका**—वि० (मं०) छोटा।
**थीगली**—स्त्री० (शि०) दही आदि की छोटी डली।
**थीपी**—स्त्री० (कु०) छुआ-छुआई, एक प्रकार का खेल जिसमें बच्चे एक दूसरे को छूते हैं।
**थीपू**—स्त्री० (मं०) चुनरी, सिर पर बांधने का रुमाल।
**थीरा**—पु० (मं०) ऐसा पेड़ जिसकी लकड़ी गीली ही जल जाती है।
**थीसा**—वि० (शि०) चपटे नाक वाला।
**थीसी**—वि० (शि०) चपटे नाक वाली।
**थीह**—अ० (कु०) आज।
**थुंबड़**—पु० (कां०) पशु का मुंह।
**थुंबर**—पु० (मं०) दे० थुंबड़।
**थुआंट**—पु० (चं०) बकरा।
**थुआ**—पु० मकान की दूसरी मंजिल को थामने के लिए लगाया छोटा स्तंभ।
**थुआर**—पु० (कु०) विशेष घास जिससे पवित्रता के लिए गो मूत्र आदि छिड़काया जाता है।
**थुए**—स्त्री० (सि०) बाल झड़ने की बीमारी।
**थुऐ**—स्त्री० (सि०) चमड़ी सड़ने का भाव।
**थुक**—पु० थूक।
**थुकणा**—अ० क्रि० थूकना।
**थुकणो**—अ० क्रि० (शि०) दे० थुकणा।
**थुकाणा**—स० क्रि० थूकने का काम कराना।
**थुगला**—पु० (सि०) पैसे रखने का थैला।
**थुड़कदा**—वि० (कु०) भीगा हुआ।
**थुड़कना**—स० क्रि० छिड़कना, झाड़ना।
**थुड़ना**—स० क्रि० (कु०) फोड़े का फट जाना।
**थुड़ना**—अ० क्रि० कम होना, कम पड़ना।
**थुड्डा**—वि० (कु०) सड़ा हुआ।
**थुड़ो**—वि० (सि०) कम।
**थुढ़णा**—अ० क्रि० (कु०, शि०) कम पड़ना।
**थुथ**—पु० ककुद, बैल की पीठ का उभरा भाग।
**थुनेर**—पु० (मं०, कु०, चं०) Taxusa baccta. एक पेड़ जिसकी कलियां दवा के काम आती हैं।
**थुपकणा**—स० क्रि० थपकी देना।
**थुरणा**—अ० क्रि० (सि०) कांपना।
**थुरथरी**—स्त्री० थरथराहट, कंपकंपी।
**थुरना**—अ० क्रि० (सो०) कांपना।
**थुलकिणा**—स० क्रि० (शि०) बोल-चाल तथा मुंह बनाकर नाराज़गी जतलाना।
**थुला**—वि० (कु०) मोटा, चौड़ा।
**थुसणा**—अ० क्रि० (कु०) टूटना, चिथड़े होना, धागों का टूट जाना।
**थुसणा**—अ० क्रि० (सो०) टूटना, कमी होना।
**थुह**—स्त्री० थूकने की आवाज। अपकीर्ति।
**थुहा**—पु० (ऊ०, कां०) ईंट या पत्थर से बना स्तंभ।
**थुह**—अ० धिक्कार सूचक शब्द।
**थूंथला**—पु० (मं०) गाय बैल के गले की बीमारी।
**थूंबू**—पु० (कु०) बड़ी कलछी।

**थूआ**—पु० (शि०) एक ओर का सिरा।
**थूआ**—पु० (ह०) घास का व्यवस्थित गोल ढेर।
**थूकणा**—अ० क्रि० थूकना।
**थूकयूई**—स्त्री० (शि०) किसी गली-सड़ी वस्तु की दुर्गंध से जी मतलाना।
**थूड़कणा**—स० क्रि० साफ करना, झाड़ना।
**थूणा**—पु० (शि०) एक वृक्ष विशेष।
**थूथटि**—स्त्री० (शि०) पशुओं के बच्चों का मुंह।
**थूथर**—पु० (शि०) दे० थुंबड़।
**थूना**—वि० (कु०) सुस्त, शिथिल।
**थूप**—पु० (कु०) ढेर।
**थूपणा**—स० क्रि० (सो०) थोपना।
**थूरणा**—अ० क्रि० (शि०) बैठे-बैठे सो जाना।
**थूला**—वि० (शि०) हृष्ट-पुष्ट।
**थूहा**—पु० (शि०) टीला।
**थूही**—स्त्री० (शि०) पत्थर से बना स्तंभ।
**थेंचणा**—स० क्रि० (सि०) कूटना, चोट करना।
**थेंचिणा**—स० क्रि० (सि०) भारी चीज के नीचे पिस जाना।
**थे:ड**—स्त्री० (शि०) जल्दी-जल्दी खाने या काम करने की क्रिया।
**थे:ड़**—पु० (कु०) किसी चीज़ का क्रमबद्ध ढेर।
**थेईयां**—स्त्री० नाग पंचमी से पहले के कुछ दिन जब दूध, दही और अरबी के पत्ते बाहर नहीं निकालते न ही इनका प्रयोग करते हैं।
**थेउआ**—पु० (कु०) नग।
**थेऊ**—पु० (कु०) खत्म करने का भाव।
**थेगली**—स्त्री० (शि०) दे० थिगली।
**थेच**—स्त्री० (शि०) ठोकर।
**थेचका**—पु० (कु०) मिट्टी आदि का गीला गोला।
**थेचकिणा**—स० क्रि० (कु०) फोड़े आदि में पीप भर जाना।
**थेचणा**—स० क्रि० (कु०) दूर से तरल पदार्थ फेंक कर भिगोना।
**थेचणो**—स० क्रि० (शि०) कूटना, मारना।
**थेचाथेची**—स्त्री० (कु०) कीचड़ में लथपथ।
**थेचुणा**—स० क्रि० (सो०) पत्थर के नीचे आना।
**थेड़**—स्त्री० (सो०) काम को निपटाने की उतावली।
**थेड़**—पु० (मं०) ढेर।
**थेणा**—अ० क्रि० (कु०) अपनी ज़िद्द पर कायम रहना।
**थेणी**—स्त्री० (ह०) धरोहर।
**थेपचा**—वि० (मं०) चपटा।
**थेपी**—वि० (कु०) भद्दा, भद्दे शरीर वाला।
**थेल**—पु० (मं०) जानवरों का पंजा।
**थेलाथेला**—वि० (मं०) ढलानदार।
**थेली**—स्त्री० (कु०) थैली।
**थेली**—स्त्री० (मं०) बकरी के बाल।
**थेळी**—स्त्री० (सो०) हथेली।
**थेलू**—पु० (शि०) बिलाव प्रजाति के जानवरों का पंजा।
**थेवा**—पु० (मं०, शि०) नग।
**थैंचला**—वि० (सि०) पिसा हुआ।
**थैंया**—पु० (चं०) खुरपा।
**थैओणी**—स्त्री० (चं०, मं०) अमानत, धरोहर।
**थैकड़**—वि० (कु०) अधिक घना।
**थैचुक**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) हेराफेरी, चर्चा, अस्तव्यस्त।
**थैचुक**—स्त्री० (चं०) रखरखाव, संभाल।
**थैणा**—स० क्रि० (चं०) रखना।
**थैणु**—पु० जमा वस्तु, धरोहर।
**थैप**—पु० (ह०) रखाव, संभाल कर रखी वस्तुएं।
**थैप्पड़**—पु० (कु०) थप्पड़।
**थैबळा—वि० (कु०) हकलाने वाला।**
**थैयां**—पु० (ह०) लोहे की पतली कलछी।
**थैरथैरी**—स्त्री० (कु०) किसी काम को जल्दी समाप्त करने की इच्छा।
**थैवला**—पु० (मं०) हलवा।
**थैसणा**—स० क्रि० (चं०) घिसना, रगड़ना।
**थैसाथैसी**—स्त्री० (कु०) ज़मीन में उगी चीज़ को जल्दी-जल्दी उखाड़ने की क्रिया।
**थैह**—पु० ढेर।
**थैह**—स्त्री० तह।
**थैहड़**—पु० (कां०) कई दिनों से रखी वस्तु।
**थोंबा**—पु० (कु०) खंभा।
**थो:ढ़ा**—पु० (शि०) हथौड़ा।
**थो:णा**—स० क्रि० (सि०) रखना।
**थो:बा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) गारे का एक पिंड।
**थो:ला—वि० मोटा व्यक्ति। जड़बुद्धि।**
**थो—पु० (सि०) पशु-पक्षी के आवागमन का मुख्य स्थान।**
**थोउई**—स्त्री० (कु०) हथेली।
**थोग**—पु० (कु०, मं०) जांच, अनुमान, ज्ञान।
**थोगणा**—स० क्रि० (सि०) परीक्षा लेना। उठाना।
**थोगणा**—स० क्रि० (कु०) छूना, किसी चीज़ को हाथ से परखना।
**थोगणा**—स० क्रि० (सो०) भार का अनुमान लगाना, आज़माना
**थोगणो**—स० क्रि० (शि०) उठाना, अनुमान लगाना।
**थोगना**—स० क्रि० (बि०) परखना।
**थोगिणा**—स० क्रि० (कु०) छुआ जाना।
**थोड़**—पु० (सि०) टिड्डा।
**थोड़**—वि० कमी।
**थोड़कुजेहा**—अ० (कु०) थोड़ा सा।
**थोड़ा**—वि० कम, अल्प।
**थोड़ा**—पु० (सि०) ऊंचा मकान।
**थोड़ू**—पु० (सो०) हथौड़ी।
**थोड़ो**—वि० (शि०) थोड़ा।
**थोण**—पु० (सि०) गाय के थन।
**थोण**—स्त्री० (सि०) भारी वज़न उठाने पर सांस फूलने की क्रिया।
**थोणा**—अ० क्रि० (सि०) दर्द से कराहना।
**थोतड़ी**—स्त्री० (सि०) घुटने का निचला हिस्सा।

**थोतरा**—वि० (सि०) उलटे काम करने वाला।
**थोथर**—पु० (कु०) गाल।
**थोथा**—पु० (शि०) दे० थोबड़।
**थोथा**—वि० बलहीन, मोटा।
**थोथाथोथा**—पु० (कु०) बातचीत।
**थोपड़ना**—स० क्रि० (कु०) थोपना।
**थोपड़िना**—स० क्रि० (कु०) थोपा जाना।
**थोपळु**—पु० (चं०) तवे पर घी लगाकर आटे या बेसन का गाढ़ा घोल फैलाकर बनाया गया मीठा या नमकीन पकवान।
**थोफला**—पु० (चं०) साग की एक किस्म।
**थोबड़**—पु० पशु का मुंह। गाली के रूप में मुंह के लिए प्रयुक्त शब्द।
**थोबड़ा**—पु० (शि०) दे० थोबड़।
**थोबी**—स्त्री० (कु०) बकरी या 'चीगू' की मोटी ऊन की बनी दरी या टाट।
**थोमण**—पु० (कु०) सहारा।
**थोमणा**—स० क्रि० (कु०) पकड़ना, रोकना, संभालना।
**थोमयो**—पु० (सि०) जंगली फल।
**थोमा**—पु० (कु०) खंभा।
**थोमिणा**—स० क्रि० (कु०) थामा जाना।
**थोर**—पु० Euphordia royleana. थूहर, एक वृक्ष विशेष।
**थोर**—स्त्री० (कां०) छोटी उम्र की भैंस।
**थोरणा**—स० क्रि० (शि०) तोड़ना।
**थोरी**—स्त्री० (सि०) ऊन के टूटे धागे। कपड़े की कतरने।
**थोरोई**—स्त्री० (सि०) ऊन के रेशे।
**थोळ**—पु० घर की वह जगह जहां देवता का निवास होता है।
**थोला**—पु० (सि०) बड़ा थैला।
**थोली**—स्त्री० (सि०) थैली।
**थोलू**—पु० (सि०) छोटा थैला।
**थोलू**—पु० (सि०) कीड़े का रहने का स्थान।
**थोस**—अ० (सि०) भारी वस्तु गिरने की आवाज।
**थोसणा**—स० क्रि० (कु०) तोड़ना, उखाड़ना, छीनना, उधेड़ना।
**थोसणा**—स० क्रि० (सि०) झगड़ा करना।
**थोहर**—वि० (कु०) मिश्रित।
**थोहड़ू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) छोटा हथौड़ा।
**थोहबी**—स्त्री० बकरी के बालों से बनाई गई टाट या दरी।
**थोहबी**—पु० (शि०) बहुत लंबे मुंह वाला।
**थौंकणो**—पु० (शि०) थकने या बीमार होने पर निकलने वाली कराह।
**थौंमा**—पु० (कु०) स्तंभ।
**थौ**—पु० (शि०) गहराई, रहस्य।
**थौउड़ा**—पु० (कु०) हथौड़ा।
**थौउल**—स्त्री० (कु०) हथेली।
**थौकणा**—अ० क्रि० (कु०) थकना।
**थौटणा**—स० क्रि० (कु०) वृक्ष की घनी टहनियों को काटना।
**थौड़ा**—पु० (कु०) पत्थरों की दीवार या चबूतरा।
**थौड़ा**—पु० (शि०) हथौड़ा।
**थौड़ाई**—स्त्री० (शि०) पत्थर तोड़ने का काम।
**थौड़ी**—स्त्री० (शि०) हथौड़ी।
**थौण**—पु० (ह०) पटरा।
**थौपड़ाई**—स्त्री० (शि०) थप्पड़ मारने की क्रिया।
**थौर**—पु० घन में लगी हत्थी, औज़ार का हत्था।
**थौळ**—स्त्री० (कु०) मृत व्यक्ति की याद में रास्ते के किनारे बनाया पत्थरों का चबूतरा।
**थौला**—पु० (सि०) मकान बनाने की जगह।
**थौला**—पु० (शि०, सो०) थैला।
**थौली**—स्त्री० (सो०) थैली।
**थौलो**—पु० (शि०) थैला।
**थौह**—पु० (कु०) ठिकाना।
**थ्यामल**—पु० (शि०) Rhamnus triqueter.
**थ्याली**—स्त्री० (सि०) हथेली।
**थ्रोट**—स्त्री० (सो०) व्यवस्था।
**थ्रोटणा**—स० क्रि० (सो०) व्यवस्थित ढंग से रखना।
**थ्रोटा थ्राटि**—स्त्री० (सो०) व्यवस्था करने का व्यापार।
**थ्हेतळू**—पु० (कां०) मिठाई से भरी हुई थाली।

# द

**द**—देवनागरी वर्णमाला में तवर्ग का तीसरा वर्ण। उच्चारण स्थान दंत।
**दंआ**—स्त्री० (शि०) दही।
**दंग**—वि० हैरान।
**दंगयाई**—वि० (शि०) दंगा करने वाला।
**दंगल**—पु० कुश्ती, मल्लयुद्ध।
**दंगली**—वि० (शि०) झगड़ालू, उपद्रवी।
**दंगा**—पु० लड़ाई-झगड़ा, उपद्रव।
**दंगो**—पु० (शि०) दे० दंगा।
**दंचणा**—स० क्रि० कुछ लेने के लिए विवश करना।
**दंचीदान**—वि० जबरदस्ती लिया गया दान।
**दंतारा**—पु० एक वाद्ययंत्र।
**दंद**—पु० दांत।
**दंदकरोतणी**—स्त्री० दांत कुरेदने के लिए चांदी की बनी खुरचनी।
**दंदकीली**—स्त्री० मृत्यु के समय दांतों के बंद हो जाने की क्रिया।
**दंदकुशक**—पु० (शि०) दांत भींचने की क्रिया।
**दंदकोतणु**—पु० (मं०) दे० दंदकरोतणी।
**दंदखड़**—स्त्री० (ऊ०, बि०, कां०) भय या रोग से दांत भींचने की क्रिया।
**दंदगुह**—पु० दांत का मैल।
**दंदड़**—वि० बड़े दांत वाला।
**दंदड़ी**—स्त्री० ठंड के कारण दांत बजने की क्रिया।
**दंदड़ी**—स्त्री० (सि०, शि०) दंतमाला।
**दंदड़ु**—पु० छोटे दांत।

**दंदनाणा**—स० क्रि० (शि०) गरज कर बोलना।
**दंदराल**—पु० दंतमाला।
**दंदराल**—पु० (बि०, कां०, ऊ०) लकड़ी का विशेष कृषि उपकरण।
**दंदरू**—पु० एक प्रकार का हल जिसके साथ नोकदार लकड़ी के कई दांत लगे हों।
**दंदशिक्कड़**—स्त्री० (सो०, कु०) बीमारी या बेहोशी के कारण जबड़ों की अकड़न से दांतों के भींचने की अवस्था।
**दंदशूल**—स्त्री० (शि०) दंतपीड़ा।
**दंदसुकड़**—स्त्री० (बि०, कां०) दे० दंदशिक्कड़।
**दंदसुकड़ा**—पु० (मं०) दे० दंदशिक्कड़।
**दंदा**—पु० (ह०, कां०) लकड़ी काटने वाली आरी का दांत।
**दंदा**—पु० (कां०, ह०, ऊ०) पत्थर या चट्टान वाला भू-भाग।
**दंदाखड़ी**— स्त्री० दे० दंदशिक्कड़।
**दंदाणा**—स० क्रि० (शि०) आरे आदि के दांत निकालना।
**दंदार**—स्त्री० (शि०) दंतपंक्ति।
**दंदाल**—पु० (कु०, मं०) लकड़ी के सात-आठ दांतों वाला हल जिसका प्रयोग फसल की छंटाई के लिए होता है।
**दंदालटी/टू**—स्त्री० (बि०, ऊ०, कां०) लकड़ी का बना उपकरण।
**दंदालणा**—स० क्रि० (कु०) 'दंदाल' द्वारा मक्की आदि की फसल को विरला करना, अनाज के पौधों की छंटाई करना।
**दंदालस**—पु० आठ से बारह फुट लंबा व दो से साढ़े तीन इंच चौड़ा बांस का डंडा।
**दंदाले**—स्त्री० (शि०) दे० दंदार।
**दंदालो**—पु० (शि०) लोहे के लंबे दांतों वाला कृषि उपकरण।
**दंदासा**—पु० अखरोट के पेड़ के छिलके जो दातुन के रूप में प्रयोग में लाए जाते हैं।
**दंदियाजेहर**—पु० मसूड़े पकने व दांत गिरने का एक रोग।
**दंदी**—स्त्री० बादल वाले दिन छिपते सूर्य की अंतिम किरण।
**दंदी**—वि० बड़े दांतों वाला।
**दंदोघ**—स्त्री० (कां०) एक वृक्ष विशेष जिसकी होली के दिन स्त्रियों द्वारा पूजा की जाती है।
**दंद्राळ**—पु० मक्की के भुट्टे में दाने निकलने की आरंभिक दशा।
**दःड़कणा**—अ० क्रि० (सो०) धड़कना।
**दःरमशांत**—स्त्री० (सो०) धर्मशांति, तेरहवीं, क्रिया-कर्म के बाद मृतक के प्रति किया जाने वाला पहला संस्कार।
**दअ**—पु० (शि०, सि०) धूप।
**दई**—स्त्री० दही।
**दईत**—पु० (बि०, मं०) दैत्य, राक्षस।
**दऊं**—पु० (बि०, ह०) दही।
**दऊंओ**—पु० (मं०) पशुओं को बांधने की रस्सी।
**दएं**—स्त्री० (शि०) दही।
**दओटी**—स्त्री० (मं०) देवस्थल, देवग्राम।
**दकान**—स्त्री० दुकान।
**दकानण**—स्त्री० (शि०) Dyosphyros Cordifolia.
**दकानदार**—पु० दुकानदार।
**दकूणा**—वि० दो कोनों वाला।
**दक्खण**—वि० दक्षिण (दिशा)।
**दक्खणचलना**—अ० क्रि० तेज आंधी चलना।
**दक्खणा**—स्त्री० दक्षिणा।
**दक्वान**—स्त्री० दुकान।
**दखण**—वि० (चं०) दक्षिण।
**दखणैन**—पु० (चं०, शि०) दक्षिणायन।
**दखणोत्रा**—पु० (ह०) एक बीमारी का नाम।
**दखल**—पु० हस्तक्षेप।
**दखल**—पु० (सि०) शरीर विकार।
**दखाई**—स्त्री० विवाह में मुंह दिखाई की रस्म में वधू को दिया गया उपहार।
**दखाउट**—स्त्री० (कु०) दिखावट।
**दखाउटी**—वि० बनावटी, दिखावटी, कृत्रिम।
**दखाउणा**—स० क्रि० (शि०, सो०, कु०) दिखलाना।
**दखावा**—पु० दिखावा।
**दखेज**—पु० (बि०) दुःख। दिखावट।
**दखेणा**—स० क्रि० देखा जाना।
**दखेणा**—स० क्रि० (कु०) दर्द पहुंचाना, घाव पर चोट लगाना।
**दखेरना**—स० क्रि० (कु०, कां०) दुःख देना।
**दखोड़**—वि० (कु०) नये से कुछ पुराना पट्टू, जिसका पहले प्रयोग किया गया हो।
**दखोणा**—स० क्रि० ज़ख्म पर चोट लगाना। देखा जाना।
**दख्वाणा**—स० क्रि० दुखाना। दिखाना।
**दगड़**—पु० (बि०, ह०) ढेर। बहुत से व्यक्तियों द्वारा जमीन पर एक साथ सोने की क्रिया।
**दगड़ना**—अ० क्रि०(शि०) एक ही 'दगड़' में सोना।
**दगड़रस्ता**—पु० (ह०, कु०) आवागमन का मार्ग।
**दगड़ा**—पु० (शि०) दे० दगड़।
**दगड़ी**—स्त्री० (सो०) समूह। कंबल आदि लपेट कर बैठने या सोने की अवस्था।
**दगड़ी**—स्त्री० (शि०) दे० दगड़।
**दगणा**—स० क्रि० दागना, बंदूक चलाना।
**दगा**—पु० धोखा।
**दगाऐ**—पु० (शि०) चिता जलाने वाले व्यक्ति।
**दगाबाज़**—वि० धोखेबाज़, विश्वासघाती।
**दगारडू**—पु० (सो०) छौंक लगाने का पात्र।
**दगी**—वि० धोखेबाज़।
**दग्गड़**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) मोटी रोटी।
**दग्गड़**—वि० (बि०) सहनशील।
**दघणा**—स० क्रि० दबाना।
**दघणु**—पु० दूध उबालने का बर्तन।
**दघेड़ू**—पु० (कां०) जलने से पतीले में नीचे लगे चावल।
**दच्छाण**—पु० (मं०) बढ़ई या काश्तकार।
**दछणा**—स्त्री० दक्षिणा।
**दछोळा**—पु० (सो०) आधी बिलोई गई दही जो अस्वस्थ या कमज़ोर व्यक्ति के लिए लाभदायक होती है।
**दछौरा**—पु० धूप-छांव।

**दक्षेरना**—स० क्रि० (कु०) विश्वास दिलाना। सहानुभूति पैदा करना।
**दक्षेरिना**—अ० क्रि० (कु०) सहानुभूति होना।
**दड़ंगा**—पु० (बि०) लंबी-लंबी छलांगें लगाने की क्रिया।
**दड़ना**—स० क्रि० (कां०, ह०, बि०) दांतों से काटकर शीघ्रता से खाना।
**दड़क**—पु० (शि०) छत का भीतरी भाग। छत के साथ की मंज़िल।
**दड़कण**—स्त्री० (सो०, सि०) धड़कन।
**दड़कण**—स्त्री० (मं०) मेंड़ के ऊपर लगाया जाने वाला गारा।
**दड़कना**—स० क्रि० (मं०) हल चलाना।
**दड़काइणा**—स० क्रि० (कु०) मार खाना।
**दड़काणा**—स० क्रि० (कु०) मारना, पीटना।
**दड़काणा**—स० क्रि० (कां०) डराना।
**दड़काणी**—स्त्री० मूसलाधार वर्षा।
**दड़कावणा**—स० क्रि० (सि०, सो०, शि०) डराना, झिड़कना।
**दड़क्याणी**—पु० (सि०) वर्षा का जल।
**दड़ना**—अ० क्रि० सो जाना, दुबक जाना।
**दड़ना**—अ० क्रि० (शि०) झपटना। डट जाना।
**दड़ना**—अ० क्रि० (सि०) लड़ना।
**दड़नों**—स० क्रि० (सि०) जबरदस्ती किसी से वस्तु लेना।
**दड़पतरी**—स्त्री० (कु०) Ajuga Parvi flora, Anaphalis cinnamomea, Anaphalis contorta.
**दड़फना**—अ० क्रि० (ह०) दबाना, काबू पाना।
**दड़बा**—पु० (कु०, कां०, मं०) मिट्टी की छत वाली अस्थाई संरचना।
**दड़ब्बा**—पु० (कां०, ह०) जंगली जानवरों को मारने के लिए बनाया गया मचान।
**दड़ल्ल**—पु० वर्षा की तेज़ बौछार।
**दड़वा**—पु० (सो०) देसी शराब।
**दड़वाना**—स० क्रि०(सि०) दौड़ाना।
**दड़शेक**—पु० (सो०) दाड़िम के सूखे छिलके से वस्त्र पर लगाया गया रंग।
**दड़ाका**—पु० (सो०) ज़ोर की आवाज़।
**दड़ा**—वि० बढ़िया-घटिया खाद्य पदार्थों का मिश्रण।
**दड़ाक**—स्त्री० टूटने का शब्द, ज़ोर का शोर।
**दड़ाका**—पु० दे० दड़ल्ल।
**दड़ाका**—पु० तहलका।
**दड़ाणा**—स० क्रि० दौड़ाना, पीछा करना।
**दड़िंग**—वि० (सो०) हृष्ट-पुष्ट (व्यक्ति)।
**दड़िंगनाथ**—वि० हृष्ट-पुष्ट, व आलसी व्यक्ति।
**दड़ींग**—स्त्री० (शि०) ईर्ष्या।
**दड़ी**—स्त्री० (मं०) हल के फिसलने पर छूटने वाली भूमि।
**दड़ुंज**—पु० खट्टा फल।
**दड़ूंजा**—पु० विशेष प्रकार के फूल जो देवी को अर्पित किए जाते हैं।
**दड़ूकणा**—स० क्रि० बैलों को लड़ाने हेतु ललकारना।
**दड़ून**—पु० दाड़िम का पेड़।
**दड़ूम**—पु० (कु०) घास आदि का ढेर।
**दड़ेच**—पु० (सो०) नेफा, इजारबंद डालने का स्थान।
**दड़ोहा**—पु० (चं०) बर्फ या मिट्टी का ढेर जो एकदम नीचे गिर जाता है।
**दड़ौदा**—वि० (सि०) दौड़ने वाला, धावक।
**दणाइणा**—स० क्रि० (कु०) दौड़ाया जाना।
**दणाज़ा**—पु० (कु०) अंदाज़ा, अनुमान।
**दणाली**—स्त्री० (कु०) रात को दूसरी बार खाया जाने वाला खाना। पंद्रह पौष की रात्रि को दो बार खाना खाया जाता है।
**दणियर**—पु० (सो०) फन वाला सांप।
**दणिया**—पु० (सि०, सो०) धनिया।
**दणुश**—पु० (सि०, सो०) धनुष।
**दणे**—पु० (सि०) मालिक, स्वामी।
**दणेटणा**—स० क्रि० रोटी अधिक खाना।
**दणेटणा**—स० क्रि० दोहरी तह करना, दोहरा करना।
**दणेटिणा**—स० क्रि० (कु०) तह लगाई जानी।
**दणेवटणा**—स० क्रि० (सो०, सि०) दोहरी तह लगाना।
**दती**—स्त्री० (शि०) सुबह।
**दत्यर**—पु० संपत्ति।
**दत्यालू**—पु० प्रातराश, कलेवा, नाश्ता।
**दथर**—पु० चाय के पौधों की काट-छांट।
**ददड़ा**—वि० (मं०) मोटा।
**ददर**—पु० (शि०) मेंढक।
**ददरमाणु**—पु० (शि०) मेंढक।
**ददराड़**—पु० (कां०) Mimqsa subicaulis.
**ददरी**—स्त्री० दाद।
**ददसास**—स्त्री० पति या पत्नी की दादी।
**ददसौहरा**—पु० (मं०) पति या पत्नी का दादा।
**ददूनू**—पु० (बि०) दूध गरम करने का बर्तन।
**ददेरू**—पु० (सि०) फोड़ा, बाल तोड़।
**ददेहस**—स्त्री० दे० ददसास।
**ददोण**—पु० (सि०) किसी त्योहार या व्रत से पहला दिन।
**ददौरा**—पु० (शि०) बुखार या सर्दी से हुआ कंपन।
**ददोहरा**—पु० दे० ददसौहरा।
**दधुनू**—पु० दे० ददूनू।
**दनदनाना**—स० क्रि० बंदूक चलाना। गुर्राना।
**दनवाचड़ी**—स्त्री० (सो०) पंखयुक्त चींटियां।
**दनाज़**—पु० (मं०) अनाज में से घास निकालने तथा अनाज को विरला करने का कृषि यंत्र।
**दनाळी**—स्त्री० दोनाली बंदूक, दुनाली।
**दनियर**—वि० (शि०) बड़ा।
**दनेरो**—पु० (सि०) पूजन करने की कलछी।
**दनेवटणा**—स० क्रि० (सो०) दोहरी तह लगाना।
**दनोड़ी**—स्त्री० (मं०) गेहूं की दो परतों वाली पूरी।
**दनोळी**—स्त्री० (सो०) दे० दनोड़ी।
**दनोळी**—स्त्री० (कु०) दो रोटियों के बीच आलू या दाल डालकर इकट्ठी करके बनाई गई रोटी।
**दपहरा**—पु० (सि०) दोपहर।

**दपट**—स्त्री० (शि०) घुड़की।
**दपटणा**—स० क्रि० (शि०) डांटना।
**दपट्टु**—पु० (बि०) कंबल विशेष।
**दपहर**—पु० (बि०, कां०) दोपहर।
**दपहरी**—स्त्री० दोपहर का भोजन।
**दपहरी**—स्त्री० (चं०) दोपहर का समय।
**दपाटा**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) ऐसा स्थान जहां दो मार्ग मिलते हों।
**दपार**—पु० (शि०) दोपहर।
**दपेट**—स्त्री० (शि०) झिड़की।
**दपेटणा**—स० क्रि० (शि०) डांटना, झिड़कना।
**दपेहर**—पु० (कु०) दोपहर।
**दपैहरू**—अ० दोपहर तक लौट कर आने वाला व्यक्ति।दोपहर का भोजन साथ ले जाने वाला व्यक्ति।
**दपोर**—स्त्री० (सि०) दोपहर।
**दपोहरे**—पु० (सि०) दोपहर।
**दपौर**—पु० (सो०) दोपहर।
**दपौरी**—स्त्री० (सो०) दोपहर का भोजन।
**दपौहर**—पु० (कु०) दोपहर।
**दपौहरी**—स्त्री० (कु०) दोपहर का भोजन।
**दप्फड़**—पु० शरीर पर रक्त विकार या किसी कीड़े आदि के काटने से हुआ चकत्ता।
**दफड़ो**—स्त्री० (कु०) जलाने की लकड़ी।
**दफणा**—स० क्रि० (ह०) मोटी रोटी पकाना।
**दफणा**—स० क्रि० दोनों हथेलियों के मध्य गोबर के उपले बनाना।
**दफणा**—स० क्रि० (सि०) मारना।
**दफ्तर**—पु० कार्यालय।
**दफांगा**—पु० वह भाग जहां से वृक्ष की दो शाखाएं निकलती हैं। दो भागों में विभाजित।
**दफाड़**—पु० दो फाड़। दो भागों में विभाजित वस्तु, (विशेषत: तख्ते)।
**दफुटा**—वि० दो फुट का।
**दफुट्टा**—पु० मापने का उपकरण।
**दफुट्टा**—वि० बौना।
**दफोड़ना**—स० क्रि० नीचे पटकना।
**दब**—पु० (बि०) दर्भ, दूब।
**दब**—पु० प्रभाव, दाब।
**दब**—अ० जल्दी।
**दबका**—पु० झिड़की, धमकी।
**दबकाणा**—स० क्रि० डांटना, धमकाना।
**दबकावणो**—स० क्रि० (शि०) धमकी देना।
**दबटणा**—स० क्रि० मारना, पीटना।
**दबटणो**—स० क्रि० (शि०) ठगाना।
**दबड़ी**—स्त्री० (चं०) बिना बीजा हुआ बंजर भूमि का छोटा टुकड़ा।
**दबणा**—अ० क्रि० दबना।
**दबणो**—अ० क्रि० (सि०) छिपाना।
**दबदबाब**—पु० प्रभाव।
**दबदाड़ना**—स० क्रि० (सो०) बच्चे को थपकी देकर सुलाना, थपथपाना।
**दबवाणा**—स० क्रि० (शि०) किसी से दबाने का काम करवाना।
**दबाउणा/णो**—स० क्रि० (कु०, सि०, शि०) दबाना, गाड़ना।
**दबाओ**—पु० दबाव।
**दबाड़**—स्त्री० (चं०) शीघ्रता।
**दबाड़**—पु० प्रभाव।
**दबाणा**—स० क्रि० (सो०) दबाना।
**दबादब**—अ० जल्दी-जल्दी।
**दबापोणा**—अ० क्रि० नींद में शरीर पर दबाव पड़ना तथा डरना।
**दबारा**—वि० दोबारा।
**दबासट**—अ० जल्दी-जल्दी।
**दबी**—स्त्री० (बि०, सि०, कां०) लड़की।
**दबू**—पु० (बि०, सि०) लड़का।
**दबेल**—वि० दबा हुआ, अधीनस्थ।
**दबोक**—वि० (शि०) डरपोक।
**दबोकणा**—स० क्रि० (शि०) ढांपना।
**दबोचणा**—स० क्रि० 'दबोचना, दबाना।
**दबोटण**—स्त्री० (कु०) कपड़े धोने की थापी।
**दबोटणा**—स० क्रि० 'दबोटण' से पीटना।
**दबोटणी**—स्त्री० दे० दबोटण।
**दबोणा**—अ० क्रि० दबना।
**दब्बड़**—पु० ऐसा खेत जिसमें फसल नहीं उगाई जाती।
**दमासरा**—वि० (कां०) दोनों तरफ चलने वाला, दोगला।
**दमूआ**—वि० (सो०) आधा छूटा हुआ कार्य।
**दम**—पु० (मं०) विशेष पकवान।
**दम**—पु० तंबाकू का कश।
**दम**—पु० (कां०) धन-संपत्ति।
**दम**—पु० प्राण, श्वास। साहस।
**दम**—पु० (सि० ,शि०) चरस।
**दम**—पु० चावलों को पकाने के लिए उष्णता देने की क्रिया।
**दमक**—स्त्री० चमक।
**दमकड़ा**—पु० (सि०, ह०) चरखे में लगने वाला गोलाकार यंत्र।
**दमजला**—वि० दो मंज़िल वाला।
**दमड़ी**—स्त्री० पैसे का आठवां हिस्सा।
**दमड़ी**—स्त्री० दो पैसे का पुराना सिक्का।
**दमणा**—स० क्रि० भाप बाहर न आने देना, भाप से पकाना। फूंक देना, खाल से हवा देना।
**दमदार**—वि० (सो०) बलशाली, बलवान, साहसी।
**दमा**—पु० श्वास रोग, दमा।
**दमाक**—पु० (सो०) दिमाग।
**दमाका**—पु० (शि०, सि०) धमाका। आश्चर्यजनक घटना।
**दमाके**—वि० (सि०) तेज़ बुद्धि।
**दमाग**—पु० मस्तिष्क, दिमाग।
**दमादम**—अ० (शि०, सो०) जल्दी-जल्दी, लगातार।

दमानू—पु० (सि०) एक वाद्ययंत्र।
दमामा—पु० (सि०) वाद्ययंत्र विशेष।
दमारेया—अ० (बि०) साथी के लिए प्रयुक्त संबोधनवाचक शब्द।
दमी—वि० (शि०) भांग पीने वाला।
दमुंहा—वि० दो मुंह वाला।
दमुंही—वि० दोनों तरफ से तेज़ धार वाली। दो मुख वाली।
दमुक—पु० बंदूक।
दमूआ—वि० (सो०) दो मुंह वाला।
दमेड़ा—पु० (मं०) दो नालों का संगम।
दमेड़ा—पु० (मं०) दो या तीन नदियों के संगम पर रहने वाला देवता।
दमोगा—पु० (शि०) दमे का रोगी।
दया—स्त्री० दया, कृपा।
दयाड़ा—पु० (सि०, सो०) दिन; सूर्य।
दयापन/ण—पु० उद्यापन, पूजा-पाठ।
दयार—पु० (सि०) दरवाज़ा।
दयार—पु० देवदार।
दयाल—वि० दयालु, दयावान।
दयाळखु—पु० दीवाली से पहले के चार दिन।
दयालटा—पु० (सो०) मुज़ारा।
दयाळी—स्त्री० दीपावली।
दयूट—पु० (सो०) दीपक रखने के लिए बना लकड़ी का स्टैंड।
दयूठ—पु० बड़ा दीया या दीप रखने का स्टैंड।
दयूड़ी—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) छोटा दीपक।
दयूळी—स्त्री० (बि०) जुगनू।
दयोठण—स्त्री० (सो०) दीवाली के समय का विशिष्ट पूजन।
दयोठी—स्त्री० (सि०) पूजा स्थल,पूजा के फूल।
दयोळ—स्त्री० दहलीज़।
दयौ—पु० देवता।
दरंग—स्त्री० (कां०) पत्थरों से बनी ऊंची दीवार।
दर—स्त्री० भाव, मूल्य।
दर—पु० दरवाज़ा, स्वागत द्वार, रास्ता।
दरई—स्त्री० (बि०) पशु की खाल जिस पर बैठ कर नदी पार की जाती है।
दरई—पु० 'दरई' चलाने वाला।
दरकनार—अ० दूर, किनारे।
दरकान्नू—पु० (कां०, ऊ०, ह०) 'दरेक' (पेड़) पर लगने वाले पीले फल।
दरखड़ी—स्त्री० (मं०) स्थानीय अनाज जो खाने में कड़वा होता है।
दरगाह—पु० (चं०) अगला जन्म। दरगाह।
दरगाही—वि० किसी की वस्तु हड़प करने वाला। चुस्त, चालाक, देखते-देखते धोखा देने वाला।
दरगाही—वि० (मं०) कर्ज का भुगतान न करने वाला।
दरघाड़ी—स्त्री० (ऊ०) Mimosa himalayana. एक पौधा विशेष।
दरज—स्त्री० दरार।
दरजा—पु० दर्जा, श्रेणी।
दरजाऊ—पु० (चं०) छत के तख्तों के बीच जोड़े जाने वाले छोटे टुकड़े।
दरड़—स्त्री० (मं०) दाद।
दरड़ना—स० क्रि० पीसना, दलना, कुचलना, रौंदना।
दरड़ा—वि० दला हुआ, मोटा पीसा हुआ अन्न, विनाश।
दरड़ोना—स० क्रि० कुचला जाना। मोटा पीसा जाना।
दरद—स्त्री० दया, पीड़ा। सहानुभूति।
दरदरा—वि० (शि०) मोटा पीसा हुआ।
दरदालू—वि० दयावान, दयालु।
दरदी—वि० दयालु।
दरनाम—पु० (सि०) दुर्नाम।
दरपाचा—पु० (शि०) दरवाज़े के ऊपर का स्थान।
दरफ्फड़—पु० बिच्छुबूटी आदि लगने से शरीर पर उभरे गोल निशान।
दरब—स्त्री० (शि०) कुशा, दर्भ।
दरबाग—पु० (सो०) दुर्भाग्य।
दरबान—वि० पहरेदार।
दरबार—पु० राजदरबार।
दरबुद्ध—स्त्री० (कु०, सो०) दुर्मति, कुबुद्धि।
दरबोण—पु० (सो०) सिर के बल खड़े रहने की क्रिया, शीर्षासन।
दरभाग—पु० (कु०, सो०) दुर्भाग्य।
दरमाहण्डू—पु० (सि०) वृक्ष विशेष।
दरया—पु० दरिया, नदी।
दरयाओ—पु० दे० दरया।
दरयाड़—पु० दरार।
दरयाणी—स्त्री० (सि०) देवर की पत्नी।
दरयाफत—स्त्री० पूछताछ।
दरयाफ्ती—वि० (चं०) पता लगाने वाला।
दरयाव—पु० (सो०) दरिया, नदी।
दरवाणियां—पु० द्वारपाल।
दरशण—पु० दर्शन।
दरशायिण—पु० (सि०) देवता के प्रवेश करने की क्रिया।
दरशी—स्त्री० (शि०) गर्भिणी गाय।
दरसण—पु० दर्शन।
दरांग—स्त्री० (सो०) धुएं की कालिख।
दरा:डा—स्त्री० (सो०) जंगली पुष्पों से बनाई गई गुलदस्ते जैसी आकृतियां जिन्हें शरद ऋतु के नवरात्रों की अष्टमी को पूजा के लिए प्रतिष्ठित किया जाता है तथा दशहरे के दिन शाम को जल के पास पूर्ण सम्मान से छोड़ा जाता है।
दरा:वणा—स० क्रि० (सो०) दोहराना।
दरा—पु० आने-जाने की मुख्य जगह।
दराग—स्त्री० (सि०) ओस।
दरागड़/डू—वि० (मं०) बेचैन व्यक्ति, चंचल।
दराची—स्त्री० (शि०) दांती।
दराजा—पु० दरवाज़ा।
दराट—पु० बड़ी दांती।
दराटी—स्त्री० छोटी दांती।

**दराड़**—स्त्री० वर्षा की तेज़ बौछार।
**दराड़**—स्त्री० दरार।
**दराणी**—स्त्री० देवरानी।
**दरात**—स्त्री० आधी रात।
**दरात्मा**—पु० (सि०) दुष्टात्मा, दुरात्मा।
**दराबा**—वि० (सि०) टूटे अंग वाला।
**दराळ**—स्त्री० (कां०) दरार।
**दराळो**—पु० (शि०) लोहे के लंबे दांत वाला उपकरण।
**दरिघड़ा**—वि० (कु०) फटा-पुराना कपड़ा, चीथड़ा।
**दरींडी**—स्त्री० (सि०) अदरक के ऊपर के पत्ते।
**दरीखाना**—पु० (मं०) देवस्थल। राजा की बैठक।
**दरीच**—स्त्री० (सो०, सि०) तख्तों के जोड़ या किवाड़ों के मेल में रहने वाला अंतराल, दरार।
**दरीटे**—पु० (बि०) Sida spp.
**दरीहण**—स्त्री० (कां०) बारीक छड़ियां।
**दरुआ**—पु० Ainsliaca apetra.
**दरुआजा**—पु० (कु०) दरवाज़ा।
**दरुण**—पु० (कां०) धान मापने का मटका विशेष।
**दरुत्त**—पु० (कां०) देवर का लड़का।
**दरुब**—स्त्री० (सि०) दूर्वा।
**दरुस्त**—वि० दुरुस्त।
**दरेंडु**—पु० (सि०) वृक्ष विशेष।
**दरे**—स्त्री० (शि०, सि०) दरी।
**दरेई**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) मल्लाह।
**दरेओ**—पु० (मं०) दरिया।
**दरेक**—पु० वृक्ष विशेष।
**दरेग**—पु० (बि०) सदमा, आघात।
**दरेड़**—वि० (शि०, सो०) अधेड़।
**दरेड़**—स्त्री० (सि०) मौसम, एक बार की वर्षा।
**दरेड़ा**—अ० (कां०) दूरी पर।
**दरेढ़ा**—वि० (शि०) टेढ़ा।
**दरेयी**—पु० (मं०) दे० दरेई।
**दरेंट**—स्त्री० (मं०) एक झाड़ी विशेष।
**दरेगल**—पु० (बि०) Diosiorea pahtaphylla. एक वृक्ष विशेष।
**दरेच**—स्त्री० (सि०) देवता के समक्ष प्रज्ज्वलित की जाने वाली ज्योति।
**दरेडें**—अ० (कां०) दूर, दूरी पर।
**दरेणे**—स्त्री० (सि०) देवरानी।
**दरोए**—स्त्री० (शि०, सि०) शपथ, कसम।
**दरोगा**—पु० (चं०, सो०, कां०) विशेष उत्सव पर रसोई के सामान का मुख्य प्रबंधक।
**दरोटू**—पु० (शि०, सि०) कान का आभूषण।
**दरोठा**—पु० (सो०, सि०) अन्न के भंडारण के लिए बनाया गया लकड़ी का बड़ा पात्र।
**दरोठी**—स्त्री० (सो०, सि०) रसोई का संदूक, रसोई घर में दैनिक उपयोग की वस्तुओं को रखने के लिए बनाया गया लकड़ी का संदूक।
**दरोठो**—पु० (मं०) कोठा।
**दरोड़ा**—पु० (सि०) गेहूं, जौ आदि के बीच लगने वाला घास।
**दरोडी**—स्त्री० (सि०) देवता के नाम पर आयोजित रात्रि जागरण।
**दरोबड़ी**—स्त्री० (बि०) अधिक घास वाला स्थान।
**दरोळा**—पु० (चं०, ऊ०, कां०) मधुमक्खी।
**दरोल्ही**—वि० (कु०) पेटु।
**दरोह**—पु० शपथ, कसम।
**दरोही**—वि० द्रोही, विद्रोही।
**दरौचे**—स्त्री० (शि०) दरवाज़े की चौखट, दहलीज़।
**दरौल**—पु० (चं०) आंगन।
**दर्जे**—पु० (शि०) दर्जी।
**दल**—पु० समूह।
**दळ**—स्त्री० (चं०) छाती की हड्डी।
**दलटे**—स्त्री० (शि०, सि०) छोटा टुकड़ा।
**दलड़ो**—पु० (शि०) दलिया।
**दलणा**—स० क्रि० दलना, दो भागों में विभक्त करना।
**दलणो**—स० क्रि० (शि०) दे० दलणा।
**दळद्र**—पु० (चं०) आलस्य, दरिद्र।
**दलन**—पु० (शि०) विनाश।
**दळना**—स० क्रि० दमन करना, कुचलना। दलना।
**दलफड़**—पु० (चं०) चट्टान से निकला पत्थर का टुकड़ा।
**दलाई**—स्त्री० (सि०) अदरक की खेती के लिए गांव वालों से ली गई सामूहिक मदद।
**दलाओणा**—अ० क्रि० (सि०, शि०) दिलवाना।
**दलाची**—स्त्री० (मं०) Nyctanthes arbartristis. एक पेड़ विशेष।
**दलादू**—पु० मिट्टी के ढेले तोड़ने का एक उपकरण विशेष।
**दलाणी**—स्त्री० (कां०) दाल की पीठी से बचा दाल के घोल वाला पानी।
**दलान**—पु० (सो०) जलाने के लिए चीरी गई पतली लकड़ी।
**दलाल**—पु० बिचौलिया।
**दलाली**—स्त्री० कमीशन, बिचौलिये का पारिश्रमिक।
**दलावर**—वि० दिलेर, विशाल हृदय।
**दलासा**—पु० दिलासा, आश्वासन।
**दलिंडो**—पु० (शि०) दलिया।
**दळिदर**—पु० (सो०) आलस्य।
**दलिद्री**—वि० दरिद्री, आलसी।
**दळिया**—पु० दलिया।
**दली**—स्त्री० (मं०) दलिया।
**दळी**—स्त्री० फांक, एक टुकड़ा।
**दलीऊंडा**—पु० (शि०) पानी में पकाया गया दले अन्न का खाद्य पदार्थ।
**दलीकू**—पु० तैयार की हुई कड़ियों पर लकीरें लगाने का औज़ार।
**दलील**—स्त्री० तर्क।
**दलील**—स्त्री० (सि०) मज़ाक।
**दळुआं**—वि० (सो०) दला हुआ।
**दलूचा**—पु० (चं०) ईंधन की लकड़ी रखने का स्थान।
**दळेई**—स्त्री० मिट्टी व गोबर की लिपाई।

**दलेर**—पु० बहादुर, दिलेर, साहसी।
**दळेवा**—पु० बर्तन को जलने एवं काला होने से बचाने के लिए लगाया गया राख या मिट्टी का लेप।
**दलेशना**—स० क्रि० (मं०) दीवारों पर मिट्टी लीपना।
**दलोगो**—पु० (शि०) दारोगा।
**दळोटू**—पु० (कां०) चक्की।
**दल्ला**—पु० (सो०) दलाल।
**दवड़**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) दौड़ने की आवाज़।
**दवरसका**—पु० (मं०) द्विवार्षिक श्राद्ध।
**दवरही**—स्त्री० (ह०, कां०, ऊ०) द्विवार्षिक।
**दवळा**—वि० (चं०) सफेद।
**दवाइ**—स्त्री० दवा, औषधि।
**दवाईत**—पु० (सो०) दवात।
**दवाए**—स्त्री० दवाई।
**दवाओ**—पु० (बि०) दबाव।
**दवाखानों**—पु० (शि०) औषधालय।
**दवाजू**—पु० (बि०) दूसरी शादी करने वाला।
**दवाजो**—वि० (सि०) आधा सूखा पेड़।
**दवाड़**—अ० शीघ्र।
**दवाड़ा**—पु० (शि०, सि०) दो नदियों का मिलाप।
**दवाने**—स्त्री० (सि०) दो आने का पुराना सिक्का। दीवानी-मुकद्दमा।
**दवापानी**—स्त्री० औषधि, उपचार।
**दवाल**—पु० (सि०) दीवार।
**दवाळा**—पु० दिवाला।
**दवाळी**—स्त्री० दीपावली।
**दवी**—स्त्री० (कां०) लड़की।
**दवेल**—वि० (चं०) दब्बू, अधीनस्थ।
**दवेल**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) दो समय के मिलने की वेला।
**दवेल**—स्त्री० (सि०) देवता के यज्ञ में रात्रि के तीसरे पहर में देव पूजा की क्रिया।
**दवैण**—स्त्री० (सि०) चारपाई में पांव की ओर लगाई गई रस्सी।
**दश**—वि० (शि०, सि०) दस।
**दशणा**—स० क्रि० (सि०) दिखाना।
**दशना:ण**—पु० (सो०) मृत्यु के दसवें दिन किया जाने वाला संस्कार।
**दशनामी अखाड़ा**—पु० (चं०) सन्यासियों के दस संप्रदायों का आश्रम।
**दशमि**—स्त्री० (सो०) दशमी, दसवीं तिथि।
**दशमें**—स्त्री० (सि०) दशमी।
**दशांगु**—पु० (सो०) कंटीली झाड़ियों को काटने या उठाने के लिए प्रयोग किया जाने वाला दो सिरे वाला लकड़ी का उपकरण।
**दशांश**—वि० (सि०) दसवां हिस्सा।
**दशा**—स्त्री० अवस्था, ग्रहचाल, मुसीबत।
**दशाला**—पु० दुशाला।
**दशी**—स्त्री० (सि०, सो०, शि०) कंबल, शाल के किनारे वाले धागे।
**दशुड़**—पु० (मं०) त्रिशूल।
**दशैरा**—पु० (सो०) दशहरा।
**दशोठण**—पु० (सि०) दे० दशना:ण।
**दशोयरा**—पु० (सि०) दशहरा।
**दशोहणा**—स० क्रि० (मं०) पशुओं को घास डालना।
**दशौर**—पु० (सि०) परदेस।
**दसंघा**—वि० (मं०, सि०) जहां पेड़ की तीन चार शाखाएं आड़ी-तिरछी मिली हों।
**दसणा**—स० क्रि० दिखाना।
**दसमी**—स्त्री० दशमी।
**दसांग**—पु० (मं०) दे० दशना:ण।
**दसांगला**—वि० दस अंगुलियों वाला।
**दसांदा**—पु० (सि०) जुकाम की दवा, जोशांदा।
**दसांरी**—वि० (ह०) सबसे अच्छी उपज।
**दसा**—स्त्री० दशा। दिशा। ग्रहचाल।
**दसाणा**—स० क्रि० दिखाना।
**दसाळी**—वि० पत्तल बनाने वाला।
**दसाल्ला**—पु० दुशाला।
**दसाही**—स्त्री० (सि०) दे० दशना:ण।
**दसुआं**—वि० दसवां।
**दसूठन**—पु० (सि०) पुत्र का जन्म होने के ग्यारहवें दिन बाद मनाया जाने वाला उत्सव।
**दसूणि**—स्त्री० (सो०) देवशयनी एकादशी जो आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में पड़ती है।
**दसूती**—वि० मोटा सूती कपड़ा। दो धागों के ताने-बाने वाला कपड़ा।
**दसेरा**—वि० दस सेर का
**दसेहरा**—पु० दशहरा।
**दसोणा**—स० क्रि० दिखाया जाना।
**दस्त**—पु० अतिसार।
**दस्ता**—पु० लोहे या लकड़ी का दंड। चौबीस कागज़।
**दस्ताना**—पु० हाथ में पहनने का सूत या ऊन आदि का बना गिलाफ।
**दस्वाला**—पु० (चं०) दे० दसूठन।
**दहाड़**—स्त्री० (शि०) चिल्लाहट।
**दहाड़ना**—अ० क्रि० चिल्लाना।
**दहजा**—स्त्री० ध्वजा, झंडा।
**दहवाणा**—पु० तरबूज।
**दां**—पु० (चं०) पशु बांधने की रस्सी।
**दांउआं**—पु० (कु०) दे० दांओ।
**दांओ**—पु० (शि०, सि०) पशुओं को बांधने की रस्सी।
**दांगा**—पु० (सि०) दंगा, लड़ाई-झगड़ा।
**दांडना**—स० क्रि० (शि०) दंड देना।
**दांडी**—वि० (शि०) दंडित।
**दांतण**—स्त्री० (सो०) दातुन।
**दांतो**—वि० (शि०) आसानी से टूटने वाला,(अखरोट आदि)।
**दांद**—पु० दांत।
**दांदद्दू**—पु० (सि०, सो०) दूध के दांत।

**दांदण**—वि० (शि०) बाहर को निकले दांतों वाली।
**दांदणा**—स० क्रि० (शि०) दांत मारना।
**दांदबाजणा**—अ० क्रि० सर्दी के कारण दांतों का बजना।
**दांदर**—स्त्री० (सि०) चिनाई में छोड़ी जगह।
**दांदल**—स्त्री० दांती जिससे धान, गेहूं व घास काटा जाता है।
**दांदळु**—पु० (बि०) विरले दानों वाला मक्की का भुट्टा।
**दांदा**—पु० (सि०) आरी के दांत।
**दांदी**—वि० (कां०) जिसके दांत बड़े हों।
**दांदे**—वि० (सि०, शि०) जिसके दांत बाहर को निकले हों।
**दांदो**—पु० (शि०) खेत का सीमा पत्थर।
**दांवटे**—स्त्री० (शि०) पशुओं को बांधने के लिए प्रयोग की जाने वाली छोटी रस्सी।
**दा.**—स्त्री० जलन।
**दा.इ**—स्त्री० (सो०) दुहाई।
**दा.क**—स्त्री० (सि०) अधिक पीड़ा।
**दा.कणा**—स० क्रि० (सो०) धक्के देना।
**दा.गड़**—वि० (सो०) चालाक, कुशल।
**दा.चणा**—स० क्रि० (सो०) पालन-पोषण करना।
**दा.ड़**—स्त्री० दाढ़।
**दा.णी**—वि० (बि०) दाहिनी।
**दा.नबाच**—स्त्री० (सो०) धान बोने के लिए उपयुक्त वर्षा।
**दा.म**—स्त्री० (सो०) धाम।
**दा.र**—स्त्री० (सो०) पर्वत की चोटी।
**दा.ला**—पु० (सि०) टीला।
**दा**—स्त्री० (सि०, शि०) स्नेह, दया।
**दा**—अ० (शि०) में।
**दा**—अ० का।
**दा**—पु० दावं-पेंच।
**दा**—अ० (शि०) आदर या प्रेमसूचक संबोधन शब्द।
**दाइड़ा भाहिड़ा**—पु० (कु०) दुहिता। धर्म का रिश्ता।
**दाइणा**—वि० दाहिना (दायां)।
**दाइयो**—क्रि० (शि०, सि०) एक ही वंश के।
**दाई**—स्त्री० (सो०) प्रसव के समय सहायक स्त्री।
**दाईचारा**—स्त्री० (कां०, ऊ०, ह०) दाई का कार्य करने की क्रिया।
**दाईचारा**—पु० (सि०, शि०) भाईचारा, बिरादरी।
**दाईरा**—पु० (शि०) घेरा।
**दाउण**—स्त्री० (कु०) ढलानदार वस्तु का अन्तिम छोर।
**दाऊ**—पु० (कु०) चीज़, वस्तु।
**दाए**—स्त्री० (सि०, शि०) दाई, बिरादरी के लोग।
**दाओ**—पु० (सो०, शि०) बिल। गुफा।
**दाओ**—पु० (शि०) दावा, मुकद्दमा।
**दाओ**—पु० कुश्ती का दावं। मौका।
**दाओपेच**—पु० दावंपेंच।
**दाकणा**—स० क्रि० (सि०) कठिनाई से विदा करना।
**दाख**—स्त्री० किशमिश।
**दाखणा**—स्त्री० (सो०) दक्षिणा।
**दाखल**—पु० दाखिल, प्रविष्ट।
**दाखला**—पु० प्रवेश शुल्क, दाखिला।
**दाखा**—वि० (बि०) मीठा।
**दाखो**—पु० (सि०) दे० दाख।
**दाग**—पु० चिह्न, निशान, कलंक, पीड़ा।
**दाग**—पु० मृतक को अग्नि देने की क्रिया।
**दागड़**—पु० (चं०) दागयुक्त, कलंकित।
**दागड़ा**—पु० (कु०) Ficushispide. कठगूलर।
**दागड़े**—पु० (कु०) दे० दागड़ा।
**दागण**—स्त्री० (कु०, सि०) आभूषण बनाने का सांचा।
**दागण**—वि० (चं०, कां०, ऊ०) धोखा देने वाली।
**दागणा**—स० क्रि० चिता को अग्नि देना। कलंकित करना।
**दागणा**—स० क्रि० बंदूक चलाना, निशाना लगाना।
**दागलगाणा**—स० क्रि० बदनाम करना।
**दागला**—पु० (बि०) अंजीर का वृक्ष जिसका फल बाहर से काला तथा अंदर से लाल होता है।
**दागला**—वि० दाग युक्त फल, कलंकित।
**दागा**—पु० (सो०) धागा।
**दागी**—वि० (शि०, सो०) अपराधी।
**दागी**—वि० दागयुक्त फल, कलंकित।
**दागी**—वि० (शि०) रोग से पीड़ित।
**दागी**—वि० (चं०) धोखेबाज़।
**दागी**—पु० (बि०, चं०) दाह संस्कार करने वाले।
**दागु**—पु० दाह संस्कार में सम्मिलित व्यक्ति।
**दागे**—वि० (सि०) कसूरवार, कलंकित व्यक्ति।
**दाघला**—वि० (मं०) अधिक मिर्च वाला।
**दाघिणा**—स० क्रि० (कु०) अधिक आंच से पानी सूख जाने पर सब्जी आदि का बर्तन में लग जाना।
**दाच**—पु० काटने का एक औज़ार, बड़ी दांती, हंसिया।
**दाचटा**—पु० (सि०) छोटा 'दराट'।
**दाचड़ू**—पु० (शि०, सो०) छोटी 'दराटी'।
**दाची**—स्त्री० दांती।
**दाज**—पु० दहेज।
**दाजड़/डू**—पु० (कां०, ऊ०) दहेज में मिली वस्तु।
**दाड़क**—पु० अनारदाना।
**दाड़न**—पु० (सो०) दाड़िम का वृक्ष।
**दाड़नी**—स्त्री० अनार का वृक्ष।
**दाड़या**—पु० (शि०, सि०) प्यार सूचक संबोधन। पुरुष या पति के लिए संबोधन शब्द।
**दाड़यो**—पु० (सि०) अनारवृक्ष।
**दाड़ली**—स्त्री० Cedrela serrata.
**दाड़वै**—पु० (कु०) अनारदाना।
**दाड़ा**—पु० बढ़ी हुई दाढ़ी।
**दाड़िए**—स्त्री० (सो०) स्त्री के लिए संबोधन शब्द।
**दाड़िय**—वि० (शि०) भली औरत।
**दाड़ी**—स्त्री० (सो०) दाढ़ी।
**दाड़ू**—पु० दाड़िम, जंगली अनार।
**दाड़े**—स्त्री० (मं०, सि०, शि०) दाढ़ी।

**दाड़ेया**—वि० (सि०, शि०) सज्जन पुरुष।
**दाड़ो**—पु० (शि०) दे० दाड़ा।
**दाढ़ना**—स० क्रि० दांत मारना।
**दाढ़ी-दाह**—स्त्री० (मं०) दंतशूल।
**दाढ़ू**—पु०(कु०) ठोड़ी।
**दाण**—पु० (सि०, शि०) दान।
**दाणा**—पु० दाना, घोड़े आदि का दाना।
**दाणा-पाणी**—पु० अन्नजल।
**दाणिख**—वि० (सि०) थोड़ा, ज़रा सा।
**दाणे**—पु० देवता की ओर से देवता के गुर या पुजारी द्वारा दिए गए अक्षत।
**दाणे**—पु० (कु०) पोस्त के दाने।
**दाणो**—पु० (सि०) विवाह के अवसर पर गांव की लड़कियों को दिया गया दान।
**दाणो**—पु० (शि०) दाना।
**दातण**—स्त्री० दातुन।
**दातण**—वि० (कु०) दान करने वाली, दानी।
**दातरा**—पु० (सि०) बारीक घास काटने वाली दांती।
**दाता**—वि० दानी, दान देने वाला।
**दातायण**—वि० (शि०) दानशीलता।
**दातार**—पु० (शि०) प्रभु।
**दाते**—स्त्री० (शि०) दांती।
**दाद**—पु० (कु०) बड़ा भाई।
**दाद**—स्त्री० त्वचा रोग।
**दादकिये**—पु० (कां०, बि०, ऊ०) ददिहाल के लोग।
**दादकिओ**—पु० ददिहाल के लोग।
**दादसु**—स्त्री० (मं०) वर की दादी।
**दादा**—पु० (सि०, शि०) बड़ा भाई।
**दादी**—स्त्री० (शि०) नानी।
**दादी/दे**—स्त्री० (सि०, शि०) बड़ी बहिन।
**दादू**—पु० दादा।
**दादोर**—पु० (शि०) मेढक।
**दाना**—वि० वृद्ध; बुद्धिमान व्यक्ति।
**दानी**—वि० (शि०) दान देने वाला।
**दानु**—पु० (कु०, शि०) दानव।
**दानू**—पु० (कु०) युवा व्यक्ति।
**दानू**—पु० दान देने वाला पुरुष।
**दानो**—पु० (सि०) सांप।
**दानो**—वि० (शि०) दे० दाना।
**दाफड़ना**—स० क्रि० (शि०) रोटी को तवे पर ज़ोर से रखना।
**दाफणा**—स० क्रि० (कु०) थपकना।
**दाब**—स्त्री० (सि०) जड़ी-बूटी से बना लेप।
**दाब**—पु० दबाव।
**दाब**—पु० (सि०) खच्चर के असबाब में लगाए जानेवाले मोटे कंबल।
**दाबण**—वि० (सि०) पानी वाली भूमि।
**दाबण**—स्त्री० (सि०) घने जंगल वाला भाग।
**दाबणा**—स० क्रि० (कु०, सि०, शि०) दबाना।
**दाबणे**—स्त्री० (सि०) छोटे मृत बच्चों को दफनाने की जगह।
**दाबा**—पु० (सो०) जड़ी-बूटियों का पीसा हुआ घोल जो घाव पर लगाया जाता है।
**दाम**—पु० (सि०) बछड़ा।
**दाम**—पु० मूल्य।
**दाम**—पु० (सो०, सि०) विवाह का अंतिम व मुख्य भोज।
**दाम**—पु० (कु०) हल में जोता गया नया बैल।
**दामदु**—पु० (शि०) बछड़ा।
**दामड़ी**—स्त्री० (शि०, सि०) पैसा, दमड़ी।
**दामण**—पु० (शि०) पहाड़ का निचला भाग।
**दायणा**—वि० (सि०) दाहिना।
**दाये**—स्त्री० (शि०) दाईं।
**दार**—पु० घर की दीवारों में लगने वाला शहतीर, इमारती लकड़ी।
**दार**—पु० (चं०) दरवाज़ा।
**दार**—पु० (शि०, सो०, चं०) इमारती लकड़ी। पुत्र। फांसी।
**दारछो**—वि० (सि०) तिरछा।
**दारचू**—वि० (शि०) निःशुल्क कार्य करने वाला।
**दारमदार**—पु० (शि०) निर्भर।
**दारी**—स्त्री० दाढ़ी।
**दारू**—पु० बारूद।
**दारू**—पु० शराब।
**दारुव**—स० क्रि० गांव के लोगों को खाना देना।
**दारोई**—पु० (सि०) इमारती लकड़ी को लाने वाले लोगों का समूह।
**दाळ**—स्त्री० दाल।
**दाळचीने**—स्त्री० (शि०) दारचीनी।
**दाळजी**—वि० (शि०) गरीब।
**दाळज़े**—वि० (सि०) दे० दाळजी।
**दालणो**—स० क्रि० (सि०) फाड़ना।
**दाळल**—स्त्री० अदालत, न्यायालय।
**दालमोठ**—स्त्री० मोठ नामक दाल से बनी नमकीन।
**दाळा**—पु० मोटा आटा।
**दाळा**—पु० विभिन्न अनाजों को पीस कर बनाई गई पशुओं की खुराक।
**दाळा**—पु० (शि०) मृत व्यक्ति के दाह संस्कार के लिए काटी गई लकड़ी।
**दालीज़ा**—पु० (शि०) आलस्य।
**दालों**—पु० (सि०) पशु को दिया जाने वाला अन्न।
**दाल्टे**—स्त्री० (शि०, सि०) दाल।
**दाल्लु**—वि० (ह०) विरले दानों वाला मक्की का भुट्टा।
**दाव**—पु० (कां०) चपटी छेनी।
**दाव**—पु० (सो०) चूहों आदि का बिल।
**दाव**—पु० दावं।
**दावणा**—पु० (मं०) घर की छत डालने में प्राथमिक स्लेटों का सिलसिला।
**दावत**—स्त्री० निमंत्रण।
**दावां**—पु० (सि०, सो०, शि०) पशु को बांधने की रस्सी।
**दावा**—पु० अभियोग, मुकद्दमा।

दाशा—स्त्री० (कु०) शहतूत की प्रजाति के वृक्ष 'चोर' में लगने वाला एक फल जिसका स्वाद खट्टा-मीठा होता है।
दास—पु० सेवक।
दास्सा—पु० (कां०, ऊ०) घर की छत में लगने वाला शहतीर जिस पर छत की कड़ियां टिकी रहती हैं।
दाह—स्त्री० जलन, आंतरिक पीड़ा। प्रेम।
दाहणा—वि० (सो०) दाहिना।
दाहू—वि० (शि०) मृतक को जलाने वाला।
दाहड़—स्त्री० दाढ़।
दाहपड़िया—पु० (कां०) भूत। छल-कपट।
दिंघड़ा—पु० (सो०) दे० धिंदड़ा।
दि:जणा—स० क्रि० (सो०) सहन करना।
दि:णचा—पु० (सो०) दे० धिणचा।
दि:मा—वि० (सि०) धीमा।
दिआळ—वि० (कु०) दयालु।
दिआलटा—पु० (सो०) गुज़ारा।
दिआशलाए—स्त्री० (सि०, शि०) दियासलाई।
दिउटीकीड़ा—स्त्री० (कु०) ऐसा कीड़ा जिसके पिछली तरफ रोशनी होती है, जुगनू।
दिउठी—स्त्री० मिट्टी का छोटा दीपक।
दिउशड़ी—स्त्री० (शि०) दे० दियुठड़ी।
दिऊआ—पु० दीपक।
दिऊन—पु० (चं०) Sarcococa prumpormis.
दिऊळी—स्त्री० जुगनू।
दिओ—पु० देवता का प्रतिनिधि।
दिओण—पु० (सि०) हिमपात।
दिओळ—स्त्री० दहलीज।
दिक—वि० तंग, परेशान, दुःखी।
दिकदारी—स्त्री० दिक्कत, कठिनाई।
दिक्कत—स्त्री० (सो०) परेशानी।
दिक्ख—अ० (शि०) कम, थोड़ा।
दिक्खणा—स० क्रि० देखना।
दिक्खा-देक्खी—स्त्री० देखा-देखी।
दिक्षा—स्त्री० गुरुमंत्र लेने की क्रिया।
दिखणो—स० क्रि० (शि०) देखना।
दिखलाए—स्त्री० (सि०) दिखलाने के बदले में दिया जाने वाला धन।
दिखाऊ—वि० नकली।
दिखावा—पु० आडंबर, ऊपरी तड़क-भड़क।
दिग—स्त्री० (शि०) दिशा।
दिगर—अ० (कु०) अलग, अलावा, अतिरिक्त।
दिढ़—वि० (शि०) हृष्ट-पुष्ट।
दिढ़ाणा—स० क्रि० (शि०) दृढ़ करना।
दिणा—स० क्रि० (मं०) देना।
दिन—पु० दिन, सूर्योदय के बाद से सूर्यास्त तक का समय।
दिनड़ी—स्त्री० पूरा दिन।
दिनडू—पु० छोटा दिन।
दिनणो—स० क्रि० (शि०) देना, प्रदान करना।
दिब्ब—पु० (सो०) नमक या मिठास की अधिकता।
दिब्ब—पु० (चं०) दुःख।
दिम—पु० (कां०) पशुओं का एक रोग विशेष।
दिया—पु० दीपक।
दियाऊणा—वि० (कु०) बेचारा।
दियाल—पु० (शि०) गंधर्व।
दियाळी—स्त्री० दीवाली, दीपावली।
दियाळू—पु० देवताओं को घी व अन्य पेय चढ़ाने का मिट्टी का बना छोटा बर्तन।
दियुठड़ी—स्त्री० मिट्टी का छोटा दीपक।
दियुळिया—पु० (बि०, ऊ०, कां०) जुगनू।
दियूठी—स्त्री० (बि०) दे० दियुठड़ी।
दियोख—पु० दीपक को रखने हेतु बना लकड़ी का पात्र।
दिल—पु० हृदय।
दिलआखुणा—अ० क्रि० लगाव होना।
दिलडू—पु० दिल।
दिलदार—वि० साहसी, बहादुर। प्रेमी।
दिलरा—वि० हिलते हुए सींग वाला पशु।
दिलवाणा—स० क्रि० दिलवाना।
दिलाणा—स० क्रि० दिलाना।
दिली—वि० हार्दिक।
दिल्ल—पु० दे० दिल।
दिल्ला—पु० दरवाज़ा या खिड़की के पल्ले के ढांचे में लगा लकड़ी का टुकड़ा, दिलहा।
दिवखड़ि—स्त्री० (सो०) दे० दियुळिया।
दिवठी—स्त्री० मिट्टी का ज्योति पात्र।
दिवड़ि—स्त्री० (सो०) मिट्टी का दीपक।
दिवड़े—स्त्री० (सि०) दे० दिवड़ि।
दिवा—पु० (शि०) मृतक के घर में जलाया जाने वाला दीपक। तंबाकू पीने की चिलम।
दिवान—पु० मंत्री, दीवान।
दिवान—पु० (शि०) कविता संग्रह।
दिवाना—वि० (शि०) पागल। दीवाना।
दिवाल—स्त्री० (शि०) दीवार।
दिवाश्लाए—स्त्री० (सि०) दियासलाई।
दिवै—पु० (सि०) दे० दियुळिया।
दिशणा—अ० क्रि० दिखाई देना।
दिसणा—अ० क्रि० दे० दिशणा।
दिह—पु० (चं०) दिन।
दिहाड़—पु० (कु०) दोपहर, दिनभर।
दिहाड़ा—पु० दिन। सूर्य।
दिहाड़ी—स्त्री० मजदूरी। दिन।
दिहाड़ी-दपोहर—पु० (कु०) दिन-दोपहर।
दिहाड़ीदार—वि० दैनिक मजदूर।
दिहात—पु० (सि०) गांव, देहात।
दिहाती—वि० (शि०) ग्रामीण।
दिहणो—अ० क्रि० (शि०, सि०) बर्फ का गिरना।
दींदो—पु० (सि०) वर्षा।

**दींवा**—पु० (सो०) देवता का गुर।
**दी:**— स्त्री० (सो०) पुत्री, कन्या।
**दी:ज**—स्त्री० (सि०) विश्वास।
**दीअंदो**—पु० (शि०) बर्फबारी।
**दीआ**—पु० दे० दिया।
**दीउआ**—पु० दे० दिया।
**दीउळी**—स्त्री० दे० दियुळिया।
**दीओ**—पु० (शि०) दीपक। चिलम। बर्फ।
**दीगचा**—पु० (शि०) छोटा पतीला।
**दीघी**—स्त्री० (शि०) पोखर, तालाब।
**दीछी**—वि० (कु०) शाकाहारी।
**दीड़**—पु० (सि०) सहारा, हिम्मत।
**दीण**—स्त्री० (सो०) हिमपात।
**दीण**—पु० (चं०) देय। ऋण।
**दीणदार**—पु० (मं०) ऋणी।
**दीणा**—स० क्रि० (कु०) देना।
**दीणा**—अ० क्रि० (सो०) हिमपात होना।
**दीणार**—स्त्री० (शि०) हिमपात।
**दीदार**—पु० (शि०) दर्शन।
**दीन**—वि० निर्धन।
**दीन**—पु० (कु०) ग्रह दशा।
**दीनजहान**—पु० दुनिया।
**दीनड़**—वि० (बि०, कां०, ऊ०) दुखिया।
**दीनमान**—पु० दीनईमान, दया तथा धर्म।
**दीनार**—स्त्री० (शि०) बर्फ।
**दीनार**—पु० सोने का सिक्का।
**दीप**—पु० द्वीप।
**दीपदानी**—स्त्री० एक डिब्बा जिसमें दीपक की सामग्री रखी जाती है।
**दीपी**—स्त्री० (सि०) एक खेल जिसमें एक खिलाड़ी हाथ से थपकी मार कर भागता है और दूसरे उसको पकड़ने को दौड़ते हैं।
**दीब**—स्त्री० (सि०) देवता के सामने सच्चाई प्रस्तुत करने हेतु किसी व्यक्ति द्वारा तेल के उबलते कड़ाह में हाथ डालने की प्रथा।
**दीमक**—स्त्री० लकड़ी में लगने वाला कीड़ा, दीमक।
**दीयौट**—पु० (सि०) दीपदान।
**दील्ला**—पु० दे० दिल्ला।
**दीवड़ी**—स्त्री० (सि०, सो०) दे० दियुळिया।
**दीवर**—पु० (सि०) दीपदान।
**दीवा**—पु० दीप, दीपक।
**दीवा**—पु० (सि०, शि०) चिलम।
**दीवा-बाती**—स्त्री० धूप-दीप।
**दीवाशळाई**—स्त्री० (सो०) दियासलाई।
**दीह**—स्त्री० (शि०) बेटी।
**दीहड़े**—पु० (बि०) Sidaspp.
**दुंयणी**—वि० (कु०) ठिंगनी, नाटी।
**दुंद**—स्त्री० (चं०) एक हड्डी विशेष।
**दुंदीया**—वि० (मं०) प्रश्नफल बताने वाला, ज्योतिषी।
**दुंदु**—वि० दो दांतों वाला।
**दुंदुहाळा**—पु० (कां०) दूध तथा उससे बने पदार्थ।
**दुंधदुंधाळा**—पु० (कां०) दे० दुंदुहाळा।
**दुंब**—स्त्री० पूंछ। वेणी।
**दुंबा**—पु० (कां०, बि०, ऊ०) पुरुष के सिर के लंबे व अस्त-व्यस्त बाल।
**दुंयकरी-छा:**—स्त्री० (सो०, बि०) अंगारे पर सरसों का तेल डालकर मिट्टी के बर्तन को उस पर रख कर धुआं देने की क्रिया।
**दु:ड़**—पु० चूहे का बिल।
**दु:णना**—स० क्रि० (सो०) दही बिलोना।
**दु:णा**—स० क्रि० दूध दुहना।
**दु:त**—स्त्री० दुत्कार।
**दु:दला**—पु० (सो०) दूध छोड़ने वाला पौधा या वृक्ष।
**दु:दिया**—वि० (सो०) दूध जैसे रंग वाला।
**दु**—अ० (शि०) से।
**दुआं**—पु० (सो०) धुआं।
**दुआंजणा**—स० क्रि० (कु०) इकट्ठी वस्तु को अलग-अलग करना।
**दुआ**—स्त्री० दवा, औषधि। दुहाई। प्रार्थना।
**दुआ**—वि० (चं०) दूसरा।
**दुआइत**—पु० (कु०) दवात।
**दुआई**—स्त्री० दे० दवाइ।
**दुआजू/जण**—वि० (कां०, बि०, ऊ०) दे० दवाजू।
**दुआणा**—स० क्रि० दिलवाना।
**दुआणा**—पु० (सि०) खाट की रस्सी। तरबूज की तरह का फल।
**दुआदशी**—स्त्री० (चं०) द्वादशी।
**दुआनी** —स्त्री० दो आने का सिक्का।
**दुआर**—पु० द्वार, दरवाज़ा।
**दुआरपाल**—पु० द्वारपाल।
**दुआरसाख**—स्त्री० दरवाज़े की चौखट।
**दुआरी**—स्त्री० खिड़की।
**दुआला**—पु० देवालय।
**दुआळा**—पु० दिवाला, विनाश।
**दुआली**—वि० (कु०) झूठा।
**दुआळी**—स्त्री० (सि०) आरी, जिसे दो व्यक्ति चलाते हैं।
**दुआळे**—अ० चारों ओर।
**दुआळे-होणा**—अ० क्रि० पीछे पड़ जाना।
**दुआवणो**—स० क्रि० (शि०) अनाज को दो बार साफ करना। खेत में दूसरी बार हल चलाना।
**दुआस**—स्त्री० उदास। निरादर।
**दुआसी**—स्त्री० उदासी।
**दुआसी:ण**—पु० (चं०) उदास होने की क्रिया।
**दुआसी:णा**—अ० क्रि० (चं०) उदास होना।
**दुआह**—स्त्री० (कु०) उमस।
**दुइ**—वि० (शि०) दो (संख्या)।

दुइज़—स्त्री (शि०) द्वितीया (तिथि)।
दुइजा—अ० (शि०) अन्य, दूसरा।
दुई—वि० (चं०) दूसरी।
दुई—वि० दो (संख्या)।
दुईबिआ—वि० चालीस।
दुएली—वि० दोबारा।
दुकटु—अ० (कु०) मुट्ठी भर आटा।
दुकड़ी—स्त्री० (बि०, कां०, सि०) दो से संबंधित, दो व्यक्ति।
दुकदुक—स्त्री० धक-धक, घबराहट।
दुकरें—अ० (कु०) शायद।
दुकला—पु० (चं०) दुविधा।
दुका—अ० (कु०) मुट्ठी भर आटा।
दुका—पु० (कु०) धोखा, रिश्वत, घूस।
दुका—वि० (बि०, कां०, ऊ०) दो।
दुकाल—पु० (शि०) अकाल।
दुकी—वि० (कु०) अंगूठे और दो अंगुलियों के बीच आई थोड़ी सी चीज।
दुकी—वि० दो पैसे का सिक्का।
दुकेल—वि० (सि०) जो अकेला न हो।
दुक्कड़—वि० (कां०) दे० दुकी।
दुक्का—पु० (चं०) लकड़ी के दोनों छोर में बांधा गया कपड़ा जिसमें बीमार आदमी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है।
दुक्का—पु० (सो०) चुटकी भर।
दुख—पु० (सो०) दुःख।
दुखचाईत—स्त्री० (सि०) तकलीफ।
दुखण—पु० (कु०) फोड़ा।
दुखणा—अ० क्रि० (कु०, शि०) फोड़ा हो जाना, जख्म हो जाना।
दुखणा—अ० क्रि० जख्म का पुनः दुखना।
दुखणी—स्त्री० (कु०) फुंसी।
दुखणू—पु० (सि०, सो०, शि०) फोड़ा।
दुखणो—पु० (मं०, शि०) फोड़ा, फुंसी।
दुखणो—अ० क्रि० (सि०) दर्द होना।
दुखणो—अ० क्रि० (शि०) फोड़े का पक जाना।
दुखा—पु० (सि०) फोड़ा।
दुखाउणो—स० क्रि० (शि०) दुखाना।
दुखाणा—स० क्रि० दे० दुखाउणो।
दुगणा—वि० दो गुना।
दुगणो—वि० (शि०) दो गुना।
दुगदुगी—स्त्री० (शि०) आभूषण विशेष।
दुगदुगी—स्त्री० दिल की धड़कन।
दुगला—वि० (सि०) दो नसल वाला पशु।
दुगुण—वि० (सि०) दो गुना।
दुग्गण—वि० (सो०,चं०) दुगुना होने का भाव।
दुजड़ा—वि० दूसरा, विपरीत स्वभाव वाला।
दुज्जा—वि० दूसरा।
दुड़कणा—अ० क्रि० कूदना, धूल से लथपथ होना।
दुड़कणा—स० क्रि० (शि०) ज़मीन पर कूद कर उसे सख्त करना।
दुड़कणो—अ० क्रि० (शि०, सि०) कूदना, तेज़ दौड़ना।
दुड़का—वि० गाढ़ा।
दुड़का—पु० मोटा कंबल।
दुड़का—पु० (मं०) लकड़ी का चूहादान।
दुड़कू—पु० (सि०) धड़कन।
दुड़वा—पु० (कु०) Ainsliaca aptera.
दुड़ाणा—स० क्रि० भगाना।
दुणाका—वि० (शि०) दोहरा।
दुणाज—पु० (कां०) मोटे छिलके वाला गलगल प्रजाति का एक खट्टा फल।
दुणास—पु० (कु०) जो घास वर्ष में दो बार काटा जाता है।
दुणावणो—स० क्रि० (शि०) पुनः हल चलाना।
दुणु—पु० (कु०) घास की चटनी।
दुणो—वि० (शि०, सि०) दो गुना।
दुतिया—स्त्री० द्वितीया।
दुदरु—पु० (मं०) बैंगनी, एक वृक्ष विशेष।
दुदरुपाथर—पु० (मं०) हल्के बैंगनी रंग का कठोर पत्थर।
दुदहंडी—स्त्री० (शि०) दूध रखने का मिट्टी का पात्र।
दुद्दू—पु० (शि०, सि०) स्तन।
दुददा—पु० (सि०) मक्की का अधपका भुट्टा।
दुदधड़—पु० छोटा सा वृक्ष।
दुध—पु० दूध।
दुधला—पु० (कां०) दूध बढ़ाने वाला घास।
दुधली—स्त्री० एक पौधा जिसके पत्तों को तोड़ने पर दूध निकलता है, यह फोड़ा पकाने के काम आता है। Cryptolepis buchanani
दुधाणी—पु० पानी युक्त दूध।
दुधार—पु० दूसरा घर जहां कुछ दिन के लिए चराने की सुविधा के लिए मवेशी रखे जाते हैं।
दुधार—स्त्री० (चं०) अधिक दूध देने वाली गाय या भैंस।
दुधारा—वि० (शि०) दोनों ओर धार वाला।
दुधारु—वि० (शि०) दूध देने वाला पशु।
दुधिया—वि० दूध के रंग का, हलका श्वेत।
दुधियानाग—पु० सफेद नाग।
दुधी—स्त्री० (सि०) Wrightia tomentosa. कुटज।
दुधेल—वि० (शि०) दे० दुधारु।
दुनिया—स्त्री० संसार।
दुनो—पु० (शि०) जंगली लहसुन, लहसुन की तरह का एक जंगली घास जिसे दाल सब्जी में प्रयुक्त किया जाता है।
दुन्ने—वि० (शि०, सि०) दोनों।
दुपकणा—स० क्रि० (कु०) बच्चे को सुलाने के लिए धीमी-धीमी थपकी देना।
दुपटा—पु० दुपट्टा।
दुपहर—स्त्री० दोपहर।
दुपारे—स्त्री० (शि०) दोपहर का भोजन।
दुपासा—वि० दोनों ओर का।
दुपासे—वि० दे० दुपासा।

दुप्पड़—वि० (चं०) फूला हुआ।
दुब—स्त्री० दूर्वा, दूब।
दुबकणा—स० क्रि० (सि०) उत्साह बढ़ाना।
दुबकणा—स० क्रि० दे० दुपकणा।
दुबकणा—अ० क्रि० डर कर छिपना।
दुबकाणा—स० क्रि० डांटना।
दुबकू—पु० (शि०) छोटी छलांग।
दुबकू—वि० डरपोक।
दुबक्खी—वि० दोनों ओर या दोनों पक्षों का।
दुबट्टा—वि० दो पत्थरों वाला ऐसा स्थान जहां दो रास्ते मिलते हैं।
दुबट्टा—पु० (चं०) दुपट्टा।
दुबणा—अ० क्रि० (चं०) मुंह बंद करना। छिपना।
दुबत्ती—पु० (चं०, कां०) दो रास्ते।
दुबदा—स्त्री० (सो०) दुविधा।
दुबधा—स्त्री० दुविधा।
दुबला—वि० कमज़ोर, दुबला।
दुबलो—वि० (शि०) पतला, कमज़ोर।
दुबाटा—वि० ऐसा स्थान जहां दो रास्ते मिलते हैं।
दुबाह—पु० (चं०) वह स्थान जहां से पानी दो भागों में प्रवाहित हो।
दुमकणो—अ० क्रि० (सि०) उछलना, कूदना।
दुमन्ना—वि० दुविधा वाला।
दुमानु—पु० (शि०) एक वाद्ययंत्र।
दुमिट्ट—वि० (ह०, बि०, कां०) चिकनाहट युक्त मिट्टी।
दुमुंहा—वि० दो मुंह वाला सांप।
दुमुंही—वि० दो मुंह वाली सर्पिणी।
दुमेल—वि० (कां०, ऊ०, बि०) दे० दुबाटा।
दुरंगा—वि० दो रंगों वाला।
दुर—अ० कुत्ते को भगाने के लिए प्रयुक्त शब्द।
दुरके—अ० (सि०) दूर।
दुरगत—स्त्री० दुर्दशा।
दुरढ़े—अ० कुछ दूर।
दुरदशा—स्त्री० दुर्दशा।
दुरलु/पु—पु० (कु०, मं०) Andrachne cordifolia.
दुरधदे—स्त्री० (सि०) भेड़-बकरी के गर्भवती होने की क्रिया।
दुरांदू—पु० (सि०) नाड़ा डालने की सिलाई।
दुराज़—पु० (सि०) लकड़ी को सीधा करने का औज़ार।
दुराज़ा—पु० दरवाज़ा।
दुराणा—पु० (चं०) द्वारपाल।
दुरित—स्त्री० (चं०) दोहरी ऋतु।
दुरे—अ० (शि०, सि०) दूर।
दुरे—पु० (कु०) Jasminum pubescens.
दुरेडे—अ० कुछ दूरी पर।
दुर्घाड़ी—स्त्री० एक कांटेदार झाड़ी।
दुलई—स्त्री० (चं०) दोबारा मिट्टी की लिपाई।
दुलका—पु० (कु०) अनाज से निकला बारीक छिलका।
दुलत्ती—स्त्री० पशुओं द्वारा पीछे वाली दोनों टांगों से किया गया प्रहार।
दुलहिन—स्त्री० (कां०, शि०, सो०) Hydrangea Altissima.
दुला—पु० (सि०) दूल्हा, वर।
दुल्ला—पु० दूल्हा, वर।
दुल्लिन—स्त्री० दुलहिन, वधू।
दुवाई—स्त्री० (सो०) श्मशान।
दुवाड़े—स्त्री० (सि०) पट्टू।
दुवाल—पु० (मं०) हींग खाने का परहेज़। मृतक का परिवार शोक के दिनों में हींग खाना बंद रखता है।
दुवाल—स्त्री० दीवार।
दुशणा—वि० (सि०) दुष्ट, बुरा।
दुशणो—स० क्रि० (शि०) पोंछना, साफ करना।
दुशणो—वि० (शि०) दुष्ट।
दुशमण—पु० दुश्मन, शत्रु।
दुशमणे—स्त्री० (शि०, सि०) दुश्मनी, शत्रुता।
दुशमणि—स्त्री० (सो०) दे० दुशमणे।
दुसणा—अ० क्रि० (चं०) नष्ट होना।
दुसणा—अ० क्रि० दिखाई देना।
दुसमणी—स्त्री० दे० दुशमणे।
दुसाला—पु० दुशाला।
दुसाला—वि० (चं०) कक्षा में अनुत्तीर्ण।
दुसेरी—वि० दो सेर का बाट।
दुसैन—पु० (ऊ०) Culedrookia appositifolia.
दुसो—अ० (शि०) दोपहर, दिन।
दुस्कर्म—पु० दुष्कर्म।
दुस्त—पु० (सि०) दोस्त, मित्र।
दुस्मण—पु० दुश्मन।
दुहणू—पु० (ह०) दूध दुहने का मिट्टी का पात्र।
दुहणो—पु० (शि०) ग्रह के कारण हुआ अनिष्ट।
दुहत्थड़/ड़ी—पु० दोनों हाथों से किया गया प्रहार।
दुहरा—वि० दोहरा।
दुहराणा—स० क्रि० दोहराना।
दुहरू—पु० (कु०, मं०) दंपति।
दुहाटा—पु० (कु०) मिला हुआ आटा (मक्की और गेहूं आदि)।
दुहाटी—स्त्री० (कु०) दो तरह के आटे की बनाई गई रोटी।
दुहाड़—स्त्री० (चं०) आधी बोतल।
दुहाडू—पु० (कु०) दे० दुहाड़।
दुहाणा—स० क्रि० (कु०) धुलाना।
दुहाणा—स० क्रि० (चं०) गाय आदि दुहने में मदद करना।
दुहार—पु० (बि०, कां०, ह०) उधार।
दुहार—पु० (चं०) गाय-भैंस को दुहने वाला।
दूंदडू—पु० (मं०) मेढ़े के वेश में दून-दून का स्वर करने वाला देवता, मेढ़े की शक्ल का एक देवता।
दूंदू—वि० (कु०) दो दांतों वाला।
दूंदे—वि० (मं०) जिन बैलों के दो दांत निकले हों।
दूःई—स्त्री० (सो०) धुंध।
दूःल—स्त्री० (सि०, सो०) धूल।
दू—सर्व० (कु०) वह।

**दू**—वि० (शि०, सि०) दो।
**दूआ**—वि० (सि०) दो अंक वाला। दूसरा।
**दूइने/नो**—वि० (सि०) दोनों।
**दूई**—स्त्री० (चं०, शि०) द्वितीया।
**दूक्कड़**—पु० (मं०) गिद्धा तथा भजन, नृत्यों की धुन।
**दूखूड़णा**—अ० क्रि० (सि०) पांव आदि पर चोट आना।
**दूज**—स्त्री० (सि०) मैयादूज।
**दूज**—स्त्री० (कु०, सि०) द्वितीया तिथि। दूसरी बारी।
**दूजड़**—वि० जो भैंस या गाय दूसरी बार बच्चा देने वाली हो।
**दूजा**—वि० द्वितीय, दूसरा।
**दूजीघेरे**—अ० (कु०) दूसरी बार।
**दूजे**—वि० (शि०) दूसरे।
**दूजौ**—वि० (कु०) दूसरा।
**दूठा**—पु० (सि०) खट्टी सब्जी रखने का विशेष बर्तन।
**दूणसा**—पु० (चं०) ओढ़नी।
**दूणा**—वि० दोगुना।
**दूणा**—स० क्रि० (सो०) दुहना।
**दूणा**—स० क्रि० (सि०) खुशामद करके मनाना।
**दूणा/णे**—पु० (कु०) स्त्रियों द्वारा शरीर पर पट्टू लगाने पर पट्टू के एक किनारे को पीठ पर दोहरा किया जाने की क्रिया।
**दूणु**—पु० (सि०) दूध दुहने का बर्तन।
**दूणू**—पु० (सि०, कु०, मं०) दे० दुनो।
**दूणे**—पु० (सि०) मैदानी क्षेत्र।
**दूणो**—पु० (शि०) दे० दुनो।
**दूणो**—स० क्रि० (सि०) दूध दुहना।
**दूणौ**—वि० (कु०) दुगुना।
**दूता**—वि० (शि०) द्वितीय।
**दूती**—स्त्री० (शि०) दुष्ट औरत जो इधर-उधर चुगली करे।
**दूद**—पु० (सो०, सि०) दूध।
**दूदला**—पु० (सि०) दे० दुघली।
**दूदले**—स्त्री० (सि०) दे० दुघली।
**दूधमुदड़ी**—स्त्री० (मं०) दे० दूधापत्ती।
**दूधापत्ती**—स्त्री० कांसे की थाली में दूध मिश्रित पानी डालकर उसमें डाले बहुत से सिक्कों में से वर-वधू द्वारा चांदी का रुपया उठाने की रस्म।
**दूधिया**—वि० (शि०) दूध के रंग जैसा।
**दूधेंयौवणा**—अ० क्रि० (मं०) कम आंच से खाद्य पदार्थ का बिगड़ना।
**दूपोर**—पु० (शि०) दोपहर का भोजन।
**दूब**—स्त्री० (शि०) दूर्वा।
**दूबर**—वि० कठिन।
**दूम**—स्त्री० (मं०) दे० दूब।
**दूम**—वि० दूसरे दर्जे का।
**दूमदूमा**—वि० (मं०) ढलानदार।
**दूमह**—पु० (कु०) बगावत, क्रान्ति, विद्रोह।
**दूर**—पु० एक वृक्ष विशेष।
**दूरका**—वि० बहुत दूर।
**दूरदराज**—वि० दूरवर्ती।
**दूरा**—अ० दूर।
**दूरात**—अ० दूर।
**दूरात**—स्त्री० (सि०) आधी रात।
**दूरी**—स्त्री० (कां०, कु०, मं०) Nyctanthes arbartriastis.पारिभद्रका।
**दूल्हा**—पु० (मं०) तीन बड़े पत्थरों का चूल्हा।
**दूषणा**—अ० क्रि० कलंक लगना।
**दूस**—पु० (सि०) दिन।
**दूस**—स्त्री० (शि०) सूर्य।
**दूस**—स्त्री० (कां०) एक झाड़ी विशेष।
**दूहक**—पु० (सं०) दंपती।
**दूही**—वि० (कु०) दोनों।
**दूहणा**—स० क्रि० दुहना।
**दूहणूं**—पु० दूध दुहने का बर्तन।
**दूहरतीहरू**—पु० दूसरी बार चलाया हल। दूसरी तीसरी तह।
**देंइ**—स्त्री० दही।
**दे:णू**—पु० (सि०) दुधारू पशु।
**दे:वता**—पु० (सो०) दौहित्र।
**दे**—अ० (सि०) मैं।
**देइणा**—स० क्रि० (कु०) दिया जाना।
**देइब**—पु० (कु०) भगवान, ईश्वर, दैव।
**देई**—स्त्री० (कु०) दौहित्री, पुत्री, देवी।
**देई**—स्त्री० राजकन्या, राजपुत्री।
**देई**—स्त्री० (सि०) शरीर।
**देईमा**—अ० (कु०) पीड़ा आदि की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द।
**देउठी/ठे**—स्त्री० (शि०) मंदिर।
**देउढ़**—वि० (कु०, शि०, सि०) डेढ़।
**देउर**—पु० (शि०) देवर।
**देउराणे**—स्त्री० (शि०) देवरानी।
**देउल**—पु० (सि०) देवालय।
**देउवा**—स्त्री० राजकुमारी।
**देऊ**—पु० (शि०) देव, स्थानीय देवता।
**देऊ**—पु० (कु०) देवता।
**देऊआ**—पु० (कु०) ड्योढ़ी।
**देऊआ**—वि० (सो०, सि०) देवता का गुर।
**देऊखेल**—स्त्री० (कु०) देवता के गुर या गुरों द्वारा देवता की अराधना में किया जाने वाला विशेष नृत्य।
**देऊघ्रा**—पु० (कु०) देव-गृह, देवता का उपमंदिर।
**देऊन्ना**—स्त्री० (कु०) देवाचार, देवता की कार्यवाही।
**देऊठी**—स्त्री० (शि०) मंदिर।
**देऊठोण**—पु० (शि०) लड़कियों का त्योहार।
**देऊदार**—पु० देवदार का वृक्ष।
**देऊद्रोह**—पु० (कु०) देवता का अनिष्ट, देव अपराध।
**देऊद्रोह**—पु० (कु०) देयता का क्रोध।
**देऊद्रोही**—स्त्री० (कु०) देवता का अनिष्ट करने वाला, देवता का अनिष्ट करने पर सजा भुगतने वाला।
**देऊपाणा**—स० क्रि० (कु०) देवता को किसी का अनिष्ट करने

के लिए पुकारना।
**देऊफेरा**—पु० (कु०) देवता द्वारा अपने क्षेत्र में की जाने वाली परिक्रमा।
**देऊळ**—स्त्री० (शि०, सि०) प्रवेशद्वार, दहलीज।
**देऊली**—स्त्री० (कु०) देवता की सेवा, देवता का अनुष्ठान।
**देऊळु**—पु० (कु०) देवता के अधीनस्थ लोग।
**देऊसोहरना**—स० क्रि० (कु०) देवता को संवारना।
**देए**—स्त्री० (शि०) राजकुमारी।
**देएटे**—स्त्री० (शि०) देह, शरीर।
**देओ**—पु० देवता।
**देओबसेड़ना**—स० क्रि० (मं०) मनौती पूर्ण होने पर किसी देवी-देवता का यज्ञ करना।
**देओर**—पु० देवर।
**देओरा**—पु० मंदिर, उपासना स्थल।
**देओरे**—स्त्री० (सि०) छोटा मंदिर।
**देओरो**—पु० दे० देओरा।
**देओल**—पु० (सि०) दरवाज़े का धरातल।
**देओळा**—वि० (शि०) देव संबंधी।
**देओळी**—स्त्री० (शि०) दे० देऊळ।
**देओश**—पु० (मं०) शुभारंभ।
**देखणाहार**—वि० (शि०) देखने वाला।
**देखणा**—स० क्रि० (सो०) देखना।
**देखणागा**—पु० (शि०) अपनी करनी का फल देखने वाला।
**देखणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) देखना।
**देणदारि**—स्त्री० (सो०) देनदारी।
**देणदारे**—स्त्री० (सि०, शि०) ऋण, कर्ज़।
**देणनो**—स० क्रि० (शि०) देना।
**देणलेण**—पु० लेनदेन।
**देणा**—स० क्रि० देना।
**देणो**—स० क्रि० (सि०) दे० देणा।
**देथ**—स्त्री० (कु०) ढेर।
**देथळ**—स्त्री० (चं०) दहलीज़।
**देदी**—स्त्री० (चं०) बड़ी बहन।
**देधशार**—पु० (सि०) बलि न लेने वाला देवता।
**देन**—पु० (कां०) ऋण।
**देबता**—पु० देवता।
**देबरी**—स्त्री० (सो०) देवी का छोटा मंदिर।
**देबल**—पु० (कु०) धान की एक किस्म।
**देबी**—स्त्री० देवी।
**देबे**—स्त्री० (शि०) देवी।
**देयोला**—पु० देवता।
**देर**—पु० देवर।
**देरच**—पु० (मं०) बूढ़ी दीवाली के अवसर पर प्रातः चार बजे निकलने वाला दिक् बंधन।
**देरेओ**—पु० (मं०) नदी।
**देरैणे**—स्त्री० (मं०) देवरानी।
**देव**—पु० (सो०) देवता।
**देवकार**—पु० देवता के सेवक को दिया जाने वाला पारिश्रमिक।
**देवकार**—पु० (शि०) देवता का कार्य।
**देवकार**—पु० (शि०) देवता के कार्य-कर्ता।
**देवजूनी**—स्त्री० देवयोनि।
**देवटू**—पु० (सि०) छोटे देवता।
**देवटे**—स्त्री० (सि०) देवता के निमित्त रखी गई गाय जिसका केवल दूध ही प्रयोग किया जाता है छाछ, मक्खन नहीं।
**देवठन**—पु० (सो०) देवोत्थानी एकादशी जो कार्तिक शुक्ल पक्ष में आती है।
**देवठि**—स्त्री० (सो०) दे० देबरी।
**देवढ़ी**—स्त्री० (सि०) मंदिर।
**देवती**—स्त्री० (कु०) देवी जिसका रथ नहीं होता।
**देवथा**—पु० (सि०) देवता के लिए अन्न की भेंट।
**देवळ**—स्त्री० (सि०, सो०) दहलीज।
**देवा**—पु० (सि०) पुजारी। ऐसा व्यक्ति जिसमें देवता खेले, गुर।
**देवाल**—वि० (शि०) दाता।
**देवाळी**—स्त्री० (शि०) दीवाली।
**देवीदयार**—पु० Curessus torulosa.
**देवी-रा-बार**—पु० मंगलबार, देवता का विशेष दिन।
**देवे**—स्त्री० (सि०) देवी।
**देवोस्थाने**—वि० (सि०) ऐसी स्थिति जब देवता गुर के माध्यम से बोलना बंद करके अपने स्थान पर चला जाए।
**देशनकाळा**—पु० देश की सीमा से निष्कासित किया जाना।
**देशारीते**—स्त्री० (सि०) रीति-रिवाज।
**देशी**—वि० (मं०) देसी, शुद्ध।
**देशौ**—पु० (सि०) देश।
**देशी**—पु० (सि०) मैदानी क्षेत्र।
**देसी**—वि० स्थानीय, स्वदेशी।
**देसो**—पु० (सि०) शुभ मुहूर्त का दिन।
**देह**—स्त्री० शरीर।
**देह**—स्त्री० (कु०) देहात।
**देहड़**—स्त्री० (मं०) दहलीज।
**देहणदारी**—स्त्री० (कु०) भुगतान, देनदारी।
**देहर**—पु० मंदिर।
**देहरा**—पु० मंदिर।
**देहरा**—पु० (ह०, चं०) विवाहादि में पूजा के स्थान पर रखी जाने वाली लकड़ी की वर्गाकार चौखट विशेष जिसमें दीपक रखा जाता है।
**देहरी**—स्त्री० (कां०, बि०) किसी देवता का छोटा मंदिर।
**देहल**—स्त्री० (कां०) लकड़ी का वह भाग जिस पर चर्खा स्थित रहता है।
**देहल**—स्त्री० दहलीज़।
**देहा**—वि० ऐसा।
**देहीं**—स्त्री० दही।
**देहुड़**—वि० (कु०) डेढ़।
**देह**—स्त्री० (सि०) शरीर।
**देहळ**—स्त्री० (ऊ०, कां०) बारात के मार्ग में विवाहित स्त्रियों को दी जाने वाली भेंट।
**दैंठी**—स्त्री० (सो०) ठोड़ी।

**दैंत**—पु० (मं०) दैत्य, पशुओं की रक्षा करने वाला वन्य देवता।
**दैंत**—वि० दैत्य आकार वाला, हृष्ट-पुष्ट।
**दै:ड़ा**—पु० (शि०, सि०) दिन।
**दै**—अ० (शि०) में।
**दैआई**—स्त्री० (शि०) देवता को अपने घर में लाकर पूजन करने के बाद जनता को दिया गया प्रीति भोज।
**दैउळी**—स्त्री० (शि०) दीवाली के एक मास बाद मनाई जाने वाली दीवाली।
**दैघाहा**—पु० (शि०) मृतक को जलाने वाला।
**दैड़कदा**—वि० (कु०) पक्का, मोटा, कस कर बुना हुआ।
**दैण**—स्त्री० ऋण।
**दैणत**—स्त्री० (चं०) बुरी आदत। स्वभाव।
**दैणदार**—पु० देनदार।
**दैणदैणे**—स्त्री० (शि०, सि०) सौत, सौतन।
**दैणा**—वि० (सि०) दायां।
**दैणा**—स० क्रि० देना।
**दैणीग**—अ० (शि०) मामूली, साधारण।
**दैनदार**—वि० (सि०) कर्ज़दार, ऋणी।
**दैमा**—पु० (कु०) दमा, खांसी।
**दैर**—पु० (शि०) दरवाज़ा।
**दैर**—पु० (चं०) देवदार।
**दैरी**—स्त्री० (शि०) खिड़की।
**दैल**—पु० (शि०) देवता के वाद्य बजाने वाले।
**दैळी**—स्त्री० (शि०) आधे अनाज पर खेत बीजने के लिए देने की क्रिया।
**दैव**—पु० (कु०) परमात्मा।
**दैसमी**—स्त्री० (कु०) विजयदशमी।
**दैहनार**—स्त्री० (शि०) बर्फ गिरने की क्रिया।
**दों**—पु० (सि०) पशु बांधने की रस्सी।
**दों**—पु० (सि०, सो०, शि०) धूप।
**दोंगीमोंगी**—स्त्री० (शि०) दुविधा।
**दोंणा**—स० क्रि० (शि०) मिट्टी पत्थर हटाकर किसी स्थान को खाली करना।
**दोंद**—पु० (कु०) दांत।
**दोंदगुह**—पु० (कु०) दांत की मैल।
**दोंदण/ल**—वि० (कु०) जिसके दांत आगे को निकले हों।
**दोंदणा**—स० क्रि० (कु०) आरी के दांत तेज करना।
**दोंघड़ी**—स्त्री० (कु०) पट्टू के दोनों किनारों पर ताना-बाना में बनाई गई विशेष धारी।
**दोंये**—स्त्री० (सि०, शि०) दही।
**दो:ड़**—स्त्री० (चं०) चुराह क्षेत्र की महिलाओं का पट्टू से बना परिधान।
**दो:ड़ा**—पु० कनक के साथ की घास।
**दो:ड़ू**—पु० कंबल।
**दो:णा**—स० क्रि० (शि०, सो०, सि०) धोना।
**दो:णिया**—पु० (सि०) धनिया।
**दो:णे**—पु० (सि०) कपड़े धोने का लकड़ी का डंडा, थापी।
**दो:तरा**—पु० (सि०) धतूरे का पौधा।
**दो:ली**—वि० दूसरा, द्वितीय।
**दोआ**—पु० (शि०) दोहा।
**दोइंटणा**—स० क्रि० (कु०) पैर से दबाना।
**दोइंत**—पु० (सि०) सांप।
**दोएड़े**—पु० (सि०) विवाह में गाए जाने वाले संस्कार गीत।
**दोकर**—वि० (बि०) लगभग दो।
**दोख**—पु० (सि०, शि०) दोष। देव-दोष। पाप।
**दोखणी**—स्त्री० (कु०) दोहरी बात करने वाली। एक पुराने लोक गीत की नायिका।
**दोखा**—पु० (मं०) देवता या पितरों का दोष।
**दोगडू**—पु० (कु०) देवता का नया गुर।
**दोगरी**—स्त्री० (शि०) घर से दूर बना छोटा घर जो फसल की रखवाली एवं पशु रखने के लिए बनाया जाता है।
**दोगला**—वि० दोहरी नीति वाला, वर्णसंकर। दो पक्षों का।
**दोगलू**—वि० दे० दोगला।
**दोगलो**—वि० (शि०) दे० दोगला।
**दोगा**—पु० (सि०) गर्भवती।
**दोगी**—स्त्री० (कु०, शि०) अतिरिक्त भाग।
**दोगो**—वि० (मं०) जिस बैल के दो दांत निकले हों।
**दोग्घड़**—पु० (कां०) इकट्ठे उठाए गए दो घड़े।
**दोग्घड़**—स्त्री० (चं०) दो वस्तुओं को इकट्ठा उठाने की क्रिया।
**दोघड़**—पु० (चं०) दोहरा घराट।
**दोघरा/री**—पु० (स्त्री०) दे० दोगरी।
**दोघरा**—वि० दो घरों का मेहमान।
**दोघरू**—पु० 'दोगरी' में रहने वाला।
**दोघा**—पु० मोटा छिलका। आरी या कुल्हाड़ी से काटा गया मोटा तख्ता।
**दोचडु**—पु० (शि०) लड़की का बेटा, दौहित्र।
**दोचि**—स्त्री० (सो०) दे० दोगरी।
**दोची**—स्त्री० (शि०) दे० दोगरी।
**दोछी**—स्त्री० (सि०) दे० दोगरी।
**दोजानू**—वि० (शि०) घुटने के बल।
**दोजू**—पु० (कु०) अनाज रखने का चमड़े का बड़ा थैला।
**दोजू**—वि० (सि०, शि०) गाय भैंस दुहने में कुशल।
**दोड़**—पु० (सि०) ऊन का बना दोहरा पट्टू।
**दोड़/डू**—पु० (शि०, सो०) भेड़ की ऊन का कंबल।
**दोड़**—स्त्री० दौड़।
**दोड़न**—स्त्री० (कु०) Punica grenatum. दाड़िम।
**दोड़ी**—स्त्री० (सि०) सहेली, सखी।
**दोडू**—पु० (बि०) पशुओं के खाने का बर्तन।
**दोण**—स्त्री० (कां०) बाट चढ़ी रस्सी, चारपाई में प्रयुक्त रस्सी।
**दोत**—स्त्री० (बि०, ह०) सुबह।
**दोतला**—वि० (शि०) दो मंज़िल का मकान।
**दोत्ते/दोत्ती**—अ० आने वाला कल।
**दोथ**—वि० (कां०, ह०) दुधारू पशु।
**दोथी**—अ० (कु०, मं०) प्रातः काल।
**दोदळ**—वि० (सि०) मोटा, ढीला (आदमी)।
**दोदा/धा**—वि० दूधिया मक्खी।

**दोदो:रू**—पु० (सो०) नि:संतान दंपती।
**दोदोई**—स्त्री० (शि०) जलन।
**दोदूधी**—पु० दूध बेचने वाला।
**दोन**—पु० (सि०) धन।
**दोना**—पु० (शि०) कटोरी के आकार का पत्तों का बना पात्र।
**दोना**—पु० (चं०) Artimesia vulgoris.
**दोपट्टा**—पु० (कु०) दुपट्टा।
**दोपड़ी**—स्त्री० (कु०) सर्वदा गाली के साथ समासगत प्रयुक्त होता है यथा 'गाली-दोपड़ी' (गालियां)।
**दोपरा**—वि० (सि०, शि०) दो मंज़िला।
**दोपा**—पु० (कु०, शि०, सि०) लकड़ी का चीरा हुआ ठेला।
**दोपाइ**—स्त्री० (सि०) दोपहर।
**दोपारी**—स्त्री० (कां०) दोपहर का भोजन।
**दोपासिया**—वि० दोनों ओर का।
**दोपोर**—स्त्री० (सि०) दोपहर।
**दोफे**—अ० (सि०) बार, बारी।
**दोबड़ी**—वि० (सि०) दुगुना।
**दोबणा**—स्त्री० (शि०) मांस की तरी।
**दोबत्तर**—वि० दो समय का।
**दोबत्तरा**—पु० (चं०) दो समय में बोया जाने वाला खेत।
**दोबदोबा**—पु० (सि०) दबदबा।
**दोबला**—वि० (कु०) दोहरी बात करने वाला।
**दोबा**—पु० (सि०) दो बार खेत में हल चलाने की क्रिया।
**दोम**—वि० (कां०, ऊ०, बि०) दो, दूसरा, दूसरे स्तर का।
**दोम**—पु० (सो०) मिट्टी का ढेला।
**दोमट**—वि० रेतीली मिट्टी।
**दोमटणा**—स० क्रि० (कु०) दे० दोइंटणा।
**दोमड़ी**—स्त्री० (सि०) दमड़ी।
**दोमा**—पु० (सि०) दमा।
**दोमाही**—स्त्री० द्विमासिक।
**दोमुंहा**—वि० (शि०) दो मुंह वाला। कपटी, दोहरी चाल चलने वाला।
**दोरकोर**—पु० (सि०) अदला-बदली।
**दोरखोल**—पु० (सि०) दरख्त, पेड़।
**दोरजे**—पु० (सि०) दर्जी।
**दोरठी**—स्त्री० (शि०) जिस घर से बहु लाना उसी घर में बेटी का विवाह करने की क्रिया।
**दोरडणो**—स० क्रि० (सि०) कुचलना।
**दोरद**—स्त्री० (सि०) दर्द।
**दोरला**—पु० (सि०) मसाला।
**दोराउणो**—स० क्रि० (शि०) दोहराना।
**दोराह**—वि० (सो०) दोहरा।
**दोर्ज**—पु० (सि०) दर्ज।
**दोलख**—वि० (कां०, ऊ०, ह०) दो पुत्रियों के बाद जन्मा पुत्र, दो शिखा वाला।
**दोलड़ा**—वि० (शि०) दो खंडों वाला।
**दोलड़ी**— स्त्री० गले का आभूषण।
**दोलणा**—पु० (सि०) झूला।
**दोल्का पैहर**—पु० (मं०) प्रातः काल का समय।
**दोवात**—स्त्री० (सि०) दवात।
**दोशळा**—वि० (कु०) दो भाग या शाखाओं वाला डंडा।
**दोष**—पु० (सि०, शि०) देव दु:ख, देवता के नाराज़ होने का दोष।
**दोस**—पु० दे० दोष।
**दोसणा**—स० क्रि० (कु०) पट्टू के दो भाग के जोड़ को सिलना।
**दोसर**—वि० दो सेर।
**दोसर**—स्त्री० (चं०) दूसरी बार।
**दोसरू**—पु० (सि०) चांदी का आभूषण।
**दोसवां**—वि० (सि०) दसवां।
**दोसाला**—वि० (शि०) दो वर्ष का, एक ही कक्षा में दो वर्ष लगाने वाला।
**दोस्ताना**—पु० मित्रता।
**दोहजी**—पु० (बि०) दूध विक्रेता।
**दोहड़**—वि० (कां०) दोहरा कंबल।
**दोहडू**—पु० दे० दो:डू।
**दोहर**—वि० दोहरा, दोबारा।
**दोहर**—स्त्री० (शि०) मोटे सूत की बुनी ओढ़ने की चादर।
**दोहरा**—वि० दो तहों वाला।
**दोहराणा**—स० क्रि० (शि०) दोहराना।
**दोहरो**—वि० (शि०, सि०) दोहरा।
**दोहला**—पु० (कां०) मधुमक्खी।
**दोहाजू**—वि० (सि०) दे० दवाजू।
**दोहाड़ना**—स० क्रि० (कु०) बीज बोने से पहले एक बार हल जोते गए खेत पर पुन: हल जोतना।
**दोहार**—वि० (ह०) दो फसली भूमि।
**दोही**—स्त्री० (ह०) शिकायत।
**दोहेतु**—पु० (मं०) दौहित्र।
**दोहणा**—स० क्रि० दूध दुहना।
**दोहदी**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) दूध विक्रेता।
**दौं**—स्त्री० (सि०) आग जलाने के लिए फूंक देने की क्रिया।
**दौं**—पु० (सि०, सो०, शि०) धूप, सूर्य का ताप।
**दौंदु**—पु० (सो०) आग में फूंक मारने का बांस या लोहे का उपकरण।
**दौंर**—स्त्री० (चं०) घर के बरामदे में सुसज्जित कटघरे।
**दौंर**—स्त्री० (चं०) वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी मकान व फर्नीचर बनाने के लिए प्रयुक्त होती है।
**दौंस**—स्त्री० (शि०) डांट-डपट, धमकी।
**दौ:तें**—स्त्री० (सि०) धरती, भूमि।
**दौ**—पु० दावं-पेंच।
**दौ**—पु० (शि०) दे० दआ।
**दौईं**—स्त्री० (सि०) दही।
**दौउणा**—स० क्रि० (शि०) बछड़े को जुताई हेतु सिघाना।
**दौऐं**—स्त्री० (सि०) दही।
**दौओड़**—पु० (सि०) दे० दोहड़।
**दौकड़**—पु० (कु०) ऐसा 'दौका' जिसमें पानी अधिक मात्रा में

रह गया हो।

**दौका**—पु० (कु०) धुली हुई वस्तु के निथारने के बाद बचा अवशेष।

**दौखणो**—पु० (सि०) दक्षिण।

**दौगला**—पु० (बि०) अंजीर की जंगली किस्म।

**दौठड़**—स्त्री० (कु०) दौड़।

**दौड़नो**—अ० क्रि० (सि०, शि०) छिनना।

**दौड़ा**—पु० (कु०) मैल की जमी हुई परत।

**दौड़ी**—स्त्री० (सो०) Toonaserrata.

**दौढ़िना**—स० क्रि० (कु०) बोए खेत के ऊपर वर्षा से मिट्टी की तह बैठ जाना।

**दौण**—स्त्री० (बि०) मूंज की बारीक रस्सियों से बुनी गई चारपाई के एक किनारे पर बुनाई को कसने के उद्देश्य से प्रयुक्त मोटी रस्सी।

**दौण**—स्त्री० (चं०) कपड़े के किनारे का अंतिम छोर, दामन।

**दौणा**—स० क्रि० (सि०, शि०) बछड़ों को जुताई के लिए तैयार करना।

**दौणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) जलाना।

**दौत**—पु० (शि०) दवात।

**दौफतर**—पु० दफ्तर, कार्यालय।

**दौफिणा**—अ० क्रि० (कु०) बर्फ आदि से ढक जाना।

**दौबड़ना**—स० क्रि० (कु०) लगातार सिर पर थप्पड़ मारना।

**दौबड़िना**—अ० क्रि० (कु०) लगातार थप्पड़ खाना। बारिश से भीग जाना।

**दौबणा**—अ० क्रि० (शि०) दबना। किसी के दबाव में आना।

**दौमा**—पु० (शि०) दमा, श्वास रोग।

**दौया**—स्त्री० (शि०) दया।

**दौर**—पु० (सि०) समय।

**दौर**—पु० (मं०) दरवाज़ा।

**दौर**—पु० मिट्टी का बना उथला व चौड़ा पात्र।

**दौरजी**—पु० (कु०, शि०, सि०) दर्जी।

**दौरटे**—स्त्री० (शि०) पुरानी दरी।

**दौरा**—पु० (कु०) देवता की एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया।

**दौरा**—पु० (कां०, शि०) चक्कर आने की क्रिया। प्रवास। खून के चलने की गति।

**दौरा**—पु० (कु०) चीरा, चीर पड़ना।

**दौरे**—स्त्री० (सि०, शि०) दरी।

**दौर्ल**—स्त्री० (कु०) एक प्रकार का पेड़ जिसे काटने पर गंध सी आती है।

**दौल**—स्त्री० (सो०) बेचैनी, दहल।

**दौळ**—पु० (शि०, सि०) दल, समूह।

**दौळणो**—स० क्रि० (शि०) दलना, कुचलना।

**दौलत**—स्त्री० धन।

**दौलतमंद**—वि० धनवान, धनाढ्य।

**दौलना**—पु० (कु०) लकड़ी चीरने पर एक ओर का बड़ा भाग।

**दौळना**—स० क्रि० (कु०) हल चलाते समय असावधानी के कारण हल से बाहर भूमि छूटना।

**दौळना**—स० क्रि० (कु०) दबाना, दलना।

**दौळपोथ**—स्त्री० (कु०) अच्छी तरह से काम न करके जल्दी-जल्दी किया गया काम।

**दौला**—पु० (शि०) दलाल।

**दौळिना**—अ० क्रि० (कु०) कुचला जाना।

**दौली**—वि० (चं०) द्वितीय, दूसरा।

**दौळी**—स्त्री० (कु०) दली हुई लकड़ी।

**दौळू**—वि० (कु०) दला हुआ मोटा (आटा), पशुओं के लिए मोटा पीसा अन्न।

**दौश**—वि० (शि०) दस।

**दौशी**—स्त्री० (कु०) शाल, पट्टू आदि में किनारे पर छोड़े गए धागे।

**दौस**—वि० (कु०) दे० दौश।

**दौसणा**—स० क्रि० (कु०) बताना।

**दौसमी**—वि० दशमी।

**दौसुआं**—वि० (कु०) दसवां।

**दौहत्री**—स्त्री० दौहित्री।

**दौहत्रु**—पु० दौहित्र।

**दौहुणा**—अ० क्रि० (कु०) जलना।

**द्यूठी**—स्त्री० (सो०) दीपक।

**द्रंग**—स्त्री० घराट को आने वाली कुल्या।

**द्रंग**—स्त्री० (चं०) आवेश।

**द्रंगड़ी**—स्त्री० एक ही गांव में अलग घरों का समूह।

**द्रंगा**—पु० समूह।

**द्रक**—स्त्री० (सि०, चं०) घाव में पीप पड़ने से होने वाली दर्द।

**द्रक**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) अदरक।

**द्रकड़**—पु० तितर-बितर सामान।

**द्रकणा**—अ० क्रि० दर्द होना।

**द्रकणा**—अ० क्रि० (कां०) बार-बार शौच करना।

**द्रकणा**—अ० क्रि० उबलना।

**द्रक्कळ**—पु० (चं०) गाय या भैंस के लिए पकाया हुआ अन्न।

**द्रग**—स्त्री० एक बहुत बड़ा ढ़ोल।

**द्रग**—वि० भारी शरीर वाला।

**द्रगला**—पु० घर के बाहर शहतीर को बढ़ा कर बैठने के लिए बनाया हुआ स्थान।

**द्रगगड़**—वि० भारी शरीर वाला।

**द्रट**—स्त्री० दरार।

**द्रड़**—स्त्री० ओस का गीलापन।

**द्रड्ड**—पु० खूंटा गाड़ने के लिए बनाया गया गड्ढा। सुराख, बिल।

**द्रड्ढ**—स्त्री० (चं०) चर्म रोग।

**द्रफफड़**—पु० किसी कीट के काटने या रक्त विकार से उभरा निशान।

**द्रब**—स्त्री० कुशा, दूर्वा।

**द्रब**—स्त्री० पानी का मामूली सा छिड़काव।

**द्रबड़**—पु० लगातार किया जाने वाला काम विशेषकर धान आदि कूटने की क्रिया।

**द्रबाड़**—स्त्री० (चं०) शीघ्रता।

**द्रबाड़**—पु० (चं०) चीज़ों का बिखराव।

**द्रब्बड़**—स्त्री० दौड़।

द्रब्बड़—पु० घास वाला मैदान।
द्रभैणा—पु० (कां०) बधाई के समय बांटा जाने वाला धन।
द्रमओआंस—स्त्री० (मं०) कुशोत्पाटिनी अमावस्या।
द्रलणा—स० क्रि० गीले खेत को रौंदना।
द्रलध—स्त्री० (चं०) दाद, ददरी।
द्रव—पु० दौलत।
द्रवड़ू—पु० समूह। घास का छोटा भू-भाग जिसे खेत के रूप में तैयार न किया गया हो।
द्रांगू—स्त्री० कांटेदार झाड़ी जिसमें फल लगते हैं।
द्रांठना—स० क्रि० चीते आदि को घायल करना।
द्रागड़ा—पु० (कु०) छाला। बिच्छूबूटी आदि के छूने से शरीर पर पड़ा छाला।
द्रागले—स्त्री० (मं०) एक झाड़ी जिसे छूने से खारिश होती है।
द्राट—पु० (मं०) लोहे के दस्ते तथा फाल वाला औज़ार जो झाड़ियां काटने के काम आता है।
द्राटी—स्त्री० (मं०) दांती।
द्राटू—पु० (कां०) छोटी दांती।
द्राठना—स० क्रि० दांत से काटना।
द्राढ़ना—स० क्रि० घायल करना। नाखून से नोचना।
द्राण/णी—स्त्री० देवरानी।
द्राबड़—पु० निरंतर कूटने की क्रिया।
द्राळ—स्त्री० दरार।
द्राला—पु० (कु०) टांका, टूटे हुए बर्तन पर लगाया तारकोल आदि का टांका। फोड़े आदि पर लगाया जाने वाला देसी दवाइयों का लेप।
द्राह—पु० चक्के के नीचे छत पर डाली गई लकड़ी, जिसके सहारे छत के चक्के टिके रहते हैं।
द्रिलना—अ० क्रि० युवावस्था में मुंह पर दाने होना। फोड़े का फैलना।
द्रीओं—पु० (शि०, सि०) भैंस का चमड़ा।
द्रीट—स्त्री० (मं०) दहलीज।
द्रीढ़या—पु० (मं०) स्वास्थ्यवर्धक बूटी।
द्रीण—पु० घी या तेल।
द्रुकणा—अ० क्रि० उबलना।
द्रुड्ड—स्त्री० बिल।
द्रुढ़—स्त्री० (ह०) गुफा, बिल।
द्रुब—स्त्री० दूर्वा।
द्रुब्बड़—पु० कूड़ा-कर्कट।
द्रुळ—वि० (चं०) फटा पुराना।
द्रूण—वि० (कां०) अनाज का माप जो चौबीस सेर के बराबर होता है।
द्रूबा—पु० (सो०) रास्ते आदि का अनुमान लगाने का व्यापार।
द्रूमण—वि० (मं०) समतल।
द्रूस्ट—वि० (मं०) दुष्ट।
द्रे:ढ़—वि० (सो०) अधेड़ आयु का।
द्रेढ़—स्त्री० (चं०) दरार।
द्रेल्हका—वि० (कु०) जिसका शरीर मोटा और ढीला हो।
द्रेहगळ—पु० (वि०) कंद विशेष जिसकी सब्जी बनाई जाती है व कच्चा भी खाया जाता है।
द्रेहल—स्त्री० दहलीज।
द्रोटू—पु० (सि०) कर्णाभूषण।
द्रोल्ह—पु० (कु०) बड़ा पेट।
द्रोह—पु० (कु०) अचंभा, आश्चर्य।
द्रोह—स्त्री० (चं०) कसम, शपथ।
द्रोह—पु० (कां०, ऊ०, बि०) धोखा।
द्रोहड़ना—स० क्रि० (कु०) ऊपर-ऊपर से घास काटना।
द्रोहड़ा—पु० गेहूं के बीच उगा घास।
द्रोहड़िना—अ० क्रि० (कु०) कुत्ते द्वारा काटा जाना।
द्रोहला—पु० (कां०) मधुमक्खी।
द्वा:डना—स० क्रि० (सो०) खेत को पहली बार जोतना।
द्वा:र—पु० (सो०) उधार।
द्वा:ळि—स्त्री० (सो०) उतराई, ढलान।
द्वाठणा—स्त्री० (ऊ०, कां०) मध्य, द्वार, दहलीज।
द्वाड़—पु० (सो०) पहली बार जुताई करने का व्यापार।
द्वाड़ना—स० क्रि० (सो०) खेत को बीज बोने से पहले जोतना।
द्वादशलग्न—पु० दरवाज़े पर होने वाला लग्न।
द्वाना—वि० (सि०) दीवाना।
द्वार—पु० द्वार, दरवाज़ा।
द्वारआ—पु० (शि०) लकड़ी की सामग्री।
द्वारखो—पु० (मं०) द्वारपाल।
द्वारना—स० क्रि० (सो०) दीवार आदि को गिराना।
द्वारसाख—स्त्री० दरवाज़े की चौखट।
द्वाल—पु० (कु०) भीतर।
द्वाल—स्त्री० दीवार।
द्वाळी—स्त्री० (कां०) दीपावली।
द्वास—वि० उदास।
द्वाहणा—पु० तरबूज।
द्विसेर—वि० धड़ी, दो सेर।
द्वेड़ना—स० क्रि० (सो०) उधेड़ना।

## ध

ध—देवनागरी वर्णमाला में तवर्ग का चौथा वर्ण। उच्चारण स्थान दंत।
धंअ—पु० (शि०) काम की अधिकता।
धंगड़—पु० (शि०) Acacia Caesia. एक पेड़ विशेष।
धंतारा—पु० (कु०) तानपुरा की तरह का एक वाद्ययंत्र।
धंतूरा—पु० धतूरा।
धंदा—पु० (सो०) कारोबार, काम-काज।
धंधयालू—पु० (ह०) विशेष उत्सव के लिए बनाई गई अस्थाई रसोई।
धंधलाणा—अ० क्रि० (शि०) धुंधला पड़ना।
धंधवाणा—स० क्रि० (शि०) धुआं देकर जलाना।
धंधा—पु० दे० धंदा।

**धइंदो**—अ० (सि०) नीचे।
**धएणो**—अ० क्रि० (शि०) पैदा होना।
**धक**—अ० थोड़ा, कम।
**धकणा**—स० क्रि० अनमने भाव से काम को पूरा करना।
**धकणा**—स० क्रि० धकेलना, जबरदस्ती भेजना।
**धकधक**—स्त्री० कंपकंपी; हृदय की धड़कन।
**धकधकाणा**—स० क्रि० (शि०) भभकाना, जलाना।
**धकधकाहट**—स्त्री० (शि०) धड़कन।
**धकधकी**—स्त्री० (शि०) धुकधुकी।
**धकपक**—स्त्री० (शि०) धड़कन।
**धकलू**—पु० (बि०) चरखे पर काता गया ऊन या सूत का गोला।
**धकाणा**—स० क्रि० ले जाना।
**धकार**—पु० धिक्कार।
**धकियाना**—स० क्रि० (शि०) धक्का देना।
**धकेलना**—स० क्रि० धकेलना, पीछे हटाना।
**धक्की**—पु० (शि०) बहक जाने का भाव।
**धखणा**—अ० क्रि० (सि०) सुलगना।
**धगगड़**—वि० ढीठ, ऐसा आदमी जो हर तरह की परिस्थिति में रह सके।
**धग्यारा**—पु० (कु०, चं०, मं०) धूपदानी, देवपूजा में प्रयुक्त कलछी की शक्ल का पात्र जिसमें धधकते अंगारों के ऊपर गुग्गुल जलाया जाता है।
**धज**—स्त्री० (शि०) शोभा।
**धजणो**—अ० क्रि० (शि०) कमज़ोर होना।
**धजा**—स्त्री० (शि०, सि०) ध्वजा।
**धजेरना**—स० क्रि० (कु०) विश्वास दिलाना।
**धज्जी**—स्त्री० हाशिया का काम देने वाली लकड़ी की सलाख। कपड़े की पतली पट्टिका।
**धटणा**—पु० (चं०) किसी बरतन का ढक्कन।
**धटणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) ठूंस-ठूंस कर खाना।
**धठणा**—स० क्रि० (ह०) जोड़ना।
**धड़ंग**—वि० (शि०) वस्त्रहीन, नंगा।
**धड़**—पु० (कां०, शि०) खेत का दीवार की ओर का भाग।
**धड़**—पु० (सि०) छाती।
**धड़**—पु० (मं०) उपलों का पंक्तिबद्ध ढेर।
**धड़कण**—स्त्री० धड़कन, कंपन।
**धड़कणो**—अ० क्रि० (शि०) धड़कना।
**धड़का**—पु० दिल की धड़कन की बीमारी।
**धड़काणा**—स० क्रि० (शि०) डराना।
**धड़कावणो**—स० क्रि० (शि०) धमकाना।
**धड़खे**—स्त्री० (शि०) हड्डी।
**धड़ची**—स्त्री० (शि०) कलछी।
**धड़च्छ**—पु० (मं०) भात निकालने का त्रिशूल जैसा उपकरण जिसके एक ओर पलटा लगा होता है।
**धड़च्छ**—वि० (ऊ०, कां०, बि०) कुरूप व्यक्ति।
**धड़च्छू**—पु० (मं०) चाय बनाने का लोहे का पात्र।
**धड़ना**—स० क्रि० दांतों से काटकर खाना।
**धड़लटा**—पु० (कां०) तमाशा।
**धड़ल्ला**—पु० धावा। आवाज़। वर्षा की तेज़ बौछार।
**धड़स**—पु० (कु०) धूप जलाने का लोहे का विशेष पात्र।
**धड़ा**—पु० बाट, वज़न, चार या पांच सेर का एक तौल। दल, संगठन।
**धड़ाक**—स्त्री० धड़ाम की आवाज़। अ० तुरंत।
**धड़ाकणा**—स० क्रि० (सो०) झिड़कना।
**धड़ाका**—पु० धूमधाम। टूटने या पीटने की आवाज़।
**धड़ाका**—पु० (शि०) साहस; खटका। कठिन कार्य।
**धड़ाको**—पु० (शि०) धमाका।
**धड़ाधड़**—अ० एकदम, तुरंत।
**धड़ाम**—स्त्री० एकदम गिरने की आवाज़।
**धड़ासा**—पु० (सो०) अट्टहास।
**धड़ी**—स्त्री० (चं०) बीमारी के कारण होंठ पर जमी पपड़ी।
**धड़ी**—स्त्री० एक वज़न जो पांच सेर और कहीं-कहीं दस सेर का होता है।
**धड़ीख**—स्त्री० (कु०) रोटियां बनाते समय पेड़े तैयार करने के लिए प्रयुक्त सूखा आटा।
**धड़ुघ**—वि० गंदा, मैला-कुचैला; भारी भरकम।
**धड़ूंना**—पु० (मं०) झाड़न।
**धड़ेऊणो**—वि० (मं०) भद्दा।
**धड़ेच**—पु० (सो०) नेफा।
**धड़ेणना**—स० क्रि० (कु०) गुस्सा दिलाना।
**धड़ेना**—स० क्रि० (ह०) उतारना।
**धड़ेबंदी**—स्त्री० गुटबंदी।
**धड़ेबाजी**—स्त्री० दे० धड़ेबंदी।
**धड़ेरना**—स० क्रि० उधेड़ना।
**धड़ेला**—पु० (सि०) धूम-धाम।
**धड़ैज**—पु० (चं०, मं०) एक प्रकार का बांस जो मजबूत होता है तथा चारपाई आदि बनाने के काम आता है।
**धड़ैना**—पु० धूल, गर्द।
**धड़ोट**—स्त्री० (चं०) पट्टी, तख्ती।
**धण**—पु० भेड़-बकरी का समूह।
**धणकेरना**—स० क्रि० (कु०) फलदार टहनी आदि को ज़ोर से हिलाना।
**धण पक्का**—वि० (सो०) आधे मन के माप का।
**धणश**—पु० (सो०) धनुष।
**धणसोळा**—पु० (कु०) मीठी सौंफ।
**धणा**—पु० (चं०) घास का व्यवस्थित ढेर।
**धणि**—स्त्री० (चं०) मकान की दीवार।
**धणियां**—पु० धनिया।
**धणी**—पु० भेड़-बकरियों का मालिक।
**धणु**—पु० (शि०) धनुष, 'ठोडा' लोक-नाट्य में प्रयुक्त धनुष।
**धणो**—वि० (सि०) धनी, अमीर।
**धणोरना**—स० क्रि० (कु०) दोहरा करना, कपड़े आदि की दोहरी तह लगाना।
**धत**—स्त्री० (शि०) बुरी लत।
**धतका**—पु० (कु०) गुस्सा; नखरा।

**घसरीरों**—स्त्री० (सि०) धरती, पृथ्वी।
**घलारा**—पु० (मं०) पहली बार हल चलाने की क्रिया।
**घलींगड़**—वि० (शि०) मोटा (मनुष्य)।
**धतूरा**—पु० धतूरा, एक पौधा जिसके फलों में नशा होता है।
**धतूरी**—स्त्री० (चं०) लंबी चिलम।
**धतोगा**—वि० (शि०) नीम पागल।
**धदड़ु**—पु० (कां०) भुट्टा।
**धदेड़ू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) जले हुए चावल।
**धदोळी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) भैंस के दूध का पनीर।
**धधकणा**—स्त्री० (सि०) तेज़ जलन।
**धधकणा**—अ० क्रि० भड़कना।
**धधूनू**—पु० दूध उबालने का पात्र।
**धन**—पु० धन्य।
**धनक**—पु० इंद्रधनुष।
**धनकुटिया**—स्त्री० पीठ से पीठ तथा बाहों को मिला कर खेला जाने वाला खेल।
**धनकुट्टी**—स्त्री० (सो०) दे० धनकुटिया।
**धनघुट्टी**—स्त्री० एक ऐसा कीड़ा जो पीछे से दबाये जाने पर सिर से आवाज़ करता है।
**धनख**—पु० दे० धनक।
**धनत्रै**—पु० (ह०) धोबीघाट।
**धनधाम**—पु० (शि०) रुपया-पैसा।
**धनबा:ग**—अच्छा भाग्य, सौभाग्य।
**धनभाग**—पु० दे० धनबा:ग।
**धनसोआ**—पु० मीठी सौंफ।
**धनूं**—वि० (ह०) एक फसली खेत, जहां केवल धान की ही फसल होती है।
**धनेरो**—पु० (कु०) दे० धरयारा।
**धनेश्वरी**—स्त्री० देवता द्वारा स्त्रियों के लिए प्रयुक्त शब्द।
**धनो**—पु० (शि०) नमस्कार, धन्यवाद।
**धन्ना**—वि० (शि०) धनाढ्य (मनुष्य)।
**धप**—स्त्री० किसी वस्तु के गिरने की ध्वनि।
**धपेरन**—पु० (सि०) धूप जलाने का पात्र।
**धपोल**—पु० (मं०) एक पौधा विशेष जिसकी जड़ों का धूप बनता है।
**धपोल**—पु० एक पात्र विशेष जिसमें धूप तथा दीप साथ-साथ जलाए जाते हैं।
**धप्पड़**—वि० (कां०, ह०) ढीठ, बेशर्म।
**धप्फा**—पु० खुले हाथ से मारने का भाव।
**धप्यारू**—पु० धूपदानी।
**धफ-धफ**—स्त्री० ज़ोर से चलने की आवाज़।
**धब्बा**—पु० कलंक।
**धभूआ**—वि० (सो०) अधूरा।
**धम**—स्त्री० (शि०) किसी भारी चीज़ के गिरने की आवाज़।
**धमक**—स्त्री० हिलने की ध्वनि।
**धमकी**—स्त्री० धमकाने की क्रिया।
**धमचक्का**—पु० धमा चौकड़ी।
**धमच्चड़**—पु० व्यर्थ का शोर।
**धमण**—पु० एक वृक्ष विशेष जिसकी टहनियों को पानी में गला कर उसके रेशे की रस्सी बनाई जाती है। ये हरे चारे के लिए भी प्रयुक्त की जाती हैं।
**धमराला**—पु० बंदूक चलने की आवाज़।
**धमराळा**—पु० (सो०) अफवाह, बढ़ा-चढ़ा कर कही गई बात।
**धमश्यावा**—पु० (शि०) Grewia laexigata.
**धमसेढ़**—पु० (कु०) हलके बादल के दिन सूर्य के गिर्द बादलों का गोल चक्र।
**धमा**—पु० (कु०) यज्ञ, महफिल।
**धमाका**—पु० किसी भारी चीज़ के गिरने की ध्वनि।
**धमाधम**—अ० (सो०) फटाफट।
**धमाल**—पु० शोर-शराबा, उछल-कूद। एक नृत्य विशेष।
**धमास**—पु० (ह०) शोर-शराबा।
**धमुंआ**—वि० (मं०) दो मंज़िला।
**धमुक्कड़**—पु० मुक्का, कुहनी तथा मुट्ठी से मारा गया मुक्का।
**धमूक**—पु० (सि०) मुक्का।
**धमूका**—पु० (शि०) आघात, मुक्के की मार।
**धमोड़ी**—स्त्री० पीले रंग का एक कीट विशेष जिसके काटने से सूजन होती है।
**धम्म**—स्त्री० दे० धम।
**धम्मण**—पु० एक सदाबहार वृक्ष विशेष जिसकी पत्तियां चारे के काम आती हैं। दे० धमण।
**धयाइण**—स्त्री० (शि०) कन्या।
**धयाल**—स्त्री० (शि०) गोद।
**धयाला**—पु० (बि०) गड्ढा बनाने का एक औज़ार।
**धयाव**—पु० (शि०) अध्याय।
**धरंग**—पु० पक्षाघात।
**धरंदर**—वि० धुरंधर, उत्तम गुणों से युक्त।
**धरंदर**—पु० (शि०) पर्वत।
**धरंधर**—वि० (कु०) हृष्ट-पुष्ट।
**धरकोलण**—स्त्री० जूठन।
**धरड़ना**—स० क्रि० काटना, बेढंगे तरीके से खाना।
**धरणा**—स० क्रि० रखना।
**धरणे**—स्त्री० (शि०) धरती।
**धरत**—स्त्री० पृथ्वी, धरती।
**धरत सौका**—वि० (मं०) एक मंज़िल का (घर)।
**धरता**—वि० धारण करने वाला।
**धरती बाड़ा**—पु० सर्प, सांप।
**धरते मशाल**—पु० (मं०) लहसुन।
**धरन**—स्त्री० (मं०) धरती।
**धरन**—स्त्री० नाभि के नीचे की आंत।
**धरना**—पु० प्रार्थना या मांग पूरी न होने तक किसी के यहां अड़कर बैठने की क्रिया।
**धरनेती**—वि० (शि०) "धरना" देने वाले।
**धरब**—पु० (शि०) एक घास का नाम।
**धरम**—पु० धर्म।
**धरमचारी**—पु० (शि०) धर्म का आचरण करने वाला। जिसने धर्म के नाम पर किसी से रिश्ता मांगा हो जैसे धर्म भाई, धर्म

बहिन।
**घरमिक्का**—पु० धर्म का संबंध।
**घरमी**—वि० धर्मरत, दूसरों के हित का काम करने वाला।
**घरमें**—वि० (सि०) दे० धरमी।
**घरयाड़ा**—वि० (कां०) तीसरा हिस्सा।
**घरयासळ**—स्त्री० खसरा।
**घरवाणो**—स० क्रि० (शि०) किसी की परवाह करना।
**घरसाग**—पु० (चं०) पहाड़ की चोटियों पर उगने वाला घास।
**घरसेड़ा**—पु० (सि०) किसी चीज़ के पैरों तले रोंदे जाने का भाव।
**घरा**—पु० (शि०) खेत का आखिरी भाग।
**घराउज़ी**—स्त्री० (कु०) विश्वास दिलाने की क्रिया। झूठ बोलने वाले या अफवाह उड़ाने वाले को सामने खड़ा करवा कर मांगा गया स्पष्टीकरण।
**घराछणा**—अ० क्रि० (सि०) वर्षा का बंद होना।
**घराड़**—स्त्री० (कु०) खारिश।
**घराड़**—स्त्री० खींचातानी।
**घराड़ा**—वि० (शि०) अधूरा (कार्य)।
**घरात**—स्त्री० किसी स्थान पर बोझ को रखने की क्रिया।
**घरात**—स्त्री० (कु०) आधी रात के कुछ बाद का समय।
**घराता**—पु० (सो०) आधी रात का समय।
**घरातु**—वि० आधी रात को काम करने वाला, प्रायः अंधेरे में ही सबसे पहले उठकर काम पर जाने वाला।
**घराघराया**—अ० ज्यों का त्यों।
**घरासण**—स्त्री० (मं०) खसरा, एक बीमारी विशेष जिसके कारण शरीर में फुंसियां निकलती हैं।
**घरियांस**—स्त्री० तसल्ली, संतुष्टि।
**घरीड़**—स्त्री० खींचा-तानी। क्रमिक प्रयास।
**घरीघो**—वि० (मं०) निर्भीक।
**घरूंई**—स्त्री० दांती की हत्थी।
**घरूंजणा**—स० क्रि० नोचना। तंग करना।
**घरूंडणा**—स० क्रि० किसी चीज़ को नोचना।
**घरूण**—पु० (सि०) नवजात शिशु की नाल।
**घरूणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०, ह०) नाड़े का नेफे में से निकलना।
**घरूस**—पु० (चं०) Clebrookia oppositifolia.
**घरूह**—पु० (ह०) भूसे और दानों का मिश्रण।
**घरेठ**—पु० धैर्य।
**घरेड़**—वि० (सो०) अधेड़।
**घरेड़ु**—पु० (ह०) जले चावल।
**घरेरना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०) धागे को दोहरा करना।
**घरेरना**—स० क्रि० सीधा करना।
**घरेली**—स्त्री० चूल्हे के आगे की जगह।
**घरेवड़**—वि० जिसकी आयु साठ के नज़दीक हो।
**घरैंग**—पु० (कु०) पक्षाघात।
**घरोड़ना**—स० क्रि० (ह०) खुरचना।
**घरोड़ा**—पु० गेहूं के खेत में उगी घास।
**घरोड़ा पिटणा**—स० क्रि० व्यर्थ में भारी काम करना।
**घर्न**—स्त्री० धरती।
**धर्मगिट्ठी**—स्त्री० (मं०) जिस स्थान पर व्यक्ति की मृत्यु हुई हो उस स्थान पर दस दिन तक निरंतर जलाई जाने वाली आग।
**धर्मचारा**—पु० धर्म का रिश्ता।
**धर्मणा**—वि० (शि०) धार्मिक।
**धर्म धक्का**—पु० एक ही बार में काम समाप्त करने की क्रिया।
**धर्मशाला**—स्त्री० यात्रियों के निःशुल्क ठहरने के लिए बनवाया हुआ स्थान।
**धर्मशील**—वि० (शि०) धार्मिक।
**धर्मी**—वि० धार्मिक।
**धर्मी महीना**—पु० माघ मास।
**धर्मे पुन्ने**—पु० बिना लेन-देन के किया गया कन्यादान।
**धर्रे उड़ाना**—स० क्रि० (शि०) टुकड़े-टुकड़े करना, किसी को बुरी तरह से हराना।
**घलणा**—अ० क्रि० (शि०) दो टुकड़े हो जाना।
**घलन घलौना**—पु० (मं०) किसी वस्तु को टिकाने के लिए बनाया लोहे या लकड़ी का यंत्र।
**घलोपना**—स० क्रि० (कु०) टटोलना, ढूंढना।
**धवला**—वि० (शि०) भूरे रंग का।
**घशो**—वि० (मं०) चौड़ा, खुला।
**धष्ट**—वि० (शि०) निर्दय, निर्लज्ज।
**धसकणा**—अ० क्रि० भूभाग का बैठ जाना।
**धसका**—पु० ज़ोर से खींचने का भाव।
**धसणा**—अ० क्रि० धंसना।
**धसराळा**—पु० बढ़ा-चढ़ा कर कही गई बात।
**धसावणा**—स० क्रि० (सो०) धंसवाना।
**धहणो**—अ० क्रि० (शि०) धंसना।
**धांई**—अ० (शि०) ज़ल्दी से।
**धांक**—स्त्री० अन्न आदि से भरी बोरियों का ढेर।
**धांगचा**—पु० चिंता, फिकर।
**धांजी**—स्त्री० (सि०) गली।
**धांदा**—पु० (कु०, शि०) धंधा, व्यस्तता का कार्य।
**धांदिए**—अ० (शि०) डट कर।
**धांधली**—स्त्री० मनमानी, जबरदस्ती।
**धांधो**—पु० (शि०) धंधा।
**धांबड़ू**—पु० (कु०) विवाह के अवसर पर 'धाम' के दूसरे दिन का भोज, छोटी धाम।
**धांबणो**—अ० क्रि० (शि०) दौड़ना।
**धा**—स्त्री० (सि०) आवाज़।
**धाअणा**—स० क्रि० (शि०) आवाज़ देना।
**धाआली**—स्त्री० (शि०) जंगल।
**धाई**—स्त्री० (शि०) दूसरों के बच्चों का पालन-पोषण करने वाली।
**धाई**—स्त्री० (मं०) एक झाड़ी विशेष जिसके फूल औषधि बनाने के काम आते हैं।
**धाउड़ा**—वि० (कु०, मं०) अधूरा।
**धाउड़ी**—स्त्री० (सि०) शीशम की जाति का एक वृक्ष।
**धाऊंदी**—स्त्री० (शि०) किसी कार्य को तेज़ी से करने का भाव।

**धाऊ**—वि० (सो०) दौड़ने वाला।
**धाऊ**—पु० (सि०) पुकार।
**धाऊ-खेऊ**—पु० (कु०) कष्ट, कठिन परिश्रम।
**धाऊड़ा**—पु० पेट।
**धाए**—स्त्री० (सि०) एक प्रकार के फूलों की डाली।
**धाओ**—पु० (शि०, सि०) आवाज़।
**धाओ**—पु० घातकी।
**धाक**—स्त्री० दबदबा, ख्याति। आतंक।
**धाकणा**—स० क्रि० (कु०) धक्का देकर निकालना, दूर भेजना।
**धाकलू**—पु० (ह०) कते सूत का गुच्छा।
**धाका**—पु० धक्का।
**धाका-धीमा**—पु० (कु०) धक्का-मुक्की। अनिष्ट बात।
**धाक्का**—पु० दे० धाका।
**धागा**—पु० धागा।
**धागा**—पु० (कु०, मं०) तावीज़, अभिमंत्रित धागा।
**धागो**—पु० (शि०) धागा।
**धाचणा/णो**—स० क्रि० पालन-पोषण करना।
**धाछणा**—स० क्रि० (मं०) दे० धाचणा।
**धाजू**—वि० (सि०) दूसरी शादी करने वाला।
**धाठु**—पु० स्त्रियों द्वारा सिर में बांधा जाने वाला रुमाल या कपड़ा।
**धाठो**—पु० (शि०) धार।
**धाड़**—पु० लूटमार।
**धाड़ना**—स० क्रि० (कु०) मिट्टी नर्म करने के लिए बीज बोने से पहले जुते खेत की दोबारा जुताई करना।
**धाड़वी**—वि० लुटेरा।
**धाड़ा**—पु० (मं०) दे० मुज़ारा।
**धाड़ा**—पु० (कु०) छीना-झपटी।
**धाड़ा**—पु० शोर।
**धाड़ा**—पु० चोरी छिपे किसी चीज़ को उठाने का भाव। घूस।
**धाडू**—पु० (सि०) शोर-शराबा।
**धाडू**—पु० (बि०) बड़ा बंदर जो अकेला रहता और घूमता है।
**धाण**—पु० (शि०) काम।
**धाणशा**—पु० (सि०) धान का भूसा।
**धाणा**—स्त्री० (कु०) गेहूं, सोयाबीन आदि अन्न के भूने हुए दाने।
**धाणियां**—स्त्री० (सि०) धौंकनी।
**धाणियो**—पु० (सि०) धनिया।
**धाणी**—स्त्री० (शि०) योजना।
**धात**—स्त्री० मधुमेह, प्रमेह।
**धात**—स्त्री० धातु।
**धात-धातियंदो**—वि० (शि०) पागल।
**धाता**—पु० (शि०) विधाता।
**धान**—पु० चावल का बीज रूप।
**धानकड़ी**—स्त्री० (सि०) धान की खेती।
**धान बोना**—स० क्रि० (सि०) विवाह में विदाई के समय धान बिखेरते हुए मंगल गीत गाना।
**धान सोवा**—पु० (कां०, बि०) सौंफ।
**धानी**—स्त्री० नहरी, सिंचित, धान बीजने के लिए तैयार दलदली भूमि।
**धानी**—स्त्री० एक आने का आधा भाग अर्थात् पुराने दो पैसों का सिक्का।
**धानोइशा**—पु० (शि०) धान का छिलका।
**धान्नू**—पु० धान वाली भूमि।
**धापरी**—स्त्री० (सि०) काम की अधिकता।
**धापा**—पु० (शि०) धब्बा।
**धाप्फडु**—पु० (सो०) विजातीय पेड़-पौधे या कीटों के स्पर्श से चमड़ी पर उभरने वाला लाल चिह्न जिसमें खुजली होती है।
**धाब्बा**—पु० (शि०, सो०) धब्बा।
**धाम**—स्त्री० विवाहादि के अवसर पर आमंत्रित लोगों को दिया जाने वाला प्रीतिभोज।
**धाम**—पु० (कां०, मं०) पृथ्वी और आकाश के मध्य की स्थिति देव लोक; तीर्थ।
**धाम**—स्त्री० (शि०) काटने की क्रिया।
**धामड़**—पु० उड़ने वाला सर्प।
**धामडु**—पु० छोटी 'धाम', 'धाम' के दूसरे दिन दिया जाने वाला प्रीति भोज।
**धामण**—पु० सांप की एक किस्म।
**धामधिम**—वि० (कु०) गहरी (नींद); गंभीर।
**धामा-धाम**—अ० ऊपर-ऊपर से, तुरंत, हाथों-हाथ।
**धामें**—अ० (कु०) ऊपर।
**धामेटड़**—वि० निमंत्रित।
**धामेतड़**—पु० (चं०) विवाहादि उत्सव के समय 'धाम' में शामिल होने वाला।
**धामो**—पु० (सि०) कई दिन अच्छा भोजन पकते रहने का भाव।
**धामो-धाम**—अ० दे० धामा-धाम।
**धामौणी**—पु० (चं०) निमंत्रण देने का काम करने वाले ब्राह्मण। 'धाम' में दिया जाने वाला अन्न।
**धार**—स्त्री० तरल पदार्थ की धार। शस्त्र आदि का तेज़ किनारा।
**धार**—स्त्री० पहाड़ की चोटी, पर्वतशिखा।
**धार**—स्त्री० (चं०) ऊंचे पर्वत की चरागाह।
**धार**—स्त्री० (शि०) रेखा।
**धारका**—पु० (चं०) लाल चोंच वाला पक्षी।
**धारखो**—वि० (शि०) टेढ़ा।
**धारचिड़ि**—स्त्री० (चं०) छोटी चिड़िया।
**धारटी**—स्त्री० छोटा पर्वत शिखर।
**धारटू**—पु० (सि०) पहाड़ पर की थोड़ी समतल जगह।
**धारठा**—पु० (मं०) ऊंचाई पर स्थित खेत।
**धारठि**—स्त्री० (सो०) ढलानदार भूमि, उपत्यका।
**धारठी**—स्त्री० (कु०) 'धार' अर्थात् पर्वत शिखर के ऊपर की बस्ती।
**धारड़ा**—पु० (सि०) किसी बात को बार-बार दोहराने का भाव।
**धारडू**—पु० 'धार' पर रहने वाले लोग।
**धारण**—वि० शरीर के बराबर का तोल।
**धारणी**—स्त्री० (शि०) भूमि।

**घार-घार**—अ० (कु०) ऊपर ही ऊपर, छोटे बच्चे को ऊपर उठाते हुए यह शब्द दोहराया जाता है।
**घारना**—स० क्रि० (कु०) गिट्टियां खेलते हुए उलटी अंगुलियों पर टिकी गिट्टियों को पकड़ने के लिए अंगुलि उठाना।
**घारनी**—स्त्री० काता हुआ धागा।
**घारला**—पु० (सि०) छोटा पहाड़।
**घारा-लुंबरू**—पु० (कु०) लंबी लय के साथ किया जाने वाला एक लोक नृत्य।
**घारिना**—स० क्रि० (कु०) धारण किया जाना।
**घारी**—स्त्री० कमरे की दीवारों में सामान रखने के लिए छोड़ा गया खोखला स्थान, दीवार में बनी अलमारी।
**घारी**—स्त्री० मक्की के भुट्टे पर बनी दानों की पंक्ति।
**घारी**—स्त्री० (सि०) टहनी।
**घारी**—स्त्री० पट्टू, कपड़े आदि पर बनी लकीर।
**घारी**—स्त्री० (मं०) देवता को चढ़ाते समय बनी दूध या घी की धार।
**घारेड़ा**—पु० (चं०) बहुत ऊंचाई पर पाया जाने वाला पक्षी।
**घारो-रे-गुच्छे**—पु० (सि०) छिपकली।
**घार्न**—स्त्री० (कु०) घराट में गिरती दानों की धार।
**घाला**—पु० (चं०) चरागाह।
**घाळा**—पु० (शि०) पर्वत।
**घावरो**—वि० (शि०) भारी।
**घावसा**—पु० (मं०) एक वन्य जड़ी जिसके फूल औषधि के काम आते हैं।
**घावे**—स्त्री० (मं०) एक झाड़ी विशेष जिसके फूल औषधि के काम आते हैं।
**घावोणा**—अ० क्रि० (शि०) प्रतीक्षा करना।
**घासा-घुसी**—स्त्री० (कु०) हाथापाई।
**घाह**—स्त्री० (सि०) आवाज़।
**घिंगचा**—पु० (कु०) दूध, घी आदि की संपन्नता।
**घिंगा-धांग**—पु० (कु०) चिथड़ा।
**घिंगा-धांगी**—स्त्री० (कु०) अस्तव्यस्तता।
**घिंटवा**—स्त्री० (सि०) लड़कियां।
**घिंदड़ा**—पु० (सो०) अरबी के पत्तों का बेसन डालकर बनाया गया एक पकवान।
**धिआइण/णी**—स्त्री० बेटी-बेटियां, एक गांव से दूसरे गांव में ब्याहता लड़की/लड़कियां।
**धिकनी**—स्त्री० (सि०) पुत्री के लिए प्रयुक्त।
**धिख**—वि० (कु०) ज़रा सा।
**धिगाई**—पु० (शि०) शव को जलाने वाले व्यक्ति।
**धिग्गड़**—वि० हठी, ढीठ।
**धिजणा**—स० क्रि० (सो०) सहन करना, मान्यता देना।
**धिज़णा**—स० क्रि० (कु०) विश्वास करना।
**धिजा**—स्त्री० ध्वजा।
**धिज़िणा**—स० क्रि० (कु०) विश्वास किया जाना।
**धिणचा**—पु० (सो०, बि०) गोरस, दूध, घी, दही, मक्खन, छाछ आदि।
**धिणू**—पु० (सि०) धेनु, पशुधन।
**धिमो**—वि० (सि०) कम रोशनी।
**धियांटी**—स्त्री० (शि०) कन्याएं।
**धियाइण**—स्त्री० (कु०) दे० धिआइण।
**धियाइणा**—स० क्रि० (शि०) आवाज़ देना।
**धियाग**—स्त्री० (चं०) प्रतीक्षा। देखभाल।
**धियागणा**—स० क्रि० (कु०) निशाना लगाना, ध्यान से देखना।
**धियागणा**—स० क्रि० (चं०) देखभाल करना।
**धियागणा**—अ० क्रि० (चं०) प्रतीक्षा करना।
**धियाड़चौ**—पु० (कु०) दौहित्र।
**धियाड़दपौहरे**—अ० (कु०) दिन-दहाड़े।
**धियाड़दोपेहरें**—अ० दे० धियाड़दपौहरे।
**धियाड़रात**—अ० दिन-रात।
**धियाड़ा**—पु० दिन; सूर्य।
**धियाड़ी**—स्त्री० एक दिन, एक दिन का पारिश्रमिक।
**धियाड़ुवा**—वि० (शि०) दिहाड़ीदार।
**धियाण**—स्त्री० (चं०) दे० धिआइण।
**धियारन**—स्त्री० (सि०) लड़कियां।
**धियू**—स्त्री० (शि०, चं०) लड़की।
**धियोतरी**—पु० (चं०) दौहित्री।
**धियोतरू**—पु० (चं०) दौहित्र।
**धिर**—अ० (कु०) तक।
**धिरया**—स्त्री० प्यास।
**धिरा**—अ० (कु०, शि०) ठहरो, रुको, शांत हो जाओ आदि भाव अभिव्यक्त करने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**धिरो**—अ० (शि०) डराने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**धिशणा**—अ० क्रि० (शि०) दिखना।
**धींग**—वि० (सि०) अवांछित आदमी।
**धींग**—वि० (कां०, बि०) चापलूस, तिकड़मी।
**धींगामुशती**—स्त्री० लड़ाई।
**धी**—स्त्री० बेटी।
**धीऊ**—स्त्री० दे० धी।
**धीओ**—पु० (सि०) संगीत, नृत्य।
**धीऔ**—स्त्री० (शि०) दे० धी।
**धीकार**—पु० धिक्कार।
**धीखणा**—पु० अभिलाषा।
**धीज़ा**—पु० (कु०) विश्वास।
**धीटे**—स्त्री० (सि०) बेटी।
**धीड़**—स्त्री० (मं०) पक्ष।
**धीणचा**—पु० (चं०, मं०) दुग्ध, घृत आदि।
**धीणो**—अ० क्रि० (सि०) दर्द लगना।
**धीन**—वि० विनम्र, दीन।
**धीन**—वि० अधीन।
**धीनमी**—स्त्री० (मं०) विनम्रता।
**धीमान**—वि० (शि०) बुद्धिमान।
**धीर**—वि० (बि०) साहसी।
**धीरज़**—पु० धैर्य।
**धीरणा**—अ० क्रि० (कु०, सि०) ठहरना।

धीरे—अ० (कु०) तरफ, ओर।
धीर्य—वि० (सि०) डरपोक।
धीहरिटी—स्त्री० (शि०) दौहित्री।
धुंई—स्त्री० (कु०) धुआं; वर्षा के बाद पड़ने वाली धुंध।
धुंकारा—पु० अंबार।
धुंखळा—वि० (मं०) धुंधला।
धुंद—स्त्री० (शि०) धुंध।
धुंदडू—पु० (कु०) मक्की का ऐसा भुट्टा जिसमें दाने दूर-दूर लगे हों।
धुंदला—वि० धुंधला।
धुंदळा—वि० (सो०) धुंधला, धुंधले रंग का।
धुंधकारा—पु० धूम।
धुंधलई—वि० (शि०) धुंधली।
धुंबरिना—अ० क्रि० (कु०) स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण सुस्त होना। मायूस होना।
धुंबरी—स्त्री० (मं०) हवा, बिजली तथा ओले बरसाने वाली देवी।
धुंबल—पु० (कु०) एक नाग देवता।
धुआं—पु० धूम्र, धुआं।
धुआं—पु० (कां०) दीवार पर जमी हुई धुएं की कालिख।
धुआंखू—पु० चिमनी, चूल्हे के ऊपर धुआं निकलने के लिए बनाया गया छेद।
धुआंठ—पु० (कु०) गहरा धुआं, तूफान।
धुआंदान—पु० (शि०) दे० धुआंखू।
धुआंदार—वि० (शि०) भड़कीला; घोर, तूफानी।
धुआंश—वि० (कु०) धुएं से भरा हुआ।
धुआंस—वि० दे० धुआंश।
धुआइणा—स० क्रि० (कु०) धुलाया जाना।
धुआड़—पु० ऐसा खेत जिसमें फसल काटने के बाद पशुओं को चराया जाता है।
धुआड़—पु० मक्की आदि बीजने से पहले खेत में चलाया गया हल।
धुआड़ना—स० क्रि० (चं०) उधेड़ना, 'धुआड़' करना।
धुआणा—स० क्रि० धुलाना।
धुआणा—पु० तरबूज।
धुआणी—पु० ऐसा पानी जिसमें बरतन या कपड़े धोए हों।
धुआर—पु० उधार, ऋण।
धुआर—वि० (चं०) वस्त्रादि धोने वाला।
धुआरू—पु० (कां०) छोटा हल।
धुई—स्त्री० धुंध।
धुईणा—स० क्रि० (सि०) मुंह धोना।
धुएं—स्त्री० (शि०) दे० धुई।
धुक-धुक—स्त्री० उतावली, बेचैनी, घबराहट।
धुकधुकी—स्त्री० धुकधुक, भय की आशंका।
धुकळान—पु० जूठे बरतनों को धोने से इकट्ठा हुआ पानी जो पशुओं को दिया जाता है।
धुक्कणा—पु० (मं०) मिट्टी को समतल करने का औज़ार।
धुक्खणा—स्त्री० (कां०, बि०, ह०) आग को जलाए रखने के लिए राख में दबाई गई सुलगती लकड़ी।
धुखणा—अ० क्रि० सुलगना। मन का दुखना। ज़ख्म का दुखना।
धुखळा—पु० (कु०) मांग की धूल।
धुखार—स्त्री० सब्जी, दाल आदि के जलने से उठा धुआं।
धुखार—पु० (चं०) धूप आदि जलाने वाला व्यक्ति।
धुचणा—अ० क्रि० (सि०) क्रीड़ा करना।
धुच्चड़—पु० (कां०) क्रोध।
धुट—वि० हृष्ट-पुष्ट। मनमौजी।
धुड़का—पु० (कां०) धड़कन।
धुडकू—पु० धड़कन।
धुड़खा—वि० मटियाले रंग का।
धुड़च्छ—पु० (मं०) दे० धग्यारा।
धुड़छ—वि० दे० धुट।
धुड़पा—वि० (कु०) धूल से भरा हुआ।
धुड़पा—वि० (चं०) मटमैला।
धुड़ाओं—पु० (शि०) धूल।
धुड़िया—वि० (सि०) आटे की धूल से भरा हुआ आदमी।
धुड़िया—पु० (सि०) एक प्रकार का स्वांग।
धुड़िया—वि० मटमैला।
धुड़ियानीम—पु० (सि०) वचन देने का तरीका।
धुड़ुस—पु० (शि०) पूजा में प्रयुक्त एक पात्र।
धुड़ेश—वि० अभागा। बचत न करने वाला।
धुड़ो—पु० (सि०) चमड़ा।
धुणकणा—स० क्रि० (कु०) पके फल गिराने के लिए फल से लदी टहनी को हिलाना, धक्का देकर गिराना, झकझोरना।
धुणकी—स्त्री० रुई धुनने का उपकरण।
धुणखणा—स० क्रि० (सि०) पिंजाई करना।
धुणछ—पु० धूप जलाने का मिट्टी या लोहे का पात्र।
धुणना—स० क्रि० दही बिलोना।
धुणा—पु० (सि०) धूनी।
धुणियां—स्त्री० (सि०) गुस्सा करने या देवता के प्रवेश होने पर शरीर में होने वाला कंपन।
धुणु—पु० (शि०) धनुष।
धुत—वि० (शि०) नशे में चूर।
धुतड़ो—पु० (शि०) भूत।
धुतनकाटी—स्त्री० (मं०) शोर, हुल्लड़बाजी।
धुन—स्त्री० गीत के स्वर की लय, गाने की तर्ज।
धुनकणा—स० क्रि० (शि०) धुनना।
धुनाई—स्त्री० (शि०) डांट।
धुन्नीगुड्ड—स्त्री० (शि०) नाभि।
धुपा—पु० (कु०) धूप।
धुपाणा—स० क्रि० (शि०) सुखाने के लिए धूप में रखना; पूजन में धूप जलाना।
धुपी—स्त्री० (सि०) धूप।
धुपैरी—स्त्री० दे० धुणछ।
धुप्प—स्त्री० (चं०) तेज धूप।
धुबलणा—अ० क्रि० (सि०) अधपका रहना।
धुम—स्त्री० (कां०) धूम, शोर।

**घुमकघुमा**—पु० (मं०) कबड्डी का आंचलिक खेल।
**घुर**—अ० कुत्ते को भगाने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**घुर**—पु० गंतव्य स्थान।
**घुर**—स्त्री० धुरी।
**घुरगाड़ी**—स्त्री० चरागाह में उगने वाली कांटेदार झाड़ी।
**घुरणा**—स० क्रि० सीधा करना।
**घुरवा**—पु० (कु०, मं०) Ainsliaca Aptera.
**घुरसणा**—वि० (सो०) मटमैला।
**घुरसना**—स० क्रि० (कां०) गूंधना। ठूंस-ठूंस कर खाना।
**घुराहु**—वि० लक्ष्य तक जाने वाला।
**घुरूसणा**—स० क्रि० रौंदना।
**घुरूसणा**—स० क्रि० (चं०) उलझाना।
**घुरोइणो**—अ० क्रि० (शि०) क्रोधित होना।
**घुलाणा**—स० क्रि० (ह०) धुलवाना।
**घुवी**—पु० (शि०) धोबी।
**घुसकी**—अ० (कु०) नीचे, पृथ्वी पर।
**घुसड़**—वि० (कु०) जबरदस्ती करने वाला।
**घुसड़ी**—स्त्री० धांधली, अव्यवस्था।
**घुसणा**—स० क्रि०, (सो०) पीटना। उपेक्षा करना। लापरवाही से प्रयोग करना। कुचलना।
**घुसळा**—वि० (कां०) अस्पष्ट, धुंधला।
**घुसळि**—स्त्री० (सो०) दे० घुसड़ी।
**घुस्सड़**—वि० धूल से भरा हुआ।
**घुस्साधासि**—स्त्री० (सो०, सि०) आपा-धापी, लापरवाही करने का व्यापार।
**घूं**—पु० धुआं।
**घूंए**—स्त्री० (मं०) ज़मीन तक फैले बादल।
**घूंडी**—स्त्री० (ह०) कपड़े का बटन।
**घूंदेणा**—स० क्रि० तंग करना।
**घूंघर**—पु० (कु०) कमरे में रोशनी के लिए छत में लगाया गया पत्थर जिसे आवश्यकतानुसार खिसकाया जाता है।
**घूंघूवी**—पु० (मं०) प्रश्नोत्तर देने व चोरी तथा रोग आदि बताने वाला देवता।
**घूंबरो**—वि० (शि०) धुंधला।
**घूंरी**—स्त्री० (शि०) तांत्रिक द्वारा अभिमंत्रित भस्म।
**घूंस**—वि० असभ्य। हृष्ट-पुष्ट।
**घूआंरोल**—पु० (सि०) सर्दी का मौसम।
**घूईझोरग**—पु० (कु०) दे० धुआंखू।
**घूकलियां**—स्त्री० (सि०) चावलों के पकते समय बुदबुदाने का स्वर।
**घूखड़ा**—वि० भूरा।
**घूखराण**—स्त्री० (शि०) दाल-सब्जी आदि जलने की गंध।
**घूड़**—स्त्री० घूलि। अ० अल्पमात्र।
**घूड़**—स्त्री० (शि०, सि०) थोड़ा सा अन्न।
**घूड़बनहा**—पु० (शि०) Budbea asiatica.
**घूड़बसूड़**—पु० (कु०) धूल।
**घूड़बेल**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Aspidopterys wallichic.
**घूड़मालती**—स्त्री० (ऊ०) Jasminum arborscens.
**घूड़ा**—पु० (कु०) धूल।
**घूड़ा**—पु० (मं०) चोकर।
**घूड़ा**—वि० मटमैला।
**घूड़ापेट्ठा**—पु० (कां०) कूष्मांड, पेठा।
**घूड़ी**—स्त्री० कुहरा।
**घूड़ू**—पु० (चं०) शंकर भगवान् का एक नाम।
**घूड़ू**—वि० (शि०) शक्तिशाली।
**घूड़ू**—वि० शरीर पर राख मलने वाला।
**घूड़ू**—वि० (चं०) पैतृक संपत्ति को नष्ट करने वाला।
**घूड़बाबा**—पु० शिवशंकर।
**घूड़ेश**—वि० (कु०) अधिक व्यय करने वाला, लापरवाह।
**घूण**—पु० (सि०) आंगन।
**घूण**—वि० (सि०) घना।
**घूण**—स्त्री० (चं०) अधिक कपड़े धोने की क्रिया।
**घूण-घूणा**—स० क्रि० बुराई को मिटाना। अधिक वस्त्र धोना।
**घूणा**—पु० तपस्वी का डेरा जहां धूनी जलती रहती है।
**घूणा**—स० क्रि० (सि०) धोना।
**घूणाछ**—पु० (चं०) दे० घुणाछ।
**घूणाहर**—पु० धोबी। कपड़े धोने वाला।
**घूणी**—स्त्री० दे० धूंरी।
**घूणी**—स्त्री० (शि०) अपमान।
**घूणी**—स्त्री० (शि०) धूनी।
**घूणो**—स० क्रि० (शि०) धोना।
**घूप**—पु० गुग्गुल आदि सुगंधित द्रव्य। Juniperus macropoda.
**घूप**—स्त्री० (मं०) देवता को धूप देते समय वाद्ययन्त्रों से बजाई जाने वाली विशेष धुन।
**घूप**—स्त्री० सूर्य का प्रकाश, धूप।
**घूपची**—वि० (चं०) देवता को धूप देने वाला।
**घूपणा**—स० क्रि० (कु०) देवता के गूर का अभिमंत्रित चावल या सरसों के दानों को 'धौड़छ' में अंगारों के ऊपर डाल कर सिर पर या मुंह के सामने घुमाना और धुआं रोगी को सुंघाना।
**घूपणो**—अ० क्रि० (शि०) जलना।
**घूपना**—स० क्रि० (कां०) वंदना करना।
**घूपा**—पु० (सि०) छोटे-छोटे आकार के फोड़े।
**घूमरै**—स्त्री० (मं०) पवन देवी।
**घूमला**—वि० (शि०) धुंधला।
**घूर**—स्त्री० (शि०, सि०) दिशा।
**घूरण**—स्त्री० (मं०) ज्वर के पानी के लिए बनाई गई लकड़ी की नाली।
**घूरत**—स्त्री० (चं०) ज्वर की अधिकता के कारण हुई बेहोशी।
**घूरना**—स० क्रि० (सि०) डांटना।
**घूरा**—वि० अधूरा।
**घूरा/रो**—पु० (शि०) खेत का छोर, किनारा।

**धूरी**—स्त्री० केंद्र।
**धूरी**—स्त्री० धुंध।
**धूरौ**—पु० (कु०) किनारा।
**धूल**—पु० (सि०) जंगली बकरा।
**धूलटू**—पु० (शि०) भेड़ के छोटे बच्चों की ऊन।
**धूवाणा**—स० क्रि० (शि०) बहलाना। खाना खिलाना।
**धूसणा**—स० क्रि० (सि०) डांटना।
**धूसणा**—स० क्रि० (शि०) रौंदना।
**धूसळी**—स्त्री० मनमानी।
**धेंधड़ा**—पु० (शि०) अरबी के पत्तों का साग।
**धेइन**—स्त्री० (शि०) ननद।
**धेउण**—पु० (मं०) विधान।
**धेओं**—वि० (शि०) खराब करने वाला।
**धेखना**—पु० (चं०) आशा।
**धेड़णा**—स० क्रि० (सि०) उधेड़ना।
**धेड़ना**—स० क्रि० खोलना, उधेड़ना।
**धेड़ी**—स्त्री० आधे-आधे घास के पूले।
**धेढ़**—स्त्री० घास का आधा गट्ठा।
**धेण**—पु० (सि०) लड़का।
**धेणटी**—स्त्री० (शि०) लड़की।
**धेनों**—पु० (सि०) धन्यवाद।
**धेरशा**—वि० (कु०) ढलानदार।
**धेरा**—अ० (सि०) दे० धिरा।
**धेरा**—पु० (कां०) खेत का वह कोना जहां हल न चल सके।
**धेरो**—अ० (मं०) दे० धिरा।
**धेला**—पु० आधा पैसा, पुराने आधे पैसे के बराबर का सिक्का।
**धेवत्ता**—पु० (सो०) दौहित्र।
**धैंतरू**—पु० नरसिंगा की तरह का एक वाद्ययंत्र।
**धैउतरी**—स्त्री० (चं०) दौहित्री।
**धैज्जी**—स्त्री० पतली तथा लंबी लकड़ी, धज्जी।
**धैड़धड़ाट**—स्त्री० धड़-धड़ की ध्वनि।
**धैड़ा**—पु० सूर्य, दिन; निश्चित दिन।
**धैड़ेबैली**—अ० (सि०) रात-दिन।
**धैण**—स्त्री० (सो०) परिवार से ब्याही गई पुत्रियां जिनसे बूआ आदि का संबंध विद्यमान हो।
**धैणोत्रा**—पु० (चं०) बहिन का लड़का।
**धैन**—पु० (मं०, शि०) ध्यान।
**धैमकी**—स्त्री० (कु०) धमकी।
**धैरे**—स्त्री० (शि०) चीखें।
**धैरो**—पु० (शि०) उधार।
**धैर्म**—पु० (कु०) धर्म।
**धैला**—पु० (सि०) आधे सिर का दर्द।
**धोंकणी**—स्त्री० धौंकनी।
**धोंकरू**—पु० करनाल की आवाज़।
**धोंकिया**—पु० (शि०) आग फूंकने वाला।
**धोंगच**—पु० (कु०) काम-धंधा, व्यस्तता।
**धोंगचिणा**—अ० क्रि० (कु०) अधिक काम के कारण व्यस्त होना।
**धोंत्रा**—पु० (शि०) एक घास जिसका बीज ज़हरीला होता है।
**धोंला**—वि० (कु०) धवला, उजला, सफेद।
**धोंस**—स्त्री० (सि०) रोब।
**धो**—पु० (सि०) आवाज़।
**धो**—पु० जूठन का पानी।
**धोआण**—पु० (मं०) सिर धोने की सामग्री।
**धोइंगे**—अ० (सि०) नीचे।
**धोइणा**—स० क्रि० (कु०) धोया जाना।
**धोइणो**—स० क्रि० (शि०) भोजन करना।
**धोइणो**—स० क्रि० (सि०) स्नान करना।
**धोई**—वि० (सि०) कपटी।
**धोई**—वि० (शि०) छिलके रहित उड़द या मूंग की दाल।
**धोईदाड़**—स्त्री० (मं०) धुली दाल जो विशेष तकनीक से बनाई जाती है।
**धोकड़**—वि० (शि०) हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा।
**धोखणा**—स० क्रि० (सि०) काम करते हुए को रोकना।
**धोखा**—पु० गलती, धोखा।
**धोखू**—पु० छल। वि० धोखा देने वाला।
**धोखो**—पु० (सि०) आग को सुलगाने का भाव।
**धोच**—स्त्री० (कां०) सूई या कांटे के चुभने से बना घाव या छेद।
**धोच्नू**—पु० (मं०) दौहित्र।
**धोज**—वि० (शि०) लंबा।
**धोड़**—पु० (शि०) शरीर।
**धोड़णो**—स० क्रि० (शि०) उधेड़ना।
**धोड़ा**—पु० (सो०) कपड़े या किसी चीज़ को धोने का भाव।
**धोड़ा**—पु० (शि०) धड़ा।
**धोण**—स्त्री० (कु०) भेड़-बकरी, पशु।
**धोणकरू**—पु० (कु०) वाद्ययंत्र जो मुंह से बजाया जाता है।
**धोणा**—स० क्रि० धोना।
**धोणियां**—पु० (सि०) धनिया।
**धोणी**—स्त्री० (सि०) कपड़े धोने की थापी।
**धोणु**—पु० (सि०) धनुष।
**धोणू**—पु० दे० धोणी।
**धोणो**—स० क्रि० (शि०) धोना।
**धोतड़ी**—स्त्री० धोती के बदले लगाया जाने वाला बड़ा तौलिया।
**धोतरू**—पु० (कु०) दौहित्र।
**धोतुआ**—वि० (कु०) धोया हुआ।
**धोतुवां**—वि० धोया हुआ।
**धोया**—वि० (मं०) आधा 'पाथा' लगभग एक किलो।
**धोदमोंदा**—वि० हड़बड़ी में पड़ा हुआ।
**धोध***—पु० (कु०) पेट, बड़ा पेट।
**धोधुहाणी**—पु० जूठे बरतनों को धो कर निकला पानी।
**धोन**—पु० (शि०) धन।
**धोनियो**—अ० (शि०) बिल्कुल नीचे।
**धोपी**—वि० (शि०) मोटा।
**धोफा**—पु० धोखा।
**धोफामार**—वि० धोखा देने वाला।

**घोबड़**—पु० (शि०) पशुओं का मुंह।
**घोबड़ानो**—पु० (शि०) पशुओं के मुंह पर बांधा गया विशेष प्रकार का 'छिकड़ा' ताकि वे घास न खा सकें।
**घोबण**—स्त्री० घोबिन।
**घोबि**—पु० (सो०) धोबी।
**घोबे**—पु० (सि०) धोबी।
**घोबो** —पु० (शि०) धोबी।
**घोमकणा**—अ० क्रि० (कु०) रुक-रुक कर सांस आना।
**घोमके**—स्त्री० (सि०) धमकी।
**घोर**—पु० (कु०) बुद्धि से किया गया कार्य।
**घोर**—पु० (सि०) मकान, ठिकाना।
**घोरणो**—स० क्रि० (शि०) रखना।
**घोरती**—स्त्री० (सि०) पृथ्वी।
**घोरना**—स० क्रि० (कु०) खो देना, पीछे छोड़ देना।
**घोरना**—स० क्रि० (सि०) रखना।
**घोरा**—वि० (कु०, मं०) ठीक, अच्छा।
**घोरिना**—अ० क्रि० (कु०) पीछे रह जाना, कहीं खो जाना।
**घोरी**—वि० जोतने के काम लगाए बैलों में से मुख्य बैल।
**घोरी**—स्त्री० (सि०) धन-दौलत।
**घोरे**—अ० (सि०) नज़दीक।
**घोर्म**—पु० (सि०) धर्म।
**घोळ**—पु० सिर या पीठ पर हाथ से मारने की क्रिया।
**घोळा**—पु० सफेद बाल।
**घोलाणा**—स० क्रि० (शि०) धुलवाना।
**घोलू**—वि० (शि०) सफेद।
**घोशू**—पु० (सि०) नाखून के साथ की चमड़ी।
**घोसी**—वि० (शि०) सुस्त तथा मोटा।
**घौं**—पु० एक वृक्ष विशेष जिसके लाल फूल औषधि के काम आते हैं।
**घौंकरना**—स० क्रि० (मं०) पक्ष बदलना, शिशु का रात को जागना तथा दिन को सोना।
**घौंटू**—पु० (सि०, सो०) धौंकनी।
**घौंला**—वि० सफेद।
**घौंशा**—स्त्री० (सो०) नाखून से नीचे की उखड़ी हुई चमड़ी।
**घौंस**—स्त्री० धमकी, रोब। पशुओं की खांसी।
**घौंसना**—स० क्रि० (शि०) दंड देना, डराना, मारना।
**घौंसा**—पु० युद्ध के समय बजाया जाने वाला बड़ा नगारा।
**घौआं**—पु० (चं०) धावा।
**घौआणा**—स० क्रि० (शि०) आवाज़ देना।
**घौक**—पु० (कां०) ऊंचा ढेर।
**घौक**—वि० (चं०) थोड़ा।
**घौगरी**—पु० (चं०) भट्टी में कोयले बनाने वाला व्यक्ति।
**घौज़**—स्त्री० (कु०) ध्वजा; देवता के मंदिर के सामने पूरे वृक्ष को काट-छांट कर गाड़ी गई शहतीर।
**घौदु**—पु० (सो०) दे० धौंटू।
**घौड़**—स्त्री० (शि०) खेत की मेंड़।
**घौड़छ**—पु० (कु०) देवता की पूजा में धूप जलाने के लिए प्रयुक्त कलछी के आकार का लोहे का पात्र।
**घौड़ा**—वि० (सि०) घड़ा।
**घौड़ा**—पु० पेट।
**घौड़ी**—स्त्री० (ह०) कच्ची खाल।
**घौड़ी**—स्त्री० (चं०) Wood fordia floripunda. धातकी।
**घौडू**—पु० (सि०) खाल।
**घौण**—स्त्री० (कां०) पेट।
**घौण**—पु० (ऊ०) कुहनी से ऊपर का बाजू का भाग।
**घौणा**—वि० (सि०) बीस सेर का माप।
**घौणी**—वि० (कु०) धनवान।
**घौणी**—अ० (कु०) नीचे।
**घौमण**—पु० (शि०) मारतोड़।
**घौर**—पु० (सि०) क्षमता।
**घौर्त**—स्त्री० (कु०) धरती, ज़मीन।
**घौर्न**—स्त्री० (कु०) धरती।
**घौर्नी**—अ० (कु०) नीचे।
**घौल**—पु० (सि०) मुक्का।
**घौलढाक**—पु० (शि०, सि०, सो०) Erythrina subexosa. परिभद्रक।
**घौला**—वि० सफेद, धवल।
**घौलू**—पु० (सि०) Chrjsopogon mantanus.
**घौळू**—पु० एक अच्छी किस्म का घास जिसका ऊपर का भाग श्वेत होता है।
**घौलो**—वि० (शि०) आसमानी (रंग)।
**घौहण**—पु० (मं०) एक जल-चर चिड़िया।
**घ्यक्ष**—पु० अध्यक्ष।
**घ्या**—पु० (कां०, बि०) अध्याय, प्यास।
**घ्याई**—वि० अध्ययन करने वाला।
**घ्याड़/ड़ो**—पु० (मं०) दिन।
**घ्याड़ा**—पु० सूर्य, दिन।
**घ्याड़ि**—स्त्री० सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय, दिन। दैनिक मज़दूरी।
**घ्याणख्वा**—पु० (सि०) दामाद।
**घ्याणा**—स० क्रि० (सि०) मानना।
**घ्याणा**—स० क्रि० याद करना, स्तुति करना।
**घ्यात**—पु० देहात, ग्रामीण क्षेत्र।
**घ्याता**—वि० (शि०) ध्यान करने वाला।
**घ्याती**—वि० ग्रामीण।
**घ्यालटा**—पु० (सो०) मुजारा।
**घ्याळी**—स्त्री० ज़मीन की पैदावार के निश्चित भाग की अदायगी।
**घ्यालु**—पु० (सि०) दाल, सब्जी बनाने का छोटा पात्र।
**घ्याळू**—पु० छाछ रखने का मिट्टी का छोटा पात्र।
**घ्याहणोत्रा**—पु० दौहित्र।
**घ्यो**—पु० (कां०) घास की मशाल।
**घ्योड़ी**—स्त्री० (सि०) चींटी।
**घ्रंड**—स्त्री० (चं०) पकड़।
**घ्रंडखणा**—स० क्रि० (सि०) किसी चीज़ को जल्दी खाने की इच्छा करना।
**घ्रट**—स्त्री० दांत से काटने की क्रिया।

**ध्रटकी**—स्त्री० (चं०) खड़ी लकड़ी पर टिकाया गया एक चक्का या पतला पत्थर।
**ध्रप्पड़**—पु० किसी ज़हरीली वस्तु के शरीर में लगने से पड़े छाले। खून के विकार से पड़े चकत्ते।
**ध्रबटणा**—स० क्रि० (चं०) कुत्ते की तरह खाना।
**ध्रम्हा**—वि० (चं०) उलझा हुआ (सूत या रस्सी)।
**ध्रसणा**—स० क्रि० रौंदना।
**ध्रासणा**—स० क्रि० (सि०) अच्छी तरह गूंथना।
**ध्रिम्हड़ा**—वि० (चं०) जिसके मुंह पर फोड़े के चिह्न हो।
**ध्रीड़**—स्त्री० पक्ष। खींच।
**ध्रीड़ना**—स० क्रि० घसीटना।
**ध्रीड़ू**—वि० (चं०) खींचने वाला।
**ध्रुंजणा**—स० क्रि० (कां०) नोचना।
**ध्रूस**—पु० (चं०) एक पौधा जिसके पत्तों को गर्म करके चोट पर बांधा जाता है।
**ध्रेड़**—स्त्री० (सो०) ढलान वाली भूमि।
**ध्रेड़ा**—वि० (सो०) ढलान वाला।
**ध्रोळना**—अ० क्रि० (सो०) मिट्टी आदि का गिरना।
**ध्रोळना**—स० क्रि० (सो०) मिट्टी आदि का गिराया जाना।
**ध्वनि**—स्त्री० आवाज़।
**ध्वांखड़**—पु० धुएं की अधिकता।

## न

**न**—देवनागरी वर्णमाला में तवर्ग का पांचवां वर्ण। उच्चारण स्थान दंत और नासिका।
**नंगधड़ंग**—वि० नग्न।
**नंगधड़ंग**—वि० (सो०) जिसके पास धन न हो।
**नंगनवाण**—वि० वस्त्रहीन।
**नंगमनुंगा**—वि० नग्न।
**नंगली**—स्त्री० (चं०) हल का नीचे का भाग।
**नंगारा**—पु० नगाड़ा।
**नंगाळ**—स्त्री० (कु०) जंगली बांस जो सामान्य बांस से कम ऊंचा व बारीक होता है।
**नंगियाणा**—स० क्रि० (शि०) नंगा करना।
**नंतरालणा**—स० क्रि० (सि०) किसी वस्तु को पानी से अलग करना।
**नंती**—स्त्री० पुरुषों द्वारा कानों में पहनी जाने वाली सोने की बाली।
**नंद**—पु० आनंद।
**नंदाई**—स्त्री० निराई।
**नंदिनी**—स्त्री० (शि०) गंगा; कन्या, पुत्री।
**नंदोई**—पु० (शि०) ननद का पति।
**नंदोधिया**—वि० (कां०) निराई करने वाला।
**नंबर**—पु० संख्या, अंक, परीक्षा में प्राप्त हुए अंक।
**नंबरदार**—पु० मालगुजारी वसूलने वाला कर्मचारी।
**नंबरिया**—वि० चालाक।
**नंबरी**—वि० जिसपर संख्या लिखी हो, बदनाम।
**नंबो**—वि० (मं०) खट्टा।
**न.णो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) फुकना।
**न**—अ० (कु०) "से" पंचमी विभक्ति (अपादान कारक) का प्रत्यय यथा 'कौ न' (कहां से), 'बूटा-न' (वृक्ष से) आदि। यह 'में' के अर्थ में सप्तमी (अधिकरण कारक) का प्रत्यय भी है- 'खिसा-न' (जेब में), 'घोरा-न' (घर में) आदि।
**न**—अ० निषेध सूचक शब्द, मत, नहीं।
**नअश**—पु० (शि०) नाखून।
**नइजर**—अ० (सि०) बाद।
**नई**—स्त्री० (सो०) भगवती की पूजा का उत्सव जिसमें स्त्रियां सम्मिलित होती हैं।
**नईठे**—अ० (शि०) नीचे।
**नईया**—स्त्री० (कां०, बि०) नौका, नाव।
**नउका**—स्त्री० (शि०) नौका।
**नउणो**—अ० क्रि० (शि०) झुकना।
**नउली**—वि० नवीन, नवविवाहिता।
**नऊंआ**—वि० नया।
**नऊ**—वि० (कु०, मं०) नौं।
**नऊआं**—वि० नवम, नौवां।
**नऊग्रह**—पु० नवग्रह।
**नऊणा**—अ० क्रि० नहाना।
**नऊणी**—स्त्री० मक्खन।
**नऊळ**—पु० नेवला।
**नऊळ**—वि० मूर्ख।
**नऊला**—पु० (सो०) नेवला।
**नएगाड़**—पु० (शि०) नदी-नाले।
**नएर**—स्त्री० (सि०) नहर।
**नओ**—वि० (सि०) नया।
**नओळो**—पु० (शि०) नेवला।
**नकंग**—वि० (कु०) एकांत, अलग।
**नकंठा**—पु० (मं०) धान की एक किस्म।
**नकंडु**—पु० (कां०) दे० नकंठा।
**नक**—पु० नाक।
**नक**—पु० इज्ज़त, सम्मान।
**नकघिसनी**—स्त्री० (शि०) अति दीनता।
**नकच**—वि० (कु०) नखरे करने वाला।
**नकचढ़ा**—वि० नाक भौं चढ़ाने वाला।
**नकचढ़ेल**—वि० नाक भौं चढ़ाने वाली।
**नकचुब्बी**—स्त्री० (सि०) हाथ से नाक बन्द कर तैरने की क्रिया।
**नकचुब्भी**—स्त्री० (चं०, मं०) दे० नकचुब्बी।
**नकचोड़ा**—पु० (मं०) नकसीर।
**नकछिकणु**—पु० एक घास विशेष जिसके सूंघने से छीकें आती हैं।
**नकछीक**—स्त्री० (सो०) किसी औषधि द्वारा नाक से छींक लेने का भाव।
**नकटा/टी**—वि० कटी हुई नाक वाला (वाली)।

**नकटा/टी**—वि० निर्लज्ज।
**नकटीशी**—स्त्री० (कु०) तिक्त गंध वाला एक पौधा जो औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है।
**नकड़ना**—स० क्रि० कसकर बांधना।
**नकड़ा**—पु० किसी को चिढ़ाने के अर्थ में नाक के लिए प्रयुक्त शब्द।
**नकथेल**—स्त्री० नकेल।
**नकथेसरा**—वि० (सो०) जिसके नाक से तरल पदार्थ निकलता रहता हो।
**नकथोड़**—स्त्री० पशुओं की नासिका।
**नकथोड़ी**—स्त्री० नथुना, नासारंध्र।
**नकथोर**—पु० (शि०) मनुष्य की नाक।
**नकथोणि**—स्त्री० (सो०) पशुओं की नासिका।
**नकधार**—स्त्री० नकसीर।
**नकफूल**—पु० (शि०) नाक का आभूषण।
**नकबेड़**—स्त्री० (सो०) बैल के नाक में लगाई जाने वाली रस्सी।
**नकभरी**—स्त्री० (सि०) नकेल।
**नकरमा**—वि० (बि०) दुर्भाग्यशाली।
**नकरस**—स्त्री० (मं०) भूत-प्रेत को एक हांडी में बांध कर गांव की सीमा से बाहर निकालने का भाव।
**नकराणी**—स्त्री० नौकरानी।
**नकरैणी**—स्त्री० नौकरानी।
**नकल**—स्त्री० अनुकरण।
**नकलखोर**—वि० नक़ल करने वाला।
**नकलज़ेंइ**—अ० (कु०) ज़रा सा, थोड़ा सा।
**नकली**—वि० झूठा, नकल किया हुआ।
**नकवाणा**—स० क्रि० (सि०) खुलवाना।
**नकश**—पु० (शि०) छाप।
**नकशत्तर**—पु० (सो०) नक्षत्र, ग्रह।
**नकशाण**—पु० हानि, नुकसान।
**नकशार**—स्त्री० (कु०) नसवार, सुंघनी।
**नकशौर**—पु० (कु०) नथुना।
**नकसडींघु**—वि० बार-बार नाक साफ करने वाला।
**नकसरबाल**—पु० (मं०) नाक के बाल।
**नकसान**—पु० (शि०) दे० नकशाण।
**नकसीर**—स्त्री० नासिका से रक्त बहने का रोग।
**नकसोण**—पु० (शि०) नथुने।
**नकाका/के**—पु० अन्तिम सांस, सांस की क्रिया में बाधा।
**नकाणी**—पु० (कु०) नाक से निकलने वाला पानी जो श्लेष्मा से पतला होता है।
**नकामा**—वि० (शि०, सो०) निकम्मा, आलसी।
**नकार**—पु० इनकार।
**नकारछा**—वि० एकांत।
**नकारठणा**—अ० क्रि० ज़ोर से चिल्लाना।
**नकारणा**—स० क्रि० अस्वीकार करना।
**नकारता**—वि० (मं०) अप्रिय।
**नकारा**—वि० नकारा, बेकार।
**नकाल**—पु० (कां०) शव को संस्कार के लिए घर से बाहर निकालने का भाव।
**नकाल**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) खसरा।
**नकाल**—पु० अकाल।
**नकालना**—स० क्रि० निकालना।
**नकाळा**—पु० एक संक्रामक रोग।
**नकाली**—स्त्री० (कु०) अकाल।
**नकास**—पु० निकास।
**नकास**—पु० (कु०) काम की प्रगति में शीघ्रता।
**नकासणा**—स० क्रि० (कु०) घर का सामान घर के ही सदस्य द्वारा चोरी से अन्यत्र ले जाया जाना।
**नकिरका**—वि० (सो०) निष्ठुर, निष्करुण।
**नकी**—स्त्री० सूई की नोक।
**नकी**—स्त्री० नदी का ऐसा भाग जहां से उसे आसानी से पार किया जा सके।
**नकीजड़ी**—वि० (सि०) कमज़ोर, दुर्बल।
**नकीला**—वि० नुकीला।
**नकुटी**—स्त्री० (शि०) नाक।
**नकूहणा**—अ० क्रि० खर्च करते समय दु:खी होना।
**नकेल**—स्त्री० दे० नकबेड़।
**नकोढ़**—पु० (ह०) जल निकास का मार्ग।
**नकोर**—वि० नया, कोरा।
**नकोरा**—वि० दे० नकोर।
**नकोळा**—पु० रोशनदान, गवाक्ष।
**नकौता**—वि० (कु०) बिना काता हुआ।
**नक्का**—पु० पत्थर की नोक; सूई में धागा डालने का स्थान।
**नक्षत्री**—वि० शुभ नक्षत्रों में उत्पन्न हुआ।
**नख**—पु० (चं०) नाखून।
**नख**—पु० (बि०) नाड़ी।
**नखदट्टू**—वि० लाभ न कमाने वाला, निकम्मा।
**नखड़म्मा**—वि० (सो०) निकम्मा।
**नखड़ेरना**—स० क्रि० (कु०) कृषि के औज़ार को घिसाना।
**नखरा**—पु० ढोंग, आडंबर।
**नखरीऊंआ**—वि० नखरे करने वाला।
**नखरुला**—वि० नाज़ नखरे करने वाला।
**नखरेला**—वि० दे० नखरुला।
**नखरोड़ा**—वि० (सो०) भूमि का वह तल जहां बिछावन न बिछा हो।
**नखवाहण**—पु० (सि०) शिष्टाचार।
**नखशमी**—वि० (मं०) विधवा (गाली)।
**नखसमा/मी**—वि० आवारा, जिसका कोई मालिक न हो, पतिविहीन, विधवा।
**नखार**—पु० (चं०) लाल रंग की ऊनी पगड़ी जिसे केलंग नामक देवता की प्रसन्नता का प्रतीक माना जाता है।
**नखार**—पु० निखार, कपड़े धोने का साबुन आदि।
**नखार**—पु० (सि०) सफाई, सजावट, निखार।
**नखारना**—स० क्रि० निखारना, कपड़ों को धोकर साफ करना।
**नखालस**—वि० (सि०) शुद्ध, असली।
**नखिद्दद**—वि० निकृष्ट, निकम्मा।

**नखेद**—पु० (शि०) निषेध।
**नखेरना**—स० क्रि० मैल उतारना।
**नखेरना**—स० क्रि० (मं०) उड़ेलना।
**नखोड़ना**—स० क्रि० (कां०, बि०) मारना।
**नखोरट**—वि० (शि०) निरोग, तंदुरुस्त।
**नखोइरड़ा**—वि० खुरदरा।
**नगंदणा**—स० क्रि० रजाई आदि को मोटे धागों से सिलना जिससे उसकी रुई यथास्थान बनी रहे।
**नगंदा/दे**—पु० रजाई में लगे टांके।
**नग**—पु० वस्तुओं की संख्या, अदद।
**नग**—वि० भला, श्रेष्ठ।
**नग**—पु० पत्थर विशेष, रत्न, नगीना।
**नग**—पु० (सि०) प्रकार, किस्म।
**नगटा**—वि० कटे हुए नाक वाला।
**नगद**—वि० नकद।
**नगन**—वि० (शि०) नग्न।
**नगपहा**—पु० (ह०) उपजाऊ खेत।
**नगर**—पु० शहर, बाज़ार।
**नगरकोट**—पु० नगर में बना हुआ दुर्ग।
**नगरकोटी**—स्त्री० (सि०) दुर्गा मां।
**नगरबेली**—स्त्री० नागर बेल।
**नगरानी**—स्त्री० निगरानी, देखभाल।
**नगराळ**—स्त्री० बांस की लम्बी व पतली छड़।
**नगरोशा**—स्त्री० (सि०, सो०) एक प्रकार की गांठ विशेष।
**नगरोटु**—पु० छोटा नगर।
**नगळाशि**—स्त्री० (सो०) रस्सी की एक गांठ विशेष जिससे पशु बांधे जाते हैं।
**नगशा**—पु० (चं०) मानचित्र।
**नगसान**—पु० हानि।
**नगसोरना**—स० क्रि० (सो०) ठूंसना।
**नगाड़**—स्त्री० (मं०) बारीक नली वाला बांस, दे० नगराळ।
**नगाड़ना**—स० क्रि० (ह०) बिखेरना।
**नगारची**—पु० नगाड़ा बजाने वाला व्यक्ति।
**नगारना**—स० क्रि० (सि०) किसी तरल पदार्थ को निकालना।
**नगारा**—पु० नगाड़ा।
**नगाल्**—स्त्री० (चं०) जंगली बांस जिससे टोकरी, 'किरडे' आदि बनाए जाते हैं।
**नगाहर**—पु० लाहुल में भेड़-बकरियों की उत्तम चरागाह।
**नगाहणा**—वि० (कां०) अगाध, गहरा।
**नगुरा**—वि० कृतघ्न।
**नगूणा**—वि० (कु०) निर्गुण, कृतघ्न, एहसान भूल जाने वाला।
**नगूरा**—वि० (सो०) दे० नगुरा।
**नगेल**—वि० (सो०) बेहोश।
**नगैछड़ी**—स्त्री० निर्जन स्थान।
**नगैड़**—वि० (कां०) एकांत।
**नगैड़ा**—वि० सुनसान, असुरक्षित स्थान।
**नगोर**—वि० (सि०) घोर।
**नगौरी**—वि० कीमती। गाय, बैल की उत्तम नस्ल।
**नग्ग**—वि० (सो०) श्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु।
**नघाटा**—वि० (कु०) जो किसी काम का न हो।
**नघारना**—स० क्रि० रुके हुए जल को छोड़ना, निथारना।
**नघारना**—स० क्रि० (चं०) मृतक को जलाना।
**नघारना**—स० क्रि० पीसना। हानि पहुंचाना।
**नधारना**—स० क्रि० डांटना।
**नघारा**—पु० घराट द्वारा निकाली जा रही आटे की धार।
**नघाही**—वि० घास रहित घास के अभाव वाली (भूमि)।
**नघेरना**—स० क्रि० (कु०) सर्दी से पीड़ित को गर्म करना, गर्म करना।
**नघोणा**—स० क्रि० (शि०) शरीर को गर्म करना।
**नघोरीरा**—वि० (मं०) ढका हुआ।
**नघोसणा**—स० क्रि० (सो०) घुसाना, गाड़ना।
**नचगरा**—वि० (सो०) जिसको अनुभव न हो या पता न चले।
**नचणा**—अ० क्रि० नाचना।
**नचणोज**—पु० नाच, नृत्य।
**नचाणक**—अ० (सि०, सो०) अचानक।
**नचाणा**—स० क्रि० नचाना, इशारों पर चलाना।
**नचानक**—अ० (मं०) दे० नचाणक।
**नचार**—वि० दक्षता से नाचने वाला, पु० नर्तक।
**नचाहकड़/ड़ी**—वि० नाचने वाला, नाचने वाली।
**नचिंत**—वि० (कु०, सो०) निश्चिंत, चिंतारहित।
**नचिंदा/दी**—वि० दे० नचिंत।
**नचीपड़ा**—वि० (मं०) कड़वी बातें सुनकर भी रुका रहने वाला, ढीठ।
**नचीला**—वि० चंचल।
**नचुट्ट**—अ० (सो०) कतई, बिल्कुल (इन्कार के अर्थ में); बिना टूटे।
**नच्चुथणा**—वि० (कु०) निकम्मी।
**नच्चुथी**—वि० (कु०) निकम्मा।
**नचूंडणा**—स० क्रि० (सो०) कली या कोंपल को ऊपर से तोड़ना।
**नचेरना**—स० क्रि० इशारों पर चलाना। नृत्य कराना।
**नचोटा**—वि० (कु०) ऊसर (भूमि)।
**नचोड़**—पु० निचोड़, सार, सारांश, पानी का निकास।
**नचोड़**—वि० (सि०) पानी की कमी वाला।
**नचोड़ना**—स० क्रि० निचोड़ना।
**नचौंहा**—वि० सर्वदा इधर-उधर घूमने वाला।
**नचौक**—वि० (कु०) भारी, जिसे उठाया न जा सके।
**नच्छोड़ा**—पु० कार्य की समाप्ति।
**नछतर**—वि० (सो०, कु०) बिल्कुल पानी जैसा। अभागा।
**नछत्तर**—पु० नक्षत्र।
**नछहड़**—पु० भात से मांड़ अलग करने का कपड़ा।
**नछाणा**—वि० बिना छाना हुआ।
**नछाणा**—स० क्रि० निथारना, उबले हुए चावल आदि से मांड़ निकालना।
**नछाणो**—वि० (सि०) बिना छाना हुआ।
**नछ़ाना**—वि० (कु०) बिना छाना हुआ।

**नछाह**—वि० भात से पूरी तरह पानी न निकलने का भाव।
**नछुंगण**—वि० (कु०) जिसे छुआ न जा सके।
**नछूंआ**—वि० (सो०) जल्दी नाराज़ होने वाला।
**नछेछलिए**—अ० (सि०, सो०) अचानक, बिना सोचे समझे।
**नछेड़**—वि० जिसे छेड़ा या छुआ न गया हो, नया नकोर।
**नछोंगा**—वि० (कु०) बिना कूटा और साफ किया हुआ।
**नछोहडा**—पु० किनारे वाला भाग जहां रुकने, टिकने व पकड़ने के लिए कोई सहारा न हो।
**नछौलर**—वि० (कु०) अभागा।
**नजंघा**—वि० बिना टांगों वाला।
**नज**—पु० (सो०) अनाज।
**नज़म**—स्त्री० कविता।
**नजर**—स्त्री० दृष्टि, देखने की क्रिया। भेंट।
**नजराणा**—अ० क्रि० नजर लग जाना, किसी की कुदृष्टि पड़ना।
**नज़राना**—पु० भेंट।
**नज़राना**—पु० भूमि के स्वामित्व का अधिकार प्राप्त करने के लिए दी गई राशि।
**नज़राया**—वि० (कां०, बि०, ह०) नज़र लगा हुआ।
**नज़रिया**—पु० विचार, दृष्टिकोण।
**नजा:क**—वि० (सो०) निश्चिंत।
**नजाइज़**—वि० अनुचित, नाजायज़।
**नजाकता**—वि० (कु०) जिसके लिए कोई स्थान न हो।
**नजाकिए**—अ० (सो०) निश्चिंततापूर्वक।
**नजाण**—वि० अज्ञात, अनजान।
**नजालर्म**—पु० (कां०) उद्यापन।
**नज़ाम**—पु० शासन, प्रबंध।
**नजायज**—पु० (सो०) अनुचित।
**नज़ारा**—पु० दृश्य।
**नजाल्ही**—वि० (कु०) अधिक सोने वाला।
**नज़ास**—पु० (शि०) अनाज का घास।
**नज़ाहणा**—वि० (मं०) निकम्मा।
**नजी**—स्त्री० (शि०) नीचे की ओर झुकी हुई स्थिति।
**नजीक**—अ० समीप, नज़दीक।
**नजीठणा**—अ० क्रि० निपटना।
**नजीठा**—वि० (सो०) बेशर्म।
**नजीबड़ा**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) सहनशील।
**नजुम्म**—वि० (कां०) स्तब्ध, चुपचाप।
**नजूम**—पु० अन्दाज़ा, अनुमान।
**नजोगो**—वि० (शि०) उनींदा, जो सोया न हो।
**नझग**—वि० (कां०, ह०) निडर।
**नझाक**—वि० (सो०) निर्भयतापूर्वक।
**नझाका**—वि० (सो०) निर्भय।
**नझोंखा**—वि० (कु०) दे० नझग।
**नटंक**—अ० (कां०) बिल्कुल, पूरी तरह।
**नट**—वि० (कां०, चं०) झूठा नाटक रचकर वास्तविकता को छिपाने वाला, नखरेबाज़।
**नट**—पु० सूत्रधार।
**नट**—पु० (शि०) नर्तक।
**नटइया**—पु० नर्तक।
**नटक**—वि० (कां०, ह०) बेरोक-टोक।
**नटण**—स्त्री० नर्तकी।
**नटणा**—अ० क्रि० (कां०) पीछे हटना, मुकरना।
**नटन**—पु० (शि०) नृत्य, नाच।
**नटनटा**—वि० (कु०) सख्त (मिट्टी, आटा आदि)।
**नटनागर**—पु० श्री कृष्ण के लिए प्रयुक्त शब्द।
**नटनी**—स्त्री० दे० नटण।
**नटाए**—स्त्री० (सो०) वस्तुएं रखने के लिए बनाया गया तल से ऊंचा आधार।
**नटार**—पु० नर्तक।
**नटाल**—वि० (कु०) जिसे खराब समझकर फैंक दिया गया हो, जिसे छांटा न जा सके।
**नटिप**—स्त्री० पानी आदि के टपकने का बन्द हो जाने का भाव।
**नटी**—स्त्री० दे० नटण।
**नटुआ**—वि० नट, भांति-भांति का अभिनय करने वाला, विदूषक, नटखट, नखरे करने वाला।
**नटुआ**—पु० बंजारा, एक जगह न टिकने वाला।
**नटेइया**—वि० (कु०) नाचने वाला, नाचने में कुशल।
**नटेई**—स्त्री० (चं०) छत में प्रयुक्त होने वाली दो बड़ी लंबी तथा मज़बूत लकड़ियां।
**नटोक**—वि० बिना किसी हस्तक्षेप के।
**नटोरना**—स० क्रि० (कु०) तरल पदार्थ को अच्छी तरह से उलटाना ताकि एक बूंद भी न रहे।
**नटौळ**—अ० (सि०) धीरे से।
**नट्ठल्ला**—वि० (सो०) निठल्ला।
**नठणा**—अ० क्रि० (बि०, सो०) भागना।
**नठदौड़**—स्त्री० (सो०) भाग-दौड़।
**नठामा**—पु० (सो०) पीठ टिकाने का आधार।
**नठामुणा**—अ० क्रि० (सो०) पीठ टिकाना।
**नठावणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) भगाना।
**नठहाणा**—स० क्रि० (कां०) भगाना।
**नड़**—स्त्री० बांस की तरह की एक झाड़ी विशेष जिसकी कलमें बनाई जाती हैं।
**नड़**—पु० (कु०) एक जाति विशेष जो काहिका उत्सव में देवता और उसके आदमियों को 'छिदरा' द्वारा पाप से मुक्त कराता है।
**नड़**—पु० दलदली भूमि जिसमें कहीं-कहीं धान बीजे जाते हैं।
**नड़**—पु० (चं०) पत्थर।
**नड़का**—पु० (सि०) हल जोतने की रस्सी।
**नड़यारनी**—स्त्री० (कां०, कु०) निराई करने का छोटा उपकरण।
**नडर**—वि० निडर, निर्भय।
**नडरा**—वि० दे० नडर।
**नडरिए**—अ० (सो०) निर्भयतापूर्वक।
**नडरोणा**—अ० क्रि० (कां०) निकट होना।
**नड़ान**—स्त्री० (कु०) ननद।
**नड़िनवें**—वि० (सो०) निन्यानबे।

**नड़िप-निहारा**—पु० (कु०) बिल्कुल अंधेरा जिसमें कुछ भी न दिखाई दे।
**नड़ी**—स्त्री० नली, हुक्के की नली।
**नड़ीनुएं**—वि० (कां०, चं०) दे० नड़िनबें।
**नड़ीनू**—पु० (शि०) नाड़ा पिरोने का उपकरण।
**नड़े**—स्त्री० (सि०) दे० नड़ी।
**नड़ेइना**—अ० क्रि० (कु०) गर्म तरल पदार्थ से जल जाना।
**नड़ेटी**—स्त्री० (कु०) नरमेध में बलि चढ़ने वाले एक विशेष जाति के लोग।
**नड़ेरना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) नज़दीक कर लेना।
**नड़ेरनू**—पु० दे० नड़ीनू।
**नड़ेहू**—पु० नेफा, इजारबन्द डालने का स्थान।
**नड़ोणा**—अ० क्रि० (सि०) मेले आदि का समापन होना।
**नड़ोणा**—अ० क्रि० (कां०) निकट होना, सिकुड़ना।
**नडोळना**—स० क्रि० (सो०) खोलना; फिसलना; गांठ खोले बिना निकालना।
**नडौरना**—स० क्रि० (सि०) लूटना।
**नडौरा**—वि० (कु०) निडर।
**नड्ड**—पु० (कां०) दलदल।
**नढाणा**—स० क्रि० (कु०) छोटे बच्चों को हाथ से पकड़ कर चलाना।
**नढाल**—वि० निढाल।
**नढाळ**—वि० (सो०) दयालु, मेहरबान।
**नणद**—स्त्री० ननद।
**नणदोइया**—पु० (कां०, सो०) ननद का पति।
**नणान**—स्त्री० ननद।
**नणाही**—स्त्री० ननद की बेटी।
**नणुत्र**—पु० ननद का बेटा।
**नतणा**—स० क्रि० (कां०) कसकर बांधना, ढक्कन को कपड़े आदि से कसकर बांधना।
**नतरालणा**—स० क्रि० (सि०) निथारना।
**नतरो**—अ० (सो०) नहीं तो।
**नताजा**—पु० अंदाज़ा।
**नताणा**—वि० (कु०, सि०, सो०) कमज़ोर, तंग।
**नतार**—पु० (कां०, सो०, ह०) निथार।
**नतारना**—स० क्रि० (सो०) द्रव को छानना।
**नतीजा**—पु० परिणाम।
**नतुड़की**—वि० (कु०, सो०) ऐसी दाल या सब्जी जिसमें छौंक न लगा हो।
**नतो**—अ० नहीं, अन्यथा।
**नतोला**—वि० (सि०, सो०) जिसे तोला न गया हो, भारी।
**नत्तड़**—वि० अति मलिन। कसकर बांधा हुआ।
**नत्तळ**—वि० अति मलिन, बहुत मैला।
**नत्ता**—पु० छाछ या दही के पात्र पर बांधा जाने वाला कपड़ा।
**नत्ती**—वि० उनतीस।
**नत्थी**—स्त्री० एक लड़ी में गूंथे हुए कागज़ आदि।
**नथ**—स्त्री० नाक का आभूषण।
**नथणा**—स० क्रि० (कां०) नकेल डालना, बांध लेना, नाक में छिद्र करना।
**नथनी**—स्त्री० दे० नथ।
**नथाग**—वि० (शि०, सि०) भारी, जो उठाया न जा सके।
**नथाहड़्**—पु० ऐसा फल जो मौसम बीतने के बाद लगे तथा भली प्रकार न बढ़ सकने के कारण पीला होकर झड़ जाए।
**नथेवपण**—पु० (सो०) दिखावा।
**नथेवा**—वि० (सो०) अनर्थक, बेढंगा (व्यक्ति)।
**नथेहड़**—स्त्री० (मं०) नाथों की बस्ती।
**नथोगा**—वि० (सो०) जिसका माप न हो, बिना माप का।
**नथोगा**—वि० (कु०, मं०) ऐसा व्यक्ति जिसे किसी बात का पता न चले। बेतुका।
**नथोवा**—वि० (सो०) अत्यधिक।
**नदर**—स्त्री० (शि०, सि०) नज़र।
**नदर**—वि० (शि०) निडर, निर्भय।
**नदरदा**—वि० निर्दय। जिस पर दया करने वाला कोई न हो।
**नदराज**—पु० समुद्र।
**नदरी**—अ० (कु०) सामने।
**नदा:र**—पु० (सो०) निमंत्रित व्यक्ति।
**नदाई**—स्त्री० निराई, फसल से अवांछित पौधों को निकालने का व्यापार।
**नदाज़ा**—पु० अंदाज़ा।
**नदाण**—पु० (कां०) फसल में उगी घास।
**नदाणी**—स्त्री० निराई करने का एक उपकरण।
**नदान**—वि० नादान।
**नदारद**—वि० (चं०) खाली, ग़ायब, अदृश्य।
**नदारद**—वि० (सि०) बेकार, जो काम न आ सके।
**नदी**—स्त्री० (कु०) हुक्के में लगने वाली नली।
**नदे**—स्त्री० (सि०) नदी।
**नदेरा**—पु० (शि०) वधुप्रवेश।
**नदो:वा**—वि० ऐसा वस्त्र जिसे धोया न गया हो।
**न धाचणबुद्ध**—स्त्री० (कु०) पालन-पोषण न करने की युक्ति।
**नधार**—पु० मृतक को चिता में जलाने की क्रिया।
**नधार**—पु० वह स्थान जहां से पानी दूसरे खेत को छोड़ा जाता है।
**नधार**—पु० (सि०) विवाह से पहले दिन ननिहाल द्वारा दिया जाने वाला प्रीतिभोज।
**नधाही**—स्त्री० ऐसी खेती जिसमें अधिक घास न उगा हो।
**नधीरा**—वि० खाने-पीने में अत्यधिक आसक्ति रखने वाला, जो दूसरों को देखकर धीरज खो दे।
**नधोइल**—वि० (सि०) बेसुध, बेहोश।
**नधोशणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) बलपूर्वक छीनना, पौधों को हाथ से खींचकर तोड़ना।
**ननसास**—स्त्री० पति या पत्नी की नानी।
**ननाऊळी**—स्त्री० (कु०) चेचक।
**ननानवें**—वि० निन्यानबे।
**ननिजा/जे**—वि० (मं०) उन्निद्र।
**ननेवी**—स्त्री० (शि०) चेहरे पर होने वाली फुंसियां (रोग)।

**ननैल**—पु० (मं०) ननिहाल।
**ननोख**—पु० (सि०, सो०) दे० ननैल।
**ननोत्तर**—पु० (ह०) भानजा।
**ननौरा**—पु० (कि०) पति या पत्नी का नाना।
**नन्याळ**—पु० (सो०) ननिहाल।
**नन्हैला**—पु० ननिहाल।
**नन्होस**—पु० पति अथवा पत्नी का नाना।
**नपंदरा**—वि० (सो०) असीमित, अत्यधिक।
**नपटाखरा**—वि० (सो०) स्पष्ट, मुखर, जो तोतला न बोलता हो।
**नपटावणा**—स० क्रि० (सो०) निपटाना।
**नपणा**—अ० क्रि० झुकना। स० क्रि० दबा लेना, पकड़ लेना।
**नपणो**—अ० क्रि० (शि०) झुकना।
**नपरार**—अ० तीन वर्ष पहले।
**नपरारकणा**—वि० तीन वर्ष पहले का।
**नपरुट्ठा**—वि० (सि०) जो बर्तन जूठा न हो।
**नपांखा**—वि० (कु०) बिना पंख का।
**नपाई**—स्त्री० पैमाइश, मापने का शुल्क।
**नपाहू**—पु० (चं०) Viola odorate.
**नपाणा**—वि० (सि०, सो०) खाली पैर, बिना जूते के, जिसके पास जूते न हों।
**नपाणा**—स० क्रि० झुका देना।
**नपाणुआं**—वि० बिना पानी के।
**नपानक**—वि० (कु०) नाज़ुक।
**नपाप**—वि० निष्पाप, जिसने पाप न किया हो।
**नपाये**—स्त्री० (सि०) दे० नपाई।
**नपाली**—स्त्री० बनफ्शे के फूल की बढ़िया किस्म।
**नपाली**—स्त्री० मक्की का दाने रहित भुट्टा या बालियां।
**नपालू**—पु० बनफ्शे के फूल।
**नपावणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) जबरदस्ती झुकाना, हराना।
**नपीड़ना**—स० क्रि० निचोड़ना।
**नपीळणा**—स० क्रि० निचोड़ना।
**नपीला**—वि० (सो०) जिसे निचोड़ा न गया हो।
**नपुंसक**—वि० कायर। हिजड़ा।
**नपुच्छ**—अ० (सो०) बिना पूछे।
**नपुतरी**—वि० जिसके पुत्र न हो।
**नपूता**—वि० पुत्रहीन।
**नपेच**—वि० (कु०) जिसे उखाड़ा न जा सके।
**नपेरना**—स० क्रि० (ह०) नीचे लाना, झुकाना।
**नपोगटा**—वि० निकम्मा।
**नपोयट**—वि० (सि०) बिना प्रयोग की गई वस्तु, नई।
**नपोहगळ**—वि० कुछ न करने योग्य, मूर्ख।
**नप्यारा**—वि० (सो०) अप्रिय।
**नफरत**—स्त्री० घृणा।
**नफरी**—स्त्री० (शि०) दैनिक मज़दूरी।
**नफरी**—स्त्री० संख्या।
**नफा**—पु० फायदा, लाभ।
**नफारा/री**—वि० (शि०, सो०) अपर्याप्त, शीघ्र समाप्त होने वाला।
**नफिकरा**—वि० (सो०, सि०) निश्चिंत, जिसे चिंता न हो।
**नफिकळा**—वि० (मं०) फीका, स्वाद रहित।
**नफिट्टर**—वि० निकम्मा।
**नफीस**—वि० (शि०) बहुत सुन्दर।
**नफूस**—पु० (शि०) सांस।
**नबड़ोटा**—पु० (सो०) कमी, अभाव।
**नबड़ोणा**—स० क्रि० (सो०) पूरा करना।
**नबत**—पु० (शि०, सि०) रात्रिकाल में देव मन्दिर में बजाए जाने वाले लोकताल।
**नबल्ला**—वि० (सो०) बेहिसाब, अत्यधिक।
**नबा.ग**—पु० (सो०) अभाग्य।
**नबा.गा**—वि० (सो०) अभागा।
**नबाटा**—वि० (सि०) पथभ्रमित।
**नबाड़ना**—स० क्रि० (कु०) खत्म करना।
**नबार**—पु० (सि०) पुराने बीज के पौधे।
**नबार**—वि०(सो०) ऐसे कन्द जो ठीक तरह से न पकें।
**नबारना**—स० क्रि० समाप्त करना।
**नबालक**—वि० नाबालिग।
**नबाला**—वि० (सि०) बेसहारा।
**नबाल्ला**—वि० टहनियों से रहित (वृक्ष)।
**नबावणा**—स० क्रि० (सो०) निर्वाह करना, निभाना।
**नबाह**—पु० निर्वाह।
**नबाह**—पु० (सि०) भूतप्रेत को तांत्रिक विधि से बाहर निकालने की क्रिया।
**नबुक्क**—वि० (बि०) घना अंधेरा।
**नबुक्क**—वि० (कां०, कु०) अवाक्।
**नबुझ**—वि० नासमझ, बिना जाने हुए।
**नबुझ**—वि० न बुझने वाला।
**नबुद्घड़**—वि० (कां०) निर्बुद्धि, अबोध।
**नबेड़ना**—स० क्रि० (सो०, शि०) निपटाना, संपन्न करना।
**नबेड़ा**—पु० छुटकारा, समाप्ति, विनाश।
**नबोड़ा**—वि० अनाथ।
**नभ**—पु० आकाश।
**नभबा**—अ० (मं०) बिना ध्यान किए।
**नभराई**—स्त्री० (मं०) भाई भक्षिणी स्त्री (एक प्रकार की गाली)
**नभाउ**—वि० (कां०) निर्वाह, जिसके भाई न हों।
**नभाग**—पु० अभाग्य।
**नभागा**—वि० दे० नबा.गा।
**नभागी**—वि० अभागी, भाग्यहीन।
**नभाणा**—स० क्रि० निभाना।
**नभारु**—वि० दे० नबार।
**नभिल्ल**—वि० (सो०) ढीठ, बेशर्म।
**नभिल्ल**—अ० अचानक, अकस्मात्।
**नभिल्ल**—वि० (चं०, सि०) निर्भय।
**नभेरना**—स० क्रि० (कां०) निभाना।
**नभेरना**—स० क्रि० (कु०) समाप्त करना।
**नभेरिना**—स० क्रि० (कु०) समाप्त किया जाना।
**नमोबा**—वि० (कु०) जो ध्यान न दे रहा हो, जिसे अनुभव न हो

रहा हो, जो एहसास न कर रहा हो।
**नमदा**—पु० जमाया हुआ ऊनी कपड़ा।
**नमळेवणा**—स० क्रि० (सो०) मक्खन निकालना।
**नमसकार**—पु० प्रणाम, नमस्कार।
**नमसते**—स्त्री० नमस्कार।
**नमाई**—वि० नवें महीने में होने वाला।
**नमाड़ा**—वि० अनाथ।
**नमाणा**—वि० अनाथ, बेसहारा।
**नमाणा**—स० क्रि० (शि०) झुकाना।
**नमान**—वि० (सो०) कहे हुए को न मानने वाला।
**नमायड़ा**—वि० (सो०) मातृविहीन।
**नमायश**—स्त्री० प्रदर्शनी।
**नमाळा**—पु० (सि०) अतापता।
**नमाळा**—पु० (सि०) फैसला, निपटारा।
**नमावां**—वि० (कां०, बि०) मातृविहीन।
**नमाशी**—वि० (चं०, मं०) मांस न खाने वाला।
**नमाशी**—स्त्री० विवाहादि में शाकाहारी जनों के लिए बनाया गया भोजन।
**नमुंडला**—वि० बिना सिर का।
**नमुच्छा**—वि० बिना मूंछ वाला। बिना गूंधा (आटा आदि)।
**नमूनिया**—पु० निमोनिया।
**नमूला**—वि० (कु०) मुफ्त, जिसकी कोई कीमत न हो।
**नमूली**—अ० (कु०) थोड़ा सा मामूली।
**नमूहा**—वि० चुप रहने वाला।
**नमे**—स्त्री० (सि०) नमी।
**नमेद**—पु० नैवेद्य।
**नमेला**—पु० आशाहीन। अनमेल।
**नमोळू**—पु० नीम के फल।
**नमोहा**—वि० निर्मोही।
**नमोहा/ला**—वि० निःसहाय, अनाथ।
**नयनसुख**—पु० मलमल का वस्त्र।
**नयला**—पु० (सि०) ताश का नहला।
**नया.रा**—पु० (सो०) अंधेरा।
**नयाऊणा**—स० क्रि० (शि०) झुकाना।
**नयाटणा**—स० क्रि० (कु०) समझाना, खबरदार कराना।
**नयाणती**—स्त्री० (सो०, बि०) लंगोटी।
**नयाणप**—वि० बचपना।
**नयाणा**—पु० बच्चा, बालक।
**नयाणी**—स्त्री० छोटी।
**नयाल**—पु० (सो०) बिस्तर की गर्मी।
**नयापन**—पु० नवीनता।
**नयालणा**—स० क्रि० इंतज़ार करना।
**नयाला**—पु० (कु०) मामा का घर।
**नयाह**—पु० (कु०) रबी की फसल।
**नयूंदर**—पु० निमंत्रण।
**नयोगो**—वि० (मं०) अज्ञानी।
**नयोड़ना**—स० क्रि० (बि०) दौड़ते हुए किसी को पकड़ना।
**नरंकुस**—वि० निरंकुश।
**नरंगी**—स्त्री० नारंगी।
**नर**—पु० तेज़ चलने वाला बैल।
**नर**—पु० (सि०) पुरुष वाचक।
**नरक**—पु० (सि०) टट्टी।
**नरक**—पु० धर्म शास्त्र के अनुसार वह स्थान जहां पापी आत्मा को किए गए बुरे कर्मों का दंड दिया जाता है।
**नरकतुआर**—पु० (कु०) नरक में जन्म (एक गाली)।
**नरकस**—पु० (मं०) नरगिस का फूल।
**नरकाहळ**—पु० (कु०) काहल, एक वाद्ययंत्र।
**नरको**—पु० (चं०) नरगिस।
**नरखंड**—वि० (सि०) अशुभ, खाली।
**नरगस**—पु० (सो०) नरगिस का पौधा या फूल।
**नरगाओ**—पु० (कां०) एक वृक्ष विशेष।
**नरगुण**—वि० निर्गुण।
**नरगुत्ता**—पु० (सो०) घूंसा।
**नरगोतणा**—स० क्रि० (सो०) छिपाना, छिपाकर रखना।
**नरजा**—पु० (सि०) स्थानीय तराजू।
**नरजीव**—वि० निर्जीव।
**नरड़**—स्त्री० पिंडली की आगे वाली हड्डी।
**नरड़**—वि० (कां०) मोटा (व्यक्ति)।
**नरड़णा**—स० क्रि० (कां०) चबाना।
**नरड़ना**—स० क्रि० बिना छीले-काटे खा जाना।
**नरड़ी**—स्त्री० पतली टांगे।
**नरड़ी**—स्त्री० (कु०) कमज़ोर कलाई।
**नरणोई**—पु० (कां०) ननद का पति।
**नरता**—स्त्री० (शि०) मनुष्यता।
**नरत्ता**—पु० (शि०) नवरात्रं।
**नरथोणा**—स० क्रि० (सो०) निपटाना, सार्थक करना।
**नरद**—स्त्री० (कां०) नाड़ी।
**नरदेई**—स्त्री० मनुष्य-देह।
**नरदेई**—वि० निर्दय।
**नरदेव**—पु० (सि०) राजा; ब्राह्मण।
**नरदोष**—वि० (सो०) निर्दोष।
**नरनाथ**—पु० (शि०) राजा।
**नरपशु**—पु० (शि०) ऐसा मनुष्य जिसका आचरण पशु जैसा हो।
**नरपूर**—पु० (शि०) भूलोक।
**नरभाग**—वि० (सि०) भाग्यहीन।
**नरम**—वि० कोमल, नर्म, मुलायम।
**नरमा**—पु० ऊन की बढ़िया किस्म।
**नरमाई**—स्त्री० (शि०) कोमलता।
**नरमाणा**—स० क्रि० (शि०) शांत करना।
**नरमासी**—वि० (शि०) शाकाहारी।
**नरमी**—स्त्री० (सो०) कोमलता।
**नरयान**—पु० (शि०) मनुष्य द्वारा खींचा जाने वाला वाहन, रिक्शा।
**नरवरोध**—वि० निर्विरोध।
**नरवाह**—पु० निर्वाह।
**नरशिंगा**—पु० रणसिंघा।
**नरस**—स्त्री० नर्स।

**नरसा**—पु० (कां०) नवरस (एक औषधि)।
**नरसिंगा**—पु० दे० नरशिंगा।
**नरसिंह**—पु० एक प्रसिद्ध देव, नृसिंह।
**नरसी**—स्त्री० (मं०) ऊन रखने तथा जंगल आदि दूर स्थानों में ले जाने के लिए बनाई गई बांस की बंद पिटारी।
**नराजी**—स्त्री० नाराज़गी।
**नराज़े**—स्त्री० (शि०, सि०) नाराज़गी।
**नराठ**—वि० (कु०) एकांत, अलग।
**नराड़**—पु० (कां०) गांव का वह स्थान जहां आठ-दस घर इकट्ठे बसे हों।
**नराड़मी**—स्त्री० (मं०) आकाश बेल। वि० निर्मल।
**नराड़ी**—स्त्री० (मं०) आंखों की पलकों पर उमरा फोड़ा।
**नराणा**—अ० क्रि० (सो०) दबना, झुकना।
**नराणा**—स० क्रि० (सि०) तांत्रिक विधि से किसी रोग, दोष आदि का पता लगाना।
**नरात्ता/त्ते**—पु० नवरात्र।
**नराल**—पु० (सि०) गूंज।
**नराला**—वि० निराला, अद्‌भुत।
**नरावणा**—स० क्रि० (सो०) दबाना, झुकाना।
**नराश**—वि० निराश।
**नरिगली**—अ० अगले से अगला वर्ष।
**नरींगल**—वि० कम बुद्धि वाला, मूर्ख, सीधा-सादा।
**नरींगला**—पु० बांस की तरह की छड़ी।
**नरींजला**—पु० बांस का खोखला डंडा।
**नरीगला**—वि० (मं०) तीसरा।
**नरीठ**—वि० (कु०) गुम, लापता।
**नरीणो**—वि० (मं०) ऋण मुक्त।
**नरीह**—वि० (सि०) निरीह।
**नरुंगड़ा**—वि० खाली स्थान।
**नरु**—पु० (कां०) कलम बनाने की लकड़ी।
**नरेओड़ना**—अ० क्रि० (सि०) आगे निकलना, दौड़ते हुए किसी को पकड़ना।
**नरेड़**—स्त्री० (कु०) पीतल का हुक्का।
**नरेड़ना**—स० क्रि० प्यार से अपनी ओर करना, इकट्ठा करना।
**नरेड़नू**—पु० (ह०) नाड़ा डालने का यंत्र।
**नरेरणा**—पु० वधु का गृह-प्रवेश संस्कार।
**नरेल**—पु० (चं०) पहाड़ों का सबसे सुंदर कलगी वाला पक्षी।
**नरेळ**—पु० (सि०) पहर।
**नरेळ**—स्त्री० छोटी किस्म का हुक्का जिसकी नली मुड़ती नहीं है।
**नरेळ**—पु० नारियल।
**नरेळ**—पु० (कां०) कौए जैसा परंतु उससे कुछ छोटा पक्षी जिसकी चोंच पीली होती है।
**नरेला**—पु० (मं०) वधु का गृह प्रवेश संस्कार।
**नरेळा**—पु० (चं०) हुक्का।
**नरेलू**—पु० (ऊ०) नारियल से बना छोटा हुक्का।
**नरेवड़ना**—अ० क्रि० (सि०, सो०) आगे चल रहे व्यक्ति के निकट पहुंचना।
**नरेवणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) निहारना। झुकवाना।
**नरेवणा**—स० क्रि० (सो०) दुहने के लिए पशु के थनों को हाथ से सहलाना जिससे थनों में दूध उतर आए।
**नरेवुड़ना**—अ० क्रि० (सो०) तेज़ चलकर निकट पहुंचा जाना।
**नरैंग**—वि० (सि०) हमशक्ल।
**नरैओण**—वि० (शि०, सि०) दे० नरैंग।
**नरैण**—पु० नारायण, भगवान् विष्णु।
**नरोगा**—वि० स्वस्थ।
**नर्गुणा**—वि० (कु०, सो०) निर्गुण, अवगुण रहित।
**नर्थ**—पु० अनर्थ।
**नर्दोस**—वि० निर्दोष।
**नर्मोह**—वि० निर्मोही।
**नल**—पु० (कां०) घास।
**नळ**—पु० (सि०) नाभि।
**नलका**—पु० नाली लगा पानी छोड़ने व बंद करने का यंत्र।
**नळजाणे**—पु० एक प्रकार का पेट दर्द।
**नलपा**—वि० (ह०) जिसके नाक से रेशा बहता रहता हो।
**नलपा**—वि० (ह०) मूर्ख।
**नलवा**—पु० (शि०) एक पक्षी विशेष।
**नलवाणा**—स० क्रि० (बि०) स्नान करवाना।
**नलवातरा**—पु० (मं०) नवरात्र।
**नळा**—पु० (ऊ०, कां०) मांद।
**नलाइक**—वि० नालायक, अयोग्य।
**नलाई**—स्त्री० फसल की निराई।
**नलाई**—स्त्री० (कां०, शि०) घास की कटाई।
**नळाई**—स्त्री० (सि०) गेहूं के पौधे का निचला भाग।
**नलाएक**—वि० (शि०) दे० नलाइक।
**नलाखे**—स्त्री० (मं०) नीले रंग की आंखें।
**नलाग**—वि० (कु०) जिस (बैल) को अभी हल में न जोता गया हो; जो (बैल) हल में न लगता हो।
**नलामी**—स्त्री० (शि०) नीलामी।
**नलारी**—पु० वस्त्र रंगने वाला व्यक्ति, रंगरेज।
**नलाहणा**—स० क्रि० (शि०) नहलाना।
**नली**—स्त्री० नली।
**नळी**—स्त्री० (शि०) नाली के आकार की हड्डी।
**नलीपणी**—स्त्री० (कां०) नली।
**नलीहरु**—पु० जंगल का वह भाग जहां पर 'नलू' के पौधे पाए जाएं।
**नलु**—पु० बांस की श्रेणी का एक पौधा।
**नलुआ**—पु० (शि०) छोटी नली।
**नलेयरी**—स्त्री० (सि०) छोटी दांती।
**नलेर**—पु० (मं०) नारियल।
**नळेरना**—स० क्रि० (कु०) माश के 'बड़े' आदि को पानी में घोले नमक में डालकर नमकीन बनाना।
**नळेव**—पु० (सो०) वर्षा का एक माप विशेष। इतनी वर्षा होने का माप जिससे मिट्टी की छत वाले मकान के पतनाले से पानी बहने लगे।
**नलेक**—वि० (बि०) दे० नलाइक।
**नलोह**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) घराट के ऊपर लगा लकड़ी का

पात्र जिसके द्वारा घराट में दाने गिरते हैं।
**नल्हका**—पु० (कु०) **घूंसा।**
**नवणा**—अ० क्रि० (शि०) झुकना।
**नवत्ती**—वि० (बि०) उनतीस।
**नवनी**—स्त्री० (शि०) विनीतभाव, नम्रता।
**नवरंग—वि० सुंदर।**
**नवरंगा—वि० नौ रंग का।**
**नवरतन**—पु० नवरत्न।
**नवां**—वि० नया।
**नवां**—वि० (शि०) नवम्।
**नवांम्हीना**—पु० (मं०) मधुमास।
**नवाजणा**—स० क्रि० (शि०) लेन-देन चुकाना।
**नवाड़**—पु० (सि०) शुभारंभ।
**नवाड़ना**—स० क्रि० (सो०) काम करना।
**नवाड़ा**—वि० (मं०) ऊन का (वस्त्र)।
**नवाड़ा**—पु० (सो०) कारगुज़ारी।
**नवाणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) पशु के पैर बांधना।
**नवाणा—पु० (सो०) गाय आदि को दुहने के लिए उसकी पिछली** टांग को बांधने की क्रिया जिससे वह लात न मारे।
**नवाणा**—स० क्रि० (सि०) झुकाना।
**नवानाज**—पु० (शि०) नई फसल का अन्न।
**नवापुराणा**—पु० (मं०) पुराना कर्ज चुकाने के लिए लिया गया नया कर्ज़।
**नवार**—स्त्री० निवार, पलंग आदि बुनने के काम आने वाली मोटे सूत की बनी चौड़ी पट्टी।
**नवारना**—स० क्रि० दूर करना।
**नवारि**—स्त्री० (सो०) प्रातः काल का भोजन, नाश्ता।
**नवाला**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) भोजन, **पकवान; ग्रास।**
**नवाला**—पु० (चं०) शिव पूजा की विशेष विधि जिसमें नौ व्यक्तियों का संयोग रहता है।
**नवेद**—पु० नैवेद्य।
**नवेदन**—पु० निवेदन।
**नवेला**—वि० (शि०) नवीन।
**नवेट**—वि० (बि०) उनसठ।
**नवेत्तर**—वि० (बि०) उनहत्तर।
**नवो**—वि० (शि०) नया।
**नवो**—वि० (मं०) नौ।
**नशंग**—वि० निश्शंक, बिना झिझक के।
**नशंगा**—वि० (सो०, सि०) बिना झिझक के किया गया आघात।
**नश**—पु० (चं०, सो०) नाखून।
**नशाई**—वि० (सो०) नशे का सेवन करने वाला।
**नशकड़ा**—पु० (सो०) केंकड़ा।
**नशकड़ी**—स्त्री० (सि०) सर्दी से नाखून में हुई पीड़ा।
**नशड़ेवणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) बूंद-बूंद करके टपकाना।
**नशणा**—अ० क्रि० (शि०) नाश होना।
**नशणा**—स० क्रि० (सि०) देवता को पूछना।
**नशतर**—पु० काटने का तेज़ औज़ार।
**नशत्तर**—वि० (शि०) दुष्ट।
**नशद्दरा**—वि० (कु०, शि०) जल्दी खत्म होने वाला (अन्न आदि)। 'फारा' का विपरीतार्थक, जिसमें बरकत न हो।
**नशरावां**—पु० ब्राह्मण को दिया गया अनाज आदि का दान।
**नशवर**—वि० **नष्ट होने वाला, नश्वर।**
**नशा**—पु० मादक द्रव्य।
**नशाउणा**—स० क्रि० (मं०) निबटाना।
**नशाण**—पु० (सि०, सो०) चिह्न, निशान।
**नशाण**—पु० (कु०, शि०) देवता के वाद्ययंत्र, झंडे तथा अन्य वस्तुएं।
**नशाणची**—वि० (सो०) निशाना लगाने वाला।
**नशाणचे**—वि० (सि०) निशाना लगाने वाला।
**नशाणदार**—वि० (कु०) देवता का 'नशाण' उठाने वाला।
**नशाणा**—स० क्रि० (कु०) भगाना।
**नशाणा**—पु० निशाना।
**नशाणि**—स्त्री० (सो०) निशानी।
**नशाणे**—स्त्री० (सि०) निशानी।
**नशादा**—वि० (सो०) बिना आवाज़ के।
**नशान**—पु० (बि०) निशान।
**नशाना**—स० क्रि० (शि०) नष्ट करना।
**नशाफ**—पु० (सो०) इंसाफ़।
**नशाशुणा**—अ० क्रि० आह भरना।
**नशास**—पु० छोड़ी गई सांस, निःश्वास।
**नशींगणा**—स० क्रि० (शि०) नाक साफ करना।
**नशीला**—वि० नशे वाला।
**नशुड्ढा**—वि० (कु०) **निर्दयी।**
**नशेध**—पु० निषेध।
**नशोच**—वि० शुद्ध।
**नशोड़**—पु० (सि०) निचोड़।
**नष्टजनमा**—वि० (शि०) वर्णसंकर।
**नष्टदिल**—वि० नीम पागल, उदासीन।
**नष्टातमा**—वि० (शि०) दुष्ट।
**नसंक**—वि० (शि०) निर्भय।
**नसंखा**—वि० (सो०, सि०) असंख्य, **परिमाण** व संख्या से रहित, बेहिसाब।
**नसंगते**—वि० (कु०) संगतहीन।
**नस**—पु० (बि०) **नाखून।**
**नस**—स्त्री० नाड़ी, रग।
**नसकटा**—वि० (शि०) नपुंसक।
**नसदरा**—वि० (मं०) बेशर्म।
**नसदा**—वि० (मं०) बिना स्वाद का।
**नसरावां**—पु० दे० नशरावां।
**नसरी**—स्त्री० (कां०) पंक्ति।
**नसरूंड्ड**—पु० (कां०) खाते समय नाक में भोजन जाने पर आई खांसी।
**नसल**—स्त्री० औलाद, किस्म, वंश विशेष।
**नसवार**—स्त्री० (चं०, सो०) तंबाकू का बूरा, नस्य, सुंघनी।
**नसा**—पु० नवरस (एक औषधि)।

**नसा**—पु० (कां०) नशा।
**नसाकड़**—वि० भगौड़ा।
**नसाण**—पु० (सि०) चिह्न, निशान, देवता का झंडा छड़ी आदि।
**नसाणी**—स्त्री० निशानी।
**नसादा**—वि० (सो०, शि०, सि०) बेस्वाद, स्वादरहित।
**नसाफ**—पु० (कु०) इंसाफ।
**नसार**—वि० (सि०, सो०) निस्सार।
**नसासणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) आह भरना।
**नसासरना**—अ० क्रि० (बि०) रोते-रोते सांस का रुक जाना।
**नसास्ता**—पु० गेहूं के गूदे से बनाया गया तत्व जिसका हलवा स्वास्थ्यवर्धक होता है।
**नसीज**—स्त्री० (मं०) बिना 'सजेड़ा' वाली रोटी।
**नसीत**—स्त्री० (सो०) नसीहत, उपदेश।
**नसीब**—पु० भाग्य।
**नसीला**—वि० (शि०) नसयुक्त।
**नसीहण**—स्त्री० श्लेष्मा।
**नसीहत**—स्त्री० उपदेश।
**नसुट**—वि० (कु०) बेहोश, पूरी नींद में। घनघोर।
**नसूर**—पु० नासूर, एक फोड़ा जिसका घाव भरने में नहीं आता।
**नसेंही**—वि० (कु०) निश्चिंत।
**नसेरना**—स० क्रि० (कु०) बीच में डालना, बीच से गुज़ारना।
**नसैंसा**—वि० (कु०) बेफिक्र, निश्चिंत।
**नसोगी**—वि० (बि०, सि०) प्रसूता।
**नसोटरा**—वि० (कां०) निपट, पानी जैसा पतला।
**नसोहेगी**—वि० (मं०) दे० नसोगी।
**नसौच**—वि० (ह०) शुद्ध।
**नस्तारा**—पु० (सि०) निपटारा।
**नस्ख**—पु० (मं०) नाखून।
**नस्खखोणा**—स० क्रि० (मं०) नाखून चुभाना।
**नस्खटणियां**—स्त्री० (मं०) बिल्ली या शेर के नाखून।
**नस्खी**—वि० (मं०) उन्नासी।
**नस्हाक्कड़**—वि० (कां०) भगौड़ा, भागने वाला।
**नस्हाणा**—स० क्रि० (कां०) भगाना।
**नहंग**—पु० (बि०) बेशर्म, निर्लज्ज।
**नह**—पु० (चं०) नाखून।
**नहणा**—अ० क्रि० (चं०) भागना।
**नहरलू**—पु० (मं०) बांस की बनी पिटारी।
**नहरी**—वि० (कां०) नहर के पानी से सींची जाने वाली ज़मीन।
**नहलोई**—स्त्री० (चं०) किसी की मृत्यु पर स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक स्नान।
**नहस्सणा**—अ० क्रि० (कां०) भागना।
**नहाण**—पु० (शि०) नहाने की क्रिया, गंगा-यमुना में नहाने का पर्व, भाद्रपद की चतुर्थी को देवता के नहाने का पर्व।
**नहाणा**—अ० क्रि० नहाना, स्नान करना।
**नहायिणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) नहाना, स्नान करना।
**नहार**—स्त्री० (कु०) धुनकी में लगी रस्सी।
**नहारणा**—स० क्रि० (शि०) देखना।
**नहावणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) स्नान करवाना।

**नहास**—पु० (चं०) बड़ा शहतीर।
**नहास**—स्त्री० (बि०) नथुने, नासिका।
**नहीदों**—अ० (शि०) नीचे।
**नहोणा**—अ० क्रि० स्नान करना।
**नहनको**—पु० (शि०) शिशु।
**नां**—पु० नाम।
**नां**—अ० (बि०, सो०) नहीं (निषेधवाचक अव्यय)।
**नांईं**—अ० (शि०) नहीं।
**नांई**—स्त्री० (शि०) नाभि।
**नांओं**—पु० नाम।
**नांकणा**—स० क्रि० (शि०) झुकाना।
**नांखड़ा**—वि० (कु०) उजाड़, जहां पेड़ पौधे न हों।
**नांग**—स्त्री० (मं०) भूख।
**नांगा**—वि० (कु०, शि०) नंगा।
**नांगा**—वि० साधुओं का एक संप्रदाय।
**नांगा**—वि० निर्धन।
**नांगेया**—वि० (सि०) नग्न।
**नांघना**—स० क्रि० (शि०) लांघना, उछलकर एक पार से दूसरे पार जाना।
**नांडा**—वि० (कु०) गूंगा।
**नांतर**—पु० (सि०) भीगा चिथड़ा।
**नांतर**—पु० (ह०) कुम्हार का पानी का पात्र।
**नांदड़ा**—वि० (सि०) छोटा।
**नांदी**—वि० (शि०) बारीक, पतली।
**नांनटी**—स्त्री० (सि०) लड़की।
**नांनटे**—पु० (सि०) बालक, बच्चा।
**नांबल**—पु० (मं०) गेंदे का फूल।
**नांव**—पु० (सो०) नाम।
**नांवनमूद**—पु० (सि०) पता, नामोनिशान।
**नांवराशिया**—वि० समान नाम वाला।
**नांवां**—पु० (शि०) पैसे।
**नांस**—पु० (कां०) नथुना।
**नांह**—अ० इंकार, मना।
**नांहदी**—वि० (शि०) पतली, बारीक।
**नांही**—स्त्री० (मं०) नाभि।
**नांहू**—पु० (मं०) आंवल।
**ना:ण**—पु० (सि०) देवस्थान, तीर्थस्थान।
**ना:ण**—पु० (सो०) स्नान।
**ना:णा**—अ० क्रि० (सो०) स्नान करना।
**नाइ**—स्त्री० (सो०, सि०) नाभि।
**नाइण**—स्त्री० नाई की स्त्री।
**नाइलून**—पु० नाइलोन।
**नाईंदा**—अ० (कु०) नहीं, अस्वीकृति।
**नाई**—पु० नाई।
**नाई**—स्त्री० मूंछों वाली मछली।
**नाउणा**—स० क्रि० (शि०) झुकाना।
**नाउणी**—स्त्री० (ह०) मक्खन।
**नाउणू**—पु० (सि०) पानी गर्म करने का पात्र।

**नाऊं**—पु० (कु०) नाम।
**नाऊं-जेहां**—अ० (कु०) ज़रा सा, नाम-मात्र।
**नाऊं-पनाऊं**—पु० (कु०) नाम-उपनाम।
**नाऊर**—वि० (सि०) किसी वस्तु का टेढ़ापन।
**नाकटू**—पु० (कु०, सि०) बच्चों का नाक, छोटा नाक।
**नाकड़ा**—पु० (शि०) भद्दा नाक।
**नाकड़ू**—पु० (शि०) नाक की तीली।
**नाका**—पु० रोक; प्रदेश, नगर अथवा गढ़ का फाटक।
**नाकाबंदी**—स्त्री० रोक, रुकावट।
**नाकाबिल**—वि० अयोग्य।
**नाकी**—वि० (कु०) लंबे नाक वाला।
**नाकू**—वि० (सि०) बड़े नाक वाला। मगरमच्छ।
**नाकें-छीक़**—स्त्री० (कु०) इंकार करने के लिए बेबस।
**नाके**—वि० (सि०) दे० नाकी।
**नाकेदार**—पु० (शि०) चौकीदार।
**नाख**—स्त्री० नाशपाती की एक बढ़िया किस्म।
**नाग**—पु० (सि०) सांप।
**नाग—वि० दुश्मन, खतरनाक।**
**नाग**—पु० ब्राह्मणों की एक जाति विशेष।
**नागण**—स्त्री० नागिन।
**नागणू**—वि० (शि०) बेकार (व्यक्ति)।
**नागपंचमी**—स्त्री० (शि०) श्रावण शुक्ला पंचमी।
**मागपांजवी**—स्त्री० (मं०) दे० नागपंचमी।
**नागर**—पु० (शि०) नगर, शहर।
**नागरबेल**—स्त्री० अमरबेल।
**नागराज**—पु० शेषनाग।
**नागलोक**—पु० (शि०) पाताल।
**नागा**—पु० अंतर; अनुपस्थिति; उपवास।
**नागा**—पु० (मं०) नग्न रहने वाला; वे साधू जो वस्त्र धारण नहीं करते; शैव संप्रदाय के देवता।
**नागू**—पु० (सि०) विशेष प्रकार का हल।
**नागेश्वर**—पु० (शि०) शिव।
**नाच**—पु० नृत्य।
**नाचकूद**—स्त्री० (सि०) प्रयत्न; आयोजन।
**नाचणा**—अ० क्रि० नाचना, उछल-कूद करना।
**नाचणो**—अ० क्रि० (कु०, शि०, सि०) नाचना।
**नाचरंग**—पु० (शि०) आमोद-प्रमोद।
**नाचरना**—स० क्रि० (कु०) टीका-टिप्पणी करना।
**नाचरिना**—अ० क्रि० (कु०) टीका-टिप्पणी कराई जानी।
**नाचार**—वि० (शि०) लाचार, असहाय, व्यर्थ।
**नाचिया**—पु० (शि०) नाचने वाला व्यक्ति।
**नाज़**—पु० अनाज।
**नाज़क**—वि० (कु०) नाज़ुक।
**नाज़कठेओणा**—स० क्रि० (मं०) अनाज का शुभ मुहूर्त में भंडारण करना।
**नाज़पोथा**—पु० (कु०) अन्नभंडार।
**नाजायज**—वि० अनुचित।
**नाजो**—स्त्री० (मं०) प्रिया।
**नाट**—पु० नर्तक।
**नाटक**—पु० रंगशाला में नटों द्वारा वचन, हाव-भाव, वेश आदि द्वारा किया जाने वाला घटनाओं का प्रदर्शन।
**नाटा**—वि० छोटे कद का।
**नाटा**—पु० (कु०) मकान की मोटी लकड़ी।
**नाटी**—स्त्री० हिमाचल का एक प्रसिद्ध लोकनृत्य।
**नाटू**—पु० (मं०) नर्तक।
**नाटे**—स्त्री० (सि०) दे० नाटी।
**नाट्टोड़ना**—अ० क्रि० (सि०) आगे निकलना।
**नाट्ठ—स्त्री० भगदड़।**
**नाड़**—स्त्री० (शि०) गर्दन।
**नाड़**—स्त्री० रग, नस, शिरा।
**नाड़**—स्त्री० (सि०) पिंडली की आगे वाली हड्डी।
**नाड़का**—पु० रस्सी।
**नाड़गू**—पु० (सि०) जुए में बंधी रस्सी।
**नाड़दामी**—स्त्री० नाड़ा डालने के लिए प्रयुक्त उपकरण विशेष।
**नाड़नखाड़**—वि० (कु०) बेढंगा।
**नाड़ा**—पु० सलवार या पाजामा बांधने की डोर।
**नाड़ा**—पु० (सि०) बैलों को जोतने की रस्सी, गाय की टांग बांधने की रस्सी।
**नाड़ा**—पु० (कु०, मं०) नाला।
**नाड़ी**—स्त्री० रक्तवाहिनी नालियां।
**नाड़ी**—स्त्री० (कां०, चं०) Aambuszasundınacia एक झाड़ी विशेष।
**नाड़ी**—स्त्री० (कु०) चमड़े की रस्सियों का गोल चक्र जिसे दोहरा-चौहरा करके हल को जुए के साथ बांधने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
**नाड़ू**—पु० जन्म के समय बच्चे की नाभि से जुड़ी नाड़ी विशेष जिसे काट दिया जाता है।
**नाड़े**—पु० (चं०) पानी का प्राकृतिक स्रोत।
**नाड़े**—स्त्री० (शि०, सि०) नब्ज़।
**नाड़े**—स्त्री० (सि०) अक्ल, होश, बुद्धि, समझ।
**नाड़े**—स्त्री० (शि०) कपड़े की रस्सियों का गुच्छा जिसके द्वारा जुए को हल से कसा जाता है।
**नाड़ेहु**—पु० (चं०) नाड़ा डालने का उपकरण।
**नाड़ो**—वि० (मं०) नीची या गहरी (भूमि)।
**नाड्डी**—स्त्री० (कां०) धान उगाने की भूमि।
**नाणे—वि० (सि०) रजस्वला।**
**नात**—पु० (शि०) संबंध।
**नातकपत्ती**—पु० (कां०) संबंधी।
**नाता**—पु० (सि०, सो०) सगाई, रिश्ता।
**नाताचारी**—स्त्री० रिश्तेदारी।
**नाती**—पु० (कु०) ऐसे संबंधी जिनके साथ विवाह संबंध जोड़े जा सकते हैं।
**नाती-पोती**—पु० (कु०) संबंधी।
**नातेदार**—पु० (सि०) संबंधी।
**नाथ**—पु० (मं०) दीवार में बना छिद्र जिसमें 'नेची' फंसाई जाती है।

**नाथ**—पु० (शि०) प्रभु, स्वामी, पति।
**नाथ**—स्त्री० (शि०) बैल की नकेल।
**नाथ**—पु० (मं०) अछूत ब्राह्मण जो मृत संस्कार में दीप उठाते हैं।
**नाथ**—स्त्री० (सि०, शि०) नथ, नाक का आभूषण।
**नाथटु**—पु० (सो०) नाक का एक आभूषण।
**नाथण**—स्त्री० (कु०) नकसीर।
**नाथणा**—स० क्रि० (शि०) नकेल डालना।
**नाद—पु० (शि०) शब्द, गर्जन।**
**नाद—पु० सींग से बना एक वाद्य विशेष।**
**नादड़ा**—पु० (सि०) छोटा बच्चा, वि० छोटे कद का।
**नादिया**—पु० 'नाद' बजाने वाला।
**नादिया—पु० (शि०) बैल नन्दी बैल के लिए प्रयुक्त शब्द।**
**नादी**—वि० (शि०) शब्द करने वाला।
**नादेड़ो**—वि० (शि०, सि०) बारीक, छोटा।
**नाद्दर**—पु० (कां०, ह०) निरादर।
**नानकचारा**—पु० (बि०) विवाह में ननिहाल की ओर से दिया गया उपहार।
**नानकणी**—स्त्री० (बि०) ननिहाल की स्त्रियां।
**नानका**—पु० ननिहाल।
**नानड़ा**—वि० (सि०) छोटा।
**नानड़िया—पु० (शि०, सि०) बालक।**
**नानस/सु—स्त्री० (कां०, मं०) पति या पत्नी की नानी।**
**नाना**—वि० अनेक प्रकार के।
**नाना**—पु० माता का पिता, मातामह।
**नाना**—पु० (शि०) पिता का पिता, पितामह।
**नानिहाल**—पु० (शि०) ननिहाल।
**नानी**—स्त्री० माता की मां।
**नानुक्कर—स्त्री० इंकार करने का भाव।**
**नानू**—पु० नाना।
**नानू**—पु० (शि०, सो०, सि०) शिव का एक रूप जिसे बैजनाथ **कहते हैं। हिमाचल में इस देवता का मूल स्थान देवथळ नामक** ग्राम है तथा यह कई ग्रामों का कुल देवता है।
**नानू-बनायक—पु० (ह०) विवाह के समय बनाई गई मिट्टी की मूर्ति।**
**नाने**—स्त्री० (सि०) नानी।
**नाप**—पु० माप।
**नापजोख**—पु० (शि०) नापने, तोलने की क्रिया।
**नापणा**—स० क्रि० मापना, माप लेना।
**नापालसर**—पु० (सि०) नाखून में लगाने का रंग।
**नाफा**—पु० (सि०) लाभ, नफा।
**नाबर**—पु० (बि०) इनकार न करने का भाव, सेवा में तत्पर।
**नाबर**—वि० (सि०) वश से बाहर (व्यक्ति)।
**नाबालक**—वि० नाबालिग।
**नाभ**—स्त्री० (शि०) नाभि।
**नाभ**—पु० (सि०) आकाश, नभ।
**नाभला**—पु० (कु०) जंगली गेंदा।
**नाम—पु० प्रसिद्धि, नाम।**
**नाम**—पु० पुरस्कार, इनाम।
**नाम**—पु० (कां०) बच्चे के गले में डाला जाने वाला वह आभूषण जो काली डोरी में पिरोया जाता है।
**नामकीर्तन**—पु० (शि०) भगवद् भजन।
**नामधाम**—पु० (शि०) पता-ठिकाना।
**नामधारी**—वि० (शि०) नाम वाला।
**नामलेवा**—पु० (शि०) उत्तराधिकारी।
**नामाई**—वि० (सि०) अनाथ।
**नामी**—वि० ख्यातिप्राप्त।
**नायक**—पु० (शि०) नेता, अगुआ, श्रेष्ठ पुरुष।
**नायण**—स्त्री० नाई की पत्नी।
**नारंगी**—स्त्री० (कु०, मं०) Habenaria edegeworthic.
**नार**—स्त्री० (शि०) नारी। मोटा रस्सा; पलंग की निवार।
**नार**—पु० (बि०, मं०, सो०) Punica granatum.
**नार**—पु० अनार।
**नारदाणा**—पु० अनार के सुखाए हुए दाने'
**नारसींग**—पु० देवता-विशेष।
**नारायणी**—स्त्री० (शि०) दुर्गा, लक्ष्मी।
**नाळ**—पु० पशुओं को तेल पिलाने का पात्र।
**नाळ**—लकड़ी की लंबी नाली जिसमें से घराट चलाने के लिए पानी गिरता है।
**नाळ**—स्त्री० (सि०, सो०) खड्ड, छोटी नदी।
**नाळ**—स्त्री० (सो०) घोड़े आदि के खुरों में लगाई जाने वाली लोहे की मोटी पत्ती।
**नाळ**—पु० (कां०) दो पहाड़ियों के बीच का खेत।
**नाळ**—स्त्री० (शि०) बंदूक।
**नाळ**—स्त्री० (कु०) बांस की नाली जिसमें धागा डालकर करघे में कपड़ा बुना जाता है।
**नाळ**—पु० Arundo donex.
**नालछोह**—स्त्री० (सि०) वह स्थान जहां छत के पिछले हिस्से का पानी गिरता है।
**नाळटा**—पु० (सि०) नलका।
**नाळटा**—पु० खड्ड के पास का खेत।
**नालटी—स्त्री० (सि०) खाई।**
**नाळटु**—पु० (सो०, शि०) पानी का छोटा बहाव।
**नाळटे**—स्त्री० (शि०) छोटी बंदूक।
**नाळबंद**—पु० (सो०) घोड़े को 'नाळ' चढ़ाने वाला।
**नालस**—स्त्री० (कु०, चं०) कचहरी में की गई शिकायत, अभियोग; फरियाद।
**नालसी**—वि० (कु०, चं०) चुगलखोर।
**नाळा**—पु० (शि०, सो०) जल स्रोत।
**नालिश**—स्त्री० (कु०, शि०) शिकायती प्रार्थना पत्र।
**नाळी**—स्त्री० (कु०) नालिका, जुलाहों का कपड़ा बुनने का उपकरण।
**नाळी**—स्त्री० जल निकास के लिए बना रास्ता, लोहे, रबड़, आदि की नाली।
**नाळी**—स्त्री० (कां०) 'ओडी' के तले में लगी लकड़ी जिससे **थोड़े-थोड़े दाने गिरते हैं।**
**नाळुआ**—पु० (सि०) नाग।

**नालू**—पु० (ह०) खपरैल के छिद्र ढांपने में प्रयुक्त मिट्टी या लकड़ी के बने छोटे नालीदार टुकड़े।
**नाळू**—पु० प्राकृतिक जल स्रोत।
**नालो**—पु० (शि०, सि०) नाला, खड्ड।
**नाल्ही**—स्त्री० (कु०) गलती।
**नाव**—स्त्री० नौका।
**नावक**—पु० (शि०) नाविक, मांझी।
**नावर**—पु० (बि०) इंकार न करने का भाव, सेवा में तत्पर।
**नावाकस**—वि० (कां०) अपरिचित।
**नावीं**—वि० (बि०) प्रसिद्ध।
**नावे**—पु० (शि०, सि०) नाई।
**नाश**—पु० विनाश।
**नाश**—पु० नष्ट होने का भाव।
**नाश**—पु० (मं०) चार बड़े शहतीर जिन पर पूरा मंदिर बनाया जाता है।
**नाशणा**—अ० क्रि० (कु०, मं०) जाना।
**नाशपाते**—स्त्री० (शि०, सि०) नाशपाती।
**नाशु**—वि० (सि०, सो०) घर या वस्तुओं को बर्बाद करने वाला, नाश करने वाला।
**नाशु**—वि० (सि०) बहुत खर्च करने वाला।
**नास**—पु० (बि०) नाश, हानि।
**नास**—पु० (चं०) नासिका छिद्र।
**नास**—पु० (सि०) देवता के मंदिर में लगने वाला लकड़ी का शहतीर।
**नासकरा**—वि० (सि०, सो०) नाक से बोलने वाला।
**नासपत्ति**—स्त्री० (कु०, सो०) नाशपाती।
**नासियोत**—स्त्री० (शि०, सि०) नसीहत, उपदेश।
**नासी**—स्त्री० (सि०) हल के नीचे लगी भूमि को फाड़ने वाली मुख्य लकड़ी या लोहा।
**नाह**—पु० (शि०) नाश।
**नाहट**—वि० (मं०) उनसठ।
**नाहड़ी**—स्त्री० (मं०) 'नलका'।
**नाहपते**—स्त्री० (शि०) नाशपाती।
**नाहरुख**—पु० (शि०) आंख का एक रोग।
**नाहिंदा**—अ० (कु०) इंकार।
**नाहळू**—पु० (कु०) नाभि।
**नाहिणा**—अ० क्रि० (सि०) नहाना।
**नाहुणा**—अ० क्रि० (कु०) नहाना।
**नाहकणा**—स० क्रि० (शि०) कूटना, ठोंकना। कैद करवाना।
**नाहस**—स्त्री० नासिका।
**निं**—अ० (सो०) निषेध सूचक क्रिया विशेषण।
**निंगणा**—वि० (कु०) नाक से बोलने वाला।
**निंगळना**—स० क्रि० (सि०, कु०) निगलना।
**निंगा**—वि० (सि०) सुस्त।
**निंडणा**—स० क्रि० (कु०) गोड़ाई करना, निराई करना।
**निंडलणा**—अ० क्रि० (सि०) कुदाल आदि उपकरणों से दस्ते का निकल जाना।
**निंडळना**—अ० क्रि० (शि०) वैसे ही खुल जाना।
**निंदणा**—स० क्रि० (सो०) खेत से बेकार पौधों को निकालना। निंदा करना।
**निंदया**—स्त्री० (कां०, चं०, सो०) निंदा।
**निंदर**—स्त्री० (कां०, बि०) नींद।
**निंदरालू**—वि० अधिक सोने वाला।
**निंदा**—स्त्री० (शि०) निंदा।
**निंदाई**—स्त्री० निराई।
**निंधणा**—स०क्रि० निंदा करना।
**निंधा**—स्त्री० निंदा।
**निंबर**—पु० (सि०) देवता के आगमन पर लगाए जाने वाले नारे।
**निंबल**—पु० बादल हीन साफ आकाश।
**निंबळा**—वि० (कु०, चं० सो०) साफ, निर्मल वर्षा के न होने का भाव।
**निंबू**—पु० नीबू।
**निंमू**—पु० नीबू।
**निंवदा**—पु० (सो०) निमंत्रण।
**निंह**—वि० (कु०) उन्नीस।
**निंहचा**—वि० (कु०) निश्चित।
**निआं**—स्त्री० नींव।
**निआंगणा**—स० क्रि० (ह०) काम पर भेजना।
**निआणा**—पु० बच्चा।
**निउंदरना**—स० क्रि० (कु०) निमंत्रण देना।
**निउआं**—वि० (बि०) नीचा।
**निऊं**—स्त्री० नींव।
**निऊंआ**—वि० विनम्र।
**निऊंड़े**—वि० (सि०) नज़दीक।
**निऊंदरा**—पु० निमंत्रण।
**निऊंदा**—पु० निमंत्रण।
**निओटा**—वि० (मं०) नीचा।
**निओड़**—पु० (मं०) समतल बस्तियां, निचाई पर स्थित इलाका।
**निकड़ना**—अ० क्रि० (कु०) निकलना।
**निकम्मा**—वि० बेकार।
**निकर**—स्त्री० घुटनों तक की पैंट।
**निकशा**—पु० (सि०) इंतज़ार।
**निकशैषणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) सांस का फूलना।
**निकसणा**—अ० क्रि० (कु०) आगे निकलना, भीड़ आदि में मुश्किल से आगे निकलना।
**निकामो**—वि० (शि०) भद्दा।
**निकारो**—वि० (सि०) बदसूरत।
**निकुलणा**—अ० क्रि० (शि०) निकलना।
**निक्का**—वि० छोटा।
**निक्कू-छुक्कू**—वि० छोटे-बड़े सभी।
**निक्खरना**—स० क्रि० (कां०) डांटना।
**निक्स**—अ० (कु०) आगे की ओर।
**निखड़ना**—अ० क्रि० (कु०) घिस जाना, खेती के औज़ार का घिसकर पतला हो जाना, मुरझाना।
**निखड़ना**—अ० क्रि० (कु०) काम करते समय कुदालादि के लोहे का हत्थी से बार-बार निकलना।

**निखड़ू**—वि० (कु०) जिसका कुछ भाग टूट गया हो।
**निखड़ू**—वि० (सि०) शुद्ध (दूध)।
**निखरणो**—अ० क्रि० (सि०) उभरना।
**निखरना**—अ० क्रि० वस्त्रादि का साफ होना, धोकर निखार आना।
**निखरना**—अ० क्रि० नाराज़ होना, घुड़की लगाना।
**निखलणा**—अ० क्रि० (मं०) निकलना।
**निखार**—पु० (शि०) स्वच्छता, निर्मलता।
**निखेद**—वि० (शि०) स्पष्ट।
**निखोरट**—वि० (शि०) स्वस्थ।
**निगंध**—वि० (शि०) गंधहीन।
**निगर**—वि० (कु०) मूल, भरपूर, खालिस।
**निगर**—वि० सख्त।
**निगरानी**—स्त्री० देखभाल।
**निगलना**—स० क्रि० निगलना।
**निगला**—अ० अगले से अगला वर्ष या मास।
**निगवां**—वि० (सि०) गहरा।
**निगाह**—पु० (ह०) चरागाह।
**निगार**—वि० सख्त, मज़बूत।
**निगाल**—पु० (सि०) Thamnocalamus Flcata.
**निगी**—स्त्री० (चं०) Daphnecannabina.
**निगूढ़**—वि० (शि०) गूढ़ या गुप्त बात।
**निग्गर**—वि० (सो०) ठोस, सख्त, मज़बूत।
**निग्गा**—वि० (सो०) गरम (कमरे आदि का विशेषण)।
**निग्गा**—वि० (शि०) गहरा।
**निग्घा**—वि० गर्म।
**निघ**—पु० गरमाहट।
**निघरना**—अ० क्रि० पानी का धीरे-धीरे रिसना। दिन-प्रतिदिन कमज़ोर होते जाना या धन आदि से रहित हो जाना। अवनति की ओर जाना।
**निघरा**—वि० (शि०) बेघर, जिसके कोई घर न हो।
**निघलणा**—स० क्रि० (कु०) निगलना।
**निघा**—वि० (बि०) ऐसा व्यक्ति जो धनी हो लेकिन धनी होने का गर्व न करता हो।
**निघा**—वि० (मं०) गहरा।
**निघेरना**—स० क्रि० सर्दी में बिस्तर आदि गर्म करना।
**निघोरणा**—स० क्रि० बिल्कुल समाप्त करना।
**निङ्सणा**—अ० क्रि० (सि०) खिसकना।
**निचड़ना**—स० क्रि० (मं०) निचोड़ना।
**निचड़ना**—अ० क्रि० निचुड़ना, चूना।
**निचला**—वि० (कां०) आराम से बैठने वाला, चुपचाप, निश्चल, स्थिर।
**निचला**—वि० नीचे का, नीचे वाला।
**निचुड़ना**—अ० क्रि० टपकना।
**निचोड़**—पु० सार, तात्पर्य, सारांश।
**निछला**—वि० (शि०, सि०, सो०) साफ दिल का, निष्कपट।
**निछाण**—वि० (शि०) बिना मिलावट का।
**निछावर**—स्त्री० (शि०) न्योछावर।
**निजम**—पु० नियम।
**निजमी**—वि० (ह०) नियम वाला।
**निजरालू**—वि० (शि०) सोने का शौकीन।
**निजी**—वि० अपना।
**निजोर**—वि० (शि०) बलहीन।
**निझरना**—अ० क्रि० (शि०) झड़ना।
**निटर**—पु० (शि०) निचोड़ने के पश्चात् बचा फोकट।
**निटरणा**—स० क्रि० (मं०) निचोड़ना।
**निटरना**—अ० क्रि० (कु०) नीचे गिरना।
**निटोरना**—स० क्रि० (शि०) निचोड़ना।
**निट्टरना**—अ० क्रि० (कां०) पानी निकलना, टपकना।
**निट्ठा**—वि० (बि०) स्थिर स्वभाव वाला।
**निठा**—वि० (सि०) पवित्र।
**निठोर**—वि० (शि०) क्रूर, निर्दयी।
**निड्ड**—पु० (कु०) आड़।
**निडर**—वि० निर्भय, साहसी।
**निड़े**—वि० (शि०, सि०) नज़दीक।
**निढाल**—वि० अशक्त।
**नित**—अ० नित्य, हर समय।
**नितपड़ी**—अ० (सि०) प्रतिदिन।
**नितरना**—अ० क्रि० (सो०) पानी आदि का छनकर बहना।
**निताणा**—वि० (शि०) कमज़ोर।
**नितोरशी**—अ० (शि०) चार दिन बाद।
**निदई**—वि० (शि०) दे० निठोर।
**निदणुआली**—स्त्री० (चं०) छोटी कुदाली।
**निदेश**—पु० (शि०) निर्देश, आज्ञा।
**निदोष**—वि० (शि०) निर्दोष।
**निधड़क**—वि० (शि०) निस्संकोच।
**निधनी**—वि० (शि०) धनहीन।
**निनारा**—वि० (शि०) न्यारा।
**निनावें**—स्त्री० (शि०) त्वचा पर उभरने वाले लाल-लाल दाने।
**निपट**—वि० निरा।
**निपटणा**—अ० क्रि० निबटना।
**निपणा**—स० क्रि० (मं०) झुकाना।
**निपरार**—अ० (ह०) पहले के तीन वर्ष अथवा बाद के तीन वर्ष।
**निपाणो**—वि० (शि०) पानी रहित।
**निपुण**—वि० कार्यकुशल।
**निब**—स्त्री० निब।
**निबटणा**—अ० क्रि० (शि०) पूरा होना, संपन्न होना, निबटना।
**निबटेरा**—पु० (शि०) झगड़े का निर्णय, छुटकारा।
**निबड़ना**—अ० क्रि० (कु०, शि०, सो०) दे० निबटणा।
**निबणा**—अ० क्रि० (सो०) निर्वाह होना, निभना।
**निबरना**—अ० क्रि० मुरझाना।
**निबरना**—अ० क्रि० खत्म होना, घिस-घिसकर कर समाप्त होना, निबटना।
**निबापा**—वि० (शि०) अनाथ।
**निबाह**—पु० गुज़ारा, निर्वाह।
**निबाहणा**—स० क्रि० (शि०) छुटकारा पाना।

**निबेड़ा**—पु० (शि०) दे० निबेरा।
**निबेरा**—पु० (शि०) मुक्ति, छुटकारा।
**निभणा**—अ० क्रि० निबटना, समाप्त होना।
**निमणा**—अ० क्रि० (का०, ह०) निर्वाह होना।
**निमाणा**—स० क्रि० पूरा-पूरा बांटना, कार्य को सफलता से समाप्त करना।
**निमंत्रक**—वि० (शि०) निमंत्रण देने वाला।
**निमंत्रण**—पु० (शि०) निमंत्रण।
**निम**—पु० (चं०) नीम।
**निमक**—पु० (मं०) नमक।
**निमटणा**—अ० क्रि० (शि०) निबटना।
**निमता**—वि० (सि०) विनम्र।
**निमता**—वि० कमज़ोर, धूमिल।
**निमती**—वि० (कु०) झुकी हुई (नज़र)।
**निमदा**—पु० (कु०) दे० नमदा।
**निमपत्रा**—पु० नीम की पत्तियां।
**निमर्का**—पु० कच्चे आमों में प्याज़ डालकर बनाया गया मीठा आचार विशेष।
**निमळा**—वि० (सो०, सि०) निर्मल, बादल रहित दिन।
**निमलुना**—अ० क्रि० (सो०, सि०) वर्षा का थमना, आकाश का निर्मल होना, साफ होना।
**निमाया**—वि० (शि०) बिना मां का।
**निमुओ**—वि० (शि०) शर्मीला, कम बोलने वाला।
**निम्मी**—स्त्री० (सो०) खुशबुदार धान की एक किस्म।
**निम्मु**—पु० नीबू।
**नियत**—स्त्री० नीयत, विचार, इरादा, इच्छा।
**नियांहड़ा**—पु० खड्ड के किनारे का पथरीला भाग।
**नियाई**—वि० (शि०) न्यायी।
**नियाटणा**—स० क्रि० (कु०) वंचित करना, छुड़ाना।
**नियाणा**—स० क्रि० (कु०) चोरी द्वारा अपनी वस्तु गवां देना, हार कर अपनी वस्तु दूसरे के पास चली जाना।
**नियारना**—स० क्रि० (कु०) समझाना, नीति पर लगाना।
**नियारा**—वि० (शि०) अनोखा, पृथक्, अलग।
**नियारि**—स्त्री० (सो०) नाश्ता, प्रातः काल का भोजन।
**नियाह**—पु० (कु०) बसंत ऋतु।
**नियाही**—स्त्री० (कु०) 'नियाह' की फसल, रबी।
**नियूं**—स्त्री० नींव।
**नियोकला**—वि० (शि०, सि०) मूर्ख।
**नियोड़ा**—पु० सब्जी, तरकारी।
**निर**—पु० (चं०) एक घास विशेष।
**निरगल**—स्त्री० (ह०) जंगली बांस।
**निरगाल**—पु० (शि०, सो०) Arundinarea Falcaa.
**निरजलाकादश**—स्त्री० निर्जला एकादशी।
**निरणा**—पु० (सि०) प्रातःकालीन भोजन।
**निरता**—वि० खाली पेट, बिना भोजन खाए, निराहार।
**निरते**—वि० (कु०) दे० निरता।
**निरदैन**—वि० (चं०) नाबालिग।
**निरधन**—वि० धनरहित, निर्धन।
**निरना**—पु० (सि०) झींगुर।
**निरना**—वि० (सो०) खाली पेट।
**निरपो**—वि० (सि०) विरली (फसल)।
**निरबंस**—वि० निःसंतान।
**निरबिघन**—अ० (सो०) बिना विघ्न के।
**निरमल**—वि० साफ।
**निरमूलक**—वि० (शि०) बिना जड़ का।
**निरवैसी**—वि० बिना वंश का।
**निरस**—पु० चंदन आदि घिसने के लिए बनाई चपटी व नर्म शिला।
**निरहना**—अ० क्रि० धसना, दिन प्रतिदिन दुर्बल होते जाना।
**निरा**—अ० (कु०) बहुत मात्रा में।
**निरा**—विशुद्ध, बिल्कुल, केवल मात्र।
**निरागी बिले**—अ० (शि०) आगामी वर्ष से।
**निरादार**—वि० (सो०) बिना आधार के।
**निराहार**—वि० (सि०) जिसने कुछ खाया-पिया न हो।
**निरिबिरी**—अ० (कु०) बराबर-बराबर।
**निरिहासंजोग**—पु० (चं०) लोहे की जंज़ीरों का कवच।
**निर्ख**—पु० (कु०) दर, भाव।
**निर्गाल**—पु० (सि०) Thamnocalamus Spathiflora.
**निर्दई**—वि० (सि०) निर्दय।
**निर्बाचन**—पु० निर्वाचन।
**निर्बाण**—पु० (शि०) निर्वाण।
**निर्बिशी**—स्त्री० (कु०) एक विषैला पौधा जो औषधि के काम आता है।
**निर्मोल**—वि० (शि०) अमूल्य।
**निर्मोही**—वि० कठोर, निर्दय।
**निर्विशश-निर्विशश**—वि० (सो०) अत्यधिक खट्टा या कटु।
**निर्शु**—पु० (कु०) एक लोक नाट्य।
**निलक**—वि० (कु०) पक्की (लकड़ी)।
**निलक**—पु० (चं०) एक चादर विशेष जो औरतों के प्रयोग के लिए होती है।
**निलघिणा**—अ० क्रि० (कु०) मुरझाना।
**निलज्जता**—स्त्री० (शि०) निर्लज्जता।
**निल्ला**—वि० (सो०) नीला।
**निल्लाह**—वि० (बि०) निचला।
**निल्ले**—वि० (बि०) नीचे वाला।
**निवड़े**—अ० (सो०) कुछ निकट।
**निशंग**—वि० निर्भय, बिना सोचे समझे।
**निशटा**—वि० (कु०) कम ऊंचा, नीचा।
**निशड़ना**—अ० क्रि० (शि०, सो०) द्रव का रिसना, पानी आदि का बूंद-बूंद टपकना।
**निशरना**—अ० क्रि० गेहूं आदि की फसल में बाल (सिट्टा) का पैदा होना।
**निशाला**—वि० (कु०) अधिक पानी वाला।
**निशात**—पु० (शि०) प्रसन्नता, खुशी।
**निशौंक**—वि० (सि०) बिना झिझक।
**निश्चा**—पु० निश्चय।

**निष्ट**—वि० अनिष्ट।
**निसचा**—पु० (चं०) निश्चय।
**निसफल**—वि० निष्फल।
**निसब**—वि० आधा।
**निसरणा**—अ० क्रि० (सि०) द्रव पदार्थ का टपकना।
**निसरना**—अ० क्रि० तंग जगह से निकालना, तंग जगह से गुज़रना।
**निसरना**—अ० क्रि० गेहूं आदि की फसल में बाल (सिट्टा) का पैदा होना।
**निसरल**—पु० (कु०) बीच में से निकलने का भाव।
**निसीढ़**—वि० दो वस्तुओं को इस ढंग से मिलाना कि बीच में छेद न रहे।
**निसोच**—वि० (सि०, शि०) निश्चित।
**निस्चा**—पु० धैर्य, निश्चय।
**निस्ती**—स्त्री० (मं०) बिना तला पकवान।
**निस्फ**—वि० (शि०) आधा।
**निस्सा**—अ० (कां०, मं०) नकारात्मक स्वर।
**निहत्था**—वि० जिसके हाथ में कोई शस्त्र न हो।
**निहल**—पु० (कु०) निम्न क्षेत्र, मैदानी क्षेत्र।
**निहाइणा**—अ० क्रि० (कु०) नहाना, रजस्वला होना।
**निहाण**—पु० (शि०) चिह्न।
**निहाण**—स्त्री० लकड़ी में छिद्र करने का लोहे का चपटा औज़ार।
**निहाणा**—स० क्रि० (कु०) नहलाना।
**निहाणी**—स्त्री० एक वृक्ष जिसकी जड़ सुगंधित द्रव्य का काम देती है।
**निहारकापक्ख**—पु० कृष्ण पक्ष।
**निहारख/खु**—वि० (कु०) अंधेरा।
**निहारचु**—वि० (कु०) अंधेरे में चलने वाला।
**निहारणा**—पु० घराट के पाट के नीचे का हिस्सा।
**निहारना**—स० क्रि० (ह०) प्रतीक्षा करना।
**निहारा**—पु० (कु०) अंधेरा।
**निहारिना**—अ० क्रि० (कु०) अंधेरा होना।
**निहार्च**—पु० (कु०) अंधेरा।
**निहालणा**—स० क्रि० प्रतीक्षा करना।
**निहाळप**—स्त्री० प्रतीक्षा, इंतज़ार।
**निहालभाल**—पु० (कु०) देखभाल, संतोष।
**निहालिणा**—अ० क्रि० (कु०) प्रतीक्षा की जानी।
**निहाली**—स्त्री० लुहार की औज़ार बनाने की भट्ठी।
**निहासा**—पु० (कु०) शाप, बद्दुआ।
**निहासा**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) गाली।
**निहिट्ठा**—वि० (चं०) नीचा।
**निहुठा**—वि० (सि०) शुद्ध।
**निहुठे**—अ० (शि०) नीचे।
**निहठला**—वि० नीचे वाला।
**निहरी**—अ० (कां०) बिल्कुल।
**निहशु**—पु० (सि०) गाय या भैंस के ब्याने पर दूध आदि देवता को चढ़ाने के पश्चात् ग्रहण करने की क्रिया।
**नीं**—स्त्री० (कां०, ह०) नींव।
**नीं**—अ० नहीं।
**नींउआ**—वि० विनम्र, नीचा।
**नींउंदो**—पु० (शि०) निमंत्रण।
**नींऊं**—स्त्री० नींव।
**नींज**—स्त्री० (कां०, बि०, ऊ०) एकटक देखने का भाव।
**नींज**—स्त्री० नींद।
**नींजा**—वि० (सि०, सो०) उनींदा, जिसे अच्छी नींद न आई हो
**नींद**—स्त्री० नींद।
**नींदर**—स्त्री० नींद।
**नींदरा**—वि० दे० नींजा।
**नींवा**—वि० (सि०) नीचा, नीचे का स्थान।
**नींह**—स्त्री० (कु०) ऋतु।
**नींहचै**—अ० (कु०) आराम से, निश्चय से।
**नींहणा**—स० क्रि० (सि०) ले जाना।
**नी.चो**—अ० (शि०) आराम से।
**नी**—सर्व० (कु०, मं०) हम।
**नीअड़**—वि० (मं०) नीचा स्थान।
**नीऊ**—स्त्री० (बि०) नींव।
**नीऊड़े**—पु० (कु०) नीचे का क्षेत्र, पहाड़ों के समानान्तर मैदानी इलाका।
**नीको**—वि० (शि०) अच्छा, भला, सुंदर, नेक।
**नीखना**—वि० (सि०) बेकार।
**नीघ**—पु० (मं०) उष्णता।
**नीच**—वि० दुष्ट, धूर्त।
**नीचा**—वि० (शि०) छोटा, ओछा। ढलानदार भूमि।
**नीचाई**—स्त्री० (शि०) उतराई।
**नीज**—स्त्री० (शि०, सि०) नींद।
**नीजा**—वि० (सो०) आपसी, पारस्परिक।
**नीठा**—वि० (सो०) झुका हुआ, नम्र।
**नीठी**—वि० (शि०) शुद्ध, जो जूठा न हो।
**नीठो**—वि० (शि०) दबा हुआ।
**नीडणा**—स० क्रि० (मं०) निराई करना।
**नीड़ा**—वि० दुबला-पतला।
**नीड़े**—अ० (सि०, सो०) नज़दीक।
**नीण**—स्त्री० दूध दुहते समय गाय की टांग में बांधी जाने वाली रस्सी।
**नीणा/णो**—स० क्रि० ले जाना।
**नीत**—स्त्री० नीति।
**नीत**—स्त्री० नीयत, भावना।
**नीदु**—अ० (कु०) सदैव।
**नीनी**—स्त्री० (मं०) गर्मी में उत्पन्न और चीड़ वृक्षों में रहने वाली बड़ी मक्खी।
**नीबू**—पु० नीबू।
**नीम**—पु० एक वृक्ष विशेष।
**नीम**—स्त्री० (शि०, सि०) देवता के समक्ष ली गई शपथ।
**नीमळो**—वि० (शि०) निर्मल।
**नीमा**—पु० (शि०) अनीमा।
**नीमू**—पु० (सि०) दे० नीबू।

**नीमूगोंमरू**—पु० (कु०) गलगल की एक किस्म।
**नीमूशाग**—पु० (कु०) जंगली पालक।
**नीर**—पु० पानी।
**नीरखीर**—वि० (सि०) अनुरूप, सदृश।
**नीरतणा**—स० क्रि० (सि०) परखना।
**नीरना**—अ० क्रि० (सि०, सो०) गाय-भैंस के थनों में दूध उतरना।
**नीरने**—अ० उपवास में, खाली पेट।
**नीरबदोण**—स्त्री० (कां०) जलवंदना।
**नीरषू**—पु० (मं०) दे० निरस।
**नीरा**—वि० (सो०) बिल्कुल, निपट।
**नीरा**—वि० अपरिपक्व, अविकसित।
**नीरा**—पु० (कु०) न्याय, सुव्यवस्था।
**नीरू-खीर**—अ० (कु०) जैसा-कैसा।
**नीरूधा**—पु० (कां०) कोमल घास।
**नीरू**—पु० (कु०) एक पौधा जो दवाई के काम आता है।
**नीरोगी**—वि० स्वस्थ।
**नीरौ**—अ० (कु०) सदा।
**नील**—पु० चोट से पड़ा नीला निशान।
**नीलकंठ**—पु० एक पक्षी विशेष।
**नीलकंठा**—पु० (शि०) नीले रंग की माला।
**नीलकंठी**—स्त्री० वात शमन हेतु चौड़े पत्ते वाली बूटी।
**नीलकांटा**—पु० एक पौधा विशेष जो मेहंदी के पौधे जैसा होता है तथा आंगन में उसकी बाड़ सुंदरता बढ़ाने के लिए लगाई जाती है।
**नीलढाणा**—स० क्रि० सरासर झूठ कहना।
**नीलम**—स्त्री० (शि०) नीलापन।
**नीलाकंवल**—पु० नीलकमल।
**नीलाशाहला**—वि० (कु०) (ज़ख्म) जिसका रंग नीला पड़ गया हो।
**नीलो**—वि० (शि०) नीला।
**नीवां**—वि० (कि०) झुका हुआ।
**नीश**—पु० (मं०) बिगड़ा हुआ ज़ख्म।
**नीहड़े-बीहड़े**—अ० (सि०) करीब, निकट।
**नीहगणा**—अ० क्रि० (मं०) असामयिक गर्भपात होना।
**नीहडूणा**—स० क्रि० (कु०) दूसरे को ढासना बनाना।
**नुंआंणा**—स० क्रि० (चं०) समाप्त करना।
**नुंगणा**—वि० (कु०) नाक से बोलने वाला।
**नुःचटे/रे**—पु० (सि०) वस्त्र।
**नुअण**—पु० (कां०) पन्ने।
**नुआं**—वि० (कु०) नया, नूतन, नव।
**नुआंज़णा**—स० क्रि० (कु०) अलग करना।
**नुआंज़िणा**—स० क्रि० (कु०) अलग किया जाना।
**नुआंण**—पु० (सि०) तरकीब। मापतोल।
**नुआइणा**—स० क्रि० (कु०) झुकाया जाना।
**नुआजणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) अलग करना।
**नुआड़**—पु० (कां०) जाल की बुनाई का ताना।
**नुआड़**—पु० शुभारंभ।
**नुआड़ना**—स० क्रि० (कां०, चं०) आरम्भ करना।
**नुआढ**—पु० (कु०) हानि, खराबी।
**नुआणा**—स० क्रि० (कु०) झुकाना, टहनी आदि को खींचकर नीचे लाना।
**नुआन**—पु० (कां०) नया अन्न।
**नुआर**—स्त्री० निवार।
**नुआरणा**—स० क्रि० (सि०) मन की आशा पूरी करना।
**नुआरना**—स० क्रि० कष्ट का निवारण करना।
**नुआला**—पु० बढ़िया भोजन।
**नुआळा**—पु० (चं०) शिवपूजा की विशेष विधि जिसमें नौ व्यक्तियों का संयोग रहता है।
**नुआळा**—वि० (कु०) ऊनी (वस्त्र)।
**नुआस**—स्त्री० (कु०) देवताओं का नमन, एक देवता के गुर द्वारा उसकी ओर से दूसरे देवता को दूर से किया गया नमन।
**नुकणा**—वि० (शि०) नाक के सुर से बात करने वाला।
**नुकता**—पु० (सो०) नमूना। चिह्न।
**नुकराणे**—स्त्री० (शि०) नौकरानी।
**नुकरी**—स्त्री० (सि०) नौकरी, सेवा।
**नुकरे**—स्त्री० (शि०) नौकरी।
**नुकल**—पु० (बि०) मामूली सा भोजन।
**नुकसाण**—पु० (शि०) हानि।
**नुक्कड़**—पु० मोड़।
**नुक्स**—पु० कमी, दोष।
**नुक्सा**—पु० उपाय।
**नुखड़ना**—अ० क्रि० गिरना।
**नुखस**—पु० (कु०) कमी।
**नुखसान**—पु० हानि, नुकसान।
**नुगताचीनी**—स्त्री० आलोचना।
**नुगस**—पु० (चं०) कमी।
**नुगसान**—पु० (चं०) क्षति, हानि, नुकसान।
**नुचड़ना**—अ० क्रि० निचुड़ना।
**नुचणा**—स० क्रि० (शि०) खुरचना।
**नुचवाना**—स० क्रि० (शि०) खुरचने के लिए किसी दूसरे को लगाना।
**नुति**—स्त्री० (शि०) स्तुति, वंदना, पूजा।
**नुत्वाळी**—वि० (बि०) उनतालीस।
**नुनणु**—पु० (कु०) खूबानी की गुठली को दोनों ओर से घिसकर, खोखला बनाकर और फिर एक तरफ मकड़ी का पुड़ा मढ़कर बनाया गया मुंह से बजाने का बाजा।
**नुमांसी**—वि० (चं०) नौ मास का।
**नुवो**—वि० (शि०) नया।
**नुश**—स्त्री० (सि०) खुजली।
**नुसवारी**—वि० भूरे रंग का।
**नुसादर**—पु० नौसादर, एक प्रकार का क्षार, जो प्रायः जानवरों के मलमूत्र से तैयार किया जाता है।
**नुस्का**—पु० (सो०) नुसखा।
**नुह**—स्त्री० वधु।
**नुहाणा**—स० क्रि० नहलाना।
**नुहार**—स्त्री० आकृति, शक्ल।

**नुहारघाट**—पु० (कु०) शक्ल-सूरत।
**नुहारी**—स्त्री० नाश्ता, कलेवा।
**नूंजा**—वि० उनचास।
**नूंह**—स्त्री० बहू।
**नूटरना**—अ० क्रि० (कु०) बूंद-बूंद नीचे गिरना।
**नूण**—पु० नमक।
**नूणका**—वि० नमकीन।
**नूणावटो**—वि० (सि०) दे० नूणका।
**नूनाई**—स्त्री० (शि०) एक विशेष घास की जड़ जो औषधि के काम आती है।
**नूनू**—अ० (कु०) बच्चों के लिए प्रयुक्त शब्द।
**नूनू**—पु० (कु०) स्पिति का मुखिया जो किसी समय शासक होता था और अंग्रेजों ने जिसे अवैतनिक ज़िलाधीश का अधिकार दिया था।
**नूश**—स्त्री० (मं०) बहू।
**नृठ**—अ० (कु०) लापता।
**नृठिणा**—अ० क्रि० (कु०) लापता होना।
**नेंईओ**—अ० (कु०) ''नहीं ऐसा नहीं'' भाव व्यक्त करता हुआ अव्यय शब्द।
**नेंची**—स्त्री० (मं०) 'गलैंई' का पिछला हिस्सा जो दीवार से फंसा होता है।
**नेंती**—स्त्री० (कु०) कानों का आभूषण विशेष।
**नेंबर**—पु० (कु०) अंक, नम्बर।
**ने:**—अ० (सो०) संबोधन।
**ने:रनी**—स्त्री० आंखों के आगे अंधेरा छाने का भाव।
**ने:रा**—वि० अंधेरा।
**ने:री**—स्त्री० तूफान, आंधी।
**ने:रो**—वि० (शि०, सि०) अंधेरा।
**नेइणा**—स० क्रि० (कु०) ले जाया जाना।
**नेईं**—अ० नहीं।
**नेउआ**—पु० (सो०) असंतुष्ट मृत व्यक्ति की आत्मा जिसे देवता के रूप में पूजा जाता है।
**नेउज़**—पु० देवता के लिए निर्धारित अन्न।
**नेउजा**—पु० चिलगोज़ा।
**नेउड़ा**—पु० सब्जी, दाल।
**नेउड़ा**—पु० (कु०) पकाए हुए मांस की तरी।
**नेउरी**—स्त्री० (कु०) पैर का आभूषण।
**नेउला**—पु० नेवला।
**नेउलीमुशी**—स्त्री० (कु०) छोटा नेवला।
**नेऊळ/ळो**—पु० (शि०, सि०) गर्म इलाका।
**नेओं**—पु० (सि०) न्याय, इंसाफ।
**नेक**—वि० अनेक, भला।
**नेक नामि**—स्त्री० (सो०) प्रसिद्धि।
**नेकी**—स्त्री० अच्छाई, भलाई।
**नेग**—पु० (मं०) हल के जुए की रस्सियां।
**नेग**—पु० (शि०) पुरस्कार।
**नेगी**—पु० (कु०) कोठी का मुखिया, अंग्रेजों के समय में यह कोठी की शांति और व्यवस्था के लिए उत्तरदायी होता था।
**नेगी**—वि० (शि०) पुरस्कृत।
**नेगी**—पु० (ह०) प्रधान, मुखिया।
**नेची**—स्त्री० मधनी में प्रयुक्त होने वाली रस्सी।
**नेज**—पु० भोजन करने से पहले भोजन का अलग रखा एक कौर जिसे गाय को दिया जाता है। मृत व्यक्ति के निमित्त किसी व्यक्ति को प्रथम वर्ष में खिलाया जाने वाला भोजन। करवा-चौथ आदि व्रतों पर पत्नी द्वारा पति को दिया जाने वाला उपहार विशेष।
**नेजू**—पु० (कु०) पुल पर लगने वाला शहतीर।
**नेड़**—अ० (कु०) निकट, नज़दीक।
**नेड़**—स्त्री० निकटता।
**नेड़पड़ेसी**—वि० सगे-संबंधी, पड़ोसी।
**नेड़पड़ेछी**—वि० दे० नेड़पड़ेसी।
**नेड़ा**—पु० (सो०) निकटता, अवधि या सीमा की निकटता।
**नेड़ा**—वि० संकुचित, संकीर्ण।
**नेड़ा**—पु० (कु०) नुकसान, हानि।
**नेड़ाउणा**—अ० क्रि० (शि०) अपने आगे निकले राही को तेज़ चल कर पकड़ना।
**नेड़िना**—अ० क्रि० (कु०) नज़दीक होना।
**नेड़े**—अ० (कां०, बि०) नज़दीक, निकट।
**नेड़ो**—अ० (शि०) निकट।
**नेणा**—स० क्रि० ले जाना।
**नेत**—पु० (सो०) बिस्तर की गर्मी।
**नेतर**—पु० (सि०, ह०) हल को जुए से बांधने वाली रस्सी; दही बिलोते समय मथनी घुमाने के लिए प्रयुक्त रस्सी।
**नेता**—पु० नायक, अगुआ।
**नेता/तो**—वि० (शि०, सि०, सो०) गर्म (वस्त्र का विशेषण)।
**नेती**—स्त्री० धागे द्वारा की जाने वाली योग क्रिया।
**नेतुणा**—स० क्रि० (सो०) बिस्तर में पैर आदि को गर्म करना।
**नेत्तर**—पु० (कां०) नेत्र, आंख।
**नेत्रु**—पु० दे० नेतर।
**नेफा**—पु० (कु०, सो०) पाजामे का ऊपरी भाग, जिसमें से इजारबंद पिरोया जाता है।
**नेमी**—वि० (शि०) नियम का पालन करने वाला।
**नेरण**—स्त्री० (सि०) रतौंधी।
**नेरा**—वि० नुकसान।
**नेराउणा**—स० क्रि० (शि०) उत्तेजित हुए मनुष्य को शांत करना।
**नेरे**—वि० (शि०) दे० नेड़े।
**नेल**—पु० (चं०) नील।
**नेलका**—पु० (कु०, शि०) नलका।
**नेळणो**—स० क्रि० (शि०) निराई करना।
**नेळना**—स० क्रि० (सो०) इंतज़ार करना।
**नेल्ह**—स्त्री० तलहट्टी, नीचे की ओर।
**नेवता**—पु० (शि०) निमंत्रण।
**नेवि**—स्त्री० (सो०) मृत स्त्री की असंतुष्ट आत्मा जिसे ग्राम देवी के रूप में पूजा जाता है।
**नेशणा/णो**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) देखना,

कुशल पूछना।
**नेसती**—वि० आलसी।
**नेह**—पु० स्नेह।
**नेहपालस**—स्त्री० (बि०, मं०) नाखूनों पर लगाया जाने वाला रंग।
**नेहरखापख**—पु० कृष्णपक्ष।
**नेहाइणो**—अ० क्रि० (शि०) नहाना।
**नेहारो**—वि० (शि०) अंधेरा।
**नेहुणा**—अ० क्रि० (मं०, सि०) नहाना।
**नेहरो**—पु० (शि०) चेतावनी।
**नैंज़**—पु० (शि०) दिमाग में चक्कर सा रहने का रोग, दुर्बलता।
**नैंह**—पु० नाखून।
**नैकली**—वि० (कु०) नकली।
**नैकशा**—पु० (कु०) नक्शा, मानचित्र।
**नैजर**—स्त्री० (कु०) नज़र।
**नैण**—पु० नयन।
**नैणा/णो**—पु० (शि०) कहावत, उदाहरण।
**नैत**—पु० (शि०) सेंक।
**नैदरी**—अ० (कु०) सामने।
**नैदी**—स्त्री० (कु०) नली।
**नैया**—स्त्री० (शि०) नाव।
**नैर**—पु० (शि०) रोकने का भाव।
**नैरणा**—स० क्रि० (शि०) चेतावनी देना।
**नैल्हका**—पु० (कु०) थप्पड़, मुक्का।
**नैवणा**—अ० क्रि० (मं०) नहाना।
**नैवती**—वि० (शि०) लाड़ला, मानता करके प्राप्त किया हुआ।
**नैशा**—पु० (कु०) नशा।
**नैशाफ**—पु० (शि०) इंसाफ, न्याय।
**नैसूर**—पु० नासूर, कैंसर।
**नैहण**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) बांस की दो भाग की हुई लकड़ी।
**नैहब**—पु० (मं०) पाप, असत्य।
**नैहर**—स्त्री० नेहर।
**नैहरना**—स० क्रि० घराट को दबाव देना ताकि आटा बारीक पीसा जाए।
**नैहरी**—वि० सिंचाई योग्य।
**नैहरूआ**—पु० (मं०) घनघोर घटा।
**नैहुणा**—अ० क्रि० (मं०) स्नान करना।
**नों**—पु० नाम।
**नोःकणा**—स० क्रि० ठूंसना।
**नोःरा**—पु० (सो०) पशुओं द्वारा दूसरों के घास या फसल को चरने की क्रिया, नुकसान।
**नोःलदू**—पु० (सि०) गाय-भैंस आदि का लेवा।
**नोआं**—वि० नया।
**नोआं-नोखा**—वि० विचित्र।
**नोईतण**—वि० (सि०) यौवन।
**नोईया**—वि० (शि०, सि०) नौजवान।
**नोउणी**—स्त्री० (कु०) देवी विशेष जो घी, दूध की देवी मानी जाती है।
**नोक**—स्त्री० नुकीला सिरा।
**नोकझोंक**—स्त्री० वाद-विवाद।
**नोकटा**—वि० (सि०) नकटा।
**नोकदार**—वि० नुकीला।
**नोकर**—पु० नौकर।
**नोकरि/रे**—स्त्री० नौकरी।
**नोखा**—वि० अनोखा।
**नोखिए**—वि० (शि०) अनोखा, पहली बार।
**नोगिंदे**—पु० (सि०) रजाई में लगे टांके।
**नोचू**—वि० (शि०) नोचने वाला।
**नोजुवान**—वि० नौजवान।
**नोट**—पु० रुपए का नोट; छोटा पत्र या लिखा हुआ परचा।
**नोटिस**—पु० सूचना।
**नोटी/टे**—स्त्री० (कु०, शि०) जोड़ी।
**नोड़े**—स्त्री० (सि०) तंबाकू पीने की नली।
**नोण**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) तालाब।
**नोणद**—स्त्री० (सि०) ननद।
**नोतणो**—स० क्रि० (शि०) परोसना, बच्चों को खिलाना-पिलाना।
**नोथणा**—स० क्रि० (मं०) मापना।
**नोदर**—स्त्री० (सि०) नज़र, दृष्टि।
**नोधी**—स्त्री० ताज़ी ब्याही भैंस के दूध से बना पनीर की तरह का एक पदार्थ।
**नोबत**—स्त्री० दशा, स्थिति।
**नोबनो**—स्त्री० (कां०) सज़ा, दंड।
**नोबनो**—पु० (कां०) सवेरा, उषाकाल।
**नोमकीन**—वि० (सि०) नमकीन।
**नोमी**—स्त्री० पक्ष की नवीं तिथि।
**नोमें**—स्त्री० (सि०) दे० नोमी।
**नोमे**—स्त्री० (शि०, सि०) नमी।
**नोयर**—स्त्री० (सि०) नहर।
**नोया**—वि० (सि०) नया।
**नोर**—पु० (सि०) बिलाव प्रजाति के जानवरों के पैर के नाखून।
**नोरजा**—पु० (सि०) वज़न करने का पहाड़ी पैमाना।
**नोरोम**—वि० (शि०, सि०) नर्म।
**नोळ**—पु० नेवला।
**नोळटू**—पु० (कु०) अंजलि, कर संपुट।
**नोळा**—पु० (कु०) दे० नोळटू।
**नोळी**—स्त्री० (कां०) किसी वस्तु की प्राप्ति हेतु किया गया प्रयत्न।
**नोले**—पु० (शि०, सि०) घुटने के नीचे तथा पैर से ऊपर की हड्डी।
**नोश**—पु० (शि०, सि०) नाखून।
**नोशकड़ा**—पु० (सि०) केकड़ा।
**नोशतर**—पु० (सि०) पशु, पक्षी का नाखून।
**नोशा**—पु० (सि०) नशा।
**नोशागणे**—पु० (सि०) पशुओं के नाखून।
**नोसीब**—पु० (सि०) भाग्य।
**नौं**—पु० नाम।

**नौंण**—पु० व्यवस्थित जलाशय।
**नौंदरा**—स्त्री० बड़े नाखून।
**नौ**—वि० नौ।
**नौ**—पु० नाम।
**नौ**—स्त्री० (सि०) नदी।
**नौआ**—वि० (कु०) नवम्।
**नौआ-सौआं**—वि० नया नवेला।
**नौइले**—स्त्री० (सि०) नवविवाहिता।
**नौईं**—वि० दूसरे विवाह की (पत्नी)।
**नौई**—स्त्री० (कु०) नदी।
**नौउढ़ना**—अ० क्रि० (कु०) घट जाना।
**नौउल**—स्त्री० (शि०) दे० नौइले।
**नौउली**—स्त्री० (कु०) नई फसल का अन्न।
**नौउलू**—पु० (चं०) नेवला।
**नौउले**—स्त्री० (शि०) कोई नया काम करने का भाव।
**नौकटा**—वि० (कु०, शि०) छोटी या कटी नाक वाला।
**नौकसा**—पु० नक्शा।
**नौकोल**—स्त्री० (शि०, सि०) नकल।
**नौक्खा**—वि० अनोखा।
**नौख**—स्त्री० आश्चर्य, अनोखापन।
**नौखरा**—पु० (कु०, शि०, सि०) नखरा।
**नौग**—पु० (शि०) नग।
**नौगदी**—स्त्री० (शि०, सि०) नकद।
**नौगरी**—पु० (शि०, सि०) नगर।
**नौचणा**—अ० क्रि० (कु०) नाचना।
**नौज़र**—स्त्री० (कु०) नज़र, दृष्टि।
**नौज़ला**—पु० (सि०) नज़ला।
**नौज़ारा**—पु० (शि०, सि०) नज़ारा।
**नौजोर**—स्त्री० (शि०, सि०) नज़र।
**नौट**—स्त्री० (शि०, सि०) नदी।
**नौटो**—पु० (शि०) नदी का तट।
**नौठणा**—अ० क्रि० (शि०) भागना।
**नौड़**—पु० (कु०) एक जाति विशेष।
**नौणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) झुकना।
**नौणी**—स्त्री० मक्खन।
**नौणे**—स्त्री० (सि०) दे० नौणी।
**नौतीजा**—पु० परिणाम।
**नौतोड़**—पु० नया खेत, नई भूमि को फसल योग्य बनाने की क्रिया।
**नौथू**—वि० (कु०) जकड़ा हुआ।
**नौदर**—पु० (ऊ०, कां०) बड़ा हल।
**नौदी**—स्त्री० (कु०) हुक्के की नली।
**नौदे**—स्त्री० (सि०) नदी।
**नौपणा/णो**—अ० क्रि० (कु०, शि०, सि०) झुकना।
**नौपत**—पु० (मं०) नौबत।
**नौपरनौ**—अ० (मं०) निरंतर।
**नौफा**—पु० (कु०, सि०) लाभ।
**नौमी**—स्त्री० नवमी।
**नौरंगी**—स्त्री० (शि०) नारंगी।
**नौरम**—वि० नर्म।
**नौरात्रा**—पु० नवरात्रा।
**नौळ**—वि० मूर्ख।
**नौलके**—स्त्री० (शि०) नलकी।
**नौलठा**—पु० (शि०) हाथ-पांव।
**नौलसर**—पु० (कु०) कलाई का अग्रभाग।
**नौलसर**—पु० (सि०) पानी के किनारे की दलदली भूमि।
**नौली**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) नववधू।
**नौळी**—स्त्री० (शि०) शक्ति, सामर्थ्य।
**नौलीछाबी**—स्त्री० (कु०) ढोलकी की तरह का ऊन रखने का पात्र।
**नौलु**—पु० (ऊ०, कां०) नया वर।
**नौल्हणा**—स० क्रि० (कु०) पीटना, हाथ से मारना।
**नौश**—पु० (कु०, शि०, सि०) नाखून।
**नौशणा**—अ० क्रि० (कु०) जाना।
**नौशा**—पु० नशा।
**नौसलाई**—स्त्री० **बहानेबाज़ी**।
**नौसरा**—पु० (मं०) बसंत।
**नौसिखिया**—वि० जो किसी विद्या या कला में पक्का न हुआ हो।
**नौह**—पु० नाखून।
**नौहड़ना**—अ० क्रि० (मं०) पास पहुंचना।
**नौहणा**—अ० क्रि० (कु०) जाना।
**नौहणी**—स्त्री० (मं०) देवता का रथ उठाने के लिए प्रयुक्त लंबी छड़।
**नौहथा**—वि० (कां०, ह०) आलसी।
**नौहींग**—स्त्री० (कु०, मं०) नदी।
**नौह्ण**—पु० (बि०) पानी गर्म करने का पात्र।
**नौह्णा**—अ० क्रि० स्नान करना।
**नौह्ले**—स्त्री० (बि०) एक त्यौहार जो सर्दी की समाप्ति व गर्मी के प्रारंभ में होता है।
**न्या:रुना**—अ० क्रि० (सो०) क्रोधित अवस्था हो जाना।
**न्या:ळख**—स्त्री० **प्रतीक्षा**।
**न्याखणा**—स० क्रि० टोकना, डांटना।
**न्याछ**—पु० (मं०) खड्ड के किनारे का श्मशान।
**न्याछ**—पु० (कु०) नदी का किनारा।
**न्याणा**—पु० छोटा बच्चा।
**न्याणी**—स्त्री० (मं०) एक लोकगीत।
**न्याणी**—स्त्री० (ऊ०, कां, ह०) छोटी लड़की।
**न्यातो**—वि० (शि०) गर्म।
**न्यामत**—स्त्री० विशेष उपहार।
**न्यार**—स्त्री० (सो०) शक्ल, आकृति।
**न्यार**—पु० (मं०) सुगंधित पत्तियों वाला वन्य वृक्ष जिसके पत्ते धूप के रूप में जलाए जाते हैं।
**न्यारख**—पु० कृष्ण पक्ष।
**न्यारणो**—स० क्रि० (शि०) **समझाना, रोकना**।
**न्यारा**—वि० भिन्न।
**न्याळना**—स० क्रि० दे० नयालणा।
**न्याव**—पु० (सो०) न्याय।

न्याहड़ू—पु० (कां०, बि०) अविकसित फल।
न्याहरूआ—पु० (मं०) बाल सा पतला जल जीव जिसके पिए जानेपर आंते कट जाती हैं।
न्याहलणा—स० क्रि० इन्तज़ार करना।
न्युंदर—पु० निमंत्रण।
न्युड़—स्त्री० (कां०) भूमि में दबाई हुई मोटी लकड़ी।
न्यूं—स्त्री० बुनियाद।
न्यूंदा—पु० निमंत्रण।
न्योज़ा -पु० एक मेवा।
न्योड़ा—पु० पकी हुई सब्जी या दाल।
न्योतणा—स० क्रि० (शि०) निमंत्रित करना।
न्योता—पु० निमंत्रण।
न्योछ—पु० फटे पुराने कपड़ों से बनाया गिलाफ।
न्रसी—पु० (सि०) बसंत ऋतु जब शरीर में नया खून और पेड़ में नया रस पैदा होता है।
न्वारी—स्त्री० (कु०) ऊन, सूत में लगने वाला कीड़ा।
न्हठणा— अ० क्रि० (ह०) दौड़ना, भागना।
न्हठे—पु० (चं०) श्राद्ध का अंतिम दिन।
न्हदी—स्त्री० (मं०) नली।
न्हरलू—पु० (मं०) रोटी तथा अन्य वस्तुएं रखने के लिए बनी बांस की पिटारी।
न्हवशो—पु० (मं०) बरसात में पांव की अंगुलियों के बीच होने वाली खारिश।
न्हवाथीऊन—स्त्री० (मं०) मेमनों की नर्म ऊन।
न्हसणा—अ० क्रि० भाग जाना।
न्हसरालू—पु० छत के ऊपर डाला जाने वाला लंबा शहतीर।
न्हाओणघर—पु० (मं०) स्नानगृह।
न्हाठोन्हाठी—स्त्री० भाग-दौड़।
न्हाणा—अ० क्रि० (शि०) स्नान करना।
न्हास्सो—पु० (सि०) नथुना।
न्हीउंदों—अ० (शि०) नीचे।
न्हीउता—वि० (सि०) निम्न।
न्हीठा—वि० नीचा।
न्हीठीन्यूई—वि० सभ्य (स्त्री) शालीन।
न्हीमताई—स्त्री० नम्रता।
न्हूश—स्त्री० (कु०) बहू।
न्हेर—पु० अंधेर।
न्हेरका—पु० धुंधलापन।
न्हेरनू—पु० (कां०, बि०) नाखून काटने का विशेष औज़ार।
न्हेरा—पु० अंधेरा।
न्हेरी—स्त्री० आंधी।
न्हेरुआं—पु० (कां०, बि०) सूर्यास्त के बाद न दिखाई देने का रोग।
न्हेरुना—अ० क्रि० आंखों द्वारा क्रोध प्रकट करना।
न्हैरा—पु० (मं०) बादलमय आकाश।
न्होकोर—पु० नाखून के अन्दर घुसी बारीक लकड़ी या कंकर।

## प

प—देवनागरी वर्णमाला में पवर्ग का पहला वर्ण। उच्चारण स्थान ओष्ठ।
पंकाळा—पु० (का०) बड़ा छेद।
पंखड़ी—स्त्री० पंखुड़ी, फूल की पत्ती।
पंखिया—पु० (सि०) छोटा पंखा।
पंखेरू—पु० पक्षी, चिड़िया।
पंग—पु० बाढ़ द्वारा लाया घास जो बाढ़ के उतर जाने पर किनारे लगा रहता है। गंदला, उपजाऊ पानी।
पंग—पु० झमेला। व्याधि।
पंगत—स्त्री० पंक्ति।
पंगत—स्त्री० सभा। पहाड़ की चोटी। पेड़ की मोटी कटी हुई टहनी का नोकदार हिस्सा।
पंगयार—पु० (चं०) Csateagus oxyacantha.
पंगा—पु० दूर-दराज़ के खेत जो प्रायः पहाड़ी पर होते हैं। छोटी पहाड़ी।
पंगा—वि० ऐसा व्यक्ति जो काम में विघ्न डाले, अड़ियल।
पंगा—पु० टहना।
पंगा—पु० बेकार का झगड़ा।
पंगा—पु० कांटे, तार आदि में फंसने से कपड़े में लगी चीर।
पंघरासणा—अ० क्रि० नई कोंपले निकलना।
पंघूड़ा—पु० झूला।
पंच—पु० निर्णायक, पंचायत का सदस्य।
पंचकोण—पु० (शि०) पांच कोने वाला क्षेत्र।
पंचगव्य—पु० गाय के दूध, घी, दही, गोबर व मूत्र को मिलाकर तैयार किया जाने वाला पदार्थ।
पंचतत्व—पु० (शि०) पृथ्वी, जल आदि पंचभूत।
पंचतपा—वि० (शि०) धूप में तप करने वाला।
पंचदान—पु० मृत्यु शय्या पर पड़े व्यक्ति द्वारा किया जाने वाला दान।
पंचमूल—पु० दे० पंचतत्व।
पंचमीखम—पु० एक देव, एक त्यौहार विशेष।
पंचमी—स्त्री० पांचवी तिथि।
पंचर—पु० (कु०) खेत का एक छोटा भाग।
पंचर—पु० पंक्चर, ट्यूब, ब्लैडर आदि में किसी नुकीली चीज़ के चुभने या कटने से होने वाला छेद।
पंचलूंगी—स्त्री० (शि०) गले में पहनने की पांच लड़ियों की माला।
पंचांग—पु० (शि०) किसी वृक्ष की छाल, पत्ता, फूल, फल और जड़।
पंचा—पु० (सो०) ज़हमत, झगड़ा।
पंचाइत—स्त्री० पंचायत।
पंची—स्त्री० पंचों की निर्णयात्मक क्रिया।
पंचीदार—वि० निर्णायक।
पंछुणो—अ० क्रि० (शि०) पहुंचना।
पंछ—पु० (कु०) पक्ष।
पंछी—पु० पक्षी।

**पंज**—वि० पांच।
**पंजक**—पु० पंचक, धनिष्ठा से रेवती तक के पांच नक्षत्र।
**पंजकल्याणी**—स्त्री० भैंस की एक जाति।
**पंजकुल्हेणी**—वि० कर्कश, लड़ाकी।
**पंजगटड़े**—पु० (सो०) पांच गिट्टियों का खेल विशेष।
**पंजगीटड़े**—पु० पांच गिट्टियों का खेल विशेष।
**पंजझाड़ना**—स० क्रि० एक तांत्रिक क्रिया द्वारा दोष दूर करना।
**पंजताळी**—वि० पैंतालीस।
**पंजपा**—वि० आधा सेर।
**पंजपात्तर**—पु० (सो०) पूजा के पांच पात्र।
**पंजफूल्ली**—स्त्री० एक जंगली फूल।
**पंजबीसी**—वि० (शि०) पांच बीस अर्थात् एक सौ।
**पंजभिखमीकादशी**—स्त्री० पंच भीष्मी एकादशी, जब पांच दिन जल में दीपक बहाये जाते हैं।
**पंजभिखमीपुण्या**—स्त्री० पंच भीष्मी पूर्णिमा।
**पंजर**—पु० (शि०) शरीर की हड्डियों का समूह, अस्थिपिंजर।
**पंजराक्कड़**—वि० (सो०) पीला खीरा।
**पंजराळा**—पु० ऐसा जुआ जिसमें 'जोतर' की जगह लकड़ी लगी हो।
**पंजल**—पु० शिवालिक पहाड़ियों से घिरा क्षेत्र।
**पंजहत्तर**—वि० पचहत्तर।
**पंजा**—पु० पांच अंगुलियों का समूह, हाथ की पकड़, जाल, बंधन।
**पंजाई**—स्त्री० पींजने की क्रिया; पींजने का पारिश्रमिक।
**पंजाप**—पु० बच्चे के जन्म के बाद शुद्धिकरण की क्रिया।
**पंजारा**—वि० (शि०) रुई या ऊन धुनने वाला।
**पंजाली**—स्त्री० हल का जुआ।
**पंजाह**—वि० पचास।
**पंजाहेरा**—पु० (कां०) हाथ में पहनने का आभूषण।
**पंजाहोणा**—स० क्रि० (सि०) बच्चे को शौच आदि होने पर साफ करना।
**पंजी**—वि० पच्चीस।
**पंजी**—स्त्री० एक त्यौहार विशेष।
**पंजी**—स्त्री० पांच पैसे का सिक्का।
**पंजीरी**—स्त्री० (सो०) प्याज़ की पौध।
**पंजीरी**—स्त्री० (सो०) अजवाइन, सोंठ, चीनी तथा मेवे से बना प्रसाद जिसे जन्माष्टमी के दिन बनाया जाता है। प्रसूता स्त्री के लिए बनाया गया पौष्टिक आहार।
**पंजेब**—स्त्री० पायल, पांव का चांदी का आभूषण।
**पंजेरना**—स० क्रि० पूजा करवाना।
**पंजेसी**—वि० (मं०) पचासी।
**पंजो:णा**—स० क्रि० तौलिये से तन का पानी साफ करना।
**पंजो**—पु० (चं०) पंजा।
**पंजोण**—स्त्री० पींजने का पारिश्रमिक।
**पंजोतरा**—पु० फसल का पांचवां हिस्सा जो देवता को दिया जाता है।
**पंजोथ**—अ० आज से पहले या बाद का पांचवां दिन।
**पंजोरा**—पु० (सि०) वार्तालाप, चर्चा।
**पंझोणा**—स० क्रि० अपने आप को पोंछना।
**पंड**—स्त्री० गठड़ी।
**पंडत**—पु० पंडित।
**पंडतेड़**—स्त्री० पंडितों की बस्ती।
**पंडतैण**—स्त्री० पंडितानी।
**पंडत्याणी**—स्त्री० पंडितानी।
**पंडयाण**—स्त्री० (चं०) Ehretia serrata.
**पंडवा**—पु० (शि०) पिंड में रहने वाला।
**पंडां**—स्त्री० बहुत सी जिम्मेदारियां।
**पंडा**—पु० तीर्थ, मन्दिर या घाट पर धर्मकृत्य कराने वाला ब्राह्मण, तीर्थ का पुजारी।
**पंडायण**—पु० (सि०) एक लोक गीत, महाभारत की लोक गाथा।
**पंडिताई**—स्त्री० (शि०) पांडित्य।
**पंडितानी**—स्त्री० (शि०) पंडित की स्त्री।
**पंडोळ**—पु० एक सब्जी विशेष।
**पंढोही**—स्त्री० पायदान।
**पंत**—स्त्री० पशुओं को लगने वाली एक बीमारी।
**पंथ**—पु० संप्रदाय; परिपाटी; सोचने या काम करने का ढंग।
**पंथा**—पु० (सि०) स्मारक रूप में लगाया पत्थरों का ढेर।
**पंद**—स्त्री० खजूर के तिनकों से बुनी चटाई।
**पंदरा**—वि० पंद्रह।
**पंदराड़ा**—पु० (सो०) सावन मास के पंद्रहवें प्रविष्टे को मनाया जाने वाला पर्व।
**पंदरेड़ु**—पु० (चं०) पांव की अंगुलियां।
**पंदाका**—पु० किसी प्राणी के ज़ोर से गिरने की ध्वनि।
**पंदोटू**—पु० खजूर के पत्तों से बुना हुआ चौकोर या गोलाकार आसन।
**पंद्रुई**—वि० (कु०) पंद्रहवीं।
**पंवारजाणा**—अ० क्रि० किसी व्यक्ति को पहले मृत घोषित करने के पश्चात् उसका कुछ घंटे बाद पुन: जीवित हो उठना।
**पंसारी**—पु० हल्दी, नमक मसाले तथा औषधियां बेचने वाला बनिया।
**पंसेरी**—वि० पांच सेर, कच्चे पांच सेर का बाट।
**पंहच**—स्त्री० (शि०) पहुंच।
**पंहचाना**—स० क्रि० (शि०) पहुंचाना।
**प:ड़ना**—स० क्रि० (सो०) पढ़ना।
**पअख**—पु० (मं०) पक्ष।
**पइ**—स्त्री० (शि०) नींव।
**पइल**—स्त्री० (शि०) दाल।
**पइना**—वि० तीखा, पैना।
**पइया**—पु० पहिया।
**पइरीपौणा**—स० क्रि० अभिवादन करना, प्रणाम करना।
**पइलवाण**—पु० पहलवान।
**पइले**—अ० पहले।
**पईट**—स्त्री० पैंट।
**पईडल**—पु० गले का आभूषण।
**पईती**—वि० पैंतीस।

**पईड़ियां**—स्त्री० पैड़ियां, सीढ़ियां।
**पईदाइश**—स्त्री० पैदावार, पैदाईश।
**पईया**—वि० एक पाव।
**पईर**—पु० (वि०) पैर।
**पईरेदार**—पु० पहरेदार।
**पईला**—वि० पहला।
**पईसा**—पु० पैसा।
**पऊंचणा**—अ० क्रि० पहुंचना।
**पऊठा**—पु० (सि०) मांसपेशियां।
**पऊण**—स्त्री० पवन, हवा।
**पऊणा**—वि० तीन चौथाई।
**पऊला**—पु० जूता।
**पऊली**—अ० (शि०) पहले।
**पएसे**—पु० (सि०) पैसे।
**पऐ**—स्त्री० (सि०) एक प्रकार का जंगली कुकुरमुत्ता। उषाकाल की लालिमा।
**पऐर**—पु० (वि०) पहर।
**पओड़**—पु० (मं०) दूध बिलोने के घड़े का ढक्कन।
**पकटलोऊ**—पु० (सि०) पीप व खून।
**पकडंडी**—स्त्री० छोटा रास्ता।
**पकड़**—स्त्री० प्रतिबंध, पकड़ने का काम या भाव।
**पकड़ान**—पु० (शि०) गिरफ्तारी।
**पकड़ुना**—अ० क्रि० (सो०) पकड़े जाना।
**पकड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) पकड़वाना।
**पकड़ोणा**—अ० क्रि० पकड़ा जाना।
**पकणा**—अ० क्रि० पकना, पीप पड़ना।
**पकनौळ**—पु० आग को जलाने हेतु फूंक मारने की नाली।
**पकनौळी**—स्त्री० गिलहरी।
**पकयाई**—स्त्री० मज़बूती।
**पकयाणो**—स० क्रि० (सि०) पकाना।
**पकरैंजी**—स्त्री० (कु०) अंतड़ियां।
**पकवान**—पु० (सो०) विशेष अवसर पर बनाए गए पकवान।
**पकवारणा**—स० क्रि० पुकारना।
**पकाइ**—स्त्री० (सो०) पकाने का पारिश्रमिक।
**पकाइणा**—स० क्रि० पकाया जाना।
**पकाउणा**—स० क्रि० (सो०) पकाया जाना।
**पकाउणो**—स० क्रि० (सि०) पकाना।
**पकाऊ**—पु० (शि०) पकाने वाला पुरुष, पाचक।
**पकाणा**—स० क्रि० पकाना।
**पकार**—स्त्री० (सो०) पुकार।
**पकारना**—स० क्रि० याद करना, पुकारना।
**पकावणा**—स० क्रि० (सो०) पकाना।
**पकाह**—वि० (चं०) पकाया नमक; पक्का घास।
**पकाह**—पु० (मं०) कपास।
**पकाह**—वि० पक्का तेल।
**पकीजा**—पु० पक्का काम।
**पकीट**—स्त्री० (कां०) पकाई हुई लाल ईंट।
**पकीणा**—पु० (चं०) पक्का काम।
**पकेर**—पु० (मं०) फोड़े को पकाने हेतु प्रयोग में लाया जाने वाला लेप।
**पकंर**—पु० (मं०) 'बासटी' के पत्तों को गड्ढे में डाल कर केलों को पकाने की विधि।
**पकेवणा**—स० क्रि० (सो०) पकवाना।
**पकैणा**—स० क्रि० पकाना।
**पकैन**—पु० विशेष पकवान।
**पकैरू**—पु० पक्का प्रबन्ध।
**पकैश**—स्त्री० सुरक्षा।
**पकोड़ू**—पु० दाल से बनाया हुआ 'बड़ा'।
**पकोणा**—अ० क्रि० (सो०) फोड़े का औषधि से पकाना।
**पकोड़ा/ड़े**—पु० पकौड़े, बेसन तथा आलू आदि का तला हुआ खाद्य।
**पक्क**—अ० (कु०) निस्संदेह, यकीनन, निश्चित रूप से।
**पक्का**—वि० मज़बूत, पक्का।
**पक्का**—वि० कंजूस।
**पक्कामखीर**—वि० (कां०) मधुमक्खियों के कोष से निकाला हुआ शहद।
**पक्कासेर**—वि० सोलह छटांक की एक तौल।
**पक्ख**—पु० पक्ष। पर, पंख।
**पक्खा**—पु० छत का एक पक्ष।
**पक्खा**—पु० पंखा।
**पक्खियां**—स्त्री० (कां०) 'गरड़' (घराट की घिरनी) के पंखे।
**पक्वार**—स्त्री० पुकार।
**पखंड**—पु० पाखंड।
**पखंडी**—वि० पाखंडी।
**पख**—पु० पक्ष।
**पखडंडी**—स्त्री० पगडंडी।
**पखड़णा**—स० क्रि० पकड़ना।
**पखड़ी**—स्त्री० (कां०) स्त्रियों द्वारा घर के आंगन तथा दहलीज़ पर नित्य प्रातः बिछाई जाने वाली पत्तियां।
**पखड़ू**—पु० घटना प्रधान गीत।
**पखणेर**—पु० पक्षी।
**पखणो**—स० क्रि० (शि०) इंतज़ार करना।
**पखबदलणा**—अ० क्रि० पक्ष बदलना, शिशु द्वारा रात्रि को जागना तथा दिन को सोना।
**पखरू**—पु० (चं०) पक्षी।
**पखला**—वि० अपरिचित, अजनबी।
**पखलेरू**—वि० दे० पखला।
**पखलोणा**—अ० क्रि० अपरिचित बनना।
**पखवाड़ा**—पु० (चं०) एक वृक्ष।
**पखवाड़ा**—पु० अर्धमास, पंद्रह दिन का समय।
**पखारी**—वि० (मं०) पाक्षिक।
**पखाळणो**—स० क्रि० (शि०) प्रक्षालन करना।
**पखाळना**—स० क्रि० (सो०) धोना, पानी से बरतन कपड़े आदि को साफ करना।
**पखावणो**—स० क्रि० (शि०) धोना।

**पखेना**—पु० (सि०, सो०) कहावत।
**पखेरू**—पु० पक्षी। अंतरात्मा।
**पखोटा**—पु० पक्षी के पर।
**पग**—पु० कदम।
**पग**—स्त्री० पगड़ी।
**पगड़ा**—वि० साक्षात्, प्रत्यक्ष।
**पगड़ुना**—स० क्रि० (शि०, सो०) साक्षात्कार करना, आते-जाते समय हल्की मुलाकात करना।
**पगलणो**—अ० क्रि० (सि०) पिघलना।
**पगलेवणा**—स० क्रि० (सो०) शोर आदि से पागल बनाना।
**पगळेवणा**—स० क्रि० पिघलाना।
**पगवाणा**—स० क्रि० (सि०) किसी पदार्थ को बहुतों में बराबर बांटना।
**पगवाणा**—स० क्रि० निभाना।
**पगशी**—पु० पक्षी।
**पगा**—पु० (शि०) पटका, दुपट्टा।
**पगादु**—पु० (शि०) छोटी दीवार।
**पगाणा**—स० क्रि० निभाना।
**पगार**—स्त्री० (शि०) दीवार। पैर में लगी मिट्टी।
**पगावणा**—स० क्रि० (सो०) पूरा करना, निपटाना।
**पगिया**—पु० (सि०) मंदिर में बना लकड़ी का बरामदा।
**पगे:वणा**—स० क्रि० (सि०) झुलाना।
**पगेरना**—स० क्रि० निभाना।
**पगेरा**—वि० (सि०) अस्त-व्यस्त।
**पगेवणा**—स० क्रि० (सो०) पूरा पटाना।
**पगोटणा**—स० क्रि० (सि०) हिलोरा देना।
**पगोड्टा**—पु० (शि०) झूले का एक फेरा।
**पघ**—स्त्री० (चं०) पगड़ी।
**पघळनो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) पिघलना।
**पच**—स्त्री० (चं०) पकड़।
**पचक**—पु० (चं०) वधू के साथ बारात में आने वाले व्यक्ति।
**पचका**—वि० थोड़ा सा, हाथ में पकड़ा जाने योग्य परिमाण।
**पचका**—पु० एक प्रकार का फूल जो कपड़ों से चिपक जाता है।
**पचकाइणा**—स० क्रि० (शि०, कु०) उखाड़ा जाना।
**पचकाणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) उखाड़ना।
**पचकारी**—स्त्री० पिचकारी।
**पचकैन**—वि० वश में।
**पचड़ा**—पु० झमेला, झंझट, बाधा।
**पचड़ागा**—वि० बेडौल।
**पचणा**—अ० क्रि० (सि०) दाल आदि का पानी कढ़ कर समाप्त होना।
**पचणा**—अ० क्रि० पचना।
**पचणा**—अ० क्रि० किसी बात को दिल में रखना।
**पचणो**—अ० (कु०) 'छोड़ दो' 'रहने दो' इत्यादि भाव अभिव्यक्त करता शब्द।
**पचनाटा**—पु० (सि०) एक वृक्ष विशेष।
**पचनोळू**—पु० अंत में पकाई जाने वाली छोटी रोटी।
**पचपचा**—वि० (शि०) कीचड़ वाला।
**पचयाणी**—स्त्री० (ह०) घर का पिछला भाग।
**पचयोण**—स्त्री० (सि०) लुहार का पारिश्रमिक।
**पचराल**—पु० (सि०) पानी में गिरने से उत्पन्न ध्वनि।
**पचराळा**—पु० (सो०) पहुंच, पकड़।
**पचराळा**—पु० (सि०) धमाका।
**पचराळी**—पु० (सो०) पकड़ने का प्रयत्न, झपट कर पकड़ने की क्रिया।
**पचराळुना**—स० क्रि० (सो०) पकड़ने, प्राप्त करने या पहुंचने का प्रयत्न करना।
**पचरींडणा**—स० क्रि० (सो०) अस्त-व्यवस्त करना, छेड़ना।
**पचरींडा**—पु० (सो०) अव्यवस्था, गंदा काम।
**पचरूका**—पु० (शि०, सि०) पंजा मारने की क्रिया।
**पचरूणा**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) नाखूनों से आघात करना, खरोंचना।
**पचरूणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०) जान कर पीछे रहना।
**पचरोड़**—स्त्री० नाखून मारने से लगा निशान, खरोंच।
**पचरोड़ना**—स० क्रि० खरोंचना, पंजे से मारना, नाखून मारना, खरोंच लगना।
**पचरोड़ा**—पु० पंजा आदि मारने की क्रिया।
**पचरोड़ा**—पु० विघ्न, रुकावट।
**पचरोड़िना**—अ० क्रि० (कु०) खरोंच लगना, नाखून या झाड़ी आदि से चीरे पड़ना।
**पचरोडू**—वि० (सि०) शरारती लड़का, चिपकने की प्रवृत्ति वाला बच्चा।
**पचरोणा**—अ० क्रि० पिछड़ना।
**पचरोणै**—स्त्री० (शि०, सि०) खरोंच।
**पचहरा**—वि० (शि०) पांच परत वाला।
**पचांद**—पु० (चं०) चूल्हे के पीछे का भाग।
**पचाइणा**—स० क्रि० (कु०) पचाया जाना।
**पचाउळ**—पु० (कु०) देवता की ओर से बधाई रूप में दिए जाने वाले अक्षत।
**पचाक**—अ० किसी वस्तु के फटने का स्वर।
**पचाका**—पु० इधर-उधर हाथ मारने की क्रिया, झपटा।
**पचाकुणा**—अ० क्रि० (सो०) इधर-उधर हाथ मारना, झपटना।
**पचाड़ा**—पु० मकान का पिछला भाग।
**पचाड़ी**—स्त्री० पीछे की ओर, पिछला भाग।
**पचाड़ो**—पु० (मं०) अरवी।
**पचाणा**—स० क्रि० पचाना।
**पचान**—पु० लकड़ी की रंदाई।
**पचान**—पु० (सो०) उखाड़ने या छीलने का व्यापार।
**पचानुएं**—वि० पचानबे।
**पचार**—पु० (शि०) उपचार, इलाज।
**पचाळुणा**—स० क्रि० (सो०) पचाया जाना।
**पचाश**—वि० पचास।
**पचाशणा**—स० क्रि० (कु०) धान की पौध लगाने के लिए पानी से भरे खेत की मिट्टी को समतल बनाना।
**पचाशळा**—वि० (कु०) फिसलन युक्त।

**पचासा**—पु० (शि०) आधी शताब्दी।
**पचाहां**—अ० पीछे।
**पंचाही**—अ० दे० पचाहां।
**पचिंचणा**—स० क्रि० भींचना।
**पचिंचुणा**—स० क्रि० (सो०) भींचा जाना।
**पचिकु**—वि० (सो०) घटिया व्यक्ति (गाली)। किसी की नकल उतारने वाला, नकलची।
**पचिकुणा**—अ० क्रि० (सो०) बेकार में अड़े रहना, अकड़ना।
**पची**—स्त्री० (कु०) मुश्किल में पड़ने का भाव।
**पचीकणी**—वि० कमज़ोर।
**पचीखणा**—अ० क्रि० (मं०) निकलना।
**पचीड़**—पु० (सो०) अरवी के पत्तों की सब्ज़ी।
**पचुणो**—स० क्रि० (शि०) पहुंचाना।
**पचेउड़**—पु० (कु०) देवता द्वारा दिए अक्षत।
**पचेकण/णा**—स्त्री० विवाह में दुलहन के साथ सहायिका रूप में मायके से जाने वाली महिला।
**पचेकणा**—स० क्रि० चौड़ा करना।
**पचेख**—अ० पीछे से।
**पचेचरा**—वि० उथला-पुथला; चंचल।
**पचेर**—वि० (सो०) सौतेला।
**पचेरना**—स० क्रि० (सि०) किसी को बुरी शिक्षा देना।
**पचेरना**—स० क्रि० पचाना, गुप्त रखना।
**पचेलड़**—पु० शादी से पहले का ऐसा बालक जो मां अपने साथ दूसरे पति के घर लाई हो।
**पचेवणा**—स० क्रि० (सो०) लकड़ी को छिलवाना।
**पचेहरा**—पु० (शि०) वृक्ष से पशुओं के लिए पत्तियां काटने वाला।
**पचैकणका**—वि० (कां०) बाद का, आखिरी, अंतिम।
**पचैठणा**—अ० क्रि० (कु०) झपटना।
**पचैणका**—वि० अंतिम, पीछे का।
**पचोकणा**—स० क्रि० (शि०) दांत दिखाना।
**पचोगी**—स्त्री० हल की पिछली ओर लगी लकड़ी की मोटी कील।
**पचोटणा**—स० क्रि० खरोंचना।
**पचोटणा**—स० क्रि० बालों को पकड़ कर खींचना।
**पचोटणा**—स० क्रि० खरोंचना, झंझोड़ना।
**पचोळना**—स० क्रि० (सो०) मक्की को छीलना।
**पचोळा/ळे**—पु० (सि०, सो०) पीसी हुई हरी मक्की को पत्ते पर रखकर भाप द्वारा पकाई गई रोटी।
**पचोल्ला**—पु० चूल्हे में दायें-बायें या पीछे की ओर बना छेद जहां दूसरा बर्तन चढ़ाया जा सकता है।
**पच्चणपेड़ी**—स्त्री० (कां०) बुरी आदतें; बुरी औरत।
**पच्चतर**—वि० पचहत्तर।
**पच्चर**—स्त्री० लकड़ी का बारीक टुकड़ा।
**पच्ची**—वि० पचीस।
**पच्चु**—पु० (चं०) मरोड़ पड़ने का रोग, पेचिश।
**पच्छ**—पु० चीरा, काटने से हुआ घाव।
**पच्छ**—पु० (कां०) बच्चा पैदा होने पर मामा के पक्ष से दिये जाने वाले वस्त्रादि।
**पच्छणा**—स० क्रि० ज़ख्म करना, थोड़ा सा छीलना।
**पच्छमी**—वि० पश्चिमी।
**पच्छापरोहणा**—पु० मेहमान।
**पच्छी**—स्त्री० शुष्क गन्ने के टुकड़े; गन्ने के सूखे पत्ते। पक्षी।
**पच्छेता**—वि० पीछे का।
**पच्छेहू**—अ० पीछे।
**पच्यांवदा**—पु० (मं०) चूल्हे का पिछला भाग।
**पच्याणका**—वि० (बि०) अंतिम दिन का, गत दिन का।
**पच्यारा**—पु० तवे पर फेरा जाने वाला तेल या घी से भीगा कपड़ा।
**पछकी**—स्त्री० (मं०) पाक्षिक श्राद्ध।
**पछड़णा**—अ० क्रि० (शि०) गाय या भैंस के दूध का कढ़ जाना।
**पछण**—स्त्री० (चं०) उस्तरा।
**पछणा**—स० क्रि० चीर लगाना, चीरने के लिए शहतीर तैयार करना।
**पछणोणा**—स० क्रि० पहचान होना।
**पछताइणा**—अ० क्रि० (कु०) पछताना।
**पछताई**—स्त्री० (चं०) सेहराबंदी।
**पछताणा**—अ० क्रि० पछताना।
**पछताप**—पु० पश्चात्ताप।
**पछतावा**—पु० पश्चात्ताप। मृत व्यक्ति के परिवार को सांत्वना देने का भाव।
**पछदेवा**—पु० लड़की के घर बच्चा होने पर लड़की की माता द्वारा दिए जाने वाले वस्त्र।
**पछनोकणा**—वि० बीते समय का।
**पछनोल**—वि० अंतिम।
**पछनोळु**—वि० बुढ़ापे की संतान।
**पछम**—अ० (शि०) पश्चिम, पीछे।
**पछयाटणा**—अ० क्रि० (सो०) ज़ोर मारना, तड़पना।
**पछयाड़ी**—स्त्री० पिछला हिस्सा।
**पछयाण**—स्त्री० पहचान।
**पछयाण**—पु० (कु०) बिस्तर, बिछौना।
**पछयाणिना**—स० क्रि० (कु०) पहचाना जाना।
**पछयाणुना**—स० क्रि० (सो०) पहचाना जाना।
**पछरना**—अ० क्रि० (शि०) लौटना।
**पछलगा**—वि० (शि०) अनुयायी।
**पछलोरूना**—अ० क्रि० पीछे रह जाना।
**पछवा**—स्त्री० (शि०) पश्चिम।
**पछवाड़ा**—पु० घर का पिछला भाग।
**पछवाड़ी**—स्त्री० पिछला हिस्सा; चूल्हे का पिछला भाग।
**पछवाणा**—स० क्रि० पुछवाना।
**पछांड**—स्त्री० (सो०) तिरछी वर्षा।
**पछांडणा**—स० क्रि० (सो०) अन्न को साफ करना।
**पछांडुणा**—अ० क्रि० (सो०) विपरीत दिशा से आने वाल बौछार से भीगना।
**पछांदरू**—पु० (कु०) बिछाने का वस्त्र।
**पछाई**—स्त्री० इमारती लकड़ियों को कुल्हाड़ी से तराश का काम।
**पछाईण**—पु० (कु०) पशुओं के नीचे बिछाया घास आदि।

**पछाए**—वि० (शि०) देर से बीजी गई फसल।
**पछाटणा**—स० क्रि० (सो०) झटकना।
**पछाटणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) पटकना।
**पछाटणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) देवता के पूजा के चावल किसी व्यक्ति पर फेंकना।
**पछाटुणा**—अ० क्रि० (सो०) झटका जाना, खूब परिश्रम करना, प्रयत्न करना।
**पछाड़ना**—स० क्रि० पटकना। पीछे छोड़ना।
**पछाड़ना**—स० क्रि० हराना, पीठ लगाना।
**पछाड़नो**—स० क्रि० पछाड़ देना।
**पछाड़ा**—पु० घर का पिछला भाग।
**पछाड़ी**—स्त्री० नदी में बहने वाले शहतीरों का पिछला भाग; पानी में पीछे चलने वाली लकड़ियां।
**पछाड़ी**—स्त्री० पीछे।
**पछाण**—स्त्री० पहचान।
**पछाणा**—स० क्रि० (कु०) बिछाना।
**पछाणी**—स्त्री० चावल की मांड से बनने वाली सब्जी।
**पछान**—पु० कुल्हाड़ी से इमारती लकड़ी को छील कर संवारने की क्रिया।
**पछानी**—वि० लकड़ी चीरने वाले।
**पछारना**—स० क्रि० (सि०) कपड़े को पटक कर धोना।
**पछावणा**—स० क्रि० (सो०) पुछवाना।
**पछिईणा**—अ० क्रि० (शि०) सफर में पीछे-पीछे रह जाना।
**पछिजणा**—अ० क्रि० (सो०) किसी वस्तु का कम पड़ना।
**पछियांह्**—अ० (कु०, शि०) पीछे की ओर।
**पछियाइंच**—अ० (कु०) साथ-साथ।
**पछुंडका**—वि० (शि०, सि०) सबसे पीछे वाला।
**पछुआड़ा**—पु० दे० पछाड़ा।
**पछूकर**—वि० (सि०) पीछे का।
**पछेणना**—स० क्रि० (सो०) पहचानना।
**पछेत**—स्त्री० (सो०, बि०) फसल बोने में हुआ विलंब।
**पछेत/ता**—वि० देर से बोया गया बीज।
**पछेरना**—स० क्रि० (कु०) आगे चलने वाले या साथ चलने वाले को पीछे छोड़ देना।
**पछेरिना**—स० क्रि० (कु०) पीछे रह जाना, पीछे छोड़ा जाना।
**पछैण**—स्त्री० पहचान।
**पछैणना**—स० क्रि० पहचानना।
**पछोकर**—वि० पीछे रहने वाला।
**पछोड़ना**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) अन्न को छाज से साफ करना।
**पछोर**—स्त्री० खच्चर के पीछे लगाई जाने वाली पट्टी।
**पछोइणा**—अ० क्रि० (कु०) पीछे रह जाना।
**पछोउता**—वि० (कु०) समय के बाद का बीजा हुआ।
**पज**—पु० बहाना।
**पज़**—स्त्री० (कु०) केवल एक शहतीर को बिछाकर बनाया पुल।
**पज़**—पु० (बि०, शि०) पैदावार।
**पजणा**—अ० क्रि० पैदा होना, उपजना।
**पजपतरा**—वि० (मं०) पांच लड़ियों वाला।
**पजयारी**—पु० पुजारी।
**पजयाळा**—पु० (कां०, बि०) पुजारी।
**पजरक्कड़**—पु० (सो०) पीला और बड़ा खीरा।
**पजरावकड़**—वि० चरित्रहीन।
**पजलणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) गुस्से में लाल-पीला होना; जलना, प्रज्वलित होना।
**पजवात्रा**—स्त्री० (सि०) आवभगत।
**पजाःर**—पु० (सि०, सो०) घास या लकड़ी का बोझ।
**पजाःरे**—स्त्री० (सि०) पुजारी को दिया जाने वाला पारिश्रमिक।
**पजाइणा**—अ० क्रि० (कु०) किसी चीज़ तक पहुंचने की कोशिश करना।
**पज़ाइत**—स्त्री० (कु०) पंचायत।
**पजाई**—स्त्री० (सो०) पहुंचाने की मज़दूरी।
**पज़ाओणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) पहुंचाना।
**पजाड़**—स्त्री० (सि०) उधार दिए गए अनाज की वापसी पर दिया जाने वाला अतिरिक्त भाग।
**पजाड़**—पु० (शि०) मुसीबत, समस्या।
**पजाणवे**—वि० (शि०) पचानवे।
**पजाणा**—स० क्रि० पहुंचाना।
**पजातरा**—पु० (कां०) बरयात्रा, दूल्हे की ससुराल जाने के लिए विदाई।
**पजामटू**—पु० बच्चे का पायजामा।
**पजामा**—पु० पायजामा।
**पज़ार**—पु० (शि०) पूजन सामग्री।
**पजारे**—पु० (सि०) पुजारी।
**पजाळे**—स्त्री० (सि०) हल में लगने वाली लकड़ी की कील।
**पजावणा**—स० क्रि० (सो०) पूजा करवाना।
**पज़ाह**—वि० पचास।
**पजियारा**—पु० (कु०) देवता का एक कारकुन, जो देवता के आय-व्यय को देखता है।
**पजुड़िया**—पु० (सि०, सो०) कलगी वाला पक्षी विशेष।
**पजेनुए**—वि० (कु०, मं०) पचानबे।
**पजेब**—स्त्री० पायल।
**पजेबो**—स्त्री० (सो०) पाजेब।
**पजेवणा**—स० क्रि० (सो०) पहुंचवाना।
**पजेवणा**—पु० (सो०) देवता का पुजारी।
**पजोणा**—स० क्रि० (कां०) पूजा जाना।
**पजोणा**—पु० एकादशी आदि के उपलक्ष्य में विवाहित लड़की को दिया जाने वाला दान।
**पजोणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) अनाज का पैदा होना।
**पज़ोणो**—स० क्रि० (सि०) पूरा-पूरा करना, बराबर करना।
**पजोळू**—पु० पाजा वृक्ष का फल।
**पज्जा**—पु० (चं०) एक वृक्ष विशेष जो सर्दी के मौसम में फूलता है।
**पज्वाऊज़**—पु० पूजा का सामान।
**पझरूटणा**—स० क्रि० (सो०) खरोंचना, कांटे से चमड़ी को छीलना।

**पझरूटुणा**—अ० क्रि० (सो०) काटों से चमड़ी का छिल जाना।
**पट**—पु० (शि०) वस्त्र, कपड़ा, पर्दा।
**पट**—पु० (का०) खाली पड़ी समतल भूमि। लकड़ी का चपटा टुकड़ा जिसे विवाह के समय दूल्हा दुलहन के पाँव के पास रखा जाता है।
**पटकणा**—अ० क्रि० (च०) लकड़ी का जलती बार पटाखे की आवाज़ करना; दर-दर भटकना।
**पटकणा**—स० क्रि० (सि०) पटकना।
**पटकणा**—अ० क्रि० (सो०, बि०) आग के ताप के कारण मक्की, मटर या मुट्ठों के दानों का चटकना।
**पटका**—पु० कुत्ते आदि के गले में डाली जाने वाली चमड़े की पेटी। कमर में बांधी जाने वाली चुनरी। बंधन।
**पटका**—पु० विवाह में दूल्हे द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र विशेष।
**पटका**—पु० (सो०) विवाह में दूल्हा-दुलहन को फेरे के समय बांधा जाने वाला वस्त्र विशेष।
**पटकाइणा**—स० क्रि० (कु०) पटका जाना।
**पटकाउणा**—स० क्रि० (शि०) मारना, पीटना।
**पटकाणा**—स० क्रि० फैंकना।
**पटकाणो**—स० क्रि० (शि०) पीटना, पटकना।
**पटकार**—पु० (शि०) कपड़ा बुनने वाला।
**पटकु**—पु० (कु०) कमर में बांधने का लंबा तथा पतला कपड़ा।
**पटकु**—वि० चिड़चिड़ा, गुस्सैल।
**पटकेवणा**—स० क्रि० (सो०) पटकवाया जाना। हथियाना।
**पटकोणी**—स्त्री० (सि०) पलकें।
**पटझोल**—वि० (शि०) अचल, स्थिर।
**पटड़ा**—पु० बैठने हेतु बनाया लकड़ी का पटरा।
**पटड़ियां**—स्त्री० विशेष प्रकार की पाजेब।
**पटड़ी**—स्त्री० (कु०, मं०) पटरी। रेल की पटरी।
**पटड़ी**—स्त्री० लोहे की बड़ी छड़ जिस पर रख कर लोहा सीधा किया जाता है।
**पटड़ी-पुत्रा**—पु० (सि०) गर्भवती स्त्री द्वारा सातवें मास में किया जाने वाला पूजन जिसमे पुत्र होने की कामना की जाती है।
**पटड्दाग**—पु० (मं०) पत्थर की शिला पर किया जाने वाला दाह संस्कार। बच्चों या अवयस्क किशोरों को इस प्रकार जलाया जाता है।
**पटणा**—स० क्रि० उखाड़ना।
**पटणा**—स० क्रि० किसी को उलटी बातें बताना; किसी का घर उजाड़ना।
**पटपटाणा**—अ० क्रि० (शि०) भूख-प्यास अथवा सर्दी-गर्मी के कारण कष्ट होना।
**पटमंडप**—पु० (शि०) तंबू, कपड़े का बना घर।
**पटरा**—पु० (शि०) दे० पटड़ा।
**पटराळा**—पु० प्रहार।
**पटल**—पु० (शि०) मंच, छत।
**पटलईणा**—अ० क्रि० (च०) आंख में मोतिया बिन्दु आना।
**पटलो**—वि० दो रंगों वाला नर पशु।
**पटवांडा/डे**—पु० (सि०, मं०) दे० पटांडा/डे।
**पटवांडे रा साजा**—पु० (मं०) श्रावण संक्रांति जब 'पटांडे' पकाए जाते हैं।
**पटवास**—पु० (शि०) तंबू।
**पटांडा/डे**—पु० (शि०, सि०, सो०, बि०) विशेष प्रकार के तवे पर पकाई गेहूं के आटे की पतली रोटी जिसे शक्कर या घी के साथ खाया जाता है।
**पटा**—पु० कुत्ते के गले में डाली जाने वाली धातु या चमड़े की पट्टी।
**पटाई**—स्त्री० (का०) चाय के पौधों की निराई।
**पटाई**—स्त्री० (कु०) रेज़गारी, खुर्दा, छुट्टा।
**पटाई**—स्त्री० (सो०) उखाड़ने का मेहनताना; उखाड़ने का व्यापार।
**पटाकड़ा/ड़े**—पु० (सि०) पटाखे।
**पटाकणा**—स० क्रि० (कु०, सि०) पछाड़ना, मारना, फाड़ना।
**पटाकणा**—स० क्रि० साफ करना।
**पटाका**—पु० ज़ोर की आवाज़, ज़ोर का थप्पड़, चपत। पटाखा।
**पटाकिणा**—अ० क्रि० (कु०, सो०) फट जाना, फलीदार अन्न की फलियों का फट जाना।
**पटाकू**—वि० छरहरा, हल्के बदन वाला।
**पटाके**—पु० (सि०) सच्ची-झूठी बातें।
**पटाखरा**—वि० (कु०) स्पष्ट ध्वनि आदि।
**पटाखा**—पु० धमाका।
**पटाडो**—पु० (कु०) आटा, चावल आदि रखने का बर्तन।
**पटाण**—पु० (मं०) शूल।
**पटाणा**—स० क्रि० उखाड़ना। वश में करना।
**पटाणा**—स० क्रि० (कु०) बदलना, बड़ी रकम के बदले छोटे सिक्के लेना।
**पटार/रौ**—पु० (कु०) बांस का बना टोकरा जिसमें ढक्कन लगा होता है और पकड़ने के लिए डंडी होती है।
**पटारकांध**—स्त्री० (मं०) मिट्टी को कूटकर बनाई दीवार।
**पटारी**—स्त्री० बांस की बनी छोटी टोकरी जिसमें विवाह के अवसर पर दूल्हे की ओर से दुलहन के लिए कपड़े और गहने ले जाए जाते हैं, सुहाग पिटारी।
**पटारू**—पु० दे० पटार/रौ।
**पटावणा**—स० क्रि० (सो०) उखड़वाना, खुदवाना।
**पटाशी**—स्त्री० (का०) हथियार तेज़ करने का औज़ार।
**पटासी**—स्त्री० (सि०) जुल्फें संवारने की एक क्रिया।
**पटिंकणा**—अ० क्रि० (सो०) टिड्डे की तरह उछलना।
**पटिंकु**—वि० बिल्कुल छोटा बच्चा।
**पटिकणा**—अ० क्रि० (कु०) उछलना, कूदना।
**पटिकिणा**—अ० क्रि० (कु०) उछला जाना, उछल-कूद की जानी।
**पटींडू**—पु० (कु०, मं०) Brunnella valgaris.
**पटुहरू**—पु० (कु०) खमीर डाल कर बनाई जाने वाली मोटी रोटी। 'तळुए पटुहरू' तवे पर तले हुए भटूरे। 'ताळूए पटुहरू' कड़ाही में खौलते घी में पकाए गए भटूरे।
**पटूहीं**—स्त्री० (कु०) बटलोई।
**पटेटू**—पु० (मं०) देवता द्वारा छोटे बच्चों के लिए प्रयुक्त

शब्द (संबोधन)।
**पटेड़ना**—स० क्रि० (सो०) फलों को गुठली से अलग करना।
**पटेढ़**—स्त्री० (कु०) शरारत, उलटा-सीधा काम।
**पटेढ़ी**—वि० (कु०) शरारती।
**पटेरना**—स० क्रि० (कां०) उखड़वाना। वश में करना। मेल-मिलाप करना।
**पटेरा**—वि० (सि०) काना।
**पटेरि**—स्त्री० (सो०) पिटारी।
**पटेल**—पु० (सि०) बड़ा पत्थर।
**पटेला**—पु० (सि०) चूल्हे पर रखा जाने वाला पत्थर।
**पटैउटा**—पु० (शि०) घरेलू काम-काज।
**पटैली**—स्त्री० (ह०) धान का घास।
**पटैह**—स्त्री० मार-पीट। उखाड़ी हुई चीज़।
**पटोकणो**—स० क्रि० (शि०) पीटना।
**पटोकणो**—स० क्रि० (सि०) ठगना, धोखा देना।
**पटोगा**—पु० (शि०) उदररोग से पीड़ित।
**पटोणा**—स० क्रि० व्यर्थ में खर्च करना। अ० क्रि० व्यर्थ में अत्यधिक काम में फंसना। किसी की मृत्यु पर रोना पीटना।
**पटोला**—पु० (शि०) फर्श के बीच प्रयोग की जाने वाली मोटी शहतीर।
**पटोहटा**—पु० व्यर्थ का अत्यधिक काम जिसका व्यक्तिगत लाभ न हो।
**पटौल**—पु० (सि०) घराट का ऊपर वाला पाट।
**पटौलटू**—पु० (सि०) हलका सामाजिक दंड।
**पट्ट**—स्त्री० (सो०) फूटने की ध्वनि।
**पट्ट**—पु० (कु०, चं०) शिला, बड़ा और चौड़ा पत्थर।
**पट्ट**—पु० (ह०) बड़ा खेत।
**पट्टकणा**—अ० क्रि० (बि०) जलना, क्रोधित होना।
**पट्टा**—पु० ज़मीन का अधिकार पत्र।
**पट्टा**—पु० मकान या ज़मीन से संबंधित अधिकार पत्र जिस द्वारा किसी को उस ज़मीन या मकान का अधिकार दिया जा सकता है।
**पट्टियां**—स्त्री० खड्डी के दोनों ओर लगी दो चौकोर व लंबी लकड़ियां। चारपाई की पट्टिकाएं।
**पट्टी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) आयताकार छोटा खेत।
**पट्टी**—स्त्री० (सि०) आभूषण विशेष, श्रृंगार पट्टिका।
**पट्टी**—स्त्री० तख्ती।
**पट्टी**—स्त्री० धारी।
**पट्टी**—स्त्री० घाव पर बांधी जाने वाली कपड़े की पट्टी।
**पट्टू**—पु० ऊन का पहनने का कंबल जिसकी बुनाई में बेल आदि भी डाली जाती है।
**पट्टू**—पु० (ऊ०, कां०) वर्गाकार छोटा खेत।
**पट्ठैर**—स्त्री० (चं०) गिरे हुए पत्तों का ढेर।
**पट्ठा**—पु० (कु०) देवदार के फूलों की धूल, पराग।
**पट्ठा**—वि० (सो०, शि०) ताकतवर, हृष्ट-पुष्ट।
**पट्ठा**—पु० (कां०) धान, गेहूं का घास।
**पट्ठा**—पु० चौड़ी नर्म पत्तियां।
**पट्ठा**—पु० (कां०, बि०) गर्दन की मोटी नस, शरीर के किसी भाग में नस के खिसक जाने से हुआ कष्ट।
**पट्ठामुंदी**—स्त्री० (सो०) विवाह के समय दुलहन को पहनाई जाने वाली अंगूठी विशेष।
**पट्ठी**—स्त्री० गोभी के पत्तों अथवा राई के पत्तों पर चलने वाली सूंडी।
**पठंग**—पु० (कु०) मज़ाक।
**पठंगी**—वि० (कु०) मसखरा, स्वांग करने वाला, हंसाने वाला।
**पठंगी**—वि० (ऊ०, कां०) आडंबर करने वाला।
**पठंघ**—पु० उलट फेर, उलटा काम, आडंबर।
**पठंठ**—पु० (सो०) दिखावा, आडंबर।
**पठ**—स्त्री० (चं०) युवा बकरी जिसने अभी बच्चा न जना हो परन्तु बच्चा जनने योग्य हो।
**पठऊला**—पु० (बि०) पीठ की टेक। कंधा।
**पठड़ा**—पु० मचान।
**पठणी**—स्त्री० तितली।
**पठणु**—पु० अन्न में लगने वाला कीट।
**पठर**—पु० (चं०) शिकार।
**पठर**—पु० धरना, पहरा, मचान।
**पठळी**—स्त्री० (कां०) बांस की एक छोटी चपती।
**पठळी**—स्त्री० (कां०) बांस की एक छोटी चपती।
**पठाण**—पु० (सो०) पठान।
**पठारण**—पु० (शि०, सि०) बोझ उठाने के लिए पीठ पर लिया जाने वाला कपड़े या बोरी का गद्दा।
**पठारन**—पु० (सो०) दे० पठारण।
**पठाळ**—पु० (कु०) देवदार के फूलों से निकलने वाला पराग।
**पठावा**—पु० चीड़ या देवदार का पराग जो तांत्रिक क्रिया व पूजा के काम आता है।
**पठियाढ़**—पु० (कु०) मकान में बाहर की सजावट के लिए या वर्षा की बौछार से बचने के लिए बरामदे के चारों ओर लगे तख्ते।
**पठियाला**—पु० सहारा, पीठ को दिया जाने वाला सहारा।
**पठी**—स्त्री० (कां०, बि०) लड़की।
**पठी**—वि० (कु०) पूरा, सारा, पूर्णतः।
**पठी**—स्त्री० विवाह के अवसर पर निमंत्रित व्यक्तियों की सूची।
**पठे**—पु० बांस को चीर कर बनाए गये छोटे-छोटे टुकड़े।
**पठेणा**—स० क्रि० (कु०) नष्ट करना, खत्म करना।
**पठेरन**—पु० (कु०) बोझ ढोते समय पीठ पर रखा जाने वाला कोट, कपड़ा आदि जिससे बोझ पीठ पर न चुभे।
**पठेरी**—स्त्री० (कु०) वह मुर्गी जो पहली बार अंडे देने की तैयारी में हो।
**पठेरी**—स्त्री० (कु०) किशोरी।
**पठेहरी**—वि० (मं०) आटा गूंधने वाला।
**पठैता**—पु० (चं०) आशीर्वाद।
**पठैन्ता**—देवता के नए चेले को मुख्य चेले द्वारा दी गई दीक्षा जिसमें मुख्य चेला बलि में काटे गए बकरे के खून से हाथ को भिगो कर नए चेले के चोले की पीठ पर पूरे पंजे की छाप लगा देता है।
**पठोई**—स्त्री० (चं०) Etholtua polystachya.

**पड़**—पु० (मं०) दूध विलोने के घड़े का ढक्कन।
**पड़**—पु० पड़दादा-पड़दादी के समय का संबंध।
**पड़**—पु० (चं०) पेंदा, बरतन का निचला हिस्सा।
**पड़छ**—पु० तरकारी बनाने के लिए मसाले डाल कर पकाया हुआ घी या तेल।
**पड़छणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) गिरती हुई वस्तु को हाथ से पकड़ना, लपकना। किसी के बोझ को हलका करने के लिए जाना।
**पड़छावा**—पु० अनिच्छित व्यक्ति या वस्तु की छाया; परछाई।
**पड़ज**—स्त्री० (शि०) धुनकी में लगी डोरी।
**पड़णा**—अ० क्रि० (कु०, शि०) गिरना।
**पड़त**—स्त्री० (शि०) परंपरा द्वारा दिया गया अधिकार।
**पड़त**—स्त्री० प्रसिद्धि।
**पड़तनी**—स्त्री० कमर में बांधने का अंगोछा।
**पड़तनू**—पु० रोटी बदलने का छोटा पलटा।
**पड़ता**—पु० पूजा सामग्री।
**पड़दंदा**—वि० (बि०) टेढ़े-मेढ़े दांत वाला।
**पड़दांदा**—वि० (सो०) ऐसा भुट्टा जिसमें एक ही स्थान पर दो दाने लगे हों। ऐसा व्यक्ति जिसके दोहरे दांत हों।
**पड़दा**—पु० परदा।
**पड़दा**—पु० (सि०) माफी, क्षमा।
**पड़दादा**—पु० परदादा।
**पड़दोंदा**—पु० (कु०) दांत के भीतर निकला दूसरा दांत।
**पड़ना**—स० क्रि० (सो०) पशुओं का काटने या सींग मारने को दौड़ना।
**पड़ना**—अ० क्रि० (चं०) सड़ना, खराब होना।
**पड़ना**—अ० क्रि० बीमार होना।
**पड़नाऊ**—पु० (कु०) उपनाम।
**पड़पोतू**—पु० प्रपौत्र।
**पड़बर**—पु० (सो०) विवाह के अवसर पर आरंभ से अंत तक वर तथा वधू के ऊपर पकड़ी जाने वाली लाल या पीली चादर जिसके मध्य में कुछ पैसे बंधे रहते हैं।
**पड़बुआइया**—पु० फूफा का पिता।
**पड़यां**—स्त्री० (चं०) प्रतिपदा।
**पड़या**—स्त्री० प्रथम श्राद्ध।
**पड़याई**—स्त्री० (कु०) मलाई।
**पड़याई**—स्त्री० (मं०) जंगल से काटकर पूजा के लिए आंगन में गाड़ा छोटा वृक्ष।
**पड़याई**—स्त्री० गन्ने या सरसों आदि के रस या तेल निकालने की प्रक्रिया।
**पड़याण**—स्त्री० (मं०) लोहे के शस्त्र तथा औज़ार तेज करने का पत्थर।
**पड़यामी**—पु० (मं०) दे० पड़ोमी।
**पड़याल**—स्त्री० (सो०) होंठ आदि पर जमी पपड़ी।
**पड़याला**—पु० (बि०) ऐसा पौधा विशेष जिसके पत्तों का साग बनता है।
**पड़याही**—स्त्री० (कां०, सि०) मलाई।
**पड़वा**—स्त्री० (सो०) प्रतिपदा।
**पड़सणा**—अ० क्रि० सोये हुए बोलना।
**पड़साई**—स्त्री० (ह०) विवाह में वह संस्कार, जब बहन दूल्हे को कपड़े पहनाती है।
**पड़ांज**—स्त्री० (शि०, सि०) संदेश।
**पड़ा:कु**—वि० अधिक पढ़ने वाला।
**पड़ा:न**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) दुर्गंध।
**पड़ा:वणा**—स० क्रि० (सो०) पढ़ाना।
**पड़ा**—पु० ठहरने की जगह, बस अड्डा।
**पड़ाई**—स्त्री० (सि०, शि०) कफन।
**पड़ाउटा**—पु० मिट्टी के बड़े ढेले तोड़ने के लिए लकड़ी का बना एक उपकरण।
**पड़ाउणी**—स० क्रि० (सि०) पालना।
**पड़ाउणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) पढ़ाना।
**पड़ाऊ**—पु० (कु०) पड़ाव, यात्रा में ठहरने की जगह।
**पड़ाओट**—पु० (सो०) दे० पड़ाउटा।
**पड़ाछ**—पु० (कु०) घास रखने का घर।
**पड़ाण**—पु० (शि०) प्राण।
**पड़ारा**—पु० (चं०) Hamiltoni suavelens.
**पड़ाव**—पु० (सि०) ईख पीड़ने का स्थान। पड़ाव।
**पड़िया**—पु० (शि०) हल को जुए से जोड़ने के लिए प्रयोग की जाने वाली रस्सी अथवा चमड़े की रस्सी।
**पड़ियाइणा**—अ० क्रि० (कु०) किसी द्वारा खाया जाना।
**पड़ियाणा**—स० क्रि० (कु०) किसी को खिलाना, किसी से खिलाया या छीना जाना।
**पड़ींग**—स्त्री० (सो०) असुविधा, अड़चन।
**पड़ींग**—स्त्री० (कु०) चीख।
**पड़ी—स्त्री० एक कीड़ा विशेष जो हरी पत्तियों विशेष रूप से शहतूत के पत्तों में लगता है।**
**पड़ुआं**—पु० (सो०) गिद्दा, महिला लोक नृत्य का एक रूप।
**पड़ुआं**—पु० (मं०) शादी का अंतिम दिन।
**पड़ेआ**—स्त्री० प्रतिपदा।
**पड़ेओ**—पु० (मं०) औज़ार।
**पड़ेओणा**—स० क्रि० (मं०) पैना करना।
**पड़ेज**—पु० दे० पड़ैजो।
**पड़ेठी**—स्त्री० सब्जी काटने का औज़ार।
**पड़ेयी**—स्त्री० (सि०) दीवाली के दूसरे दिन का त्योहार।
**पड़ेरना**—स० क्रि० (कां०, मं०) कसना, तैयार करना, पक्का करना।
**पड़ेरना**—स० क्रि० सुलझाना, चारपाई को बुनना।
**पड़ेरना**—स० क्रि० (कु०) किसी पात्र के बीच में कोई वस्तु पूरी तरह रखना।
**पड़ेरिना**—स० क्रि० (कु०) किसी पात्र के बीच कोई वस्तु पूरी तरह डाली जानी।
**पड़ेळी**—स्त्री० (सि०) मलाई।
**पड़ेव**—पु० (सो०) खेती के औज़ार।
**पड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) पिड़वाना।
**पड़ेवि**—स्त्री० (सो०) दीवाली से अगला दिन जिस दिन विश्वकर्मा दिवस मनाया जाता है।

**पड़ेशी**—पु० (कु०) पड़ोसी।
**पड़ेसी**—पु० दे० पड़ेशी।
**पड़ेही**—पु० (चं०) दे० पड़ेशी।
**पड़ैजा**—पु० (मं०) तवे पर रोटी बदलने के लिए लोहे का बना पलटा।
**पड़ैजो**—पु० (सि०) विवाह या मेले के अवसर पर प्रयोग के लिए किसी से उधार लिए आभूषण तथा वस्त्र।
**पड़ैण**—स्त्री० लोहे के औज़ार तेज करने का पत्थर।
**पड़ैत्री**—स्त्री० (चं०) सब्जी काटने का लकड़ी की हत्थी वाला तेज हथियार।
**पड़ो**—पु० (मं०) सफेद बाल।
**पड़ोण**—स्त्री० (कां०) कसाव, कसने के कारण होने वाली पीड़ा।
**पड़ोमी**—पु० (कु०) मकान बनाते समय पत्थर ढोने या मिस्तरी की सहायता के लिए लगाए मज़दूर।
**पड़ोली**—स्त्री० (कु०, शि०) ऊन की पट्टी।
**पड़ोशि**—पु० (शि०, सि०) पड़ोसी।
**पढ़णो**—स० क्रि० (शि०) पढ़ना।
**पढ़त**—स्त्री० (शि०) पढ़ने की क्रिया।
**पढ़तरी**—स्त्री० रटी रटाई बात। किसी के छिपे हुए दोषों को खोलने की क्रिया।
**पढ़ळी**—स्त्री० (सि०, बि०) अनाज में लगने वाला कीड़ा।
**पढ़ाइणा**—स० क्रि० (कु०) पढ़ाया जाना।
**पढ़ाई**—पु० (शि०) लकड़ी की दीवार।
**पढ़ाउण**—स्त्री० (कु०) पहेली।
**पढ़ाए**—स्त्री० (शि०, सि०) शिक्षा, पढ़ाई।
**पढ़ाकू**—वि० अधिक पढ़ने वाला।
**पढ़ाणा**—स० क्रि० पढ़ाना।
**पढ़ीक**—पु० (चं०) विद्यार्थी, पढ़ने में होशियार, अधिक पढ़ने वाला।
**पढेरणा**—स० क्रि० (कु०) कसना, ढोल की रस्सियां कसना।
**पण**—पु० (चं०) पत्ते का चारा।
**पणच**—पु० (सि०) लंबा बांस।
**पणचक्कर**—पु० ज़ोर की वर्षा। घराट का लकड़ी का चक्कर जिस पर पानी गिरता है।
**पणछेण**—स्त्री० पहचान।
**पणछेब**—पु० (चं०) वह स्थान जहां पानी समीप हो और मिट्टी गीली रहती हो।
**पणजीओरा**—पु० (मं०) बिजौरा, नींबू प्रजाति का फल जिसका छिलका बहुत मोटा होता है और रस बिल्कुल नहीं होता।
**पणजीरी**—स्त्री० (सि०) प्याज़ के छोटे पौधे।
**पणजेब**—पु० पाजेब।
**पणत**—पु० पंडित।
**पणतराई**—स्त्री० (मं०) लड़कियों की जल क्रीड़ा।
**पणतहड़**—पु० (मं०) पानी गर्म करने का लोहे का बरतन।
**पणतीर**—वि० (सो०) बहुत फुर्तीला, चुस्त।
**पणतेली**—स्त्री० (कु०) बीमारी के कारण या अधिक परिश्रम से निकला पसीना।
**पणतैणी**—स्त्री० पंडितानी।
**पणपणो**—वि० (शि०) स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट।
**पणपीहू**—पु० (मं०) पपीहा।
**पणबिचू**—पु० (मं०) जल का बिच्छू।
**पणमेसर**—पु० परमेश्वर।
**पणयारा**—वि० (बि०) पानी भरने वाला।
**पणयारि**—स्त्री० (सो०) इंद्र धनुष।
**पणयाला**—पु० (कु०) चेचक का रोग।
**पणशीरा**—पु० (कु०) वन का एक भूत जो लंबी सीटी बजाता है।
**पणसारी**—पु० पंसारी।
**पणसेट**—स्त्री० (सो०) गांठ विशेष।
**पणसेटु**—पु० (सो०) छोटी गांठ।
**पणसेरी**—स्त्री० पंसेरी।
**पणसोलड़**—पु० जलीय सर्प, जिसके काटने पर व्यक्ति मरता नहीं है।
**पणसौकड़ा**—पु० (कु०) दे० पणसौका।
**पणसौका**—पु० (कु०) केकड़ा।
**पणहारी**—वि० पानी ढोने या पिलाने वाला।
**पणा**—स्त्री० (कां०) बरसात के दिनों में गंदे जल के कारण पांवों में होने वाली खारिश। गंदे पानी में उगने वाला घास।
**पणा**—पु० (सो०) खेत से बरसात में वर्षा के पानी के निकास के लिए बनाई गली, नाली।
**पणाखर**—स्त्री० (ह०) रसोई आरंभ होने से पूर्व रसोइये को दी जाने वाली भेंट।
**पणारटे**—स्त्री० (शि०) पानी भरने वाली लड़की।
**पणारी**—स्त्री० (शि०) इंद्र धनुष।
**पणारो**—वि० (सि०) पानी भरने वाला।
**पणाहरे**—स्त्री० (शि०) पानी भरने वाली।
**पणिहारण**—स्त्री० (कु०) इंद्रधनुष।
**पणिहारी**—पु० (कु०) पानी लाने वाला व्यक्ति।
**पणी**—पु० (शि०) जूता।
**पणी**—स्त्री० (चं०) पत्ते।
**पणीतर**—वि० (मं०) पानी वाली (भूमि)।
**पणीह**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) चप्पल।
**पणेउणा**—स० क्रि० (सो०) जूतों से लड़ना।
**पणेऊणा**—स० क्रि० (मं०) पिलाना।
**पणेर**—पु० (सि०) इंद्रधनुष।
**पणेरे**—स्त्री० (सि०) पक्षी विशेष।
**पणेरे**—स्त्री० (सि०) पानी लाने वाली।
**पणेवणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) जूतों से मारना।
**पणेसर**—पु० (शि०) भगवान्, परमेश्वर।
**पणेहरी**—स्त्री० (शि०) पानी लाने वाली।
**पणैउणा**—स० क्रि० (कु०) पिलाना।
**पणैटी**—स्त्री० (मं०) बांस का बना 'किरडे' की तरह का पात्र जिसको पानी का बर्तन डालकर उठाने के काम में लाया जाता है।
**पणैटू**—पु० (चं०, मं०) पानी का घड़ा उठाने के काम आने वाला 'किरडा'।
**पणैणू**—पु० (कां०, चं०) चाय, दूध आदि छानने की छलनी।

**पणैर**—पु० (शि०) पनघट।
**पणैरी**—वि० (कु०, शि०) पानी ढोने वाली।
**पणैहरी**—स्त्री० (शि०) इंद्रधनुष।
**पणोता**—पु० तरल पदार्थ; सजल।
**पणोल**—वि० अधिक पानी वाला। डबडबाई आंखें।
**पणौणी**—स्त्री० (सि०) छलनी।
**पतंग**—वि० (चं०) लफंगा।
**पतंदर**—पु० ऐसा चतुर व्यक्ति जिसकी चतुराई का बाद में पता चले, ऐसा व्यक्ति जिस पर विश्वास न किया जा सके।
**पत**—पु० (सि०, ह०) गुड़ बनाने के लिए काढ़ा हुआ रस।
**पत**—पु० (चं०, बि०) इज़्ज़त।
**पतगारूओंदे**—वि० (शि०) शर्मिंदा।
**पतगोभी**—स्त्री० बंद गोभी।
**पतड़ोशू**—पु० लकड़ी का गोल कम गहरा उपकरण जिस पर तकली फिरती है।
**पतणा**—स० क्रि० (ह०) कुल्हाड़ी से लकड़ी को छीलना।
**पतन**—पु० (मं०) दरिया का फैलाव।
**पतनाळा**—पु० (सो०) छत से पानी बहने का स्थान, नाली।
**पतपत**—अ० (शि०) बकबक।
**पतयाणा**—स० क्रि० (कां०, कु०, मं०, बि०) मनाना, पुचकारना, प्यार से मनाना।
**पतर**—पु० पत्र।
**पतर**—पु० (सि०) देवता को भेंट देने का पात्र।
**पतर**—पु० (कां०) कच्चे बांस की चौड़ी पत्थर।
**पतरना**—अ० क्रि० बेइज्जत होना।
**पतरसाई**—स्त्री० (मं०) पतझड़।
**पतरा**—पु० धातु की चादर का पतला एवं लंबा चौड़ा टुकड़ा; कागज़ का पन्ना।
**पतराण**—पु० जूतों के लिए पांव का माप।
**पतरादा**—पु० पशुओं की बीमारी।
**पतराह**—पु० वृक्षों के पत्तों का चारा।
**पतराहणा**—वि० जूते के बिना चलने वाला, नंगे पांव चलने वाला।
**पतरी**—स्त्री० पंचांग।
**पतरीह**—स्त्री० (चं०) एक औषधि विशेष।
**पतरू**—पु० (मं०) कान का निचला भाग।
**पतरूला**—वि० (सि०) पत्तों वाला।
**पतरेड़ी**—स्त्री० (मं०) पत्ते या फूल को मिलाकर बनाया हुआ 'वड़ा'।
**पतरेढ़ा**—पु० (ह०) बदनामी।
**पतरेसू**—स्त्री० (मं०) वर की चाची।
**पतरैहन**—स्त्री० (मं०) जूते।
**पतरोड़ा**—पु० (सि०) पुस्तकों का ढेर।
**पतरोड़ू/ड़े**—पु० अरबी के पत्तों के बीच मसाला और आटा या बेसन डालकर बनाया खाद्य।
**पतरोल**—पु० (चं०) पद चाप।
**पतरोहड़ा**—वि० (चं०) 'पतरोहड़ी' कार्य करने वाला।
**पतरोहड़ी**—स्त्री० (चं०) छप्पर पर घास छाने की क्रिया।
**पतरौंचणा**—स० क्रि० (सो०) व्यवस्थित वस्तु को इधर-उधर बिखेरना। किसी की जेब में हाथ डाल कर देखना।
**पतरौहरा**—पु० वर का चाचा।
**पतला**—वि० तरल, पतला।
**पतलाण**—स्त्री० (चं०) बदबू, पैर के पसीने की बदबू।
**पतळावण**—स्त्री० (सो०) पीतल के बरतन का कस।
**पतलू**—पु० (कां०) पत्तल।
**पतलून**—स्त्री० पैंट।
**पतले**—वि० (सि०) पतली।
**पतळेठा**—पु० (सो०) पीतल का घटिया पात्र।
**पतलैहन**—स्त्री० पीतल के बरतन का कस।
**पतलोण**—स्त्री० (सि०) दे० पतलैहन।
**पता**—पु० खबर, डाक परिचय।
**पताजी**—पु० एक प्रकार का उड़ने वाला कीट।
**पताज्जु**—पु० (कां०) एक वृक्ष विशेष।
**पताणा**—वि० नंगे पांव।
**पतास**—पु० लकड़ी को साफ करने का उपकरण।
**पतारणो**—स० क्रि० (सि०) शर्मिंदा करना।
**पतारना**—स० क्रि० चुगली करना, बदनाम करना।
**पतारा**—पु० (सि०, सो०) किसी चीज़ का बुरी तरह खराब होने का भाव, गलत काम।
**पतारिना**—अ० क्रि० (कु०) निराश होना।
**पताळ**—पु० पाताल, बहुत गहरा स्थान।
**पतावा**—पु० जूते के अंदर रखा जाने वाला चमड़ा।
**पताशा/शे**—पु० बतासा।
**पता-सता**—पु० (कु०, बि०) जानकारी, अता-पता।
**पतिंगणा**—स० क्रि० बिखेरना।
**पतिआणा**—स० क्रि० (शि०) रोते हुए या रूठे हुए को मनाना।
**पतिआर**—पु० (सि०) विश्वास।
**पतियारा**—पु० (कु०) एक पात्र जिसमें 'बेठर' को जलाकर खुशबू पैदा की जाती है, मिट्टी का चिराग।
**पतिवर्ती**—वि० (शि०) सौभाग्यवती।
**पती**—स्त्री० हिस्सा, भाग।
**पती**—स्त्री० (चं०) थाली।
**पतीजणा**—अ० क्रि० (सो०) संतुष्ट होना, मानना।
**पतीजा**—पु० (बि०, सि०) भतीजा।
**पतीणा**—अ० क्रि० संतोष होना।
**पतीदार**—पु० (सि०) सांझीदार।
**पतील**—वि० (सि०) बहुत पतला।
**पतीलटु**—पु० छोटा पतीला।
**पतीलु**—पु० दे० पतीलटु।
**पतीस**—पु० गुड़ की मिठाई।
**पतीस**—पु० अतिविषा। एक ज़हरीली औषधि।
**पतीहस**—स्त्री० पति या पत्नी की चाची।
**पतुंगणा**—स० क्रि० बिखेरना।
**पतूही**—स्त्री० (कु०) वास्कट, बिना बाजू का कोट।
**पतेडू/ड़ु**—पु० (बि०) दे० पतरोड़ू/ड़े।
**पतेर**—पु० (शि०) एक पक्षी।

**पतेवणा**—स० क्रि० (सो०) दे० पतयाणा।
**पतोकणा**—स० क्रि० (कु०) लड़ाई करते समय किसी को बार-बार गिराना।
**पतोखणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) पंखों आदि को तोड़ना, मरोड़ना, नोचना। किसी चीज़ को जल्दी से इधर-उधर फेंकना।
**पतोड्डू**—पु० दे० पतरोड्डू/ड़े।
**पतोखतो**—पु० (शि०) जानकारी, अता-पता।
**पतोह**—स्त्री० (शि०) बहु।
**पतोहणा**—स० क्रि० (शि०) घसीटना।
**पतौर**—पु० (कां०, मं०) पति या पत्नी का चाचा।
**पतौहरी**—स्त्री० (कु०) दोपहर के बाद खाया जाने वाला भोजन।
**पत्तण**—पु० किसी नदी पर पार आने जाने के लिए बना स्थान जहां पर नावें आदि खड़ी की जाती हैं।
**पत्तर**—पु० पत्ता। लोहे या लकड़ी का पतला टुकड़ा।
**पत्तळ**—स्त्री० पत्तल।
**पत्तळू**—पु० छोटे पत्ते।
**पत्ती**—स्त्री० (कु०) पत्थर का नर्म टुकड़ा जिस पर औज़ार तेज़ किया जाता है।
**पत्ती**—स्त्री० पत्ती की तरह का लोहा जो रंदे में लगा होता है।
**पत्ती**—स्त्री० चाय पत्ती।
**पत्तीजणा**—अ० क्रि० (मं०) मानना।
**पत्तैरी**—स्त्री० (मं०) इंद्रधनुष।
**पत्थ**—पु० पथ्य।
**पत्थणा**—स० क्रि० (कां०) रोटी पकाना।
**पत्थरतोड़**—पु० (सि०) Saxifraga ligulata.
**पत्थरयाणा**—स० क्रि० पत्थर मारना।
**पत्थरी**—स्त्री० (कां०, सो०) औज़ार तेज़ करने का साधन।
**पत्थरौळी**—स्त्री० (सि०) पत्थर की चक्की।
**पत्थहिल्ला**—पु० (चं०) रक्त विकार से होने वाला चर्मरोग।
**पत्रगण**—पु० (मं०) फाल्गुन।
**पत्रा**—पु० पंचांग।
**पत्राहल**—पु० (चं०) गिरे हुए पत्ते।
**पत्रोड़ा**—पु० (चं०) दे० पतरोड़ू।
**पथ**—पु० रास्ता, मार्ग।
**पथ**—वि० पथ्य।
**पथ**—पु० (कां०) अन्न को मापने का लगभग डेढ़ सेर के माप का बरतन।
**पथणा**—स० क्रि० उपले बनाना।
**पथरयागल**—पु० (ह०) ज़्यादा पत्थरों वाली मिट्टी, पथरीली मिट्टी।
**पथरीला**—वि० पत्थरों वाला।
**पथरूही**—स्त्री० (मं०) पत्थर चौथ। कलंक चतुर्थी।
**पथरेण**—स्त्री० (सि०) पत्थर की खान।
**पथरेवणा**—स० क्रि० (सो०) पत्थर से मारना।
**पथरेखुणा—स० क्रि० (सो०) पत्थर से मारना।**
**पथरैल**—वि० पत्थर वाली (भूमि)।
**पथरैह**—स्त्री० पत्थरों की मार।
**पथरैहड़**—पु० पथरीला मार्ग।
**पथरोट**—पु० (बि०, सि०) पत्थर का बनाया गया शिकंजा जिसके नीचे पक्षी फंस कर मर जाते हैं।
**पथरोट**—पु० (सो०) पत्थर का आघात।
**पथरोड़िना**—अ० क्रि० (कु०) छटपटाना।
**पथरोळू**—पु० (कां०) छोटा पत्थर।
**पथीकडू**—पु० (मं०) गुलेल।
**पथूई**—स्त्री० वास्कट, बिना बाजू का कोट।
**पथेओ**—पु० (मं०) अनाज मापने का बरतन जो लगभग दो किलोग्राम का होता है।
**पथेओ**—पु० (सि०) समस्या।
**पथेओणा**—स० क्रि० (मं०) अनाज को मापना।
**पथेवणा**—स० क्रि० (सो०) ईंट बनाना, गोबर के उपले बनाना।
**पथेवा**—वि० (सो०) ईंट, चूल्हे आदि बनाने वाला व्यक्ति।
**पथोड़ा**—वि० (कां०) पिचका हुआ।
**पथोणा**—अ० क्रि० किसी वस्तु के दबाव में आकर पिस जाना, दब जाना।
**पथोणा**—स० क्रि० (सो०) बिखेरना।
**पथोला**—वि० स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट परंतु निकम्मा।
**पद**—पु० (सो०) उद्यापन के अवसर पर किया जाने वाला विशिष्ट दान।
**पद**—वि० (सि०) गणित विद्या में पाशे का एक अंक।
**पदयाहड़ा**—पु० (मं०) चारे की एक झाड़ी विशेष।
**पदर**—पु० (सि०) अचंभा। उपद्रव।
**पदरा**—वि० समतल।
**पदवे**—स्त्री० (शि०) पदवी, स्थान, पद।
**पदाइश**—स्त्री० (कु०) पैदाइश।
**पदाड़ी**—स्त्री० (बि०, मं०, ह०) Leptoder mislanceolata.
**पदारणो**—स० क्रि० (सि०) बच्चे को शौच करवाना।
**पदार्थ**—पु० अच्छा भोजन। धार्मिक कार्य।
**पदिन्न**—पु० (सो०) पोदीना।
**पदिन्नु**—पु० छोटा पक्षी।
**पदी**—वि० (शि०) पैदल।
**पदीक**—स्त्री० (मं०, चं०) छोटा पक्षी।
**पदीना**—पु० पोदीना।
**पदीनि**—स्त्री० (सो०) पोदीने की घटिया किस्म जिसमें छोटे पत्ते होते हैं तथा सुगंध कम होती है।
**पदीनी**—स्त्री० (बि०) बुलबुल, छोटा पक्षी।
**पदीनो**—पु० (शि०) पुदीना।
**पदु**—पु० (कां०) चाय की पत्तियां मलने के लिए बनी बांस की चटाई।।
**पदेड़ी**—स्त्री० (सो०) Spermadictglon suavegnlens.
**पदैणी**—स्त्री० (शि०) पुरोहित की पत्नी।
**पद्दर**—पु० (बि०, चं०) मैदान।
**पद्दर**—वि० (बि०) समतल।
**पद्रव**—पु० उपद्रव।
**पधरा**—वि० (कु०) समतल।
**पधराना**—स० क्रि० (शि०) प्रतिष्ठित करना, आदरपूर्वक बैठाना।
**पधाड़ी**—स्त्री० किसी देव या देवी की मनौती।

**पधारणा**—अ० क्रि० (शि०) किसी प्रतिष्ठित या पूज्य व्यक्ति का आना।
**पनओ**—पु० (मं०) उपनाम।
**पनजड्ड**—पु० (मं०) एक तांत्रिक क्रिया जिसमें आग के चमत्कार द्वारा पानी को एक बड़े घड़े में सोख कर एक विशेष शब्द उत्पन्न होता है जिसका अर्थ लोक धारणा में बाहर निकलना होता है।
**पनडूब्बा**—पु० (शि०) पानी में गोता लगाने वाला।
**पनपना**—अ० क्रि० पैदा होना।
**पनराह**—पु० (कु०) घराट में दाने डालने की जगह।
**पनरोणा**—स० क्रि० (शि०) धागे में पिरोना।
**पनवाड़**—पु० (सो०) एक छोटा पौधा जो प्रायः बरसात में उगता है तथा इसकी फलियों की सब्जी बनाई जाती है।
**पनशेड़**—स्त्री० (शि०) सीटी।
**पनशेड़**—पु० (सो०) अतिसार।
**पनशेड़े**—स्त्री० (शि०) सीटी।
**पनशेवड़िया**—पु० (सो०) एक प्रकार की गांठ विशेष।
**पनशोड़ना**—स० क्रि० (सो०) हरी तथा पतली छड़ी से पीटना।
**पनसेरा**—पु० (शि०) पांच सेर का माप।
**पनहरा**—वि० (शि०) पानी भरने वाला।
**पनांग**—पु० (कां०) पहनावा।
**पनाम**—पु० (मं०) होलिका दहन।
**पनाशड़ा**—पु० (शि०) पतला खून।
**पनिहार**—पु० पनघट।
**पनिहारी**—वि० पानी भरने वाला।
**पनीरक**—पु० Malva parviflora.
**पनेहूणी**—स्त्री० (कु०) पंडित को दिया जाने वाला पहरावा।
**पनेइणा**—अ० क्रि० (कु०) एक दूसरे के कान भरना।
**पनेओणा**—स० क्रि० (शि०) पालन-पोषण करना।
**पनेठ**—स्त्री० (सो०) बैलों को हांकने की छड़ी।
**पनेवणा**—स० क्रि० (सो०) पहनाना।
**पनैली**—स्त्री० (कु०, चं०) महामारी।
**पनैवड़ी**—स्त्री० (कां०) छोटी टोकरी।
**पनोगळा**—वि० (सो०) बेस्वाद, ऐसी सब्जी या दाल जिसमें पानी अधिक हो।
**पनोगा**—वि० (शि०) पानी से भीगा हुआ।
**पनोचा**—वि० (मं०) काना।
**पनोड़ी**—स्त्री० पायताना।
**पनोणा**—स० क्रि० (कु०) समझाना।
**पनोळ**—पु० (बि०) दे० पनोहला।
**पनोहला**—पु० पशुओं का गोबर; मल का ढेर।
**पन्नजालो**—पु० (सि०) बाल।
**पन्ना**—पु० जूते का ऊपरी हिस्सा।
**पन्ना**—पु० एक कीमती पत्थर। पृष्ठ।
**पन्नी**—स्त्री० (चं०) अन्न को हवा में साफ करते समय उड़ा अन्न और गर्द।
**पन्यारा**—पु० (मं०) तवे पर मलां जाने वाला घी या तेल।
**पन्हवार**—पु० (शि०) चक्रमर्द।
**पन्हैर**—पु० पनघट।
**पपड़ा**—पु० (शि०) लकड़ी का पतला छिलका।
**पपड़ी**—स्त्री० (कां०) Thynus serphyllum.
**पपड़ी**—स्त्री० पतली परत।
**पपड़ी**—स्त्री० (चं०, कु०) Padophyllum haxandrum.
**पपड़ीला**—वि० (शि०) जिस पर पपड़ी जमी हो।
**पपोटा**—पु० (शि०) आंख के ऊपर का परदा।
**पबित्तर**—पु० (शि०) पवित्र।
**पबोला**—पु० पीप से भरा घाव अथवा फोड़ा।
**पभळेरना**—स० क्रि० आलू आदि को राख में दबा कर पकाना।
**पमियाणा**—अ० क्रि० डर कर चीख मारना।
**पमाइश**—स्त्री० पैमाइश।
**पमाना**—पु० पैमाना।
**पमार**—पु० बीमारी में या बेहोशी में दूसरे लोक का भ्रमण।
**पमेशर**—पु० (कु०) परमेश्वर।
**पमेसरी**—स्त्री० (कु०) देवियों की एक श्रेणी।
**पयक्कड़**—वि० शराबी, अधिक पीने वाला।
**पयर**—स्त्री० (सि०) पहर।
**पयलका**—वि० पहले वाला।
**पयाःर**—पु० (सो०) पशुओं को दिया जाने वाला चारा।
**पयाउ**—पु० सबील।
**पयाकड़**—वि० शराबी, पियक्कड़।
**पयाग**—पु० (सो०) सवेरा, प्रातः।
**पयाज़ी**—वि० प्याज़ के रंग का।
**पयाणा**—स० क्रि० पिलाना।
**पयापो**—स्त्री० (सो०) प्यास।
**पयाशा**—पु० प्रकाश।
**परंगाल**—स्त्री० (कां० चं०) जलाने के लिए विभिन्न तरह से काटी गई पतली लकड़ी।
**परंड**—पु० (ऊ०) बांदा, एक पौधा विशेष।
**परंड**—पु० बड़े पेड़ पर उगने वाला छोटा पौधा, पेड़ पर लगने वाली बेल जो मूल पेड़ को सुखा देती है।
**परंत**—अ० उपरांत।
**परंद**—पु० (कां०) Loranthus ligestrinus. एक पौधा विशेष।
**पर**—अ० अर्थात्, यानि, ऊपर।
**परओ**—पु० पथिकों और यात्रियों के पीने के लिए रास्ते के किनारे किया गया पानी का प्रबंध प्याऊ।
**परकम्मा**—स्त्री० परिक्रमा।
**परका**—अ० पिछले वर्ष का।
**परकाउणा**—स० क्रि० (सि०) **फेंकना।**
**परकार**—पु० वृत्त की परिधि बनाने, नापने आदि का दो भुजाओं वाला एक आला।
**परकार**—पु० (शि०) विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन।
**परकाला**—पु० (शि०) खंड, टुकड़ा।
**परकास**—पु० (शि०) प्रकाश।
**परको**—अ० (शि०) पिछला वर्ष।
**परकोप**—पु० (कु०) प्रकोप।

**परखणा**—स० क्रि० परखना, जांच करना।
**परखणे**—स्त्री० (सि०) सोना जांचने का पत्थर; पहचान।
**परगट**—वि० (शि०) प्रकट।
**परगड़ा**—पु० सुबह का उजाला, उषाकाल।
**परगड़ा**—वि० (कु०) साफ, खुला (स्थान), उजला।
**परगणा**—पु० इलाका, क्षेत्र, परगना।
**परगाश**—पु० (सो०) प्रकट होने का व्यापार; लाभ।
**परगाश**—पु० (शि०) उजाला।
**परघट**—वि० (शि०) प्रकट।
**परचंड**—वि० प्रचंड।
**परचम**—पु० झंडा।
**परचा**—पु० ज़मीन की जमाबंदी या इंतकाल आदि की नकल।
**परचा**—पु० प्रश्नपत्र, परीक्षापत्र।
**परचाणा**—स० क्रि० (शि०) राज़ी करना।
**परचाना**—स० क्रि० बहलाना। अ० क्रि० जंचना।
**परचार**—पु० (शि०) प्रचार।
**परचावणा**—स० क्रि० (सो०) बहलाना, खुश करना।
**परचाहला/ते**—पु० (मं०) आश्विन, कार्तिक मास में रात को लगने वाले मेले।
**परची**—स्त्री० पत्र, छोटा कागज़।
**परछंडा**—पु० भार। बौछार।
**परछटी**—स्त्री० 'लुहाल' के साथ लगने वाली छोटी लकड़ी।
**परछां**—स्त्री० परछाई, दूसरे की छाया।
**परछांवा**—स्त्री० छाया।
**परजणा**—स० क्रि० (चं०) प्रीतिभोज से पूर्व वधू पक्ष द्वारा वधू को डोली में बिठा कर कुछ दूर ले जाना तथा वापिस लाना।
**परजतण**—पु० (शि०) पंचरत्न जो मरते समय मुंह में डाला जाता है।
**परजा**—स्त्री० प्रजा।
**परजाई**—स्त्री० दूसरों की बेटी।
**परजात**—वि० (सि०, शि०) दूसरी जाति का।
**परजादुणा**—अ० क्रि० (सो०) लाड़ प्यार से बिगड़ना।
**परत**—पु० प्रत्युत्तर, जवाब।
**परतक्ष**—पु० (शि०) प्रत्यक्ष।
**परतच्छ**—वि० प्रत्यक्ष।
**परतणा**—अ० क्रि० लौट कर आना; स० क्रि० बदलना।
**परतणा**—पु० (ऊ०, कां०) पलटा।
**परतणी**—स्त्री० अंगोछा।
**परतणू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) पलटा।
**परतणू**—पु० छोटा सा अंगोछा।
**परतने**—स्त्री० (शि०, सि०) धोती, अंगोछा।
**परतला**—पु० (शि०) तलवार, खुखड़ी रखने हेतु कपड़े या चमड़े की बनी चौड़ी पट्टी।
**परताप**—पु० प्रताप।
**परतीणा**—अ० क्रि० उलट जाना।
**परतेजणा**—स० क्रि० (शि०) त्याग करना।
**परतेवणा**—स० (क्रि०, सो०) परीक्षा लेना, आजमाना।
**परतोणा**—अ० क्रि० मुड़ना।
**परत्याई**—स्त्री० (कां०, मं०) पुरोहित का व्यवसाय।
**परत्याणा**—स० क्रि० आज़माना।
**परथानी मैहिना**—पु० (चं०) पौष मास। 'परथानी मैहिना' का भाव काला महीना से होता है।
**परदखणा**—स्त्री० प्रदक्षिणा।
**परदेश**—पु० प्रांत, दूसरा देश।
**परदेशी**—स्त्री० (कु०) परदेसी।
**परदेसी**—पु० (ऊ०) चिलबिल, एक जंगली पेड़।
**परदेसी बूटी**—स्त्री० (शि०) Lantana camara.
**परधान**—पु० प्रधान।
**परधाम**—पु० (शि०) बैकुंठ।
**परना**—पु० विशेष प्रकार का तौलिया।
**परनाना**—पु० पड़नाना।
**परनानी**—स्त्री० पड़नानी।
**परनाम**—पु० प्रणाम।
**परनाला**—पु० पानी बहने का रास्ता, छोटा नाला।
**परनाह्वा**—पु० (बि०) पहनावा।
**परपंच**—पु० (शि०) प्रपंच।
**परपंची**—वि० (शि०) प्रपंची।
**परपराहन**—स्त्री० (शि०) मिर्चों का चरपरापन।
**परपाठी**—स्त्री० प्रथा, परिपाटी।
**परबंध**—पु० (शि०) प्रबंध।
**परबत**—पु० पर्वत।
**परबस**—वि० दूसरे के अधीन, विवश।
**परबस्सा**—वि० अन्य पर आश्रित।
**परबाच्छणा**—अ० क्रि० (मं०) किसी भूत प्रेत का छल लगना।
**परबिले**—अ० (शि०) उधर को।
**परबिष्टा**—पु० प्रविष्टा।
**परबीजण**—पु० (सि०) जुगनू।
**परबोध**—पु० (शि०) प्रबोध, ज्ञान।
**परमल**—पु० धान की एक किस्म।
**परमाण**—पु० सबूत, अंदाजा, प्रमाण।
**परमातमा**—पु० परमात्मा।
**परमारथ**—पु० (शि०) परमार्थ।
**परमुख**—वि० (शि०) प्रमुख; विमुख।
**परमेसर**—पु० परमेश्वर।
**परमेसरारीगाय**—स्त्री० (मं०) एक लंबा कीड़ा जो हाथ लगाने पर गोल घेरा बना लेता है।
**परयारा**—पु० (बि०, ह०, मं०) बरगद।
**परयाल्हे**—अ० ऊपर।
**परयाशा**—पु० (सो०) प्रकाश।
**परयाशापख**—पु० शुक्ल पक्ष।
**परयासा**—पु० रोशनी, प्रकाश।
**परयासी**—वि० चांदनी (रात)।
**परयाहला/ते**—पु० (मं०) आश्विन-कार्तिक में रात को लगने वाले ग्रामीण मेले।
**परयूणी**—स्त्री० (सि०) आटा छानने की छलनी।
**परल**—वि० (सो०) व्यर्थ।

**परळ-परळ**—अ० छम-छम।
**परलय**—स्त्री० (शि०) प्रलय।
**परला**—वि० उस पार का, दूर का।
**परलै**—स्त्री० प्रलय।
**परवा**—पु० (सि०) पूर्व से आने वाली हवा।
**परवाड़ा**—पु० (मं०) कांटेदार जंगली वृक्ष।
**परवाण**—स्त्री० (चं०) उड़ान।
**परवाणा**—वि० (मं०, सो०) पुराना।
**परवाना**—पु० भ्रमर।
**परवाना**—पु० (सो०) लिखित आदेश।
**परवाल**—पु० (मं०) धान का घास।
**परवाल**—पु० (शि०) मूंगा।
**परवाशू**—वि० (मं०) अपरिचित (लोग)।
**परवासी**—पु० (शि०) प्रवासी।
**परशणा**—स० क्रि० (मं०) भेंटना, दर्शन करना।
**परशणो**—स० क्रि० (शि०) देखना।
**परशाद**—पु० प्रसाद, हलवा।
**परशी**—अ० (कु०, मं०) परसों।
**परशु**—पु० (शि०) कुठार, कुल्हाड़ी।
**परसन**—वि० प्रसन्न।
**परसयान**—वि० परेशान।
**परसा**—पु० (शि०) कुठार-कुल्हाड़ी।
**परसा**—पु० पसीना।
**परसाही**—स्त्री० बारात जाने से पहले की एक रस्म।
**परसीना**—पु० पसीना।
**परसूं**—अ० परसों।
**परसूणा**—अ० क्रि० गाय, भैंस व बकरी के थनों का दूध से भर जाना, पशु द्वारा थनों में दूध उतारना।
**परसूत**—पु० (सो०) संतान।
**परसेद**—पु० (कु०) पसीना।
**परसेरना**—स० क्रि० दुधारू पशुओं को दूध दूहने से पहले दाना, घास आदि डाल कर थनों को सहलाना।
**परसोकणा**—वि० परसों का।
**परस्वार्थ**—पु० (सो०) परमार्थ।
**परहार**—पु० (शि०) प्रहार।
**परहुणो**—पु० (मं०) मेहमान।
**परहेलणा**—स० क्रि० (कु०) पीठ पर बोझ कसे नीचे बैठे व्यक्ति को मामूली धक्का देना ताकि वह उठ सके।
**परहेलना**—स० क्रि० (शि०) निरादर करना।
**परहों**—पु० दे० परओ।
**परहयाई**—वि० ढोलक बजाने वाला।
**परांउठा**—पु० परांठा।
**परांदा**—पु० (सि०) पूजा में काम आने वाला लाल रंग का धागा।
**परांदी**—पु० औरतों द्वारा बालों की चोटी में लगाई जाने वाली धागों की वेणी।
**परा**—अ० परे, उस पार।
**परा**—पु० (शि०) पहरा।
**परा**—पु० निब, कलम के होल्डर में खोंसी जाने वाली लोहे आदि की नुकीली वस्तु जिससे लिखा जाता है।
**पराइश्चित**—पु० प्रायश्चित्त।
**पराउणा**—पु० (बि०) जामाता, दामाद।
**पराउणा**—पु० अतिथि।
**पराउणी**—स्त्री० (शि०, सि०) जल्दी, जल्दबाज़ी।
**पराओड़**—पु० (मं०) छत का वह स्थान जहां से वर्षा का पानी नीचे गिरता है।
**पराओणा**—पु० (शि०, सि०, सो०) मेहमान।
**पराओळी**—स्त्री० (शि०) छत से बहता वर्षा का जल।
**पराओळी**—स्त्री० (सि०) 'बान' वृक्ष की कोंपल।
**पराकड़ी**—स्त्री० गुझिया, पूरियों के बीच मेवा डाल कर तैयार किया विशेष पकवान।
**पराचणा**—अ० क्रि० (कु०) हैरान होना।
**पराचिणा**—अ० क्रि० (कु०) दे० पराचणा।
**पराच्छ**—पु० (मं०) खलियान के अन्न, घास आदि को वर्षा से बचाने के लिए बनाया गया घर।
**पराछणा**—अ० क्रि० किसी भयानक दृश्य को देख कर बेहोश हो जाना।
**पराछिणा**—अ० क्रि० (कु०) भय के कारण परेशान होना, हैरान होना।
**पराठ**—पु० (सि०) ऐसी बकरी जिसने अभी बच्चा न जना हो।
**पराड़ा**—पु० (कु०) विशेष खाद्य पदार्थ।
**पराड़ा**—पु० (कां०, शि०, सि०) टेढ़ी वस्तु।
**पराढ़ना**—अ० क्रि० (शि०) लकड़ी का टेढ़ा होना।
**पराण**—पु० पुराण।
**पराण**—पु० सांस, प्राण, शरीर।
**पराणनो**—स० क्रि० (शि०, सि०) पहचानना।
**पराणा**—स० क्रि० (कु०) ढूंढ़ना, तलाश करना, खोजना।
**पराणा**—वि० पुराना, प्राचीन।
**पराणी**—स्त्री० मृत व्यक्ति, दिवंगत आत्मा।
**पराणो**—वि० प्राचीन।
**परात**—स्त्री० आटा गूंधने का पात्र।
**परातड़ा**—पु० लकड़ी की परात।
**परातड़ी**—स्त्री० (कां०) साग काटने का यंत्र।
**पराथ**—स्त्री० क्रम, पंक्ति।
**पराद**—पु० अपराध।
**परानण**—पु० (मं०) लाल मिट्टी से किया लेप।
**परायणा**—पु० (सि०, सो०) दूसरा विवाह, विवाह की एक रीति जिसमें दूसरा विवाह करने वाला पुरुष स्त्री के पहले पति को धन देता है।
**परायणु**—पु० (सि०) बाराती।
**परायेंठ**—स्त्री० (बि०) बैलों को हांकने की लाठी।
**परार**—अ० पिछले से पिछला वर्ष।
**परार**—पु० (मं०) दर्रा।
**परारका**—वि० (सो०) पिछले वर्ष का।
**परारके**—अ० (सो०) पिछले वर्ष।
**परारथना**—स्त्री० प्रार्थना।
**परारब्ध**—पु० (शि०) प्रारब्ध, भाग्य।

**पराळ**—पु० धान का घास।
**पराला**—वि० (शि०, सि०) वह भूमि जहां प्रातः सूर्य की किरणें पहुंचे।
**पराली**—स्त्री० (कु०, मं०) जिस ज़मीन पर धान की काश्त की जाती है।
**पराली**—स्त्री० (कां०) सख्त भूमि।
**पराळी**—वि० (शि०) पहाड़ का धूप वाला भाग।
**पराले**—वि० (सि०) धूप वाली (जगह)।
**परावणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) पहनाना।
**परावळि**—स्त्री० (सो०) छत के किनारों पर लगी स्लेट, टीन या घास की परत जिससे वर्षा का पानी छत से धरती पर गिरता है।
**परासणा**—स० क्रि० (मं०) थोड़ा-थोड़ा सेंक लगाना।
**पराहं**—अ० दूसरी ओर।
**पराहुड़ा/ड़े**—पु० (कु०) विवाह के कुछ समय बाद दूल्हा-दुलहन द्वारा दुलहन के मायके ले जाया गया विशेष पकवान।
**पराहुणा**—पु० (कु०) मेहमान।
**पराहुणे**—पु० (मं०) विवाह का प्रथम दिन।
**पराहले**—अ० ऊपर, दूसरी ओर।
**पराहवा**—पु० (सि०) पहरावा।
**परिंदा**—पु० पक्षी।
**परिऊं**—पु० (बि०) मौं।
**परियारा**—पु० (ऊ०) एक वृक्ष विशेष।
**परिवणा**—पु० (सो०) अन्न छानने की बड़ी छलनी।
**परिवणी**—स्त्री० (सि०, सो०) आटा छानने की छलनी।
**परी**—स्त्री० (बि०) प्रीति भोज।
**परीऊणी**—स्त्री० (सि०, सो०) दे० परिवणी।
**परीण**—स्त्री० (सो०) गाय या भैंस आदि के ब्याने की गिनती।
**परीत**—स्त्री० (कु०) प्रीत, प्रेम।
**परीहणा**—स० क्रि० परोसना, खाने वालों के सामने भोज्य वस्तुएं रखना।
**परीहा**—पु० (कां०, बि०) ऐसे व्यक्ति को भेजा गया भोजन जो प्रीति भोज में न आया हो।
**परीहा**—पु० (कु०) परोसा गया भोजन।
**परीहलड़**—वि० (कां०) विवाह में भोजन परोसने वाला।
**परीहया**—पु० एक बार में जितना भोजन परोसा गया हो उतना भर भोजन।
**परूं**—अ० पिछला वर्ष।
**परूआं**—पु० (मं०) कई तहों वाली बारीक पूरियां।
**परूआह**—स्त्री० (कु०) परवाह।
**परूहयां**—स्त्री० (कां०) आटे में खमीर डालकर बनाई गई बड़ी रोटियां।
**परूई**—स्त्री० (बि०) जंगली अंजीर के कोमल पत्तों या फलों की सब्जी।
**परूटणी**—स्त्री० (मं०) निंदा।
**परूठी**—वि० (मं०) पवित्र, जो जूठा न हो।
**परूणा**—स० क्रि० पिरोना।
**परेंदे**—अ० (कु०) नीचे।
**परेःज**—पु० (सो०, शि०) परहेज़।
**परेउगण**—स्त्री० (कु०) अंदाज़ा।
**परेखणा**—स० क्रि० (कु०) परीक्षा लेना।
**परेखिणा**—स० क्रि० (कु०) परखा जाना।
**परेग**—स्त्री० कील।
**परेगणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) कील लगाना।
**परेटा**—वि० (सि०) सीधा।
**परेटा**—पु० लपेट।
**परेड़**—स्त्री० अहंकार।
**परेड़ना**—स० क्रि० (सि०) मनमानी करना।
**परेड़ना**—स० क्रि० अशुभ अवसर पर किसी वस्तु को सिर पर फेर कर फेंकना।
**परेहा**—अ० दूसरी ओर।
**परेण**—पु० (सि०) निशान, चिह्न, पहचान।
**परेणना**—स० क्रि० (शि०) पहचानना।
**परेणा**—स० क्रि० (कु०) पूरा करना, पर्याप्त होना।
**परेत**—पु० प्रेत।
**परेतना**—स० क्रि० पलटना, बदलना।
**परेळा**—पु० (शि०) ढलान।
**परेवणा**—स० क्रि० (सो०) पहनवाना।
**परेवणा**—स० क्रि० (सि०) गूंथना।
**परेशन**—पु० ऑपरेशन।
**परैंठ**—स्त्री० (बि०) दे० परैण।
**परैज़**—पु० परहेज़।
**परैट**—पु० (कां०) टोकरे का तला।
**परैड़**—स्त्री० (चं०) नीचे की जगह, ऊबड़-खाबड़ जगह।
**परैण**—स्त्री० हल चलाते समय बैलों को हांकने के लिए प्रयुक्त नोकदार छड़ी।
**परैणो**—वि० (शि०) पुराना।
**परैलड़ी**—स्त्री० (ह०) छुरी, लकड़ी का हत्था लगा सब्जी आदि काटने का औज़ार।
**परैनण**—स्त्री० (कु०) लाल मिट्टी।
**परैन्नळ**—स्त्री० (कां०) बांस की बारीक तीली।
**परैरा**—पु० एक प्रकार का वृक्ष जिसमें लाल रंग के छोटे-छोटे सुगंध रहित फूल लगते है।
**परैशा**—पु० प्रकाश।
**परैही**—स्त्री० (चं०) पसली।
**परों**—पु० (शि०) पक्षियों के पंख।
**परोंठा**—पु० परांठा।
**परोः**—पु० एक बार तलने या भूनने के लिए डाली जाने वाली वस्तु की मात्रा।
**परोइत**—पु० (सो०) पुरोहित।
**परोकणा**—वि० गत वर्ष का, गत वर्ष से।
**परोका**—वि० (चं०) दे० परोकणा।
**परोखा**—वि० परोक्ष।
**परोजण**—पु० (कु०, शि०) प्रयोजन।
**परोजा**—पु० (चं०) एक धातु।

**परोड़ा**—पु० (मं०) दीवारों पर मिट्टी पोतने का काम।
**परोणा**—स० क्रि० पिरोना।
**परोळना**—स० क्रि० (कु०) मिलाना, मिश्रित करना।
**परोळना**—स० क्रि० लीपना।
**परोला**—पु० (बि०) पीठ का दर्द।
**परोशणा**—स० क्रि० (सो०) परोसना।
**परोसणा**—स० क्रि० परोसना।
**परोहड़**—पु० दे० पराहुड़ा-ड़े।
**परोहणक**—स्त्री० मेहमाननवाज़ी।
**परोहा**—पु० प्यासों को धर्मार्थ पानी पिलाने का स्थान।
**परोहुण**—स्त्री० मेहमाननवाज़ी।
**परोहुणा**—स० क्रि० (कु०) दूल्हा-दुलहन की आरती उतारना।
**परोहत**—पु० पुरोहित, पंडित।
**परोहलणा**—अ० क्रि० (सि०) कार्य में मस्त होना।
**परौंगड़ा**—वि० (कु०) प्रकाशमय, प्रकाश युक्त।
**परौटा**—पु० (कां०, सो०) खेत में हल चलाते समय काम आने वाला उपकरण।
**परौळ**—स्त्री० मुख्य द्वारा, ड्योढ़ी।
**परौळी**—स्त्री० वह स्थान जहां पर छत से पानी टपकता हो।
**परौलू**—पु० (मं०) बड़ा दरवाज़ा।
**परौही**—स्त्री० (कु०) पसली।
**परौहुणा**—पु० अतिथि।
**पर्याशा**—पु० (कु०) उजाला, प्रकाश।
**पर्याशी**—वि० (कु०) उजली।
**पलंग**—पु० निवार की चारपाई।
**पलंगह्रोटू**—पु० (सि०) छोटे बच्चे का झूला।
**पलंगूड़ा**—पु० झूला।
**पलंघोड़ा**—पु० (मं०) लकड़ी का पलंग।
**पलंदा**—पु० (शि०) पैकेट, पुलिंदा।
**पल**—पु० (मं०) घड़े का ढक्कन।
**पल**—पु० क्षण, झपकी।
**पळकेरना**—स० क्रि० उकसाना।
**पलग**—पु० (शि०) पलंग।
**पलगे**—स्त्री० (शि०) देवता की पालकी। खाट।
**पलगेरा**—पु० (सो०) कहार।
**पलगै:रा**—वि० (सि०) किसी का प्रशंसक।
**पलनयोर**—वि० (सि०) झूठा, प्रशंसक।
**पलचंहडापाणा**—स० क्रि० चुगली करके झगड़ा करवाना।
**पलचाट**—वि० (चं०) लड़ाका।
**पळचूहंडा**—पु० उलझन।
**पलचोणा**—अ० क्रि० उलझना, लिपटना।
**पलचौ**—पु० उलझन।
**पळटण**—स्त्री० (सो०) पलटन, समूह।
**पलटणा**—अ० क्रि० पलटना, उड़ेलना।
**पळटा**—पु० (सो०) पलटा, पलटने का उपकरण।
**पळटावणा**—स० क्रि० (सो०) मोड़ना, पलटाना, लौटाना।
**पलड़ा**—पु० तराजू का पलड़ा।
**पलड़ा**—पु० (कां०) रान का भाग।

**पलणा**—अ० क्रि० किसी द्वारा पाला जाना।
**पलत्थी**—स्त्री० पालथी।
**पलधा**—पु० दही में छौंक लगा कर पकाया गया व्यंजन।
**पलना**—अ० क्रि० खेती का मुरझा जाना।
**पलपला**—वि० (शि०) मुलायम, नरम।
**पलपलाणा**—अ० क्रि० (शि०) आंखों में आंसू लाना और भर्राए गले से बोलना।
**पळम**—पु० एक फल विशेष, आलूचा।
**पलमान**—पु० (बि०, ह०) Botheriocheoa intermedia.
**पलयाणा**—स० क्रि० तेज करना, लुहार द्वारा औज़ार तेज़ करना।
**पलयोण**—स्त्री० (सि०) शस्त्र तेज करने का पत्थर।
**पळशेट**—पु० (सो०) बांधने की क्रिया; रस्सी का लपेट।
**पलशेटा**—पु० (सि०) घेरा।
**पळशेटा**—पु० उठाकर फैंकने की क्रिया।
**पलसंग**—पु० (सि०) प्रसंग।
**पळसीना**—पु० (सि०) पसीना।
**पलसेटा**—पु० पलटने का कार्य या भाव, पलटा, धक्का।
**पलस्तर**—पु० चूना, कंकड़, सीमेंट-बालू आदि से तैयार किया हुआ एक तरह का लेप जो दीवार आदि पर चढ़ाया जाता है।
**पलहूड़**—पु० (कां०) 'पराळ' का व्यवस्थित ढेर।
**पलांगा**—पु० कोंपल।
**पलांगा**—पु० (मं०) तना।
**पलांत**—पु० (सि०) कुहरा, पाला।
**पळा:**—पु० (सो०) पलाश का वृक्ष।
**पळाई**—स्त्री० (शि०) पालने का खर्च।
**पलाउण**—स्त्री० (कु०) कृषि औज़ार तेज़ करने का पारिश्रमिक जो प्रायः अन्न के रूप में दिया जाता है।
**पलाउणो**—स० क्रि० (शि०) पिलाना।
**पळाऊ**—पु० (कु०) साग की सब्जी या दाल में डाला जाने वाला चावल या आटे का घोल।
**पलाओ**—पु० सब्जी चावल को मिलाकर पकाया पकवान।
**पलाख**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) नंदी वृक्ष।
**पलाखेया**—स्त्री० (ह०) फलीदार सब्जी। वृक्ष विशेष।
**पलागे**—पु० (मं०) टहनियों का अगला भाग।
**पलाठा**—पु० पालथी।
**पलाण**—पु० (सो०) बिस्तार, फैलाव, बिखरा हुआ सामान।
**पलाणा**—स० क्रि० पिलाना।
**पळाणा**—स० क्रि० (कु०) कृषि औज़ार तेज़ करना।
**पळाद**—पु० वृक्ष की चोटी।
**पलाश**—पु० (सि०, शि०) पक्षी विशेष। एक वृक्ष विशेष।
**पलास**—पु० (कु०) दे० पराओळी।
**पलासिणा**—अ० क्रि० (कु०) कोंपलें निकलना।
**पळाह**—पु० पलाश वृक्ष।
**पलाहणा**—अ० क्रि० (कु०) खरपतवार निकलना।
**पलिंदा**—पु० (सि०) बड़ा रंदा।
**पलिदा**—वि० बुरी तरह पिचका हुआ।
**पलियांदरी**—पु० (कु०) 'रुचा' के बाहर बांधी जाने वाली

'पराळ' की बनी बड़ी जूतियां।
**पलियातरी**—स्त्री० (कु०) सब्जी काटने के लिए बनी तीन टांगों वाली दांती।
**पलियार**—पु० (कां०) जूते में सिलाई करने का औज़ार।
**पळी**—स्त्री० (सि०) बस्ती।
**पळी**—स्त्री० (सि०) तेल मापने का यंत्र।
**पळीजाणा**—अ० क्रि० फलों व पत्तों का कुम्हलाना।
**पलुकड़न**—वि० (बि०) पालतू।
**पलुह्राण**—पु० पहलवान।
**पलू**—पु० दे० पल्ला।
**पळू**—पु० (कु०, चं०) सफेद बाल।
**पलूकड़**—वि० (कां०) अच्छी तरह पाला हुआ।
**पलूण**—पु० (चं०) मिट्टी के कोठे के नुक्कड़ पर लगे छोटे किंतु चौड़े पत्थर या स्लेट।
**पलेखणो**—स० क्रि० (सि०) बात बनाना।
**पलेजो**—पु० (सि०) जौ का आटा।
**पलेटणा**—स० क्रि० लपेटना, समेटना, इकट्ठा करना।
**पलेठणा**—स० क्रि० झाड़ी आदि काटना।
**पलेथण**—पु० बेकार का सामान।
**पलेथण**—पु० (सि०, शि०) गुंधे हुए आटे की लोई में लगाया जाने वाला सूखा आटा।
**पलेदार**—पु० (शि०) दुकान में सामान तोलने वाला मनुष्य।
**पलेदी**—स्त्री० (कु०) काम के बदले काम पर जाने वाली स्त्री।
**पलेधू**—वि० (कु०, मं०) बदले में काम करने वाला।
**पलेर**—स्त्री० (सि०) बकरे की ज़ोर से बोलने की ध्वनि।
**पलेरना**—स० क्रि० (कां०) चाय की पत्तियों को छाया में सुखाने हेतु रखना।
**पलेरना**—स० क्रि० (कु०) 'बान' आदि की चारे के लिए काटी गई टहनियों को बांधने हेतु व्यवस्थित करना।
**पलेल**—स्त्री० (ऊ०, कां०) समय से पहले मुरझाया हुआ फल।
**पळेल**—स्त्री० (कु०) बकरी आदि की भय से मिमियाने की ध्वनि।
**पळेळा**—स्त्री० (कु०) भेड़-बकरी के मिमियाने की क्रिया।
**पळेवणा**—स० क्रि० (सो०) हंसिया, कुल्हाड़ी आदि को तेज़ करना।
**पळेवणी**—स्त्री० (सो०) हंसिया, कुल्हाड़ी आदि तेज करने का पत्थर।
**पलेशा**—स्त्री० (कु०) बाहरी धागा, ऐंठन, बट।
**पळेशा**—पु० लपेट।
**पलेस**—स्त्री० लपेट, गांठ, लिपटी हुई वस्तु।
**पलेसणा**—स० क्रि० लपेटना, किसी को उलझाना।
**पलेसिणा**—अ० क्रि० (कु०) लिपट जाना।
**पलैओ**—पु० (सि०) साग में डाला जाने वाला चावल के आटे का घोल।
**पलैखो**—पु० (सि०) झूठ-मूठ बात बनाने का भाव।
**पलैजा/जों**—पु० (मं०) पलटा; लोहे, पीतल या काठ की चपटी कलछी।
**पलैर**—स्त्री० (कां०) तीखी नोक वाली सुई।
**पलोउण**—स्त्री० (कु०) बड़ा पत्थर जिस पर घिसा कर कृषि औज़ार या शस्त्र तेज किए जाते हैं।
**पलोकड़**—वि० पालतू।
**पलोकणा**—स० क्रि० मरोड़ना।
**पलोटण**—स्त्री० (कु०) पलक।
**पलोड़**—स्त्री० काले दाग वाला आम जो कच्चा होते हुए भी मीठा होता है।
**पलोड़िना**—अ० क्रि० (कु०) कंबल, चद्दर आदि ओढ़ना।
**पलोढ़**—पु० ओढ़ने के कंबल की लपेट।
**पलोण**—स्त्री० (चं०) किसी को बच्चा अथवा पशु को पालने के लिए दिया गया धन।
**पलोणा**—अ० क्रि० (कां०) मुरझाना, पाला जाना।
**पलोत्थर**—पु० शस्त्र या औज़ार तेज़ करने का पत्थर।
**पलौंच**—पु० (सि०) Ulmus wallichiana.
**पलौतो**—पु० (मं०) नमक पीसने का पत्थर।
**पलौथा**—पु० (कां०, ह०) दे० पलोत्थर।
**पलौनो**—पु० (मं०) दे० पलौतो।
**पळयाई**—स्त्री० (मं०) तिलहन, तेल के बीज।
**पळयाई**—स्त्री० कृषि औज़ार तेज करने हेतु दिया गया पारिश्रमिक।
**पल्यार**—स्त्री० (कु०, चं०) जंगलों में चराते समय भेड़-बकरियों का दोपहर का आराम।
**पल्यार**—पु० जूते सीने का औज़ार।
**पल्यावण**—स्त्री० (मं०) तेल निकालने की मजदूरी।
**पल्योरा**—पु० (ऊ०) दे० परियारा।
**पल्ल**—स्त्री० सूअर के बैठने की क्रिया।
**पल्ला**—पु० कपड़े का छोर, गोद, आंचल, चादर का छोर।
**पल्ली**—स्त्री० (कां०) कमरे के साथ रसोई आदि के लिए जोड़ा हुआ स्थान।
**पल्ली**—स्त्री० घास का मकान, छोटा मकान।
**पल्ली**—स्त्री० (सि०) बोरी के टुकड़े।
**पल्लेदार**—पु० मज़दूर।
**पल्लेदारी**—स्त्री० (सो०) सामान उठाने का काम।
**पल्वाचणा**—स० क्रि० (सि०) खा जाना।
**पल्हल**—वि० वह भैंस जिसने पहली बार बच्चा जना हो।
**पवाड़ा**—पु० (सि०) वीरगाथा।
**पश**—पु० (सो०) चूल्हे के पास का वह स्थान जहां लकड़ियां रखी जाती हैं।
**पशा**—स्त्री० (चं०) करवट।
**पशकड़ि**—स्त्री० (सो०) पीठ।
**पशड़ी**—स्त्री० (शि०) पार्श्व, कक्ष के नीचे का या छाती के दायें-बायें का भाग।
**पशड़े**—पु० (मं०) किनारा।
**पशड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) ऊपर-ऊपर से काटना।
**पशमीना**—पु० (सो०) पशम।
**पशलणो**—अ० क्रि० (सि०) बेकार की बात करना।
**पशलणो**—अ० क्रि० (सि०) नींद में बड़बड़ाना।
**पशळना**—अ० क्रि० (सो०) बकवास करना, ज़ोर से बोलना।

**पशलाना**—अ० क्रि० (शि०) हैरान होना।
**पशलुना**—अ० क्रि० (सो०) बकवास करना।
**पशळेवणा**—अ० क्रि० (सो०) बहकाना।
**पशलो**—वि० (सि०) तिरछा।
**पशाई**—स्त्री० (सो०) पिसाई, पीसने की मज़दूरी।
**पशाटण**—पु० (सो०) छड़ी की मार।
**पशाटणा**—स० क्रि० (सो०) छड़ी से पीटना।
**पशिंद**—स्त्री० पसंद।
**पशिकुणा**—अ० क्रि० (सो०) अकड़कर बोलना, झगड़ना।
**पशिड़कणा**—अ० क्रि० (कु०, सो०) फिसलना।
**पशिड़कणा**—वि० (सो०) फिसलनयुक्त।
**पशुड़**—स्त्री० (कु०) करवट।
**पशो**—पु० (शि०) पहलू।
**पशोका**—वि० आखिरी, अंतिम।
**पशोका**—स्त्री० (कु०) गप्प, झूठी बात।
**पशोड़ी**—स्त्री० (कु०) पुश्त, पीढ़ी।
**पश्वाक**—स्त्री० (मं०) पोशाक।
**पस**—वि० (शि०) मुट्ठी भर।
**पसड़ी**—स्त्री० (मं०) पसली।
**पसतोल**—स्त्री० (शि०) पिस्तौल।
**पसनी**—स्त्री० (सि०) अनाज में लगने वाला कीड़ा।
**पसम**—स्त्री० पशम।
**पसरना**—अ० क्रि० (शि०) टांगें फैलाना, लेटना।
**पसरना**—अ० क्रि० घुसना।
**पसरूना**—अ० क्रि० (सो०) लेटे रहना, नाजायज़ अधिकार जमाना।
**पसवाज**—स्त्री० घघरी की तरह की औरतों की पोशाक।
**पसाका मारणा**—स० क्रि० तलाश करना।
**पसारणा**—स० क्रि० फैलाना।
**पसारी**—स्त्री० नीचे का बरामदा।
**पसारूना**—स० क्रि० (सो०) हाथ बढ़ाना, अधिकार बढ़ाना।
**पसावा**—पु० नष्ट प्रायः, बुरी दशा।
**पसाहुणा**—स० क्रि० घर को सजाना।
**पसिंद**—स्त्री० पसंद।
**पसीजणा**—अ० क्रि० (सो०) दया से पिघलना।
**पसीजणा**—अ० क्रि० थकावट से पसीना आना।
**पसौकड़**—स्त्री० पार्श्व।
**पस्ताणा**—अ० क्रि० (सि०) पछताना।
**पस्तावा**—पु० पछतावा, अफ़सोस, पश्चात्ताप।
**पस्तौल**—पु० पिस्तौल।
**पहचाणणा**—स० क्रि० पहचानना।
**पहरणा**—स० क्रि० पहनना।
**पहरणा**—स० क्रि० (सि०) मृत व्यक्ति के लिए जलाये हुए दीपक के पास बैठे रहना, पहनना।
**पहरना**—स० क्रि० रात भर जागते रहना, पहरा देना।
**पहरना**—पु० (मं०) एक पशु **बीमारी।**
**पहरी**—पु० चौकीदार।
**पहलारन**—वि० पहली बार बच्चा देने वाली गाय या भैंस।
**पहाड़ा**—पु० (शि०) किसी अंक की गुणन सूची।
**पहाड़िया**—पु० एक देवता जो गांवों में बस्तियों के निकट रहता है।
**पहाड़िया**—वि० (शि०) पहाड़ में रहने वाला।
**पहिणो**—स० क्रि० (शि०) पीसना।
**पहियां**—स्त्री० (मं०) नवरात्रों में कन्याओं द्वारा गाया जाने वाला गीत।
**पहुंरो**—पु० (सो०) मधुमक्खियां।
**पहुण**—पु० चावलों को पका कर बनाया आहार विशेष।
**पहरी**—स्त्री० (बि०, मं०) तिल्ली बढ़ने की बीमारी।
**पहलण**—वि० वह गाय या भैंस जो पहली बार ब्याई हो।
**पांईदी**—स्त्री० (सि०) पायंता, पायताना।
**पांख**—पु० (कु०, सि०, सो०) पक्ष, पंख, पक्षियों के पर।
**पांख**—पु० (सि०) विशेष प्रकार की पतली रोटी।
**पांखणी**—स्त्री० (कु०) अन्न में लगने वाले छोटे छोटे फतिंगे।
**पांखा**—पु० पंखा।
**पांख्वो**—पु० (शि०) पंख, पर।
**पांग**—पु० (सि०) काई।
**पांगटि**—स्त्री० (कु०, सो०) टहनी।
**पांगड़ना**—अ० क्रि० (शि०) कोंपल फूटना।
**पांगरी**—स्त्री० (सो०) टहनी।
**पांगा**—पु० (सि०, सो०) टहना।
**पांगा**—पु० (सि०) खेत का टुकड़ा।
**पांघटी**—स्त्री० (कु०) वृक्ष की शाखा, टहनी।
**पांघा**—पु० (कु०) टहना।
**पांच**—पु० (शि०) पंच।
**पांची**—स्त्री० (सि०) पंचायत।
**पांचू**—पु० (सि०) पंचायत के पांच सदस्य।
**पांचे**—स्त्री० (सि०) पंचायत।
**पांछा**—पु० (सो०) फंदा।
**पांज**—वि० (मं०) पांच।
**पांज़**—स्त्री० (ह०) भागीदारी, किसी आयोजन या कार्य के प्रति डाला गया भाग।
**पांजग**—पु० (शि०) पंचक।
**पांजड़ा**—पु० (सि०) देवता की लोक गाथा।
**पांजपुरी**—स्त्री० (शि०) पांच मंजिल का मकान।
**पांजवी**—स्त्री० (शि०) पंचमी, नागपंचमी।
**पांजा**—पु० (सि०) पंजा; शेर कुत्ते आदि जानवरों का पंजा।
**पांजा**—पु० (मं०) कलाई।
**पांजा**—पु० एक वृक्ष विशेष।
**पांजुआ**—वि० (सो०) पांचवां।
**पांजे**—अ० (मं०) चार दिन पहले।
**पांदु**—पु० (सि०) मक्खन।
**पांदू/टो**—पु० (शि०) जूते, बूट।
**पांड**—स्त्री० (बि०, मं०) घास का गट्ठर।
**पांड**—पु० (शि०) नीचे की मंजिल। मकान में दूसरी मंजिल के कमरे।
**पांडका**—वि० (बि०) वहां का।

**पांडा**—पु० (मं०) घर की पहली मंजिल अर्थात् सबसे नीचे की मंजिल।
**पांडा**—पु० (कां०, बि०, शि०) शनिवार के दिन ग्रह पूजन करने वाला व्यक्ति, पंडा, तीर्थों का व्यवस्थापक।
**पांडा**—अ० (शि०) पार।
**पांडु**—पु० पांडव।
**पांडे/डो**—अ० (शि०, सि०) पार, उस पार।
**पांडो**—पु० (शि०) टकराने का भाव।
**पांड्ड**—स्त्री० (बि०) घास या कपड़ों आदि की गठरी।
**पांदड़ी**—वि० (शि०) विशालकाय।
**पांदे**—अ० (कु०, सो०) ऊपर, पर।
**पांपा**—वि० प्यारा।
**पांपा**—स्त्री० (शि०) बच्चों को चूमने की क्रिया।
**पांमचू**—पु० बहुत पतला कपड़ा।
**पांयद**—पु० (सो०) नीचे वाला भूभाग।
**पांव**—स्त्री० लुहार द्वारा गर्म औज़ार आदि को पानी में भिगोने की विधि।
**पांवचा**—पु० (सि०) पंजा।
**पांवचा**—पु० मोहरी, पाजामे का नीचे की ओर का मुंह।
**पांवणा**—स० क्रि० (सि०) डालना, फैंकना।
**पांवणे**—पु० (शि०) मेहमान।
**पांशड़**—पु० (सि०) एक प्रकार का दल जो स्वयं को पांडव का समर्थक मानता है।
**पांसा**—पु० (शि०) हड्डी या हाथी दांत के चौकोर टुकड़े जो चौसर के खेल में प्रयुक्त होते हैं।
**पा:णी**—स्त्री० (कु०) वृक्ष की टहनियां जो पत्ते के साथ चारे के काम आती हैं।
**पा:रणा**—स० क्रि० (सो०) सिर के बाल संवारना।
**पा**—वि० चौथा भाग, एक चौथाई, पाव।
**पा**—पु० उपाय, ढंग।
**पाअणो**—स० क्रि० (कु०, सि०) डालना।
**पाइदा**—पु० (सो०) निचला हिस्सा।
**पाइया**—वि० पाव भर।
**पाइलें**—अ० (सि०) उस पार।
**पाई**—स्त्री० (शि०) एक पैसे के तीसरे भाग का सिक्का।
**पाईया**—पु० पहिया।
**पाईलपाणी**—स० क्रि० केले या आम आदि को पकने डालना।
**पाउंटी**—स्त्री० (शि०) पतीली।
**पाउऐ**—पु० (कु०) चारपाई के पाये।
**पाउणा**—पु० (शि०, सि०) मेहमान।
**पाउला/ले**—पु० जूता।
**पाउली**—स्त्री० रुपया-पैसा, सिक्का।
**पाउली**—स्त्री० (कु०) करघे में पैर के द्वारा धागे ऊपर-नीचे खिसकाने वाली चार लकड़ियां।
**पाऊ**—पु० (कां०, ऊ०, बि०) बटाई पर बीजने वाला मजदूर, मुज़ारा।
**पाऊचा**—वि० (कु०) लचीला।
**पाऊश**—पु० (सि०) काटी हुई घास जो सुखाने के लिए एक पंक्ति में बिछाई जाती है।
**पाएं**—अ० (सो०) पर।
**पाएं**—पु० दे० पाउऐ।
**पाए**—स्त्री० (सि०) पाई (सिक्का)।
**पाओगी**—स्त्री० (सि०) रस्सी।
**पाओट**—पु० (मं०) छत के अगले-पिछले हिस्से।
**पाओणचारी**—स्त्री० मेहमानी; मेहमाननवाज़ी।
**पाओणा**—स० क्रि० (सि०) पाना, डालना।
**पाओची**—स्त्री० (शि०) इधर-उधर हाथ मारने की क्रिया।
**पाओटा**—पु० (शि०) घास का समूह।
**पाक**—पु० पीप।
**पाकट**—स्त्री० जेब।
**पाकड़**—स्त्री० (शि०) पकाई, पुष्टि।
**पाकड़ना**—स० क्रि० (शि०) पकड़ना।
**पाकणा**—अ० क्रि० (शि०) पीप पड़ना।
**पाकणा**—अ० क्रि० (कु०, शि०) पकना।
**पाकणु**—पु० (सि०) फल वाला पेड़।
**पाकबन्नी**—वि० सांवली, श्याम रंग की।
**पाकू**—वि० पकने वाला।
**पाकौ**—वि० (कु०) पका हुआ।
**पाकौड़ा**—पु० पकौड़ा।
**पाक्का**—वि० (सि०) पक्का।
**पाख**—पु० सहारा।
**पाखट**—स्त्री० (सो०) दे० पाकट।
**पाखटी**—स्त्री० (कु०) ऊन का लहंगा।
**पाखड़ा**—पु० (शि०) पंख।
**पाखलो**—वि० (सि०) बिना जमा (दूध)।
**पाखा**—पु० (कु०, सि०) कबूतर।
**पाखा**—पु० (सि०) भंडार, गोदाम।
**पाखा**—पु० (कु०, सि०) पंखा।
**पाखा**—पु० (सि०) खेत का एक भाग।
**पाखा**—पु० पक्ष। तर्ज़। घराट के चलने के लिए बनाया लकड़ी का पंखा।
**पाखी**—स्त्री० (मं०) स्त्रियों का ऊनी कुर्ता; बड़ा पट्टू।
**पाखी**—स्त्री० हाथ से चलाया जाने वाला छोटा पंखा।
**पाखुड़ी**—स्त्री० (कु०) अनाज में लगने वाला पंख वाला कीट।
**पाखूणा**—अ० क्रि० (कु०) पीप पड़ना।
**पाखौ**—पु० (शि०) पंख।
**पाग**—पु० पीप।
**पाग**—वि० (शि०) अच्छा, उचित।
**पाग**—पु० (मं०, सि०, शि०) पगड़ी। किसी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् की जाने वाली रस्मपगड़ी की क्रिया।
**पागड़ी**—स्त्री० (सो०) पगड़ी।
**पागो**—स्त्री० (सि०) पगड़ी।
**पागोई**—स्त्री० (सि०) रस्सी।
**पाघरना**—अ० क्रि० (मं०) बहकना।
**पाच**—पु० (शि०) पीप।
**पाच**—पु० (बि०) चावलयुक्त साग।

**पाच**—पु० (मं०) 'झोळ' में पड़ने वाला गेहूं, मक्की या चावल का घोल।
**पाच़**—पु० (सि०, सो०, शि०) पत्ता।
**पाचटी**—स्त्री० (सि०) चाय पत्ती।
**पाचटे**—स्त्री० (शि०) दाढ़ी बनाने की पत्ती (ब्लेड)।
**पाचड़ी**—स्त्री० (सो०) पत्ती।
**पाचणा**—स० क्रि० (सि०, शि०) छीलना।
**पाचणो**—अ० क्रि० (सि०) पकना।
**पाचर**—पु० (सि०) छोटा पतला पत्थर।
**पाचरोए**—पु० पतझड़, पत्ते झड़ने की बीमारी।
**पाची**—स्त्री० (कु०) बच्चा होने पर तीसरे दिन होने वाली रस्म।
**पाची**—स्त्री० (सि०) ब्लेड।
**पाची**—स्त्री० (सि०) पकड़ने का भाव।
**पाचू**—पु० (शि०) छोटा पत्ता।
**पाचे**—पु० (सि०) प्रातः पूजा के समय का संगीत।
**पाछः**—पु० (बि०) ईश्वर।
**पाछ**—पु० (मं०, सि०) कुल्हाड़ी का प्रहार।
**पाछ**—पु० (शि०) चीरा। कांटे को तन में चुभाकर गंदा खून निकालने की क्रिया।
**पाछका**—अ० (सो०) पीछे।
**पाछड़ू**—पु० (सि०) पीछे मुड़ने का भाव।
**पाछणा**—स० क्रि० (सि०) वृक्ष आदि की खाल निकालना। छीलना।
**पाछणा**—स० क्रि० (सो०) तेज धार वाले हथियार या छुरी, चाकू आदि से हलका आघात करना (जैसे अफीम निकालने की क्रिया)।
**पाछणो**—स० क्रि० (शि०) लकड़ी को साफ करना। तराशना।
**पाछनि**—स्त्री० (सो०) पक्षिणी, अन्न में होने वाला कीट विशेष।
**पाछलो**—वि० (शि०, सि०) पिछला।
**पाछा**—पु० (सि०) ठिकाना।
**पाछा**—पु० (शि०) पीछा।
**पाछा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) दूर फैंकने का भाव।
**पाछी**—अ० (मं०, शि०) पीछे।
**पाछीए**—अ० (कु०, शि०) बाद में, पीछे से।
**पाछू**—अ० (शि०, सि०) पीछे।
**पाछे**—अ० (शि०, सि०) बाद में।
**पाछो**—वि० (सि०) वापस।
**पाज़**—पु० (सि०) अदरक, हलदी की गांठ।
**पाज़**—स्त्री० (कु०) बारी।
**पाजा**—पु० एक अद्भुत पौधे का अंश जिससे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है।
**पाजा**—पु० (कु०) एक छोटे आकार का वृक्ष जिसकी शाखाएं विवाह में काम आती हैं। इसे पीपल की तरह शुभ माना जाता है।
**पाज़ा**—पु० (मं०) एक जंगली फल, पारिजात।
**पाजी**—पु० (कु०) बाज़ पक्षी।
**पाजी**—वि० चालाक, बिगड़ा हुआ, शरारती।
**पाज़ी**—स्त्री० (कु०) बारी।
**पाजेब**—स्त्री० पायल।
**पाट**—पु० (कु०, मं०) पत्थर की पटिया जो प्रायः छत पर लगाने, चक्की बिछाने आदि के काम आती है।
**पाट**—पु० (सि०, शि०) पत्थर का गोल चक्र, घराट के दो भागों में से एक भाग।
**पाट**—पु० (मं०) दरवाजे का एक भाग।
**पाट**—पु० (शि०) टांग का घुटने से ऊपर का भाग।
**पाटकी ड़ी**—स्त्री० (सि०) खेत।
**पटड़ा**—पु० (सि०, सो०, बि०) पटरा।
**पाटड़ी**—स्त्री० (शि०, सि०) पट्टी, लिखना सीखने की लकड़ी की लंबोतरी और चौरस पटरी।
**पाटड़ीछाहड़णा**—स० क्रि० (मं०) तांत्रिक विधि द्वारा प्रेत बाधा दूर करने के लिए काठ की पटरी पर अन्न आदि रख कर विशेष पूजा करना तथा उसे चौराहे पर छोड़ना।
**पाटड़ीलिख़णा—स० क्रि० लकड़ी की पटरी पर शिवरात्रि के अवसर पर 'ओहळ' के आटे से शिव परिवार का चित्रांकन करना।**
**पाटली**—स्त्री० (मं०) चावल में लगने वाला सफेद रंग का काले मुंह वाला कीड़ा।
**पाटा**—पु० (मं०) सोने के लिए बना लकड़ी का तख्ता।
**पाटा**—पु० (सि०) मोटे कपड़े की चौड़ी पट्टी जो कमर में बांधने के काम आती है।
**पाटी**—स्त्री० (कु०) ऊन की बनी पट्टिका।
**पाटी**—स्त्री० (शि०, सि०) छत में लगने वाली लकड़ी।
**पाटी**—स्त्री० (शि०, सि०) दे० पाटड़ी।
**पाटी**—स्त्री० (मं०) बारी।
**पाटू**—पु० (शि०, सि०) कंबल।
**पाठंग**—पु० (कु०) प्रत्येक परिवार के लिए गांव की सांझी भूमि में सुरक्षित झाड़ीदार स्थान जहाँ समय-समय पर बकरे की बलि देकर पाठ किया जाता है।
**पाठ**—पु० अध्याय, विद्याभ्यास, विद्या का अध्ययन या अभ्यास जिससे सब कुछ कंठस्थ हो जाता है।
**पाठणा**—स० क्रि० (सि०) ज़ोर से आवाज़ देना, चीखना।
**पाठळय**—पु० (कां०) एक पेड़ का नाम।
**पाठसाला**—स्त्री० पाठशाला।
**पाठा**—पु० (कु०) घनिष्ठ मित्र।
**पाठा**—वि० (शि०) गठीला युवक।
**पाठा**—पु० (मं०) पीठ की नाड़ियों का दर्द।
**पाठा**—पु० (शि०) मांसपेशी।
**पाठा**—पु० (सो०) बांस आदि से 'किरडा' टोकरी आदि बनाने के लिए काटे हुए भाग।
**पाठी**—वि० व्यक्ति विशेष के लिए पूजा पाठ करने वाला (पंडित)।
**पाठी**—स्त्री० (शि०, सि०) बकरी की बच्ची।
**पाठुर**—पु० (सि०) जंगली जानवर को मारने के लिए बनाया गया मचान।
**पाठे**—स्त्री० (शि०) छोटी बकरी।

**पाड़**—पु० (शि०) नितंब।
**पाड़**—पु० (सो०) किसी वस्तु के अंश को ग्रहण करने का व्यापार।
**पाडणा**—स० क्रि० (सि०) फाड़ना।
**पाड़तू**—पु० (मं०) बेगार की अवधि तथा बारी।
**पाड़ना**—स० क्रि० खाना।
**पाड़ना**—स० क्रि० (शि०) गिराना।
**पाड़ना**—स० क्रि० (सो०) खोद कर गिराना।
**पाड़पाड़**—पु० (सि०) फसल काटने के बाद पहली बार हल चलाने की क्रिया।
**पाडल**—पु० (सि०) पाटल, एक वृक्ष विशेष।
**पाड़सरा**—पु० (मं०) बेगार का हुक्म सुनाने वाला, राजा या ठाकुर का कर्मचारी।
**पाड़ा**—पु० (मं०) दे० पाड़तू।
**पाड़ा**—पु० (मं०) तुषार, पाला।
**पाड़िणा**—स० क्रि० (कु०) खाया जाना।
**पाड़ो**—पु० (मं०) सेब की प्राचीन किस्म, जंगली सेब।
**पाढ़ेआवली**—स्त्री० (मं०) खजूर का झाड़ू।
**पाण**—पु० (शि०, सि०) जोश, ताकत।
**पाण**—स्त्री० (कां०) जूते की एड़ी की पीछे की सिलाई।
**पाण**—स्त्री० औज़ार तेज करने के लिए उसे दी जाने वाली गर्मी, पैनापन।
**पाणको**—पु० (सि०) जाल।
**पाणदु**—पु० (सि०) मक्खन।
**पाणा**—स० क्रि० पाना, डालना।
**पाणी**—पु० पानी; वर्षा।
**पाणी**—पु० (सि०, सो०) जूता, बूट।
**पाणीफटना**—अ० क्रि० (शि०) पसीना आना।
**पाणे**—पु० (शि०, सि०) पानी; वर्षा।
**पाणेझाड़ना**—स० क्रि० (कु०, मं०) एक तांत्रिक द्वारा प्रेत बाधा को दूर करना।
**पाणो**—स० क्रि० (सि०) पाना, डालना।
**पाणोई**—पु० (सि०) कच्चे चमड़े के जूते।
**पाणोत**—स्त्री० (चं०) बलि से पूर्व बकरे पर पानी डालने की क्रिया।
**पाण्ही**—स्त्री० (कु०) वृक्ष की टहनी, शाखा।
**पात**—पु० (शि०) पतन।
**पातक**—पु० परिवार में किसी की मृत्यु पर अशुद्धि की अवधि।
**पातका**—पु० देवता का मंदिर, देव-पादुका, देव **पादुका** जिसे पूजा के लिए पत्थर पर चिह्न रूप में स्थापित किया जाता है।
**पातकू**—पु० (कु०) गले का आभूषण।
**पातड़ा**—वि० (मं०) पतला, क्षीण शरीर वाला।
**पातड़ी**—स्त्री० (कां०) सब्जी, दही आदि रखने के लिए बना मिट्टी का चपटा पात्र।
**पातड़ी**—स्त्री० (मं०) पशुओं के नीचे बिछाए जाने वाले पत्ते **या** घास आदि।
**पातड़ो**—वि० (कु०) बारीक।
**पातर**—पु० (मं०) पत्ते।
**पातर**—पु० झमेला। झाड़-फूंक की क्रिया।
**पातर**—वि० (शि०) सूक्ष्म।
**पातरी**—स्त्री० (कां०) पशुओं के नीचे डाला जाने वाला हरे पत्तों वाला घास।
**पातरी**—स्त्री० (ह०) खाद।
**पातळ**—स्त्री० (सो०, शि०) पत्तल।
**पातळा**—वि० (कु०) पतला।
**पातलिणा**—अ० क्रि० (कु०) पतला होना।
**पातली**—वि० (सि०) बारीक, पतली।
**पातली**—स्त्री० (मं०) पत्तल।
**पातलो**—वि० (शि०) पतला।
**पातलो**—**स्त्री० (सि०) पत्तल।**
**पाती**—स्त्री० (शि०) चाय पत्ती।
**पातुला**—वि० (शि०) पतला।
**पाते**—पु० (शि०) ताश के पत्ते।
**पातण**—पु० (कां०) पशुओं के नीचे डाला जाने वाला घास।
**पात्तल**—स्त्री० (सो०) पत्तल।
**पात्तळ खोलणी**—स० क्रि० विवाह में बरातियों को भोजन कराते समय कन्या पक्ष की लड़कियों द्वारा मंत्र से भोजन प्रतिबंधित करना तथा इसे वर पक्ष की ओर से मंत्र द्वारा खोलना।
**पात्री**—स्त्री० (मं०) पंचांग।
**पाथ**—पु० (चं०) इकट्ठा किया हुआ गोबर।
**पाथटा**—पु० (सि०) छोटा पत्थर।
**पाथणा**—स० क्रि० उपले आदि बनाना।
**पाथणा**—स० क्रि० चूल्हा, ईंट आदि बनाना।
**पाथणा**—स० क्रि० (सि०) रोटी बनाना।
**पाथर**—पु० (कु०, शि०) पत्थर।
**पाथरी**—स्त्री० (मं०) पथरी, एक रोग जिसमें वृक्कों आदि में पत्थर के छोटे टुकड़े जैसे पिंड बन जाते हैं।
**पाथरू**—पु० घर बनाते समय वह मुख्य पत्थर जिसे शुभ मुहूर्त में भूमि में गाड़ा जाता है।
**पाथरे**—स्त्री० (सि०) औज़ार तेज़ करने का पत्थर।
**पाथा**—वि० (कु०, सो०) प्रस्थ लगभग दो किलो।
**पाथा**—वि० (सो०) भूमि का माप जिसमें दो किलो बीज लगता हो, चौथाई बीघा।
**पाथी**—स्त्री० (सि०) चिपकी हुई जटाएं।
**पाथी**—स्त्री० (कु०) टोकरी।
**पाथी**—स्त्री० गोबर का उपला।
**पाथी**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) मोटा, भारी।
**पाथोर**—पु० (सि०) पत्थर।
**पाद**—पु० अपान वायु।
**पादड़**—वि० (शि०) बहुत सुस्त (औरत), विशालकाय।
**पादड़ी**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) अपान वायु निकालने वाला।
**पादणा**—अ० क्रि० (शि०) अपान वायु त्याग करना।
**पादा**—पु० (सि०) वह ब्राह्मण जो कर्मकांड का काम जानता है, उपाध्याय, पंडित।

**पादी**—वि० (सि०) उपद्रवी, उल्टा काम करने वाला।
**पाध**—स्त्री० उत्पात, शरारत।
**पाधरा**—वि० समतल।
**पाधा**—पु० दे० पादा।
**पाधी**—वि० दे० पादी।
**पानरा/रे**—पु० (सि०) सफेद बाल।
**पानसरा**—पु० (ऊ०)वृक्ष विशेष।
**पाना**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) शिकंजा।
**पानीबेल**—स्त्री० (मं०, सि०) पानी में उगने वाली बेल।
**पाप**—पु० पाप।
**पाप**—पु० (शि०, सि०) मृत व्यक्ति की आत्मा।
**पाप**—पु० (शि०) कुष्ट।
**पापड़ा**—पु० (सि०) मंदिर में स्थापित पत्थर की मूर्तियां; मृत व्यक्ति की मूर्ति।
**पापड़ा**—पु० गेहूं के खेत में उगने वाला घास जो औषधि के काम आता है।
**पापड़ी**—स्त्री० (सि०) चिलबिल, जंगली पेड़।
**पापण**—वि० पापिन, पाप करने वाली।
**पापलीन—पु० (शि०, बि०) एक प्रकार का सूती कपड़ा।**
**पापलोक**—पु० (शि०) नरक।
**पापा**—स्त्री० (कु०) रोटी, छोटे बच्चों द्वारा रोटी के लिए प्रयुक्त शब्द।
**पापीमहीना**—पु० (कु०, मं०) **पौष** मास जब सख्त सर्दी होती है।
**पापे**—वि० (सि०) पाप करने वाला।
**पाब्बो**—वि० (शि०) ऊंचाई वाली ज़मीन।
**पाम्मार**—पु० (शि०) चुंबन।
**पायचा**—पु० सलवार या पाजामे आदि की मोहरी।
**पायता**—पु० (सो०) चढ़ाई के रास्ते में पैर रखने का स्थान।
**पार**—पु० (चं०) मकान में प्रवेश करने का रास्ता।
**पारखत**—पु० (सो०) पूजा के पात्र।
**पारखा**—वि० उस ओर का। अ० पार की तरफ।
**पारड़**—पु० (कां०) पहाड़ी कबूतर।
**पारण**—वि० (ह०) मुट्ठी भर अन्न।
**पारती**—स्त्री० (मं०) काम के बदले में काम करने की प्रथा।
**पारद**—पु० एक बेल विशेष।
**पारना**—स० क्रि० (शि०) कंघी करना, बाल संवारना।
**पारवती**—स्त्री० (शि०) पार्वती।
**पारसा**—पु० (शि०) आध्यात्मिक आदमी।
**पारहनी**—स्त्री० (कां०) ऊन को कातने योग्य बनाई पूनी।
**पारा**—पु० (ह०) मक्की का ढेर।
**पारी**—स्त्री० दूध, घी रखने का मिट्टी का छोटा बरतन।
**पारू**—पु० (कु०, मं०) कच्ची हांडी जो तांत्रिक कृत्य हेतु प्रयोग में लाई जाती है।
**पारू**—पु० मिट्टी का छोटा बरतन।
**पारूए**—अ० (शि०, सि०) उस पार, परली तरफ।
**पार्ती**—स्त्री० (मं०) एकत्र होकर कृषि कार्य को निपटाने की क्रिया।
**पार्हना**—स० क्रि० (कां०) व्रत के पश्चात् भोजन खाना।
**पार्हा**—पु० (चं०) रक्षा करने की झोंपड़ी; लुहार की कार्यशाला।
**पाल**—पु० (सि०) पक्षियों का झुंड।
**पाल**—पु० (कु०) रोटियों का ढेर।
**पाळ**—स्त्री० (कां०, बि०) कच्चे फलों को पकाने के लिए भूसे आदि में रखने का भाव।
**पाळक**—पु० पालक।
**पालग**—पु० (मं०, शि०, सि०) पालक।
**पालगन**—स्त्री० (शि०) ब्राह्मणों को दूसरी जाति के मनुष्यों द्वारा किया जाने वाला अभिवादन।
**पालगरामी**—स्त्री० (शि०) अच्छी देखभाल।
**पालगी**—स्त्री० पालकी।
**पालगे**—स्त्री० (सि०) देवता की पालकी।
**पालटी**—स्त्री० (कु०, शि०) वृक्ष का छोटा पौधा जिसे उखाड़ कर दूसरे स्थान पर रोपा जाता है।
**पालटी**—स्त्री० दावत, ज़ियाफत।
**पालटी**—स्त्री० दल, समूह।
**पालटू**—पु० (शि०) कच्चा फल।
**पालड़ा**—पु० (सि०) पलड़ा, पक्ष।
**पालणा**—स० क्रि० पालना।
**पाळणा**—स० क्रि० पालना, पालन-पोषण करना।
**पालतर**—पु० (मं०) मुक्त सेवा जिसमें मालिक की ओर से केवल भोजन मिलता है।
**पालपाणा**—अ० क्रि० मोर का नाचना।
**पालम**—पु० (मं०) आलूचा।
**पाळम**—पु० (कु०) जंगली सेब का वृक्ष जिस पर उन्नत प्रजाति के सेब की कलम लगाने से उन्नत फल प्राप्त होते हैं।
**पालयो**—पु० (सि०) एक प्रकार का फल।
**पाळश**—पु० पालिश।
**पालस**—पु० रंग।
**पालसरा**—पु० (कु०) देवता की आज्ञा सुनाने वाला व्यक्ति।
**पालसरी**—स्त्री० जब परिवार के सभी सदस्य खेत में काम करने जाते हैं तो घर में रसोई बनाने वाली स्त्री।
**पाला**—वि० (सो०, सि०, शि०) कम, खाली, खोखला।
**पाला**—वि० (शि०) भोला।
**पाला**—पु० (कां०) जाल के घेरे की तंग किनारी।
**पाला**—पु० (कु०, शि०, सि०) पल्ला, कपड़े का छोर, दामन।
**पाला**—पु० (शि०) सीमा निर्धारित करने के लिए डाली हुई रेखा।
**पाळा**—पु० (कु०) सेब की पुरानी किस्म।
**पाळा**—पु० बारी।
**पाळा**—पु० ठंड, ओस।
**पाली**—स्त्री० (शि०) मासिक धर्म।
**पाळी**—स्त्री० (बि०) कतार, पंक्ति।
**पाळी**—स्त्री० बारी।
**पाळ्ना**—स० क्रि० (सो०) पालन-पोषण करने में समर्थ होना।
**पालू**—पु० (कु०) पल्ला, दामन।
**पालो**—पु० (शि०) भंडार, अनाज का भंडार।

**पाल्ला**—वि० (सि०) अनाज रहित।
**पावखड़ी**—स्त्री० (सि०) दे० पांखणी।
**पावड़ी**—स्त्री० (सि०) सीढ़ी।
**पावणा**—पु० (शि०) मेहमान।
**पावणी**—स्त्री० (शि०) मेहमान स्त्री।
**पावदान**—पु० (शि०) पायदान।
**पावपोश**—पु० (शि०) पायदान।
**पावा**—पु० पाया, चारपाई, कुर्सी, तख्ते आदि के उन डंडों के आकार के निचले अंगों में से कोई एक जिनके बल पर वे स्थित रहते हैं।
**पाशटी**—स्त्री० (शि०) ब्लेड, पत्ती।
**पाशड़**—पु० (कु०) पक्ष, पार्श्व।
**पाशड़ी**—स्त्री० (कु०) शरीर का दायां, बायां हिस्सा; पसली।
**पाशड़े**—स्त्री० (शि०) पसली, करवट।
**पाशा**—पु० (मं०, शि०) उल्लू की हड्डी का बना एक चौकोर उपकरण जिसके द्वारा तांत्रिक गुप्त रहस्य जानते हैं, एक प्रश्न विद्या।
**पाशी**—पु० (शि०) लोकनाट्य 'ठोडा'।
**पाशी**—स्त्री० (कु०) तार का फंदा, फांसी।
**पाशी**—स्त्री० (मं०) गेहूं या मक्की को कूटने के लिए प्रयोग किया जाने वाला बड़ा डंडा।
**पाशे**—स्त्री० (शि०) सूई की नोक।
**पाशै**—पु० (सि०) फंदा।
**पाशो**—पु० (मं०) कुदाली में दस्ते के लिए बना छेद।
**पासक**—पु० उपासक।
**पासड़**—पु० तराजू के दोनों पलड़े जब बराबर न हों तो बराबर करने के लिए प्रयुक्त वस्तु।
**पासबान**—पु० (शि०) रक्षक।
**पासला**—वि० (बि०, मं०) कषाय, कसैला।
**पासा**—पु० किनारा, ओर।
**पासा**—पु० (कु०) प्रश्न डालने की एक विशेष वस्तु।
**पासा**—पु० (सो०) करवट।
**पास्तरू**—पु० ढलान पर बना घर।
**पाहरा**—पु० फसल की रखवाली के लिए खेत में ही बनाया छोटा घर, पहरा।
**पाहरी**—वि० (चं०) पहरा देने वाला।
**पाही**—स्त्री० (चं०) फसल को पशुओं से बचाने के लिए लगाई गई बाड़।
**पाहुंच**—स्त्री० (शि०) पहुंच।
**पाहुणा**—पु० (कु०, शि०) मेहमान, अतिथि।
**पाहू**—वि० किसी दूसरे की भूमि पर घर बनाकर उसके अधीन रहने तथा खेती करने वाला; गुलाम, दास।
**पाहयारी**—स्त्री० (कां०) दूसरे की अधीनता वाला आवास।
**पाहछ**—पु० (बि०) चोट।
**पाहछ**—पु० (कु०, मं०) पोला।
**पाहडू**—पु० (बि०) छोटा मटका।
**पाहनियां**—स्त्री० (बि०) जूते।
**पाहरना**—स० क्रि० (कु०) बालों को संवारना।
**पाहरिना**—स० क्रि० (कु०) बालों को संवारा जाना।
**पिंउंद**—स्त्री० पैवंद, वृक्ष पर लगाई कलम।
**पिंउणा**—स० क्रि० (शि०) पीना।
**पिंउळा**—वि० (कु०) पीला।
**पिंउण-बाया**—स्त्री० पांडुरोग, पीलिया।
**पिंगणा**—अ० क्रि० (शि०) झूलना।
**पिंघा**—पु० झूला, हिंडोला।
**पिंज़ण**—पु० (कु०) धुनकी।
**पिंजणा**—स० क्रि० पींजना।
**पिंजणी**—स्त्री० (कां०) धुनकी।
**पिंजयारा**—पु० (शि०) रुई पींजने वाला।
**पिंज़रा**—पु० (शि०) पीला, फीका पीला।
**पिंजरू**—पु० छोटा पिंजरा।
**पिंजरो**—स्त्री० (शि०) पका हुआ फल।
**पिंजरो**—पु० (शि०) पिंजरा।
**पिंजहणा**—अ० क्रि० (शि०) चारों ओर हाथ पसारना।
**पिंजा**—पु० (सि०) रुई पींजने वाला।
**पिंजाई**—स्त्री० पींजने का पारिश्रमिक।
**पिंजाई**—स्त्री० धुनाई, पिंजाई।
**पिंज्जण**—पु० रुई धुनने की मशीन।
**पिंड**—पु० शरीर।
**पिंड**—पु० पितरों को दिया जाने वाला पिंड।
**पिंडली**—स्त्री० (शि०) घुटने से नीचे व पांव से ऊपर का टांग का भाग।
**पिंडा**—पु० (कां०, कु०, शि०) शरीर, देह।
**पिंडापराणा**—स० क्रि० (कु०) स्वस्थ होना। बिमारी आदि के बाद स्वस्थ होना।
**पिंडाल**—पु० (शि०) पंडाल, शामियाना।
**पिंडी**—स्त्री० (शि०) गुड़ की भेली।
**पिंडी**—स्त्री० देवी देवता की पत्थर आदि की पीठिका।
**पिंडू**—पु० (शि०) गांव का पुरुष।
**पिंती**—स्त्री० (कु०) कच्ची खूबानी।
**पिंदड़ी**—स्त्री० वैशाखी के पर्व पर बनाई जाने वाली कोदे के आटे की टिकियां जिन्हें पत्तों में तीन-चार दिनों तक रखा जाता है और वैशाखी के दिन गुड़ या शहद के साथ खाया जाता है।
**पिंदड़ी**—स्त्री० (चं०) कुकुरमुत्ता की एक किस्म।
**पिंदळा**—पु० (कु०) आटे, मिट्टी या राख आदि का पिंड या गोला।
**पिंदळी**—स्त्री० (कु०) कुत्ते को दिया जाने वाला ग्रास।
**पिंवद**—स्त्री० (सो०) दे० पिंउंद।
**पिंवळा**—वि० (सो०) पीले रंग का।
**पिंहटा**—पु० (मं०) पत्थर का बेलन।
**पिःढ़**—पु० (कां०) हल का निचला भाग।
**पिउंदी**—वि० कलमी, पैबंद लगा हुआ।
**पिउळा**—वि० पीला।
**पिउलो**—वि० (सि०) पीला।
**पिउशी**—स्त्री० (शि०) गाय के ब्याने के समय का दूध।

**पिओका**—पु० मायका।
**पिंक्कू**—पु० एक नीली चिड़िया।
**पिको**—वि० (कु०) कस कर बंधा हुआ।
**पिगणा**—स० क्रि० (सो०) झुलाना।
**पिगळणा**—अ० क्रि० पिघलना।
**पिगाणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) झुलाना।
**पिचका**—वि० (शि०) शरारती।
**पिचगांरै**—स्त्री० (शि०) पिचकारी।
**पिचड़ी**—स्त्री० (शि०) एक बेल विशेष।
**पिचणा**—स० क्रि० (शि०) निचोड़ना।
**पिचनोल**—पु० बचे हुए आटे से सबसे अंत में बनाई गई रोटी।
**पिचनोळू**—वि० अंतिम।
**पिचपिचा**—वि० (शि०) चिपचिपा।
**पिचांह**—अ० (चं०) पीछे।
**पिचिणो**—अ० क्रि० (शि०) कंजूस होना।
**पिचैरू**—वि० (ऊ०, कां०) घुन्ना, अपने मन के भावों को गुप्त रखने वाला।
**पिचैरू**—पु० (शि०) देवता का एक सेवक।
**पिचो:र**—पु० (चं०) पीछा, अनुगमन।
**पिचो:री**—अ० (चं०) पीछे।
**पिचो:रू**—वि० (चं०) पीछे चलने वाला।
**पिचोल**—वि० (चं०) पीछे रहने वाले।
**पिच्छ**—स्त्री० मांड़।
**पिच्वांदा**—पु० (चं०) चूल्हे का पिछला भाग।
**पिछका**—वि० पिछला।
**पिछड़ना**—अ० क्रि० पीछे रह जाना।
**पिछड़ुना**—अ० क्रि० (सो०) पिछड़ना।
**पिछलगू**—वि० पीछा करने वाला, साथ चिपका रहने वाला।
**पिछ्ला**—वि० (कु०) पिछला।
**पिछलेरा**—वि० (शि०) पिछला।
**पिछलेरी**—अ० (शि०) पीछे की ओर।
**पिछलौंदा**—पु० (मं०) चूल्हे का पिछला भाग।
**पिछां**—अ० (शि०) पीछे।
**पिछाड़ी**—स्त्री० (शि०) घोड़े, खच्चर के पिछले पैर में बांधने की रस्सी।
**पिछेत**—अ० पीछे।
**पिछोंड़**—पु० (शि०) पीठ के पीछे।
**पिछोलण**—कि० पीछे चलने वाली।
**पिछोलण**—स्त्री० (कु०) मांड़ से बनी दाल।
**पिज**—पु० (कां०) हिरण प्रजाति का एक वन्य पशु।
**पिटणा**—अ० क्रि० मेहनत करना, प्रयास करना।
**पिटणा**—स० क्रि० मारना।
**पिटिणो**—अ० क्रि० (शि०) लड़ना।
**पिट्ठुणा**—पु० समस्या, कठिनाई।
**पिट्ठुणा**—स० क्रि० (शि०) चोट करना।
**पिट्ठुणा**—अ० क्रि० (चं०) किसी की मृत्यु आदि पर जोर-जोर से छाती पीटना व रोना।
**पिठ्ठ**—स्त्री० पीठ।
**पिट्ठा**—पु० (कु०) आटा।
**पिट्ठी**—स्त्री० उड़द की पीसी हुई दाल जिससे बड़ा तथा पकौ बनाया जाता है।
**पिट्ठु**—पु० (बि०) पीठ पर उठाया जाने वाला सामान।
**पिठार**—वि० (चं०) आटा पीसने वाला।
**पिठेई**—स्त्री० (शि०) सहारा।
**पिठैरा**—पु० भेड़ की पीठ पर होने वाला चर्म रोग।
**पिड़**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) अखाड़ा।
**पिड़च**—स्त्री० व्यर्थ का आलाप।
**पिड़ना**—स० क्रि० (सो०) तेल के बीजों से तेल निकालना
**पिड़पिड़ी**—स्त्री० (बि०) कनपटी।
**पिड्डा**—वि० (चं०, सि०) तंग, कसा हुआ।
**पिढ़**—पु० (चं०) अखाड़ा।
**पिढ़ना**—स० क्रि० (कु०) देवता के रथ को सजाना।
**पिढ़ा**—वि० (कु०) कसा हुआ, तंग।
**पिढ़ी**—स्त्री० (कु०) बांस की बनी गोल चौड़ी, लंबी टोक जिसमें अन्न रखा जाता है।
**पिणपिणी**—स्त्री० (कु०) कनपटी।
**पिणसण**—स्त्री० पेंशन;पेंसिल।
**पिणसल**—स्त्री० पेंसिल।
**पित**—पु० (कु०, मं०) पित्ताशय।
**पित**—पु० रक्तविकार।
**पितनु**—पु० (शि०) कच्ची खूबानी।
**पितपापड़ा**—पु० (कु० मं०) एक क्षुप जो औषधि के का आता है।
**पितर**—पु० मृत, पूर्वज।
**पितापुरखी**—वि० पुश्तैनी।
**पितामा**—पु० (शि०) दादा।
**पितिस**—स्त्री० (सि०) पति की चाची।
**पितृ**—पु० पहाड़ों पर मिलने वाली एक जड़ी।
**पित्ता**—पु० साहस।
**पित्ती**—स्त्री० पित्त की थैली।
**पिथरना**—अ० क्रि० (मं०) दिमाग खराब होना।
**पिदकू**—वि० (कु०) छोटा।
**पिदणा**—अ० क्रि० खेल में बारी निर्धारण करना।
**पिदना**—वि० छोटे कद का।
**पिद्रू**—पु० (कु०) छोटा पक्षी।
**पिद्दी**—स्त्री० बया की जाति की एक छोटी चिड़िया।
**पिद्दू**—पु० (कां०) दे० पिदू।
**पिन**—स्त्री० बकसुआ।
**पिन**—स्त्री० सूई, सिर में लगाई जाने वाली सूई।
**पिनंदा**—पु० (शि०) पिंड, गोला, रोटी का टुकड़ा।
**पिनस**—पु० (सि०) लकड़ी का दरवाजा।
**पिन्न**—पु० (कां०) एक बार में पशु द्वारा किया गया गोबर।
**पिन्ना**—पु० (चं०) दे० पिन्न।
**पिन्नी**—स्त्री० पिंडली।
**पिन्नी**—स्त्री० खोया, सोंठ, अलसी, दाल, मेवा आदि के बने लड्डू।

**पिन्नी**—स्त्री० (कां०) चावल के आटे का लड्डू जो प्राय: मातम पुरसी के लिए आने वालों को दिया जाता है।
**पिन्नी**—स्त्री० (मं०) पहाड़ी अंजीर के पत्तों की सब्जी।
**पिपड़ा**—पु० (शि०) दे० पितपापड़ा।
**पिपड़ी**—स्त्री० (कु०, मं०) मिर्च।
**पिपड्रू**—पु० (कु०) पेट का ऊपर का भाग।
**पिपलदु**—पु० (सि०) एक प्रकार का घास।
**पिपलाणियो**—वि० (शि०) स्वादिष्ट।
**पिपळी**—स्त्री० मिर्च।
**पिपलूघाह**—पु० (कु०) एक घास विशेष जिस पर पीले फूल लगते हैं।
**पिपले**—स्त्री० (शि०) मिर्च।
**पिप्पळ**—स्त्री० बड़ी मिर्च।
**पिप्पळ**—पु० पीपल का पेड़।
**पिया**—पु० पति, प्रेमी।
**पियाक**—पु० (चं०) वृक्ष विशेष।
**पियाज**—पु० प्याज़।
**पियाणा**—स० क्रि० पिलाना।
**पियान**—पु० (कु०) Reinwardtiatrigyna.
**पियार**—पु० प्यार।
**पियारिणा**—अ० क्रि० (कु०) मिश्रित होना, दो प्रकार के अन्नों का मिल जाना।
**पियारिणो**—स० क्रि० (सि०) प्यार करना।
**पियाला**—पु० (सि०) प्याला।
**पियालू**—पु० (सो०) Reinwarditiatrigyna.
**पियाशा**—पु० (कु०) प्रकाश।
**पियाशिणा**—अ० क्रि० (कु०) प्रकाश होना।
**पियाशो**—पु० (सि०) रोशनी।
**पियास**—स्त्री० प्यास।
**पियास**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) अभिमंत्रित जल।
**पियुल**—स्त्री० (मं०) पीले रंग की बुलबुल।
**पियूंलख**—वि० (सो०) पीलापन।
**पियूंला**—वि० पीला।
**पियूलख**—पु० (बि०) एक पीले रंग का पक्षी।
**पिरका**—पु० (सि०) चक्कर लगाने का भाव।
**पिरच**—स्त्री० (शि०) कप के साथ की प्लेट।
**पिरीति**—स्त्री० (शि०) प्रीति।
**पिल**—स्त्री० (चं०) गोली, कंचा डालने का छोटा गड्ढा।
**पिलणा**—स० क्रि० (मं०, सो०) निचोड़ना, मसलना।
**पिलपापड़ा**—पु० (कु०, मं०) Helenia elhpica.
**पिलपिला**—वि० बहुत कोमल, नर्म, अधिक पका हुआ।
**पिलसण**—स्त्री० पेंसिल।
**पिली**—स्त्री० (कु०) पिंडली।
**पिल्लणा**—स० क्रि० (बि०) पेरना, निचोड़ना।
**पिल्ली**—स्त्री० दे० पिली।
**पिशण**—पु० (कु०, शि०, सो०) पिसाया जाने वाला अन्न।
**पिशणा**—स० क्रि० (कु०, शि०, सि०) पीसना।
**पिशु**—पु० (कु०) पिस्सू।
**पिशोड़ड़ी**—स्त्री० (सि०) चींटी।
**पिश्शू**—पु० (मं०, शि०) दे० पिशु।
**पिस्तु**—वि० चुस्त, तेज चलने वाला, छोटे कद का।
**पिस्तू**—पु० छोटा कुत्ता, कुत्ते की एक प्रजाति।
**पिस्सु**—पु० पिस्सू।
**पिहणारी**—स्त्री० (चं०) पीसने के लिए निकाला गया अन्न।
**पिहर**—पु० (कु०) मायका, पितृगृह।
**पिहू**—पु० (कु०) पपीहा।
**पिहड़**—स्त्री० (कां०, चं०) हल और हल के डंड के बीच का भाग।
**पिहड़ी**—स्त्री० पिढा, गुलेल में लगा चमड़ा जहां पत्थर रखकर चलाया जाता है।
**पिहडी**—स्त्री० (शि०) अनाज रखने का बड़ा टोकरा।
**पिहण**—पु० पिसाया जाने वाला अन्न; अन्न पीसने का पारिश्रमिक।
**पीं**—स्त्री० असमर्थता सूचक शब्द।
**पींग**—स्त्री० झूला।
**पींगरे**—स्त्री० (मं०) बिरोजा वाली लकड़ी।
**पींघ**—स्त्री० (कां०, चं०) झूला।
**पींघणा**—अ० क्रि० (सि०) झूला झूलना।
**पींच**—स्त्री० मांड। गोंद।
**पींजा**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) प्यारा।
**पींझू**—पु० (कु०) एक पक्षी विशेष।
**पींझो**—पु० (कु०) पूंछ।
**पींटा**—पु० (शि०) नाश्ता, कलेवा।
**पींटा**—पु० (सि०, सो०) शिला पर नमक आदि पीसने का गोल पत्थर।
**पींड**—पु० (सि०) मृतक को दिया जाने वाला पिंड जो आटा, चावल व जौ से बनाया जाता है।
**पींप**—वि० (कु०) कमज़ोर।
**पींपरी**—स्त्री० (कु०) शहनाई आदि वाद्ययंत्रों में लगने वाली छोटी कली जिसे मुंह में डालकर वाद्ययंत्र बजाया जाता है।
**पी**—पु० (शि०) पपीहे की बोली।
**पीइसे**—पु० (सि०) पैसे।
**पीउणा**—स० क्रि० (सो०) पिया जाना।
**पीउलरोग**—पु० (मं०) पांडुरोग, पीलिया।
**पीऊंळा**—वि० पीला।
**पीऊ**—पु० (मं०) एक चिड़िया विशेष।
**पीऊळिया**—पु० पांडुरोग।
**पीक**—पु० पीप।
**पीखड्डपीऊ**—पु० (मं०) चोटी वाली चिड़िया।
**पीखे**—पु० (सि०) बिरोजायुक्त लकड़ी।
**पीघोटा**—पु० (शि०) झूले में बैठे व्यक्ति को पीछे लेकर आगे धकेलने की क्रिया।
**पीच**—स्त्री० (शि०) मांड़।
**पीचका**—वि० (सो०) पिछला।
**पीचणो**—स० क्रि० (सि०) दबाव डालना।
**पीचालो**—पु० (शि०) मांड़ की कढ़ी।

**पीछ**—स्त्री० (सि०, सो०, शि०) मांड़।
**पीध्णा**—स० क्रि० (कु०) गिराना।
**पीछा**—वि० पिछला भाग। सहारा। पीछा करने का भाव।
**पीछा**—पु० (सि०) ठिकाना।
**पिछोड़णो**—स० क्रि० (शि०) शूर्प द्वारा अन्न साफ करना।
**पीजोट्टा**—पु० (चं०) जंगली बकरा।
**पीटण**—पु० (कु०) संकट, आफत, मुसीबत।
**पीटणा**—स० क्रि० पीटना।
**पीठ**—स्त्री० (चं०) विवाह आदि में संबंधियों द्वारा दिये जाने वाले पैसे, वस्त्र व अन्न आदि।
**पीठकी**—स्त्री० (सि०) बच्चों की पीठ।
**पीठा**—पु० चक्की में पीसने के लिए डाला गया अन्न।
**पीठी**—स्त्री० (शि०) उड़द, मूंग आदि दालों को भिगोकर पीसी दाल।
**पीठू**—पु० (कु०) दरवाज़े के अगल-बगल के तख्ते।
**पीठू**—पु० (सि०) मकान में दीवारों के साथ लकड़ी के तख्ते। किसी का सहारा।
**पीठू**—पु० (शि०) बोझ उठाने के लिए बोरी की मोटी तह जो पीठ पर रखते हैं।
**पीठैडौ**—पु० (कु०) आटे का पेड़ा।
**पीठो**—पु० (शि०) चावल का आटा।
**पीड़**—स्त्री० दर्द।
**पीड़**—पु० (शि०) तना।
**पीड़क**—स्त्री० (शि०) दुखदाई।
**पीड़कू**—पु० (कु०) देवता की पालकी।
**पीड़ना**—स० क्रि० निचोड़ना।
**पीड़ाकर**—पु० (शि०) दुःखदायक।
**पीड़ो**—स्त्री० (मं०) दर्द, वेदना।
**पीड़ौईश**—वि० (सि०) रोगी।
**पीढ़ा**—पु० (शि०) लकड़ी की छोटे पाये की चौकी।
**पीढ़ी**—स्त्री० पुश्त।
**पीढ़ी**—स्त्री० (बि०) दे० पीढ़ा।
**पीढ़ी**—स्त्री० लकड़ी की चौकी, लकड़ी का वह साधन जिस पर तिलहन को ओखली में कूटने के बाद तेल पीड़ा जाता है।
**पीढ़ी**—स्त्री० (मं०) देवता की पालकी।
**पीढ़ू**—पु० मूर्तियां रखने की छोटी चौकी।
**पीण**—पु० पेय पदार्थ।
**पीण**—पु० (शि०) बच्चा।
**पीणटा**—पु० (शि०) नाश्ता।
**पीणसर**—स्त्री० (कु०) पेंशन।
**पीणा**—स० क्रि० पीना।
**पीणो**—स० क्रि० (सि०) पीना।
**पीत**—पु० (कु०) पित्त रोग।
**पीतळ**—पु० पीतल।
**पीतलाण**—पु० (शि०) पीतल के बर्तन में खाद्य पदार्थ रखने से लगने वाला कस।
**पीतीया डाड**—पु० (मं०) खट्टा आलूचा।
**पीथड़**—पु० पशुओं के शरीर के कीटाणु।
**पीथणा**—स० क्रि० (कां०) दबाना, भींचना।
**पीथा-पीथा**—वि० कचूमर निकला हुआ।
**पीन**—पु० (शि०) रोटी का टुकड़ा।
**पीन**—पु० (सि०) ग्रास। भेड़ बकरियों को दिया जाने वाला अन्न का पिंड।
**पीनी/ने**—स्त्री० (शि०) अंडा।
**पीने**—स्त्री० (सि०) पेड़ा, पालतू पशु को दिया जाने वाला आटे का पिंड।
**पीपड़पत्ता**—पु० (मं०) छोटे पत्तों वाली जड़ी-बूटी जिससे बुखार का उपचार किया जाता है।
**पीपणी**—स्त्री० शहनाई, शहनाई का सिरा।
**पीपरामिंट**—पु० पानी के किनारे होने वाली पुदीने की तरह की बूटी जिस से सिर दर्द या पेट दर्द का उपचार किया जाता है।
**पीपल**—पु० (शि०, सो०) पीपल। religiosa.
**पीपळा**—वि० (कु०) बहुत मिर्चवाला।
**पीपली**—स्त्री० (कु०, सि०) मिर्च।
**पीपलेटू**—पु० (शि०) पीपल का फल।
**पीपफशा**—वि० (कु०) कम मिर्च वाला।
**पीर**—पु० स्थानीय देवता।
**पीर**—पु० तांत्रिक, सिद्ध पुरुष।
**पीरा**—पु० (मं०) तना।
**पीरू**—पु० (चं०) अंगुलियों के पोर।
**पील**—स्त्री० (कु०, शि०) अपील।
**पीलण**—पु० (मं०) तिलहन।
**पीलणा**—स० क्रि० (मं०, सि०) कोल्हू में पेरना, पीसना।
**पीला**—वि० (मं०) रिक्त।
**पीला**—वि० (सि०) कमज़ोर।
**पीलागुलाब**—पु० (चं०) एक पुष्प विशेष।
**पीश**—स्त्री० (शि०) आफत।
**पीश**—पु० (शि०) पीसने का भाव।
**पीशुण**—पु० (सि०) आटे का बोझ।
**पीशणो**—स० क्रि० (सि०) पीसना।
**पीशिणा**—स० क्रि० (कु०) पीसा जाना।
**पीशू**—पु० (शि०) दे० पिस्सू।
**पीसण**—पु० काम को लंबा करने की प्रवृत्ति।
**पीसणा**—स० क्रि० (शि०) पीसना।
**पीस्सा**—पु० (कां०) आटा, पीसी हुई वस्तु।
**पीहण**—पु० (बि०) आटा पिसाने के लिए गेहूं या मक्की का बोझ।
**पीहणो**—स० क्रि० (शि०) पीसना।
**पीहाई**—स्त्री० घराट के मालिक को आटा पीसने के बदले में दिया गया आटा।
**पीहू**—पु० (शि०) पिस्सू।
**पीहड्ड**—पु० (कां०) देव प्रतिमाओं को रखने के लिए बनाया गया लकड़ी या पीतल आदि का डिब्बानुमा आसन।
**पीहणार**—पु० (चं०) अन्न पिसाने हेतु घराट जाने वाला।
**पुंगड़ा**—पु० (ह०) लड़का।
**पुंगर**—स्त्री० अंकुर, कोंपल।

**पुंगरना**—अ० क्रि० अंकुरना, विकसित होना।
**पुंगेस**—स्त्री० गुंजाइश।
**पुंघ**—पु० (कु०) किनारा।
**पुंज्र**—पु० (कु०, मं०) किनारा।
**पुंजक**—स्त्री० (शि०) छोटी पूंछ।
**पुंजटा**—पु० (सो०) बड़ी पूंछ।
**पुंजटे**—स्त्री० (शि०) छोटी पूंछ।
**पुंजड़ा**—पु० (मं०) पूंछ।
**पुंजड़ी**—स्त्री० (सो०) छोटी पूंछ।
**पुंजाल**—पु० (सि०) बाल।
**पुंझणा**—स० क्रि० साफ करना।
**पुंझार**—वि० पोंछने वाला।
**पुंडा/डो**—अ० (सि०) उधर।
**पुंढणा—स० क्रि० (कु०) बूझना, पहेली आदि को समझना।**
**पुंपणु**—पु० (ह०) मक्की के पौधे का ऊपरी भाग।
**पुंबा**—पु० (कां०) रुई छोड़ने वाली चींटी।
**पुआड़ना**—स० क्रि० (चं०) शरीर से अलग करना।
**पुआड़ा**—पु० विघ्न, मुसीबत।
**पुआस**—पु० उपवास।
**पुईरा**—पु० (सि०) पक्षी के पीछे के पंखों का समूह।
**पुकरना**—स० क्रि० (सो०) पानी को मुंह से उगलना।
**पुकान**—पु० तेल या घी में पका पकवान।
**पुकारणा**—स० क्रि० (शि०) पुकारना।
**पुक्करना**—स० क्रि० उपकार करना, काम आना, किसी का सहायता के लिए आना।
**पुक्का**—पु० चुंबन।
**पुक्खर**—पु० पोखर।
**पुखता**—वि० पक्का, सख्त, मज़बूत।
**पुखता**—वि० (सि०) पूरा।
**पुखर**—पु० (शि०) पुष्कर, तालाब।
**पुखराज**—पु० कीमती पत्थर, नग।
**पुगणा**—अ० क्रि० पहुंचना, पूरा होना, बांटने पर सबको पूरा मिल जाना, निभना, निर्वाह होना।
**पुगाणा**—स० क्रि० निभाना, सबको एक बराबर बांटना।
**पुचकारणी**—स० क्रि० (शि०) पुचकारना।
**पुचवांडा**—पु० (चं०) चूल्हे का पिछला भाग।
**पुचाकरा**—पु० (सि०) लंगूर।
**पुच्छ**—स्त्री० ओझा या तांत्रिक से पूछा जाने वाला प्रश्न।
**पुच्छ-पुच्छयाण**—स्त्री० (सि०) हाल-चाल पूछने का भाव।
**पुच्छां**—पु० (ह०) पूछने का भाव।
**पुछ**—स्त्री० (ह०) पूंछ, दुम।
**पुछ**—स्त्री० पूर्व बात।
**पुछ**—स्त्री० तांत्रिक से पूछा जाने वाला प्रश्न, बुझारत, पूछताछ।
**पुछणा**—स० क्रि० पूछना।
**पुछणो**—स० क्रि० (सि०) पूछना।
**पुछ-मंग**—स्त्री० (कां०) पूछ-ताछ, आदर-सत्कार।
**पुछाड़**—पु० घर के पीछे का खेत।
**पुछुणा**—स० क्रि० (सो०) पूछा जाना।
**पुजगिआ**—पु० (शि०) देवता की पूजा करने वाला व्यक्ति।
**पुजणा**—स० क्रि० (सो०) पूजना। अ० क्रि० पूरा होना।
**पुजणा**—अ० क्रि० पहुंचना।
**पुजणो**—स० क्रि० (शि०) पूजा करना।
**पुजणो**—अ० क्रि० (शि०) पहुंचना।
**पुजणो**—स० क्रि० (सि०) पोंछना।
**पुजाणा**—स० क्रि० विदा करना, ठिकाने पर पहुंचाना।
**पुजापा**—पु० (शि०) पूजा की सामग्री, पूजा करने का शुल्क।
**पुजारटा**—पु० (शि०) पुजारी का बेटा।
**पुजारिण**—स्त्री० (शि०) पुजारिन।
**पुजारो**—पु० (शि०) पूजा करने वाला व्यक्ति, पुजारी।
**पुजालणो**—स० क्रि० (सि०) पूरा करना।
**पुजियाल**—पु० (सि०) बाल।
**पुजीक**—पु० (शि०) पुजारी।
**पुज्याळा**—पु० पुजारी।
**पुटणा**—स० क्रि० (कां०) उखाड़ना, खोदना, बरबाद करना।
**पुटणो**—स० क्रि० (सि०) बात बढ़ाना।
**पुटली**—स्त्री० (शि०) पोटली।
**पुटाड़ा**—पु० पेट (गाली के रूप में प्रयुक्त)।
**पुट्ट-त्रट**—स्त्री० तोड़-मरोड़।
**पुट्टू**—वि० घर की सभी चीजों को नष्ट करने वाला, बरबाद करने वाला।
**पुट्ठ**—पु० (कां०) तह। उलट।
**पुट्ठ**—पु० तरकारी आदि बनाते समय उसमें दिया गया किसी वस्तु का पुट।
**पुट्ठा**—वि० उलटा।
**पुठ**—पु० आसवन विधि द्वारा मिश्रण।
**पुठकंडा**—पु० कांटे वाली झाड़ी जो औषधि के काम आती है।
**पुठकणी**—वि० (मं०) नटखट।
**पुठणो**—स० क्रि० (सि०) मादक वस्तु को मिलाना।
**पुठपैरी**—स्त्री० (मं०) चुड़ैल, चरित्रहीन स्त्री।
**पुठाणा**—अ० क्रि० फोड़े का फटना, पीप निकलना।
**पुठाना**—स० क्रि० छलनी द्वारा छानना, अनाज तथा भूसे को अलग करना।
**पुठु**—स्त्री० (सि०) पीठ।
**पुड़**—पु० चक्की के पत्थर, पाट।
**पुड़**—पु० (कु०) कफन।
**पुड़णु**—पु० सूंडी।
**पुड़देना**—स० क्रि० (चं०) नई फसल देवताओं को भेंट करना।
**पुड़ना**—अ० क्रि० किसी वस्तु का जिस्म से लगना। पत्थर के दो टुकड़े हो जाना। चुभना।
**पुड़ना**—अ० क्रि० आभास होना, टिकना, टिक कर बैठना।
**पुड़पुड़ी**—स्त्री० (कां०) कनपटी।
**पुड़बा**—पु० (सि०) एक रीति रिवाज।
**पुड़ा**—पु० पाट, कागज की बड़ी पुड़िया।
**पुड़ा**—पु० (चं०) ढक्कन।
**पुड़ा**—पु० (कु०) तबले या ढोल के मुंह पर मढ़ा हुआ चमड़ा। कान का पर्दा।

**पुड़ाणा**—स० क्रि० टिकाकर रखना।
**पुड़ारा**—पु० (शि०) पाउडर।
**पुड़ी**—स्त्री० पुड़िया।
**पुड़ी**—स्त्री० (सि०) सुहागिन द्वारा मनाया जाने वाला त्यौहार।
**पुड्ड**—पु० देवी के लिए नैवेद्य।
**पुड्डबज़ा**—पु० (सि०) महिलाओं का नृत्य।
**पुड़े**—स्त्री० (शि०) वेणी।
**पुड़े**—पु० (सि०) पूआ, मीठा पकवान।
**पुड़ौल**—स्त्री० एक सब्जी।
**पुणणो**—स० क्रि० (शि०) हवा से भूसा और दाने अलग करना।
**पुणतरू**—पु० चाय की छलनी।
**पुणना**—स० क्रि० बिखेरना, निखारना। हवा द्वारा दाने और घास अलग करना, पुनना।
**पुणपाणी**—स्त्री० (शि०) अन्न-जल।
**पुणाई**—स्त्री० 'पुणने' की क्रिया।
**पुणाणे**—पु० (शि०) लकड़ी का एक तख्ता जिसमें एक तरफ भूसा और दूसरी तरफ दाने रखे जाते हैं।
**पुणातर**—पु० चावल की मांड निकालने का कपड़ा।
**पुणान**—स्त्री० 'पुणने' की क्रिया।
**पुणार**—वि० (चं०) अनाज 'पुणने' वाला।
**पुणारी**—स्त्री० 'पुणने' की क्रिया।
**पुणी**—स्त्री० (कु०) पूनी, कातने के लिए हाथ में ली गई ऊन।
**पुणो**—स० क्रि० (शि०) साफ करना।
**पुतरिया**—स्त्री० (शि०) पुत्री।
**पुताजण**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) Eoxburghic. eoxburghic.
**पुताजी**—स्त्री० (बि०) दे० पुताजण।
**पुतियारू**—पु० चौके में लगाई जाने वाली मिट्टी का पात्र विशेष।
**पुत्त**—पु० पुत्र।
**पुदीना**—पु० पोदीना।
**पुन**—पु० पुण्य।
**पुनखीरा**—वि० (मं०) बहुत तेज़।
**पुनणा**—स० क्रि० (शि०) अनाज का हवा में पुनना।
**पुनयां**—स्त्री० (बि०) पूर्णिमा।
**पुनियां**—स्त्री० पूर्णिमा।
**पुनी**—स्त्री० (शि०) पूनी थोड़ी सी रुई या ऊन।
**पुनीऊ**—स्त्री० (शि०) दे० पुनियां।
**पुनीया**—स्त्री० (शि०) पूर्णिमा।
**पुनू**—पु० (कु०) पूर्णिमा, मार्गशीर्ष में मनाया जाने वाला मेला।
**पुन्ना**—पु० (चं०) एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी बहुत मज़बूत होती है।
**पून्नो**—स्त्री० (सि०) दे० पुनियां।
**पुन्या**—स्त्री० (सो०) पूर्णिमा।
**पुर**—स्त्री० (कु०) आग जलाने की क्रिया।
**पुर**—स्त्री० (मं०) घनी बस्ती, नगर।
**पुर**—वि० पूर्ण, सम।
**पुरकहा**—पु० (सो०) हुक्का।
**पुरख**—पु० पूर्वज।
**पुरखा**—पु० (सि०, शि०) परिवार का मृत वृद्ध व्यक्ति, पूर्वज।
**पुरखा**—वि० पुश्तैनी।
**पुरडा**—स्त्री० (कु०) झूठी बातें।
**पुरणा**—स० क्रि० (बि०, सि०) शंख बजाना।
**पुरना**—स० क्रि० (शि०) भरना।
**पुरवरिश**—स्त्री० (कु०, सि०) परवरिश, पालन-पोषण।
**पुरबला**—वि० (सो०) पिछले जन्म का।
**पुराई**—स्त्री० किसी गड्ढे को भरने का पारिश्रमिक।
**पुराचीन**—वि० (शि०) प्राचीन।
**पुराणा**—वि० पुराना।
**पुराणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०) भरवाना।
**पुराणो**—वि० (शि०) पुराना।
**पुरालड़ा**—पु० (बि०) लकड़ी की परात।
**पुराळ**—पु० धान का घास।
**पुरी**—स्त्री० (शि०) नगरी।
**पुरी**—स्त्री० (बि०) पूरी।
**पुरूड़ा**—पु० (चं०) गुच्छा, गठरी।
**पुरूणा**—स० क्रि० (चं०) पिरोना।
**पुरोह**—पु० (चं०) पौसला, सबील।
**पुळ**—पु० पुल।
**पुलकीयारी**—स्त्री० (शि०) ताकत, शक्ति।
**पुलटा**—पु० (सो०) घास का गट्ठा।
**पुलटा**—वि० बहुत ही उलटा, बहुत ही टेढ़ा।
**पुलटा**—पु० (शि०, सि०) लकड़ी का बोझ, गट्ठा।
**पुलटाव**—पु० (शि०) बदलाव।
**पुलटु**—पु० (शि०) लकड़ी के ठेले को पलटने के लिए 'झब्बल' का काम लेने के लिए बनाई लकड़ी।
**पुळटु**—पु० (कु०) घास का छोटा गट्ठा।
**पुलपुला**—वि० बिल्कुल नर्म।
**पुलसठ**—पु० फोड़े को पकाने के लिए बनाई गई दवा।
**पुला**—पु० (बि०) घास का छोटा गट्ठा।
**पुळा**—पु० (सि०) लकड़ी का बोझ।
**पुळा**—पु० (कु०, सो०) घास का गट्ठा।
**पुळी**—स्त्री० (कु०) लुहार के लिए निश्चित किया गया अनाज।
**पुले**—पु० (सि०) पुल।
**पुलो**—वि० (शि०) अंदर से खाली, खोखला।
**पुवाड़**—पु० (सि०) पहाड़।
**पुश**—अ० (कु०) चुपचाप।
**पुशते**—पु० (सि०) वंशावली।
**पुश्त**—स्त्री० पीढ़ी।
**पुसता**—पु० पानी से बचाव के लिए खड़ी की गई विशेष दीवार।
**पुसाक**—स्त्री० पोशाक।
**पुस्वाज**—स्त्री० दे० पसवाज।
**पुहाल**—पु० (कु०) गड़रिया, भेड़-बकरियां पालने वाला।
**पूं**—पु० एक वृक्ष का नाम।
**पूक्का**—पु० (शि०) नितंब।
**पूंछी**—स्त्री० (मं०) छोटा खेत।

**पूंजड़**—स्त्री० (शि०) पूंछ।
**पूंजड़ा**—पु० (सो०) पूंछ।
**पूंझड़**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) पोंछने वाला।
**पूंझणा**—स० क्रि० पोंछना।
**पूंबा**—पु० (कु०) ऊन की पिंजाई करने वाला व्यक्ति।
**पूंह**—पु० (मं०) किनारा।
**पूईणो**—अ० क्रि० (सि०) बाल झड़ना।
**पूए**—वि० (सि०) जिस स्त्री के सिर के बाल झड़े हुए हों।
**पूका**—पु० (सो०) कुत्ते का बच्चा।
**पूछगण**—स्त्री० पूछताछ, हाल-चाल।
**पूछछाडणी**—स० क्रि० (मं०) जादू-टोना करना।
**पूछड़**—स्त्री० (चं०) पूंछ।
**पूज**—पु० (शि०) पुल।
**पूज़**—स्त्री० (कु०) किसी की बिमारी पर पशुबलि द्वारा उपचार-विधि।
**पूजगी**—पु० (शि०) पुजारी।
**पूजणा**—स० क्रि० पूजा करना।
**पूज़णा**—स० क्रि० (कु०) 'पूज़' द्वारा उपचार करना।
**पूजा-पटड़ी**—स्त्री० दैवी आपदा से ग्रस्त व्यक्ति का तांत्रिक विधि से किया जाने वाला उपचार।
**पूठा**—वि० (मं०) औंधे मुंह।
**पूठा**—पु० (सि०) पशु की पीठ का पिछला हिस्सा।
**पूड़**—पु० (सि०) चक्की या घराट का एक पाट।
**पूड़-छट**—स्त्री० एक त्योहार विशेष।
**पूड़ा**—पु० (कां०) पूआ।
**पूड़ा**—पु० (कु०) आंखों की पतली जाली।
**पूड़ी**—स्त्री० खाने की पूरी।
**पूणना**—स० क्रि० (सो०, बि०) सूप से उड़ाकर अन्न साफ करना, दे० 'पुणना'।
**पूणा**—पु० (कु०) बर्फ का फाहा, गिरता हुआ बर्फ।
**पूणा**—पु० (सो०) झाड़न।
**पूणा**—पु० (कां०, चं०) चावल की मांड निकालने के लिए प्रयुक्त कपड़ा।
**पूणी**—स्त्री० ऊन या रुई की पूनी।
**पूणी**—स्त्री० 'पुणने' का साधन।
**पूणी**—स्त्री० फुंसी आदि को दबाने से निकली कड़ी पीप।
**पूणी**—स्त्री० छलनी।
**पूत**—पु० पुत्र।
**पूदना**—पु० (ह०) पोदीना।
**पून**—पु० (कु०, मं०) पुण्य।
**पूनिऊं**—स्त्री० (सि०) पूर्णमासी।
**पूर**—पु० किश्ती का एक चक्कर। एक बार में किये जाने वाले काम का भाव।
**पूर**—पु० (चं०) मिट्टी का फर्श।
**पूरण**—वि० (शि०) पूर्ण।
**पूरना**—स० क्रि० पूरा करना।
**पूरना**—स० क्रि० (कु०) निराई के समय आलू आदि के पौधे के तने पर मिट्टी एकत्रित करना।
**पूरब**—पु० पूर्व (दिशा)।
**पूरा**—वि० जिस पशु के पूरे दांत निकल आये हों और आयु का पता न चल सके।
**पूरा**—वि० संपूर्ण।
**पूरिना**—स० क्रि० (कु०) घाव भर जाना।
**पूरी**—वि० (कु०) सम, पूर्ण।
**पूरो**—वि० (शि०) पूर्ण।
**पूरोउण**—पु० (शि०) पराठा।
**पूर्बा**—स्त्री० पूर्व की दिशा।
**पूला**—पु० Kydia calycina.
**पूळा**—स्त्री० घास के बनाये विशेष जूते।
**पूली**—स्त्री० (ह०) चार पांच कटोरियों के परिमाप का गेहूं।
**पूष**—पु० (सि०) पौष मास।
**पूहज**—स्त्री० (कु०) नये देवता के गृह प्रवेश पर बकरा चढ़ाने की क्रिया।
**पेंग**—स्त्री० (सि०) झूला।
**पेंगत**—स्त्री० (कु०) पंक्ति।
**पेंच**—पु० (कु०) पंच।
**पेंची**—स्त्री० (कु०) पंचायत।
**पेंछी**—पु० (कु०) पक्षी।
**पेंडत**—पु० (कु०) पंडित।
**पेंदला**—वि० निचला।
**पेंदा**—पु० (शि०) किसी वस्तु का निचला भाग।
**पेंहाई**—स्त्री० (सि०) विवाह में दूल्हे या दुलहन को सबसे पहले उबटन लगाने वाली स्त्री।
**पे:र**—पु० (सि०) पहर।
**पेअकड़**—वि० शराबी।
**पेआ**—वि० गिरा हुआ।
**पेआली**—स्त्री० प्याली।
**पेइड़ी**—स्त्री० (कु०) सीढ़ी।
**पेउका**—पु० (कु०, मं०) मायका।
**पेउकी**—वि० (कु०) मायके के लोग।
**पेउश**—वि० (सि०) पहली बार ब्याई भैंस।
**पेओका**—पु० दे० पेउका।
**पेकर**—वि० (कु०) मोटे होंठ वाला।
**पेख**—स्त्री० जांच, परख, नज़र।
**पेख**—स्त्री० (मं०) मृत्यु की खबर जो लालटेन जलाकर स्वजन व परिजन को भेजी जाती है।
**पेखू**—पु० (मं०) मृत्यु का संदेश ले जाने वाला व्यक्ति।
**पेगालना**—स० क्रि० (सि०) गिराना।
**पेच**—पु० पेच।
**पेचणा**—स० क्रि० फाड़ना, जकड़ना, छेदना।
**पेच़णा**—स० क्रि० (कु०) उखाड़ना।
**पेचणो**—स० क्रि० (शि०) निचोड़ना, तिल से तेल निकालना।
**पेचना**—स० क्रि० (शि०) तेल निकालना।
**पेचला**—वि० उलझने वाला।
**पेचस**—स्त्री० अतिसार।
**पेचा**—पु० उलझन, अकड़न।

**पेचिणा**—स० क्रि० (कु०) उखाड़ा जाना।
**पेचीश**—स्त्री० (सि०) अतिसार।
**पेच्छी**—स्त्री० (सि०, सो०) अनाज रखने का बांस या मिट्टी का बना हुआ बरतन।
**पेज़**—पु० (सि०) प्याज़।
**पेटलोदरी**—वि० लोभी, ज्यादा खाने वाला/वाली।
**पेटारा**—पु० (शि०) पिटारा।
**पेटाली**—वि० गर्भवती।
**पेटी**—स्त्री० हारमोनियम।
**पेटी**—स्त्री० फलों का डब्बा, संदूक, पेटी।
**पेटी**—स्त्री० कमर बांधने के लिए प्रयुक्त पेटिका।
**पेटु**—पु० (चं०) खूबानी, चुली या आड़ू की गुठली के बीज।
**पेटू**—वि० अधिक खाने वाला।
**पेटोगा**—वि० (शि०) पेट के रोग वाला।
**पेट्ठा**—पु० (कां०) पेठा।
**पेठू**—पु० (कां०, मं०, सि०) घीए की एक प्रजाति।
**पेठो**—पु० (शि०) पेठा।
**पेड़**—स्त्री० (बि०) लकड़ी का छोटा डब्बा जिसमें विद्यार्थी दवात, कलम, पेंसिल रखते हैं।
**पेड़**—स्त्री० (कु०) बांस आदि का बना बड़ा टोकरा जिसमें अनाज रखा जाता है।
**पेड़ना**—स० क्रि० किसी चीज़ को उखाड़ना, पेरना, चित्रित करना।
**पेड़ा**—पु० खोये की बनी मिठाई।
**पेड़ा**—पु० गुंधे हुए आटे की लोई।
**पेड़ा**—पु० (कु०) पड़ोसी (सर्वदा समास रूप में 'जोड़ा' के साथ प्रयुक्त होता—'जोड़ा-पेड़ा' पड़ोसी)।
**पेड़ी**—स्त्री० (सि०) सीढ़ी।
**पेड़ी**—स्त्री० (चं०, बि०, सो०) अनाज भंडारण के लिए बना बांस का पात्र।
**पेडू**—वि० (कु०) मोटा, बड़े पेट वाला।
**पेड्डू**—पु० अनाज भंडारण के लिए बना बांस का छोटा पात्र।
**पेड़ो**—पु० (शि०) मालिक, पति।
**पेड़डा**—पु० (सि०) पेड़।
**पेथं**—स्त्री० (कु०) ढेर (विशेषतः रोटियों का ढेर)।
**पेन**—पु० लेखनी।
**पेनराघेरा**—पु० (मं०) शादी के तीसरे दिन वर-वधू द्वारा वधू के मायके जाने की क्रिया।
**पेपड़**—पु० छिलका, पपड़ी।
**पेपड़ा**—पु० दीवार की गिरी मिट्टी।
**पेपड़ी**—स्त्री० रोटी की पपड़ी, पतली रोटी।
**पेरणा**—स० क्रि० (शि०) गिराना।
**पेरणा**—स० क्रि० (सि०) पहनना।
**पेरणो**—स० क्रि० (शि०) गिराना, डालना।
**पेरना**—स० क्रि० (कु०, सि०, शि०) उड़ेलना।
**पेरा**—वि० (सि०) प्यारा।
**पेलना**—स० क्रि० (कु०) निचोड़ना।
**पेळी**—स्त्री० (कु०) जबरदस्ती भेजने की क्रिया।
**पेळी**—स्त्री० (सो०) पहेली।
**पेवका**—पु० (सो०) मायका।
**पेशकार**—वि० प्रस्तुत करने वाला।
**पेशकी**—स्त्री० (कु०, शि०) अदायगी, पेशगी।
**पेशणा**—अ० क्रि० (कु०) आना, प्रवेश करना।
**पेशा**—पु० (कु०) धंधा।
**पेशी**—अ० (शि०) तरफ।
**पेशे**—स्त्री० (सि०) अदालत में सुनवाई की तिथि।
**पेशो**—पु० (शि०) प्रकाश।
**पेस**—पु० (कां०) पेश, उपस्थिति।
**पेसी**—स्त्री० गुड़ का ढेला।
**पेषणी**—स्त्री० (शि०) सिल।
**पेहरू**—पु० (कु०) मेढ़ा, भेड़-बकरी।
**पेहा**—पु० (कां०) कुदाली का मुड़ा हुआ भाग।
**पेहिले**—अ० (कु०) पहले।
**पैंग**—पु० (सि०) बच्चों को सुलाने का झूला।
**पैंची**—स्त्री० पंचायत।
**पैंट**—पु० नुकता, बात।
**पैंट**—पु० दीवार पर गाड़ी कीलों के सहारे रखा फट्टा।
**पैंठ**—स्त्री० विवाह में भोजन के लिए बिठाए लोगों की पंक्ति।
**पैंठ**—वि० (शि०, सो०) पैंसठ।
**पैंडल**—पु० गले का आभूषण।
**पैंडा**—पु० पगडंडी, रास्ता।
**पैंतड़ा**—पु० रुख।
**पैंतर**—पु० पैर रखने के लिए पत्थर की या मिट्टी खोद कर बनाई हुई सीढ़ी।
**पैंता**—पु० दे० पैंतर।
**पैंती**—स्त्री० वर्णमाला।
**पैंती**—वि० पैंतीस।
**पैंतीश**—वि० (शि०) पैंतीस।
**पैंते**—पु० नदी पार करने के लिए पैर रखने हेतु रखे पत्थर।
**पैंत्रा**—पु० (चं०) अनियमित और अधिक मात्रा में मासिक धर्म।
**पैंत्री**—वि० (चं०) पैंतीस।
**पैंत्री**—वि० चालबाज़।
**पैंद**—पु० खेत का निचला भाग।
**पैंद**—पु० (शि०) पेट।
**पैंदल**—वि० (कु०) पांच अंगुल के बराबर (माप)।
**पैंदा**—पु० किसी पात्र का निचला भाग।
**पैंदी**—स्त्री० किसी गहरी वस्तु का तला।
**पैंदु**—वि० (शि०) पेटू।
**पैंधा**—पु० (शि०) जबरदस्ती सौंपने का भाव।
**पैंहट**—वि० पैंसठ।
**पैःर**—अ० (कु०) परे, थोड़ी दूर।
**पैःरना**—स० क्रि० (बि०) व्यक्ति के रात को मरने पर प्रातः तक पहरा देना। इंतजार करना।
**पैःलका**—वि० पहले का।
**पैःला**—वि० पहला।
**पैऊश**—पु० (सि०) भैंस ब्याने के बाद दूध से बना पनीर की

तरह का पदार्थ।
**पैओणा**—स० क्रि० (शि०) पिलाना।
**पैकरमा**—स्त्री० (शि०) परिक्रमा।
**पैका**—वि० (कु०) पक्का, सख्त। कंजूस।
**पैचणा**—अ० क्रि० (कु०) पचना।
**पैछ**—अ० (कु०) पीछे।
**पैछड़**—पु० (कां०) दांती का पिछला भाग।
**पैछड़**—पु० (कां०, बि०, ह०) पैरों के निशान।
**पैछड़**—पु० (सि०) चलने की आवाज़।
**पैछे**—पु० (सि०) अनाज भंडारण के लिए बना बांस का पात्र।
**पैजणा**—स० क्रि० कपड़े पहनना।
**पैजणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) बिना बात के आगे होना।
**पैजली**—स्त्री० (सि०) पतली बांस।
**पैट**—पु० (मं०) अनाज का पात्र रखने का स्थान।
**पैटकदा**—वि० (कु०) सख्त, सुडौल।
**पैटपटी**—स्त्री० (कु०) पिंडलियों में दर्द होने का भाव।
**पैटपैटा**—वि० (कु०) सख्त।
**पैठ**—स्त्री० (सो०) दे० पैंठ।
**पैठी**—स्त्री० (ह०) चटाई, खजूर के पत्तों की चटाई।
**पैठू**—पु० (मं०) पेठा।
**पैड़**—पु० पैर का निशान।
**पैड़दा**—पु० (कु०) पर्दा।
**पैड़साल**—पु० (सि०) पत्थर की सीढ़ियां।
**पैड़ा**—पु० (बि०) नाली को पार करने या ऊंचाई पर चढ़ने के लिए रखा सीढ़ीनुमा बड़ा पत्थर।
**पैड़ी**—स्त्री० सीढ़ी।
**पैडो**—पु० (सि०) बड़ा पौधा।
**पैताणा**—अ० क्रि० (सि०) पछताना।
**पैत्री**—स्त्री० सब्जी काटने का लोहे का उपकरण।
**पैदाई**—स्त्री० (बि०) कर्मकांड का काम।
**पैधरा**—वि० (कु०) समतल, बराबर।
**पैनक**—स्त्री० दुपट्टे आदि के किनारे में लगी जरी की किनारी।
**पैनणा**—स० क्रि० पहनना।
**पैनसल**—स्त्री० (मं०, बि०) पेंसिल।
**पैना**—वि० तीखा, नुकीला।
**पैर**—पु० (शि०) हरी घास।
**पैर**—पु० पांव।
**पैरजोर**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) नाता रिश्ता।
**पैरणो**—स० क्रि० (सि०) निचोड़ना।
**पैरधुआई**—स्त्री० वधू द्वारा प्रथम बार परिवार जनों तथा परिजनों के पांव धोने की रस्म।
**पैरना**—स० क्रि० (सि०, सो०) गोबर को खेत में बिखेरना।
**पैरबंदाई**—स्त्री० वधू द्वारा प्रथम बार पांवबंदन की रस्म।
**पैरा**—पु० प्यारा।
**पैरिपौणा**—पु० अभिवादन।
**पैरियां**—स्त्री० पतली और हल्की पायल।
**पैरी**—स्त्री० (सि०) जुराबें।
**पैरी**—स्त्री० (सि०) खलियान में गाहने के लिए गेहूं डालने की क्रिया।
**पैल**—पु० (शि०) श्वेत बाल।
**पैल**—पु० (कु०) पल।
**पैल**—स्त्री० आम आदि फलों को पकाने की क्रिया।
**पैलका**—वि० पहले वाला।
**पैलम**—पु० (कु०) आलूचा (एक फल)।
**पैलवान**—पु० पहलवान।
**पैला**—पु० (शि०) प्याला।
**पैली**—अ० (सि०) पहले।
**पैवा**—पु० (सि०) प्याऊ, सबील।
**पैश—स्त्री० (शि०) रूसी, सिर पर जमी मैल।**
**पैशला**—वि० (सि०) प्रकाश युक्त।
**पैशो**—पु० (शि०, सि०) उजाला, प्रकाश।
**पैहनणा**—स० क्रि० पहनना।
**पैहनाना**—स० क्रि० (शि०) पहनाना।
**पैहर**—पु० प्रहर।
**पैहरू**—वि० पहरा देने वाला।
**पैहरू**—पु० भेड़-बकरियां।
**पैहरू**—पु० (बि०) बलि के लिए तैयार किया गया मेमना या बकरा।
**पैहरा**—पु० पहरा।
**पोंउजू**—पु० (कु०) छोटे पंजे।
**पोंज़**—वि० (कु०) पांच।
**पोंजवीर**—पु० (कु०) पांचवीर, देवताओं की एक श्रेणी।
**पोंजुऐ**—अ० (कु०) पांचवें दिन।
**पोंथा**—पु० (सि०) चौराहा।
**पो:**—पु० पोष।
**पो:रला**—वि० (कु०) परे का, उस ओर का।
**पो:लणी**—स्त्री० पहेली।
**पो**—वि० (कां०) पाव भर।
**पोआ**—पु० (शि०) ताज़ा गोबर का एक भाग।
**पोआ**—पु० चारपाई आदि का पाया।
**पोआड़ा**—पु० (मं०, बि०) मुसीबत।
**पोआड़ा**—पु० (सि०) एक कहानी जो गाकर सुनाई जाती है।
**पोइनू**—वि० (सि०) पतला (आदमी)।
**पोइनो**—वि० (सि०) पैना।
**पोइलो**—पु० (सि०) सफेद बाल।
**पोइसे**—पु० (सि०) पैसे।
**पोई**—स्त्री० (सि०) एक प्रकार का जंगली कुकुरमुत्ता।
**पोईथ**—पु० (सि०) दाल।
**पोउड़ा**—पु० (कु०) रसोई से बाहर वाला कमरा।
**पोउणा—वि० (कु०) तीन चौथाई।**
**पोएड़शाला**—पु० (सि०) पौड़ियां।
**पोक**—वि० (कु०) ठग।
**पोकणा**—स० क्रि० (सो०) फांकना।
**पोकणा**—स० क्रि० (कु०) ठगना।
**पोका**—स्त्री० (कु०) झूठी बातें।
**पोका**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) चुंबन।

**पोकाणो**—स० क्रि० (शि०) पकाना।
**पोकिणा**—अ० क्रि० (कु०) ठगे जाना।
**पोक्खर**—पु० (सो०) पोखर।
**पोक्षपाल**—पु० (कु०, शि०, सि०) पक्षपात।
**पोखड्ू**—पु० (कु०) बारीक कण।
**पोखणा**—स० क्रि० (शि०) पालना।
**पोखर**—पु० (शि०) तालाब।
**पोखा**—पु० (शि०) इंतजार।
**पोखिणा**—अ० क्रि० (शि०) उलझना।
**पोखेरू**—पु० पक्षी, पखेरू।
**पोगड़ा**—अ० (सि०) प्रत्यक्ष।
**पोगल**—पु० (शि०) वांछित वस्तु प्राप्त होने का भाव।
**पोगले**—स्त्री० (कु०) प्रश्न लगाने की क्रिया।
**पोगा**—पु० (सि०) करनाल का पिछला भाग, लकड़ी की छाल से बनी करनाल।
**पोगिया**—पु० (सि०) मंदिर का बरामदा, आंगन।
**पोगोलणो**—स० क्रि० (शि०) पिघलाना।
**पोघी**—स्त्री० (कु०) सख्ती से पेश आने की क्रिया।
**पोचका**—वि० (सि०) मोटी (स्त्री)।
**पोचड़ना**—स० क्रि० (सि०) मक्की के छिलके उतारने के पश्चात् उसको उसकी डाली से बाहर निकालना।
**पोचड़ना**—स० क्रि० (सि०) लीपना।
**पोचड्ू**—पु० (शि०) पौत्र।
**पोचड़े**—स्त्री० (शि०) पौत्री।
**पोचणा**—स० क्रि० (सो०, शि०) साफ करना।
**पोचना**—स० क्रि० तख्ती साफ करना।
**पोचळ**—पु० (कां०, कु०, मं०) भुट्टे को ढकने वाला छिलका।
**पोचळ**—वि० (कां०, बि०) बिना गिरि का, खोखला। सीधा-सादा।
**पोचा**—पु० (कु०) मक्की के भुट्टे का छिलका।
**पोचा**—पु० कपड़े का टुकड़ा जो फर्श आदि साफ करने के लिए प्रयुक्त होता है।
**पोचा**—पु० (सि०) पोता।
**पोचाड़ी**—स्त्री० (सि०) पत्तियां काटने का गंडासा।
**पोची**—स्त्री० (सि०) पोती।
**पोचीस**—वि० (सि०) पचीस।
**पोचे**—पु० (शि०) रस्सी के सिरे पर बनाया गया फंदा।
**पोचौ**—पु० (कु०) पौत्र।
**पोच्चड़**—पु० (सि०) मक्की के भुट्टे का बाहर का छिलका।
**पोच्छ**—पु० (मं०) बीजाई द्वारा उगाया धान।
**पोछणा**—स० क्रि० (कु०) इधर-उधर फैंकना।
**पोछणा**—स० क्रि० (कु०) पूछना।
**पोछणा**—स० क्रि० पोंछना।
**पोछम**—पु० (शि०, सि०) पश्चिम।
**पोछमें**—वि० (सि०) चिरान करने वाले।
**पोछवाड़**—स्त्री० (शि०) देर होने का भाव।
**पोछुणा**—अ० क्रि० (कु०) गिर जाना।
**पोजयार**—पु० (सि०) घास-पत्ती।
**पोजलणो**—अ० क्रि० (सि०) चिढ़ना।
**पोजारू**—वि० (सि०) घास-पत्ती लाने वाला।
**पोझत्तर**—वि० (सि०) पचहत्तर।
**पोट**—पु० (मं०, शि०) पेट।
**पोटकणा**—स० क्रि० (सि०) पटकना।
**पोटकरा**—पु० (शि०) पशुओं का पेट।
**पोटका**—पु० (सि०) भेड़-बकरी की बीमारी।
**पोटका**—पु० नुकसान।
**पोटकीरा**—पु० (सि०) पत्तों द्वारा बनाई गई छतरी।
**पोटण**—वि० (कु०) बड़े पेट वाली; अधिक खाने वाली।
**पोटणा**—स० क्रि० (शि०) निकालना, उखाड़ना।
**पोटणी**—स्त्री० (सि०) पलकें।
**पोटणे**—स्त्री० (शि०) दे० पोटणी।
**पोटणो**—स० क्रि० (शि०) उखाड़ना।
**पोटली**—स्त्री० गठरी, थैली। पशु या पक्षी के गले की थैली।
**पोटळु**—पु० बच्चे का पेट।
**पोटसण**—पु० (सि०) पटसन।
**पोटा**—पु० पेट।
**पोटाका**—पु० (सि०) थप्पड़।
**पोटी**—स्त्री० आंतें।
**पोटी**—वि० (कु०, सो०) बहुत खाने वाला व्यक्ति।
**पोट्टण**—पु० (कां०) बड़ा छेद।
**पोट्वारी**—पु० (शि०, सि०) पटवारी।
**पोठा**—पु० (चं०) Ethottzia polystachya.
**पोड़**—पु० (चं०) सिर के पीछे का भाग।
**पोड़ना**—अ० क्रि० (शि०, सि०) लेटना।
**पोड़पोंच**—पु० (कु०, सि०) प्रपंच।
**पोडर**—पु० पाउडर।
**पोड़ाई**—स्त्री० (शि०) कफन।
**पोड़ापड़**—स्त्री० (सि०) तड़ातड़ की ध्वनि।
**पोड़ी**—स्त्री० (बि०) मिट्टी के बड़े ढेले।
**पोड़ोई**—स्त्री० (सि०) प्रथम तिथि।
**पोळण**—वि० (कु०) बड़े पेट वाली।
**पोळणा**—स० क्रि० (शि०) पक्षी के पर उखाड़ना।
**पोढ़ी**—वि० (कु०) बड़े पेट वाला।
**पोण**—स्त्री० (सि०) पवन। किसी व्यक्ति में देवता का प्रवेश।
**पोण**—पु० (कां०) नदी का वह भाग जहां मछलियां इकट्ठी हों।
**पोणदेणा**—स० क्रि० (कां०) पानी में जाल को फैला कर फैंकना।
**पोणपणा**—अ० क्रि० (सि०) पनपना।
**पोणसारी**—पु० (सि०) पंसारी।
**पोणसेरी**—स्त्री० (सि०) पंसेरी।
**पोणा**—पु० झाड़न।
**पोणा**—अ० क्रि० (कु०) पड़ना, गिरना।
**पोणा**—स० क्रि० (सो०) 'व्यूहल' के वृक्ष की छड़ियों से ऐसे धागों को निकालना जिनसे रस्सियां आदि बनती हैं।
**पोणियारे**—स्त्री० पानी भरने वाली स्त्री।
**पोणी**—स्त्री० छननी।

**पोतड़ा**—पु० बच्चों के नितंब में लपेटा जाने वाला कपड़ा।
**पोतणा**—स० क्रि० (कां०, शि०) पोतना।
**पोतर**—पु० (सि०) देव की भेंट एकत्र करने का पात्र।
**पोतरा**—पु० (सि०) जंत्र। टीन का टुकड़ा।
**पोतरी**—स्त्री० पौत्री।
**पोतरू**—पु० (कां०, कु०) पौत्र।
**पोतळा**—पु० (कु०) खाना पकाने का बड़ा पात्र।
**पोताल**—पु० (सि०) पाताल।
**पोतेलदु**—पु० (शि०) दाल में पकाई गई रोटी।
**पोतेली**—स्त्री० (सि०) पतीली।
**पोत्ता**—पु० (कां०) सफेदी आदि करने के लिए बना कपड़े का टुकड़ा, तवे आदि पर घी, तेल लगाने के लिए बना कपड़े का छोटा टुकड़ा।
**पोत्था**—पु० ग्रंथ।
**पोथ**—वि० (शि०) अंत।
**पोथ**—पु० (सि०) आधार, बरतन का निचला भाग।
**पोथड़े**—स्त्री० (शि०) तितली।
**पोथणा**—स० क्रि० (सि०) लीपना।
**पोथणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) बरबाद करना, खराब करना।
**पोथ-पथारा**—पु० (सो०) खराबी, अव्यवस्था, बेहूदापन।
**पोथा**—वि० (कु०, मं०) नर्म।
**पोथी**—स्त्री० (मं०) गंध युक्त झाड़ी विशेष।
**पोथी**—स्त्री० पुस्तक।
**पोदण***—वि० मोटी (औरत)।
**प्रोदर**—पु० (सि०) अचंभा।
**पोदरा**—वि० (सि०) अद्भुत (व्यक्ति या वस्तु)।
**पोदरे**—वि० (सि०) उपजाऊ।
**पोदी***—वि० मोटा (पुरुष)।
**पोदीना**—पु० (शि०, सो०) Mentha sylvestris.
**पोन**—पु० (शि०) ग्रास।
**पोनयो**—पु० (सि०) पूर्णमासी।
**पोनीर**—पु० (सि०) पनीर।
**पोपच**—पु० (सि०) पेच।
**पोपण**—पु० (कु०) पलकें।
**पोपला**—पु० (कु०) पीतल की बड़ी गागर।
**पोपळा**—वि० बिना दांतों का (मुंह)।
**पोपलु**—पु० (मं०) गाल।
**पोपो**—पु० तोता।
**पोमाट**—स्त्री० (सि०) शरारत।
**पोयंट**—स्त्री० (सि०) पैंट, पतलून।
**पोयड़ा—पु० (सि०) चलने के लिए खराब जगह, सीढ़ी।**
**पोयनु**—वि० (सि०) तेज तरार (व्यक्ति) बहुत पतला (आदमी)।
**पोयनो**—वि० (शि०) तेज़, नोकदार।
**पोयरना**—स० क्रि० (सि०) पहनना।
**पोयरा**—पु० (सि०) पहरा।
**पोयलका**—वि० (सि०) पहला, पहले का, कुछ समय पूर्व का।
**पोयलो**—वि० (सि०) पहला।
**पोर**—अ० (सि०) परंतु, पर।
**पोर**—पु० (सि०) फोड़े का मुख।
**पोर**—पु० (शि०) अंगुली की गांठ का जोड़।
**पोरखड़ा**—अ० (सि०) थोड़ी दूर, दूसरी ओर।
**पोरका**—अ० (शि०) परे।
**पोरके**—अ० (सि०) पिछले।
**पोरचाणा**—स० क्रि० (सि०) पुचकारना।
**पोरछाई**—स्त्री० (सि०) परछाई।
**पोरड़ा**—अ० (सो०) दूर, परे।
**पोरण—पु० (सि०) प्रण।**
**पोरणा—पु० (सि०) झाड़न।**
**पोरणे**—पु० (सि०) किसी पात्र का वृत्ताकार मुंह।
**पोरतणी**—स्त्री० (सि०) धोती।
**पोर्तो**—स्त्री० (सि०) तहें।
**पोरदा**—पु० (सि०) पर्दा।
**पोरना**—पु० (सि०) छलनी।
**पोरबोत**—पु० (कु०, सि०) पर्वत।
**पोरमातमा**—पु० (सि०) परमात्मा।
**पोरमोल**—पु० (सि०) चावल की एक किस्म।
**पोरयाणणो**—स० क्रि० (शि०) पहचानना।
**पोरलय**—पु० (सि०) प्रलय।
**पोरला**—वि० (सि०) परे का, उस ओर का।
**पोरशी**—अ० (सि०) परसों।
**पोरसाद**—पु० (सि०) प्रसाद।
**पोरा**—पु० (शि०) पुत्र।
**पोरा**—पु० (मं०) तना।
**पोरा**—पु० (चं०) साग में डाला जाने वाला आटे का घोल।
**पोराण**—पु० (शि०) प्राण।
**पोराणा**—वि० (सि०) पुराना।
**पोरात**—स्त्री० (सि०) परात।
**पोराया**—वि० (सि०) पराया।
**पोराल**—पु० (सि०) धान का घास।
**पोरिणाम**—पु० (सि०) परिणाम।
**पोरिशान**—पु० (सि०) परेशान।
**पोरी**—स्त्री० गन्ने का टुकड़ा, गन्ने का एक गांठ से दूसरी गांठ तक का टुकड़ा।
**पोरी**—स्त्री० (कां०) नई शाखा।
**पोरीए**—अ० (कु०) उस तरफ, पार की ओर।
**पोरीये**—अ० (शि०) सदा।
**पोरू**—अ० (कु०, शि०) उस ओर।
**पोरुआ**—वि० (सि०) कीटादि युक्त पदार्थ।
**पोरे**—पु० उंगलियों के खंड।
**पोरे**—स्त्री० (सि०) परी।
**पोरे**—अ० (कु०, सो०) उधर, वहां।
**पोरे**—पु० (सि०) पशु के गर्भ बढ़ने की क्रिया।
**पोरेऊलणो**—स० क्रि० (शि०) काम बिगाड़ना।
**पोरेस**—स्त्री० (सि०) प्रेस, वह यन्त्र जिससे कोई चीज़ दबाई या पेरी जाए।
**पोरै**—अ० (कु०) परे, दूर।

**पोरोख**—स्त्री० (सि०) परख।
**पोल**—स्त्री० (सि०) काली-मां।
**पोल**—पु० (सि०) मंदिर का दरवाजा।
**पोल**—स्त्री० भेद।
**पोल**—पु० (सि०) औज़ार तेज़ करने का पत्थर। मंदिर का आंगन।
**पोलकी**—वि० (सि०) पहली।
**पोलग**—पु० (सि०) पलंग।
**पोळ्दु**—पु० (सो०) बच्चों के लिए बनाई गई छोटी रोटी।
**पोलड़ी**—स्त्री० (शि०) बिछुआ, पांव का एक गहना।
**पोलड़े**—पु० (कु०,मं०) जूते।
**पोलढ़**—वि० (बि०) जिसमें काम करने का सामर्थ्य न हो।
**पोलण**—पु० (सि०) आंख की पुतली।
**पोलणी**—स्त्री० (सो०) जूती।
**पोलणी**—स्त्री० पहेली।
**पोलम**—पु० आलूचा।
**पोला**—वि० नरम, खोखला, हल्का।
**पोळा**—पु० (शि०) पांच सात किलो आटे का एक रोट जो शिवरात्रि में शिव जी के गणों को बनाते हैं।
**पोलाण**—स्त्री० (सि०) घोड़े की काठी के नीचे की बोरियां।
**पोलात**—पु० (सि०) पाला।
**पोलान**—स्त्री० योजना।
**पोलारो**—वि० (शि०) पकवान ले जाने वाला।
**पोली**—स्त्री० (शि०, सि०) बड़े आकार की रोटी, एक विशेष पकवान।
**पोली**—वि० कोमल।
**पोली**—वि० (मं०) गली हुई, कच्ची या सुराखदार (लकड़ी)।
**पोली**—स्त्री० (कु०) स्त्रियों के पैर का एक गहना।
**पोळी**—स्त्री० (कां०) तवे पर पकाई गई पूड़ी।
**पोळीपाच**—पु० (शि०) पतली रोटी जिसे घी में पकाया जाता है।
**पोळू**—पु० (कु०, बि०) छोटी और सुंदर रोटी।
**पोळू**—पु० (कु०, शि०) सफेद बाल।
**पोळू**—पु० (कां०) बड़ा, भल्ला।
**पोल्डू**—पु० (कु०, शि०) पूरी, तेल में पकी रोटी।
**पोल्डू**—पु० दे० पोलड़ी।
**पोल्ल**—पु० (सि०) देवता के अस्त्र-शस्त्रों को तेज़ करने का पत्थर।
**पोल्ला**—पु० (सि०) छल्ला।
**पोवजा**—पु० (शि०) कलाई।
**पोश**—पु० (सि०) किनारा।
**पोश**—पु० (कु०) पौष मास।
**पोशलणा**—अ० क्रि० (सि०) बुखार में बड़बड़ाना, बकवास करना।
**पोशाई**—पु० (सि०) परसों (आने वाला)।
**पोसरणे**—स्त्री० (सि०) एक प्रकार का चर्म रोग।
**पोसरणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) लेटना, पसरना।
**पोस्ती**—वि० आलसी।
**पोह**—पु० पौष मास।
**पोहचणा**—अ० क्रि० (कु०) पहुंचना।
**पोहा**—पु० (कु०) उपला।
**पोहाए**—स्त्री० (सि०) मुसीबत।
**पोहई**—स्त्री० दूल्हा, दुलहन की आरती उतारने वाली स्त्री।
**पोहड़**—स्त्री० (चं०) गर्दन के ऊपर का सिर का पिछला भाग।
**पोहड़**—स्त्री० (कां०) मोटी जड़।
**पोहणा**—स० क्रि० (शि०) गूंथना।
**पोहदेणा**—स० क्रि० (कां०) किसी की बात में दखल देना।
**पोहलणी**—स्त्री० पहेली।
**पोहला**—वि० (शि०) प्रथम।
**पौंइसे**—पु० (शि०) पैसे।
**पौंगर**—स्त्री० (चं०) अंकुर।
**पौंच**—स्त्री० पहुंच, समझ।
**पौंच**—पु० (कु०) पंच, पंचायत का सदस्य।
**पौंचणा**—अ० क्रि० पहुंचना।
**पौंचा**—पु० मोहरी।
**पौंची**—स्त्री० (बि०) पैर में लगाया जाने वाला ज़ेवर विशेष।
**पौंजा**—पु० (शि०, सि०, सो०) कलाई।
**पौंजुआ**—वि० (कु०) पांचवां।
**पौंजो**—पु० (कु०) पंजा।
**पौंटे**—पु० (कां०) बच्चों के पैरों के बड़े घुंघरू।
**पौंठ**—पु० (कां०) मकान का एक ओर का ढलानदार छत।
**पौंड**—पु० पौंड, सिक्का।
**पौंदा**—अ० (शि०) तत्काल।
**पौंद्रो**—वि० (कु०, शि०) पंद्रह।
**पौंसा**—पु० (सि०) सोने या नींद लेने की इच्छा।
**पौःला**—वि० (शि०) प्रथम।
**पौ**—पु० (सो०) भैंस-गाय का एक बार का गोबर।
**पौअश**—पु० (शि०) पक्ष, पहलू।
**पौआ**—पु० पाया, चारपाई, कुरसी, मेज़ इत्यादि की टांग।
**पौआ**—वि० एक चौथाई।
**पौइलका**—वि० (कु०, सि०) पहले का।
**पौइले**—वि० (कु०, सि०) पहले।
**पौईना/नो**—वि० (शि०, सि०) तीक्ष्ण।
**पौऊणा**—पु० मेहमान।
**पौओड़ा**—पु० ऊपरी मंजिल का बरामदा।
**पौकणा**—अ० क्रि० (कु०) पकना।
**पौकिणा**—अ० क्रि० (कु०) पक जाना।
**पौच**—पु० (कु०, मं०) पत्ता।
**पौछ्णा**—अ० क्रि० (कु०) पछताना।
**पौचणो**—अ० क्रि० (शि०) पहुंचना।
**पौचांग**—पु० (कु०) पत्ता।
**पौची**—स्त्री० (कु०) बलि के लिए पशु के कानों में डाले अक्षत, फूल आदि।
**पौची**—स्त्री० (मं०) पौत्री।
**पौचीश**—वि० (कु०, शि०) पचीस।
**पौचू**—पु० (मं०) पौत्र।

**पौछ़णा**—स० क्रि० (कु०) तेज़ अस्त्र से चीरा लगाना।
**पौज़**—स्त्री० (कु०) नदी या नाले के ऊपर बिछाई एक शहतीर का पुल।
**पौज़णा/णो**—अ० क्रि० (कु०) पैदा होना, उपजना।
**पौजलना**—अ० क्रि० (शि०) आग का जलना।
**पौज़ा**—पु० (कु०, बि०) पैदावार। एक प्रकार का घास जो हमेशा हरा रहता है।
**पौज़ाह**—वि० (मं०) पचास।
**पौट**—पु० (कु०) स्लेट, पतला एवं चौड़ा पत्थर जो छत छाने के काम आता है।
**पौट**—पु० (शि०) पेट।
**पौटड़ी**—स्त्री० (कु०) किसी के ग्रह टालने के लिए गूर द्वारा किया गया विशेष उपचार, तांत्रिक ढंग से उपचार की एक विधि जिसमें गूर चावल मंत्र कर चौड़े पत्थर पर रख कर पक्षियों को खिलाता है।
**पौटड़ी**—स्त्री० (कु०) पटरी।
**पौटणा**—स० क्रि० (शि०) उखाड़ना।
**पौटी**—स्त्री० (कु०) तख्ती।
**पौटू**—पु० (कु०) पहनने का कंबल।
**पौटू**—वि० बूरे काम करने वाला, उजाड़ने वाला।
**पौटे**—पु० (सि०) जानवर का अमाशय।
**पौठ**—स्त्री० (कु०) ऐसी बकरी जिसने अभी मेमना न जना हो। जवान मुर्गी।
**पौठलू**—पु० (कु०) छोटा बकरा।
**पौठा**—पु० (कु०) टांग का घुटने से ऊपर का भाग।
**पौठी**—स्त्री० (कु०) घारी।
**पौड़**—पु० (चं०) एक भाड़ीदार बेल।
**पौड़ताल**—स्त्री० (कु०, सि०) पड़ताल।
**पौड़ना**—स० क्रि० (शि०, सि०) पढ़ना। अ० क्रि० लेटना।
**पौड़ना**—अ० क्रि० (कु०) गिरना, पड़ना।
**पौडर**—पु० दे० पोडर।
**पौड़ा**—पु० बड़ा पत्थर जो ऊंचे स्थान पर चढ़ने के लिए रखा जाता है।
**पौड़ा**—पु० (सि०) गन्ना।
**पौड़ा**—पु० (सि०) बैठक।
**पौड़ा**—पु० स्त्री० मकान की ऊपर की मंजिल का बाहर का बरामदानुमा कमरा।
**पौड़ी**—स्त्री० पैड़ी, सीढ़ी।
**पौढ़ना**—स० क्रि० (कु०) पढ़ना।
**पौढ़िणा**—स० क्रि० (कु०) पढ़ा जाना।
**पौण**—स्त्री० हवा।
**पौण खटोलू**—पु० पवन-खटोला, हवाई जहाज़।
**पौण-पाणि**—वि० (सो०) फुर्तीला।
**पौण-पाणी**—स्त्री० (कु०) पवन, पानी, जल-वायु।
**पौणा**—अ० क्रि० गिरना।
**पौणा**—वि० तीन चौथाई।
**पौतर**—पु० (कु०) पत्ता।
**पौतरी**—स्त्री० (कु०) पत्री, जन्म पत्री; पत्तल।
**पौता**—पु० (कु०, शि०) पत्ता।
**पौत्ता**—पु० (सि०) संदेश।
**पौत्ती**—स्त्री० (शि०) पंचांग।
**पौत्री**—स्त्री० (शि०) लंबी चिट्ठी।
**पौथणा**—स० क्रि० (कु०) दबाना, दफनाना।
**पौथा**—वि० (कु०) प्रस्थ, लगभग दो किलो।
**पौदरा**—वि० (कु०) समतल।
**पौध**—पु० पनीरी।
**पौनो**—वि० (शि०) पैना, तीखा।
**पौयर**—पु० (सि०) पैर।
**पौयरा**—पु० (सि०) पहरा।
**पौर**—अ० (कु०, शि०) पिछला वर्ष।
**पौरका**—वि० (कु०) पिछले वर्ष का।
**पौरकास**—पु० (सि०) प्रकाश।
**पौरकी**—वि० (शि०) पिछले वर्ष में।
**पौरके**—अ० क्रि० पिछली बार।
**पौरगणा**—पु० (सि०) परगना।
**पौरचा**—पु० पर्चा, कागज़, इम्तिहान का पर्चा।
**पौरचार**—पु० (सि०) प्रचार।
**पौरज़ा**—स्त्री० (कु०) प्रजा।
**पौरलणे**—स्त्री० (शि०) धोती।
**पौरना**—स० क्रि० (सो०) पहरना।
**पौरनो**—स० क्रि० (सि०) पहनना।
**पौरशी**—पु० (कु०) परसों।
**पौरस**—स्त्री० (कु०) खुला चुल्लू।
**पौरसू**—पु० (कु०) पसीना।
**पौरी**—स्त्री० (कु०, शि०) परी, अप्सरा।
**पौरीदो**—अ० (शि०) इर्द-गिर्द।
**पौरे**—अ० (कु०, बि०) उधर।
**पौरो**—पु० (शि०) पहरा।
**पौल**—पु० (कु०, सि०) पल।
**पौळ**—पु० (चं०) शिवजी के डमरू की तरह का बड़ा डमरू जिसे अंगुलियों से बजाया जाता है।
**पौळ**—वि० (कु०) नकारा।
**पौळ**—पु० (सि०) गांव में बना द्वार की तरह का प्रतीक।
**पौलगे**—स्त्री० (शि०) पालकी।
**पौलटणा**—स० क्रि० (शि०) बदलना, पलटना।
**पौलड़ी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) स्त्रियों की पहनने की चमड़े की चप्पल।
**पौलड़ी**—स्त्री० (शि०) पांव की अंगुलियों की अंगूठी।
**पौलथी**—स्त्री० (सि०) पालथी।
**पौला**—पु० (चं०, बि०) जूता।
**पौलाणो**—स० क्रि० (सि०) तीक्ष्ण करना।
**पौलुदा**—वि० (कु०) पला हुआ।
**पौल्ला**—पु० (कां०) पैर।
**पौशादे**—स्त्री० (सि०) घाटी का किनारा।
**पौशम**—पु० पशम।
**पौशु**—पु० पशु।

**पौश्कड़ी**—स्त्री० (शि०) करवट। पसली।
**पौस**—वि० (शि०) मुट्ठी भर (अन्न)।
**पौसली**—स्त्री० पसली।
**पौहरना**—स० क्रि० (कु०) पहरा देना, देखभाल करना।
**पौहरा**—पु० (कु०) पहरा।
**पौहरी**—पु० (कु०) पहरेदार।
**प्यशैदाणा**—स० क्रि० (सो०) शादी पक्की करना।
**प्याजुणा**—स० क्रि० (सो०) अधिकृत करना।
**प्याणा**—स० क्रि० (शि०, बि०) पिलाना।
**प्यादा**—पु० राजकीय आज्ञा सुनाने वाला।
**प्यारस्यार**—वि० (कु०) मिश्रित।
**प्यारू**—पु० प्रेमी।
**प्याळ**—पु० (चं०, शि०) पाताल।
**प्याली**—स्त्री० (सि०) दूध की मलाई।
**प्याल्दु**—पु० (शि०) सेब की एक किस्म।
**प्याशुणा**—अ० क्रि० (सो०) प्रकाशित होना।
**प्याहो**—पु० (शि०) उजाला, रोशनी।
**प्याहरणा**—स० क्रि० (सो०) चारा देना।
**प्रगंट**—वि० प्रकट।
**प्रगड़ा**—वि० प्रकाशयुक्त।
**प्रगड़ा पक्ख**—पु० शुक्ल पक्ष।
**प्रछालना**—स० क्रि० किसी तरल पदार्थ को आग पर पिघलाना।
**प्रमेओं**—पु० (शि०) एक रोग जिसमें आंखें और शरीर पीला पड़ जाता है।
**प्रयांठ**—पु० बैल चलाने की नोकदार छड़ी।
**प्रयाशा**—पु० उजाला।
**प्रवा**—स्त्री० (शि०, बि०) परवाह, चिंता।
**प्रसतार**—पु० (शि०) विस्तार।
**प्रांचि**—स्त्री० (सि०) प्रातःकालीन पूजन।
**प्रा**—पु० दलने या तलने आदि के लिए एक बार में डाली जाने वाली मात्रा।
**प्राउणी**—स्त्री० (शि०) जल्दी।
**प्राति**—पु० (शि०) बड़ी परात।
**प्रालहणी**—स्त्री० (मं०) पहेली।
**प्राली**—स्त्री० (बि०) धान की फसल से खाली हुए खेत।
**प्रावळि**—स्त्री० मिट्टी के मकान की छत के आगे से पानी के निकास का स्थान।
**प्रिया**—पु० (बि०, शि०) विवाहादि में मेहमानों के घर भेजा जाने वाला भोजन।
**प्रीढ़ी**—स्त्री० (कु०) एक झाड़ी विशेष जिसकी टहनियों से गोबर साफ करने के लिए झाड़ू बनाया जाता है।
**प्रीरा**—वि० (कु०) तिक्त।
**प्रीवणी**—स्त्री० (सो०) आटा छानने की छलनी।
**प्रीह**—स्त्री० (चं०) झाड़ी विशेष जिसके पत्ते पशु खाते हैं।
**प्रुशणा**—स० क्रि० (कु०) खींच कर खोलना, बोझ आदि में बंधी रस्सी आदि को खींच कर निकालना।
**प्रुशिणा**—अ० क्रि० (कु०) बोझ आदि से रस्सी का खिंच कर निकल जाना।
**प्रे**—पु० (चं०) एक औषधि विशेष।
**प्रेउगण**—स्त्री० (कु०) अनुमान, प्रश्न।
**प्रेचणा**—स० क्रि० (चं०, बि०) रौंदना।
**प्रेड़**—स्त्री० (चं०) खेत की मेंड़।
**प्रेड़ना**—स० क्रि० (चं०) किसी वस्तु को सिर के चारों तरफ घुमा कर फैंकना।
**प्रेढ़ना**—स० क्रि० (बि०) हेकड़ी दिखाना।
**प्रेथ**—स्त्री० 'घासनी' में घास काटने के लिए किसी के लिए रखा भाग।
**प्रैच्छणा**—अ० क्रि० (मं०) बच्चे का हरना।
**प्रैड़**—पु० (चं०) खेत की मेंड़।
**प्रैरा**—पु० (कां०) मंदार का पेड़।
**प्रैस**—पु० (कां०) चमड़े को दबाने का औज़ार।
**प्रैसी**—वि० (कु०) बड़े पेट वाला।
**प्रोइणा**—अ० क्रि० (कु०) मिश्रित होना, इकट्ठा होना।
**प्रोख**—अ० परोक्ष।
**प्रोछा**—पु० (बि०) अधिक भाग या मात्रा प्राप्त करने के लिए झपटने की क्रिया।
**प्रोढ़**—पु० (कां०) शुभ अवसर पर संबंधियों के घर ले जाई जाने वाली रोटियां, मिठाईयां आदि।
**प्रोणा**—स० क्रि० (कु०) मिश्रित करना।
**प्रोळू**—पु० (चं०) चीड़ के पत्तों का झाड़ू।
**प्रौळ**—स्त्री० (चं०) मुख्यद्वार।
**प्रौशा**—स्त्री० (कु०) कमर की हड्डी।
**प्रौही**—स्त्री० (कु०) फेफड़ा।
**प्लच्छ**—पु० (कां०) आश्चर्य।
**प्लाठा**—पु० (कां०) पालथी।
**प्लेठण**—स्त्री० (मं०) रोटी सेंकने का कपड़ा, झाड़न।
**प्लेसूला**—वि० (चं०) पेचीदा।
**प्वाजा**—पु० (बि०) पैदावार।
**प्वाजु**—पु० (बि०, सि०) उपजाऊ।
**प्वाड़ना**—स० क्रि० (बि०) छिलका निकालना, उखाड़ना।
**प्वाद**—स्त्री० (सो०, बि०) शरारत।
**प्वादि**—वि० (सो०, बि०) शरारती, चालाक।
**प्वाधा**—पु० ब्राह्मण में उच्च जाति, उपाध्याय।
**प्वार**—पु० (बि०) दे० पमार।

## फ

**फ**—देवनागरी वर्णमाला में पवर्ग का द्वितीय वर्ण। उच्चारण स्थान ओष्ठ।
**फंख**—पु० (चं०) पंख।
**फंग**—पु० पंख।
**फंगणी**—स्त्री० (कु०) दाल का ऊपर का छिलका।
**फंगारना**—अ० क्रि० (मं०) टांगें पसारकर बैठना।
**फंगू**—पु० (कां०) हवा से घूमने वाला कागज़ का एक खिलौना।

**फंगू**—पु० (कु०, सि०) ऊन कातने की बड़ी तकली।
**फंड**—स्त्री० मार, लाठी से झाड़ने का कार्य।
**फंडणा**—स० क्रि० मारना, झाड़ना, ठगना।
**फंडर**—वि० जिसका बच्चा न हो, बांझ (केवल पशु के लिए प्रयुक्त)।
**फंडीमां**—वि० (सि०) बातूनी।
**फंदण**—पु० (सि०, शि०) बंधन।
**फंघ**—पु० धोखा, जाल।
**फंब**—पु० (सो०) रुई का फाहा।
**फंबा**—पु० (ह०) मक्की के दाने हाथों से निकालने का भाव।
**फंबा**—पु० (बि०) रुई का फाहा।
**फंब्बा**—पु० (ह०) मक्की के भुट्टे का बाहरी छिलका।
**फंभ**—पु० रुई की बहुत सफेद किस्म।
**फअल**—पु० (मं०) गड़रिया।
**फऊका**—वि० (कु०, बि०) हलका।
**फऊला**—पु० (कु०, बि०) लोमड़ी।
**फएनी**—स्त्री० (सि०) एड़ी।
**फक**—पु० धान का कूटा हुआ छिलका।
**फककरना**—स० क्रि० (शि०) रहन की भूमि या आभूषण के कर्ज़ की राशि चुका कर मुक्त करना।
**फकड़**—वि० धन रहित व्यक्ति, फकीर।
**फकड़े**—पु० (कां०) भेड़ों का मुंह गल जाने का रोग।
**फकणा**—स० क्रि० फांकना।
**फकत**—अ० केवल, सिर्फ।
**फकत**—अ० (सि०) हर समय।
**फकरैल**—पु० (शि०) गुब्बारा।
**फकलूणा**—वि० अधिक नमक वाला।
**फका**—पु० (मं०) चुंबन।
**फकाणा**—स० क्रि० (सि०) खाना।
**फकालिना**—अ० क्रि० (कु०) रोटी का तवे पर एक तरफ से जल जाना और दूसरी तरफ से पूरी तरह सूख जाना।
**फकाहुका**—पु० (कु०) गिरती हुई घनी बर्फ, भारी बर्फबारी, बर्फ की गहरी बौछार।
**फकूड़ा**—पु० (चं०) एक वृक्ष विशेष जिसका फल काले रंग का होता है। अंजीर।
**फकोणा**—अ० क्रि० (चं०, बि०) जल जाना। ईर्ष्या करना।
**फक्कड़**—वि० सांसारिक कार्यों से उदासीन, अपनी धुन में मस्त।
**फक्कर**—वि० (बि०) भोला-भाला; निश्चिंत।
**फक्का**—पु० मुंह में डाला हुआ सूखे पदार्थ का ग्रास।
**फक्की**—स्त्री० बारीक पिसी हुई औषधि, चूर्ण, सूखी वस्तु की थोड़ी सी मात्रा।
**फक्कू**—पु० (ह०) खलियान।
**फक्याण**—पु० (बि०) मुंह में फेंक कर खाने की क्रिया।
**फखणी**—स्त्री० (चं०) अनाज में लगने वाला कीड़ा।
**फगणोटा**—पु० (सि०) फाल्गुन मास में चलने वाली हवा।
**फगत**—अ० (कु०, शि०) बिल्कुल, सिर्फ।
**फगल्डू**—स्त्री० (मं०) 'फेगड़े' के दानों की सब्जी।
**फगूड़ा**—पु० अंजीर, गूलर की जाति का एक फल व उसका वृक्ष।
**फगूड़ी**—स्त्री० (चं०) दे० फगूड़ा।
**फग्गण**—पु० फाल्गुन मास।
**फग्गळ**—पु० जलने या कटने से कपड़े में पड़ा छिद्र।
**फच**—अ० पानी में किसी वस्तु के गिरने से हुई आवाज़।
**फचकड़ा**—पु० (सो०) फिसलने का व्यापार।
**फचकड़ी**—स्त्री० (सो०) दर-दर भटकने का प्रयास।
**फचकारी**—स्त्री० पिचकारी।
**फचकोणा**—अ० क्रि० (कां०) अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना।
**फचकोणा**—अ० क्रि० सीमा से अधिक खुल जाना। असभ्य ढंग से आत्मप्रदर्शन करना।
**फचफच**—अ० बकबक।
**फच़फच़**—पु० (सि०) आग का बार-बार जलने और बुझने का भाव।
**फचफचात**—स्त्री० अधिक चंचलता, बकबक।
**फचराळा**—पु० (सि०) आघात, थप्पड़, पानी के एकदम निकलने का भाव।
**फज़ां**—स्त्री० (कु०, चं०) वातावरण।
**फजीत**—वि० (सो०) बेइज्ज़त।
**फज़ीहत**—वि० (कु०) दे० फजीत।
**फजूल**—वि० (शि०) फालतू, व्यर्थ।
**फट**—पु० (कां०, बि०) कटने से बना घाव, चीरा।
**फट**—अ० (कु०, सि०, शि०) जल्दी।
**फट**—स्त्री० शस्त्र का तुरंत किया गया प्रहार।
**फटक**—वि० (चं०) स्फटिक।
**फटकड़ी**—स्त्री० फिटकरी।
**फटकण**—पु० (सो०) छड़ी की मार।
**फटकणा**—स० क्रि० (कां०) छानने के बाद चाय को सूप या छाज से साफ करना।
**फटकणा**—स० क्रि० (सो०) फटकना, झाड़ना, पीटना, सूप से साफ करना।
**फटकणा**—अ० क्रि० पास आना।
**फटकर**—पु० (सि०) फर्श।
**फटकरी**—स्त्री० फिटकरी।
**फटका**—पु० (सो०) ज़रा सी देर।
**फटका**—पु० (शि०) पीटने का भाव।
**फटकाउणा**—स० क्रि० (शि०) दूसरे से पिटवाना।
**फटकार**—पु० (कु०) वंचित होने का भाव।
**फटकार**—पु० धिक्कार, लानत, डांट।
**फटकारणा**—स० क्रि० डांटना, धिक्कारना।
**फटकी**—स्त्री० दे० फटकड़ी।
**फटकुणा**—अ० क्रि० (सो०) जी तोड़ श्रम करना।
**फटणा**—अ० क्रि० फटना, उलटी करना, कै करना।
**फटन**—पु० (चं०) सूप, छाज।
**फटफटा**—पु० मोटर साइकिल।
**फटबाह**—वि० बकरे आदि को काटने में दक्ष, 'फट' मारने में दक्ष।
**फटराड़ो**—वि० (शि०) टेढ़ा।

**फटलू**—पु० बहुत छोटा खेत।
**फटहता**—पु० (सि०) शाप।
**फटा**—स्त्री० (कु०) थप्पड़, चोट।
**फटाकणा**—स० क्रि० (कां०) सूप या छाज से साफ करना।
**फटाणा**—स० क्रि० फाड़ना।
**फटाफट**—अ० जल्दी, तुरंत।
**फटारी**—स्त्री० (चं०) वमन करने की क्रिया।
**फटेहड़—पु० 'फाट' में उगा एक छोटा सा कंदमूल। 'चरागाह में गाया जाने वाला एक गीत।**
**फट्ट**—स्त्री० घाव, तेज़ औज़ार की चोट।
**फट्टड़**—वि० फटा हुआ।
**फट्टणा**—अ० क्रि० फट जाना, कपड़े आदि का घिस-घिसकर फटना।
**फट्टणा**—स० क्रि० कांटना, मारना।
**फट्टा**—पु० लकड़ी का तख्ता, तख्त।
**फट्टी**—स्त्री० लिखने की तख्ती।
**फठंगी**—वि० (कु०) मखौलिया, मज़ाकिया।
**फड़**—पु० (ह०) झगड़ा।
**फड़**—पु० (कु०, शि०) चार-पांच मंज़िल के मकान की दूसरी मंज़िल।
**फड़**—स्त्री० (सि०) अदरक की गट्ठी।
**फड़**—स्त्री० (कु०, बि०) ऊन की दोहरी चादर।
**फड़**—स्त्री० डींग, अफवाह।
**फड़कणा**—अ० क्रि० (सि०) नज़दीक आना।
**फड़कणा**—स० क्रि० छाज से अनाज साफ करना।
**फड़कना**—अ० क्रि० हिलना, सोए बच्चे का हिल-डुल करना, दौड़ धूप करना, फड़फड़ाना, आंख का फड़कना।
**फड़का**—पु० (शि०, कु०) गोद, कमीज़ का पल्ला, फटा कपड़ा, पुराने कपड़े का टुकड़ा।
**फड़कावणा**—स० क्रि० (शि०, सो०, सि०) फड़फड़ाना। हिलाना।
**फड़कीचकणा—स० क्रि० (बि०, ह०) कोहराम मचा रखना।**
**फड़कूळ**—पु० (सि०) लकड़ी का फर्श।
**फड़के**—स्त्री० (शि०, सि०) तख्ती।
**फड़को**—पु० (शि०) फर्श।
**फड़ना**—स० क्रि० पकड़ना।
**फड़फड़ाट**—स्त्री० फड़फड़ाहट।
**फड़फड़ात**—स्त्री० दिखावा।
**फड़फड़ाना**—अ० क्रि० तड़पना।
**फड़लू**—पु० (सि०) छोटा तख्ता।
**फड़ां**—स्त्री० मनगढ़ंत बातें।
**फड़ा**—पु० लकड़ी का तख्ता।
**फड़ाक**—स्त्री० (सि०) झूठी बात।
**फड़ाकणा**—स० क्रि० अनाज को छाज द्वारा साफ करना।
**फड़ाकणा**—स० क्रि० झटकना, झाड़ना।
**फड़ाकनो**—स० क्रि० (शि०) झाड़ना।
**फड़ाकिणा**—स० क्रि० (कु०) अनाज का छाज द्वारा साफ किया जाना।
**फड़ाकू**—पु० कपड़े का छोटा सा टुकड़ा।
**फड़ाकू**—वि० (सि०) डींग मारने वाला।
**फड़ाणा**—स० क्रि० (चं०) फेंकना।
**फड़िमणी**—स्त्री० (कु०) फुंसी।
**फड़ी**—स्त्री० (सि०) शाखा, वृक्ष की शाखा।
**फड़ी**—स्त्री० (सि०) फली।
**फड़ीचू**—वि० (कां०, बि०) कमज़ोर। बहुत बोलने वाला।
**फड़े**—स्त्री० (मं०) फली।
**फड़ैओ**—वि० (शि०) एक स्थान पर रहने वाला, स्थिर।
**फड़ैची**—स्त्री० (कु०) लंबी दांती।
**फड़ौण**—पु० (कु०) झुंड।
**फड्डी**—वि० (कां०) फिसड्डी, अंतिम, दौड़ आदि में अंतिम आने वाला।
**फण**—पु० सांप का फन।
**फणकट**—पु० (सो०) अपचन। क्रोध का उबाल।
**फणकणा**—अ० क्रि० पानी का उबलना। गुस्से में तिलमिलाना, खमीर आदि से आटे आदि का फूल जाना।
**फणकाणा**—स० क्रि० (चं०) उबालना।
**फणयाओ**—पु० (मं०) पौधों में पानी डालने की क्रिया।
**फणयार**—पु० (सो०) फन वाला सांप।
**फणसेड़**—स्त्री० शान जताने की क्रिया।
**फणसोणा**—अ० क्रि० (कां०, ह०) व्यर्थ में अपने आप को व्यक्त करना, किसी बात पर गर्वित होकर खुश हो जाना।
**फणाका**—पु० (कु०) चोट, मार।
**फणाका**—पु० झोंका। उबाल।
**फणाका**—पु० जल्दी से किसी वस्तु के पक जाने का भाव।
**फणाटणा**—स० क्रि० (कु०) बुरी तरह पीटना।
**फणैरे**—स्त्री० (मं०, सि०) इंद्रधनुष।
**फणैरो**—वि० (मं०) पानी भरने वाला।
**फतड़ा**—पु० (शि०) चपत।
**फतड़ैऊ**—पु० (शि०) पीटने की क्रिया।
**फतणा**—अ० क्रि० (बि०) फंसना।
**फतनाको**—वि० (शि०) छोटे नाक वाला।
**फतूर**—पु० बुराई, द्वेष, कमी, सनक।
**फतूही**—स्त्री० (कु०) वास्कट।
**फतूहणा**—स० क्रि० उधेड़ना। धुनना। झपटना। नोचना।
**फथ**—पु० (चं०) घराट।
**फथुही**—स्त्री० दे० फतूही।
**फन**—पु० (शि०) कला, हुनर।
**फनओ**—पु० (मं०) उपगान।
**फनणा**—स० क्रि० (चं०) ऊन को पींजकर कातने योग्य बनाना, ऊन पींजना, धुनना।
**फनणा**—स० क्रि० मक्की के दानों को लाठी मारकर गुल्ली से अलग करना।
**फनणा**—स० क्रि० (कु०, सि०) मारना, पीटना।
**फनणी**—स्त्री० (चं०) पिंजन।
**फनयाणा**—स० क्रि० (कु०) ऊन की पिंजाई करवाना।
**फनयाहड़ी**—स्त्री० (कु०) भूरे रंग की चिड़िया जो हमेशा

झाड़ियों में रहती है।
**फनरोल**—पु० (शि०) रंग में भंग।
**फनवाणा**—पु० (चं०) दही व छाछ रखने का कमरा।
**फना:र**—पु० (ऊ, कां, ह०) कबूतर जाति का छोटा पक्षी।
**फनाटणा**—स० क्रि० फटकना, पीटना, थप्पड़ मारना, हरी छड़ी आदि से पीटना।
**फनाटिणा**—स० क्रि० (कु०) थप्पड़ मारा जाना।
**फनार—पु० (सि०) काला सांप। दुष्ट व्यक्ति।**
**फनार**—पु० (चं०) ऊन पींजने वाला व्यक्ति।
**फनारी**—पु० (बि०) फन वाला सांप।
**फनारू**—पु० (चं०) दे० फनयाहड़ी।
**फनाही**—स्त्री० (कु०) लकड़ी की चौखट में कसी आरी जिससे इमारती लकड़ी चीरी जाती है।
**फनियर**—पु० फन वाला सांप।
**फनीही**—स्त्री० (कां०) आरी।
**फने**—वि० बढ़िया।
**फनेऊ**—पु० (मं०) पानी भरने वाला।
**फनेकड़ा**—वि० (कु०) चपटे नाक वाला।
**फनेरू**—पु० (मं०) पानी भरने वाला।
**फनैओ**—पु० (मं०) पहरावा।
**फनैन**—स्त्री० (शि०, सि०) फिनाइल।
**फनैर**—स्त्री० (ह०) ज़ोर की बारिश, बौछार।
**फनैरी**—स्त्री० (कु०) इंद्रधनुष।
**फनैल**—स्त्री० फिनाइल।
**फनोला**—पु० (चं०) एक पक्षी विशेष।
**फन्नणा**—स० क्रि० पीटना, रुई को धुनना।
**फन्याणा**—स० क्रि० (मं०) खेत की सिंचाई करना।
**फप्फड़ेहस्या**—वि० (कां०) चापलूस, नखरे करने वाला।
**फप्फा**—वि० (कां०) हकलाकर बोलने वाला।
**फफड़ा—पु० (कां०) चापलूसी से भरी बात।**
**फफड़े**—पु० कृत्रिम प्रेम, झूठी संवेदना।
**फफड़ेला**—वि० बहानेबाज़।
**फफड़ोला**—पु० हीला, बहाना।
**फफरू**—पु० एक जंगली शाक।
**फफरोला**—वि० (सि०) रोने का नाटक करने वाला।
**फफाकुटण**—स्त्री० चालाक स्त्री, सच-झूठ बोलने वाली स्त्री।
**फफानू**—पु० (कां०) कड़वा खीरा।
**फफोला**—पु० छाला।
**फबणा**—अ० क्रि० जंचना, उपयोगी होना, शोभित होना।
**फबणा**—स० क्रि० (बि०) अपनी बड़ाई करना, डींगें मारना।
**फबणा**—अ० क्रि० (कु०) बांटने पर पूरा होना।
**फबती**—स्त्री० (शि०) व्यंग्य।
**फबन**—स्त्री० (शि०) सुंदरता, शोभा।
**फबोयूड़ीऊन**—स्त्री० (कु०) ऊन की हाथ से बनी पूनी जिसे पिंजाया नहीं जाता।
**फम्ह**—वि० (चं०) बर्फ की तरह सफेद।
**फयाड़ना**—स० क्रि० (कु०) समझना।
**फयाड़ा**—पु० (कु०, बि०) संदेश शब्द, बात।
**फयाहख—पु० (कु०) पंख।**
**फयोगड़ा**—पु० (सो०, सि०) अंजीर।
**फरंग**—पु० (चं०) फुंसी।
**फरंगी**—पु० अंग्रेज।
**फर**—अ० उड़ने की क्रिया, पक्षी के उड़ने का स्वर।
**फरक**—पु० अंतर। लकड़ी का 'फाड़'।
**फरकणा**—अ० क्रि० थोड़ा सूखना। अंग स्फुरण होना।
**फरकणा—स० क्रि० (कां०) चावलों को पूरा गलने हेतु भाप में रखना।**
**फरका**—पु० (मं०) पलक।
**फरकाउणा**—स० क्रि० (सि०) फेंकना।
**फरकाणा**—स० क्रि० फेंकना।
**फरकी**—स्त्री० (चं०) लकड़ी की दीवार से बनाया गया विशेष कमरा।
**फरकु**—पु० (बि०, मं०) कंधा।
**फरकेया**—वि० (सि०) चुस्त।
**फरकै**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) ज़रा दूरी पर, कुछ दूर।
**फरकोटा**—स्त्री० (शि०) छलांग।
**फरजंद**—पु० पुत्र।
**फरज़**—पु० कर्तव्य।
**फरज़**—अ० (कु०) पिछले से पिछला कल, परसों।
**फरजी**—स्त्री० (शि०) झूठी, बनावटी।
**फरजो**—अ० (सि०) पिछले से पिछला दिन।
**फरड़**—वि० एक समान न होना, टेढ़ा-मेढ़ा।
**फरड़ना**—स० क्रि० (कां०) दलना, मोटा-मोटा पीसना।
**फरड़ा**—वि० (कु०, सो०) टेढ़ा।
**फरड़ा**—पु० (चं०, सि०) भेड़, कुत्तों आदि का चर्मरोग, पशुओं की बीमारी विशेष।
**फरडू**—पु० खरगोश।
**फरण**—पु० (कु०) एक जंगली मसाला जिसे दाल आदि में डाला जाता है।
**फरणा**—अ० क्रि० (सि०) स्फुरण होना।
**फरतीला**—वि० फुर्तीला।
**फरद**—स्त्री० (सो०) पटवारी से ली गई सूची।
**फरद**—पु० लकड़ी का चपटा तख्ता।
**फरदा**—पु० (कु०, बि०) शिकायत आदि का पर्चा।
**फरन**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) एक वृक्ष विशेष।
**फरन-फरन**—अ० (हवा आदि की) तीव्र गति।
**फरना**—पु० (बि०, मं०) जंगली प्याज़ के पत्ते।
**फरनाई**—स्त्री० (सि०, सो०) दे० फनाही।
**फरनाई**—स्त्री० (सो०) आरा।
**फरनाही**—स्त्री० दे० फनाही।
**फरफर**—स्त्री० (शि०) उड़ने या फड़फड़ाने का शब्द।
**फरफराहट**—स्त्री० वायु के तीव्र गति से बहने पर वस्त्रादि के हिलने की क्रिया।
**फरम**—स्त्री० कंपनी, फर्म।
**फरमां**—पु० पैमाना, चौखट, ढांचा, जूते अथवा मकान बनाने हेतु प्रयोग में लाया जाने वाला ढांचा, सांचा।

**फरमान**—पु० आज्ञा।
**फरयाणा**—अ० क्रि० (ह०) व्यर्थ में अपने आपको व्यस्त बताना।
**फरलांग**—पु० (शि०) सड़क का एक माप।
**फरलु**—पु० ऐसे ही भाग आने की क्रिया, मुफ्त।
**फरलोणा**—अ० क्रि० (सि०) चक्कर आकर नीचे गिरना।
**फराओ**—पु० (शि०, सि०) मोड़ने का भाव।
**फराक**—स्त्री० ढीली, छोटी आस्तीन का लंबा कुर्ता जिसे बच्चे पहनते हैं।
**फराका**—पु० झोंका, नाचते समय लगाया गया चक्कर।
**फराका**—अ० (कां०) शीघ्र।
**फराखड़ा**—पु० (कु०) छलांग, उछल-कूद।
**फराखदिल**—वि० (शि०) दयालु, उदार मनुष्य।
**फराटी**—स्त्री० गोलाकार घूमने की क्रिया, फेरा, नृत्य का चक्कर।
**फराड़**—स्त्री० (कु०) गलत बात, बेतुकी बात।
**फराणा**—स० क्रि० (सि०) फहराना। अ० क्रि० किसी के साथ लड़ना, झगड़ना।
**फरालू**—पु० नाक का आभूषण।
**फरींदा**—अ० (शि०) चारों ओर।
**फरीउंकी**—स्त्री० (कु०) फिरकी।
**फरीहणी**—स्त्री० (कु०) फुंसी।
**फरू:रा**—पु० (बि०) पके हुए ऐसे चावल जिसका एक-एक दाना खिला हुआ हो।
**फरु**—पु० कंधे का अगला भाग।
**फरु**—पु० (शि०) बकरे का घुटने से ऊपर और कमर से नीचे का भाग।
**फरु**—पु० (मं०) फावड़ा।
**फरुअड़**—पु० (सि०) बारात के आगे रखा पानी का पात्र जिसे स्वागत के रूप में रखते हैं।
**फरुआ**—पु० (कु०, सि०) फावड़ा।
**फरुहळियां**—स्त्री० बहुत आंसू भरकर रोने का भाव।
**फरेउणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) फिराना।
**फरेउणो**—स० क्रि० (शि०) घुमाना।
**फरेओटा**—पु० (शि०) घुमाकर फेंकने की क्रिया।
**फरेज**—स्त्री० (ऊ०, कां०) गप्प।
**फरेज़**—पु० (कु०, मं०) परहेज़।
**फरेजो**—अ० (सि०) दे० फरजो। **बीता हुआ परसों।**
**फरेलणा**—स० क्रि० (सो०) बदलना।
**फरेबी**—वि० धोखेबाज़।
**फरेम**—पु० चार इंच चौड़ी व डेढ़ इंच मोटी लकड़ी जो अलमारी तथा खिड़की में लगती है, चौखट।
**फरेयाटी**—स्त्री० फेरा, चक्कर।
**फरेहरा**—पु० (मं०) ध्वज।
**फरैकड़ा**—वि० सारा दिन घूमने वाला व्यक्ति, घुमक्कड़।
**फरोक्त**—स्त्री० बिक्री।
**फरोग**—स्त्री० (शि०) बढ़ौतरी।
**फरोजी**—वि० फिरोज़ी रंग।
**फरोळना**—स० क्रि० मक्की के भुट्टे के छिलके उतारना। मक्की के भुट्टे से दाने निकालना।
**फरोळना**—स० क्रि० (कां०, बि०) हिलाना, मिश्रित करना।
**फरोहरा**—पु० (कु०) झंडा।
**फर्क**—स्त्री० (चं०) लकड़ी के तख्तों की बनी दीवार।
**फर्ण**—स्त्री० (चं०) प्याज़ प्रजाति की जड़ी।
**फर्द**—स्त्री० चादर।
**फर्दउगाही**—स्त्री० (चं०) साक्षियों की सूची।
**फर्नाटा**—पु० (कां०) तेज़ी।
**फर्नाही**—स्त्री० धौंकनी।
**फर्श**—पु० मकान का तल।
**फर्शी**—स्त्री० पत्थर का ढेर।
**फलक**—पु० आकाश।
**फलगा**—पु० (सि०) दही का ढेला। बादल का टुकड़ा।
**फलटा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मुख्य द्वार पर बना लकड़ी या लोहे का गेट।
**फलटी**—स्त्री० (बि०, सि०) कपड़े धोने की लकड़ी, तख्ती।
**फलटौ**—पु० (कु०) लकड़ी का चौड़ा तख्ता।
**फलडीबी**—स्त्री० (शि०) फल रखने की टोकरी।
**फळणा**—स० क्रि० (शि०) अनाज से बारीक भूसे को उतारने के लिए ऊखल में हलका-हलका कूटना।
**फलतर**—पु० पैदावार।
**फलतर**—पु० (बि०) पौधे में फल की मात्रा।
**फलथा**—पु० (मं०) चिथड़ा।
**फलना**—अ० क्रि० फलयुक्त होना।
**फळना**—अ० क्रि० (कां०) फलना। भैंस का गाभिन होना।
**फलयाणा**—स० क्रि० फैलाना।
**फलयूड़ी**—स्त्री० (कां०) हल में प्रयुक्त लकड़ी का टुकड़ा।
**फलवार**—पु० (सो०) व्रत में प्रयुक्त अन्न रहित खाद्य।
**फलवारी**—स्त्री० (सि०) फुलवाड़ी।
**फलश**—पु० (मं०) हल का एक पुर्ज़ा।
**फळश**—पु० (कु०) नदी के किनारे उगने वाला, मोटे-चौड़े पत्तों वाला वृक्ष।
**फलहर**—पु० (मं०) सब्जियों की बेलों में फूल आने की क्रिया
**फळही**—स्त्री० (कां०) घर, आंगन तथा मार्ग को मिलाती पगडंडी।
**फळा**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) गेहूं व दालों को खलियान में गाहने हेतु बना बांस और कांटेदार झाड़ियों का एक आयत।
**फळा**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) लकड़ी की चौखट में लगा लकड़ी के बने गेट का एक फलक।
**फळा**—पु० (सि०, सो०) दरवाजे का एक पल्ला।
**फलाउणो**—स० क्रि० (सि०) फैलाना।
**फलाक**—पु० (शि०, मं०, सि०) शरीर पर पड़ा छाला, जलने से उठा फफोला।
**फलाका**—पु० हवा का झोंका, कमरे में झाड़ू लगाने का भाव।
**फलाटा**—पु० (शि०) गुब्बारा।
**फलाणा**—अ० अमुक, फलां।
**फलाणा**—स० क्रि० बहकाना, फुसलाना।
**फलाणा-डमकाणा**—अ० (सो०) अमुक-अमुक।
**फलाम**—पु० (शि०) जस्त धातु; लोहे का डब्बा।
**फलार**—पु० (सा०) फैलाव, बिखराव।

**फलार**—पु० फलाहार।
**फलारी**—वि० फलाहारी, फल खाने वाला।
**फलाव**—पु० (सो०) फैलाव।
**फलावणा**—स० क्रि० (सो०) फैलाना, फुलाना।
**फलावणो**—स० क्रि० (शि०) फैलाना।
**फलावो**—पु० (सि०) फैलाव।
**फलाह**—पु० (चं०) एक कांटेदार वृक्ष जिसकी शाखाएं दातुन के काम आती हैं।
**फलाहजाणा**—अ० क्रि० (कां०) फसल में दाने न लगना।
**फलाहर**—पु० (कु०) फलाहार।
**फळाहुका**—वि० (कु०) नर्म, कच्चा (धागा)।
**फळिया**—पु० लकड़ी से बना हुआ एक गेट जिसे पशुओं को अंदर आने से रोकने के लिए रास्ते में लगाया जाता है।
**फळीं**—स्त्री० (सि०) दरवाज़े के तख्ते।
**फळी**—स्त्री० फली, सेमफली।
**फलुंगा**—पु० (कु०) ऊन कातते समय धागे में आया ऊन का गुच्छा।
**फलुपतास**—पु० चावल की किस्म का एक अन्न जिसका दाना मध्यम श्रेणी का होता है।
**फलुहार**—पु० (ह०) दे० फलाहर।
**फलूरा**—पु० (ह०) आग से जलने पर पड़ा फफोला।
**फलूस**—पु० गुब्बारा।
**फलूहा**—पु० (ऊ०, कां०) एक वृक्ष विशेष।
**फलेउड़ा**—वि० (कु०) कम कसा हुआ, हलका बटा हुआ।
**फलेरना**—स० क्रि० (कु०, ऊ०, कां०) फुलाना, प्रशंसा करके उकसाना।
**फलेरिना**—स० क्रि० (कु०) फुलाया जाना।
**फळेश**—पु० (सो०) रस्सी आदि का लपेट, घेरा।
**फलेशणा**—स० क्रि० (सि०) बांधना, लपेटना, ओढ़ना।
**फलै**—स्त्री० (चं०) एक छोटा कीड़ा।
**फलैच्छा**—वि० (मं०) टेढ़ी आंख वाला।
**फलैड़ा**—वि० (कां०) लकड़ी चीरने वाला।
**फलैर**—पु० (शि०) नखरे।
**फलैरना**—स० क्रि० (शि०) आंखें फड़फड़ाना।
**फलोड़ा**—पु० (शि०) छाला।
**फलोणी**—स्त्री० (ह०) दहेज।
**फलोणो**—स० क्रि० (सि०) फुलाना।
**फलोहड़ा**—पु० गोबर को समेटने हेतु बना लकड़ी का फावड़ा।
**फलौरियां**—स्त्री० बेसन की बनी फीकी बूंदी।
**फलौहरी**—स्त्री० (कु०) ध्वज, पताका, कपड़े की झंडियां जो देवता के प्रमुख उपकरणों में से एक होती हैं।
**फल्यड़ी**—स्त्री० हल का एक छोटा सा भाग जो फाल के ऊपर लगाया जाता है।
**फल्लणा**—अ० क्रि० खुश होना।
**फल्लर**—पु० एक रोग विशेष जिसमें हाथ-पांव फूल जाते हैं।
**फल्ली**—स्त्री० (कां०) कटाई।
**फवाण**—पु० उबाल, बुखार।
**फवारा**—पु० (शि० सि०) अफारा।
**फवारी**—स्त्री० (मं०) कुकुरमुत्ता।
**फवारो**—पु० (शि०) पैर की सूजन।
**फवाळ**—स्त्री० (सो०) छलांग।
**फवाळ्ना**—अ० क्रि० (सो०) छलांग मारना।
**फवाह**—स्त्री० अफवाह।
**फशाका**—पु० (कां०, मं०) शवयात्रा के समय मार्ग में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर फेंका जाने वाला अनाज।
**फशाका**—पु० (बि०) खाना, भोजन।
**फशणा**—अ० क्रि० (सि०) फंसना।
**फशणो**—अ० क्रि० (शि०) फंसना।
**फशाउटे**—स्त्री० (सि०) मंजिल पूरी होने पर फर्श टिकाने हेतु दीवार पर रखी गई लकड़ी।
**फशाणो**—स० क्रि० (शि०) फंसाना।
**फशार**—पु० (कु०) हलदी।
**फशावणा**—स० क्रि० (सो०) फंसाना।
**फशावणे**—वि० (सि०) कठिन कार्य।
**फशिन्हिणा**—अ० क्रि० (कु०) रूठना।
**फशींढिणा**—अ० क्रि० (कु०) फिसलना।
**फशैश**—पु० (शि०, सि०) मामूली सी बर्फ।
**फसका**—पु० (मं०) छिलके वाला अन्न।
**फसणा**—अ० क्रि० फंसना।
**फसलाणा**—स० क्रि० (सि०) फुसलाना।
**फसाइणा**—अ० क्रि० (कु०) फंसाया जाना।
**फसाणा**—स० क्रि० फंसाना।
**फस्का**—पु० (बि०) खाना, भोजन।
**फहड़ा**—पु० तख्ता।
**फहड़ू**—पु० छोटा सा टुकड़ा।
**फहणो**—अ० क्रि० (शि०) फंसना।
**फहरी**—स्त्री० (मं०) छतरीनुमा बड़ा कुकुरमुत्ता।
**फहला**—पु० (कां०) लाश, निर्जीव शरीर।
**फहली**—स्त्री० (कां०) गली, मुहल्ला।
**फांओरिआ**—वि० (शि०) बकवादी।
**फांख**—पु० (बि०) संतरा आदि फलों की एक फांक।
**फांग**—पु० (मं०) पंख।
**फांगड़ू**—पु० पंख।
**फांगा**—पु० (सि०, शि०) टहना।
**फांगा**—पु० (बि०) समस्या।
**फांगुणी**—पु० (ह०) दानों का छिलका।
**फांगू**—पु० (कु०) ऊन कातने की बड़ी तकली।
**फांचा**—पु० (शि०, सि०) गठरी।
**फांट**—स्त्री० (सि०) हिस्सा, भाग।
**फांटणा**—स० क्रि० (सि०, शि०) बराबर बांटना।
**फांटणा**—स० क्रि० (बि०) मिलाना।
**फांटणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) मारना, पीटना।
**फांठू**—पु० (बि०) हल का लोहा।
**फांड**—स्त्री० (कु०) छिछली बात, गप्प।
**फांडकी**—स्त्री० (शि०) बहिन, बेटी को दी जाने वाली अनाज या रोटी की भेंट।

**फांडकू**—पु० (सि०) शादी या गमी के अवसर पर दी जाने वाली नकदी।
**फांडा**—वि० (सि०) अस्थिर व्यक्ति।
**फांडी**—वि० (कु०) बातूनी।
**फांडोर**—वि० (सि०) बांझ (पशु)।
**फांदणा**—स० क्रि० (शि०) पकड़ना, गिरफ्तार करना।
**फांदा**—पु० (शि०) फंदा।
**फांश**—पु० (सि०) लकड़ी का पतला सा टुकड़ा।
**फांस**—स्त्री० (शि०) पाश, बंधन।
**फांसड़ा**—पु० (कां०) पक्षी विशेष।
**फा:डी**—पु० (चं०, सि०) बातूनी।
**फा:ण**—स्त्री० (चं०) समूह।
**फा:ने**—स्त्री० (शि०) एड़ी।
**फा**—पु० (सि०) फाहा।
**फाई**—स्त्री० फांसी, फंदा।
**फाई**—स्त्री० समस्या, कठिनाई, मुश्किल।
**फाईदो**—पु० लाभ।
**फाउका**—वि० (कु०) ढीला।
**फाउका**—वि० (बि०) हलका।
**फाऊ**—पु० (सि०, सो०) ऊन का फाहा।
**फाऊगण**—पु० फाल्गुन।
**फाऊड़ो**—पु० (शि०) खुदाई करने का लोहे का उपकरण, फावड़ा।
**फाए**—स्त्री० (सि०) जंगली जानवर को मारने के लिए बना फंदा।
**फाऐ**—स्त्री० (शि०, सि०) मुश्किल।
**फाओखड़ी**—स्त्री० (सि०) हल की एक छोटी लकड़ी।
**फाक**—पु० (कु०) पशु की खुराक।
**फाक**—पु० (बि०) धान का छिलका।
**फाक**—पु० (शि०) भीगे हुए कुलथ की पीठी को भाप में पका कर छौंक कर खाने की क्रिया।
**फाकट**—स्त्री० (सि०) जेब।
**फाकट**—पु० (सि०) ऐसा स्थान जिसमें आवारा पशु बंद किए जाएं, फाटक।
**फाकड़ी**—स्त्री० फांक।
**फाकणा**—स० क्रि० फांकना।
**फाकणो**—स० क्रि० (शि०) खाना।
**फाकरा**—वि० (कु०) शिथिल अंगों वाला।
**फाकरा**—पु० (कु०) शरीर का वह अंग जिसमें रक्तसंचार न हो रहा हो।
**फाका**—वि० (कु०) अकेला, भटका हुआ।
**फाका**—वि० (सि०) भूखा।
**फाका**—वि० भूखे पेट।
**फाकी**—स्त्री० (कु०) चूर्ण औषधि की एक खुराक।
**फाकी**—स्त्री० (शि०, सि०) आरोप।
**फाकु:णा**—वि० (चं०) एक समय भोजन न करने वाला।
**फाकू**—पु० (कु०) खांसी।
**फाके**—स्त्री० (सि०) चूर्ण औषधि की एक खुराक।
**फाको**—स्त्री० (सि०) धज्जियां।
**फाकोड़**—वि० (शि०) फक्कड़।
**फाखड़ी**—स्त्री० (चं०) फांक।
**फाग**—पु० होली।
**फाग**—पु० (कु०) एक झाड़ी विशेष।
**फागड़ा**—पु० शहतूत प्रजाति का एक वृक्ष जिसके फल खाए जाते हैं और इसका दूध गोंद के रूप में प्रयुक्त होता है।
**फागड़ी**—स्त्री० (मं०) 'नाटी' की एक धुन।
**फागड़े**—पु० (कु०) अंजीर।
**फागण**—पु० (कु०) फाल्गुन।
**फागळ**—पु० (कां०, बि०) बड़ा छेद।
**फागळी**—स्त्री० (कु०) फाल्गुन मास में संपन्न होने वाले मेले।
**फागुण**—पु० फाल्गुन।
**फागुणी**—वि० दे० फागळी।
**फागू**—पु० (कु०) दे० फागळी।
**फागू**—पु० (मं०) अंजीर।
**फागूड़ो**—पु० (चं०) अंजीर।
**फाग्गू**—पु० (कां०) बांस की एक किस्म।
**फाचण**—वि० (शि०) काम से न थकने वाली स्त्री।
**फाचे**—पु० (शि०) जान से मारने का भाव।
**फाचै**—पु० (शि०) वीरता।
**फाज़त**—स्त्री० हिफाज़त।
**फाजळा**—वि० टेढ़े पैरों वाला।
**फाट**—पु० (कु०) पहाड़ों पर घास का क्षेत्र जिस पर घास काटने का उसी का अधिकार होता है जिसके हिस्से का वह हो।
**फाट**—पु० ढलानदार चरागाह।
**फाट**—स्त्री० (सि०) एक मृत्यु लोकताल।
**फाट**—स्त्री० (सि०, सो०) हल जोतते समय बनी लकीर, हल की सीता।
**फाटक**—पु० फाटक, मुख्यद्वार।
**फाटक**—पु० आवारा पशुओं को बंद करने का स्थान।
**फाटली**—स्त्री० (कां०, ह०) छोटा खेत।
**फाटा-पुराणा**—वि० (शि०) फटा-पुराना।
**फाटी**—स्त्री० कुल्हाड़ी की चोट।
**फाटी**—स्त्री० (कु०) ज़िला प्रशासन की एक इकाई जो कुछ गांवों को मिलाकर बनाई गई है।
**फाटी**—स्त्री० (कु०) वमन।
**फाटु**—पु० (कु०, चं०) फर्श बिछाने के लिए कुल्हाड़ी से बनाए गए तख्ते।
**फाटू**—पु० (कु०) घराट का पानी बंद करने का तख्ता।
**फाटे**—स्त्री० (सि०) लकड़ी की तख्ती।
**फाटोणो**—स० क्रि० (शि०) फोड़ना।
**फाड़**—पु० टुकड़ा, फांक।
**फाड़**—स्त्री० (सो०) एक अंश या भाग।
**फाड़**—पु० (मं०) पहाड़, ऊंचाई पर स्थित स्थान।
**फाड़**—पु० (कु०, सि०) लकड़ी का चौड़ा तख्ता।
**फाड़**—पु० (सि०) पेड़ काटते समय काटने का निशान।
**फाड़ना**—स० क्रि० चीरना।
**फाड़ा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) लकड़ी का तख्ता।
**फाड़ी**—स्त्री० छोटी फांक।

**फाड्डी**—वि० अंतिम, पीछे रहने वाला।
**फाढ़ा**—पु० (कु०) गोद।
**फाण**—पु० उफान, उबाल।
**फाण**—पु० (सि०) बुखार।
**फाण**—स्त्री० (कां०) समस्या।
**फाणसा**—पु० (मं०) भूरे रंग के पक्षी जो पंद्रह-बीस की संख्या में रहते हैं। लोग इनका शिकार करके मांस खाते हैं।
**फाणेई**—पु० (चं०) धनिया।
**फातणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) फंसना, चिपट जाना।
**फातरू**—पु० (मं०) जुल्फें।
**फातो**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) चंचल।
**फात्र**—पु० (कु०) देवता का गूर।
**फाथणा**—अ० क्रि० (सो०) बुरी तरह से चिपकना, तंग करना।
**फाद**—स्त्री० (सि०) उलटा काम।
**फानणा**—स० क्रि० (सो०) मारना, पीटना।
**फानणा**—स० क्रि० (सि०) टुकड़े-टुकड़े करना; धुनना।
**फानणी**—स्त्री० (सि०) ऊन की धुनाई करने का लकड़ी का धनुषनुमा एक यंत्र।
**फानना**—स० क्रि० (शि०) ऊन को धुनना।
**फाना**—पु० (कां०, कु०) समस्या, बाधा।
**फाने**—स्त्री० (शि०) टुकड़ी।
**फाफ**—स्त्री० (कु०) एक प्रकार की औषधि जिसे 'चाकटी' (नशायुक्त पेय) में डाला जाता है।
**फाफरा**—पु० (मं०) स्थानीय अन्न 'भरेसे' की एक किस्म।
**फाफरो**—पु० (शि०) दे० फाफरा।
**फाफाकूटण**—स्त्री० दे० फफाकुटण।
**फाफूलो**—पु० (शि०) चौड़े पत्तों वाला शाक।
**फाफोरी**—स्त्री० (सि०) शाक विशेष।
**फाबणा/णो**—अ० क्रि० (सि०) मिलना।
**फामशणा**—अ० क्रि० (शि०) **पोंछना, साफ करना।**
**फामशो**—पु० (सि०) थोड़ी-थोड़ी बर्फ पड़ने का भाव।
**फायनी/ने**—स्त्री० (सि०) एड़ी।
**फार**—स्त्री० (बि०) बढ़ोत्तरी, वृद्धि।
**फारग**—वि० निवृत्त, निश्चिंत।
**फारगती**—स्त्री० निवृत्ति; तलाक।
**फारज**—पु० (बि०) फर्ज़।
**फारडू**—पु० (सि०) चमड़े में छिद्र करने का औज़ार।
**फारम**—पु० (सो०) फार्म, प्रपत्र।
**फारशी**—स्त्री० (सि०) मथनी।
**फारशी**—स्त्री० (शि०) संकेत।
**फारा**—वि० (कु०, वि०, सो०) अधिक, पर्याप्त।
**फारा**—पु० अफ़ारा।
**फारा**—पु० (कु०) चलने से पैर में दर्द होने का भाव।
**फारी**—वि० (कु०, बि०) पर्याप्त दिन तक चलने वाली।
**फारो**—वि० (शि०) तिरछी नज़र वाला।
**फार्म**—पु० फार्म, प्रपत्र।
**फाल**—स्त्री० (सि०) पानी की धार, नहाते समय दोनों हाथों से शरीर पर फेंका पानी।
**फाळ**—पु० हल में लगाई जाने वाली लोहे की नुकीली छड़।
**फाळ**—स्त्री० (शि०) छलांग।
**फाळ**—पु० (बि०) जाल आदि को फैलाकर फैंकने की क्रिया।
**फालका**—पु० (शि०) बैठने या सोने के लिए बनाया पुराने कपड़ों का गद्दा।
**फालडू—पु० छोटे बच्चे को लपेटने के लिए प्रयुक्त कपड़ा।**
**फालतु**—वि० शेष, बचा हुआ, व्यर्थ, आवश्यकता से अधिक।
**फाळना**—स० क्रि० (कु०) फाड़ना।
**फालरा**—वि० (शि०, सि०) अपंग।
**फालसा**—पु० एक फल विशेष जो स्वादिष्ट व धातुरोग नाशक होता है।
**फाळा**—स्त्री० सुपारी के टुकड़े।
**फाळा**—पु० हल में लगा लोहे का फाल।
**फाळिणा**—स० क्रि० (कु०) फाड़ा जाना।
**फाली**—स्त्री० (मं०) व्रण रोग।
**फाळी**—स्त्री० (कां०) बाजू या टांग के जोड़ में होने वाला फोड़ा।
**फालू**—पु० (कु०, शि०) छाला।
**फाल्हड़ी**—स्त्री० छोटे बच्चे को लपेटने के लिए प्रयुक्त कपड़ा।
**फावड़ी/ड़े**—स्त्री० (कु०, शि०) अन्न इकट्ठा करने का उपकरण।
**फावड़ो**—पु० (शि०) दे० फावड़ी।
**फावण**—पु० (शि०) मेहमान, अतिथि।
**फावणा**—अ० क्रि० (बि०) लाभ होना।
**फावशी मारना**—स० क्रि० (सो०) डींग मारना।
**फाश**—पु० (शि०) आंख में चुभन होने का भाव।
**फाशण**—पु० (शि०) बैल को मारने की छड़ी।
**फाशणी**—स्त्री० (शि०) दही बिलोने की मथनी।
**फाशणो**—स० क्रि० (सि०) दही बिलोना।
**फाशे**—स्त्री० (सि०) फांसी।
**फासरा**—वि० (सि०) लापरवाह।
**फासा**—पु० (शि०) लालच।
**फाह**—पु० फांसी।
**फाह**—पु० समस्या।
**फाहण**—स्त्री० (चं०) समूह, झुंड।
**फाहा**—पु० (शि०) मरहम से युक्त कपड़े या रुई का छोटा भाग जो फोड़े आदि पर लगाया जाता है।
**फाहा**—पु० (कु०) तात्पर्य, मतलब।
**फाहाकाटणा**—स० क्रि० (कु०) कार्य को जल्दी-जल्दी निपटाना।
**फाहिला**—स्त्री० (मं०) लोमड़ी।
**फाही**—स्त्री० (कु०) फांसी।
**फाहुका**—पु० (कु०, बि०) हलका।
**फाहुली**—स्त्री० (मं०) अन्न एकत्र करने का उपकरण।
**फाहू**—पु० ऊन या पशम का गुच्छा।
**फिंचणा**—स० क्रि० दबाना, निचोड़ना, भींचना।
**फिंचुणा**—अ० क्रि० (सो०) दब जाना, भिंच जाना।
**फिंजट**—स्त्री० (कु०) पतली चोटी, वेणी।
**फिंजटी**—स्त्री० (कु०) पूंछ।
**फिंजहू**—पु० बुलबुल का बच्चा।
**फिंजु**—पु० (कु०) वेणी।

**फिंफड़ी**—स्त्री० तितली।
**फिंफड़ीफूल**—पु० (शि०) गुलमेहंदी।
**फिंफरी**—स्त्री० (कु०) तितली।
**फिंबड़ा**—पु० (मं०) छाछ और चावल के मिश्रण से बना खाद्य।
**फिऊबड़ाल**—पु० (शि०) जंगली शाक।
**फिकर**—पु० (सो०) चिंता।
**फिकरा**—पु० वाक्य।
**फिकोर**—स्त्री० (सि०) चिंता, फिक्र।
**फिक्कर**—पु० (शि०) फिक्र, सोच।
**फिक्का**—वि० स्वाद रहित, फीका; धुंधला।
**फिचटीकणी**—स्त्री० (शि०) गुस्सा होने का भाव।
**फिचड़**—वि० (बि०) टेढ़ी या भद्दी आंख वाला।
**फिचर-फिचर**—पु० गंदा हस्तलेख।
**फिट**—स्त्री० तिरस्कार सूचक शब्द।
**फिटक**—स्त्री० गलत आदत, ऐब।
**फिटक**—स्त्री० अभिशाप।
**फिटण**—स्त्री० (कु०) नाश, सर्वनाश।
**फिटण बुद्द**—स्त्री० (कु०) दुर्बुद्धि, ऐसी बुद्धि जो सर्वनाश की ओर ले जाए।
**फिटणा**—अ० क्रि० (चं०) खूब मोटा-ताज़ा होना।
**फिटणा**—अ० क्रि० (कु०) मर जाना, नष्ट हो जाना।
**फिटणा**—अ० क्रि० (सि०) दूर होना।
**फिटफिट**—पु० (कां०) तिरस्कार, फटकार।
**फिटमुंह**—अ० (शि०) धिक्कार।
**फिटेआ**—वि० (चं०) मनमानी करने वाला, जो किसी की परवाह न करे।
**फिट्ट**—पु० मूर्च्छा।
**फिट्टकणा**—अ० क्रि० (बि०) नीयत बिगड़ना।
**फिट्टणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) भटक जाना।
**फिट्टा**—वि० (शि०) अपमानित।
**फिट्टेमुंह**—अ० दे० फिटमुंह।
**फिड़कणा**—अ० क्रि० (कु०) फड़कना।
**फिड़के**—स्त्री० (शि०) फिरकी।
**फिड्डा**—वि० (बि०) छोटा। चपटा।
**फिड्डा**—वि० टेढ़ा।
**फित्ता**—पु० टेप, इंचटेप। तसमा।
**फित्यड़**—पु० पशुओं के शरीर में चिपके रहने वाले मोटे कीड़े।
**फित्या**—वि० चपटे नाक वाला।
**फिनण**—स्त्री० (सि०) रुई पींजने की मशीन।
**फिनणो**—स० क्रि० (सि०) रुई पींजना।
**फिना—वि० छोटे नाक व बड़े नथुने वाला।**
**फिनोण**—स्त्री० (सि०) पिंजाई।
**फिन्हा**—वि० चपटे नाक वाला।
**फिफर**—पु० (चं०) फेफड़ा।
**फिमची**—वि० (शि०) दे० फीमचीं।
**फिमबा**—पु० (सि०) मसूढ़े पर उभरा फोड़ा।
**फिमशी**—स्त्री० (कु०, शि०, सि०) फुंसी।
**फियाड़ा**—पु० (कु०) संदेश, विशेष उक्ति।
**फिरंट**—वि० (शि०) विरुद्ध।
**फिरक/की**—स्त्री० (कु०) पहली मंज़िल का बरामदा।
**फिरकणा**—अ० क्रि० घूमना।
**फिरकणी**—स्त्री० तेज़ी से घूमने वाला एक खिलौना। बरसात में होने वाला बेल वाला पौधा।
**फिरकावणो**—स० क्रि० (शि०) फेंकना।
**फिरकोली**—स्त्री० (चं०) घेरदार चोला।
**फिरगणा**—पु० (सि०) पत्थर दूर फेंकने के लिए बनी रस्सी।
**फिरण**—पु० (चं०) सर्दियों में रहने का घर।
**फिरणा**—अ० क्रि० फिरना।
**फिरदा**—वि० (शि०) चारों ओर।
**फिरना**—अ० क्रि० चक्कर लगाना, घूमना।
**फिरना**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) मुकरना।
**फिरना**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) गाय-भैंस आदि का गर्भ गिरना।
**फिरना**—अ० क्रि० (चं०) गाय, भैंस द्वारा एक बार दूध बंद करने के बाद पुनः दूध देना।
**फिरावणो**—अ० क्रि० (शि०) उलटी करना।
**फिरावणो**—स० क्रि० (शि०) पशु आदि को मोड़ना।
**फिरी**—अ० बाद में, फिर।
**फिरे**—स्त्री० (शि०, सि०) सायंकाल।
**फिल्ली**—स्त्री० (चं०) हल तथा जुए को जोड़ने वाली कील।
**फिल्ली**—स्त्री० (बि०) उकसाहट, उकसाने का भाव।
**फिल्लू**—पु० (कु०, शि०) बांस की तरह की एक झाड़ी जिससे टोकरे बनते हैं।
**फिल्लो**—वि० (शि०) गीला (आटा आदि)।
**फिल्ह**—स्त्री० बरसात में निकलने वाला चिपचिपा सा जीव जो छूने पर अपने सींग और शरीर अपने अंदर समेट लेता है, घोंघा।
**फिल्ह**—वि० धीमी चाल चलने वाला।
**फिशका**—वि० (शि०, सि०) छोटे नाक वाला।
**फिशड़ना**—अ० क्रि० (कु०) फिसलना।
**फिशफिशी**—स्त्री० (कु०) तीखा स्वाद।
**फिसड्डु**—वि० (शि०) फिसलने वाला, अपनी बात से मुकरने वाला।
**फिसलणा**—अ० क्रि० (बि०, सि०) फिसलना।
**फिस्सणा**—अ० क्रि० किसी वस्तु का भार से दब जाना।
**फिहा**—स्त्री० (शि०) पिचकारी, धार, पानी अथवा लहू की तेज़ धार।
**फिहणा**—पु० (कां०) सांप का फन।
**फींगळा**—वि० (शि०, सि०) जिसके हाथ-पांव ठीक से न चलते हों।
**फींचणा**—स० क्रि० (सि०) दबाना, निचोड़ना।
**फींचणो**—स० क्रि० (शि०) दबाना।
**फींचना**—स० क्रि० (बि०) दबाना।
**फींचू**—पु० (कु०) एक छोटी चिड़िया।
**फींचै**—पु० (कु०) अंडे।
**फींजणा**—स० क्रि० (कु०, सो०) मसलना, रौंदना।
**फींजु**—पु० (बि०, मं०) एक छोटी चिड़िया।

**फींगा**—पु० (कां०) सिर में होने वाली फुंसी।
**फीआ**—पु० (कु०) झगड़ालू बातें।
**फीका**—वि० हलका।
**फीट**—स्त्री० (शि०, सि०) गमी।
**फीटा**—वि० (कु०) समाप्त।
**फीड़कणा**—अ० क्रि० (कु०) छूटने का प्रयत्न करना।
**फीड़काल**—पु० (सि०) सीढ़ी के ऊपर का एक बड़ा पत्थर।
**फीडू**—पु० (मं०) एक खेल जिसमें गेंद मारकर पत्थर की छोटी ढेरी गिराई जाती है।
**फीम**—स्त्री० अफ़ीम।
**फीमची**—वि० अफ़ीम खाने वाला।
**फीमदाणा**—पु० पोस्त।
**फीमी**—वि० (कु०, शि०, सि०) अफीम खाने वाला।
**फीमेमोयरो**—पु० (शि०, सि०) एक प्रकार की जड़ी-बूटी।
**फीरले**—पु० (मं०) एक झाड़ी विशेष जिसकी कलमें बनाई जाती हैं।
**फीरे**—अ० (सो०) बाद में।
**फील**—स्त्री० (सो०) दे० फिल्ह।
**फीलयो**—स्त्री० (सि०) एक प्रकार की झाड़ी जिसकी कलमें बनाई जाती हैं।
**फीश**—स्त्री० (कु०, शि०) पानी की धार, दूध की धार।
**फुंईटी**—स्त्री० पूंछ।
**फुंकूर**—स्त्री० (शि०, सि०) फूंक।
**फुंगटि**—स्त्री० (सो०) फुंसी।
**फुंगणा**—स० क्रि० (सो०) डांटना, निंदा करना।
**फुंगणी**—स्त्री० (सि०) फुंसी।
**फुंगणी**—स्त्री० (कु०) देवियों की एक श्रेणी।
**फुंजटी**—स्त्री० दुम।
**फुंटू**—पु० (चं०) दे० तोस।
**फुंडणा**—स० क्रि० किसी वस्तु पर निशान लगाकर प्रहार करना।
**फुंदु**—अ० (चं०) बूंद भर।
**फुंफू**—पु० (सो०) गले की एक बीमारी।
**फुंफू**—पु० (कु०) पंख।
**फुंभरना**—अ० क्रि० (शि०, सि०) आटे में खमीर आ जाना।
**फुआण**—पु० (कु०) मधुमक्खियों का छत्ता।
**फुआण**—पु० क्रोध, उबाल।
**फुआरा**—पु० फव्वारा।
**फुआल**—पु० (कु०) गड़रिया, भेड़ें चराने वाला।
**फुइंटाली**—स्त्री० (सि०) नेवला।
**फुकंदु**—पु० (शि०, सि०) गुब्बारा।
**फुक**—पु० (कां०) मन, जीव।
**फुक**—पु० (कु०, चं०) प्राण, वायु।
**फुकणा**—स० क्रि० जलाना।
**फुकनाला**—पु० (सो०) चूल्हे में फूंक मारने की बांस की नाली।
**फुकनी**—स्त्री० (शि०) दे० फुकनाला।
**फुकनेलू**—पु० (बि०) दे० फुकनाला।
**फुकरना**—स० क्रि० (कु०, शि०) फूंक मारना।
**फुकरनो**—स० क्रि० (शि०) फूंक मारना।
**फुकरिणो**—अ० क्रि० (शि०) लंबी और गहरी सांस लेना।
**फुकरिना**—स० क्रि० (कु०) फूंक मारी जानी।
**फुकरेलू**—पु० (शि०) गुब्बारा।
**फुकाण**—स्त्री० (चं०) जलन।
**फुकाण**—स्त्री० (बि०) जलने की गंध।
**फुकाफाकी**—स्त्री० (कु०, शि०) व्यर्थ खर्च।
**फुकार**—स्त्री० (शि०) फूंक।
**फुकाळ**—पु० (सि०) दे० फुकनाला।
**फुकिणा**—अ० क्रि० (कु०) जल जाना।
**फुकुणा**—अ० क्रि० (सो०) जलना।
**फुकुर**—पु० (सि०) फूंक।
**फुक्कड़**—वि० जला हुआ।
**फुक्कर**—स्त्री० (सो०) फूंक, हवा।
**फुक्करी**—स्त्री० (सो०) जलाने की क्रिया।
**फुक्खण**—स्त्री० (बि०) जलन, ईर्ष्या।
**फुखण**—स्त्री० (मं०) दे० फुक्खण।
**फुखणा**—अ० क्रि० जलना।
**फुगाली**—स्त्री० बर्फ की मामूली फुहार।
**फुटकंडा**—पु० यज्ञ व औषधियों में प्रयोग होने वाली एक जड़ी-बूटी।
**फुटकड़**—वि० (सि०) फटे बर्तन।
**फुटकर**—वि० (कु०) टूटा-फूटा, साधारण।
**फुटकारियां**—स्त्री० दूध के फटने से बने हुए टुकड़े।
**फुटणा**—अ० क्रि० फूटना। बांध, दीवार आदि का टूटना। पेट भरना। अधिक वर्षा होना।
**फुटणो**—अ० क्रि० (सि०) फटना, उत्पन्न होना।
**फुटा**—पु० पैमाना।
**फुटाणा**—स० क्रि० (कां०) फोड़ना।
**फुटिहणा**—स० क्रि० (चं०) अधिक भोजन खाना।
**फुटू**—पु० (सि०) फोटो।
**फुद्टा**—पु० (बि०) पैमाना।
**फुद्टाणा**—स० क्रि० फोड़ डालना।
**फुड़कणा**—अ० क्रि० हिलना, फड़कना, स्फुरण करना।
**फुड़डी**—स्त्री० मुंह में तरल पदार्थ डालकर उसे फुहार के रूप में बाहर निकालने की क्रिया।
**फुणाकणा**—अ० क्रि० उफनना।
**फुणासी**—स्त्री० (सि०) छोटा फोड़ा।
**फुतुहणा**—स० क्रि० घास आदि को हाथ से उखाड़ना।
**फुदकणा**—अ० उछलते हुए चलना, कूदना।
**फुन्नी**—स्त्री० (शि०) वृक्ष के रेशों की गठरी।
**फुप्फू**—पु० (कां०) मक्की का बाहर का आवरण।
**फुफी**—स्त्री० पिता की बहिन।
**फुफू**—पु० (शि०, सि०) बर्फ का फाहा।
**फुमणी**—स्त्री० (मं०) एक लोक नृत्य।
**फुमणु**—पु० (बि०, ह०) मक्की के भुट्टे के बाल।
**फुमणू**—पु० (सो०) फुंदना, सूत, ऊन आदि का फूल या गुच्छा।
**फुमरु**—पु० (शि०) तूफान।

**फुमशणो**—स० क्रि० (सि०) प्यार से हाथ फेरना।
**फुम्मणू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) उड़ने वाले छोटे-छोटे काले रंग के कीट।
**फुरकदा**—वि० (कु०) मरा हुआ। जो हिलने के योग्य भी न हो।
**फुरकदा**—वि० (बि०) हिलता हुआ।
**फुरकना**—अ० क्रि० फड़कना।
**फुरकू**—पु० (शि०, सि०) रंग-बिरंगे धागों से बना फूल या कलगी।
**फुरड़**—स्त्री० (चं०) खूंटी।
**फुरड़ना**—अ० क्रि० (सो०) कुल्ला करना।
**फुरणा**—अ० क्रि० प्रभाव होना, असर करना, सफल होना।
**फुरदा**—वि० (बि०) पका-पकाया।
**फुरदे-फुरदे**—वि० (चं०) गरम-गरम।
**फुरना**—अ० क्रि० (बि०) फड़कना।
**फुरना**—अ० क्रि० मंत्रादि का प्रभाव होना।
**फुरना**—अ० क्रि० (कां०, बि०) दिमाग में आना, सूझना।
**फुरमान**—पु० (शि०) राजा की आज्ञा, आदेश।
**फुरलाहटणा**—अ० क्रि० (बि०) अधिक खाना, खाने के बाद सो जाना।
**फुरलीणा**—अ० क्रि० (चं०) चोट लगने से बेहोश होना।
**फुराफुरी**—अ० (कु०) जल्दी-जल्दी, हलके कदमों से।
**फुरोलणा**—स० क्रि० उलट-पलट करना।
**फुई**—पु० (मं०) एक पक्षी विशेष जो बसंत ऋतु से बरसात तक बोलता है, पपीहा, चातक।
**फुर्ते**—स्त्री० (शि०) फुर्ती।
**फुळंग**—स्त्री० (कां०) आग की चिंगारी।
**फुलकटा**—पु० (सि०) गेहूं की छोटे आकार की रोटी।
**फुलकरे**—पु० (सि०) मुंह में पड़े छाले।
**फुलका**—पु० गेहूं की पतली रोटी, चपाती।
**फुलगर**—पु० (चं०) ऊंचे पहाड़ों पर पाया जाने वाला सुंदर पक्षी।
**फुलटू**—पु० (शि०) फूल, छोटा फूल।
**फुलड़ु**—पु० (सि०, शि०) फूल।
**फुलणा**—अ० क्रि० (कु०, सो०) फूलना।
**फुलणा**—अ० क्रि० (कां०) चाय की कोंपलों का पत्तों में परिवर्तित होना।
**फुलणा**—अ० क्रि० (कु०, मं०, सो०) विकसित होना, प्रसन्नता से खिलना।
**फुलणियां**—स्त्री० (सि०) वाद्ययंत्रों की धुन, एक लोकताल।
**फुलणू**—पु० (कु०) छोटा फूल।
**फुलणू**—पु० एक विषैला पौधा जिसमें वर्ष भर रंगबिरंगे फूल खिलते रहते हैं।
**फुलणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) फूलना, फूल निकलना।
**फुलपताश**—पु० (कां०) धान की एक प्रजाति।
**फुलबहरी**—स्त्री० (ह०) एक विषैला पौधा।
**फुलबेहरी**—स्त्री० सफेद कुष्ट।
**फुलबैरी**—स्त्री० (सो०) दे० फुलबेहरी।
**फुलरो**—पु० (शि०) मोतियाबिंद।
**फुलहारा**—पु० (शि०) माली।
**फुला**—पु० (कु०) मोतियाबिंद।
**फुलू**—पु० (कु०) अंगुली का अग्रभाग।
**फुलेरना**—स० क्रि० (कां०) व्यर्थ की तारीफ करना।
**फुलेल**—पु० (शि०) सुगंधित तेल।
**फुलैहण**—स्त्री० (चं०) कमरे की दीवार के साथ लगा एक स्थिर तख्ता विशेष जिस पर वस्तुएं आदि रखी जा सकती हैं।
**फुलोर**—वि० (सि०) फूलों से परिपूर्ण।
**फुल्लण**—स्त्री० (चं०) एक जंगली अन्न जिसका आटा बनाया जाता है।
**फुल्लणू**—पु० (ऊ०, कां०) घास की एक प्रकार।
**फुल्लसुई**—वि० नाजुक।
**फुल्ली**—स्त्री० (मं०) लोहे की कील।
**फुल्ली**—स्त्री० नाक का आभूषण।
**फुल्ली**—स्त्री० कमीज़ का छोटा सफेद बटन।
**फुहड़**—वि० गंदा, निकम्मा।
**फुहार**—स्त्री० हलकी वर्षा।
**फुहाशणा**—स० क्रि० (कु०) मुंह खोलना।
**फुहाही**—स्त्री० बूंद।
**फुही**—स्त्री० पानी की बूंद।
**फुहरू**—पु० (कां०) छोटी फुंसी।
**फूंक**—पु० प्राण।
**फूंकणा**—स० क्रि० जलाना।
**फूंट**—पु० (बि०) पूंछ।
**फूंटो**—पु० (सि०) खीरा प्रजाति का एक फल।
**फूंदा**—पु० (सि०) मोर पंखों का गुच्छा।
**फूंफां**—स्त्री० अकड़, घमंड।
**फूंफू**—पु० (शि०, सि०) बर्फ के फाहे।
**फूक**—स्त्री० फूंक, हवा।
**फूक**—वि० (शि०) व्यर्थ, लावारिस।
**फूक**—स्त्री० (शि०) फूंक मारने का यंत्र।
**फूकणा**—स० क्रि० जलाना।
**फूकणू**—पु० गुब्बारा।
**फूकणू**—पु० दे० फुकनाला।
**फूकर**—स्त्री० (कु०) फूंक।
**फूकाणा**—स० क्रि० किसी द्वारा जलाया जाना।
**फूके**—वि० (शि०) व्यर्थ की।
**फूटणा**—अ० क्रि० (कु०, सि०, शि०) फटना।
**फूटीमारना**—स० क्रि० (बि०) घमंड करना।
**फूड़**—स्त्री० (कु०) तह।
**फूड़रौल**—पु० (बि०) बेकार की बकवास।
**फूणाक**—वि० (मं०) छरहरा, हलके बदन वाला।
**फूफली**—स्त्री० (कु०) रुई की तरह गिरती हुई बर्फ।
**फूफस**—स्त्री० (सि०) बूआ।
**फूफा**—पु० बूआ का पति।
**फूरा**—पु० (कु०) कटोरा।
**फूर्दा**—वि० अच्छा, साफ-सुथरा।
**फूल**—स्त्री० (मं०) अंगुली का अग्रभाग।

**फूल चुगणा**—स० क्रि० अस्थियां उठाना।
**फूलटू**—पु० (शि०) पति के लिए प्रयुक्त आलंकारिक शब्द।
**फूलणा**—अ० क्रि० फूलना।
**फूला—पु० (कु०) मोतियाबिंद। आंख का एक रोग जिसमें** आंख सफेद हो जाती है।
**फूली**—स्त्री० (कु०) नाक का आभूषण जिसमें नग नहीं होता।
**फूलू**—पु० (कु०) फफोला।
**फूहड़**—पु० (सि०) गंदगी।
**फेंफणा**—वि० (कु०) चपटा (नाक)।
**फेंबड़ा**—पु० (कु०) सोयाबीन, बथुआ आदि अनेक प्रकार के अनाजों से बनाया गया पेय पदार्थ।
**फेऊ**—पु० (सि०, सो०) अंगारा।
**फेकुर**—पु० (सि०) डकार।
**फेगड़ा**—पु० (कु०, सि०) अंजीर प्रजाति का पौधा।
**फेगुड़ा**—पु० (सि०) दे० फेगड़ा।
**फेचका**—वि० (सि०) मोटा, मद्दा (आदमी)।
**फेचणा**—स० क्रि० (कु०) निचोड़ना।
**फेचळा**—वि० टेढ़ा चलने वाला।
**फेट**—अ० (कु०) परे, थोड़ी दूर।
**फेट**—स्त्री० (शि०) दौड़।
**फेटकड़ी**—स्त्री० (कु०) फिटकरी।
**फेटा**—वि० तिरछा, आड़ा, टेढ़ा।
**फेटा**—वि० (कु०) समतल।
**फेटाफेटी**—अ० (कु०) जल्दी-जल्दी।
**फेटे**—स्त्री० (सि०) दौड़।
**फेड़क**—स्त्री० (कु०) शरारत।
**फेड़नो**—स० क्रि० (शि०) विकृत करना। खर्च करना।
**फेड़नों**—स० क्रि० (शि०) मुंह बनाना।
**फेडू**—पु० (शि०) अंजीर।
**फेदणी**—अ० (शि०) चारों ओर।
**फेर**—पु० गोल चक्कर, व्यास, परिधि।
**फेर**—अ० (सो०) दोबारा।
**फेर**—पु० पायजामे की चौड़ाई।
**फेर**—अ० (कां०) अधिक दूरी, मोड़।
**फेर**—पु० (मं०) देवताओं के मंदिर का दिग्बंधन।
**फेर**—पु० उलझन, मोड़, घुमाव।
**फेरका**—अ० (कु०) बाद का।
**फेरकाणो**—स० क्रि० (शि०) फेंकना।
**फेरघेर**—पु० (कु०, सो०) हेरफेर।
**फेरणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) घुमाना।
**फेरणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) घुमाना।
**फेरना**—सं० क्रि० घुमाना।
**फेरनू घेरनू**—पु० (कु०, बि०, मं०) विवाह के बाद वर-वधू द्वारा लड़की के मायके जाने की प्रथा।
**फेरपराणो**—पु० (कु०) मेहमान।
**फेरफिरदे**—अ० (कु०) चारों ओर।
**फेरबेदल**—स्त्री० हेर-फेर, अदल-बदल।
**फेरवा**—वि० (शि०) गोलाई में मुड़े सींगों वाला।
**फेरा**—पु० चक्कर। इधर से उधर नाचने का भाव।
**फेरा**—पु० (ह०) हल जोतते समय भूमि पर पड़ने वाली रेखा, हल की सीता।
**फेरा**—पु० घेरा।
**फेराघेरा**—पु० (ह०) दे० फेरनू घेरनू।
**फेराफेरी**—अ० (कु०, शि०) जल्दी-जल्दी।
**फेरालेणा**—अ० क्रि० (सि०) गाय-भैंस का रंभाना।
**फेरावे**—पु० (सि०) चक्कर।
**फेरिणो**—अ० क्रि० (शि०) बदल जाना।
**फेरिना**—स० क्रि० (कु०) घुमाया जाना।
**फेरी**—स्त्री० विवाह के फेरे।
**फेरी**—स्त्री० (चं०) बारी।
**फेरी**—स्त्री० परिक्रमा।
**फेरीपाणा**—अ० क्रि० आना।
**फेरू**—पु० (कां०) गरुड़।
**फेरू**—पु० (कां०, चं०) जादू-टोने का इलाज करने के लिए बीमार मनुष्य के सिर पर काले रंग की भेड़ को घुमाकर देवता के निमित्त रखना, किसी देवता के नाम पर पाला हुआ बकरा या मुर्गा आदि।
**फेरुआ**—वि० (कु०) मुड़ा हुआ, मरोड़दार।
**फेरुएपाहुणे**—पु० (कु०) विवाह के बाद तीसरे दिन वर-वधु की लड़की के मायके जाने की क्रिया।
**फेरे देणा**—स० क्रि० (कु०) गलत काम के लिए उकसाना।
**फेर्कदा**—वि० (कु०) फड़कता हुआ। पके हुए चावल जिनमें कम पानी पड़ने के कारण दाने अलग-अलग हों।
**फेलणो**—स० क्रि० (शि०) तोड़ना, चोट करना।
**फेलुओंदो**—वि० (शि०) टूटा हुआ (पात्र आदि)।
**फेवड़ी**—स्त्री० (कु०) आग की चिंगारी।
**फेशड़ा**—पु० (कु०) ढलानदार पहाड़ी।
**फैंकणा**—स० क्रि० (सो०) फेंकना।
**फैंटणा**—स० क्रि० (बि०) पीटना।
**फैंटणा**—स० क्रि० (सो०) फेंटना, मिलाना।
**फैंटा**—पु० (सो०) पगड़ी।
**फैंटा**—वि० (सि०) उलटा।
**फैंसला**—पु० निर्णय, फेंकना।
**फैऊ**—पु० (सि०) दो पत्थरों के टकराने से निकली आग, चिंगारी।
**फैऊटू**—पु० (सि०) गीदड़ का बच्चा।
**फैओंटा**—पु० (सि०) गीदड़।
**फैगत**—अ० (कु०) स्पष्ट, अमिश्रित, बिल्कुल।
**फैचकणा**—अ० क्रि० (कु०) उछल-उछल कर चलना।
**फैचकिणा**—अ० क्रि० (कु०) उछल-उछल कर चला जाना।
**फैच़फैचा**—वि० (कु०) ऐसा व्यक्ति जो एक स्थान पर न टिकता हो।
**फैनी**—स्त्री० (कु०) एड़ी।
**फैफड़ी**—स्त्री० (सि०) तितली।
**फैरिस्त**—स्त्री० (शि०) सूची।
**फैलसुफिया**—वि० सुसज्जित, शान-शौकत वाला।
**फोअणो**—स० क्रि० (शि०) खोलना, खुला छोड़ना।

**फोइंल**—पु० (सि०) मकान की नींव।
**फोउंशा**—स्त्री० (कु०) गप्पें।
**फोऊला**—पु० लोमड़ी।
**फोक**—पु० बाहर का छिलका। किसी वस्तु का सार रहित तत्त्व।
**फोक**—वि० (बि०) उतरा (चेहरा)।
**फोकट**—पु० छिलका, बेकार वस्तु।
**फोका**—वि० (कु०, बि०) खाली, खोखला, शक्तिहीन।
**फोका**—पु० (बि०) दिखावा।
**फोकी**—वि० फीकी।
**फोकू**—पु० (बि०) पेट दर्द में चमड़ी को खींचने के लिए बनाया सींगों का उपकरण।
**फोगणा**—पु० फाल्गुन मास।
**फोगळ**—पु० (मं०) भाग्य पर्ची के द्वारा किया निर्णय।
**फोगळा**—पु० (कु०) देवता द्वारा प्रश्न का उत्तर देने के लिए प्रयुक्त अक्षत आदि।
**फोचा**—वि० (कां०) काना (व्यक्ति) मूर्ख, घटिया।
**फोट**—पु० (सि०) गलत बात। खुला स्थान।
**फोट**—पु० खीरा प्रजाति का फल।
**फोटवाणी**—स्त्री० (सि०) भूमि से पानी निकलने का भाव।
**फोटू**—पु० तस्वीर, फोटो।
**फोड़णा**—स० क्रि० तोड़ना, फेंकना।
**फोड़णा**—स० क्रि० (बि०) गिरना।
**फोड़ी**—स्त्री० (कु०, सि०) एक प्रकार का रोग।
**फोड़ु**—पु० फुंसी।
**फोण**—पु० (शि०) फन।
**फोण**—पु० (कु०) पक्षियों आदि की डार।
**फोणकार**—स्त्री० (सि०) फुंकार।
**फोणा**—स० क्रि० (शि०) बांधे हुए पशुओं को खोलना।
**फोणा**—स० क्रि० (मं०) सुहागिनों द्वारा वर या वधू की पूजा की जानी।
**फोनणा**—स० क्रि० (कु०) पींजना।
**फोफल**—पु० (ह०) छाला।
**फोयंटणा**—स० क्रि० (सि०) फेंटना।
**फोयी**—स्त्री० (सि०) लकड़ी का तख्ता।
**फोरजो**—अ० (सि०) परसों।
**फोरजोगले**—अ० (सि०) नरसों।
**फोरमाणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) फरमाना।
**फोरसा**—पु० (कु०) फरसा, परशु।
**फोरियाणो**—स० क्रि० (शि०) किसी को दबोचना।
**फोरोक**—पु० (शि०) फर्क।
**फोलणो**—स० क्रि० (शि०) फैलाना, गिराना।
**फोला**—पु० आंख की बीमारी, **मोतियाबिंद**।
**फोलोई**—स्त्री० (सि०) तख्ता।
**फोल्टू**—पु० (सि०) चरखी का अगला भाग।
**फोशाटणो**—स० क्रि० (शि०) कपड़े को इधर-उधर हिलाना।
**फोशोणा**—स० क्रि० (शि०) मुसीबत में फंसाना।
**फोहा**—वि० (कां०, चं०) हलका।
**फोहा**—पु० (कु०) बर्फ का फाहा।
**फोहड़ा**—पु० (कां०) फावड़ा।
**फोहम**—पु० (कु०) ध्यान, सूझबूझ।
**फौंकु**—पु० (चं०) गीदड़।
**फौंकू**—पु० (कु०) बीमारी में किसी अंग से गंदा खून चूसने के लिए सींगों का बना उपकरण।
**फौंखीणा**—अ० क्रि० (चं०) फूलना, प्रसन्न होना।
**फौःढ़**—स्त्री० (कु०) करघे पर बनाई कोट आदि की पट्टिका।
**फौआ**—पु० (कु०) तख्ता।
**फौउज़**—पु० (कु०) सेना, फौज।
**फौकला**—वि० (चं०) खोखला।
**फौका**—वि० (सि०) थोथा (कार्य)।
**फौका**—वि० हलका।
**फौकोणो**—अ० क्रि० (सि०) बातों में व्यस्त होना।
**फौगण—पु० फाल्गुन।**
**फौजणा—अ० क्रि० (मं०) दिखावा करना।**
**फौड़**—पु० (कु०) फल।
**फौड़नों**—अ० क्रि० (शि०) नींद में हिलना।
**फौड़ा**—पु० फावड़ा।
**फौड़ी**—स्त्री० (कु०) फली।
**फौढ़**—स्त्री० (शि०) अदरक या लहसुन आदि की गट्ठी।
**फौढ़**—स्त्री० (शि०) पहाड़ों पर चट्टान में थोड़ी सी सुरक्षित जगह।
**फौफरा**—पु० (कु०) एक चौड़े पत्तों वाला जंगली पौधा जिसकी सब्जी बनती है।
**फौबणा**—अ० क्रि० (कु०) मिलना, बचना, प्राप्त होना।
**फौबणो**—अ० क्रि० (शि०) अच्छा लगना।
**फौर**—पु० (सो०) पशु की टांग का ऊपरी भाग।
**फौरज़**—अ० (कु०) बीता परसों।
**फौरन**—अ० एकदम, अतिशीघ्र।
**फौरशा**—पु० (कु०) परशु, फरसा।
**फौरुओ**—पु० (कु०, शि०) फावड़ा।
**फौर्ज़ी**—वि० (कु०) नकली, फर्जी।
**फौर्न**—पु० (कु०) दे० फर्ण।
**फौळ**—पु० (शि०) देवता के निमित्त रखा अनाज।
**फौळ**—पु० (कु०) फल।
**फौळना**—अ० क्रि० (कु०, शि०) फल आना, फलना, उपजना।
**फौळना**—अ० क्रि० (कु०) शरीर में छोटे-छोटे दाने निकलना।
**फौळश**—पु० (कु०) एक वृक्ष विशेष जो नदी नालों के किनारे उगता है।
**फौला**—पु० (सि०) लोमड़।
**फौल्हा**—पु० (कु०) तख्ता।
**फौशणा,णो**—अ० क्रि० (शि०) फंसना।
**फौशणा**—स० क्रि० (कु०) बिच्छूबूटी लगाना।
**फौशिणा**—अ० क्रि० (कु०) अतिप्रसन्न होना।
**फौशेत**—स्त्री० (कु०) अत्यंत प्रसन्नता।
**फौहीं**—स्त्री० गीदड़ी।
**फ्यावटा**—पु० (सो०) गीदड़ की तरह का जंगली जानवर।
**फ्रूणू**—पु० (सि०) मच्छर।

**फ्रोलणा**—स० क्रि० जांचना, कुरेदना।
**फ्लाउड़ी**—स्त्री० (मं०) हल में लगने वाला लकड़ी का पुर्ज़ा।
**फ्लार**—पु० विस्तार।
**फ्लेश**—पु० (सो०) असुविधा।
**फ्लेशुणा**—अ० क्रि० (सो०) बंधना।

## ब

**ब**—देवनागरी वर्णमाला में पवर्ग का तीसरा वर्ण। उच्चारण स्थान ओष्ठ।
**बंका**—वि० सुंदर।
**बंग**—स्त्री० चूड़ी।
**बंगचेड़ना**—स० क्रि० (सो०) आवेश दिलाना, कुपित करना, नाराज़ करना।
**बंगड़ी**—स्त्री० (कां०) दाव-पेंच। आलिंगन। चूड़ी।
**बंगयाहड़ा**—पु० चूड़ियां बेचने वाला।
**बंगरेटणा**—स० क्रि० (सो०) झटकना, झटके से फेंकना।
**बंगला**—पु० सुंदर भवन।
**बंगलू**—पु० (मं०) ऊपर की मंज़िल पर बनी अटारी।
**बंगलू**—पु० छोटा सा सुंदर घर।
**बंगलू**—पु० (चं०) सुंदर पालकी जिसमें बैठकर रानियां शहर या मेले में जाती थीं।
**बंगाला**—पु० सपेरा।
**बंगी**—वि० टेढ़ी-मेढ़ी।
**बंच**—पु० बेंच, दीर्घपीठिका।
**बंचणा**—स० क्रि० (शि०) मंत्र पढ़ना।
**बंचवाणा**—स० क्रि० (शि०) पढ़वाना।
**बंचित**—वि० (शि०) वंचित।
**बंज**—वि० बिरादरी से बाहर निकाला हुआ, बहिष्कृत।
**बंज**—पु० बांस।
**बंजणा**—स० क्रि० बिरादरी से बाहर करना, बहिष्कार करना।
**बंजब्योरा**—पु० (बि०) मतभेद।
**बंजर**—वि० (सो०) ऊसर, बंजर।
**बंजूड़ी**—स्त्री० कुछ सौदा लेने पर दुकानदार द्वारा मुफ्त में दी जाने वाली खाने की वस्तु।
**बंझ**—वि० (शि०) बांझ।
**बंझयाड़ा**—पु० (मं०) बांस के पात्र बनाने वाला व्यक्ति।
**बंटक**—पु० (चं०) नाशपाती प्रजाति का फल।
**बंटना**—अ० क्रि० (शि०) विभाग होना।
**बंटवाई**—स्त्री० (शि०) बांटने का शुल्क।
**बंटा**—पु० (सि०) पीतल का खुले मुंह का पात्र।
**बंटाना**—स० क्रि० (शि०) हिस्से कर लेना।
**बंटौळी**—स्त्री० (कां०) गिलहरी।
**बंठिया**—वि० (सि०) सुंदर।
**बंड**—स्त्री० बांट, भाग, जागीर।
**बंडणा**—स० क्रि० बांटना।
**बंडयारा**—पु० दे० बंडारा।
**बंडा**—पु० (चं०) फर्श के नीचे डाले बारीक शहतीर।
**बंडा**—पु० (कां०, ऊ०, बि०) निश्चित भाग।
**बंडाऊकण**—वि० (ह०) बांटने वाला।
**बंडाःर**—वि० बांटने वाला।
**बंडार**—पु० (सो०) भंडार।
**बंडार**—पु० भागीदार।
**बंडारा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) किसी के लिए रखा हुआ भाग, किया गया हिस्सा।
**बंडारे**—पु० (सो०) भंडारी।
**बंडेर**—स्त्री० (कां०, ऊ०) दे० बंडैर।
**बंडैत**—पु० जागीरदार।
**बंडैर**—स्त्री० मुंडेर।
**बंडोणा**—स० क्रि० बांटा जाना।
**बंढोर**—पु० (कां०, मं०) जंगली मधुमक्खी जो वृक्षों आदि की शाखाओं पर छत्ता बनाती है।
**बंता**—पु० (ह०) धान कूटने का पत्थर।
**बंद**—पु० बाजुबंद।
**बंदखाना**—पु० बंदीगृह।
**बंदगी**—स्त्री० वंदना, नमस्कार।
**बंदगोबे**—स्त्री० (शि०) बंदगोभी।
**बंदना**—स० क्रि० प्रणाम करना।
**बंदराडु**—पु० (कु०) Myrsine africana.
**बंदरी**—स्त्री० बंदरिया।
**बंदरी**—स्त्री० चटाई।
**बंदरुई**—स्त्री० भैयादूज।
**बंदरूळा**—पु० (कां०) दानों रहित धान का गट्ठा।
**बंदरेळी**—स्त्री० (बि०, सो०) बंदरों का समूह।
**बंदलू**—पु० (मं०) वेणीबंधन।
**बंदा**—पु० (सो०) फल वाले वृक्षों की टहनी पर पक्षियों की विष्ठा से उगा अन्य जाति के बीज का पौधा।
**बंदा**—पु० व्यक्ति, विशेष व्यक्ति।
**बंदाणा**—स० क्रि० वंदना करवाना।
**बंदि**—स्त्री० (सो०) छोटा खेत।
**बंदुआ**—वि० बन्दी; रहन, गिरवी रखा हुआ।
**बंदे**—पु० (चं०) नवाला में 'ऐंचली' गाने वाले व्यक्ति।
**बंध**—पु० (शि०) बंधन, रोक।
**बंधना**—अ० क्रि० (शि०) बंध जाना।
**बंधा**—पु० देवता के निमित्त रखा अनाज।
**बंधान**—पु० (शि०) लेन देन के विषय में निश्चित क्रम या नियम।
**बंधुक**—पु० (मं०) एक राक्षसी वृत्ति वाला नदी किनारे रहने वाला देवता।
**बंधेज**—पु० (शि०) देवता के प्रकोप को रोकने के लिए रुपया या ऊन रखकर यह विचार प्रकट करना कि अपने गलत कार्य करने की क्षमा मांग कर निश्चित समय में दंड भरा जाएगा।
**बंधेज़**—पु० परहेज़।
**बंधेजे**—पु० (मं०) बच्चे को किसी देवता को अर्पण कर उसकी

अमानत मानना।
**बंबरू होणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०) भक्त के किसी कृत्य पर देवता या देवी का प्रसन्न होकर वर देने के लिए तैयार होना।
**बंबा**—पु० नल।
**बंबा**—पु० (कां०, सि०) कुल्या के पानी को सड़क के नीचे से गुज़ारने के लिए सड़क के दोनों ओर बनाए नाले, ज़मीन से बड़ी मात्रा में निकला पानी।
**बंबुकाठ**—पु० (मं०) कार, छोटी गाड़ी।
**बंबू**—पु० (शि०) बांस की छोटी पतली नली।
**बंबू**—पु० कष्ट, मुसीबत।
**बंबोही**—स्त्री० (चं०) मुंह से बजाया जाने वाला बांस का बना वाद्य विशेष।
**बंस**—पु० वंश।
**बंसरी**—स्त्री० बांसुरी, वंशी।
**बंसलोचन**—पु० (सो०) 'वंश लोचन' नामक औषधि।
**ब:रती**—स्त्री० (सो०) भरती।
**ब:रना**—अ० क्रि० बरसना।
**बअ**—पु० (शि०) चर्बी।
**बअणो**—अ० क्रि० (शि०) बहना, प्रवाहित होना।
**बआलो**—पु० (सि०) कंधा।
**बइअर**—स्त्री० (सि०) स्त्री, औरत।
**बइदो**—अ० (शि०) नीचे।
**बईज़**—पु० (सो०) बांस।
**बई**—स्त्री० (कां०, ह०) छोटी सी जलधारा।
**बई**—स्त्री० बही खाता।
**बईण**—स्त्री० बहिन।
**बईद**—पु० वैद्य।
**बईमी**—वि० शंकालु, वहमी, शक्की।
**बईर**—पु० वैर।
**बईला**—पु० (बि०) बसूला, एक औज़ार जिससे बढ़ई लकड़ी आदि को छीलता है।
**बऊंटी**—स्त्री० (चं०) घर की छत में रखा गया छिद्र जिससे प्रकाश भीतर आता है।
**बऊ**—पु० हाथ और कुहनी के बीच का भाग।
**बऊ**—स्त्री० पुत्रवधू।
**बऊ**—अ० कुत्ते के भौंकने की ध्वनि।
**बऊटी**—स्त्री० वधू।
**बऊटो**—पु० (मं०) छप्पर का दीवार से आगे का भाग।
**बऊत**—वि० बहुत।
**बओ**—स्त्री० (शि०, सि०) बाहु, भुजा।
**बकड़बादी**—वि० बातूनी।
**बकणा**—अ० क्रि० बेकार बोलना।
**बकता**—वि० (शि०) बहुत बोलने वाला।
**बकतारा**—वि० समयानुसार।
**बकना**—अ० क्रि० (शि०) बड़बड़ाना।
**बकरबेल**—स्त्री० (बि०) Ichnocarpus Frutercens. शुकनास वृक्ष।
**बकरसाजा**—पु० (मं०) आषाढ़ संक्रांति।
**बकराथा**—पु० (सि०) बकरी के बाल का बिछौना।
**बकराथा**—पु० (शि०) बकरी के बाल।
**बकराळा**—वि० बकरी वाला।
**बकरू**—पु० छोटा बकरा।
**बकरैओळ**—पु० (शि०) बकरियों को रखने का स्थान।
**बकरैड़**—पु० (मं०) बकरी की मेंगनी।
**बकरैड़**—पु० बकरियों का समूह।
**बकरैहन**—स्त्री० बकरी से आने वाली गंध।
**बकरो**—पु० बकरा।
**बकरोलना**—स० क्रि० व्याकुल करना, परेशान करना।
**बकरोलू**—पु० (चं०) गुर्दा।
**बकला**—पु० (शि०) पेड़ का छिलका।
**बकलेवणा**—स० क्रि० (सो०) बहकाना। हंसाना।
**बकलोइणा**—अ० क्रि० (कु०) परेशान होना।
**बकलोणा**—अ० क्रि० व्याकुल होना।
**बकवादी**—वि० (शि०) बक-बक करने वाला।
**बकस**—पु० (सि०) संदूक।
**बकसा**—पु० संदूक।
**बकसूआ**—पु० सुआ।
**बकहारू**—पु० (मं०) Lonicera quinquelocularis.
**बकाऊ**—वि० बिकाऊ।
**बकाणा**—स० क्रि० बिकवाना।
**बकाणा**—स० क्रि० किसी के मुंह से सच्चाई उगलवाना।
**बकाया**—वि० शेष।
**बकार**—वि० बकने वाला।
**बकार**—पु० अरणी वृक्ष।
**बकारना**—अ० क्रि० (सो०) उलटी करना, कै करना।
**बकारी**—स्त्री० (सो०) उलटी, कै।
**बकारी**—स्त्री० बोलने की क्रिया। बेकारी।
**बकील**—पु० (सो०) वकील।
**बकैण**—स्त्री० (ऊ०) महनिंब वृक्ष।
**बकोह्या**—वि० (कां०) हैरान हुआ, खुले मुंह।
**बक्करखड**—पु० (कां०) कसाई।
**बक्कल**—पु० (शि०, सि०) वृक्ष की छाल।
**बक्की**—वि० (शि०) दे० **बकड़बादी**।
**बक्ख**—पु० किनारा, पक्ष।
**बक्खी**—स्त्री० कुक्षि, कमर।
**बक्खें**—अ० पास, निकट, समीप।
**बख**—अ० (कु०) बिल्कुल, अत्यधिक, खूब।
**बख**—अ० ओर, तरफ।
**बखत**—पु० (सो०) समय।
**बखरा**—वि० अलग, जुदा।
**बखराली**—स्त्री० (सि०) बकरे की खाल।
**बखरोणा**—अ० क्रि० खुलना, खिलना।
**बखशणा**—स० क्रि० (कु०) छोड़ देना, मुक्ति देना।
**बखा**—पु० (मं०) बखिया, सिलाई।
**बखाण**—पु० प्रदर्शन, अभिव्यक्ति।
**बखान**—पु० (शि०) माघ मास में देवता भगवान् से आने वाले

वर्ष से संबंधित सूचनाएं प्राप्त करके आते हैं और जनता में बखान करते हैं। रोहडू क्षेत्र में देवता यह बखान करते हैं।

**बखान**—पु० व्याख्यान।

**बखार**—पु० बुखार।

**बखारचा**—पु० मकान में आगे की ओर गोलाई में बढ़ी हुई खिड़कियां।

**बखारटा**—पु० बड़ी टोकरी।

**बखारी**—स्त्री० दीवार में बनी अंगीठी।

**बखारी**—स्त्री० बिना किवाड़ों की अलमारी।

**बखिहणा**—अ० क्रि० (चं०) अलग होना।

**बखूरना**—स० क्रि० (कां०) ऊन को हाथ से बिखेर कर ठीक करना।

**बखूरना**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०) झूठ को उगलना। अतिशयोक्ति करना।

**बखे**—अ० किनारे।

**बखेड़ा**—पु० लड़ाने की क्रिया, विरोध, झंझट।

**बखेड़िया**—वि० (शि०) **झगड़ालू।**

**बखेना**—पु० (सि०) कहावत।

**बखेरना**—स० क्रि० परिवार से अलग करना।

**बखे**—वि० (कु०) बहुत अधिक।

**बखोरना**—स० क्रि० (सो०) बिखेरना, फैलाना।

**बख्त**—पु० समय, वक्त।

**बख्वार**—पु० (सो०) बुखार।

**बगड़**—पु० लंबा घास जिसकी रस्सियां बनती हैं।

**बगडांडो**—पु० (सि०) **हिमलंब।**

**बगड़ा**—पु० (कु०) दे० बगाड़।

**बगड़ा**—पु० (कु०, शि०, बि०) चावल और गेहूं को छोड़कर अन्य अनाज़।

**बगड़ी**—स्त्री० (चं०) खेत।

**बगड़ैल**—वि० बिगड़ा हुआ।

**बगणा**—अ० क्रि० बहना।

**बगत**—पु० (सो०) भक्त।

**बगत**—पु० बेला, पहर।

**बगति**—स्त्री० (सो०) भक्ति।

**बगदोड़**—पु० (सो०) आंधी।

**बगया**—स्त्री० (शि०) छोटा उपवन।

**बगल**—पु० (शि०) लकड़ी के लट्ठे की चिराई करते समय अलग किया हुआ बाहरी भाग।

**बगलणा**—पु० (सि०) पीतल की परात।

**बगळना**—स० क्रि० (सो०) भगाना।

**बगला**—पु० बगुला पक्षी।

**बगली रंदा**—पु० (सि०) रंदे की एक प्रकार।

**बगस**—पु० (सि०) संदूक।

**बगशीश**—स्त्री० ईनाम, बखशीश।

**बगसूआ**—**पु० सुआ, बड़ी सुई।**

**बगा**—पु० (कु०) खेत की सीमा।

**बगाई**—स्त्री० (कां०) चपटी, चपतियां बनाने का कार्य।

**बगाड़**—पु० मनमुटाव, खराबी, बिगाड़।

**बगाड़ना**—स० क्रि० (सो०) बिगाड़ना।

**बगाड़िना**—स० क्रि० (कु०) बिगाड़ा जाना।

**बगाणा**—स० क्रि० फेंकना, (पानी आदि) बहाना।

**बगाना**—वि० पराया, बेगाना।

**बगानो**—वि० (शि०) अनोखा। बेगाना।

**बगार**—स्त्री० मुफ्त सेवा जिसमें राजा आदि की तरफ से केवल भोजन ही दिया जाता था, बेगार।

**बगारी**—वि० 'बगार' देने वाला।

**बगारू**—वि० 'बगार' ले जाने वाला।

**बगाला**—पु० (सि०) सपेरा।

**बगीचड़ू**—पु० वाटिका, छोटा बागीचा।

**बगीचा**—पु० (सो०) बाग।

**बगेर**—पु० (सो०) लड़का।

**बगैर**—अ० (सो०) बिना।

**बगोटू**—पु० (कां०, बि०) उपहार के वस्त्र जो विवाह के समय कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष के संबंधियों को दिए जाते हैं।

**बगोश**—स्त्री० (शि०) गोबर इकट्ठा करके रखने का स्थान।

**बग्ग**—पु० (सो०) विभाजित परिवार।

**बग्गड़**—पु० मोटे चावलों की एक किस्म।

**बग्गड़**—स्त्री० दे० बगड़।

**बग्गा**—पु० (कां०, बि०) दे० बगोटू।

**बग्गा**—वि० सफेद।

**बग्गी**—स्त्री० (बि०) बच्चों का एक खिलौना।

**बग्घी**—स्त्री० घोड़ा-गाड़ी।

**बघंबर**—पु० (शि०) बाघ की खाल।

**बघड़ैंज**—पु० (सि०) एक विशेष प्रकार का बांस जो प्रायः दृढ़ होता है।

**बघेरा**—पु० (शि०) लकड़बग्घा।

**बघैड़**—पु० (कां०) बाघ।

**बघैरने**—पु० (बि०, ह०) Acacia gageana.

**बघ्याड़**—वि० (कां०, बि०) कुरूप।

**बघ्यारलू**—पु० (मं०) बाघ की आकृति का क्रूर देवता।

**बघ्याल**—पु० (कु०) वंशज, एक ही वंश के।

**बचकणा**—अ० क्रि० टकराना।

**बचकाणा**—वि० (शि०) बचकाना।

**बचकाल**—वि० (कां०) बीच का, खाली (स्थान)।

**बचकाळा**—वि० (कां०) मध्य या बीच का।

**बचकोणा**—अ० क्रि० अकस्मात् टकरा जाना।

**बचकोल्ला**—वि० (कां०) मध्यस्थ, बीच का।

**बच्णा**—अ० क्रि० (कु०) बचना।

**बच्णे**—अ० क्रि० (शि०, सो०) दे० बच्णा।

**बचपणा**—पु० (शि०) बचपना।

**बचयारा**—वि० (सि०) बेचारा।

**बचरेलणा**—स० क्रि० खराब करना।

**बच्लेरना**—स० क्रि० (कु०) नस में खिंचाव आना।

**बच्लेरिणा**—अ० क्रि० (कु०) नस का खिंच जाना।

**बच्वाइणा**—स० क्रि० (कु०) बचाया जाना।

**बचाट**—पु० खराबी।

**बचाणा**—स० क्रि० बचाना।
**बचार**—पु० विचार, शोक प्रकट करने का भाव।
**बचारदेणा**—स० क्रि० मृतक के परिवार से सहानुभूति प्रकट करने जाना।
**बचारना**—स० क्रि० (सो०) विचारना, अपशकुन मानना।
**बचारा**—वि० बेचारा।
**बचाला**—पु० (सो०) बीच में विद्यमान वस्तु, अंतराय।
**बचालें**—अ० मध्य में, बीच में।
**बचावणा/णो**—स० क्रि० (शि०) बचाना।
**बचीकडू**—पु० (मं०) पत्थर को दूर फेंकने के लिए बनाया रस्सी का छीका।
**बचेड़**—पु० (सो०) ताज़ी ब्याई हुई गाय का दूध जो देव पूजन के लिए आठ-दस दिन तक सुरक्षित रखा जाता है।
**बचोला**—पु० लड़के-लड़की की सगाई में मध्यस्थ का काम करने वाला व्यक्ति, दलाल।
**बचछयाण**—पु० (मं०) बिछौना, बिस्तर।
**बच्छयाण**—स्त्री० पहचान।
**बच्छाण पोणा**—अ० क्रि० (ह०) वर्षा के कारण फसल का गिर जाना।
**बच्छाण पोणा**—स० क्रि० (कां०, बि०) मौत के घाट उतारना।
**बच्छो**—पु० (चं०) गाय का बछड़ा।
**बच्छोलण**—पु० (मं०) मांह की सब्जी।
**बच्छौड़ा**—पु० (सि०) पिछवाड़ा।
**बच्छौड़ा**—पु० (ऊ०, कां०) बिगड़ा हुआ बछड़ा।
**बच्याओड़**—पु० (मं०) देवता के 'गूर' के हाथ के मंत्रित चावल।
**बछड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) अलग करना, वियुक्त करना।
**बछला**—वि० (कां०) बछड़े वाली (गाय)।
**बछाटणा**—स० क्रि० (सि०) ज़ोर से पटकना; देवता के चावल किसी पर फेंकना।
**बछाण**—पु० बिस्तर।
**बछाणा**—पु० (शि०) गद्दा।
**बछाणा**—स० क्रि० बिछाना।
**बछानणा**—स० क्रि० (कु०) पौधे की बेकार शाखाओं को काटना।
**बछायण**—स्त्री० (सि०) चीड़ की सूखी पत्तियां।
**बछार**—स्त्री० (कु०) बौछार।
**बछावण**—पु० (सो०) बिछाने की वस्तु।
**बछावणा**—पु० (सि०, सो०) बिस्तर।
**बछावणा**—स० क्रि० (सो०) बिछाना।
**बछावळ**—पु० (सो०) चीड़ की पत्तियों का झाड़ू।
**बछाहड़**—पु० (कां०) अरथी में शव के नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा।
**बछीहू**—पु० (मं०) मधुमक्खी।
**बछूछका**—पु० हैज़ा, महामारी।
**बछेरू**—पु० घोड़ी का बच्चा।
**बछो**—पु० (सि०) बिछोह, वियोग।
**बछोड़ा**—पु० (कु०, सो०) दे० बछो।
**बछोड़ा पाणा**—स० क्रि० (कु०) वियोग डालना।
**बछोड़िना**—अ० क्रि० (कु०) बिछुड़ जाना।
**बछोह**—पु० दे० बछो।
**बछौणा**—पु० (सि०, सो०) रुई का गद्दा, बिछौना।
**बजंतरी**—पु० वादक।
**बज**—पु० (चं०) पिता।
**बजकणा**—अ० क्रि० टकराना, इधर-उधर की ठोकरें खाना।
**बजकाणा**—स० क्रि० (मं०) बजाना।
**बजकाणा**—स० क्रि० टकराना।
**बजगोयरा**—वि० (सि०) बजाने वाला।
**बजग्ग**—वि० हक्का-बक्का।
**बजड़ना**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) अकस्मात् पहुंचना।
**बजड़ाइणा**—स० क्रि० (कु०) डराकर भगाया जाना।
**बजण**—वि० वज़न, भार।
**बजणा**—अ० क्रि० (ह०, सो०) चोट लग जाना, टकराना, बजना।
**बजणा**—अ० क्रि० (सो०) किसी वाद्य का बजना।
**बजन**—पु० (सो०) वज़न, भार। भजन।
**बजरंग**—वि० हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ठ।
**बजर**—वि० मूर्ख। भारी। वज्र, सख्त।
**बज़र**—अ०(कु०) बिल्कुल।
**बजरबट्टू**—पु० चीड़ वृक्ष का फल।
**बजरबट्टू**—वि० (सि०) मोटा, सख्त।
**बजरमंग**—पु० (चं०) एक फलाहार।
**बजराड़**—स्त्री० (सो०) सोलन क्षेत्र की एक सहायक नदी जो आगे जाकर गंबर में मिल जाती है।
**बजरी**—स्त्री० (कां०, कु०, सो०) बारीक ओले; पत्थरों की बारीक रोड़ी।
**बजरेड़ना**—स० क्रि० डराना।
**बजरेड़िना**—अ० क्रि० (कु०) डराया जाना, डरकर भाग जाना।
**बजळेओ**—पु० (सि०) बिजली की चमक।
**बज़लोत**—स्त्री० (कु०) एक काला पत्थर जिसे पीस कर स्याही बनाई जाती है।
**बजलोथर**—पु० कठोर पत्थर।
**बजांवठा**—पु० (सि०) वाद्ययंत्र बजाने का डंडा।
**बजा**—पु० (सि०) बाजा।
**बज़ाइणा**—स० क्रि० (कु०) बजाया जाना।
**बजाई**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) मार-पीट। बजवाने का पारिश्रमिक।
**बजाई**—स्त्री० विजाई।
**बजाए**—स्त्री० (सि०) बजाने की मज़दूरी।
**बजाए**—अ० (सो०) के स्थान पर, के बिना।
**बजागरी**—पु० (शि०) बजाने वाला।
**बजाज**—पु० (कां०) बजाने वाला।
**बजाट**—पु० (सि०) कस्तूरी मृग।
**बज़ाणा**—स० क्रि० (कु०) बजाना।
**बजाना**—स० क्रि० (कां०, चं०) बकरे पर पानी फेंककर उसे कंपकंपाना।
**बजार**—पु० बाज़ार।

**बजारत्त**—पु० मंत्रि मंडल।
**बजारू**—वि० बाज़ार की (वस्तु), बाज़ार में रहने वाला।
**बज़ारू**—वि० (कु०) बाज़ार का रहने वाला।
**बजावणा**—स० क्रि० (सो०) बजाना। बुझाना। बिजाई करवाना।
**बजावणो**—स० क्रि० (सि०) बजाना।
**बजिऊरा**—पु० (सो०) पनचक्की का पंखा।
**बजिया**—पु० मालिक, भूपति।
**बजीऊरी**—स्त्री० बिजौरा, नीबू प्रजाति का फल।
**बज़ीरी**—स्त्री० वजारत, वज़ीर का पद।
**बजुरग**—पु० बुजुर्ग।
**बजूरी**—स्त्री० (कां०, बि०) दे० बजीऊरी।
**बजेउझणा**—अ० क्रि० (मं०) हड़बड़ाना।
**बजेरना**—स० क्रि० (बि०, ह०) बकरे आदि को देवता के आगे समर्पित करना।
**बजेरना**—स० क्रि० पागल करना।
**बजेलणा**—स० क्रि० (शि०) जगाना।
**बजेहरी**—वि० (मं०) बीज बीजने वाला।
**बजोग**—पु० वियोग।
**बजोणा**—अ० क्रि० बज जाना। स० क्रि० बजाया जाना।
**बजोहणा**—स० क्रि० (कु०) अनाज की पौध को सही अंतर पर रखकर शेष को उखाड़ना।
**बज्जड़ना**—अ० क्रि० टकराना।
**बज्जर**—वि० वज्र, कठोर।
**बज्जरबट्टू**—वि० (सो०) मूर्ख।
**बज्यारू**—वि० (मं०) दे० बज़ारू।
**बझणा**—स० क्रि० (कां०, ह०) बंदी बनना।
**बझयाणी**—स्त्री० (शि०, सि०) पहेली।
**बझयाणी**—स्त्री० मालकिन।
**बझा**—स्त्री० (कु०) कारण।
**बझाट**—पु० (कु०) भूतप्रेत।
**बझाट**—वि० (कां०, शि०) अभद्र व्यवहार करने वाला।
**बझाणा**—स० क्रि० (कां०) चिमटाना, चिपकाना।
**बझाणा**—स० क्रि० (कां०) बुझाना, शांत करना।
**बझायण**—स्त्री० (सो०) पहेली।
**बझावणा**—स० क्रि० (शि०) बुझाना।
**बझिया**—पु० (कु०, सि०) मालिक।
**बझुर्का**—वि० (कु०) बिखरे हुए बालों वाला।
**बझेऊणा**—स० क्रि० (मं०) जगाना।
**बझेरना**—स० क्रि० (कु०) बलि के रूप में दिए जा रहे बकरे के कान में मंत्रित अक्षत-धूप डालकर शरीर हिलाने के लिए तैयार करना।
**बझेरिना**—स० क्रि० (कु०) 'बझेरा' जाना।
**बझेरिना**—स० क्रि० (शि०) पातक के बाद शुद्धि के लिए खाना खिलाना।
**बझेळना**—स० क्रि० (कु०) जगाना।
**बझोळिना**—स० क्रि० (कु०) जगाया जाना।
**बझेणी**—स्त्री० (कां०) मालकिन।
**बझोड़ना**—स० क्रि० (सि०) बाल संवारना।
**बझोणा**—अ० क्रि० (कां०) मालूम होना, अनुभूति होना।
**बझ्याट**—वि० (बि०) शरारती।
**बट**—पु० मनमुटाव।
**बट**—पु० (कां०) गोलाकार पत्थर जिससे शिला पर पिसाई की जाती है।
**बट**—पु० (शि०, सि०) ऐसी दाल या मांस जो पकाने पर भी कच्चा रहता है।
**बट**—स्त्री० (ऊ०, कां०) पानी के बहाव को बदलने के लिए बनाई गई रोक।
**बट**—स्त्री० (शि०) तेवर, क्रोधित होने का भाव।
**बट/टा**—पु० विवाह की ऐसी प्रथा जिसमें वर पक्ष को बदले में बहू पक्ष के परिवार में लड़की का विवाह करना होता है।
**बटकळणा**—स० क्रि० ज़िद निकालना।
**बटळूही**—स्त्री० (मं०) बटलोई।
**बटण**—पु० बटन।
**बटण याई**—स्त्री० (सो०) मक्खी।
**बटणा**—पु० उबटन।
**बटणा**—स० क्रि० बल चढ़ाना, बाटना।
**बटणू**—पु० (कां०) बड़ी तकली जिससे धागे में बल चढ़ाया जाता है।
**बटनौळी**—स्त्री० गिलहरी।
**बटब्याह**—पु० वट वृक्ष का यज्ञोपवीत संस्कार।
**बटयाड़ना**—स० क्रि० (मं०) निम्न जाति से विवाह करना।
**बटलुही**—स्त्री० (मं०) दे० बटळोऊ।
**बटळोऊ**—पु० पीतल या कांसे का पात्र।
**बटलोही**—स्त्री० चावल पकाने हेतु पीतल का बड़ा पात्र।
**बटवाल**—पु० (चं०, ह०) चौकीदार।
**बटांदर**—स्त्री० (कां०) बंटवारा, विनिमय।
**बटांदरा**—पु० (सो०) हिस्सा, बदले में दी गई वस्तु।
**बटा**—पु० बदला।
**बटाइणा**—अ० क्रि० (कु०) बदल जाना। स० क्रि० बदला जाना।
**बटाई**—स्त्री० बाट चढ़ाने का पारिश्रमिक। चुगली।
**बटाई**—स्त्री० बड़े नोट या सिक्के के बदले छोटे नोट या सिक्के।
**बटाऊ**—पु० राही, बटोही, पथिक।
**बटाऊ**—वि० कमाने वाला; लाभ देने वाला।
**बटाए**—स्त्री० (शि०) दे० बटाई।
**बटाकखोर**—वि० (कां०) चुगलखोर।
**बटाड़ा**—पु० (चं०) पत्थरों का काम करने वाला व्यक्ति।
**बटाणा**—स० क्रि० बदलाना, कीमत दिलाना।
**बटालना**—स० क्रि० जूठा करना, अशुद्ध करना।
**बटावणो**—स० क्रि० (शि०) बदलना।
**बटालना**—अ० क्रि० धर्म परिवर्तन करना।
**बटी**—स्त्री० (सि०) मांस का टुकड़ा।
**बटी**—स्त्री० दो सेर का पुराना तोल।
**बटीणु**—वि० दो सेर या 'बटी' दूध देने वाली गाय।
**बटुंह**—पु० (कु०) 'फिरक' के अतिरिक्त वह कमरा जो मुख्य

कमरे के बाहर होता है।

**बटुंहटू**—पु० (कु०) छोटी बटलोई।

**बटुंही**—स्त्री० (कु०) पानी लाने या रखने का बड़ा पात्र।

**बटुआ**—पु० बटुआ, खाल या कपड़े की बनी थैली।

**बटुओ**—पु० (कु०) खाल से बनी थैली।

**बटुहरू**—पु० खमीरे आटे की रोटी।

**बटूंहा**—पु० (कु०) बड़ी बटलोई।

**बटूंही**—स्त्री० (कु०) छोटी बटलोई।

**बटूरू**—पु० (सो०) खमीरे आटे की तली हुई रोटी।

**बटेर**—पु० बटेर।

**बटैहड़ा**—पु० मकान बनाने का काम करने वाला व्यक्ति, राज।

**बटोइ**—पु० बटोही, राही।

**बटोणा**—अ० क्रि० बल पड़ना, अकड़ना। स० क्रि० कीमत लेना।

**बटोरड़**—वि० (चं०) सख्त।

**बटोळना**—स० क्रि० बटोरना, इकट्ठा करना।

**बटोल्हू**—पु० (मं०) दे० **बटोहळी।**

**बटोहळी**—स्त्री० एक छोटा सा पक्षी जो उड़ता कम है और दौड़ता अधिक है, इसका मांस प्राय: रोगियों को दिया जाता है।

**बटौल**—वि० (कां०) विशेष सलाहकार।

**बट्ट**—वि० (कां०) सख्त। चक्की का पाट।

**बट्टण**—पु० (सो०) बटन।

**बट्टा**—पु० (बि०, शि०) नमक आदि पीसने का पत्थर, वस्तु तोलने का बाट।

**बट्टा**—पु० (बि०) लेन-देन; बदले का विवाह।

**बट्टी**—स्त्री० (चं०) दे० बाखरु।

**बट्ठळ**—पु० (कां०) तसला।

**बठहरन**—पु० (मं०) बोझ ढोने के लिए प्रयोग किया जाने वाला बोरी का टुकड़ा।

**बठाओ**—पु० (मं०) चीड़ या देवदार का पराग केसर जो तांत्रिक क्रिया व पूजा पद्धति में काम आता है।

**बठावणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) बिठाना।

**बठी**—स्त्री० (बि०) बाती, दिया-बाती।

**बठूणी**—स्त्री० लगातार बैठे रहने की क्रिया, बैठक।

**बठोतलू**—पु० (कां०) बैठने के लिए आसन रूप में बिछाई गई पत्तल।

**बड़ंज**—पु० (सि०) बड़ियों की सब्जी।

**बड़**—पु० वट वृक्ष; वट वृक्ष के फल।

**बड़कणु**—पु० (चं०) छोटे आकार का 'भल्ला'।

**बड़का**—पु० (कां०, सि०, ह०) बड़ा भाई।

**बड़कावणा**—स० क्रि० (सो०) भड़काना।

**बड़छा**—पु० भाला।

**बड़णा**—स० क्रि० (बि०) काटना।

**बड़त्तणो**—स० क्रि० (सि०) प्रयोग करना।

**बड़त्थर**—पु० (चं०) कार्य की अधिकता।

**बड़द**—पु० (सि०) बैल।

**बड़दूई**—स्त्री० (मं०) भैय्या दूज।

**बड़धू**—पु० (सो०) अत्यधिकता; फिजूलखर्ची।

**बड़ना**—अ० क्रि० अंदर जाना, घुसना।

**बढ़ना**—अ० क्रि० (सो०) बढ़ना।

**बड़बोला**—वि० अधिक बोलने वाला, उलटा-सीधा बोलने वाला।

**बडयालू**—पु० (सो०) एक प्रकार का हरा घास।

**बड़याहिणा**—अ० क्रि० (कु०) टकराना, सींगों से लड़ना।

**बडलेड्टु**—पु० (सो०) बुढ़ापे की संतान।

**बडलोण**—स्त्री० (सि०) भेड़ की ऊन काटने की कैंची।

**बडवारन**—स्त्री० (मं०) यज्ञोपवीत संस्कार।

**बड़ा:क**—वि० (सो०) भिड़ने वाला, सींग मारने वाला पशु।

**बडा**—पु० उरद की पीठी की घी या तेल में तली टिकिया।

**बड़ा**—पु० (कु०) वट वृक्ष।

**बड़ाई**—स्त्री० बड़प्पन।

**बड़ाका**—पु० (सो०) प्रहार, टकराने की ध्वनि।

**बड़ादानु**—पु० (सि०) अजगर।

**बड़ानू**—पु० (कां०) दो स्वामियों की भूमि के मध्य की सीमा-रेखा।

**बड़ा बापू**—पु० (कु०) ताया।

**बड़ाये**—स्त्री० (सि०) प्रशंसा।

**बडार**—पु० (सि०) भंडार।

**बडार**—पु० (सो०) वे व्यक्ति जिनमें संपत्ति का बटवारा हुआ हो।

**बडारन**—स्त्री० (बि०) देवता के कारदार को दीक्षित करने की विधि।

**बड़ावल**—पु० (शि०) भेड़-बकरी को रखने का स्थान।

**बडिंगा**—वि० टेढ़ा-मेढ़ा। हृष्ट-पुष्ट।

**बड़िकणा**—अ० क्रि० (सो०) बेकार घूमना; **उछल-कूद करना।**

**बड़ियाई**—स्त्री० बड़ाई, बड़प्पन।

**बड़ींगा**—पु० अड़चन।

**बड़ी**—स्त्री० उरद की पीठी में पेठा, मसाला आदि मिलाकर बनाई और सुखाई हुई पकौड़ी।

**बड़ीई**—स्त्री० (कु०) ताई।

**बड़ीईज**—स्त्री० (मं०) दे० बड़ीई।

**बड़ी पदाड़ी**—स्त्री० (कु०, मं०) Hamittonia snaveolens.

**बड़ी माता**—स्त्री० (शि०) चेचक रोग।

**बड़ुआं**—पु० बिनौला।

**बड़ुआंस**—स्त्री० (कां०) **वट** अमावास्या।

**बड़ू**—पु० वट वृक्ष के फल।

**बड़ूहनी**—स्त्री० (कां०) बाड़ बांधने की क्रिया।

**बड़ेई**—स्त्री० (सो०) बड़प्पन, प्रशंसा।

**बड़ेटु**—पु० (शि०) बढ़ई का पुत्र।

**बडेरना**—स० क्रि० **पाल-पोसकर बड़ा करना।**

**बडेरना**—स० क्रि० (ह०) आदर देना।

**बडेरा**—पु० (कां०) बड़ा व्यक्ति।

**बड़ेरा**—पु० (शि०) देवता का एक उत्सव।

**बडेळा**—पु० (सो०) गड़रिया।

**बडेवणा**—स० क्रि० (सो०) बड़ाई करना, प्रशंसा करना।

**बड़ेवा**—पु० (शि०) एक राक्षस जिसके सिर पर आग जलती है।

**बड़ेवा**—पु० (सो०) रात को चमकने वाले हड्डियों के अवशेष।
**बड़ेवें**—पु० (सो०) बिनौले।
**बड़ेहल**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) 'ब्यूहल' नामक वृक्ष की शाखाओं को पानी में सड़ाकर निकाला रेशा।
**बड़ैंदरा**—पु० (मं०) उरद की दाल की बड़ियां।
**बड़ैठन**—स्त्री० (मं०) 'मरेड़ो' का ऊपर वाला भाग।
**बड़ैठी**—स्त्री० (मं०) छत में पड़ने वाली पहली तथा सबसे मोटी लकड़ी।
**बड़ो**—पु० (मं०, शि०) उरद की पीठी की घी या तेल में तली हुई टिकिया।
**बड़ो**—वि० (शि०) बड़ा।
**बड़ोज**—पु० (कां०) चर्चा।
**बड़ोदरी**—स्त्री० (मं०) दूध वाली बूटी जिसे लगाने से पशुओं के पांव के कीड़े मर जाते हैं।
**बड़ोशा**—पु० (मं०) 'बड़ा' बनाने का लकड़ी का सांचा।
**बड्डा**—वि० बड़ा।
**बड्डा साढ़ा**—पु० (कु०, मं०) खूबानी।
**बड्डू**—पु० (सो०) भरत धातु का छोटा सा गोल पतीला।
**बड्डौ**—वि० (शि०) वृद्ध।
**बढ्ढ**—पु० आरंभ।
**बढ़काणा**—स० क्रि० (कु०) बहकाना।
**बढणा**—स० क्रि० काटना।
**बढ़ती**—स्त्री० (शि०) वृद्धि।
**बढ़ंगा**—वि० बेढंगा।
**बढ़ाणा**—स० क्रि० वृद्धि करना, बढ़ाना।
**बढ़ाथर**—पु० (कु०) बारीक पत्थर।
**बढार**—वि० (चं०) फसल काटने वाला।
**बढ़ार**—वि० (चं०) फसल काटने वाला।
**बढाल**—स्त्री० (सि०) भेड़ की खाल।
**बढालटू**—पु० (शि०) भेड़-बकरी चराने वाला लड़का।
**बढाला**—पु० (शि०, सि०) भेड़-बकरी चराने वाला व्यक्ति।
**बढ़ाव**—पु० (शि०) विस्तार।
**बढ़ावणो**—स० क्रि० दे० बढ़ाणा।
**बढ़ास**—स्त्री० प्यास। क्रोध।
**बढ़ासणा**—स० क्रि० (कु०) जलाना, बुरी तरह झुलसाना।
**बढ़ासिणा**—अ० क्रि० (कु०) जल जाना।
**बढ़िया**—वि० अच्छा, अच्छी किस्म का।
**बढ़ींगण**—स्त्री० (कु०) भेड़-बकरी की मेंगनी।
**बढ़ेला**—पु० (सि०) दे० दराट।
**बढ़ेला**—पु० (शि०) बढ़ई का पुत्र।
**बढ़ेसण**—वि० (सि०) वृद्ध।
**बण**—पु० वन।
**बणकणा**—अ० क्रि० (चं०) सुंदर बनना।
**बणका**—पु० चीता, बाघ।
**बणका**—पु० (मं०) कच्चा खाने योग्य जंगली कुकुरमुत्ता जाति का कंद।
**बणकाकड़ू**—पु० जंगली खीरा।
**बणकाणा**—स० क्रि० (चं०) सजाना।
**बणकुकड़**—पु० (चं०, सो०) जंगली मुर्गा।
**बणकेवणा**—स० क्रि० (सो०) धक्का देना; पत्थर आदि को तेज़ी से फेंकना।
**बणखोड़**—पु० (चं०) जंगली अखरोट।
**बणग्वाड़ी**—स्त्री० (मं०) एक प्रकार का कीड़ा।
**बणघी**—स्त्री० एक खट्टा-मीठा फल।
**बणज**—पु० (कां०, सो०, शि०) व्यापार, धन के लेन-देन का व्यापार।
**बणजारा**—पु० चलता-फिरता सौदागर, चूड़ी बेचने वाला।
**बणतंबाखू**—पु० (वि०) एक प्रकार का पौधा जिसके धुएं से दमे का दौरा शांत हो जाता है।
**बणत**—स्त्री० बनावट।
**बणतुलसी**—स्त्री० (मं०) एक तेज़ गंध वाली झाड़ी।
**बणना**—अ० क्रि० सुधरना; बनना।
**बणबकरा**—पु० (मं०) एक लंबा कंद। जंगली बकरा।
**बणबकरी**—स्त्री० (चं०) वन्य शाक।
**बणबमारी**—स्त्री० (मं०) शीतला।
**बणबीर**—पु० एक भूत जो सफेद पोशाक में ही मिलता है।
**बणमाणू**—वि० कुरुप; वनमानुष।
**बणमाणछ**—पु० (कु०, मं०) वनमानुष।
**बणयाठणा**—अ० क्रि० (मं०) गुस्से से मुड़ना।
**बणयाड़ो**—पु० (मं०) जंगली आलू जिसके पत्तों की सब्जी बनती है।
**बणशीरा/री**—पु० (कु०, शि०) एक राक्षस जो वन में रहता है और लंबी सीटी बजाता है।
**बणसगोथरे**—पु० (मं०) बैंगन प्रजाति की एक कांटेदार वन्य झाड़ी।
**बणसी**—पु० (शि०) शेर, बाघ।
**बणसीरा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) वन में रहने वाला भूत।
**बणसौका**—पु० (कु०) एक जंगली जानवर।
**बणहरू**—पु० (मं०) सफेद रंग तथा छोटे दाने वाली मक्की जिसे केवल खीलें बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।
**बणहल्दी**—स्त्री० (चं०) Curcuma aromatica. एक औषधि विशेष।
**बणा**—पु० एक पौधा जो दातुन व औषधियों में प्रयोग किया जाता है।
**बणाई**—स्त्री० बुनाई, डिज़ाइन; बुनने या बनाने हेतु दिया गया पारिश्रमिक।
**बणाई**—पु० (शि०) भालू।
**बणाउट**—स्त्री० (कु०) बनावट।
**बणाओटी**—वि० नकली, बनावटी।
**बणाइढा**—वि० बुनने वाला, बनाने वाला।
**बणाणा**—स० क्रि० बनाना।
**बणावट**—स्त्री० (सो०) बनावट।
**बणावटी**—स्त्री० (सो०) बनावटी।
**बणावणा**—स० क्रि० (सो०) बनाना।
**बणीज**—पु० (सि०) पशु संबंधी व्यापार।
**बणूआहड़**—स्त्री० (कु०) पट्टू, शाल बुनने की खड्डी।

**बणे**—पु० (सि०) छोटा जंगल।
**बणेट**—पु० (सि०) दे० बणे।
**बणेणि**—स्त्री० (सो०) वणिक की स्त्री।
**बणेब्राल**—पु० (चं०) बाघ।
**बणेरना**—स० क्रि० (कां०) बुनवाना; बनवाना।
**बणोइया**—पु० बहनोई, जीजा।
**बणोण**—स्त्री० (कां०) बुनने का पारिश्रमिक। निखार।
**बणोत**—स्त्री० बनावट, रूप।
**बण्हां**—पु० एक पौधा जो औषधि के काम आता है।
**बतनेड़ा**—पु० (सि०) बुरा काम।
**बतराःळना**—अ० क्रि० (बि०) असमंजस में पड़ना।
**बतरीढ़ा**—पु० (मं०) बत्तीस टांगों वाला कीड़ा जिसके काटने से बत्तीस बुखार आते हैं।
**बतरैकड़**—वि० डरपोक (पशु)।
**बतरैळ**—वि० आधा पागल, आधी पागल।
**बतल**—स्त्री० (सि०) बोतल, शीशी।
**बतलदाणे**—स्त्री० (शि०) कीप।
**बता**—पु० (चं०) धूप की अधिक गर्मी से होने वाला ज्वर।
**बताऊं**—पु० बैंगन।
**बताड़**—पु० (मं०) कोटर में रहने वाला एक देवता।
**बताड़**—वि० (बि०) नासमझ।
**बताड़ा**—पु० (सो०) 'मुजारे' के लिए प्रयुक्त संबोधन शब्द।
**बताणा**—स० क्रि० बिताना, व्यतीत करना। बताना।
**बताळ**—पु० बेताल।
**बताळी**—वि० बयालीस।
**बतावणा**—स० क्रि० (सो०) बताना; बिताना।
**बतावणो**—स० क्रि० (सि०) बताना।
**बतिए**—पु० (सि०) बैंगन।
**बतियां**—स्त्री० (बि०) अंडे।
**बतिस**—स्त्री० (मं०, शि०, सि०) एक जड़ी जो औषधि के काम आती है।
**बतीज्जे**—स्त्री० (सि०) भतीजी।
**बतीड़ा**—पु० दे० बतरीढ़ा।
**बतीरा**—पु० व्यवहार।
**बतुंगणा**—स० क्रि० किसी वस्तु को ढूंढ़ने के लिए अन्य वस्तुओं को उथल-पुथल करना।
**बतूनी**—वि० बातूनी।
**बतेरा**—वि० काफी, पर्याप्त।
**बतौरा**—वि० व्याकुल, पागल।
**बत्त**—स्त्री० बिजाई से पूर्व की नमी।
**बत्त**—स्त्री० रास्ता, मार्ग।
**बत्त**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) वर्षा ऋतु की पहली वर्षा।
**बत्त**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) अरबी के पत्तों में बेसन डालकर बनाया खाद्य।
**बत्तणा**—अ० क्रि० (कां०) भटकते फिरना, भटकना।
**बत्तर**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) बदतर, गिरा हुआ, बदचलन।
**बत्तर**—वि० (मं०) बेहत्तर।
**बत्तर**—स्त्री० (बि०) कृषि कार्य के लिए निर्धारित अवधि में होने वाली वर्षा।
**बत्तरी**—स्त्री० नमीयुक्त मिट्टी।
**बत्तरैहणा**—अ० क्रि० संकोच करना।
**बत्ता**—पु० पत्थर।
**बत्ता**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) गढ़ा हुआ चौकोर लकड़ी का टुकड़ा।
**बत्ती**—स्त्री० (कां०) बिजली, ज्योति, बाती।
**बत्ती**—वि० बत्तीस।
**बत्तू**—पु० पीसने के लिए प्रयुक्त गोल पत्थर।
**बत्तू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) छोटी लालटेन।
**बत्र**—स्त्री० (सि०) वर्षा।
**बत्रीणा**—अ० क्रि० (चं०) किसी वस्तु का ठीक करने या बनाने योग्य हो जाना।
**बत्रोढ़ा**—पु० (चं०) प्रातःकाल बोलने वाला पक्षी।
**बत्रैरणा**—अ० क्रि० मचलना।
**बत्रेहणा**—अ० क्रि० (ह०) डरना।
**बथक**—स्त्री० बतख़।
**बथरना**—अ० क्रि० (मं०) सूखकर बीज योग्य होना।
**बथारना**—स० क्रि० (कां०) ठीक ढंग से संचालित करना या उपयोग में लाना।
**बथिनळा**—पु० (सो०) बथुआ का लड्डू।
**बथेरा**—वि० पर्याप्त, काफी।
**बथोली**—स्त्री० (सि०) चौलाई की रोटी।
**बदंगी**—वि० (कां०, सो०) वैद्यकी, आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति।
**बद**—वि० दुष्ट, बुरा।
**बदका**—वि० (सो०) अधिक बढ़ाकार, आगे बढ़ा हुआ।
**बदकार**—वि० (शि०) बुरे काम करने वाला।
**बदके**—वि० (सि०) बहुत अधिक।
**बदख**—स्त्री० (मं०) बतख़।
**बदखोइ**—स्त्री० (कु०, मं०) अपमान, बेइज़्ज़ती।
**बदचलन**—वि० बदचलन।
**बदणा**—अ० क्रि० (कां०) न मानना, परवाह न करना, कहना न मानना।
**बदणा**—अ० क्रि० (सो०) बढ़ना।
**बदनामे**—स्त्री० (सि०) बदनामी।
**बदयाणा**—स० क्रि० (सो०) अधिक बढ़ाना।
**बदर**—पु० लांछन।
**बदरा**—पु० (शि०) मेघ।
**बदरा**—स्त्री० भद्रा।
**बदरूला**—पु० (कां०) धान के घास का छोटा गट्ठा।
**बदरूळा**—पु० (सो०) थोड़े बादल तथा धुंध का मौसम।
**बदरोल**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Persia gambli.
**बदलणा**—स० क्रि० बदलना।
**बदलणो**—स० क्रि० दे० बदलणा।
**बदलवाणा**—स० क्रि० (शि०) बदलवाना।
**बदला**—पु० बदला।
**बदळा**—वि० बादल वाला, मैला।
**बदलाणा**—स० क्रि० (शि०) बदलाना।

**बदलीणिना**—अ० क्रि० (कु०) पलटा मारना।
**बदलु**—पु० बादल का टुकड़ा।
**बदलु**—वि० बदले में भेजा गया।
**बदलू**—वि० (सो०) सहायक, एक के बाद दूसरा कार्यकर्ता।
**बदळौंका**—वि० (सो०) बादलों वाला दिन।
**बदलौणा**—स० क्रि० बदल देना।
**बदशाड़ा**—पु० (मं०) शरीर पर पड़े फफोले।
**बदाःइ**—स्त्री० (सो०) बधाई।
**बदाइ**—स्त्री० (सो०) विदाई।
**बदाइगी**—स्त्री० विदाई; विदाई के समय दिया जाने वाला उपहार।
**बदाए**—स्त्री० (शि०) दे० बदाःइ।
**बदाण**—पु० (कां०, चं०) लोहे का वजनी हथौड़ा।
**बदाणा**—पु० दे० बदाणाबुंदी।
**बदाणाबुंदी**—पु० (मं०) मूंग की दाल की पीठी द्वारा तैयार किया गया मीठा पकवान।
**बदाणी**—स्त्री० (मं०) विवाह किए बिना कन्या को ससुराल विदा करने का संस्कार।
**बदाबांदेए**—अ० (सो०) बलपूर्वक, अधिक मात्रा में।
**बदाबदी**—स्त्री० जबरदस्ती।
**बदाम**—पु० बादाम।
**बदामे**—वि० (सि०) बादामी।
**बदारे**—पु० (कां०) पीपल प्रजाति का एक वृक्ष।
**बदावणा**—स० क्रि० (सो०) बुझाना। बढ़ाना।
**बदावा**—पु० (सि०) बधाई।
**बदाह**—पु० (कु०, चं०, मं०) पानी वाले स्थान पर लगाया गया वृक्ष।
**बदि**—स्त्री० (शि०) बदला, पलटा।
**बदिया**—वि० (बि०, सो०) अच्छा, बढ़िया।
**बदी**—स्त्री० बुराई।
**बदूक**—पु० बंदूक।
**बदूरले**—पु० (कु०) जमघट, आदमियों की भीड़।
**बदेस**—पु० विदेश।
**बदैटै**—पु० (कु०) पशु के मुंह में लगाया जाने वाला छीका।
**बदोगी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) उपहार में दिया गया वस्त्र या वस्तु।
**बदोर**—स्त्री० (कु०) भंडार या मंदिर में लगी छत की लकड़ी।
**बद्द**—वि० (सो०) शरारती, बुरा।
**बद्दळ**—पु० बादल।
**बद्दलविस**—पु० चर्मरोग।
**बधंस**—पु० (कां०) विध्वंस, सर्वनाश।
**बध**—वि० अधिक, होशियार।
**बंध**—वि० (कु०) बढ़िया।
**बधक**—वि० (शि०) वध करने वाला।
**बधका**—वि० (कु०) फालतू।
**बधकी**—वि० (कु०, शि०) अनोखी।
**बधणा**—अ० क्रि० (कु०, सि०, ह०) बढ़ना, किसी से आगे होना।
**बधना**—स० क्रि० (शि०) वध करना।
**बधाइणा**—स० क्रि० (कु०) बढ़ाया जाना।
**बधाए**—स्त्री० (शि०) बधाई।
**बधाता**—पु० (कु०) विधाता।
**बधावा**—पु० बधाई का गीत।
**बधिया**—वि० उत्तम, सुंदर, बढ़िया।
**बधू**—वि० (कु०) ज़्यादा, फालतू।
**बधेरना**—स० क्रि० (ह०) ज्यादा करना, अधिक करना, बढ़ाना।
**बधैरी**—स्त्री० (कु०) खिड़की।
**बधोळ**—वि० (कां०) बंधा रहने वाला (पशु आदि)।
**बधौआ**—पु० विवाह में गाया जाने वाला गीत।
**बधौद**—स्त्री० (सि०) बढ़ोत्तरी, किसी की उन्नति होने का भाव।
**बनककड़ी**—स्त्री० Podophyllum emodis. दवा के काम आने वाला एक वृक्ष।
**बनकशा**—पु० बनफ्शा।
**बनखड़**—पु० जंगल का भाग।
**बनगोळू**—पु० (शि०, सो०) 'बान' वृक्ष के बीज।
**बनचर**—पु० (शि०) वन्य पशु।
**बनचालु**—पु० (सि०) Lonicera angustifolia.
**बनछोला**—पु० (कां०) Flemingia samiatala.
**बनतमाख**—पु० Solanum indicum. सेमल वृक्ष।
**बनपाल्टी**—स्त्री० Pyrus Lanata.
**बनबसूटी**—स्त्री० (कां०, ह०) Caryoptesis wallichiana.
**बनबास**—पु० (शि०) बनवास।
**बनमाणू**—पु० (शि०) दे० बणमाण्हू।
**बनरखा**—पु० (शि०) वनरक्षक।
**बनशीरा**—पु० (शि०) भूत, चुड़ैल।
**बनसका**—पु० दे० बनकशा।
**बनसफा**—पु० दे० बनकशा।
**बनाउटी**—वि० (कां०, चं०) बनावटी।
**बनाऊटी**—स्त्री० (शि०) झरोखा, रोशनदान।
**बनाड़**—पु० (मं०) मृणाल।
**बनाड़**—पु० (शि०) महासू परिवार का एक देवता।
**बनाड़—पु० ऐसा स्थान जहां पर 'बान' के वृक्ष अधिक मात्रा में हों।**
**बनाण**—स्त्री० (शि०, सि०) श्रृंगार।
**बनाण**—पु० बनाने की विधि।
**बनाणा**—स० क्रि० पकाना।
**बनार**—पु० (शि०, सो०) 'ब्यूहल' वृक्ष की हरी व सीधी छड़ियां।
**बनाश**—पु० (कु०, शि०, सो०) विनाश।
**बनासर**—पु० (ह०, सो०) वन में बने खेत।
**बनाहड़ा**—पु० (कु०, शि०) बुनने वाला व्यक्ति।
**बनिंजा**—वि० (कु०) उनींदा, नींद से भरा हुआ।
**बनियोण**—स्त्री० स्वैटर, बनियाइन।
**बनेक**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) अन्य।
**बनेडे**—अ० (ह०) ज़रा नीचे।
**बनेरा**—पु० (कां०, सो०) मकान के शिखर का किनारा, ऊपर का स्थान।

**बनैक**—पु० विवाह में 'झमाकड़ा' लोक नाट्य का एक पात्र।
**बनैन**—स्त्री० (कु०, शि०, सो०) स्वैटर, बनियाइन।
**बनैला**—वि० (शि०) जंगली।
**बनोल**—स्त्री० (सि०) मादा 'ककड़'।
**बनोला**—पु० (चं०) बिनौला।
**बनोलू**—पु० 'बान' वृक्ष के फल।
**बनौणी**—स्त्री० (कु०, मं०) 'बान' का जंगल।
**बन्ना**—पु० सीमा, हद।
**बन्ना**—पु० दूल्हा।
**बन्नी**—स्त्री० गोटा-किनारी।
**बन्नी**—स्त्री० सोने पर चढ़ाया जाने वाला सुनहरा रंग।
**बन्नी**—स्त्री० (सि०) दुलहन।
**बन्नी**—स्त्री० मुंडेर।
**बन्वास**—पु० (शि०) Myrsine africana.
**बन्ह**—पु० (कां०) बंधन; पानी रोकने की क्रिया। बीमारी का प्रसार रुकने का भाव। लकड़ी या घास का गट्ठर बांधने की रस्सी।
**बन्ह**—पु० (ह०) पशुओं के पेट में पड़ी गांठ।
**बन्ह**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) बाड़, कंटीली रोक इत्यादि को बांधने के लिए प्रयुक्त बांस की फट्टियां।
**बन्हणा**—स० क्रि० बांधना।
**बन्हणा**—स० क्रि० जादू से किसी को काम करने से रोकना।
**बन्हार**—पु० (कां०) जंगली कंद।
**बन्होणा**—स० क्रि० बांधा जाना।
**बन्होर**—पु० ततैया, बरैं, भिड़।
**बपार**—पु० (कु०, सो०) व्यापार।
**बपारी**—पु० (कु०, चं०, सो०) व्यापारी।
**बफणी**—स्त्री० (चं०) आंख की पुतली।
**बफादार**—वि० विश्वसनीय सेवक।
**बब**—पु० पिता।
**बबयाली**—स्त्री० वृथा बातें।
**बबरी**—स्त्री० (सो०) सिर के लंबे बाल।
**बबरू**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) तला हुआ खमीरयुक्त मीठा या नमकीन पकवान।
**बबरूबाहण**—पु० (कु०) देवता की 'हुलकी' के अवसर पर आकाशीय देव की छाया।
**बबूति**—स्त्री० (सो०) अभिमंत्रित भस्म, धूप की भस्म।
**बबेस**—स्त्री० (मं०) बुआ सास।
**बबोहरा—पु० (मं०) फूफा ससुर।**
**बभळ**—पु० (कु०) कष्ट।
**बभूत**—स्त्री० दे० बबूति।
**बभूते**—स्त्री० (शि०) दे० बबूति।
**बमाण**—पु० (कु०, चं०) बक्से के रूप की अरथी।
**बमाण**—पु० विमान।
**बमान**—पु० (सो०) दे० बमाण।
**बमार**—वि० बीमार।
**बमारे**—स्त्री० (शि०) बीमारी।
**बमावणा**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) पहनाना।
**बम्मी**—स्त्री० (सो०) बांबी, दीमक का घर।
**बयांग**—स्त्री० (कु०, शि०) ऊन की एक किस्म जो बहुत लंबी होती है।
**बयांग**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) उलझन।
**बयांगटो**—पु० (कु०, शि०) 'बयांग' ऊन वाला मेढ़ा।
**बयाई**—स्त्री० बिवाई।
**बयाए**—स्त्री० (शि०) बियाई।
**बयाड़ा**—पु० (कु०) सलाह।
**बयाघ**—स्त्री० (कु०) मुसीबत; भयंकर रोग।
**बयापणा**—अ० क्रि० (सो०) व्याप्त होना, फैलना।
**बयापणा**—अ० क्रि० (कु०) समझना।
**बयापणा**—स० क्रि० (बि०, सि०) किसी को जबरन फांसना।
**बयापुणा**—अ० क्रि० (सो०) फैला जाना।
**बयाळ**—स्त्री० (सो०) शाम।
**बयाळि**—वि० (सो०) बयालीस।
**बयाळे**—स्त्री० (शि०, सि०) सायंकाल; सायंकाल का भोजन।
**बयाळे**—अ० (सो०) शाम को।
**बयुयर**—पु० (सो०) पानी।
**बरंग**—वि० बेरंग।
**बरंज**—पु० (मं०) मांस की खिचड़ी।
**बरंज**—पु० (सो०) चाशनी में बनाया गया मीठा पकवान।
**बरंज**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) व्यंजन।
**बरंजी**—स्त्री० छोटी कील, मेख।
**बरंडा**—पु० (सो०) बरामदा।
**बरंडी**—स्त्री० (सि०) पत्थरों की दीवार।
**बरंडी—स्त्री० (सो०) बड़ा कोट। एक विलायती शराब।**
**बर**—पु० वर, दूल्हा।
**बर**—पु० (सि०) दान के लिए रखा आटा आदि।
**बरक**—पु० चांदी का पृष्ठ जिसे मिठाईयों पर लगाया जाता है।
**बरकणा**—अ० क्रि० सूखना।
**बरकत**—स्त्री० वृद्धि, लाभ। वस्तु आदि को मापते समय 'एक' के लिए प्रयुक्त शब्द।
**बरका**—पु० पन्ना।
**बरकाव**—पु० (सो०) पानी छिड़कने का व्यापार।
**बरकेवणा**—स० क्रि० (सो०) पानी छिड़कना।
**बरकै**—पु० (चं०) चोली के ऊपर लगाया गया चौड़े आकार का कपड़ा।
**बरकैन**—पु० (कां०) Measa indica.
**बरखा**—स्त्री० वर्षा।
**बरगत**—स्त्री० (मं०) दे० बरकत।
**बरगद**—पु० (सि०) Ficus bengalinsis. एक वृक्ष विशेष।
**बरगेड**—स्त्री० समूह।
**बरघूट**—पु० (कु०) भुरभुरा पत्थर।
**बरछा**—पु० भाला।
**बरछाहिणा**—अ० क्रि० (कु०) इच्छा न होना, वर्जित होना।
**बरजणा**—स० क्रि० रोकना; छोड़ देना, त्यागना, अलग रखना।
**बरशिट्टा**—पु० (सि०) Lantana comara.

**बरड़**—वि० (कां०, मं०) ऐसा व्यक्ति जिसका कोई ठौर-ठिकाना न हो।
**बरण**—पु० (चं०) चतुर्वीर्षिक से पूर्व का संस्कार।
**बरत**—पु० व्रत।
**बरतण**—पु० बर्तन। आचार-व्यवहार।
**बरतण**—स्त्री० (सो०) आपसी **व्यवहार। बर्ताव।**
**बरतण**—पु० (कु०, शि०, सि०) शादी या गमी के अवसर पर गांव या संबंधियों द्वारा दिया जाने वाला अन्न आदि का भाग।
**बरतणा**—अ० क्रि० (सो०) **मिलना-जुलना।** स० क्रि० प्रयोग या इस्तेमाल करना।
**बरतावणा**—स० क्रि० (सो०) आपसी सहयोग तथा कार्य कुशलता से काम को निपटाना, कार्य संपन्न करवाना।
**बरतन**—पु० व्यवहार।
**बरतपाहरना**—स० क्रि० व्रत की समाप्ति पर प्रसाद लगाना व स्वयं खाना।
**बरताणा**—स० क्रि० बांटना; निभाना।
**बरती**—वि० (सो०) व्रती, जिसने व्रत रखा हो।
**बरतेसर**—पु० पुरोहित।
**बरतेसरी**—स्त्री० पुरोहिताई, यजमानी।
**बरथुआ**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Hymenodictyun excelsum.
**बरदी**—स्त्री० (सो०) वरदी।
**बरदे**—पु० (शि०) ओवर कोट, वरदी।
**बरधाणा**—स० क्रि० भेज देना। जलार्पण करना।
**बरधूड़**—स्त्री० (कु०) जंगली जानवर को गुफा से बाहर निकालने हेतु धुआं देने की क्रिया।
**बरन**—पु० (बि०) शक्ल, आकृति, रूप।
**बरनाई**—स्त्री० (बि०) कांटे।
**बरनाऊ**—वि० (ऊ०, कां, ह०) बरसने वाला।
**बरनावी**—स्त्री० (बि०) मृत्यु का शंख।
**बरनाहा**—पु० (शि०) Feronia Limonia. कैथ।
**बरनाही**—स्त्री० (कां०) Limonia crenulata. बिल्व।
**बरनी**—स्त्री० सगाई का एक भेद जिसमें लड़की के पिता को सोने-चांदी के आभूषण दिए जाते हैं।
**बरपत**—पु० (सि०) बृहस्पति।
**बरफी**—स्त्री० बर्फी।
**बरम**—पु० (सो०) भ्रम, संदेह, शक।
**बरमा**—पु० लकड़ी में छिद्र करने का उपकरण।
**बरमावणा**—स० क्रि० (सो०) भ्रम में डालना।
**बरमोई**—स्त्री० (कु०, मं०) Thalictrum neurocarpum एक लता विशेष।
**बरमोट**—पु० (कु०) दे० बरमोई।
**बरया**—स्त्री० वचा नामक जड़ी।
**बरयाई**—स्त्री० (सो०) बुराई।
**बरयाटणा**—अ० क्रि० व्यर्थ में अकड़ना।
**बरयाळ**—पु० (सि०, सो०) बिल्ला।
**बरयाह**—स्त्री० सितंबर मास में जोती जाने वाली भूमि जिसमें प्रायः कुलथ या चने बोए जाते हैं।
**बरलयाणा**—स० क्रि० (सो०) बिखराना।
**बरलाज**—पु० गोवर्धन पूजा; लोकनाट्य का एक रूप।
**बरलाणा**—स० क्रि० (बि०) दे० बरलैओणा।
**बरलाप**—पु० (मं०) विलाप।
**बरली**—स्त्री० (कां०) लकड़ी का पतला शहतीर।
**बरलैओणा**—स० क्रि० (शि०) उखाड़ कर फसल को दूर-दूर करना।
**बरवाई**—स्त्री० (सो०) बुराई।
**बरश/शो**—पु० (कु०, शि०, सो०) वर्ष।
**बरशणा**—अ० क्रि० (सो०) बरसना।
**बरशणो—अ० क्रि० (शि०) दे० बरशणा।**
**बरशफल—पु० वर्षभर की कुंडली, वर्षफल।**
**बरशल्ल**—वि० (सो०) अत्यधिक ठंडा।
**बरशिणे**—पु० (सि०) वर्ष बाद मृतक कर्म में दिया जाने वाला ब्रह्म भोज।
**बरशे**—स्त्री० (शि०) बरसी, वार्षिक।
**बरशोत्री**—स्त्री० (शि०) वार्षिक श्राद्ध।
**बरशोहा**—स्त्री० (कु०) देवता द्वारा वर्ष में एक बार प्रायः **वैशाख** में बताया वर्ष भर का वृत्तांत।
**बरषह**—वि० (मं०) वार्षिक।
**बरसणा**—अ० क्रि० दे० बरशणा।
**बरसयांओ**—पु० (मं०) विश्राम।
**बरसाला**—पु० वर्षांत का समय; विवाहोपरांत पहली बार बरसात में वधू का मायके रहने का भाव।
**बरसीण**—स्त्री० एक प्रकार का घास, बरसीम।
**बरसेला**—पु० राजाओं के स्मारक चिह्न।
**बरसोआ**—पु० (मं०) **वैशाखी** का **त्योहार।**
**बरहं**—पु० वर्ष, साल।
**बरांडा**—पु० बरामदा।
**बरां:दी**—वि० (ऊ०, कां०) लड़ाका। कामुक।
**बरा**—पु० (शि०) वर।
**बराई**—स्त्री० (सो०) भरने का काम, भराई।
**बराई/बरिआई**—स्त्री० (कु०) शाखा।
**बराए**—स्त्री० (शि०) बुराई।
**बराएनाओ**—वि० नाममात्र।
**बराखड़ी**—स्त्री० (कु०, शि०) राखी।
**बराग**—पु० (सो०) बाघ, लकड़बग्घा।
**बरागर**—पु० (मं०) कान की झुमकेवाली बड़ी बाली।
**बराघ—पु० दे० बराग।**
**बराजणा**—अ० क्रि० बैठना, बिराजना।
**बराट**—पु० (कु०) युवा बकरा।
**बराटो**—पु० (सि०) वट वृक्ष।
**बराड़फुक्कब्याह**—पु० वैदिक रीति से हट कर विवाह का एक विशेष प्रकार जिसमें 'बराड़ी' में आग लगाकर उसकी परिक्रमा की जाती है।
**बराड़ी**—स्त्री० (बि०) बेर की झाड़ी।
**बरादड़**—वि० (सो०, कु०) बिरादर।
**बरादर**—पु० बिरादर।

**बराधी बीर**—पु० (कु०, मं०) एक देवता जो अधिकतर स्त्रियों की आराधना से सिद्ध होता है।
**बरान**—वि० (सो०) श्रम से परेशान।
**बरान**—स्त्री० (सि०) थकान।
**बरान**—वि० वीरान।
**बरानगी**—स्त्री० (सो०) परेशानी।
**बराबरे**—स्त्री० (शि०) समानता, मुकाबला, बराबरी।
**बराळ**—पु० (कु०, शि०) बिडाल, बिल्ला।
**बराळी**—स्त्री० (कु०) बिल्ली।
**बरासूई**—स्त्री० विवाह में वर की ओर से वधू को दिए जाने वाले वस्त्राभूषण आदि।
**बराह**—पु० (मं०, शि०, कां०) बरास का वृक्ष।
**बरिंज**—पु० (ह०) नमकीन पुलाव, व्यंजन।
**बरिकटणा**—अ० क्रि० ज़िद करना।
**बरिन**—पु० (मं०) Acorus calamus.
**बरींडी**—स्त्री० (मं०) लकड़ी का गट्ठा।
**बरी**—वि० निवृत्त, मुक्त।
**बरी**—स्त्री० वर पक्ष की ओर से वधू को दिए वस्त्र।
**बरीक**—वि० बारीक, पतला।
**बरीकी**—स्त्री० (सो०) बारीकी।
**बरीड़ी**—स्त्री० (कु०) एक जंगली छोटा वृक्ष जिस पर बड़े स्वादिष्ट फल लगते हैं।
**बरीणा**—पु० (कु०) लड़की के पिता को सगाई के समय दिया जाने वाला धन।
**बरीन**—पु० (चं०) Acarus calamus.
**बरीया**—स्त्री० (शि०) पकाए चावल में धान के दाने।
**बरीरी**—स्त्री० (बि०) संतरे, गलगल आदि के अंदर की रस से भरी छोटी पोटली।
**बरीरी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) संतरे आदि की फांक; आचार की डली।
**बरू**—पु० (कां०, चं०) एक प्रकार की विषैली घास।
**बरू**—पु० (शि०) खाद्य सामग्री।
**बरूणी**—स्त्री० (सि०) एक प्रकार की सब्जी।
**बरूद**—पु० (सो०) बारूद।
**बरूरना**—स० क्रि० बारीक पीसी हुई चीज़ को दूसरी वस्तुओं पर छिड़कना, डालना या बिखेरना।
**बरूरा**—पु० बारीक पीसी हुई चीज़ का छिड़काव।
**बरूह्री**—स्त्री० (कां०, ह०) चूल्हे की मुंह का भाग।
**बरेंगड़ा**—वि० (कु०) टेढ़ा।
**बरे**—पु० (सि०) मित्र।
**बरेड़ा**—पु० (बि०) गेहूं की घटिया किस्म।
**बरेयां**—स्त्री० एक पौधा विशेष जो औषधि बनाने के काम आता है।
**बरेळ**—पु० (शि०, सो०) बिल्ला।
**बरेळि**—पु० (सो०) बिल्ली।
**बरेस**—स्त्री० आयु।
**बरेस**—स्त्री० (कु०, शि०) यौवन।
**बरेसपत**—पु० वृहस्पति।
**बरेस्त**—पु० वीरवार।
**बरेस्सड़**—वि० समवयस्क।
**बरेहल**—वि० (कु०) प्रौढ़।
**बरैंडा**—पु० (कां०, सि०) बरामदा।
**बरैड़ी**—स्त्री० (शि०) भेड़-बकरी के गोबर की खाद।
**बरैडू**—पु० (मं०) बिल्ली का बच्चा।
**बरैढ़बड**—पु० बरसात की फसल की कटाई के बाद का खेत।
**बरैस्टी**—स्त्री० 'बसूटी' का पौधा।
**बरैहड़**—पु० (मं०) बेर।
**बरो**—पु० (सि०) देवता को चढ़ाई जाने वाली भेंट।
**बरो**—पु० (मं०) नाथ जाति या डंडु चार्ज को मृत व्यक्ति के निमित्त एक वर्ष तक दिया जाने वाला भोजन
**बरोगड़ा**—वि० (कु०) संकर नस्ल का।
**बरोजा**—पु० (सो०) चीड़ वृक्ष का गोंद।
**बरोड़ा**—पु० (कां०) Inachelaspermum Fragrans.
**बरोध**—पु० वैर-विरोध।
**बरोबर**—वि० समान, बराबर।
**बरोबाद**—पु० बर्बाद।
**बरोलना**—स० क्रि० (शि०, सि०) ऊन अलग-अलग करना।
**बरोळना**—स० क्रि० (सो०) वस्तुओं को हाथ से अलग-अलग करके देखना।
**बरोला**—पु० (सो०) मिट्टी का पात्र।
**बरोलू**—पु० (सो०) 'ब्यूहल' के फल।
**बरौणा**—स० क्रि० (सि०) बाल काटना।
**बरौणु**—पु० (चं०) दही बिलोने का पात्र।
**बरौत**—पु० (कु०) व्रत, उपवास।
**बर्चो**—पु० (मं०) हल और जुए को फंसाने वाली चमड़े की रस्सी।
**बर्तणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) प्रयोग में लाना; व्यवहार करना।
**बर्तोणा**—स० क्रि० (कु०) प्रयोग करना।
**बर्तो**—वि० (ह०) करमुक्त।
**बर्न**—पु० वरण।
**बर्षी**—स्त्री० वार्षिकी।
**बर्षीण**—स्त्री० (चं०) **अधिक वर्षा का क्रम।**
**बल**—पु० (कु०) गुण।
**बल**—पु० शिकन।
**बलकेरना**—स० क्रि० (सो०) उकसाना।
**बळकोड़णा**—अ० क्रि० (कु०) हड़बड़ाना।
**बलगिरी**—स्त्री० (मं०) बेलगिरी।
**बलटोही**—स्त्री० चावल पकाने का बड़ा देग, पानी रखने का बड़ा पात्र।
**बलड़ी**—स्त्री० (बि०) मैदान।
**बलड़ी**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) खेती योग्य उपजाऊ (क्षेत्र)।
**बलडोइत**—स्त्री० (शि०) **राजमाष।**
**बळणो**—अ० क्रि० (शि०) मुकाबला करना।
**बळद**—पु० बैल।
**बळना**—अ० क्रि० (सो०) जलना।
**बळफा**—पु० (कां०) एक प्रकार की फुंसी।

**बलम**—पु० प्रियतम, पति।
**बलम**—स्त्री० लोहे की नोक वाली लाठी।
**बळयाठी**—स्त्री० (कां०) 'ब्यूहल' या 'सनकोकड़ा' की छिलके रहित शाखा जो जलाने के काम आती है।
**बलयाठू**—पु० (बि०) दे० बळयाठी।
**बलवाणा**—स० क्रि० (बि०) मरणोपरांत संवेदना देना।
**बलांद**—वि० (सि०) बालिश्त, छोटा सा।
**बला**—पु० (मं०) खेतों के बीच घास के लिए रखा भूमि का टुकड़ा।
**बला**—स्त्री० मुसीबत।
**बला**—वि० (सो०) भला।
**बळा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) द्विपक्षीय छप्पर के बीच डाला मोटा शहतीर।
**बलाइत**—स्त्री० (कु०) विलायत, विदेश।
**बलाए**—स्त्री० (शि०) भलाई।
**बलाए**—अ० (सो०) अधिकता सूचक निपात।
**बळाओ**—पु० (बि०) तरीका।
**बलाओटे**—स्त्री० (शि०) वातायन, रोशनदान।
**बलाक**—पु० बड़ी नथ।
**बलाग**—स्त्री० (कु०) देर, देरी।
**बलाचंगा**—वि० (सो०) भली प्रकार समझाया हुआ; भला, स्वस्थ।
**बलाच**—पु० (सि०) Xylosma longifolia.
**बलाणा**—स० क्रि० आग जलाना।
**बलाय**—स्त्री० (सि०) बलात् गले पड़ने का भाव।
**बलाव**—पु० (चं०) बिल्ला।
**बळाव**—पु० (शि०, सो०) शारीरिक श्रम करने का ठीक अभ्यास।
**बलावट**—स्त्री० (सि०) निमंत्रण।
**बलावणा**—स्त्री० (सि०) भेड़ की ऊन काटने की कैंची विशेष।
**बळावणो**—स० क्रि० (शि०) प्रज्वलित करना।
**बलावा**—पु० (सो०) बुलवाने का व्यापार। मृत्यु का शाक प्रकट करने का कार्य।
**बलावा**—पु० बुलावा, निमंत्रण।
**बलाह**—पु० (कु०) पानी टपकने का स्थान।
**बलि**—स्त्री० बलि, बलिदान।
**बलींगड़ा**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) बिल्ली का बच्चा।
**बलींगड़ा**—वि० व्यसनी, बेढ़ंगा।
**बलींगणी**—स्त्री० बिस्तर आदि टांगने के लिए बांधी गई रस्सी या बांस।
**बली**—स्त्री० (कु०) सफेद दानेवाली राजमाष, रोंगी।
**बली**—स्त्री० घायल या मरे हुए पशु को उठाने का साधन।
**बलुंदर**—पु० (शि०) Sapium usigne.
**बलुआ**—पु० (सि०) उपद्रव, दंगा।
**बलूछी**—वि० (कां०) उपजाऊ (भूमि)।
**बलूदर**—पु० (चं०) दे० बलुंदर।
**बलेई**—स्त्री० छाछ में पके नमकीन चावल।
**बळेउच**—स्त्री० (कु०, सि०) लपेट।
**बळेटणा**—स० क्रि० (सो०) लपेटना।
**बलेटिणा**—अ० क्रि० (कु०) उलझना।
**बलेता**—वि० ऐसा व्यक्ति जिसे ठीक प्रकार से कार्य करना न आए।
**बलेता**—पु० हल के डंडे को खींचने का एक चर्म बंधन।
**बलेदा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) बैल इत्यादि।
**बलेदू**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) बैलों को हांकने वाला।
**बलेरना**—स० क्रि० पानी की कुल्या को विशेष स्थान की ओर सीधा मोड़ना।
**बलेरना**—स० क्रि० (कु०) किसी वस्तु को उबालते हुए असावधानी से नीचे गिराना।
**बलेरना**—स० क्रि० (कां०, बि०) दही को पतला करना, मथना।
**बलेरना**—स० क्रि० (सि०) डंडे में बांधकर लटकाना।
**बलेवण**—स्त्री० (सि०) तड़प।
**बलेवणा**—स० क्रि० (सो०) भुलवाना।
**बलैणा**—अ० क्रि० (कां०) भेड़ बकरियों का बोलना।
**बलैत**—स्त्री० विलायत, इंग्लैंड।
**बलैतीघुरो**—स्त्री० (शि०) एक कांटेदार झाड़ी।
**बलैदू**—पु० (सि०) दे० बलेदू।
**बळोइ**—स्त्री० (सि०, सो०) घी की तलछट से निकलने वाला पदार्थ।
**बलोउज**—पु० (शि०) जाकिट।
**बलोकरू**—पु० (कां०, चं०) बलि का बकरा।
**बळोटणा**—स० क्रि० (सो०) सामान आदि इकट्ठा करना।
**बलोण**—स्त्री० (कां०) विदा करते समय दिए जाने वाले पैसे।
**बलोघर**—पु० (मं०) दूधले रस वाला वृक्ष।
**बलोण**—स्त्री० (सि०) जल्दी आग पकड़ने वाली लकड़ी।
**बलौर**—पु० कंचा, बिल्लौर, कांच की गोली।
**बलौरा**—पु० (बि०) बड़ा कंचा।
**बल्छ**—पु० ज़ुल्म, अन्याय।
**बल्टी**—स्त्री० खड्ड, नाले व दरिया के किनारे वाली रेतीली उपजाऊ मिट्टी।
**बल्द**—पु० (कां०) बैल।
**बल्यांदड़ी**—स्त्री० (मं०) अरवी के डंठल से बनी बड़ियां।
**बल्ल**—पु० (सि०) भाला।
**बल्ल**—अ० (ऊ०, कां० बि०) सावधानी से।
**बल्लड़**—पु० हरी घास वाला मैदान।
**बल्लम**—पु० (शि०, सो०) भाला, लाठी के नीचे लगा नुकीला लोहा।
**बल्ला**—पु० नदी किनारे का क्षेत्र।
**बल्ला**—पु० (सो०) 'भल्ला'।
**बल्ली**—स्त्री० (ह०) फली।
**बल्ली**—स्त्री० (सो०) सीधी तथा लंबी लकड़ी जिसे छत में डाला जाता है।
**बल्ले**—अ० वाह।
**बल्ले**—अ० (कां०) ओर, तरफ।
**बल्ले-बल्ले**—अ० (चं०) धीरे-धीरे; वाह-वाह।
**बल्ही**—स्त्री० (मं०) मुर्दे को जलाते समय हिलाने-डुलाने

की लकड़ी।
**बल्हेरना**—स० क्रि० (कु०) भुलाना।
**बवाखळ**—स्त्री० (सो०) ऐसी भूमि जिसमें पानी न लगता हो।
**बवाड़**—पु० (मं०) उबाल।
**बवाणा**—पु० (सि०) सूखा स्थान, जिस जगह वर्षा न लगे।
**बवाणो**—स० क्रि० (सि०) सुखाना।
**बवाये**—स्त्री० (सि०) बिजाई। बिवाई।
**बवारा**—पु० (सि०) इकट्ठे मिलकर काम करने की क्रिया।
**बवाळ**—पु० (सि०) उबाल।
**बवाळ**—पु० (सो०) भाप, उफान।
**बशः**—**पु० (कु०) वैशाख।**
**बश**—पु० (कु०) वश।
**बश**—पु० (सि०) शक्ति, ताकत।
**बशकाल**—पु० (शि०) ग्रीष्म ऋतु।
**बशकाळ**—पु० (सो०) वर्षा-ऋतु।
**बशटणा**—अ० क्रि० (सि०) वर्षा का एक तरफ से लगना।
**बशटोरना**—स० क्रि० (सो०) धक्का देना, सींग मरना।
**बशटोरा**—पु० (सो०) धक्का; सींग का प्रहार।
**बशठोणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) रूठना, ऐंठना, अड़ना, हठ करना।
**बशर्म**—वि० लज्जा रहित, बेशर्म।
**बशळता**—वि० (सो०) सभी को तंग करने वाला, हठी।
**बशवान**—पु० (मं०) भोजन ग्रहण करने से पूर्व कौए को डाला गया भोजन।
**बशांव**—पु० (सो०) विश्राम।
**बशाः**—पु० (सो०) विश्वास, भरोसा।
**बशाइणा**—स० क्रि० (कु०) बिठाया जाना।
**बशाऊं**—पु० (कु०) दे० बशांव।
**बशाख**—पु० वैशाख मास।
**बशाटणा**—स० क्रि० (सि०) गप्प हांकना; पीटना, किसी वस्तु से प्रहार करना।
**बशाड़**—पु० (शि०, सि०, सो०) बांस का वृक्ष।
**बशाणा**—स० क्रि० (कु०) बिठाना।
**बशाब**—पु० (मं०) पेशाब, मूत्र।
**बशाय**—स्त्री० (सो०) वायु का दर्द।
**बशार**—पु० (कु०) पीसा हुआ नमक-मिर्च।
**बशार**—पु० (मं०) पीसी हलदी।
**बशावणो**—**स० क्रि० (सि०) वर्षा के लिए देवता से प्रार्थना करना।**
**बशाह**—पु० (कु०) विश्वास।
**बशाह**—पु० (कु०, शि०) **दे० बशाख।**
**बशाहरा**—पु० (मं०) एक देव।
**बशाही**—वि० (कु०) विश्वसनीय।
**बशिंदा**—पु० (सो०) रहने वाला, निवासी।
**बशींढणा**—अ० क्रि० (मं०) फिसलना।
**बशूंठी**—स्त्री० (सो०) निर्गुंडी (जड़ी विशेष)।
**बशैग**—पु० (मं०) विश्राम।
**बशों**—पु० (शि०, सि०) विश्राम।
**बशो**—पु० (सि०) वैशाख।
**बशोआ**—पु० (सो०) वैशाखी।
**बशोकड़**—वि० (मं०) मुंहफट।
**बशोटळा**—पु० (सो०) बांस का छोटा हुक्का, बांस का टुकड़ा।
**बशोतरी**—वि० (सि०) वार्षिक।
**बश्हघात**—पु० (मं०) विश्वासघात।
**बष्ठाग**—पु० (सि०) सगाई।
**बसंत**—पु० Reinwardtia trigyna.
**बसंतजड़ी**—स्त्री० (कां०) Leea aspera.
**बस**—पु० वश, केवल। बस (वाहन)। संतुष्टि।
**बस**—अ० (सो०) 'अब और नहीं' अर्थ का सूचक निपात।
**बसणा/णो**—अ० क्रि० रहना, निवास करना, टिकना।
**बसणू**—वि० (कु०, सो०) रहने वाले।
**बसन**—स्त्री० (शि०) बसने की क्रिया।
**बसबरा**—वि० (सो०) असंतोषी, जिसे सब्र न हो।
**बसळोल**—पु० (कां०) स्तनों में होने वाला एक रोग।
**बसवाए**—**स्त्री० (सो०) हलदी।**
**बसवाश**—पु० विश्वास।
**बसां**—पु० (चं०) विश्राम।
**बसांत**—स्त्री० (सि०) मास का अंतिम दिन।
**बसाख**—पु० (चं०) वैशाख मास।
**बसाखां**—पु० (सि०) देवमूर्तियों के वस्त्र।
**बसारणा**—अ० क्रि० (सि०) पसरना।
**बसारद**—वि० विशारद, अनुभवी, कुशल।
**बसारना**—स० क्रि० बिसारना, भुलाना।
**बसाह**—पु० विश्वास।
**बसाहणा**—**स०** क्रि० निश्चय करवाना, विश्वास दिलवाना।
**बसिंदा**—पु० निवासी, बाशिंदा।
**बसित्तर**—स्त्री० (चं०) खरीफ की फसल।
**बसिया**—वि० (कु०) बसने वाला।
**बसियुंटा**—पु० (सि०) वृक्ष की पतली शाखा।
**बसी**—स्त्री० (ह०) घर के आसपास की फुलवारी।
**बसीकू**—पु० काफी समय से बसा व्यक्ति।
**बसीत**—स्त्री० वसीयत।
**बसीला**—पु० आसरा, सहारा; व्यवसाय, रुसूख।
**बसुकरम**—पु० (मं०) वशीकरण।
**बसुधारा**—पु० (चं०, मं०, सो०) दीवार पर बने गोबर के तिकोन नमूने।
**बसूटी**—स्त्री० निर्गुंडी, इस पौधे की पत्तियों का प्रयोग दवाई के लिए किया जाता है।
**बसूला**—**पु० (शि०) बढ़ई का लकड़ी छीलने या गढ़ने का औज़ार।**
**बसेंत**—पु० (कु०) वसंत।
**बसेख**—पु० विवरण।
**बसेख**—पु० इधर-उधर की बातें।
**बसेखा**—**पु० संदेश।**
**बसेसड़**—वि० (ह०) समवयस्क।
**बसैं**—पु० (कां०) काले रंग का एक घास।

**बसोआ**—पु० वैशाखी का त्योहार।
**बसोला**—पु० लकड़ी छीलने का उपकरण, बसूला।
**बसोस**—पु० अफसोस, शोक, खेद।
**बसौं**—पु० (बि०) विश्राम।
**बसौं**—पु० (बि०, मं०) पशुओं में तेज़ सांस के चलने और पेट फूलने का रोग।
**बसौणा**—अ० क्रि० विश्राम करना।
**बस्तडु**—पु० (सो०) स्थायी निवास।
**बस्तर**—पु० (शि०) वस्त्र।
**बस्ता**—पु० (कु०) पुस्तकें रखने का थैला।
**बस्ताछ्णा**—अ० क्रि० (कु०) पछताना।
**बस्तार**—पु० विस्तार।
**बस्था**—स्त्री० अवस्था।
**बस्स**—पु० (सो०) सामर्थ्य, वश।
**बहंज**—पु० बांस।
**बहटू**—पु० (मं०) पति, प्रिय।
**बहण**—स्त्री० (शि०) बहिन।
**बहणा**—अ० क्रि० (शि०) बहना।
**बहमी**—वि० शक्की, संदेह करने वाला।
**बहराणा**—स० क्रि० (शि०) पशुओं को जंगल में खुला चरने की आदत डालना; छोटी लड़कियों को खेती का काम सिखाना।
**बहलणा**—अ० क्रि० (शि०) मनोरंजन होना।
**बहा**—पु० (सि०) चूल्हे का एक भाग।
**बहिदाणा**—पु० (मं०) सेब प्रजाति का परंतु गले में चुमने वाला फल।
**बहियां**—स्त्री० (शि०) बाजू, बांह।
**बहेड़ा**—पु० (सि०) Terminaia belerica. एक वृक्ष विशेष जिसका फल औषधि के काम आता है।
**बहेण**—स्त्री० (शि०) बहिन।
**बहैया**—पु० (शि०) दे० बशाख।
**बहणा**—पु० दे० बणां।
**बहरल**—पु० छत के मध्य डाली जाने वाली मोटी शहतीर।
**बहल**—स्त्री० (कां०) उपजाऊ भूमि।
**बां**—स्त्री० (कां०) बावली।
**बां**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) पानी इकट्ठा करने के लिए बनाई गोल टंकी।
**बां**—अ० गाय के बोलने की ध्वनि।
**बांई**—स्त्री० भुजा।
**बांउकरी**—स्त्री० (सि०) झाडू।
**बांउटी**—स्त्री० (सि०) बच्चों की भुजा, छोटी भुजा।
**बांउटो**—पु० (मं०) छप्पर का एक कोना।
**बांकए**—पु० (बि०) तैरने की एक क्रिया।
**बांकपणा**—पु० बांकपन।
**बांकरा**—वि० (शि०) ज़िद्दी।
**बांका**—वि० सुंदर।
**बां:ग**—स्त्री० (सो०) भांग।
**बांग**—स्त्री० मुर्गे की आवाज़।
**बांग**—स्त्री० (सो०) टेढ़ापन।
**बांगचडींगा**—वि० (सो०) टेढ़ा-मेढ़ा, असुंदर।
**बांगड़िना**—अ० क्रि० (कु०) उंगलियों का अकड़ जाना।
**बांगणी**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) टांग।
**बांगला**—पु० (कु०) बंगला।
**बांगला**—पु० (बि०) मेहमानों के लिए बनाया बड़ा कमरा।
**बांगलू**—पु० (शि०) बैठक, बैठने का कमरा।
**बांगा**—वि० (सो०, शि०) टेढ़ा-मेढ़ा, मुड़ा हुआ।
**बांगुड़ीटोपी**—स्त्री० (कु०) टोपी की एक प्रकार।
**बांगे/गो**—वि० (शि०) तिरछी।
**बांगोचढ़ींगो**—वि० (शि०) दे० बांगचडींगा।
**बांचणा**—स० क्रि० (कु०, शि०, सो०) पढ़ना, अर्थ निकालना।
**बांचणो**—स० क्रि० (शि०) गाय दान करना।
**बांच्छा**—पु० (मं०) सूती वस्त्र।
**बांजर**—वि० (कु०, शि०) बंजर।
**बांझ**—वि० जिसके बच्चा न होता हो।
**बांटा**—पु० (शि०, कु०) परस्पर भेंट की जाने वाली रोटी; भाग।
**बांठ**—पु० (मं०) एक जाति।
**बांठ**—पु० (कु०, शि०) नौकर, खाना पकाने वाले का सहायक।
**बांठड़ा**—पु० (मं०) लोक नाट्य का एक रूप, पहाड़ी लोक नाट्य।
**बांठण**—स्त्री० (कु०) काम करने वाली स्त्री, नौकरानी।
**बांठणो**—वि० (शि०, सि०) सुंदर।
**बां:ड**—स्त्री० (सो०) मसखरी।
**बांड**—पु० (चं०) बर्तन मांजने वाला नौकर।
**बांड**—स्त्री० (कु०, बि०, सो०) बांट।
**बांडणा/णो**—स० क्रि० (शि०, सो०) बांटना।
**बांडवा**—पु० (शि०) नस बदलने का रोग।
**बांडा**—पु० (कु०, सि०, शि०) भाग, हिस्सा।
**बांडा**—पु० (सि०) बैल की जोड़ी।
**बांडाबंडरा**—पु० (मं०) उत्सव व त्योहारों के अवसर पर स्वजनों को पकवान आदि पहुंचाने की क्रिया।
**बांडिणो**—अ० क्रि० (शि०) परिवार से अलग होना।
**बांडे**—स्त्री० (शि०) बांझ।
**बां:ढा**—पु० (कु०) छत के नीचे का मोटा शहतीर जिस पर अन्य कड़ियां टिकाई जाती हैं।
**बांढा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) निशान।
**बांढा**—वि० (कु०) बांझ, अकेला।
**बांढा**—वि० बिना फल का, फल रहित।
**बांण**—स्त्री० (शि०) ज़िद।
**बांत**—स्त्री० (सो०) प्रकार, जाति।
**बांतसबांता**—वि० (सो०) कई प्रकार का, विविधता पूर्ण।
**बांदणा**—स० क्रि० (सि०) बांधना।
**बांदर**—पु० (कु०, शि०) बंदर।
**बांदरो**—वि० (शि०) भूरे रंग का।
**बांदा**—वि० (सि०) बेवकूफ, मूर्ख।
**बांदा**—वि० (चं०) प्रकट, सामने।
**बांदा**—पु० (सि०) Lornathus spp. वंदाक।

बांदी—स्त्री० (सि०) धान लगाते समय मेड़ों पर इकट्ठी की गई मिट्टी।
बांदी—स्त्री० (सि०, सो०) धान की छोटी क्यारी।
बांदु—पु० (शि०) बंधुआ।
बांदे—पु० (सि०) झूमकर चलने की क्रिया।
बांदो—पु० (शि०) सगाई के अवसर पर दी गई राशि।
बांध—पु० (सो०) रस्सी।
बांध—स्त्री० किसी वस्तु को प्रतिदिन देने का भाव।
बांधा—वि० (कु०) गिरवी।
बांधा—वि० मनौती के रूप में देवता के निमित्त रखी (वस्तु आदि)।
बांधे—वि० (मं०) बच्चे को किसी देवता के अर्पण कर उसी की अमानत मानना।
बांबरू—पु० लंबे बाल।
बांबू—पु० (शि०) जंगली आड़ू।
बांमरे—पु० (कां०, कु०, मं०) Colebrookia appositifolia.
बांयडका—अ० (शि०, सो०) बाहर की ओर।
बांयदणा—स० क्रि० (सो०) अन्न आदि को भंडार से पहली बार बाहर निकालना।
बांये—स्त्री० (सि०) भुजा।
बांव—स्त्री० (सो०) बावली।
बांश—पु० (शि०, सि०) बांस।
बांशला—पु० (शि०) आग में फूंक मारने की नली।
बांशली—स्त्री० (शि०) बांसुरी।
बांशले—स्त्री० (शि०) दे० बांशली।
बांसलोचन—पु० वंशलोचन, बलवर्धक औषधि।
बांसा—पु० (चं०) दे० बांमरे।
बांह—स्त्री० (शि०) भुजा।
बांही—स्त्री० (कु०) भुजा।
बाः—पु० (सो०) वास्ता, संबंध।
बाःई—पु० (सो०) भाई।
बाःग—पु० चीता, बाघ।
बाःग—पु० (सो०) भाग्य।
बाःगणी—स्त्री० (शि०) बाघिन।
बाःण—पु० (शि०, सि०) देवता के उत्सव पर होने वाला देवी प्रकोप। समूह। वाहन।
बाःर—पु० (सो०) भार, वजन।
बाःर—अ० (शि०, सो०) बाहर।
बाःरका—वि० (सो०) बाहर वाला।
बाःरा—पु० (सो०) बोझ, पिसाई के लिए अन्न का भरा थैला।
बाःरी—वि० (सो०) भारी, बोझिल।
बाःलु—पु० (सो०) भालू।
बाइंडा—अ० (शि०, सि०) बाहर।
बाइठो—पु० (शि०) भूत या छाया लगने पर देवता के नाम आटा रखकर भूत के प्रकोप से बचाने के लिए की गई प्रार्थना।
बाइड़—पु० (कु०) दे० भाइड़।
बाइणा—अ० क्रि० (कु०) पागल होना।
बाइदा—पु० (कु०) वायदा।
बाइदो—पु० (शि०) दे० बाइदा।
बाइर—अ० (सि०) बाहर।
बाइली—स्त्री० (कु०) बसूला, बढ़ई का एक औज़ार जिससे वह लकड़ी काटता है।
बाइलू—पु० दे० बाइली।
बाई—स्त्री० भुजा। चारपाई, पालकी में लगी लंबी बारीक गोल छड़।
बाई—स्त्री० (कु०) पानी का चश्मा, बावली।
बाई—स्त्री० (मं०) माता।
बाई—वि० बासी।
बाई—पु० (सि०) दे० बाःई।
बाई—स्त्री० (चं०) पशु के शरीर में होने वाली सूजन।
बाई—वि० बाईस।
बाईपांधे—स्त्री० (कु०) मृत व्यक्ति के वंशज द्वारा किया जाने वाला क्रिया कर्म, संस्कार, जो घर में न करवा कर बावली के ऊपर किया जाता है।
बाईबाट—पु० (शि०) बेकार रास्ता।
बाईया—पु० (सो०) बड़ा भाई।
बाईश—वि० (शि०) बाईस।
बाउंड़ा—पु० (सि०) कलाई का दर्द।
बाउ—पु० (चं०) बाजू, भुजा।
बाउआं—वि० (कु०) बायां।
बाउज—स्त्री० (शि०) भाभी।
बाउटो—स्त्री० (कु०) अगल-बगल की छत।
बाउड़—स्त्री० (शि०) मिट्टी का फर्श।
बाउत—स्त्री० (कु०) धरन।
बाउरा—वि० (शि०) पागल।
बाउळा—वि० (कु०) भावुक, सीधा-सादा।
बाउलो—वि० (शि०) पागल।
बाऊ—पु० (शि०) बावली।
बाऊ—पु० (ऊ०, कां०, ह०) पुट्ठा।
बाऊ—पु० (सो०) छोटा लड़का।
बाऊड़ी—स्त्री० (सो०) बावली, पानी का चश्मा।
बाऊले—वि० (शि०) अधिक।
बाए—पु० (सि०) दे० बाःई।
बाए—स्त्री० वायु रोग।
बाए—स्त्री० (मं०) बावली।
बाऐ—स्त्री० (शि०) भुजा।
बाओं—पु० (सि०) भुजा।
बाओ—स्त्री० (कां०) वायु, हवा।
बाओ—पु० पिता।
बाओणा—वि० (शि०) बौना।
बाक—पु० (सि०) बाह्य चमड़ी के भीतर की चमड़ी।
बाक—पु० वचन, वाक्य।
बाकटा/टो—पु० (शि०, सि०) बकरा।
बाकटु—पु० (शि०) बकरी का बच्चा।
बाकटे—स्त्री० (सि०) गेहूं के आटे से तैयार विशेष प्रकार की

मीठी रोटी।
**बाकटे**—स्त्री० (शि०) बकरी।
**बाकड़ी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) आम को काटकर सुखाई गई फांक।
**बाकणा**—स० क्रि० मुंह खोलना।
**बाकणो**—स० क्रि० (सि०) जलाना।
**बाकफ**—वि० परिचित।
**बाकम**—वि० दे० बाकफ।
**बाकरा***—पु० (शि०, सि०) लड़का।
**बाकरा***—पु० (शि०) बकरी के बाल।
**बाकराथ**—पु० (शि०) बकरी के बाल।
**बाकरी/रे**—स्त्री० (कु०, सि०) बकरी।
**बाकरे**—स्त्री० (शि०, सि०) लड़की।
**बाकल**—पु० (सि०) पेड़ों की छाल।
**बाकला**—पु० (सि०) Anogeissus Latifolia. एक वृक्ष विशेष।
**बाकळा**—वि० (कु०) मोटा, मोटी तह वाला।
**बाकळा**—वि० (शि०) मोटा पत्थर, लक्कड़ आदि।
**बाकळो**—वि० (शि०) मोटा, मोटी तह वाला।
**बाका**—पु० (सि०) अफवाह।
**बाकिणा**—स० क्रि० (कु०) मुंह खोला जाना।
**बाकी**—वि० ऐसा व्यक्ति जिसके मुंह से निकली बात प्रायः सत्य हो।
**बाकी**—वि० (सो०) शेष।
**बाकोरी**—स्त्री० (सि०) बकरी।
**बाक्का**—पु० (कां०) उड़ती खबर।
**बाख**—स्त्री० (चं०) सर्दी में आग के पास लेटने का भाव।
**बाखड़/ड़ी**—वि० अधिक दूध देने के बाद थोड़ा दूध देने वाली गाय, ऐसी गाय या भैंस जिसे दूध देते हुए नौ से अधिक महीने हो गए हों।
**बाखड़ा**—वि० (मं०) बड़बोला।
**बाखणा**—अ० क्रि० (चं०) गाय, बैल का रंभाना।
**बाखरू**—पु० (चं०) Duetzia corymbosa.
**बाखी**—अ० (कु०) एक ओर।
**बाग**—पु० बाग, बगीचा; बड़ा खेत।
**बाग**—पु० (शि०) भाग्य।
**बागटी**—स्त्री० (शि०, सो०) खेत।
**बागटु**—पु० (शि०, सो०) छोटा खेत।
**बागड़ा**—पु० (सि०) बड़ा खेत।
**बागड़ा**—पु० (कु०, मं०) Plectranthus Caetsa.
**बागड़ी**—स्त्री० (मं०) शरीर के किसी भाग पर उमरा हुआ मांस जिसमें दर्द न हो।
**बागड़ी**—स्त्री० क्यारी।
**बागडू**—पु० बागीचा।
**बागड़े**—स्त्री० (सि०) खेत।
**बागणा**—अ० क्रि० भागना।
**बागनह**—पु० (शि०) बाघ का नाखून।
**बागर**—स्त्री० (कु०, सो०) वायु, हवा।
**बागर**—पु० (मं०) गठिया रोग।
**बागरकटोरी**—स्त्री० (मं०) उड़नखटोला।
**बागरुबाहण**—पु० (कु०) बबरूबाहण।
**बागरुब्याना**—पु० (कु०) आंधी-तूफान।
**बागरुना**—अ० क्रि० (सो०) हवा लगना।
**बागरे**—स्त्री० (शि०, सि०) गठिया रोग।
**बागरे**—पु० (मं०) बर्फीला क्षेत्र।
**बागली**—स्त्री० (मं०) माथे पर चोट आदि के कारण होने वाली सूजन।
**बागवत**—पु० (सो०) भागवत, महापुराण।
**बागवान**—वि० (सो०) भाग्यवान्।
**बागा**—पु० (सि०) पहरावा।
**बागा**—पु० (कु०) देवता के रथ में लगाया जाने वाला रंगीन सुंदर वस्त्र।
**बागी**—स्त्री० बागीचे की पैदावार।
**बागी**—वि० विद्रोही।
**बागी**—वि० (सो०) भागा हुआ, लापता।
**बागुणी**—स्त्री० (सि०) टांग।
**बागुर**—स्त्री० (शि०) वायु, हवा।
**बागे/गो**—अ० (कु०, मं०) बाहर।
**बागो**—पु० (मं०) खेत से पानी निकालने का मार्ग।
**बागो**—पु० (शि०) खेत का एक भाग; खेत से पानी निकालने के लिए बनाई गई नाली।
**बागौ**—पु० (कु०) बीज बोने के लिए लगाया गया चिह्न।
**बाग्गी**—वि० (कां०) लापता। बागी।
**बाघड़बिल्ला**—पु० (कां०) जंगली बिल्ला।
**बाघण/णी**—स्त्री० बाघिन।
**बाघंबर**—पु० (शि०) बाघ की खाल।
**बाच**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) फसल लगाने से पहले होने वाली वर्षा, नमी।
**बाच़**—स्त्री० (शि०) बात, आवाज़।
**बाच़**—स्त्री० (शि०) मुर्गे की बांग।
**बाचणा**—स० क्रि० पढ़ना, पढ़कर सुनाना।
**बाचा**—पु० वचन। प्रसन्नता में दो व्यक्तियों द्वारा एक दूसरे के हाथ पर बजाई गई ताली।
**बाच़ा**—पु० बहुत ऊंचाई पर उगने वाले एक पौधे के पत्ते की बारीक परत जिसे सुखाकर 'साज़' के द्वारा आग निकाली जाती है।
**बाचुणा**—अ० क्रि० (सो०) मुंह खुला रहना।
**बाचुणा**—अ० क्रि० (सो०) वर्षा के बाद खेत का फसल के बोने योग्य होना।
**बाच्च**—पु० (कु०) सूत का धागा।
**बाच्छड़**—स्त्री० तिरछी वर्षा, बौछार।
**बाच्छड़ा**—पु० (सि०) बछड़ा।
**बाच्छणा**—अ० क्रि० (मं०) बकरी का गर्भ धारण करना।
**बाच्छी**—स्त्री० (मं०, सो०) बछिया।
**बाच्छु**—पु० (सो०) बछड़ा।
**बाछ**—स्त्री० एक प्रकार का कर।

**बाछटि**—स्त्री० (सो०) बछिया।
**बाछदु**—पु० (सि०, सो०) बछड़ा।
**बाछड़ा**—पु० (सि०, शि०) बछड़ा।
**बाछड़े**—स्त्री० (सि०) बछिया।
**बाछण**—स्त्री० (कु०) बौछार।
**बाछा**—पु० बादशाह।
**बाछेस**—पु० (कु०) वस्त्र।
**बाज**—पु० (बि०) रेत।
**बाज**—पु० बाज़ पक्षी।
**बाज**—स्त्री० (सो०) पागलपन, सनक।
**बाजकी**—पु० (बि०, ह०) वाद्ययंत्र वादक।
**बाज़गिरी**—पु० (कु०, शि०) दे० बाजकी।
**बाजगो**—पु० (सि०) वाद्ययंत्र।
**बाजड़**—वि० पागल।
**बाजणा**—अ० क्रि० पागल होना।
**बाजणा**—अ० क्रि० (सो०, सि०) इन्कार करना।
**बाज़णा**—स० क्रि० (कु०) बजाना।
**बाजणो**—स० क्रि० (शि०) दे० बाज़णा।
**बाज़दार**—पु० दे० बाजकी।
**बाजदारी**—स्त्री० (कां०, चं०) वाद्ययंत्र बजाने का पारिश्रमिक।
**बाजन**—स्त्री० (शि०) बजाने की वस्तु।
**बाजरी**—स्त्री० (सि०) बजरी, पत्थर की रोड़ी; ओले।
**बाज़लो**—पु० (शि०) ऐसा वाद्ययंत्र जिससे अच्छी ध्वनि निकलती है।
**बाजा**—पु० हारमोनियम, वाद्ययंत्र।
**बाजा**—सर्व० (सो०) कोई।
**बाज़ा**—पु० (कु०) बाजा।
**बाजागाजा**—पु० धूमधाम।
**बाजिणा**—स० क्रि० (कु०) बजाया जाना।
**बाजिणो**—अ० क्रि० (शि०) पागल होना।
**बाजी**—अ० (ऊ०, बि०) बिना।
**बाजी**—स्त्री० मिठाई।
**बाजी**—स्त्री० ताश आदि की बाज़ी।
**बाजीगर**—पु० (शि०) जादूगर।
**बाजीथींदे**—वि० (मं०) बिना तेल का (पकवान)।
**बाजुणा**—अ० क्रि० (सो०) पागल होना।
**बाजुरा**—वि० (बि०) पागल।
**बाज़े**—स्त्री० (शि०, सि०) ताश की बाज़ी।
**बाज़े**—स्त्री० (सि०) शर्त।
**बाजे-बाजे**—अ० (कु०) कभी-कभी; आहिस्ता।
**बाज्जा**—वि० (सो०) दे० बाजड़।
**बाझ**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) खेत की हल चलाकर नर्म की हुई मिट्टी।
**बाझ**—पु० (कु०) चमड़ी के अंदर की झिल्ली।
**बाझड़**—वि० (बि०) दे० बाजड़।
**बाझणा**—स० क्रि० (सि०) बांधना।
**बाझा**—पु० (कु०) 'फाट' का सुखाया हुआ हरा घास।
**बाझी**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) बिना, बगैर।
**बाझी**—अ० (कु०) दे० बाझी।
**बाट**—स्त्री० रास्ता।
**बाट**—पु० अकड़, बल।
**बाट**—पु० रस्सी की ऐंठन।
**बाट**—पु० तोलने का बट्टा।
**बाट**—पु० तसला।
**बाट**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) विवाहित लड़की द्वारा मायके में मार्ग में गोबर लेपन उपरांत दूर्वा, पुष्प, धूप इत्यादि से मार्ग के पूजन का संस्कार।
**बाट**—पु० (शि०, सो०) ब्राह्मण, भाट।
**बाटण**—पु० (सि०, सो०) बटन।
**बाटण**—स्त्री० (सि०) गूंथने की वस्तु।
**बाटण**—स्त्री० (सि०) दाल-सब्जी।
**बाटणा**—स० क्रि० (कु०, सो०) ऐंठना, रस्सी में बाट देना।
**बाटणा**—पु० (सो०) उबटन।
**बाटणा**—स० क्रि० (सि०) कमाना।
**बाटणा**—स० क्रि० (सो०) आटा गूंथना।
**बाटणी**—स० क्रि० (मं०) गेहूं काटना।
**बाटणो**—स० क्रि० (सि०) घोलना।
**बाटणो**—स० क्रि० (शि०) गूंधना।
**बाटबटाऊ**—पु० (बि०) यात्री।
**बाटला**—वि० (शि०) अच्छी नस्ल का।
**बाटा**—पु० (कु०, सो०) बदला।
**बाटा**—पु० (सि०) तोलने का बट्टा।
**बाटिणा**—स० क्रि० (कु०) बटा जाना, ऐंठा जाना।
**बाटी**—स्त्री० परातनुमा छोटा पात्र।
**बाटी**—वि० (कु०) लगभग दो किलो का माप।
**बाटी**—स्त्री० (शि०) सामूहिक भोज।
**बाटी/टे**—स्त्री० (सि०, सो०) बाती।
**बाटू**—पु० परातनुमा बहुत छोटा पात्र।
**बाटे-चबाटे**—पु० (मं०) क्यारियों में से निकले रास्ते।
**बाटौ**—पु० (कु०) नमक पीसने का पत्थर।
**बाट्टी**—स्त्री० परात की तरह का बड़ा पात्र।
**बाठ**—वि० (सो०) बासठ।
**बाठणा**—अ० क्रि० (मं०) गाय आदि का रंभाना।
**बाठर**—वि० (कु०) बाद का।
**बाठि**—अ० (सो०) तरफ, दिशा, ओर।
**बाठी**—स्त्री० बाती, ज्योति।
**बाठीपाणा**—स० क्रि० (मं०) मृतक के ग्यारहवें दिन के बाद एक वर्ष तक मृत प्राणी के नाम से सायं प्रतिदिन ज्योति जलाना।
**बाठो**—वि० (मं०) भला।
**बाड**—स्त्री० (बि०, सो०) कटाई।
**बाड**—पु० (सि०) फसल काटने के बाद का खाली खेत।
**बाड़**—स्त्री० कांटों या झाड़ियों की बाड़।
**बाड़**—स्त्री० (शि०) बाढ़।
**बाड़छ**—स्त्री० (कां०, कु०, चं०) दो खेतों के मध्य की बाड़ जिसमें वृक्ष और झाड़ियां उगी रहती हैं।
**बाड़छ़**—पु० (कु०) मक्की आदि की मंड़ाई करते समय

खलियान के चारों ओर लगाई पट्ट, तिरपाल आदि की आड़।
**बाड़ण**—पु० (शि०) मकान के बरामदों में हवा-पानी को रोकने के लिए लगे फट्टे।
**बाडणा**—स० क्रि० (बि०, सो०) काटना।
**बाडणी**—स्त्री० (सि०) लकड़ी की बनाई दीवार।
**बाड़न**—पु० (कु०) 'तौंग' की सजावट।
**बाड़न**—स्त्री० (शि०) जंगला।
**बाड़ना**—स० क्रि० (सो०, बि०) प्रवेश करवाना।
**बाड़ना**—स० क्रि० (कु०) बाड़ लगाना, कांटे, बांस आदि का बाड़ लगाना।
**बाड़बंदस**—स्त्री० (मं०) बाग की हदबंदी जहां जंगले लगाए गए हों।
**बाडमिशि**—अ० (सो०) गलत ढंग से किया गया कार्य।
**बाडसुरो**—स्त्री० (मं०) नागफनी।
**बाड़ा**—पु० भेड़-बकरी रखने का स्थान।
**बाड़ा**—वि० (कु०) विभाजित किया हुआ।
**बाड़ा**—पु० वृक्ष विशेष।
**बाड़िया**—पु० (मं०) ऐसा मेढ़ा जो खूंटे पर ही पाला जाए।
**बाडी**—पु० (सि०, सो०) बढ़ई।
**बाड़ी**—स्त्री० (शि०) बांझ गाय।
**बाड़ी**—स्त्री० कांटेदार झाड़ी।
**बाड़ी**—स्त्री० (कु०) स्त्रियों के कान का आभूषण।
**बाड़ी**—स्त्री० घर के समीप सब्जी उगाने का स्थान।
**बाड़ी**—स्त्री० (कु०, शि०) गर्म पानी में आटा घोलकर बनाया गया पकवान जिसे घी के साथ खाया जाता है।
**बाड़ीधा**—पु० बाड़युक्त स्थान।
**बाडु**—पु० (सो०) कांसे का मोटी परत वाला पात्र जिसमें दाल सब्जी बनाई जाती है।
**बाडु**—वि० (सि०) ऐसा वृक्ष जिस पर फल न लगें।
**बाडुए**—पु० (सो०) बिनौले।
**बाडू**—पु० भेड़-बकरियों को बंद करने का कमरा।
**बाडू**—पु० (कु०) स्त्री के नाक का आभूषण।
**बाडूआंजाणा**—अ० क्रि० (मं०) नाखून से मांस छूटने से दर्द होना।
**बाड़ेरना**—स० क्रि० बाड़ लगाना।
**बाड़ो**—पु० (मं०) भेड़-बकरियां रखने का स्थान।
**बाड़ोई/ए**—पु० (सि०) बढ़ई।
**बाडोण**—स्त्री० (सि०) बैठक के बाहर लगाए गए तख्ते।
**बाढ**—स्त्री० (ह०) कटान!
**बाढी**—स्त्री० कटाई।
**बाण**—पु० 'ब्यूहल' आदि के रेशे से बनाई गई पतली रस्सी, चारपाई में लगाई जाने वाली रस्सी।
**बाण**—पु० (कु०) बाना।
**बाण**—पु० एक वृक्ष विशेष।
**बाण**—पु० तीर।
**बाण**—पु० (मं०) बसंत ऋतु में खिलने वाला कासनी रंग का पुष्प।
**बाणजा**—पु० (शि०, सि०) भानजा।
**बाणनो**—स० क्रि० (शि०, सि०) बनाना, पकाना।
**बाणमुठ**—स्त्री० (मं०) किसी शत्रु द्वारा तंत्र-मंत्र से ऐसा पदार्थ फेंका जाना जिससे दूसरे परिवार का अनिष्ट हो।
**बाणसु**—वि० वन्य।
**बाणसूछिड़ी**—स्त्री० (सि०) जलाने की पक्की लकड़ी।
**बाणा**—स० क्रि० हल चलाना।
**बाणा**—पु० वेशभूषा।
**बाणा**—पु० कपड़ा बुनने का बाना।
**बाणा**—स० क्रि० (सो०) मारना, पीटना।
**बाणा**—स० क्रि० (बि०, सो०) जोताई करना, बीजना।
**बाणिआ**—पु० (सो०) बनिया।
**बाणु**—वि० (शि०) छोटे कद का, बौना।
**बाणुएं**—वि० (सि०) बानवे।
**बाणू**—वि० (सि०) टेढ़ा।
**बाणे**—स्त्री० (सि०) वाणी।
**बाणोत**—स्त्री० बिजाई का समय!
**बात**—पु० शरीर की सूजन व दाग।
**बात**—पु० (शि०, सि०, सो०) पके हुए चावल, भात।
**बात**—स्त्री० (सो०) वार्ता।
**बात**—पु० वायुरोग।
**बातक**—स्त्री० (सो०) बतख।
**बातचीत**—स्त्री० बोल-चाल।
**बातड़िया**—वि० (सि०, सो०) बातूनी।
**बातर**—स्त्री० नमी।
**बातर**—स्त्री० (बि०, मं०) बरसात में निकलने वाली चींटियां।
**बातल**—स्त्री० वर्षा पर निर्भर खेत।
**बातल**—वि० (कां०, सि०) अपथ्य पदार्थ, ठंडी तासीर वाला पदार्थ।
**बाती**—स्त्री० (सो०) बत्ती।
**बाती**—स्त्री० पक्षी के छोटे-छोटे अंडे।
**बाती**—स्त्री० (चं०) एक वृक्ष विशेष।
**बातु**—पु० पिसाई करने का पत्थर।
**बातुनी**—वि० बातूनी।
**बातेश्री**—स्त्री० एक पक्षी विशेष जो वायु में उड़ता हुआ खड़ा होने का प्रयास करता दिखाई देता है।
**बातो**—स्त्री० (सि०) वार्तालाप।
**बात्तडू**—वि० (सि०) स्लेटी।
**बाथरा**—पु० (कु०) सूती वस्त्र।
**बाथल**—स्त्री० (कु०) असिंचित भूमि, जिस भूमि में पानी न लगता हो।
**बाथला**—वि० (शि०) पंगु, जिसके अंग काम न कर सकें।
**बाथली**—स्त्री० (शि०) बांसुरी।
**बाथी**—स्त्री० (कु०) बत्ती।
**बाथी**—स्त्री० (सो०) Chinopodium spp. चौलाई प्रजाति का पौधा।
**बाथू**—पु० चौलाई, एक पौधा जिसके पत्तों का साग बनाया जाता है।
**बाद**—पु० बहस।

बाद—पु० (कु०) साथ।
बादड़—पु० (मं०) अभ्रक।
बादण—स्त्री० (सि०) बाँधने की वस्तु या डोरी।
बादणा—अ० क्रि० (कां०, बि०, सो०) बहस करना, झगड़ना।
बादणो—स० क्रि० (सि०) बाँधना, मंत्र से बांधना।
बादर—वि० बहादुर।
बादरे—स्त्री० (सि०) बहादुरी।
बादळ—पु० बादल।
बादळा—वि० (कु०, सो०, शि०) बादलयुक्त।
बादळिना—अ० क्रि० (कु०) बादल छाना।
बादशा—पु० बादशाह।
बादशाए—स्त्री० (सि०) बादशाहत, राज्य।
बादा—पु० (सि०, सो०) लाभ, बढ़ोतरी।
बादा—वि० (शि०) समस्त।
बादिणा—अ० क्रि० (सि०) बच्चों का लड़ना।
बादिया—वि० (शि०) संपूर्ण।
बादी—वि० वायुयुक्त, पेट में पैदा होने वाली वायु या तत्संबंधी रोग।
बादी—स्त्री० (सो०) आबादी।
बादी—स्त्री० (कु०) नाजायज़ कब्जा।
बादु—वि० (सो०) अधिक, अतिरिक्त।
बादु—पु० (कु०) साथी।
बादे—वि० (शि०, सि०) सब।
बादे—स्त्री० (सि०) आबादी, जनसंख्या।
बादो—पु० (सो०) भाद्रपद।
बादोल—पु० (सि०) बादल।
बाद्दा—पु० अधिकता, वृद्धि, लाभ।
बाद्दू—वि० अधिक, फालतू।
बाद्रो—पु० (शि०) भाद्रपद।
बाध—पु० (सि०) बाँध।
बाधण—स्त्री० (कु०) मिट्टी का पात्र।
बान—स्त्री० (कु०) एक घास विशेष जो पशुओं के नीचे बिछाने के काम आती है।
बान—पु० एक वृक्ष विशेष, सैरेयक ।
बानड़ी—स्त्री० (बि०) रस्सी का गुच्छा।
बानड़ी—स्त्री० (मं०) बान प्रजाति का एक वृक्ष जिसके पत्ते पशु नहीं खाते।
बानण—स्त्री० (सि०) पानी निकास के लिए बना बांध।
बानण—पु० (सो०) बांधने का उपकरण।
बानणा—स० क्रि० (सो०) बांधना।
बानणो—स० क्रि० (शि०) तोड़ना।
बानणो—स० क्रि० (शि०) दे० बानणा।
बानरोळी—स्त्री० (चं०) बान का बीज।
बान्ना—पु० (सि०) दूल्हा।
बान्ना—पु० (सि०, सो०) सीमा, ग्राम या क्षेत्र की सीमा को अंकित करने वाला चिह्न।
बान्नी—स्त्री० (कु०) सफेद मिट्टी।
बानी—स्त्री० (सि०) दुलहन।
बान्हणा—स० क्रि० (कु०) बांधना।
बापजी—पु० (सो०) पिता जी, पिता के लिए प्रयुक्त सम्मान सूचक शब्द।
बापस—वि० वापस।
बापू—पु० पिता।
बाफ—स्त्री० (शि०) भाप।
बाफर—वि० अपरिचित।
बाफर—वि० फालतू।
बाफाकुच—पु० (कु०) चाचा।
बाब—पु० पिता।
बाबरी—स्त्री० (सि०, सो०) घुंघराले घने बाल; सिर के बढ़े हुए बाल।
बाबरू—पु० (मं०, शि०) तली हुई खमीरी रोटी।
बाबशील—वि० (सि०) ऐसा स्थान जहां सर्दी-गर्मी बराबर हो।
बाबा—पु० (कां०) दादा।
बाबा—पु० महात्मा।
बाबा—पु० (चं०) पिता।
बाबीमूणा—अ० क्रि० (चं०) शरीर का बिल्कुल सुन्न हो जाना।
बाबु—पु० (कु०) पिता।
बाबोई—स्त्री० (शि०) एक प्रकार का घास।
बाबोटी—स्त्री० स्थान।
बाब्बा—पु० साधु महात्मा।
बाभ—स्त्री० (कु०) इच्छा।
बाभरी—स्त्री० (कु०) एक पुष्प विशेष।
बाभी—स्त्री० (कु०) भाभी।
बाम—पु० (कु०) पहने हुए पट्टू के कंधे पर आए हिस्से।
बाम—पु० (सो०) स्वास्थ्यवर्धक लेप।
बामण—पु० ब्राह्मण।
बामणा—स० क्रि० (सि०) पहनना।
बामिणो—स० क्रि० (शि०) दे० बामणा।
बामी—पु० (मं०) बड़ा ढोल बजाने वाला।
बाम्टे—स्त्री० (शि०) जंगली आड़ू का वृक्ष।
बाम्मी—स्त्री० बामी।
बाम्हण—पु० (कु०) ब्राह्मण।
बायं—स्त्री० दे० बांव।
बायंडका—अ० (सो०) बाहर की ओर।
बाय—स्त्री० (सो०) वायु विकार।
बायजी—पु० (सो०) बड़ा भाई, भाई के लिए प्रयुक्त सम्मान सूचक संबोधन।
बायदा—पु० (सि०) भाई।
बायदू—पु० (सि०, सो०) शिशु, बच्चे।
बायण—स्त्री० (सि०) सुहागिनों का त्योहार।
बायर—अ० (सि०) बाहर।
बायला—पु० वसूला।
बायला—वि० वातकारक।
बायां—वि० (शि०) प्रतिकूल, विरुद्ध।
बाया—पु० (कु०) वात।

बायी—वि० (बि०) बासी।
बायु—स्त्री० वायु।
बार—पु० वार, दिन।
बार—स्त्री० (सो०) बारी।
बार—पु० शोक प्रकट करने के लिए नियत विशेष दिन।
बारखणूगूर—पु० (मं०) हरिजनों में देवता का गूर।
बारखी—स्त्री० (बि०) वार्षिक श्राद्ध।
बारग—स्त्री० (बि०) कोठी।
बारग—स्त्री० (सो०) रोक, मना।
बारगमास्त—पु० दैनिक भत्ते का काम।
बारगे—स्त्री० (शि०) भेड़ की पूंछ।
बारख—स्त्री० (ह०) बाड़।
बारण—स्त्री० (कु०) कोठी।
बाररुकाई—स्त्री० (सि०) ससुराल में दूल्हे की बहनों द्वारा दुलहन को द्वार पर रोकने की क्रिया।
बारला—वि० अनुसूचित जाति का।
बारश—स्त्री० (सो०) वर्षा।
बारश—स्त्री० (कु०) अधिकारी, हकदार।
बारस—स्त्री० अधिकारी, हकदार।
बारहां—पु० (सि०) मृत्यु का बारहवां दिन।
बारहामासी—वि० बारह मास रहने वाला।
बारहामाही—स्त्री० (मं०) ऐसा 'छींज' गीत जिसमें बारह महीनों के विरह भाव की अभिव्यक्ति होती है।
बारा—वि० बारह।
बारा—पु० (सो०) लकड़ी का गट्ठर।
बारा—पु० (शि०) किसी स्त्री के बच्चा जनने पर कुछ खाद्य पदार्थ खाने की रोक।
बारा—पु० दाँव।
बारा—पु० (सो०) सिंचाई करने की बारी।
बारादरी—स्त्री० (सि०) ऐसा कमरा जिसमें कई दरवाज़े हों।
बारामाह—पु० बारह महीने।
बाराशिंगा—पु० बारहसिंगा।
बारी—स्त्री० खिड़की।
बारी—स्त्री० (कां०) खाली समय।
बारी—स्त्री० अनेक व्यक्तियों में प्रत्येक को यथाक्रम मिलने वाला अवसर।
बारो—वि० बारह।
बार्हिया—पु० (चं०) रबी की फसल।
बाल—अ० (कां०, बि०) पास।
बाल—पु० सहारा।
बाल—पु० (सि०) गेहूं की बाली।
बाळ—पु० बाल।
बालअलना—पु० एक दारुण रोग।
बाळक—पु० (सो०) बालक, कम आयु का व्यक्ति।
बालग—वि० (कु०, सो०) वय: प्राप्त, बालिग, सयाना।
बालग्रैही—स्त्री० ग्रहों के कारण आने वाला कष्ट।
बालझुलाई—स्त्री० (सि०) वर को बहिन द्वारा आंचल से हवा देने की क्रिया।
बालटे—स्त्री० (सि०) बालटी।
बालड़ी—स्त्री० राजमाष की फलियां।
बालड्ड—पु० (सि०) हल को जुए के साथ बांधने की रस्सी।
बालण—पु० (चं०, बि०) घर में जलाने के प्रयोग में लाई जाने वाली लकड़ी।
बालणा—स० क्रि० (शि०) बाल गूंधना।
बालणा—स० क्रि० (चं०, बि०) जलाना।
बाळणा—स० क्रि० (शि०) जलाना।
बालणी पो—स्त्री०(सि०) स्त्री के बालों की चोटी।
बालतोड़—पु० बाल टूटने से होने वाला फोड़ा।
बाळधि—स्त्री० (सो०) प्रसूता स्त्री: बाल-बच्चों वाली स्त्री।
बाळदण—पु० (सो०) बच्चों के पालन-पोषण का उत्तरदायित्व
बाळदी—स्त्री० (सि०) बैल की खाल।
बाळना—स० क्रि० (सो०) जलाना।
बालम—पु० (सो०) बालम, पति।
बाळा—पु० कान में पहनने की बड़ी बाली।
बाल।भर—पु० (कु०) बालकों का कोट।
बालिमा—अ० क्रि० (कु०) पागल होना।
बालिस्त—वि० (शि०) हाथ भर, बालिश्त।
बाली—स्त्री० कर्णभूषण।
बाली—स्त्री० (कु०) राजमाष।
बाली—पु० (सि०) सहायक।
बालु—पु० नाक का आभूषण।
बालू—पु० (सो०) भालू।
बालू—पु० रेत।
बालूआ—वि० (शि०) पागल।
बलूणा—अ० क्रि० (कु०) पागल होना।
बाले—वि० शक्तिशाली।
बालै—अ० निकट, पास।
बालो—स्त्री० (सि०) वार्तालाप।
बालो—स्त्री० (मं०) एक विशेष लोक गीत।
बालोई—स्त्री० (सि०) आंवला।
बाल्द—पु० (बि०) बैल।
बाल्ला—पु० रेत।
बाल्ले—पु० (कां०) बांस जिसके सहारे चक्की की गति घटाई-बढ़ाई जाती है।
बाल्ह—स्त्री० (कु०) मैदानी इलाका।
बाल्हा—वि० (चं०) पर्याप्त, काफी।
बाल्हिया—वि० (कु०) मैदानी स्थान का।
बाव—पु० (सो०) पिता।
बाव—पु० (सि०) बावली।
बाव—पु० (सि०) विपद्, दु:ख।
बावज—स्त्री० (सो०) भाभी।
बावज—स्त्री० (मं०) पागलपन।
बावड़ी—स्त्री० (मं०) बीच की मंज़िल।
बावड़ी—स्त्री० (शि०) बावली।
बावणा—वि० (शि०) बौना।
बावणु—वि० (सो०) छोटे कद का, बौना।

**बावणो**—स० क्रि० (शि०) हल चलाना।
**बावबंदी**—स्त्री० (सि०) एक रोग जिसमें मल मूत्र आना बंद हो जाता है।
**बावरा**—वि० (शि०) बावला।
**बावळ**—स्त्री० (सो०) पागलपन, सनक।
**बावळा**—वि० (सो०) पागल, सनकी।
**बावळुना**—अ० क्रि० (सो०) पागल होना।
**बावले**—स्त्री० (शि०) पशु की पीछे वाली टांग।
**बावां**—वि० (शि०) बाईं ओर का, बायां।
**बाश**—स्त्री० (सि०) भाषा।
**बाशट**—वि० (शि०) बासठ।
**बाशटु**—पु० (शि०, सो०) छोटा बछड़ा।
**बाशटो**—पु० (शि०) बांसुरी।
**बाशणा**—अ० क्रि० पशु आदि का बोलना।
**बाशल**—पु० (सो०) Salix alba. वेतस, एक वृक्ष विशेष।
**बांशला**—पु० (शि०) धौंकनी।
**बासंद**—स्त्री० (ह०) ऐसी भूमि जहां धान की फसल उपज सके।
**बास**—पु० (सो०) आवास, निवास।
**बास**—स्त्री० गंध।
**बास**—पु० (शि०, सि०) बसूला, लकड़ी काटने का औज़ार।
**बासटी**—स्त्री० (मं०) एक झाड़ी विशेष।
**बासड़े**—पु० (सि०) होली के उपरांत शीतला देवी को प्रसन्न करने हेतु मनाए जाने वाले त्योहार।
**बासण**—पु० (सि०) पात्र।
**बासण**—स्त्री० (बि०, ह०) तंबाकू पीने का साधन।
**बासना**—स्त्री० (शि०) वासना।
**बासनि**—स्त्री० (सो०) नववधु का गृहप्रवेश।
**बासमंति**—स्त्री० (सो०) बासमती के चावल।
**बासला**—पु० धूप।
**बासला**—पु० (मं०) हींग।
**बासला**—पु० (सो०) साबुन।
**बासला**—वि० (बि०, सो०) दुर्गंध वाला; कड़वा।
**बासली**—स्त्री० प्याज़ की तरह का एक साग।
**बासली**—स्त्री० (शि०, सो०) Salix dephnoides. दे० बाशल।
**बासा**—पु० (सि०) एकाधिकार वाला क्षेत्र।
**बासा**—वि० रात का बचा हुआ (भोजन)।
**बासिया**—अ० (शि०) बाद में।
**बासियाआला**—पु० गृहदेव।
**बासी**—स्त्री० आबादी, जनसंख्या।
**बासी**—स्त्री० (ह०) वर्षाऋतु में पशुओं के नीचे डाला पत्तों का बिछौना।
**बासी**—स्त्री० (सो०) उबासी, जम्हाई।
**बास्त**—पु० (कु०) गर्मियों के दिन।
**बास्तरु**—पु० (कु०) देवता के निमित्त रखा बकरा।
**बास्तवारा**—पु० (मं०) माघ मास में नाथ जाति द्वारा गाया जाने वाला विशेष गीत।
**बास्ता**—पु० (कु०) वसंत ऋतु।
**बास्ता**—पु० (कु०) संबंध।
**बास्ता**—पु० (सो०) एक फसल को बोने के लिए छोड़ा गया खेत।
**बास्ती**—स्त्री० (कु०) जल्दी बीजी हुई फसल।
**बास्तु**—पु० (सो०) मकान की नींव का पत्थर।
**बास्त्रु**—पु० (कु०) दे० बास्तु।
**बास्सन**—स्त्री० ऐसी भूमि जिसमें बोआई न की गई हो।
**बास्सा**—पु० निवास।
**बास्सी**—स्त्री० ऐसा स्थान जहां पहले कभी आबादी रही हो।
**बास्सी**—वि० देर का पका हुआ, दूसरे जून या रात का बचा हुआ (भोजन)।
**बास्सी**—वि० बयासी।
**बाह**—स्त्री० पानी को दो भागों में बांटने की क्रिया।
**बाह**—पु० (कु०) संबंध।
**बाहछ**—पु० (कु०) सूत।
**बाहज**—पु० जोती हुई भूमि का कुछ भाग।
**बाहट**—वि० बासठ।
**बाहड़**—स्त्री० कटाई।
**बाहडु**—पु० (मं०) आरंभ।
**बाहण**—पु० (कां०) बोआई का कार्य।
**बाहण**—पु० (मं०) परिमाण, खेतों का समूह।
**बाहण**—स्त्री० बंदरों की टोली।
**बाहण**—स्त्री० (सि०) फसल से भरी खेती।
**बाहणा**—स० क्रि० (कु०) हल चलाना, बीज बोना।
**बाहणा**—स० क्रि० (कां०, कु०) डराना; मारना।
**बाहणी**—पु० (कु०) हल चलाने वाला।
**बाहणो**—स० क्रि० (शि०) वादा करना।
**बाहणो**—अ० क्रि० (शि०) भेड़-बकरी का मिमियाना।
**बाहबाही**—स्त्री० प्रशंसा।
**बाहरना**—पु० (मं०) बीमार व्यक्ति की आत्मा का भ्रमण जिसे अन्य व्यक्ति देख सकता है जबकि बीमार व्यक्ति अपनी शय्या पर पड़ा रहता है।
**बाहरिया**—पु० (चं०) रबी की फसल।
**बाहल**—स्त्री० (ह०) लंबी-चौड़ी घास वाली भूमि।
**बाहलन**—स्त्री० (मं०) पागलपन।
**बाहिड़ी**—स्त्री० (कु०) धर्म बहन।
**बाहिला**—पु० बसूला।
**बाहिली**—स्त्री० बसूला।
**बाही**—स्त्री० (मं०) संक्रांति से अगला दिन।
**बाही**—वि० रात का बचा हुआ।
**बाही**—स्त्री० चारपाई में लगने वाली लंबी लकड़ी।
**बाहीवाही**—स्त्री० (मं०) सहभोज के दूसरे दिन का भोज।
**बाहीसणा**—अ० क्रि० (सो०) बहस करना।
**बाहु**—वि० जो बैल हल चलाने का कार्य करे।
**बाहुची**—स्त्री० (कु०) कमीज़ आदि की बाज़ू।
**बाहुड़**—स्त्री० (कु०) मिट्टी का फर्श।
**बाहुड़ी**—स्त्री० कटाई।

**बाहुला**—पु० (मं०) भुजा का एक रोग।
**बाहू**—पु० (कु०) भुजा।
**बाहू**—पु० (कां०) कटे हुए बकरे का टांगों वाला भाग।
**बाहोपो:म्मी**—स्त्री० पत्नी, प्रेमिका।
**बाहोला**—स्त्री० (मं०) सती बहुला; भाद्रपद के कृष्णपक्ष की चतुर्थी जिस दिन गाय की पूजा की जाती है और महिलाएं सती बहुला की याद में व्रत रखती हैं।
**बाह्क**—वि० (कां०) ढुलाई करने वाला या हल खींचने वाला पशु।
**बाह्टी**—स्त्री० (ह०) दाल-सब्जी रखने का पात्र।
**बाह्ड़**—पु० (बि०) वृक्षों के काटने का विशेष समय।
**बाह्ड़ा**—वि० (कां०) बासी भोजन।
**बाह्मणु**—पु० (कु०) लामण (गीत)।
**बाह्र**—अ० (कां०) बाहर।
**बाह्रला**—वि० (कां०) बाहरी।
**बिंउसली**—स्त्री० (मं०) वंशी।
**बिंऊजा**—वि० (शि०) चौकन्ना, सावधान।
**बिंग**—पु० टेढ़ापन।
**बिंगा**—वि० टेढ़ा।
**बिंचा**—पु० (सो०) दे० बिंची।
**बिंची**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) मेहंदी की तरह रंग देने वाला पौधा जो पत्थर पर उगता है।
**बिंचू**—पु० (शि०) सिटकिनी।
**बिंजण**—पु० (मं०) व्यंजन।
**बिंडण**—स्त्री० किनारा।
**बिंडळ**—पु० छज्जा।
**बिंडा**—पु० (सि०) Chenopodiam oppositifolia. एक साग विशेष।
**बिंडा**—पु० (शि०, सो०) घास का गट्ठर।
**बिंडा**—पु० कुल्हाड़ी आदि में लगा लकड़ी का हत्था।
**बिंडालकड़ी**—स्त्री० (सि०) दे० बिड्डा।
**बिंडी**—स्त्री० आंगन की आगे की दीवार।
**बिंडो**—पु० (सि०) घास का गट्ठर।
**बिंद**—वि० थोड़ा।
**बिंदलू**—पु० माथे की बिंदिया; गाय आदि के माथे पर सफेद या काले बालों से बना टीका।
**बिंदा**—पु० (शि०) दे० बिंदलू।
**बिंदी**—स्त्री० बिंदिया, टीका।
**बिंदू**—पु० शून्य, छोटी बिंदी।
**बिंध**—पु० (कां०, बि०) कमरे को दो भागों में बांटने वाली दीवार।
**बिंब**—पु० (बि०) गुब्बारा।
**बिंबी**—स्त्री० (कां०) एक प्रकार का घास।
**बिंवत**—स्त्री० (सो०) युक्ति, तरीका।
**बिंवतणा**—स० क्रि० (सो०) कोशिश करना, युक्ति लड़ाना, उपाय सोचना।
**बिंवद**—पु० (सो०) भीतर का कमरा।
**बिंवस**—पु० (सो०) एक वृक्ष जो पानी के पास होता है।
**बि:जणा**—अ० क्रि० (सो०) भीगना।
**बि:ड़ना**—अ० क्रि० (सो०) पशुओं का भिड़ना।
**बि:णकणा**—अ० क्रि० (सो०) मक्खियों का भिनभिनाना।
**बि**—अ० (सो०) भी।
**बिअवल्ला**—पु० (सि०) कंधा।
**बिआ**—वि० (सि०) शक्तिशाली।
**बिआड़**—पु० कुएं पर रखी हुई मोटी लकड़ी जिस पर पांव रखकर पानी भरा जाता है।
**बिउंता**—वि० (कु०) बिना नशे का।
**बिउन**—स्त्री० (कु०) भेड़-बकरियों का गोबर।
**बिऊंशरी**—स्त्री० (कु०) बांसुरी।
**बिऊजणा**—अ० क्रि० (मं०, शि०, सि०) उठना।
**बिऊत**—पु० (सि०) बालिश्त।
**बिऊस**—पु० (बि०) बांस।
**बिओ**—वि० (सि०) अच्छा।
**बिकणा/णो**—अ० क्रि० बिकना।
**बिकर**—पु० (कु०) मतलब, संबंध।
**बिकरब्याड़ा**—पु० (कु०) पूछताछ।
**बिकरी/रे**—स्त्री० बिक्री।
**बिकाऊ**—वि० बेची जाने वाली वस्तु।
**बिकाओ**—वि० (सि०) बरबाद, नष्ट।
**बिकाणा**—स० क्रि० बिकाना।
**बिक्कर**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) मेंड़, खेत का बाहरी भाग।
**बिक्ख**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) कदम।
**बिख**—स्त्री० (शि०) भीख, भिक्षा।
**बिखड़ा**—वि० (चं०, मं०) तंग तथा कठिन मार्ग।
**बिखड़ा**—वि० (कु०) गलत शब्द।
**बिखड़ु**—पु० (कां०) दवात का ढक्कन।
**बिखमजर**—पु० (मं०) विषम ज्वर।
**बिखरणो**—अ० क्रि० (शि०) बिखरना।
**बिखरना**—अ० क्रि० फैलना।
**बिखला**—वि० (चं०, सि०) विषैला।
**बिखला**—वि० (सि०) चिड़चिड़ा, तीखा व तेज बोलने वाला।
**बिखा**—अ० (सि०) साथ-साथ।
**बिखुड़ा**—वि० (ह०) कठिन।
**बिगड़णा**—अ० क्रि० खराब हो जाना।
**बिगड़ैल**—वि० बिगड़ा हुआ।
**बिगणा**—अ० क्रि० (सि०) भीगना।
**बिगल**—पु० बिगुल।
**बिगसणा**—अ० क्रि० (कां०) खिलना।
**बिगाना**—वि० (शि०, सि०) पराया, दूसरे का।
**बिग्गड़ना**—अ० क्रि० (बि०) बिगड़ना।
**बिच**—अ० बीच, मध्य।
**बिचकणा**—अ० क्रि० (कु०) नस का अचानक खिंच जाना।
**बिचणणा**—अ० क्रि० (शि०) दौड़ना, भय से चौंकना।
**बिचळणा**—अ० क्रि० (कु०) दे० बिचकणा।
**बिचलना**—अ० क्रि० (कु०, सो०) विचलित होना।

**बिचलना**—अ० क्रि० (चं०) मशीन का खराब हो जाना।
**बिचला**—वि० मध्य का।
**बिचान**—अ० (कु०) बीच में।
**बिचारणा**—स० क्रि० (शि०) विचारना।
**बिचिण**—स्त्री० (सि०) मादा बिच्छू।
**बिचियां**—स्त्री० उंगलियों के बीच का स्थान।
**बिचु**—पु० (कु०) बिच्छू।
**बिच्ची**—स्त्री० (सि०) दे० बिंची।
**बिच्चुए**—पु० पैर की अंगुलियों का आभूषण।
**बिच्चू**—पु० (बि०, शि०, सि०) बिच्छू।
**बिच्चे**—अ० (सो०) बीच में।
**बिच्चौदा**—अ० (सि०) दे० बिच्चे।
**बिच्छड़ना**—अ० क्रि० अलग होना, बिछुड़ना।
**बिच्छड़िना**—अ० क्रि० (कु०) बिछुड़ जाना।
**बिच्छा**—वि० (मं०) तीक्ष्ण।
**बिच्छुबूटी**—स्त्री० Gerardiana helerophflea. एक पौधा विशेष जिसके पत्तों पर छोटे-छोटे बाल होते हैं जिनके किसी अंग पर लगने से जलन पैदा होती है।
**बिच्छू**—पु० (सो०) बिच्छू।
**बिछड़ना**—अ० क्रि० बिछुड़ना।
**बिछणा**—अ० क्रि० (शि०) बिछाया जाना।
**बिछयाण**—पु० (सि०) मोटा घास।
**बिछांदरा**—पु० (सि०) बिस्तर।
**बिछा**—स्त्री० (सो०) भिक्षा।
**बिछाणा**—स० क्रि० (शि०) बिछाना, फैलाना।
**बिछेया**—स्त्री० (सि०) भिक्षा।
**बिछोई**—वि० (शि०) भागने वाली (गाय)।
**बिछोणा**—पु० (सि०) बिछौना।
**बिजकणा**—अ० क्रि० चौंकना, डरना।
**बिजट**—पु० (सि०) बिजली से पैदा हुआ देवता।
**बिजटा**—वि० (शि०) स्वस्थ।
**बिजड़**—स्त्री० बिजली।
**बिजड़ना**—अ० क्रि० (शि०, सो०) नींद खुलना।
**बिजड़ना**—अ० क्रि० (कु०) डरकर भागना।
**बिजड़े**—स्त्री० (मं०) दे० बिजड़।
**बिजणा**—अ० क्रि० कांपना। बलि के बकरे को देवता द्वारा स्वीकार किया जाना।
**बिजणा**—अ० क्रि० मस्ती में आकर उछलना।
**बिजणा**—अ० क्रि० (सो०) अन्न को घुन लगना।
**बिजणा**—अ० क्रि० (सि०) नींद से जागना।
**बिजणा**—अ० क्रि० (शि०) मौसम का साफ होना।
**बिजणा**—स० क्रि० बोवाई करना।
**बिज़णा**—अ० क्रि० (सो०) बुझना।
**बिजबजाट**—स्त्री० निश्चय से न बैठने का भाव।
**बिजया**—स्त्री० (मं०) भांग, एक ऐसा पौधा जिसकी पत्तियों को खाने से नशा चढ़ जाता है।
**बिज़रना**—अ० क्रि० (कु०) नशा दूर होना।
**बिजले**—स्त्री० (शि० सि०) विद्युत, बिजली।
**बिज़ाठो**—पु० (शि०) कस्तूरी मृग।
**बिजोरा**—वि० (शि०) निर्बल, बलहीन।
**बिज्ज**—स्त्री० (बि०) दामिनी, आकाश की बिजली।
**बिज्जणा**—अ० क्रि० (बि०) बिंधना।
**बिज्जू**—पु० (सो०) स्थानीय देवता, शिव का एक रूप बैजनाथ।
**बिज्प**—स्त्री० दे० बिज्ज।
**बिझड़णा**—अ० क्रि० (चं०) भय से कांपना।
**बिझणा**—अ० क्रि० (कु०) पशु द्वारा शरीर का हिलाया जाना।
**बिझिणा**—अ० क्रि० (कु०) आकाश का निर्मल होना।
**बिझुकना**—अ० क्रि० (शि०) भयभीत होना।
**बिटक**—स्त्री० (सि०) गलती।
**बिटणा**—अ० क्रि० (कां०) गीली लकड़ी का सूखने पर टेढ़ा होना।
**बिटणा**—अ० क्रि० (कु०) विष्ठा करना।
**बिट्टी**—स्त्री० (कां०, ह०) कन्या।
**बिट्ठ**—स्त्री० विष्ठा।
**बिठणो**—अ० क्रि० (सि०) बैठना।
**बिठर**—पु० (चं०) Tuniperous Communis. एक जंगली जड़ी जिसे जलाने से सुगंध आती है।
**बिठरना**—अ० क्रि० (बि०) पक्षी का विष्ठा करना।
**बिड़क**—स्त्री० अदरूनी लड़ाई।
**बिड़गू**—पु० (मं०) बरामदे का जंगला।
**बिड़णो**—स० क्रि० (सि०) बांधना।
**बिड़ना**—अ० क्रि० (शि०) मिलना।
**बिड़ा**—पु० (बि०) अड़चन।
**बिड़िनो**—अ० क्रि० (शि०) भिड़ना।
**बिड़ी**—अ० (कां०) संबोधनवाचक शब्द।
**बिडुआ**—पु० बोतल, दवात का ढक्कन।
**बिड्डू**—पु० (बि०) बोतल का ढक्कन।
**बिड्डा**—पु० (सि०) Colebrookia oppositifolia.
**बिढ़ो**—पु० (शि०) बटन।
**बिणक**—स्त्री० (चं०) कानाफूसी।
**बिणगणू**—पु० (चं०) पुराने मकानों में बनी बिना शीशे की खिड़की।
**बिणनसिंधिए**—अ० (कु०) बेमतलब।
**बिणना**—स० क्रि० (सो०) छांटना, चुनना।
**बिणनो**—स० क्रि० (शि०) दे० बिणना।
**बिणी**—अ० (कु०) बिना।
**बिण्हीं**—अ० (कु०) चाहे।
**बित**—स्त्री० शरीर, वय; क्षमता, हिम्मत।
**बितणा**—स० क्रि० ताना मारना, चुभती हुई बात कहना।
**बितणा**—अ० क्रि० बीतना, व्यतीत होना।
**बिथ**—स्त्री० क्षमता।
**बिथा**—स्त्री० (सि०, सो०) व्यथा।
**बिथा**—वि० (कु०) अति कठिन।
**बिथु**—पु० (कु०) एक प्रकार का अनाज।
**बिदकणा**—अ० क्रि० (सो०, शि०) बिगड़ना, उछलना।

**बिदड़णा**—अ० क्रि० (सि०) आंखों से ओझल होना।
**बिदयादशमी**—स्त्री० (मं०) दशहरे के दूसरे दिन लगने वाला विशेष मेला।
**बिदवा**—स्त्री० (बि०) विधवा।
**बिदादेसमी**—स्त्री० (कु०) विजयदशमी।
**बिदुआ**—स्त्री० (शि०) दे० बिदवा।
**बिद्दर**—वि० शरारती।
**बिद्य**—स्त्री० विधि।
**बिधणा**—स० क्रि० छेद करना।
**बिधिमाता**—स्त्री० (कां०, कु०) भाग्य लिखने वाली देवी।
**बिनच्छू**—पु० (सि०) बिच्छू।
**बिनणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) छेद करना; मधुमक्खियों के छत्ते से शहद निकालना।
**बिना**—पु० (सि०) एक प्रकार की लकड़ी।
**बिना**—अ० बगैर।
**बिनुआ**—पु० सिर पर पानी का पात्र उठाने के लिए बनाया गया कपड़े या पयाल का गोल चक्र।
**बिनोला**—पु० (शि०) कपास के बीज।
**बिन्ना**—पु० पयाल अथवा गन्ने के छिलके से बना मोटा नर्म आसन।
**बिन्ना**—पु० दे० बिनुआ।
**बिन्नी**—स्त्री० (शि०) पनीरी।
**बिन्हणा**—स० क्रि० छेद करना, बींधना।
**बिन्हिणा**—स० क्रि० (कु०) बींधा जाना।
**बिपत्ता**—स्त्री० विपत्ति।
**बिपदा**—स्त्री० (सो०) दे० बिपता।
**बिफड़ना**—अ० क्रि० (कु०) लड़ना।
**बिफर**—पु० (सो०) खेत का निचला भाग।
**बिफरना**—अ० क्रि० (सो०, शि०) फूलना, घमंड करना।
**बिबड़ा**—पु० तूंबा, कड़वे कद्दू को खोखला करके बनाया गया पात्र।
**बिबड़ी**—वि० (चं०) काली।
**बिबडू**—पु० छोटा दीपक।
**बिबलणों**—अ० क्रि० (शि०) नींद में हड़बड़ाना।
**बिभाणू**—पु० अकस्मात् हुआ कंपन।
**बिम**—पु० (कु०, सि०) सांचा।
**बिमाण**—पु० (चं०) अरथी ले जाने हेतु बना लकड़ी का साधन।
**बियाई**—स्त्री० बिवाई।
**बियाड़**—पु० पांव में फटी बड़ी बिवाई।
**बियान**—पु० (शि०) बयान।
**बियाना**—पु० (कु०) तूफान।
**बियारना**—स० क्रि० (कु०) नकल उतारना।
**बियाह**—पु० (शि०) विवाह।
**बियुलासी**—स्त्री० (सि०) 'ब्यूहल' की रेशेयुक्त शाखाएं।
**बियूंत**—पु० तरीका।
**बियूणणा**—अ० क्रि० (शि०) जागना।
**बियूहणा**—स० क्रि० (शि०) उखाड़ना।
**बियून**—पु० (शि०) नीचे की मंज़िल में स्थित भंडार।
**बियोग**—पु० (शि०) वियोग।
**बियोटे**—पु० (सि०) गन्ने का कटा हुआ वह ऊपरी भाग जो बीजने के काम आता है।
**बियोरा**—पु० वर्णन, संदेश।
**बियोहकड़**—स्त्री० विवाह का मुहूर्त।
**बिरठ**—स्त्री० (बि०, मं०) मुर्गे तथा पक्षियों की विष्ठा।
**बिरड़ा**—पु० पक्के घड़े का टूटा हुआ भाग।
**बिरड़ियां**—स्त्री० (सि०) विवाहोत्सव पर काम आने वाले बिल्कुल छोटे आकार के पात्र।
**बिरनी**—स्त्री० (शि०) पनीरी।
**बिरमी**—स्त्री० Taxus bacata. तालीस, स्थौणेयक।
**बिरला**—वि० पतला, थोड़ा, कम घना।
**बिरलू**—पु० (ह०) नहर का पानी बांटने का मार्ग।
**बिरश**—वि० (शि०) दुष्ट।
**बिरश**—पु० (कु०) वृष, सांड़।
**बिरा**—स्त्री० (सि०) विरह।
**बिरान**—वि० (शि०) विरान।
**बिराळ**—पु० (शि०) बिल्ला।
**बिराळे**—स्त्री० (शि०) बिल्ली।
**बिरुआ**—पु० (मं०) आंगन में लगा तुलसी का पौधा।
**बिलंग**—स्त्री० (कां०, बि०, सो०) रस्सी से बंधा लकड़ी का डंडा जिस पर वस्त्रादि डाले जाते हैं। यह बांस के अतिरिक्त रस्सी या तार से भी बनाया जाता है।
**बिल**—पु० (कां०, बि०) छिद्र, सुराख।
**बिल**—पु० पात्र के ऊपर का गोलाकार घेरा।
**बिल**—पु० (कां०, बि०) बिल्व फल। Aegle marmelos.
**बिलकणा**—अ० क्रि० भूख से व्याकुल होना।
**बिलख**—स्त्री० (शि०) दरार।
**बिलगिरी**—स्त्री० बेलगिरी जो पेचिश की दवा के रूप में काम आती है।
**बिलड़ा**—पु० पात्र के ऊपर का गोलाकार घेरा।
**बिलड़ा**—वि० (सो०) थोड़ा विरला।
**बिलपतरी**—स्त्री० बिल्व वृक्ष के पत्ते।
**बिलपत्री**—पु० (मं०) बिल्व वृक्ष।
**बिला**—वि० (शि०) दे० बिरला।
**बिलापणा**—अ० क्रि० (शि०) विलाप करना।
**बिले**—अ० (शि०) तरफ, ओर।
**बिलेबिल**—वि० (सि०) लबालब भरा हुआ।
**बिल्ला**—वि० (सि०, सो०) दे० बिरला।
**बिल्ली**—स्त्री० (कु०) दे० सटापू।
**बिल्ली**—स्त्री० (कां०) सब्जी आदि काटने का लोहे का उपकरण।
**बिल्हा**—वि० (चं०) नमीयुक्त।
**बिश**—पु० विष।
**बिश**—वि० (शि०) बीस।
**बिशड़ना**—स० क्रि० (सि०) बाल संवारना।
**बिशनू**—पु० विष्णु।
**बिशली**—स्त्री० (कु०) बांसुरी।
**बिशले**—स्त्री० (शि०) सगाई।

**बिषखार**—पु० (बि०) एक विषैला पौधा जिसे पशुओं के फोड़े पर लगाया जाता है।
**बिषतेंदु**—पु० (सि०) Diospyros cordifolia. एक फल विशेष।
**बिषला**—वि० (सि०) विषैला।
**बिस**—पु० विष।
**बिसकणा**—अ० क्रि० घास का खराब होना।
**बिसन**—पु० (चं०) व्यसन।
**बिसनी**—स्त्री० (चं०) व्यसन गृह।
**बिसरणा**—अ० क्रि० (सि०) पसरना।
**बिसरणो**—अ० क्रि० (शि०) भूलना।
**बिसरना**—अ० क्रि० भूलना।
**बिसराम**—पु० विश्राम।
**बिसरालू**—वि० (सि०) भुलक्कड़।
**बिसरिना**—अ० क्रि० (कु०) भूला जाना।
**बिसला**—वि० (कां०) विषैला।
**बिसवास**—पु० (बि०) विश्वास।
**बिसाख**—पु० (शि०) वैशाख।
**बिस्त**—पु० (शि०) विलंब।
**बिस्तड़ा**—वि० (सो०) थोड़ा धीमा।
**बिस्ता**—वि० (सो०) धीमा, विलंब वाला।
**बिस्तु**—वि० (कु०) बीस नाखूनों वाला।
**बिह**—वि० बीस।
**बिहकण**—पु० (शि०) सूखने हेतु रखा अनाज।
**बिहड़ी**—स्त्री० (ह०) बांसुरी।
**बिहण**—पु० धनिया।
**बिहांउंशा**—पु० (कु०) उतराई।
**बिहांऊं**—अ० (कु०) नीचे।
**बिहाइयां**—स्त्री० (सि०) दुपट्टा।
**बिहाइयां**—स्त्री० पुत्र के जन्म के उपलक्ष्य में गाए जाने वाले गीत।
**बिहाई**—स्त्री० दे० मिहाई।
**बिहाई**—स्त्री० (कु०) नदी किनारे।
**बिहाईणा**—अ० क्रि० (कु०) विवाह करना।
**बिहाग**—स्त्री० (कां०, बि०, चं०) प्रातःकाल।
**बिहागड़ा**—पु० प्रातःकाल गाया जाने वाला भजन।
**बिहाणा**—अ० क्रि० (कु०) रात खुलना।
**बिहाणु**—पु० (चं०) शुक्र ग्रह।
**बिहाल**—पु० (चं०) एक ही गोत्र के व्यक्ति।
**बिहुल**—पु० दुग्धवर्धक पौष्टिक पत्तियों वाला वृक्ष विशेष। grewia optira.
**बिहोतरी**—स्त्री० (ह०) विवाहिता, धर्मपत्नी।
**बिहुणी**—अ० (कु०) चाहे।
**बांडा**—पु० (शि०, बि०) कुल्हाड़ा, कुदाल आदि का दस्ता।
**बींडे**—स्त्री० (शि०) भिंडी।
**बीःत**—स्त्री० (सि०, सो०) दीवार।
**बी**—वि० बीस।
[illegible] (सि०) भी।
**बी**—स्त्री० निचला बरामदा।
**बीआ**—अ० (शि०) ओर, तरफ।
**बीऊं**—पु० (कां०) पत्ते का अग्रभाग।
**बीऊ**—पु० बीज।
**बीख**—पु० (शि०) वृक्ष।
**बीख**—स्त्री० (सि०, सो०, शि०) कदम।
**बीच**—स्त्री० (सो०) मध्य का रिक्त स्थान।
**बीचला**—वि० (सि०) मध्य का।
**बीची**—अ० (सो०) बीच में से।
**बीचे**—अ० (सो०) बीच में।
**बीचोबीचन**—अ० (कु०) बीचोंबीच।
**बीज़**—स्त्री० (सि०, कु०) आकाशीय विद्युत।
**बीज़**—पु० (सो०) कदम।
**बीजजाणा**—अ० क्रि० (सि०) बीज में कीड़ा लगना।
**बीजणा**—अ० क्रि० (सो०) गीला होना।
**बीजणा**—स० क्रि० बीजना।
**बीजपौड़ना**—अ० क्रि० (कु०) आकाशीय विद्युत का गिरना।
**बीजा**—पु० (सो०) शहतीर।
**बीजुणा**—स० क्रि० (सो०) बीजा जाना।
**बीजुणा**—अ० क्रि० (कु०) आकाश का निर्मल होना।
**बीट**—स्त्री० विष्ठा।
**बीठ**—स्त्री० (सो०) दे० बीट।
**बीठा**—पु० कलाई।
**बीड़**—स्त्री० मेंड़।
**बीड़**—स्त्री० भीड़।
**बीड़ा**—पु० (शि०) गट्ठा।
**बीड़ा**—वि० (सो०) घना, निकट।
**बीड़ा**—पु० (कु०) बटन।
**बीड़ी**—स्त्री० (सो०) बीड़ी।
**बीड़ी**—स्त्री० (सि०) चरखे का एक उपकरण।
**बीड़ी**—स्त्री० दातुन।
**बीड़ी**—स्त्री० लपेटा हुआ गट्ठा, बीस पत्तलों का गट्ठा।
**बीड़ू**—पु० (कां०, बि०) ठूंसकर चढ़ाया हुआ ढक्कन।
**बीड़े**—अ० (सो०) निकट, पास।
**बीड़ो**—पु० (मं०) गुल्ली डंडे का खेल।
**बीड़ोती**—स्त्री० खेत के किनारे पर लगने वाली जड़ी।
**बीण**—स्त्री० एक वाद्ययंत्र 'बीन'।
**बीण**—स्त्री० (कां०) वेणी, चोटी।
**बीण**—स्त्री० (कां०) पूंछ के आसपास का उभरा हुआ भाग।
**बीण**—पु० धनिया।
**बीणना**—स० क्रि० बीनना, चुनना, छांटना।
**बीणना**—स० क्रि० शहद निकालना।
**बीणा**—पु० (कु०) एक वन्य प्राणी।
**बीणों**—पु० (शि०) कस्तूरी।
**बीत**—स्त्री० (कु०) काया, शरीर।
**बीता**—पु० (सो०) बरसात के बाद सूखने के लिए रखे गए फल, सब्जी, अनारदाना, दाड़िम आदि।
**बीत्ती**—स्त्री० (कां०) बड़ी पत्तल जो कलात्मक ढंग से बनाई

जाती है।
**बीत्यूसाग**—पु० (मं०) चौलाई का साग।
**बीद**—स्त्री० (कु०, मं०) अधिक काम करने से बाजू में आई गिलटी।
**बीदाणा**—पु० (सो०) सेब प्रजाति का एक फल।
**बीफणी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) आंख की पलक।
**बीबी**—स्त्री० (सि०) ननद।
**बीबी**—स्त्री० औरत, पत्नी, किसी स्त्री के लिए संबोधन।
**बीम**—पु० घर के बड़े कमरे का शहतीर।
**बीमचे**—पु० छिद्र को रोकने के लिए लगाई गई पट्टियां।
**बीर**—वि० वीर।
**बीर**—पु० एक देवता।
**बीरत**—पु० (सि०) देवता की पूजा करने वाला।
**बीरा**—वि० (कु०) कठिन।
**बील**—स्त्री० (शि०) खेत का अग्रभाग।
**बील**—स्त्री० (सो०) विरला पन।
**बीलखणा**—अ० क्रि० (सि०) धीरे-धीरे चलना।
**बीला**—वि० (सो०) दे० बिरला।
**बीवळ**—पु० (सो०) एक वृक्ष विशेष जिसके पत्ते दुधारु पशुओं को खिलाए जाते हैं।
**बीशा**—वि० (सि०) बीस।
**बीशी:**—स्त्री० (कु०) बांसुरी।
**बीशीऊ**—पु० (शि०) सूजन।
**बीसा**—वि० बीस नाखूनों वाला (कुत्ता)।
**बीसी**—पु० (सि०) वृहस्पतिवार।
**बीह्टे**—स्त्री० (शि०) संबंध, रिश्ता।
**बुंगा**—स्त्री० (मं०) सफेद रंग के फूलों वाली एक झाड़ी जिसकी माला पशु त्योहार के अवसर पर बैलों के गले में डाली जाती है।
**बुंज**—पु० (शि०, सि०) Quercus ibex. काकमाची, एक जड़ी विशेष जो औषधि के रूप में प्रयुक्त होती है।
**बुंजा**—वि० बावन।
**बुंदु**—पु० (सो०) बछड़ा।
**बुंद**—स्त्री० बूंद।
**बुंदी**—स्त्री० (मं०) मीठी सेंवइयां।
**बुंदु**—वि० (शि०) मसखरा।
**बुंधी**—स्त्री० किसी देवता की मनौती के लिए पहले से ही आरक्षित कोई वस्तु या पैसे।
**बुंबड़**—पु० कोंपल।
**बुंबल**—पु० पगड़ी का ऊपर उठा हुआ भाग।
**बुंमला**—पु० (कु०) भूमि पर लगने वाले 'काफल' की तरह का फल।
**बुंरा**—पु० (शि०) बुरादा।
**बुआ**—स्त्री० फूफी।
**बुआई**—पु० फूफा।
**बुआईया**—पु० फूफा।
**बुआरा/रो**—वि० (शि०, सो०) किसी के काम में बिना पारिश्रमिक के हाथ बंटाने वाला व्यक्ति।
**बुआरी**—स्त्री० (ह०) लंबा बैंगन।
**बुआळ**—पु० उबाल।
**बुआळना**—स० क्रि० (कु०) उबालना।
**बुआलु**—पु० (सि०) कंघा।
**बुइआ**—स्त्री० (सि०) छोटी टोकरी।
**बुइण**—स्त्री० (सि०) बहिन।
**बुई**—स्त्री० (कु०, बि०) फूफी।
**बुई**—स्त्री० (कु०) दादी।
**बुईचड़**—पु० (सि०) भूचाल।
**बुऐर**—वि० फूफी का लड़का।
**बुक**—स्त्री० प्याज़ का हरा पत्ता।
**बुक**—स्त्री० अंजलि।
**बुकचा**—पु० (शि०) गठरी।
**बुकड़ी**—स्त्री० (बि०) आम की सुखाई गई फांक।
**बुकडु**—पु० (शि०) कलेजी।
**बुकणा**—अ० क्रि० किसी स्थान से पानी का ज़ोरों से निकलना।
**बुकणा**—अ० क्रि० (सि०, सो०) भौंकना।
**बुकणा**—अ० क्रि० (सि०) बक-बक करना, व्यर्थालाप करना।
**बुकरना**—अ० क्रि० (सो०) मुंह से पानी थूकना।
**बुकराल**—पु० (ह०) बकरी पालने वाला।
**बुकला**—पु० (सि०) कपोल।
**बुका**—पु० (बि०) मुट्ठी भर वस्तु।
**बुका**—पु० (कु०) कुकुरमुत्ता।
**बुका**—पु० (सि०) फेफड़ा।
**बुक्कत**—स्त्री० (बि०, सो०) अस्तित्व, हैसियत।
**बुक्कळ**—स्त्री० चादर या कंबल को ठीक तरह से ओढ़ने की क्रिया।
**बुख**—स्त्री० (शि०) भूख।
**बुखारिया**—पु० (मं०) एक प्रकार का प्राचीन वस्त्र।
**बुग**—स्त्री० (सि०) मक्की का बाहरी खोल।
**बुग**—पु० तकिए का आवरण।
**बुगनी**—स्त्री० गोलक।
**बुगळा**—पु० (सो०) धनिया।
**बुगा**—पु० वृक्ष की शाखा का अग्रभाग।
**बुग्घी**—स्त्री० (सि०) छोटा लोटा।
**बुचका**—पु० पीठ पर उठाया जाने वाला गट्ठर।
**बुच्चड़**—वि० दुष्ट, कसाई।
**बुच्छ**—पु० (शि०) बछड़ा।
**बुजका/कू**—पु० गट्ठर।
**बुजड़ादेणा**—स० क्रि० (बि०) किसी फटी हुई या निकली हुई जगह पर रोक लगाना; किसी आवश्यक वस्तु को अनजान या असुरक्षित स्थान पर रखना।
**बुजड़ो**—पु० (मं०) डाट।
**बुजणा**—अ० क्रि० (सो०) भुनना।
**बुजणा**—अ० क्रि० बुझना।
**बुजरू**—वि० पंडा।
**बुजाणा**—स० क्रि० (बि०) बुझाना।
**बुजातरा**—स्त्री० (मं०) वरयात्रा।

**बुजे**—पु० (सि०) वन।
**बुजोणा**—अ० क्रि० बंद हो जाना।
**बुज्ज**—वि० बुत समान, जड़वत्, मूर्ख।
**बुज्जण**—स्त्री० (सो०) जलन।
**बुज्जा**—पु० (बि०) घासफूस।
**बुज्जी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) बड़ी इलायची।
**बुज्जी**—स्त्री० (सो०) पत्तों का सालन।
**बुझणा**—स० क्रि० (कु०, सो०) जानना, बूझना।
**बुझाइण**—स्त्री० (शि०) पहेली।
**बुझाणी**—स्त्री० (सो०) पहेली।
**बुझिणा**—स० क्रि० (कु०) जानना।
**बुट**—पु० (चं०) वृक्ष।
**बुट**—पु० (सो०) जूता।
**बुटकु/डु**—पु० (कु०, सो०) छोटे-छोटे जूते।
**बुटड़ा**—पु० (शि०) पौधा।
**बुटणा**—स० क्रि० (चं०) उखाड़ना।
**बुटणा**—पु० विवाह के अवसर पर लगाया जाने वाला सौंदर्य प्रसाधन, उबटन।
**बुटळा**—वि० (चं०) नर्म व गोल।
**बुटा**—पु० पौधा; वृक्ष।
**बुटाल**—पु० चौकीदार।
**बुटी**—स्त्री० (कु०) छोटा पौधा।
**बुटीन्हाओण**—पु० (मं०) फलदार वृक्ष के नीचे गर्भवती महिला के स्नान करने की क्रिया।
**बुटौ**—पु० (कु०) पौधा।
**बुट्टू**—पु० (सो०) छोटे बच्चे के जूते।
**बुड़आऐ**—स्त्री० (शि०) नानी।
**बुड़क**—स्त्री० (बि०) शेखी।
**बुड़कणा**—अ० क्रि० दहाड़ना, ज़ोर-ज़ोर से रोना।
**बुड़कणा**—अ० क्रि० पशु का रंभाना।
**बुडड़ा**—पु० वृद्ध, बूढ़ा आदमी।
**बुड्दा**—पु० (शि०) बड़ी आयु का आदमी।
**बुड़बुड़ाणा**—अ० क्रि० बुदबुदाना।
**बुडलुंडु**—वि० (सो०) बुढ़ापे की संतान।
**बुड़ा**—पु० बूढ़ा; पिता।
**बुड़ारन**—पु० (मं०) उपनयन संस्कार।
**बुड़िआई**—स्त्री० (शि०) दादी।
**बुड़िदंवालि**—स्त्री० (सो०) दीवाली के ग्यारह दिनों बाद देवोत्थानी एकादशी को मनाया जाने वाला त्योहार।
**बुडुणा**—अ० क्रि० (सो०) बूढ़े होना।
**बुड्डी**—स्त्री० (सो०) बुढ़िया।
**बुढण**—पु० (मं०) ढक्कन।
**बुढणो**—अ० क्रि० (सि०) बैठना।
**बुढली**—स्त्री० (कु०) बूढ़ी।
**बुढ़ा**—पु० (बि०) पिता।
**बुढ़ीदेआळोड़ी**—स्त्री० (मं०) दीपावली के एक मास बाद मनाई जाने वाली दीवाली।
**बुढ़ैसर**—स्त्री० (बि०) बुढ़िया।
**बुढ़ौपा**—पु० बुढ़ापा, वृद्धावस्था।
**बुढ्ड**—पु० (ऊ०, कां०) हलके खाकी रंग के जीव जो कानों में घुसते हैं अथवा गोबर में रहते हैं।
**बुणकु**—पु० (सो०) एक कीट विशेष।
**बुणत**—स्त्री० (बि०, सो०) बुनाई, बुनाई का डिजाइन।
**बुणती**—स्त्री० बुनाई।
**बुणना**—स० क्रि० बुनना।
**बुणाई**—स्त्री० (कु०, बि०) बुनाई।
**बुणाई**—स्त्री० (कां०) सूप, शूर्प।
**बुणार**—पु० बुनाई करने वाला।
**बुणावरो**—पु० (शि०) दे० बुणार।
**बुणेहड़ा**—पु० (कां०) बुनकर, जुलाहा।
**बुत**—वि० निश्चेष्ट, मूर्ति की तरह जड़।
**बुतणा**—स० क्रि० (कु०) बीजना।
**बुता**—पु० (कु०) आदेश।
**बुता**—पु० (चं०, बि०) कार्य।
**बुताग**—पु० (शि०) मूत।
**बुतु**—पु० कार्य।
**बुथी**—स्त्री० (शि०) एक वनस्पति।
**बुथी**—स्त्री० मुंह, सूरत।
**बुदकी**—स्त्री० (सि०) ग्रास।
**बुदड़ा**—पु० तरल पदार्थ को बहने से रोकने के लिए छिद्र में लगाया गया कपड़ा।
**बुदण**—पु० (कु०) दे० बुढण।
**बुदणा**—स० क्रि० (कु०) छिद्र बंद करना।
**बुदा**—पु० (सि०) ग्रास।
**बुदा**—पु० बर्तन साफ करने की कूची; छिद्र बंद करने के लिए लगाई गई रोक; कपड़े आदि का ढक्कन।
**बुदिणा**—अ० क्रि० (कु०) बंद होना।
**बुदो**—पु० (शि०) पोंछने का कपड़ा।
**बुद्द**—स्त्री० बुद्धि।
**बुधु**—वि० मूर्ख।
**बुनघोर**—पु० (सि०) बंदर।
**बुनेड़ा**—पु० (शि०) जुलाहा।
**बुनोउलो**—पु० (सि०) 'बान' का बीज।
**बुन्ह**—अ० नीचे।
**बुन्हली**—वि० (कु०, बि०) नीचे वाले क्षेत्र से संबंधित।
**बुफणु**—पु० फोड़े की तरह उभरा हुआ शरीर का कोई भाग।
**बुब**—स्त्री० (कु०) फूफी।
**बुबाल**—वि० व्यर्थ।
**बुबु**—पु० (कु०) फोड़ा।
**बुबू**—पु० फूफा।
**बुबेर**—वि० (चं०) फूफी का बेटा।
**बुबैया**—पु० फूफा।
**बुब्बा**—पु० फूफा।
**बुब्बी**—स्त्री० फूफी।
**बुमणी**—स्त्री० (कु०) 'पट्टू' के सिरों को जोड़ने की सूई।
**बुरकणा**—अ० क्रि० (चं०, सो०) थोड़ी वर्षा होना। स०. क्रि०

नमक आदि छिड़कना।
**बुरकानी**—स्त्री० (ऊ०) Maesa indica.
**बुरकी**—स्त्री० (सि०) ग्रास।
**बुरश**—पु० बुरुश।
**बुरसट**—स्त्री० पुरुष की आधी बाजू की कमीज़।
**बुरा**—वि० (सो०) अशुभ, गंदा।
**बुराए**—स्त्री० (शि०) बुराई।
**बुराफोड्ड**—पु० (मं०) नासूर, कैंसर।
**बुरास**—पु० Rhododendron arboreum. एक वृक्ष विशेष।
**बुरी**—स्त्री० (सि०) अरथी।
**बुरी**—स्त्री० (बि०) याद।
**बुरी**—स्त्री० (सि०) बोरी।
**बुरो**—वि० (मं०) खतरनाक, भयजनक।
**बुर्की**—स्त्री० (कु०) 'लुगड़ी' आदि निकालने का लकड़ी का गिलास।
**बुर्ष**—पु० (कु०) देवदार के पत्ते।
**बुलकणा**—स० क्रि० (सि०) उलटी करना, मुंह में डाला पानी बाहर निकालना।
**बुलका**—पु० (सो०) साग, सब्जी।
**बुलणा**—अ० क्रि० (सो०) भूलना।
**बुलाण**—स्त्री० (सि०) भाषा।
**बुलाणो**—अ० क्रि० (सि०) बोलना।
**बुलू**—पु० (सि०) उल्लू।
**बुलेखा**—पु० चूक।
**बुलोद**—पु० (सि०) बैल।
**बुल्ला**—पु० हवा का झोंका।
**बुल्ला**—पु० (बि०) आग की लपट।
**बुल्ला**—वि० (सि०) निचला।
**बुल्ह**—स्त्री० फफूंद।
**बुवाल**—पु० (ह०) गड़रिया।
**बुवाल**—पु० उबाल, गुबार।
**बुशणा**—अ० क्रि० (सि०) बैठना।
**बुशाल**—पु० (मं०) काई।
**बुसकणा**—अ० क्रि० ललकना।
**बुसर**—वि० (कु०) शक्तिशाली।
**बुसार**—स्त्री० पिसी हुई हलदी।
**बुहार**—स्त्री० (कु०, बि०) झाड़ू।
**बुहारना**—स० क्रि० (कु०, बि०) झाड़ू लगाना।
**बुंदा**—पु० झुमका।
**बू:त**—पु० (शि०, सो०) भूत।
**बू**—पु० (कु०) दादा।
**बू**—स्त्री० दुर्गंध।
**बू**—स्त्री० (कां०) फूफी।
**बूई**—स्त्री० (शि०) भूमि।
**बूक**—पु० (सि०) बकरा।
**बूख**—स्त्री० (सि०, सो०) भूख।
**बूग**—पु० (सो०) गिलाफ।
**बूगलो**—पु० (शि०) धनिया।
**बूगा**—पु० (बि०) बड़ा नाला।
**बूघू**—पु० (मं०) छोटा लोटा।
**बूजणा**—स० क्रि० (शि०) भूनना।
**बूजणा**—स० क्रि० (कां०, सि०) बंद करना।
**बूजाणू**—स० क्रि० (सि०) बजाना।
**बूज्जा**—पु० (कां०) ग्रास।
**बूज्जा**—पु० (बि०) छिद्र आदि बंद करने के लिए लगाया गया कपड़े का ढक्कन।
**बूज्जी**—स्त्री० (कां०, कु०) छोटी इलायची।
**बूझणा**—अ० क्रि० आग का जलकर बुझ जाना।
**बूझणा**—स० क्रि० (कां०, बि०) जानना।
**बूझरू**—पु० (कां०) शनि का दान लेने वाला।
**बूट**—पु० (सो०) जूता।
**बूट**—पु० (सि०) गेहूं या बांस आदि के इकट्ठे लगे पौधे।
**बूटा**—पु० (बि०) वृक्ष।
**बूटी**—स्त्री० जड़ी-बूटी।
**बूड़**—वि० (सि०) पुराना (अदरक)।
**बूड़इया**—पु० (ह०) कपास के बिनौले।
**बूड़ना**—अ० क्रि० (सो०) चोट लगना।
**बूड़ा**—वि० बहरा।
**बूड़ी**—स्त्री० (चं०) छोटे-छोटे कानों वाली भेड़।
**बूढलो**—पु० (कु०) बूढ़ा।
**बूण**—पु० (सि०) वन।
**बूण**—पु० (सि०) खरपतवार।
**बूणा**—पु० (कां०) बुनाई हेतु प्रयुक्त धागे।
**बूत**—पु० (मं०) शहतूत।
**बूथड़ो**—पु० (सि०) बैल।
**बूद**—पु० (शि०) बुधवार।
**बूदा**—पु० (कु०, शि०) चिथड़ा, पोंछने का कपड़ा।
**बून**—गुमटा, चोट आदि के कारण होने वाली माथे पर की गोल सूजन।
**बून**—पु० (सो०) टकराने से बनने वाला शरीरिक चिह्न।
**बूबा**—पु० (सि०, सो०) फूफा।
**बूबी**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) फूफी।
**बूर**—पु० (सो०) लकड़ी का बुरादा।
**बूर**—पु० (कां०, मं०) बारीक सेंवइयां, फीकी बूंदी।
**बूरन**—पु० (सो०) गेहूं की रोटी बनाते समय उसमें लगाया जाने वाला सूखा आटा।
**बूरा**—पु० लकड़ी का बुरादा; चूर्ण, पीसी हुई वस्तु।
**बूरा**—पु० (सि०) बड़ी बोरी।
**बूरा**—पु० आटा छानने के बाद छलनी में बचा हुआ छिलका आदि।
**बूरा**—पु० (सो०) किसी व्यक्ति या घर की अत्यधिक याद, उत्कंठा।
**बूरो**—वि० (शि०, सि०) बुरा।
**बूल**—वि० (मं०) कच्ची उम्र।
**बूलणा**—अ० क्रि० (सो०) भूलना।

**बूली**—स्त्री० (सि०) भाषा।
**बूसर**—वि० नासमझ, कच्ची उम्र का।
**बूसरमत**—स्त्री० बालबुद्धि, बचपना।
**बूहला**—वि० (कां०, सि०) निचला।
**बूहाड़**—स्त्री० (मं०) घर के साथ या अलग से लकड़ी के चार पायों पर बनी घासफूस की झुग्गी जिसमें ईंधन या घास आदि ही रखा जाता है।
**बूहणी**—स्त्री० (कां०) बिक्री का आरंभ।
**बूहश**—स्त्री० (शि०) बात।
**बेंकलै**—स्त्री० (कां०) लंबे कांटों वाली एक झाड़ी जिसकी शाखाएं अंदर से खोखली होती है।
**बेंगा**—वि० (बि०) टेढ़ा, तिरछा, कुटिल स्वभाव का, अवगुण युक्त।
**बेंज**—पु० (सि०) बांस।
**बेंत**—पु० (बि०) लाठी।
**बेंद**—वि० (कु०) बंद।
**बेंस**—स्त्री० वंशी की एक प्रकार जो मंदिरों में बजाई जाती है।
**बेंहगी**—स्त्री० (शि०) भार ढोने का उपकरण जिसमें बांस के डंडे के दोनों सिरों पर रस्सियों में छीके लटके रहते हैं।
**बे**—अ० (सो०) संबोधनसूचक शब्द।
**बेअंत**—वि० जिसका अंत न हो।
**बेआरा**—पु० (शि०) दे० बुआरा।
**बेइंस्क**—पु० (कु०) बांस।
**बेइर**—पु० (कु०) वैर।
**बेइरी**—पु० (कु०) वैरी, दुश्मन।
**बेउआ**—पु० (कु०) मन ही मन दुःखानुभूति।
**बेउड़**—स्त्री० (कु०) खेत का बाहरी किनारा।
**बेउड़ी**—अ० (कु०) नीचे।
**बेउरा**—वि० (कु०) पागल।
**बेउळा**—वि० (कु०) मूर्ख।
**बेऊगल**—पु० (सो०) बिगुल।
**बेओतरना**—स० क्रि० (मं०) कपड़ा काटना।
**बेओश**—वि० (शि०) बेहोश।
**बेओस**—वि० (मं०) समतल।
**बेकणा**—अ० क्रि० (कु०) बिकना।
**बेकनू**—पु० मेढ़ा।
**बेकर**—पु० (कु०) नदी के बीच का टापू।
**बेकली**—स्त्री० (शि०) घबराहट।
**बेकाम**—पु० (शि०) निकम्मा।
**बेकूफ**—वि० (कां०, सो०) मूर्ख।
**बेकोरणा**—स० क्रि० (सि०) छिद्र करना।
**बेखा**—वि० (कु०) खाली।
**बेखळी**—स्त्री० (कां०) उपालंभ युक्त या घुमाफिरा कर कही गई बात।
**बेग**—पु० (सि०, शि०) थैला।
**बेग**—पु० (कां०) क्रोध; मलेरिया का तेज़ ज्वर।
**बेगमी**—पु० चावल की एक किस्म।
**बेगर**—स्त्री० बड़ी इलायची।
**बेगुरा**—वि० गुरुहीन व्यक्ति; निर्दय।
**बेगे**—वि० (शि०) बहुत।
**बेचण**—स० क्रि० बेचना।
**बेचणं**—स० क्रि० (कु०) बेचना।
**बेचिणा**—स० क्रि० (कु०) बेचा जाना।
**बेच्चळ**—पु० (कां०) उलझाव।
**बेजण**—स० क्रि० (सो०) भेजना।
**बेज़ती**—स्त्री० अपमान।
**बेजा**—पु० (बि०, सो०) बीज।
**बेज़ा**—पु० (कु०) बीज।
**बेजाए**—अ० (सो०) अत्यधिक, अधिक मात्रा में।
**बेजाप**—पु० (सि०) अन्याय।
**बेजियां**—स्त्री० (ह०) अरबी।
**बेजु**—पु० (बि०) अरबी।
**बेजोई**—वि० (सि०) अनुचित।
**बेज्जत**—वि० (बि०, सो०) प्रतिष्ठा रहित।
**बेज्जी**—स्त्री० (कां०) अरबी का पूरा (जड़ सहित) टुकड़ा जो बीज के लिए प्रयोग में लाया जाता है।
**बेटकूटे**—पु० (सि०) पुरुष।
**बेटड़ी**—स्त्री० (कु०, सो०) स्त्री, औरत।
**बेटड़ी**—स्त्री० (सो०) बेटी।
**बेटडु**—वि० (कु०) पुरुष होते हुए भी स्त्री जैसे स्वभाव वाला।
**बेटीखेंत**—पु० (कु०) बेटी को खाने वाला (गाली)।
**बेठ**—स्त्री० (मं०) बेगार।
**बेठ**—पु० लपेटकर इकट्ठा किया हुआ घास।
**बेठ**—स्त्री० (ह०) अरबी के पत्तों की सब्जी।
**बेठका**—पु० (शि०) राजपूत का बेटा।
**बेठकी**—स्त्री० (शि०) आसन।
**बेठकू**—पु० (शि०) बैठने के लिए बनाया कपड़े आदि का गद्दा।
**बेठणा**—अ० क्रि० (सो०) बैठना।
**बेठणा**—स० क्रि० (बि०) गन्ने का रस निकालना।
**बेठणा**—स० क्रि० लपेटना।
**बेठणी**—स्त्री० (सो०) किसी वस्तु को टिकाने का आधार।
**बेठर**—पु० (सो०) किसी शुभ कार्य के आरंभ में कागज़ आदि पर रखा गया मंगल सूचक आटा, गुड़, घी, जिसे कार्य स्थल पर रखा जाता है।
**बेठर**—पु० (कु०) एक जंगली जड़ी जिसे जलाने से सुगंध आती है।
**बेठि**—पु० (सो०) 'मुज़ारा'।
**बेठी**—पु० (सि०) कहार।
**बेठी**—पु० 'करयाळा' नामक लोकनाट्य के अभिनेताओं की एक मंडली।
**बेठे/ठें**—अ० (सो०) बीमारी आदि के कारण ऐसी अवस्था होना जिससे चला फिरा न जा सके।
**बेड़**—स्त्री० (शि०, सो०) भेड़।
**बेड़**—पु० मुहल्ला, घरों का समूह।
**बेड़**—स्त्री० (मं०) देवस्थान की रात्रिवाद्य विशेष धुन।
**बेड़चा**—पु० (मं०) बेलचा।

**बेड़णा**—स० क्रि० (शि०) लपेटना।
**बेड़न**—स्त्री० (सो०) रोटी में भरने की पीठी।
**बेड़वा**—स्त्री० (सो०) आलू, अरवी की पीठी वाली रोटी।
**बेड़ा**—पु० (सि०) लालटेन रखने का स्थान।
**बेड़ा**—वि० (कु०) बड़ा।
**बेड़ा**—पु० (बि०) आंगन, पांच सात घरों का समूह।
**बेड़ा**—पु० (सो०) राजा का मुहल्ला।
**बेड़ी**—स्त्री० (बि०) नौका।
**बेड़ी**—स्त्री० बंधन।
**बेड़ु**—पु० (सो०) मेमना।
**बेडुई**—स्त्री० (कु०) खमीरे आटे की पीठी वाली रोटी जिसे भाप में पकाया जाता है।
**बेड़ोली**—स्त्री० (सि०) विशेष प्रकार की रोटी।
**बेड़ौ**—स्त्री० (कु०) पोस्तदाने से भरी रोटी।
**बेढ**—पु० घेरा।
**बेढा**—पु० (कु०, मं०) राजमहल।
**बेण**—पु० (बि०, सो०) धनिया।
**बेणू**—पु० (सि०) ध्रुव तारा।
**बेत**—पु० (शि०, सो०) रहस्य।
**बेतका**—पु० (चं०) सुरा रखने का मिट्टी का पात्र।
**बेतबार**—वि० अविश्वसनीय।
**बेतरना**—स० क्रि० सिलाई करने के लिए कपड़ा काटना।
**बेतरनी**—स्त्री० मृत्यु के समय दान में दी गई गाय।
**बेतो**—वि० (मं०) सचेत।
**बेत्ता**—वि० विशेषज्ञ।
**बेथ**—वि० (शि०) बालिश्त।
**बेथौआ**—वि० ऐसा व्यक्ति जिसे बात या काम करने का ढंग न हो।
**बेद**—स्त्री० (बि०, सो०) विवाह के समय प्रांगण में बनाया गया चतुष्कोण स्थान या मंडप, वेदी।, वेद।
**बेदण**—स्त्री० (बि०, ह०) प्रियजन की याद।
**बेदणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) बुलाना।
**बेदना**—स० क्रि० (शि०) छेद करना।
**बेदलघेदल**—अ० (कु०) हेर फेर।
**बेदलणा**—स० क्रि० (कु०) बदलना।
**बेदला**—पु० (कु०) बदला।
**बेदाणा**—पु० (सो०) बूंदी।
**बेदुआ**—पु० एक ब्राहमण जाति।
**बेदुणा**—अ० क्रि० (सो०) बड़प्पन का प्रदर्शन करना, जानकार बनना।
**बेध**—पु० (कु०) छिद्र, सुराख।
**बेधिणा**—अ० क्रि० (कु०) बदल जाना।
**बेनोक्षा**—पु० (सि०) बनफ़शा।
**बेपार**—पु० (शि०) व्यापार।
**बेपीरा**—वि०, निर्दय।
**बेपेंदी**—वि० (शि०) इधर-उधर लुढ़कने वाला।
**बेबख्त**—स्त्री० (सो०) गलत समय, असमय।
**बेबस**—वि० विवश।
**बेबसी**—स्त्री० (सो०) विवशता।
**बेबहा**—वि० (शि०) अमूल्य।
**बेबी**—स्त्री० (कु०) बड़ी बहन।
**बेबे**—स्त्री० (बि०, मं०, सो०) बड़ी बहन।
**बेबोगता**—अ० (सि०) बेवक्त, असमय।
**बेमुक्तो**—वि० (शि०) अत्यधिक।
**बेमेद**—अ० (बि०) बिना आशा के।
**बेयाबान**—पु० उजाड़ स्थान।
**बेर**—स्त्री० (बि०, शि०) देर।
**बेर**—पु० एक फल।
**बेर**—पु० (कु०) समय, वक्त।
**बेरईम**—वि० (सो०) क्रूर, निर्दय।
**बेरगत**—स्त्री० (कु०) वृद्धि, बढ़ोतरी।
**बेरजा**—पु० (सो०) बिरोज़ा।
**बेरड़**—वि० (कु०) शरारती।
**बेरड़ा**—पु० गेहूं तथा चने का आटा।
**बेरदी**—स्त्री० (कु०) वरदी।
**बेरन**—स्त्री० (सो०) बेर का पेड़।
**बेरा**—पु० (सो०) नज़र और वस्तु के मध्य आई अन्य वस्तु जो लक्ष्य को देखने में बाधा डालती है।
**बेरा**—स्त्री० (शि०) वेला, समय।
**बेरी**—स्त्री० (सो०) बेर का वृक्ष।
**बेरु**—पु० (शि०) समाचार, दुःखों का वर्णन।
**बेरे**—अ० (सो०) बार।
**बेरेयो**—पु० (सि०) बेर का फल।
**बेरैम**—वि० (सो०) बेरहम, क्रूर, निर्दय।
**बेरोबाद**—वि० (कु०) नष्ट।
**बेर्खा**—स्त्री० (कु०) वर्षा।
**बेल**—स्त्री० लता।
**बेल**—स्त्री० नृत्यादि पर प्रसन्न होकर दिया जाने वाला पुरस्कार।
**बेल**—स्त्री० (सो०) बेला, फुर्सत।
**बेलकांगू**—पु० (कु०) Clematlis conneta. एक पौधा जो औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है।
**बेळकू**—पु० (सि०) मध्यांतर।
**बेलगठोली**—स्त्री० (कां०) तोरई, एक प्रकार की सब्जी।
**बेलगीर**—स्त्री० (सो०) कपड़े टांगने के लिए बांधी गई रस्सी।
**बेलचौ**—पु० (मं०) बेलचा।
**बेलड़ा**—पु० (सो०) कुंडलाकार रस्सा जिससे हल को जुए में बांधा जाता है।
**बेलणफेरना**—स० क्रि० (कां०) जूठन दूर करने हेतु भूमि पर गोबर फेरना।
**बेलणा**—पु० गन्ने के रस को निकालने वाला बेलन; रोटी बनाने का बेलन।
**बेलणा**—स० क्रि० रोटी को चकले पर बेलना। रुई को बेलन से निकालना।
**बेलणु**—पु० (बि०) सीढ़ी आदि का एक भाग जिसके द्वारा बांस के दो डंडे इकट्ठे जुड़ते हैं और इस पर पांव रखकर ऊपर

चढ़ा जाता है।
बेलणू—पु० दीवार में कपड़े टांगने के लिए लगाई गई खूंटी।
बेलदार—पु० (बि०, सो०) मजदूरी करने वाला व्यक्ति। मजदूर।
बेलबोंगल—पु० (कु०) समय।
बेलरा—पु० (शि०) चीड़ या देवदार के वृक्षों के बीजकोश।
बेलरास—पु० (शि०) मक्की का घास।
बेलरी—स्त्री० (शि०) मक्की।
बेलरीठो—पु० (शि०) मक्की का आटा।
बेलरोळी—स्त्री० (शि०) मक्की की रोटी।
बेला—वि० (सो०) बेकार, जिसे कोई काम न हो।
बेला—वि० (कु०) चौड़ा।
बेला—स्त्री० समय।
बेला—वि० किसी कारण टेढ़ा होकर चलने वाला; कमजोर।
बेली—स्त्री० (सि०) Hesperesthusa crenutata.
बेलीणा—अ० क्रि० (कु०) करवट बदलना।
बेलीणा—अ० क्रि० (शि०) लुढ़कना।
बेलुआ—पु० (बि०) रुई पींजने का बेलन।
बेलुआ—पु० (सि०) कटोरा।
बेलू—पु० (ह०) कपास बेलने का यंत्र।
बेवणा—स० क्रि० (सो०) भिगोना।
बेवरा—पु० (शि०) विवरण।
बेवहार—पु० (शि०) व्यवहार।
बेवा—स्त्री० विधवा।
बेशका—वि० (कु०) खाली।
बेशण—पु० (सि०) बेसन।
बेशणा—अ० क्रि० (कु०) बैठना।
बेशर—स्त्री० स्वर्ण का बना नाक का आभूषण।
बेश्क—पु० (सो०) वर्षा ऋतु में वन में चरागाह में चरने के लिए रात-दिन खुले छोड़े गए पशुओं की रात्रि के समय रखवाली करने हेतु बनाया गया घर।
बेसकरणा—अ० क्रि० (सि०) बहसना।
बेसण—पु० चने का आटा।
बेसबरा—वि० (शि०, सि०) अधीर।
बेसर—पु० (शि०) एक घास का नाम।
बेसर—स्त्री० दे० बेशर।
बेसाबा—वि० (कु०) अनगिनत, अगणित।
बेसुआ—वि० (शि०) नखरे वाली।
बेसूला—वि० (सि०) जिसे कोई होश न हो।
बेस्सर—स्त्री० (सो०) दे० बेशर।
बेह—पु० (मं०) कान।
बेहई—पु० (चं०) जंगली सेब।
बेहड़ा—पु० एक वृक्ष विशेष जिसके फल औषधि के काम आते हैं।
बेहड़ी—स्त्री० (कां०, बि०, ह०) मक्की के आटे में अरबी की पीठी डालकर बनाई गई रोटी।
बेहणा—अ० क्रि० (कु०) बैठना।
बेहधड़ू—पु० (मं०) बाराती।
बेहमी—वि० भ्रम जनित, वहम करने वाला।
बेहला—वि० बेरोज़गार।
बेही—वि० (ह०) बासी।
बेह्—पु० (कां०) छिद्र।
बेहत्र—वि० (सि०) उचित।
बैंगी—स्त्री० (सो०) बहंगी।
बैंगी ऊन—स्त्री० (मं०) लंबे रेशों वाली ऊन।
बैंजला—पु० (कां०) बांस का मोटा डंडा।
बैंजला—वि० अल्पबुद्धि मनुष्य।
बैंझ—पु० बांस का पौधा।
बैंठ—स्त्री० (बि०, सो०) पंक्ति, कतार, सामूहिक प्रीतिभोज में लोगों की पंक्ति।
बैंत—पु० लाठी, छड़ी।
बैंथ—पु० (कु०) बालिश्त।
बैंदड़—वि० हल चलाने योग्य (भूमि)।
बैंश—पु० (सो०) बांस।
बैंशटी—स्त्री० (सो०) दे० बसूटी।
बैंस—पु० एक सांप जो लंबा और मोटा होता है।
बैंसरी—स्त्री० (मं०) बांसुरी।
बैंसी—वि० (चं०) बांसुरी बजाने वाला।
बैंह्ज—पु० बांस।
बैइ—स्त्री० (शि०) बिवाई।
बैई—स्त्री० असत्य कथा।
बैई—स्त्री० (शि०) पुत्रोत्पत्ति होने पर गाए जाने वाले मंगलगीत।
बैए—स्त्री० (सि०) बला।
बैकणा—अ० क्रि० (सो०) बहकना।
बैखणा—अ० क्रि० (चं०) बैठना।
बैग—वि० (चं०) कष्ट।
बैग—वि० (चं०) टेढ़ा।
बैग—पु० थैला।
बैज—पु० (मं०) ब्याज़।
बैठक—स्त्री० (सो०) बैठने का स्थान।
बैठक—पु० वर्षा ऋतु में खेतों में पशुओं का आवास स्थान।
बैठकू—पु० बैठने की गद्दी।
बैठणो—अ० क्रि० (सि०) बैठना।
बैड़—स्त्री० (चं०) दरार।
बैड़—पु० (सि०) झूला।
बैड़ी—स्त्री० (चं०) बिवाई।
बैडू—पु० छोटा बैल।
बैण—स्त्री० (सो०) बहिन।
बैण—पु० (सो०) वचन, बोल।
बैणशीवीर—पु० (मं०) एक क्रूर देवता।
बैणा—पु० (चं०) ढोल बजाने की छड़ी।
बैणा—अ० क्रि० बैठना।
बैणी—स्त्री० (कां०, चं०) दे० बैणा।
बैतरणि/णी—स्त्री०(सो०) एक पौराणिक नदी; इस नदी को पार करवाने वाली गाय, जो ब्राहमणों को दी जाती है।
बैतरन—स्त्री० (कां०) मरते समय का गोदान।

**बैत्तण**—स्त्री० (कां०) मरणासन्न व्यक्ति द्वारा दान की गई गाय।
**बैत्री**—पु० (सि०) 'करयाळा' का गायक।
**बैद**—पु० वैद्य।
**बैदाड़**—पु० (चं०) एक वृक्ष विशेष।
**बैदेए**—स्त्री० (शि०) एक रोग जो अकस्मात् फैलता है।
**बैनसरे**—अ० (शि०) प्रातः।
**बैना**—पु० (शि०) अग्रिम राशि।
**बैभणा**—अ० क्रि० (मं०) नीद में बोलना।
**बैम**—पु० (सो०) वहम, शक।
**बैमी**—वि० शक्की, वहमी।
**बैर**—पु० वैर, दुश्मनी।
**बैर**—पु० बेर का वृक्ष, बेर फल।
**बैरन**—स्त्री० (मं०) बेर वृक्ष।
**बैरी**—वि० शत्रु, दुश्मन।
**बैरी**—स्त्री० बेर की झाड़ी।
**बैळका**—वि० (सि०) सायंकाल का, शाम का।
**बैळी**—अ० (शि०) सायंकाल।
**बैलेये**—स्त्री० (सि०) घी से तैयार की गई मालिश की विशेष दवा।
**बैसक**—स्त्री० (कां०) पशु रखने का कमरा।
**बैसक**—पु० (चं०) कपड़े का तैयार किया गया बैठने का आसन।
**बैसकी जाणा**—अ० क्रि० निर्बलता के कारण पशु का बैठ जाना।
**बैसकू**—वि० (कां०) खलियान में रखी वस्तु का पहरा देने वाला।
**बैसकू**—पु० (कां०) चिथड़ा।
**बैहंगी**—स्त्री० एक दिशा में चमकने वाले तीन तारे।
**बैह**—पु० (चं०) विवाह।
**बैहकणा**—अ० क्रि० आपे से बाहर होना।
**बैहड़ी**—स्त्री० (कां०, चं०) बछिया।
**बैहड़ू**—पु० (चं०, ह०) बैल जिसे अभी सधाया जा रहा हो।
**बैहणा**—अ० क्रि० बैठना।
**बैह तबैह**—स्त्री० गाली-गलौज।
**बैहतर**—स्त्री० घोड़े, खच्चरों का समूह।
**बैहम**—पु० संदेह।
**बैहमी**—वि० संदेही, भ्रम करने वाला।
**बैहलु**—पु० (कां०) बसूला।
**बैहस**—स्त्री० (कु०) अपवाद।
**बैहस**—स्त्री० चर्चा, बातचीत, तर्क।
**बैहुड़ा**—पु० (चं०) विवाह का व्यय।
**बैहंद**—वि० (कां०) बोई जाने वाली (भूमि)।
**बोंअर**—स्त्री० (कु०) छत में स्लेट टिकाने के लिए प्रयुक्त शहतीर।
**बोंआं**—वि० (चं०) बायां।
**बोंज़र**—वि० (कु०, शि०) ऊसर, बंजर।
**बोंजळा**—वि० (कां०) सीधा-सादा, भोला, स्तब्ध।
**बोंटवार**—पु० (सि०) विभाजन, बटवारा।
**बोंड**—स्त्री० (कु०) बांट, बटवारा।
**बोंडणा**—स० क्रि० (कु०) बांटना।
**बोंडा**—पु० हाथ-पांव का अकड़ाव।
**बोंडिणा**—अ० क्रि० (कु०) बंट जाना, भाई-भाई का अलग होना।
**बोंतर**—पु० पागलपन।
**बोंदरो**—वि० (सि०) उपजाऊ।
**बोंदुक**—स्त्री० (सि०) बंदूक।
**बोंफूर**—पु० (शि०) कंधा।
**बोंर**—पु० (सि०) भ्रमर।
**बोंर**—स्त्री० लकड़ी का टेढ़ापन।
**बोंहटा**—पु० बाजूबंद।
**बोंहला**—पु० हाथी की सूंड।
**बोःग**—पु० (सो०) भोग।
**बोःगणा**—स० क्रि० (सो०) भोगना।
**बोःटुणा**—अ० क्रि० (सो०) जाति-भ्रष्ट होना।
**बो**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) दुर्गंध।
**बो**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) बकरे की ध्वनि।
**बो**—पु० (शि०) चर्बी।
**बोआ**—पु० पहनावा, बाना।
**बोआलो**—पु० (सि०) कंधा।
**बोइची**—पु० (सि०) पशु।
**बोइद**—पु० (सि०) वैद्य।
**बोइदू**—वि० (शि०) आमंत्रित करने वाला।
**बोइयर**—स्त्री० (सि०) स्त्री।
**बोइशणो**—अ० क्रि० (सि०) बैठना।
**बोइस**—स्त्री० पति अथवा पत्नी की फूफी।
**बोई**—स्त्री० (मं०) कैथ।
**बोईया**—पु० (सि०) रोटी रखने का पात्र।
**बोऊ**—स्त्री० (सि०) बहू।
**बोऊरूपिया**—वि० बहुरूपिया।
**बोक**—पु० ऐसा बकरा जो प्रजनन के लिए पाला जाता है।
**बोकरा**—वि० (कां०, बि०) अधिक बोलने वाला।
**बोका**—वि० (सि०) बहरा।
**बोकाया**—वि० बचा हुआ, अवशिष्ट, बकाया।
**बोकील**—पु० (सि०) वकील।
**बोखोत**—पु० (सि०) समय, वक्त।
**बोग**—पु० (शि०) गिलाफ।
**बोगल**—स्त्री० (सि०) बगल।
**बोगलणा**—स० क्रि० (सि०) पकड़ना।
**बोगला**—पु० (शि०, सि०) बगुला।
**बोच**—पु० (सो०) वचा नामक घास जो दलदली भूमि में होता है।
**बोचणा**—स० क्रि० किसी वस्तु को हाथों से ऊपर ही थाम लेना।
**बोचत**—स्त्री० बचत।
**बोचपोन**—पु० बचपन।
**बोज**—पु० (सो०) वज़न, भार।
**बोजरंग**—पु० (सि०) हनुमान।
**बोजा**—पु० (सो०) बोझ।
**बोजाजी**—स्त्री० (सि०) वस्त्र बेचने वाले की दुकान।
**बोझ**—पु० भार।
**बोट**—पु० (कु०)पत्थर की चिप्पी, बच्चों द्वारा खेल में प्रयोग किया जाने वाला पतला और छोटा पत्थर।

**बोट**—पु० (कु०) विशेष उत्सव के अवसर पर तैयार रसोईघर।
**बोट**—पु० (कां०) जूतों के तंग होने के कारण पांव की अंगुलियों की सख्त हुई चमड़ी।
**बोट**—स्त्री० (सि०) ज़िद।
**बोटचारा**—पु० रसोई बनाने का कार्य।
**बोटण**—पु० बटन।
**बोटण**—स्त्री० रसोई बनाने वाली स्त्री।
**बोटला**—वि० गोल।
**बोटलू**—पु० एक प्रकार का बांस।
**बोटिया**—पु० रसोइया।
**बोटी**—स्त्री० टुकड़ा।
**बोटी**—पु० रसोइया।
**बोटू**—पु० (शि०) पति।
**बोटे**—स्त्री० (शि०) पत्नी।
**बोठणो**—अ० क्रि० (शि०) बैठना।
**बोठा**—वि० (मं०) सीधा-सादा।
**बोठालणो**—स० क्रि० (शि०) बैठाना।
**बोड़छा**—पु० (सि०) बरछा।
**बोडा**—वि० (कु०) बड़ा।
**बोड़ा**—वि० (सि०) बड़ा।
**बोडियालो**—पु० (सि०) एक विशेष प्रकार की सब्जी।
**बोड़ी**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) जिस (स्त्री) के एक दो दांत टूट गए हों।
**बोड्डा**—वि० (सि०) महान्।
**बोढ़त**—स्त्री० वृद्धि, बढ़त।
**बोण**—पु० (कु०) वन।
**बोणचोर**—पु० (सि०) वनचर।
**बोणचोर**—वि० (कु०) गरमाइ (गाय)।
**बोणा**—वि० बौना।
**बोणियोण**—स्त्री० (सि०) बनियाइन।
**बोणी**—स्त्री० (शि०) कलाई।
**बोणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) बीजना।
**बोत**—वि० (सि०) अधिक, बहुत।
**बोतलटु**—पु० दवात; छोटी बोतल।
**बोतलू**—पु० छोटी बोतल।
**बोतेरा**—वि० पर्याप्त।
**बोद**—स्त्री० (सो०) बुद्वि, समझ; ध्यान।
**बोदकी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) शराब की एक किस्म।
**बोदकी**—स्त्री० (सि०) क्रोध, जुल्म।
**बोदड़**—स्त्री० मोरनी।
**बोदणा**—स० क्रि० (शि०) बुलाना।
**बोदलणा**—स० क्रि० (सि०) बदलना।
**बोदली**—स्त्री० बदली, तबादला।
**बोदा**—वि० (सो०) कमजोर; स्वाद रहित, रसरहित।
**बोदा**—पु० (ऊ०, ह०) लंबे बाल युक्त सिर।
**बोदाबदी**—स्त्री० (सि०) जबरदस्ती।
**बोदी**—स्त्री० (कु०, मं०) नरगिस का फूल।
**बोदी**—स्त्री० पुरुष के सिर पर थोड़े से लंबे बालों की रखी गई चोटी, शिखा, वेणी।
**बोधमारनी**—स० क्रि० बुरी हालत करना, तंग करना।
**बोधा**—पु० श्मशान में स्थित मंदिर का पुजारी जो मृतक को जलाने में सहायता करता है।
**बोन**—पु० (कु०) एक वृक्ष विशेष, सैरेयक।
**बोनू**—वि० (मं०) ठिगना।
**बोन्हणा**—स० क्रि० (कु०) बांधना।
**बोन्हिणा**—स० क्रि० (कु०) बांधा जाना।
**बोबा**—स्त्री० (कु०) बड़ी बहन।
**बोबी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) बहन।
**बोबी**—स्त्री० (सि०) ननद।
**बोबो**—स्त्री० बड़ी बहिन।
**बोयंगी**—स्त्री० (सि०) बहंगी, बोझ ढोने का साधन।
**बोयड़**—पु० (सि०) युवा बैल।
**बोयणा**—अ० क्रि० (सि०) बहना।
**बोयरी**—वि० (सि०) शत्रु।
**बोयस**—स्त्री० (सि०) बहस।
**बोयस**—स्त्री० (सो०) चैत्र मास में बोये जाने वाले धान की बीजाई की एक किस्म, जो ऊंचे स्थानों पर की जाती है। इस प्रकार बोए गए धान वर्षा पर ही निर्भर करते हैं।
**बोर**—पु० (सि०, सो०) मोटा घास।
**बोर**—पु० चांदी का छोटा घुंघरू।
**बोरका**—पु० पृष्ठ, पन्ना।
**बोरखा**—स्त्री० वर्षा।
**बोरटू**—पु० (शि०) छोटी बोरी।
**बोरती**—वि० (सि०) व्रत करने वाली, व्रती।
**बोरा**—पु० (शि०) व्यापारी।
**बोरा**—पु० बड़ी बोरी।
**बोराड़ियो**—पु० (सि०) एक पौधा विशेष।
**बोरु**—पु० छोटी बोरी।
**बोरु**—पु० (कु०) लंबी यात्रा में रास्ते के खर्च के लिए या कहीं अन्यत्र ठहरने पर खाने के लिए ले जाया गया आटा, अन्न आदि।
**बोर्नो**—स० क्रि० (सि०) भरना।
**बोल**—पु० वाक्य, बोल, शब्द, वचन।
**बोल**—पु० (शि०) बल।
**बोलगोम**—पु० बलगम।
**बोलणा**—अ० क्रि० बोलना।
**बोळद**—पु० (सो०) बैल।
**बोला**—पु० (सो०) कही गई बात, आज्ञा, नसीहत।
**बोळा**—वि० (सो०) भोला।
**बोळा**—वि० बहरा।
**बोली**—स्त्री० मातृभाषा, बोली।
**बोळी**—स्त्री० ताजी ब्याही भैंस का पहले दिन का दूध।
**बोळी**—वि० (कां०) सफेद मुंह वाली (गाय आदि)।
**बोळी**—स्त्री० (मं०) युवा गाय।
**बोलू**—पु० (मं०) युवा बैल।
**बोलू**—वि० (सि०) दूधिया रंग का बैल।

**बोल्ब**—पु० लट्टू, बल्ब।
**बोशकाल**—पु० (सि०) बरसात।
**बोशाओ**—पु० (सि०) वैशाख।
**बोसा**—पु० चुंबन।
**बोसी**—वि० (मं०) ऐसा व्यक्ति जिसे खाने, पहनने व बातचीत करने का ज्ञान न हो।
**बोसी**—वि० (कां०) पर्वतीय अंचल में रहने वाला।
**बोहगना**—पु० (चं०) बड़ा पतीला।
**बोहची**—पु० (शि०) पशु।
**बोहड़**—स्त्री० ऊपर की मंज़िल।
**बोहन**—पु० (चं०) Ficus corymbosa.
**बोहली**—स्त्री० (कां०) मधुमक्खी का डंक।
**बोहार देणा**—अ० क्रि० तैरना।
**बोहारिया**—पु० (मं०) व्यापारी।
**बोहुत**—वि० बहुत, अधिक।
**बोहू**—वि० (कु०) बहुत, अधिक।
**बोहू**—पु० (कु०) एक विषैला घास।
**बोहटी**—स्त्री० पत्नी, नवविवाहिता।
**बोहणा**—अ० क्रि० बैठना।
**बौं**—स्त्री० (सि०, सो०) भृकुटि।
**बौंकरा**—पु० (कां०) एक घास विशेष।
**बौंकरी**—स्त्री० मोटे तिनकों या घास का झाड़ू।
**बौंगड़ी**—स्त्री० (चं०) चूड़ियां।
**बौंगड़ी**—स्त्री० आलिंगन, भुजा में भुजा डालने की क्रिया।
**बौंगा**—वि० (सो०) बदशक्ल, मूर्ख।
**बौंछ**—स्त्री० छायादार स्थान।
**बौंटलू**—पु० (कां०) बारीक बांस।
**बौंद**—पु० (कु०) हाथ में पहनने का चौड़ी पट्टी का चांदी का आभूषण।
**बौंद**—वि० (कु०, शि०) बंद।
**बौंदणा**—स० क्रि० (कु०) वंदना करना।
**बौंदलणा**—अ० क्रि० (कां०) उद्विग्न होना।
**बौंरा**—पु० (सो०) भौंरा।
**बौंरा**—वि० बौखलाया हुआ।
**बौंसणा**—अ० क्रि० गरजना।
**बौंहकरी**—स्त्री० (कां०, बि०) झाड़ू।
**बौंहदी**—स्त्री० (ह०) कृषि योग्य भूमि।
**बौःद**—पु० (कु०) किनारा।
**बौःदलाणा**—स० क्रि० (कु०) आरंभ करना।
**बौःणा**—अ० क्रि० (सि०) बैठना।
**बौःणो**—अ० क्रि० (शि०) बहना।
**बौअरी**—वि० (शि०) शत्रु, दुश्मन।
**बौईछ**—पु० (कु०) बच्चा।
**बौउद**—पु० (कु०) बैल।
**बौकरा**—पु० (कु०) बकरा।
**बौकरी**—स्त्री० (कु०) बकरी।
**बौकी**—स्त्री० (कु०) पैर में जमी मैल।
**बौक्त**—पु० (कु०) समय, वक्त।
**बौगड़ा**—पु० (कु०) एक प्रकार का घास।
**बौगड़ा**—वि० (कु०) चावल तथा गेहूं को छोड़कर अन्य अनाज।
**बौगमा**—पु० (शि०) पानी का पात्र विशेष।
**बौगल्याळा**—पु० (चं०) विवाहादि में मनोनीत खज़ांची।
**बौगा**—पु० (कु०) खेत से पानी निकालने के लिए बनाई गई नाली।
**बौगुण**—स्त्री० (कां०) बिंदियां बनाने का उपकरण।
**बौगोत**—पु० (शि०) समय।
**बौचणा**—अ० क्रि० (कु०) बचना।
**बौछाड़**—स्त्री० (शि०) वायु के झोंकों के साथ आई वर्षा।
**बौछी**—स्त्री० (कु०) बछिया।
**बौछू**—पु० (कु०) बछड़ा।
**बौटण**—पु० (कु०, शि०) बटन।
**बौटुआ**—पु० (कु०, शि०) बटुआ।
**बौठणा**—अ० क्रि० (शि०) सवार होना, बैठना।
**बौठा चौथ**—स्त्री० (बि०) बहुला चौथ।
**बौठिया**—वि० (शि०) सुंदर।
**बौड़**—स्त्री० ऊपर की मंज़िल।
**बौड़णा**—अ० क्रि० (शि०) बढ़ना।
**बौड़ना**—अ० क्रि० (बि०) प्रवेश करना।
**बौड़ा**—पु० (कु०) माश का 'बड़ा'।
**बौड़ी**—स्त्री० (कु०) बड़ी।
**बौड़ी**—स्त्री० बावली।
**बौड़ी**—स्त्री० (शि०) पीठी की बड़ियां।
**बौड्डू**—पु० छोटी बावली।
**बौढ़ना**—अ० क्रि० (सि०) लौटना, पहुंचना।
**बौण**—स्त्री० (शि०) ममेरी बहिन।
**बौण**—पु० (सि०) देवभवन।
**बौणा**—वि० बौना।
**बौणा**—अ० क्रि० (सो०) बहना।
**बौणा**—पु० (शि०) एक वनस्पति।
**बौत**—वि० अधिक।
**बौत**—पु० (कु०, मं०) मार्ग, रास्ता।
**बौता**—पु० (कु०) नमक आदि पीसने का पत्थर।
**बौतारा**—वि० (सि०) बातूनी।
**बौती**—स्त्री० (कु०) बत्ती। धुले हुए माश को शिला पर पीसने के लिए प्रयुक्त गोल पत्थर।
**बौदकी**—स्त्री० (कु०) विशिष्ट बात, नई बात।
**बौदला**—पु० (कु०) बदला।
**बौदे**—स्त्री० (शि०) इल्ज़ाम।
**बौधणा**—अ० क्रि० (कु०) बढ़ना, आगे बढ़ना।
**बौब्रू**—पु० (कु०) दे० बबरू।
**बौमरना**—अ० क्रि० (कु०) मुंह फूलना।
**बौर**—पु० आम की मंजरी।
**बौर**—पु० (कु०) वरदान।
**बौर**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) भेड़ों से ऊन काटने की क्रिया; ऊन काटने का पारिश्रमिक।
**बौरझ**—स्त्री० (कु०) शरीरिक वृद्धि।

**बौरझणा**—अ० क्रि० (कु०) शरीर का बढ़ना।
**बौरना**—स० क्रि० (कु०) छोटी आयु में ही लड़की को किसी छोटे लड़के के साथ विवाह के लिए नियत करना जिनका बाद में विवाह हो जाता है।
**बौरना**—स० क्रि० भेड़ की ऊन काटना।
**बौरना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) लूटना।
**बौरा**—वि० (मं०) पागल।
**बौरु**—पु० (कु०) आटा-दाल।
**बौर्ष**—पु० (कु०) वर्ष।
**बौर्षगांठ**—स्त्री० (कु०) वर्षगांठ।
**बौल**—पु० (कु०) अभ्यास।
**बोळ**—स्त्री० खुजली।
**बौलद**—पु० (कु०) बैल।
**बौलिणा**—अ० क्रि० (कु०) अभ्यस्त होना।
**बौळी**—वि० (कु०) बली।
**बौळी**—स्त्री० बावली।
**बौलीणा**—अ० क्रि० पागलपन में भाग जाना।
**बौलीदेणा**—स० क्रि० व्यर्थ की बात करना, गाली निकालना।
**बौसणा**—अ० क्रि० (कु०) बसना, विवाह करना।
**बौहटो**—पु० (मं०) पति।
**बौहड़ी**—स्त्री० (कां०, ह०) चौबारा।
**बौहली**—स्त्री० (सि०) घी की तलछट में बचा पदार्थ।
**बौहश**—पु० (कु०, शि०) फेफड़ा।
**बौही**—स्त्री० (कु०) पीठ पर उठाया जाने वाला बोझ।
**बौहणा**—अ० क्रि० बैठना।
**बौहळ**—स्त्री० बेहोशी में बोलने की बीमारी।
**बौहळी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) नई ब्याई गाय या भैंस का पहले दिनों का दूध।
**ब्यताई**—स्त्री० (बि०) नपाई।
**ब्यांग**—स्त्री० लंबे रेशे वाली ऊन जो तिब्बती भेड़ों की हुआ करती थी।
**ब्यांगणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) पीटना, तंग करना; जकड़ना।
**ब्यांगी**—स्त्री० भेड़ों की एक किस्म जो तिब्बत से आती थी।
**ब्यांजी**—पु० (बि०) आम को उबाल कर निकाले गए रस का बनाया गया खट्टा-मीठा घोल।
**ब्याः**—पु० विवाह।
**ब्याःणा**—अ० क्रि० (सो०) रात का बीतना, सुबह होना।
**ब्याःणु**—पु० (सो०) सुबह के समय का तारा।
**ब्याःवणा**—स० क्रि० (सो०) संतान का विवाह करवाना।
**ब्याउणा**—अ० क्रि० (सो०) विवाह किया जाना।
**ब्याट**—पु० (कां०) अंगड़ाई, ठंड से हुई सिकुड़न।
**ब्याट**—पु० नाराज़गी।
**ब्याड**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) कुएं पर रखी पानी भरने के लिए प्रयुक्त लकड़ी।
**ब्याड़**—स्त्री० (चं०) किनारा, खेत का किनारा।
**ब्याड़**—स्त्री० (कां०) कुएं आदि के चारों ओर की दीवार जिस पर घड़े को रखकर उठाया जाता है।
**ब्याड़ा**—पु० अंदाज़ा, तरकीब।
**ब्याड़ी**—स्त्री० (कु०) बिवाई।
**ब्याळबळणी**—स० क्रि० ताना मारना।
**ब्याणा**—अ० क्रि० (सो०) विवाह करना।
**ब्याद**—स्त्री० (शि०) व्याधि, बीमारी।
**ब्याध**—स्त्री० (कु०) झंझट, बीमारी।
**ब्यान**—पु० बयान, गवाही।
**ब्याना**—पु० अग्रिम धनराशि, बयाना।
**ब्यापणा**—अ० क्रि० (सो०) व्याप्त होना, फैलना।
**ब्यापणा**—अ० क्रि० (कु०) उपलब्ध होना।
**ब्यापुणा**—अ० क्रि० (सो०) व्याप्त किया जाना। तंग करना।
**ब्याम**—पु० (कां०, चं०) मरतबान।
**ब्यारना**—अ० क्रि० अंगड़ाई लेना।
**ब्यारना**—स० क्रि० (कु०) नकल उतारना।
**ब्याळ**—स्त्री० (शि०) शाम।
**ब्याळकी**—वि० (शि०) बासी।
**ब्याली**—स्त्री० शाम का भोजन।
**ब्याशदाणा**—स० क्रि० (सि०) विवाह की तिथि निकलवाना।
**ब्याह**—पु० (कु०) विवाह।
**ब्याहणा**—स० क्रि० (कु०) विवाह करना।
**ब्याहता**—वि० विवाहिता।
**ब्याहरी**—वि० (सि०) टेढ़ी गर्दन वाली।
**ब्याहिणा**—अ० क्रि० (कु०) विवाह किया जाना।
**ब्याहू**—पु० (कु०) पति।
**ब्यूंतड़**—स्त्री० बड़ी भैंस।
**ब्यूंस**—पु० (सो०) एक वृक्ष विशेष Salix alba.
**ब्यूआ**—पु० (कां०) मकान का एक भाग।
**ब्यूनी**—स्त्री० (ह०) देसी खाद।
**ब्यूहल**—पु० एक वृक्ष विशेष जिसके रेशे से रस्सी बनती है।
**ब्योचना**—स० क्रि० (शि०) कपड़े सीने हेतु नाप लेना।
**ब्योचाना**—स० क्रि० (शि०) शरीर के नाप के अनुसार कपड़ा कटवाना।
**ब्योहार**—पु० (शि०) रुपये आदि का लेन-देन।
**ब्रडोंगिणा**—अ० क्रि० (शि०) पानी न मिलने से गला सूख जाना।
**ब्रण**—पु० (मं०) एक रोग जिसमें बुखार के साथ शरीर पर लाल दाने निकलते हैं।
**ब्रदरोल**—पु० (कां०, चं०) Machilus duthie.
**ब्रस्सर**—वि० तगड़ा।
**ब्रहमज़ीरी**—स्त्री० सौंफ की तरह का एक पौधा जो औषधि के काम आता है।
**ब्रहमी**—स्त्री० पानी के किनारे उगने वाली चौड़े पत्तों वाली लाभकारी जड़ी-बूटी।
**ब्रागण**—स्त्री० (सो०) बाघिन।
**ब्राघ**—पु० व्याघ्र।
**ब्राड़ा**—पु० (शि०) मांस आदि काटने का लोहे का उपकरण।
**ब्राढ़ळै**—वि० (शि०) भेड़ों को जंगल में चुगाने वाले।
**ब्राढ़ाळ**—पु० (शि०) भेड़ों को रखने के लिए बनाया कमरा।

**ब्रास**—पु० (सो०) एक सदाबहार पहाड़ी वृक्ष जिसमें बसंत ऋतु में गहरे लाल रंग के फूल लगते हैं।
**ब्रूंगणा**—अ० क्रि० (सो०) बाघ आदि का गुर्राना।
**ब्रूआं**—स्त्री० (कां०, कु०) खड्डी में लगी तारों या धागों वाली चार जालियां जिनमें ताने के धागे फंसाए जाते हैं।
**ब्रून**—पु० (कु०, मं०) Nepeta elliptica.
**ब्रूशणा**—स० क्रि० (सो०) लापरवाही से छीनना।
**ब्रूशाब्राशि**—स्त्री० (सो०) लापरवाही से तोड़ने का व्यापार, छीना-झपटी।
**ब्रेडला**—पु० (सि०) Cordia Vestita. लसोढ़ा।
**ब्रेवणा**—स० क्रि० (सो०) गोबर साफ करना।
**ब्लाग**—स्त्री० (कु०) देर।
**ब्लागणा**—अ० क्रि० (कु०) देर करना।
**ब्लागिणा**—अ० क्रि० (कु०) देर होना।
**ब्वाळ**—पु० (शि०, बि०) उबाल।

## भ

**भ**—देवनागरी वर्णमाला में पवर्ग का चौथा वर्ण। उच्चारण स्थान ओष्ठ।
**भंखर**—वि० (कां, सो०) भयानक।
**भंखार**—पु० (शि०) सुखाने के लिए अनाज को बिखेरने का भाव।
**भंग**—स्त्री० भांग।
**भंगज़ीरे**—स्त्री० (शि०) एक प्रकार का अनाज जिसे रोटी के अंदर डाल कर पकाया जाता है।
**भंगड़**—वि० (कां०) भांग पीने वाला।
**भंगड़ा**—पु० (चं०) हिंडोला।
**भंगरू**—पु० (कां०) आम आदि के वृक्ष पर उगने वाली वनस्पति विशेष जो औषधि के काम आती है।
**भंगाल**—वि० (चं०) कंगाल।
**भंगी**—वि० भांग पीने वाला।
**भंगेलना**—स० क्रि० उलझाना।
**भंगोळू**—पु० भांग के पौधे पर लगने वाले दाने जिन्हें भूनकर खाया जाता है।
**भंच्चाल**—पु० (सि०) भूकंप, भूचाल।
**भंजरीतो**—पु० (शि०) शुद्वि।
**भंड**—वि० भांड, विवाह में नाचने वाला, निर्लज्ज।
**भंड**—पु० (मं०) अनाज का भंडार।
**भंडरोणा**—अ० क्रि० बेहोश होना।
**भंडहड़ी**—पु० (मं०) तीन वर्ष उपरांत किया जाने वाला मुंडा यज्ञ।
**भंडार**—पु० भंडार।
**भंडार**—पु० (कां०, चं०) जंगली मधुमक्खी।
**भंडारगी**—स्त्री० (मं०) शिवरात्रि से पंद्रह दिन पूर्व मनाया जाने वाला त्योहार।
**भंडारा**—पु० वह स्थान जहां देवता का सारा सामान रखा जाता है। यज्ञ।
**भंडारी**—पु० (कु०) देवता का सामान सुरक्षित रखने वाला व्यक्ति, भंडार का स्वामी।
**भंडाल**—पु० (शि०) एक बड़ा पात्र जिसमें अनाज भूना जाता है।
**भंडेरना**—स० क्रि० (चं०) अनाज का भंडारण करना।
**भंडेसर**—पु० जूठे पात्रों का ढेर।
**भंडोर**—पु० (बि०) ऊन या सूत के धागों का बनाया गया गोला।
**भंफर**—पु० (मं०) कंधा।
**भंबणा**—अ० क्रि० (कु०) ज़ोर से बोलना।
**भंबरो**—स्त्री० (सो०) मधुमक्खी की एक प्रजाति।
**भंबलेरना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०) भ्रमित करना।
**भंबलोणा**—अ० क्रि० (कां०) भ्रमित होना।
**भंबेरा**—स्त्री० (सो०) दे० भंबरो।
**भंबेली**—स्त्री० (सि०) भिल्लोट नामक वृक्ष।
**भंभ**—पु० ज़ोर की आवाज़।
**भंभकाणा**—स० क्रि० (चं०, सि०) तेज़ आग जलाना।
**भअश**—पु० (सि०) फेफड़ा।
**भइंश**—स्त्री० (शि०) भैंस।
**भइते**—वि० (शि०) बहुत।
**भई**—अ० किसी को पुकारने के लिए प्रयुक्त शब्द, संबोधन शब्द।
**भईचा**—पु० (सि०) भतीजा।
**भईता**—वि० (सि०) बहुत।
**भईदा**—अ० (सि०) नीचे से।
**भकड़ाण**—स्त्री० (सि०) ज़्यादा बोलने का भाव।
**भकडाना**—पु० मिट्टी के ढेले तोड़ने के लिए बना लकड़ी का उपकरण।
**भकनौली**—स्त्री० (मं०) गिलहरी।
**भकाइणा**—स० क्रि० (कु०) आग को जलाया जाना।
**भकाई**—स्त्री० तंग करने का भाव।
**भकाणा**—स० क्रि० बहकाना।
**भकीला**—वि० (शि०) चमकीला।
**भकैन**—स्त्री० अनाज के गीलेपन से आने वाली गंध।
**भकोणा**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) धूल आदि से भर जाना।
**भक्षणा**—स० क्रि० (शि०) भोजन करना, खाना।
**भख**—स्त्री० (चं०) वाष्प।
**भखट्टे**—स्त्री० (कां०) पलकें।
**भखणा**—अ० क्रि० (कां०, चं०) जलना।
**भखणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) खाना।
**भखणा**—अ० क्रि० गर्म होना।
**भखणी**—स्त्री० (सि०) 'फेगड़े' के फल।
**भखना**—अ० क्रि० (चं०) चमकना।
**भखयारु**—वि० भिखारी।
**भखलबेल**—स्त्री० (कां०) शुकनासा, भखयारु।
**भखाड़ा**—जम्बूपलासिका।
**भखाणा**—स० क्रि० (कां०) जलाना।
**भखारी**—वि० भिखारी।
**भखीड़**—स्त्री० (कां०) भूख के कारण पेट में होने वाली पीड़ा।
**भखोर**—वि० (शि०) भिखारी।

**मगणा**—अ० क्रि० (कु०) जाना।
**मगत**—पु० एक प्रसिद्ध लोकनाट्य जिसे खुले में आग जला कर रात को खेला जाता है।
**मगत**—स्त्री० (चं०) मेढ़े या बकरे की बलि।
**मगत**—पु० भक्त।
**मगताणा**—स० क्रि० भुगताना, चुकाना, अदा करना।
**मगतिया**—पु० भगत लोकनाट्य में हिस्सा लेने वाला कलाकार।
**मगतेहरू**—पु० (चं०) बलि का पशु।
**मगदड़**—स्त्री० शोरशराबा, भागने का व्यापार।
**मगमनरी**—स्त्री० (मं०) कांस्य पात्र।
**मगमी**—वि० मगवें रंग का।
**मगयाल**—वि० (कु०, बि०) एक वंश का, एक ही वंश के (व्यक्ति)।
**मगवान**—पु० परमेश्वर।
**मगाइणा**—स० क्रि० (कु०) भगाया जाना।
**मगाउणा**—स० क्रि० (शि०) हरना, हरण कर लेना, भगाना।
**मगाणा**—स० क्रि० भगाना।
**मगुआं**—वि० भगवा।
**मगेयोणा**—स० क्रि० (सि०) भिगोना।
**मगैड़**—पु० जंगली भेड़िया।
**मगोड़**—स्त्री० अफवाह।
**मगोड़ा**—वि० भागा हुआ, भगौड़ा।
**मग्गर**—वि० (चं०) बाहर से अच्छा किंतु अंदर से सड़ा (वृक्ष)।
**मग्गा-बोलणा**—अ० क्रि० (कां०) हार स्वीकार करना।
**मचकणा**—अ० क्रि० (कां०) सहमना, डरना।
**मचका**—पु० (कां०) डर।
**मचवक**—वि० (कां०) विस्मित।
**मचयाखणा**—स० क्रि० (सि०) टकटकी लगाकर देखना।
**मचा**—वि० (कां०) अशिष्ट, बचकानी हरकतें करने वाला।
**मचाड़ी**—स्त्री० (ह०) सुहागे की दो रस्सियां जो जुए के साथ जोड़ी जाती हैं।
**मचात**—वि० अस्थिर बुद्धि वाला, ऐसा व्यक्ति जो कहीं टिक कर न बैठे।
**मच्च**—पु० (कां०) एक पतले आकार का टेढ़ा सुहागा।
**मच्वाका**—पु० (बि०) किसी मनुष्य को पहचानने पर लगा धक्का।
**मच्छणा**—स० क्रि० (सि०) खा लेना।
**मछ**—पु० (मं०) भक्ष, भोजन।
**मछणा**—स० क्रि० निर्दयता से खाना, मरे पशु का कुत्तों या गिद्धों द्वारा खाया जाना।
**मछोया**—वि० (बि०) तार-तार, फटा हुआ।
**मजंगड़**—वि० (मं०) मस्त।
**मजड़**—वि० (बि०) टूटे-फूटे (पात्र)।
**मजणा**—अ० क्रि० (कां०) टूटना। स० क्रि० भजन करना।
**मजन**—पु० पूजा, भजन, आरती के गीत।
**मजनो**—स० क्रि० (शि०) स्मरण करना।
**मजांदू**—वि० (कु०) दुलहन के साथ जाने वाला।
**मजाणा**—स० क्रि० (कु०) पहुंचाना।
**मजाणा**—स० क्रि० भिजवाना।
**मजैणी**—स्त्री० (शि०) पहेली।
**मजोरा**—वि० (चं०) टूटा हुआ।
**मझाड़ी**—स्त्री० (चं०) कमरों को दो भागों में विभाजित करने के लिए लगाई दीवार।
**मटंगा**—पु० (सि०) एकदम काटने की क्रिया।
**मटंड**—पु० ठोकर, गलती।
**मट**—पु० (चं०) मिट्टी का बना हुआ बड़े आकार का पात्र।
**मटक**—स्त्री० (कु०) चिंता।
**मटाण**—पु० (बि०) मिट्टी के ढेले तोड़ने का लकड़ी का उपकरण विशेष।
**मटाबरू**—पु० (मं०) मेवे से बना एक पकवान विशेष।
**मटीरा**—वि० (मं०) संपन्न।
**मटूरू**—स्त्री० खमीर डालकर बनाई गई गेहूं की मोटी रोटी।
**मटैड़**—पु० (कां०) ब्राह्मणों का एक वर्ग विशेष।
**मट्ट**—पु० (कां०) राजाओं की प्रशंसा में गीत गाने वाले भाट।
**मट्टकणा**—अ० क्रि० (बि०) भटकना।
**मट्टा**—पु० (सो०, बि०) बैंगन।
**मट्टाल**—पु० (शि०) 'भरठ' के आटे से बनाया गया पकवान।
**मट्टालो**—पु० (शि०) 'भरठ' का अनाज।
**मट्टी**—स्त्री० (चं०) इधर-उधर भटकने की क्रिया।
**मट्टी**—स्त्री० (ह०) छोटा यज्ञ।
**मट्टीठो**—पु० (शि०) 'भरठ' अनाज के आटे की चटनी।
**मट्ठा**—पु० ईंट पकाने का बड़ा अलाव।
**मठ**—पु० भट्ठा।
**मठा**—पु० बैंगन।
**मठारा**—पु० (शि०) बंधुआ मज़दूर।
**मठीणा**—अ० क्रि० (चं०) संगठित होना।
**मडंत**—वि० (मं०) पागल।
**मड़क**—स्त्री० (शि०) चमक-दमक।
**मड़कणा**—अ० क्रि० जलना, क्रोधित होना, ईर्ष्या करना।
**मड़कणा**—अ० क्रि० (कु०) अकेले में बोलना, बड़बड़ाना।
**मड़का**—स्त्री० भूख, अत्यधिक काम।
**मड़काइणा**—स० क्रि० (कु०) भड़काया जाना।
**मड़काणा**—स० क्रि० भड़काना।
**मड़कोणा**—अ० क्रि० गुस्से होना, जल जाना।
**मड़छा**—पु० (कां०) टुकड़ा।
**मड़छेलुआहणा**—स० क्रि० (कां०) टुकड़े-टुकड़े करना।
**मड़धूड़**—पु० मसान भस्म।
**मड़मड़ात**—पु० (बि०) अपच के कारण पेट में होने वाली गड़बड़ी।
**मड़भूजा**—वि० जोशीला।
**मड़याइणा**—अ० क्रि० (कु०) टकरा जाना, सींगों से लड़ना।
**मड़याणा**—स० क्रि० (कु०) दो बैलों या पशुओं को सींगों से लड़ाना।
**मड़यान**—पु० (चं०) शास्त्र-तराशी।
**मड़यास**—स्त्री० (चं०, बि०) प्यास, बीमारी की दशा में लगी अधिक प्यास।
**मड़ाका**—पु० (सि०) उबासी, जम्हाई।

**मड़ाका**—पु० (सो०) फूटने या पीटे जाने की ध्वनि।
**मड़ाका**—पु० एकदम आग लगने का भाव।
**मड़ाथर**—पु० (कु०) दीवार बनाने हेतु प्रयोग में लाए जाने वाले बारीक पत्थर।
**मड़ाल**—स्त्री० (शि०) भेड़।
**मड़ाश**—स्त्री० (सि०) खाने की इच्छा।
**मड़ाश**—स्त्री० (सो०) झुलसन।
**मड़ास**—स्त्री० शरीर की भीतरी गर्मी; गुबार, तमन्ना।
**मड़ास**—पु० (कु०) आग की लपट।
**मड़ास**—स्त्री० (सो०) जलन, लिप्सा।
**मड़ासणा**—स० क्रि० (कु०) जला देना।
**मड़ासिणा**—अ० क्रि० (कु०) जल जाना।
**मड़ींगणी**—स्त्री० (कु०) भेड़-बकरी की मेगनी।
**मड्डुआ**—पु० वधू-प्रवेश उपरांत दिया गया भोज।
**मड्डुआ**—वि० (शि०) सपरदाई, रंडियों की दलाली करने वाला।
**मड़ू**—पु० (मं०) ग्रीष्म ऋतु में खेत में उगने वाला विशेष घास।
**मड़ेड़**—पु० (मं०) दे० मड़ींगणी।
**मड़ेली**—स्त्री० (ह०) मेमनी।
**मड़ैसन**—पु० (बि०) काम-काज।
**मड़ोली**—स्त्री० आटा डालने का पात्र जो प्रायः लुगदी का बनाया जाता है।
**मड़ौटा**—पु० (बि०) कृषि कार्य में प्रयुक्त यंत्र जो पूरा लकड़ी का बना होता है तथा आगे से भारी होता है और मिट्टी के ढेले तोड़ने के काम आता है।
**मड्डू**—पु० दाल पकाने का एक पात्र जो गोल आकार का होता है।
**मणाक**—स्त्री० भनक, उड़ती हुई खबर, अस्पष्ट ध्वनि।
**मणाकणा**—अ० क्रि० क्रोधित अवस्था में व्यर्थ की बातें करना।
**मणाकावणा**—स० क्रि० (सो०) तेज़ आग जलाना, तेजी से फेंकना।
**मणाक्वाणा**—स० क्रि० (सि०) तेज़ चलाना।
**मणाजो**—पु० (मं०) असौज की छठी तिथि को मनाया जाने वाला मेला।
**मणाड़**—पु० (चं०) टूटी वस्तु।
**मणाना**—स० क्रि० (चं०) बोलना, स्पष्ट कह देना।
**मणायांद**—पु० कुआं या बावली जहां से गा० के लोग पीने के लिए पानी ले जाते हैं।
**मणायाता**—पु० (मं०) देवता का 'गूर'।
**मणागा**—पु० (कु०) पट्टू की 'बुमणी' का धागा।
**मणाट**—पु० (कु०) गर्मी के कारण हुई व्याकुलता।
**मणी**—स्त्री० (कां०) रट।
**मणोआ**—पु० बहनोई।
**मणोई**—पु० जीजा, बहनोई।
**मणोजी**—स्त्री० (चं०) भानजी।
**मतपुरा**—पु० (मं०) मुंडे से डेढ़ वर्ष उपरांत लगने वाला भुंडा आपूर्ति यज्ञ।
**मतभुजड्डु**—पु० (चं०) विशेष अवसर पर घर से बाहर बनाया और खाया गया भोजन।
**मतभुज्जी**—स्त्री० अरवी, कचालू के पत्तों की भातमिश्रित सब्जी।
**मतर**—वि० (मं०) बहत्तर।
**मतवाड़ी**—स्त्री० (चं०) भात देने की कटोरी।
**मताड़ा**—पु० (कां०) बांस का बड़ा टोकरा जिसमें उबले हुए चावल डाले जाते हैं।
**मताणी**—स्त्री० (चं०) मांड़ को अलग करने का पात्र।
**मतारा**—पु० (चं०) चावल रखने का पात्र।
**मताला**—पु० (चं०) भात को हिलाने का उपकरण।
**मतीजौ**—पु० (कु०) भतीजा।
**मतुआर**—स्त्री० (कां०) केवल मिट्टी का गारा भर कर बनाई गई बिना ईंटों की दीवार।
**मतुज्जी**—स्त्री० (कां०) दे० भतभुज्जी।
**मतेरना**—स० क्रि० पागल करना, पागल बनाना।
**मतेरा**—वि० बहुत।
**मतैहड़ा**—पु० (चं०) एक विशेष प्रकार का लकड़ी का पात्र जिससे विवाह आदि में भात परोसा जाता है।
**मतोणा**—अ० क्रि० पागल होना। मचलना।
**मतोरड़**—वि० पागल।
**मतोळी**—स्त्री० (ह०) भात का दाना।
**मतोळी**—स्त्री० (कां०) कुकुरमुत्ता की तरह की एक सब्जी।
**मतौड़ी**—स्त्री० (कां०) मस्ती।
**मत्त**—पु० पके हुए चावल, भात।
**मत्तकाहड्डू**—पु० (कां०) देग से भात निकालने का लोहे का उपकरण।
**मथ**—स्त्री० (चं०) कोठे की दीवार।
**मथेरा**—वि० दे० भतेरा।
**मदरक्की**—स्त्री० कल्याण, भलाई।
**मदरां**—स्त्री० भद्रा तिथि; योगिनी दशा के अंतर्गत पांचवीं दशा।
**मदरा**—स्त्री० किसी के मरने पर परिजनों द्वारा करवाया जाने वाला मुंडन।
**मदरून**—पु० (ऊ०, कां०) कंटकी।
**मदरोल**—पु० (सि०) Phoebe lanceolata.
**मद्र**—पु० भाद्रपद।
**मनक**—स्त्री० (चं०) आभास।
**मनड़ी**—स्त्री० (मं०) पतझड़।
**मनणा**—स० क्रि० (सि०) तोड़ना।
**मनवाड़ा**—पु० (सि०) मक्की भूनने की क्रिया।
**मनाइण**—पु० (कु०) पूला बांधने के लिए बनाई जाने वाली घास की रस्सी।
**मनाई**—स्त्री० तोड़ने की क्रिया; तोड़ने का पारिश्रमिक।
**मनार**—पु० (चं०) पत्थर आदि तोड़ने वाला।
**मनारटी**—स्त्री० (शि०) ऐसी लकड़ी जो जल्दी जलती है।
**मनाले**—स्त्री० (मं०) छाछ।
**मनियारी**—वि० पानी भरने वाली।
**मनेज**—पु० परहेज़।
**मनेज़**—पु० (कु०) उपचार।
**मनौढ़ी**—स्त्री० (चं०) काम पर न आने का भाव।
**मनौण**—पु० (सि०) मधुमक्खियों का छत्ता।

**मनौर**—पु० मधुमक्खियों का झुंड।

**मनौर**—पु० (कु०) विशेष जहरीली मधुमक्खियां जो अन्य मधुमक्खियों से अधिक शहद देती हैं।

**मन्न**—पु० शिकन।

**मन्नण**—पु० (कां०) विघ्न, रुकावट, काम।

**मन्नणा**—स० क्रि० तोड़ना, किसी को रास्ते पर लाना।

**मपूंगर**—पु० एक घास विशेष।

**मप्फा**—पु० (कां०) बालों में पैदा होने वाली रूसी।

**मबकणा**—अ० क्रि० (सो०) जोर से जलना, उबलना।

**मबकणा**—अ० क्रि० (चं०) उछलना, गुर्राना।

**मबका**—पु० चौड़े मुंह का लोटा, अर्क खींचने का यंत्र।

**मबका**—पु० (सो०) उबाल।

**मबणा**—अ० क्रि० (सि०) बढ़-चढ़ कर बोलना।

**मबलेरना**—स० क्रि० गर्म राख या अंगारों में किसी सब्जी आदि को थोड़ा भूनना।

**मब्ब**—अ० (ऊ, कां०, ह०) कुत्ते के भौंकने का स्वर।

**मब्बणा**—अ० क्रि० (कां०) कुत्ते का भौंकना।

**ममक**—स्त्री० (चं०) गर्जन।

**ममक**—पु० (शि०) उबाल।

**ममकी**—स्त्री० (शि०) झूठी धमकी।

**ममकाणा**—स० क्रि० (सि०) तेज़ आग जलाना।

**ममणा**—अ० क्रि० (चं०) भटकना।

**ममणा**—स० क्रि० (चं०) तोड़ना।

**मम्यारो**—स्त्री० (मं०) भ्रामरी, वर्षा-बाढ़ की देवी।

**मयांकणा**—अ० क्रि० (सि०) पात्र का शब्द करना।

**मयाऊं**—अ० (कु०) निचली ओर, नीचे।

**मयाग**—स्त्री० प्रातःकाल, सुबह।

**मयागत**—पु० अतिथि के रूप में आया हुआ, भिखारी।

**मयागा**—अ० प्रातः के समय।

**मयास**—पु० अभ्यास।

**मयासिणा/णो**—अ० क्रि० (कु०, शि०) अभ्यस्त होना।

**मयासुणा**—अ० क्रि० (सो०) अभ्यास पड़ना, आदी होना।

**मयूली**—स्त्री० (बि०) एक कंटीली झाड़ी।

**मरंत**—स्त्री० (शि०) भ्रान्ति, संदेह।

**मरंदो**—वि० (शि०) भरा हुआ।

**मर**—पु० (मं०) झाड़ू।

**मरउवालु**—पु० (मं०) स्लेटी रंग के गोल-गोल पंजे वाले कीड़े जो कानों में घुसते हैं।

**मरख**—पु० (कां०, चं०) अभ्रक।

**मरचक्का**—पु० (चं०) जोर का चांटा।

**मरजाई**—स्त्री० (ह०) भाभी।

**मरठ**—पु० (शि०) सोयाबीन की तरह के छोटे दाने का अनाज जिसे भून कर भी खाया जाता है तथा इसका पशुओं के लिए उत्तम चारा भी बनता है।

**मरड़णा**—स० क्रि० (सि०) खाना।

**मरड़याणा**—अ० क्रि० जोर-जोर से बोलना, चीखते हुए गला मोटा हो जाना।

**मरड़ैण**—स्त्री० (कां०) ऊन या बालों आदि के जलने की गंध।

**मरड़ोणा**—क्रि० (बि०) कम खर्चे से विवाह करना, अपने माता-पिता की मर्ज़ी के खिलाफ विवाह करना।

**मरढ़ोणा**—अ० क्रि० झुलसना, अधिक धूप से तपना।

**मरणा**—स० क्रि० (चं०) भरना।

**मरणा**—स० क्रि० (सि०) शीशे की फ्रेम लगाना।

**मरता**—पु० (चं०) पति।

**मरती**—स्त्री० (कु०, बि०) सेना में भरती किसी गहरे स्थान को बराबर करने के लिए मिट्टी आदि डालने का व्यापार।

**मरथ**—पु० (ऊ०, कां०) कांस्य।

**मरथी**—स्त्री० (चं०) दीवारों में डाले जाने वाले छोटे पत्थर।

**मरना**—स० क्रि० (मं०) लंबाई-चौड़ाई मापना, अनाज को मापना, भरना।

**मरपत्ती**—पु० (बि०) वृहस्पतिवार।

**मरपाल**—पु० एक वृक्ष विशेष।

**मरम**—पु० भ्रम, शक।

**मरमावणो**—स० क्रि० (शि०) चकमा देना।

**मरमेला**—पु० (ऊ०) दे० मंबेली।

**मरमोणा**—अ० क्रि० भ्रम में रहना, भ्रम होना।

**मरयाड़**—पु० (सि०) छिद्र।

**मरयारू**—पु० (कु०) भाई, बहिन-भाई।

**मरयाल**—पु० (कु०) ग्रीष्म ऋतु।

**मरयोटा**—पु० (ह०) मिट्टी के ढेले तोड़ने का यंत्र।

**मरा**—पु० (कां०) भाई।

**मराई**—स्त्री० (कां०) धान मापने की क्रिया।

**मराई**—पु० ढोल बजाने वाला।

**मराई**—स्त्री० दीवार में भरने के लिए प्रयुक्त पत्थर आदि।

**मराईण**—पु० (शि०) लकड़ी का शहतीर।

**मराऊ**—पु० (सि०) मधुमक्खियों का छत्ता।

**मराओजी**—स्त्री० (कु०, मं०) छोटे भाई की पत्नी।

**मराकक्**—पु० (कां०) कुत्ते की काटने के लिए झपटने की क्रिया।

**मराखड़ी**—स्त्री० (कु०) राखी।

**मराखड़े**—स्त्री० (शि०) राखी।

**मराटणा**—अ० क्रि० (कां०) मस्त होना।

**मराठणा**—स० क्रि० (सि०) मारना, पीटना।

**मराड़**—पु० (सो०) भूनने का व्यापार।

**मराड़**—पु० अचानक हुआ नुकसान, दरार।

**मराड़**—पु० (बि०) कपड़े का किसी चीज़ से फंस कर फटने का भाव।

**मराड़**—स्त्री० (मं०) बरसात।

**मराड़ना**—स० क्रि० (सो०) भूनना।

**मराड़पड़ना**—अ० क्रि० (कां०) फट जाना, दरार पड़ना।

**मराड़ा**—पु० (सि०) Aechmanthera wallichu.

**मराड़ुणा**—अ० क्रि० (सो०) भुना जाना।

**मराणा**—स० क्रि० (कां०) भरवाना।

**मराणा**—अ० क्रि० (चं०) गला भर जाना।

**मरारू**—पु० (कु०) भाई।

**मराल**—स्त्री० (मं०) बरसात।
**मरालटु**—पु० (सि०) भेड़ों को बांधने का स्थान।
**मराळुना**—अ० क्रि० (सो०) मनमर्जी करना, स्वेच्छा से खाना पीना।
**मराश**—स्त्री० (कु०) वर्षा के छींटे।
**मरिंऊं**—स्त्री० (कु०) भृकुटि, भौं।
**मरिंउं**—स्त्री० (शि०) पतंग।
**मरिंगणी**—स्त्री० (कु०) तेज़ दौड़।
**मरिंवश**—स्त्री० (सो०) भौं, भृकुटि।
**मरिटी**—वि० (मं०) भ्रष्ट।
**मरिठी**—वि० लालची।
**मरिणो**—स० क्रि० (शि०) भरना।
**मरियाल**—पु० (कु०) ग्रीष्म ऋतु।
**मरिश्ट**—वि० भ्रष्ट।
**मरी**—स्त्री० गेहूं घास आदि का गट्ठा।
**मरी**—वि० अधिक, पूर्ण।
**मरीअशो**—स्त्री० (सि०) भौं।
**मरीउंठ**—स्त्री० (मं०) भौं।
**मरीरा**—वि० (मं०) भरा हुआ।
**मरुंआ**—वि० मोटा, भरा हुआ।
**मरुआ**—स्त्री० (मं०) एक गंधयुक्त झाड़ी।
**मरुणा**—स० क्रि० (कां०) खींच कर निकालना या अलग करना, झपट कर धीरे-धीरे खींचना।
**मरुणा**—स० क्रि० पत्ते उतारना।
**मरुणा**—स० क्रि० (सि०) ठगी करके खाना।
**मरुना**—स० क्रि० (सो०) भरा जाना।
**मरुशणा**—स० क्रि० (कु०) निकालना, रस्सी या धागे आदि को खींच कर निकालना।
**मरुस**—स्त्री० (कां०) कंटीले पत्तों वाली एक जड़ी।
**मरुहड़**—पु० (मं०) आग का बड़ा अलाव।
**मरुह्ड़**—पु० (चं०) कूड़ा-करकट का ढेर।
**मरुढ़ी**—स्त्री० होंठ बजाते हुए सांस निकालने की ध्वनि।
**मरेड़ो**—पु० (मं०) गोशाला में बना छोटा कमरा जिसमें छोटे बछड़े रखे जाते हैं।
**मरेबत**—पु० वृहस्पतिवार।
**मरेर**—स्त्री० विदाई।
**मरेरना**—स० क्रि० विदा करना।
**मरेरा**—वि० (चं०) भरा हुआ।
**मरेल**—स्त्री० विदाई का समय।
**मरेस/सा**—स्त्री० (कु०, मं०) एक प्रकार का अन्न जिसके पत्तों का साग बनता है, इसे व्रत में फलाहार के रूप में खाया जाता है।
**मरैंमो**—पु० (मं०) एक विशाल वृक्ष विशेष।
**मरैहणी**—स्त्री० (मं०) फर्श के नीचे लगने वाली लंबी लकड़ी।
**मरैहल**—पु० (ह०) बेर।
**मरोंदा**—वि० (सि०) भरपूर।
**मरो**—पु० (मं०) बोझ।
**मरो**—पु० प्याऊ, वह स्थान जहां प्यासों को धर्मार्थ पानी पिलाया जाता है।
**मरोइया**—पु० प्याऊ पर पानी भरने वाला।
**मरोटू**—पु० (कु०) पीठ पर उठाया जाने वाला बोझ।
**मरोटू**—विषैला घास।
**मरोटू**—पु० (चं०, बि०) (केवल) लकड़ी का बोझ।
**मरोटू**—पु० (कां०, मं०) लकड़ी या घास का गट्ठा।
**मरोणा**—अ० क्रि० पैर आदि में गंदगी लगना।
**मरोपूरो**—वि० (शि०) भरपूर।
**मरोरा**—वि० (सो०) भुरभुरा।
**मरोस**—पु० (बि०) Echinops echinatus.
**मरौटा**—पु० (बि०) खेत में हल चलाने से निकले बड़े मिट्टी के ढेलों को तोड़ने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का उपकरण।
**मलकड़ा**—वि० अच्छा।
**मळकी**—स्त्री० (सि०) प्रातः।
**मळख**—स्त्री० (सो०) प्रातः।
**मळखी**—अ० (सो०) प्रातः के समय।
**मलड़ा**—वि० कुछ अच्छा।
**मलड़ाई**—अ० (सि०) अधिकतर।
**मळमळ**—स्त्री० (बि०) निरंतर जलती तेज़ आग।
**मलमलात**—स्त्री० बहुत जल्दी जल जाने की क्रिया।
**मलमानसता**—स्त्री० भद्रता, शराफत।
**मळयाठी/ठू**—स्त्री० 'ब्यूहल' के छिलके उतारने के बाद बची सूखी टहनी जो मशाल के लिए प्रयुक्त होती है।
**मलवाण**—पु० पहलवान।
**मलवाणा**—स० क्रि० भुलवाना।
**मलांबा**—पु० तेज लपटें, अलाव।
**मला**—वि० (सो०) अच्छा, शुभ, शरीफ।
**मलाइणा**—स० क्रि० (कु०) बहलाया जाना।
**मलाई**—स्त्री० भलाई, अच्छा कार्य।
**मलाए**—स्त्री० (शि०) भलाई।
**मलाओण**—स्त्री० (मं०) एक कैंची विशेष जिससे भेड़ बकरियों के बाल उतारे जाते हैं।
**मळाका**—पु० प्रज्वलित अग्नि।
**मलाखा**—स्त्री० (बि०) इच्छा, अभिलाषा।
**मलाणी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) 'बड़े' में प्रयुक्त नमक-मसाला मिला दही।
**मलामाणस**—वि० भद्र, भला मनुष्य।
**मलावां**—पु० (शि०) एक छोटे आकार का ज़हरीला फल।
**मलाहुला**—वि० (मं०) सांवला।
**मलिए**—अ० (सो०) भले ही।
**मलीणा**—अ० क्रि० (चं०) घाव का भर जाना।
**मलुणा**—अ० क्रि० (सो०) घाव आदि का ठीक होना।
**मलूरन**—वि० (कां०) पहली बार प्रसूता (गाय-भैंस)।
**मलेओ**—अ० संबोधन सूचक शब्द।
**मळेखा**—पु० धोखा, गलती।
**मळेठी**—स्त्री० (सो०) 'ब्यूहल' की सूखी, छालरहित, सीधी टहनियां जिनसे आग जलाई जाती है।
**मलेर**—स्त्री० (कु०) भूल।

**मळेर**—स्त्री० (कां०) छोटी मछली।
**मलेरना**—स० क्रि० मुला देना।
**मलेरिना**—स० क्रि० (कु०) मुलाया जाना।
**मलेहर**—पु० (चं०) जंगली बेर।
**मलैठू**—पु० दे० मळयाठी।
**मलो**—पु० (शि०) भला।
**मलोणा**—अ० क्रि० ठीक होना।
**मलौणा**—स० क्रि० (सि०) रोते हुए बच्चे को चुप कराना।
**मल्ला**—पु० उरद की पीठी में मसाला आदि मिलाकर तली हुई टिकिया।
**मल्ली**—स्त्री० (ह०) ढक्कन।
**मल्हेरना**—स० क्रि० (कु०) मुला देना।
**मवारा**—पु० (कु०) तैराकी।
**मश**—पु० (चं०) फेफड़ा।
**मशकणा**—अ० क्रि० (कु०, शि०) अंगारों से लकड़ी का जलना।
**मशकाळ**—स्त्री० (शि०) वर्षा ऋतु।
**मशळोणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०) लापरवाही व मस्ती में आना।
**मशमा**—पु० (मं०) भस्म।
**मशवटा**—पु० (शि०) ऋण।
**मसफूक**—पु० (कां०) सुनार।
**मसराळा**—पु० (कु०) ज़ोर का धक्का।
**मसराळा**—पु० (सो०) असावधानी से किया गया काम।
**मसीस**—स्त्री० (कां०) धीरे से बिना आवाज़ के निकली हुई अपान वायु।
**मसूड़ी**—स्त्री० व्यर्थ का काम। अनचाहा व्यक्ति।
**मसेट्टा**—पु० (कां०) भूस की गर्द।
**मसैन**—स्त्री० (कां०) गीले अनाज से आने वाली गंध।
**मस्कणा**—स० क्रि० (कां०) जगह बदलना।
**मस्मा**—पु० (सो०) राख।
**मां**—पु० आभास, ध्यान, चाह।
**मांई**—अ० (शि०) सच।
**मांग**—स्त्री० भांग, चरस।
**मांगड़ुना**—अ० क्रि० (सो०) स्वभाव बिगड़ना, नाराज़गी से बिगड़ना।
**मांगरा**—पु० भृंगराज।
**मांगरू**—पु० (बि०) पुदीने की जाति का एक सुगंधित पौधा।
**मांगे**—वि० (शि०) भांग पीने वाला।
**मांजड़**—पु० (चं०) शोर।
**मांजणा**—स० क्रि० (कु०) अलग करना।
**मांजी**—स्त्री० बढ़चढ़ कर बोलने की क्रिया।
**मांड**—वि० मसखरा। स्त्री० विवाह के अवसर पर पुरुषों द्वारा की जाने वाली मसखरी।
**मांडकू**—पु० छोटा पात्र।
**मांडघड़**—पु० (कां०) कुम्हार।
**मांडणा**—स० क्रि० (कु०) अपमानित करना।
**मांडा**—पु० पात्र।
**मांडी**—स्त्री० (कां०) काले भ्रमर का गोल छत्ता।
**मंडुणा**—अ० क्रि० (सो०) भांड बनना। शादी-ब्याह में मसखरी का किया जाना।
**मांडेबाहर**—वि० मासिक धर्म में आई (स्त्री)।
**मांत**—स्त्री० समानता।
**मांत**—स्त्री० (कु०) किस्म।
**मांदल**—पु० (कु०) बहुत बड़ा मिट्टी का घड़ा जिसमें कोदे आदि की 'लुगड़ी' बनाई जाती है।
**मांदलु**—पु० (कु०) मांदल से थोड़ा छोटा मिट्टी का घड़ा।
**मांपणा**—स० क्रि० जानना।
**मांबेला**—पु० (शि०) दे० भंबेली।
**मांव**—अ० (शि०) चाहे।
**मांविया**—पु० (चं०) पपीहा।
**मा**—पु० (कु०, चं०) भाव, दर, कीमत, मूल्य।
**मा**—अ० (चं०) भाई के लिए प्यार का संबोधन।
**माइटी**—स्त्री० (शि०) बहिन।
**माइदू**—पु० (सि०) छोटा भाई।
**माइड़**—पु० (कु०, मं०) धर्मभाई।
**माइथू**—पु० धर्मभाई।
**माइबो**—पु० (मं०) भ्रातृत्व।
**मईचा**—पु० (सि०) भतीजा।
**माईचारा**—पु० रिश्तेदारी, पारिवारिक संबंध।
**माईची**—स्त्री० (सि०) भतीजी।
**माईड़ी**—स्त्री० (कु०, मं०) धर्मबहिन।
**माईने**—पु० (ह०) लड़के के विवाह का पहला दिन।
**माईबंद**—पु० संबंधी।
**माईया**—पु० भाई।
**माउंदा**—वि० (कु०) पागल।
**माउंदू**—वि० (बि०) मूर्ख।
**माऊ**—पु० आंख की पुतली।
**माऊ**—पु० बेटा। छोटा भाई।
**माऊ**—अ० प्यार का संबोधन।
**माएं**—अ० चाहे ऐसा करो या न करो भाव दर्शाता अव्यय शब्द।
**माए**—पु० (शि०) भाई।
**माएड़े**—अ० (सि०) बाहर।
**माओ**—पु० (चं०, सि०) भाव, दर, मूल्य।
**माकरा**—पु० (ऊ०) Sauranja napanlinsis.
**माका**—पु० (बि०) दुर्गंध का झोंका।
**माक्क**—स्त्री० (शि०) आवाज़।
**माख**—स्त्री० (चं०) पीठ को आग से सेंकने की क्रिया।
**माख**—स्त्री० बोली, तर्ज़, लय।
**माखणा**—अ० क्रि० बोलना।
**माखरे**—पु० (कां०) पूरे पके हुए चावल जो हवा लगने पर ठोस हो जाते हैं।
**माखा**—स्त्री० भाषा।
**माग**—पु० भाग्य। भाड़ा।
**माग**—पु० (कु०) हिस्सा, आटा आदि पीसे जाने पर घराट के मालिक को दिया जाने वाला आटे का कुछ भाग।
**मागणा**—अ० क्रि० भागना।
**मागणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) भागना।

**भागवंत**—वि० भाग्यवान्।
**भागवत**—पु० भगवद्‌पुराण कथा।
**भागवान**—अ० पत्नी को संबोधन।
**भागवान**—वि० भाग्यवान्।
**भागसूनाग**—पु० धर्मशाला के निकट एक धार्मिक स्थान।
**भागे**—अ० (कु०) सौभाग्य से, दैवात्।
**भागोई**—पु० (मं०) बहनोई।
**भागोण**—स्त्री० (सि०) दौड़।
**भागौ**—पु० (शि०) भाग्य।
**भाज**—पु० (चं०) भाग।
**भाजड़**—स्त्री० (चं०) घाटा।
**भाजड़**—स्त्री० (बि०) बहुत से बच्चों का समूह।
**भाजणा/णो**—अ० क्रि० (सि०, शि०) टूट जाना।
**भाजणो**—अ० क्रि० (शि०) मना करना।
**भाजवाल**—पु० (शि०, सो०) Lonicosa quinquelocuearis
**भाजी**—स्त्री० (बि०, मं०) विवाह से पूर्व निमंत्रण के रूप में दी जाने वाली शकर या चीनी।
**भाजी**—स्त्री० सब्जी।
**भाट**—स्त्री० (सि०) एक खेल जिसमें बच्चे एक छोटा सा पत्थर ढूंढते हैं।
**भाट**—पु० ब्राह्मणों की एक जाति।
**भाटकी**—स्त्री० (शि०) माश पीस कर बनाया जाने वाला पकवान।
**भाटके**—पु० (मं०) बच्चों को देवता के लिए अर्पण करने अथवा शरण में देने का भाव।
**भाटके रे लगन**—पु० (मं०) 'बाटा' (बदले) के विवाह में वर की बहिन के साथ लग्न लगाने की प्रथा जो ग्रामीण क्षेत्र में है।
**भाटड़ा**—पु० (बि०) हाथ देखकर आजीविका कमाने वाला व्यक्ति।
**भाटण**—स्त्री० भाट की स्त्री।
**भाटी**—स्त्री० (चं०) मृत व्यक्ति के वस्त्र।
**भाटी**—स्त्री० (शि०) चचेरी बहिन।
**भाटु**—पु० (कु०) बच्चों का एक खेल जिसमें अन्य बच्चों को ढूंढ़ने वाले बच्चे को एक स्थान की रक्षा भी करनी होती है ताकि उस पर कोई आकर कब्ज़ा न करे।
**भाटू**—पु० (कु०) थोड़ी देर किसी स्थान पर रुकने का भाव।
**भाटौ**—पु० (शि०) ब्राह्मण।
**भाट्ट**—पु० (शि०) महाभोज बनाने हेतु बनाया गया बड़ा चूल्हा।
**भाठ**—स्त्री० (कु०) भेंट, देवता के लिए की गई मनौती।
**भाठ**—पु० (सो०, मं०) भट्ठी, विवाहादि के अवसर पर भोजन बनाने का बड़ा चूल्हा।
**भाठणा**—स० क्रि० (कु०) मनौती मानना, 'भाठ' देने के लिए प्रतिज्ञा करना।
**भाठा**—पु० (सि०) मक्की भूनने का चूल्हा।
**भाड़**—स्त्री० (शि०) अधिक सेंक।
**भाड़**—पु० (कु०, मं०) खलिहान के निकट का एक मंजिला साधारण मकान जिसमें अनाज का ढेर या सूखा घास रखा जाता है।
**भाड़खोरा**—पु० (बि०) पारिश्रमिक लेकर काम करने वाला व्यक्ति, चारा आदि खाकर दूध देने वाला पशु।
**भाड़ग**—पु० (कु०) घास या अनाज सुखाने का घर।
**भाड़चा**—पु० (कां०) गद्दी लोगों को धान (अनाज) का काम करने के बदले दिया जाने वाला अन्न।
**भाड़चा**—पु० (कां०) ढुलाई।
**भाड़ा**—पु० (बि०, सि०) चारा, गाय आदि के लिए तैयार किया गया अन्न आदि का घोल।
**भाड़ा**—पु० (मं०) भाला।
**भाड़ा**—पु० किराया, माल की ढुलाई का पारिश्रमिक।
**भाड़ा**—पु० (कां०) पिसाई।
**भाड़ी**—पु० (चं०) बोझ ढोने वाला।
**भाण**—स्त्री० (कु०) अरथी।
**भाणजा**—पु० भानजा, बहिन का लड़का।
**भाणजू**—पु० दे० भाणजा।
**भाणजोतरी**—स्त्री० भानजी की लड़की।
**भाणड़**—स्त्री० Euliliopsis binnata.
**भाणा**—पु० (कु०) कांस्य का थाली नुमा वाद्य यंत्र।
**भाणा**—अ० क्रि० पसंद आना।
**भाणे**—पु० (बि०) नगारा या 'टमक' बजाने के डंडे।
**भाणो**—वि० (शि०) अधमरा।
**भात**—पु० पकाए हुए चावल।
**भादर**—वि० बहादुर।
**भादरी**—स्त्री० बहादुरी।
**भादरु**—पु० भाद्रपद।
**भादरो**—पु० भाद्रपद।
**भान**—वि० (मं०) साधारण, मामूली।
**भान**—स्त्री० रेज़गारी।
**भानणा**—स० क्रि० (मं०, शि०) तोड़ना।
**भानाई**—अ० (शि०) बीच में।
**भान्ना**—पु० बहाना।
**भान्नी**—स्त्री० (बि०) ततैया का छत्ता।
**भाप**—स्त्री० भाप।
**भापुणा**—अ० क्रि० (सो०) भाप से प्रभावित होना, भाप लगना।
**भाबरी**—स्त्री० (कां०, कु०, बि०) तुलसी की जाति का सुगंधित पत्तों वाला एक पौधा।
**भाबि**—स्त्री० (सो०) भावज, भाभी।
**भाबे**—स्त्री० (शि०) भाभी।
**भाबो**—स्त्री० (ह०) भाभी।
**भाब्बर**—स्त्री० (सि०, सो०, शि०) बिच्छुबूटी की प्रजाति का एक छोटा पौधा।
**भामरी**—स्त्री० (शि०) एक साग विशेष।
**भायटे**—स्त्री० (सि०) नगारा बजाने की छड़ियां।
**भायड़**—पु० (सि०) बड़ा भाई, भाई।
**भार**—पु० बोझ।
**भार**—वि० (कु०) सोलह 'पाथा' अनाज के बराबर।
**भारज**—स्त्री० (शि०) पत्नी।
**भारटा**—पु० (चं०) पुत्र जन्म के बाद सूर्यावलोकन संस्कार के समय अखरोट, पैसे, मेवे आदि फेंकने की रस्म।
**भारथी**—वि० (कां०, बि०) गर्भवती (स्त्री)।

**भारना**—अ० क्रि० (मं०) सूजन होना।
**भारना**—स० क्रि० (कां०, बि०) शरीर का बोझ किसी पर डालना।
**भारा**—पु० कटी हुई मक्की या लकड़ियों का गट्ठा, बोझ।
**भारा**—वि० (चं०) भारी, वज़नदार।
**भारूना**—अ० क्रि० (सो०) भार होना, बोझ होना, बोझ मानना।
**भालण**—स्त्री० (कु०) मादा भालू।
**भाळना**—स० क्रि० देखना, इंतज़ार करना।
**भाळशूण**—स्त्री० (कु०) देखभाल।
**भाळिणा**—स० क्रि० (कु०) देखा जाना।
**भालूदो**—वि० (मं०) परिचित।
**भाल्लड़**—स्त्री० (सि०) जुए की रस्सी।
**भाव**—पु० दर, मूल्य, कीमत।
**भावें**—अ० चाहे।
**भाश**—स्त्री० (सो०) गाने की धुन, लय।
**भाशणा**—स० क्रि० (कु०) देवता को मनौती के रूप में भेंट देने की मन ही मन प्रतिज्ञा करना।
**भाशणी**—स्त्री० (शि०) प्रतिज्ञा, मनौती।
**भाशणो**—स्त्री० (सि०) मालिश।
**भाशणो**—स० क्रि० (शि०) वायदा करना।
**भाशिणा**—स० क्रि० (कु०) मनौती किया जाना।
**भाशी**—वि० (सि०) अच्छा गाने वाला।
**भाशे**—पु० (शि०) संकल्प, इच्छा, विचार।
**भास**—पु० (कां०) शब्द।
**भास**—पु० (मं०) भस्म।
**भासणा**—अ० क्रि० (कां०) बोलना।
**भासा**—स्त्री० भाषा।
**भास्स**—स्त्री० (मं०) छाती की पीड़ा।
**भास्सू**—पु० (कां०) मसूढ़ा।
**भिंगलणा**—अ० क्रि० (बि०) उलझना, गुम होना।
**भिंगा**—वि० तिरछी नज़र वाला।
**भिंज**—पु० (कां०) भेद।
**भिंटी**—स्त्री० (सो०) एक काल्पनिक नरभक्षी पिशाचिका।
**भिंडलना**—अ० क्रि० (बि०) गुम जाना, अपने साथियों से बिछुड़ना।
**भिंडा**—पु० ऊन का बड़ा गोला।
**भिंडा**—वि० छोटा परंतु मोटा (व्यक्ति)।
**भिंडी**—स्त्री० एक सब्जी, भिंडी तरोई।
**भिंडी**—स्त्री० (सि०) खलियान आदि की दीवार।
**भिंडू**—पु० ऊन का छोटा गोला।
**भिंदरना**—अ० क्रि० (सि०) पशु का बिगड़ना।
**भिंबणा**—स० क्रि० (कां०) अंदर से खोखला कर देना।
**भिंबरी**—स्त्री० (मं०) तितली।
**भिंव**—पु० (सो०) शक्ति का प्रतीक देवता या दानव (भीम)।
**भिंवटुणा**—अ० क्रि० (सो०) भिंव से प्रभावित होना।
**भिऊं**—पु० (चं०) मधुमक्खी के वर्ग की एक मक्खी जो चार-पांच के समूह में घर की दीवारों में रहती है।
**भिक्कड़**—पु० (बि०) हल चलाते समय उखड़े मिट्टी के ढेले।
**भिख**—स्त्री० भीख।
**भिख**—स्त्री० श्राद्ध से पहले दिन रखा जाने वाला उपवास जिस दिन व्रत रखने वाला दूसरों को भोजन खिलाता है।
**भिखमंगा**—पु० भिखारी।
**भिगाणा**—स० क्रि० (शि०) भिगोना।
**भिगैल**—पु० (चं०) भाईचारा।
**भिगैली**—स्त्री० (चं०) भाई-बिरादरी।
**भिग्गा**—पु० (कां०) मनकों वाला लंबा जाल।
**भिच्छा**—स्त्री० (कु०, बि०) भिक्षा।
**भिच्छिया**—स्त्री० (शि०) दे० **भिच्छा**।
**भिछया**—स्त्री० (सि०) दे० **भिच्छा**।
**भिजणा**—अ० क्रि० भीगना।
**भिजाणा**—स० क्रि० (शि०) भिगोना।
**भिज्ज**—स्त्री० (सि०) चर्बी।
**भिटका**—अ० (सि०) अंदर।
**भिटणा**—अ० क्रि० (चं०) अपवित्र होना।
**भिट्टा**—वि० (चं०) अछूत।
**भिड़**—स्त्री० (शि०) जहरीली मक्खी।
**भिड़ना**—अ० क्रि० लड़ना, पशुओं का सींगों से लड़ाई करना।
**भिड़ा**—पु० (बि०) खेत आदि में ऊंचा उठा हुआ स्थान।
**भिड़ावणो**—स० क्रि० (शि०) भिड़ाना, पशुओं को लड़ाना।
**भिड़िणा**—अ० क्रि० (कु०) भिड़ जाना, सींगों से लड़ाई करना।
**भिड़िनो**—अ० क्रि० (शि०) पशुओं की लड़ाई होना।
**भिड़ी**—अ० (शि०) निकट।
**भिणक**—स्त्री० (बि०) भनक।
**भिणखा**—पु० (सो०) तिनका।
**भिणभणाउणा**—अ० क्रि० भिनभिनाना।
**भिणभिणाल**—स्त्री० (बि०) मक्खियों की भिनभिनाहट।
**भित्त**—पु० किवाड़।
**भित्त**—स्त्री० (कां०) घराट का भीतरी भाग जहां चक्की घूमती है।
**भित्त**—स्त्री० (चं०) खेत का दीवार वाला भाग।
**भित्तर**—अ० अंदर।
**भिफणी**—स्त्री० (कां०) आंखों की पलक।
**भियाखणा**—अ० क्रि० (बि०) किंकर्तव्यविमूढ़ होना, किसी को खाते हुए देखकर या किसी अच्छी वस्तु को देखकर ललचाना।
**भियाग**—स्त्री० (कु०) प्रातःकाल, सुबह।
**भियाणसर**—पु० (कु०) प्रातःकाल जब कुछ-कुछ अंधेरा हो।
**भियाणा**—अ० क्रि० (कु०) रात खुलना, सवेरा होना।
**भियाणी**—स्त्री० (चं०) आंखों की पलक।
**भियाणु**—पु० (कु०) भोर का तारा।
**भियाल**—पु० (ह०) हिस्सेदार।
**भियाल**—स्त्री० (कु०) नदी के किनारे का खुला क्षेत्र।
**भियोजी**—स्त्री० (चं०) पत्नी की बहन; छोटे भाई की पत्नी।
**भिरंग**—पु० एक जंगली पौधा जिसके पत्तों का साग बनता है। Deeringea celosloides.
**भिरठी**—स्त्री० पिशाचिका।

**भिरळ**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) एक पक्षी विशेष।
**भिरी**—अ० फिर, दोबारा।
**भिरुआं**—स्त्री० (बि०) भौं।
**भिलखा**—वि० (चं०) हतप्रभ, हैरान।
**भिलावा**—पु० (सि०) Gemecarpus anacardium.
**भिल्ल**—वि० (सो०) ढीठ, निर्लज्ज।
**भिश्ती**—पु० (सो०) चमड़े के थैले में पानी ढोने वाला व्यक्ति।
**भिसती**—पु० पानी भरने वाला नौकर।
**भिहाई**—स्त्री० पुत्र के जन्म पर मिट्टी या गोबर की बनाई पिंडी जिसकी जन्मांत तक जन्म दिवस के अवसर पर पूजा की जाती है। मरने पर इसे बहते पानी में बहा दिया जाता है।
**भींगा**—वि० (चं०) टेढ़ी आंख वाला।
**भींड**—स्त्री० (सि०) मेंड़।
**भींडातरोई**—स्त्री० (सि०) भिंडी।
**भींडू**—वि० (ऊ०, कां०) चालाक (व्यक्ति)।
**भींड़े**—स्त्री० (शि०) दे० भींड।
**भींथ**—स्त्री० (मं०) दीवार।
**भींफल**—पु० (शि०, सो०) Fragaria indica.
**भींवा**—स्त्री० (मं०) भौं।
**भी**—अ० दोबारा।
**भीक**—स्त्री० (सि०) कदम।
**भीचड़ी**—स्त्री० (चं०) औरत के जूते।
**भीटो**—अ० (सि०) भीतर।
**भीठी**—स्त्री० (कु०) पिशाचिका।
**भीड़**—स्त्री० ज़रुरत, आवश्यकता।
**भीड़**—स्त्री० समूह, जमघट।
**भीड़ा**—वि० तंग।
**भीण**—स्त्री० (कु०, मं०) छोटी बहिन।
**भीणी**—पु० (कु०) पति।
**भीत**—स्त्री० दीवार।
**भीतका**—पु० (मं०) सवर्ण।
**भीतर**—अ० अंदर।
**भीतरुओ**—वि० (शि०) आंतरिक।
**भीतरे**—अ० (ऊ०, सि०) भीतर।
**भीती**—स्त्री० (कु०) दीवार।
**भीथरे**—अ० (मं०) भीतर।
**भीनणा**—स० क्रि० (सि०) (शि०) बींधना।
**भीब्बा**—पु० (सि०) नष्ट कर देने का भाव।
**भीमाकाळी**—स्त्री० (मं०) भीमाकाली देवी।
**भीरंड**—पु० (मं०) पक्षी विशेष।
**भीरी**—अ० (कु०) बाद, फिर।
**भीलण**—स्त्री० (मं०) भीलनी।
**भीहास**—पु० अभ्यास, आदत।
**भुंई**—स्त्री० भूमि।
**भुंकणा**—अ० क्रि० (सि०) कुत्ते का भौंकना।
**भुंग**—पु० बल, टेढ़ापन।
**भुंगड़**—पु० (चं०) मक्की का बड़ा मुट्टा।
**भुंगड़ि**—स्त्री० (कु०) 'किरडे' में चारों तरफ डंडे लगाकर बनाया छत्ता ताकि काफी ऊपर तक पत्ते भर जाएं।
**भुंगड़ी**—स्त्री० (शि०) एक विशेष प्रकार का घास जिसमें सफेद फूल लगते हैं।
**भुंगड़ी**—स्त्री० (कु०) आटे के गोले के छोटे टुकड़े जिन्हें शुभ अवसर पर देवता के नाम से हवा में फेंका जाता है।
**भुंगा**—पु० (कु०) स्तंभ, खंभा।
**भुंगा**—पु० (चं०) घूस; खाने के लिए दी गई वस्तु।
**भुंगाली**—स्त्री० (सि०) थाली।
**भुंचणा**—स० क्रि० (कु०) भोगना।
**भुंजणा**—स० क्रि० भोगना।
**भुंजमाण**—पु० (चं०) विपत्ति।
**भुंजलोश**—पु० (शि०) Smilax aspera. कुकुरदाढ नामक पौधा जिसकी जड़ औषधि के रूप में प्रयुक्त होती हैं।
**भुंड**—पु० (मं०, सि०) गोबर खाने वाला कीट।
**भुंडा**—पु० एक विशेष प्रकार का महायज्ञ जिसमें प्राचीन काल में नरबलि दी जाती थी।
**भुंबळा**—पु० (कु०) लाल रंग के जंगली फूल विशेष जो धरती पर उगते हैं।
**भुआका**—पु० गंध।
**भुआक्खी**—स्त्री० (ह०) बीमारी के तुरंत बाद खुली अधिक भूख।
**भुआप**—स्त्री० (शि०) भाप।
**भुआफ**—पु० (कु०) उमस।
**भुआर**—स्त्री० झाड़ू।
**भुआर**—पु० व्यवहार।
**भुआरना**—स० क्रि० झाड़ू देना, साफ करना।
**भुआलके**—अ० (सि०) प्रातः।
**भुआळा**—पु० (ह०) भूसे का अंबार।
**भुआळू**—पु० (ऊ०, कां०) घास व चारे को एकत्र करने हेतु बनाया गया स्थाई घर।
**भुइयां**—अ० (चं०, बि०) भूमि पर।
**भुईं**—स्त्री० (सि०) कांटेदार झाड़ी विशेष।
**भुऐलु**—पु० (चं०, बि०) गेहूं और जौ के घास को चबूतरा बनाकर रखने की क्रिया।
**भुकणा**—अ० क्रि० (सो०) भौंकना।
**भुकणा**—स० क्रि० (कु०, चं, बि०) किसी पर धूल आदि फेंकना।
**भुकणा**—स० क्रि० (चं०) अधिक बीज डालना।
**भुकणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) कुत्ते का भौंकना।
**भुकिणा**—अ० क्रि० (कु०) एक दूसरे पर राख आदि का फेंका जाना।
**भुकुणा**—अ० क्रि० (सो०) भौंका जाना।
**भुक्क**—स्त्री० (शि०) भूख।
**भुक्कट**—पु० (बि०) भूरे रंग का एक पक्षी विशेष।
**भुक्का**—पु० (चं०, बि०) पीसी हुई वस्तु की थोड़ी मात्रा।
**भुक्का**—पु० (कु०, चं०, कां०) गुंधे हुए आटे की लोई में लगाया जाने वाला सूखा आटा।
**भुक्की**—स्त्री० चूर्ण आदि की अधिक मात्रा।
**भुक्खड़**—वि० (बि०) भूखा, लालची।

भुक्खा—वि० भूखा; लालची।
भुख—स्त्री० भूख।
भुखड़—वि० (कु०) भूखा।
भुखशोख—स्त्री० (कु०) भूख-प्यास।
भुखाट—स्त्री० (सि०) चौखट।
भुखारी—स्त्री० सीढ़ियों के नीचे का खुला स्थान।
भुखुणा—अ० क्रि० (सो०) भूख लगना।
भुखौरा—वि० (चं०) भूखा।
भुगतणा—स० क्रि० भोगना, अ० क्रि० निपटना।
भुगतावणों—स० क्रि० (शि०) भुगतान करना।
भुगतिणा—स० क्रि० (कु०) भुगता जाना।
भुगती—स्त्री० (बि०) खाद्यसामग्री।
भुगरू—पु० (कु०, बि०) ऐसा बारीक नमक जिसमें मसाला हलदी आदि मिला दिया गया हो।
भुगला—पु० (शि०, सो०) धनिया।
भुगाली—स्त्री० (सि०) थाली।
भुग्गा—पु० (सि०, चं०) आटा, चीनी, घी को भूनकर बनाया गया मिश्रण।
भुग्गा—वि० (ऊ०, कां०) खोखला, अंदर से गला हुआ।
भुग्गा—पु० (ऊ०, कां०, बि०) कूटे तिल का मीठा मिला मिश्रण।
भुचरा—पु० (कां०) महामारी का रोग।
भुचरा—वि० (ऊ०, कां०) चालाक।
भुच्चर—वि० (बि०) कुरूप; क्रोधी।
भुच्चरी—स्त्री० (बि०) रोग विशेष। गाली के रूप में प्रयुक्त शब्द।
भुज—पु० (चं०, शि०) भोजपत्र, Betula alnoidis.
भुजड़—पु० (सो०) वर्षा न होने पर पानी के स्रोत के पास किया गया यज्ञ विशेष।
भुजड़ी—स्त्री० अरबी के पत्तों की सब्जी।
भुजणा—अ० क्रि० जलना, जल जाना।
भुजणा—स० क्रि० (सो०, शि०) जलाना।
भुज़णा—स० क्रि० (कु०) भूनना।
भुजणू—पु० (कु०) घास का ढेर।
भुजणो—स० क्रि० (शि०) भूनना।
भुजनु—पु० Anaphalis nubigena.
भुज़पत्र—पु० (कु०) भोजपत्र।
भुजराण—स्त्री० (शि०) भुनी हुई वस्तु की सुगंध।
भुजल—पु० (चं०) भूचाल।
भुज़ल—वि० (कु०) नर्म (अखरोट आदि)।
भुंजली—स्त्री० (चं०) एक घास विशेष।
भुजलु—पु० (चं०) एक प्रकार का पत्ता जिसकी सफेद तह आग जलाने हेतु निकाली जाती है।
भुजालणी—स्त्री० (चं०) एक पक्षी विशेष।
भुजिणा—अ० क्रि० (कु०) जल जाना।
भुज़ी—वि० (कु०) कागज़ी।
भुजीणा—अ० क्रि० (चं०) विपत्ति झेलते रहना।
भुजुणा—अ० क्रि० (सो०) जलना, गुस्से होना।
भुज्जी—स्त्री० (कां०, चं०, बि०) अरबी के पत्तों की सब्जी।
भुज्जू—पु० सरसों, पालक, मेथी इत्यादि की सब्जी।
भुटरोई—स्त्री० Viburnum cotinfolium.
भुट्टा—पु० मक्की का भुट्टा।
भुट्टा—पु० (कां०) अखरोट खेलते हुए निशाना लगाकर चोट मारने के लिए प्रयुक्त बड़ा अखरोट।
भुड़—स्त्री० (कु०) 'हौर्न' लोकनाट्य का एक पात्र।
भुड़क—स्त्री० (कु०) शेखी।
भुड़कणा—अ० क्रि० क्रोधित होना, बड़बड़ाना।
भुड़कणा—अ० क्रि० (बि०, ह०) खुशी में आकर उछलना।
भुड़यार—पु० (चं०) श्रमिक।
भुड़ा—पु० (ह०) घर के काम-काज का बोझ।
भुड़ी—स्त्री० (कु०) वन में ठेकेदार के अधीन काम करने से हुई कमाई।
भुणक—स्त्री० (कां०) भनक।
भुणभुणु—पु० (बि०) उड़ने वाले छोटे कीट।
भुतमताळा—वि० (कु०) नशे में धुत्त।
भुतिणा—अ० क्रि० (कु०) नशे में धुत्त हो जाना।
भुतुणा—अ० क्रि० (सो०) भूत जैसा व्यवहार करना।
भुत्थ—स्त्री० (बि०, ह०), फफूंदी।
भुथणा—वि० (बि०, ह०) अत्यधिक मोटा।
भुथणा—अ० क्रि० (बि०) किसी वस्तु में फफूंदी लगना।
भुनणा—स० क्रि० भूनना।
भुनार—वि० भूनने वाला।
भुबलेरना—स० क्रि० (कां०) आग की गर्म राख में भूनना।
भुबु—पु० कनपेड़ा।
भुब्बळ—स्त्री० गर्म राख।
भुब्भड़—पु० मुंह फुलाकर बैठने की क्रिया।
भुमणा—अ० क्रि० (चं०, बि०) फूल या कली का खिलना।
भुमणिया—स्त्री० (बि०) प्रसन्नता से किया जाने वाला नृत्य।
भुमणु—पु० (कां०, ह०) मक्की के पौधों पर पड़ा सूत।
भुमणू—पु० (ऊ०, कां०) उड़ने वाले काले कीट।
भुमल—स्त्री० (चं०) धूल।
भुमला—पु० (मं०) Fragaria indica.
भुरकट—वि० (बि०) खस्ता।
भुरकना—स० क्रि० चूर्ण आदि को छिड़कना।
भुरकली—स्त्री० (मं०) अनाज का छोटा पात्र।
भुरका—पु० लकड़ी का गिलास।
भुरड़—स्त्री० (सो०) अत्यधिक गर्म राख।
भुरड़ना—स० क्रि० मांस या किसी वस्तु को आग पर रखकर झुलसाना।
भुरड़ीणा—अ० क्रि० (चं०) आग में बालों का झुलस जाना।
भुरथा—पु० बैंगन की सब्जी।
भुरना—अ० क्रि० (ह०, बि०) क्षरित होना।
भुरभुरा—वि० खस्ता, करारा, खूब सिंका हुआ।
भुरभुरे—पु० (बि०) सूखी मक्की के रेत में भूने दाने।
भुर्जखोड़—पु० कागज़ी अखरोट।
भुर्ल—स्त्री० (कु०) एक गोल लंबी टोकरी जिसमें कातने हेतु ऊन रखी जाती है।
भुल—स्त्री० भूल।

**मुल्लक**—पु० (बि०) छोटा कुआं।
**मुलका**—पु० (शि०) सब्जी, हरे पत्तों की सब्जी।
**मुलणा**—अ० क्रि० भूल जाना।
**मुलणो**—अ० क्रि० (शि०) भूलना।
**मुलथोरी**—स्त्री० (सि०) श्मशान।
**मुलाणा**—स० क्रि० भुलाना।
**मुलेर**—वि० (सि०) भोला।
**भुशला**—वि० (शि०) भूरे बालों वाला।
**भुस**—स्त्री० (चं०) आपाधापी, धांधली।
**भुस**—पु० शक, संदेह।
**भुसकणा**—अ० क्रि० आटे आदि का छेद से थोड़ा-थोड़ा निकलना।
**भुसकाणा**—स० क्रि० (चं०) डराना।
**भुसकु**—अ० (बि०) थोड़ा सा, अंश भर।
**भुसकू**—पु० (चं०) सूखा हुआ गोल कुकुरमुत्ता।
**भुसतली**—वि० (कु०, मं०) रेतीली (भूमि)।
**भुसपौणा**—अ० क्रि० आशंका होना।
**भुसरोल**—पु० (चं०) आलू जैसा एक कंद जो पशुओं को खट्टी छाछ में मिलाकर दवाई के रूप में खिलाया जाता है।
**भुसलाणा**—अ० क्रि० नींद में बोलना, बड़बड़ाना।
**भुह**—पु० भूसा।
**भुहाफ**—पु० (कु०) गर्मी।
**भुहाल**—स्त्री० (चं०) भूसा रखने का छप्पर।
**भुहाशयाड़ा**—पु० (सि०) भैंसों के लिए बनाया गया कमरा।
**भूंईयण**—पु० (सि०) चूहों का देवता।
**भूंग**—पु० (मं०, कु०) बड़ा किरडा।
**भूंगला**—वि० (मं०) सुराखदार (लकड़ी)।
**भूंगा**—वि० (सि०) छोटा परन्तु मोटा (आदमी)।
**भूंड**—पु० कठोर पंखों वाला कीट, भ्रमर।
**भूंद्र**—वि० (शि०) मूर्ख।
**भूंयसू**—वि० (शि०) भूमि पर स्थित।
**भू**—पु० भूसा।
**भूई**—स्त्री० (कु०) मंज़िल।
**भूई**—स्त्री० पृथ्वी।
**भूई**—स्त्री० (सि०) पृथ्वी।
**भूईचाल**—पु० (सि०) भूकंप।
**भूईणा**—अ० क्रि० (सि०) थक जाना।
**भूक**—स्त्री० प्याज के पौधे के ऊपर निकली हरी पत्ती।
**भूकणो**—अ० क्रि० (शि०) भौंकना।
**भूख**—स्त्री० भूख।
**भूखड़ा**—पु० (मं०) भूसा।
**भूखला**—पु० (कु०) भूसा।
**भूखू**—पु० (मं०) भांग की सुखाई हुई कोंपलें।
**भूगड़ा**—पु० (मं०) धनिया।
**भूगणो**—स्त्री० (शि०) शेर की दहाड़।
**भूगा**—वि० (कु०) थोड़ी सड़ी हुई (लकड़ी)।
**भूगू**—पु० (शि०) उल्लू।
**भूचर**—वि० (सि०) कमज़ोर।
**भूज़**—पु० (कु०) गेहूं जौ का भूसा।
**भूजणा**—स० क्रि० (मं०, सि०) भूनना।
**भूजपौतर**—पु० (कु०) भोजपत्र।
**भूठकणा**—अ० क्रि० (सि०) साफ इंकार करना।
**भूड़कणा**—अ० क्रि० (सि०) रूठना। दौड़ना। किसी की बात न सुनना।
**भूणा**—पु० (कां०, बि०) बिल्ला।
**भूणी**—स्त्री० (कां०, बि०) बिल्ली।
**भूणु**—पु० (चं०) भेड़ का बच्चा, मेमना।
**भूत**—पु० भूत।
**भूतकेसी**—स्त्री० Tanacetum longifolum, भूतकेशी, एक जड़ी विशेष।
**भूतणू**—पु० छोटा भूत।
**भूतफराटी**—स्त्री० (बि०) भूत की तरह का नाच।
**भूतफराटी**—स्त्री० (ऊ०, बि०) अनर्थ करने की क्रिया।
**भूनणा**—स० क्रि० (मं०, ह०) भूनना।
**भूनणा**—स० क्रि० (कु०) तोड़ना।
**भूपणा**—पु० (ऊ०, कां०) चूल्हे में फूंक मारने की बांस की नाली।
**भूफी**—स्त्री० (कु०) फफूंदी।
**भूमिआ**—पु० भूपति।
**भूमिआ**—पु० (ऊ०, कां०) सांप।
**भूयंदे**—अ० (सो०) नीचे।
**भूरका**—पु० (सि०) दे० भूपणा।
**भूर-भूर**—वि० (ऊ०, बि०) धीमी-धीमी (वर्षा)।
**भूरश**—पु० (कु०) एक कांटेदार पौधा।
**भूरू**—वि० भूरे रंग का।
**भूलणा**—अ० क्रि० (शि०) भलना।
**भूलभुलेखा**—पु० धोखा।
**भूळा**—पु० (सि०, सो०) गेहूं, उरद आदि का भूसा।
**भूलावणो**—स० क्रि० (शि०) भुला देना।
**भूशदाश**—स्त्री० (शि०) बातचीत।
**भूशला**—पु० (सि०) किसी के बनते काम में टांग अड़ाने की क्रिया।
**भूशला**—वि० (सो०) दे० भूरू।
**भूष**—पु० (शि०) बात।
**भूष्टू**—वि० (शि०) बातूनी।
**भूसड़**—वि० (ह०) बेबस (पशु आदि)।
**भूसली**—स्त्री० (बि०) किसी के बनते काम में टांग अड़ाने की क्रिया।
**भूसोड़**—पु० (शि०) भूसा रखने का स्थान।
**भेंकर**—वि० (सि०) भयंकर।
**भेंट**—स्त्री० श्रद्धा से दी हुई वस्तु, भेंट।
**भेंपरा**—पु० (कु०) घास विशेष जो लंबे डंडे सा होता है और उसके चारों ओर पत्तियां होती हैं।
**भेंसरी**—स्त्री० (सि०) प्रातः।
**भे:र**—स्त्री० (कु०, चं०) तत्तैया का छत्ता।
**भेअड़**—पु० (कु०) बहिन का पति।
**भेइरू**—पु० (कु०) भैरव।

**भेउणा**—अ० क्रि० (सो०) भीग जाना। स० क्रि० भिगोना।
**भेकळी**—स्त्री० (शि०) दे० भेखळ।
**भेख**—पु० (कु०) वेश, भेस।
**भेखड़**—स्त्री० (मं०) दे० भेखळ।
**भेखरू**—पु० (सि०) Principia utilis.
**भेखळ**—स्त्री० (कु०) काँटेदार झाड़ी जो तांत्रिक क्रियाओं में प्रयुक्त होती है।
**भेखला**—पु० (सो०) दे० भेखळ।
**भेखु**—पु० (चं०) भिखारी, भिक्षुक।
**भेगभेगी**—स्त्री० (कु०) जलन।
**भेगिणा**—अ० क्रि० (कु०) भागा जाना।
**भेछणा**—स० क्रि० (बि०) तार-तार करना।
**भेजणा**—स० क्रि० भेजना।
**भेजणा**—स० क्रि० (कु०) भेजना।
**भेजल**—स्त्री० (सि०) तीव्र वर्षा।
**भेजिणा**—स० क्रि० (कु०) भेजा जाना।
**भेजुणा**—स० क्रि० (सो०) भेजा जाना।
**भेट**—स्त्री० स्तुति, देवी की स्तुति के गीत।
**भेटकणा**—अ० क्रि० (कु०) भटकना।
**भेटणा**—स० क्रि० (सि०) किसी को भेंट देना।
**भेटणा**—अ० क्रि० मिलना।
**भेटणो**—अ० क्रि० (शि०) भेंट करना।
**भेटा**—स्त्री० (शि०) दर्शन।
**भेटिणा**—अ० क्रि० (कु०) समीप आना।
**भेंटी**—स्त्री० (कु०) खेत का अंदर का भाग।
**भेटी**—अ० (कु०) समीप, पास।
**भेटीणो**—अ० क्रि० (सि०) मिलना।
**भेट्टा**—पु० (चं०) लगभग दो सौ पत्तलों का गट्ठा।
**भेठ**—स्त्री० ढलानदार भूमि।
**भेठ**—स्त्री० (चं०) मेंड़।
**भेड**—स्त्री० (कां०) भेड़। वि० सीधी-साधी (व्यंग्यार्थ)।
**भेड़कणा**—अ० क्रि० (कु०) बड़बड़ाना।
**भेड़णा**—स० क्रि० (सि०) खाल उतारना।
**भेड़ना**—स० क्रि० (कु०) उधेड़ना।
**भेडा**—पु० (कां०) मेढ़ा।
**भेड़ाभेड़ी**—स्त्री० (कु०) बड़बड़।
**भेडाल**—पु० (शि०) गड़रिया।
**भेडी**—स्त्री० (सि०, शि०, बि०) भेड़।
**भेडू**—पु० छोटा मेढ़ा।
**भेड्डा**—पु० (सि०) Cotoneaster microphylla.
**भेणना**—स० क्रि० (कु०) उधेड़ना।
**भेणभणाट**—स्त्री० (कु०) भिनभिनाहट।
**भेणा**—स० क्रि० (कु०) भेजना।
**भेत**—पु० (चं०) विवाह के दूसरे दिन लड़के के घर प्रीतिभोज में सम्मिलित होने वाले लड़की के संबंधी।
**भेत**—पु० परिचय, पता।
**भेत**—पु० भेद, रहस्य।
**भेतकढाणा**—स० क्रि० गुप्त रहस्य का उद्घाटन करवाना।
**भेती**—वि० रहस्य को जानने वाला।
**भेतो**—वि० (शि०) पर्याप्त।
**भेथरू**—पु० (कु०) मंत्र शक्ति।
**भेदिया**—वि० (शि०) भेद लेने वाला।
**भेराड़ा**—पु० (शि०) गोशाला की दूसरी मंज़िल।
**भेरी-पूरी**—अ० (कु०) भरपूर।
**भेल**—स्त्री० (सि०) गंदा स्थान।
**भेलण**—स्त्री० (कु०) ततैयों का छत्ता।
**भेलण**—स्त्री० (कु०) गुड़ की 'भेली' जैसी, मोटी, गोल-मटोल।
**भेला**—वि० (कु०) भला।
**भेला**—पु० गुड़ का ढेला।
**भेली**—स्त्री० (कु०, शि०, बि०) गुड़ा का बड़ा ढेला।
**भेल्ला**—पु० (चं, बि०) बसूला, एक औजार जिससे बढ़ई लकड़ी काटता व छीलता है।
**भेल्ली**—स्त्री० गुड़ की चपटी पिंडी जिसे शुभ माना जाता है।
**भेवणा**—स० क्रि० (सो०) भिगोना।
**भेष**—पु० वेशभूषा।
**भेषम**—वि० (शि०) बदशक्ल, कुरूप।
**भेस**—पु० (मं०) अभ्यास।
**भेसा**—पु० (कु०) अनाज विशेष।
**भैंगा**—वि० (कां०, ह०) टेढ़ी आंख वाला।
**भैंठ**—स्त्री० कठिनाई।
**भैंठ**—स्त्री० बेगार।
**भैंठू**—पु० बेगार करने वाला।
**भैंटू**—पु० बैगन।
**भैंपळ**—पु० (कां०) पपीता।
**भैंपळा**—पु० फूंक मारने की नाली; टीन आदि का यंत्र जिसे मुनादी के लिए प्रयुक्त किया जाता है। बेसुरा रोने की क्रिया।
**भैंसर**—स्त्री० (शि०) प्रातः।
**भैई**—वि० (मं०) दलदली (भूमि)।
**भैऊलो**—वि० (शि०) उपजाऊ।
**भैकभैकी**—अ० (कु०) धकधक की ध्वनि।
**भैखाल**—वि० (चं०) खुला।
**भैगणा**—अ० क्रि० (कु०) भागना।
**भैड़**—पु० (बि०, ह०) भाई के लिए प्रयुक्त प्यार का शब्द।
**भैड़ना**—स० क्रि० (मं०) उड़ेलना।
**भैड़ा**—वि० दुष्ट स्वभाव का।
**भैण**—स्त्री० बहिन।
**भैणथर**—पु० (मं०) भोर का तारा।
**भैणू**—पु० (शि०) भोर का तारा।
**भैतण**—स्त्री० (शि०) धर्मबहिन।
**भैतू**—पु० (शि०) धर्मभाई।
**भैतो**—पु० (शि०) भाईचारा।
**भैथू**—पु० मित्र, भाई, धर्मभाई।
**भैर**—पु० (मं०) व्यवहार।
**भैरव**—वि० (शि०) भयंकर।
**भैरी**—स्त्री० (ह०) व्यंग्य।

**भैरो**—पु० (कां०) भैरव।
**भैल**—स्त्री० (शि०) बैठक।
**भैवणी**—स्त्री० (शि०) रात जागते हुए बिताने की क्रिया।
**भैश**—पु० (मं०) अभ्यास।
**भैषम**—वि० (शि०) अतिमानवीय कार्य करने वाला।
**भैस**—स्त्री० (सो०) बहस।
**भैस**—पु० (शि०) अभ्यास।
**भैसुणा**—अ० क्रि० (सो०) बहस करना।
**भोंई**—स्त्री० (सि०) भौं।
**भोंउरा**—पु० (कु०) भ्रमर।
**भोंग**—स्त्री० (कु०) भांग।
**भोंचल**—पु० (शि०) भूचाल।
**भोंडापण**—पु० (शि०) कुरूपता, भद्दापन।
**भोंदू**—वि० मूर्ख।
**भोंपू**—पु० मुनादी करने के लिए प्रयुक्त टीन आदि का यंत्र।
**भोंभाका**—पु० (सि०) आग के तेज जलने का भाव।
**भो**—पु० भूसा।
**भोइंदा**—अ० (सि०) नीचे।
**भोइंसरा**—वि० (सि०) एकमंज़िला।
**भोइतो**—वि० (सि०) बहुत।
**भोइयारामारा**—वि० ग्रहदशा से ग्रस्त।
**भोई**—स्त्री० विवाहिता।
**भोई**—पु० (मं०) बलि का बकरा।
**भोईक**—पु० (सि०) कमाल।
**भोईचा**—पु० (सि०) भतीजा।
**भोक**—पु० छेद, छिद्र।
**भोकणु**—पु० छोटा सा छिद्र।
**भोका**—पु० बड़ा छिद्र, सुराख।
**भोख**—स्त्री० (शि०) भूख।
**भोखा**—वि० (बि०) अधिक खाने वाला।
**भोग**—पु० प्रसाद।
**भोगड़े**—पु० (मं०) रेत में भूने गए सूखी मक्की के दाने।
**भोगणा**—स० क्रि० भोगना।
**भोगणो**—स० क्रि० (शि०) भोगना, भुगतना।
**भोगिणा**—स० क्रि० (कु०) भोगा जाना।
**भोगी**—वि० गृहस्थी, भोगने वाला।
**भोगुवा**—पु० (कु०) धनिया।
**भोच्छ**—स्त्री० (मं०) भूख।
**भोच्छी**—स्त्री० (कु०) भूख।
**भोछौ**—वि० (कु०) भूखा।
**भोज**—पु० प्रीतिभोज।
**भोजकी**—पु० किसी का दिया खाने वाला व्यक्ति।
**भोजकी**—पु० (बि०) मंदिर का पुजारी।
**भोजगी**—पु० खानदानी पुजारी।
**भोजड़ी**—स्त्री० (चं०) छोटा मिंजर का मेला।
**भोजड़ी**—स्त्री० (चं०) भोजडू के पैसे से खरीदी गई वस्तु।
**भोजडू**—पु० (चं०) अनुजों को मेले में खरीदारी करने के लिए दिया गया अन्न।
**भोज़ण**—पु० (कु०) देवता को चढ़ाने के लिए तैयार किया गया विशेष भोजन।
**भोजा**—पु० (बि०) भांग प्रजाति का एक पौधा।
**भोज्जी**—स्त्री० (बि०) मिठाई।
**भोट**—पु० (सि०) सोयाबीन।
**भोट**—पु० तिब्बत का वासी।
**भोटणा**—अ० क्रि० (मं०) पतित होना।
**भोटणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०) सब कुछ छीन लेना।
**भोटरा**—वि० (चं०) समझते हुए भी नासमझ बना रहने वाला।
**भोटला**—वि० (सि०) बौना।
**भोटला**—पु० दे० भोट।
**भोड़**—पु० (चं०) ऊपर की मंजिल।
**भोडा**—वि० (ऊ०) ऐसा पशु जिसके सींग न हो।
**भोड़ा**—वि० (मं०) भोला।
**भोड़ा**—वि० (बि०, ह०) ऐसा पशु जिसके सींग नीचे को झुके हों।
**भोण**—पु० (सि०) भवन, देवी का मंदिर।
**भोणा**—स० क्रि० (सि०) विवाह करवाना।
**भोणा**—अ० क्रि० (चं०) होना।
**भोणोण**—वि० (सि०) करारा; सूखा।
**भोत**—वि० (सि०) बहुत।
**भोथरा**—वि० (शि०) कमज़ोर, कांपने वाला, सुस्त।
**भोधा**—पु० (चं०) बर्फ का गोला।
**भोघी**—स्त्री० (चं०) कान ढांपने की बड़ी टोपी।
**भोनणा**—स० क्रि० (कु०) तोड़ना; फाड़ना।
**भोनिणा**—स० क्रि० (कु०) तोड़ा जाना; फाड़ा जाना।
**भोफण**—स्त्री० (मं०) पलकें।
**भोफर**—पु० (सो०) कंधा।
**भोभर**—पु० गाल।
**भोयंदड़ा**—वि० (सो०) थोड़ा नीचे।
**भोयंदा**—अ० (सो०) नीचे की ओर।
**भोरना**—स० क्रि० (शि०) स्त्रियों का गूंथे हुए सिर के बालों को धोने के लिए खोलना।
**भोरशा**—पु० (सि०) विश्वास।
**भोरी**—स्त्री० (कु०) अनिश्चितावस्था।
**भोरी**—स्त्री० (सो०) खिड़की।
**भोलको**—अ० (सि०) कल।
**भोलखी**—स्त्री० (सि०) प्रातः।
**भोलड़ाशा**—वि० (सि०) बहुत सा।
**भोला**—वि० (सि०) बहुत, खूब।
**भोळा**—वि० (कु०, सो०) भोला।
**भोलिए**—अ० (ह०) भूल से।
**भोलिये**—अ० (शि०) अचानक, जो जानबूझ कर न किया गया हो।
**भोळू**—पु० (कु०) विषैला घास जिसको खाने से पशु प्रायः मर जाते हैं।
**भोळू**—वि० भोला।
**भोलेपा**—वि० (सि०) भोला-भाला।
**भोळेभाउएं**—अ० (कु०) भोलेपन से।

**भोळेमाएं**—अ० भोलेपन से।
**भोश**—पु० (मं०) फेफड़ा।
**भोसड़**—वि० बेकार (आदमी)।
**भोसड़**—पु० (मं०) गोदी।
**भोसा**—पु० (चं०) ज़मीन पर लगा सूखा घास।
**भोह**—स्त्री० (मं०) पशुओं का एक रोग।
**भोहरा**—वि० (चं०) चालाक।
**भौं**—स्त्री० भृकुटि।
**भौंकणा**—अ० क्रि० भौंकना।
**भौंका**—पु० व्यर्थ की बातें करने वाला।
**भौंदू**—वि० मूर्ख, नासमझ।
**भौंर**—पु० जंगली मधुमक्खी।
**भौंरा**—पु० भ्रमर, भंवरा।
**भौंरी**—स्त्री० (शि०, सो०) जंगली मधुमक्खी।
**भौंरी**—स्त्री० (कु०) छत में सबसे पहले लगने वाला शहतीर।
**भौंरू**—पु० (कु०) लोकगीत की एक शैली जिसे लंबी लय में गाया जाता है।
**भौ**—स्त्री० (सो०) आग की लपट।
**भौ**—पु० डर, भय।
**भौ**—अ० (शि०) भी।
**भौई**—स्त्री० (कु०) भय, डर।
**भौउणा**—अ० क्रि० (सो०) आग की लौ में झुलसना।
**भौकणा**—अ० क्रि० (कु०) जलना।
**भौगौत**—पु० (शि०) भक्त।
**भौचा**—पु० (शि०) भतीजा।
**भौजण**—पु० (सि०) भजन।
**भौटो**—पु० (कु०) दस-बारह 'भार' का बर्तन।
**भौड़कणा**—अ० क्रि० (सि०) भड़कना।
**भौडू**—पु० (कु०, शि०) दाल बनाने का गोल तथा भारी पात्र।
**भौण**—पु० मंदिर के आगे का खुला भाग।
**भौण**—पु० भवन।
**भौण**—पु० (बि०) मक्खियों का उड़ता हुआ समूह।
**भौणी**—पु० (बि०) कुएं से पानी खींचने के लिए लगाया गया लकड़ी का उपकरण।
**भौत**—वि० (सो०) अत्यधिक।
**भौत**—पु० (कु०) भात।
**भौता**—वि० (सो०) अधिक, अत्यधिक।
**भौती**—स्त्री० (कु०) देवता द्वारा आम जनता को दिया जाने वाला भोज जिसमें प्रायः चावल खिलाए जाते हैं।
**भौद**—पु० (सि०) भाद्रपद।
**भौददा**—वि० (सि०) भद्दा।
**भौद्र**—पु० (कु०) दे० भौद।
**भौन**—पु० (शि०) भवन।
**भौय**—पु० (सि०) भय।
**भौर**—पु० मन, प्राणवायु, आत्मा।
**भौरती**—स्त्री० (कु०, शि०) भरती।
**भौरना**—स० क्रि० (कु०) भरना, इकट्ठा करना।
**भौरभ्रोटू**—पु० (कु०) बोझ।
**भौरम**—पु० (कु०, सि०) भ्रम।
**भौरशा**—पु० (सि०) हरे गेहूं के भूने हुए दाने।
**भौरिणा**—स० क्रि० (कु०) भरा जाना।
**भौरी**—वि० (कु०) बहुत, भरा हुआ।
**भौरू**—वि० आवारा।
**भौरोमर**—पु० (सि०) लक्षण।
**भौरो**—पु० (कु०) उठाने के लिए रस्सी में इकट्ठा करके बांधा हुआ घास का बड़ा गट्ठर।
**भौर्के**—वि० (सि०) पूर्ण, पूरित।
**भौठ**—पु० (कु०) दे० भरठ।
**भौर्लू**—पु० (कु०) बांस की ढक्कन वाली गोल टोकरी जिसमें पकड़ने के लिए डंडी होती है।
**भौलिए**—अ० (शि०) खुशी से।
**भौल्लणा**—अ० क्रि० (शि०) चोट का ठीक होना।
**भौश**—पु० (कु०) फेफड़ा।
**भौशणा**—अ० क्रि० (कु०) जलना।
**भौस**—स्त्री० (कु०) दे० भस्मा।
**भौसमा**—पु० (शि०) दे० भस्मा।
**भ्याई**—स्त्री० (मं०) दलदल।
**भ्याई**—स्त्री० जन्म संस्कार के विशेष गीत।
**भ्याऊंशा**—वि० (कु०) उतराई वाला।
**भ्याखणा**—स० क्रि० झांकना, ताकना।
**भ्याग**—स्त्री० प्रातः।
**भ्यागड़ा**—पु० प्रातःकाल गाया जाने वाला गीत।
**भ्यागा**—अ० उषाकाल।
**भ्याणा**—स० क्रि० (मं०) विवाह करवाना।
**भ्याणु**—पु० भोर का तारा।
**भ्याम**—वि० (शि०) विकराल।
**भ्यार**—पु० (कु०) छत से स्लेट निकाल कर प्रकाश आने के लिए बनाया गया मार्ग।
**भ्याल**—पु० (सि०) किनारे का छोटा मकान।
**भ्याळ**—पु० (चं०) भाई, भाईचारा।
**भ्यासुणा**—अ० क्रि० (सो०) अभ्यास पड़ना।
**भ्रश्टणा**—अ० क्रि० (सो०) भ्रष्ट बोलना, गाली देना।
**भ्राउज़ी**—स्त्री० (कु०) छोटे भाई की पत्नी।
**भ्राखु**—पु० (चं०) मसूढ़े।
**भ्रूंगणा**—अ० क्रि० (मं०, शि०) बाघ का हुंकारना।
**भ्रूंहड़**—पु० (चं०) कूड़े-कचरे का स्थान।
**भ्रेवणा**—स० क्रि० (सो०) गोबर आदि साफ करना या इकट्ठा करना।
**भ्रैंअण**—पु० (कु०) छत का निचला शहतीर।

## म

**म**—देवनागरी वर्णमाला में पवर्ग का अंतिम व्यंजन वर्ण। उच्चारण स्थान ओष्ठ और नासिका। स्पर्श वर्ण, अनुनासिक।

**मंग**—स्त्री० (चं०) वह कन्या जिसके साथ विवाह निश्चित किया गया हो।

**मंगण**—पु० खटमल।

**मंगण**—पु० (चं०) मंगलवार।

**मंगणी**—स्त्री० सगाई।

**मंगणी**—स्त्री० (चं०) मांगी हुई वस्तु।

**मंगता**—पु० भिखमंगा, भिखारी।

**मंगर**—पु० (सो०) मार्गशीर्ष।

**मंगळ**—पु० मंगलवार।

**मंगला**—वि० (चं०) सफेद माथे वाला पशु।

**मंगलाचारी**—पु० (बि०) नगाड़ा बजाने वाला।

**मंगसर**—पु० मार्गशीर्ष।

**मंगसीर**—स्त्री० (कु०) मार्गशीर्ष में होने वाली वर्षा।

**मंगाही**—स्त्री० (चं०, बि०) महंगाई।

**मंगू**—पु० (सि०, बि०) मिट्टी का छोटा घड़ा।

**मंगेड़**—स्त्री० (मं०) मूंग की खिचड़ी।

**मंगेतर**—वि० जिसके साथ विवाह के लिए सगाई हो गई हो।

**मंगैई**—स्त्री० (सो०) महंगाई।

**मंगोआ**—पु० (मं०) चावल की एक किस्म।

**मंगोडू**—पु० (बि०, मं०) पीसे हुए मूंग की सब्जी।

**मंगोहलू**—पु० (कु०) भांग के बीज।

**मंघड़ियां**—स्त्री० (ऊ०, कां०) मृतक के निमित्त तेरहवें दिन किया गया यज्ञ।

**मंघयाई**—स्त्री० महंगाई।

**मंघी**—स्त्री० घी, छाछ आदि रखने का मिट्टी का छोटा पात्र।

**मंघीरी**—स्त्री० (कु०) मुख्य पिंडी तथा मूर्ति रखने का कमरा।

**मंघूगा**—पु० (शि०) Sedum trifidum.

**मंज**—स्त्री० (चं०) भैंस।

**मंज**—स्त्री० (चं०) डांट।

**मंजकलो**—वि० (शि०) बीच वाला।

**मंजयाला**—वि० (बि०) मझला।

**मंजरी**—स्त्री० धान के घास की चटाई।

**मंजरेणा**—स० क्रि० (बि०) बीच से निकालना।

**मंजरोली**—स्त्री० (कां०) धान के घास का पूला।

**मंजा**—पु० चारपाई।

**मंजाई**—स्त्री० (चं०, बि०, सो०) बर्तन साफ करने की क्रिया; बर्तन साफ करने का पारिश्रमिक।

**मंजी**—स्त्री० चारपाई।

**मंजीरा**—पु० एक वाद्ययंत्र।

**मंजूर**—पु० स्वीकार, मंज़ूर।

**मंजूरना**—स० क्रि० (सो०) स्वीकार करना।

**मंजे**—अ० (सो०) बीच में।

**मंजोळी**—स्त्री० छोटी चारपाई।

**मंझराला**—वि० (चं०) चुगलखोर।

**मंझामंझी**—अ० (कु०) बीच में।

**मंझार**—स्त्री० (मं०) छप्पर टिकाने हेतु लगा सबसे ऊपर वाला मोटा शहतीर।

**मंझोतरा**—पु० पौधे के बिल्कुल मध्य में उगने वाला पत्ता।

**मंझोला**—वि० मझला।

**मंड**—स्त्री० (चं०, बि०) आवश्यकता, जरूरत।

**मंडड़**—पु० (मं०) मंडप।

**मंडणा**—स० क्रि० पट्टू को मांडना।

**मंडणा**—अ० क्रि० (बि०, ह०) गंदा होना।

**मंडमाली**—स्त्री० (कु०) देवता के छत्र के नीचे मुख के ऊपर पहनाया जाने वाला आभूषण।

**मंडयासा**—पु० साधारण पगड़ी।

**मंडराणा**—अ० क्रि० मंडलाकार चक्कर देते हुए उड़ना, किसी के आस-पास चक्कर काटना, घूमते रहना।

**मंडल**—पु० संगठन।

**मंडल**—पु० (बि०) बीड़ी का बंडल, पुलिंदा।

**मंडल**—पु० पूजा का मंडल।

**मंडळ**—पु० (सि०) बाजरे जैसा एक अनाज़।

**मंडली**—स्त्री० समुदाय।

**मंडशेपर**—पु० (शि०) सिर।

**मंडहोरू**—पु० (सि०) धागे का गोला।

**मंडा**—पु० (मं०) आमपापड़।

**मंडाई**—स्त्री० मांडने की क्रिया; मांडने के लिए दिया जाने वाला पारिश्रमिक।

**मंडाखण**—पु० (कु०) सिर।

**मंडार**—वि० मांड़ने वाला।

**मंडासा**—पु० (कु०) पगड़ी।

**मंडाह**—स्त्री० (मं०) सिर का दर्द।

**मंडुआ**—पु० (सो०) मंडप, विवाह के अवसर पर वेदी के मध्य लटकाया गया मंगलसूचक वस्त्र विशेष।

**मंडोणा**—अ० क्रि० (कां०) लथपथ होना।

**मंढळ**—पु० (कां०, बि०, ह०) कोदो (अन्न)।

**मंढार**—पु० (कां०) देवालय।

**मंढारना**—स० क्रि० (कु०) देवता को देवमंदिर में वापिस बिठाना।

**मंढारिना**—अ० (कु०) देवता का मंदिर में प्रवेश होना।

**मंढूको**—पु० (सो०) मेंढक।

**मंद**—पु० (कां०) भूतबाधा या शारीरिक कष्ट हटाने की मंत्र-क्रिया।

**मंद**—पु० (बि०) गले की बीमारी का मंत्र द्वारा किया गया उपचार।

**मंदभाग**—वि० भाग्यहीन।

**मंदर**—पु० मंदिर।

**मंदरा**—पु० (चं०) वृक्ष विशेष। धान का घास।

**मंदरा**—वि० छोटे कद का।

**मंदरा**—पु० (ऊ०, कां०) चने, राजमाश आदि की दही, घी और

मसालों से तैयार की गई सब्जी।
**मंदराई**—पु० (चं०) एक लंबा घास जिससे चटाई बनाई जाती है।
**मंदराता**—पु० (मं०) धरन खिसकने का रोग।
**मंदरी**—स्त्री० (कु०, चं०) पयाल की चटाई।
**मंदरेउड़ी**—स्त्री० (कु०, ह०) पयाल की चटाई बुनने की बारीक रस्सी।
**मंदरोट**—स्त्री० नवयौवना।
**मंदळा**—पु० (चं०) मंडप। नवाले में शिवपूजन हेतु माला के नीचे वर्गाकार में आटे की ढेरियों से बनाया विशेष मंडप जिसमें प्रत्येक ढेर पर 'बबरू' और 'बड़े' रखे जाते हैं।
**मदा**—स्त्री० (ह०) व्यथा।
**मंदा**—वि० दुर्बल।
**मंदा**—वि० अल्प मूल्य का, सस्ता।
**मंदार**—पु० Acerspp.
**मंदी**—स्त्री० (चं०) मृत्यु के उपरांत क्रियाकर्म तक के दिन।
**मंदी**—स्त्री० कमी; कम मूल्य पर बिक्री।
**मंधेर**—पु० (सि०) Zizyphus xylopara.
**मंधेरना**—स० क्रि० पानी आदि तरल पदार्थ को नीचे बिखेर देना।
**मंशीरा**—पु० (मं०) एक वन्य देव।
**मंहिशा**—स्त्री० (शि०) भैंस।
**मंहिशा**—पु० (शि०) भैंसा।
**म:ळ**—पु० चीनी की चाशनी बनाते हुए निकली मैल।
**म:ळस**—स्त्री० (ह०) वह स्थान जहां गोबर इकट्ठा किया जाता है।
**मअ**—पु० (शि०) मधु, शहद।
**मइमा**—स्त्री० (सो०) महिमा।
**मईंगा**—वि० (सो०) महंगा।
**मई**—स्त्री० सुहागा।
**मईड़ा**—पु० (बि०) सुहागा।
**मईदान**—पु० (सि०) मैदान।
**मउत**—स्त्री० मृत्यु।
**मउर**—पु० (मं०) छप्पर का चौड़ाई वाला भाग।
**मउल**—पु० (शि०) महल।
**मउलेअरी**—स्त्री० (चं०) मामा की लड़की।
**मऊना**—पु० कलाई।
**मऊर**—पु० (चं०) मसर।
**मऊरो**—पु० (शि०) एक विषैली जड़ी।
**मऊलेण**—स्त्री० (चं०) मामी।
**मऊलो**—वि० (सि०) ताज़ा।
**मएदा**—पु० (सि०) मैदा।
**मऐ**—पु० (शि०) उपाय।
**मकड़ा**—पु० (मं०) केकड़ा।
**मकड़ा**—पु० (चं०) दावं विशेष।
**मकड़ा**—वि० (चं०) छल करने वाला, मक्कार।
**मकणा**—अ० क्रि० (चं०, ह०) अनाज़ का खराब होना, गर्मी के कारण दाल, सब्जी आदि का खराब होना।
**मकतब**—पु० (कु०, चं०) पाठशाला।
**मकदमा**—पु० मुकद्दमा।
**मकर**—पु० धोखा।
**मकरा**—वि० कामचोर।
**मकराज**—पु० (कां०) चमड़ा काटने की कैंची।
**मकरूज़**—वि० (चं०) कर्ज़दार।
**मकलसी**—स्त्री० (चं०) सफेद मिट्टी।
**मकलावा**—पु० (सो०) दूल्हे की वर-यात्रा का आरंभ।
**मकलावा**—पु० शादी के पश्चात् कन्या की प्रथम बार ससुराल के लिए विदाई।
**मकवाबला**—पु० (सो०) मुकाबला।
**मकवाम**—पु० (मं०) ऐसा स्थान जहां तांत्रिक विद्या द्वारा 'खोट' का पता चले।
**मकवामिया**—वि० (मं०) तंत्र विद्या में निपुण, तांत्रिक।
**मकशीर**—पु० (कु०) मार्गशीर्ष।
**मकसूद**—पु० (सो०) हलवा बनाने के लिए बना लकड़ी का पलटा।
**मका:ण**—स्त्री० किसी के मरने पर सांत्वना देना।
**मकाइणा**—स० क्रि० (कु०) मारा जाना, समाप्त किया जाना।
**मकाण**—स्त्री० (चं०) दे० मका:ण।
**मकाणा**—स० क्रि० जान से खत्म करना, समाप्त करना।
**मकाबला**—पु० मुकाबला।
**मकेदमा**—पु० (कु०) मुकदमा।
**मकोड़ा**—पु० (सो०) भूरे या पीले रंग की बड़ी-चींटी।
**मकोड़ाघाहा**—पु० (ऊ०) Gymbopogon martinic.
**मकोड़ी**—स्त्री० चींटी।
**मकोणा**—अ० क्रि० (बि०) हाथ-पांव का शिथिल हो जाना।
**मकोणा**—अ० क्रि० समाप्त होना।
**मकोळ**—पु० दीवारों में लिपाई करने की सफेद मिट्टी।
**मकोळता**—वि० 'मकोळ' से लीपा गया।
**मकोळना**—स० क्रि० (सो०) 'मकोळ' से दीवारों की लिपाई करना।
**मकोह**—पु० (सि०) Zizyphus oenoplea..
**मकौण**—स्त्री० (सि०) क्रियाकर्म।
**मकौणा**—स० क्रि० (सि०) किसी चीज़ को समाप्त करना।
**मक्का**—वि० हकलाने वाला।
**मक्खू**—पु० उड़ने वाले छोटे-छोटे कीट।
**मक्खू**—पु० मक्की के पौधे का रोग।
**मक्शी**—स्त्री० (चं०) स्याही।
**मख**—पु० पशुओं को काटने वाली बड़ी मक्खी।
**मख**—पु० (उ०, कां०) मच्छर।
**मखटा**—पु० (शि०) लालसा, इच्छा।
**मखत्यार**—पु० मुख्तार, अधिकार प्राप्त व्यक्ति विशेष जिसे किसी दूसरे का कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो।
**मखत्यारनाउंआ**—पु० अधिकार-पत्र।
**मखाणा**—पु० चीनी से बनाया गया इलायचीदाना।
**मखाणा**—पु० कमलगट्टा।

**मखीचूस**—वि० कंजूस।
**मखीर**—पु० शहद।
**मखें**—अ० "मैंने कहा" ऐसा भाव व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त अव्यय शब्द।
**मखेहड़ा**—पु० मक्खियों का समूह।
**मखोटा**—पु० (सि०) Eicus scandens.
**मखोटा**—पु० (शि०) मक्खी का घर।
**मखौल**—स्त्री० उपहास, मज़ाक।
**मख्यार**—पु० (चं०) Salvia glutinosa.
**मगड़धून**—स्त्री० (मं०) मंगलध्वनि।
**मगन**—वि० मस्त; प्रसन्नचित्त।
**मगर**—पु० (सि०) बांस की एक उन्नत जाति।
**मगर**—अ० पीछे।
**मगरी**—स्त्री० (मं०) स्तन स्तंभन का प्राचीन वस्त्र।
**मगरू**—पु० छोटा पतला बांस।
**मगरू**—पु० (कु०) चश्मे के पानी को प्रवाह देने हेतु लगाई गई छोटी नाली।
**मगरू**—पु० (ऊ०, कां०, चं०) चश्मा।
**मगरूर**—वि० अभिमानी।
**मगाउणा**—स० क्रि० (शि०) मंगाना।
**मगालणो**—स० क्रि० (शि०) पानी व मिट्टी को एक-रूप बनाना।
**मग्गर**—पु० (ऊ०) Bambura arundinacea.
**मग्रांद**—स्त्री० (कु०) संक्रांति से अगला दिन।
**मघ**—पु० (कां०) पात्र।
**मघ**—स्त्री० पिप्पली, पिपरामूल, पीपल नाम की औषधि।
**मघडु**—पु० मिट्टी का छोटा पात्र।
**मघडू**—पु० (चं०) कुआं।
**मघणा**—अ० क्रि० आग का पूरी तरह से जलना, अधिक गर्म हो जाना।
**मघा**—स्त्री० पिप्पली, पिपरामूल, पीपल नामक औषधि।
**मघाणा**—स० क्रि० आग को पूरी तरह जलाना।
**मघेर**—पु० मार्गशीर्ष।
**मघोर**—पु० (कु०) माथे या सिर पर चोट लगने के कारण उभरा भाग, गुमटा।
**मघोहडु**—पु० (मं०) भांग के बीज।
**मचंग**—पु० (ह०) उद्दंडता।
**मच**—पु० (चं०) धान रोपने के लिए दलदल युक्त खेत को समतल करने हेतु प्रयुक्त सुहागा।
**मच**—स्त्री० धान रोपने के लिए तैयार किया दलदल युक्त खेत।
**मचकणा**—स० क्रि० हाथ में पकड़कर भींचना।
**मचकणा**—अ० क्रि० मस्त होकर नाचना।
**मचका**—पु० बार-बार आया क्रोध।
**मचणा**—स० क्रि० (ह०) नए घड़े को लस्सी आदि डाल कर चिकना करना।
**मचणा**—अ० क्रि० (सि०) पक्का होना।
**मचमचात**—स्त्री० अत्यधिक चंचलता।
**मचरीन**—स्त्री० (सो०) मूत्र की दुर्गंध।
**मचरूंडणा**—स० क्रि० रोटियों को तोड़ना।
**मचरूंडा**—वि० (सो०) रोटियों के चूरे का बनाया गया घोल।
**मचरूंडा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) झपट।
**मचरू**—पु० (कां०) Clematis nutans.
**मचला**—वि० जान-बूझकर जी चुराने वाला।
**मचलुणा**—अ० क्रि० चुपचाप पड़े रहना।
**मचलेणा**—स० क्रि० (सो०) चुपचाप बिठाए रखना।
**मचाई**—स्त्री० खेत को समतल करने की क्रिया।
**मचाउणा**—स० क्रि० मचाना।
**मचार**—वि० (चं०, ह०) धान के खेत को समतल करने वाला।
**मचावणो**—स० क्रि० (शि०) मदिरापान करवाना।
**मचाहलड़**—पु० व्यर्थ का शोर।
**मची**—स्त्री० (मं०) काली मिर्च।
**मचीलणा**—स० क्रि० (कु०) निचोड़ना।
**मचूच**—स्त्री० डराने के लिए भींचे गए होंठ।
**मचेहणा**—स० क्रि० किसी वस्तु को दांतों से काटकर खाना, जल्दी-जल्दी खाना।
**मचौल्हड़ा**—वि० (कु०) बार-बार मूत्र करने वाला।
**मच्च**—पु० (ह०) दलदल, कीचड़।
**मच्छ**—पु० बहुत बड़ी मछली।
**मच्छरना**—अ० क्रि० (सि०) छाछ बिलोते समय अधिक समय लगना।
**मच्छरना**—अ० क्रि० अकड़ जाना, रूठ जाना, किसी की बात को न मानना।
**मच्छी**—स्त्री० मछली।
**मच्छीमार**—पु० बगुला, मछलियां पकड़ने वाला।
**मछयाळ**—पु० नदी का वह भाग जहां मछलियां पाली जाती हैं।
**मछयाळी**—स्त्री० जाल का बाहरी भाग।
**मछरमार**—पु० (चं०) त्रायमाण।
**मछरावणो**—स० क्रि० (सि०) छेड़ना।
**मछरू**—पु० (ऊ०) Clematis nutans.
**मछरैहदा**—वि० (बि०) बात-बात पर बिगड़ने वाला व्यक्ति।
**मछली**—स्त्री० नाक के मध्य में पहना जाने वाला आभूषण।
**मछलैंजी**—स्त्री० मछली की तरकारी।
**मछारो**—वि० (शि०) मछुआ, मछली पकड़ने वाला।
**मछाला**—पु० (सि०) बड़ा परिवार।
**मछाहड़**—पु० (कां०) उखाड़े हुए घास का जड़ वाला भाग।
**मज**—स्त्री० भैंस।
**मजकणा**—स० क्रि० (सो०) साबुन, तेल आदि मलना, घिसना।
**मजकोरना**—स० क्रि० (सो०) कपड़ों को धोते समय हाथ से मसलना।
**मज़त**—स्त्री० सहायता, मदद।
**मजनू**—पु० बेंत प्रजाति का वृक्ष जिसकी टहनियां नीचे की ओर लटकी रहती हैं।

**मजमा**—पु० जुलूस, भीड़।
**मजलस**—स्त्री० जलसा।
**मज़हब**—पु० धर्म।
**मजाजतला**—वि० (कु०) फैशन करने वाला।
**मजाज़िणा**—अ० क्रि० (कु०) फैशन किया जाना।
**मजाजी**—वि० घमंडी।
**मज़ारा**—पु० मुज़ारा।
**मजीठणा**—स० क्रि० (बि०) इंतज़ार करना।
**मजूर**—पु० मज़दूर।
**मजूरी**—स्त्री० मज़दूरी।
**मजोन्हा**—वि० (कु०) बीच का।
**मज्वारा**—पु० (बि०) मुज़ारा।
**मझन्ना**—पु० (ह०) बड़े से छोटा भाई।
**मझयार**—पु० मंझधार।
**मझाका**—वि० (सि०) निश्चित।
**मझाड़ा**—वि० टोकरी बनाने वाला।
**मझोला**—पु० दीवार पर पलस्तर करने का उपकरण।
**मझोला**—वि० मध्यस्थ।
**मट**—पु० पानी का बड़ा घड़ा जिसे मिट्टी में दबाए रखते हैं ताकि पानी ठंडा रहे।
**मटक**—स्त्री० लचक, चुलबुलापन।
**मटकांदा**—पु० (सो०) मिट्टी की दीवार।
**मटकाणा**—स० क्रि० लचकाना।
**मटकी**—स्त्री० रूखी घास।
**मटकोणा**—अ० क्रि० इठलाना।
**मटण**—स्त्री० (चं०) बड़ा घड़ा।
**मटणा**—अ० क्रि० (बि०) ज़मीन से पानी का निकलना।
**मटनाड़**—स्त्री० (मं०) मिट्टी की परात।
**मटयाई**—स्त्री० (सो०) मोटाई।
**मटयाणा**—स० क्रि० मिटाना।
**मटयान्ना**—पु० (सि०) वह स्थान जहां से घर लीपने के लिए मिट्टी लाई जाती है।
**मटर**—पु० मटर।
**मटाउणेरो**—पु० (शि०) झाड़न।
**मटाका**—वि० (सि०) बढ़चढ़ कर बातें करने वाली (स्त्री)।
**मटाका**—पु० (चं०, बि०) नखरा।
**मटिउणा**—पु० (मं०) मिट्टी, रेत आदि छानने की छलनी।
**मटियार**—स्त्री० युवती, यौवना।
**मटुआ**—पु० (कां०) गेहूं की बाली।
**मटेइणा**—स० क्रि० (कु०) रोका जाना। मिटाया जाना।
**मटेणा**—स० क्रि० (कु०, सो०) रोकना। मिटाना।
**मटेन**—पु० (सो०) लिपाई की मिट्टी की खान।
**मटेमसाले**—पु० गर्म मसाले।
**मटेर**—पु० (चं०) छोटे-बड़े घड़े।
**मटेयणा**—स० क्रि० (सो०) मिटा देना, लिखे हुए को मिटाना। खिला-पिलाकर मोटा करना; चापलूसी करके फुलाना।
**मटैन्ना**—पु० (कां०) विशेष प्रकार की मिट्टी की खान।
**मटैरा**—पु० (मं०) मिट्टी की दीवारों वाला घर।
**मटोणा**—स० क्रि० आटा गूंथना। अ० क्रि० मोच आना। मिट जाना।
**मटोरी**—स्त्री० (कां०) लकड़ी की चौकोर छोटी थाली, तश्तरी, रकाबी।
**मटोशल**—पु० (कु०) एक जंगली कुकुरमुत्ता।
**मटोशू**—पु० (मं०) मिट्टी का गमला, मिट्टी का कटोरा।
**मटोह**—पु० (मं०) बैल के मुंह में लगाई जाने वाली जाली।
**मटौंटा**—वि० (कु०) सख्त (आटा)।
**मट्टी**—स्त्री० (कां०) सीधी टहनी।
**मट्टी**—स्त्री० मिट्टी।
**मट्ठड़ा**—वि० छोटा।
**मट्ठणा**—अ० क्रि० (बि०) शांत होना।
**मट्ठा**—पु० (ऊ०, कां०) फूलदार पकवान विशेष, बड़ी मठली।
**मट्ठा**—पु० (मं०, सि०) लड़का।
**मट्ठी**—स्त्री० (मं०, सि०) लड़की।
**मट्ठी**—स्त्री० मठली।
**मट्ठें**—अ० धीरे।
**मठड़ी**—स्त्री० गरी, अखरोट मिश्रित पकवान।
**मठयास**—स्त्री० (सो०) मिठास।
**मठरेहड़ना**—अ० क्रि० (मं०) तन्हाई, प्रमाद, आलस्य में अंगड़ाई लेना।
**मठलूणा**—वि० (सो०) कम नमक वाला।
**मठा**—पु० पकौड़ियां डालकर बनाया गया दही का रायता।
**मठा**—अ० (ऊ०, कां०) ज़रा सा।
**मठार**—पु० (सो०) तेल आदि का हलका लेप।
**मठास**—स्त्री० (सो०) मिठास।
**मठींगळा**—स्त्री० (कु०) आटे आदि का पेड़ा।
**मठीण**—स्त्री० (बि०) सोडा।
**मठु**—पु० (मं०) शिशु।
**मठुणी**—स्त्री० (कां०, बि०) मुट्ठी में भींचकर पितरों के निमित्त रखे गए चावल।
**मठुन्नी**—स्त्री० मुट्ठी में किसी वस्तु को भींचकर बनाया गया पिंड।
**मठेई**—स्त्री० (मं०) मिठाई।
**मठे-मठे**—वि० (शि०, सो०) छोटे-छोटे (बच्चे)।
**मठेळना**—स० क्रि० (कु०) निचोड़ना।
**मठोलस**—पु० (कां०, कु०, चं०) Tanacetum-longifolium.
**मड़**—पु० (मं०) गोबर।
**मड़कणा**—वि० (सो०) कमज़ोर टहनियों वाला (वृक्ष)।
**मडणका**—पु० (मं०) गंदम की स्थानीय किस्म।
**मड़तिथि**—स्त्री० (शि०) श्राद्ध।
**मड़द**—पु० (मं०) पुरुष, मर्द।
**मड़दोहणू**—पु० (कु०) शव को जलाने के लिए रखे गए आदमी।
**मड़धूड़**—स्त्री० श्मशान भस्म।
**मड़ना**—स० क्रि० (मं०) मालिश करना।

**मड़माहरखी**—स्त्री० (मं०) पशुओं का खून चूसने वाली मक्खी।
**मड़याखी**—पु० (मं०) आंखों के गड्ढे।
**मड़यासा**—पु० भारी बोझ उठाने के लिए सिर पर लपेटा कपड़ा।
**मड़वा**—पु० (शि०) श्मशान।
**मड़श्यानी**—स्त्री० (बि०) श्मशान।
**मड़ा**—वि० (ह०) कमज़ोर, दुर्बल।
**मड़ाए**—वि० (सि०) दुर्बल।
**मड़ाख**—स्त्री० (सि०) थकावट।
**मड़ाखण**—पु० (कु०) अंग।
**मडारी**—स्त्री० (मं०) हिस्सा, भाग।
**मडाळो**—पु० (सि०) बाल।
**मडासा**—पु० (बि०) बोझ उठाने के लिए सिर पर बांधा गया वस्त्र।
**मडाह**—स्त्री० (मं०) सिरदर्द।
**मडेंड**—पु० (बि०) साफ।
**मड़ेओट**—स्त्री० (मं०) गोबर या मल का ढेर।
**मड़ेओणा**—स० क्रि० (मं०) टूटे लोहे को जोड़ना
**मड़ेखणा**—स० क्रि० तोड़-मरोड़ करना।
**मड़ेखणा**—स० क्रि० (मं०) गर्दन घुमा देना।
**मड़ेरी**—वि० (सि०) यशस्वी।
**मड़ैनी**—स्त्री० (शि०) फर्श में लगी आड़ी लकड़ियां।
**मडोखर**—पु० (सो०) सिर।
**मडोखरी**—स्त्री० (सि०) बकरे का सिर।
**मड़ोळी**—स्त्री० (मं०) खेत में गोबर फेंकने की क्रिया।
**मड्ड**—पु० (बि०) धान की पौध लगाने के लिए तैयार किया गया खेत।
**मड्डा**—वि० (सि०) दुर्बल, कमज़ोर।
**मढ**—पु० (कु०, चं०, बि०) मेले में ठहरने के लिए मंदिर के आस-पास बनाया गया भवन, सराय।
**मढन**—पु० (मं०) साबुन।
**मढना**—स० क्रि० जबरदस्ती देना। लपेटना। फोटो में फ्रेम लगाना।
**मढन्नी**—स्त्री० (चं०) जंगली पुदीना।
**मढरमलुआं**—पु० (कां०) रक्तविकार का एक रोग।
**मढाई**—स्त्री० मढ़ने की क्रिया; मढ़ने का पारिश्रमिक।
**मढाना**—पु० (सि०) गडरिया।
**मढाम**—पु० (कु०) मधुमक्खी पालने के लिए तैयार किया गया लकड़ी का छोटा बक्सा जो प्रायः मकान की दीवारों में ही गाड़ा जाता है।
**मढार**—पु० (कु०) भंडार।
**मढारी**—पु० (कु०) देवता तथा उसके मंदिर की देख-भाल करने वाला।
**मढासा**—पु० (सो०) बोझ उठाने के लिए सिर पर बांधा गया वस्त्र। अस्तव्यस्त ढंग से बंधी पगड़ी।
**मढिन**—स्त्री० (कु०) मृतक से आने वाली गंध।
**मढी**—स्त्री० छोटा मठ, छोटा मंदिर, कुटी।
**मढीगणा**—वि० दुर्बल, कमज़ोर।
**मढेघ**—पु० (चं०) काटने वाला कुत्ता।
**मण**—पु० चालीस सेर का वज़न।
**मणकच्चा**—पु० सोलह सेर का वज़न।
**मणका**—पु० मनका, माला का मनका।
**मणकै**—पु० (चं०) रीढ़ की हड्डी के जोड़।
**मणपक्का**—पु० चालीस सेर का वज़न।
**मणमासा**—पु० (चं०) अधिक मास, मलमास।
**मणयाता**—पु० (मं०) देवशक्ति से प्रेरित व्यक्ति जो समय-समय पर लोगों का इलाज करता है।
**मणरंजन**—पु० (सि०) मनोरंजन।
**मणश**—पु० (कु०) मनुष्य।
**मणशणा**—स० क्रि० दान करना।
**मणसणा**—स० क्रि० दान करना।
**मणसीरा**—वि० दान किया हुआ।
**मणसीरा**—वि० (सि०) पत्नी का प्रशंसक।
**मणसोत्रु**—वि० दान के योग्य।
**मणहाम**—पु० (कु०) मधुमक्खी का कोश।
**मणहु**—पु० (चं०) मनुष्य।
**मणिकाटा**—पु० (चं०) हीरा।
**मणू**—पु० (ह०) दोष, त्रुटि, ऐब, नुक्स।
**मणूस**—वि० अशुभ, अशुभसूचक, उदासी भरा।
**मण् होणा**—स० क्रि० (बि०) मापा जाना।
**मत**—स्त्री० मति, बुद्धि।
**मतगेरा**—पु० (सो०) मृत्यु का अशौच।
**मतझींजीरा**—पु० (शि०) Cotoneaster macrophylla.
**मतबन्ना**—पु० दत्तक पुत्र।
**मतरेर**—वि० सौतेला।
**मतरेहन**—स्त्री० मूत्र से आने वाली दुर्गंध।
**मतलबी**—वि० स्वार्थी।
**मताः**—वि० (ह०) विशेष।
**मताःआ**—वि० (कु०) मदमस्त।
**मताःन**—पु० (सि०) परीक्षा।
**मता**—वि० अधिक, बहुत।
**मताद**—स्त्री० (कु०) मदद, सहायता।
**मताद**—स्त्री० (सो०) उल्लेखनीय वस्तु।
**मतायें**—पु० (सि०) सांपों का जोड़ा।
**मताळा**—वि० (कु०) मतवाला, नशे में धुत्त।
**मताळिणा**—अ० क्रि० (कु०) नशा लगना।
**मतिरला**—वि० (सो०) उच्च जाति का।
**मतुआळा**—वि० मतवाला।
**मतेई**—स्त्री० विमाता, सौतेली मां।
**मत्थणा**—स० क्रि० पोतना।
**मत्था**—पु० माथा; ऊंचा स्थान।
**मत्यागरा**—पु० (सि०) मरने के उपरांत का हवन।
**मत्यान**—पु० परीक्षा।
**मथणा**—स० क्रि० सोचना।
**मथलैणी**—स्त्री० (शि०) श्मशान।

मथा—अ० (शि०) ऊपर।
मथींगणा—स० क्रि० मसलना।
मथीचड्ड—पु० (मं०) मेथी की खिचड़ी।
मथीनण—स्त्री० अरबी को उबालकर बनाई गई तरकारी।
मथैर—स्त्री० (चं०) छत का वह भाग जहां दोनों पक्ष मिलते हों।
मद—स्त्री० (शि०) मद्य।
मदखाण—पु० (बि०) एक पुष्प विशेष।
मदम—वि० (सि०) धीमा, मद्धम।
मदरसा—पु० पाठशाला।
मदराइसण—पु० (कु०) माघ संक्रांति के अवसर पर कमरे की छत के अंदरूनी भाग में मिट्टी की बनाई देव-मूर्ति।
मदरौहणु—पु० (कु०) लाश को जलाने वाले।
मदाणी—स्त्री० (सो०) दूध बिलोने की मथनी।
मदाद—स्त्री० सहायता, मदद।
मदादी—वि० सहायता करने वाला।
मदान—पु० मैदान।
मदानी—वि० मैदानी।
मदानी—पु० मैदे का खमीर वाला घोल।
मदाहुला—पु० (कु०) गेहूं में उगने वाला एक फूल।
मदोदरी—स्त्री० (मं०) एक दूध वाली बूटी जिससे पशुओं के पैर के कीड़े मर जाते हैं।
मधरा—वि० छोटा।
मधरा—पु० एक विशेष प्रकार की तरीदार सब्जी।
मधराण—स्त्री० (मं०) छत में डाली जाने वाली लंबी तथा मोटी लकड़ी।
मधाणी—स्त्री० मथनी।
मधेरना—स० क्रि० उड़ेलना।
मधोहड़—स्त्री० (मं०) मांग।
मनका—स्त्री० (कु०, चं०) मुनक्का, बड़ी दाख।
मनक्का—स्त्री० (सो०) मुनक्का।
मनगाणा—वि० (सो०) उदास।
मनड्ड—पु० मन।
मनणा—अ० क्रि० मानना।
मनपरचांदा—वि० मनभावन।
मनमत्र—पु० (मं०) पालकी पर लगाया जाने वाला पीला वस्त्र।
मनमनोती—स्त्री० फैसला, निश्चय।
मनमर्ज़ी—स्त्री० मनमानी।
मनयाद—स्त्री० नींव, बुनियाद।
मनयाद—स्त्री० (सो०) अवधि, समय की सीमा।
मनयाली—स्त्री० (बि०) पशुओं की पूंछ में लगने वाली बीमारी।
मनशा—स्त्री० (कु०) उद्देश्य, इच्छा।
मनसब—पु० न्यायाधीश।
मनसा—स्त्री० अभिलाषा, इच्छा।
मनह—पु० (ह०) रियासतों की सीमाओं पर बनाया गया पत्थरों का चबूतरा, बुत।
मनारी—वि० (बि०) मन की।
मना—स्त्री० (सि०) मैना।
मनाड़ना—स० क्रि० (कु०) खत्म करना।
मनारणो—अ० क्रि० (सि०) फुसफुसाना।
मनाल—पु० (कु०) मृणाल पक्षी।
मनाह—पु० (चं०) चमगादड़।
मनियारी—स्त्री० श्रृंगार की वस्तुएं।
मनीम—पु० मुनीम।
मनीर—पु० (मं०) मछली मारने वाला।
मनु—पु० (शि०) दिल।
मनुख—पु० मनुष्य।
मनेजर—पु० प्रबंधक, मैनेजर।
मनेझर—पु० (चं०) दे० मनेजर।
मनेवणा—स० क्रि० (सो०) मनवाना, मनाना।
मनोणा—स० क्रि० मनवाना।
मन्न—पु० (ऊ०, कां०, बि०) मक्की की बड़ी रोटी।
मन्नणा—अ० क्रि० (बि०) मानना।
मन्नादी बुखार—पु० मियादी बुखार, सान्निपातिक ज्वर जो दूसरे से चौथे और कभी-कभी छठे सप्ताह तक चला जाता है, टायफायड।
मन्नो—सर्व० (सि०) मुझे।
मन्याद—स्त्री० (कु०, सो०) अवधि।
मन्हूस—वि० मनहूस।
ममता—स्त्री० मोह।
ममीरा—पु० (शि०) त्रायमाण।
ममीरी—स्त्री० दे० ममीरा।
ममुआ—पु० (बि०) एक घातक रोग।
ममूली—वि० मामूली, साधारण।
ममेरा—वि० मामा का (लड़का)।
मयां—अ० संबोधन शब्द "हे माई"।
मया:ड़ा—पु० (बि०) दे० दोगरी।
मयाच्छ—पु० (कु०) मक्खी।
मयाद—स्त्री० (चं०) अवधि।
मयाळ—पु० चूल्हे की जलती हुई लकड़ी।
मयाला—वि० (सि०) मैला।
मयिराल—पु० (मं०) चमगादड़।
मयोआ—पु० मेवा।
मरकंडा—पु० कोहान।
मरकुआ—पु० (सि०) एक गंध द्रव्य।
मरकोळना—स० क्रि० मिलाना।
मरखड़—वि० दुर्बल।
मरखोड़—स्त्री० (ऊ०, कां०) पशुओं द्वारा गले से रस्सी निकालने का भाव।
मरघट—पु० श्मशान।
मरच—स्त्री० मिर्च।
मरचड़ी—स्त्री० (चं०) एक औषधि।
मरज़—पु० दु:ख, तकलीफ, रोग।
मरजाद—स्त्री० मर्यादा।

**मरजाळ**—पु० (कु०) लाश को जलाने वाले।
**मरज़ी**—स्त्री० स्वेच्छा।
**मरणो**—अ० क्रि० मरना।
**मरथेहड़ी**—स्त्री० (कां०) श्मशान।
**मरना**—अ० क्रि० मृत्यु होना।
**मरनाड़**—पु० (मं०) मृणाल पक्षी।
**मरब्बा**—पु० मुरब्बा।
**मरयांछा**—पु० (मं०) जंगली काला अंगूर।
**मरयाड़**—पु० (सो०) जलती हुई लकड़ी।
**मरला**—वि० ज़मीन का एक माप, मरला।
**मरवाकड़**—वि० (बि०) सींग मारने वाला (पशु)।
**मरवाड़ा**—पु० (बि०) जलती हुई लकड़ी।
**मरांगड्ड**—पु० (कु०) स्त्री के बालों में बांधी जाने वाली डोरी।
**मराक**—पु० (ऊ०) Bischoffia javanica.
**मराड़ना**—स० क्रि० (मं०) अनाज़ तथा कचरा पृथक् करना।
**मराद**—स्त्री० इच्छा।
**मराल**—पु० Ulmus laevigate, एक वृक्ष जिसके तने पर कुकुरमुत्ता उगता है।
**मराल**—पु० (चं०) Ulmus wallichiana.
**मरिंड**—पु० (मं०) बर्फानी कबूतर।
**मरिंडू**—पु० (कां०) मुसली।
**मरीदड़ी**—स्त्री० (कु०) हाथ में पहनने का कांटेदार, कम चौड़ा तथा मोटा, पट्टीदार चांदी का आभूषण।
**मरीना**—पु० एक प्रकार की ऊन, मरीनू भेड़ की ऊन।
**मरीला**—पु० (बि०) धान के साथ उगने वाला एक घास विशेष।
**मरीहनु**—पु० एक वृक्ष विशेष।
**मरुआ**—पु० गंधयुक्त झाड़ी जिसके फूलों की माला महिलाएं बहुलाचौथ के व्रत के अवसर पर गाय को पहनाती हैं।
**मरूद**—पु० अमरूद।
**मरेकणा**—स० क्रि० (कु०, शि०) मरोड़ना।
**मरेच्छ**—पु० (मं०) म्लेच्छ।
**मरेलणा**—अ० क्रि० लोटना, करवटें बदलना।
**मरेलमारना**—अ० क्रि० (बि०) लेटना, थोड़े समय के लिए सोना।
**मरेला**—वि० हट्टा-कट्टा व्यक्ति जो खाता अधिक हो और काम न करता हो।
**मरैमत**—स्त्री० (कु०) मुरम्मत।
**मरैरी**—स्त्री० (मं०) आकाश में उड़ने वाली देवियां जिन्हें गरुड़ वेश में देखा जाता है।
**मरैरी**—स्त्री० (चं०, मं०) एक शिकारी पक्षी।
**मरैला**—वि० मारने वाला (पशु)।
**मरो:णा**—अ० क्रि० झगड़ना।
**मरो:लण**—पु० अरबी की सब्जी।
**मरोकणा**—स० क्रि० (कु०) मरोड़ना।
**मरोखिणा**—अ० क्रि० (कु०) मुड़ना।
**मरोछ**—वि० (चं०) ऐसी स्त्री जिसके बच्चे मर जाते हों।
**मरोड़**—पु० पेचिश, ज़लन।
**मरोड़ना**—स० क्रि० मरोड़ना।
**मरोड़ना**—स० क्रि० (कु०) फलियों आदि को मसल कर दाने निकालना।
**मरोड़फल**—पु० कुटज।
**मरोड़ा**—पु० बल। जलन।
**मरोड़िना**—अ० क्रि० (कु०) घमंड करना। स० क्रि० मरोड़ा जाना।
**मरोढ़िना**—अ० क्रि० (कु०) इधर-उधर सिर हिलाना।
**मरोली**—स्त्री० (ऊ०, कां०) एक पौधा विशेष जिसके पत्ते खट्टे होते हैं।
**मरोसणा**—स० क्रि० (कु०) मोच आना।
**मरोसिणा**—अ० क्रि० (कु०) मोच लगना।
**मरोहद**—पु० (ऊ०, कां०) 'रंबळ' नामक वृक्ष का दूध जिसे चरखे की 'माहल' पर लगाया जाता है।
**मरौणा**—स० क्रि० (सि०) किसी दूसरे को मारना।
**मर्दाना**—वि० बहादुर।
**मलंग**—वि० मस्त, मनमौजी।
**मळः**—पु० इकट्ठा किया हुआ गोबर, गोबर से बनी खाद।
**मळ**—पु० पेट में पड़ने वाले छोटे-छोटे सफेद कीड़े।
**मलका**—पु० चांदी का रुपया।
**मळका**—पु० जी मतलाने की क्रिया।
**मलकीत**—स्त्री० स्वामित्व, मलकीयत।
**मळकुणा**—अ० क्रि० (सो०) उलटी करने को दिल करना, जी मतलाना।
**मलख**—स्त्री० (चं०) मालिश।
**मलखुख**—स्त्री० (मं०) विषैला कुकुरमुत्ता।
**मलखेहड़ा**—पु० (मं०) महल।
**मळघेशणा**—स० क्रि० (सो०) वस्त्रों को गंदा करना।
**मळघेशुणा**—वस्त्रों का गंदा होना।
**मळणो**—स० क्रि० (शि०) मालिश करना।
**मळना**—स० क्रि० मलना।
**मलबा**—पु० गिरे हुए अ० क्रि० (सो०) मकान के ईंट पत्थर, मिट्टी आदि, खोदी गई मिट्टी का ढेर।
**मलम**—पु० (सो०) मरहम।
**मलमल**—पु० एक बारीक वस्त्र विशेष।
**मलशेरणा**—स० क्रि० (चं०) मैला करना।
**मलहम**—पु० मरहम।
**मलांड**—पु० (चं०) ऊनी कपड़े धोने का एक साधन।
**मलाइणा**—स० क्रि० (कु०) मिलाया जाना।
**मलाइम**—वि० (कु०, चं०) मुलायम, नर्म।
**मलाउट**—स्त्री० (कु०) मिलावट।
**मलाउटी**—वि० मिलावटी।
**मलाज़म**—पु० सेवक, नौकर, मुलाज़िम।
**मलाणा**—स० क्रि० मिलाना।
**मळाणा**—स० क्रि० (सो०) मालिश करवाना।
**मलाप**—पु० मिलाप, मेल, भेंट।
**मलार**—पु० (सि०) दु:ख, विषाद।
**मलार**—पु० (सि०) सैलाब।

**मलार**—वि० (चं०) गलने वाला।
**मलाशा**—पु० (सो०) आलू और अदरक को लगने वाला कीड़ा।
**मलाहौंड**—पु० (मं०) पानी रोकने का मिट्टी का बांध।
**मळिला**—वि० (शि०, सि०) मैला।
**मलीछ**—वि० मोटा (आदमी)।
**मलीडू**—पु० (मं०) गोबर उठाने के काम आने वाला 'किरडा'।
**मलीण**—पु० (बि०) कपड़े धोने के लिए प्रयुक्त वस्तु, डिटरजेंट।
**मळीता**—वि० (कु०) मलयुक्त, उपजाऊ।
**मलीदन**—स्त्री० (बि०) कचूमर।
**मलीमेट**—वि० तहस-नहस, मिट्टी में मिला हुआ।
**मलूक**—वि० (ऊ०, कां०) नर्म, छुईमुई।
**मलूक**—पु० (चं०) एक फलदार वृक्ष विशेष।
**मलूणा**—पु० (चं०) स्रोत।
**मलूम**—वि० ज्ञात, जाना हुआ।
**मलेंढ**—पु० (कु०) तना।
**मळेइ**—स्त्री० (सो०) मलाई।
**मळेखा**—पु० (बि०) रोष।
**मळेघा**—पु० (कु०) मुखिया, प्रमुख।
**मलेछ**—वि० गंदा।
**मलेड़ा**—पु० (कु०) खमीरे आटे का बनाया गया पकवान जिसे भाप में पकाकर खाया जाता है।
**मलेड़ा**—पु० खमीर।
**मलेड़िना**—अ० क्रि० (कु०) पेट भर जाने के बाद भी जबरदस्ती खा लेना।
**मलेंती**—स्त्री० (मं०) 'मैल' ढोने की सामूहिक क्रिया।
**मलेर**—वि० (बि०) मामा का (लड़का)।
**मलेर**—पु० (बि०) फसल के कार्य में सहायता करने वाला व्यक्ति।
**मलेरना**—अ० क्रि० (बि०) मिट्टी में लोटपोट होना; स० क्रि० मैला करना।
**मलेरना**—स० क्रि० (कु०, च०) भेड़-बकरी द्वारा खेत में खाद दिलाना।
**मलेरना**—स० क्रि० (ह०) खूब खाद डालना।
**मलैतू**—वि० (मं०) गोबर ढोने वाला।
**मलैम**—वि० नर्म।
**मलैही**—स्त्री० (मं०) वह स्थान जहां गोबर इकट्ठा करके रखा जाता है।
**मळोई**—स्त्री० (सो०) दे० बळेइ।
**मळोख**—पु० (सो०) ननिहाल।
**मळोखी**—वि० (सो०) ननिहाल के रिश्तेदार।
**मलोट**—वि० (चं०) प्रयुक्त, प्रयोग किया हुआ।
**मलोटी**—स्त्री० (मं०) खरपतवार।
**मलोरी**—स्त्री० एक पौधा जिसके पत्ते खट्टे होते हैं। इसे आभूषण चमकाने हेतु प्रयोग में लाया जाता है।
**मलोश**—पु० एक औषधि विशेष।
**[illegible]**—स्त्री० (कु०) गोबर की बनाई गोलियां जिन पर दूर्वा रखी जाती हैं और देवता के पास भविष्यवाणी के लिए काम में लाई जाती हैं।
**मलौःरा**—पु० पति या पत्नी का मामा।
**मलौण**—पु० (कां०) नदी किनारे का गहरा भाग जहां से नहर निकाली जाती है।
**मल्टोहणा**—अ० क्रि० ज़मीन पर लोटना।
**मल्या**—अ० (बि०) 'मैंने कहा' भाव दर्शाता हुआ अव्यय शब्द।
**मल्याणा**—अ० क्रि० (सि०) भेड़-बकरी का बोलना।
**मल्याणा**—स० क्रि० (बि०) मिलाना।
**मल्यूड़**—पु० (बि०) खेत में लगाया गया गोबर का ढेर।
**मल्ल**—पु० पहलवान।
**मल्लखाड़ा**—पु० पहलवानों का अखाड़ा।
**मल्लट्ठी**—स्त्री० मुलेठी।
**मल्ली**—स्त्री० मिट्टी का ढक्कन।
**मल्ली**—स्त्री० घुटने की गोल हड्डी।
**मल्लू**—पु० (कां०) हल के जुए का मुख्य भाग।
**मल्हा**—पु० बेर-वृक्ष की एक प्रजाति; उसके फल।
**मल्ही**—स्त्री० (बि०) गन्ने के रस का गुड़ बनाते समय उफान में आने वाली सफेद झाग।
**मल्हेचिणा**—अ० क्रि० (कु०) उलझना।
**मल्हैट्टा**—पु० (कां०) माश का भूसा।
**मल्हैर**—स्त्री० (बि०) खट्टे बेर।
**मशटरेणी**—स्त्री० अध्यापिका।
**मशटौइर**—पु० (शि०) चूहे का बिल।
**मशदाव**—पु० (सो०) चूहे का बिल।
**मशरोडू**—पु० (मं०) मसर का 'मल्ला'।
**मशलिंगणा**—स्त्री० (सो०) चूहे की विष्ठा।
**मशलींड**—स्त्री० (कु०) चूहे की विष्ठा।
**मशलोडुना**—अ० क्रि० (सो०) कुम्हलाना।
**मशाकड़ा**—पु० (मं०) रंग-बिरंगे फूल धारण करने वाला एक देवता।
**मशाकड़ा**—पु० (मं०) केकड़ा, कर्क।
**मशाड़ता**—पु० (सो०) चीड़ की पत्तियों से बनायी गई लिपाई करने की कूची।
**मशाण**—पु० (कु०, चं०) प्रेत, प्रायः जिनकी गति न हुई हो उनके प्रेत होते हैं।
**मशाण**—पु० (सो०) श्मशान, निर्जन स्थान।
**मशाणी**—वि० (शि०) मृतात्मा को बुलाने वाला।
**मशाणू**—पु० (मं०) श्मशान निवासी देव।
**मशादणू**—पु० (चं०) स्याही की दवात।
**मशान**—पु० (कु०) मृतक के निमित्त दिया गया दान।
**मशालची**—पु० मशाल लेकर चलने वाला।
**मशाला**—पु० (शि०) मसाला।
**मशी**—स्त्री० (चं०) स्याही।
**मशूर**—वि० मशहूर, प्रसिद्ध।
**मशेरना**—स० क्रि० (कु०) गुस्सा दिलाना।
**मशोलणा**—स० क्रि० (कु०) मिटाना।

**मशोलिणा**—स० क्रि० (कु०) मिटाया जाना।
**मसक**—स्त्री० (कु०, चं०) पानी भरने की खाल।
**मसकरा**—वि० जानबूझ कर नासमझ बनने वाला।
**मसका**—पु० खुशामद।
**मसकेर**—स्त्री० (बि०) चूहों द्वारा बनाया गया बिल।
**मसना**—पु० (कु०, चं०, मं०) Strobilanthes atropurpureus-dalhousianus.
**मसर**—पु० दाल मसूर।
**मसरबा**—पु० पानी परसने, हाथ मुंह धुलाने आदि के लिए काम में लाया जाने वाला टोंटीदार यन्त्र।
**मसराल**—स्त्री० (चं०) दांतों से जुड़ा हुआ मांस, जबड़ा।
**मसरू**—पु० (शि०, चं०) रेशम का वस्त्र जो मृतक पर डालने के लिए उत्तम समझा जाता है।
**मसला**—पु० उलझन, समस्या।
**मसहूर**—वि० (कां०) प्रसिद्ध।
**मसांत**—स्त्री० संक्रांति से पहला दिन, मासांत।
**मसांद**—स्त्री० (शि०) दे० मसांत।
**मसांदरू**—पु० (ऊ०) Linociera intermedia.
**मसाइण**—पु० (कु०) ऊन के धागे को बाट देने का लकड़ी का यंत्र।
**मसाइणा**—स० क्रि० (कु०) 'मसाइण' से ऊन, सूत आदि को बाटा जाना।
**मसाजन**—पु० (बि०) दवात।
**मसाड़ना**—स० क्रि० (सि०) लीपना।
**मसाण**—पु० श्मशान।
**मसाणपूजा**—स्त्री० (कु०, मं०) तांत्रिक क्रिया द्वारा किया जाने वाला श्मशान पूजन।
**मसाणा**—स० क्रि० (कु०) 'मसाइण' से धागे को बाट देना।
**मसाणी**—स्त्री० चुड़ैल।
**मसादा**—पु० (चं०) एक प्रकार का गान जिसके माध्यम से गाथा गाई जाती है।
**मसारना**—स० क्रि० (सो०) आटा गूंथना।
**मसारा**—पु० (बि०, ह०) Poranapaniculata.
**मसाल**—स्त्री० उदाहरण।
**मसाल**—स्त्री० (सि०) मशाल, लौ।
**मसालची**—वि० मशाल लेकर चलने वाला।
**मसालदानी**—स्त्री० मसाला रखने का डब्बा।
**मसाहरा**—पु० (चं०) मशाल।
**मसिंबर**—वि० (बि०) सुनने पर भी ध्यान न देने वाला।
**मसीत**—स्त्री० मस्जिद।
**मसुणा**—अ० क्रि० (सो०) मोच आना।
**मसूर**—वि० (सि०) प्रसिद्ध।
**मसें**—अ० कठिनता से, जैसे-तैसे।
**मसेर**—वि० मौसी का (लड़का)।
**मसै**—अ० (कु०, बि०) दे० मसें।
**मसैढ़**—पु० (बि०) ऐसा खेत जहां धान की विभिन्न किस्मों की पौध एक साथ मिली हुई हो।
**मसैया**—पु० (चं०) मौसा।
**मसैहरा**—पु० (कां०, बि०) दे० मसाहरा।
**मसौरा**—पु० पति या पत्नी का मौसा।
**मसौला**—पु० (कु०) मशाल।
**मस्कड़याणा**—अ० क्रि० (बि०) व्यंग्य में मुसकराना।
**मस्कराणा**—अ० क्रि० (शि०) मुसकराना।
**मस्त**—वि० खुश।
**मस्तुणा**—अ० क्रि० (सो०) मौजमस्ती करना।
**मस्सर**—पु० (मं०) दाल मसूर।
**मस्हाणा**—स० क्रि० मिटाना।
**महंत**—पु० मठाधीश।
**महर**—पु० (मं०) ग्रास।
**महर**—पु० (मं०) नंबरदार, कर लेने वाला।
**महळा**—पु० (कां०) बेर की एक प्रजाति।
**महाचल**—पु० हिमाचल।
**महाण**—पु० (कु०, मं०) सूजन।
**महाण**—स्त्री० (बि०) भैंस का दूध निकालने वाली स्त्री।
**महाण**—पु० (कु०, चं०) बहा कर ले जाने के लिए नदी में डाली गई लकड़ियां।
**महाणी**—पु० कच्चे आमों से बना व्यंजन।
**महात्मी**—स्त्री० (सो०) पत्नी।
**महास**—पु० पानी गर्म करने का हमाम। उमस।
**महामजिस्ता**—पु० (बि०) एक तरह की लोहे या पीतल की खरल।
**महाराज**—पु० प्रभु।
**महियारा**—पु० (ह०) भैंसों का बाड़ा।
**महीन**—वि० पतला, बारीक।
**महीना**—पु० मास।
**महील**—पु० (सो०) महल।
**महुआ**—पु० Medhuca Indica.
**महूर्त**—वि० मुहूर्त, दो घड़ी का समय।
**महेंश**—स्त्री० (कु०, शि०) भैंस।
**महेडू**—पु० (शि०, सि०) घी बनाने पर बर्तन में नीचे बचा पदार्थ।
**महेल**—पु० (बि०) आभूषण।
**महैयीं**—स्त्री० (सि०) भैंस।
**महोड़ी**—स्त्री० (मं०) मधुमक्खी का छत्ता।
**मां**—पु० (कु०) बच्चों द्वारा पानी के लिए प्रयुक्त शब्द।
**मांइंगे**—अ० (सो०) मेरे पास।
**मांइशो**—पु० (सि०) मनुष्य।
**मांई**—स्त्री० (कु०) स्तन।
**मांई**—स्त्री० (सो०) लड़की।
**मांऊ**—स्त्री० बिल्ली।
**मांऊ**—पु० (शि०, सो०) लड़का।
**मांऊसे**—स्त्री० (शि०) मौसी।
**मांए**—पु० (सो०) में।
**मांकी**—स्त्री० (कु०, मं०) छोटे बच्चों का चुंबन।
**मांगटी**—स्त्री० (सो०) दही आदि रखने का मिट्टी का पात्र।
**मांगटू**—पु० (सो०) मिट्टी का छोटा पात्र।

**मांगण**—पु० (कु०, मं०) खटमल।
**मांगणा**—स० क्रि० मांगना।
**मांगणी**—स्त्री० (मं०) सगाई।
**मांगणी**—स्त्री० (शि०, सो०) खटमल।
**मांगणो**—स० क्रि० (शि०) मांगना।
**मांगी**—स्त्री० (कु०) घी का बड़ा पात्र।
**मांघ**—स्त्री० (चं०) दही बिलोने का पात्र विशेष।
**मांघी**—स्त्री० (मं०) छोटा घड़ा।
**मांछ**—पु० (शि०) मनुष्य।
**मांज**—वि० (मं०) धूर्त, मक्कार।
**मांज**—स्त्री० (ह०) बांस की सीढ़ी।
**मांजकड़ा**—अ० (सो०) बीच में।
**मांजकला**—वि० (सो०) बीच वाला।
**मांजण**—स्त्री० (सि०, सो०) राख, भस्म।
**मांज़ण**—स्त्री० (कु०) दे० मांजण।
**मांजणा**—स० क्रि० बर्तन साफ करना, मांजना।
**मांज़णा**—स० क्रि० (कु०) दे० मांजणा।
**मांजणू**—पु० (सि०) बर्तन साफ करने का घास।
**मांजरी**—स्त्री० (मं०, सो०) दे० मंजरी।
**मांजला**—वि० (शि०, सो०) मझला।
**मांजा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) सफाई; मुरम्मत।
**मांजा**—पु० (कां०) गाहते समय घास निकालने की क्रिया।
**मांजा**—वि० (सि०, सो०) खेत का मध्य भाग।
**मांजा**—पु० (सो०) चारपाई।
**मांज़ा**—पु० (कु०, शि०) दे० मांजा।
**मांजुआ**—पु० (कु०) बीच का कमरा।
**मांझे**—अ० (मं०, शि०) बीच में।
**मां:टे**—स्त्री० (शि०) बालिका।
**मांठ/ठो**—स्त्री० (शि०, सो०) बाध्यता, मजबूरी।
**मांडणा**—स० क्रि० (कु०) फसल को पीट कर दाने निकालना।
**मांडणा**—स० क्रि० (सो०) घोलना, हाथ से भोजन को मिलाना।
**मांडणा**—क्रि० कंबल आदि को धोते समय पैरों से मसलना।
**मांडणा**—स०. क्रि० (सि०) अच्छी तरह गूंथना।
**मांडा**—पु० (सि०) विवाह में बनाया गया मुख्य द्वार।
**मांडा**—पु० (सो०) भोजन का घोल।
**मांडुणा**—स० क्रि० (सो०) मिलाया जाना।
**मांढ**—अ० (कु०) मुश्किल से।
**मांद**—स्त्री० एक पशुनाशक रोग।
**मांदटू**—पु० (सि०) छोटी चटाई।
**मांदरी**—स्त्री० (कु०) धान के घास की बनाई गई चटाई।
**मांदला**—पु० (मं०) आंगन में रखा पूजने का पत्थर।
**मांदा**—वि० दुर्बल, कमज़ोर।
**मांघ**—स्त्री० (शि०) बड़ा पेट।
**मांघी**—वि० (शि०) बड़े पेट वाला।
**मांमरें**—स्त्री० (चं०) एक पौधा विशेष।
**मांश**—पु० (सो०) पुरुष।
**मांस**—पु० मांस, गोश्त।
**मांहल**—स्त्री० (मं०) मंज़िल।
**मांही**—स्त्री० (कु०, शि०) मौसी।
**मांहू**—पु० (कु०, मं०) मधुमक्खी।
**मा:तम**—पु० (सो०) माहात्म्य।
**माइका**—पु० पीहर, मां का घर।
**माइया**—पु० (शि०) डरावनी शक्ल।
**माई**—स्त्री० मां।
**माईच़**—पु० (शि०) पीहर, मायका।
**माउं**—पु० (कु०) खलियान को साफ करने हेतु विशेष प्रकार की झाड़ी का बनाया झाड़ू।
**माउ**—पु० (सि०, सो०) मधुमक्खी।
**माउळा**—पु० (कु०) मामा।
**माउळी**—स्त्री० (कु०) मां और बेटी।
**माउसा**—पु० (सि०) मौसा।
**माऊंड़**—स्त्री० (शि०) दे० झब्बल।
**माऊ**—स्त्री० माता।
**माओ**—स्त्री० (बि०, मं०) मां।
**माकड़ी**—स्त्री० (कु०) दीवार पर लकड़ियों को जोड़ने वाली कील।
**माकड़ी**—स्त्री० कच्चे आम की सुखाई गई फांक।
**माकडू**—पु० माष और कुलथ की दाल का वह दाना जो पकता नहीं है।
**माकी**—स्त्री० (शि०) मक्की।
**माकूल**—वि० पर्याप्त, प्रचुर, अधिक।
**माख**—पु० (सि०) बड़ी मक्खी, नर मक्खी।
**माखदु**—पु० (सो०) छोटी मक्खी।
**माखड़ना**—अ० क्रि० (बि०) अकड़ना।
**माखड़ी**—स्त्री० (मं०) मंगलसूत्र।
**माखण**—पु० (शि०) मक्खन।
**माखणि**—स्त्री० (सो०) मक्खन।
**माखता**—पु० शिकायत, गिला-शिकवा।
**माखरी**—स्त्री० (चं०) मक्खी।
**माखी**—स्त्री० (शि०, सो०) मक्खी।
**माखु**—पु० मच्छर।
**माखे**—सर्व० (सो०) मुझे।
**मागण**—स्त्री० (मं०) छाल।
**मागणा**—स० क्रि० (मं०) मांगना।
**माघ**—पु० माघ मास।
**माघा रा साज़ा**—पु० (कु०, मं०) माघी का त्योहार।
**माच**—पु० (सि०) धान की रोपाई के लिए तैयार की गई भूमि।
**माच़**—पु० (शि०) नशा।
**माचणा**—स० क्रि० (सो०) आवाज़ होना।
**माच़णो**—अ० क्रि० (शि०) मदिरापान के बाद बहकना।
**माछर**—पु० (सो०) मच्छर।
**माछली**—स्त्री० (शि०, सो०) मछली।
**माछले**—स्त्री० (शि०) मांसपेशी। मछली।

**माछी**—स्त्री० (सि०) मछली।
**माछी**—पु० (चं०) मछली मारने वाला व्यक्ति।
**माजड़ी**—स्त्री० (चं०) घास की बनाई गई चटाई।
**माजू**—पु० एक फल जो औषधि के लिए प्रयुक्त होता है।
**माट**—पु० (सो०) मिट्टी का बड़ा पात्र।
**माटा**—पु० मिट्टी।
**माटी**—स्त्री० (शि०, सो०) मिट्टी, भुरभुरी मिट्टी।
**माट्टीदेणी**—स० क्रि० (कु०) मृत बच्चे को मिट्टी में दबाना।
**माठड़ा**—वि० छोटा, छोटे वाला।
**माठा**—वि० (कु०) छोटा।
**माड़**—स्त्री० पशु त्योहार जो कार्तिक पूर्णिमा की रात्रि को मनाया जाता है।
**माड़**—स्त्री० (मं०) पशु त्योहार 'माड़' के अवसर पर गाए जाने वाले गीत।
**माड़सू**—स्त्री० (मं०) पति की मामी।
**माड़ा**—वि० खराब, अशुभ, कमज़ोर, छोटा।
**माड़ातीड़ा**—वि० गरीब।
**माड़ातीढ़ा**—वि० छोटा-मोटा।
**माड़ा-दूड़ा**—वि० (सो०) थोड़ा-बहुत; छोटा-मोटा।
**माढ़ी**—स्त्री० सिद्ध, गूगा आदि का स्थान।
**माण**—पु० इज्ज़त; स्पर्धा, होड़, ईर्ष्या।
**माणकरा**—वि० (कु०) स्पर्धा करने वाला।
**माणका**—वि० (मं०) धनवान।
**माणता**—स्त्री० (मं०) मान्यता।
**माणता**—स्त्री० मन्नत, मनौती।
**माणना**—अ० क्रि० (सि०) गुस्से होना।
**माण-माख्ता**—पु० (शि०, सो०) गिला-शिकवा।
**माणस**—पु० मनुष्य।
**माणिछ**—पु० (शि०) इंसान, मनुष्य।
**माणी**—स्त्री० (चं०) दो किलोग्राम का लकड़ी का बना माप।
**माणु**—पु० (सो०) मनुष्य।
**माणू**—पु० बंदर।
**माणहू**—पु० (कु०) मनुष्य, मानव।
**मात**—स्त्री० हार।
**मातमा**—पु० (सो०) महात्मा।
**मातलो**—पु० (शि०) चिकनी मिट्टी वाला खेत।
**मातलोक**—पु० मृत्युलोक।
**माता**—स्त्री० चेचक।
**मात्तर**—स्त्री० (बि०) दवाई की मात्रा।
**मात्तर**—वि० (ऊ०, कां०) खूब खाने वाला।
**मात्रियां**—स्त्री० (चं०) विमाता।
**मात्रें**—स्त्री० विमाता।
**मात्रे**—पु० (मं०) सौतेला पुत्र।
**माथा**—पु० मस्तक।
**माथा** [illegible]**णा**—स० क्रि० चरण वंदना।
**मादड़ा**—पु० (मं०) नींव का पत्थर।
**मान**—पु० ईश्वर पर विश्वास। इज्ज़त।
**मान**—पु० (कु०) कुलदेवता को दी जाने वाली बकरे, मेंढे की बलि।
**मानणा**—अ० क्रि० (सो०) मानना। स० क्रि० मान्यता देना।
**मानणो**—अ० क्रि० (शि०) मानना।
**मानत**—स्त्री० (सि०, सो०) धरोहर, अमानत।
**मानता**—स्त्री० (सो०) मनौती; मान्यता।
**मानदार**—वि० ईमानदार।
**मानधर्म**—पु० सिद्धांत, ईमान-धर्म।
**मानशजात**—स्त्री० (सो०) मनुष्य जाति।
**मानशी**—स्त्री० (कु०) आटा-चावल रखने का पात्र।
**मानू**—पु० (सि०) बांस या केले की नवीन कोंपल।
**मान्य**—पु० (शि०) एक वृक्ष विशेष।
**माफ**—वि० क्षमा।
**माफी**—स्त्री० क्षमा।
**माफी**—स्त्री० देवताओं या अन्य को मालगुज़ारी आदि की दी गई माफी।
**माबज़ा**—पु० मुआवज़ा, हर्जाना।
**माम**—पु० (कु०, मं०) मामा।
**मामटी**—पु० (शि०) भानजा।
**मामटी**—पु० मामा या मामा के गांव का आदमी।
**मामला**—पु० भूमिकर।
**मामा**—पु० मामा।
**मामा**—पु० (ऊ०, कां०) स्तन।
**मामूली**—वि० साधारण।
**मायना**—पु० (ऊ०, कां०) विवाह वाले परिवार को सगे-संबंधियों द्वारा दिया गया भोजन।
**मायने**—पु० (ह०) विवाह में वर के घर बजाया जाने वाला मंगल-वाद्य।
**मायने**—पु० (सो०) पुत्र के विवाह के आरंभ की पहली शाम।
**मायसु**—पु० (सो०) धर्मभाई।
**माया**—स्त्री० धन।
**मारंड**—अ० (बि०) बड़ी मुश्किल से।
**मारकंडा घड़ना**—स० क्रि० (बि०) जन्मदिन पर दीर्घायु की कामना हेतु मारकंडेय की मिट्टी की प्रतिमा बनाना।
**मारक**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Bischoffia javanica.
**मारके**—पुं० (सि०) कुटुंब के लोग।
**मारखूंडा**—वि० (कां०, बि०) सींगों से मारने वाला, ज़ोर से मारने वाला, लड़ाका।
**मारणा**—स० क्रि० (चं०) मारना।
**मारन**—पु० Ulmus wallichiana.
**मार.ना**—स० क्रि० पीटना।
**मारा**—सर्व० (सो०) हमारा।
**माराज**—पु० (ऊ०, कां०) महाराज।
**मारिना**—अ० क्रि० (कु०) मारा जाना, आपस में लड़ना।
**मारिनो**—अ० क्रि० (शि०) लड़ना।
**मारू**—वि० शूरवीर; लड़ाका, मारने वाला।
**माल**—पु० पशुधन; बहुमूल्य सामग्री।
**मालकंगणी**—स्त्री० (सि०) Calertrus paniculata.
**मालक**—पु० पति, मालिक, स्वामी।

**मालण**—स्त्री० (सि०) एक जंगली बेल जिसके पत्तों से पत्तलें बनाई जाती हैं।
**मालण**—स्त्री० (बि०) दूसरी पत्नी के लिए संबोधन।
**मालण**—स्त्री० माली की पत्नी।
**मालती**—स्त्री० एक प्रसिद्ध लता जिसके फूलों में बड़ी मीठी सुगंध होती है।
**मालदार**—वि० धनवान्।
**मालमता**—पु० संपत्ति।
**मालवा**—पु० (शि०, सि०) कबूतर।
**मालश**—स्त्री० मालिश।
**मालसु**—स्त्री० (मं०) वर की मामी।
**माली**—पु० (शि०) दे० गूर।
**माली**—स्त्री० सर्वश्रेष्ठ पहलवान को दिया जाने वाला पुरस्कार।
**माली**—पु० (ऊ०, कां०) प्रजनन हेतु रखा भैंसा।
**माली**—स्त्री० (मं०) घुटने की टोपी।
**माल्टा**—वि० (कु०) सफेद माथे वाला (पशु)।
**माल्टा**—पु० संतरा प्रजाति का फल।
**माल्हे**—वि० (शि०) गुत्थमगुत्था।
**मावस**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) अमावास्या।
**मावा**—पु० (सो०) कलफ, कपड़े में कड़ाई तथा चिकनाई लाने के लिए लगाई जाने वाली मांड़।
**मावा**—पु० दूध का खोया।
**माश**—पु० (सो०) उरद।
**माशकी**—वि० (चं०) मशक उठाने वाला।
**माशणा**—स० क्रि० (शि०) मलना, चुपड़ना।
**माशणा**—स० क्रि० (मं०) दीवारों पर मिट्टी पोतना।
**माशा**—पु० (सो०) आठ रत्तियों का वज़न।
**माशा**—पु० (कु०) एक विषैला घास।
**माशीर**—स्त्री० (शि०) एक विशेष प्रकार की मछली।
**मास**—पु० मांस।
**मासक**—वि० (कु०) सौतेली।
**मासक**—वि० मासिक।
**मासकु**—वि० (ऊ०, कां०) मरणोपरांत मासिक दान लेने वाला।
**मासड़**—पु० मौसा।
**मासी**—स्त्री० मौसी।
**मास्सा**—पु० आठ रत्तियों का वजन, वि० तनिक, थोड़ा।
**मास्पूचखणे**—पु० (मं०) मसूढ़े का रोग।
**माह**—पु० मास, महीना।
**माह**—पु० (कु०) माश, उरद।
**माहक**—पु० (ह०) मरणोपरांत का मासिक दान ।
**माहकू**—वि० (ह०) मासिक दान लेने वाला।
**माहघी**—वि० (सि०) काले रंग का (बैल)।
**माहड़ी**—स्त्री० (सि०) मिट्टी का घड़ा।
**माहड़ी**—स्त्री० (बि०) उरद की घटिया किस्म।
**माहत**—स्त्री० (कां०) हिमायत, तरफदारी।
**माहदैओ**—पु० (शि०) शिव भगवान् ।
**माहरुआ**—पु० (मं०) बाल सा पतला जलजीव जिसके पिए जाने पर आंत कट जाती है।
**माहले**—अ० (शि०) ऊपर।
**माहले**—सर्व० (बि०) मेरे पास।
**माहिकी**—स्त्री० (कु०) मासिक श्राद्ध।
**माहिकु**—वि० (कु०) मासिक दान लेने वाला।
**माहिणा**—अ० क्रि० (कु०) सूजन आ जाना।
**माही**—पु० पति, प्रियतम।
**माहुआ**—पु० (कु०) 'माहुरा' में कुछ मिलाकर बनाया गया हलका विष।
**माहुन**—पु० (कु०) एक वृक्ष विशेष।
**माहुरा**—पु० (कु०) एक प्रकार का विष जो पहाड़ों में अधिक ऊंचाई पर उगता है।
**माहुरी**—स्त्री० (कु०) एक प्रकार का धान जो अधिक स्वादिष्ट होता है।
**माहूं**—पु० (कु०) मधुमक्खी।
**माहूंराणा**—पु० (कु०) मधुमक्खियों का राना, रानी मक्खी।
**माहणू**—पु० मनुष्य।
**माहल**—स्त्री० चरखे में लगी डोरी।
**मिंखे**—सर्व० (सि०) मुझे।
**मिंगण**—स्त्री० (सो०) मेगनी।
**मिंजर**—स्त्री० मक्की की बाली। चंबा का एक प्रसिद्ध मेला।
**मिंजर**—स्त्री० (मं०) तुलसीदल।
**मिंजा**—पु० कपाल।
**मिंजू**—पु० (कु०) मस्तिष्क, मज्जा।
**मिंजो**—सर्व० मुझे।
**मिंझट्ट**—पु० (चं०) छोटे-छोटे पत्तों वाली बूटी जो फोड़े के लिए औषधि के रूप में प्रयुक्त होती है।
**मिंट**—पु० मिनट, घंटे का साठवां भाग।
**मिंटु**—पु० (बि०,शि०) भेड़ का बच्चा, मेमना।
**मिंडा**—पु० (चं०) भालू द्वारा उजाड़ी गई फसल।
**मिंडा**—पु० (बि०) सिर।
**मिंडा**—पु० (कां०, बि०) मेढ़ा।
**मिंढला**—वि० (चं०, बि०) देखने में भोला किंतु चालाक।
**मिंढा**—स्त्री० (कु०) लंबे समय तक रखने पर खराब हुई 'सूर'।
**मिंढी**—स्त्री० बालों की छोटी वेणी।
**मिंढु**—पु० (कु०) एक औज़ार जिससे कील उखाड़ी जाती है।
**मिंदणा**—स० क्रि० (चं०) चूरना, चूर्ण करना।
**मिंदरू**—पु० (कु०) खीरा, छोटा कद्दू।
**मिंनो**—पु० (शि०) मास, महीना।
**मिंबर**—पु० (कु०) सदस्य।
**मिंहगु**—पु० (मं०) प्रियंगु पुष्प।
**मिआळ**—पु० चूल्हे में जलती लकड़ी।
**मिकणा**—स० क्रि० (चं०) गुप्त बात करना, एकता करना।
**मिकरू**—पु० (बि०) रोटी का छोटा टुकड़ा।
**मिचकणा**—स० क्रि० दबाना।
**मिचणा**—स० क्रि० आंखें बंद करना।

**मिचणु**—वि० छोटी आंखों वाला।
**मिचमिचात**—पु० चपलता, चंचलता।
**मिच्ची**—वि० (कु०, बि०) प्रथम, पहला, आरंभ करने वाला।
**मिजमिजा**—वि० (कु०) मोड़दार (लकड़ी) जो काटने से कटती न हो।
**मिजाओ**—पु० (कु०) द्राक्षा।
**मिटणा**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) मिलना, प्राप्त होना।
**मिटणा**—स० क्रि० (कु०) गूर में देवता के प्रवेश होने पर प्रश्नों के उत्तर देना।
**मिटणा**—स० क्रि० (कु०, चं०, बि०) आंखें मूंदना। समाप्त होना।
**मिटणा**—अ० क्रि० मिटना। ज़मीन से पानी का फूटना।
**मिटणो**—अ० क्रि० (शि०) मिटना, साफ हो जाना।
**मिटाणा**—स० क्रि० मुंदवाना; मिटाना।
**मिटावणो**—स० क्रि० (शि०) मिटाना।
**मिटिणा**—अ० क्रि० (कु०) आंख का स्वत: बंद हो जाना।
**मिटु**—वि० (कु०) छोटी आंखों वाला।
**मिटेणा**—स० क्रि० (कु०) आंखें बंद कराना।
**मिट्ट**—वि० (ह०) ऐसी मिट्टी जिसमें रेत आदि के कण का मिश्रण न हो।
**मिट्टू**—पु० (ऊ०, कां०) बढ़िया किस्म की मिट्टी।
**मिट्ठा**—पु० (सो०) हलवा। वि० मीठा।
**मिट्ठा**—पु० मीठी सब्जी, फल आदि से बनाया गया व्यंजन; मीठा।
**मिट्ठातुंबड़ा**—पु० (कु०, मं०) घीया।
**मिट्ठानीमो**—पु० (मं०) नारंगी।
**मिट्ठीखळ**—स्त्री० (कां०) अलसी की खली।
**मिट्ठीतुंबड़ी**—स्त्री० (कु०, मं०) तोरई।
**मिट्ठू**—पु० पालतू तोते के लिए प्रयुक्त शब्द।
**मिट्ठ**—पु० (कां०) नींबू की शक्ल का मीठा फल।
**मिट्ठू**—पु० (सो०, बि०) बच्चों द्वारा मिठाई के लिए प्रयुक्त शब्द।
**मिठड़ी**—स्त्री० मीठे से बना व्यंजन।
**मिठड्डू**—वि० गुड़, घी आदि को आटे में डालकर तली मीठी रोटी।
**मिठपात्तर**—पु० (कु०, मं०) तेजपत्र।
**मिठियाई**—स्त्री० मिठाई।
**मिठियारी**—स्त्री० (चं०) Hedera helise.
**मिठी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) चावल और गुड़ से बनाया व्यंजन।
**मिठी-मिठी**—ऊ० (कु०) 'ढेली' बनाते समय एक दूसरे के ऊपर आटा फेंकते हुए ज़ोर से बोला जाने वाला शब्द जिससे विश्वास किया जाता है कि ढेली विषैली बन जाती है।
**मिठ्ठणा**—अ० क्रि० (सो०) मीठे बनना।
**मिडकी**—पु० (शि०) मेंढ़क।
**मिड़ना**—अ० क्रि० (सो०) रोटी का सिंकना।
**मिड़ावणो**—स० क्रि० (शि०) रोटी पकाना।
**मिणत**—स्त्री० मिन्नत, विनती।
**मिणत**—स्त्री० (शि०, सि०) मेहनत।
**मिणताई**—स्त्री० पारिश्रमिक, मेहनत करने पर दिया गया धन।
**मिणताई**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) नापने के लिए दिया गया पारिश्रमिक।
**मिणताणो**—पु० (शि०) पारिश्रमिक।
**मिणना**—स० क्रि० मापना।
**मितर**—पु० (कु०) मित्र; अजनबी के लिए प्रयुक्त शब्द।
**मितरनी**—स्त्री० (कु०) सखी, सहेली।
**मितोर**—पु० (सि०) संबंधी, मित्र।
**मित्त**—पु० (चं०) धर्म भाई।
**मित्तर**—पु० (बि०) मित्र।
**मित्तर**—पु० (शि०) जीजा।
**मित्थौ**—स्त्री० (कु०) मेथी।
**मित्री**—स्त्री० (चं०) मैत्री।
**मिथणा**—स० क्रि० (बि०, सो०) किसी वस्तु को हाथ से दबाना।
**मिथरैं**—पु० मेथी।
**मिथा**—पु० (कु०) अनाज।
**मिथी**—स्त्री० (कु०) मेथी।
**मिदणा**—स० क्रि० (चं०) मिलाना।
**मिनका**—पु० (सि०) खेत का अंदर का किनारा।
**मिनका**—पु० (सो०) मेंढक।
**मिनणा**—स० क्रि० (कु०) मालिश करना।
**मिनमसिकुड़ा**—वि० (बि०, ह०) ढीठ।
**मिनमिना**—वि० (कु०) नर्म, जो आसानी से पकड़ में न आए।
**मिनिणा**—अ० क्रि० (कु०) मालिश की जानी।
**मिन्ना**—वि० चालबाज़।
**मिन्हा**—वि० (बि०) बारीक, सूक्ष्म।
**मिमणा**—वि० नाक से बोलने वाला।
**मिमी**—स्त्री० (कु०) भेड़ की नवजात बच्ची।
**मियां**—पु० एक राजपूत जाति।
**मिया**—अ० (ऊ०, कां०, ह०) प्रियवाची संबोधन।
**मियाणी**—स्त्री० मियां की पत्नी।
**मियाद**—स्त्री० अवधि।
**मियाद**—स्त्री० बुनियाद, आधारक, आधारशिला।
**मियान**—पु० (ह०) धान की रोपाई के लिए खेत को पानी से भरकर हल जोतने की क्रिया।
**मियान**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) पाजामे में नाड़ा डालने के लिए बना स्थान।
**मियानी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) पाजामे के आसन को चौड़ा करने के लिए जोड़ा कपड़े का टुकड़ा।
**मियारना**—स० क्रि० (कां०) सुहागा फेरना।
**मियाल**—पु० (सि०) खेत का बाहरी भाग।
**मियूण**—स्त्री० (बि०) एक विषैली मक्खी जो वर्षा ऋतु में

पशुओं को काटती है।
**मियोआ**—पु० (कां०) मेवा, सूखाफल।
**मिरक**—स्त्री० (कु०, चं०) आंख दबाकर संकेत करने का भाव।
**मिरग**—स्त्री० बाईस प्रविष्टे ज्येष्ठ से आठ प्रविष्टे आषाढ़ तक के पंद्रह दिन।
**मिरग**—पु० बाघ।
**मिरगसिरा**—पु० मार्गशीर्ष।
**मिरतबान**—पु० (सि०) मरतबान, अचार आदि रखने का कांच का पात्र।
**मिरथे**—स्त्री० (मं०) मेथी।
**मिरमिर**—स्त्री० (चं०) आंखों की पुतलियों के हिलने का भाव।
**मिरमिरी**—स्त्री० (कु०) आंख में साबुन आदि लगने से होने वाली जलन।
**मिरल**—पु० (मं०) उल्लू की तरह का एक छोटा पक्षी।
**मिर्ग**—पु० मृग।
**मिर्गी**—स्त्री० अपस्मार रोग।
**मिर्चगंध**—स्त्री० (सि०) एक घास विशेष।
**मिलण**—पु० (कु०) मिलन।
**मिलणा**—अ० क्रि० मिलना।
**मिलणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) मिलना, प्राप्त होना।
**मिलनी**—स्त्री० वर-वधू के संबंधियों का मिलन।
**मिलबर्तण**—पु० मिलना-जुलना, आचार-व्यवहार।
**मिला**—वि० (कु०, मं०) खट्टा, खटाई वाला।
**मिलाउणा**—स० क्रि० (शि०) मिलाना।
**मिलाउणी**—स्त्री० (कु०) दो देवताओं के मिलन का अवसर।
**मिलिणा**—अ० क्रि० (कु०) खट्टा होना।
**मिल्ह**—पु० (कु०) सैलाब।
**मिल्हिणा**—अ० क्रि० (कु०) सैलाब आना।
**मिश**—स्त्री० (कु०, शि०) गुस्सा, क्रोध।
**मिशकरा**—वि० (कु०, शि०) ईर्ष्यालु।
**मिशखोर**—पु० (शि०) स्पर्धा।
**मिशलला**—वि० (कु०) क्रोधी, गुस्सैल।
**मिशिणा**—अ० क्रि० (कु०) गुस्सा आना, क्रोध करना।
**मिशो**—पु० (सि०) बराबरी।
**मिसणा**—वि० (बि०) घुन्ना।
**मिसनी**—स्त्री० (बि०) ऐसा धान जो फैलता अधिक है लेकिन उसके फल झड़ जाते हैं।
**मिसरी**—स्त्री० मिश्री।
**मिसरू**—पु० (बि०) रसोइया।
**मिसल**—स्त्री० फाइल।
**मिसलमुआइना**—पु० फाइल का निरीक्षण।
**मिस्तरी**—पु० कुशल कारीगर; मकान आदि बनाने वाला।
**मिस्सा**—वि० (सो०) मिलाजुला, मिश्रित।
**मिस्सियांपकाणा**—स० क्रि० कोई षडयंत्र करना।
**मिस्सी**—वि० मिली-जुली, मिश्रित, दाल की (रोटी)।
**मिह**—पु० वर्षा।
**मिह**—पु० (चं०) अस्पृश्यता, छुआछूत।
**मिहनत**—स्त्री० मेहनत।
**मिहा**—वि० (चं०) तथाकथित अछूत व्यक्ति; अशुद्ध वस्तु।
**मिहाड़ा**—पु० (कु०, बि०) भेड़ बकरियां आदि रखने का स्थान।
**मिहाड़ा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) भैंसों का झुंड।
**मिहण**—स्त्री० (कु०) 'झब्बल' की तरह का औजार जो अधिक लंबा, मोटा और चौड़ा होता है।
**मिहणा**—पु० (शि०, बि०) ताना।
**मिहन्ना**—वि० सुस्त।
**मिहलणा**—अ० क्रि० (बि०) पशु का गले में बंधी रस्सी को खोल कर खूंटे से छूट जाना।
**मीं**—सर्व० (सि०) मुझको।
**मींक**—अ० (बि०) रत्तीभर, थोड़ा सा।
**मींगण**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) मेगनी।
**मींगी**—स्त्री० (कु०) कोमल शाखा के बिल्कुल बीच का भाग।
**मींगी**—स्त्री० (मं०) अखरोट की गिरी।
**मींगे**—सर्व० (सि०) मेरे पास।
**मींज**—स्त्री० (कु०) चर्बी।
**मींझ**—स्त्री० (चं०) चर्बी।
**मींडा**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) बालों की सज्जा हेतु बनाया 'मींडियों' का जूड़ा।
**मींडी**—स्त्री० (कां०, बि०) स्त्री के सिर पर बनी बारीक चोटी।
**मींहण**—स्त्री० (मं०) भारी पत्थर आदि बदलने व हटाने के लिए बना लकड़ी का डंडा।
**मीकणा**—पु० (कु०) किसी छेद को बंद करने के लिए कागज, कपड़े का बनाया ढक्कन।
**मीच**—स्त्री० (कु०) लकड़ी, 'चोच' का विपरीतार्थक शब्द।
**मीच्छ**—पु० (शि०) मनुष्य।
**मीजड़**—पु० (ह०) धान का छिलका, तुषार।
**मीटणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) आंखें मूंदना। अ० क्रि० स्वर्गवास होना।
**मीठौ**—पु० (कु०) प्रसाद, हलवा।
**मीडु**—पु० (कु०, मं०) जंगली खटमल जो शरीर में चिपक कर खून चूसता है।
**मीडूपातर**—पु० (मं०) ज़ख्म पकाने की बूटी।
**मीण**—स्त्री० (कां०) बावली आदि का किनारा।
**मीणीम्है**—स्त्री० ऐसी भैंस जिसके लंबे सींग पीछे की ओर को सीधे हों।
**मीत**—पु० प्रेमी।
**मीनमेख**—स्त्री० टीका-टिप्पणी, बारीकी से किया जाने वाला निरीक्षण।
**मीम**—स्त्री० सुंदर स्त्री।
**मीर**—पु० (कु०, सो०) अमीर।
**मीर**—स्त्री० (सि०) मिर्च का तीखापन।
**मीर**—पु० (ह०) पंक्ति।

**मीरदेणा**—स० क्रि० अखरोट, गोलियां आदि खेलते हुए प्रथम द्वितीय का निर्णय करने के लिए पहली बार गुच्ची के पास अखरोट या गोली फैंकना।

**मीरबीशी**—स्त्री० (शि०, सो०) मुष्कक।

**मीरा**—पु० (ह०) भैंसा।

**मीरी**—स्त्री० (कु०) अमीरी। वि० प्रथम, पहला।

**मीरी**—स्त्री० (चं०) एक वृक्ष विशेष।

**मीरू**—पु० हुक्के का वह भाग जिस पर चिलम टिकी रहती है।

**मीश्रा**—स्त्री० (सो०) दूसरों की नकल करने की प्रवृत्ति।

**मीःगा**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) मन में बात रखने वाला।

**मीहुणी**—वि० (ह०) अधिक दूध देने वाली (गाय)।

**मीहुरी**—वि० (मं०) जिस (गाय) का न दूध बिलोया जाए, न दही जमाया जाए।

**मुंग**—स्त्री० मूंग की दाल।

**मुंगणा**—स० क्रि० (कु०) मांगना।

**मुंगर**—पु० (मं०) मिट्टी के ढेलों को तोड़ने का औज़ार।

**मुंगरा**—पु० मूली के पौधे पर लगने वाला फल।

**मुंगरा**—पु० बेसन से बनी नमकीन।

**मुंगरी**—स्त्री० (सो०) मिट्टी कूटने का डंडा।

**मुंगरू**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) चूल्हे के ऊपर बर्तन टिकाने के लिए बने मिट्टी के आधार।

**मुंगळ**—पु० मंगलवार।

**मुंगली**—स्त्री० मिट्टी कूटने का डंडा।

**मुंगा**—पु० (सि०) गड़ा हुआ लक्कड़। मूंगा।

**मुंगाई**—स्त्री० (शि०) थाली।

**मुंगाली**—स्त्री० (सि०) थाली।

**मुंगिया**—वि० मूंग के रंग का।

**मुंगी**—स्त्री० मूंग अनाज।

**मुंछड़**—वि० बड़ी मूंछों वाला।

**मुंछणो**—स० क्रि० (शि०) टुकड़े करना। आटा गूंथना।

**मुंछयाणी**—वि० (कु०) बड़ी मूंछों वाला।

**मुंज**—पु० मूंज।

**मुंजणा**—स० क्रि० (सो०) तालाब आदि के बहते पानी को बंद करना।

**मुंजमाल**—स्त्री० (कु०) मूंज घास से बनी मेखला।

**मुंजस**—स्त्री० डांट-डपट, मुरम्मत।

**मुंजी**—स्त्री० लंबे-पतले पत्तों वाला घास जो रस्सी बनाने के काम आता है।

**मुंजो**—सर्व० मुझे।

**मुं:हु**—पु० (सो०) छोटा तथा सुंदर मुंह।

**मुंड**—पु० सिर।

**मुंडका**—पु० बड़ा सिर।

**मुंडकी**—स्त्री० (कु०) छोटा सिर।

**मुंडकी**—स्त्री० गर्दन।

**मुंडखरा**—अ० (शि०) मुट्ठी भर।

**मुंडखोलु**—वि० (कां०) ऐसा पशु जो अपने गले की रस्सी को सरका कर छूट जाए।

**मुंडड़ा**—पु० (मं०) लकड़ी की बनी देवता की प्रतिमा।

**मुंडणा**—स० क्रि० (कु०) दलना। मांड़ना।

**मुंडणा**—स० क्रि० (सि०) लूटना।

**मुंडणा**—स० क्रि० हजामत करना।

**मुंडतोड़ा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) बैलों को काटने वाला कीड़ा।

**मुंडनवाई**—स्त्री० (मं०) स्त्रियों का शुभ शगुन में सिर धोने का भाव।

**मुंडपण**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) अपरिपक्वता, बचकानापन, लड़कपन।

**मुंडबेल**—पु० (ऊ०) Wattakaka Volubilis.

**मुंडयार**—वि० (कां०) सिर मारने वाला, अपशकुनी (पशु)।

**मुंडरशाड़ना**—स० क्रि० (मं०) पति की मृत्यु पर पत्नी का बाल बिखेरना।

**मुंडला**—वि० (सि०, सो०) बिना सींग का (बैल)।

**मुंडा**—पु० (बि०) कंधा।

**मुंडाल**—पु० (शि०) सिर के बाल।

**मुंडिया**—वि० (सि०) मुखिया।

**मुंडी**—स्त्री० (मं०) व्यक्ति के समान लंबाई या गहराई।

**मुंडी**—स्त्री० बकरे आदि का सिर का भाग।

**मुंडी**—स्त्री० (बि०) हल को फसाने के लिए हल में लगा लोहे का साधन।

**मुंडीबंड**—स्त्री० (कां०) व्यक्ति के स्तर अनुसार बांट।

**मुंडीबंड**—स्त्री० (कु०) पैतृक संपत्ति की बेटों की संख्या के आधार पर बांट।

**मुंडील**—पु० (सि०) सिर में ओढ़ने का दुपट्टा।

**मुंडु**—पु० लड़का, पुत्र।

**मुंडुआ**—पु० (कु०) घराट का हत्था।

**मुंडोखर**—पु० (शि०) सिर।

**मुंढ**—पु० मूल; वृक्ष का तना।

**मुंढमाल**—स्त्री० (कु०) मुंडमाला।

**मुंढला**—वि० मूल का, प्रारंभ का, पहला।

**मुंढा**—पु० (कु०) पुराना पौधा।

**मुंढा**—पु० (कु०) वृक्ष काटने के बाद बचा तना।

**मुंढी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) गन्ने की प्रथम वर्ष की फसल।

**मुंढू**—वि० (कु०) छोटे-छोटे सींगों वाला (बैल)।

**मुंत्था**—स्त्री० एक विशेष ग्रहयोग।

**मुंदड़ी**—स्त्री० अंगूठी।

**मुंदणा**—स० क्रि० बंद करना।

**मुंदर**—स्त्री० नाथ-सिद्धों द्वारा कान में डाली जाने वाली मुद्राएं।

**मुंदरना**—स० क्रि० (चं०) रोकना।

**मुंदरना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०) बैल को बधियाना।

**मुंदरा**—स्त्री० एक तरह के कुंडल जो कान में पहने जाते हैं।

**मुंदल**—पु० (मं०) जंगली बकरा।

**मुंदी**—स्त्री० अंगूठी।

**मुंद्रर**—पु० (चं०) हुक्के की चिलम में तंबाकू की जली राख।

**मुंधळा**—वि० (कु०) सींग रहित।

**मुंबाटे**—स्त्री० (शि०) मोमबत्ती।
**मुंबे**—सर्व० (कु०) मुझे।
**मुंयकर**—स्त्री० (सो०) पशु के मुंह में बांधी जाने वाली रस्सी।
**मुंहकढ़ाई**—स्त्री० विवाह के अवसर पर वर के संबंधियों द्वारा वधू के मुंह देखने की क्रिया।
**मुंहघड़ाई**—स्त्री० (मं०) दे० मुंहकढ़ाई।
**मुंहन्हेरे**—अ० (कां०) बहुत सवेरे, तड़के।
**मुंहसरुखी**—स्त्री० कही गई बात की प्रत्यक्ष पुष्टि।
**मुंहड़ा**—पु० (कां०) कंधा।
**मुःण**—पु० (शि०) बीमार आदमी की भटकी आत्मा।
**मुआ**—वि० दुर्बल; मरा हुआ।
**मुआ**—अ० संबोधन शब्द।
**मुआइना**—पु० निरीक्षण।
**मुआळ**—पु० ऊंचे स्वर में दी गई गाली।
**मुआळ**—पु० (शि०, सो०) पशु के मुंह में होने वाला एक रोग।
**मुआसण**—स्त्री० (मं०) कपड़े का टुकड़ा जिसका उपयोग तवे को घी-तेल से तर करने के लिए होता है।
**मुइणी**—वि० (सि०) गर्भिणी (बकरी)।
**मुईड़ा**—पु० (सि०) सुहागा।
**मुई तिथि**—स्त्री० (मं०) श्राद्ध दिन।
**मुईश**—स्त्री० (सि०) भैंस।
**मुएं**—सर्व० (सि०) मैंने।
**मुकट**—पु० मुकुट।
**मुकड़ी**—स्त्री० (चं०, मं०) कच्चे आमों की सुखाई गई फांक।
**मुकड्ड**—पु० (कु०) मोटे तने वाली एक झाड़ी जिसकी लकड़ी जलाने के काम आती है।
**मुकणा**—अ० क्रि० समाप्त होना।
**मुकणी**—स्त्री० (चं०) हाथ कांपने की क्रिया।
**मुकता**—वि० काफी, पर्याप्त।
**मुकती**—वि० (सि०) मुफ्त, बिना दाम का।
**मुकरना**—अ० क्रि० अस्वीकार करना, इन्कार करना।
**मुकरा**—पु० (चं०) टुकड़ा।
**मुकरिना**—अ० क्रि० (कु०) इन्कार किया जाना।
**मुकरोणा**—स० क्रि० (बि०) टूटना।
**मुकरौल्हा**—पु० (चं०) चूल्हे की आगे की मेंड़।
**मुकाणा**—अ० क्रि० समाप्त होना।
**मुकाहण**—स्त्री० मरने पर शोक व्यक्त करने के दिन या अवधि।
**मुकीणा**—स० क्रि० (चं०) समाप्त करना।
**मुकौत**—स्त्री० (चं०) समाप्ति।
**मुक्कड़**—पु० मुक्का, घूंसा।
**मुक्का**—पु० घूंसा।
**मुक्कू**—पु० (चं०) छोटा सा छेद।
**मुक्खर**—पु० (चं०) किसी वस्तु का जलने पर बचा थोड़ा सा भाग।
**मुख**—पु० मूल।
**मुखड़ो**—पु० (शि०) चेहरा।
**मुखत्यार**—पु० दे० मुख्तयार।
**मुखपौड़छणा**—अ० क्रि० (कु०) मरे हुए व्यक्ति के लिए प्रातः-सायं रोना।
**मुखमोहरा**—पु० (कु०) देवता का सोने-चांदी का बना चेहरा।
**मुखबर**—पु० गवाह, साक्षी।
**मुखिया**—पु० प्रधान।
**मुखे**—सर्व० (शि०) मुझे।
**मुखौल**—पु० मज़ाक।
**मुखौला**—वि० (कां०) प्रथम।
**मुग**—स्त्री० (ऊ०, कां०, बि०) पानी की बड़ी धार।
**मुगरा**—पु० (चं०) डंठल।
**मुगरी**—स्त्री० (कु०) सारे सिर की हजामत।
**मुगरी**—स्त्री० लोहे का बना एक पुराना हथियार जिसके एक सिरे पर नोकदार बड़ा लट्टू लगा रहता है, गुर्ज, गदा का एक रूप।
**मुगरू**—पु० (सि०) मूली के पौधे पर लगने वाला फल।
**मुगलाणी**—स्त्री० (सि०) थाली रखने की जगह।
**मुगे**—पु० (मं०) मकान की दीवार का चौड़ाई वाला भाग।
**मुग्गा**—पु० (चं०) पानी की बड़ी धार।
**मुच**—पु० (चं०, बि०) दांतों से काटने की क्रिया।
**मुचकाणा**—स० क्रि० (चं०) कोई चीज़ लेकर वापस न करना।
**मुचकीहणा**—अ० क्रि० (चं०) उच्छृंखलता दिखाना।
**मुचड़ो**—पु० (मं०) लकड़बग्घा।
**मुचणा**—स० क्रि० (सो०) पेशाब करना।
**मुचणा**—स० क्रि० (चं०, बि०, सि०) दांत से काटकर खाना।
**मुचमारना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) दांत गड़ाना।
**मुचयाणा**—स० क्रि० दांतों से काटना।
**मुचलका**—पु० ज़मानतनामा।
**मुचळा**—वि० (कां०) जिस व्यक्ति के दांत न हों।
**मुचुदेणा**—स० क्रि० (मं०) दांत गाड़ना।
**मुचैह**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) दांतों से कटे हुए का निशान।
**मुच्छ**—स्त्री० मूंछ।
**मुच्छड़िया**—वि० बडी-बड़ी मूंछों वाला।
**मुच्छणा**—स० क्रि० (सो०) दांतों से काटना; लकड़ी काटना।
**मुच्याह**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) दे० मुचैह।
**मुछणा**—स० क्रि० (कां०, ऊ०) गूंथे हुए आटे से थोड़ा सा आटा लेना।
**मुछणा**—स० क्रि० (कु०, मं०) आटा आदि गूंथना।
**मुछरिणा**—अ० क्रि० (कु०) छेद का बंद होना।
**मुछरेडणा**—स० क्रि० (कु०) किसी का मज़ाक करना, छेड़ना।
**मुछिणा**—स० क्रि० (कु०) गूंथा जाना।
**मुछैला**—वि० मूंछों वाला।
**मुजणा**—अ० क्रि० (चं०) सड़ना, गलना।

**मुजब**—अ० अनुसार।
**मुजरा**—पु० (मं०) प्रशस्ति गीत।
**मुज़रा**—पु० (कु०, सि०) मुजरा, लोक नृत्य, महफिल।
**मुज़ारा**—पु० काश्तकार।
**मुजुरदार**—पु० कुली, मज़दूर।
**मुझड़**—पु० (चं०) मोटा रस्सा।
**मुझा**—वि० (चं०) इकट्ठा।
**मुटकरा**—पु० (सि०) मुट्ठी।
**मुटणा**—पु० (मं०) जलस्रोत।
**मुटणा**—अ० क्रि० (बि०, मं०) पानी का निकलना।
**मुटरा**—पु० (कु०) बालों का जूड़ा।
**मुटरा**—पु० (मं०) घास का ऊपरी हिस्सा।
**मुटियार**—स्त्री० युवती।
**मुट्टणा**—अ० क्रि० (बि०) पांव आदि में मोच आना।
**मुट्ठ**—पु० (बि०) मोरपंख से बना चंवर।
**मुट्ठ**—स्त्री० मुष्टि, मुट्ठी।
**मुट्ठू**—वि० (चं०, बि०) मुट्ठीभर।
**मुठ**—स्त्री० दस्ता।
**मुठ**—स्त्री० जादू-टोने से किसी की जान लेने की क्रिया।
**मुठकरा**—पु० (सि०) मुक्का।
**मुठकरू**—वि० (सो०) मुट्ठी भर।
**मुठकोर**—पु० (सि०) पशु का सिर।
**मुठड़ी**—स्त्री० (शि०) चुटिया, वेणी।
**मुठा**—पु० (मं०) गट्ठर।
**मुठी**—वि० (कु०) मुट्ठी भर, मुट्ठी।
**मुड़णो**—अ० क्रि० (शि०) मुड़ना।
**मुड़थोली**—स्त्री० (सि०) श्मशान।
**मुड़दछांव**—स्त्री० (बि०) मरने के दिन करीब होने का आभास।
**मुड़दघाट**—पु० श्मशान।
**मुड़दबशां**—पु० (कु०) मार्ग में ऐसा स्थान जहां मुर्दे को थोड़ी देर के लिए रोका जाता है।
**मुड़दबेल**—पु० (कां०) Dregea ulubilis.
**मुड़दा**—पु० मृतक, मुर्दा।
**मुड़दार**—वि० (चं०) मुर्दे जैसा।
**मुडमड़ाई**—स्त्री० (मं०) ब्याज़ चुकाकर मूल खड़ा रखने का भाव।
**मुण**—स्त्री० (चं०) मैल जम जाने पर उसे मल-मल कर निकालने की क्रिया।
**मुणशी**—पु० (कु०) मुंशी।
**मुणाष**—पु० (चं०) पति।
**मुतरेहड़**—स्त्री० पेशाब की दुर्गंध।
**मुतोणा**—अ० क्रि० पेशाब हो जाना।
**मुत्थु**—पु० (चं०) एक घास विशेष।
**मुत्थू**—वि० (चं०) छोटा।
**मुत्रणा**—स० क्रि० (चं०) पेशाब करना।
**मुथू**—पु० (कु०) गर्दन।
**मुदा**—पु० (चं०) हथेली का पिछला भाग। दाम।
**मुनणा**—स० क्रि० मेड़ की ऊन काटना, मूंडना।
**मुनशी**—पु० (सो०) मुंशी।
**मुनिणा**—अ० क्रि० (कु०) हजामत का जानी, हजामत होना।
**मुनी**—स्त्री० (कु०) भेड़ की ऊन उतारने का अवसर विशेष।
**मुन्नाई**—स्त्री० (कां०, चं०) ऊन उतारने की क्रिया या पारिश्रमिक।
**मुन्नी**—स्त्री० छोटी आयु की लड़की; सुपुत्री; प्यार का संबोधन।
**मुन्नू**—पु० छोटी आयु का लड़का; बेटा; प्यार का संबोधन।
**मुन्हणी**—स्त्री० (कु०, बि०) कटिसूत्र।
**मुफत**—वि० (कु०) मुफ्त, बिना दाम का।
**मुमैं**—पु० (चं०) एक सुंदर पक्षी विशेष।
**मुयरी**—स्त्री० (शि०, सो०) मोहरी, पायंचा।
**मुर**—पु० (कु०) बकरे की टांग।
**मुर**—पु० (सि०) मोर।
**मुरक**—स्त्री० (मं०, सो०) दे० मुंयकर।
**मुरकणा**—स० क्रि० काटना, थोड़ा सा काटना। वस्त्र में छोटी-छोटी सलवटें बनाना।
**मुरकला**—पु० (सि०) लकड़ी या बांस का टुकड़ा।
**मुरकी**—स्त्री० कान का आभूषण।
**मुरकी**—स्त्री० (मं०, सो०) नथुनों के मध्य डाला जाने वाला आभूषण।
**मुरकू**—पु० (बि०) स्त्रियों द्वारा कान में पहना जाने वाला सोने-चांदी का आभूषण।
**मुरखिणा**—अ० क्रि० (कु०) घिस जाना।
**मुरझणा**—अ० क्रि० (चं०) थोड़ा-थोड़ा झड़ना।
**मुरड़ा**—पु० (कां०) टांग व पैर का जोड़, टखना।
**मुरणा**—स० क्रि० (चं०) थोड़ा-थोड़ा झाड़ना।
**मुरत**—पु० (शि०) Tesmodiumtilia efolium.
**मुरमुरा**—पु० गुड़-चावल की बनी मिठाई।
**मुरहयाली**—स्त्री० (चं०) मसूर की दाल।
**मुरा**—पु० (चं०) चुपके से मारा गया घूंसा।
**मुराड़ा**—पु० (बि०) जलती हुई लकड़ी।
**मुराद**—स्त्री० मनोकामना।
**मुरी**—स्त्री० (सि०) खिड़की।
**मुरू**—पु० (बि०) पायंचा।
**मुरेन**—पु० (कां०) Helinus Lanceolatus.
**मुरोल**—पु० (ऊ०, कां०) एक पौधा विशेष।
**मुल**—पु० मूल्य।
**मुल**—पु० (बि०) मूल, मूलाधार।
**मुलख**—पु० देश। अ० अधिक मात्रा में।
**मुलखाढ़ा**—पु० जनसमूह।
**मुलजिम**—पु० अपराधी।
**मुलट्ठी**—स्त्री० गुंजालता की जड़ जो दवाई के काम आती है, यष्टिमधु।
**मुलाज़म**—पु० सेवक, नौकर।
**मुलूण**—पु० (चं०) वह स्थान जहां से कुल्या निकाली गई हो।

**मुले**—सर्व० (कु०) मुझे।
**मुले**—अ० (सि०) नीचे।
**मुलेरणा**—स० क्रि० (चं०) मोल करना।
**मुशकल**—स्त्री० मुश्किल, कठिनाई।
**मुशटी**—स्त्री० (कु०, सो०) चुहिया।
**मुशटेणु**—पु० (शि०) चूहे का बच्चा।
**मुशा**—पु० (कु०, सि०, सो०) चूहा।
**मुश्क**—स्त्री० (कु०) गंध।
**मुश्किकपूर**—पु० मुश्क कर्पूर।
**मुश्तरिका**—वि० सांझा।
**मुसक**—स्त्री० गंध।
**मुसकणा**—अ० क्रि० बदबू आना।
**मुसरो**—पु० (सि०) मसूर।
**मुसलू**—पु० (कु०) मूसल।
**मुसाथा**—पु० (चं०) पौराणिक गाथाओं का गान।
**मुसूल**—पु० कर, महसूल।
**मुस्कणा**—अ० क्रि० (कु०, मं०) मुसकराना।
**मुस्कणा**—अ० क्रि० (ह०) दाल-सब्जी का खराब होना।
**मुस्कराणा**—अ० क्रि० मुसकराना।
**मुस्काइणा**—अ० क्रि० (कु०) मुसकराया जाना।
**मुस्टंडा**—वि० आवारा।
**मुस्ठु**—वि० (मं०) एक हाथ का माप।
**मुहड़ा**—पु० डमरू की शक्ल का आसन या बैठक।
**मुहरला**—वि० सबसे आगे का।
**मुहरा**—पु० (मं०) विवाह के एक मास बाद वधू के ससुराल जाने की रीति।
**मुहरा**—पु० (चं०) मुखिया।
**मुहरिया**—वि० सबसे पहले, सबसे आगे।
**मुहरी/रू**—स्त्री० पायंचा, मोहरी।
**मुहरी**—वि० पालकी उठाने वाला सबसे आगे का कहार।
**मुहली**—स्त्री० (शि०) थैली।
**मुहाड़ी**—स्त्री० (मं०) दे० मुहाळ।
**मुहारा**—पु० (चं०) चेहरा, मुखौटा।
**मुहाळ**—पु० (ऊ०, कां०) पशुओं के मुंह में होने वाला कांटेदार रोग।
**मुहिष**—स्त्री० (सि०) भैंस।
**मूं**—पु० (शि०, सो०) मुंह।
**मूं**—सर्व० (कु०) मैं, 'हाऊं' का कारकीय रूप 'मुबे', (मुझे), 'मूंन' (मुझ से) आदि।
**मूंगर**—पु० (मं०) एक विशेष प्रकार का लकड़ी का डंडा जो जौ कूटने के काम आता है।
**मूंचल**—पु० (चं०) गोमूत्र रखने का लकड़ी का पात्र।
**मूंज**—अ० (कु०) मध्य।
**मूंजि**—स्त्री० (सो०) मूंज नामक घास जिससे रस्सियां बनाई जाती हैं।
**मूंड**—पु० (कु०, सि०) सिर।
**मूंड़**—वि० (सि०) शक्तिशाली।
**मूंढी**—स्त्री० (चं०) नदी में बहता आया लट्ठा।
**मूंदणा**—स० क्रि० (सि०) ढकना।
**मूंधा**—अ० नीचे की ओर।
**मूअण**—पु० (कु०) मूसल।
**मूच**—पु० मूत्र।
**मूचटा**—पु० (सि०) वस्त्र।
**मूचणा**—स० क्रि० (कु०, मं०) पेशाब करना।
**मूचरौ**—वि० (कु०) छिद्रयुक्त।
**मूठ**—स्त्री० (कु०) स्त्री के सिर का आभूषण।
**मूठ**—स्त्री० (कु०, मं०) मुट्ठी।
**मूड़**—पु० (मं०) मूल, निम्न भाग।
**मूड़ा**—पु० (सि०) भूना हुआ अनाज।
**मूड़ी**—स्त्री० (मं०) मूली।
**मूड़ी**—पु० (सो०) हरे या भिगोए हुए गेहूं व धान को भूनकर तैयार किया गया खाद्य पदार्थ।
**मूड़ी**—स्त्री० जख्म। छिद्र।
**मूड़ी**—स्त्री० (चं०) छिद्र में फंसाया गया कपड़ा या घास।
**मूढ़ा**—पु० दे० मुहड़ा।
**मूण**—पु० (चं०) खस्तेपन के लिए गूंधते समय आटे आदि में डाला जाने वाला घी।
**मूणा**—पु० (चं०) छोटी-छोटी खस्ता रोटी।
**मूत**—पु० मूत्र।
**मूतणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०) पेशाब करना।
**मूत्रना**—स० क्रि० मूत्र करना।
**मूत्रोणा**—अ० क्रि० पेशाब आना, पेशाब होना।
**मून**—स्त्री० (चं०) भेड़ों की मुंड़ाई।
**मूना**—पु० कलाई।
**मूफड़ी**—स्त्री० (बि०) मूंगफली।
**मूबाते**—स्त्री० (शि०) मोमबत्ती।
**मूम**—पु० मोम।
**मूमजामा**—पु० मोम का रोगन चढ़ाया हुआ कपड़ा।
**मूर**—स्त्री० (चं०) चिंगारी।
**मूर**—स्त्री० अंश।
**मूरख**—वि० मूर्ख।
**मूरत**—स्त्री० मूर्ति, शक्ल, आकार।
**मूरत**—पु० (सो०) मुहूर्त।
**मूरा**—पु० (कु०, मं०) बाजू; पशुओं की टांग का टुकड़ा, टांगों का पतला भाग।
**मूल**—पु० (कु०) मूल्य।
**मूळ**—पु० मूलधन।
**मूळ**—पु० (शि०) मूसल।
**मूळ**—पु० (ऊ०, कां०) जड़।
**मूलमंतर**—पु० वास्तविक मंत्र, बुनियाद, असल बात।
**मूलमुद्दा**—पु० असल बात, मूल उद्देश्य।
**मूळा**—पु० (सो०) मूसल।
**मूलाणो**—पु० (शि०) पानी का मूल स्थान जहां से नहर शुरू होती है।
**मूली**—पु० (कु०) ग्राहक, मूल्य देकर खरीद करने वाला व्यक्ति।

**मूळी**—स्त्री० (कां०) छोटी जड़।
**मूशा**—पु० (शि०, सि०) चूहा।
**मूसना**—स० क्रि० चुरा लेना।
**मूसळ**—पु० मूसल।
**मूसादानी**—स्त्री० (सि०) चूहेदानी।
**मूहरो**—वि० (कु०) मीठा।
**मूहल**—पु० (कु०, मं०) मूसल।
**मूहाड़ी**—स्त्री० (कु०) मधुमक्खी का छत्ता।
**मूहाड़ो**—पु० (कु०) सूखा घास रखने की जगह।
**मूहो**—पु० (शि०) चूहा।
**मेंखमल**—पु० (कु०) मखमल।
**मेंडकुमामा**—वि० (कु०) छोटा, भद्दा, कुरूप।
**मेंदे**—स्त्री० (शि०) मेहंदी।
**मेंह**—पु० वर्षा।
**मेंहदिया**—वि० मेहंदी के रंग का।
**मेंही**—स्त्री० (कु०) भैंस।
**मेइड़**—पु० (कु०) लकड़ी का फर्श।
**मेइड़ना**—स० क्रि० (कु०) लकड़ी का फर्श बिछाना।
**मेइड़माटा**—पु० (कु०) मलियामेट, तहस-नहस।
**मेई**—स्त्री० सुहागा।
**मेउआ**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Basscis latifolia.
**मेऊं**—स्त्री० (शि०) म्याऊं, बिल्ली की आवाज़।
**मेऊड़ी**—स्त्री० (कु०) मधुमक्खी का छत्ता।
**मेक**—पु० (बि०, सो०) टेढ़ापन; मरोड़।
**मेकणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) मोड़ना।
**मेकी**—सर्व० (कां०) मुझे।
**मेख**—स्त्री० कील।
**मेगर**—पु० (कु०) मगर, पीछे पड़ने का भाव।
**मेगरम्हच्छ**—पु० (कु०) मगरमच्छ।
**मेगात**—स्त्री० (सि०) महंगाई।
**मेघो**—पु० (सि०) बादल।
**मेच**—स्त्री० (सि०, सो०) मेज़।
**मेच**—पु० माप; बराबर।
**मेचका**—पु० (बि०, ह०) Caosalpinia bonduclla.
**मेट**—पु० कुलियों, मज़दूरों का मुखिया।
**मेट**—स्त्री० (कु०) पत्थर की दीवार।
**मेटणा**—अ० क्रि० (शि०) मिलना।
**मेटणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) समेटना, तह लगाना, लपेटना।
**मेटली**—स्त्री० (सि०) दूध बिलोने का पात्र।
**मेड़**—पु० (सि०) फर्श।
**मेड़ना**—स० क्रि० (सो०) मिट्टी की छत डालना। ढकना।
**मेड़बंदी**—स्त्री० क्यारियों की बाड़।
**मेड़ी**—स्त्री० खलियान में गाड़ा जाने वाला स्तंभ।
**मेड़ी**—स्त्री० घर के आगे का चौबारा।
**मेढ़**—पु० (चं०) पगड़ी आदि की लपेट; ऊखल के गिर्द लपेटा वस्त्र।
**मेढ़**—स्त्री० (कु०) पंक्ति।
**मेढ़णा**—स० क्रि० (चं०) लपेटना।
**मेढ़ना**—स० क्रि० (कु०) सजाना।
**मेढ़ाथर**—पु० एक मोटा व चौड़ा पत्थर जो ढकने के लिए प्रयुक्त होता है।
**मेढ़िणा**—स० क्रि० (कु०) सजाया जाना।
**मेढ़ी**—वि० केंद्रीय, सबको काबू में रखने वाला, जीता जाने वाला।
**मेताणे**—स्त्री० (शि०) मेहतरानी।
**मेते**—सर्व० मुझसे।
**मेथे**—पु० (शि०) मेथी।
**मेद**—स्त्री० उम्मीद, आशा।
**मेदरहणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, सि०) गर्भ ठहरना।
**मेदी**—वि० (कु०) स्वस्थ।
**मेमणा**—पु० बकरी का बच्चा।
**मेरनो**—अ० क्रि० (शि०) रोना।
**मेरबान**—वि० दयालु।
**मेरु**—पु० (चं०) माला का बड़ा दाना।
**मेरु**—पु० चिलम का मध्य भाग।
**मेळ**—स्त्री० (कु०) भाग, हिस्सा, खेतों में फसल कटाई के समय व्यक्ति विशेष के हिस्से का कांम।
**मेळ**—पु० मेल-मिलाप, संधि, विवाह में इकट्ठा हुआ जनसमूह।
**मेलटू**—पु० (शि०) छोटा कमरा। षड़यंत्र।
**मेलना**—अ० क्रि० (कु०) मिलना, तलाश होना।
**मेलना**—स० क्रि० मिलाना।
**मेळा**—पु० मेला।
**मेलावण**—स्त्री० (सि०) भेड़ की ऊन काटने की कैंची।
**मेल्ला**—पु० (बि०) आंगन।
**मेल्ला**—पु० (सो०) मिट्टी का फर्श।
**मेल्हिणा**—अ० क्रि० (कु०) गले मिलना।
**मेवा**—पु० सूखे फल।
**मेशण**—पु० (सि०) बेसन।
**मेश**—पु० (बि०) महेश।
**मेस**—अ० (शि०) के अनुसार।
**मेसणा**—स० क्रि० मिटाना।
**मेसणा**—स० क्रि० (सो०) मक्की का आटा गूंधना।
**मेसो**—वि० (सि०) चुप, मौन।
**मेसो**—पु० (शि०) मोच।
**मेस्सळा**—वि० (सो०) मतलब साधने वाला, स्वार्थी।
**मेस्सु**—पु० एक प्रकार की मिठाई।
**मेहतर**—पु० सफाई करने वाला।
**मेहळी**—स्त्री० हल के पीछे का लोहा।
**मेहां**—पु० (कु०) महिष, भैंसा।
**मेहि**—स्त्री० (चं०) बकरी की तरह का जंगली जीव जो सूखी कंदराओं में रहता है।
**मेहीं**—स्त्री० (कु०) भैंस।
**मेही**—स्त्री० भैंस।
**मेही**—स्त्री० (कु०) गाय, बैल आदि को बांधने की खूंटी।

**मैं**—अ० बकरी की आवाज़।
**मैंइटलू**—पु० (मं०) दूध बिलोने का पात्र।
**मैंग**—स्त्री० महंगाई।
**मैंगा**—वि० महंगा।
**मैंगे**—सर्व० (सि०) मेरे पास।
**मैंघर**—वि० (चं०) भैंस का दूध।
**मैंच्छी**—स्त्री० (मं०) मक्खी।
**मैंच्छे**—पु० (मं०) मच्छर।
**मैंझर**—पु० चर्चा, दूसरों की निंदा।
**मैंणा**—स० क्रि० (सि०) सुहागा फेरना।
**मैंदड़/ड़ू**—पु० (ऊ०, कां०) एक प्रकार का झाड़ू।
**मैंदी**—स्त्री० मेहंदी।
**मैंश**—स्त्री० (मं०, सो०) भैंस।
**मैंस**—पु० (मं०) सुहागे का लंबा डंडा।
**मैंहदा**—पु० (शि०) Deutzia corymbosa.
**मैंहदू**—पु० (चं०, बि०) एक सजावटी झाड़ी।
**मैंहसा**—पु० भैंसा।
**मै:न**—पु० (सि०) धान का खेत।
**मै:री**—स्त्री० (कु०, बि०) पानी भरने वाली।
**मै:ल**—पु० (सो०) महल।
**मैअरा**—पु० (शि०) तमाशा, मनोरंजक दृश्य।
**मैइला**—वि० (कु०) मलिन, मैला, गंदा।
**मैई**—स्त्री० (चं०) मूर्च्छा।
**मैकी**—स्त्री० (बि०) मरणोपरांत वर्ष भर प्रतिमास दिया जाने वाला दान।
**मैगळ**—वि० (बि०) हिलमिल जाने वाला।
**मैची**—वि० (शि०) मायके वाले।
**मैजर**—पु० (सो०) चर्चा, निंदा, आक्षेप।
**मैड़कण**—वि० (कु०) कमज़ोर।
**मैत**—अ० (कु०) मत।
**मैदगी**—स्त्री० (सि०) बारीक मिट्टी।
**मैन**—पु० (कु०) मन।
**मैनणा**—स० क्रि० (कु०) मानना।
**मैफल**—स्त्री० महफिल।
**मैमा**—स्त्री० (सो०) महिमा।
**मैरि**—स्त्री० (कां०) धनी पुरुष की पत्नी।
**मैरी**—वि० (कां०) उपजाऊ (भूमि)।
**मैर्चे**—स्त्री० (कु०) काली मिर्च।
**मैर्जी**—स्त्री० (कु०) मर्ज़ी, इच्छा।
**मैर्द**—पु० (कु०) पुरुष, मर्द।
**मैल**—पु० गोबर की खाद।
**मैलखोरा**—वि० ऐसा रंग जिसमें गंदगी न दिखाई दे।
**मैलखोरा**—पु० कपड़े धोने का साबुन।
**मैलणी**—स्त्री० (कां०, ह०) खाद लाने के लिए चुकाया गया धन।
**मैला**—पु० (शि०) पशु का रक्त।
**मैला**—पु० (बि०, सो०) घाव से बहा खून।
**मैला**—वि० मलिन, खादयुक्त। सादा।
**मैल्हम**—पु० (कु०) मरहम।
**मैसे**—अ० (कु०) मुश्किल से।
**मैहंधड़**—स्त्री० (कु०, मं०) भैंस की खाल।
**मैहकी**—स्त्री० (मं०) दे० मैकी।
**मैहर**—पु० दूध बेचने वाला, गूजर।
**मैहरम**—वि० परिचित।
**मैहरी**—स्त्री० दूसरी पत्नी के लिए संबोधन।
**मैहरी**—स्त्री० (चं०) गूजर की पत्नी।
**मैही**—स्त्री० (चं०) जंगली बकरी।
**मैहूं**—पु० (शि०) बिल्ली का बच्चा।
**मैहला**—पु० (कां०) बाड़ या भूमि की सीमा दर्शाने हेतु गाड़ी गई लकड़ी या पौधे।
**मोंगचुंग**—अ० (कु०) मांग-मांग कर।
**मोंगणा**—स० क्रि० (कु०) मांगना।
**मोंगणी**—स्त्री० (कु०) मंगनी, सगाई।
**मोंगिणा**—स० क्रि० (कु०) मांगा जाना।
**मोंजले**—स्त्री० (सि०) मंज़िल।
**मोंझ**—अ० (कु०) मध्य।
**मोंझला**—वि० (कु०, सि०) मध्य का, बीच का।
**मो:ड़ने**—पु० (शि०) श्मशान।
**मो:णा**—स० क्रि० (सि०) मोहित करना।
**मोआ**—अ० पुरुष के लिए संबोधन।
**मोईमान**—पु० (सि०) अतिथि।
**मोई**—स्त्री० (मं०) हल चलाने के बाद मिट्टी को समतल करने के लिए प्रयोग किया जाने वाला उपकरण, सुहागा।
**मोई**—स्त्री० (मं०) छत को स्लेट से अथवा घास से छाने की स्थिति में दीवार से डेढ़ दो फुट आगे बढ़ा हुआ भाग।
**मोईमा**—स्त्री० (कु०, सि०) महिमा।
**मोईरा**—पु० (शि०) देवता का सोने चांदी का बना चेहरा।
**मोऊळ**—पु० (शि०) कैथ, एक प्रकार का जंगली फल।
**मोएं**—सर्व० (शि०, सि०, सो०) मैंने।
**मोक**—स्त्री० (ऊ०, कां०) अतिसार।
**मोक**—वि० (बि०) चुप रहने वाला; नासमझ।
**मोक**—स्त्री० (बि०) केवल पशुओं का अतिसार रोग।
**मोक**—पु० (चं०) निमोनिया, सन्निपात ज्वर।
**मोकसद**—पु० (सि०) लक्ष्य।
**मोका**—स्त्री० (कु०) पीठ का दर्द।
**मोका/को**—पु० (कु०, शि०) अवसर।
**मोख**—पु० (सि०) खेत का कोना जिसमें हल नहीं लगता।
**मोख**—पु० मोक्ष, उद्यापन।
**मोखणा**—स० क्रि० (सो०) कष्ट सहना, भुगतना।
**मोखणा**—स० क्रि० व्रतादि का उद्यापन करना।
**मोखळा**—वि० (कु०) जिसके मुंह में दांत न हों।
**मोगरी**—स्त्री० (सि०) कपड़े धोने का डंडा।
**मोगा**—पु० (सो०) गोल तथा लंबी इमारती लकड़ी।
**मोघा**—पु० (ह०) नहर का पानी छोड़ने का मार्ग।
**मोघा**—पु० ठठेरे का सांचा।
**मोचड़ू**—पु० चमड़े के बने जूते।

**मोचणू**—पु० बाल या दांत उखाड़ने का यंत्र।
**मोचलणा**—अ० क्रि० (कु०, सि०) मचलना।
**मोचळा**—वि० (बि०) बिना दांतों वाला।
**मोछ**—पु० (चं०) खेत का किनारा।
**मोछ**—पु० बड़ी मोटी गोल लकड़ी का कटा हुआ भाग।
**मोछणा**—स० क्रि० (कु०) पेड़ के टुकड़े करना।
**मोछपाणा**—स० क्रि० (कु०) बच्चा पैदा होने के बाद 'नौड़' जाति के व्यक्ति का प्रसूता को जौ तथा कुछ पैसे मुट्ठी में देकर मंत्र डालना।
**मोछा**—पु० मोटी लकड़ी का टुकड़ा।
**मोछापाणा**—स० क्रि० मोटी लकड़ी को छोटा-छोटा काटना।
**मोजदू**—पु० (मं०) कपड़े के बने कढ़ाईदार मोज़े।
**मोटकणा**—अ० क्रि० (सि०) मटकना।
**मोटकणा**—वि० (ऊ०, कां०) मोटा।
**मोटड़ा**—वि० थोड़ा सा मोटा।
**मोटणा**—स० क्रि० (मं०) रोकना।
**मोटरो**—पु० (सि०) मटर।
**मोटळा**—पु० (कु०) गट्ठर, पोटली।
**मोटा**—वि० मोटा, स्थूल; बड़ा।
**मोटारोट**—पु० देवता के लिए बनाई गई मोटी मीठी रोटी।
**मोटुणा**—अ० क्रि० (सो०) मुटियाना; घमंड करना।
**मोटू**—वि० मोटा।
**मोटो**—वि० (शि०) मोटा।
**मोठ**—पु० एक दाल विशेष।
**मोठणा**—अ० क्रि० (बि०) मोटे होना।
**मोठी**—स्त्री० (चं०) राजमाश।
**मोड़**—पु० मोड़, घुमाव।
**मोड़णो**—स० क्रि० (शि०) मोड़ना।
**मोड़ना**—स० क्रि० लौटाना, वापिस करना, हटाना।
**मोड़िया**—अ० (शि०) जबरदस्ती।
**मोड़ी**—स्त्री० (मं०) हरे या भिगोए हुए गेहूं व धान को भूनकर तैयार किया गया खाद्य पदार्थ।
**मोढ़**—स्त्री० मकान की छत को सहारा देने के लिए लगाई लकड़ी या टेक।
**मोढ़े**—स्त्री० (सि०) देवी का मंदिर।
**मोण**—वि० (कु०) एक मन, चालीस सेर।
**मोण**—पु० (सि०) मछलियां पकड़ने का एक खेल।
**मोणशणा**—स० क्रि० (कु०) दान देना।
**मोणा**—स० क्रि० आटे में घी डालकर गूंथना।
**मोणी**—स्त्री० (सि०) मणि।
**मोणी**—स्त्री० (कु०) लंबा-बारीक पत्थर।
**मोत**—पु० (कु०) मोती।
**मोतमीम**—पु० देवकार्य करने वाला प्रमुख व्यक्ति, मोहतमिम, प्रबंधक।
**मोतलब**—पु० अर्थ, मतलब।
**मोथी**—वि० (कां०, ह०) ढीला-ढाला।
**मोदा**—पु० (चं०) कलाई।
**मोदी**—पु० आढ़ती, दाल-चावल आदि बेचने वाला।
**मोनमटाओ**—पु० (सि०) मनमुटाव।
**मोम**—पु० शहद निकालने के बाद पिघलाया हुआ छत्ता।
**मोमजीरो**—पु० (सि०) पोस्त के बीज।
**मोमता**—स्त्री० (कु०, सि०) ममता, मोह, प्यार।
**मोयरी**—स्त्री० (सो०) पायंचा, मोहरी।
**मोरचा**—पु० (चं०) ऊपर के बरामदे का आगे का ऊंचा भाग।
**मोरच्छु**—पु० (मं०) मोरपंखों का गुच्छा।
**मोरछड़**—स्त्री० मोर के पंखों की छड़ी।
**मोरपक्खी**—स्त्री० (बि०) मोर के पंखों का बना पंखा।
**मोरमुठा**—पु० (कु०) मोर पंखों से बना चंवर।
**मोरल**—पु० (चं०) Ulmus wallichiana.
**मोरला**—पु० (बि०) धान में उगने वाला घास जो छोटे पौधों को दबा देता है।
**मोरला**—पु० (बि०) Cyperus rotundus. प्लव, एक वृक्ष विशेष।
**मोरी**—स्त्री० आला।
**मोरी**—स्त्री० (सो०) खिड़की।
**मोरी**—स्त्री० नाली, छिद्र।
**मोरी**—स्त्री० (कु०) धान के बीच उगने वाला एक घास जिसकी धान के पौधे से पहचान करना कठिन होता है।
**मोरीज**—वि० (सि०) रोगी।
**मोरूजरू**—अ० (सि०) बड़ी मुश्किल से।
**मोल**—पु० (चं०) घराट में डाले गए दाने।
**मोल**—पु० मूल्य।
**मोळ**—पु० (सि०) धान कूटने का मूसल।
**मोलणा**—स० क्रि० (मं०) मलना, लगाना।
**मोलम**—पु० (सि०) मरहम।
**मोलमोल**—स्त्री० (सि०) मलमल।
**मोळा**—पु० (बि०) मूसल।
**मोळा**—वि० (कां०, कु०) जिसके माता-पिता न हों, अनाथ।
**मोली**—स्त्री० (सि०) मूली।
**मोली**—वि० (बि०) पहला।
**मोलो**—वि० (सि०) उपजाऊ।
**मोल्हो**—वि० (मं०) मोटा, स्थूल शरीर वाला।
**मोवला**—पु० (सि०) वृद्धाओं द्वारा पहनी जाने वाली कमीज।
**मोशालची**—पु० (सि०) दे० मशालची।
**मोशिर**—पु० (सि०) मार्ग।
**मोस**—स्त्री० मोच।
**मोसणा**—स० क्रि० (सो०) मरोड़ना।
**मोसणा**—स० क्रि० (कु०) मोच आ जाना।
**मोसिणा**—अ० क्रि० (कु०) मोच आ जाना।
**मोह**—पु० (मं०) पशुओं की मिर्गी।
**मोहणा**—अ० क्रि० (कु०) नींद में दबाव पड़ना।
**मोहणा**—स० क्रि० (कु०) रोटी आदि में घी चुपड़ना।
**मोहणा**—अ० क्रि० मोहन मंत्र या स्वप्न में भयंकर दृश्य नजर आना।
**मोहणा**—स० क्रि० मोहित करना।

**मोहमा**—स्त्री० (कु०) महिमा।
**मोहरा**—स्त्री० (मं०) जंगली विष।
**मोहरा**—पु० (कु०) देवता का सोने चांदी का बना चेहरा।
**मोहरु**—पु० (कु०) एक वृक्ष विशेष जिसकी पत्तियां भेड, बकरियों को दी जाती है।
**मोहल**—पु० (चं०) एक वृक्ष विशेष।
**मोहाड़**—पु० (सि०) चूल्हे का मुंह।
**मोहाड़ा**—पु० (मं०) पशुशाला।
**मोहाणा**—पु० (ऊ०, कां०) घर का अग्रभाग।
**मोहिष**—स्त्री० (सि०) भैंस।
**मोहड**—पु० (कां०) स्तंभ, सहारे के लिए लगाई लकड़ी।
**मोहत**—स्त्री० समय की छूट।
**मोहुर**—स्त्री० मुद्रा।
**मोहरा**—वि० पकाया हुआ अम्लरहित खाद्य।
**मौंए**—सर्व० (शि०) मैंने।
**मौंएसे**—स्त्री० (मं०) मौसी।
**मौंगण**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) खटमल।
**मौंगणी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) खाट बुनते समय चौड़ाई के बल लगाया अंतिम फंदा।
**मौंगळी**—स्त्री० (कां०) चमड़े को प्रेस करने का औज़ार।
**मौंगा**—वि० (सो०) महंगा।
**मौंतर**—पु० (कु०, शि०) मंत्र।
**मौंपी**—स्त्री० (कु०) बच्चे को दिया चुंबन।
**मौंश**—पु० (कु०) मनुष्य।
**मौ**—पु० (शि०) शहद, मधु।
**मौइंगो**—वि० (शि०) महंगा, मूल्यवान।
**मौउथड़**—पु० (कु०) श्मशान।
**मौऊनी**—वि० (कु०) बात न करने वाला, जानबूझ कर चुप्पी साधने वाला।
**मौओणो**—स० क्रि० (शि०) मापना।
**मौक**—स्त्री० (बि०) शादी के समय दूलहा-दुलहन को दिया जाने वाला घी-मीठा।
**मौकड़ी**—स्त्री० (सि०) कुकुरमुत्ता।
**मौका**—वि० (कु०) स्पष्ट न बोलने वाला, तोतला।
**मौका**—पु० अवसर, स्थान।
**मौखर**—पु० (कु०) शहद।
**मौगरा/रु**—पु० (कु०) झरना, पानी के लगातार बहने की क्रिया, पानी की धार।
**मौगरा/रो**—पु० (शि०) बकरे आदि की रीढ़ की हड्डी।
**मौची**—अ० (कु०) अभी।
**मौछी**—स्त्री० (कु०) मक्खी।
**मौछी**—स्त्री० (कु०) मछली।
**मौछू**—पु० (कु०) मस्सा, हाथ, पैर में दाने के रूप में उभरा मांसपिंड।
**मौछू**—पु० (कु०) मच्छर।
**मौज**—स्त्री० आनंद।
**मौज़ा**—पु० (कु०) आनंद।
**मौठी**—स्त्री० (बि०) डोरी।
**मौड़**—पु० (कु०) खाद।
**मौड़वी**—स्त्री० (शि०) श्मशान।
**मौड़ा**—पु० (कु०) शव।
**मौड़ी**—स्त्री० (मं०) दे० मौळी।
**मौण**—पु० (बि०, सि०) मछलियां मारने के लिए पानी में डाली नशीली वस्तु।
**मौणना**—अ० क्रि० (सि०) फैलना।
**मौणा**—पु० (कु०) सजी हुई अरथी।
**मौत**—पु० (कु०) मत।
**मौत**—स्त्री० (कु०, शि०) मृत्यु।
**मौथा**—पु० (कु०) माथा, मस्तक।
**मौथुआदा**—वि० (कु०) जिसने कष्ट सहन किया हो।
**मौनणी**—स्त्री० (शि०) धोती।
**मौबुड़े**—पु० (बि०) मां-बाप।
**मौर**—अ० (शि०) "चुप कर" अभिव्यक्त करने हेतु प्रयुक्त अव्यय शब्द।
**मौर**—पु० कंधों के पुट्ठे।
**मौरणो**—अ० क्रि० (सि०) मरना।
**मौरना**—अ० क्रि० (कु०) मरना।
**मौळ**—पु० (कु०) गोबर, गंदगी।
**मौल-उठणा**—अ० क्रि० कोंपल फूटना, नए पत्तों का अंकुरित होना।
**मौळणा**—स० क्रि० (कु०) मलना, मालिश करना।
**मौळश**—स्त्री० (कु०) मालिश।
**मौला**—पु० (चं०) मामा।
**मौळिणा**—अ० क्रि० (कु०) मालिश की जानी।
**मौळी**—स्त्री० सूत की लाल डोरी जिसका प्रयोग पूजनादि शुभ कार्यों में होता है।
**मौलुणा**—अ० क्रि० (कु०) बच्चों का धूल में घिसटना।
**मौश**—पु० (शि०) कोयला।
**मौसक**—स्त्री० (कु०) मशक।
**मौसर**—पु० (कु०) दाल मसूर।
**मौहकड़ी**—स्त्री० (चं०, शि०) लंबे आकार का खट्टा फल।
**मौहर**—पु० (ऊ०) Dendroculamus hamiltonic.
**मौहका**—पु० (कां०) शरीर के किसी भाग पर उभरा हुआ मांस का पिंड, मस्सा।
**मौहरु**—पु० हरे चारे वाला वृक्ष।
**म्याऊं**—अ० बिल्ली के बोलने का शब्द।
**म्याड्डू**—पु० (चं०) मिट्टी के कोठे के नुक्कड़ पर लगाया जाने वाला घास विशेष।
**म्यारु**—पु० (ऊ०, कां०) मृतक को जलाने के लिए बांस की लकड़ी से बंधा अग्नियुक्त मिट्टी का पात्र।
**म्याळ**—पु० (सि०) उपला।
**म्याळ**—पु० (सो०) भूत-प्रेत।
**म्योआ**—पु० मेवा।
**म्हशड्डू**—पु० (मं०) मच्छर।
**म्हाक्खी**—स्त्री० (मं०) मक्खी।
**म्हातड़**—वि० मेरे जैसा।

**म्हायड़ा**—वि० (सि०) छोटा।
**म्हारा**—सर्व० हमारा।
**म्हीट्ठी**—स्त्री० (कु०) माश की पीठी।
**म्हेंठि**—वि० (कु०) छोटी।
**म्हेडू**—पु० (सि०) Buchanania Latifolia.
**म्हेणा**—वि० (सि०) गीला।
**म्होत**—पु० (चं०) महावत।

## य

**य**—देवनागरी वर्णमाला का छब्बीसवां व्यंजन और पहला अंतस्थ वर्ण। उच्चारण स्थान तालव्य।
**यकीन**—पु० विश्वास।
**यरांग**—पु० (मं०) मोरपंख का बना गुच्छा।
**या**—स्त्री० (कु०) माता।
**या**—सर्व० (शि०) यह।
**याछाड़ी**—अ० (शि०) इस बार।
**याजू**—स्त्री० (कु०) माता।
**याणा**—पु० बच्चा।
**याणा**—वि० (कु०) जवान, जो वृद्ध न हो।
**याद**—स्त्री० याद।
**यादाश्त**—स्त्री० स्मरणशक्ति, स्मृति।
**याबारी**—अ० (शि०) इस बार।
**यार**—पु० मित्र, प्रियतमा।
**यारी**—स्त्री० मित्रता।
**याहड़ो**—पु० (मं०) खरगोश।

## र

**र**—देवनागरी वर्णमाला का सत्ताईसवां व्यंजन और दूसरा अंतस्थ वर्ण। उच्चारण-स्थान मूर्द्धा।
**रंक**—पु० रंग।
**रंगजमाड़**—पु० (मं०) मकड़ी का जाल।
**रंगड़**—पु० (चं०, बि०) कठोर आदमी।
**रंगढंग**—पु० चाल चलन, चाल-ढाल, तौर-तरीका।
**रंगणा**—स० क्रि० रंग चढ़ाना, रंगना।
**रंगाट**—स्त्री० (सि०) पशु का ज़ोर-ज़ोर से शब्द करने का भाव।
**रंगाड़**—पु० वस्तुओं का बिखराव।
**रंगाड़ना**—स० क्रि० कटी फसल को सुखाने के लिए फैलाना, बिखेरना।
**रंगाहड्डू**—पु० (मं०) मकड़ी।
**रंगीण**—वि० रंगीन।
**रंगे**—अ० (शि०) बेशक।
**रंगोणा**—अ० क्रि० रंग जाना।
**रंघड़**—पु० एक जाति विशेष।
**रंघडोल**—पु० (सो०) ततैया।
**रंघरुंघ**—पु० (चं०) गुप्त रूप से पता चलाने की क्रिया।
**रंच**—पु० एक औज़ार।
**रंच**—अ० (कु०) ज़रा-सा, थोड़ा-सा, मामूली।
**रंचक**—अ० (बि०) ज़रा सा।
**रंज**—पु० (बि०, सि०) नाराज़ होने का भाव, दुःख।
**रंजड़**—पु० (कां०, बि०) झगड़ा।
**रंटू**—वि० (शि०) हट्टा-कट्टा, हृष्ट-पुष्ट।
**रंड**—स्त्री० विधवा।
**रंड**—स्त्री० (सि०) लड़की को प्यार की गाली।
**रंडयापा**—पु० प्रतिदिन की कलह।
**रंडहयाळी**—स्त्री० आंख के ऊपर होने वाला फोड़ा।
**रंडाली**—स्त्री० (सि०) गाली-गलौज।
**रंडुआ**—पु० विधुर।
**रंडेपा**—पु० वैधव्य।
**रंडेल**—वि० (मं०) जिसके बाप का पता न हो।
**रंडोखल**—स्त्री० (बि०) विधवा।
**रंडोणा**—अ० क्रि० विधवा होना।
**रंदणा**—स० क्रि० रंदना, रंदे से लकड़ी की सतह चिकनाना।
**रंदा**—पु० लकड़ी को चिकनी और सम बनाने का औज़ार।
**रंदोणा**—अ० क्रि० रंदा जाना।
**रंप**—स्त्री० (बि०) चोट।
**रंबी**—स्त्री० चर्मकार का एक उपकरण।
**रंमणा**—अ० क्रि० गाय या बैल का रंभाना।
**रंमोण**—स्त्री० पशु बोली।
**रःणा**—अ० क्रि० (शि०, सो०) दे० रौःणा।
**रआ**—पु० (मं०) छोटी क्यारी।
**रई**—स्त्री० देवदार प्रजाति का एक पेड़ जिसकी लकड़ी कम सख्त, हलकी और पीले रंग की होती है। Picea smithiana.
**रकड़ा**—पु० (सि०) लड़ाई-झगड़ा।
**रकड़ा**—पु० (कु०) बड़बड़ाना, बड़बड़ाते रहने का भाव।
**रकफायत**—स्त्री० (शि०) किफ़ायत, मितव्ययिता।
**रकम**—स्त्री० राशि।
**रकमाणा**—पु० (सो०) ठीक अनुपात में होने का भाव।
**रकाई काटणा**—अ० क्रि० (सि०) अलग होना, दूर से निकलना।
**रकान**—पु० (सि०) छिद्र, बड़ा छेद।
**रकाबी**—स्त्री० (मं०, सि०) कपड़े का जूता।
**रकाबे**—स्त्री० (मं०, सि०) कमीज की लंबाई।
**रकै**—स्त्री० (सि०) राख।
**रक्कड़**—वि० पथरीली (भूमि)।
**रक्कावाण**—वि० (मं०) चालाक।
**रक्छणी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) यक्षिणी।
**रक्त**—पु० एक बेल विशेष जिस पर लाल व काले मुंह वाले छोटे-छोटे दाने लगे होते हैं जिनका भार एक रत्ती होता है।
**रक्ता**—वि० (कु०) लाल।

**रक्वाल**—स्त्री० (मं०) रखैल।
**रक्सा**—स्त्री० रक्षा। रिक्शा।
**रख**—स्त्री० चरागाह।
**रखड़ी**—स्त्री० राखी, राखी का त्योहार।
**रखडुन्या**—पु० रक्षा बंधन।
**रखणो**—स० क्रि० (शि०) संभाल कर रखना।
**रखाड़**—पु० एक पौधा विशेष जिसके पत्ते सुगंधित होते हैं और पूजा के लिए धूप के रूप में प्रयुक्त होते हैं।
**रखाणा**—स० क्रि० रखवाना।
**रखाल**—पु० (कु०, चं०) एक वृक्ष विशेष, थुणेकर।
**रखाळ**—स्त्री० (कु०) संभाल।
**रखाली**—स्त्री० (सि०) रखवाली।
**रखैल**—स्त्री० रखेली, उप-पत्नी।
**रखोणा**—अ० क्रि० (बि०) रखा जाना।
**रखोत्री**—वि० (चं०) रखेली।
**रख्वालना**—स० क्रि० (बि०) संभाल कर रखना।
**रग**—स्त्री० नस।
**रगड़णा**—स० क्रि० घसीटना, रगड़ना।
**रगड़ताड़**—स्त्री० घसीटने की क्रिया।
**रगड़ना**—स० क्रि० हानि पहुंचाना, रगड़ना।
**रगड़ा**—पु० बार-बार कहने का भाव। हानि, नुकसान।
**रगड़ा**—पु० (चं०, कां०, ऊ०) धमकी।
**रगड़ीधान**—पु० धान की एक किस्म।
**रगड़ोणा**—अ० क्रि० जुटे रहना; हानि उठाना।
**रगत**—पु० (चं०) खून, रक्त।
**रगताह**—पु० (चं०) रक्त जैसा मूत्र करने का पशुओं का एक रोग।
**रगमारणा**—स० क्रि० (कु०) दुविधा में डालना, कष्ट में डालना।
**रगमारना**—स० क्रि० थका देना।
**रगशेटा**—पु० (मं०) राक्षसी वृत्ति वाला देवता।
**रगाड़**—पु० (चं०, बि०) बिखराव, फैलाव।
**रगाला**—पु० (शि०) चक्कर।
**रगोड़**—पु० (मं०) वन्य मधुमक्खियों का छत्ता।
**रघजाऊळ**—पु० (ह०) वह कपड़ा जिसे वर-वधू के कंधों पर रख कर विवाह की सभी रस्में पूरी की जाती हैं।
**रघोड़ना**—स० क्रि० रगड़ना।
**रचणा**—अ० क्रि० तरल पदार्थ का जज़्ब होना।
**रचना**—स्त्री० (बि०) किसी धार्मिक समारोह का सफलता-पूर्वक यापन होने का भाव।
**रचाणा**—स० क्रि० तरल पदार्थ को जज़्ब करवाना।
**रचावणा**—स० क्रि० (सो०) गुम कर देना।
**रचावणो**—स० क्रि० (शि०) रचाना।
**रचीणी**—स्त्री० (शि०) कमीला, एक फलदार छोटा पेड़
**रचेवणा**—स० क्रि० (सो०) खो देना। हज़म करना।
**रच्चड़**—वि० (कां०) घिसा हुआ।
**रच्छा**—स्त्री० रक्षा।
**रछ**—स्त्री० (कु०, चं०) खड्डी, करघा।
**रछया**—पु० (सि०) अक्षत जो देवता द्वारा रक्षा के भाव से दिया जाता है।
**रछीया**—पु० (कु०) आराम।
**रज़**—वि० (कु०) पर्याप्त, काफ़ी।
**रजगवार**—पु० (सि०, सो०) रोज़गार।
**रजगारी**—स्त्री० (सो०) रेज़गारी, छुट्टा।
**रजणा**—अ० क्रि० तृप्त होना, पेट भर कर खाना।
**रजपूत**—पु० राजपूत।
**रजल्ट**—पु० परिणाम।
**रजहू**—वि० (चं०) मुख़ातिब, बात करने वाला।
**रजाए**—स्त्री० (सि०) रजाई।
**रजाणा**—स० क्रि० खुश करना; पेट भर कर खिलाना।
**रज़ामंदी**—स्त्री० स्वीकृति।
**रजावणा**—स० क्रि० (सो०) तृप्त करना।
**रजीना**—पु० (बि०) रोज़गार।
**रजेऔणा**—स० क्रि० (कु०) चिढ़ाना।
**रज़ेरना**—स० क्रि० (कु०) तृप्त करना, पेट भर कर खिलाना।
**रज़ेरिना**—स० क्रि० (कु०) संतुष्ट किया जाना, तृप्त किया जाना।
**रजोड़ना**—स० क्रि० (शि०) घसीटना।
**रज्ज**—वि० पर्याप्त, काफी।
**रज्जा**—पु० (चं०) छूत की बिमारी का संक्रमण।
**रझेऊणा**—स० क्रि० (मं०) पकाना।
**रट**—स्त्री० मिट्टी का बड़ा ढेला।
**रट**—स्त्री० हठ, किसी शब्द का बार-बार उच्चारण।
**रटणा**—स० क्रि० कंठस्थ करना, बार-बार बोलना।
**रटा**—पु० झगड़ा।
**रट्टू**—वि० रटन लगाने वाला, रटने वाला।
**रठ**—स्त्री० (चं०) सफेद मिट्टी।
**रड**—स्त्री० (कु०) एक ही बार में काटने की क्रिया।
**रड़क**—स्त्री० आंख में किसी चीज़ के चुभने की क्रिया।
**रड़क**—स्त्री० बदले की भावना।
**रड़क**—स्त्री० (कु०) अनबन।
**रड़कणा**—अ० क्रि० अखरना, खटकना।
**रड़कदा**—वि० (कु०) सख्त।
**रड़का**—पु० पेड़ या झाड़ी की बारीक शाखाओं का बनाया गया झाड़ू।
**रड़काइणा**—स० क्रि० (कु०) एक ही बार में काटा जाना, एक ही प्रहार से काटा जाना।
**रड़काट ठ**—वि० व्यर्थ घूमने-फिरने वाला।
**रड़काटी**—स्त्री० आवारागर्दी।
**रड़काणा**—स० क्रि० (कां०, बि०) धक्का देकर नीचे गिराना; दूसरों की नज़रों में बुरा बनाना।
**रड़काणा**—स० क्रि० (कु०) काटना।
**रड़णो**—अ० क्रि० (शि०) फिसलना।
**रड़त्त**—स्त्री० विलाप।
**रड़ना**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) गुस्से होना।
**रड़ना**—अ० क्रि० (चं०) गिरना, फल का गिरना।

**रड़माड़**—पु० (मं०) वन बिलाव।
**रड़रड़लाणा**—अ० क्रि० शोर करना।
**रड़हौणा**—स० क्रि० (सि०) पानी में बहाना।
**रड़ाट**—स्त्री० रोते रहने का भाव।
**रड़ाणा**—स० क्रि० (कु०) उड़ाना, पक्षियों का बच्चों को घोंसले से बाहर निकालना।
**रड़ाणा**—अ० क्रि० चीखना, रोना, विलाप करना।
**रड़ाबरौड़ी**—स्त्री० (कु०) अस्पष्ट बातें।
**रड़ीखरबूज**—पु० (सि०) पपीता।
**रड्ड**—पु० (बि०) धनी व्यक्ति।
**रढ़णा**—अ० क्रि० क्रोध करना। पकना।
**रढ़ना**—स० क्रि० (मं०) टहनी काटना।
**रढ़ाणी**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) पानी के साथ बहता हुआ आया कूड़ा-कचरा।
**रढ़ू**—वि० (चं०) चिढ़ने वाला।
**रढ़ैन**—स्त्री० (बि०) जलन, ईर्ष्या।
**रणकम्मणा**—अ० क्रि० (चं०) युद्ध के लिए जोश में आना।
**रणझुनणो**—पु० लड़का पैदा होने पर गाये जाने वाले गीत।
**रणमारू**—पु० (चं०) रणभेरी।
**रणवण**—स्त्री० (बि०) बहुत सी झाड़ियां।
**रणवण**—स्त्री० घंटियों की आवाज़। चहल-पहल।
**रणहाग**—पु० (चं०) एक जंगली साग।
**रणु**—स्त्री० (चं०) धार।
**रणेओ**—वि० (शि०) रोने वाला।
**रतक**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) लाल रंग का एक फल जिसका वज़न एक रत्ती होता है।
**रतजगा**—पु० रातभर नाच-गान करने की क्रिया, जागरण, रातभर भजन-कीर्तन करने की क्रिया।
**रतजागा**—पु० (शि०) दे० रतजगा।
**रतला**—वि० लाल।
**रता**—पु० (चं०) गोजी, एक घास।
**रतिक**—अ० ज़रा सा।
**रतिल्ली**—वि० रेतीली।
**रतुआ**—पु० (सो०) धान की एक किस्म।
**रत्तक**—पु० (ऊ०) गुन्जा, घूंघची।
**रत्तनाल**—पु० (सि०) मृणाल।
**रत्ता**—पु० (चं०) दे० रता।
**रत्ता**—वि० लाल, रक्तिम।
**रत्ताडोरा**—पु० (ह०) लाल डोरी।
**रत्तो**—वि० (चं०) कम गहरा। लाल रंग का।
**रत्थ**—पु० रथ।
**रत्नजोत**—स्त्री० एक औषधोपयोगी पौधा।
**रथ**—पु० देवता की सवारी।
**रथैही**—पु० (मं०) देवता का रथ उठाने वाला।
**रदणा**—स० क्रि० (चं०) रौंदना।
**रदद**—वि० अस्वीकृत।
**रद्दण**—पु० (मं०) तालाब।
**रद्दा**—पु० निर्माण या चिनाई का एक भाग।
**रद्दी**—वि० निरर्थक, व्यर्थ।
**रद्दी**—स्त्री० बेकार कागज़।
**रद्दोबदल**—पु० बदलने का भाव, परिवर्तन।
**रन**—पु० (सो०) उजाड़ खेत।
**रन्न**—स्त्री० (कां०) पत्नी (गाली रूप में प्रयुक्त शब्द)।
**रपट**—स्त्री० रिपोर्ट, पुलिस चौकी में दर्ज प्रथम सूचना।
**रपटेन**—स्त्री० (सि०) चपत।
**रपणा**—अ० क्रि० (चं०, सि०) तरल पदार्थ का जज़्ब होना।
**रपैया**—पु० रुपया।
**रपोइया**—पु० (सि०) दे० रपैया।
**रपोटू**—वि० (चं०) चुगलखोर।
**रपोरा**—वि० (चं०) व्यस्त।
**रफड़ा**—पु० झगड़ा, झमेला।
**रफळ**—पु० धागे की एक किस्म जो शाल बनाने के लिए प्रयुक्त होती है।
**रफ्फड़**—पु० झंझट, व्यर्थ की बात।
**रफ्फा**—पु० (कां०, बि०) भारी चीज़।
**रफ्फू**—पु० जले, फटे कपड़े के सुराख में धागे भर कर बराबर करने का भाव।
**रबकणा**—अ० क्रि० भटकना।
**रबाड़ना**—स० क्रि० (मं०) बच्चे को नहलाना।
**रबारू**—पु० (चं०, बि०) विवाह के रिश्ते की बात चलाने वाला।
**रबालणा**—स० क्रि० (सि०) बहलाना, दुलारना।
**रबाळणा**—स० क्रि० (सो०) दाल आदि को साफ करना।
**रबोणा**—स० क्रि० चुभाना।
**रब्बण**—पु० (ह०) दलदल।
**रमच**—अ० (सि०) बूंद भर।
**रमज**—पु० (ऊ०, कां०) इशारा।
**रमझम**—स्त्री० (कां०, सि०) रिमझिम; चहल-पहल।
**रमड़ा**—वि० (मं०) स्वस्थ (आदमी)।
**रमण**—पु० (चं०) भेद।
**रमणा**—अ० क्रि० रमना, अनुरक्त होना।
**रमाइण**—स्त्री० (कु०) रामायण।
**रमाओ**—पु० (शि०) सुंदर गीत।
**रमाल**—पु० रुमाल।
**रमाला**—पु० (सि०) बहलावा।
**रमावणो**—स० क्रि० (शि०) रमाना।
**रमैण**—स्त्री० दे० रमाइण।
**रमौडे मारना**—अ० क्रि० (कां०) बेकार घूमना।
**रम्होळना**—स० क्रि० (चं०) किसी चीज़ को हाथ से मिलाना, मिश्रित करना।
**रयाड़ी**—स्त्री० (मं०) धान की एक किस्म।
**रयाढ़ना**—स० क्रि० (मं०) खदेड़ना।
**रयात**—स्त्री० रियायत।
**रयाता**—पु० (सि०) रायता।
**रयाला**—पु० (मं०) तांबे का बरतन।
**रयाहड़ना**—स० क्रि० (मं०) भगाना।

**रयूंगल**—पु० (बि०, सो०) ततैया।
**रयूल**—पु० (सि०) Combretum tacandrum.
**रळना**—अ० क्रि० मिलना, हिल-मिल जाना, समझौता करना।
**रळाई**—स्त्री० (बि०) मिश्रण करने की क्रिया।
**रलाउणा**—स० क्रि० (शि०) मिलाना। रुलाना।
**रळी**—स्त्री० चैत्रमास में लड़कियों द्वारा पूजा जाने वाला पार्वती का एक रूप, एक बाल-नाट्य।
**रळीमिली**—वि० मिली-जुली, मिश्रित।
**रळोणा**—अ० क्रि० लापरवाही करना।
**रवाज़**—पु० रिवाज़।
**रवाली**—स्त्री० (सो०) धान की पनीरी।
**रवेंदचीनी**—स्त्री० (कु०, मं०) ओरेवत, आरग्वध।
**रशाक**—पु० शौक।
**रशाटा**—पु० (शि०) बड़ी रस्सी।
**रशाड़ना**—अ० क्रि० (शि०) फिसलना।
**रशेड़ना**—स० क्रि० (मं०) अनाज को तोलना।
**रश्याही**—स्त्री० (मं०) देवता का रथ उठाने वाला।
**रश्शी**—स्त्री० रस्सी।
**रस**—पु० निचोड़।
**रसड़ू**—पु० पशुओं के छोटे बच्चों को बांधने के लिए बनाई छोटी रस्सी।
**रसणा**—अ० क्रि० (सि०) रिसना।
**रसभरियां**—स्त्री० (शि०, सो०) एक फल।
**रसयाणा**—स० क्रि० (कां०) झूठी प्रशंसा करना।
**रसयाळू**—पु० रसोईघर।
**रसली**—वि० (चं०) रसभरी, रसयुक्त।
**रसवाणी**—स्त्री० (सि०) चमड़ा रंगने के कुंड का पानी।
**रसवानी**—स्त्री० (सि०) रसोई।
**रसा**—पु० सब्जी आदि की तरी।
**रसाइन**—वि० (चं०) बहुमूल्य।
**रसाउणा**—अ० क्रि० (सो०) आत्म प्रशंसा करना।
**रसाओ**—पु० (सि०) रसाव।
**रसुई**—स्त्री० (सि०) रसोई।
**रसूनण**—पु० (बि०) Moringa olcifera.
**रसेवणा**—स० क्रि० (सो०) किसी की झूठी प्रशंसा करना।
**रसेहड़**—पु० (मं०) अनाज के ढेर से अन्न उठाने के पश्चात भूमि पर पड़ा अन्न।
**रसेहड़ना**—स० क्रि० (सो०) अनाज की ढेरी उठाने के बाद शेष दानों को इकट्ठा करना।
**रसो**—स्त्री० (कु०, कां०, ह०) रसोई।
**रसोए**—स्त्री० (मं०, सो०) रसोईघर।
**रसोड़ी**—स्त्री० एक बीमारी, रसौली।
**रसोली**—स्त्री० (कु०, बि०) शरीर का ऐसा फोड़ा जो पकने पर कष्ट दे।
**रसोण**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) रसोई बनाने वाली स्त्री।
**रसौरी**—स्त्री० (ह०) रसभरी।
**रस्त**—स्त्री० (सो०) रसद, राशन, खाने का सामान।
**रस्ता**—पु० रास्ता।
**रस्मरवाज**—स्त्री० रस्म-रिवाज।
**रस्मी**—वि० मौसमी, रस्म संबंधी, रिवाज़ संबंधी।
**रस्य**—पु० (सि०) लेकड़ी का फर्श।
**रस्स**—पु० (मं०) रस।
**रस्सण**—पु० (मं०) लहसुन।
**रहड़णा**—अ० क्रि० (सि०) चूल्हे में रोटी गरम होना।
**रहण**—पु० (सि०) लहसुन।
**रहणा**—अ० क्रि० (सि०) रहना, औरत का दूसरे के वश में रहना।
**रहयाली**—स्त्री० (सि०) बरसात।
**रहयाली**—स्त्री० (शि०) हरियाली। श्रावण में होने वाला मेला।
**रहाणा**—स० क्रि० हराना।
**रहाणा**—स० क्रि० (कु०) गुम करना।
**रहाम**—पु० (सि०) लूटपाट का माल, हराम का माल।
**रहीशणा**—अ० क्रि० (कु०) गुम होना।
**रहूड़**—पु० (मं०) बकरे के रक्त को देवता की मूर्ति पर चढ़ाने की क्रिया।
**रहैली**—स्त्री० (सि०) हल चलाने के लिए बैल जोतने की क्रिया।
**रहौट**—पु० (मं०) घर की सीढ़ी का ऊपर वाला सिरा।
**रहौन**—पु० (ह०) घना वन।
**रांकड़ी**—स्त्री० (बि०) पैसा।
**रांग**—पु० (मं०) राजमाष, बड़ी उरद।
**रांग**—पु० (शि०) रंग।
**रांग**—पु० (कां०) ढलानदार भूमि का ऊपर वाला भाग।
**रांगण**—पु० (मं०) छोटे राजमाष।
**रांगा**—पु० (सि०) भैंसा।
**रांगुण**—पु० (सो०) राजमाष, बड़ी उरद।
**रांघ**—पु० (कु०) मांस की तरी।
**रांजा**—पु० (ऊ०, कां०) भैंस का बच्चा।
**रांड**—स्त्री० (बि०) विधवा।
**रांडा**—पु० (सि०) विधुर।
**रांडो**—पु० (शि०) विधुर।
**रांदा**—पु० (सि०) दे० रांडा।
**रांघ**—पु० (कु०) पहले पति को पत्नी पर हक छोड़ने के लिए दिया जाने वाला हरजाना, किसी की पत्नी को भगा कर ले जाने की स्थिति में पहले पति को दिया जाने वाला हरजाना।
**रांघ**—पु० (चं०) वन बकरा।
**रांब**—पु० (कु०) फावड़ा।
**रांबड़ा**—वि० (कु०) अच्छा, स्वस्थ।
**रांभणा**—अ० क्रि० (सि०) रंभाना।
**रांवा**—पु० (सि०) मिट्टी खोदने का लोहे का यंत्र।
**रा**—पु० (कु०) सरकार, राजदरबार।
**रा**—पु० (शि०) राजा।
**राअट**—पु० (शि०) जांघ।
**राइटा**—पु० (कु०) रायता।
**राई**—स्त्री० राई, एक छोटी सरसों।

**राई**—स्त्री० (कु०, मं०) ऐसा हल जो अधिक गहराई तक जाए, 'सेउई' का विपरीतार्थक शब्द।
**राए**—स्त्री० राय, मत।
**राओग**—पु० (मं०) पनीरी।
**राओट**—पु० (सि०) टांग।
**राओड़ा**—पु० (मं०) पनीरी लगाने का खेत।
**राओपोथी**—स्त्री० (मं०) सुगंध वाली झाड़ी जिसके फूलों को मसालों के रूप में सब्जी आदि में प्रयोग किया जाता है।
**राकड़**—पु० (मं०) पत्थरों वाला खेत।
**राकश**—पु० (शि०) राक्षस।
**राकस**—पु० राक्षस।
**राका**—वि० (चं०) कमाऊ।
**राक्सणी**—स्त्री० (बि०) राक्षसी।
**राख**—स्त्री० (बि०) चरागाह।
**राखड़ी**—स्त्री० (सि०) दूल्हे के पैर में घी लगाने की क्रिया।
**राखड़ी**—स्त्री० राखी।
**राखणो**—स० क्रि० (सि०) रखना।
**राखल**—स्त्री० (मं०) रखेली।
**राखस**—पु० (कु०) राक्षस।
**राखा**—पु० रक्षक।
**राखा**—पु० (कु०) राजाओं के समय वनों की देख-भाल के लिए नियुक्त कर्मचारी।
**राखी**—स्त्री० रखवाली।
**राखो**—पु० (सि०) रक्षक।
**राग**—पु० गाना, गीत।
**राग**—पु० (बि०) लंबी बात।
**रागड़**—पु० (सि०) राजपूत।
**रागडू/ड़ा**—पु० (कु०) मिट्टी का छोटा घड़ा जिसमें दूध, दही आदि रखते हैं।
**रागण**—स्त्री० गायिका।
**रागिश**—पु० (शि०) राक्षस।
**रागी**—पु० (कु०) गायक।
**रागी**—वि० (सि०) प्रवीण, कुशल।
**राघणा**—अ० क्रि० (मं०) भीगना।
**राच**—स्त्री० (कु०, शि०) रात।
**राचड़ना**—अ० क्रि० (शि०) फिसलना।
**राचणा**—अ० क्रि० (सो०) खो जाना, गुम हो जाना।
**राचिणो**—अ० क्रि० (शि०, कु०) रात होना।
**राच्छ**—पु० (मं०) खड्डी, करघा।
**राच्छडू**—पु० (मं०) विशेष प्रकार की खड्डी, छोटा करघा।
**राज**—पु० राज्य, शासन।
**राज़**—पु० रहस्य, भेद।
**राजण**—पु० (कां०) Ceasalpinia sepiara.
**राजणो**—अ० क्रि० (शि०) पैदा होना।
**राजमाह**—पु० राजमाष।
**राज़रस्ता**—पु० आम रास्ता।
**राजराही**—स्त्री० (सि०) सरकारी रास्ता।
**राजल**—पु० (चं०) Vibernum cotinifolium.
**राज़ा**—पु० (कु०) राजा।
**राजी**—वि० (सो०) ठीक-ठाक।
**राज़ी**—वि० (कु०) खुश।
**राजी-खुशी**—स्त्री० सकुशल।
**राज़ीनवां**—पु० समझौता, राजी-नामा।
**राजीनावां**—पु० कुशल-क्षेम।
**राजीबंद**—पु० (सि०) सहमत।
**राज़ी-बाज़ी**—स्त्री० कुशल-मंगल।
**राजेयाली**—वि० (मं०) राजसी।
**राजो**—वि० (शि०) लंबा।
**राटणा**—स० क्रि० (कु०) कसम लेना, किसी के गले पर हाथ रख कर कसम खाना।
**राटणे**—स्त्री० (सि०) पिटाई।
**राटलू**—पु० (सि०) छोटे-छोटे पत्थर।
**राटी**—स्त्री० (सि०) गर्दन।
**राटी**—स्त्री० (सि०) कीट।
**राट्टास**—पु० (सि०) घास को काट कर रखने की क्रिया।
**राड़**—स्त्री० (सि०) छेड़खानी।
**राड़**—स्त्री० (सि०) शिकायत, अपील।
**राड़**—स्त्री० (चं०) गिरने की क्रिया। वीर्य।
**राड़**—स्त्री० (ह०) कलह।
**राड़ख**—पु० (मं०) चौड़ी पत्तियों वाली झाड़ी विशेष जिससे पशुओं के शरीर में पड़े कीड़े मारे जाते हैं।
**राड़गी**—स्त्री० (मं०) देवता की पालकी के साथ लगे लकड़ी के डंडे।
**राड़णा**—स० क्रि० काढ़ा बनाना, भूनना।
**राड़ना**—स० क्रि० (कां०, ह०, ऊ०) झाड़ना।
**राड़ना**—स० क्रि० डंडे द्वारा पेड़ से फल गिराना।
**राड़नो**—स० क्रि० (शि०) भूनना।
**राड़याणा**—स० क्रि० (सि०) किसी कार्य में टांग अड़ाना।
**राड़ा**—पु० (ऊ०, कां०) एक कांटेदार वृक्ष विशेष जिसके फलों से कपड़े धोए जाते हैं।
**राड़ा**—पु० (मं०) वह हल जो अधिक गहराई पर जाए।
**राड़ा**—पु० (सि०) मैनफल, एक वृक्ष; उसके फल जो औषधि के काम आते हैं।
**राड़ी**—स्त्री० चिल्लाहट, चीख-पुकार।
**राड़ी**—स्त्री० (सि०) वेश्या।
**राड़ू**—वि० (कु०) एक ही रट लगाने वाला।
**राड़ो**—स्त्री० (शि०) दुर्भावनाएं।
**राढ़**—स्त्री० (कु०) अखरोट की गिरी।
**राढ़ना**—स० क्रि० (कु०, ऊ०) भूनना।
**राढ़ीणा**—स० क्रि० (चं०) पकाना।
**राण**—पु० (सि०) हिरन।
**राण**—स्त्री० (सो०) जांघ, टांग का घुटने से ऊपर का भाग।
**राणा**—पु० राजा से छोटी उपाधि, राना।
**राणी**—स्त्री० रानी।
**राणीचड़ी**—स्त्री० (सि०) एक लाल-पीले रंग का पक्षी।
**रात**—स्त्री० रात्रि।

**रातक**—पु० (कां०) दे० रत्तक।
**रातचिड़ु**—पु० (चं०) चमगादड़।
**रातराणी**—स्त्री० सफेद फूल वाला एक झाड़ीदार पौधा जिसके फूलों से रात के समय सुगंध आती है।
**रातिणा**—अ० क्रि० (कु०) रात हो जाना।
**रातूहणा**—वि० (चं०) रात का।
**रातेमाटे**—स्त्री० (शि०) लाल मिट्टी।
**रातो**—वि० (शि०) लाल।
**राद**—पु० (सि०) नमक का ढेला।
**रादणा**—स० क्रि० (सि०) साफ या समतल करना।
**रादा**—पु० इरादा।
**रादेऊ**—पु० (कु०) जनता का देवता, देवताओं के लिए प्रयुक्त शब्द कि वे किसी एक व्यक्ति या एक समुदाय के नहीं सभी के देवता हैं।
**राध**—स्त्री० (सि०) पीप।
**राधणा**—स्त्री० (सि०) आराधना।
**रान**—स्त्री० बकरे आदि के मांस के टुकड़े।
**रान**—स्त्री० जांघ।
**रानक**—पु० (मं०) मेढक।
**राब**—पु० (कु०, मं०) अरवी के पत्ते।
**राबड़**—पु० रबड़।
**राबड़ी**—स्त्री० रबड़ी।
**राबन**—पु० रावण।
**राम**—पु० आराम।
**रामज्वाणे**—स्त्री० धान की एक किस्म।
**रामज्वायण**—स्त्री० (मं०) दे० रामज्वाणे।
**रामतुलसी**—स्त्री० (मं०) चौड़े पत्तों तथा लाल फूल वाली तुलसी।
**रामटू**—पु० (सि०) खिलौना।
**रामटू**—पु० (सि०) खुदाई करने का यंत्र।
**रामनौमी**—स्त्री० रामनवमी।
**रामबाण**—पु० सरकंडा, अजीर्ण के लिए उपयोगी एक रसौषध।
**रामबाण**—पु० (बि०) Agave sislana.
**रामरमैया**—पु० नमस्ते।
**रामशौर**—पु० (कु०) तीन तारों का समूह जो एक पंक्ति में चलते हैं।
**राय**—पु० राजा।
**रायतो**—पु० (सि०) रायता।
**रायसी**—स्त्री० प्रजा।
**राल**—पु० (चं०) तेल या घी के जम जाने की क्रिया।
**राळ**—पु० (बि०, मं०, सि०) हिरन प्रजाति का वन्य प्राणी।
**राळ**—पु० (चं०) विशेष प्रकार का धूप।
**राळ**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) मिलावट।
**राळ**—पु० (चं०) बादल की बारीक परत।
**रालण**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) एक सदाबहार वृक्ष, इस पेड़ की निर्यास; गोंद।
**राळना**—स० क्रि० मिलाना।
**राळना**—स० क्रि० चक्के मिलाकर बिछाना।
**राळना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) बीनना, चुनना।
**राळा**—वि० (कु०) ढलानदार (हल)।
**राळा**—वि० मिली हुई (वस्तु)।
**राळा**—वि० (कु०) निम्नस्तर का।
**राळा**—पु० (कां०, सि०) किसी वस्तु को पलटने की क्रिया।
**राव**—पु० गुड़ का गंदा शीरा।
**रावट**—पु० (शि०) जिगर।
**रावट**—पु० (सि०) टांग का घुटने से ऊपर का भाग।
**रावड़**—पु० (मं०) निम्न स्तर का ब्राह्मण।
**राश**—स्त्री० (कु०) ढेर।
**राशडू**—पु० (कु०) छोटा ढेर।
**राशी**—स्त्री० (मं०) रस्सी।
**राशी**—स्त्री० (शि०) समूह, ढेरी।
**राशौ**—पु० (कु०) मोटा रस्सा।
**रास**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) किस्म।
**रास**—पु० (सि०) हरा घास काट कर रखने की क्रिया।
**रास**—पु० रास लीला, लोक नाट्य, भगत नामक लोक नाट्य में एक स्वांग, एक लीला नृत्य।
**रासता:रीए**—पु० (कां०, चं०, बि०) रास रचाने वाले, रासलीला नाट्य करने वाले।
**रासधारी**—पु० नर्तक। दे० रासता:रीए।
**रासन**—पु० राशन, खाने पीने का सामान।
**रासपड़ना**—अ० क्रि० सीधा आना।
**रासी**—स्त्री० (कु०) रस्सी।
**रासी**—स्त्री० (मं०) ढेर।
**रासू**—पु० (ह०) चरागाह का भागीदार ग्रामवासी।
**राह**—पु० (शि०) ढेर, झुंड।
**राहण**—पु० एक वृक्ष का नाम।
**राहण**—स्त्री० (कां०, ऊ०) बीजाई।
**राहण**—पु० लहसुन।
**राहण**—स्त्री० (ऊ०, कां०) स्त्री।
**राहणा**—क्रि० (कु०, बि०) घराट या चक्की के पाटों को खुरदरा बनाने के लिए छेद करना।
**राहणी**—स्त्री० (चं०) बीज बोने की क्रिया।
**राहणी**—स्त्री० (चं०) लहसुन।
**राहणोटू**—पु० (चं०) घराट 'राहणे' के लिए प्रयोग किया जाने वाला छोटा हथौड़ा।
**राहदारी**—स्त्री० (कु०, मं०) चुंगी।
**राहम**—वि० सुस्त, कामचोर।
**राहलाए**—स्त्री० (शि०) चरागाह।
**राहली**—स्त्री० (चं०) शीशम।
**राही**—स्त्री० (ह०, ऊ०) जुती हुई भूमि।
**राहू**—पु० राहु।
**राहड़ना**—स० क्रि० भूनना।
**रिंउस**—पु० (सो०) Cotoneaster bacillaris.
**रिंगड़**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) वीरान।
**रिंगड़**—पु० (मं०) भंवरा।

**रिंगणा**—अ० क्रि० (सि०, सो०) रेंगना।
**रिंगणा**—अ० क्रि० (सो०) शरीर का कमज़ोर हो जाना।
**रिंगणा**—पु० (कु०, सि०) सिर चकराने का कष्ट।
**रिंगणा**—अ० क्रि० रोना। गाय-बैलों का धीरे-धीरे रंभाना।
**रिंगनो**—पु० (शि०) चक्कर।
**रिंगळ**—पु० ततैया, मधुमक्खी प्रजाति का एक कीट।
**रिंगालो**—पु० (शि०) चक्कर।
**रिंगावणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) घुमाना।
**रिंगिणा**—अ० क्रि० (कु०) चकराना।
**रिंघळ**—पु० (कु०) दे० रिंगळ।
**रिंघिणा**—स्त्री० जांघ में होने वाला एक रोग।
**रिंज**—स्त्री० (चं०) विवाहोपरांत काम-काज करने वालों को दिए जाने वाले पैसे।
**रिंड**—पु० (चं०, शि०) लंपट।
**रिंडा**—पु० (सि०) टुकड़ा।
**रिंयूकणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) रंभाना।
**रिंयूस**—पु० दे० रिउंश।
**रिंवकणा**—अ० क्रि० (सो०) रंभाना।
**रिंवद**—पु० (सि०, सो०) पत्थर या लकड़ी का बना एक बड़ा जल-पात्र जिसमें कपड़े धोए जाते हैं।
**रि:ण**—पु० कर्ज़ा।
**रिआची**—स्त्री० (कु०) जंगली कुकुरमुत्ता जिसकी बढ़िया सब्जी बनती है।
**रिउंकणा**—अ० क्रि० (सो०) दे० रिंयूकणा।
**रिउंश**—पु० (कु०) एक झाड़ी विशेष जिसकी पशु हांकने के लिए छड़ी बनाई जाती है।
**रिउण**—पु० (कु०) कपड़े धोने के लिए बना पत्थर का बड़ा जल पात्र।
**रिऊंगल**—पु० (सो०) दे० रिंगळ।
**रिओ**—वि० (शि०) निकम्मा, खराब। स्त्री० किसी की याद आने का भाव।
**रिक्स**—स्त्री० शत्रुता।
**रिक्सणा**—अ० क्रि० (बि०) दुश्मन बनना।
**रिख**—पु० (चं०, शि०) रीछ।
**रिखटेल्नू**—पु० (शि०, सि०) रीछ का बच्चा।
**रिखळ**—पु० (कु०, मं०) एक ऐसा पेड़ जिसको छूने से शरीर में दाने-दाने हो जाते हैं और शरीर फूल जाता है।
**रिखिण**—स्त्री० (शि०) मादा रीछ।
**रिखी**—पु० ऋषि।
**रिगावणो**—स० क्रि० (शि०) घुमाना।
**रिघड़ना**—अ० क्रि० (बि०, ह०) लाचारी में दिन काटना।
**रिचक**—पु० (कु०) रिज़क।
**रिछ**—पु० रीछ।
**रिछणु**—पु० रीछ का बच्चा।
**रिजक**—पु० रोटी, दाना-पानी।
**रिजको**—पु० (सि०) अन्न-जल।
**रिजणा**—अ० क्रि० पकना, उबलना।
**रिजणा**—अ० क्रि० (सि०) प्रसन्नता में झूमना।
**रिझ**—पु० (कु०) मज़ा, आनंद।
**रिझणा**—अ० क्रि० पकना।
**रिझेणा**—स० क्रि० पकाना, उबालना।
**रिटकी**—वि० (सि०) साफ-सुथरी।
**रिटणा**—अ० क्रि० (सो०) बेकार घूमना; बर्बाद होना।
**रिटनो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) पशुओं का कमज़ोर होना।
**रिटळना**—अ० क्रि० (कु०) गिरना, लुढ़कना।
**रिटा**—वि० (शि०, सि०) काला।
**रिट्ठी**—स्त्री० (चं०, ह०) मरी हुई भेड़ या बकरी।
**रिठ**—पु० (मं०, सि०) भेड़।
**रिठ**—पु० (चं०) बाघ द्वारा मारा हुआ जानवर।
**रिठड़ा**—पु० रीठा।
**रिठेरा**—पु० (चं०) बाघ द्वारा मारे हुए जानवर का मांस।
**रिड़कणा**—अ० क्रि० गिरना। व्यर्थ घूमना।
**रिड़कना**—अ० क्रि० फिसलना।
**रिड़का**—पु० (सो०) वह स्थान जहां से कोई वस्तु पूरी तरह काट ली गई हो।
**रिड़काट**—वि० (चं०) आवारा।
**रिड़काणा**—स० क्रि० गिराना।
**रिड़किणा**—अ० क्रि० (कु०) व्यर्थ घूमा जाना।
**रिड़कू**—वि० (सो०) आवारा घूमने वाला।
**रिड़णा**—अ० क्रि० (सो०, सि०) गिरना।
**रिड़ा**—वि० (चं०) वह (वृक्ष) जिस पर फल, पत्ते आदि न हो, ठुंठ।
**रिड़ा**—वि० (चं०) सूखा।
**रिड़ी**—स्त्री० दे० रिढ़।
**रिड़ी**—स्त्री० (चं०) बिना पत्ते या फल की टहनियां।
**रिढ़**—पु० (कु०) बलि का बकरा।
**रिढ़**—स्त्री० छोटी पहाड़ी, पहाड़ी की चोटी।
**रिढ़**—स्त्री० (चं०) चट्टानदार ढलान जहां पर मामूली घास पैदा हो।
**रिढ़ना**—स० क्रि० (कु०) वृक्ष की सारी टहनियां काटना।
**रिढ़ा**—पु० पहाड़ का शिखर।
**रिढ़ी**—स्त्री० (चं०) पतली-पतली टहनियां।
**रिणाक**—स्त्री० (सि०) धीमी-धीमी वर्षा।
**रिणाणो**—स० क्रि० (शि०) पकाना।
**रिर्णी**—वि० कर्ज़दार।
**रित**—स्त्री० ऋतु।
**रिता**—वि० (सि०) खाली।
**रिध**—वि० (चं०) संपन्न।
**रिध्या**—वि० (कां०) पका हुआ (भोजन)।
**रिनी**—स्त्री० (कां०) Taxillus vestitus.
**रिनूस**—पु० (चं०) Cotoneaster bacilloris cotoneaster nummalaris. Cotoneaster orlgaris.
**रिन्नणा**—स० क्रि० पकाना।
**रिन्हणा**—स० क्रि० (कु०) पकाना, दाल सब्जी, चावल (परंतु रोटी नहीं) आदि पकाना।
**रिपणा**—अ० क्रि० (सि०) गुस्से होना।

**रिबन**—पु० (कु०, चं०, मं०) Dioscerea leltodia.
**रियाइत**—स्त्री० छूट, रियायत।
**रियाइती**—वि० सस्ती।
**रियाटा**—पु० (कु०) ऐसा छोटा खेत जिसमें धान की पनीरी लगाई जाती है, जहां से उसे उखाड़ कर बड़े खेतों में रोपा जाता है।
**रियाया**—स्त्री० जनता।
**रियालू**—पु० (कु०) 'रौईं' वृक्ष के पत्ते।
**रियास**—पु० (कु०) घना जंगल जिसमें झाड़ियां और वृक्षों के छोटे पौधे अधिक हों।
**रियूर**—पु० (ऊ०) अरिमेद, एक प्रकार का बदबूदार खैर।
**रियूल**—पु० (कां०, बि०) Combretum lacandrum.
**रियो**—पु० (सि०) बुरा, याद आने का भाव।
**रिल्हा**—पु० (कु०) चिथड़ा।
**रिल्ही**—वि० (कु०) चिथड़े पहनने वाला।
**रिल्हु**—पु० (मं०) लोक रुबाइयां।
**रिशणा**—अ० क्रि० (मं०) आग का बुझ जाना।
**रिशबत**—स्त्री० रिश्वत।
**रिसणा**—अ० क्रि० रिसना।
**रिस्ता**—पु० रिश्ता।
**रिस्पत**—स्त्री० रिश्वत।
**रिस्सा**—पु० (बि०) धान के बीच में उगने वाला ऐसा धान जो पकते समय झड़ जाता है।
**रिस्सियां-पिस्सियां**—स्त्री० (चं०) चिकनी-चुपड़ी बातें।
**रिहलरू**—पु० (कु०, कां०, मं०) Deutzia corymbosa.
**रिहाड़**—पु० (बि०) बच्चे के रोने की आदत।
**रिहाड़ा**—पु० (चं०) पीतल-कांसे की वस्तुओं को बनाने वाला।
**रिहाण**—पु० (शि०) एक जड़ी विशेष।
**रिहाणा**—स० क्रि० (कु०) दिखाना।
**रिहाणा**—स० क्रि० (चं०) ठहरा लेना।
**रिहाली**—स्त्री० (सि०) माला नृत्य।
**रिहाळी संकरांत**—स्त्री० श्रावण संक्राति।
**रिहो**—पु० (शि०) किसी की याद आने का भाव।
**रींग**—पु० (सि०) सिर चकराने का कष्ट।
**रींगज़**—स्त्री० (कु०) बहिन।
**रींगणा**—अ० क्रि० (सि०) मरते समय तड़पना। पक्षियों का उड़ना।
**रींगणा**—अ० क्रि० रंभाना।
**रींघ**—वि० (चं०) लंबी।
**रींड**—वि० (शि०) बदमाश।
**रींडणा**—अ० क्रि० (शि०) घूमना।
**रींडो**—वि० (शि०) बिना पूंछ वाला पशु।
**रीआ**—वि० (सि०) बदसूरत।
**रीखा**—वि० (शि०) झगड़ा करने वाला।
**रीछ**—पु० (कु०, सि०) रीछ।
**रीछकाआंछा**—पु० (चं०) Coriaria nepalansis.
**रीछफासरा**—पु० (मं०) रोम युक्त कीड़ा जिसके छूने से शरीर पर खुजली होती है।
**रीछटू**—पु० (सि०) भालू का बच्चा।
**रीजना**—अ० क्रि० (शि०) कमज़ोर होना।
**रीझमौज**—स्त्री० (चं०) बारात में गाने-बजाने वालों को दिए जाने वाले पैसे।
**रीटलना**—अ० क्रि० (कु०) गिरना।
**रीठ**—पु० (शि०) भेड़-बकरी।
**रीठण**—वि० (चं०) ढलानदार।
**रीठण**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) एक वृक्ष विशेष, करंज।
**रीठा**—पु० करंज का फल।
**रीड़**—पु० (कु०) किनारा।
**रीड़ा**—पु० (सि०) घने बाल।
**रीढ़ा**—पु० (कु०) पहाड़ की नंगी चोटी।
**रीढ़ा**—पु० जरी वाला दुपट्टा जिसे विवाह में दुलहन को पहनाया जाता है।
**रीढ़ी**—स्त्री० पहाड़ी का शीर्षस्थ भाग।
**रीणा**—पु० (ह०) ढलान।
**रीणी**—स्त्री० (कु०) खुबानी के पेड़ पर उगने वाली घास जिसमें छोटे-छोटे चिपचिपे दाने होते हैं।
**रीणी**—स्त्री० (चं०) घराट में इधर-उधर उड़कर फंसा आटा।
**रीत**—स्त्री० (सि०, सो०) द्वितीय विवाह की प्रथा, दूसरे विवाह के समय वर द्वारा वधू पक्ष को दी जाने वाली धन राशि।
**रीत**—स्त्री० रिवाज़, रीति।
**रीतरुआज़**—पु० (कु०, बि०, शि०) रीतिरिवाज़।
**रीतली**—स्त्री० (मं०) रिवाज।
**रीती**—वि० (मं०) खाली।
**रीतुणा**—अ० क्रि० (सो०) स्त्री द्वारा 'रीत' की प्रथा से विवाह किया जाना।
**रीतू**—स्त्री० ऋतु।
**रीतो**—वि० (शि०) खाली, फीका।
**रीपका-रीपका**—पु० (कु०) सांझ समय।
**रीया**—पु० (कु०) एक धातु जिसका रंग पीला होता है और आभूषणों में सोने के साथ पहचाना नहीं जाता।
**रीरना**—अ० क्रि० (कु०) गिरना, निकल जाना।
**रील**—स्त्री० (सो०) गोलाकार वस्तु जिसमें कोई वस्तु लपेटी गई हो।
**रीश**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) ईर्ष्या। तुलना।
**रीश**—स्त्री० (कु०) संकोच।
**रीशुलौ**—वि० (कु०) ईर्ष्या करने वाला।
**रीशो**—वि० (मं०) शक्की (पति)।
**रीस**—स्त्री० नकल, तुलना।
**रीसकरा**—वि० दूसरे की नकल करने वाला।
**रीह**—पु० (कु०) जोड़ों का एक रोग जिसमें दर्द भिन्न समय पर भिन्न जोड़ों पर होता है।
**रीहड़ा**—पु० (मं०) धान की मोटी किस्म।
**रुंग**—पु० (सि०, सो०) रंग।
**रुंग**—पु० (सि०, सो०) रोम।
**रुंगटा**—पु० (सि०) रोम।

**रुंगणा**—स० क्रि० (बि०) वृक्ष की टहनियों को काटना।
**रुंगणा**—स० क्रि० (सो०) मिट्टी में दबाना।
**रुंगा**—पु० (बि०) किसी चीज़ में फंस कर कपड़ा फटने की क्रिया।
**रुंगा**—वि० (कां०) थोड़ा सा, बचा हुआ।
**रुंघ**—स्त्री० (चं०) प्राप्त हुई गुप्त जानाकारी।
**रुंज**—स्त्री० रोग।
**रुंजणा**—अ० क्रि० (कां०) घृणा करना।
**रुंड**—पु० (बि०) ठुंठ।
**रुंडमुंड**—पु० मुंडा हुआ सिर।
**रुंडमुंड**—वि० तहस-नहस।
**रुंबणा**—स० क्रि० रोपना, छोटे पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरी जगह लगाना या गाड़ना।
**रुंबणी**—स्त्री० (शि०, सो०) धान को रोपने की क्रिया, धान की पौध लगाने का काम, धान की पौध।
**रुंबणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) रोपना।
**रुंबल**—पु० (कां०) एक प्रकार का पेड़ और फल।
**रुआं**—अ० इधर।
**रुआज़**—पु० रिवाज़।
**रुआज़**—स्त्री० (कु०) आवाज़।
**रुआड़**—पु० (कु०) गुफा।
**रुआणा**—स० क्रि० रुलाना।
**रुआळुआ**—पु० (कां०, ह०) इकट्ठे रोने का भाव।
**रुआळू**—पु० (चं०) बड़े बालों के मध्य छोटे बाल।
**रुआशण**—स्त्री० (कु०) रोने की क्रिया, इकट्ठे रोने की दशा।
**रुआह**—पु० (कु०) गर्भपात।
**रुई**—स्त्री० (शि०, सो०) लोमड़ी।
**रुई**—स्त्री० (मं०) फफूंदी।
**रुएं**—स्त्री० (शि०) रुई।
**रुक**—पु० इरादा, विचार।
**रुकणा**—अ० क्रि० रुकना।
**रुकणो**—अ० क्रि० (सि०) दे० रुकणा।
**रुका**—पु० (कु०) अंदाज़ा।
**रुका**—पु० पत्र, दस्तीपत्र।
**रुकाणा**—स० क्रि० रोकना, रुकवाना।
**रुका देणा**—स० क्रि० (सि०) आवाज़ देना, संदेश देना।
**रुकीणा**—स० क्रि० (सि०) रोका जाना।
**रुक्ख**—पु० (कां०, बि०) पेड़।
**रुक्खड़ू**—पु० (कां०) वृक्ष पर लगा हुआ फल।
**रुक्खा**—वि० (बि०) शुष्क, सूखा, कठोर स्वभाव वाला।
**रुख**—पु० किनारा, दिशा।
**रुखासणा**—स० क्रि० (कां०, ह०) रुखी रोटी खाना।
**रुखी**—वि० बिना तली, रूखी-सूखी।
**रुखो**—वि० (सि०) कम उपजाऊ, शुष्क।
**रुग**—पु० (चं०) इतनी वस्तु जो अंजलि में आ जाए।
**रुगटू**—पु० (चं०) ढेर, एकत्रित वस्तु।
**रुगड़ना**—स० क्रि० (कु०) रगड़ना, मोटा-मोटा पीसना।
**रुगड़िना**—अ० क्रि० (कु०) बाल झड़ना, बाल छोटे होना।
**रुगणा**—स० क्रि० (चं०) साग को छोटा-छोटा काटना।
**रुगणा**—स० क्रि० (कु०) मारना, डंडों से मारना, पीटना।
**रुगाणा**—स० क्रि० (चं०) छोटा-छोटा करवाना।
**रुगें**—वि० (शि०) जिस (पहाड़) पर कोई पेड़ पौधे न हों।
**रुचणा**—अ० क्रि० पसंद आना, अनुकूल होना।
**रुचा**—पु० (कु०) बकरी की ऊन की बनी जुराब जो बर्फ पर चलने के लिए प्रयोग में लाई जाती हैं।
**रुचाणा**—स० क्रि० (बि०) पचाना।
**रुच्छणा**—स० क्रि० (बि०) लकड़ी आदि को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटना।
**रुछड़**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Ficus Foveolata.
**रुजगार**—पु० रोज़गार।
**रुजणा**—अ० क्रि० (शि०) नाक-कान का बिंधा हुआ छेद बंद होना।
**रुजणो**—अ० क्रि० (शि०) भीगना।
**रुजाठ**—पु० (सि०) Viscum album.
**रुज्जणा**—वि० (बि०) भरा हुआ।
**रुटणा**—स० क्रि० (सि०) अच्छी तरह पिटाई करना।
**रुटणा**—स० क्रि० कुल्हाड़ी से लकड़ी आदि के छोटे-छोटे टुकड़े करना।
**रुट्ट**—पु० (बि०) छोटा सा खेत।
**रुट्टा**—पु० (बि०) घास का पूला।
**रुठणा**—अ० क्रि० रूठना।
**रुड़**—पु० ढेर।
**रुड़**—स्त्री० (शि०) धूप।
**रुड़कना**—अ० क्रि० गिरना।
**रुड़किणा**—अ० क्रि० (कु०) टूट जाना, टुकड़े-टुकड़े करना।
**रुड़कू**—पु० (सो०) उरद की दाल के न पकने वाले दाने।
**रुड़कू**—पु० (सि०) ढेर।
**रुड़खणा**—स० क्रि० (सो०) बेदर्दी से वृक्ष आदि को काटना।
**रुड़ा**—पु० घटिया किस्म के चावल।
**रुड़ी**—स्त्री० (सि०) बजरी।
**रुड़ी**—स्त्री० (कां०) अनाज की ढेरी।
**रुड़ो**—पु० (शि०) ढेर।
**रुढ़ाणा**—स० क्रि० (कां०) बहाना, बहा कर ले जाना।
**रुढ़ाणी**—स्त्री० (चं०, बि०) बहता पानी।
**रुढू**—पु० (बि०) काश्तकार से गल्ले के रूप में लिया जाने वाला निश्चित अनाज।
**रुढ़ोणा**—स० क्रि० (बि०) रोटी आदि को भली प्रकार सेंकना, अ० क्रि० कुढ़ना।
**रुणाका**—पु० (चं०) लोहे का बना एक उपकरण जिसे चकमक पत्थर से टकरा कर आग पैदा की जाती है।
**रुणचुणा**—पु० (बि०) छोटा बच्चा।
**रुणझुण**—स्त्री० वर्षा के लगातार बरसने की क्रिया। मधुर ध्वनि।
**रुणयाडा**—वि० अधिक रोने वाला।
**रुणरुणाट**—स्त्री० व्यर्थ रोने का भाव, रह-रह कर रोने की क्रिया।

**रुणा**—अ० क्रि० रोना।
**रुणाट**—वि० रोने वाला।
**रुदा**—वि० (सि०) मरा हुआ।
**रुदुआणा**—स० क्रि० कुचलवाना। रंदवाना।
**रुघणा**—पु० (सि०) सामान।
**रुधणा**—अ० क्रि० अवरुद्ध होना, अधिक बर्फ पड़ने या अंधेरा होने के कारण एक स्थान पर रुक जाना।
**रुधर**—पु० (ऊ०) नंदीवृक्ष।
**रुनी**—स्त्री० (शि०, सो०) मिल्लोटक।
**रुपा**—पु० चांदी।
**रुपा**—वि० (ह०) उपजाऊ (भूमि)।
**रुपिया**—पु० (शि०) रुपया।
**रुपेयटा**—पु० (शि०) रुपया।
**रुबणा**—अ० क्रि० (बि०) दलदल में धंस जाना। चुभना।
**रुबेल**—पु० Ficus glomerata.
**रुब्बण**—पु० (बि०) दलदल।
**रुम**—पु० (कु०) जवान मेढ़ा।
**रुम**—पु० (बि०) रोम।
**रुमणी**—स्त्री० (शि०) दे० रुंबणी।
**रुमा**—पु० (चं०) बारीक टांका।
**रुल**—स्त्री० अधिक मात्रा में चीज़; अत्यधिक वस्तु।
**रुल**—पु० (कां०) खड्डी के दोनों ओर लगी दो लंबी गोल लड़ियां।
**रुळकना**—अ० क्रि० लुढ़कना।
**रुळकाणा**—स० क्रि० अलग करना, लुढ़काना।
**रुळगर**—वि० (कु०) व्यर्थ घूमने वाला; घूमने-फिरने में समय नष्ट करने वाला।
**रुलणा**—अ० क्रि० (चं०) दर-दर की ठोकरें खाना।
**रुळना**—अ० क्रि० (सो०) वस्तुओं का बिखरना।
**रुळना**—अ० क्रि० नष्ट होना।
**रुळसु**—वि० (चं०) सुस्त।
**रुलाठी**—वि० (कां०) छोड़ा हुआ।
**रुल्हा**—वि० अपंग।
**रुश**—पु० (सि०) दंड के रूप में दी जाने वाली राशि जिसमें मेढ़ा या बकरा भी दिया जाता है।
**रुशाणा**—अ० क्रि० (कु०) नाराज़ होना, रूठ जाना।
**रुशायण**—वि० (शि०) रूठने वाला।
**रुशळ/ळा**—पु० (कु०) लकड़ी की लंबी, गोल और बारीक छड़ जो घास आदि का बोझ उठाने के काम आती है।
**रुष्टमान**—वि० (बि०) रूठा हुआ।
**रुसाकड़**—वि० रूठने वाला।
**रुस्सणा**—अ० क्रि० रूठना।
**रुह**—स्त्री० आत्मा।
**रुह**—स्त्री० (बि०) इच्छा।
**रुहणी**—स्त्री० (कु०) धान के पौधों को 'रियाटा' से उखाड़ कर बड़े खेतों में रोपने की विधि और कार्य।
**रुहला**—पु० (मं०, कु०) दे० रुशळू/ळा।
**रुहलौ**—पु० (कु०) गीदड़।
**रुहाड़**—पु० (शि०) ऊपर से नीचे की मंज़िल में आने जाने का अंदरूनी मार्ग।
**रुहाड़ी**—स्त्री० (कु०) धान रोपने वाली स्त्री।
**रुहू**—पु० छोटा खेत।
**रुह्याण**—स्त्री० (चं०) धान की पनीरी।
**रूं**—पु० रुई, रुई जैसी ऊन।
**रूपणा**—स० क्रि० (बि०) दे० रोपणा।
**रूपा**—पु० (कु०) चांदी।
**रूपी/पू**—वि० (कु०) चांदी जैसा सफेद।
**रूसर**—वि० (कु०) गुस्सेबाज़।
**रूहर**—पु० (कु०) देवते की शक्ति का 'गूर' के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति में पहली बार प्रवेश होने पर उसे विशेष उत्सव में गूर-समाज में सम्मिलित करने के लिए अपनाया जाने वाला संस्कार।
**रेंइटणा**—स० क्रि० (कु०) कूटना, पीटना, मारना।
**रेंच**—स्त्री० (चं०) टेढ़ापन।
**रेःड़ना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, सो०) धक्का देकर किसी वस्तु को चलाना।
**रेःह**—स्त्री० (कु०) रेखा।
**रे**—पु० (शि०) आलस्य।
**रे**—अ० अरे।
**रेउआ**—पु० (कु०) चित्त।
**रेउणा**—स० क्रि० (शि०) रूलाना।
**रेउणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) मुकाबला करना, निशाना साधना
**रेऊ**—पु० (कु०) मन, तबीयत।
**रेओड़ी**—स्त्री० रेवड़ी।
**रेकणा**—स० क्रि० (चं०) बीच से काटना।
**रेकसी**—स्त्री० (शि०, सि०) चुपचाप खिसकने की क्रिया।
**रेकसी**—अ० (शि०, सि०) किसी और जगह, अन्य स्थान पर।
**रेका**—वि० (शि०, सि०, सो०) विचित्र प्रकृति का, दूसरा।
**रेका**—पु० (कु०) थोड़ा सा मोड़।
**रेक्का**—पु० (बि०) चीरा।
**रेख**—स्त्री० (कु०, चं०, सो०) रेखा।
**रेगमार**—पु० लकड़ी को साफ तथा चमकदार बनाने वाला कागज़, लकड़ी रगड़ने के लिए प्रयुक्त एक लोहे का खुरदरा उपकरण।
**रेघळा**—वि० (कु०) गोल-मटोल।
**रेच**—स्त्री० (कु०) लंबा और बारीक छिद्र, दरार।
**रेचा**—पु० (सि०, सो०) निशान, दाग।
**रेज़टा**—पु० एक लंबा चोगा जो विशेष तौर पर सूट के ऊपर पहना जाता है, स्त्रियों का परिधान।
**रेज़ा**—पु० (कां०) सोने चांदी को पिघला कर दिया गया टुकड़ी का आकार।
**रेटू**—पु० (कु०, चं०) धागे का गोला।
**रेटो**—पु० (मं०) टिड्डा।
**रेट्टा**—पु० (चं०) दे० रेटू।
**रेट्टा**—पु० (कां०) घास के पूलों का ढेर।

**रेठा**—पु० (मं०) पेठा।
**रेठू**—वि० (सि०) बलिष्ठ।
**रेड़**—पु० (मं०) दलिया।
**रेड़**—पु० (कां०) वृक्ष से काटे हुए पत्ते व टहनियां।
**रेड़**—पु० (कां०) किसी भी कार्य को अधिक मात्रा में करने का भाव।
**रेड़ना**—स० क्रि० (कां०) चावल से धान अलग करना।
**रेड़ना**—स० क्रि० (कु०, कां०) पशुओं के चारे हेतु वृक्ष से पत्तों सहित टहनियां काटना।
**रेड़ा**—पु० (बि०) छोटे कद का तगड़ा बैल।
**रेड़ा**—पु० सामान ढोने का ठेला।
**रेडिया**—पु० (कां०, सि०) रेडियो।
**रेडियु**—पु० रेडियो।
**रेडुआ**—पु० (कां०, सो०) रेडियो।
**रेडू**—पु० (सो०) Acacia pencopholea.
**रेड्र**—पु० (कु०) मोटा गोल डंडा।
**रेडू**—पु० (शि०) अरिमेद।
**रेड़े**—स्त्री० (मं०) ढलानदार भूमि।
**रेढ़ना**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, चं०) चलाना।
**रेढू**—पु० दही को छौंक लगाकर बनाया गया तरल खाद्य पदार्थ।
**रेढू**—पु० (कां०) छाछ में पकाए चावल का बना नमकीन खाद्य।
**रेत**—स्त्री० (शि०, सि०) छोटी आरी।
**रेतड़**—वि० (कां०, बि०, ह०) रेतीला।
**रेतणा**—स० क्रि० (कां०, शि०) 'रेती' से काटना।
**रेता**—पु० रेत।
**रेती**—स्त्री० लकड़ी को साफ व मुलायम करने का लोहे का औज़ार।
**रेपल**—पु० (मं०) लंबा अखरोट।
**रेपळा**—वि० (शि०) बावला।
**रेब**—स्त्री० तिरछापन।
**रेबदार**—वि० चूड़ीदार।
**रेबा**—वि० तिरछा।
**रेया**—पु० (सि०) फिक्र।
**रेरु**—पु० (ऊ०) अरिमेद।
**रेलणा**—अ० क्रि० (बि०) धीरे-धीरे चलना, रेंगना।
**रेलणा**—अ० क्रि० (कां०, मं०) लेटना।
**रेळणा**—स० क्रि० (कु०) गिराना।
**रेलदा-मिलदा**—वि० (कु०) मिलता-जुलता।
**रेळा**—वि० (कु०) ढलानदार।
**रेळामा**—पु० (चं०) दाल आदि के छिलके को रगड़ कर पृथक करने की क्रिया।
**रेळिणा**—स० क्रि० (कु०) गिराया जाना।
**रेलू**—पु० (चं०) Cassia sophera.
**रेलौ**—वि० (कु०) उतराई वाला।
**रेल्ला**—पु० झोंका। धक्का।
**रेश**—पु० (चं०) एक वृक्ष विशेष जिससे पशु हांकने के लिए छड़ियां बनाई जाती हैं।
**रेशम**—पु० रेशम।
**रेशां**—पु० कफ़।
**रेस्ता**—पु० (कु०) रास्ता।
**रेस्सा**—पु० (बि०) दे० रेशा।
**रेस्सा**—पु० (बि०) स्रोत।
**रेस्सा**—पु० घाव आदि से निकलने वाली पीप।
**रेह**—स्त्री० (चं०) पर्वत की चोटी।
**रेह**—पु० (ह०) पौधा।
**रैंच**—पु० एक विशेष औज़ार।
**रैंट**—पु० (चं०) धुंध, कुहरा।
**रैंदखूंद**—स्त्री० बचा-खुचा माल; रहा-सहा व्यापार; कसर।
**रै:न**—स्त्री० धरोहर।
**रै:न**—वि० (शि०) हैरान।
**रै**—स्त्री० (चं०) एक प्रसिद्ध पहाड़ी पेड़ जिसकी लकड़ी हलकी और पीले रंग की होती है।
**रैखणा**—स० क्रि० (कु०) रखना।
**रैखिणा**—स० क्रि० (कु०) रखा जाना।
**रैच**—स्त्री० (मं०) रात्रि काल।
**रैटा**—पु० (मं०) छोटा टिड्डा।
**रैणकणा**—अ० क्रि० (कु०) गूंजना।
**रैतनीत**—स्त्री० (बि०) रहन-सहन।
**रैता**—पु० (कां०) रायता।
**रैन**—स्त्री० (चं०) रात।
**रैपट**—स्त्री० (सि०) चपत।
**रैपट**—स्त्री० (कु०) वृक्ष की टहनियों की छंटाई, फलदार वृक्ष की शाखाओं की कांट-छांट।
**रैफू**—पु० (कु०) रफू।
**रैबड़**—पु० (कु०) रबड़।
**रैल**—स्त्री० (सि०) धरोहर।
**रैलण**—पु० (ऊ०) Caesalpinia decabetala.
**रैळना**—अ० क्रि० (कु०) मिश्रित होना।
**रैसो**—वि० (सि०) ऐसा स्थान जहां अधिक हवा न हो।
**रैहणा**—अ० क्रि० रहना।
**रैहम**—स्त्री० दया।
**रैहुणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) ठहराना।
**रैहण**—स्त्री० (कु०) धरोहर।
**रोंक**—वि० (सि०) रंक।
**रोंग**—पु० (कु०) राजमाष। रंग।
**रोंगणा**—स० क्रि० (कु०) रंगना, रंग देना।
**रोंगिणा**—अ० क्रि० (कु०) रंग जाना।
**रोंगीन**—वि० (सि०) रंगदार, रंगीन।
**रोंगे**—वि० (शि०) रोगी।
**रोंजिश**—स्त्री० (शि०) वैमनस्य, रंजिश।
**रोंटणा**—स० क्रि० (शि०) खाना।
**रोंटणा**—स० क्रि० (सि०) विचलित करना।
**रोंड**—स्त्री० (कु०) विधवा।
**रोंड**—पु० (कु०) डंठल।
**रोंडिणा**—अ० क्रि० (कु०) विधवा हो जाना।

**रोंदड़**—वि० हमेशा रोने वाला।
**रोंदणा**—स० क्रि० (कु०) रंदे से लकड़ी के तख्ते की सफाई करना।
**रोंदा**—पु० (कु०) रंदा, बढ़ई का एक औज़ार।
**रोंदिणा**—स० क्रि० (कु०) रंदे द्वारा लकड़ी के तख्तें आदि की सफाई की जानी।
**रोंदू**—वि० अधिक रोने वाला।
**रोंबणो**—स० क्रि० (शि०) रोपना।
**रो.ला**—वि० (सो०) अधिक रोने वाला।
**रो**—अ० (शि०, सि०, सो०) और, का।
**रोअणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) गीला करना, भिगोना, धोना।
**रोआंरोआं**—पु० रोम-रोम।
**रोआ**—पु० (सि०, सो०) मथनी।
**रोआई**—स्त्री० रुलाई।
**रोआज़**—पु० (सि०) रिवाज़।
**रोइणा**—अ० क्रि० (कु०) रोया जाना।
**रोउच**—पु० (शि०) नमी।
**रोएं**—स्त्री० (सि०) रुई।
**रोएल**—पु० (सि०) Combretum Lecandrum.
**रोक**—स्त्री० सगाई की पुष्टि करने के लिए की जाने वाली एक रस्म।
**रोकड़**—वि० (कु०) पथरीला।
**रोकणा**—स० क्रि० हटाना, रोकना।
**रोकमाल**—पु० (मं०) नकदी।
**रोकाबेंघी**—स्त्री० (कु०) रोक-टोक।
**रोकिणा**—स० क्रि० (कु०) रोका जाना।
**रोक्का**—पु० (कां०, बि०) सगाई की पुष्टि संबंधी रस्म, दे० रोक।
**रोख**—स्त्री० (सि०) रक्षा।
**रोखळा**—वि० (कु०) हाथ रहित, जिसका हाथ कटा हो।
**रोग**—पु० बीमारी।
**रोगड़**—वि० बीमार रहने वाला।
**रोगड़ा**—वि० (ऊ०, कां०) रोगी।
**रोगण**—वि० स्त्री० रोगिणी।
**रोगला**—वि० (सि०) बीमार रहने वाला।
**रोचणा**—अ० क्रि० (सि०) ज़मीन में जज़्ब होना।
**रोचणो**—स० क्रि० (सि०) नोचना।
**रोज़**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) आंसू।
**रोज़**—अ० प्रतिदिन।
**रोज़के**—अ० (सि०) हर रोज़।
**रोझणा**—स० क्रि० (मं०) पकाना।
**रोझाकढणा**—स० क्रि० (बि०) अपना दु:ख किसी से रोकर कहना।
**रोझिणा**—अ० क्रि० (कु०) मौसम का खराब होना।
**रोझी**—स्त्री० (चं०) किसी भी तरह की खुराक।
**रोट**—पु० नई फसल के अन्न को यज्ञ के रूप में कुल देवता को भेंट करने हेतु विशेष प्रकार से पकाई बड़ी तथा मोटी रोटी; मोटी रोटी।
**रोटकू**—पु० (शि०) तली हुई रोटी विशेष।
**रोटघोटळा**—वि० (कु०) गोल-मटोल।
**रोटड़ो**—पु० (शि०) मोटी रोटी।
**रोटणा**—स० क्रि० (सि०) रटना।
**रोटळा**—वि० (कु०) गोल।
**रोटी**—स्त्री० भोजन, चपाती।
**रोटी चाप**—वि० (कु०) कामचोर।
**रोटो**—पु० (मं०) आटे में खमीर डालकर बनाई रोटी।
**रोठळ**—पु० (शि०) शिमला जनपद में लोक वार्ता का एक राक्षसी 'बीर'।
**रोठळा**—वि० (बि०) गंजा।
**रोड़**—पु० मक्की के भूनने पर बिना खिले दाने।
**रोड़**—पु० (कु०) 'गांघड़ी' के ऐसे दाने, कूटने पर भी जिसके छिलके नहीं उतरते।
**रोड़**—पु० (बि०) मरोड़।
**रोड़**—पु० (कां०, बि०) मोटी रोड़ी।
**रोड़**—पु० किसी भी दाल के न पकने वाले दाने।
**रोड़कण**—स्त्री० (सि०) लकड़ी की कलछी।
**रोड़कणा**—स० क्रि० अनाज तथा कचरा पृथक् करना।
**रोड़काउणो**—स० क्रि० (सि०) लुढ़काना।
**रोड़णो**—स० क्रि० (सि०) घोलना।
**रोड़ना**—स० क्रि० (कु०) छेड़ना।
**रोड़ना**—स० क्रि० कलछी आदि से हिलाना।
**रोड़ना**—स० क्रि० बिखेरना।
**रोडा**—वि० मुंडित सिर वाला।
**रोड़ा**—वि० (मं०) टेढ़ी नज़र वाला।
**रोड़ा**—पु० बड़ा पत्थर, गोल पत्थर।
**रोड़ा**—पु० माथे आदि में लगी अंदरुनी चोट से उभरा भाग।
**रोड़ा**—पु० (सो०) गड़बड़, रुकावट।
**रोड़िवां**—वि० (सि०) अनुभवी।
**रोड़ी**—स्त्री० (चं०) एक प्रकार की फली जो घास में लगती है। गुड़ की बड़ी ढेली।
**रोड़ी**—स्त्री० (कां०) गेहूं या अलसी के साथ उगने वाली हरी घास।
**रोड़ी**—स्त्री० बजरी, कंकड़ी।
**रोड़ु**—वि० (ऊ०, कां०) लंपट।
**रोड़ू**—पु० (कु०) दाल आदि के भिगोने पर शेष बचे ऐसे दाने जिनके छिलके नहीं उतरते।
**रोड़ू**—पु० मेवे के लड्डू।
**रोड़ू**—वि० (सि०) शरारती, छेड़खानी करने वाला, गड़बड़ करने वाला।
**रोड़ूधान**—पु० (ह०) धान की एक किस्म जिसका पौधा सफेद और तना तथा फल अधिक गोल होते हैं।
**रोढ़ा**—पु० (शि०) गुड़ की ढेली।
**रोढ़ा**—पु० (कु०) लकड़ी का ऐसा उपकरण जिस पर घराट खड़ा होता है और घूमता है।
**रोढ़ू**—पु० (बि०) ब्याज़ के रूप में दिया जाने वाला अन्न।
**रोण**—पु० आंगन।

**रोण**—पु० (बि०) दु:ख।
**रोणक**—स्त्री० (कु०, शि०) रौनक, चहल-पहल।
**रोणकलत्त**—पु० विलाप, शोर-शराबा।
**रोणा**—अ० क्रि० रोना।
**रोणा**—स० क्रि० (सि०) कपड़े को साबुन के घोल में भिगोना।
**रोणाकलाणा**—अ० क्रि० रोना-पीटना।
**रोणो**—स० क्रि० (शि०) गीला करना।
**रोदयाणा**—स० क्रि० (सि०) रंदे से लकड़ी की सफाई करना।
**रोपणा**—स्त्री० (बि०) सगाई पक्की करने के लिए लड़के की ओर से लड़की को दिया शगुन।
**रोपा**—पु० धान बोने हेतु सिंचाई योग्य भूमि, ऐसी भूमि जिसमें सिंचाई द्वारा धान बोया जाता है।
**रोपो**—पु० (कु०) बड़ा खेत।
**रोप्पा**—पु० (बि०) धान का खेत।
**रोब**—पु० रोब, धाक, दबदबा।
**रोबड़**—पु० (सि०) रबड़।
**रोबण**—पु० रोगन।
**रोबणा**—स० क्रि० पौध इत्यादि की रोपाई करना।
**रोबणा**—स० क्रि० बेल वाली सब्जियों के बीजों को ज़मीन में लगाना।
**रोबणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) चुभाना।
**रोबत**—पु० (सि०) अभ्यास।
**रोबन**—पु० (सि०) रंग-रोगन।
**रोबला**—वि० गंभीर, प्रभावशाली।
**रोभ**—पु० (कु०) रोब, गुस्सा।
**रोभी**—वि० रोब वाला।
**रोम-रोम**—अ० बाल-बाल।
**रोयतणा**—स० क्रि० (सि०) आरी तेज़ करना।
**रोयम**—पु० (सि०) रहम, दया, कृपा।
**रोल**—पु० (सि०) बारीक पत्थर।
**रोलणा**—स० क्रि० जूं या अन्य चीज़ को ऊपर-ऊपर से बीनना या पलटना।
**रोळणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) दानों में से कूड़ा-करकट अलग करना।
**रोली**—स्त्री० (कां०, बि०) हेरा-फेरी।
**रोली**—स्त्री० (ऊ०, कां०) एक विशेष तकनीक से बनाया गया टीका।
**रोळी करना**—स० क्रि० (बि०) खेल में चुपचाप किसी को बताए बिना नियमों का उल्लंघन करना।
**रोलू**—वि० (कां०, बि०) शोर करने वाला।
**रोल्डू**—पु० (शि०) लकड़ी का छोटा टुकड़ा।
**रोल्डू**—वि० (सि०) ऐसा व्यक्ति जो शादी करने के पश्चात लड़की के घर में रहता है, घर दामाद।
**रोवाई**—स्त्री० रुलाई।
**रोवाड़**—पु० (सि०) गुफा।
**रोश**—पु० गुस्सा।
**रोश**—पु० (ऊ०, कां०, बि०) असंतुष्टि।
**रोशड़ा**—पु० (चं०) दर्दनाक कहानी।
**रोशणा**—स० क्रि० (मं०) मारना, पीटना।
**रोशणा**—अ० क्रि० (शि०) रूठना।
**रोशला**—वि० (सो०) गुस्सैल।
**रोशाली**—वि० (शि०) क्रोधित, क्रुद्ध।
**रोशुणा**—अ० क्रि० (सो०) रूठना, नाराज़ होना।
**रोसणा**—स० क्रि० (कु०) गरम पानी में भिगोना।
**रोसणा**—स० क्रि० (कु०) रौंदना, मिलाना।
**रोसनी**—स्त्री० रोशनी।
**रोसा**—पु० (बि०) क्रोध, गिला, शिकायत।
**रोह**—पु० (शि०) क्रोध।
**रोहटी**—वि० (सि०) कायल।
**रोहड़ा**—पु० धान की एक किस्म।
**रोहड़ी**—स्त्री० (मं०) अंगूठी।
**रोहद**—पु० वर्षा के पानी के साथ बह कर आया हुआ कूड़ा-करकट।
**रोहणा**—स० क्रि० (मं०) रोपना।
**रोहणा**—स० क्रि० (कु०) बेल वाली सब्जी आदि के बीज को ज़मीन में रोपना।
**रोहणी**—स्त्री० (कां०) चांदी आदि को पिघला कर बनाई गई टुकड़ी।
**रोहणी**—स्त्री० (कां०) चांदी आदि को पिघला कर बनाई टुकड़ी।
**रोहबणा**—स० क्रि० आरोपण करना, घुसाना।
**रोहळा**—वि० अंगहीन।
**रोहा**—पु० (चं०) पनीरी उखाड़ने के बाद खेत में लगाया गया धान।
**रोहा**—पु० (कु०) कद्दू तथा खीरे आदि का बीज।
**रोहा**—पु० (चं०) धान की पनीरी।
**रोहिणो**—अ० क्रि० (शि०) क्रोधित होना, क्रुद्ध होना।
**रौं**—अ० (सि०) और।
**रौंऊस**—पु० (चं०) कस्तूरी मृग।
**रौंग**—पु० (चं०) राजमाष।
**रौंगिचड़ा**—पु० (चं०) 'रौंग' और चावल से बना हुआ पकवान।
**रौंगी**—अ० (शि०) बेशक।
**रौंगी**—स्त्री० राजमाष किस्म की दाल जिसकी फलियों की सब्जी भी बनाई जाती है।
**रौंटा**—वि० (सि०) आवारा।
**रौंटी**—स्त्री० (सो०) खेलते समय की गई हेरा-फेरी।
**रौंटी**—स्त्री० (सि०) कोठे के ऊपर डाली गई छान।
**रौंडी गाई**—स्त्री० (कु०) दूध देने वाली ऐसी गाय जिसका बच्चा मर गया हो।
**रौंदखूंद**—स्त्री० (सो०) दे० **रैंदखूंद**।
**रौंस**—पु० चाव, उत्साह।
**रौंसणा**—अ० क्रि० प्रसन्न होना।
**रौंसू**—वि० प्रसन्न रहने वाला।
**रौ:णा**—अ० क्रि० (कु०) रहना।
**रौ**—पु० (मं०) रुई।
**रौ**—पु० (बि०, मं०) ऐसी खड्ड जिसमें बरसात में पानी बहता है और बाद में सूख जाता है।

**रौ**—पु० (शि०) गहरा पानी।
**रौआ**—पु० रवा।
**रौआ**—पु० (शि०) मथनी।
**रौई**—स्त्री० (कु०) देवदार प्रजाति का वृक्ष जिसकी लकड़ी कच्ची और टेढ़ी-मेढ़ी होती है और उससे अच्छा सामान नहीं बनता।
**रौकड़**—पु० (कु०) पथरीली भूमि।
**रौगड़ना**—स० क्रि० (कु०) रगड़ना।
**रौगड़नो**—स० क्रि० (सि०) रगड़ना, घिसना।
**रौगड़िना**—अ० क्रि० (कु०) रगड़ जाना।
**रौचणा**—अ० क्रि० (चं०) पानी का जज़्ब होना। बात अच्छी लगना।
**रौजणा**—अ० क्रि० (कु०) तृप्त होना।
**रौड़**—पु० (कु०) टांग।
**रौड़कणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) चुभना, व्यर्थ घूमना।
**रौढ़**—पु० गिरे हुए वृक्ष का बड़ा तना। मोटा सांप।
**रौण**—पु० (बि०) बहुत से पशुओं को बाहर बांधने का स्थान।
**रौण**—वि० (शि०, सि०) विवाहित (स्त्री)।
**रौण**—पु० जंगल; जंगल की तरह अधिक घनी फसल।
**रौण**—पु० (शि०, सि०, सो०) बड़े मकान के मध्य या देव मंदिर के मध्य का बिना छत का भाग या आंगन।
**रौण**—वि० (सि०) वीरान।
**रौणक**—स्त्री० रौनक।
**रौणकी**—वि० रौनकी।
**रौणकू**—वि० दे० रौणकी।
**रौणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०, सो०) रहना।
**रौणो**—पु० (सि०) युद्ध।
**रौता**—वि० (कु०) भूरा, रक्तिम।
**रौथ**—पु० (कु०) रथ।
**रौदी**—स्त्री० (कु०, शि०) रद्दी।
**रौनो**—वि० (सि०) उजाड़ (ज़मीन)।
**रौल**—पु० (कां०) कफन उठाने वाले।
**रौलमक्ख**—अ० (बि०) व्यर्थ में।
**रौळा**—पु० शोर।
**रौलू**—वि० (चं०) शोर मचाने वाला।
**रौळू**—पु०, (ऊ०, कां०, बि०) भगत लोक नाट्य का एक पात्र।
**रौशी**—स्त्री० (कु०, शि०) रस्सी।
**रौसयो**—स्त्री० (सि०) फर्श।
**रौहढ़**—पु० (कां०, चं०) नदी में बहती लकड़ी।
**रौहणा**—अ० क्रि० रहना।

## ल

**ल**—देवनागरी वर्णमाला का अठाईसवां व्यंजन और तीसरा अंतस्थ वर्ण। उच्चारण-स्थानदंत।
**लंकड़ा**—पु० महाकाली के साथ चलने वाला रक्षक 'वीर'।
**लंकू**—पु० लौकी प्रजाति की सब्जी।
**लंग**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) नस आदि खिंच जाने से चलने में कठिनाई होने का भाव।
**लंगड़दीन**—वि० लंगड़ा।
**लंगड़ना**—अ० क्रि० टेढ़े चलना।
**लंगड़ो**—वि० (मं०) लंगड़ा।
**लंगणा**—स० क्रि० पार करना, लांघना।
**लंगणा**—पु० अर्गला, अंग्रेजी अक्षर (Y) की तरह का मोटा डंडा जिसे खेत या आंगन के मार्ग द्वार पर गाड़ दिया जाता है ताकि पशु आदि अंदर न जा सके।
**लंगर**—पु० प्रीति भोजन, सामूहिक भोजन; लंबी पंक्ति।
**लंगाणा**—स० क्रि० पार उतारना।
**लंगार**—पु० लंबा काम; इधर-उधर बिखरा सामान।
**लंगेरना**—स० क्रि० चने आदि भिगोकर पत्तों में रखकर कोंपले निकालना।
**लंगेरना**—स० क्रि० उकसाना, कुत्ते को किसी के पीछे लगाना।
**लंघ**—पु० लांघने के लिए की गई व्यवस्था।
**लंघचोळा**—पु० (मं०) लंबा चोला।
**लंघणा**—स० क्रि० लांघना, पार करना।
**लंघा**—पु० नदी का वह स्थान जहां से उसे पार किया जाता है।
**लंघा**—पु० दे० लंगणा।
**लंघाई**—स्त्री० (ऊ०, चं०, ह०) पार कराने का पारिश्रमिक।
**लंघाणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) पार करवाना।
**लंघीर**—स्त्री० लंबी पंक्ति।
**लंघेर**—स्त्री० रगड़।
**लंजारा**—पु० (सि०) नज़ारा।
**लंढकणा**—अ० क्रि० (कु०) गिरना।
**लंध**—स्त्री० (मं०) हानि।
**लंप**—वि० (शि०, सि०) दीपक, लैंप।
**लंपट**—वि० लफंगा, आवारा।
**लंफ**—वि० साधारण (मनुष्य)।
**लंफ**—पु० (चं०, बि०, कां०) लैंप, दीपक।
**लंब**—पु० (सि०) Heleropogon contortus.
**लंब**—पु० (सो०) Fastuca pratense.
**लंब**—पु० विशेष प्रकार के घास का कांटा।
**लंबकणा**—अ० क्रि० लटकना, पहुंचना, बाहें पसारकर पकड़ने की कोशिश करना।
**लंबकणु**—पु० एक सब्जी विशेष।
**लंबड़दार**—पु० (सो०) नबरदार।
**लंबर**—वि० संख्या, नंबर।
**लंबाइणा**—अ० क्रि० (सि०) झुकना।
**लंबारी**—स्त्री० अलमारी।
**लंबी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) Artistida depressa.
**लंबू**—वि० लंबा।
**लंबू**—पु० (ह०) दूध दुहने का मिट्टी का पात्र।

**लंबूघा**—पु० (ह०) लंबा व तेज़ नोक वाला घास।
**लंबोणा**—अ० क्रि० लथपथ होना।
**लंबोतरा**—वि० कुछ-कुछ लंबा, लंबे आकार का।
**लंभू**—पु० एक चौड़ा सा पात्र विशेष।
**लःद**—पु० (चं०) बीजक मेढ़ा।
**लअ**—पु० (शि०) नस्ल। भेड़-बकरी की कटी ऊन।
**लअणो**—स० क्रि० (शि०) फसल काटना।
**लइण**—स्त्री० (मं०) पंक्ति।
**लऊंलऊं**—स्त्री० बेसब्री।
**लऊ**—पु० (सो०, सि०, शि०) लहू।
**लऊका**—वि० छोटा।
**लएक**—वि० योग्य, लायक।
**लक**—पु० कमर।
**लकइरा**—पु० (सो०) किसी वस्तु का छोटा टुकड़ा।
**लकड़काठ**—पु० सभी किस्म की लकड़ी का भंडार।
**लकड़दादू**—पु० (कु०) दादा का बाप, परदादा।
**लकड़बाग**—पु० (शि०) लकड़बग्घा।
**लकड़याठी**—स्त्री० (मं०) टेढ़ी-मेढ़ी बारीक लकड़ी या छड़।
**लकड़ारा**—पु० लकड़हारा।
**लकड़ियाहर**—पु० (चं०) लकड़हारा।
**लकड़िहणा**—अ० क्रि० (चं०) अकड़ना।
**लकड़ीहण**—स्त्री० (चं०) रूठने का भाव।
**लकडू**—पु० ईंधन के लिए प्रयुक्त छोटी लकड़ियां।
**लकड़ेरणा**—स० क्रि० (चं०) घर से दूर मृत व्यक्ति को लकड़ी से बांधकर घर लाना।
**लकड़ेवणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) जबरदस्ती पकड़ना।
**लकड़ोणा**—अ० क्रि० (चं०) रूठना, अकड़ना।
**लकड़ोणा**—अ० क्रि० (बि०) कमर की दर्द से ऐंठना।
**लकतरक**—स्त्री० (मं०) हिलना-डोलना, हरकत।
**लकपक**—स्त्री० (कु०) हरकत, हिलना-डोलना।
**लकबेड़ना**—स० क्रि० (शि०, सि०) लपेटना।
**लकरेरना**—स० क्रि० (कु०) घायल करना।
**लकरेरिना**—स० क्रि० (कु०) घायल किया जाना।
**लकलका**—वि० (कु०) उतावला।
**लकलकात**—स्त्री० मानसिक अस्थिरता।
**लकलके**—वि० (शि०) नाजुक।
**लकवा**—पु० पक्षाघात।
**लकहाणा**—स० क्रि० हिलाना।
**लकांगी**—स्त्री० लिक्षा निकालने की विशेष कंघी।
**लकित्तण**—स्त्री० (बि०) बेइज़्ज़ती।
**लकीर**—स्त्री० रेखा।
**लकीरी**—स्त्री० (शि०) झुर्रियां।
**लकुंदडू**—पु० (बि०) पाषाण भेद।
**लकुड़ी**—स्त्री० (चं०) एक खट्टा फल।
**लकुणा**—अ० क्रि० (ह०) छिप जाना।
**लकोणा**—स० क्रि० छिपाना।
**लकोलू**—पु० दीवार के बाहर की ओर रखा गया छेद।
**लक्कड़घड़**—पु० बढ़ई।
**लक्कड़दादा**—पु० दादा का दादा।
**लक्कड़**—पु० (कां०, ऊं, ह०) जलाने की लकड़ी।
**लक्कवो**—पु० (चं०) लकवा।
**लक्ख**—वि० लाख।
**लक्खिया**—पु० लखपती।
**लखणयारा**—पु० (चं०) पंचायत का एक लेखाधिकारी।
**लखणा**—स० क्रि० जानना।
**लखणा**—स० क्रि० नदी आदि को पार करना।
**लखणारा**—पु० रजवाड़ों के समय में परगने का लेखा-जोखा रखने वाला माल अधिकारी।
**लखणोती**—स्त्री० कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष के घर भेजी जाने वाली विवरणिका जिसमें विवाह से संबंधित विभिन्न रस्मों का समय आदि दर्ज होता है।
**लखणोत्री**—स्त्री० दे० लखणोती।
**लखांपात्री**—पु० लखपती।
**लखाइणा**—स० क्रि० (कु०) लिखाया जाना।
**लखाउट**—स्त्री० (कु०) लिखावट, लिखाई।
**लखाओ**—पु० (सि०, शि०) नदी पार करने योग्य पानी।
**लखाओणा**—स० क्रि० (सि०) लिखवाना।
**लखाणा**—स० क्रि० लिखवाना।
**लखारी**—स्त्री० (सि०) बच्चे के प्रति प्यार का शब्द।
**लखारी**—पु० लेखक, साहित्यकार।
**लखीणा**—पु० लखपति।
**लखेहरा**—पु० चित्रकार।
**लख्वाणा**—स० क्रि० लिखवाना।
**लग**—वि० अलग।
**लग**—पु० हिस्सा, पारंपरिक अधिकार।
**लगचार**—पु० विवाह की विधियां।
**लगणा**—अ० क्रि० लगना, जुटना।
**लगणोतरी**—स्त्री० दे० लखणोती।
**लगदा**—वि० प्रिय (संबंध)।
**लगन**—स्त्री० लगन, प्रवृत्ति, झुकाव।
**लगन**—पु० विवाह का मुहूर्त, लग्न।
**लगलग**—वि० भिन्न-भिन्न।
**लगलग्याड़**—पु० अवशिष्ट वस्तु।
**लगाड़ा**—वि० (सि०) आचारहीन।
**लगाळ**—स्त्री० (सि०) संक्रमण।
**लगीहर**—स्त्री० (कु०) रेखा, लकीर, पंक्ति।
**लगुळदि**—स्त्री० (सो०) खुशामद।
**लगेर**—स्त्री० (सि०) शाखा, टहनी।
**लगेरना**—स० क्रि० कुत्ते को पीछे लगाना।
**लगोंतरी**—स्त्री० (मं०) दे० लखणोती।
**लग्गड़**—वि० घिसा हुआ, प्रयुक्त, पुराना।
**लग्गलुगाड़**—पु० भोजन बनाने और प्रयुक्त करने के बाद बर्तनों में बचा व फंसा हुआ खाद्य पदार्थ।
**लघाइणा**—स० क्रि० (कु०) लंघाया जाना।
**लघाणा**—स० क्रि० लंघाना, पार कराना।
**लघेरना**—स० क्रि० हलका करना।

**लघोणा**—अ० क्रि० समय मिलना।
**लचक**—स्त्री० (चं०) शोभा।
**लचकणा**—अ० क्रि० वस्त्र का नीचे की ओर लटकना।
**लचका**—पु० ठुमका।
**लचराळा**—पु० (सि०) दीवार या वस्त्र पर लगा दाग़।
**लचरालुना**—अ० क्रि० (सो०) दाग पड़ना।
**लचरूड़ी**—स्त्री० (सो०) टपकता हुआ तरल पदार्थ।
**लचलचा**—वि० चिपचिपा।
**लचार**—वि० लाचार, विवश।
**लचेरना**—स० क्रि० (कु०) थकाना।
**लच्छण**—पु० लक्षण।
**लच्छा/छी**—पु० स्त्री० गुच्छा, गुच्छी।
**लछ**—स्त्री० (चं०) तरंग।
**लछमी**—स्त्री० लक्ष्मी।
**लछवाड़**—पु० (शि०) छिपकली।
**लछवोळा**—पु० (मं०) वधू का चोला।
**लज**—स्त्री० लज्जा।
**लज**—स्त्री० कुएं से पानी निकालने हेतु प्रयुक्त रस्सी।
**लजछलावो**—वि० (शि०) बेशर्म।
**लजाणा**—अ० क्रि० शर्मिंदा होना।
**लजोड़**—स्त्री० (मं०) जड़ें।
**लजौणा**—अ० क्रि० लज्जा करना।
**लज्जण**—स्त्री० (ऊ०, ह०) कुएं से पानी निकालने के लिए प्रयुक्त मोटी रस्सी।
**लज्या**—स्त्री० शर्म।
**लझणा**—अ० क्रि० समझना, बूझना; मिलना। लज्जित होना।
**लझी:ण**—स्त्री० (चं०) दूर से दिखाई देने की क्रिया।
**लट**—स्त्री० ज्योति, लपट।
**लट**—स्त्री० (चं०) मुंडन संस्कार के समय मंदिर में चढ़ाया गया कटे बालों का एक भाग।
**लटक**—स्त्री० लत, आदत।
**लटकण**—स्त्री० लटकी हुई वस्तु।
**लटकण**—वि० (शि०) आवारा (स्त्री)।
**लटकणु**—वि० लटकने वाला।
**लटका**—पु० ठुमका, नखरा।
**लटकाइणा**—स० क्रि० (कु०) लटकाया जाना।
**लटकाणा**—स० क्रि० लटकाना।
**लटकाणा**—स० क्रि० विलंब करना।
**लटकावणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) लटकाना।
**लटणा**—स० क्रि० (सो०) गिराना।
**लटरू**—पु० (ऊ०, कां०) पालकी व बोझ आदि उठाने में प्रयुक्त लकड़ी या बांस का टुकड़ा।
**लटा**—वि० (शि०) बहरा, गूंगा।
**लटाका**—पु० (कां०, चं०) लंगड़ापन।
**लटाका**—पु० घोड़े आदि पर लादे गए बोझ को दोनों ओर बराबर करने के लिए डाला गया भार।
**लटाणी**—स्त्री० कुएं पर डाला गया लकड़ी का लट्ठा।
**लटान**—पु० (मं०) छत का भीतरी भाग।
**लटा पटा**—पु० सामान, फुटकर सामान।
**लटाहण**—स्त्री० बीमारी की हालत में सोये रहने का भाव।
**लटींगर**—पु० (शि०) वर का भाई।
**लटीपटी**—स्त्री० (कु०) छोटा-मोटा सामान, फुटकर सामान।
**लटीर**—पु० (कां०, ह०) हिंडोले की भांति की एक लकड़ी जिसे ज़मीन में गाड़े मज़बूत डंडे पर रख कर झूला जाता है।
**लटुरड़ी**—स्त्री० (सो०) फटे हुए वस्त्र की लटकती कतरन।
**लटेबळा**—वि० (शि०, सि०) अस्पष्ट बोलने वाला।
**लटेरा**—पु० लुटेरा।
**लटैंड़गा**—वि० (मं०) लंगड़ा।
**लटोटर**—पु० व्यर्थ का बोझ।
**लटोणा**—अ० क्रि० उलट जाना। लुट जाना।
**लटोरु**—पु० (मं०) ऊन का गोला।
**लट्टू**—पु० (चं०) बल्ब।
**लठ**—पु० (चं०) लाठी।
**लठयान**—पु० (सो०) पीठ के बल गिरने का भाव।
**लठयानणा**—स० क्रि० (सो०) पीठ लगाना।
**लठिंगर**—वि० (सो०) आवारा।
**लठींगणा**—वि० (सो०) छोटे कद का परंतु तगड़ा (व्यक्ति)।
**लठींगर**—वि० (सि०, मं०) आवारा; लंबा चौड़ा; झगड़ालू।
**लड़**—पु० सहारा।
**लड़**—स्त्री० आटे की चिकनाहट।
**लड़**—पु० (चं०) दामन, चुनरी का किनारा।
**लड़वाईया**—पु० (सि०) कुश्ती कराने वाला।
**लड़ाइणा**—स० क्रि० (कु०) लड़ाया जाना।
**लड़ाई**—स्त्री० लड़ाई-झगड़ा।
**लड़ाए**—स्त्री० (शि०) लड़ाई।
**लड़ाक**—अ० (कु०) धड़ाम।
**लड़ाक**—वि० झगड़ालू।
**लड़ाकसी**—पु० (कु०) वर का भाई जो वरयात्रा के समय वर के साथ पालकी में बैठता है।
**लड़ाणा**—स० क्रि० लड़ाना।
**लड़्डू**—वि० (मं०) झगड़ालू।
**लड़ेरना**—स० क्रि० (कु०) उबलते तरल पदार्थ से शरीर को जला देना।
**लड़ेरना**—स० क्रि० लड़ाई करवाना।
**लड़ढा**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) लाडला, प्रियतम।
**लढ़णा**—अ० क्रि० (चं०) गिरना।
**लढ़णा**—स० क्रि० बारीक पीसना।
**लढ़ा**—स्त्री० वृक्ष की लंबी व पतली टहनी।
**लढ़ी**—स्त्री० (चं०) कोठे के ऊपर का स्थान।
**लणयारा**—पु० (बि०) नोनी या कुलफा नामक साग।
**लणाई**—स्त्री० फसल की कटाई।
**लणेहर**—स्त्री० (कां०) लोगों के सहयोग से फसल की कटाई करने की क्रिया।
**लणो**—स० क्रि० (शि०) लेना।
**लत**—स्त्री० लत।

**लतड़फतड़**—वि० (सि०) लथपथ।
**लतड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) पैर या लात से मारना।
**लतपीड़ण**—पु० पैरों से कुचलने का भाव।
**लतरे**—पु० (शि०) लड़ाई के समय दूसरे को गाली निकालने का भाव।
**लताखड़**—वि० लात मारने वाली (गाय, भैंस आदि)।
**लतावणो**—स० क्रि० (शि०) पैरों से प्रहार करना।
**लतेरचंपा**—स्त्री० (कां०) मुचकुंद।
**लतै:ड़ी**—स्त्री० (ह०) पानी गर्म करने का बर्तन।
**लतैहड़**—पु० (कां०) लात मारने का भाव, वि० लात मारने वाली।
**लत्त**—(स्त्री०) लत, बुरी आदत।
**लत्थ**—स्त्री० चंचल स्त्री।
**लत्थणा**—स० क्रि० (सो०) किसी वस्तु का थोपना।
**लत्या:णा**—स० क्रि० (ह०) लातें मारना।
**लथड़ीन**—स्त्री० (सो०) किसी दुर्गंधयुक्त वस्तु के लेप की गंध।
**लथड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) लेप लगाना, अरबी आदि के पत्तों पर बेसन आदि का लेप लगाना।
**लथाड़ना**—अ० क्रि० (सि०) अस्वस्थ होना।
**लद**—पु० ऊंचा स्थान।
**लद**—स्त्री० घोड़े का बोझ।
**लद**—स्त्री० (चं०) विवाहादि के समय संबंधी जनों या ग्रामीणों के द्वारा पीसने के लिए ले जाया जाने वाला अन्न का बोझ।
**लदड़ेती**—पु० शादी में लड़की की डोली पहुंचाने आए उसके संबंधी।
**लदणा**—स० क्रि० लादना।
**लदान**—स्त्री० ढुलाई।
**लदार**—वि० सामान लादने वाला।
**लदी:णा**—अ० क्रि० (चं०) लद जाना।
**लदोणा**—अ० क्रि० बोझ से दब जाना।
**लदौड़ा**—पु० घोड़े, गधे अथवा ऊंट की लीद।
**लदौण**—स्त्री० सामान लादने का पारिश्रमिक।
**लदौणा**—स० क्रि० घोड़े आदि पर सामान लादना।
**लद्दा**—पु० मकान का शिखर।
**लद्दा**—पु० (शि०) खच्चर की पीठ पर पड़ा दाग।
**लधड़ेतु**—पु० (सि०) वधु का पिता।
**लप**—स्त्री० (कां०, चं०) अंजलि।
**लप**—स्त्री० (चं०) लपट।
**लप**—स्त्री० (सो०) वायु विकार से होने वाली दर्द।
**लपकणा**—अ० क्रि० लपकना, कोई चीज़ पाने के लिए हाथ बढ़ाना।
**लपका**—पु० (सि०) स्वभाव।
**लपकेरना**—स० क्रि० प्रेरित करना।
**लपझप**—अ० (चं०) शीघ्र।
**लपझपा**—वि० चमकीला।
**लपट**—स्त्री० लपट।
**लपटोणा**—अ० क्रि० लिपटना, लपेट में आना।
**लपणा**—स० क्रि० (शि०, ह०) उकसाना। अ० क्रि० झुकना।
**लपलपा**—वि० फुरतीला।
**लपलपा**—वि० (कु०) चिपचिपा।
**लपाई**—स्त्री० लिपाई।
**लपाए**—स्त्री० (शि०) लिपाई।
**लपाका**—पु० अचानक होने वाली दर्द।
**लपाका**—पु० (सि०) जल्दी-जल्दी खाने की इच्छा।
**लपाने**—स्त्री० (सि०) जीभ से पानी चलने की क्रिया।
**लपारी**—स्त्री० (चं०) दर्द, वेदना।
**लपाळ**—स्त्री० (सो०) छलांग।
**लपाळ**—स्त्री० (ह०) लपट।
**लपालप**—अ० जल्दी-जल्दी।
**लपालुप**—अ० क्रि० (सि०) शीघ्रता वश।
**लपासी**—वि० (मं०) स्वार्थी।
**लपेटणा**—स० क्रि० लपेटना।
**लपेटिणा**—स० क्रि० (कु०) लपेटा जाना।
**लपोखणा**—वि० (मं०) आश्चर्य चकित।
**लपोगड़**—वि० लापरवाह, अत्यधिक सीधा।
**लपोच**—पु० प्यार।
**लपोच**—वि० (बि०) लालची।
**लपोचड़**—वि० बेवकूफ।
**लपोचा**—वि० मूर्ख।
**लपोड़**—स्त्री० क्रोध, उत्तेजना।
**लपोड़**—स्त्री० (सि०) सनक।
**लपोड़ना**—स० क्रि० (सो०) किसी तरल पदार्थ को चारों ओर लगाना; खराब करना।
**लप्पड़**—पु० चपत, चांटा।
**लफंगा**—वि० अवारा।
**लफंटर**—वि० दे० लफंगा।
**लफड़**—पु० चपत, चांटा।
**लफड़ा**—पु० कठिनाई, समस्या।
**लफणा**—अ० क्रि० झुकना, लटकना।
**लफाफा**—पु० लिफाफा।
**लफींड**—पु० (सि०) छोटा खीरा।
**लफीड**—पु० (चं०) बड़ा भुट्टा।
**लफेड़**—पु० (सि०) चांटा।
**लफोहटी**—स्त्री० रजाई।
**लफ्फड़**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) जोर का चांटा।
**लफ्फण**—स्त्री० (बि०) फूलने वाली शाखा।
**लबड़**—पु० होंठ।
**लबड़के**—पु० (सो०) अभाव की स्थिति।
**लबड़यांग**—वि० लंबा।
**लबड़लबड़**—पु० अधिक बोलने का भाव।
**लबड़ोठ**—पु० (सो०) लिपे-पुते होंठ।
**लबड़ोठ**—पु० (कु०) बाहर की तरफ नीचे की ओर झुके होंठ।
**लबड़ोणा**—अ० क्रि० लथपथ होना।
**लबलैरा**—वि० (शि०) बातूनी।

**लबाड़ा**—वि० अधिक व सारहीन बातें करने वाला।
**लबाणा**—पु० (चं०) खच्चर का स्वामी, पशुओं का व्यापारी; नमक का व्यापारी।
**लबाणों**—पु० (चं०) दे० लबाणा।
**लबारी**—स्त्री० (कु०) अलमारी।
**लबालब**—वि० भरपूर।
**लबावणा**—वि० (सि०, सो०) मनमोहक।
**लबास**—पु० वेशभूषा, लिबास।
**लबूदड़**—वि० कुरूप।
**लबेड़णा**—स० क्रि० (कु०) लीपना।
**लबेड़ना**—स० क्रि० लथपथ करना।
**लबेड़िणा**—अ० क्रि० (कु०) लथपथ होना।
**लब्ध**—वि० प्राप्त।
**लब्बड़**—पु० होंठ।
**लभणा**—स० क्रि० पाना, ढूंढ़ना।
**लभाओणा**—वि० सुंदर, मनमोहक, लुभावना।
**लभेड़**—पु० दोनों हाथों में पकड़ा हुआ सामान।
**लभोणा**—अ० क्रि० (कां०) अग्रसर होने की चेष्टा करना।
**लमकणा**—अ० क्रि० लटकना; किसी चीज़ को प्राप्त करने के लिए हाथ बढ़ाना।
**लमकणा**—अ० क्रि० (चं०) लंबा होना।
**लमकन्ना**—वि० लंबकर्ण, लंबे कान वाला। पु० गधा।
**लमका**—वि० (सि०) लंबे आकार का।
**लमकाया**—पु० (कां०) चमगादड़।
**लमको**—पु० (मं०) स्थानीय बेलदार सब्जी विशेष।
**लमजाड़ा**—वि० (मं०) लंबा।
**लमटींग**—वि० लंबा (आदमी)।
**लमधड़ंगा**—वि० (सि०, शि०) बहुत लंबा।
**लमलम्मी**—स्त्री० (सि०) किसी चीज़ को खाने की शीघ्रता।
**लमसम**—अ० लगभग।
**लमसार**—वि० तिरछा।
**लमोतरा**—वि० लंबा, लंबी आकृति का।
**लम्बलम्मा**—वि० (बि०) लंबा-चौड़ा।
**लम्म**—स्त्री० (चं०) लंबाई।
**लम्मधड़म्म**—वि० ऊंचा, लंबा।
**लम्मरदार**—पु० (बि०) नंबरदार।
**लम्मा**—वि० (कु०) लंबा।
**लयाण**—स्त्री० (सि०) पंक्ति।
**लयारथी**—स्त्री० (चं०, सो०, सि०) प्रसूता।
**लयेआ**—पु० (सि०) लेवा, गाय-भैंस आदि का थैली जैसा अंग जिसमें दूध रहता है।
**लयोड़**—स्त्री० (सि०) दोहरी सिलाई।
**लयौणा**—स० क्रि० लाना।
**लर**—स्त्री० पशुओं के चारे के लिए वृक्ष की टहनियां काटते समय वृक्ष की वृद्धि के लिए रखी गई शेष लंबी शाखा।
**लरज**—स्त्री० माला।
**लरजणा**—अ० क्रि० (चं०) कांपना।
**लरजां**—स्त्री० (सि०) वस्त्र की किनारियां।
**लरेपी**—वि० (मं०) रोने वाला।
**ललकारणा**—स० क्रि० ललकारना।
**ललकेरणा**—स० क्रि० प्रेरित करना।
**ललची**—वि० लालची।
**ललाम**—पु० नीलाम।
**ललारी**—पु० रंगरेज़।
**ललोण**—स्त्री० (शि०) Ligustrum compacta.
**लवणो**—स० क्रि० (शि०) लेना। घास काटना।
**लवांग**—स्त्री० (कु०) झूठी बात।
**ळवाई**—स्त्री० (शि०, सि०) लंबा घास।
**लवाकणा**—स० क्रि० (सो०) लालच देकर किसी को वश में करना।
**लवाखणा**—स० क्रि० (बि०) ताकना।
**लवाणका**—पु० (बि०) पेट संबंधी रोग।
**लवाणा**—स० क्रि० (सो०) लगवाना।
**लवाणेयो**—स्त्री० (सि०) एक प्रकार का घास जो गेहूं या जौ के बीच उगता है।
**लवाद**—स्त्री० औलाद।
**लवायणे**—स्त्री० (सो०) जौ की घटिया किस्म।
**लवारश**—वि० (कु०) लावारिस।
**लवाळ**—स्त्री० (सो०) छलांग।
**लवाळका**—पु० नाभि खिसकने का भाव।
**लवालणा**—स० क्रि० उछालना।
**लवाहा**—पु० नीचे उतरने का रास्ता।
**लवाहर**—पु० लुहार।
**लशकदा**—वि० चमक वाला, चमकदार।
**लशकर**—पु० सेना, सशस्त्र दल।
**लशाका**—पु० (कु०) स्फूर्ति।
**लशकारा**—पु० चमक।
**लशटा**—वि० चालाक।
**लशाका**—पु० चमक।
**लशालशी**—अ० (कु०) जल्दी-जल्दी।
**लशैड़**—वि० (शि०) ढीठ।
**लशोड़ा**—पु० (सो०) केंचुआ।
**लसकणा**—अ० क्रि० (सि०) चमकना।
**लसणो**—पु० (सि०) लहसुन।
**लसर**—स्त्री० कोंपल।
**लसरना**—अ० क्रि० (सो०) बीमारी या आलस्य के कारण लेटना।
**लसलसांदा**—वि० (बि०) चमकता हुआ।
**लसलसा**—वि० (शि०) नाज़ुक।
**लसलसाणा**—स० क्रि० चमकाना।
**लसलसात**—स्त्री० चमचमाहट।
**लसाका**—पु० निर्मल आकाश में बिजली की चमक।
**लसाका**—पु० (बि०, मं०) पीड़ा।
**लसाहण**—स्त्री० (मं०) राई का पहाड़ बनाने की कोशिश।
**लसूड़ा**—पु० एक वृक्ष का नाम तथा उसका फल।
**लसूण**—पु० (शि०) लहसुन।

**लसोएगी**—स्त्री० (मं०) प्रसूता।
**लसोड़े**—पु० (मं०) आंतरिक फुंसियां।
**लस्कारा**—पु० चमक।
**लस्यदे**—पु० (ह०) 'लसूड़ा' नामक वृक्ष से प्राप्त सब्जी।
**लस्सण**—पु० (चं०, बि०) शरीर पर पड़ा जन्मजात चिह्न।
**लस्सी**—स्त्री० छाछ।
**लस्से**—स्त्री० (मं०) दीमक।
**लहक्षणा**—अ० क्रि० (सि०) दिखाई देना।
**लहठणा**—अ० क्रि० (सि०) गिरना।
**लहणो**—पु० (शि०) लोहा।
**लहन्ना**—वि० (कु०) बारीक।
**लहफ**—पु० (मं०) लैंप।
**लहर**—पु० (मं०) लुहार।
**लहल**—स्त्री० (ह०) चीख।
**लहलह**—स्त्री० बंदरों को डराने के लिए किया गया शब्द।
**लहवामा**—पु० (मं०) ताना।
**लहवार**—पु० (सि०) लुहार।
**लहवालू**—पु० (सि०) हल के आगे लगा लोहा।
**लहशण**—पु० (मं०) लहसुन।
**लहसोणा**—अ० क्रि० कमज़ोर होना।
**लहांग**—स्त्री० (सि०) शाखा। ऊन की पट्टी।
**लहा**—वि० (चं०) लंगड़ा।
**लहाखणा**—स० क्रि० (सि०) देखना।
**लहाड़ी**—स्त्री० (ह०) हल की हत्थी।
**लहाणा**—स० क्रि० (सि०) हिलाना।
**लहाफ**—स्त्री० लपट।
**लहारण**—स्त्री० (शि०) लुहारिन।
**लहास**—स्त्री० (सि०) लाश।
**लहासा**—पु० (सि०) कटी हुई ज़मीन, गिरी हुई भूमि का भाग, भूस्खलन।
**लही**—स्त्री० (शि०) कुतिया।
**लहीरणा**—स० क्रि० (कु०) सब्जी आदि छीलना।
**लहीस**—पु० (शि०, सो०) Rhamnus purpureus.
**लहीसा**—वि० (कु०) नाज़ुक।
**लहुकड़ी**—स्त्री० (मं०) हल व जुए को जोड़ने वाली कीली।
**लहुसा**—वि० (बि०) लापरवाह।
**लहू**—पु० रक्त।
**लहूशणा**—स० क्रि० (कु०) आंच में जलाना।
**लहूसणा**—स० क्रि० (मं०) कम आंच में तपाना।
**लहेलणा**—स० क्रि० (ह०) हिलाना।
**लहोड़**—पु० (बि०, कु०) गोड़ाई के लिए फसल में चलाया हल।
**लहौणी**—स्त्री० (सि०) किसी पदार्थ से उठती भांप।
**लहौलू**—पु० हल में लगने वाला लोहे का तेज औज़ार।
**लहड़**—पु० (कु०, चं०) मेढ़ा।
**लहड़ी**—स्त्री० (कु०) हल के बीच में लगी लोहे की पत्ती।
**लहडुपहड्डु**—पु० (सि०) सारा सामान, फुटकर सामान।
**लहफणा**—अ० क्रि० (चं०) नर्म होना; पेड़ की शाखा का झुकना।
**लांई**—स्त्री० विवाह के फेरे।
**लांकड़ा**—पु० (सि०) दे० लंकड़ा।
**लांग**—पु० (बि०) वह स्थल जहां से खड्ड को पार किया जा सके।
**लांग**—पु० (सि०) मक्की या गेहूं के पौधे की पीले रंग की पत्तियां।
**लांगड़**—स्त्री० (ऊ०, कां०, चं०) लंगोटी।
**लांगड़ा**—वि० (सो०) लंगड़ा।
**लांगणो**—स० क्रि० (शि०) लांघना।
**लांगदेणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) लंगड़ापन होना।
**लांगा**—पु० (सो०) पशुओं आदि को रोकने के लिए मार्ग में लगाई गई लकड़ी।
**लांघ**—पु० लंबा कदम।
**लांघ**—पु० (कां०) ऊनी चादर।
**लांघ**—पु० (चं०) रास्ता।
**लांघणा**—स० क्रि० (कु०) लांघना, पार करना।
**लांघा**—पु० (कु०) दो डंडों से बनी अर्गला।
**लांघा**—पु० (कु०) विवाहादि कार्य।
**लांघा**—पु० (कु०) नदी पार करने का स्थान।
**लांघिणा**—स० क्रि० (कु०) लांघा जाना, पार किया जाना।
**लांघी**—स्त्री० (कु०) पेशाब, मूत्र।
**लांझा-पांझा**—वि० (शि०, सि०) ऊटपटांग।
**लांदड़ा**—पु० (मं०) मकान की दीवार का वह भाग जो छप्पर के नीचे खाली रहता है।
**लांप**—पु० (कु०) लैंप, दीपक।
**लांफचिंफि**—वि० (शि०) दे० छमकछल्लो।
**लांब**—पु० (बि०) नुकीला घास।
**लांब**—पु० (कु०) खुले मुंह वाला एक बड़ा बर्तन।
**लांबड़**—पु० अन्न को उबाल कर दिया जाने वाला पशुओं का आहार।
**लांबड़ा**—वि० (सो०) कुछ लंबा।
**लांबा**—पु० (कु०) लामा, बौद्ध धर्म का गुरु।
**लांबा**—वि० (सि०) लंबा।
**लांबुआ**—पु० (चं०, बि०) चिता में लगाई जाने वाली आग।
**लांबू**—पु० (शि०, सि०) अरबी के पत्ते।
**लांबू**—स्त्री० (बि०) अरथी में लगाई जाने वाली रस्सी।
**लांबू**—पु० (शि०) बड़ा पतीला। लंबा आदमी।
**लांभर**—पु० (कु०) नंबरदार।
**लांमा**—वि० (कु०) किनारे का, अलग।
**ला:यण**—स्त्री० (सो०) फल तोड़ने की लंबी मुड़ी हुई लाठी।
**ला:स**—स्त्री० (शि०, सो०) मक्की के आटे की लेस।
**ला:हल**—पु० (बि०) हलाल, सताकर मारने का भाव।
**ला**—अ० क्रि० (सि०) होना।
**लाइची**—स्त्री० इलायची।
**लाइणा**—स० क्रि० (कु०) लगाया जाना।
**लाईणा**—स० क्रि० (मं०) लगाना।
**लाउदू**—पु० (शि०) भेड़ का बच्चा।

**लाउणा**—स० क्रि० (कु०) खरीदना।
**लाऊंआ घालणा**—स० क्रि० (मं०) धान रोपने के लिए खेत तैयार करना।
**लाऊकड़**—स्त्री० (शि०) एक लंबी बेल।
**लाए**—पु० (शि०) लकड़ी का डिपो।
**लाएण**—स्त्री० (सि०) दाल-सब्जी।
**लाओ**—पु० (मं०) घास का गट्ठर।
**लाओण**—स्त्री० (सि०) घाघरे की किनारी।
**लाकड़ी**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) लकड़ी।
**लाकड़ो**—पु० (चं०) चेचक।
**लाकर**—स्त्री० (मं०) चावल में लगने वाला कीड़ा।
**लाका**—पु० क्षेत्र, इलाका।
**लाक्खा**—वि० (कु०) तेलिया रंग का, लाक्षा रंग का।
**लाख**—वि० (कु०) बीस 'पौथा' अनाज के बराबर का माप।
**लाख**—स्त्री० लाक्षा।
**लाखड़**—स्त्री० (शि०) पशु हांकने के लिए प्रयुक्त छड़ी।
**लाखा**—वि० (सि०) लाल पीले रंग का।
**लाग**—पु० (सि०) दक्षिणा।
**लाग**—स्त्री० (चं०) फर्ज।
**लाग**—स्त्री० (चं०) भाग।
**लाग**—पु० (शि०) संबंध; बंदिश।
**लाग**—पु० (बि०) विवाह के अवसर पर बेदी में दिए जाने वाले पैसे।
**लाग**—स्त्री० (सि०) ज़हरीला घास।
**लाग**—स्त्री० (कु०, चं०) प्रभाव, नशा,नशे का प्रभाव।
**लाग**—स्त्री० संक्रामक रोग का प्रभाव।
**लागजोग**—पु० (कु०) भूत प्रेत का प्रभाव।
**लागड़**—वि० प्रसूता भैंस।
**लागड़**—वि० संक्रामक।
**लागड़ू**—वि० संक्रामक।
**लागड़ू**—वि० (कु०) संबंधियों के लिए अशुभ (शिशु आदि)।
**लागणा**—स० क्रि० (सो०) पीटना, तंग करना।
**लागणा**—अ० क्रि० लगना।
**लागणो**—अ० क्रि० (शि०) लगना।
**लागत**—स्त्री० आवश्यकता, खर्च।
**लागतपागत**—अ० (मं०) खर्च इत्यादि।
**लागा**—पु० बीमारी आदि के कारण एक स्थान पर बैठे या सोए रहने पर देह से आने वाली दुर्गंध।
**लागा**—पु० भारी बोझ के कारण खच्चर आदि पशुओं की चमड़ी आदि छिलने से शरीर में पड़ा घाव।
**लागिच**—पु० (सि०) भूत-प्रेत की छाया।
**लागी**—पु० विवाह विधि को संपन्न करवाने वाले पुरोहित नाई और वाद्ययंत्र बजाने वाले।
**लागी**—स्त्री० (मं०) चोट।
**लागु**—वि० (चं०) संघर्षरत।
**लागु**—वि० (चं०) प्रभावी।
**लागू**—पु० (शि०, सि०) साक्षी।
**लागू**—वि० (चं०) पीछा करने वाला।
**लाच**—स्त्री० (कु०) कदम।
**लाचरा**—वि० (शि०) कच्चा।
**लाचार**—वि० (सि०) अस्वस्थ, विवश।
**लाच्छा**—पु० (बि०) हाड़ मांस का लोथड़ा।
**लाछणा**—स० क्रि० लकड़ी को कुल्हाड़ी से छीलना।
**लाछ्आणो**—अ० क्रि० (सि०) नाक से खून आना।
**लाज**—स्त्री० मर्यादा, शर्म, लज्जा।
**लाज़**—पु० (कु०, चं०) इलाज, चिकित्सा।
**लाज़कारी**—स्त्री० (कु०) उपचार, उपाय, इलाज।
**लाज़ा**—वि० (शि०, सि०, सो०) कमज़ोर।
**लाज्जपात्त**—स्त्री० (बि०) लाजशर्म।
**लाट**—पु० (बि०) गुड़ का पतला द्रव जो पीने के तंबाकू को बनाने के काम आता है।
**लाट**—पु० (सि०) बड़ा अफसर।
**लाट**—स्त्री० किसी चीज़ की याद आने का भाव।
**लटका**—वि० (कु०) लंगड़ा।
**लाटण**—वि० (सि०) अभिमानी।
**लाटर**—स्त्री० (सो०) दे० लाकर।
**लाटरी**—स्त्री० लॉटरी।
**लाटा**—वि० (सि०, सो०) तोतला बोलने वाला, हकलाने वाला।
**लाटा**—वि० (कु०) लंगड़ा।
**लाटा**—पु० (शि०) लोक वार्ता में एक गूंगा वीर।
**लाटू**—पु० लट्टू, बल्ब।
**लाठरू**—पु० पालकी उठाने हेतु प्रयुक्त बांस के दो बड़े व दो छोटे डंडे।
**लाठो**—पु० (शि०, सि०) भूत-प्रेत की छाया।
**लाड**—पु० प्यार।
**लाड़**—स्त्री० (ह०) घर के पास की उपजाऊ भूमि।
**लाड़**—स्त्री० (मं०) लार।
**लाड़का**—वि० (कु०) लाड़ला।
**लाडकी**—स्त्री० (ह०) जाल।
**लाडकू**—वि० (शि०) लाड़ला।
**लाड़च**—पु० (कु०) लालच।
**लाडला**—वि० प्रिय।
**लाड़सु**—पु० (शि०) वर का भाई।
**लाड़ा**—पु० वर, दूल्हा।
**लाड़ी**—स्त्री० दुलहन, वधू।
**लाडू**—पु० (शि०) अखरोट की गिरी।
**लाड़े**—स्त्री० (शि०) ठकुराइन।
**लाडडू**—पु० (कु०) लड्डू।
**लाडु**—पु० (चं०) ऊन का गुच्छा।
**लाण**—पु० (सि०, कु०, चं०) वेशभूषा।
**लाणकल्वाण**—स्त्री० (बि०) उलटी बीमारी।
**लाणका**—पु० (शि०) पुराना वस्त्र।
**लाणत**—स्त्री० (सि०) धिक्कार, लानत।
**लाणा**—स० क्रि० (कु०) पहनना।
**लाणा**—स० क्रि० (चं०) लाना, ले आना।

**लाणा**—पु० (बि०) बहुत से लोगों का समूह।
**लाणा**—स० क्रि० लगाना।
**लाणो**—स० क्रि० (शि०) काटना।
**लात**—स्त्री० पैर, पद।
**लात**—स्त्री० (बि०) आदत।
**लातड्ड**—पु० बच्चों के पैर।
**लादणा**—स० क्रि० लादना।
**लादा**—पु० (मं०, बि०) छत में प्रयुक्त बड़ा शहतीर।
**लादा**—पु० (शि०) गंदगी का समूह।
**लादा**—वि० (चं०) सामान लादने वाला।
**लादी**—पु० (सि०) दे० लबाणा।
**लादे**—पु० (शि०) दाग।
**लादू**—पु० भार वाहक पशु।
**लाधड़**—पु० (कु०) लड़की की ओर से दुलहन के साथ दूल्हा के घर जाने वाले लोग।
**लान्हा**—वि० (कु०) बारीक।
**लापचौड़**—पु० (कां०) लंबाई-चौड़ाई।
**लापोलापे**—वि० (मं०) घनघोर (बादल)।
**लाफाचंदी**—वि० (मं०) चंचल (लड़की)।
**लाफी**—स्त्री० (कु०) नमक या मीठा डाल कर पकाया आटे का घोल जिसे छोटे बच्चों को खिलाया जाता है।
**लाफी**—स्त्री० (शि०) कोदा, बथुआ आदि का बनाया पतला पकवान।
**लाबटू**—पु० (सो०) मेमना।
**लाबड़**—पु० (मं०) नितंब।
**लाबण**—स्त्री० (सो०) ब्याई हुई गाय या भैंस।
**लाबर**—पु० (कु०) टांग का घुटने से ऊपर का भाग।
**लाबू**—पु० (सि०) पत्ता, अरवी का पत्ता।
**लाभर**—पु० (कु०) कांटेदार डंडा।
**लाम**—पु० मोर्चा।
**लामड़**—पु० (सि०) भैंस को दिया जाने वाला अनाज।
**लामण**—पु० (शि०) गोश्त का एक टुकड़ा।
**लामण**—पु० (कु०, शि०) लंबी लय में गाया जाने वाला एक लोक गीत।
**लामली**—वि० (सो०) शरारती, चालबाज़।
**लायक**—वि० योग्य।
**लायरा**—पु० (बि०) नई ब्याई गाय का पहले पांच छः दिन का दूध।
**लाया**—पु० (मं०) दहेज।
**लार**—स्त्री० लार।
**लारथी**—स्त्री० (चं०) प्रसूता।
**लारना**—स० क्रि० (कां०) भेड़-बकरियों को अपने पीछे चलाना।
**लारा**—पु० झूठा विश्वास।
**लारा**—वि० (सि०) बहुसंख्यक।
**लारालप्पा**—अ० झूठा विश्वास।
**लारी**—स्त्री० गाड़ी।
**लाळ**—स्त्री० लार।
**लालअछू**—पु० Rubus paniculatus.
**लालकश**—वि० (कु०) हलका लाल।
**लालखड़ा**—वि० (कां०, कु०) रक्त वर्ण का।
**लालची**—वि० लोभी।
**लालटीन**—स्त्री० लालटेन।
**लालबन्नी**—स्त्री० (सि०) चिकनी लाल मिट्टी जिसे भिगो कर फोड़े पर लगाया जाता है।
**लालमुंहा**—पु० वानर।
**लालरा**—वि० (कु०) थोड़े लाल रंग का।
**लाललकड़ी**—स्त्री० (सि०) Osyris wightiana.
**लाला**—पु० दुकानदार।
**लाली**—स्त्री० रक्तिमा।
**लालुआद**—पु० (कु०) संतान, औलाद।
**लालू**—वि० (कु०) लाल रंग का।
**लाळू**—पु० पशुओं के खुरों का रोग।
**लालहड़ी**—स्त्री० (कु०) एक लोक-गीत जिसे पंक्ति में धीमी गति से नाचते हुए गाया जाता है।
**लावां**—स्त्री० (बि०) विवाह के समय की जाने वाली अग्नि परिक्रमा।
**लावाटावा**—वि० (मं०) कोमल।
**लावी**—वि० (मं०) कोमल।
**लावे**—स्त्री० (शि०) बेल।
**लाशो**—वि० (मं०) साफ (वृक्ष)।
**लास**—स्त्री० शव।
**लासरु**—पु० (सि०) सामने बड़ाई करने की क्रिया।
**लास्सा**—पु० (सो०) भूस्खलन।
**लाह**—पु० (कु०) (जल्दी) लाभ।
**लाह**—पु० किसी से अधिक काम लेने का भाव।
**लाहट**—पु० (कु०) प्रहार से हुआ निशान।
**लाहटू**—पु० (कु०) ऊन का गुच्छा।
**लाहड़**—स्त्री० घर के पास का उपजाऊ खेत।
**लाहड़ी**—स्त्री० (ह०) छोटी 'लाहड़'।
**लाहड़ी**—स्त्री० (कां०) बागवानी।
**लाहड्ड**—पु० (कां०) उद्यान।
**लाहण**—स्त्री० शराब निकालने के लिए गुड़ जौ आदि का मिश्रण।
**लाहण**—पु० (मं०) छड़ी का निशान।
**लाहणा**—अ० क्रि० (सि०) ज़ोर की आग लगना।
**लाहणी**—स्त्री० (मं०) विवाह संस्कार का व्यंग्य गीत।
**लाहफ**—पु० (बि०) आशा की उड़ान।
**लाही**—स्त्री० (कु०) ऊन का छोटा गुच्छा।
**लाही**—स्त्री० (कु०) जौ गेहूं को काटकर लगाया ढेर।
**लाहुली चीट**—स्त्री० (मं०) जहरीली चींटी।
**लाहूड़**—पु० (ह०) बड़ा खेत।
**लाहे-त्रोटे**—पु० (मं०) बातचीत।
**लाहौल**—पु० (मं०) वैशाखी का मेला।
**लाहु**—पु० लाभ।
**लाहए**—पु० (शि०) बथुआ का पकवान।

**लाइड़**—स्त्री० (कां०) विस्तृत भूखंड।
**लाइण**—स्त्री० (कु०) लंबी छड़ी।
**लाइदड़**—पु० (सि०) दे० लाघड़।
**लाइ्शण**—स्त्री० (कु०) शरीर पर पड़ा तिल से बड़ा और किंचित् भूरा दाग।
**लाइशा**—वि० (कु०) टेढ़ा।
**लाइशी**—वि० (कु०) टेढ़ी।
**लिंगचोळा**—पु० (बि०) विवाह के समय कन्या द्वारा पहना जाने वाला पीला लंबा चोगा।
**लिंगट**—स्त्री० (कु०) पूंछ।
**लिंगड़/ड़ी**—स्त्री० (शि०) एक वन्य सब्जी जो पानी के किनारे होती है।
**लिंगर**—वि० (कु०) बिल्कुल काला।
**लिंगर**—पु० (कु०) बैल का कंधा। गुच्छा।
**लिंजड़ी**—स्त्री० दूल्हा और दुलहन के कंधों पर फेरों के समय रखा जाने वाला पीला या लाल वस्त्र।
**लिंझ**—स्त्री० (कु०) कपड़े की बारीक लीर।
**लिंडा**—वि० (कु०, सि०) बिना पूंछ का (पशु), बिना आभूषणों का (गला, कान आदि)।
**लिंडु**—पु० (सि०) बिच्छूबूटी।
**लिंडो**—वि० (शि०) बाएं हाथ से काम करने वाला।
**लिंढ**—वि० (मं०) उचक्का, बदमाश।
**लिंबड़ना**—अ० क्रि० (बि०) जबरदस्ती किसी चीज़ से लथपथ होना।
**लिंबणा**—स० क्रि० (सि०) लीपना, साफ करना।
**लिंबर**—पु० (सो०) गालियों की बौछार।
**लिंबातरो**—पु० (सि०) फर्श साफ करने का कपड़ा।
**लिआर**—स्त्री० (कां०) नस्ल।
**लिऊरा**—वि० (कु०) लचकीला; निम्न।
**लिऊरी**—स्त्री० (शि०, सि०) चित्त आकर्षक आंखें।
**लिकड़ी**—स्त्री० (ह०) बारीक सूखी टहनी।
**लिकडु**—पु० (चं०) छोटा वस्त्र।
**लिकणा**—अ० क्रि० (सि०) गर्म यंत्र से किसी को दाग लगना।
**लिकत्रिक**—स्त्री० इधर-उधर गिराने का भाव।
**लिकलिक**—स्त्री० बच्चों की चंचलता।
**लिक्कड़**—पु० (चं०) कपड़े।
**लिखड़ा**—पु० (सि०) लकड़ी का कंघा।
**लिखणा**—स० क्रि० लिखना।
**लिखणू**—पु० कच्चे फर्श पर गोबर से बने हस्तकला के नमूने या चित्रकारी।
**लिखत**—वि० लिखित रूप में, लिखा हुआ।
**लिखलखा**—पु० (कु०) हिसाब-किताब।
**लिखिणा**—स० क्रि० (कु०) लिखा जाना।
**लिगंड**—पु० (शि०) Asplanuma polypadioides.
**लिगटा**—वि० अधिक गीला।
**लिगरा**—पु० (सो०) कोमल शाखा।
**लिग्गड़**—वि० नकारा, निकम्मा।
**लिग्गा**—वि० (चं०, बि०) गीला, अधिक जल-युक्त, आटा या चावल जिसमें पानी अधिक पड़ जाए।
**लिग्गा**—पु० (ऊ०) Bchmeria regulosa.
**लिचड़ी**—स्त्री० (कु०) आंख की मैल।
**लिचरी**—स्त्री० (सो०) कपड़े की कतरन।
**लिचलिचात**—स्त्री० हिलते रहने की क्रिया।
**लिच्चड़**—वि० (बि०) ढीठ; चिपके रहने वाला।
**लिछड़ो**—वि० (शि०) लालची।
**लिजलिजा**—वि० (बि०) चिपचिपा।
**लिज्जा**—वि० (सो०) कमज़ोर।
**लिटपटीणी**—स्त्री० (कु०) पलटा खाने की क्रिया, कलाबाजी।
**लिडकणा**—अ० क्रि० लटकना।
**लिड़का**—वि० (शि०) लालची।
**लिड़खणा**—स० क्रि० (सि०) प्यार करना।
**लिडूठा**—वि० कार्य करने में सुस्त।
**लिथड़ना**—अ० क्रि० (सि०) कीचड़ में संलिप्त होना।
**लिदणा**—अ० क्रि० (कु०) पशुओं का मल त्याग करना।
**लिद्द**—स्त्री० घोड़े का मल।
**लिन्ना**—वि० (मं०) एकदम गीलापन लिए हुए।
**लिपके**—पु० (शि०) लीपने का भाव।
**लिपटणा**—अ० क्रि० लिपटना।
**लिपड़ा**—वि० (सि०) सुस्त, पु० आंखों का मैल।
**लिपड़ी-झिपड़ी**—वि० (कु०) बदसूरत।
**लिपणा**—स० क्रि० लिपाई करना।
**लिप्सी**—स्त्री० (ह०) आटे, बेसन, मैदे मिश्रित खाद्य पदार्थ।
**लिफणा**—स० क्रि० (कु०) छीलना।
**लिफिणा**—स० क्रि० (कु०) छीला जाना।
**लिबड़ना**—अ० क्रि० लथपथ होना।
**लिबणो**—स० क्रि० (शि०) लिपाई करना।
**लिब्बड़**—पु० होंठ।
**लिम**—पु० (चं०) शंकु-प्रजाति का पेड़ चीड़।
**लियार**—स्त्री० (कां०) नस्ल, औलाद।
**लियुकरा**—वि० (शि०) लालची।
**लियूणिया**—वि० (सि०) ताक में बैठा (शिकारी)।
**लियोर**—पु० (चं०) देवदार।
**लिरड़ा**—पु० चिथड़ा।
**लिरड़ी**—स्त्री० कतरन।
**लिरडु**—पु० चिथड़ा।
**लिरड़े**—पु० (शि०) वस्त्र।
**लिला**—वि० (सि०) नीला।
**लिलाणा**—अ० क्रि० (शि०) चीखना।
**लिस्क**—स्त्री० (बि०) चमक।
**लिस्कणा**—अ० क्रि० चमकना।
**लिस्सा**—वि० दुर्बल, कमजोर, अस्वस्थ।
**लिह**—स्त्री० गीले दानों के घराट में पीसते समय चिपक जाने का भाव।
**लिहाइज़**—स्त्री० (कु०) ध्यान; संकोच; लज्जा; लिहाज़।

**लिहाड़ी**—स्त्री० (कु०) हल की हत्थी।
**लिहरा**—पु० (कु०) फटे वस्त्र का टुकड़ा।
**लींग**—पु० (ह०) लहंगे का घेरा।
**लींगड़ा**—पु० (मं०, शि०) गर्मी में पैदा होने वाला वन्य साग।
**लींगर**—वि० (शि०) विधुर, बेकार (व्यक्ति)।
**लींगणा**—अ० क्रि० (सि०) कमज़ोर होना।
**लींगणा**—पु० (मं०) पूंछ।
**लींगा**—पु० (सि०) पाजामे का जोड़।
**लींघ**—स्त्री० (बि०) छलांग।
**लींघ**—स्त्री० (सि०) पूंछ।
**लींघ**—स्त्री० (चं०) नेफा।
**लींज**—स्त्री० (सि०) खेत का पूंछ की आकृति का भाग।
**लींडा**—वि० बिना पूंछ का।
**लींडी**—स्त्री० (कु०, मं०) पशुओं की पूंछ में लगने वाली बीमारी।
**लींबू**—पु० नीबू।
**लींहगटू**—वि० (कां०) साथ-साथ चलने वाला, चापलूस।
**लींहगटू**—पु० (कां०) छोटी पूंछ।
**ली:णा**—स० क्रि० (बि०) खाल उतारना।
**लीक**—स्त्री० लकीर।
**लीकण**—पु० (सि०) सांप।
**लीकणा**—स० क्रि० (ह०) चित्र बनाना, लकीरें खींचना।
**लीख**—स्त्री० (चं०) जूं का अंडा, लीक्षा।
**लीच**—वि० (शि०) ढीठ।
**लीचा**—वि० (कु०) कमज़ोर, अस्वस्थ, जो बीमारी से अभी-अभी कुछ स्वस्थ हुआ हो।
**लीच्छ**—स्त्री० (मं०) दे० लीख।
**लीणा**—स० क्रि० (चं०) ले जाना।
**लीणा**—स० क्रि० (चं०) लीपना।
**लीत**—स्त्री० (शि०) लेस।
**लीत**—वि० (शि०) संबंधी।
**लीतड़ी**—स्त्री० (ह०) बड़ी जूं।
**लीतरा**—पु० (कु०) घास के पौधे में लगने वाला एक प्रकार का कांटेदार फूल जो कपड़ों में चिपकता है।
**लीन**—पु० (शि०) छिद्र।
**लीपणा**—स० क्रि० लीपना।
**लीमड़ा**—वि० जानते हुए भी अनजान बनने वाला।
**लीर**—स्त्री० कपड़े का टुकड़ा।
**लीरक**—स्त्री० (बि०) रेखा।
**लीरना**—स० क्रि० (ह०) कपड़े को काटना।
**लीशणो**—स० क्रि० (शि०) खींचना।
**लीह**—स्त्री० (शि०) उचित मार्ग। सुधबुध।
**लीहकणा**—अ० क्रि० (शि०) डरना, दूर रहना।
**लीहणी**—स्त्री० पशुओं को 'लांबड़' आदि खिलाने का पात्र।
**लीहणी**—स्त्री० (सि०) बांस का बना चौकोर टुकड़ा।
**लुंग**—स्त्री० अंकुर।
**लुंग**—पु० बच्चा।
**लुंग**—स्त्री० हरा व कोमल घास।
**लुंगड़ा**—पु० ऐसा भात जिसमें पानी अधिक पड़ गया हो।
**लुंगड़ू**—पु० दे० लिंगड़।
**लुंगणा**—अ० क्रि० अंकुरित होना।
**लुंगणा**—पु० (ऊ०, कां०) दूध-दही आदि के बर्तन को पकड़ने के लिए उसके गले में लगाई गई रस्सी।
**लुंगना**—स० क्रि० (मं०) धान-काटना।
**लुंगरना**—अ० क्रि० (कु०) टहलना।
**लुंगर-पुंगर**—वि० छोटा-मोटा।
**लुंगसणा**—अ० क्रि० (कु०) टल जाना।
**लुंगा**—स्त्री० पनीरी।
**लुंगाहर**—स्त्री० हरे घास का स्थान।
**लुंगिणा**—अ० क्रि० (कु०) सरकना।
**लुंजा**—वि० अपंग।
**लुंजी**—स्त्री० (बि०) Themoda anathera.
**लुंझका**—पु० (कु०) कपड़े, रस्सी आदि का टुकड़ा।
**लुंठड़े**—पु० शरीर पर निकले दाने।
**लुंड**—वि० ठग, लफंगा।
**लुंडू**—पु० (चं०) तसला।
**लुंदा**—पु० (बि०) पीछे का अंक, अ० अतिरिक्त।
**लुंब**—पु० काटे गए वृक्ष का मूल भाग।
**लुंब**—स्त्री० चीस, दर्द।
**लुंबड़ू**—वि० (शि०) घना।
**लुंबर**—पु० (मं०) दे० गुंबर।
**लुंबरू**—पु० (कु०) गुच्छा।
**लुआंगणा**—स० क्रि० (कु०) झूठ बोल कर ठगना।
**लुआंगिणा**—अ० क्रि० (कु०) ठगे जाना।
**लुआंचड़ी**—स्त्री० (चं०) नारी का विशेष वस्त्र, चोला।
**लुआंटा**—पु० हवा का झोंका।
**लुआई**—स्त्री० (कु०) पहाड़ों पर उगने वाला एक लंबा घास जो सूखा व अनकटा पड़ा रहता है।
**लुआई**—स्त्री० उतराई।
**लुआण**—पु० (चं०) चना।
**लुआणे**—पु० गेहूं के साथ उगने वाला घास।
**लुआना**—पु० आग की लपटें।
**लुआर**—पु० (कां०) लुहार।
**लुआरी**—स्त्री० (सि०) अलमारी।
**लुआळ**—पु० पतले आटे का चिलड़ा।
**लुआला**—पु० पेट की दर्द।
**लुआवटा**—पु० (शि०) जूता।
**लुइतरि**—स्त्री० (सो०) तवे में तेल लगाने का वस्त्र।
**लुई**—स्त्री० (शि०) बाल झड़ने की क्रिया।
**लुई**—स्त्री० (कां०) मछली की अंतड़ियां निकालने की क्रिया।
**लुक**—स्त्री० तारकोल।
**लुकणा**—अ० क्रि० (कु०) हिलना।
**लुकणा**—अ० क्रि० छिपना।
**लुकणो**—अ० क्रि० (शि०) चुपके से चलना।
**लुकमा**—पु० कौर, ग्रास।
**लुकर-पुकर**—स्त्री० (कु०) धीरे-धीरे काम करते रहने

का भाव।

**लुकलुकाणी**—स्त्री० छिपने का खेल, एक खेल जिसमें एक लड़का आंखें बंद करके बैठता है और शेष कहीं छिप जाते हैं जिन्हें वह बाद में ढूंढ़ता है।

**लुकलुकी**—स्त्री० हरकत, चंचलता।

**लुकलुकैड़ा**—पु० (ह०) दे० लुकलुकी।

**लुकाणा**—स० क्रि० छिपाना।

**लुकावणो**—स० क्रि० (शि०) रंगना। छिपाना।

**लुकी**—वि० (मं०) गुम।

**लुकोला**—पु० गुप्त स्थान।

**लुखरो**—वि० (चं०) तेलरहित, शुष्क।

**लुगड़मार**—पु० (कु०) 'लुगड़ी' पीने वाला, शराबी।

**लुगड़ा**—पु० मांड़ युक्त चावल।

**लुगड़ी**—स्त्री० (ह०) मांड़।

**लुगड़ी**—स्त्री० (कु०) कोदे के आटे में जड़ी-बूटी डाल कर तैयार किया गया नशीला पेय-पदार्थ।

**लुगड्डू**—पु० शिशु का छठे या आठवें मास का संस्कार जब उसे नमक या मीठे के साथ आटे के घोल को पका कर पिलाया जाता है।

**लुगड़े**—स्त्री० (शि०) पतली खिचड़ी।

**लुगणा**—अ० क्रि० (शि०) बाल झड़ना।

**लुगणा**—अ० क्रि० (चं०) कमज़ोर होना।

**लुगणा**—स० क्रि० फसल काटना।

**लुगलुगा**—वि० (कु०, बि०) नर्म, कोमल।

**लुगुदा**—वि० (कु०) सुस्त।

**लुघदा**—पु० (कु०) आटे और पानी का घोल।

**लुचकदा**—वि० (कु०) गीला, भीगा हुआ, वर्षा से बुरी तरह भीगा हुआ।

**लुचकी**—स्त्री० (शि०) चटनी।

**लुची**—वि० (बि०, चं०) खराब (स्त्री), दुष्टा।

**लुच्चा**—वि० बदमाश, धूर्त।

**लुच्ची**—स्त्री० (कां०) कचौरी।

**लुछणा**—स० क्रि० थोड़ा-थोड़ा मांस काटना।

**लुजबुज्जा**—वि० (शि०) ढीला-ढाला।

**लुज्ज**—पु० (बि०) कलाप्रवीणता।

**लुटकणा**—अ० क्रि० (बि०) लटकना।

**लुटकू**—पु० (सि०) मिट्टी का छोटा मटका।

**लुटड़ी**—स्त्री० (सि०) छोटा लोटा।

**लुटणा**—स० क्रि० लूटना।

**लुटणा**—स० क्रि० (कां०) उलटाना।

**लुटा**—स्त्री० (कु०) बिखरे हुए बाल।

**लुटिणा**—अ० क्रि० (कु०) लुटना।

**लुटिया**—स्त्री० (कु०, सि०) लोटा।

**लुटू**—वि० लुटेरा।

**लुड़कणा**—अ० क्रि० (सि०) लुढ़कना, लटकना।

**लुड़का**—पु० (सि०) झुमका।

**लुड़तोंद**—स्त्री० (कु०) संतान।

**लुड्डी**—स्त्री० एक लोक नृत्य।

**लुड्डी**—स्त्री० (बि०) सिर के बल पलटने का भाव।

**लुढ़के**—स्त्री० (कु०) विवाह में दिया गया खाद्य पदार्थ।

**लुढ़ा**—पु० अन्न में उत्पन्न सफेद कीट।

**लुढ़ाणा**—स० क्रि० (चं०) गिराना।

**लुढ़ी**—स्त्री० (मं०) हल की लंबी लकड़ी के निचले भाग में लगने वाला लोहे का चपटा टुकड़ा।

**लुणका**—वि० नमकीन।

**लुणटी**—स्त्री० (कु०) नमक की एक अभिमंत्रित डली जिसे पाचन शक्ति के विकार के उपचार के लिए मुंह में रखकर चूसते रहते हैं।

**लुणना**—स० क्रि० घास या फसल काटना।

**लुणसू**—पु० (मं०) नमक डालने का मिट्टी का पात्र।

**लुणाई**—स्त्री० (ह०) कटाई।

**लुणार**—पु० (चं०) घास काटने वाला व्यक्ति।

**लुणावा**—पु० (ह०) फसल काटने वाला व्यक्ति।

**लुणाहर**—पु० (चं०) नमकीन पानी। प्याऊ।

**लुणिना**—स० क्रि० (कु०) फसल या घास काटा जाना।

**लुणी**—स्त्री० (मं०) नमकदानी।

**लुणूई**—वि० (शि०) नमकीन।

**लुतकलूती**—स्त्री० चुगली।

**लुतड़**—पु० (बि०) लुटेरा।

**लुतरना**—अ० क्रि० (कां०) उतरना।

**लुतराला**—वि० (सि०) ढीले स्वभाव वाला।

**लुतरी**—स्त्री० निंदा, चुगली।

**लुतरो**—वि० निंदक।

**लुत्थणा**—अ० क्रि० (बि०) प्रसन्नता से नाचना।

**लुथणा**—अ० क्रि० (सो०) बेल, रस्सी आदि का टूटना।

**लुदड़**—पु० (शि०) गिद्ध।

**लुदड्ड**—पु० (मं०) मोटे पत्ते वाली एक झाड़ी।

**लुदी**—स्त्री० (सि०) मादा गिद्ध।

**लुधी**—स्त्री० (मं०) गिद्ध।

**लुन्यारा**—पु० (ह०) एक प्रकार की खुदरौ सब्जी जो गंदम के खेतों में उगती है।

**लुपकु**—पु० (कु०) अभ्यास।

**लुपरी**—स्त्री० (चं०) उबटन।

**लुपरी**—स्त्री० (बि०) जड़ी बूटियों से बनाया मरहम जो सख्त फोड़े को पकाने के लिए गर्म करके लगाया जाता है।

**लुपी**—स्त्री० लपट।

**लुपी**—स्त्री० (कु०) लोई।

**लुप्पी**—स्त्री० वस्त्र में ऊपर से जोड़ी गई पट्टी।

**लुप्पे**—स्त्री० (सि०) लौ, लपट।

**लुफरी**—स्त्री० (कु०) नमक डाल कर या बिना नमक के आटे का पकाया पतला घोल जिसे बच्चों को खिलाया जाता है।

**लुयतड्ड**—पु० (शि०) उछाल।

**लुरके**—पु० (सि०) कर्णाभूषण।

**लुरना**—अ० क्रि० (कु०) कच्चे धागे का टूटना।

**लुर-लुर**—स्त्री० (मं०) ठिठुरन, सिकुड़न।

**लुरलुर**—वि० (बि०) ऐसी स्त्री या पुरुष जो व्यर्थ में

घूमते हैं।

**लुरालुरी**—स्त्री० (कु०) दबे पांव इधर-उधर फिरने का भाव।

**लुळकदा**—वि० (कु०) लचकदार; जो खड़ा न रह सके।

**लुशकणी**—स्त्री० (मं०) सर्दी से हाथ में होने वाली जलन।

**लुशकदा**—वि० (कु०) लचकीला।

**लुशका**—पु० (सो०, सि०) एक विशेष प्रकार के पत्थर के तवे पर बनाई डोसे की तरह की चावल, गेहूं या कोदे की रोटियां।

**लुशालुशी**—स्त्री० (कु०) लालसा।

**लुसके**—पु० (सि०) कपड़े।

**लुसणा**—अ० क्रि० (कु०) भूख से लुढ़कना।

**लुस्का**—पु० (बि०) दिल दुखाने की क्रिया।

**लुस्टणा**—वि० (कां०) अधजला।

**लुहड्डी**—स्त्री० (सि०) लोहे की छड़ी जो हल के मूल भाग में लगाई जाती है।

**लुहमूलू**—पु० (सि०) दे० लुहड्डी।

**लुहसर**—स्त्री० सर्द हवा।

**लुहांग**—स्त्री० (कु०) असत्य, गलत बात, अफवाह।

**लुहांगी**—वि० (कु०) असत्य बोलने वाला, अफवाह उड़ाने वाला।

**लुहांगी**—स्त्री० हल के अग्रभाग में लगा लोहा।

**लुहा**—स्त्री० (ह०) उतराई।

**लुहाखणा**—स० क्रि० (बि०) बुरी नज़र से देखना।

**लुहाटक**—पु० (ह०) होली के पहले आठ दिन, होलाष्टक।

**लुहाड़ा**—पु० (ह०) कड़ाही।

**लुहाड़ी**—स्त्री० (कां०) हल की हत्थी।

**लुहाण**—पु० (बि०) लाल वस्त्र।

**लुहाणा**—पु० (कां०) तरबूज।

**लुहान**—पु० लाल वस्त्र।

**लुहारड़ी**—स्त्री० लुहार की कार्यशाला।

**लुहाल**—पु० (कु०) हल का फाल।

**लुहालना**—अ० क्रि० (कु०) हल के फाल से ज़ख्म होना।

**लुहालना**—स० क्रि० पेट आदि को मलना।

**लुहालू**—पु० (कां०) हल का लोहे का फाल।

**लुहासणा**—स० क्रि० (कु०) अधिक गर्म पानी में पैर धोना, अधिक गर्म पानी से नहाना।

**लुहासिणा**—अ० क्रि० (कु०) गर्म पानी से पांव धोया जाना, जरूरत से ज्यादा गर्म पानी से नहाया जाना।

**लुहसकणा**—अ० क्रि० (बि०) झुलसना।

**लुहसखारणा**—स० क्रि० (सि०) जलाना।

**लुहसटणा**—अ० क्रि० (सि०) जलना।

**लूंग**—स्त्री० (सो०, बि०) अंकुर।

**लूंग**—स्त्री० (शि०) रस्सी की एक बाट।

**लूंग**—स्त्री० (शि०) किसी विशेष अवसर पर जौ, गेहूं आदि के अंकुरों को भेंट करने का व्यापार।

**लूंगणा**—अ० क्रि० (कु०) टहलना।

**लूंजा**—वि० (बि०, ह०) अंगहीन, अपंग।

**लूंजी**—स्त्री० (ऊ०) Sorghum nitidum.

**लू:णा**—स० क्रि० (सो०, शि०, सि०) 'पटांडे' बनाना।

**लू:शणा**—स० क्रि० (शि०, कु०) जलाना।

**लूई**—स्त्री० (कु०) चमड़ी।

**लूक**—स्त्री० (कु०, सि०) खुजली, खारिश।

**लूकड़ी**—स्त्री० (मं०) हल के सिरे में जुए के साथ लगी छोटी लकड़ी।

**लूकणा**—अ० क्रि० (शि०) छिपना। रेंगना।

**लूकणो**—पु० (मं०) एक कीड़ा विशेष।

**लूखणा**—स० क्रि० (कां०) जानना।

**लूगड़**—स्त्री० (सि०, शि०) रजाई में इकट्ठी हुई रुई।

**लूचा**—पु० (कां०, मं०) आलूचा, आलूबुखारा।

**लूचा**—वि० (शि०) स्वार्थी, कपटी।

**लूची**—स्त्री० (कु०) तेल में पकी मैदे की रोटी।

**लूटी**—स्त्री० (सि०) छोटी कड़ाही।

**लूड़**—स्त्री० (कु०) लता, बेल।

**लूण**—पु० नमक।

**लूणदू**—पु० (चं०) नमक, मिर्च, मसाले आदि रखने का लकड़ी का पात्र।

**लूणा**—वि० (कु०) नमकीन।

**लूणा**—वि० (सो०) कम नमक वाला (सालन)।

**लूत**—स्त्री० छूत की बीमारी जो प्रायः चमड़ी पर होती है।

**लूत**—वि० (शि०, सो०) चिपकने वाला, पीछे-पीछे चलने वाला।

**लूत**—वि० (सो०) कमज़ोर।

**लूत**—स्त्री० (शि०, सि०) बकरी का बाल झड़ने का रोग।

**लूतकरूती**—स्त्री० (कु०) अस्थिरता; उत्सुकता; चुगली।

**लूद**—पु० (शि०) गिद्ध।

**लूदर**—पु० (मं०) पानी में रहने वाला रेंगने वाला जीव।

**लूप**—स्त्री० (कु०) लपट, आग की लपट।

**लूमचा**—पु० (कु०) घड़ा जो 'लुगड़ी' आदि रखने के लिए प्रयुक्त होता है।

**लूर**—स्त्री० (ह०) नाक से बहता हुआ श्लेष्मा।

**लूरना**—अ० क्रि० (शि०, बि०) रेंगना, घुटनों के बल चलना।

**लूरनो**—अ० क्रि० (शि०) हारना।

**लूर-लूरकरना**—अ० क्रि० (ह०) दर-दर भटकना।

**लूरीकुली**—वि० (ह०) व्यर्थ ही हर द्वार पर घूमने वाली।

**लूशण**—स्त्री० (मं०) दे० लुइतरि।

**लूसणा**—अ० क्रि० (कु०) ढीला पड़ना।

**लूहंजरा**—वि० (कां०) बेसब्रा, अधीर।

**लूहंडा**—पु० (ह०) ऊंचे स्थान की चरागाह।

**लूहरी**—स्त्री० (ह०) ठिठुरा देने वाली सर्द हवा।

**लूहसका**—पु० व्यंग्य बाण।

**लूकदेणी**—अ० क्रि० (कु०) तीव्रता से निकल जाना।

**लेंगड़ा**—वि० (कु०) लंगड़ा।

**लेंगर**—पु० (कु०) पंक्ति।

**लेंगा**—पु० (कु०) तंग करने का भाव।

**लेंजा**—वि० मसखरा।

**लेंफ**—स्त्री० (कु०) दे० खिंद।
**ले:इ**—स्त्री० (सो०) घृणा।
**ले:श**—स्त्री० (सि०) चिकनाई।
**ले:शाक**—स्त्री० (सो०) चिकनाई।
**ले:शकरा**—वि० (सो०) चिकनाई वाला।
**ले:हसर**—वि० (सि०) कामचोर।
**ले**—अ० (शि०) संबोधन वाचक शब्द।
**लेइणा**—स० क्रि० (कु०) लिया जाना।
**लेउई**—स्त्री० (कु०) मिट्टी लीपने की क्रिया।
**लेउदर**—पु० (शि०) दीवार से उतरा पलस्तर का टुकड़ा।
**लेउदरा**—पु० (सि०) दे० लेउदर।
**लेउर**—स्त्री० (कु०) वासित समिधा।
**लेऊछर**—पु० (बि०) मिट्टी का ढेला।
**लेकरूआ**—वि० (कु०) घायल, ढीला।
**लेख**—पु० (सि०) इलज़ाम।
**लेख**—पु० भाग्य।
**लेखणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) ओढ़ना, लपेटना।
**लेखा**—पु० हिसाब-किताब।
**लेखा**—पु० (शि०) परवाह। उपमा।
**लेखा**—वि० (सि०, शि०) काफी।
**लेखेलाणा**—स० क्रि० (कु०) किसी द्वारा पूछा जाना।
**लेगळ**—वि० (सि०) सीधा-सादा।
**लेगा**—वि० (कु०) आटे का पतला होने का भाव, तर।
**लेघड़ा**—पु० (कु०) घोल।
**लेच**—स्त्री० (कु०) मिट्टी की मोटी परत।
**लेचर-पेचर**—स्त्री० (कु०) छोटे-मोटे काम को जल्दी-जल्दी करने का भाव।
**लेटणा**—अ० क्रि० लेटना।
**लेटी**—स्त्री० लेई।
**लेणदार**—पु० लेनदार।
**लेणदेण**—पु० लेनदेन।
**लेणा**—स० क्रि० उठाना, खरीदना, लेना।
**लेतबू**—पु० (सो०) पलटा।
**लेतरा**—पु० (सि०) मतली।
**लेतराफिरना**—अ० क्रि० (सि०) उलटी को मन करना।
**लेतरींज**—स्त्री० (शि०) कपड़े का टुकड़ा।
**लेतरीणा**—अ० क्रि० (कु०) व्यस्त होना, छोटे कामों में उलझना।
**लेत्री**—स्त्री० (सि०) दूध बिलोने की रस्सी।
**लेथणा**—स० क्रि० मिट्टी या गोबर को भद्दे ढंग से लगाना।
**लेदड़**—वि० (शि०, सि०) सुस्त।
**लेदड़ु**—पु० (शि०) सांप की केंचुली।
**लेदरा**—वि० (सि०) मोटा मगर शक्तिहीन।
**लेपड़**—वि० (कु०) लथपथ।
**लेपड़लेस**—वि० (कु०) बुरी तरह लथपथ।
**लेपड़ा**—पु० (कु०, शि०) त्वचा।
**लेपढ़ूदो**—वि० (मं०) लिपटा हुआ।
**लेफ**—पु० (कु०, सो०) रजाई।
**लेफड़ा**—पु० (शि०) त्वचा, खाल।
**लेबड़ा**—वि० (कु०) मोटे होंठों वाला।
**लेबा**—वि० (सो०) झल्ला।
**लेमकणा**—स० क्रि० (कु०) चाटना।
**लेमकिणा**—स० क्रि० (कु०) चाटा जाना।
**लेर**—स्त्री० चीख।
**लेरज़ा**—स्त्री० (कु०) कानों के आभूषण में लगी जंजीर।
**लेरना**—अ० क्रि० (कु०, मं०, शि०) रोना।
**लेल**—वि० (ह०) सीधा-सादा।
**लेलरा**—वि० स्त्री० सीधा-सादा।
**लेल्लो**—वि० (बि०) ढीले व्यक्तित्व का, सुस्त।
**लेल्हकण**—वि० (कु०) मोटी, भद्दी।
**लेल्ही**—वि० (कु०, बि०) मूर्ख, उजड्ड।
**लेवकरा**—वि० (बि०, सो०) घृणित।
**लेवणा**—स० क्रि० (सो०) आकर्षित करना।
**लेवा**—पु० (बि०, सो०) गाय-भैंस के थन।
**लेवा**—पु० रजाई में भीतर की ओर लगा हुआ अस्तर।
**लेवाड़**—पु० (चं०) एक वृक्ष विशेष।
**लेवी**—स्त्री० (सो०, मं०) फर्श पर लगाई गई मिट्टी, पलस्तर।
**लेशकर**—पु० (चं०) सेना, लशकर।
**लेशणा**—स० क्रि० (शि०) घसीटना।
**लेस**—स्त्री० चिकनाहट।
**लेसणा**—स० क्रि० (कु०, बि०) लीपना।
**लेह**—स्त्री० (मं०) चिकनी मिट्टी।
**लेहणदारी**—स्त्री० (कु०) लेन-देन।
**लेहा**—पु० ऊन या ऊन के कपड़ों में लगने वाला कीट।
**लेहुरा**—पु० (कु०) आटे और पानी का तरल पदार्थ, पकाया हुआ आटे का घोल।
**लेहेसरा**—वि० (बि०) कामचोर, धीमी गति से काम करने वाला।
**लेहसर**—पु० (शि०) पहाड़ की ऊंचाई पर उगने वाला एक सुगंधित फूल।
**लैंहगा**—पु० लहंगा।
**लैंहश**—स्त्री० (मं०) हल की लंबी लकड़ी।
**लै:ओणा**—स० क्रि० (सि०) लाना।
**लै:र**—स्त्री० (सि०) गुस्सा, उत्तेजना।
**लैक**—वि० (ह०) प्रवीण।
**लैक-लैक**—स्त्री० (कु०) हिल-डुल।
**लैकलैका**—वि० (कु०) एक स्थान पर न टिकने वाला, जिसे कुछ पता न चलता हो।
**लैख**—वि० (कु०) लाख।
**लैगन**—स्त्री० (कु०) लगन।
**लैची**—स्त्री० इलायची।
**लैटकणा**—अ० क्रि० (कु०) लटकना।
**लैटकिणा**—अ० क्रि० (कु०) लटका जाना।
**लैटा**—पु० (शि०) विशेष प्रकार का जूता जिसका तला चमड़े का और ऊपर का भाग ऊन से बुना होता है।
**लैटा-पैटा**—पु० (कु०) दे० लटा-पटा।

**लैड़ना**—अ० क्रि० (कु०) लड़ना।
**लैड़फड़ाइणा**—अ० क्रि० (कु०) तड़पना।
**लैड़ फैड़ी**—स्त्री० (कु०) बहुत अधिक गर्मी लगने का भाव।
**लैड़िना**—अ० क्रि० (कु०) लड़ाई करनी।
**लैणा**—स० क्रि० ग्रहण करना।
**लैपड़**—वि० (कु०) लिपटा हुआ।
**लैपलेपा**—वि० (कु०) चिकना।
**लैबड़**—पु० (चं०) होंठ।
**लैर**—पु० (शि०) लुहार।
**लैरथी**—स्त्री० (कां०) प्रसूता।
**लैरादुध**—पु० (कां०) नई ब्याही गाय, भैंस का दूध।
**लैरामहीना**—पु० श्रावण मास।
**लैरी**—स्त्री० (कां०) नई ब्याई मादा पशु।
**लैळकदा***—वि० (कु०) नाजुक शरीर वाला।
**लैलुआ**—पु० (चं०) मुंह में पड़ा छाला।
**लैसपैसी**—स्त्री० (कु०) बहुत अधिक भूख।
**लैहचौड़ा**—पु० (मं०) वधू को वेदी तथा लग्न के समय पहनाई जाने वाली विशेष पोशाक जो गले से लेकर पांव तक लंबी होती है।
**लैह छूही**—स्त्री० बेचैनी।
**लैहदा**—वि० (कु०) अलग।
**लैहर**—स्त्री० लहर।
**लैहर**—स्त्री० गुस्सा, जोश।
**लैहर बैहर**—स्त्री० बहुतायत।
**लैही**—स्त्री० (चं०) ऊन का गट्ठा।
**लोंग**—पु० (कु०) नाक का सोने का आभूषण।
**लो:टि**—स्त्री० (शि०) कड़ाही।
**लो:णा**—अ० क्रि० (बि०) उतरना।
**लो**—पु० (सि०) लोहा।
**लो**—स्त्री० प्रकाश।
**लोअटी**—स्त्री० (सि०) कड़ाही।
**लोआ**—पु० (सो०) लोहा।
**लोआर**—पु० (सि०, सो०) लुहार।
**लोइया**—पु० (सि०) ऊन का बना चोगा।
**लोई**—स्त्री० ऊनी चादर।
**लोई**—स्त्री० (मं०) आग की लपट।
**लोउकाट**—पु० (शि०) खून के दस्त।
**लोऊ**—पु० रक्त।
**लोऊल**—पु० (शि०) रस्सा।
**लोए**—स्त्री० प्रकाश। लाल रंग की गर्म शाल।
**लोऐ**—स्त्री० (शि०) लंबा कोट।
**लोओ**—पु० (शि०) लोहा।
**लोक**—पु० लोग।
**लोकड़ी**—स्त्री० (शि०) छोटी लड़की।
**लोकड़ूपन**—पु० (शि०) बचपन।
**लोकड़ो**—पु० (शि०) छोटा लड़का।
**लोकणा**—स० क्रि० (कु०) किसी वस्तु को सिर पर फेरकर फेंकना।
**लोकिट**—पु० (शि०) गले का आभूषण।
**लोकिणा**—स० क्रि० (कु०) सिर पर फेर कर फेंका जाना।
**लोक्का**—वि० (कां०, ह०) आयु में छोटा।
**लोक्वाठ**—पु० लोकाट फल।
**लोखर**—पु० (बि०, शि०, सो०) लोहे के औज़ार।
**लोगड़**—पु० (कु०) डंडा।
**लोगड़**—स्त्री० धुनी हुई पुरानी रुई जो एक बार प्रयोग में आ चुकी हो।
**लोगड़े**—स्त्री० (सि०) घाघरा।
**लोगान**—पु० (सि०) लगान।
**लोगिन**—स्त्री० (शि०) पत्नी, गृहिणी।
**लोगू**—पु० (शि०) लोग।
**लोच**—पु० (कु०) थकावट।
**लोचड़**—वि० (मं०) भोला सा, जिसे स्थिति का पता न चले।
**लोचड़**—पु० (कु०) अरबी, आलू के छिलके।
**लोचणा**—स० क्रि० (मं०, सि०) नोचना, काटना।
**लोचिणा**—अ० क्रि० (कु०) थक जाना।
**लोज**—पु० (कु०, मं०) शीशम की जाति का एक वृक्ष।
**लोट**—पु० (सि०, शि०) नोट।
**लोटकी**—स्त्री० छोटा लोटा।
**लोटकू**—पु० पीतल का गोल लोटा।
**लोटकू**—पु० (सि०, सो०) मिट्टी का छोटा मटका।
**लोटड़ी**—स्त्री० छोटा लोटा।
**लोटड़े**—स्त्री० (शि०) छोटा लोटा।
**लोटणो**—अ० क्रि० (शि०) गिरना।
**लोड़**—स्त्री० (बि०) कपड़े की पट्टी।
**लोड़**—स्त्री० ज़रूरत, आवश्यकता।
**लोड़ींदा**—वि० (ह०) कठिनाई से प्राप्त।
**लोड़ी**—स्त्री० लोहड़ी।
**लोड़ी**—अ० (कु०) चाहिए।
**लोढ़**—स्त्री० (बि०) मक्की उगे खेत में हल चलाने की क्रिया।
**लोणा**—स० क्रि० (सो०) लेना।
**लोतुड़ो**—वि० (शि०) छोटा।
**लोत्तणा**—स० क्रि० (शि०) खींच कर तोड़ना।
**लोथ**—स्त्री० लाश।
**लोथणा**—स० क्रि० (सो०, शि०) कस कर तंग करना, नोचना, काटना।
**लोदरा**—पु० (कु०) सहारा।
**लोदान**—पु० झरोखा, रोशनदान।
**लोदान**—पु० लोहे का चूल्हा।
**लोघड़ी**—स्त्री० (कु०) काटे गए बकरे आदि का खून।
**लोघड़ू**—पु० (कु०, ह०) बकरे के खून को छौंक कर बनाया गया खाद्य पदार्थ।
**लोघा**—पु० (कु०) रक्त।
**लोप**—वि० अदृश्य।
**लोपड़िना***—स० क्रि० (कु०) खाया जाना।
**लोपेटणा**—स० क्रि० (सि०) लपेटना।

**लोप्पा**—पु० (सि०) जूते का तला।
**लोफाफा**—पु० (सि०) लिफाफा।
**लोबलो**—वि० (शि०) सुंदर, आकर्षक।
**लोब्ब**—पु० (शि०) शौक।
**लोभ**—पु० (कु०) प्यार, इच्छा, शौक।
**लोभला**—वि० (कु०) शौकीन।
**लोभिणा**—अ० क्रि० (कु०) प्यार होना, इच्छा होना।
**लोभिया**—पु० सब्जी विशेष।
**लोभिया**—वि० चाहने वाला।
**लोभी**—वि० (कु०) शौकीन।
**लोभी**—पु० (कु०) प्रेमी।
**लोभी**—वि० लालची।
**लोमचा**—वि० (कु०) लंबा और टेढ़ा-मेढ़ा, लंबूतरा।
**लोमा**—वि० (कु०) लंबा।
**लोय**—स्त्री० (सो०) दीपक की लौ (ज्योति)।
**लोरड**—वि० (कु०) पीछे चलने वाला।
**लोरा**—पु० (चं०) झोंका।
**लोळकणा**—स० क्रि० (सो०) बच्चे को गोदी में लेकर हिलाना।
**लोलटे**—स्त्री० (शि०) रस्सी।
**लोलटो**—पु० (शि०) मोटा रस्सा।
**लोळसपोळ**—स्त्री० (सि०) चिकनी-चुपड़ी बातें।
**लोशड़ा**—पु० (कु०) चमड़ी।
**लोशणो**—स० क्रि० (शि०) खींच कर ले जाना।
**लोशा**—पु० (शि०) त्वचा के ऊपरी भाग का खुरदरापन।
**लोसर**—पु० (कु०) एक सुगंधित पुष्प जो काफी ऊंचाई पर होता है।
**लोहड़ी**—स्त्री० एक त्योहार जो पौष की अंतिम तिथि की रात्रि को मनाया जाता है। 'लोहड़ी' त्योहार पर कन्याओं द्वारा गाया जाने वाला गीत।
**लोहडू**—पु० (कां०) कपास बेलने का साधन।
**लोहड़ेक**—स्त्री० (चं०) विवाह से पूर्व लड़के या लड़की को गांव के लोगों या संबंधियों द्वारा खाने पर बुलाए जाने की क्रिया।
**लोहणा**—अ० क्रि० (मं०) गिरना।
**लोहणा**—अ० क्रि० उतरना।
**लोहणो**—स० क्रि० (शि०) खींचना।
**लोहलणा**—स० क्रि० हिलाना।
**लोह-संगोह**—पु० (बि०) बरसात में वर्षा के कम अथवा आधिक्य की दृष्टि से गिना जाने वाला सोलह दिन का समय, यह श्रावण बाईस से आरंभ होकर भादों के आठ प्रविष्टे तक चलता है।
**लोह-सलोह**—पु० (मं०) एक प्रकार का केंचुआ।
**लोहाण**—पु० लाल रंग का पतला वस्त्र जो देवी देवताओं को चढ़ाया जाता है।
**लोहारड़ा**—पु० (मं०) लुहारों की बस्ती।
**लोहू**—पु० रक्त।
**लोहेंडु**—पु० (मं०) लोहे का तसला।
**लोहका**—वि० (मं०) छोटा।
**लोहच**—स्त्री० (कु०) मरी हुई भेड़-बकरी आदि।
**लोहड़ा**—वि० (मं०) लाल।
**लोहड़ेकण**—स्त्री० (चं०) वह कन्या जिसे विवाह से पूर्व गांव के लोगों या संबंधियों द्वारा खाने पर बुलाया जाता है।
**लोहरी**—स्त्री० (कु०) रेंगने वाला कीड़ा।
**लोहलड़**—वि० (सि०) सीधा सादा।
**लौंकड़ा**—पु० बटुक।
**लौंकड़ा**—पु० (मं०) काले वर्ण का देवता।
**लौंकड़ा**—पु० (सो०) मंदिर के बाहर पूजित लड़का।
**लौंकु**—पु० एक स्थानीय बेलदार सब्जी।
**लौंग**—पु० स्त्रियों के नाक का आभूषण।
**लौंग**—पु० एक मसाला।
**लौंग**—पु० (मं०) एक सब्जी विशेष।
**लौंट**—पु० (मं०) कबूतर जाति का एक पक्षी।
**लौंथ**—पु० (ह०) बांध बनाने के लिए काटी डालियां।
**लौःटा**—पु० (शि०) पतले गूंथे आटे की रोटी।
**लौःणा/णो**—स० क्रि० (कु०, शि०) फसल, घास आदि काटना।
**लौ**—स्त्री० प्रकाश।
**लौ**—पु० (सो०) भेड़ का ऊन काटे जाने की स्थिति में आना।
**लौआ**—पु० (कु०) लंबा घास।
**लौआ**—पु० (कु०, बि०) ओट, रोक, परदा।
**लौआ**—पु० (शि०) नस।
**लौउड़ी**—वि० (कु०) छोटी।
**लौकबड़याई**—स्त्री० (बि०) छोटापन-बड़प्पन।
**लौकरा**—वि० (कु०) ढीला, सुस्त, घायल।
**लौकहड़**—पु० (ह०) मोटे दानों वाला मक्की का भुट्टा।
**लौका**—पु० ओट।
**लौकीणा**—स० क्रि० (चं०) स्त्री का बच्चा जनना।
**लौखपौते**—पु० (शि०) लखपती।
**लौग-लौग**—वि० (सि०) अलग-अलग।
**लौच्छी-लौच्छी**—अ० (शि०) टुकड़े-टुकड़े।
**लौछमी**—स्त्री० (कु०, सि०) लक्ष्मी।
**लौछन**—पु० (शि०, कु०, सि०) लक्षण, योग्यता।
**लौज़**—स्त्री० (कु०, शि०) लज्जा, शर्म।
**लौजलाओ**—वि० निर्लज्ज।
**लौज़िणा**—अ० क्रि० (कु०) शर्माना, लजाना।
**लौटा पौटा**—पु० दे० लटा-पटा।
**लौटे**—पु० (शि०) कान का निचला भाग।
**लौड़णो**—स० क्रि० (शि०, सि०) ढूंढना।
**लौड़ना**—अ० क्रि० (कु०) लड़ना।
**लौड़नो**—अ० क्रि० (शि०) लड़ना।
**लौड़ी**—स्त्री० (कु०) कान का निचला भाग।
**लौढ**—पु० (कु०) मेढ़ा।
**लौढ़ी**—स्त्री० (शि०) लड़ी।
**लौणो**—स० क्रि० (सि०) लेना।

**लौत**—स्त्री० (कु०) टांग, लात।
**लौमड़ी**—स्त्री० (ह०, कां०) लोमड़ी।
**लौरयापड़**—वि० (कु०) रोता रहने वाला।
**लौल**—स्त्री० (चं०) लार।
**लौलहड़ा**—वि० (शि०) छोटा।
**लौळी**—स्त्री० (सि०) जिसमें देवता का प्रवेश होता है उसके सिर के लंबे बाल।
**लौसकर**—पु० (शि०) झुंड, लशकर।
**लौहणा**—अ० क्रि० (ह०, कां०) उतरना।
**लौहर**—स्त्री० (कु०) उत्तेजना।
**लौहसा**—पु० (कु०) ज़मीन के टूटने की क्रिया, भू-स्खलन।
**लौहा**—स्त्री० (कु०) नई कोंपलें।
**लौहा**—पु० (कु०) गर्म कपड़ों को लगने वाला कीड़ा।
**लौहका**—वि० आयु एवं कद में छोटा।
**ल्याउणो**—स० क्रि० (सि०) लाना।
**ल्याऊणा**—स० क्रि० (बि०, सो०) ले आना।
**ल्याज**—स्त्री० (बि०, सो०) लिहाज, संकोच।
**ल्याणी**—स्त्री० (मं०) आंगन साफ करने वाली।
**ल्याणू**—पु० (मं०) अरवी आदि का साग।
**ल्यार**—स्त्री० (मं०) औलाद, वंश।
**ल्यारा**—वि० (बि०) ढीला (आदमी); शर्मीला।
**ल़्यारु**—पु० मिट्टी की गोलाकार अंगीठी।
**ल्याहुंफ्याहुं**—वि० (मं०) निकम्मा।
**ल्वाकणा**—स० क्रि० (बि०) बहकाना।
**ल्वाठक**—पु० (बि०) पक्ष।
**ल्वाणा**—स० क्रि० (बि०) उतारना।
**ल्वाद**—स्त्री० (मं०, सि०) औलाद।
**ल्वाशणा**—अ० क्रि० (शि०, सो०, सि०) झुलसना।
**ल्वाहथापणा**—स० क्रि० (मं०) मामा के घर में पूजा करना।
**ल्हच्वा**—पु० शोर। मल।
**ल्हफणा**—अ० क्रि० भार से झुक जाना।
**ल्हफणा**—अ० क्रि० (सि०) हांफना।
**ल्हसण**—पु० (शि०, सि०) लहसुन।
**ल्हसा**—पु० ऊनी वस्त्र को काटने वाला कीड़ा।
**ल्हा**—पु० गिरी हुई पहाड़ी का एक भाग।
**ल्हाइज़**—स्त्री० (कु०) लिहाज़।
**ल्हाड़ी**—स्त्री० हल में पकड़ने के लिए लगी हुई हत्थी।
**ल्हाफ**—स्त्री० (कां०) आग की लपट, मुख्यत: वायु से फैली हुई लपट।
**ल्हामण**—पु० (बि०) लंबा सर्प जो पेड़ से लटककर डंसता है।
**ल्हाश**—स्त्री० (कु०, मं०) लाश।
**ल्हाशण**—पु० (कु०, मं०) शरीर पर पड़ा छोटा सा लहसुन के आकार का दाग; लहसुन।
**ल्हिकड़ा**—पु० (सि०) कंघा।
**ल्हीछ**—स्त्री० (कु०) जूं का अंडा, लिक्षा।
**ल्हीण**—स्त्री० पशुओं के लिए बनाया दलिया।
**ल्हीणा**—स० क्रि० रगड़-रगड़ कर बारीक छीलना।
**ल्हीसड़ा**—वि० ढीठ; लचकदार।
**ल्हुसणा**—अ० क्रि० कमज़ोर हो जाना।
**ल्हुसणा**—अ० क्रि० (कु०) पहाड़, खेत आदि का कुछ हिस्सा गिर जाना।
**ल्हूखडील्हू**—पु० (मं०) एक प्रकार की आंख मिचौली का खेल।
**ल्हूण**—पु० सहानुभूति; जरूरत।
**ल्हेलणा**—अ० क्रि० (शि०) होना।
**ल्हेपड़ा**—पु० (कु०) छिलका, त्वचा।
**ल्हेफ**—पु० लिहाफ, रुई की रजाई।
**ल्हेरना**—स० क्रि० हिलाना।
**ल्हेळणा**—स० क्रि० हिलाना।
**ल्हेश**—पु० बादल की पतली परत।
**ल्हैश**—स्त्री० (कु०) हल का एक भाग।
**ल्होटू**—पु० (कां०) गाय भैंस के दूध से भरे थन।
**ल्होरी**—स्त्री० (कु०) सांप की तरह का छोटा कीड़ा।
**ल्होशड़ा**—पु० (कु०) मांस का छिलका, त्वचा, चमड़ी।
**ल्होसणा**—स० क्रि० (कु०) छीनना।
**ल्होसिणा**—स० क्रि० (कु०) छीना जाना।
**ल्होस्सणो**—स० क्रि० (सि०) भूनना।
**ल्होरलगणा**—अ० क्रि० मौज लगना।
**ल्हौसण**—पु० (कु०) लहसुन।
**ल्हौसा**—पु० (कु०) भू-क्षरण।

## व

**व**—देवनागरी वर्णमाला का उनतीसवां और चौथा अंतस्थ वर्ण। उच्चारण स्थान दंतोष्ठ।
**वधिया**—पु० (कां०) जलवेतस।
**वांजणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) मंत्र द्वारा दर्द निवारण करना।
**वांडका**—अ० (शि०, सि०) इस ओर।
**वांस**—स्त्री० (सि०) अमावस्या।
**वाज**—स्त्री० आवाज़।
**वादा**—पु० (शि०) वायदा।
**वायदा**—पु० (सो०) वायदा।
**वारंडा**—पु० (चं०, बि) दे० वारडा।
**वार**—पु० प्रहार, हमला, आक्रमण।
**वार**—अ० इस ओर।
**वारका**—वि० (सो०) इस ओर विद्यमान, इस तरफ का।
**वारडा**—पु० (शि०, सो०) सिर के ऊपर से पैसे घुमा कर दान करने की क्रिया।
**वारला**—वि० इधर का।
**वासनी**—स्त्री० (शि०, सो०) वधूप्रवेश। गृहप्रवेश।
**वास्तु**—पु० (शि०, सो०) घर का परिमाप, जिसमें आधार-

शिला रखने के समय देवता की प्रतिष्ठा की जाती है।
**वास्तू**—पु० 'रळी' लोक नाट्य का एक पात्र।
**विंद**—पु० (बि०) कमरे के बीच की दीवार।
**विजया**—स्त्री० भांग के बीज।
**विचलुदा**—वि० (कु०) जगह से वंचित, विचलित।
**विठर**—पु० (चं०) guniperus Communis.
**विरछो**—पु० (सि०) वृक्ष।
**विष्णुक्रांत**—पु० (चं०) नीले, सफेद रंग का फूल।
**विस्दु**—पु० (सि०) Greuria sapida.

## श

**श**—देवनागरी वर्णमाला का तीसवां और उष्मवर्ग का प्रथम व्यंजन वर्ण।उच्चारण स्थान तालु।
**शंए**—पु० (शि०) विश्राम।
**शंकु**—पु० (सो०) खूंटी।
**शंख**—पु० शंख।
**शंखणा**—वि० (सो०) किसी भी प्रकार के दुःख या कष्ट की परवाह न करने वाला।
**शंखणोण**—स्त्री० (चं०) श्वास नली।
**शंखिया**—पु० (शि०) एक ज़हरीला पौधा, ज़हरीली दवा।
**शंग**—स्त्री० (चं०) दया।
**शंगराळ**—पु० (शि०) भीड़।
**शंगरेठा**—वि० (सो०) भूरी आंखों वाला घटिया व्यक्ति।
**शंगळ**—स्त्री० लोहे की ज़ंजीर।
**शंगली**—स्त्री० लोहे की ज़ंजीर।
**शंगळेवणा**—स० क्रि० (सो०) सांकल लगाना, ज़ंजीर से बांधना।
**शंगळैःर**—स्त्री० (चं०) 'गूर' में देव शक्ति के प्रवेश होने पर 'गूर' द्वारा विशेष प्रकार की लोहे की ज़ंजीर से अपनी पीठ पर मारने की क्रिया।
**शंगा**—पु० (सो०) गला।
**शंगाउणा**—स० क्रि० (सो०) सुंघाना।
**शंगार**—पु० श्रृंगार।
**शंगारना**—स० क्रि० सजाना, संवारना।
**शंगरुना**—अ० क्रि० (सो०) श्रृंगार करना, सजना।
**शंगोलरी**—स्त्री० (कु०) बैंगन।
**शंगोलरु**—पु० (मं०) बैंगन।
**शंगोर**—पु० (सो०) एक पक्षी विशेष जिसका बोलना सुनाई देना या किसी वृक्ष या घर के पास अंडे देना शुभ माना जाता है।
**शंगोरा**—पु० (कु०) जंगली बकरे का सींग जिसे अगले सिरे पर आरी से इतना काट दिया हो कि बारीक छेद निकल आए। जोड़ों आदि की दर्द में सोजिश आने पर उस जगह मांस में चीरा देकर उसे चिपका दिया जाता है और हवा बाहर चूसकर खून निकाला जाता है। जिससे बीमारी का उपचार होता है।
**शंघा**—पु० गला।
**शंघोटला**—पु० (सो०) काकल्य, टेंटुआ।
**शंटना**—अ० क्रि० (चं०) आवश्यकता से अधिक लंबा होना।
**शंढ**—वि० (चं०) वंध्या, बांझ।
**शंता**—पु० (शि०) धीरज।
**शंद**—पु० औज़ार।
**शंदर**—पु० (चं०) हल का लंबा भाग।
**शंहका**—पु० (कु०) सांस फूलने का भाव।
**शःटे**—स्त्री० (शि०) हुक्का पीने की बांस की नली।
**शःला**—वि० (शि०) ठंडा।
**शअ**—वि० (शि०) सौ।
**शअल**—स्त्री० (सि०) नस, पेशियों को बांधने का तंतु।
**शइल**—स्त्री० (मं०, बि०) जुए में लगने वाली बारीक लकड़ियां।
**शइलरी**—स्त्री० (सि०) खूबानी।
**शई**—अ० (शि०, सो०) ज़रूर, बेशक।
**शईर**—पु० (सो०, शि०) बाण।
**शउरा**—पु० (शि०, सो०) श्वशुर।
**शऊज़**—पु० (शि०) आश्विन।
**शऊल**—पु० (सि०) टिड्डी दल।
**शए**—स्त्री० (शि०) चैन।
**शक**—पु० संदेह।
**शकटीरी**—स्त्री० (शि०) टुकड़ा।
**शकटेरि**—स्त्री० (सो०) मिट्टी के पात्र का टुकड़ा।
**शकटोर**—पु० (सो०) घाव के ठीक होने की स्थिति में उस पर आने वाली पपड़ी।
**शकटोरुना**—अ० क्रि० (सो०) घाव ठीक होने की अवस्था में उस पर पपड़ी आना।
**शकत**—वि० (सि०) कठोर, सख्त।
**शकता**—वि० (सो०) ताकतवर।
**शकरउड़**—पु० (सि०) कंकड़।
**शकरनीमू**—पु० (मं०) नारंगी प्रजाति का फल जो गलगल के आकार का और मीठा होता है।
**शकराळा**—वि० (सो०) सख्त, सूखा।
**शकराळो**—वि० (शि०) पथरीली (भूमि)।
**शकरी**—स्त्री० (चं०) बछड़ी।
**शकरीला**—वि० (मं०) सूखी मिट्टी।
**शकरोई**—वि० (शि०) सूखा।
**शकल**—स्त्री० चेहरा, सूरत, रूप।
**शकशैई**—वि० (शि०) जल्दबाज, चंचल।
**शकाइत**—स्त्री० शिकायत।
**शकाउणो**—स० क्रि० (शि०) सुखाना।
**शकार**—पु० वन्य पशु-पक्षियों का शिकार द्वारा लाया गया मांस।
**शकार**—पु० (कु०) थक कर ली गई लंबी सांस।
**शकार**—पु० शिकार।
**शकारी**—पु० शिकारी।
**शकीन**—वि० शौकीन, चाह या रुचि रखने वाला।

शकुंतलाचेन—स्त्री० (कां०, बि०) कुंडल वाली पाजेब।
शकेह्णा—स० क्रि० (कु०) सुखाया जाना।
शकेणा—स० क्रि० (कु०) सुखाना।
शकेरना—स० क्रि० उकसाना।
शकेरिनो—अ० क्रि० (शि०) ठीक होना, उकसाया जाना।
शकेवणा—स० क्रि० (सो०) अपराध करने के लिए सिखलाना, सुखाना।
शकोट—पु० (शि०) सूखा छिलका।
शकोरी—स्त्री० (कु०) सुखाए गए फल, सेब, खूबानी आदि फल के टुकड़े जिन्हें सुखाकर सर्दियों में खाने के लिए सुरक्षित रखा गया हो।
शकौणा—स० क्रि० (शि०, सो०) सुखाना।
शक्करपारा—पु० एक मिठाई।
शक्करपारो—पु० (शि०) खूबानी की एक किस्म।
शक्की—वि० संदेह करने वाला।
शक्स—पु० शख्स, व्यक्ति।
शखड़ात्यु—वि० (शि०) सीखने वाला।
शखाड़ात्थु—वि० (सो०) ऐसा व्यक्ति या दस्तकार जो अभी काम सीख रहा हो।
शखेवणा—स० क्रि० (शि०, सो०) सिखलाना।
शगंद—स्त्री० (शि०, सो०) सौगंध।
शगड़ा—पु० (कु०) आग का अंबार।
शगड़ो—पु० (शि०) ढीली बुनाई।
शगण—पु० शकुन, शगुन।
शगणा—स० क्रि० (कु०) भिगोना।
शगन—पु० (कु०) दे० शगण।
शगरेऊणा—स० क्रि० (मं०) भड़काना।
शगाऊगा—वि० (सि०) फुरतीला।
शगाकड़ी—स्त्री० (मं०) लंबे आकार का कद्दू।
शगारना—अ० क्रि० (मं०) श्रृंगार करना।
शगुणा—अ० क्रि० (कु०) भीगना।
शगोलरी/रु—पु० (कु०, शि०) बैंगन।
शगोरा—पु० (कु०) दे० शंगोरा।
शघणा—अ० क्रि० (मं०) भीगना।
शचाणा—स० क्रि० (कु०) फंसाना।
शच्चा—वि० (मं०) सच्चा।
शजरा—वि० (चं०) ताज़ा।
शजरा—पु० पारिवारिक ब्योरा, राजस्व रिकार्ड में प्रयुक्त नामावलि।
शजाइ—स्त्री० (सो०) गोबर ढोने का सामूहिक कार्य।
शजेड़ा—पु० (शि०) खमीर।
शजेर—वि० (मं०) शरारती।
शजेरना—स० क्रि० (मं०) दूसरी जाति से विवाह या अन्य संबंध रखने पर पुनः अपनी जाति में मिलाने हेतु शुद्धिकरण करना।
शजेवणा—स० क्रि० (सो०) सुझाना।
शट—अ० (शि०, कु०) जल्दी, शीघ्र, तुरंत।
शट—पु० (चं०) बीज का सिट्टा, बाल।
शटपट—अ० (कु०) झटपट, जल्दी, तुरंत।
शटबाळुआ—पु० (सो०) दे० शटयारा।
शटबाह्णी—वि० (शि०) आठ भुजाओं वाली।
शटयारा—पु० (सो०) सठियाने का लक्षण, चिड़चिड़ापन।
शटयारुना—अ० क्रि० (सो०) बुढ़ापे से प्रभावित होना।
शटरालणो—अ० क्रि० (शि०) सठियाना।
शटराळा—पु० (शि०, सि०) प्रहार, चोट।
शटशटा—वि० (कु०) सख्त (धागा, ऊन आदि)।
शटाशट—अ० (सो०) शीघ्रतापूर्वक, जल्दी।
शटे—पु० (सो०) गेहूं के पौधे का तना।
शठ—वि० (शि०) साठ।
शठमुंई—स्त्री० (सि०) साठ मुंह वाली (दुर्गा मां)।
शठीणू—वि० (चं०) साठ दिन में तैयार होने वाली मक्की की फसल।
शड़क—स्त्री० (शि०, सो०) सड़क।
शड़का—पु० (शि०, सि०, सो०) धीमी आहट।
शड़कावणो—स० क्रि० (शि०) पीटना, फलों आदि को लाठी से झाड़ना।
शड़केवणा—स० क्रि० (सो०) एक ही प्रहार में काटना।
शड़णो—स० क्रि० (शि०) गंदी वस्तु का सेवन करना।
शड़ना—अ० क्रि० सड़ना।
शड़यान—स्त्री० (चं०, शि०, सो०) दुर्गंध।
शड़ा—वि० (शि०) खराब, दुष्ट।
शड़ा—पु० (मं०) टिड्डी।
शड़ाका—पु० (कु०) बीज को खेत में हथेली से छिटकाने की क्रिया।
शड़ाका—पु० (कु०) सिगरेट, तंबाकू का कश।
शड़ाका—पु० (शि०, सो०) पानी की तेज़ बौछार, तेज़ प्रहार।
शड़ाण—स्त्री० (शि०) दुर्गंध।
शड़िन्ह—स्त्री० (कु०) दुर्गंध।
शड़ीन—स्त्री० (शि०, सो०) सड़ने की दुर्गंध।
शड़ुकणा—स० क्रि० (शि०, सो०) सुड़कना।
शड़ुलटी—स्त्री० (सि०) मीठी गुठली वाली खूबानी।
शड़ेंगी—वि० (कु०) बेझिझक।
शड़ेंटी—स्त्री० (सि०) तकिया।
शड़े—पु० (मं०) अस्थिपिंजर।
शड़े—स्त्री० (शि०) दुष्ट स्त्री।
शड़ेखम—पु० (मं०) श्लेष्मा।
शड़ेथर—स्त्री० (शि०, सि०) मुड़ा हुआ लकड़ी का तख्ता या पत्थर जिस पर पीटकर फसल झाड़ी जाती है।
शडेरना—स० क्रि० (कु०) सड़ा देना।
शड़ैणो—पु० (शि०) सिरहाना।
शड़ोपणा—स० क्रि० (कु०) सुड़कना।
शड़ोपिणा—अ० क्रि० (शि०) ठंड से ठिठुरना।
शड़ोपिणा—स० क्रि० (कु०) पीया जाना।
शणकणा—अ० क्रि० पानी का उबलने की स्थिति से पहली स्थिति में आना।
शणकणो—अ० क्रि० (शि०) खनकना।

**शणाचरलूण**—पु० (सो०) काला नमक।
**शणाण**—स्त्री० (सि०) छम-छम की ध्वनि।
**शणायाणा**—स० क्रि० (कु०) सुनाना।
**शणायार**—पु० (कु०) ऐसा खेत जहां फसल के बीच में बहुत घास हो, फसल काटने के बाद खाली रखा खेत जिसमें अधिक घास उगा हो।
**शणशणाट**—स्त्री० सनसनाहट, छन-छन की ध्वनि।
**शणासो**—पु० (शि०) संड़सी।
**शणाई**—स्त्री० (शि०) शहनाई; सुनवाई।
**शणाउणी**—स० क्रि० (शि०) सुनाना।
**शणाऊ**—पु० (शि०) सर्प। बंजर भूमि।
**शणाऊ**—पु० (कु०) पानी या नदी के बहने की ध्वनि।
**शणाऐ**—स्त्री० (शि०) शहनाई। कहावत।
**शणाका**—पु० (चं०) जल्दी पकने का भाव।
**शणाट**—वि० (कु०) चुस्त; हृष्ट-पुष्ट।
**शणाटणा**—स० क्रि० (कु०) ठंडा करना।
**शणाटिणा**—अ० क्रि० ठंड से हाथ पांव का अकड़ना।
**शणाणा**—स० क्रि० सुनाना।
**शणाश**—पु० (शि०) चिमटा।
**शणाशी**—स्त्री० (सि०) संड़सी।
**शणीचर**—पु० (कु०, सि०) शनिवार।
**शणेउट**—स्त्री० (कु०) छाया।
**शणेउल**—स्त्री० (कु०) छाया।
**शणेटा**—पु० (शि०) दूर से फेंक कर लाठी मारने की क्रिया।
**शणेटा**—पु० (शि०) चुनौती।
**शणेठा**—पु० (सि०) 'ब्यूहल' वृक्ष की छड़ी।
**शणेश**—पु० (कु०) कील उखाड़ने या दांत निकालने का औज़ार।
**शणेशा/शी**—पु० (शि०) चिमटा।
**शतणा**—अ० क्रि० (चं०) आग लगना।
**शताना**—पु० (कु०) तीन टांगों और ऊपर से गोल दायरे वाला लोहे का चूल्हा।
**शतिंग**—स्त्री० (चं०) छोटी चमगादड़।
**शतीर**—पु० शहतीर।
**शदर**—स्त्री० (कु०) वृद्धि, बरकत।
**शधाइणा**—स० क्रि० (कु०) बुलवाया जाना।
**शधाणा**—स० क्रि० (कु०) बुलवाना।
**शन**—स्त्री० (मं०, शि०, सि०) ठंड, निमोनिया, सन्निपात।
**शनक**—पु० (मं०) संकेत, इशारा।
**शनसे**—पु० (मं०, शि०) चावल के आटे का बना पकवान।
**शनाअह**—पु० (कु०) बाज़ार।
**शनाई**—स्त्री० शहनाई।
**शनाकड़**—स्त्री० (शि०) जमा हुआ पानी, पाला।
**शनाट**—वि० (कु०) हृष्ट-पुष्ट।
**शनाणा**—स० क्रि० (कु०) भगा देना।
**शनाही**—स्त्री० (बि०) बकरे की खाल, मशक।
**शनिचर**—पु० शनिवार।
**शन्नी**—स्त्री० (शि०, सो०, सि०) भेड़-बकरियों को रखने का स्थान।
**शपणो**—अ० क्रि० (शि०) पानी का खौलने से पहले की स्थिति में आना।
**शपांग**—स्त्री० (कु०) झूठी बात।
**शपांगणा**—स० क्रि० (कु०) ठगना, किसी को झूठ बोलकर ठगना।
**शपा:ता**—पु० (शि०) बहाना।
**शपाड़**—पु० (सि०) दे० ढांक।
**शपाण**—पु० (सि०) चौड़े सिर वाला सांप।
**शपार्श**—स्त्री० (कु०) संस्तुति, सिफारिश।
**शपेद**—वि० (कु०, सि०) श्वेत, सफेद।
**शप्पड़**—स्त्री० (चं०, शि०) चट्टान।
**शप्फ**—स्त्री० (चं०) झाग।
**शफ**—स्त्री० (कु०) अरथी।
**शफीणा**—अ० क्रि० (चं०) जड़वत् होना।
**शफेहरा**—पु० (मं०) 'गूफू' नामक वाद्य बजाने वाला।
**शबकुणा**—अ० क्रि० (सो०) किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति में होना।
**शबक्क**—वि० (सो०) किंकर्तव्यविमूढ़।
**शबद**—पु० वाद्ययंत्र के द्वारा सत्कार।
**शबदिणा**—अ० क्रि० (शि०) मिलना।
**शबरैतरी**—स्त्री० (शि०) शिवरात्रि।
**शबाकुआ**—वि० (शि०) परेशान, उद्विग्न, व्याकुल।
**शबाळ**—पु० शैवाल, काई।
**शभ्र**—स्त्री० (चं०) एक पतली छड़ी जो पशु हांकने के काम आती है।
**शम**—स्त्री० जुए में लगी कीली।
**शमांई**—पु० (शि०) हल का जुआ।
**शमाकणे**—अ० (सि०) आराम से।
**शमाण**—पु० (सि०) सामान।
**शमाहटो**—पु० (शि०) हल के जुए में प्रयोग की जाने वाली लकड़ियां।
**शमी**—स्त्री० एक विशेष प्रकार का वृक्ष।
**शमेई**—स्त्री० (कु०) हल के जुए का एक भाग।
**शय**—स्त्री० (सि०) सांत्वना।
**शया:र**—वि० (सो०) मेधावी, बुद्धिमान, प्रवीण।
**शयाळा**—पु० (सो०) सर्दी का मौसम।
**शयावणा**—अ० क्रि० (सो०) आग का बुझना। बच्चे का मरना।
**शर/री**—पु० (शि०) बाण, 'ठोडा' लोक नाट्य में प्रयुक्त एक उपकरण।
**शरका**—पु० (चं०) हवा आदि के कारण अंगों के कांपने की क्रिया।
**शरकाणा**—स० क्रि० (कु०) फेंकना, हथेली से बीज बिखेरना।
**शरगुलटू**—पु० (शि०, सि०) बजरी, ओला।
**शरगोटळा**—पु० (शि०) मोटी आवाज।
**शरट/टी**—पु० (शि०) धान व गेहूं का घास।
**शरठी**—स्त्री० (सि०) गले का आभूषण।
**शरड़ना**—अ० क्रि० (सो०) ठंड से सिकुड़ना।
**शरड़बरड़**—पु० (शि०, सो०) ऐसा भोजन जिसे खाना उचित न

हो।

**शरड़ेवणा**—स० क्रि० (सो०) ठंड सहने को विवश करना।

**शरढद**—वि० (चं०) अतिवृष्टि।

**शरढ़ी**—वि० (कु०) सख्त, खुरदरा।

**शरढीणा**—अ० क्रि० (चं०) कम आंच के कारण किसी खाद्य पदार्थ का खराब होना।

**शरत**—स्त्री० शर्त।

**शरदा**—स्त्री० श्रद्धा।

**शरफी**—स्त्री० (सि०) अशरफी।

**शरमाइणा**—अ० क्रि० (कु०) शर्माना।

**शरमिणो**—अ० क्रि० (शि०) शर्माना।

**शरल**—पु० (मं०) कनखजूरा।

**शरलू**—पु० (मं०) असौज तथा कार्तिक में काटा जाने वाला घास।

**शरलू**—पु० (कु०) बारीक पत्थर।

**शरांगला**—पु० (कु०) बारीक-बारीक ओले।

**शरा:**—स्त्री० (सो०) सिरदर्द।

**शरा**—स्त्री० दफा, अनुच्छेद।

**शरा**—पु० (कु०, सो०) प्रथा, रीति, परंपरा।

**शराका**—पु० (कु०) तंबाकू, सिगरेट आदि का कश।

**शराटा**—पु० (शि०) ओले।

**शराड़ा**—वि० (शि०) काना।

**शराणा**—पु० (मं०, शि०) तकिया।

**शराद**—पु० श्राद्ध।

**शराप**—पु० शाप।

**शरापणा**—अ० क्रि० (शि०) ठंडा होना।

**शरापणा**—स० क्रि० (शि०) खड़े रहना।

**शराबटु**—पु० (सो०) एक छोटी टोकरी जिसमें करीब चार अंगुल की पेंदी होती है जिसे विवाह के समय कुछ नीचे रखकर स्थापित किया जाता है तथा विवाह की अंतिम प्रथा के रूप में वर-वधू द्वारा बावली या चश्में के पास छुड़वाया जाता है।

**शराबी**—स्त्री० घड़े को ढकने के लिए बना मिट्टी का ढक्कन।

**शराबी**—वि० मदिरापान करने वाला।

**शराळ**—पु० (कु०) बाल।

**शरींगळा**—पु० (कु०) तिलचटा।

**शरीऊं**—अ० (शि०) किसी वस्तु को तीव्र गति से फेंकने से हुई आवाज़।

**शरीक**—वि० साथ देने वाला, संबंधी।

**शरीफ**—वि० भला।

**शरीहुळी**—स्त्री० (कु०) सीटी।

**शरुंह**—स्त्री० (चं०) सरसों।

**शरु**—पु० ओले।

**शरेगी**—स्त्री० (कु०) एक हानिकारक कीट।

**शरेड्डु**—पु० (सो०) खूबानी प्रजाति का एक फल।

**शरेधा**—स्त्री० (कु०) श्रद्धा।

**शरेहण**—पु० (कु०) तकिया।

**शरेहणी**—स्त्री० (कु०) छोटा तकिया।

**शरैणो**—पु० (शि०) तकिया।

**शरोकड़**—वि० (मं०) मुंहफट।

**शर्तनवां**—पु० संधिपत्र, शर्तनामा।

**शल**—स्त्री० (सि०) नस।

**शळ**—पु० (सि०) दुपट्टा।

**शलगम**—पु० शलजम।

**शलगाम**—पु० (शि०) प्रस्वेद, ठंडा पसीना।

**शलझर**—वि० (चं०) अति दुर्बल।

**शळपात**—स्त्री० (सि०) जोड़ों का दर्द।

**शलबाई**—स्त्री० (शि०) शरीर में सर्दी के कारण होने वाली पीड़ा।

**शलबाल**—अ० (सि०) दोपहर बाद, अपराहन।

**शळबात**—स्त्री० (कु०) अतिसार, आव की बीमारी।

**शळबाद**—पु० (सो०) अधिक चलने से होने वाली टांगों की थकान।

**शळवा**—स्त्री० (सो०) शलभ, टिड्डी।

**शलाई**—स्त्री० बुनने की तथा आंखों में काजल डालने की सलाई।

**शलाई**—स्त्री० सिलाई।

**शलाउटी**—स्त्री० (कु०) अधिक थकने से या सर्दी लगने से टांगों में होने वाला दर्द।

**शलाउणो**—स० क्रि० (शि०) ठंडा करना।

**शलाए**—स्त्री० (शि०) शीतलता, ठंडक; सलाई।

**शळाखी**—स्त्री० (सो०) काले व सफेद रंग की पूंछ वाली चिड़िया।

**शलाट**—पु० (शि०) चट्टानों वाली भूमि।

**शलाढ़ी**—स्त्री० (मं०) पत्थरों की ढुलाई।

**शलात**—स्त्री० (सि०) दांत का दर्द।

**शळात**—स्त्री० (शि०) दांतों का कालापन।

**शळु**—पु० (सो०) चमड़े की पतली कन्नी जिससे जूतियां सिली जाती है।

**शलुणा**—अ० क्रि० (सो०) ठंडा होना।

**शलुशा**—वि० (कु०) सीधा (पेड़ या डंडा) जिसमें कोई टहनी न हो।

**शळे**—स्त्री० (शि०) दियासलाई, तूलिका।

**शलेघ**—पु० (मं०) झूठ।

**शलेघी**—वि० (मं०) झूठ बोलने वाला।

**शलेड़ा**—पु० (मं०) सीटी।

**शलेरना**—स० क्रि० (कु०) ठंडा करना।

**शलैड़ी**—स्त्री० (सि०) कपोल, गाल।

**शलैबणा**—स० क्रि० (सो०) दे० शलेरना।

**शलोंघा**—पु० (कु०) गला।

**शलो**—वि० (शि०) ठंडा।

**शळो**—पु० (शि०) टिड्डी।

**शलोआ**—पु० (सो०) केंचुआ।

**शलोड़िना**—अ० क्रि० (कु०) पत्थर आदि की चोट लगने से मांस का छिल जाना।

**शळोत**—पु० (सो०) चाबुक की मार का निशान। चमड़े की कन्नी।
**शळोतणा**—स० क्रि० (सो०) जूती सिलना।
**शलोप**—स्त्री० (सि०) ठंड।
**शळोपुणा**—अ० क्रि० (सो०) बिलोते समय दही का ठंडा होना जिससे उसे बिलोने में अधिक समय लगता है।
**शलौटा**—पु० (शि०) सिल का बट्टा।
**शळौहा**—पु० (कु०) शलभ, टिड्डी दल।
**शल्यापो**—पु० (कु०) बकरी की ऊन की बनाई गई दरी।
**शल्ला**—वि० (सो०) ठंडा।
**शल्ली**—स्त्री० (चं०) बकरी के बालों से बनी रस्सी।
**शल्हेपड़ा**—पु० (कु०) छिलका।
**शल्होम**—पु० (कु०) उत्साह, आवेश।
**शवरा**—पु० (सि०) श्वशुर, ससुर।
**शवाणा**—अ० क्रि० (मं०) सूजन होना।
**शवार**—पु० (सो०) सवार।
**शवारी**—स्त्री० (सि०, सो०) सवारी।
**शशण**—स्त्री० (कु०) गिद्ध।
**शशणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) तेल लगाना, रोटी में घी लगाना।
**शशा**—पु० (सो०) खरगोश।
**शशा**—वि० (शि०) तेज चलने वाला।
**शशियण**—पु० (सि०) मक्खन।
**शशुणा**—अ० क्रि० (सो०) तेल आदि का लगाया जाना।
**शशेर**—स्त्री० (सि०) मंजरी, कोंपल।
**शहड़**—वि० (सि०) बिना पानी के पकाया गया (मांसादि)।
**शहड़े**—स्त्री० (मं०) टिड्डी दल।
**शहणा**—अ० क्रि० (कां०) दुबकना।
**शहणो**—पु० (शि०) घी, तेल आदि।
**शहरो**—पु० (मं०) श्वशुर।
**शहले**—पु० (मं०) पसलियां।
**शां**—अ० (सि०) जैसा।
**शांउख**—पु० (शि०) शंख।
**शांउळा**—वि० (कु०) सांवला।
**शांउळो**—वि० (शि०) सांवला।
**शांकड्ड**—पु० (शि०) छोटा पत्थर।
**शांकणो**—स० क्रि० (सि०) प्रशंसा करना।
**शांकरा**—वि० (मं०) भूरी आंखों वाला।
**शांख**—पु० (शि०, सि०) शंख।
**शांखिणा**—अ० क्रि० (शि०) जमीन में गड़े धन इत्यादि को प्राप्त करना असंभव होना।
**शांगड्ड**—पु० (कु०) लोहे की छोटी जंजीर।
**शांगतै**—पु० (कु०) गला, कंठ।
**शांगरा**—वि० (कु०, सि०, सो०) भूरी आंखों वाला।
**शांगळ**—स्त्री० (मं०) दे० शंगळैर।
**शांगळ**—स्त्री० (कु०, शि०) सांकल, जंजीर, बंधन।
**शांगळू**—पु० (शि०) दरवाज़े की सांकल।
**शांगा**—पु० (शि०) गला।
**शांगिटी**—स्त्री० (शि०) बादाम प्रजाति का एक फल।
**शांगुलट्टु**—पु० (शि०) छोटी ज़ंजीर।
**शांगे**—स्त्री० (शि०) प्राण।
**शांगोल**—स्त्री० (सि०) सांकल।
**शांघणा**—स० क्रि० (कु०) झाड़ियां साफ करना।
**शांघा**—पु० (चं०) दो सिरों वाला डंडा।
**शांघा**—पु० (कु०) टहना।
**शांज**—स्त्री० (कु०) हल में लगा लंबा डंडा, जो जुए के साथ जुड़ता है।
**शांटु**—पु० (शि०) छोटा ताला।
**शांड**—वि० (शि०, सि०, सो०) बांझ।
**शांढी**—वि० (कु०) बांझ, सर्वदा 'बांढी' शब्द के साथ समास रूप में प्रयुक्त होता है, यथा 'बांढी-शांढी'।
**शांत**—स्त्री० (सो०) विवाह के समय संपन्न करवाया जाने वाला एक संस्कार।
**शांद**—स्त्री० एक धार्मिक उत्सव।
**शांद**—स्त्री० (चं०, मं०) दे० शांत।
**शांदणा**—अ० क्रि० (सि०) थक जाना।
**शांदर**—स्त्री० (कु०) बांस की किस्म की एक भाड़ी की बारीक छड़ी।
**शांदर**—पु० (शि०, सि०) औज़ार।
**शांदा**—पु० (मं०, शि०) माल-मवेशी, पशुधन।
**शांबोक**—पु० (सि०) एक प्रकार का अन्न जो व्रत में प्रयुक्त होता है।
**शांवळा**—वि० (सो०) सांवला।
**शांवां**—पु० (शि०) शरीर पर चोट के कारण पड़ा नीला निशान।
**शाःट**—पु० (शि०) रुकावट।
**शाःण**—स्त्री० (कु०, मं०, शि०) जमी हुई बर्फ।
**शाःणो**—स० क्रि० (शि०) देखना।
**शाइण**—स्त्री० (मं०) दरवाज़े की चौखट।
**शाई**—स्त्री० (कु०) सरसों।
**शाई**—स्त्री० (शि०, सि०) शाखाएं।
**शाई**—स्त्री० साही, एक वन्य जीव जिसके शरीर पर तीखे श्याम-धवल कांटे होते हैं।
**शाईला**—वि० (कु०) नीला, शरीर पर चोट लगने से पड़ा नीला चिह्न।
**शाउग्र**—पु० (मं०) तांत्रिक।
**शाउड़ी**—स्त्री० (शि०, सि०) क्यारी।
**शाउण**—पु० (कु०, शि०, सो०) श्रावण मास।
**शाऊरी**—स्त्री० (शि०) किसी के प्रति झूठा प्रचार, चुगली।
**शाओ**—वि० (शि०) बंजर।
**शाओटो**—पु० (शि०) मोटी शाखा।
**शाओण**—पु० श्रावण मास।
**शाक**—पु० (सि०) छोटे-छोटे पत्थरों से बना ढेर।
**शाक**—पु० (कु०) पेड़ की छाल।
**शाकट्टु**—पु० (शि०) पत्थर के छोटे टुकड़े।
**शाकड़ी**—स्त्री० (कु०) दस-बारह 'पौथे' का बर्तन।
**शाकणा**—स० क्रि० (कु०) वृक्ष के तने की छाल को चारों ओर

से काटकर उतारना ताकि वह सूख जाए।
**शाकर**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) शकर।
**शाकरा/रो**—पु० (सि०, शि०) कंकर।
**शाका**—पु० बिल्ली प्रजाति का एक वन्य प्राणी।
**शाकि**—स्त्री० (सो०) बीमारी या कमजोरी की अवस्था में होठों पर आने वाली पपड़ी।
**शाकी**—स्त्री० (सि०) चीरी हुई लकड़ी।
**शाकुई**—स्त्री० (कु०) फुलवाड़ी।
**शाकुली**—स्त्री० (शि०, सि०) पापड़ की तरह का एक पकवान।
**शाको**—पु० (शि०) खेत की बीज उगने से पूर्व की स्थिति।
**शाकोभानणो**—स० क्रि० (शि०) बीज उगने से पूर्व भूमि की ऊपरी परत को कुरेदना।
**शाख**—स्त्री० (सि०) फसल।
**शाख**—स्त्री० (शि०) परिवार की एक इकाई।
**शाखड़ुआ**—पु० (सि०) कच्चा अनार।
**शाखरा**—पु० (कु०) युवा बैल।
**शाखला**—वि० (शि०) स्वच्छ।
**शाखी**—पु० (सि०) गायक।
**शाग**—पु० शाक, साग।
**शाग**—पु० (सि०) सब्जी।
**शागणा**—पु० (सि०) तिथि।
**शागबेली**—स्त्री० (सि०) राजमाष।
**शागुली**—स्त्री० (कु०) शाक व चावल की खिचड़ी।
**शाचणा**—अ० क्रि० (कु०) चिमटना, फंसना।
**शाचणो**—अ० क्रि० (शि०) चिपकना।
**शाजल**—स्त्री० (सो०) साक्ष्य, गवाही।
**शाजा**—वि० (सो०) स्पष्ट ध्वनि वाला।
**शाज़िए**—अ० (सि०) ज़बरदस्ती।
**शाज़िए**—अ० (शि०) उच्च स्तर में।
**शाट**—स्त्री० (मं०, सि०) चोट।
**शाटणा**—स० क्रि० (सो०) ठूंसना।
**शाटा**—पु० (शि०, सो०) किसी वस्तु में ठूंसी गई छोटी लकड़ी।
**शाटा**—वि० (कु०) हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा।
**शाटी**—स्त्री० (शि०) लकड़ी के छोटे टुकड़े।
**शाटे**—पु० (कु०) कपड़े के टुकड़े।
**शाटो**—स्त्री० (सि०) भैंस, सुअर की मोटी खाल।
**शाठ**—वि० साठ।
**शाठी**—पु० (सि०) पर्वतीय धान।
**शाठी**—पु०, (शि०) 'ठोडे' के खेल में कौरव दल का प्रतीक।
**शाठु**—वि० (सो०) साठ दिन में पकने वाली फसल।
**शाठुओ**—पु० (शि०) दर्द होने का भाव।
**शाड़**—पु० (शि०) आषाढ़ मास।
**शाड़**—पु० (चं०) सड़ने की क्रिया।
**शाड़**—पु० (कु०) क्यारी, घर के निकट का छोटा खेत जिसमें सब्जी आदि बोते हैं।
**शाड़ा**—पु० (शि०, सो०) वृक्ष की मोटी टहनी।
**शाड़ा**—पु० (सो०) सड़ाने का व्यापार।
**शाड़ा-शूड़ी**—स्त्री० (सो०) धरती पर गिरे सूखे पत्तों की हवा या किसी जीव से टकराने से होने वाली ध्वनि।
**शाड़ी**—स्त्री० (कु०, शि०) आंगनवाड़ी।
**शाडू**—वि० (शि०) आषाढ़ में पकने वाली (फसल या फल)।
**शाडू**—पु० (शि० सि०) एक वन्य जीव।
**शाडू**—पु० (शि०) खूबानी प्रजाति का एक फल।
**शाढ़**—पु० (कु०) आषाढ़ मास।
**शाढ़ा**—पु० (सि०) रोड़ा।
**शाढ़ा**—पु० (कु०) खूबानी।
**शाढ़ी**—स्त्री० (कु०) खूबानी की छोटी किस्म।
**शाण**—स्त्री० (चं०) पत्थर की वह चक्की जिस पर औज़ार की धार तेज की जाती है।
**शाणगीस**—वि० (कु०) बूढ़ा।
**शाणदार**—वि० (शि०) भव्य, सुंदर, शानदार।
**शाणा**—स० क्रि० (सि०) पूछना।
**शाणा**—पु० (सो०) खरपतवार।
**शाणा**—पु० (कु०) ताला।
**शाणाशूणि**—स्त्री० (सो०) झनझनाहट।
**शाणिना**—अ० क्रि० (कु०, शि०) ठंड से अकड़ना, ठंड लगना; घी या पानी आदि का जम जाना।
**शाणी**—स्त्री० (कु०) शाखा।
**शाणुना**—अ० क्रि० (सो०) खेत में अवांछित पौधों का उगना; घी आदि का जमना।
**शाणो**—पु० (शि०, सि०) ताला।
**शाण्हा**—पु० (कु०, मं०) टहना।
**शाती**—स्त्री० (कु०) अत्याचार, धीरे-धीरे मारने की क्रिया जिससे मरने वाले को लगातार कष्ट हो।
**शाद**—पु० (शि०, सो०) ध्वनि, आवाज़।
**शादणा**—स० क्रि० (मं०, शि०, सो०) बुलाना।
**शादणो**—स० क्रि० (शि०) पूछना।
**शादल**—स्त्री० (कु०) शहादत, साक्ष्य, गवाही।
**शादु**—पु० (चं०) एक प्रकार का आलू की तरह का कंद।
**शादे**—स्त्री० (शि०) विवाह, शादी।
**शाधणा**—स० क्रि० (कु०) बुलाना।
**शाधा**—पु० (कु०) बुलावा।
**शाधिणा**—स० क्रि० (कु०) बुलाया जाना।
**शापड़**—पु० (शि०, सो०) पथरीली ज़मीन।
**शाफड़ी**—स्त्री० (शि०, सि०) पसली।
**शाबड़ू**—पु० (शि०) मेमना।
**शाबाशी**—स्त्री० आशीर्वाद, सराहना।
**शाभर**—स्त्री० (कु०) लंबी व बारीक छड़ी जिससे पशु हांके जाते हैं।
**शाभरे/रो**—वि० (शि०) चितकबरा री।
**शामठा**—पु० (शि०) भेड़-बकरियों के पांव।
**शामत**—स्त्री० दुर्भाग्य, मुसीबत।
**शामळ**—स्त्री० (शि०) खाद्य सामग्री।
**शामा**—पु० (कु०, मं०) हल के जुए में लगे लकड़ी के

टुकड़े।
**शायल**—स्त्री० (सो०) सुहागे के बीच में लगने वाली लकड़ी।
**शारा**—पु० (सो०) साहस, उत्साह, लालसा।
**शारा**—पु० इशारा, संकेत।
**शार्त**—स्त्री० (मं०) प्रतिज्ञा।
**शाल**—स्त्री० फूलदार गरम चादर।
**शाळ**—पु० (चं०) दे० शाल्ह।
**शाळ**—स्त्री० (शि०, सो०) मादा पशु के बच्चा देने पर निकली जेर।
**शाळ**—स्त्री० (शि०) देवता के नाम पर एकत्रित किया गया भेड़ बकरियों का समूह।
**शालरा**—वि० (कु०) हलका काला, कुछ नीला।
**शालरा/री**—वि० (शि०) नीली आंखों वाला। (वाली)।
**शाळा**—वि० (सो०) भुरभुरा।
**शालू**—पु० (शि०) भेड़-बकरियों का देवता।
**शालूहण**—स्त्री० (चं०) पशुओं के आने जाने का मार्ग।
**शालौ**—पु० (मं०) शहद को इकट्ठा करने के लिए लगाया टोकरा।
**शाल्ह**—स्त्री० (कु०) घास रखने के लिए बनाया छोटा साधारण मकान।
**शाल्हा**—वि० (कु०, शि०, सि०) थोड़ा सा खुला (दरवाज़ा या ढक्कन आदि)।
**शावड़े**—स्त्री० (सि०) बगिया।
**शावण**—पु० (शि०, सो०) श्रावण मास।
**शावरा**—पु० (शि०, सो०) स्त्री की ससुराल। शादी।
**शावरी**—स्त्री० (सो०) पुरुष की ससुराल।
**शावरी**—स्त्री० (सि०) बकरे की खाल।
**शावरी**—स्त्री० (शि०) झूठ, असत्य।
**शाश**—पु० (कु०, सो०) श्वास।
**शाश**—स्त्री० (शि०) छाछ, लस्सी।
**शाशतर**—पु० (कु०) शास्त्र।
**शाशु**—स्त्री० (शि०, सो०) सास, श्वश्रू।
**शाशुआ**—स्त्री० (कु०) सास, श्वश्रू।
**शाह**—पु० (कु०, मं०) सांस, श्वास।
**शाह**—पु० (मं०) धनिक, आदरणीय व्यक्ति।
**शाही**—स्त्री० (कु०) दे० शाई।
**शाहुकार**—पु० धनाढ्य, महाजन, साहूकार।
**शाहुरा**—पु० (कु०) ससुराल।
**शाहुरी**—पु० (कु०) ससुराल के लोग।
**शिंऊटे**—स्त्री० (शि०) बालों की चोटी, वेणी।
**शिंग**—पु० सींग।
**शिंगटु**—पु० (कु०, शि०, सो०) छोटा सींग।
**शिंगठी**—स्त्री० (शि०) सींग।
**शिंगड़ी**—स्त्री० बच्चे के तालू में उसे ठीक करने हेतु लगाया हिरण का सींग।
**शिंगणा**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) सूंघना।
**शिंगरी**—स्त्री० (मं०) चील।
**शिंगळी-मिंगळी**—स्त्री० (कु०) एक विशेष प्रकार की बेल जिसकी जड़े कपड़े धोने के प्रयोग में लाई जाती थी और आजकल अच्छे मूल्य पर विदेश जा रही हैं।
**शिंगार**—पु० श्रृंगार।
**शिंगी**—स्त्री० एक औषधि।
**शिंगैठ**—पु० (मं०) भेड़-बकरी के सींग।
**शिंग्गार**—वि० (चं०) कठोर, पक्का।
**शिंडू**—पु० (कु०) एक छोटा भूत जो रात को सीटी बजाता है।
**शि:ढ**—स्त्री० (कु०, शि०) सीढ़ी।
**शि:मळा**—वि० (शि०, सो०) जिसके नाक से रेशा बहता रहता हो।
**शिउल**—पु० (कु०) बड़ा 'किरडा' जिसमें घास, अन्न आदि डालकर लाते हैं।
**शिऊसैण**—पु० (मं०) क्रूर वृत्ति का लगातार सिर हिलाने वाला देवता।
**शिकावणो**—स० क्रि० (शि०) शिक्षा देना।
**शिकूर**—पु० (सि०) शिखर।
**शिक्कड़**—पु० (चं०) वृक्ष की छाल, वृक्ष को काटते समय निकले छोटे छोटे टुकड़े।
**शिक्शा**—स्त्री० उपदेश, शिक्षा।
**शिख**—स्त्री० (सि०) सिर दर्द।
**शिख**—वि० (मं०) चौथाई 'पाथा'।
**शिख**—स्त्री० (शि०) शिक्षा।
**शिखणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) सीखना।
**शिखर**—पु० पेड़ का ऊपरी भाग, चोटी, पहाड़ की चोटी।
**शिखरो**—पु० (शि०) पेड़ की चोटी।
**शिखा**—पु० (सि०) कलेजा।
**शिखा**—स्त्री० (कु०) पका हुआ मांस, शिकार।
**शिखावणो**—स० क्रि० (शि०) सिखाना।
**शिगड़**—स्त्री० (शि०) शीघ्रता।
**शिगड़ा**—अ० (शि०) शीघ्रता से।
**शिगर**—पु० (चं०) ऊंचा पर्वत।
**शिगा**—अ० (शि०, सि०, सो०) शीघ्र।
**शिघरा**—वि० (कु०) ढलानदार।
**शिजी**—सर्व० (शि०) वे।
**शिठणे**—स्त्री० (सि०, सो०) विवाह में दी जाने वाली गालियां।
**शिड़कि**—वि० (शि०) कड़वी, तीखी।
**शिड़खी**—स्त्री० (शि०, सो०) सीटी।
**शिड़डा**—स्त्री० (मं०) दे० सिड्डू।
**शिढ**—स्त्री० एक ही लक्कड़ की सीढ़ी।
**शिणकणा**—स० क्रि० (सो०) नाक साफ करना।
**शिणी**—स्त्री० (चं०) अनाज कूटने की लकड़ी।
**शिणे**—स्त्री० (शि०) पपीहा।
**शित**—स्त्री० (कु०) सर्दी।
**शिबदवाला**—पु० शिवालय।
**शिमा**—पु० (कु०) श्लेष्मा।
**शिमी**—स्त्री० (कु०, शि, सि०) फली।
**शिम्ह**—पु० नाक का रेशा, श्लेष्मा।

**शिया**—पु० (मं०) प्रातःकाल के समय नाचने के लिए गाया जाने वाला राम स्तोत्र।
**शियाचणा**—अ० क्रि० (कु०) चिपकना।
**शियारकी**—स्त्री० (सो०) दे० शियारी।
**शियारी**—स्त्री० (कु०) भूरे रंग का एक पक्षी जिसकी चोंच और टांगें पीली होती हैं।
**शियाळ**—स्त्री० (कु०) श्रृगाल, सियार।
**शिरगुल**—पु० (शि०, सि०) स्थानीय देवता जो शिव का प्रतीक माना जाता है।
**शिरगुली**—स्त्री० (सि०) तिलचटा।
**शिरणी**—स्त्री० (मं०) लकड़ी की बड़ी डंडी।
**शिरणी**—स्त्री० मीठा खाद्य पदार्थ जो खुशी के अवसर पर बांटा जाता है।
**शिरनी**—स्त्री० (कु०) गाहते समय फसल को हिलाने का उपकरण।
**शिरबीड़ी**—स्त्री० (मं०) केंचुआ।
**शिरांटी**—स्त्री० (सि०) तकिया। फर्श के चारों ओर लगने वाली लकड़ी।
**शिरोत**—स्त्री० (सि०) सिरदर्द।
**शिलता**—पु० (मं०) शाक, साग।
**शिलमा**—पु० (कु०) सिनेमा, चलचित्र।
**शिलावणो**—स० क्रि० (शि०) पत्थर मारना। हराना।
**शिलै**—स्त्री० (कु०) शिला।
**शिलो**—पु० (शि०) नमी वाला स्थान, ऐसा स्थान जहां धूप न आती हो।
**शिल्ला**—स्त्री० (चं०, सो०) गेहूं आदि की बाली।
**शिल्ला**—वि० नमीयुक्त, वह भूभाग जहां धूप कम देर हो।
**शिल्ह**—स्त्री० (कु०, शि०) शिला, चौड़ा समतल पत्थर जिस पर नमक, चटनी आदि पीसी जाती है।
**शिल्हणा**—वि० (चं०) कठिन।
**शिल्हा**—वि० (कु०) छायायुक्त, जहां धूप न आती हो।
**शिल्हिणा**—अ० क्रि० (कु०) किसी स्थान पर धूप हटने से छाया हो जाना।
**शिवाला**—पु० शिवालय।
**शिशे**—पु० (मं०) शीशा।
**शिशो**—पु० (मं०) शीशम।
**शींग**—पु० (कु०, सि०, सो०) सींग।
**शींगी**—वि० (कु०) लंबे सींगों वाला।
**शींघणा**—स० क्रि० (कु०) सूंघना।
**शीःद**—वि० (सो०) शहीद।
**शीओशी**—वि० (सो०) लबालब, पूर्णतः भरा हुआ।
**शीकडु**—पु० (शि०) ज़िला शिमला के रोहड़ू क्षेत्र का देवता।
**शीख**—स्त्री० (सो०) शिक्षा, नेक सलाह।
**शीखलणा**—स० क्रि० (कु०) आदत डालना, कोई काम सीखना।
**शीग**—स्त्री० (सो०) शीघ्रता।
**शीचे**—स्त्री० (शि०) एक प्रकार का चर्मरोग।
**शीड़**—स्त्री० (सि०) लकड़ी की पेटी।
**शीड़**—स्त्री० (सो०) जंगली हलदी।
**शीण**—स्त्री० (कु०) चील।
**शीत**—पु० (मं०) शीतऋतु की सूचना देने वाला एक कीड़ा।
**शतौण**—वि० (चं०) शीघ्रता से कार्य करने वाला।
**शीम**—पु० श्लेष्मा।
**शीय**—पु० (सि०) सेहरा।
**शीर**—पु० (मं०) नख, नाखून।
**शीर**—पु० (कु०) सिर के बाल।
**शीरतु**—स्त्री० (सि०) दे० शिरोत।
**शीरश**—पु० (कु०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी मजबूत होती है और सामान बनाने के लिए बड़ी उपयुक्त होती है।
**शीरा**—पु० (शि०) मुखिया।
**शीरा**—पु० (सो०) ऊपर का भाग, शिखर।
**शीराट**—पु० (कु०) प्रसाद।
**शीराबीरी**—स्त्री० (कु०, मं०) अन्न के बदले दूसरी वस्तु को उसी माप या तोल में बराबर लेने का भाव।
**शील**—स्त्री० मसाला पीसने का पत्थर, सिल।
**शीलिणा**—अ० क्रि० (कु०) दे० शिल्हिणा।
**शीलू**—पु० (सि०) देर से काम होने की क्रिया।
**शीशा**—पु० दर्पण।
**शीशी**—स्त्री० छोटी बोतल।
**शीशो**—स्त्री० (सि०) मर्दन, मालिश।
**शीसु**—पु० (सि०) दर्पण।

**शुंकाकेड़ा**—वि० (सि०) मारने वाला (बैल)।
**शुंखर**—पु० (कु०) पथरीली चोटी।
**शुंगणा**—स० क्रि० (कु०) झाड़ू मार कर साफ करना।
**शुंगर**—पु० (चं०) सूखी फली।
**शुंघ**—पु० (कु०) घूंट।
**शुंटा**—पु० (शि०) झाड़ू।
**शुंठ**—पु० (कु०) मुंह।
**शुंठी**—वि० (कु०) जिसका मुंह ऊंचा को हो।
**शुंड**—पु० (कु०) मुंह।
**शुंड**—स्त्री० सोंठ।
**शुआंकणा**—स० क्रि० (कु०) कुल्हाड़े आदि से बुरी तरह काटना।
**शुआंकिणा**—अ० क्रि० (कु०) कुल्हाड़ी आदि से कट जाना।
**शुआंकी**—वि० (कु०) जल्दी-जल्दी खाने वाला।
**शुआइण**—पु० (सि०) कूड़ा-करकट।
**शुआड़**—स्त्री० (मं०) घर के समीप की क्यारी।
**शुआनड़ा**—पु० (कु०) युवक।
**शुआर**—पु० (कु०) सवार, आरोही।
**शुआशी**—स्त्री० (कु०) श्वास फूलने की बीमारी।
**शुआहणा**—स० क्रि० (कु०) भारी वस्तु को सहारा देकर थोड़ा सा ऊपर उठाना।
**शुआहिणा**—अ० क्रि० (कु०) थोड़ा सा उठाया जाना।
**शुइण**—स्त्री० (कु०) एक प्रकार का घास।
**शुएड़ना**—स० क्रि० (कु०) हटाना।
**शुकड़ू**—वि० (सि०, सो०) कमज़ोर।

शुकणा—अ० क्रि० सूखना।
शुकपुक—स्त्री० (कु०) धीमी हरकत, हिलडुल।
शुकबिश—पु० (कु०) ऐसा विष जिसे खाने से आदमी सूखता जाता है।
शुकमांज—पु० (कु०, सो०) सूखी राख से पात्र साफ करने का व्यापार।
शुकर—पु० शुक्रवार।
शुकला—पु० (कु०, सि०) शुक्ल पक्ष।
शुकळा/ळो—वि० सफेद।
शुकशुक—स्त्री० (कु०) धीरे-धीरे बात करने का भाव।
शुकसिन—स्त्री० (कु०) खेल आदि आरंभ करने के लिए सिक्का उछालने के बजाए पत्थर को एक ओर से गीला करके उछालने की क्रिया।
शुका—वि० (कु०, सो०) सूखा, [illegible]।
शुकारा—पु० (चं०) सूखे में पैदा होने वाला धान।
शुकाणों—स० क्रि० (शि०) सुखाना।
शुकेमुकरिना—अ० क्रि० (कु०) साफ इंकार करना।
शुको—वि० (शि०) सूखा, शुष्क।
शुक्क—वि० (शि०) सफाचट।
शुक्कण—पु० (चं०) सूखने डाली गई वस्तु।
शुक्कर—पु० शुक्रवार, शुक्र ग्रह।
शुक्का—वि० (सि०, सो०) सूखा।
शुक्र—पु० (कु०) 'पुहालों' द्वारा शुक्र ग्रह के नाम दी जाने वाली पशु बलि।
शुकलेआनणों—पु० (शि०) सफेद छिलके वाले धान।
शुगल—पु० (कु०) मनबहलाव का कोई काम।
शुग्ता—वि० (सि०) मंदा।
शुचा—वि० (कु०) पवित्र, साफ।
शुचे—वि० (शि०, सि०) पवित्र।
शुजणा—अ० क्रि० (सो०) सूजना, सूझना।
शुजी—स्त्री० (सि०) संदेश।
शुटा—पु० (शि०, सि०, सो०) तंबाकू का एक कश।
शुटे—स्त्री० (शि०) झाड़ी।
शुड़क—अ० (कु०) खामोश, चुपचाप।
शुड़कणा—स० क्रि० (शि०, सो०) पेयपदार्थ को पीना।
शुड़क्कू—पु० (शि०) बादलों की गर्जन।
शुड़्डला—वि० (सि०) मीठा।
शुणना—स० क्रि० (कु०) सुनना।
शुणनो—स० क्रि० (शि०, सि०) सुनना।
शुणपुण—स्त्री० (शि०) छन-छन।
शुणिना—अ० क्रि० (कु०) सुनाई देना, सुना जाना।
शुती—स्त्री० (कु०) फलों के टुकड़े।
शुदबुद—स्त्री० सुध-बुध, होश-हवास।
शुदी—अ० (सि०) थोड़ा सा।
शुदे—अ० (शि०, सो०) मात्र, केवल।
शुद्द—वि० शुद्ध।
शुद्धा—अ० (कु०) शुद्ध, बिल्कुल, निरा।
शुनमशाण—पु० (सो०) सूनापन।

शुनशाण—वि० (सि०) सुनसान।
शुनी—वि० (सि०) बांझ।
शुनैरू—वि० (चं०) शून्य किया हुआ।
शुनो—वि० (शि०) निर्जन, सुनसान।
शुन्न—पु० (सो०) सुन्न।
शुन्न—वि० (सो०) आश्चर्य चकित।
शुपो—पु० (सि०) शूर्प, सूप।
शुब—वि० (सि०, सो०) शुभ।
शुरंगद्दू—पु० (चं०) बजरी, ओले।
शुरका—पु० (कु०) जुलाब।
शुरणे—वि० (शि०) सूनी, खाली।
शुरणे—वि० (शि०) चुस्त।
शुरमा—पु० (शि०) काजल, सुरमा।
शुरा—पु० (कु०) डंडा, कुदाल आदि औज़ारों का डंडा।
शुरुआ—पु० (शि०) शोरबा।
शुर्श—पु० (कु०) एक घास विशेष।
शुलशुली—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) बेचैनी, धुकधुकी।
शुलशुले—वि० (सि०) सीधी।
शुशली—स्त्री० (कु०) सीटी, मुंह से सीटी के साथ गाना गाने का संगीत।
शुशाणो—पु० (सि०) काला सर्प।
शुष्टू—पु० (मं०) स्थानीय कठोर घास।
शूंगणा—स० क्रि० (सो०) सूंघना।
शूंगी—स्त्री० (मं०) आयताकार छोटा कमरा।
शूंटू—पु० (शि०, सि०, सो०) लिपाई करने की कूची, छोटा झाड़ू।
शूंठ—स्त्री० (सि०, सो०) सोंठ।
शूंठ—पु० (सि०) मुंह।
शूंड—स्त्री० (शि०, सो०) सूंड।
शूंबड़—स्त्री० (कु०) झाड़ू।
शूंड़टा—पु० (शि०, सि०, सो०) छोटा झाड़ू।
शू़ च—अ० (कु०) थक कर ली गई लंबी सांस।
शू—पु० (मं०) तोता।
शूआ—पु० (सि०, सो०) तोता।
शूई—अ० (कु०) आने वाला कल, श्वः।
शूई—अ० (शि०) थककर ली गई ऊंची सांस।
शूईण—स्त्री० (शि०, सि०) झाड़ू।
शूईना—पु० (सि०) झाड़ू।
शूऐ—पु० (शि०) अंकुर।
शूऐण—स्त्री० (सि०) बड़ा झाड़ू।
शूका—वि० (शि०) सूखा, शुष्क।
शूकोणा—स० क्रि० (सि०) सुखाना।
शूगा—पु० (कु०) तोता।
शूजणो—अ० क्रि० (शि०) सूजना।
शूझणो—अ० क्रि० (कु०) दिखाई देना।
शूझीणा—अ० क्रि० (कु०) दिखाई पड़ना, याद आना।
शूड़ी—स्त्री० (सो०) सीटी।
शूण—स्त्री० (सो०) झाड़ू।

शूण—स्त्री० (सो०) सूजन। सुनवाई।
शूणा—स० क्रि० (सो०) झाड़ू देना।
शूना—वि० (कु०) सूना।
शूप—पु० (कु०, सो०) शूर्प, सूप।
शूपो—पु० (शि०) सूप।
शूजण—वि० (शि०) होने वाला, भविष्य के विकास, उत्कर्ष समृद्धि आदि का आभास देने वाला।
शूभा—स्त्री० (सि०) प्रातः।
शूर—पु० (शि०) गली, मकान का पिछवाड़ा।
शूर—वि० शूरवीर, बलवान्।
शूरणो—वि० (शि०) सचेत।
शूरा—वि० (चं०) बलवान्।
शूल—स्त्री० (सि०) पेट दर्द, अत्यधिक पीड़ा।
शूळ—स्त्री० (कु०) पेट दर्द।
शूळा—स्त्री० (कु०) प्रसव वेदना।
शूळी—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) सूली। फल में लगने वाली सूंडी।
शूलू—अ० (शि०) बिल्ली को पुकारने का शब्द।
शूशाणो—अ० क्रि० (सि०) सांस लेना।
शूशाणो—स० क्रि० (शि०) कुत्ते को किसी के पीछे भगाना। किसी के विरुद्ध किसी को उकसाना।
शूहण—स्त्री० (मं०) झाड़ू।
शूहणा—स० क्रि० (मं०) साफ करना।
शेंका—पु० (चं०) सांस फूलने का रोग।
शेंइका—पु० (कु०) सांस फूलने का रोग।
शेःल—पु० (कु०) भांग के डंठल के रेशे जिनसे रस्सी बनती है।
शेउरा—पु० (कु०) श्वशुर।
शेउरो—पु० (शि०) श्वशुर।
शेकटा—पु० (कु०, शि०) छिलका, लकड़ी का पतला व चौड़ा टुकड़ा।
शेकटी—स्त्री० (कु०, शि०) गुठली के छिलके।
शेकड़ा—पु० (सि०, सो०) वृक्ष की छाल।
शेकड़ी—स्त्री० (सो०) दाड़िम।
शेकड़ो—पु० (सि०) टोकरी।
शेकार—पु० (चं०) अनाज रखने का बांस या मिट्टी का पात्र।
शेखी—स्त्री० शेखी, घमंड, डींग।
शेगड़ा—पु० (कु०) अलाव।
शेगळ/ढ—पु० (कु०) कैथ, इस वृक्ष विशेष पर नाशपाती की कलम लगाई जाती है।
शेज—स्त्री० (सो०) गोबर का व्यवस्थित ढंग से लगा ढेर।
शेज—स्त्री० (शि०) मेल-मिलाप।
शेटणा—स० क्रि० (कु०) फेंकना।
शेटा—पु० (चं०) मुर्गे का गला जिसमें वह दाना इकट्ठा करता है।
शेटिणा—अ० क्रि० (कु०) किसी वस्तु का गिर जाना।
शेटे—स्त्री० (शि०) दे०, 'छलुकर', मकई की 'गुल्ली'।
शेड़—पु० (शि०) सीटी।
शेड़—पु० (मं०) ऊपर की मंज़िल से निचली मंज़िल को जाने का रास्ता।
शेड़—स्त्री० (सो०) थनों से निकलने वाली दूध की धारा।
शेड़शेड़—स्त्री० (कु०) शड़-शड़ की ध्वनि।
शेड़ा/ड़ो—वि० (शि०, सि०) अंधा।
शेड़ा—पु० (मं०) सर्दी।
शेड़ी—स्त्री० (मं०) मुंह में पड़े छाले।
शेड़ी—स्त्री० (चं०) पेड़ के तने पर उगने वाला कुकुरमुत्ता।
शेड़ो—वि० (शि०) फटा हुआ।
शेणकणा—अ० क्रि० (कु०) पानी का खौलना।
शेणशणाट—स्त्री० (कु०) नदी के पानी के बहने की ध्वनि।
शेणशेण—स्त्री० (कु०) पानी के खौलने की ध्वनि।
शेणी—स्त्री० (सि०) गीदड़।
शेता—वि० (कु०) श्वेत, सफेद।
शेतो—वि० (शि०) दे० शेता।
शेधू—पु० (कु०, मं०) पशु आदि के पेट में न पचा हुआ अन्न, घासादि।
शेपशपी—स्त्री० (कु०) प्यास।
शेपशेपा—वि० (कु०) कसैला (पानी)।
शेफला—वि० (कु०) फीका।
शेफला—पु० (सो०) मिर्च आदि का छिलका।
शेफा—स्त्री० (शि०, सो०) मुंह की झाग।
शेम—पु० (सि०) श्लेष्मा।
शेर—पु० सिंह।
शेर—स्त्री० (सो०) नई फसल आने पर देवी-देवता को चढ़ाई गई पहली रोटी।
शेर—वि० (कु०) ऊंचा।
शेरकदा—वि० (कु०) बिल्कुल स्वच्छ।
शेरदू—पु० शेर का बच्चा।
शेरवानी—स्त्री० एक तरह का आधुनिक ढंग का अंगरखा।
शेरशो—स्त्री० (शि०) सरसों।
शेरी—पु० (शि०) देवता का गड़रिया।
शेरुआं—पु० (कु०) सिरहाना, तकिया।
शेरो—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) सरसों।
शेल—स्त्री० (मं०) वृक्ष की छाया।
शेल—पु० दे० शेःल।
शेलकावणो—स० क्रि० (शि०) छिलका उतारना।
शेलड़ी—स्त्री० (कु०) धोए माश के छिलके और चावल की खिचड़ी।
शेळना—स० क्रि० (कु०) बुझाना।
शेलबात—पु० (सि०) मसूढ़ों में लगने वाला रोग।
शेला—पु० (मं०) बकरी के बालों का नमदा।
शेला—पु० (चं०) जलने से पड़ा फफोला।
शेला—पु० (कु०) छिलका।
शेळा—पु० (कु०, शि०, सो०) सर्दी, ठंड।
शेलाई—स्त्री० (सि०) ठंडक, आराम।
शेलावणो—स० क्रि० (शि०) ठंडा करना।
शेलाशेली—अ० (कु०) जल्दी-जल्दी किसी वस्तु को सिलपर

पीस कर आगे निकालने की क्रिया।

**शेलिया**—पु० (सि०) फसल के बीच उगने वाला घास।

**शेळो**—वि० (शि०) ठंडा।

**शेल्ह**—स्त्री० (कु०) भांग के पौधे के रेशे जिनकी रस्सी बनती है।

**शेल्ह**—स्त्री० (मं०) चारपाई की रस्सी।

**शेवनो**—स० क्रि० (शि०) बुझाना।

**शेष**—स्त्री० (कु०) देवता के 'गूर' द्वारा देवता की ओर से बधाई के रूप में किसी व्यक्ति के हाथ में दिए गए फूल और अक्षत।

**शेह**—पु० (चं०) चेहरा।

**शेहलांडू**—पु० (सि०) साही के कांटे।

**शैंगड़**—वि० (कु०) अवशेष।

**शैकड़ा**—वि० (शि०, सो०) सैंकड़ा।

**शैकड़ी**—स्त्री० (सि०) टोकरी।

**शैडू**—पु० खरगोश।

**शैणा**—स्त्री० (मं०) परिसर।

**शैणा**—वि० (चं०) योग्य।

**शैणो**—अ० क्रि० (शि०) सूजना।

**शैद**—पु० (मं०) शहद।

**शैपोणो**—स० क्रि० (सि०) मलना।

**शैर**—पु० (सो०) शहर।

**शैर**—वि० (मं०) होशियार।

**शैर**—स्त्री० (चं०) सैर।

**शैल**—स्त्री० (मं०) साही जानवर।

**शैल**—स्त्री० (शि०) लोमड़ी।

**शैली**—स्त्री० (सो०) हल तथा जुए को जोड़ने के लिए लगी लकड़ी या लोहे की कीली।

**शों**—स्त्री० (सि०) शपथ, सौगंध।

**शों**—स्त्री० (कु०) बारीक शरीर तथा लंबी-लंबी टांगों वाला एक कीट जो रेंगता है।

**शोंई**—स्त्री० (कु०) फली।

**शोंई**—स्त्री० (कु०) पतली छड़ी से मारने पर पड़ा घाव।

**शोंख**—पु० (कु०) शंख।

**शोंघा**—पु० (कु०) गला।

**शोंफर**—पु० (कु०) मुंह, चेहरा।

**शो**—वि० (सि०) सौ, शत।

**शो**—पु० (कां०) गन्ने की पोरी का छिलका।

**शोइण**—स्त्री० (कु०) एक हरा घास जो पशुओं के लिए सुंदर चारा होता है। इसे सर्दियों के लिए सुखाकर रखा जाता है।

**शोईशोर**—पु० (सि०) शनिवार।

**शोई**—स्त्री० (सि०) फली।

**शोउंक**—स्त्री० (कु०, शि०) चाव, शौक।

**शोउज़**—पु० (शि०, सि०) आश्विन।

**शोकड़ा**—पु० कर्क, केकड़ा।

**शोकलो**—वि० (मं०, शि०) सूखा (वृक्ष)।

**शोका**—पु० (चं०, सो०) सूखने की क्रिया।

**शोक्ता**—वि० (सि०) शक्तिशाली।

**शोख**—स्त्री० (कु०, मं०, सि०) प्यास।

**शोखा**—वि० (कु०) प्यासा।

**शोखिणा**—अ० क्रि० (कु०) प्यास लगना।

**शोख्ता**—वि० (शि०) अत्यंत चिंतित।

**शोग**—पु० दुःख, शोक।

**शोच**—पु० (शि०) धान की पत्तियों की तरह का एक खरपतवार।

**शोचावणो**—स० क्रि० (शि०) 'शोच' निकालना।

**शोजा**—पु० (सो०) अधिक सूजन।

**शोट**—पु० (शि०) तंबाकू आदि का एक कश।

**शोटणा**—स० क्रि० (कु०) फेंकना, छोड़ देना।

**शोटणा**—स० क्रि० (मं०) टोकना।

**शोटणो**—स० क्रि० (शि०) तंबाकू पीना।

**शोटराल**—स्त्री० (सि०) गप्प।

**शोठणा**—अ० क्रि० (मं०) याद आना।

**शोठा**—पु० डंडा।

**शोठी**—स्त्री० लाठी।

**शोठुणा**—स० क्रि० (कु०) खोना।

**शोड़**—पु० (सो०) ज़ोर की बौछार।

**शोड़**—पु० (शि०) दो दांतों के बीच उगा अवांछित दांत। काटी गई झाड़ी का ठुंठ।

**शोड़क**—स्त्री० (सि०) सड़क।

**शोड़ना**—अ० क्रि० (सि०) सड़ना।

**शोड़पछोड़**—स्त्री० (सो०) गिरे या बिखरे हुए अन्नादि को इकट्ठा करके साफ करने का व्यापार।

**शोड़ाण**—स्त्री० (शि०, सि०) दुर्गंध।

**शोणासी**—स्त्री० (शि०, सि०) संड़सी।

**शोता**—पु० (शि०) झाड़ी आदि का ठुंठ।

**शोदणा**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) खोजना, पूछताछ करना, शुद्ध करना।

**शोधणा**—स० क्रि० (कु०, मं०) कूड़ा-करकट, मलबा आदि की सफाई करना।

**शोधा**—पु० (कु०) अतिसार।

**शोधा**—पु० (मं०) नींव की खुदाई।

**शोधो**—वि० (शि०) शूरवीर।

**शोबटा**—वि० (शि०, सि०, सो०) सुंदर।

**शोबड़ा**—पु० (मं०) जल स्रोत, जलोद्‌गम।

**शोबलो**—वि० (शि०) सुंदर, शोभायमान।

**शोभ**—स्त्री० (कां०, कु०) शोभा, सुंदरता, खूबसूरती।

**शोभणा**—अ० क्रि० (मं०) सजना।

**शोभला**—वि० (कु०) सुंदर, अच्छा।

**शोभिणा**—अ० क्रि० (कु०) सुंदर लगना, अच्छा लगना।

**शोमकिणा**—अ० क्रि० (कु०) (पानी आदि का) थोड़ा सूख जाना।

**शोर**—स्त्री० (सो०) एकत्र की गई वस्तु।

**शोरता**—वि० (कु०) तेज़, सजग, तुरंत सुनने वाला।

**शोरना**—स० क्रि० (सो०) बिखरी हुई वस्तु को हाथ या झाड़ू

आदि से इकट्ठा करना।
**शोरा**—पु० (शि०) कूट हुए चावल के बीच धान का दाना।
**शोराहली**—स्त्री० (सि०) ओलावृष्टि।
**शोरिया**—पु० (सि०, सो०) सरिया।
**शोरी**—स्त्री० (सि०) तीर।
**शोरी**—वि० (मं०) असामाजिक, अपने आप में मस्त।
**शोरी**—स्त्री० (कु०) धुआं।
**शोरी**—वि० (ऊ०, कां०) बहादुर।
**शोरुआ**—पु० शोरबा।
**शोल**—पु० (सि०) टिड्डा।
**शोल**—स्त्री० (सि०) नसें।
**शोशड़ी**—स्त्री० (मं०) पत्ते या किसी फूल को मिलाकर बनाया मल्ला (बड़ा)।
**शोशळा**—वि० (कु०) छिद्रयुक्त।
**शोशळा**—वि० (शि०) बिना दांत का।
**शोशा**—पु० (सि०) खरगोश।
**शोशी**—वि० (कु०) विरले दांतों वाला।
**शोहणा**—स० क्रि० (कु०) बहाकर ले जाना।
**शोहरी**—स्त्री० (कु०) लड़की।
**शोहरु**—पु० (कु०) लड़का।
**शोहळ**—स्त्री० (कु०) चिता।
**शौं**—वि० (शि०) एक हाथ का माप।
**शौंक**—पु० (सो०) शौक।
**शौंकण**—वि० शौकीन (स्त्री)।
**शौंकोलको**—वि० (सि०) स्वच्छ।
**शौंला**—वि० (चं०) थोड़ा सा पीलापन लिए हुए।
**शौः**—स्त्री० (सो०) दरार।
**शौःउणा**—क्रि० (सो०) मिट्टी के पात्र आदि में दरार पड़ना।
**शौ**—पु० (शि०) भेड़-बकरी आदि के आमाशय से निकला मल।
**शौ**—वि० सौ, शत।
**शौइर**—पु० रबी की फसल।
**शौइरी**—स्त्री० प्रथम आश्विन को मनाया जाने वाला त्यौहार।
**शौउंक**—स्त्री० (कु०, शि०) चाव, शौक।
**शौऊ**—पु० (चं०) घड़े बनाने की लाल मिट्टी।
**शौकरनो**—स० क्रि० (सि०) शपथ खाना।
**शौकळी**—वि० (कु०) शौक रखने वाला।
**शौका**—पु० (कु०) शहतीर के लिए लकड़ी काटते हुए निकला लकड़ी का टुकड़ा जो जलाने के काम आता है।
**शौगणा**—स० क्रि० (कु०) गीला करना।
**शौगन**—पु० (कु०) शकुन।
**शौगा**—पु० (चं०) अपशकुन।
**शौगिणा**—अ० क्रि० (कु०) गीला होना।
**शौघणा**—स० क्रि० (कु०) दे० शौगणा।
**शौचणा**—अ० क्रि० (कु०) फंसना, चिपकना।
**शौज**—पु० असौज मास।
**शौटमारणी**—स० क्रि० (कु०) धूम्रपान करना।
**शौट्टी**—स्त्री० (शि०) गेहूं, मक्की आदि का सूखा ठुंठ।तंबाकू पीने की नली।
**शौठ**—वि० (कु०) साठ।
**शौड़ा**—वि० (सि०) सड़ा हुआ।
**शौड़ो**—वि (शि०) दुष्ट।
**शौढ़क**—स्त्री० (शि०) सड़क।
**शौढ़ना**—अ० क्रि० (कु०) सड़ना।
**शौद**—स्त्री० (शि०) आवाज़।
**शौदर**—स्त्री० (कु०) वृद्धि, बरकत।
**शौफ**—स्त्री० (कु०) अरथी।
**शौर**—पु० (कु०) मकान के छत की वह कड़ी जो सबसे अग्रिम भाग में लगाई जाती है।
**शौर**—पु० (शि०) रबी की फसल।
**शौरन**—स्त्री० (कु०) शरण।
**शौरम**—स्त्री० (शि०) लज्जा, शर्म।
**शौरा**—पु० (सो०) श्वशुर।
**शौराच**—स्त्री० (मं०) महाशिवरात्रि।
**शौरी**—स्त्री० (शि०) वह पहाड़ी जिसमें से मलबा गिरा हो।
**शौरु**—पु० (कु०) ओले।
**शौरु**—पु० (शि०) आंख का काला भाग।
**शौर्न**—पु० (कु०) खाली मकान; मूल घर से दूर फसल आदि की रखवाली के लिए बनाया साधारण मकान।
**शौल**—पु० (कु०) मलमूत्र।
**शौळ**—स्त्री० (कु०) दरार।
**शौली**—स्त्री० (कु०) बिरोज़ायुक्त चीरी हुई लकड़ी।
**शौल्ला**—वि० (शि०) ठंडा।
**शौशू**—स्त्री० (कु०) सास।
**शौहणा**—अ० क्रि० (कु०) वर्षा का थम जाना।
**श्यायी**—स्त्री० (सि०) चैन, ठंडक।
**श्रपी**—वि० (मं०) अनाथ।
**श्राप**—पु० शाप।
**श्रीयुंप्रीयुं**—पु० (कु०) होश-हवास।
**श्वांगा**—पु० (सो०) एक वृक्ष विशेष जिसकी दातुन लाभदायक होती है।
**श्वाळा**—पु० (सो०) शोर।

## ष

**ष**—देवनागरी वर्णमाला का इकतीसवां और उष्मवर्ग का दूसरा व्यंजन वर्ण।उच्चारण स्थान मूर्द्धा।
**षतणा**—अ० क्रि० (चं०) फंसना।
**षतणा**—अ० क्रि० (चं०) आग लगना।
**षप्पड़**—पु० (चं०) कठोर चट्टान; कठोर वस्तु।
**षुद्र**—वि० (चं०) शरारती। जिसे यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार हो।
**षुनौरु**—वि० (चं०) शून्य किया हुआ।
**षुन्ना**—वि० (चं०) भूखा, लालची।

# स

स—देवनागरी वर्णमाला का बत्तीसवां व्यंजन, ऊष्म वर्ण। उच्चारण स्थान दंत।
स—अ० (मं०) अपनी पत्नी के लिए संबोधन।
संकट—पु० कष्ट।
संकटुणा—अ० क्रि० (सो०) घबराहट होना।
संख—पु० शंख।
संखचूड़—पु० सांप की एक किस्म।
संखिया—पु० विष।
संखीरन—स्त्री० (ऊ०) मालकंगनी, एक लता जिसके दानों का तेल दवा के काम आता है।
संगड़ा—वि० तंग, कम चौड़ा।
संगड़ेरना—स० क्रि० कम चौड़ा करना।
संगणा—अ० क्रि० शर्माना, झिझकना।
संगत—स्त्री० साथ, संगति।
संगल—स्त्री० कीर्तन, सत्सग।
संगतरा—पु० बड़ी नारंगी, संतरा।
संगर—पु० (मं०) सूअर की एक प्रजाति।
संगरगौ—पु० (शि०) भीड़-भाड़।
संगरफ—पु० (चं०) एक दवाई विशेष।
संगराली—स्त्री० बैलों को जुए से बांधने की क्रिया।
संगरावणो—स० क्रि० (शि०) फसल का संग्रह करना।
संगरेरी—स्त्री० (सो०) दे० सलाणा।
संगरोण—पु० श्रृंगार, सजधज।
संगरोल—पु० (चं०) तालिस्त्री, एक पहाड़ी वृक्ष जिसके पत्ते औषधि के काम आते हैं।
संगळ—पु० लोहे की सांकल।
संगळी—स्त्री० द्वार पर लगी छोटी सांकल, सांकल।
संगलोआ—पु० केंचुआ।
संगलोह—पु० सिकुड़ने या सिमटने का भाव।
संगसंगेल—स्त्री० बिखरी वस्तुओं को तरतीब से रखने का भाव।
संगार—पु० श्रृंगार।
संगासन—पु० सिंहासन।
संगाह—पु० लकड़ी की बनी बड़ी सीढ़ी।
संगाहणी—स्त्री० संग्रहणी।
संगिया—पु० साथी।
संगी—पु० साथी।
संगी—पु० (मं०) स्वांग करने वाला व्यक्ति।
संगी—पु० (कां०) भक्त।
संगु—पु० (सि०) गला।
संगेटणा—स० क्रि० इकट्ठा करना।
संगेळणा—स० क्रि० संग्रह करना, क्रम में रखना।
संगोड़ना—स० क्रि० जोड़ना, एकत्र करना।
संगोड़ना—अ० क्रि० सिमटना।
संगोडू—वि० (बि०) छोटे-छोटे सींगों वाला, जो सींग अभी तक पूरे आकार तक उभरे न हों।
संगोणा—अ० क्रि० झिझकना।
संगोहू—वि० बाईस श्रावण से आठ भाद्रपद तक के बरसाती पन्द्रह दिन।
संग्रांद—स्त्री० (शि०) संक्रांति।
संघड़ोणा—अ० क्रि० उदास होना।
संघा—पु० गला, कंठ, हलक।
संघाड़ा—पु० एक फल विशेष।
संघारू—पु० (सि०) चिता जलाने वाला व्यक्ति।
संघे—अ० (कु०) साथ, साथ-साथ।
संघेटणा—स० क्रि० संग्रह करना।
संघोई—पु० (कां०) महाजन।
संघोणा—अ० क्रि० लड़ने को तैयार होना।
संचरलूण—पु० (मं०) दे० शणचर लूण।
संज—स्त्री० देवी-देवता को चढ़ाने हेतु बनाया पकवान।
संजळोणा—स० क्रि० (सो०) धागों को सुलझाना।
संजाल—पु० (चं०) Fraxinus xanthoxyloides
संजु—वि० संचयशील।
संजूहड़ा—वि० कंजूस।
संजेड़ा—पु० (सो०) संग्रह। खमीर वाला आटा।
संज़ेणा—स० क्रि० (कु०) बरतनों को सावधानी से रखना और प्रयुक्त करना।
संजेरनी—स्त्री० (कां०) लीप-पोत कर स्वच्छ बनाने की क्रिया।
संजोग—पु० संयोग।
संजोणा—स० क्रि० एकत्रित करना।
संजोरना—स० क्रि० गूंथे हुए आटे को नर्म करने हेतु कुछ देर ढक कर रखना।
संझ—स्त्री० संध्या, सायंकाल, शाम।
संझयालू—पु० शाम का भोजन।
संझोका—वि० सायंकालीन।
संडर—वि० (चं०) हल न खींचने वाला (बैल)।
संढ—वि० जो (पशु) कमी दूध न दे, बांझ।
संढवार—पु० (मं०) विशेष पकवान।
संत—पु० साधु।
संतरी—पु० सिपाही।
संतानगपाल—पु० संतान गोपाल, संतान न होने पर किया गया धार्मिक अनुष्ठान।
संताळी—वि० सैंतालीस।
संतोख—पु० संतोष।
संतोखी—वि० संतोष वाला।
संद—पु० औज़ार।
संदबंद—पु० औज़ार तथा बरतन।
संदर—पु० हल का डंडा।
संदरायी—स्त्री० (सि०) रोशनदान।
संदा—पु० औज़ार।
संदाल—स्त्री० (मं०) सर्दी के वर्षा के दिन।
संदीहा—पु० (मं०) शिवरात्रि के उपलक्ष्य में अनाज के ढेर पर

जलाया दीपक।
**संदुकड़ी**—स्त्री० पेटी, संदूकची, गल्ला।
**संदे**—पु० (सि०) संदेह।
**संदया**—स्त्री० पूजा पाठ, संध्या।
**संघ**—पु० चरागाह।
**संघ**—स्त्री० सीमा का पत्थर, सेंघ।
**संघरता**—पु० निपटारा।
**संघराता**—पु० आधी रात।
**संघाई**—स्त्री० (चं०) सर्दी में ओढ़ी जाने वाली चादर।
**संघारना**—स० क्रि० (सि०) दाह संस्कार करना।
**संघारे**—पु० (सि०) रक्षा बंधन से तेरह दिन पहले मनाया जाने वाला एक त्योहार, उत्सव।
**संघूर**—पु० सिंदूर।
**संध्या**—स्त्री० दैनिक उपासना।
**संफ**—स्त्री० (सो०) खजूर के पत्तों की चटाई।
**संबरावणो**—स० क्रि० (शि०) मुरम्मत करना।
**संबरेणा**—स० क्रि० (कु०) देखभाल करना, संभरण करना।
**संबरेरना**—स० क्रि० (कु०) स्वस्थ करना।
**संबाणा**—स० क्रि० खत्म करना।
**संबावणो**—स० क्रि० (शि०) विदा करना।
**संभरना**—स० क्रि० झाड़ू मारना।
**संरागड़ी**—स्त्री० (मं०) ओला-वृष्टि।
**संलगा**—पु० (चं०) अरबी।
**संवला**—वि० (सि०) हृष्ट-पुष्ट।
**संवळा**—पु० (ऊ०, कां०) रोटी के लिए गुस्से में कहा गया शब्द।
**संवा**—वि० (मं०) समतल।
**संवार**—पु० (शि०) सोमवार।
**संवारना**—स० क्रि० सुधारना, सुधार करना।
**संसरपाड़ी**—स्त्री० (मं०) एक वृक्ष विशेष जिसकी विवाह के अवसर पर पूजा की जाती है।
**संसोण**—स्त्री० (कां०) पीली मालती का फूल।
**संहारू**—पु० (चं०) मुर्दा जलाने वाला व्यक्ति।
**संहारू**—वि० नष्ट-भ्रष्ट करने वाला।
**सः**—सर्व० वह।
**सःर**—पु० (शि०) तालाब, सरोवर।
**सअदछा**—स्त्री० (सि०) ताज़ी लस्सी।
**सआरना**—स० क्रि० सहन करना।
**सइयां**—स्त्री० सखियां।
**सइयां**—सर्व० (ऊ०, कां०) सेंवइयां।
**सइयों**—सर्व० (बि०) वह, वही।
**सई**—वि० (सि०) सीधी।
**सई**—सर्व० वही।
**सईकड़ा**—वि० सैकड़ा।
**सईड़**—पु० (शि०) बिछौना।
**सउकण**—स्त्री० पति की दूसरी पत्नी, सौतन।
**सउका**—पु० (कु०) सौत का रिश्ता।
**सउकार**—पु० (शि०, बि०, ह०) साहूकार।
**सऊखण**—स्त्री० (मं०) सौतन।
**सऊगी**—स्त्री० किशमिश।
**सऊणा**—अ० क्रि० (मं०) सोना।
**सकंजा**—पु० तख्तों को कसने का औज़ार, शिकंजा।
**सकंघड़ी**—स्त्री० हलके किस्म के गेंदे का फूल।
**सक**—पु० शक।
**सकणूत्र**—पु० सौतन का पुत्र।
**सकत**—वि० (सो०) सख्त।
**सकना**—वि० (सो०) प्रिय।
**सकने/नो**—वि० (शि०) शरीफ।
**सकपालड़ा**—पु० (सो०) शादी के समय दूल्हे के साथ पालकी में बैठने वाला दूल्हे का छोटा भाई।
**सकरांत**—स्त्री० संक्रांति।
**सकराळ**—पु० (बि०) एक जंतु विशेष जो केवल रात को सामने आता है और दिन में छिपा रहता है।
**सकरेयाना**—अ० क्रि० सूखा पड़ना।
**सकरेल**—वि० (मं०) कच्ची या सूखने वाली (मिट्टी)।
**सकरो**—वि० (मं०) सूखा (मौसम)।
**सकल**—स्त्री० (चं०) हवन सामग्री।
**सकल**—स्त्री० रूप।
**सकवाड़ा**—वि० (मं०) नर्म।
**सकस्त**—स्त्री० हार, पराजय, शिकस्त।
**सका**—वि० सगा।
**सकाइणा**—स० क्रि० (कु०) खिसकाया जाना; पैदल चलाया जाना।
**सकाणा**—स० क्रि० (कु०) खिसकाना, पैदल चलाना।
**सकाणा**—स० क्रि० (सो०) सेंक देना, सुखाना।
**सकाणा**—स० क्रि० लुहार द्वारा औज़ार को गर्म करके तेज़ किया जाना।
**सकार**—पु० शिकार।
**सकार**—पु० (ऊ०) Ehretia aspera.
**सकारो**—वि० (सि०) नमकीन।
**सकाल्यो**—पु० (मं०) सवेरा।
**सकिंट**—पु० सैकिंड।
**सकिंडा**—पु० सौतेला लड़का, सौतन का पुत्र।
**सकी**—स्त्री० (कां०) सौतन की बेटी।
**सकीया**—पु० (कां०) सौतन का पुत्र।
**सकुंतलाचैन**—स्त्री० पांव में पहनने का गहना; पायल।
**सकुत**—पु० (बि०) सौतन का पुत्र।
**सकुत्र**—पु० (चं०) सौतन का पुत्र।
**सकेंट**—पु० (कु०) वह लकड़ी जो बारह फुट लंबी और छः इंच चौड़ी तथा चार इंच ऊंची हो।
**सकेरणा**—स० क्रि० (सि०) उलटा ज्ञान बताना।
**सकेरना**—स० क्रि० (सो०) साफ करना।
**सकेरना**—स० क्रि० (शि०) सुधारना।
**सकेरना**—स० क्रि० गर्म करना।
**सकेरा**—पु० (सो०) साफ करने की सामर्थ्य।
**सकैणा**—स० क्रि० किसी वस्तु को सुखाना।

**सक़ैत**—स्त्री० शिकायत।
**सको**—वि० (मं०) सगा।
**सकोणा**—स० क्रि० सुखाना।
**सकोरी**—स्त्री० (मं०) सुखाए गए सेब तथा खूबानी के टुकड़े।
**सकोरी**—वि० (ऊ०, कां०) बहादुर।
**सकौला**—वि० (सि०) आसान।
**सकौल्प**—पु० (शि०) दान का संकल्प।
**सक्क**—पु० (बि०) संदेह, शक।
**सक्कर**—स्त्री० (कां०, बि०, ह०) शर्करा, शकर।
**सक्का**—वि० सगा, सहोदर।
**सखड़ा**—वि० (सो०, ह०) अधिक।
**सखणा**—वि० खाली।
**सखणेवणा**—स० क्रि० (सो०) खाली करना।
**सखणोतु**—वि० नया-नया सीखने वाला।
**सखरड़ा**—वि० (सो०) थोड़ा अधिक।
**सखलाई**—स्त्री० सीखने का प्रयास, सिखलाई।
**सखलोणा**—स० क्रि० मंत्रणा करना।
**सखाइणा**—स० क्रि० (कु०) सिखाया जाना।
**सखाणा**—स० क्रि० झेलना। सुखाना।
**सखाणा**—स० क्रि० सिखाना।
**सखाळा**—वि० (बि०) सरल, आसान।
**सगंतरा**—पु० (मं०) संतरा।
**सगंद**—स्त्री० कसम, सौगंध।
**सगड़**—स्त्री० (मं०) ओस।
**सगड़**—पु० (कां०) सर्दी।
**सगड़याहक**—वि० (मं०) देवता की 'सगड़ी' उठाने वाला।
**सगड़ाई**—पु० (कु०) छत के जोड़ पर लगने वाला छोटा, चौड़ा तथा पतला पत्थर।
**सगड़ी**—स्त्री० आग सेंकने का पात्र।
**सगणा**—स० क्रि० (कां०) सींचना।
**सगणा**—अ० क्रि० (बि०, मं०) भीगना।
**सगन**—पु० शकुन, शगुन।
**सगरांत**—स्त्री० (कु०) संक्रांति।
**सगरीट**—स्त्री० सिगरेट।
**सगलगाणा**—स० क्रि० कुल्या द्वारा खेतों की सिंचाई करना।
**सगळा**—पु० गिलट का बना बड़ा बरतन।
**सगली**—स्त्री० (ऊ०, कां०) गले का आभूषण विशेष।
**सगलो**—वि० (शि०) संपूर्ण, समग्र।
**सगाई**—स्त्री० मंगनी।
**सगाई**—स्त्री० खेत को सींचने की क्रिया।
**सगाकड़े**—पु० (मं०) कद्दू की किस्म की एक सब्जी।
**सगाड़ू**—पु० बगीचा।
**सगात**—स्त्री० सौगात।
**सगार्द**—पु० शिष्य, चेला।
**सगूहड़ा**—पु० (बि०) विवाह में लड़की का सिर गूंथते समय बालों में सुहागपुड़ा लगाकर सिर गूंधने की रस्म।
**सगेरा**—पु० (सि०) प्रबंध।
**सगेलणा***—स० क्रि० (कु०) निगलना, खाना।
**सगेलिणा***—स० क्रि० (कु०) खाया जाना।
**सगो**—अ० बल्कि।
**सगोतरू**—पु० बैंगन।
**सगोती**—स्त्री० पकवान विशेष।
**सगोफणा**—स० क्रि० (मं०) घूंटना।
**सग्न**—पु० दे० सगन।
**सग्रांद**—स्त्री० (शि०, सि०) संक्रांति।
**सघणा**—अ० क्रि० (मं०) भीगना।
**सघणी**—वि० घनी (फसल)।
**सघाड़**—पु० (सि०) मंदिर की सीढ़ियां।
**सघुणा**—वि० (चं०) सुंदर।
**सचणा**—अ० क्रि० (सि०) चिपकना, फंसना।
**सचाउआं**—वि० संक्रामक (रोग)।
**सचीणा**—अ० क्रि० (चं०) सच्चा बनना।
**सच्च**—पु० सत्य।
**सच्चड़**—वि० संक्रामक (रोग)।
**सच्चणा**—अ० क्रि० (कां०, ह०, बि०) किसी जीव द्वारा काटा जाना।
**सच्चणा**—अ० क्रि० चिपकना।
**सच्चणा**—अ० क्रि० (कां०, ऊ०, ह०) छूत लगना।
**सच्चा**—वि० सत्यवादी; यथार्थ।
**सच्चाई**—स्त्री० सत्यता।
**सजण**—पु० सज्जन।
**सजरा**—वि० ताज़ा।
**सज़ा**—स्त्री० दंड।
**सज़ाइण**—स्त्री० (कु०) दाई, प्रसव के समय सहायता करने वाली स्त्री।
**सज़ाउट**—स्त्री० (कु०) सजावट।
**सजाउणो**—स० क्रि० (शि०) सजाना।
**सजाखा**—वि० (सो०) भली-चंगी आंखों वाला; चौकस; समझदार।
**सजाण**—वि० (शि०) जानकारी वाला, सुघड़ (स्त्री)।
**सज़ीउआ**—पु० (कु०) दीपक।
**सजेउता**—पु० (कु०) रीठा।
**सजेड़ा**—पु० खमीरा आटा।
**सजेर**—पु० (मं०) शुद्धिकरण।
**सजोला**—पु० (बि०) दे० सजेड़ा।
**सज्जा**—वि० दायां।
**सज्जी**—स्त्री० (ह०) चूल्हे की राख।
**सज्जी**—स्त्री० संक्रांति।
**सज्जोणा**—स० क्रि० (सि०) विवाह में दूल्हे के सिर पर तेल डालना।
**सज्जोणा**—अ० क्रि० शृंगार करना।
**सझ**—पु० (चं०) आदत।
**सझा**—वि० (चं०) दे० सज्जा।
**सट**—स्त्री० चोट।
**सट**—पु० (सि०) पेड़ की छाल।
**सट**—अ० (कु०) तुरंत, शीघ्र।

**सटक**—पु० (बि०) छिलका।
**सटकू**—पु० लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े।
**सटड़**—वि० (बि०) अवहेलना करके फेंकी गई वस्तु।
**सटणा**—स० क्रि० फेंकना।
**सटपट**—अ० (कु०) शीघ्र, तुरंत।
**सटयार**—पु० (मं०) पुराना वस्त्र।
**सटराणुना**—अ० क्रि० (सो०) आटे या बेसन का खराब होना।
**सटराळा**—पु० छड़ी आदि से मारी चोट।
**सटवटा**—अ० आनाकानी।
**सटाणा**—स० क्रि० फिंकवाना।
**सटापू**—पु० बच्चों द्वारा ज़मीन पर चौरस खानों में पत्थर की चिप्पी फेंक कर खेला जाने वाला एक खेल।
**सटेऊणा**—स० क्रि० (मं०) पकाना।
**सटेणा**—स० क्रि० (कु०) पकाना, भोजन या रोटी आदि पकाना।
**सटेबाज़**—वि० सट्टा लगाने वाला।
**सट्टा**—पु० सट्टा।
**सट्टा**—पु० (सि०) हल को कसने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का टुकड़ा।
**सट्ठ**—पु० बटाई पर दी गई भूमि से उपज का साठ प्रतिशत भाग।
**सट्याउणा**—स० क्रि० (कु०) पकाना।
**सठ**—वि० साठ।
**सठणा**—अ० क्रि० (सि०) लगना।
**सठणा**—पु० (सि०) प्रचंड अग्नि।
**सठाणी**—स्त्री० सेठानी।
**सठाणू**—पु० मक्की की फसल जो साठ दिन में तैयार होती है।
**सड़कणा**—अ० क्रि० (शि०) बहुत अधिक भीगना।
**सड़काइणा***—अ० क्रि० (कु०) कट या मर जाना।
**सड़काणा***—स० क्रि० (कु०) मारना, काटना।
**सड़कू**—वि० मज़दूर, सड़क में काम करने वाला।
**सड़णा**—अ० क्रि० सड़ना, गल जाना।
**सड़नी**—स्त्री० (मं०) टांगों की दर्द।
**सड़प्पा**—पु० (कां०, ऊ०, ह०) छड़ी का प्रहार।
**सड़प्पा**—पु० छलांग।
**सड़बात**—स्त्री० (मं०) श्लेष्मा।
**सड़यान**—स्त्री० (बि०) दुर्गंध।
**सड़याह**—पु० (कु०) लगातार, अधिकता।
**सड़शोधनी**—स्त्री० (मं०) चिता की राख को बहाने की क्रिया।
**सड़सड़**—स्त्री० पानी की धार गिरने की आवाज़।
**सड़सौ**—पु० (शि०) खटमल।
**सड़ाक-सड़ीक**—स्त्री० (कु०) जल्दी से निकलने या घुसने की क्रिया।
**सड़ाका**—पु० चोट।
**सड़ाका**—पु० (सो०) आवाज़।
**सड़ीकणा**—स० क्रि० नाक साफ करना।
**सड़ीहण**—स्त्री० साले की पत्नी।
**सड़ुपणा**—स० क्रि० तरल पदार्थ को पीना।
**सड़ुहणा**—पु० (मं०) भादों मास की संक्रांति को स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला गीत।
**सड़ुहणू**—पु० (कां०) गोबर में पैदा होने वाले कीड़े।
**सड़ैहन**—स्त्री० बदबू।
**सढणा**—स० क्रि० (सि०) पीटना।
**सण**—पु० पटसन।
**सणकोकड़ा**—पु० एक प्रकार का पौधा जिसके रेशे से रस्सियाँ बनाई जाती हैं।
**सणखीरे**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Celastrus paniculata.
**सणपात्री**—स्त्री० एक छोटा फूल।
**सणयाडु**—पु० सन की लकड़ी।
**सणवाणा**—स० क्रि० सुना कर कहना।
**सणसणात**—स्त्री० झुरझुरी, रोमांच।
**सणसी**—स्त्री० (कु०, मं०) संड़सी।
**सणहीणु**—पु० (बि०) पक्षी विशेष।
**सणाट**—पु० (बि०, ह०) ओले।
**सणेठी**—स्त्री० (बि०) कुल्या आदि लांघने की सीढ़ी।
**सत**—पु० निचोड़, सार। अर्क।
**सतकोड़**—पु० (मं०) सूतक।
**सतगत**—स्त्री० सद्गति।
**सतगेरा**—पु० (सो०) सूतक।
**सतणीजा**—वि० (सो०) आधी नींद में उठा हुआ।
**सतत्ती**—वि० सैंतीस।
**सतनाजा**—पु० (कां०) बुरे अर्थों में भोजन के लिए प्रयुक्त शब्द।
**सतनाजा**—पु० सात प्रकार के अन्नों का मिश्रण।
**सतनाजा**—पु० (कु०) सात अनाज और गेंदे के फूल का मिश्रण जिसे रोग आदि से मुक्ति के लिए अभिमंत्रित करने के बाद चौराहे पर फेंक दिया जाता है।
**सतनाड़ा तणना**—सं०, क्रि० (मं०) वर की लंबाई का सूत्र संस्कार हेतु वधू को भेजना।
**सतपीटी**—स्त्री० (चं०) बड़ी आंत।
**सतबर्गा**—पु० (शि०, सि०) गेंदा का फूल।
**सतबियुजा**—वि० (शि०) दे० सतणीजा।
**सतमत**—स्त्री० सद्बुद्धि।
**सतमी**—स्त्री० सप्तमी।
**सतमूली**—स्त्री० सफेद मूसली।
**सतरागड़ा**—पु० (मं०) घास में रहने वाला लंबी टांगों वाला कीड़ा।
**सतरारी**—स्त्री० (कां०) नोक पर छेद वाली सुई।
**सतरूरात**—स्त्री० (मं०) सुहागरात।
**सतरोणा**—अ० क्रि० (बि०) निकल जाना, फिसलना।
**सतवंती**—स्त्री० सच्चरित्र महिला।
**सतसूहापाणी**—पु० (मं०) सात पनघटों से एकत्रित पानी।
**सताइश**—वि० (शि०) सत्ताईस।
**सताओ**—पु० (मं०) बाईस प्रविष्टे ज्येष्ठ से आठ प्रविष्टे आषाढ़ तक के पन्द्रह दिन।
**सताज़**—वि० (कु०, सि०) जानकार, होशियार, समझदार।
**सताणा**—स० क्रि० (चं०) चिपकाना।

**सताणा**—स० क्रि० सताना।
**सतानुए**—वि० सत्तानबे।
**सतार**—स्त्री० संगीत का साज, सितार।
**सतारा**—वि० सत्रह।
**सतावणो**—स० क्रि० (शि०) सताना, तंग करना।
**सति**—स्त्री० सती, पतिव्रता स्त्री।
**सती**—वि० (शि०) सच्चा।
**सतीजुग**—पु० सत्य युग।
**सतीर**—पु० (कां०, मं०, बि०) शहतीर।
**सतीहा**—पु० शहतीर।
**सतुआंहिया**—वि० ऐसा बालक जो सातवें मास में ही जन्म ले ले।
**सतूंजा**—वि० सत्तावन।
**सते**—पु० (मं०) सत्य वचन।
**सतेतर**—वि० (मं०) सतहत्तर।
**सतैंजा**—पु० (मं०) जौ को अभिमंत्रित करके फेंकने की क्रिया जिससे भूत-प्रेत को आक्रमण करने में बाधा आती है।
**सत्त**—वि० (कां०) सात।
**सत्त**—पु० देवता का बल, शक्ति, सच्चाई।
**सत्तनारायण**—पु० सत्यनारायण।
**सत्थल**—पु० (ऊ०, कां०) नितंब।
**सत्या**—स्त्री० बल, शक्ति। लीला। सच्चाई।
**सत्यागरा**—पु० (सि०) हवन, बच्चा होने पर किया जाने वाला हवन।
**सत्वाज**—पु० गेंदा का फूल।
**सथर**—पु० चीते की तरह का एक जानवर।
**सथरा**—पु० (मं०) दे० साथरा।
**सथरी**—स्त्री० धान के पयाल से बनाई चटाई।
**सदणारी**—स्त्री० (चं०) वधू को पहली बार घर बुलाने की क्रिया।
**सदर**—पु० मुख्यालय।
**सदर**—स्त्री० (मं०) कमाई में लाभ होने का भाव।
**सदरी**—स्त्री० वास्कट, फतूही।
**सदरेवणा**—स० क्रि० (सो०) सुधरवाना।
**सदल**—वि० मोटी, मज़बूत।
**सदाःर**—पु० (सो०) सुधार।
**सदाःरना**—स० क्रि० (सो०) सुधारना।
**सदाकत**—स्त्री० सच्चाई।
**सदाकूई**—पु० गुलाब प्रजाति का छोटा फूल।
**सदाणा**—स० क्रि० बुलवाना।
**सदाबर्त**—पु० प्रतिदिन दान की हुई आटे की एक मुट्ठी। जहां हर समय प्रत्येक के लिए भोजन की व्यवस्था हो।
**सदार**—वि० बुलाने वाला।
**सदासुहागण**—अ० (कु०) जब सुहागिन स्त्री या नव विवाहिता 'सूही' करती है या बड़ों के पैर छूती है तो उन द्वारा प्रत्युत्तर में बोला जाने वाला शब्द कि "तू सदा सुहागिन रहे"।
**सदासुहानण**—स्त्री० सदासुहागिन।
**सदिवा**—पु० (सि०) सांध्य पूजन का संगीत।
**सदी**—स्त्री० शताब्दी।
**सदूक**—पु० संदूक।
**सदूर**—अ० बहुत दूर।
**सदेःवणा**—स० क्रि० (सो०) सीधा करना।
**सद्दणा**—स० क्रि० बुलाना।
**सद्दा**—पु० बुलावा।
**सधाणा**—स० क्रि० ठीक करना। मुहूर्त निकलवाना।
**सधेरना**—स० क्रि० (कु०, ह०) सीधा करना, सुधारना।
**सधेरिना**—स० क्रि० (कु०) सुधारा जाना।
**सधोप**—पु० (मं०) घुटन।
**सधोर**—पु० सीधी पगडंडी।
**सध्धार**—पु० (बि०, मं०) सुधार।
**सन**—पु० (चं०) सन्निपात।
**सन**—पु० सन्।
**सनकंठी**—पु० (कु०) स्त्रियों के गले का ज़ेवर।
**सनका**—पु० इशारा।
**सनकोकड़ा**—पु० दे० सणकोकड़ा।
**सनक्खा**—वि० सुलक्षण युक्त।
**सनयाड़ु**—पु० एक वृक्ष विशेष जिस की छाल से रस्सी बनाई जाती है।
**सनयार**—पु० (बि०) सुनार, स्वर्णकार।
**सनसी**—स्त्री० चूल्हे से पतीली आदि उठाने के लिए बना लोहे का उपकरण, संड़सी।
**सनसे**—पु० (मं०, शि०) चावल के आटे का विशेष पकवान।
**सनहाई**—स्त्री० (बि०) भैंस या बैल की खाल की बनी मशक जिस पर बैठाकर लोगों को नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक पहुंचाया जाता है।
**सनहाणे**—स्त्री० (चं०) सूई।
**सनांगण**—पु० (शि०, सि०, सो०) सोने की मोटी चूड़ियां, सोने के कंगन।
**सनाइतड़**—पु० (कु०) शहनाई वादक।
**सनाई**—स्त्री० दे० सनहाई।
**सनाई**—स्त्री० (कु०) शहनाई।
**सनाईत्र**—पु० (कु०) दे० सनाइतड़।
**सनाट**—पु० ओले।
**सनान**—पु० (ऊ०) एक वृक्ष विशेष।
**सनार**—पु० सुनार।
**सनावी**—वि० (मं०) नाम राशि।
**सनिचर**—पु० शनिवार।
**सनीमा**—पु० सिनेमा।
**सनुट**—वि० गहरा, घना, बेसुध।
**सनूक**—पु० (चं०) संदूक।
**सनेंआ**—पु० (सो०) संदेश।
**सनेवश**—वि० (सो०) दायां।
**सनेहरा**—वि० सुनहरा।
**सनेहा**—पु० संदेश।
**सनोकड़ा**—पु० एक पौधा विशेष जिसकी छाल से रस्सी बनाई जाती है।

**सनोर**—पु० (मं०) एक जंगली वृक्ष।
**सनौणी**—स्त्री० (कां०, बि०) किसी की मृत्यु के बाद समाचार देने की क्रिया, बुरी खबर।
**सन्न**—पु० उन्माद; निमोनिया, सन्निपात।
**सन्नखा**—वि० जो ठीक सुन सके।
**सन्नण**—पु० एक छोटा वृक्ष जिसके पत्ते पशुओं के लिए बढ़िया चारा होते हैं।
**सन्नणा**—स० क्रि० बात ही बात में जतलाना।
**सन्यारका**—पु० सुनार का काम।
**सन्यासी**—पु० (कां०) सन्यासी। मृत्यु के बाद हर मास दान रूप में अनाज लेने वाला एक संप्रदाय।
**सन्सह्वां**—पु० (ऊ०, कां०) एक पौधा विशेष जिसे गृह प्रवेश करते समय घर में ला कर वृद्धि के लिए पूजा जाता है।
**सन्हायी**—स्त्री० (मं०) शहनाई।
**सन्ही**—स्त्री० जमुरी।
**सप**—अ० शीघ्र ।
**सप**—पु० सांप।
**सप**—पु० (मं०) सूप, शूर्प।
**सपड़ी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) Pariploca Calophylla.
**सपड़ीह्ला**—वि० पथरीला (खेत)।
**सपसप**—वि० (शि०) बहुत पका हुआ (फल आदि)।
**सपसप**—स्त्री० (ऊ०, कां०, चं०) आवाज़ विशेष।
**सपाई**—पु० (सो०) सिपाही।
**सपातर**—वि० (सि०) सज्जन, सुपात्र।
**सपारश**—स्त्री० सिफारिश।
**सपारी**—स्त्री० सुपारी।
**सपासप**—अ० शीघ्र।
**सपाही**—पु० सिपाही।
**सपेद**—वि० (कु०, सो०) सफेद, श्वेत।
**सपोलिया**—पु० सांप का बच्चा।
**सप्ताह**—पु० (बि०) पुराणकथा।
**सप्पड़**—पु० चट्टान।
**सप्पड़**—वि० पथरीला।
**सफ**—स्त्री० चटाई।
**सफणा**—अ० क्रि० (बि०) पानी का गर्म होना।
**सफणा**—स० क्रि० (चं०) झाड़ना, गिराना।
**सफर**—पु० यात्रा।
**सफराळा**—पु० लाठी से ज़ोर से मारने की क्रिया।
**सफाखाना**—पु० अस्पताल।
**सफान**—पु० समाप्ति, नाश, सफाया।
**सफिनू**—पु० (चं०) जंगली चूहा।
**सफेदा**—पु० एक वृक्ष विशेष।
**सफेदा**—पु० (चं०) बड़े आकार का आड़ू।
**सफेदी**—स्त्री० चूना, चूना करने की क्रिया।
**सफौन**—पु० (कु०) काम की समाप्ति।
**सबर**—पु० संतोष, इंतज़ार।
**सबरात**—स्त्री० (मं०) शिवरात्रि।
**सबले**—पु० (शि०) अच्छा काम; ग्रहों की अनुकूल स्थिति।
**सबलोणा**—अ० क्रि० पानी में भीगना।
**सबल्ला**—वि० (शि०, सि०) सीधा; अनुकूल।
**सबल्ला**—अ० संभल कर।
**सबहंदी**—स्त्री० (मं०) कृषि योग्य खेत।
**सबाकड़**—स्त्री० (सो०) झाग।
**सबाळ**—स्त्री० (चं०, मं०, बि०) काई।
**सबाहै**—अ० (कु०) वास्तव में, सचमुच।
**सबिज्ज**—वि० (शि०) पूरी तरह भीगा हुआ।
**सबी**—अ० (सि०) सभी।
**सँबीअत**—स्त्री० (सि०) सुविधा।
**सबीहा**—पु० गले का एक आभूषण।
**सबे**—वि० (सि०, सो०) सभी।
**सबेर**—स्त्री० सुबह।
**सबेल**—अ० समय से पूर्व।
**सबेल**—स्त्री० (कु०) अंधेरा होने से पहले का समय, सायंकाल से पहले का समय।
**सबैला**—वि० सीधा।
**सब्ज**—वि० हरा।
**सब्बल**—वि० मज़बूत।
**सभ**—वि० सब, सारा, संपूर्ण।
**सभाव**—पु० स्वभाव।
**सभे**—वि० सभी।
**सभैहंदी**—वि० (मं०) काश्त योग्य (भूमि)।
**सम**—स्त्री० हल के योग में [illegible]ी फट्टी।
**समक**—वि० समस्त, सारा।
**समगेरा**—पु० (सो०) विवाह आदि का प्रबंध।
**समगेरुना**—स० क्रि० (सो०) विवाह का प्रबंध करना।
**समग्री**—स्त्री० सामग्री।
**समज**—पु० समझ।
**समजणा**—अ० क्रि० समझना।
**समजणो**—अ० क्रि० (सि०) समझना।
**समजावणा**—स० क्रि० (सो०) समझाना।
**समजावणो**—स० क्रि० (शि०, सो०) समझाना।
**समजोग**—पु० संयोग।
**समझकार**—वि० निपुण, समझदार।
**समदा**—स्त्री० (शि०, सो०) समिधा, यज्ञ की लकड़ी।
**समदी**—पु० संबंधी लोग, वर और वधू के पिता, समधी।
**समदौळा**—पु० (सो०) वर तथा वधू के पिता की मुलाकात।
**समधा**—स्त्री० (कु०, बि०) विवाह में भोजन पकाने हेतु शुभ मुहूर्त में काटी गई लकड़ी।
**समधा**—स्त्री० यज्ञ और हवन में प्रयुक्त होने वाली लकड़ी।
**समरथ**—वि० समर्थ।
**समराल**—पु० (शि०) तालिस्त्री।
**समरैड़**—वि० समवयस्क।
**समल**—पु० जुए में लगने वाली लकड़ी की कील।
**समला**—पु० भोजन, खुराक।
**समळा***—पु० (कां०) भोजन।
**समां**—पु० समय।

**समाई**—स्त्री० सहनशक्ति।
**समाठे**—पु० (मं०) जुए में लगने वाली लकड़ी की कीलें।
**समाड़ना**—स० क्रि० (मं०) संभालना।
**समाण**—पु० आसमान, आकाश।
**समाणा**—अ० क्रि० मरना, डूबना, समाना, राज परिवार में किसी की मृत्यु होना।
**समाणेचढ़ना**—अ० क्रि० गर्व करना, घमंड करना।
**समाद**—पु० (कु०) संदेश।
**समान**—पु० सामान।
**समान**—पु० आसमान।
**समानी**—वि० आसमानी।
**समालो**—स्त्री० (मं०) मशाल।
**समाहणा**—स० क्रि० (बि०) समाप्त करना।
**समाहलणा**—स० क्रि० संभालना।
**समिंट**—पु० सीमेंट।
**समी**—पु० एक वृक्ष जो समिधा के काम आता है।
**समीज**—स्त्री० कमीज के अंदर पहनी जाने वाली बनियाइन।
**समीन**—स्त्री० (सि०) मशीन।
**समुंदर**—पु० समुद्र।
**समूहत**—स्त्री० विवाह की एक रस्म जिसमें वर व कन्या दोनों पक्षों से उबटन एक दूसरे की ओर भेजे जाते हैं, शुभ मुहूर्त।
**समेटणा**—स० क्रि० समेटना।
**समेत**—अ० सहित।
**समैहंदड़**—स्त्री० (मं०) खेती योग्य भूमि।
**समो**—वि० (शि०) समतल, सीधा।
**समोण**—पु० (सि०, सो०) ज़्यादा गर्म पानी को अनुकूल गर्म बनाने के लिए डाला जाने वाला ठंडा पानी।
**समोहणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) गर्म पानी में ठंडा पानी डालना।
**समोहरा**—अ० (मं०) आमने-सामने।
**समोहरा**—वि० (कु०) सीधा, समक्ष।
**सम्म**—पु० (कां०) दे० समाठे।
**सम्मग**—वि० (सि०, सो०) सारा।
**सम्मण**—पु० सूचना पत्र।
**सम्मत**—पु० संवत्।
**सम्मन**—पु० समन, सूचना पत्र।
**सम्मा**—पु० (ह०) जुए में लगने वाली बांस की फट्टियां।
**सम्लोहणा**—अ० क्रि० संभलना।
**सयाई**—स्त्री० सिलाई; सिलाने का पारिश्रमिक।
**सयाढ़ा**—पु० (बि०) धान के खेतों में उगने वाला घास।
**सयाणा**—स० क्रि० सिलाना।
**सयाणा**—वि० समझदार, बुद्धिमान्।
**सयाणा**—वि० वृद्ध।
**सयावणा**—स० क्रि० (सो०) सिलवाना।
**सयाहटा**—वि० (बि०) काले रंग का (पुरुष)।
**सयुहल**—पु० एक पौधा विशेष जिसका साग बनता है।
**सरंगी**—स्त्री० सारंगी।
**सर**—पु० पानी का स्रोत, सरोवर।
**सर**—स्त्री० ताश खेल की एक पारी।
**सरकणा**—अ० क्रि० आगे बढ़ना, खिसकना, सरकना।
**सरका**—पु० (ह०) पशु में खून की कमी की बीमारी।
**सरकाइणा**—स० क्रि० (कु०) सरकाया जाना।
**सरकाणा**—स० क्रि० (कु०, सि० सो०) सरकाना, खिसकाना।
**सरकाणो**—स० क्रि० (शि०, सो०) सरकाना, खिसकाना।
**सरकोळड़े**—पु० (मं०) सूतक द्वारा अपवित्र।
**सरग**—पु० स्वर्ग।
**सरगढ़**—पु० (चं०) ऊंचे पर्वतों पर पाई जाने वाली सिर दर्द की अचूक दवा।
**सरगाणी**—स्त्री० (शि०, सि०, सो०) वर्षा का जल।
**सरघी**—स्त्री० करवा चौथ आदि के व्रत में रात खुलने से पूर्व लिया जाने वाला आहार।
**सरचणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०, सो०) मानना, समझौता होना।
**सरचो**—पु० (शि०, सि०) समझौता।
**सरज़**—पु० कपड़े की एक किस्म।
**सरजीत**—वि० (बि०) जीवित।
**सरजीत**—वि० विजयी।
**सरजीवणी**—स्त्री० (सो०) संजीवनी।
**सरजेत**—स्त्री० (सो०) तैयारी।
**सरजेतुणा**—अ० क्रि० (सि०, सो०) सावधान होना, तैयार होना।
**सरट**—स्त्री० (मं०) दरार।
**सरट्ट**—स्त्री० (कु०) गुस्सा, क्रोध।
**सरठणा**—अ० क्रि० (मं०) कम आंच में पकाए जाने पर खाद्य पदार्थ का बिगड़ना।
**सरण**—स्त्री० शरण।
**सरण**—पु० (चं०) मिट्टी का कोठा।
**सरत**—स्त्री० शर्त।
**सरद**—पु० सर्द, शरद्।
**सरदल**—स्त्री० (बि०) कड़ी रखने के लिए बनाया हुआ चौखटा।
**सरध**—पु० (बि०) आसरा।
**सरना**—अ० क्रि० काम हो जाना।
**सरनाई**—स्त्री० शहनाई।
**सरनाहणा**—अ० क्रि० सांप का ज़ोर से फुंकारना। स० क्रि० किसी चीज़ पर चोट करके आवाज़ करना।
**सरनो**—अ० क्रि० (शि०) आगे बढ़ना, पानी का जज़्ब होना।
**सरप**—पु० सांप, सर्प।
**सरपरी**—स्त्री० (ऊ०) दे० सपड़ी।
**सरपांजड़ी**—स्त्री० (सो०) सांप की केंचुली।
**सरफट**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) झगड़ालू।
**सरफड़**—पु० (ऊ०, कां०) छप्पर छाने के काम आने वाला घास।
**सरफरी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) दे० सपड़ी।
**सरफा**—पु० मितव्ययता।

**सरफी**—वि० मितव्ययी, कंजूस।
**सरबंगी**—वि० (सो०) सर्वभक्षी।
**सरबंध**—पु० संबंध।
**सरबत**—पु० शर्बत।
**सरबरा**—पु० (सि०) रियासती समय में गांव में नंबरदार या जेलदार का सहयोगी पदस्य।
**सरबस**—वि० सब कुछ।
**सरम**—स्त्री० शर्म।
**सरमाया**—पु० धन-दौलत।
**सरमायेदार**—वि० मालदार।
**सरमालु**—वि० शर्मीला।
**सरयांद**—पु० सिरा, खाट का वह भाग जिधर सिर रहता है।
**सरयारा**—पु० (कु०) चौलाई प्रजाति का एक अन्न विशेष जिसके बारीक सफेद दाने होते हैं। इसका व्रत में उपयोग किया जाता है।
**सरयावल**—पु० (शि०, सि०, सो०) चीड़ की पत्तियां।
**सरयावा**—पु० चारपाई में लगे ऊपर-नीचे के डंडे।
**सरला**—वि० सीधा।
**सरली**—स्त्री० (सो०) सनसनी।
**सरलुहड़**—पु० (सि०) ऐसी गुफा जहाँ भयंकर जीव रहते हों।
**सरलू**—वि० (मं०) सुखाया हुआ (घास)।
**सरलोढ़ी**—स्त्री० (मं०) घास की कटाई।
**सरवां**—स्त्री० सरसों।
**सरवाख**—पु० (सि०) सुराख।
**सरसाला**—पु० (बि० शि०, सो०) Heteropogon Contortus.
**सरसी**—स्त्री० (बि०) प्रशंसा।
**सरसुणा**—अ० क्रि० (सो०) पेड़-पौधों का बढ़ना।
**सरसुति**—स्त्री० (सो०) सरस्वती, विद्या की देवी।
**सरहद**—स्त्री० सीमा।
**सरहला**—पु० (बि०) जुकाम।
**सरहा**—पु० (कु०) रिवाज़।
**सरहाणा**—पु० तकिया।
**सरही**—स्त्री० (कां०) पशुओं की अंतड़ियों के छिछड़े हो कर बाहर आने का रोग।
**सरा:णा**—स० क्रि० (बि०) स्तुति करना, प्रशंसा करना।
**सरा**—पु० (मं०) जंगली बकरा।
**सराई**—स्त्री० (कु०) मुसाफिरखाना, धर्मशाला।
**सराएं**—स्त्री० दे० सराई।
**सराड़**—पु० (मं०) केश।
**सराढ़ा**—पु० पत्तलें आदि बनाने वाला व्यक्ति।
**सराधणी**—स्त्री० (बि०) सराहना, प्रशंसा।
**सराप**—पु० श्राप।
**सराफणी**—स्त्री० (मं०) सराहना, प्रशंसा, स्तुति।
**सराफना**—स० क्रि० (सि०) अनिष्ट करना।
**सराबी**—वि० शराबी।
**सरायणु-परायणु**—पु० (सो०) शादी के बाद दूल्हा-दुलहन का दुलहन के मायके आने तथा ससुराल लौटने की रस्म।
**सराल**—पु० (कु०, मं०) पीलूपर्णी।
**सराळ**—स्त्री० मटियाले रंग का बड़ा सांप, अजगर।
**सराली**—स्त्री० (सि०) भूमि कुष्मांड।
**सरावा**—पु० (बि०) चारपाई में चौड़ाई के बल लगने वाले डंडे।
**सराह**—स्त्री० (मं०) आधे सिर का दर्द।
**सराहणा**—स० क्रि० (कु०) प्रशंसा करना, तारीफ करना, स्तुति करना।
**सराहिणा**—अ० क्रि० (कु०, सो०) अपनी प्रशंसा आप करना।
**सराहिता**—स्त्री० (सि०) सिफारिश, अपनी प्रशंसा आप करने का भाव।
**सराहीण**—स्त्री० (कु०) साली।
**सराहुती**—स्त्री० (कु०) प्रशंसा, स्तुति।
**सराहुदो**—वि० (मं०) प्रशंसनीय।
**सरिया**—पु० लोहे की छड़।
**सरिया**—पु० (सि०) बांस के चीरे हुए टुकड़े जो डलिया बनाने के काम आते हैं।
**सरींडणा**—अ० क्रि० (बि०) क्रोधित होना, क्रोध में आंखे लाल-पीली करना।
**सरींवण**—स्त्री० (सो०) बड़ी सूई।
**सरींह**—पु० बहुमूल्य इमारती वृक्ष।
**सरी**—स्त्री० (कां०) टोकरी की बाहरी बुनाई।
**सरीउं**—स्त्री० (बि०) नूर, आभा।
**सरीउण**—स्त्री० (मं०) बड़ी तथा मोटी छलनी।
**सरीड़**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) बदन की ऐंठन।
**सरीड़**—स्त्री० (बि०) लंबी तथा पतली धार जो ऊंचाई से फेंकी जाए।
**सरीणु**—पु० (बि०) धान मापने का काष्ठ का एक पात्र जिसमें एक सेर कच्चा अनाज आता है।
**सरीही**—स्त्री० (बि०) कपीतन, एक वृक्ष विशेष।
**सरुं**—पु० (कु०) ध्यान।
**सरुं**—स्त्री० (ऊ०, कां०) सरसों।
**सरु**—पु० (मं०) ओले।
**सरु**—पु० देवदार प्रजाति का एक वृक्ष।
**सरुआं**—स्त्री० सरसों।
**सरुट**—अ० (सि०) एकदम।
**सरुठ**—वि० सख्त।
**सरेइला**—वि० (सि०) फुरतीला।
**सरेद**—स्त्री० (सि०) सीध।
**सरेब**—स्त्री० (मं०) सीधी कटाई।
**सरेरना**—स० क्रि० (कु०) पाल-पोस कर बड़ा करना।
**सरेरा**—वि० (मं०) स्वादिष्ट।
**सरेव**—पु० (सि०, सो०) फुरती।
**सरेवता**—वि० (सो०) फुरती से काम करने वाला।
**सरेवतुणा**—स० क्रि० (सो०) फुरती से काम करना।
**सरैं**—स्त्री० (सि०) धर्मशाला।
**सरैओळ**—पु० (शि०) चीड़ वृक्ष के पत्ते।
**सरैरा**—पु० (मं०) दे० सरयारा।

**सरों**—स्त्री० (ह०) सरसों।
**सरोंह**—पु० (कु०) पुराने मकानों की छत पर प्रकाश के लिए छोड़ा गया वर्गाकार खाली स्थान।
**सरोटड़ी**—स्त्री० (कु०) 'सरयारा' की रोटी।
**सरोठ**—वि० (बि०) तगड़ा, स्वस्थ।
**सरोठा**—वि० (कु०) सख्त। संपूर्ण।
**सरोड़णा**—स० क्रि० (सि०) घुसेड़ना, ठूंसना।
**सरोणा**—अ० क्रि० (बि०) बढ़ना, बड़ा होना।
**सरोदी**—वि० (सि०) नशे में धुत्त रहने वाला।
**सरोल**—स्त्री० (बि०) वर-वधू के आगे शुद्धि की दृष्टि से जल टपकाने की क्रिया।
**सरोसरी**—स्त्री० जल्दी, जबरदस्ती।
**सरोहलणा**—स० क्रि० (कां०) चोंच से मिट्टी कुरेदना।
**सरोहती**—स्त्री० (कां०) प्रशंसा, स्तुति।
**सर्दयाई**—स्त्री० शरबत।
**सर्मसार**—वि० शर्मिंदा।
**सर्हेल**—पु० (चं०) सरसों का तेल।
**सलंगा**—पु० कांटेदार झाड़ियों को उठाने के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला दो सिरों वाला डंडा।
**सलंगा**—स्त्री० (सो०) लंबी सैर।
**सल**—स्त्री० (कां०) जेर।
**सळ**—स्त्री० चिता।
**सलई**—स्त्री० (सि०, सो०) Boswellia serrata. कुंदुरुक वृक्ष।
**सलगम**—पु० शलगम।
**सलगेवणा**—स० क्रि० (सि०, सो०) सुलगाना।
**सलगोणा**—अ० क्रि० (कां०, बि०) सुलगना।
**सलजोहणा**—स० क्रि० (सो०) सुलझाना।
**सलझोणा**—स० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) सुलझाना।
**सलड़ी**—स्त्री० (ह०) समतल भूभाग।
**सलयाठा**—पु० (कु०) मक्की का घास।
**सळवाल**—स्त्री० (बि०, मं०) मुंह में पड़े छाले।
**सलवार**—स्त्री० सलवार।
**सलसलात**—स्त्री० वस्त्र में जूं, चींटी, पिस्सू या खटमल आदि के घुसने से होने वाली सुरसुराहट।
**सलहत**—स्त्री० सर्दी।
**सळां**—स्त्री० सिलवटें।
**सलांगण**—स्त्री० (ऊ०) Killetia extensa. सोमलता।
**सलांबड़ा**—पु० एक वृक्ष विशेष, Lannea Coromandalica.
**सळा**—पु० (बि०) टिड्डी दल।
**सलाई**—स्त्री० सिलाई, सीने का पारिश्रमिक।
**सलाई**—स्त्री० लोहे की पतली छड़।
**सलाए**—स्त्री० (शि०, सि०) सिलाई, सीने का पारिश्रमिक।
**सलाख**—स्त्री० लोहे की छड़।
**सलाजीत**—स्त्री० शिलाजीत।
**सलाठ**—स्त्री० (कु०) लाठी, छड़ी।
**सलाठा**—पु० (कु०) दे० सलयाठा।
**सलाड़ा**—पु० (ह०) खेत में निकलने वाला जल मार्ग।
**सलाणा**—पु० (सो०) Millelia auriculata. दे० सलांगण।
**सलामड़ा**—पु० (सि०) एक वृक्ष विशेष।
**सलामी**—स्त्री० सलामी, सलाम करने का भाव।
**सलामी**—स्त्री० ढलान।
**सलार**—स्त्री० (शि०, सि०) सलवार।
**सलारो**—पु० (चं०) ओढ़ने की चादर।
**सळाहंग**—वि० (बि०) लंबा व पतला।
**सलाह**—स्त्री० सलाह।
**सलाहर**—पु० (कु०) एक त्योहार जिस दिन पहली बार खेत में दांती से फसल काटी जाती है।
**सलाहोड़**—पु० (मं०) घटिया किस्म की लकड़ी का पेड़।
**सलाहूर**—पु० (कां०) सलाहकार।
**सलिहा**—स्त्री० (ऊ०, कां०) साले की पत्नी।
**सलीफा/फो**—पु० (कु०, शि०, सि०) त्यागपत्र।
**सलीमा**—पु० सिनेमा।
**सलुआर**—स्त्री० (ऊ०, कां०, कु०) सलवार।
**सलुशा**—वि० (कु०) बिना गांठ का (लकड़ी आदि)।
**सलूक**—पु० व्यवहार।
**सलूड़**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Pueraria tuberosa. दे० सराली।
**सलूणयो**—पु० (सि०) राखी का त्योहार।
**सलूणा**—पु० सब्जी।
**सलूपणा**—स० क्रि० (बि०) किसी पेय पदार्थ को बिना चबाए जल्दी-जल्दी निगल जाना।
**सलूफा**—पु० (बि०) दुःखदायी खबर।
**सळूहीं**—स्त्री० (ऊ०, कां०) श्मशान।
**सलेहण**—स्त्री० (मं०) साले की पत्नी।
**सलेहर**—स्त्री० (कां०) मिल-जुल कर की जाने वाली घास की कटाई।
**सलैओ**—स्त्री० (मं०) वृक्षों का झुरमुट जिनके नीचे अनाज न उपजे।
**सलैठ**—स्त्री० (मं०) बैलों को हांकने के लिए बनी लकड़ी की पतली छड़ी।
**सलैठा**—पु० (मं०) पत्तों तथा डंठल युक्त मक्की का सूखा घास।
**सळेण**—स्त्री० (बि०, सो०) साले की पत्नी।
**सलैहंघड़ा**—वि० (बि०) घिनौना, दुर्गंधयुक्त।
**सलोघणा**—अ० क्रि० (मं०) समय से पहले औरत का बच्चा होना और बच्चे का मर जाना।
**सलोट**—स्त्री० (ऊ०, कां०) स्लेट।
**सलोणा**—वि० सुंदर।
**सलोहा**—पु० केंचुआ।
**सलोखरा**—पु० (कां०) 'काहिका' आयोजन का एक रूप जिसमें देवता अपने सारे क्षेत्र का भ्रमण करता है।
**सलौड़**—पु० (बि०) दे० सलूड़।
**सल्ल**—पु० (कां०) गर्म चोगा।

**सल्ल**—स्त्री० (ह०) जेर, आंवल।
**सल्ली**—पु० (शि०) चीड़।
**सल्वाणा**—स० क्रि० (बि०) सुलाना।
**सल्वाणा**—स० क्रि० सिलवाना।
**सल्ह**—पु० (चं०) श्मशान।
**सल्हाणू**—पु० साही के शरीर पर उगे कांटे जिनसे वह अपनी रक्षा करता है।
**सल्हाब**—स्त्री० गीलापन, आर्द्रता।
**सवा**—वि० सीधा।
**सवांग**—पु० (सो०) 'करयाळा' आदि लोक नाट्य का दृश्य, नकल, नखरा।
**सवांगटीगी**—स्त्री० (सि०) एकलोक तान और उसके साथ नाचा जाने वाला लोक-नृत्य।
**सवाःग**—पु० (सि०, सो०) सौभाग्य।
**सवाःगपटेरि**—स्त्री० (सो०) वरयात्रा में दुलहन के लिए ले जाए जाने वाले वस्त्राभूषणों की पिटारी।
**सवाःगा**—पु० (सि०) दे० सुहागा।
**सवाईला**—वि० (बि०) भूरे रंग का।
**सवाए**—स्त्री० (सि०) दाई।
**सवाडू**—पु० (सि०) छोटा सा खेत।
**सवादला**—वि० स्वादिष्ट।
**सवार**—पु० (सि०) घुड़सवार।
**सवीणो**—पु० (कु०) सपना।
**सशा**—पु० (सि०) खरगोश।
**ससकार**—स्त्री० उच्छ्वास।
**ससु**—स्त्री० सास।
**सस्कणा**—अ० क्रि० (कु०) चिंता करना।
**सस्स**—स्त्री० सास।
**सस्सड़-रोट**—पु० (बि०) एक विशेष प्रकार की मीठी रोटी।
**सस्सोपंज्ज**—पु० असमंजस।
**सहंत**—स्त्री० (बि०) सेंध।
**सह**—पु० (मं०) मैदान।
**सह**—सर्व० (ह०) वह।
**सहजू**—वि० धीरे काम करने वाला।
**सहजै**—अ० धीरे-धीरे।
**सहत्तरबहत्तर**—वि० मानसिक रूप से विक्षिप्त।
**सहरी**—वि० (बि०, मं०) शहरी।
**सहरू**—पु० जंगली खरगोश।
**सहलडू**—पु० (मं०) हरे रंग का एक सांप जो पत्तों में रहता है। इसका ज़हर तीन चार घंटे पश्चात् चढ़ता है।
**सहसमूल**—पु० मुसली।
**सहसरपाली**—स्त्री० (मं०) वृक्ष की टहनी।
**सहादत**—स्त्री० (चं०) शहादत, गवाही।
**सहादरा**—पु० (मं०) विवाह के पश्चात् प्रथम बार गर्भवती होने पर कन्या पक्ष द्वारा वर पक्ष को भेजा जाने वाला मिष्टान्न।
**सहाब**—पु० हिसाब।
**सही**—वि० ठीक।
**सहीत**—स्त्री० (बि०) हैसियत, सामर्थ्य।
**सहे:ड़ना**—स० क्रि० संलिप्त करना।
**सांई**—पु० (चं०) पीले, सफेद व गुलाबी रंग के छोटे फूल।
**सांई**—पु० ईश्वर, भगवान्, मालिक।
**साउंत**—वि० (कु०) शरीफ, ऐसी गाय जो सींग व लात न मारती हो।
**सांउता**—वि० (कु०) स्वस्थ , हृष्ट-पुष्ट।
**सांओक**—पु० (मं०) स्थानीय अनाज जिस की रोटियां कुछ काली होती हैं।
**सांओड़ा**—वि० (मं०) सांवला।
**सांग**—स्त्री० (शि०) देवता की निशानी अथवा प्रतीक, चिह्न।
**सांगड़ा**—वि० (शि०, मं०, सि०) तंग।
**सांगड़ो**—पु० (मं०) लोहे की ज़ंजीर, सांकल।
**सांग-पांग**—पु० मेल-जोल।
**सांगळ**—स्त्री० सांकल, ज़ंजीर।
**सांगलु**—पु० दरवाज़े पर लगने वाली सांकल।
**सांगा**—पु० लकड़ी का बना दो मुंह वाला उपकरण जिससे कटी झाड़ियां उठाई जाती हैं।
**सांगा**—वि० (कु०) टेढ़ी नज़र वाला।
**सांगा**—वि० लंबा तथा ऊंचा (पशु)।
**सांगी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) लकड़ी का बना दो मुंह वाला उपकरण जिससे कटी झाड़ियां आदि उठाई जाती हैं।
**सांघड़**—स्त्री० (मं०) सांकल, ज़ंजीर।
**सांघू**—पु० एक ही स्थान से निकली दो शाखाओं वाली लकड़ी।
**सांचा**—वि० सच्चा।
**सांचो**—पु० (शि०, सि०) पहाड़ी ज्योतिष की पुस्तक।
**सांज**—स्त्री० शाम।
**सांजणा**—पु० (शि०, सि०, सो०) शिशु ।
**सांजणा/णो**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) संचय करना।
**सांजा**—पु० साझा।
**सांजा**—पु० (कां०) घास का व्यवस्थित ढेर।
**सांजा**—पु० (सि०, सो०) एकत्रित वस्तु, धन संपदा।
**सांजो**—सर्व० (ऊ०, कां०, ह०) हमें, हमको।
**सांझो**—पु० (शि०) साझा।
**सांज्ज**—पु० (बि०) भगवान् की पूजा के लिए रखे बरतन।
**सांझ**—स्त्री० संध्या।
**सांझख**—स्त्री० (मं०) शाम।
**सांझी**—पु० हिस्सेदार।
**सांटपांट**—स्त्री० (बि०) समझौता।
**सांठ**—पु० (शि०) जुर्माना।
**सांठ**—पु० सूअर का मोटा मांस।
**सांठणा**—स० क्रि० (सो०) मुरम्मत करना।
**सांडणा**—स० क्रि० (सि०) कार्य करना।
**सांतड़**—पु० (मं०) लंबा और मोटा सांप जिसका ज़हर बहुत दिनों तक चढ़ता है तथा एक बार उतर जाने पर दोबारा चढ़ता है।
**सांद**—पु० (शि०) एक धार्मिक त्योहार।

**सांद**—स्त्री० विवाह की पूर्व संध्या पर किया जाने वाला शांति-पूजन।
**सांदणा**—स्त्री० Qugenia Lojeinesis.
**सांदणो**—स० क्रि० (सि०) कार्य करना।
**सांदो**—स्त्री० (शि०) वर्षा।
**सांन**—स्त्री० (शि०) सायंकाल। इशारा।
**सांभणा**—स० क्रि० (शि०, सो०) संभालना।
**सांभणो**—स० क्रि० (सि०) संभालना।
**सांबल**—वि० (कु०) मुकाबले का (आदमी)।
**सांमणा**—स० क्रि० संभालना।
**सांमन**—पु० (मं०) सूर्यास्त समय।
**सांमरनमक**—पु० सफेद नमक।
**सांवड़ा**—वि० (मं०) सांवला।
**सांवी**—वि० (शि०) खाली, मक्की का ऐसा पौधा जिसमें एक भी मक्की न लगे।
**सांसी**—स्त्री० (ऊ०, कां०) दे० सनसी।
**सांही**—अ० (ऊ०, कां०, कु०) जैसा।
**सा:**—पु० विवाह का मुहूर्त।
**सा:ई**—पु० (सो०) ईसाई।
**सा:ईता**—स्त्री० सहायता।
**सा:ड़ा**—सर्व० (ऊ०, कां०, ह०) हमारा।
**सा:ढू**—पु० साली का पति।
**सा:णी**—स्त्री० दुकानदार की पत्नी, साहुकार की पत्नी।
**सा:द**—पु० साधु।
**सा:द**—वि० भोला।
**सा:दड़ा**—वि० शरीफ।
**सा:दड़ा**—पु० ढोंगी साधु।
**सा:न**—पु० सांड।
**सा:ब**—पु० साहब।
**सा:रना**—स० क्रि० सहन करना।
**सा**—वि० (सि०) अच्छा, ईमानदार, सेठ।
**सा**—अ० क्रि० (कु०) है।
**साई**—वि० अच्छा।
**साई**—स्त्री० पेशगी, अग्रिम राशि।
**साईत**—स्त्री० शुभमुहूर्त।
**साउकार**—पु० साहूकार।
**साउगी**—अ० (ऊ०, कां०, चं०) साथ, सहित।
**साउगी**—पु० (कु०) साथी।
**साऊ**—पु० (शि०, सि०) जीजा, साला।
**साऊ**—वि० सज्जन।
**साऊणी**—स्त्री० (शि०) कलियां।
**साऊरी**—स्त्री० (कां०, बि०, ह०) ससुराल।
**साएबाए**—स्त्री० टाल-मटोल।
**साओग**—अ० (चं०) साथ।
**साकड़ा**—पु० (बि०) कछुए की जाति का छोटा सा जीव जो पानी में तैरता है।
**साकड़े**—पु० (मं०) इमारती लकड़ियों को तराशती बार निकले छिलके।
**साका**—पु० (सि०) पग।
**साकी**—सर्व० हमें।
**साके**—स्त्री० (सि०) परिस्थितियां।
**साक्ख**—पु० (शि०) संबंध।
**साख**—पु० संबंध, रिश्ता।
**साखणा**—वि० (सो०) खाली।
**साखणा**—स० क्रि० (सि०) धर्म का रिश्ता लगाना।
**साखनाते**—पु० रिश्तेदार।
**साखरा**—पु० (शि०) रिश्तेदार।
**साखला**—पु० संबंधी, रिश्तेदार।
**साखोसोजो**—पु० (सि०) रिश्ते-नाते।
**साग**—पु० सब्जी, साग।
**सागड़**—पु० (मं०) गले का आभूषण।
**सागनगौर**—पु० (मं०) Atropa acumineta.
**सागर**—पु० (मं०) ज़ंजीर वाले चांदी के बटन।
**सागली**—स्त्री० (मं०) साग और चावल को मिलाकर पकाया पतला खाद्य पदार्थ।
**सागवान**—पु० (बि०, सि०) Tactona grandis.
**सागूदाणा**—पु० साबूदाना।
**सागौण**—पु० (सि०, सो०) दे० सागवान।
**साचणा**—स० क्रि० (सि०) जोड़ना।
**साचा**—वि० (सि०, सो०) सच्चा, शरीफ।
**साच्च**—स्त्री० (बि०) सचाई।
**साज**—स्त्री० (बि०) साझेदारी।
**साज**—पु० वर को दिये जाने वाले उपहार।
**साज़**—पु० (कु०) आग जलाने का लोहे का एक उपकरण। इसको चकमक पत्थर से टकराकर आग निकाली जाती है।
**साज़**—पु० (कु०) उस्तरा।
**साज़णा**—स० क्रि० (कु०) तेज़ करना।
**साजबाज**—पु० सामान। वाद्ययंत्र।
**साजरा**—वि० (सि०, सो०) ताज़ा।
**साजलो**—वि० (शि०) ताज़ा।
**साजा**—पु० साझा।
**साजा**—पु० (सि०) भंडार।
**साज़ा**—पु० संक्रांति।
**साजी**—पु० वाद्य वादक।
**साज़ी**—स्त्री० (सि०, सो०) संक्रांति।
**साज़ी**—पु० (शि०, सि०) साझेदार, साक्षी।
**साजो**—पु० (शि०, सि०) साझा।
**साज्जी**—पु० (बि०) साक्षी।
**साझा**—पु० (चं०, सो०) साझा, इकट्ठा।
**साझी**—पु० (चं०) सहयोगी, हिस्सेदार।
**साट**—पु० (मं०) लकड़ी की छाल।
**साट**—पु० (शि०) कूड़ा।
**साटण**—पु० (चं०) साटन का कपड़ा।
**साटणो**—स० क्रि० (शि०) विनिमय करना।
**साटा**—पु० (शि०) बदला।
**साटाबाटा**—पु० (कु०) एक चीज़ देने और दूसरी चीज़ लेने का

भाव।
**साटी**—स्त्री० (मं०) पैवंद।
**साटू**—पु० काटी गई लकड़ी का टुकड़ा।
**साटो**—पु० (शि०, सि०) गर्द।
**साठड़ो**—वि० (मं०) साठ दिनों में पकने वाली मक्की की एक किस्म।
**साठणा**—स० क्रि० (मं०) मार-पीट करना।
**साठू**—वि० (बि०, मं०, चं०) साठ दिनों में तैयार होने वाली (फसल)।
**साड़**—पु० सड़ने का भाव।
**साड़ा**—पु० सड़ने का भाव।
**साड़ी**—स्त्री० (सि०) गेहूं की फसल।
**साड़ी**—स्त्री० (कु०, मं०) पत्नी की बहिन।
**साड़ौ**—पु० (कु०) पत्नी का भाई।
**साढ़**—पु० (शि०, सि०) आषाढ़ मास।
**साढ़सति**—स्त्री० बुरे दिन, शनि ग्रह की एक अनिष्टतर स्थिति।
**साढ़ादेहुड़ा**—पु० (कु०) किसी काम में उलझे रहने का भाव।
**साढ़े**—पु० (मं०) जंगली खूबानी, खूबानी की एक किस्म जिसकी गुठली कड़वी होती है।
**साण**—स्त्री० (बि०) ईसाई स्त्री, ईसाइन।
**साण**—स्त्री० औज़ार तेज़ करने का पत्थर विशेष।
**साणा**—पु० (सि०) फसल के बीच उगने वाला घास।
**सातु**—पु० (शि०) मृतक के शुद्धिकरण संस्कार के लिए संबंधियों तथा विरादरी के लोगों द्वारा दिया जाने वाला अनाज आदि।
**सातु**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) सप्ताह भर का।
**सातु**—पु० सत्तु, जौ तथा गेहूं आदि का भून कर बनाया गया आटा जिसे लस्सी या चीनी आदि के साथ खाया जाता है।
**सातुआ**—वि० (मं०, सो०) सातवां।
**सात्तर**—स्त्री० (बि०) रेखा।
**सात्तरना**—अ० क्रि० (बि०) सत्तर की उम्र पार करना।
**सात्तारी**—वि० (मं०) साप्ताहिक।
**सात्था**—पु० (बि०) साथ ले जाने का सामान।
**साथ**—पु० संग।
**साथड़ा**—पु० (मं०) बिस्तर।
**साथण**—स्त्री० सहेली।
**साथरा**—पु० बिस्तर।
**साथरो**—पु० (शि०) चीड़, देवदार आदि की पत्तियां जिन्हें पशुओं के नीचे बिछाया जाता है।
**सादड़े**—स्त्री० (शि०) साध्वी।
**सादणा**—स० क्रि० (सि०) बुलाना।
**सादत**—स्त्री० (सि०) गवाह, शहादत, साक्ष्य।
**सादा**—अ० (बि०) हमेशा, सदा।
**सादा**—वि० साधारण।
**साद्रू**—पु० जंगली कंद जिसकी बेल लंबी होती है।
**साद्दा**—पु० (बि०) बुलावा, निमंत्रण।
**साध**—पु० साधु, भला व्यक्ति।
**साधण**—स्त्री० साध्वी।
**साधणा**—स० क्रि० (कु०) सहन करना।
**साधणा**—स० क्रि० (बि०) आटे को बहुत देर तक गूंधते रहना।
**सान**—पु० एहसान।
**सान**—स्त्री० (कु०) निमोनिया, सन्निपात।
**सान**—वि० आसान।
**सान**—पु० (मं०, शि०, सि०) इशारा, संकेत।
**सानण**—स्त्री० दे० सांदण।
**सानू**—पु० (ह०) मुजारा।
**सान्नी**—स्त्री० (सो०) मशीन से कटा घास।
**साप**—पु० (शि०) सांप।
**सापटी**—स्त्री० (कु०) संगति।
**सापटू**—पु० (शि०, सि०) रुमाल।
**सापड़ा**—पु० Milliusma dillenifolia.
**सापालड़ा**—पु० (सि०) दूल्हे का भाई जो विवाह के अवसर पर दूल्हे के साथ पालकी में बैठता है।
**साफड़**—पु० (मं०) चट्टान।
**साफा**—पु० (शि०, सो०) रुमाल; कपड़े का टुकड़ा।
**साफा**—पु० सफेद खद्दर का कपड़ा, परना, छोटी धोती, पगड़ी।
**साफी**—स्त्री० (ह०) चावलों से मांड़ निकालने के लिए प्रयुक्त कपड़ा।
**साफी**—स्त्री० (शि०) तंबाकू पीने के लिए चिलम में लपेटा जाने वाला घास विशेष।
**साब**—पु० अनुमान, हिसाब।
**साबजणा**—पु० (कु०) चूल्हे से बरतन उतारने का कपड़ा।
**साबण**—पु० साबुन।
**साबत**—वि० पूरा।
**साबत**—वि० (कु०) प्रमाणित, साबित।
**साबतणा**—स० क्रि० (सि०) मुरम्मत करना।
**साबता**—वि० पूरा, समूचा, पूर्ण।
**सामखो**—अ० (सि०) सामने।
**सामणे**—अ० सामने।
**सामबरनो**—स० क्रि० (सि०) झाड़ू देना, साफ करना, सजाना।
**सामबलनो**—स० क्रि० (शि०) याद करना।
**सामां**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Glochidium Velutinum.
**सामिर्चो**—स्त्री० (सि०) काली मिर्च।
**सामी**—पु० देनदार, असामी।
**सामी**—पु० (चं०) मज़दूर, किसी काम के लिए लगाया व्यक्ति।
**सामी**—पु० (शि०) परिवार।
**सामे**—पु० (शि०) सेठ।
**साम्मणा**—स० क्रि० संभालना।
**साम्हन**—अ० (कु०) सामने।
**सायणी**—वि० (मं०) सब्जी उगाने वाला।
**सायत**—स्त्री० मुहूर्त।
**सायर**—पु० (मं०) टिड्डे जैसा एक हरे रंग का कीट।

**सायर**—स्त्री० खरीफ फसल के बाद होने वाला कृषि मेला, उत्सव।
**सायां**—वि० (कां०) समतल।
**सायां**—सर्व० (बि०) वही, उसी को।
**सायां**—स्त्री० (कां०) शाम।
**सार**—पु० (सि०) तरीका।
**सार**—पु० महत्त्व, वास्तविकता, तत्त्व।
**सारकू**—वि० (शि०) साबूत, समूचा, पूर्ण।
**सारत**—स्त्री० (बि०, शि०) इशारा, संकेत।
**सारते**—अ० (शि०, सो०) सभी जगह।
**सारदे**—स्त्री० (सि०) सारंगी के आकार का एक वाद्ययंत्र।
**सारन**—अ० (कु०) सब जगह।
**सारना**—स० क्रि० काम निकालना।
**सारना**—स० क्रि० (कु०) हल करना। काटना। बुनना।
**सारना**—स० क्रि० (कु०) 'लिंगड़ी' के बाल साफ करना।
**सारना**—अ० क्रि० (सि०) फसल में दाने तैयार होना।
**सारना**—स० क्रि० (सो०) गुज़ारा करना।
**सारा**—वि० संपूर्ण।
**सारुना**—अ० क्रि० (सो०) वृक्षों पर पत्तियों का लगना।
**सारे**—वि० सभी।
**सालंगी**—स्त्री० (कु०, मं०) Milletia auriculata. Porana racemosa.
**साल**—पु० वर्ष।
**साल**—स्त्री० (कु०) फसल।
**साल**—स्त्री० शाल।
**साल**—पु० (ऊ०, कां०, सि०) Shorea robusta. शाल वृक्ष।
**सालड़**—वि० (कु०) घास-पात से ढका हुआ।
**सालण**—पु० (चं०) चावल की तरह का एक अन्न।
**सालणा**—पु० (सि०) पके मांस का सूप।
**सालमपंजा**—पु० मुंजातक, एक कंद।
**सालममिश्री**—स्त्री० Polygonum multiflorum. निर्गुंडी।
**साला**—पु० (सो०) बरसात के मौसम में ऊनी वस्त्र में लगने वाला कीट विशेष।
**साळा**—पु० साला।
**सालाना**—वि० वार्षिक।
**साळी**—स्त्री० साली।
**सालू**—पु० गोटा, किनारी लगा दुपट्टा जिसे शादी में ओढ़ा जाता है।
**साले**—स्त्री० (शि०) साली।
**साल्ठ**—पु० (शि०) डंडा।
**साल्ह**—पु० साहुल, दीवार की सीध जांचने का राजगीरों का एक उपकरण।
**साल्हु**—पु० (चं०) दुपट्टा।
**साल्हु**—पु० देवता को चढ़ाया जाने वाला लाल कपड़ा।
**सावन**—पु० (सो०) श्रावण मास।
**सावनी**—स्त्री० (सि०) इशारा।
**सावरन**—पु० (सि०, सो०) झाड़ू।
**सावरना**—स० क्रि० साफ करना, झाड़ू लगाना।
**सावरा**—वि० (मं०) पर्याप्त।
**सावरी**—पु० (सि०) जंगली पशु 'काकड़' की खाल।
**सास**—पु० श्वास।
**सासण**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) Osyrls wightiana.
**सासु**—स्त्री० (बि०, मं०) सास।
**सास्तर**—पु० शास्त्र।
**साह**—पु० सांस।
**साह**—पु० धनवान् पुरुष।
**साहजना**—पु० (शि०, सो०, सि०) दे० सांजणा।
**साहणू**—पु० (कु०) 'पुहाल' गद्दी के वे लोग जिन्होंने ग्रीष्म काल में पालने के लिए अपनी भेड़ें उस (पुहाल) के पास दे रखी हों।
**साहल**—पु० (मं०) बैलों को काबू में रखने के लिए उनके गले में लटकाए लकड़ी के फाल।
**साहसीमूली**—पु० दे० सहसमूल।
**साही**—अ० (कु०, सि०) भांति, तरह।
**साही**—स्त्री० एक छोटा जानवर जो रात को आलू आदि उखाड़ कर खाता है। इसके शरीर में लंबे-लंबे कांटे होते हैं।
**साहु**—पु० साहुल।
**साह्मणे**—अ० सामने।
**साहरा**—पु० सहारा।
**सिंआई**—स्त्री० सिलाई।
**सिंक**—स्त्री० (चं०, बि०) दीमक।
**सिंग**—पु० सींग।
**सिंगणो**—स० क्रि० (सि०) सूंघना।
**सिंगरस्सी**—स्त्री० (बि०) बैलों को इधर-उधर जाने से रोकने के लिए प्रयुक्त रस्सी जो बैलों के सींगों में बांधी जाती है।
**सिंगी**—स्त्री० देवता के नाम पर गले में डाला जाने वाला एक चांदी या सोने का गहना।
**सिंघ**—पु० (कु०) शेर।
**सिंघाणा**—स० क्रि० सुंघाना।
**सिंघासन**—पु० सिंहासन।
**सिंचणा**—स० क्रि० सींचना।
**सिंजकरा**—वि० (बि०) मितव्ययी।
**सिंजण***—स्त्री० (मं०) कनपटी, कान के पास का स्थान।
**सिंज़ण**—स्त्री० सिर।
**सिंजणा**—स० क्रि० (सि०) विवाह के समय तेल डालना।
**सिंजणा**—स० क्रि० सींचना, बरतन आदि में टांका लगाना।
**सिंजत**—पु० (चं०) सर्दियों में पकने वाला नाशपाती प्रजाति का एक फल।
**सिंजार**—पु० (चं०) हिलने-डुलने के लिए स्थान।
**सिंझिया**—पु० दीपक।
**सिंड**—वि० (चं०) मज़बूत।
**सिंडूवीर**—पु० (मं०) एक देवता जो भूत, भविष्य तथा सुख-दुःख का आभास कराता है।
**सिंत**—पु० (चं०) कैथ प्रजाति का फल।

**सिंदरा.ली**— स्त्री० (सि०) रोशनदान।
**सिंदी**— स्त्री० (कां०) मांग, बालों को संवार कर बनाई हुई रेखा।
**सिंध**— स्त्री० (कु०) मांग, बालों को संवारकर बनायी हुई रेखा।
**सिंधका**— वि० (कु०) मुफ्त।
**सिंबल**— पु० सेमल का वृक्ष। Bombax Ceiba.
**सिंयूक**— स्त्री० (सो०, बि०) दीमक।
**सिंव**— पु० (शि०, सि०, सो०) हद, सीमा।
**सिंवण**— स्त्री० (शि०, सि०, सो०) सूई।
**सिंवणा**— स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) सिलना।
**सिंवद**— स्त्री० (सो०) दे० सिंदी।
**सिंवदी**— स्त्री० (शि०, सि०) सिर पर गूंथी हुई छोटी -छोटी वेणी।
**सिंसिया**— पु० (मं०) दीपक।
**सिंह**— पु० (कु०) शेर।
**सिंहतर**— स्त्री० (कु०) सिलाई।
**सिंहयूल**— पु० (चं०) चौलाई।
**सिंहूटी**— स्त्री० (बि०, ह०) Dalbergia sissoo. शीशम।
**सि**— सर्व० (सो०) वह।
**सिआणप**— पु० बुढ़ापा, दक्षता, निपुणता।
**सिआणा**— वि० बूढ़ा।
**सिआमत**— स्त्री० (बि०) शामत।
**सिआरी**— स्त्री० "इ" की मात्रा।
**सिउंदू**— पु० (शि०) छोटी सूई।
**सिउण**— स्त्री० (कु०, बि०, सि०) सूई।
**सिउणो**— स० क्रि० (शि०, सि०) सिलना।
**सिऊंक**— स्त्री० दीमक।
**सिऊंदर**— स्त्री० (शि०) दे० सिंदी।
**सिऊंदर**— स्त्री० सीमा, खेत आदि की सीमा।
**सिऊड़**— स्त्री० (मं०) सूई।
**सिऊण**— स्त्री० सूई।
**सिऊणिया**— पु० (मं०) दर्जी।
**सिऐणो**— स्त्री० (शि०, सि०) शेरनी।
**सिक**— पु० सिक्का।
**सिकड़ी**— स्त्री० (बि०) बारीक लकड़ी।
**सिकडू**— पु० पेड़ की छाल के छोटे-छोटे भाग, लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े जो जलाने के काम आते हैं।
**सिकणा**— अ० क्रि० खिसकना, चलना, सरकना।
**सिकबाहण**— वि० (चं०) पर्याप्त।
**सिकरन**— पु० (चं०) ऊंचे पर्वतों पर पाया जाने वाला एक जीव।
**सिकरी**— स्त्री० सिर पर जमा हुआ मैल।
**सिकरु**— पु० (मं०) बाज़।
**सिकार**— पु० (कां०) शिकार।
**सिकिणा**— अ० क्रि० (कु०) चला जाना।
**सिक्कड़**— पु० छिलका।
**सिक्कडू**— पु० (ह०) बारीक, लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े।
**सिक्खा**— स्त्री० (मं०) मांस के बड़े बड़े भूने गए टुकड़े।
**सिक्खो**— स्त्री० (शि०, सि०) पका हुआ विशेष प्रकार का मांस।
**सिगरिट**— स्त्री० सिगरेट।
**सिगरी**— अ० (शि०) शीघ्रता से।
**सिज़ई**— सर्व० (सि०) वही।
**सिजणा**— अ० क्रि० भीगना।
**सिजणा**— अ० क्रि० (सि०, सो०) फलीभूत होना।
**सिजणा**— स० क्रि० (शि०) देवता के गूर को मान्यता प्रदान करना।
**सिजणा**— अ० क्रि० (सि०) गल जाना।
**सिज़णा**— अ० क्रि० (कु०, सि०) खमीर डाले गए आटे द्वारा बनाए 'भटूरे' आदि का पकाने योग्य होना।
**सिजावणो**— स० क्रि० (शि०) भिगोना।
**सिज्जणा**— अ० क्रि० (बि०) भीगना।
**सिज्जा**— वि० (ह०) गीला।
**सिझणा**— अ० क्रि० (चं०) अनुभव होना।
**सिटक**— पु० (बि०) वृक्ष का छिलका।
**सिटणा**— अ० क्रि० (कु०, सि०) पकना, दाल आदि का आग की आंच में पक जाना।
**सिटणो**— अ० क्रि० (शि०, सि०) पकाना।
**सिटादा**— वि० (मं०) पका हुआ।
**सिटावणो**— स० क्रि० (शि०, सि०) पकाना।
**सिट्टू**— पु० (चं०) छोटा सिट्टा।
**सिठणी**— स्त्री० विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गालियों के गीत।
**सिड़कू**— पु० (शि०, सि०, सो०) खमीरे आटे से बनाई जाने वाली एक विशेष प्रकार की रोटी जिसके बीच में अफीमदाना तथा अन्य पदार्थ डाले जाते हैं, इसे भाप द्वारा पकाया जाता है।
**सिड़खणा**— अ० क्रि० (बि०) कम ताप के कारण रोटी का सख्त होना।
**सिड़ह**— स्त्री० (मं०) सीढ़ी।
**सिड्डू**— पु० (मं०) दे० सिड़कू।
**सिढ**— स्त्री० मृतक को उठाकर ले जाने के लिए बनाई बांस की अरथी।
**सिणकणा**— स० क्रि० नाक साफ करना।
**सिणकणा/णो**— अ० क्रि० (शि०, चं०, सि०) सिसकना।
**सित्था**— पु० (चं०) कच्चा मोम।
**सिथरा**— पु० (मं०) मक्की का भुट्टा।
**सिथो**— पु० (शि०, सि०) दे० सित्था।
**सिदा**— वि० सीधा।
**सिद्ध**— पु० चौरासी सिद्ध, आध्यात्मिक साधना में पूर्णता को प्राप्त व्यक्ति।
**सिन**— पु० (ह०) गांव की सीमा।
**सिनक**— स्त्री० (शि०) गीलापन।
**सिनक**— स्त्री० (चं०) इशारा।
**सिना**— वि० (कु०) गीला।

**सिन्ना**— वि० गीला।
**सिपना**— वि०(कु०) चपटी नाक वाला।
**सिफर**— पु० शून्य।
**सिमकणा**— अ० क्रि० (चं०) मामूली सा पानी निकलना।
**सिमणा**— अ० क्रि० (बि०) पानी का रिसना।
**सिमन**— अ० (कु०) अचानक।
**सिमल**— पु० सेमल वृक्ष Bombax ceiba.
**सिमसिमाट**— स्त्री० (बि०) हलकी वर्षा।
**सिम्मल**— पु० (बि०) सेमल का वृक्ष।
**सिम्ह**— पु० श्लेष्मा।
**सियांदा**— पु० (मं०) धान में से घास निकालने का भाव।
**सियाई**— स्त्री० (कु०, सि०) सिलाई, सीने का पारिश्रमिक।
**सियागणा**— स० क्रि० (कु०) आग के अंगारों को राख से ढक कर रखना, आग को भस्म से ढक देना ताकि वह बाद में प्रयोग के लिए सुरक्षित रहे।
**सियाठी**— स्त्री० (बि०) छोटे नाले या कुल्या आदि पर बनाया छोटा पुल।
**सियाणा**— पु० (कु०, बि०) बूढ़ा, वृद्ध; अनुभवी।
**सियाणा**— पु० (सि०) नंबरदार।
**सियापा**— पु० (कु०) झंझट, कष्ट।
**सियापा**— पु० शोक।
**सियारटी**— स्त्री० (बि०) काले, सफेद, मटमैले रंग तथा पीली चोंच वाली चिड़िया।
**सियारु**— पु० (सि०, सो०) एक पेड़ जो नदी किनारे होता है।
**सियाल**— पु० (सि०) गीदड़।
**सियाळ**— स्त्री० (कु०) हल की सीता।
**सियुंक**— स्त्री० दीमक।
**सियुंटी**— स्त्री० (बि०) शीशम का वृक्ष।
**सियूल**— स्त्री० चौलाई।
**सिरकणा**— अ० क्रि० सरकना।
**सिरकू**— पु० (सि०) हल के साथ लगने वाला लकड़ी का पतला टुकड़ा।
**सिरगुंदी**— स्त्री० विवाह के अवसर पर लड़की का सिर गूंधने की क्रिया।
**सिरचौआ**— पु० (बि०) चारपाई में लगे ऊपर-नीचे के डंडे।
**सिरड़**— स्त्री० जलन, ज़िद ।
**सिरड़ी**— स्त्री० (चं०) शिकन।
**सिरनी**— स्त्री० खुशी के अवसर पर बांटा जाने वाला मिष्टान्न।
**सिरभदरा**— पु० (मं०) मृत संस्कार में सिर मुंडन।
**सिरमिर**— पु० (शि०, सो०) Rhododendron lepidotum. तालिस्त्री।
**सिरहीं**— स्त्री० (बि०) शीशम प्रजाति का एक विशेष पेड़।
**सिराब**— पु० (कु०, मं०) Hebenaria goleandra.
**सिरिक**— स्त्री० (शि०, सि०) रजाई।
**सिरी**— स्त्री० (मं०) भेड़-बकरी या मेंढ़े का कटा हुआ सिर।
**सिरी**— स्त्री० (चं०) मकान बनाते समय स्तंभ के ऊपर डाली जाने वाली लकड़ी।
**सिल**— स्त्री० (कां०) वह पत्थर जिस पर रख कर चमड़ा नर्म किया जाता है।
**सिल**— स्त्री० शिला, नमक आदि पीसने के लिए प्रयुक्त चौड़ा समतल पत्थर।
**सिलगणा**— अ० क्रि० (शि०, सि०, सो०) जलना, सुलगना।
**सिलणी**— स्त्री० (बि०) सिर घूमने या चक्कर आने से हुआ कष्ट।
**सिलता**— पु० (मं०) साग विशेष।
**सिलफोड़**— पु० (शि०) Saxifraga ligulata.
**सिलरा**— पु० (कु०) बड़ी गिलटी।
**सिलरी**— स्त्री० (कु०) अरबी, आलू।
**सिलाजीत**— स्त्री० शिलाजीत।
**सिलाब**— स्त्री० नमी।
**सिलु**— पु० (शि०) गेहूं या जौ आदि की बाली।
**सिल्के**— वि० (शि०) नमीदार।
**सिल्दू**— पु० (शि०) गेहूं या जौ आदि की बाली।
**सिल्लण**— स्त्री० (चं०) गेहूं के बीच उगने वाला घास विशेष।
**सिल्ला**— स्त्री० (कां०) मक्की के भुट्टे में लगने वाले बाल।
**सिवल**— स्त्री० (चं०) चोली।
**सिसड़ी**— स्त्री० (चं०) शिकन।
**सिसयो**— पु० (सि०) शीशम।
**सिस्त**— स्त्री० निशाना।
**सिहांरी**— स्त्री० (चं०) गर्मी से तपे शरीर में ठंडी हवा लगने से हो जाने वाले फफोले जिन पर खुजली होती है।
**सिहानू**— पु० (बि०) साही के तीखे पंख।
**सिहालनी**— स्त्री० (कां०) धान की रोपाई के लिए पानी भरे खेतों में की जाने वाली हल की जुताई।
**सींख**— स्त्री० (बि०) पके मांस की डली।
**सींग**— पु० (सि०) शेर।
**सींज**— स्त्री० (शि०, सि०) शुद्धिकरण, लड़का पैदा होने पर मनाया जाने वाला उत्सव विशेष।
**सींज**— पु० (शि०) देवता से संबंधित एक कृत्य।
**सींज**— पु० (शि०) जोड़ा, बरतन में लगा टांका।
**सींजकरा**— वि० (बि०) संग्रह करने की प्रवृत्ति वाला।
**सींजण**— स्त्री० (मं०) तालु।
**सींजणा**— स० क्रि० (मं०) एकत्र करना।
**सींजणा**— स० क्रि० बरतन आदि में टांका लगाना।
**सींड**— स्त्री० (चं०, ह०) सीटी।
**सींढू**— पु० एक ग्राम देवता जो सीटी मार कर खोई हुई वस्तु बताता है।
**सींद**— स्त्री० (चं०, बि०) मांग, सिर पर बालों को संवार कर बनाई गई रेखा।
**सींदी**— वि० मुफ्त।
**सींदु**— वि० (सि०) ईमानदार।
**सींबरु**— वि० (कु०) ऐसा व्यक्ति जिसकी आंखों का आकार सामान्य आकार से छोटा हो।
**सी**— स्त्री० (सि०) हल की सीता।
**सी**— स्त्री० (सि०) शाबाशी देने का भाव।
**सी**— अ० क्रि० (कु०) है।

**सी**—सर्व० (शि०, सि०) वह।
**सीआ**—स्त्री० (शि०) सीता।
**सीऊं**—स्त्री० (कु०) सीमा।
**सीऊं**—स्त्री० (शि०) हल की सीता।
**सीऊईयां**—स्त्री० (मं०) सेंवइयां।
**सीकणा**—स० क्रि० (बि०) लालटेन की बत्ती को ऊपर उठाना।
**सीका**—पु० (बि०) लालटेन की बत्ती।
**सीख**—स्त्री० शिक्षा।
**सीख**—स्त्री० (बि०) लोहे का छोटा टुकड़ा।
**सीखणा**—स० क्रि० सीखना।
**सीखर**—वि० (कां०) तेज़।
**सीखसलाह**—स्त्री० सलाह-मशवरा।
**सीज**—पु० (चं०) चिने हुए पत्थरों में लगाया छोटा सा पत्थर।
**सीज़णा**—स० क्रि० (ह०) जोड़ना।
**सीजणू**—पु० (मं०) दही बिलोने का मिट्टी का पात्र।
**सीजिया**—पु० (कु०) तेल का दीपक।
**सीड़ी**—स्त्री० (ह०) अनाज में लगने वाला कीड़ा।
**सीड़ू**—पु० (कु०) दे० सिड़कू।
**सीड़े**—पु० (शि०) दे० सिड़कू।
**सीढणा**—स० क्रि० (चं०) सहन करना।
**सीढ़ी**—स्त्री० दे० सिढ़।
**सीढ़ी**—स्त्री० गेहूं, चावल इत्यादि को खोखला करने वाला कत्थई रंग का जूं के आकार का कीड़ा।
**सीणक**—स्त्री० (कु०, सि०) दीमक।
**सीणा**—वि० (मं०) गीला।
**सीत**—स्त्री० (सो०) खेत का भीतरी भाग, खेत का ऊपर की ओर का भाग।
**सीत**—स्त्री० ठंड, सर्दी।
**सीत**—स्त्री० (मं०) झिंगुर।
**सीता**—अ० (सि०) साथ।
**सीतु**—पु० (बि०) टिड्डे की तरह का एक जीव।
**सीद**—स्त्री० (शि०, सो०) सिधाई।
**सीदा**—वि० सीधा।
**सीधा**—पु० (बि०) याचकों को दिया जाने वाला अन्न।
**सीप**—पु० (शि०) पके हुए चावल का दाना।
**सीम**—पु० श्लेष्मा।
**सीमी**—स्त्री० (चं०) सेंवइयां।
**सीया**—पु० (चं०) हल के मूल भाग में लगाई जाने वाली रस्सी।
**सीर**—स्त्री० नस, रग।
**सीर**—स्त्री० (सि०) नस काट कर खून निकालने की क्रिया।
**सीर**—स्त्री० (ऊ०, कां०) पानी की धारा।
**सीरना**—अ० क्रि० (बि०) पानी का निकलना।
**सारना**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, ह०) उदय होना।
**सीरनी**—स्त्री० (बि०) दे० सिरनी।
**सीरा**—पु० शीरा।
**सीरा**—पु० निशास्ता, गेहूं का गूदा।
**सीरौ**—पु० (कु०) गेहूं, जौ आदि की बाली।
**सील**—वि० कम गर्म, कुनकुना।
**सील**—स्त्री० (मं०) पत्थर की शिला।
**सील**—स्त्री० (कु०) गेहूं, जौ आदि की बाली।
**सीलरीआलू**—पु० (कु०) अरबी।
**सीस**—स्त्री० आशीष।
**सीसा**—पु० दर्पण।
**सीसी**—स्त्री० (सि०) शीशी।
**सीहीं**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) Dalbergia sissoo. शीशम।
**सीहणी**—स्त्री० शेरनी।
**सीहणा**—स० क्रि० (कु०) सिलाई करना, सीना।
**सुंआर**—पु० सोमवार।
**सुंगड़**—स्त्री० (चं०) याद।
**सुंगड़ना**—अ० क्रि० (सि०) नाक का बंद होना।
**सुंगड़ना**—अ० क्रि० सिकुड़ना।
**सुंगणा**—स० क्रि० (बि०) सूंघना।
**सुंगर**—पु० (मं०, सि०) सूअर।
**सुंगरे**—स्त्री० (शि०) मादा सूअर।
**सुंगै**—अ० (कु०) समेत, सहित, (किसी के) साथ।
**सुंघड़**—स्त्री० (कां०, सि०) बेचैनी, घुटन, उदासी।
**सुंघड़ना**—अ० क्रि० (मं०) संकोच करना।
**सुंचणा**—स० क्रि० (शि०, सि०, सो०) सोचना, चिंता करना; चाहना।
**सुंचणो**—स० क्रि० (सि०) सोचना।
**सुंजाणा**—स० क्रि० (सि०) आग जलाना।
**सुंड**—स्त्री० सोंठ।
**सुंड**—पु० (चं०) शहतीर का छोर।
**सुंड़कणा**—अ० क्रि० (बि०) सिसकना।
**सुंडका**—पु० (बि०, सि०) फूला हुआ मुंह।
**सुंडका**—पु० (चं०) घोड़े की पीठ पर बैठने के लिए रखा जाने वाला साधन, पलान।
**सुंडी**—पु० अनाज में लगने वाला कीड़ा।
**सुंढीणा**—अ० क्रि० (कु०) हिस्सा डालना, किसी आयोजन के लिए सहयोगी बनना।
**सुं.दी**—वि० (कु०, मं०, सि०) गर्भवती (गाय)।
**सुंधा**—पु० (कु०) क्रिया कर्म।
**सुंधा**—पु० (चं०) हींग।
**सुंप्फ**—स्त्री० (कां०, मं०) सौंफ।
**सुंब**—पु० (चं०, मं०) घोड़े का खुर, पशुओं के पांव।
**सुंबला**—वि० (कु०) सीधा, 'उंबला' का विपरीतार्थक।
**सुंबलो**—वि० (शि०, सि०) दायां, आसान, शरीफ।
**सुंबा**—पु० (शि०, सि०) लोहे में सुराख करने की पतली छेनी।
**सुंबा**—वि० (चं०) अधिक सूजा हुआ।
**सुंबू**—वि० (चं०) कम सूजा हुआ।
**सुंमळ**—वि० (सि०) उपजाऊ।
**सु.ढ़**—पु० (कु०) चीड़, देवदार आदि की पत्तियां जिसे पशुओं

के नीचे बिछाया जाता है।
**सु:णो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) उत्पन्न होना, बच्चे को जन्म देना।
**सुअर**—पु० (कु०) जंगली सूअर जो बड़ा हिंस्र होता है। इसका शरीर इतना मोटा होता है कि यह वापिस नहीं मुड़ सकता आगे की ओर ही चलता है।
**सुआं**—स्त्री० (सि०) अंकुर।
**सुआंई**—स्त्री० (ऊ०, ह०) नींद।
**सुआंए**—वि० (बि०) विक्षिप्त।
**सुआंग**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) हास्य नाटक, स्वांग।
**सुआंगी**—वि० (कु०) स्वांगी, 'हौन' लोक नाट्य का एक पात्र।
**सुआ:ण**—पु० (कु०, चं०) पत्थर की सीढ़ी जो धरती से मकान की प्रथम मंजिल तक चढ़ती है।
**सुआ**—वि० (शि०) बढ़िया, सुंदर।
**सुआ**—वि० लाल।
**सुआ**—पु० मोटी सूई, इंजेक्शन।
**सुआ**—पु० (शि०, सो०) तोता, शुक, सुग्गा।
**सुआ**—पु० (ह०) मक्की के दाने निकालने के लिए बांस के टुकड़े का बना हुआ उपकरण।
**सुआ**—स्त्री० (चं०) गर्मी।
**सुआइणा**—स० क्रि० (कु०) सुलाया जाना।
**सुआई**—स्त्री० (बि०) सांस फूलने की क्रिया।
**सुआगण**—स्त्री० सुहागिन।
**सुआगपूड़ा**—पु० गोट आदि लगाकर कागज़ की बनाई हुई सुंदर पुड़िया जिसमें सुगंधित वस्तुएं रख कर दुलहिन के लिए भेजी जाती हैं।
**सुआटर**—पु० स्वैटर, बनियाइन।
**सुआड़**—पु० क्यारी, घर के आस-पास का एक छोटा सा खेत।
**सुआणा**—स० क्रि० (कु०) सुलाना।
**सुआद**—पु० स्वाद।
**सुआदणा**—स० क्रि० (कु०) स्वाद लेना, किसी चीज़ में नमक आदि चखना।
**सुआदला**—वि० (कु०) स्वादिष्ट।
**सुआदिणा**—अ० क्रि० (कु०) स्वाद लिया जाना।
**सुआन**—पु० (बि०) किसी के प्रति प्रकट किया गया क्रोध।
**सुआमी**—पु० स्वामी।
**सुआर**—पु० सवार, सवारी करने वाला।
**सुआरना**—स० क्रि० साफ करना, दाल आदि से कंकड़-पत्थर छांटना।
**सुआरी**—स्त्री० सवारी।
**सुआस**—पु० सांस।
**सुआसी**—स्त्री० दमा का रोग।
**सुइणा**—अ० क्रि० (कु०) (पशुओं से संबंधित) ब्याया जाना।
**सुई**—स्त्री० इंजेक्शन।
**सुईणो**—पु० (शि०) स्वप्न।
**सुईना**—पु० स्वर्ण, सोना।
**सुकटांकू**—पु० (चं०) एक प्रकार का ज्वर।
**सुकड़ा**—वि० (चं०, बि०) कमज़ोर।
**सुकणा**—अ० क्रि० सूखना, चिंता में घुलना।
**सुकळा**—पु० (सि०) लकड़ी का सूआ जो मक्की के दाने या छिलका उतारने के काम आता है।
**सुकाणा**—स० क्रि० सुखाना।
**सुकार**—वि० बिना वर्षा के।
**सुकारू**—पु० (बि०) मकई की एक किस्म।
**सुकारू**—वि० (सि०) नमकीन।
**सुकेया**—वि० (मं०) कमज़ोर।
**सुक्कर**—पु० शुक्रवार।
**सुक्का**—वि० सूखा।
**सुक्खा**—वि० (सो०) आसान।
**सुक्खा**—स्त्री० (चं०) मन्नत, मनौती।
**सुख**—पु० सुख।
**सुखचैन**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) Oesris indica.
**सुखड़ा**—वि० (सि०, सो०) सीधा, सरल।
**सुखणा**—अ० क्रि० (शि०, सि०) अच्छा लगना, मन को भाना, प्रिय लगना।
**सुखना**—स० क्रि० मन्नत करना, मनौती करना।
**सुखपाल**—पु० विवाह में दूल्हा की पालकी।
**सुखसांद**—स्त्री० राज़ी-खुशी का समाचार।
**सुखाणा**—स० क्रि० झेलना।
**सुखाळा**—वि० आसान।
**सुगंधबाला**—स्त्री० Vabriana wallichli. एक वृक्ष विशेष जिसकी जड़ गंध द्रव्य के रूप में काम आती है।
**सुगल**—पु० (बि०, मं०) वर्षा ऋतु में निकला पानी का स्रोत।
**सुगाड़**—पु० (चं०) घर के निकट की बड़ी वाटिका।
**सुगाड़ी**—स्त्री० (चं०) क्यारी।
**सुघड़ा**—वि० (बि०) निपुण।
**सुघड़ा**—वि० (बि०, सि०) अच्छा। सहोदर।
**सुघरा**—वि० (मं०) नर्म।
**सुच**—पु० बिजली की धारा काटने या जोड़ने का यंत्र।
**सुचज्जा**—वि० (बि०) खूबसूरत, अच्छा।
**सुचो**—वि० (शि०) साफ।
**सुच्चा**—वि० पवित्र।
**सुच्ची रसोय**—स्त्री० (बि०) तली रोटी।
**सुच्यारा**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) निपुण पुरुष।
**सुच्यारी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) निपुण औरत।
**सुजगा**—वि० (सि०) होशियार, जागरूक।
**सुजणा**—अ० क्रि० सोजिश आना।
**सुजनी**—स्त्री० कढ़ाई वाली चादर।
**सुजाणा**—स० क्रि० (चं०, बि०) नाराज़गी प्रकट करना।
**सुजाहण**—स्त्री० (चं०, बि०) समझाने का भाव।
**सुज्जण**—स्त्री० (चं०, बि०) सोजिश।
**सुज्जणा**—अ० क्रि० (बि०) सूजना।
**सुझणा**—अ० क्रि० दिखाई देना।
**सुटकार**—पु० (चं०) आहें।

सुटणा—स० क्रि० फेंकना।
सुटा—पु० (कु०) चुटकी भर मात्रा।
सुद्दा/दु—पु० कश।
सुद्दू—पु० (कु०, चं०) नमक पीस कर भेड़-बकरियों को देने का भाव, नमक की मुट्ठी भर मात्रा जो पशुओं को दी जाए।
सुड़—पु० (कु०) देवदार, चीड़ आदि वृक्ष के सूखे पत्ते जिन्हें पशुओं के नीचे बिछाया जाता है।
सुड़कणा—स० क्रि० (शि०) नाक से सुड़-सुड़ की ध्वनि करना।
सुड़का—पु० (सि०) काठी।
सुड़का—पु० (बि०, ह०) दिमाग को ताकत देने वाला पेय पदार्थ।
सुढ़कणा—स० क्रि० (बि०) मुंह से आवाज़ करते हुए किसी पेय पदार्थ को पीना।
सुण—अ० (कु०) समेत।
सुणना—स० क्रि० सुनना।
सुणाणा—स० क्रि० (कां०) सुनाना।
सुणोला—पु० (चं०) सोने का समय।
सुतक—पु० (कु०, शि०) सूतक, जन्म का अशौच।
सुतकज़ौर—पु० (कु०) प्रसव के बाद का बुखार जो बड़ा हानिकारक होता है।
सुतणा—अ० क्रि० सोना।
सुतनेळ—स्त्री० (शि०, सि०) सोने का समय।
सुतनोल—पु० (शि०) सोते समय किया गया भोजन।
सुतर—पु० सूत।
सुतर—पु० (सि०) मक्की के भुट्टे में लगे बाल।
सुतरै—अ० (सि०) धीरे से, शनैः शनैः।
सुतळी—स्त्री० (सि०) सुतली।
सुता—स्त्री० (बि०) सुधबुध।
सुतालनो—स० क्रि० (शि०) सुलाना।
सुतावणा—स० क्रि० सुलाना। सताना।
सुतीमीर—वि० (बि०) अधिक सोने वाला।
सुतुकवाया—स्त्री० प्रसव के समय होने वाली बीमारी।
सुतेवणा—स० क्रि० सुलवाना।
सुत्थण—स्त्री० पाजामा, ऊन का मोटा पाजामा, सलवार।
सुत्थणु—पु० तंग पाजामा, छोटा पाजामा।
सुत्रा—पु० (बि०, चं०) सूत।
सुथणु—पु० पाजामा।
सुथरा—वि० स्वच्छ।
सुथरा—अ० (कु०) ठीक तरह से, शिष्टता से।
सुदणा—स० क्रि० (चं०) जहां पशु बांधे हों वहां हवा आदि रोकने के लिए दरवाज़े में घास आदि लगाना।
सुदाई—वि० (बि०) कम अक्ल वाला।
सुदागर—पु० सौदागर।
सुध—स्त्री० सुधि, होश।
सुधरा—वि० आसान, सुधरा हुआ।
सुधा—पु० (मं०) सहयोग। सायत (नियत समय) देख कर निकाला गया दिन जिस दिन मृतक के परिवार के लोग गांव व रिश्तेदारों को भोज देते हैं।
सुधाणा—स० क्रि० निश्चित करना।
सुनणगूंद—पु० (मं०) सुनण नामक बूटी का गोंद।
सुनणा—पु० (बि०, मं०) Moringa deifera. शिग्रु।
सुनणुधान—पु० (शि०) ऐसा धान जिसका छिलका लाल होता है।
सुनमाखी—स्त्री० (चं०) मक्खी की एक किस्म।
सुनयार—पु० सुनार।
सुनियंद्र—पु० (बि०) स्वप्न।
सुनियार—पु० दे० सुनयार।
सुन्न—वि० (बि०) अचेत, संवेदन रहित।
सुन्नकड़—पु० (बि०) श्रोता।
सुन्नमसाण—वि० सुनसान, वीरान।
सुन्नहण—पु० (बि०) एक वृक्ष विशेष।
सुन्ना—वि० अकेला।
सुन्ना—पु० सोना, स्वर्ण।
सुन्नु—पु० (सि०) सोना, स्वर्ण।
सुन्नु—पु० (कां०, चं०) Fraxinus Floribunda.
सुन्हणू—पु० (मं०) धान की एक किस्म।
सुन्हणू—पु० (सि०) पेट में पड़ने वाले कीड़े।
सुपना—पु० स्वप्न।
सुपारे—स्त्री० (शि०) सुपारी।
सुप्प—पु० (कां०, बि०) सूप, शूर्प।
सुफल—पु० (मं०) पुरोहित द्वारा पढ़े जाने वाले स्वस्ति वचन जो संस्कार के अंत में पुष्प दे कर कहे जाते हैं।
सुबड़—पु० (मं०) पानी निकलने का भाव।
सुबड़ु—पु० (सि०) दुलहन के सगे संबंधी।
सुबल—पु० (कु०) कीचड़।
सुबळ—पु० (बि०) एक प्रकार का बड़ा कांटा।
सुबाओणा—अ० क्रि० (मं०) अच्छा स्वभाव होना।
सुबाह—पु० (कु०) मंदिर का मैदान।
सुब्बड़े—अ० (मं०) दाहिनी ओर।
सुब्बा—पु० सुआ, सूआ।
सुम—पु० (कु०) पानी का जोहड़, दलदल।
सुम—पु० (चं०) Fraxinus excelsior. तालिस्त्री।
सुमण—पु० (मं०) मालती प्रजाति का छोटा फूल।
सुमरन—पु० (मं०) स्मरण।
सुमला—वि० (मं०, चं०) ठीक, सीधा।
सुरंगर—पु० (सि०) Rhodadendron companutlina.
सुर—स्त्री० (चं०, बि०, सि०) घर में बनाई जाने वाली शराब।
सुरकणा—अ० क्रि० (कु०) रेंगना।
सुरख—अ० (कु०) बिल्कुल।
सुरख—वि० लाल।
सुरखी—स्त्री० (शि०) होंठ में लगाई जाने वाली लाली।
सुरगण—स्त्री० (कु०) इंद्र धनुष।

**सुरगणा**—वि० (बि०) ऐसा व्यक्ति जिससे छिपा कर कोई काम किया जाए फिर भी वह वहां पहुंच जाए।
**सुरगणी**—स्त्री० (बि०) चील।
**सुरगणी**—स्त्री० (सि०) परियां।
**सुरगबाली**—स्त्री० (सि०, सो०) Cuscuta reflexa.
**सुरत**—पु० होश।
**सुरताजड़ी**—स्त्री० गेंदे की छोटी किस्म।
**सुरना**—अ० क्रि० (सो०) गलत ढंग से घुसना।
**सुरम**—स्त्री० (कु०) सुरंग, ज़मीन या समुद्र में रखा जाने वाला बारूद आदि का भरा गोला जिसका स्पर्श होने पर विस्फोट होता है।
**सुरमा**—पु० श्रेष्ठ व्यक्ति; सुरमा।
**सुरमा**—पु० पेन का सिक्का।
**सुरल**—पु० (मं०) चट्टानों का समूह, पत्थरों का ढेर।
**सुरसी**—स्त्री० (कां०) नाखून में लगाया जाने वाला लाल रंग।
**सुरसुरी**—स्त्री० (कु०) सुरसुराहट।
**सुराटी**—स्त्री० (मं०) बिल्कुल बारीक ओले।
**सुराड़**—पु० (बि०) छप्पर डालने के काम आने वाला घास।
**सुरीणा**—अ० क्रि० (चं०) घड़े के फूटने पर पानी का निकलना।
**सुरीत**—स्त्री० (चं०) रखैल।
**सुरुंग**—स्त्री० सुरंग।
**सुरुआ**—पु० (कु०) शोरबा, मांस आदि का रसा।
**सुरुज**—पु० (सि०) सूर्य।
**सुर्ग**—पु० स्वर्ग।
**सुलक**—पु० (मं०) चेतना; पता लगाने का भाव।
**सुलकणा**—स० क्रि० (बि०) घूंटना, निगल जाना।
**सुलकणा**—अ० क्रि० (कु०, चं०) जूं या अन्य कीट का शरीर पर चलना।
**सुलगणा**—अ० क्रि० सुलगना।
**सुलगाणा**—स० क्रि० सुलगाना।
**सुलगावणो**—स० क्रि० (शि०, सि०) दे० सुलगाणा।
**सुळजणा**—अ० क्रि० सुलझना।
**सुलटा**—वि० (कु०) सीधा, उलटा का विपरीतार्थक।
**सुलड़ो**—पु० (मं०) मक्की की एक किस्म जो एक सौ पचास दिनों के उपरांत पकती है।
**सुलफा**—पु० चरस।
**सुलफी**—वि० चरस निकालने वाला।
**सुला**—अ० (शि०) धीरे।
**सुलाह**—स्त्री० समझौता।
**सुलूणे**—पु० (कु०) पकौड़े।
**सुलूस**—अ० (कु०) देर से।
**सुले**—स्त्री० (बि०) सुलह।
**सुले**—अ० (कु०, शि०, सि०) आहिस्ता, धीरे।
**सुवाना**—पु० (ह०) भैंसों का चरागाह।
**सुवारणो**—स० क्रि० (सि०) संवारना।
**सुवेल**—पु० ठीक समय।
**सुवोटर**—पु० (शि०, सि०) स्वैटर।
**सुसक**—स्त्री० खसरा (एक बीमारी)।
**सुसकार**—पु० (बि०) सिसकी।
**सुसको**—पु० (शि०) चेतन।
**सुसरी**—स्त्री० अनाज में लगने वाला कीड़ा।
**सुसरू**—पु० (कां०) रीठा।
**सुसला**—वि० (कु०) जो पूरी तरह से भरा न हो, (अनाज का ऐसा बोरा या थैला आदि) जिसे दबा कर भरा न हो।
**सुसली**—पु० (मं०) धान।
**सुसली**—स्त्री० (बि०) धान के बीज को लगने वाला कीड़ा।
**सुसानड़**—पु० (बि०) शरीर के फूलने और सुस्त होने का भाव।
**सुस्त**—वि० आलसी। उदास। धीमा।
**सुस्ती**—स्त्री० सुस्ती, धीमापन।
**सुह**—स्त्री० (कु०) पता लगाना, खोज, ढूंढ।
**सुहण**—स्त्री० (कु०) लकड़ी की नाली, पूरे वृक्ष की शहतीर को खोद कर बनाई गई नाली जिससे घराट के लिए पानी बहता है।
**सुहणा**—अ० क्रि० (कु०) पशु का ब्याना।
**सुहरना**—स० क्रि० (कु०) कपड़ा बुनते समय 'बाणा' के धागों को छड़ी में पिरोना और फिर नाली में डालना ताकि बुनने में सुविधा हो।
**सुहरा**—पु० (ह०) झरना।
**सुहल**—स्त्री० (चं०) नमी, वर्षा ऋतु में निचले फर्श पर ज़मीन से निकला पानी।
**सुहांजन**—पु० (शि०, सि०, सो०) दे० सांजणा।
**सुहा.ण**—पु० (कु०) दे० सुआ.ण।
**सुहाग**—पु० सौभाग्य।
**सुहागण**—स्त्री० सुहागिन।
**सुहागपाणी**—पु० (मं०) विवाह के अवसर पर चश्मे से लाया गया स्वच्छ पानी जिससे दुलहन को नहलाया जाता है।
**सुहागपिटारी**—स्त्री० वर यात्रा के समय दुलहन को ले जाने के लिए वस्त्राभूषणों की पिटारी।
**सुहागा**—पु० (ह०) हल चलाने के बाद मिट्टी समतल करने का उपकरण।
**सुहाणा**—अ० क्रि० अच्छा लगना।
**सुहाणा**—पु० (सि०) पशुओं के लिए अच्छी चरागाह।
**सुहाणी**—स्त्री० (सि०) छोटा चिमटा।
**सुहारना**—स० क्रि० (कु०) बनाना, संवारना।
**सुहालू**—पु० (ह०) गोल टिकिया।
**सुहन्नणा**—पु० (ऊ०, कां०) एक फलीदार पेड़ जिसकी कलियों से सब्जी बनती है।
**सूं**—स्त्री० सांप की फुंकार।
**सूं**—स्त्री० तारामीरा।
**सूंक**—स्त्री० सूं-सूं की ध्वनि; पानी के तेज़ बहाव की ध्वनि।
**सूंगर**—पु० (कु०, शि०) सूअर, पालतू सूअर।
**सूंघबास**—स्त्री० लालची दृष्टि से निरीक्षण की क्रिया।
**सूंचनो**—स० क्रि० (शि०) सोचना।
**सूंटी**—स्त्री० (सि०) झाड़ू।

**सूंठ**—स्त्री० (मं०, शि०) सोंठ।
**सूंफ**—स्त्री० (कु०) सौंफ।
**सूंम**—वि० (चं०) कंजूस।
**सूंरतौ**—स्त्री० (शि०) सूरत।
**सूंसड़ाप**—स्त्री० (बि०) सर्दी-जुकाम से नाक बहने की क्रिया।
**सूंहणा**—स्त्री० (चं०) काष्ठ का बना वह पात्र जिसमें पशुओं के लिए पानी रखा जाता है।
**सूआ**—पु० (शि०) प्राकृतिक जल स्रोत।
**सूआ**—पु० (कु०) सुआ, लोहे की मोटी सुई।
**सूइणो**—पु० (सि०) सपना।
**सूइणो**—अ० क्रि० (सि०) बच्चा पैदा होना।
**सूई**—स्त्री० सूई।
**सूओर**—पु० (सि०) सूअर।
**सूखो**—वि० (सि०) आसान; मन को माने वाला।
**सूगळ**—पु० (सि०) धरती से निकलने वाला पानी।
**सूगे**—पु० (मं०) Salsia glutinosa.
**सूछम**—वि० सूक्ष्म।
**सूजणा**—अ० क्रि० (सि०) दीखना, दिखाई देना।
**सूज़णा**—अ० क्रि० (कु०) प्रसूता होना, बच्चा जनना।
**सूझ**—स्त्री० समझ।
**सूझणा**—अ० क्रि० दिखाई देना।
**सूझू**—वि० खबर रखने वाला।
**सूट-बूट**—पु० अच्छा परिधान, अच्छा पहनावा।
**सूटा**—पु० धूम्रपान करते हुए ज़ोर से सांस खींचने की क्रिया।
**सूड़**—स्त्री० (मं०) शूल।
**सूड़णो**—स० क्रि० (शि०) रिश्वत देना।
**सूड़ा**—पु० (बि०) कूड़ा करकट।
**सूड़ा**—पु० पानी का कच्चा स्रोत। रोकड़।
**सूड़ा**—वि० (सि०) सुस्त।
**सूड़ी**—स्त्री० (मं०) लकड़ी में लगने वाला कीड़ा।
**सूढ़ा**—पु० (चं०) लोहे या चांदी का सूआ जो देवी-देवताओं के मन्दिर में पड़ा रहता है। जब चेला या पुजारी को खेल आती है तो उसे जिह्वा में बींध कर रख लेता है।
**सूणा**—पु० (चं०) पानी रखने के लिए लकड़ी का बना पात्र जिसमें पट्टू आदि भी धोये जाते हैं।
**सूणा**—अ० क्रि० (चं०) सोना।
**सूणा**—स० क्रि० झाड़ू लगाना।
**सूणो**—पु० (शि०) स्वप्न।
**सूत**—पु० सुधार।
**सूत**—पु० मक्की के भुट्टे के बाल।
**सूत**—पु० धागा।
**सूतक**—पु० बच्चा पैदा होने पर अशुद्धि।
**सूतणो**—अ० क्रि० (शि०) सोना।
**सूतनी**—स्त्री० (शि०, सि०) पाजामा।
**सूतबाहणा**—स० क्रि० (कां०) चीरी जाने वाली लकड़ी को काले सूत से रेखांकित करना।
**सूतमकोड़ा**—पु० सूत छोड़ने वाली चींटी।
**सूतर**—पु० (कु०) काले रंग से (प्राय: तवे की कालिख) रंगा सूत का मज़बूत धागा जिससे शहतीर से तख्ते चीरने के लिए निशान (रेखा) लगाया जाता है।
**सूतरना**—स० क्रि० खींचना, खींच कर निकालना।
**सूत्तर**—पु० (कां०) सूत।
**सूत्रा**—पु० (कु०) सूत।
**सूत्रो**—पु० (शि०) गृह प्रवेश के समय धार्मिक विधि से घर के चारों लगाया गया सूत का धागा।
**सूथड़**—पु० (कु०) भद्दा पाजामा।
**सूथण**—स्त्री० (कु०) पाजामा, प्राय: ऊनी कपड़े का पाजामा।
**सून**—पु० (चं०) आश्विन।
**सूना**—वि० सुनसान।
**सूना**—पु० (कु०) स्वर्ण, सोना धातु।
**सूना**—स्त्री० (कु०) चुंबन।
**सुनौ**—पु० (शि, सि०) स्वर्ण।
**सूफ**—पु० एक चमकदार कपड़ा।
**सूफी**—स्त्री० (कु०) टोपी की एक किस्म।
**सूम**—पु० घोड़े तथा खच्चर के खुर।
**सूमी**—वि० (शि, सि०) कंजूस।
**सूर**—पु० सूअर।
**सूर**—स्त्री० (कु०, शि०, सि०) 'कोदरा' (कोदो) के आटे का बना नशीला पेय पदार्थ।
**सूरज**—पु० सूर्य।
**सूरजपाखे**—पु० (कु०) चांदी और कपड़े का सूर्य की तरह बना गोल आकार का यंत्र जिसे देव यात्रा के समय कंधे पर उठाया जाता है।
**सूरत**—स्त्री० आकृति।
**सूरन**—पु० (बि०) ज़मींकंद।
**सूरबीर**—पु० शूरवीर।
**सूरमा**—वि० (कां०, बि०, ह०) बहादुर।
**सूरा**—वि० सख्त, बहादुर।
**सूरु**—पु० (शि०, सि०) 'थूहर' का पौधा, एक कांटेदार पौधा।
**सूरो-पुरौ**—वि० (सि०) संपूर्ण।
**सूल**—पु० (कु०) ऊपर का छोटा कमरा।
**सूल**—पु० उसूल।
**सूळ**—स्त्री० पेट की तीव्र पीड़ा।
**सूळ**—स्त्री० (कां०) तकलीफ।
**सूळ**—पु० लंबा-तीखा कांटा।
**सूळी**—स्त्री० फांसी।
**सूळे**—स्त्री० (शि०) दीमक, एक प्रकार का बारीक कीड़ा।
**सूह**—स्त्री० खबर।
**सूहड़**—पु० (ऊ०, कां०, सि०) एक देवता।
**सूहडू**—पु० (मं०) मटर।
**सूहनणा**—पु० एक वृक्ष विशेष जिसकी फलियों की सब्जी बनती है तथा घास चारे के काम आता है।
**सूहा**—वि० (चं०) लाल।
**सूहा**—पु० (मं०) पोखर।
**सूही**—स्त्री० (कु०) विवाह के बाद दुलहन या सुहागिन द्वारा बड़ों के पैर छूने की क्रिया इसमें स्त्री झुक कर अपने घुटनों

का स्पर्श करती हुई दूसरों के पैर को छूती है।

**सेंइसा**—पु० (कु०) संशय, चिंता, फिक्र।

**सेंकणा**—स० क्रि० (कां०) औजार को गर्म करके हथौड़े से कूट कर धार बनाना।

**सेंठु**—पु० (चं०) शरीर पर हड्डी के ऊपर चोट लगने से उभरा हुआ भाग।

**सेंतणा**—स० क्रि० (चं०) सेवा करना।

**सेंदी**—स्त्री० (ह०) दुलहन की माँग पर चाँदी के रुपए रख कर भरा गया सिंदूर।

**सेंधा**—वि० (चं०) सहन करने योग्य।

**सेंमो**—वि० (शि०) सीधा।

**सेंसा**—पु० चिंता।

**से.त**—स्त्री० (सो०) स्वास्थ्य।

**से.लि**—स्त्री० (सो०) सहेली, सखी।

**से**—सर्व० (सो०) वह।

**से**—स्त्री० हजामत।

**सेई**—अ० (कु०) के समान, तरह, अनुरूप।

**सेई**—सर्व० वही।

**सेई**—वि० (चं०) लाल (रंग)।

**सेई**—वि० (चं०) नीची।

**सेईयां**—स्त्री० सेंवइयां। सखियां।

**सेउई**—वि (कु०) बैलों की ऊंचाई के मुकाबले में कम ऊंचा हल जिससे गहरी जोताई नहीं होती और वह मिट्टी के ऊपर ही ऊपर फिसल जाता है, 'राउई' का विपरीतार्थक शब्द।

**सेउओ**—वि० (शि०) सुगम।

**सेउक**—पु० (कु०, शि०) सेवक।

**सेऊ**—पु० सेब।

**सेऊ**—पु० (कु०) सेतु।

**सेऊणा**—स० क्रि० (मं०) सुलाना।

**सेओ**—सर्व० (सो०, मं०) वे लोग।

**सेओ**—पु० सेब।

**सेओरा**—पु० (मं०) ससुर।

**सेक**—पु० ताप, आंच; वेदना।

**सेकणा**—स० क्रि० आग पर गर्म करना; अ० क्रि० आग तापना।

**सेकणा***—स० क्रि० (कु०) मारना, पत्थर आदि से मारना।

**सेकी**—वि० (चं०) अधिक गुस्सा करने वाला, गर्म प्रकृति का।

**सेखा**—पु० (सि०) चारपाई में लगाया जाने वाला बांस।

**सेखी**—स्त्री० शेखी, डींग।

**सेगड़**—पु० (मं०) काले रंग का फल विशेष।

**सेगल**—पु० (मं०) कैथ।

**सेघर**—पु० (मं०) भांग के पौधे का रेशा जिससे रस्सियां बनाई जाती हैं।

**सेज**—स्त्री० (शि०) गोबर की खाद।

**सेज**—स्त्री० शय्या।

**सेजळ**—वि० नमीदार, सीलन वाला।

**सेजा**—सर्व० (सि०) वही।

**सेज्जा**—स्त्री० देवता की शय्या।

**सेटा**—अ० (कु०) ओर, तरफ।

**सेट्टा**—पु० (चं०, बि०) पेट का वह भाग जिसमें मल होता है।

**सेठ**—पु० (सि०) निष्पीड़ित भाग, गन्ने का शुष्क भाग, गन्ने की पोरी का छिलका।

**सेठ**—पु० पैसे वाला व्यक्ति, धनी व्यक्ति।

**सेड़**—स्त्री० सिंचाई।

**सेड़ना**—स० क्रि० सींचना, गीला करना।

**सेड़ा**—वि० (कु०) सुस्त।

**सेड़ाई**—स्त्री० (चं०) सिंचाई करने की क्रिया, सिंचाई का पारिश्रमिक।

**सेड़ेदेऊंआ**—पु० मलेरिया।

**सेणसणि**—स्त्री० (कु०) सनसनी।

**सेणसी**—स्त्री० (कु०) संड़सी।

**सेत**—स्त्री० (चं०) झाड़ू देने की क्रिया।

**सेतणा**—स० क्रि० (चं०) झाड़ू लगाना, झाड़ू से सफाई करना।

**सेता**—वि० (मं०) सफेद।

**सेती**—स्त्री० (कु०) सती।

**सेथड़ना**—स० क्रि० (सो०) पुराने कपड़ों को सीकर प्रयोग के योग्य बनाना।

**सेथरा**—पु० (शि०) छेद।

**सेथा**—अ० (शि०) के साथ।

**सेथा**—पु० (सि०) गीली मिट्टी या गोबर को दीवार में लगाने की क्रिया।

**सेद**—पु० (बि०) सेंकने के लिए प्रयोग किया जाने वाला उपकरण।

**सेद**—स्त्री० सीध, सामने।

**सेद**—पु० (कु०) नमी।

**सेध**—स्त्री० (चं०, बि०) सीध।

**सेना**—वि० (कु०) साबूत, पूर्ण।

**सेन्ह**—स्त्री० (कु०) संकेत, इशारा।

**सेन्हकिणा**—अ० क्रि० (कु०) इशारा करना, आपस में संकेत करना।

**सेपड़ी**—स्त्री० मिट्टी आदि की पपड़ी।

**सेपा**—पु० (कु०, मं०) कुलथ पकाकर उसमें नमक डालकर बनाए लड्डू।

**सेपूबड़ी**—स्त्री० (बि०, मं०) दाल की पीठी को भाप में पका कर तेल में तल कर बनाया पकवान विशेष।

**सेफड़ना***—स० क्रि० (सि०) किसी को देना।

**सेबर**—पु० (कु०) धैर्य।

**सेभ**—वि० (कु०) सब।

**सेमड़ू**—पु० (बि०) पतीले के तले में लगी दूध की खुरचन।

**सेमल**—पु० (शि०, सि०, सो०) दे० सिंबल।

**सेयल**—स्त्री० (कु०) सैर।

**सेयाई**—स्त्री० (मं०, सो०) कपड़ों की सिलाई का पारिश्रमिक।

**सेयों**—सर्व० (मं०) वे।

**सेर**—पु० (चं०) शेर।

**सेर**—स्त्री० (मं०) मृत पशु को उठाने का पारिश्रमिक।

सेर—पु० (कु०) आजीविका, भोजन, भोजन का खर्च।
सेर—स्त्री० (कु०, शि०) हरी-भरी फसल के खेतों का समूह, ऐसा स्थान जहां कई लोगों के खेत इकट्ठे हों और उनमें फसल उगी हो।
सेर कच्चा—वि० छः छटांक का माप।
सेर-टौल्हा—पु० (कु०) रोटी-कपड़ा।
सेरड़—स्त्री० (बि०) मछली की एक किस्म।
सेरवानी—स्त्री० एक तरह का आधुनिक ढंग का अंगरखा।
सेरसराट—स्त्री० (कु०) सरसराहट।
सेरी—स्त्री० (ह०) खरीफ की फसल।
सेरी—स्त्री० (ह०) जलसिंचित भूमि।
सेरुआ—स्त्री० (बि०) सरसों।
सेरुआ—पु० (कां०) दे० सरावा।
सेरो—स्त्री० (मं०, शि०, सो०) सरसों।
सेर्ना—अ० (कु०) संपूर्ण, सारा।
सेल—पु० 'ब्यूहल' के रेशे जो रस्सी बनाने के काम आते हैं।
सेल—स्त्री० (चं०) नमी।
सेला—पु० (कु०, मं०) बकरी की ऊन का बना चोगा।
सेला—पु० बकरी के बालों का बना नमदा।
सेला—पु० चावल की एक किस्म।
सेळा—पु० (कां०, बि०, सि०) ठंड।
सेली—स्त्री० (चं०) रस्सी।
सेळी—स्त्री० (बि०, ह०) कान का एक रोग, कान से पीप आने की बीमारी।
सेलीमुठी—स्त्री० (कां०, ह०) अनुकरण।
सेल्हड़ी—स्त्री० (मं०) दासी, रानी की परिचारिका, सहेली।
सेल्हरा—पु० (कु०) बिरोज़ा।
सेवल—स्त्री० (सि०) वधू प्रवेश पर तिलक करने की क्रिया।
सेवा—वि० (मं०, सो०) दे० सेउई।
सेवादार—पु० सेवक।
सेवी—स्त्री० (सो०) सेंवई।
सेहड़—पु० (चं०) खट्टा सेब।
सेहरा—पु० सेहरा लगाने का संस्कार।
सेहरी—स्त्री० कलगी।
सेहरो—स्त्री० (मं०) सरसों।
सेहळ—स्त्री० पटसन।
सेहावो—वि० (शि०) सुगम।
सैंई—स्त्री० (चं०) सेमफली।
सैंगरी—स्त्री० (मं०) चील।
सैंघी—पु० (कु०) साथी।
सैंचड़ी—स्त्री० (बि०) एक पकवान विशेष।
सैंचरलूण—पु० नमक की एक किस्म।
सैंत—स्त्री० (सि०, सो०) व्यवस्था।
सैंतणा—स० क्रि० (सि०, सो०) व्यवस्था करना, संभालना।
सैंत पैंत—पु० उपाय।
सैंती—वि० सैंतीस।
सैंपण—स्त्री० जमानत।
सैंर—पु० (चं०) शरत् ऋतु।
सैंरका—वि० (चं०) शरत् ऋतु का।
सैंस—पु० (सि०, सो०) ललचाई हुई दृष्टि, अभाव।
सैंसी—स्त्री० गर्म पतीला आदि उठाने का यंत्र, संड़सी।
सै—सर्व० (शि०, सि०) वह।
सैए—स्त्री० (शि०) स्याही।
सैग—पु० (शि०) सुहाग।
सैगणो—स० क्रि० (शि०) मुरम्मत करना।
सैगिणो—अ० क्रि० (शि०) तैयार होना।
सैगा—पु० (शि०) सुहागा।
सैझ—स्त्री० (चं०) विवशता।
सैड़—अ० (कु०) जल्दी, शीघ्र।
सैड़—पु० (मं०) गीदड़, सियार।
सैड़ठ—स्त्री० (मं०) बैलों को हांकने की लाठी।
सैड्ड—पु० खरगोश।
सैण—पु० (सि०, सो०) Terminalia tomantosa. असन वृक्ष।
सैण—स्त्री० (कां०) छोटी किस्म का मटर।
सैणतण—पु० (शि०) बुढ़ापा, बुद्धिमत्ता।
सैणा—वि० (शि०, सि०) बुद्धिमान, अग्रणी, मुख्य, चौधरी, बूढ़ा।
सैत—स्त्री० मुहूर्त।
सैन—स्त्री० (सो०) इशारा, संकेत।
सैनक—स्त्री० (कु०, कां०, बि०) आंखों द्वारा किया गया इशारा।
सैना—पु० (मं०) संबंध। समूह, सेना।
सैपण—पु० (सि०) Flemingia chappar.
सैर—पु० (शि०) सोमवार।
सैर—स्त्री० वर्षा ऋतु के बाद आश्विन मास की संक्रान्ति को नई फसल आने की खुशी में मनाया जाने वाला त्योहार।
सैरा—पु० (सो०) लापरवाही।
सैरी—स्त्री० काले, सफेद मटमैले पंखों तथा पीली चोंच वाली चिड़िया।
सैल—स्त्री० सैर।
सैळ—पु० (ह०) चट्टानी पत्थर, छत की स्लेट।
सैळ—पु० (सि०) गीदड़।
सैळटा—पु० (सि०) गीदड़।
सैलड़ी—वि० (सो०) हरी-भरी।
सैलड्ड—पु० (कां०) काटकर तथा सुखाकर रखा घास।
सैला—पु० (ऊ०, कां०) गेहूं की फसल में उगने वाला हरा घास।
सैळी—स्त्री० (सि०) गीदड़ी।
सैळुआं—वि० (ऊ०, कां०) स्लेट (चौड़ा पतला पत्थर) वाला (घर), चट्टानी (भूमि)।
सैळो—पु० (शि०) जाड़ा, सर्दी।
सैल्ली—स्त्री० (कां०) तुलसी का पौधा।
सैव—पु० (शि०) भय।
सैवै—वि० (शि०) आसान, सुगम।

**सैह**—सर्व (ह०) वह।
**सैह**—स्त्री० (चं०, कि०) बहकावा, शह।
**सैहणा**—स० क्रि० सहना।
**सैहर**—पु० (कां०) शहर।
**सैहल**—पु० खरगोश।
**सैहल**—स्त्री० साही, एक जीव विशेष जिसकी पीठ पर कांटे से होते हैं।
**सैहला**—पु० (ह०) जुए के दोनों ओर बैल को बांधने के लिए लगी लकड़ी की कीलें।
**सोंग**—पु० (कु०) साथ, संग।
**सोंगे**—अ० (कु०, सि०) सहित, साथ, इकट्ठे।
**सोंगे**—पु० (शि०, सि०) साथी।
**सोंझ**—स्त्री० (कु०) सायंकाल।
**सोंद**—स्त्री० (सि०) सायंकाल।
**सोंध्या**—स्त्री० (सि०) संध्या।
**सोंप**—स्त्री० (सि०) खजूर के पत्तों की चटाई।
**सोंप**—स्त्री० (शि०) सौंफ।
**सोंपो**—पु० (शि०, सि०) सामान।
**सोंबरना**—अ० क्रि० (कु०) ठीक हो जाना, स्वस्थ हो जाना, बीमारी से मुक्त हो जाना।
**सोंबरिना**—अ० क्रि० (कु०) स्वास्थ्य लाभ किया जाना।
**सोंसी**—स्त्री० (सि०) संड़सी।
**सोंस्कार**—पु० (शि०) संस्कार।
**सोंहणा**—स० क्रि० सहन करना।
**सोः ड़**—स्त्री० (कु०) रिश्वत।
**सोः ड़ना**—स० क्रि० (कु०) रिश्वत देना।
**सोः ड़िना**—अ० क्रि० (कु०) रिश्वत दी जानी।
**सोःणा**—वि० सुंदर।
**सोःणो**—स० क्रि० (सि०) सहन करना।
**सोः न**—स्त्री० (कु०) संकेत।
**सोः रना**—स० क्रि० (शि०) समेटना, लपेटना, इकट्ठा करना।
**सो**—सर्व० (कु०) वह।
**सोअड़**—स्त्री० (शि०) रिश्वत, घूस।
**सोअर**—पु० (सि०) मृत्यु ताल।
**सोआर**—पु० (सि०) सोमवार।
**सोइणा**—अ० क्रि० (कु०) सोया जाना।
**सोइता**—पु० (शि०, सि०) नवजात शिशु के पैदा होने पर दी जाने वाली भेंट।
**सोइथल**—वि० (सि०) समतल।
**सोई**—स्त्री० (मं०) हरे रंग का एक लिजलिजा कीड़ा।
**सोई**—अ० (सि०) सही, ठीक।
**सोउणा**—अ० क्रि० (मं०) सोना।
**सोऊरा**—पु० (मं०) श्वशुर।
**सोए**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) मीठी सौंफ।
**सोएबीन**—पु० सोयाबीन।
**सोक**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) पशुओं द्वारा आधा खाकर छोड़ा हुआ घास।
**सोकड़ा**—पु० सूखा रोग।
**सोक्का**—पु० सूखा।
**सोख**—वि० तेज, चंचल।
**सोख**—स्त्री० (मं०) प्यास।
**सोखणी**—स्त्री० (मं०) स्थलीय जोंक।
**सोख्त**—वि० (सि०) सख्त।
**सोग**—पु० (सि०) खेत के मध्य में देवता के नाम पर छोड़ा गया पवित्र भू-भाग।
**सोग**—पु० शोक।
**सोग**—पु० (शि०) नमी।
**सोगब्लणा**—स० क्रि० (चं०) मृत्यु के 10 दिन बाद समधियों द्वारा बकरा काटा जाना।
**सोच**—स्त्री० चिंता, सोच।
**सोचड़ी**—स्त्री० (मं०) कचनार।
**सोचणा**—स० क्रि० सोचना।
**सोज**—स्त्री० सूजन।
**सोज**—पु० (सि०) संबंध, रिश्ता।
**सोजा**—पु० सूजन।
**सोजो**—वि० (शि०) ताज़ा। पु० अनाज की अच्छी किस्म। बातचीत में माधुर्य।
**सोटणा**—स० क्रि० (शि०) भरना, भीड़ करना।
**सोटू**—पु० (ह०) डंडा।
**सोठ**—स्त्री० (कु०) सोच।
**सोठणा**—स० क्रि० (कु०, मं०) सोचना; पश्चात्ताप करना।
**सोठणी**—स्त्री० (कु०) सोच-विचार।
**सोठसम्हाळ**—स्त्री० (कु०) दे० सोठणी।
**सोठा**—पु० लंबा डंडा।
**सोठिणा**—अ० क्रि० सोचा जाना।
**सोठी**—स्त्री० लाठी, छड़ी।
**सोठुबिसरु**—पु० (कु०) दुविधा, असमंजस।
**सोठू**—पु० छोटा डंडा।
**सोणा**—अ० क्रि० सोना।
**सोणो**—पु० (सो०) चमेली का पौधा तथा फूल।
**सोत**—पु० (बि०) स्रोत।
**सोतड़**—वि० अधिक सोने वाला, सुस्त।
**सोतड़**—पु० सांप की एक किस्म। यह आकार में छोटा और किंचित् काले रंग का सुस्त सा सांप होता है, परंतु जहरीला अधिक होता है।
**सोतणा**—स० क्रि० झाड़ू से साफ करना।
**सोतणी**—स्त्री० (ह०) झाड़ू।
**सोता**—स्त्री० (सो०) ध्यान, ताक।
**सोता**—पु० (चं०) मधुमक्खी का अंडा।
**सोता**—पु० पहर।
**सोतो**—पु० (शि०) वर पक्ष की ओर से वधू को सगाई के अवसर पर दिया जाने वाला रुपया।
**सोथणा**—स० क्रि० (कु०) फटे पुराने वस्त्रादि ठीक करना।
**सोथर**—पु० (कु०) देवदार, चीड़ वृक्ष के झड़े सूखे पत्ते जो सेब की पेटियों में पैकिंग के समय डाले जाते हैं और वर्षा ऋतु में पशुओं के नीचे बिछाए जाते हैं।

**सोथा**—पु० (सि०) दे० सोतो।
**सोथा**—पु० (कु०) काम-काज; व्यवस्था।
**सोथिणा**—स० क्रि० (कु०) फटे-पुराने वस्त्रादि को ठीक किया जाना।
**सोदै**—पु० (कु०) आनंद।
**सोधा**—वि० (चं०) सर्तक, होशियार।
**सोन**—स्त्री० (कु०) सन्निपात, निमोनिया।
**सोनक**—स्त्री० (सि०) सनक।
**सोनतरा**—पु० (सि०) संतरा।
**सोन्ह**—स्त्री० (कु०) सायं।
**सोन्हिणा**—अ० क्रि० (कु०) एक दूसरे को संकेत करके बात समझाना।
**सोबजी**—स्त्री० (सि०) सब्जी।
**सोबत**—स्त्री० संगति।
**सोब्री**—वि० (सि०) धैर्यवान।
**सोभा**—स्त्री० शोभा।
**सोमदा**—स्त्री० (सि०) समिधा।
**सोमा**—पु० (कु०) समय, युग, ज़माना।
**सोयता**—पु० (सो०) दे० सोइता।
**सोयल**—स्त्री० (सि०) सैर।
**सोया**—पु० (मं०) आवरण जिसमें गर्भस्थ शिशु लिपटा रहता है।
**सोरचणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) मान जाना, समझौता होना।
**सोरडा**—पु० (कु०) हवन आदि के लिए नियत घी।
**सोरता**—वि० (मं०) जिसे ठीक सुनाई दे; चंचल बुद्धि वाला।
**सोरल**—पु० (कु०, मं०) Orcalis acetoselba.
**सोरला**—वि० (मं०) शुद्ध।
**सोरला**—वि० (शि०) अधिक निकट का।
**सोरा**—पु० (शि०, सि०) साला।
**सोरा**—वि० (कु०, शि०, सि०) सगा, निकट संबंध का, असल रिश्ते का।
**सोरी**—वि० विलासी।
**सोरुआ**—पु० शोरबा।
**सोरो**—स्त्री० (सो०) 'थूहर' का पौधा।
**सोला**—वि० (कु०) स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट।
**सोळा**—वि० सोलह।
**सोळा**—पु० (सि०) अनाज मापने का पैमाना।
**सोवा**—पु० फसल विशेष, जिसके पत्तों का शाक बनता है।
**सोवा**—पु० (मं०) ब्याज रहित मूलधन।
**सोवाद**—पु० (सि०) स्वाद।
**सोसलणा**—अ० क्रि० (मं०) सूज जाना।
**सोह**—स्त्री० (कु०, चं०, मं०) शपथ।
**सोहड़ा**—पु० (मं०) मृत संस्कार में सोलहवें दिन किया जाने वाला शुद्धिकरण।
**सोहरे**—स्त्री० (मं०) लड़की।
**सोहरो**—पु० (मं०) लड़का।
**सोहले**—पु० (सि०) विवाह गीत।
**सोहा**—पु० (चं०) ग्रीष्म ऋतु।
**सोहागा**—पु० सुहागा।
**सोहागो**—पु० (सि०) सुहागा।
**सोहाटल**—वि० (सि०) राख वाला (खेत)।
**सोहाणा**—वि० (सि०) सुख सुविधा युक्त।
**सोहबत**—स्त्री० संगति, सभ्यता, शिष्टाचार।
**सोहळा**—पु० मृतक के तेहरवें या सोलहवें दिन किया जाने वाला संस्कार।
**सौंका**—वि० (सो०) सीधा।
**सौंगड़ा**—वि० (कु०, बि०) तंग, संकरा, जो अधिक चौड़ा न हो।
**सौंगळ**—स्त्री० (ह०) पशुओं को बांधने की लोहे की ज़ंजीर।
**सौंड़ा**—पु० (शि०, सि०) झगड़ा, मुकाबला।
**सौंतणा**—स० क्रि० (शि०) व्यवस्थित करना।
**सौंरी**—पु० (चं०) जड़ी-बूटी से व्याधि का उपचार करने वाला।
**सौंल**—पु० (चं०) बाहरी छिलका।
**सौंसा**—पु० (ऊ०, कां०) मनगढ़ंत बात।
**सौ:करो**—वि० (शि०) ईमानदार।
**सौ:ड़ा**—पु० (कु०) 'किरडा' बनाने में प्रयुक्त मोटी लकड़ी।
**सौ:णा**—वि० (सि०) मनभावना, भला, अच्छा।
**सौआं**—वि० (शि०, सि०) सीधा।
**सौऊंते**—अ० (कु०) सब जगह, हर समय।
**सौऊदा**—पु० सौदा, सामान।
**सौक**—स्त्री० (शि०) सौत।
**सौकटा**—पु० (शि०) सौत का बच्चा।
**सौकण**—स्त्री० सौत।
**सौका**—वि० सौतेला।
**सौखा**—वि० आसान।
**सौग**—पु० (शि०) सुहाग।
**सौग**—अ० साथ।
**सौगण**—पु० शकुन, शगुन।
**सौगम**—पु० (कु०) संगम, तीर्थ।
**सौगी**—पु० साथी; साथ।
**सौगी**—स्त्री० किशमिश।
**सौगुबौगु**—पु० (कु०) छुआछूत।
**सौच**—वि० (कु०, शि०) सत्य, सच।
**सौचिये**—अ० (कु०, शि०) सचमुच।
**सौज**—पु० (शि०, सि०) आश्विन।
**सौजणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) शुभ होना।
**सौड़क**—वि० (कु०, शि०) सड़क।
**सौड़ना/ नो**—अ० क्रि० (शि०) सड़ना।
**सौड़से**—पु० (शि०) खटमल।
**सौड़िना***—स० क्रि० (कु०) डटकर खाना।
**सौद**—स्त्री० (चं०) शय्या।
**सौद सलीत्ता**—पु० (चं०) सारा सामान।
**सौदस्याधा**—पु० (चं०) गले पड़ा कार्य या बात।
**सौण**—पु० श्रावण।
**सौण**—पु० (सि०) Crololaria albida.
**सौणी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, सि०) खरीफ की फसल।

**सौत**—वि० (कु०) सात।
**सौतर**—वि० (कां०) ऐसा व्यक्ति जिसके संतान हो।
**सौती**—वि० (शि०, सि०) सत्य, सच्चा।
**सौतुआं**—वि० (कु०) सातवां, सप्तम।
**सौतू**—पु० (कु०) सत्तू।
**सौतों**—वि० (शि०) कुनकुना।
**सौत्रो**—वि० (मं०) पुत्रवान।
**सौदा**—पु० वह चीज़ जो बाज़ार से खरीदी जाए।
**सौदाटेढ्ना**—स० क्रि० (मं०) उधार लेना।
**सौध**—स्त्री० (शि०) सगाई।
**सौब्बे**—वि० (शि०, सि०) समस्त, सभी।
**सौमा**—पु० (शि०) समय।
**सौमुआं**—अ० (शि०) सामने, वि० दायां।
**सौमों**—वि० (शि०, सि०) सीधा, स्पष्ट।
**सौमजणो**—स० क्रि० (शि०) समझना।
**सौयंत**—पु० (सि०) धन संपत्ति।
**सौर**—पु० (कु०) सर, तालाब, सरोवर।
**सौरग**—पु० (कु०, शि०) स्वर्ग, आसमान।
**सौरणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) काम निकलना; समूह में घुसना।
**सौरप**—पु० (शि०) सर्प।
**सौरफी**—स्त्री० (शि०) अशरफी।
**सौरा**—पु० (कु०) सुरा, शराब।
**सौरा**—पु० श्वशुर।
**सौरिये**—वि० ससुराल वाले।
**सौरी**—स्त्री० (कु०) गेहूं, जौ के बीच उगने वाला घास विशेष।
**सौरुली**—स्त्री० (शि०) चीड़।
**सौल**—स्त्री० (बि०) शाल।
**सौलणा**—अ० क्रि० (शि०) आग का जलना, किसी वस्तु का भाव बढ़ना।
**सौळणा**—स० क्रि० (सि०) भेड़ की ऊन काटना।
**सौळा**—पु० (कु०, शि०) ऊन आदि में लगने वाला छोटा कीड़ा।
**सौशे**—स्त्री० (शि०) मदिरा।
**सौसा**—पु० (शि०, सि०) पानी का स्रोत।
**सौह**—पु० (कु०) मंदिर के सामने का खुला स्थान या मैदान जहां देवता के मेले लगते हैं या आयोजन होते हैं।
**सौहरा**—पु० श्वशुर।
**सौहड़ा**—पु० (कु०) पैर में घुसा बड़ा, मोटा कांटा।
**स्वात्रण**—स्त्री० (मं०) सोजिश।
**स्कारा**—पु० शिकारा।
**स्कूलट्ट**—पु० छात्रवर्ग।
**स्केरना**—स० क्रि० इकट्ठा करना।
**स्कौहर**—पु० (सि०) लंबी सांस।
**स्टेयोणा**—स० क्रि० (सि०) पकाना।
**स्ताजे**—पु० (शि०, सि०) देवता द्वारा आशीर्वाद के रूप में दिए गए फूल व अक्षत, तावीज़।
**स्तागळा**—पु० (कु०) अपशकुन।
**स्तागळी**—पु० (शि०, सि०) अपशकुन; बुरे ग्रह।
**स्ताबी**—स्त्री० जल्दी, शीघ्रता।
**स्तीफा**—पु० त्यागपत्र।
**स्तोखु**—स० क्रि० (सो०) सफाई पेश करना।
**स्तोता**—वि० (मं०) ठंडा-गर्म (जल)।
**स्त्राना**—पु० (चं०) दे० सतनाज़ा।
**स्त्रोणा**—अ० क्रि० किसी वस्तु का फिसलकर निकलना।
**स्त्रोणा**—स० क्रि० (सि०) पत्थर के दो टुकड़े करना।
**स्थिते**—स्त्री० (शि०) स्थिति।
**स्नेउआ**—वि० (कु०) ऐसा व्यक्ति विशेष जिसके पास चुगली की गई हो।
**स्नेहा**—पु० (कु०) निशाना।
**स्पूत**—पु० सुपुत्र, लायक बेटा।
**स्पैढ़**—पु० (मं०) काले रंग का विषैला सर्प।
**स्पोया**—पु० विषैला सर्प।
**स्फटक**—पु० (चं०) स्फटिक।
**स्बाल**—पु० (ह०) काई।
**स्बाल**—पु० प्रश्न।
**स्मारू**—पु० (कु०, मं०) Debregaesia hypoleuca.
**स्यड़**—स्त्री० हल की सीता।
**स्यांदी**—स्त्री० बालों को संवार कर बनाई हुई रेखा।
**स्याई**—स्त्री० (सो०) स्याही।
**स्यानु**—पु० (ऊ०, कां०, ह०) 'साही' जीव के कांटे।
**स्यापणो**—अ० क्रि० (कु०) तरसना।
**स्यामा**—स्त्री० (मं०) जलाने की लकड़ी का वृक्ष।
**स्यामिर्च**—स्त्री० काली मिर्च।
**स्यार**—वि० (बि०) होशियार।
**स्यारा**—पु० (सि०) संकेत, इशारा।
**स्यूंक**—पु० (ह०) कटी फसल।
**स्यूंटी**—स्त्री० (बि०) शीशम।
**स्यो**—पु० (ह०) पुल।
**स्राध**—पु० (मं०) श्राद्ध।
**स्रिंबड़**—पु० (मं०) सेमल वृक्ष।
**स्त्रीणी**—स्त्री० (मं०) भेड़ बकरियां चराने वाले गड़रिये के पास भेड़-बकरियों के उपचार के लिए रखा पांच छ: प्रकार के पैने औज़ारों का गुच्छा जो सदा उसकी कमर में बंधा रहता है।
**स्लांगा**—पु० (बि०) Milliatia auriculata.
**स्लाउं**—पु० (ह०) ऊन, रुई की पूनी बनाने की लकड़ी।
**स्लीपड़**—पु० (मं०) कढ़ाईदार प्राचीन चप्पलें।
**स्लीपर**—पु० लकड़ी का शहतीर।
**स्लीफटी**—स्त्री० (मं०) छोटा नमदा।
**स्लेथर**—पु० (मं०) सफेद पत्थर, चकमक पत्थर जो गृह निर्माण में वर्जित माना जाता है और मकान की दीवारों में नहीं लगाया जाता।
**स्लोइणा**—स० क्रि० (कु०) भिगोये माश (उदड़) के दो टुकड़े किए जाना।
**स्लोणा**—स० क्रि० (कु०) भिगोये माश के शिला पर दो टुकड़े

करना।

**स्वरणो**—वि० (सि०) सुनहरा, सोने का।

**स्वांग**—पु० नकल, हरण, करयाळा आदि लोक नाट्यों का एक दृश्य।

**स्वांगची**—वि० (सो०) नकल करने वाला।

**स्वांगी**—पु० (कु०) 'हौर्न' लोक नाट्य का एक पात्र जो 'स्वांग' करता है।

**स्वांजा**—पु० (सो०) Cornus macrophylla.

**स्वांछवीगुठी**—स्त्री० (मं०) अनामिका अंगुली।

**स्वाङू**—पु० क्यारी, घर के आस पास का छोटा खेत जिसमें सब्जी आदि बोई जाती है।

**स्वाण**—स्त्री० (बि०) कुल की स्त्री।

**स्वाण**—पु० (सो०) उपयोगिता।

**स्वादणा**—स० क्रि० चखना।

**स्वादुणा**—स० क्रि० स्वाद लेना।

**स्वार**—पु० घुड़सवार।

**स्वारणा**—स० क्रि० (सि०) मक्की के छिलके निकालना।

**स्वारना**—स० क्रि० निराई करना।

**स्वारना**—स० क्रि० (मं०) आभूषण बनवाना।

**स्वारू**—पु० (बि०) रिश्ते की बात चलाने वाला।

**स्वारू**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) संवारने वाला।

**स्वारे**—पु० (मं०) कफ़न।

**स्वारे**—स्त्री० (शि०) सवारी।

**स्वाशी**—स्त्री० (मं०) दमा नामक रोग।

**स्वासी**—स्त्री० दे० स्वाशी।

**स्वाह**—पु० (कां०) चक्की के पास लगा बांस का टुकड़ा। चूल्हे की राख।

**स्वाहटल**—स्त्री० (सि०) ऐसी भूमि जहां राख फेंकते हैं।

**स्वाहणपूजन**—पु० (मं०) गेहूं की फसल आने पर नवान्नप्राशन हेतु सौभाग्यवती का पूजन।

**स्वैहणी**—स्त्री० (मं०) सुहागिन।

**स्हाब**—पु० (कु०) हिसाब, गणित।

**स्हीरी**—स्त्री० (चं०) हार।

**स्हीश**—पु० (चं०) सईस, घोड़े की देखभाल करने वाला नौकर।

**स्हूरी**—स्त्री० (सि०) अक्ल।

**स्हेड़ना**—स० क्रि० (कां०) इकट्ठा करना।

## ह

**ह**—देवनागरी वर्णमाला का तैंतीसवां और उष्म वर्ग का अंतिम व्यंजन वर्ण। उच्चारण स्थान कंठ।

**हंऊं**—सर्व० मैं।

**हंकार**—स्त्री० जलन, दूसरों की उन्नति को देखकर जलने का भाव।

**हंकार**—स्त्री० (शि०, सि०) आह भरने का भाव।

**हंग**—पु० (सि०) मक्की या गेहूं छानने की छलनी।

**हंगणा**—अ० क्रि० किसी वस्तु का फैलना।

**हंगा**—पु० (चं०) गले के बीच का भाग।

**हंगाम**—पु० लड़ाई-झगड़ा।

**हंगी**—स्त्री० (बि०) चमड़े की बनी गोल छलनी जिसमें छोटे-छोटे छेद होते हैं।

**हंगूणा**—अ० क्रि० "जी हां" करना।

**हंगैठा**—पु० (चं०) मुंह के भीतर का भाग।

**हंगैरु**—पु० (कां०) हींग रखने का पात्र।

**हंघड़ना**—अ० क्रि० (मं०) लेटे रहना।

**हंघियारु**—पु० दे० हंगैरु।

**हंजू**—पु० आंसू।

**हंड**—पु० बड़ा एवं मोटा घड़ा।

**हंडणा**—अ० क्रि० पैदल चलना।

**हंडराली**—स्त्री० (चं०) आंख में निकलने वाली फुंसी।

**हंडाऊ**—पु० चतुर्वर्षी के अवसर पर जलाया जाने वाला दीपक।

**हंडावणो**—स० क्रि० (शि०) चलाना।

**हंडी**—स्त्री० बड़ा मटका।

**हंडू**—पु० मिट्टी का पात्र।

**हंडैतर**—स्त्री० (चं०) पकाए हुए भोजन के पात्र रखने का स्थान।

**हंडोला**—पु० झूला।

**हंढणा**—अ० क्रि० दे० हंडणा।

**हंढू**—पु० खाना पकाने का मिट्टी का मोटा पात्र।

**हंदराणी**—पु० (मं०) अभिमंत्रित पानी।

**हंस**—पु० (कु०) आत्मा।

**हंसणा**—अ० क्रि० हंसना।

**हंस-मुंहा**—वि० हंस-मुख।

**हंसली**—स्त्री० गले का आभूषण।

**हंसोला**—वि० हंसमुख।

**ह.लड़**—वि० (चं०) अनाथ।

**हआड़**—पु० (बि०) हड्डी।

**हइका**—पु० (कु०) एक खेल जिसमें बच्चे या बड़े लोग हाथ पकड़ कर बड़ा वृत्त बनाकर उछलते-कूदते हैं।

**हइबलका**—पु० (कु०) 'हइका' खेल जिसमें दो मुख्य व्यक्ति गाने के बोल बोलते हैं, शेष उन्हें दोहराते हैं और साथ-साथ उछलते-कूदते हैं।

**हई**—अ० हाय।

**हऊंण**—पु० (चं०) श्रावण।

**हऊंसला**—पु० (सो०) साहस।

**हऊआ**—पु० डर, बच्चों को डराने के लिए कल्पित दैत्य।

**हऊल**—पु० (चं०) पेट में होने वाली जलन।

**हक**—पु० अधिकार।

**हक**—स्त्री० आवाज़, पुकार।

**हकड़े**—वि० (शि०) कुछ, थोड़ा।

**हकणा**—स० क्रि० हांकना।

**हकणा**—अ० क्रि० (सि०) थक जाना।

**हकणा**—स० क्रि० खदेड़ना, फेंकना, चुराकर या भगाकर ले

जाना।

**हकदार**—वि० अधिकारी।

**हकर**—पु० (चं०) युवा बैल।

**हकाबका**—वि० स्तंभित, हैरान।

**हकारणा**—पु० (चं०) सूर्यावलोकन संस्कार।

**हकारना**—स० क्रि० (चं०) बच्चे को सूर्य-चंद्र दिखाना।

**हकालु**—पु० (चं०) Sageratia Theezans.

**हकूमत**—स्त्री० शासन, राज्य।

**हक्क**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) आवाज़।

**हक्षेरा**—पु० (चं०) अंधेरा।

**हखनाळ**—स्त्री० आंख में होने वाली फुंसी।

**हखफुटा**—वि० अंधा, काना।

**हग**—पु० (शि०) पतला गोबर।

**हगणा**—अ० क्रि० टट्टी करना।

**हगणो**—अ० क्रि० (शि०) दे० हगणा।

**हचकी**—स्त्री० हिचकी।

**हचकोलड़**—पु० (ऊ०, कां०) व्यर्थ का सामान, व्यर्थ का बोझ; हल्ला-गुल्ला।

**हचावणो**—स० क्रि० (शि०) गुम करना, खोना।

**हच्छा**—वि० सफेद।

**हच्छापिच्छा**—वि० (सि०) साफ-सुथरा।

**हच्छास्याग**—पु० (मं०) ऐसा समय जब सूर्य तो निकला नहीं होता परंतु पूर्व में प्रकाश फैल चुका होता है।

**हच्छीहाखी**—स्त्री० (मं०) श्रद्धा।

**हच्छेमाह**—पु० (चं०) सोयाबीन।

**हज**—पु० काम करने का सही ढंग, चातुर्य, सलीका।

**हजचज**—पु० योग्यता।

**हज़म**—पु० पाचन-क्रिया। गबन।

**हजाम**—पु० नाई।

**हजूम**—पु० जमघट, भीड़।

**हट**—स्त्री० दुकान।

**हटक**—वि० (चं०) सख्त।

**हटखळा**—वि० हठी।

**हटड़ी**—स्त्री० मसाला रखने की संदूकची।

**हटड़ी**—स्त्री० (सि०) मिट्टी का घरौंदा।

**हटड़ी**—स्त्री० छोटी दुकान।

**हटणा**—अ० क्रि० हटना, पीछे आना।

**हटवाणी**—पु० दुकानदार।

**हटाउणा**—स० क्रि० (मं०) हटाना।

**हटाकणा**—स० क्रि० (मं०) बैलों को सही चलाना।

**हट्टा**—पु० (सि०) पक्का निश्चय।

**हठिए**—अ० (शि०, सो०) कठिनाई से।

**हठी**—अ० (कु०) मुश्किल से।

**हड़**—पु० बाढ़।

**हड़**—पु० पुराने ढंग से मधुमक्खी पालने के लिए दीवारों आदि में लगाया लकड़ी का बेलन।

**हड़**—पु० (बि०) ताज़ी ब्याई गाय या भैंस का दूध जो पीने या प्रयोग में लाने योग्य नहीं होता।

**हड़**—पु० (मं०) हल।

**हड़**—पु० हड्डी, अस्थि।

**हड़कंब**—स्त्री० (मं०) कंपकंपी।

**हड़कचुणा**—पु० (शि०) कठफोड़ा।

**हडकणा**—पु० जीव विशेष जो हड्डियों का सा लगता है।

**हड़कनो**—अ० क्रि० (शि०) फंसना।

**हड़कुणी**—स्त्री० कुहनी।

**हड़जी**—स्त्री० (मं०) हलदी।

**हड़दूबड़दू**—पु० (मं०) एक पक्षी जो रात्रि को बोलता तथा उड़ता है।

**हड़ना**—अ० क्रि० बहना।

**हड़पना**—स० क्रि० खा लेना।

**हडमूंजी**—वि० थोड़ा नारंगी रंग का।

**हडयणा**—स० क्रि० (सि०) भस्म करना।

**हड़वाहक**—वि० (मं०) हल जोतने वाला (ब्राह्मण)।

**हड़स**—स्त्री० (मं०) हल की लंबी डंडी।

**हड़ा**—पु० (मं०) बैलों का जोड़ा।

**हड़ाट**—वि० (ऊ०, कां०, ह०) अक्खड़।

**हड़ाटौ**—पु० (कु०) दरवाज़ा बंद करने की अर्गला।

**हड़ाशणा**—स० क्रि० (सो०) झुलसाना, भूनना।

**हड़ाशो**—स्त्री० (सो०) आग की तेज़ लपटें।

**हडियान**—पु० (चं०) गिद्ध।

**हड़ी**—स्त्री० (चं०) भैंस।

**हड़ोसणा**—स० क्रि० ठूंसना।

**हड्ड**—पु० हड्डी।

**हड्ड पौणा**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०, बि०) किसी दूसरे व्यक्ति के साथ खाना-पीना बंद करना।

**हड्डमाला**—स्त्री० अस्थि पंजर।

**हढ्या**—स्त्री० स्वास्थ्यवर्धक, कफ पित्त शामक बूटी।

**हण**—अ० अब।

**हण**—पु० (चं०) वर्षा के कारण आई बाढ़।

**हणग**—पु० (चं०) सख्त अखरोट।

**हणाट**—स्त्री० (कां०) बजरी, ओले।

**हणु**—पु० हनुमान, महावीर; 'बरलाज लोकनाट्य' का एक पात्र और उस का अभिनय।

**हत**—अ० दुत्कारने के लिए प्रयुक्त शब्द।

**हतकड़ी**—स्त्री० (शि०) हथकड़ी।

**हतणा**—अ० क्रि० सब्र न आना, बेसब्री दिखाना, नियत से गिरना।

**हतूता**—वि० जल्दबाज़।

**हत्थ**—पु० हाथ।

**हत्थड़**—वि० ऐसा दुधारु पशु जो केवल एक ही व्यक्ति के हाथ दूध दे।

**हत्था**—पु० (कां०) खड्डी में बाने के धागे को कसने का लकड़ी का ढांचा, हत्थी।

**हत्थापल्ले**—अ० अधिकार में, पास में।

**हत्थी**—स्त्री० चरखे के चाक को चलाने वाली कील, खूंटी।

**हत्या**—स्त्री० (मं०) जो व्यक्ति किसी कारण रुष्ट होकर या

किसी भावना को लेकर मरने पर परिवार के व्यक्तियों को कष्ट देता है, उसकी पूजा हेतु बनाई गई पत्थर की मूर्ति जो बावलियों पर स्थापित की जाती है या चांदी की मूर्ति बनाकर गले में धारण की जाती है।
**हथ**—पु० (सि०) हाथ।
**हथकनले**—स्त्री० (शि०) हथेली।
**हथनाल**—स्त्री० (शि०) हथेली।
**हथवाणा**—स० क्रि० (ह०) मरे हुए पशुओं की खाल उतारना।
**हथावणो**—स० क्रि० (शि०) हथियाना।
**हथूंजा**—पु० (मं०) प्राचीन कढ़ाईदार ओढ़ने का वस्त्र।
**हथू**—पु० (कु०) दे० हत्था।
**हथूल**—पु० (चं०) दस्ताना।
**हथैळी**—स्त्री० (चं०) हथेली।
**हथ्याड़ी**—स्त्री० (मं०) हथेली।
**हद**—स्त्री० सीमा।
**हदकरना**—स० क्रि० अति करना।
**हन**—अ० क्रि० (ऊ०, कां०) है।
**हनेरा**—पु० अंधेरा।
**हपटी**—स्त्री० (सि०) नाइलॉन के जूते।
**हप्फू**—पु० (चं०) मक्की की तरह का जंगली पौधा।
**हफ**—स्त्री० थकावट।
**हफणा**—अ० क्रि० सांस फूलना, थक जाना।
**हफाजत**—स्त्री० सुरक्षा।
**हबड़ू**—पु० (ह०) पथरीली भूमि।
**हब्बड़**—पु० (ह०) पथरीला खेत।
**हमकणा**—अ० क्रि० (कु०) सांस फूलना।
**हमल**—वि० (चं०) गरम।
**हमला**—पु० आक्रमण।
**हया**—स्त्री० (चं०) लज्जा।
**हयाव**—पु० (सो०) हिम्मत।
**हरंगीड़ा**—पु० (चं०) श्वास नली।
**हरकत**—स्त्री० शरारत, चेष्टा, गति, हिल-डुल।
**हरखुणा**—अ० क्रि० (सो०) हरियाली छाना।
**हरजाणा**—पु० (सि०) क्षतिपूर्ति।
**हरजाना**—पु० क्षतिपूर्ति, नुकसान।
**हरड़**—पु० (शि०, सो०) बरसाती नाले।
**हरड़**—स्त्री० एक औषधि हरड़, Terminalia Chebula.
**हरड़पोपो**—वि० खानाबदोश, कमज़ोर।
**हरडाणी**—पु० (सो०) बरसाती नाले का ज़ोर से बहता पानी।
**हरणा**—पु० (मं०) हरिण।
**हरणू**—पु० (चं०) एक आभूषण विशेष।
**हरदल**—पु० (ह०) हलदी का पौधा।
**हरदाणा**—पु० (मं०) तरबूज।
**हरन**—पु० (चं०) हरिण।
**हरन**—पु० दे० हौर्न।
**हरनमोर**—वि० स्वस्थ, चुस्त।
**हरनहल**—पु० (मं०) एरंड।
**हरनियाली**—स्त्री० (ह०) लुहार की कार्यशाला।
**हरनौहड़ा**—पु० (मं०) एक जंगली झाड़ी।
**हरपलख**—अ० (कु०) हरपल।
**हरफ**—पु० अक्षर।
**हरफेरा**—पु० पुनरागमन।
**हरमल**—स्त्री० (चं०) एक उपयोगी धूनी।
**हरयाणी**—स्त्री० (मं०) कपड़े धोने का पात्र।
**हरसा**—पु० (सि०) दे० निरस।
**हरहर**—पु० (सि०) अरहर।
**हराउणा**—स० क्रि० (मं०) हराना।
**हराणा**—स० क्रि० हराना।
**हरान**—वि० (सि०) चकित, हैरान।
**हरामखोर**—वि० घूसखोर, मुफ्तखोर।
**हरामी**—वि० दुष्ट।
**हराल**—पु० (चं०) बाल।
**हराळ**—पु० (शि०) हरी सब्जी।
**हरिम**—पु० (चं०) श्लेष्मा।
**हरिहाट**—पु० (मं०) रहट।
**हरींग**—पु० (कु०) भाई।
**हरु**—स्त्री० (चं०) सरसों।
**हरैप**—पु० (मं०) हरा सांप।
**हरो**—पु० (चं०) तकिया।
**हरो**—वि० (शि०) हरा।
**हर्ज**—पु० हानि, क्षति।
**हर्ड़**—पु० (मं०) देवता की मूर्ति पर चढ़ाया बकरे का रक्त।
**हर्ह**—अ० "हां", स्वीकृति दर्शाने वाला अव्यय शब्द।
**हळ**—पु० हल।
**हलई**—पु० (मं०) हलवाई।
**हलक**—पु० पागलपन।
**हळकणा**—अ० क्रि० कुत्ते आदि का पागल होना।
**हळका**—वि० छोटा।
**हळका**—वि० हलका।
**हळकाणा**—स० क्रि० (शि०) बाजू आदि को हिलाना।
**हलकारा**—पु० (कु०, शि०) संदेशवाहक, डाकिया।
**हळकुणा**—अ० क्रि० (सो०) कुत्ते आदि का पागल होना।
**हलक्यारा**—पु० (बि०) सहारा, मदद।
**हळख**—स्त्री० (बि०) पागलपन।
**हळख**—स्त्री० (सो०) हलकापन।
**हलखणा**—अ० क्रि० (बि०, सि०) कुत्ते के काटने से पागल होना।
**हळखणा**—अ० क्रि० (शि०) स्त्री का प्रसूता होना।
**हळखुणा**—अ० क्रि० (सो०) स्त्री का प्रसूता होना।
**हळजी**—स्त्री० (शि०) हलदी।
**हलणा**—स० क्रि० मक्की के छोटे पौधों में हल चलाना।
**हळणो**—स० क्रि० (शि०) खरपतवार नष्ट करने के उद्देश्य से फसल में हल चलाना।
**हलदवाना**—पु० (सि०) विवाह का एक संस्कार जिसमें स्त्रियां दूल्हे या दुलहन को उबटन लगाती हैं।
**हलफीबयान**—पु० शपथ लेकर दिया हुआ बयान।

**हलम**—वि० नर्म।
**हळश**—पु० (शि०, सि०) हल का अग्रभाग जो जुए से जुड़ा होता है।
**हळस**—पु० जुए के साथ बांधी जाने वाली रस्सी।
**हला**—अ० अरे, प्यार का संबोधन, ठीक।
**हलाई**—स्त्री० (सो०) पानी की निकासी। हल से किया गया खेत का विभाजन।
**हलाऊणा**—स० क्रि० (मं०) हिलाना।
**हळाटी**—वि० लड़ने-भिड़ने वाला (पशु)।
**हलाड़ी**—स्त्री० (मं०) हल की हत्थी।
**हलार**—वि० (चं०) व्यर्थ फिरने वाला पशु।
**हळावड़ा**—पु० (सो०) ऊपर की ओर उठती हुई आग की लपटें।
**हलियांगणा**—स० क्रि० खुला-खुला हल चलाना।
**हळींडी**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) अमलतास वृक्ष पर लगी मोटी तथा लंबी फलियां।
**हळी**—पु० (शि०) हल चलाने वाला।
**हळीश**—स्त्री० (शि०) हल खींचने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली विशेष प्रकार से मुड़ी हुई लकड़ी।
**हलुंडा**—वि० (सि०) घिसा हुआ (हल)।
**हलुआ**—पु० हलवा।
**हलेण**—स्त्री० (चं०) Coloneaster bacillaris.
**हलेर**—पु० (ह०) हल रखने का कमरा।
**हळेरना**—स० क्रि० फसल में हल चलाना। किसी को सिखाना। हिलाना।
**हलोड**—स्त्री० मक्की के छोटे पौधों में हल चलाने की क्रिया।
**हलोड़णा**—स० क्रि० हल चलाना, मक्की की घनी खेती को विरला करने के लिए हल चलाना।
**हलोड़ा**—पु० कौए की तरह का पक्षी जिसकी चोंच व पैर लाल होते हैं।
**हल्का**—पु० इलाका।
**हल्कीणा**—अ० क्रि० (कु०) पागल होना।
**हल्दू**—पु० Adina Cordifolia. नीम।
**हल्ल**—पु० (ऊ, कां०) हल।
**हल्लकंबा**—पु० (सो०) सनसनीपूर्ण हलचल।
**हल्लड़**—वि० अवैधसंतान।
**हल्लणा**—अ० क्रि० भेड़ों का धूप में तेज़-तेज़ सांस लेना।
**हल्ला**—पु० शोर।
**हल्लीं**—अ० अभी, अभी तक।
**हल्लु**—पु० एक प्रकार का मेंहदी का पौधा जो गद्दियों की 'गोठ' में अधिक उगता है।
**हल्लु**—पु० (शि०) बेसन या आटे की कढ़ी।
**हल्हाट**—वि० (कां०) इधर-उधर भागने वाला।
**हवा आना**—अ० क्रि० मंदिर के पुजारी में देवता का प्रवेश होना, प्रेतात्मा की चपेट में आना।
**हवापण**—स्त्री० (सो०) पशु के नीचे बिछाने का घास।
**हश्का**—अ० (सो०) हलके वेग से, तुरंत।
**हसणा/णो**—अ० क्रि० हंसना।
**हसल**—स्त्री० भूमिकर।
**हसाण**—स्त्री० हंसी।
**हसाब**—पु० हिसाब, लेखा-जोखा।
**हसावणा/णो**—स० क्रि० (शि०, सो०) हंसना।
**हसी**—स्त्री० हंसी।
**हसेरना**—स० क्रि० देवपूजा के बाद गाय के दूध, दही को प्रयोग में लाना।
**हस्सोलड़**—वि० हंसमुख।
**हहो**—स्त्री० (चं०) सास।
**हांईए**—अ० (कु०) अरी, स्त्रियों के लिए संबोधन शब्द।
**हांकणा**—स० क्रि० (सि०) फेंकना।
**हांकणा**—स० क्रि० हांकना।
**हांग**—स्त्री० (ऊ०, कां०, ह०) लंबाई।
**हांगणू**—पु० (सि०) छोटी-छोटी बात।
**हांगशा**—पु० (कु०) चिंता।
**हांगशिणा**—अ० क्रि० (कु०) हिचकी भरते हुए रोना।
**हांगिणा**—अ० क्रि० (कु०) अकड़ना, शरीर के किसी अंग का अकड़ जाना।
**हांगी**—स्त्री० (मं०, सो०) मैदा छानने की छलनी।
**हांड**—स्त्री० पैदल चक्कर, पैदल चलकर पहुंचने का भाव, यात्रा।
**हांडणा**—अ० क्रि० (मं०) पैदल चलना।
**हांडणो**—अ० क्रि० (शि०, सि०) पैदल चलना।
**हांडी**—स्त्री० मिट्टी का पात्र जो पतीली का काम देता है।
**हांडी**—स्त्री० (कु०) लालटेन की चिमनी।
**हांडी थाड़ी**—स्त्री० (मं०) एक तांत्रिक कृत्य जिसके द्वारा दैविक रोगी के शरीर से भूत-प्रेत भगाए जाते हैं।
**हांडु**—पु० मिट्टी का घड़े के प्रकार का पात्र।
**हांड़े**—अ० (कु०) पुरुष के लिए साधारण संबोधन शब्द।
**हांदरे**—अ० (कु०) अंदर।
**हांस**—पु० (सि०) हंस।
**हा.**—स्त्री० (सो०) और अधिक पाने की इच्छा, लिप्सा।
**हा.कटे**—अ० (कु०) आनंद सूचक शब्द।
**हा.ड़ी**—वि० (कु०) खूंखार, हिंस्र, डरावना।
**हा**—अ० आनंद, शोक, खेद, घृणा, आश्चर्य, क्रोध आदि का सूचक शब्द।
**हा**—अ० (चं०) भेड़ आदि को बुलाने का शब्द।
**हाइदुवाई**—स्त्री० (सो०) रोने चिल्लाने की आवाज़।
**हाईचणा**—अ० क्रि० (सि०) गुम होना।
**हाई**—वि० (शि०) अच्छा।
**हाईड़े**—अ० (सो०) विनती, खुशामद सूचक शब्द।
**हाईबो**—अ० शोकसूचक शब्द।
**हाउ**—पु० (ह०) उपज का अनुमान लगाने वाला कर्मचारी।
**हाउका**—पु० (कु०) भ्रम, भूल।
**हाउज**—पु० दे० हौज।
**हाऊं**—सर्व० मैं।
**हाऊद**—पु० (सि०) हौद।

**हाऊबेर**—पु० (कु०, चं०) Guniperus Communis.
**हाक**—स्त्री० (सो०) किसी की मृत्यु की सूचना देने के लिए एक पहाड़ी से लगाई गई आवाज़।
**हाक**—स्त्री० (कु०, शि०) आवाज़, पुकार।
**हाकणा**—स० क्रि० (कु०) भेजना, समाप्त करना, नष्ट करना।
**हाकणो**—स० क्रि० (शि०) ललकारना, बुलाना।
**हाकम**—पु० अधिकारी।
**हाक्ख**—स्त्री० आंख।
**हाख**—स्त्री० आंख।
**हाखटी**—स्त्री० छोटी आंख, सुंदर आंख, सुंदर नयन।
**हाखी**—स्त्री० (कु०) दे० हौछी।
**हागड़ी**—अ० (सि०, सो०) थोड़ी पहले, पहले।
**हागू**—अ० (सि०, सो०) आगे।
**हाचीनिंछची**—स्त्री० (कु०) गहरी बातें।
**हाच्चा**—वि० (शि०) साफ।
**हाछा**—वि० (कु०) साफ, साफ-सुथरा। 'बगड़ा' का विपरीतार्थक शब्द, गेहूं और चावल, किसी अवसर पर दिया गया ऐसा अन्न जिसमें गेहूं या चावल सम्मिलित हों।
**हाछुणा**—अ० क्रि० (सो०) ग्रहण का हटना; घाव का ठीक होना।
**हाज**—वि० कमी।
**हाजमा**—पु० पाचन शक्ति।
**हाज़र**—वि० उपस्थित।
**हाज़री**—स्त्री० उपस्थिति।
**हाज़री**—स्त्री० (कु०) लंबी लय में गाया जाने वाला गीत।
**हाज़री-चाहुटे**—पु० (कु०) लंबी लय के विशेष गीत जो प्राय: देवताओं के विशेष आयोजनों पर गाए जाते हैं।
**हाज़ी**—अ० (कु०) अभी।
**हाज़ी लाईं**—अ० (कु०) अभी तक।
**हाट**—स्त्री० दुकान।
**हाट**—पु० (मं०, शि०) बाज़ार।
**हाट-बाज़ार**—पु० (कु०) मंडी, ऐसा स्थान जहां क्रय-विक्रय का कारोबार चलता हो।
**हाटा**—पु० क्षति पूर्ति।
**हाठा**—वि० हठी।
**हाड**—पु० (कु०) हड्डी, हड्ड।
**हाड़**—पु० आषाढ़।
**हाड़**—पु० (चं०) बाढ़।
**हाडकला**—वि० हड्डी वाला (मांस)।
**हाड़का**—पु० (कु०) हड्डी।
**हाडकी**—स्त्री० (सि०, सो०) हड्डी।
**हाडको**—पु० (कु०, मं०) हड्डी।
**हाडणा**—अ० क्रि० कपड़े का पतला पड़ना।
**हाड़णा**—स० क्रि० किसी वस्तु को नापना।
**हाडमांस**—पु० (कु०) हड्डी और मांस।
**हाडलुणा**—अ० क्रि० (सो०) वस्त्रों का बहुत गंदा होना जो धोने से भी साफ न हों।
**हाड़ाहिड़**—स्त्री० (शि०) काम करते हुए होने वाला शोर।
**हाडी**—वि० (कु०) तगड़ा, बलवान, चुस्त।
**हाड़ी**—पु० (कु०, मं०) हलवाहक, किसान।
**हाड़ी**—स्त्री० (चं०) छोटी खूबानी।
**हाडू**—पु० (कां०) तरल पदार्थ मापने का पात्र।
**हाड़े**—पु० विनती।
**हाड़ोपणा**—स० क्रि० (सि०) पीना, बेसब्री से खाना-पीना।
**हाणा**—स्त्री० समान आयु, समान कद, समान जाति।
**हाणा**—स्त्री० (चं०) देरी।
**हाणी**—स्त्री० क्षति।
**हाणी**—पु० साथी, दोस्त, मित्र।
**हात**—पु० (कु०, सि०) हाथ।
**हातापाई**—स्त्री० (सि०) मारपिटाई, हाथापाई।
**हात्था**—पु० (मं०) कुहनी से लेकर उंगली तक का माप।
**हाथ**—पु० (मं०) हाथ, दे० हात्था।
**हाथका**—पु० (शि०) थोड़ा सा घास।
**हाथड़**—वि० (शि०) दे० हत्यड़।
**हाथडू**—पु० छोटे बच्चों के हाथ।
**हाथपाई**—स्त्री० (मं०) प्रथम बार वधू के बच्चा होने की खुशी में वर पक्ष से वधू के भाई को 'साफा' भेंट करने की प्रथा जिसमें 'साफे' पर नवजात शिशु के हाथ अंकित होते हैं।
**हाथलाणा**—स० क्रि० (शि०) हथियाना।
**हाथापाई**—स्त्री० मार-पीट।
**हाथू**—पु० (मं०) दस्ताने।
**हादसा**—पु० दुर्घटना।
**हादा**—पु० (कु०) चिंता, दु:ख, घबराहट।
**हादिणा**—अ० क्रि० (कु०) घबराना, चिंतित होना।
**हान**—स्त्री० (सि०) हानि।
**हाप**—पु० (सि०) भाप, वाष्प।
**हाफणा**—अ० क्रि० (सि०) हांफना।
**हामें**—सर्व० हम, हमको।
**हामे**—अ० (कु०) कहां।
**हार**—स्त्री० (शि०) विवाहिता को चोरी से भगाने की क्रिया, विवाह की एक किस्म।
**हार**—स्त्री० (कु०) देवता का क्षेत्र विशेष जिसमें वह पूजा जाता है।
**हार**—पु० धान का विस्तृत खेत, उपजाऊ समतल भूमि।
**हार**—स्त्री० (सि०) वीर-गाथा, वीरता से संबंधित लंबी गाथा।
**हारका**—पु० (कु०) देवता द्वारा अपनी 'हार' की समय-समय पर की जाने वाली बैठक।
**हारगी**—स्त्री० (कु०, मं०) देवता का एक गांव से दूसरे गांव को जाने का आयोजन, देवता के ऐसे अवसर पर विशेष प्रकार के मेले।
**हारणो**—अ० क्रि० (शि०) हारना।
**हारना**—अ० क्रि० कमज़ोर होना।
**हारपासा**—पु० (मं०) जूआ।
**हारफेरा**—पु० विवाहोपरांत वर के साथ वधू की प्रथम बार अपने मायके जाने और उसी दिन लौटने की रस्म।
**हारसिंगार**—पु० Legerstroemia indica.

**हारा**— वि० (मं०) हरा।
**हारा**— पु० (सि०) दीवार।
**हारी**— पु० (कु०) देवता के अपने क्षेत्र के लोग।
**हारीफारी**— अ० थक कर, हार कर।
**हारुं**— पु० (चं०) सरसों।
**हारे**— अ० पशु को भगाने के लिए प्रयुक्त शब्द।
**हार्शु**— पु० (शि०) दर्पण।
**हाल**— अ० (कु०) अभी।
**हाळ**— पु० हल जिसमें फाल लगा होता है।
**हालड़**— वि० (मं०) ऐसा लड़का जिसके पिता का पता न हो।
**हालड़**— वि० (सि०) गोद लिया हुआ पुत्र।
**हाळवां**— स्त्री० Lapidium sativum.
**हाला**— पु० शोर।
**हाळी**— पु० हल जोतने वाला व्यक्ति।
**हाळी**— पु० किसान।
**हाळों**— स्त्री० दे० हाळवां।
**हालो**— पु० (सि०) बाड़।
**हालौ**— पु० (शि०) दशा।
**हाल्जी**— स्त्री० (सि०) हलदी।
**हाल्ली**— अ० (बि०) अभी।
**हासणा/णो**— अ० क्रि० हंसना।
**हासल**— वि० प्राप्त, लब्ध, शेष।
**हासी**— स्त्री० (कु०, बि०) हंसी।
**हास्सा**— पु० हंसी-मज़ाक, हंसी।
**हाहृठ**— पु० (कु०) दु:ख, खेद।
**हिंगदू**— पु० (चं०) ज़ोर से रोने का भाव।
**हिंगरना**— अ० क्रि० देवता का व्यक्ति में प्रवेश करना।
**हिंगशिणा**— अ० क्रि० (कु०) सिसकियां भरना।
**हिंगशू**— पु० (कु०) सिसकियां भरते हुए रोने का भाव।
**हिंबल**— पु० (चं०) सेमल।
**हिंसर**— पु० (शि०) रसभरी।
**हिंसार**— पु० (शि०) Rubus Laceocarpus.
**हिउरी**— स्त्री० (मं०) बर्फ।
**हिऊं**— पु० बर्फ, हिम।
**हिऊंद**— पु० (कु०, शि०) हेमंत, शीत ऋतु।
**हिऊंशाणी**— स्त्री० बर्फबारी।
**हिऊ**— पु० (कु०) हृदय।
**हिओ**— पु० (शि०) हृदय।
**हिक**— स्त्री० छाती।
**हिकजोर**— पु० शारीरिक बल।
**हिकट**— पु० (कु०) घुटन, दु:ख।
**हिकड़**— पु० हृदय, छाती।
**हिकमत**— स्त्री० उद्यम, हुनर, कला, युक्ति।
**हिक्की**— स्त्री० हिचकी।
**हिगर्यो**— पु० (सि०) हिमाच्छादित पर्वत।
**हिगलास्ट**— पु० (चं०) एक औषधि विशेष।
**हिच**— स्त्री० लज्जा।
**हिचणा**— अ० क्रि० कार्य की अधिकता से दुर्बल हो जाना।
**हिचहिच**— स्त्री० व्यर्थ की हंसी।
**हिछणा**— अ० क्रि० (शि०) किसी वस्तु से मन भर जाना, किसी चीज़ को खाने की तबीयत न करना।
**हिछणा**— स०, क्रि० (शि०, सि०, सो०) मनौती करना।
**हिछुणा**— अ० क्रि० (शि०, सि०, सो०) अरुचि होना।
**हिज़**— अ० (कु०, मं०) बीता हुआ कल।
**हिज़ो**— अ० (शि०, सो०) बीता हुआ कल।
**हिटणा**— अ० क्रि० (सि०) उबलने के कारण दाल के पानी का कम होना।
**हिठ**— स्त्री० हठ, दु:साहस।
**हिठो**— वि० (सि०) विश्वासपात्र।
**हिड़मा**— स्त्री० (कु०) देवी हिडिंबा जिसका एक मुख्यमंदिर कुल्लू में मनाली के निकट ढूंगरी के स्थान पर है।
**हिड़हिड़**— स्त्री० बेकार बोलने की क्रिया, व्यर्थ की हंसी, ज़ोर की हंसी।
**हिड्डा**— पु० द्वेष।
**हिणा**— स्त्री० (शि०) गिलहरी की तरह का जीव।
**हिणकणा**— अ० क्रि० सुबकना, धीरे-धीरे रोना।
**हिणकना**— अ० क्रि० (कां०, मं०) घोड़े का हिनहिनाना।
**हिणख**— स्त्री० (कु०, चं०) ईर्ष्या।
**हिणस**— स्त्री० (चं०) ईर्ष्या।
**हिणसणा**— स० क्रि० जानबूझकर गलत काम करना।
**हिबा**— पु० भूमिदान, हिब्बा।
**हिमत**— स्त्री० साहस, ताकत, सामर्थ्य।
**हिमती**— वि० साहसी।
**हियांठी**— स्त्री० (कु०) बर्फ के खिसकते ढेर।
**हियाण**— पु० (चं०) दे० हियांठी।
**हियूंद**— पु० शीत ऋतु।
**हिये**— पु० (मं०) तलवे।
**हियों**— पु० (सो०) बर्फ।
**हियो**— पु० (शि०, सि०, सो०) हृदय।
**हिरख**— स्त्री० ईर्ष्या।
**हिरखपिट्टा**— वि० ईर्ष्यालु।
**हिरख-मिश**— स्त्री० (कु०) ईर्ष्या और क्रोध।
**हिरखिणा**— अ० क्रि० (कु०) ईर्ष्या करना, ज़िद करना।
**हिरदा**— पु० हृदय।
**हिरान**— वि० (शि०) चकित, हैरान।
**हिलकणा**— अ० क्रि० हिलना।
**हिलण**— पु० (कु०) दे० हिल्लण।
**हिलणा**— अ० क्रि० हिलना।
**हिलम**— स्त्री० किसी पदार्थ के पक कर बिल्कुल गल जाने की अवस्था।
**हिलाऊणा**— स० क्रि० (मं०) हिलाना।
**हिलावणो**— स० क्रि० (शि०) हिलाना।
**हिलिणा**— अ० क्रि० (कु०) हिल जाना।
**हिल्लण**— पु० भूकंप।
**हिवणो**— स्त्री० (शि०, सि०) दे० हियांठी।
**हिशणा**— अ० क्रि० (कु०) बुझना, बुझ जाना।

**हिशालणा**—स० क्रि० (शि०, सि०) बुझाना।
**हिशिणा**—अ० क्रि० (कु०) मुक्त हो जाना, मुक्ति प्राप्त होना।
**हिस्सा**—पु० भाग।
**हिस्सादार**—वि० भागीदार।
**हिहर**—पु० (मं०) एक कांटेदार झाड़ी जिसके फल खाए जाते हैं।
**हींखणा**—स० क्रि० (सो०) किसी का बुरा सोचकर कुछ कहना।
**हींग**—पु० हींग।
**हींग चखाणा**—पु० मृत्यु संबंधी एक रस्म।
**हींठ**—स्त्री० (सो०) ज़िद।
**हींठी**—वि० (सो०) ज़िद्दी।
**हींस**—स्त्री० (सि०) Capparis horrida.
**हीक**—स्त्री० (कु०) छाती।
**हीख**—स्त्री० (सि०) गन्ना, ईख।
**हीछ**—स्त्री० (सो०) किसी के कारण अत्यधिक असुविधा या तंगी का अनुभव।
**हीछो**—स्त्री० (शि०, सि०) मान्यता।
**हीठ**—पु० (शि०, सि०) विश्वास।
**हीण**—वि० अपंग, हीन।
**हीणा**—वि० (कु०) अधीन।
**हीर**—पु० मछली पकड़ने वाला, अहीर।
**हीर**—पु० Rubus ellipticus.
**हीरामौहता**—पु० (मं०) एक देवता जो बड़े-बड़े देवताओं के दरबार में कोतवाली करता है।
**हीलहुज़त**—स्त्री० बहस, विवाद।
**हीला**—पु० बहाना, निमित्त।
**हीशों**—स्त्री० (सि०) ठंडी हवा।
**हुंआरू**—पु० (कु०) ऐसा मेढ़ा या भेड़ का बच्चा जिसे किसी रोगी के सिर पर घुमाकर देवता के नाम से सुरक्षित रखा जाता है।
**हुंगरना**—अ० क्रि० (शि०) शेर का दहाड़ना।
**हुंगा**—पु० (मं०) शोर-शराबा।
**हुंगारा**—पु० प्रत्युत्तर।
**हुंगो-बांगो**—वि० (शि०) टेढ़ा-मेढ़ा।
**हुंडण**—पु० (कु०) यात्रा।
**हुंडणा**—स० क्रि० (चं०) जीतना।
**हुंडी**—स्त्री० (बि०) बहुत कमाई।
**हुंदर**—पु० (कु०) दक्षता, हुनर।
**हुंदा**—अ० (शि०, सो०) नीचे की ओर।
**हुंदे**—अ० (कु०, सि०, सो०) नीचे।
**हुंबेली**—स्त्री० (सि०) हवेली।
**हु:कधु:क**—स्त्री० (सो०) बेचैनी का अनुभव, धुकधुकी।
**हुआर**—पु० वट वृक्ष की लताएं।
**हुआरु**—पु० (कु०) दाल भात पकाने का तंग मुंह वाला पात्र जो लोहे, मिट्टी या पीतल का हो सकता है।
**हुआला**—पु० विवरण, हवाला।
**हुआलै**—पु० निमित्त, सौंपने की क्रिया।
**हुऊणु**—पु० (चं०) एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी बहुत मज़बूत होती है।
**हुकणा**—अ० क्रि० (सि०) खेल में चूक हो जाना।
**हुकम**—पु० आज्ञा, आदेश।
**हुकर**—पु० (चं०) ऐसा बछड़ा जो हल जोतने योग्य हो।
**हुकैणा**—स० क्रि० (चं०) सुखाना।
**हुक्कर**—पु० (चं०) शुक्रवार।
**हुक्त**—स्त्री० (कु०) शक्ति, सामर्थ्य।
**हुखड़ा**—पु० (सि०) पेड़ से अनार निकालने का डंडा।
**हुगत**—स्त्री० मुक्ति।
**हुगाड़ना**—स० क्रि० (ह०) खेत की जुताई करना। खोलना।
**हुच़कणा**—अ० क्रि० (कु०) उचकना।
**हुच़हुच़**—स्त्री० (कु०) एक ही रट।
**हुज**—स्त्री० (बि०) छेड़छाड़, छड़ी की नोक से बैल हांकने की क्रिया।
**हुजकड़ा**—वि० (चं०) अटपटा।
**हुजकड़ा**—पु० कुहनी मार कर किया गया इशारा।
**हुजणा**—स० क्रि० (बि०) तंग करना।
**हुजत**—स्त्री० शरारत।
**हुज्जती**—वि० शरारती।
**हुज्जदेणा**—स० क्रि० उकसाना।
**हुटणा**—स० क्रि० (सि०) कहना।
**हुटणा**—स० क्रि० (सो०) बंद करना।
**हुड़**—अ० भेड़ को भगाने का शब्द।
**हुड़कू**—पु० (शि०, कु०) पुराने ढंग की सिटकिनी।
**हुड़धुआड़**—स्त्री० (कु०) दरवाज़े आदि को बार-बार बंद करने की क्रिया।
**हुड़चा**—पु० (शि०) अनाज का भंडार।
**हुड़चू**—पु० छोटा कमरा।
**हुड्ड**—पु० (कां०) बांस का टुकड़ा।
**हुड़णा**—स० क्रि० (सि०) अधिक खाना।
**हुड़णा**—स० क्रि० बंद करना।
**हुड़ना/नो**—स० क्रि० (मं०, शि०, सि०) बंद करना, दरवाज़ा आदि बंद करना।
**हुड़सणदेणा**—अ० क्रि० (सि०) बलात् प्रवेश करना।
**हुड़िना**—अ० क्रि० (कु०) बंद होना। स० क्रि० बंद किया जाना।
**हुड़ी**—स्त्री० (मं०) ज़ोर का धक्का।
**हुण**—पु० (चं०) वीर्य शक्ति वाला मेढ़ा।
**हुण**—अ० (कां०, बि०, सि०) इसी क्षण, अब, अभी।
**हुणना**—स० क्रि० (कु०) बैल आदि का मारना।
**हुणा**—वि० (कु०) मारने वाला (पशु)।
**हुणा**—वि० (कु०) कटे ओंठ वाला।
**हुणिना**—अ० क्रि० (कु०) बैल आदि पशु द्वारा सींग से मारा जाना।
**हुतळा**—वि० अटक कर बोलने वाला, तोतला।
**हुतहुता**—पु० (कु०) हुदहुद पक्षी।

हुत्थू—पु० (सि०) गले में किसी चीज़ के अटकने से आई हिचकी।
हुथवौली—स्त्री० (सि०) हथेली।
हुधार—पु० (चं०) खाली भूमि में चलाया गया हल।
हुनर—पु० दक्षता, कला, दस्तकारी।
हुप—पु० (चं०) सूप, शूर्प।
हुप्फ—अ० उफ़।
हुप्फ—स्त्री० गर्मी, उमस।
हुबका—अ० (सि०, सो०) ऊपर।
हुबड़ा—अ० (सो०) थोड़ा ऊपर।
हुबहुब—वि० (कु०) ज्यों का त्यों, वैसा ही, हूबहू।
हुब्बलु—पु० (कां०) भैंस के दूध की रबड़ी।
हुब्बे—अ० (सि०, सो०) ऊपर।
हुम—स्त्री० उमस, हवा न चलने से मालूम होने वाली गरमी।
हुमकणा—अ० क्रि० (कु०) सांस का जल्दी-जल्दी चलना।
हुमणा—स्त्री० (सि०) धुआं निकलने की चिमनी।
हुमणा—पु० (शि०) हवन।
हुमस—पु० (मं०) प्रयत्न।
हुमस—स्त्री० उमस।
हुम्मणा—स० क्रि० हवन करना।
हुर—अ० घोड़े आदि को बुलाने के लिए प्रयुक्त शब्द।
हुरगा—पु० (मं०) चौड़े मुंह वाला फरसा, परशु।
हुराहुरी—स्त्री० (कु०) किसी वस्तु को तेज़ गति से गिराने या फेंकने की क्रिया।
हुर्र—अ० (कु०) तेज़ गति से गिराने का शब्द।
हुल—स्त्री० पसली में होने वाली तेज़ दर्द।
हुलकणा—स० क्रि० (सि०) बुरी तरह से जलाना।
हुळका—पु० (चं०) झटका।
हुलकी—स्त्री० (शि०) हिचकी।
हुलकी—स्त्री० (कु०) देवी-देवता का सामूहिक पारंपरिक नृत्य।
हुलाई—स्त्री० (सि०) दे० हुळी।
हुळी—स्त्री० (शि०) एक डंडा जिसमें घास आदि बांध कर लाया जाता है।
हुळूहा—पु० (चं०) किसी काम के लिए किसी व्यक्ति को आगे धकेलने की क्रिया।
हुलोई—स्त्री० (सि०) बांस का डंडा।
हुल्याली—स्त्री० (मं०) ऐसी भूमि जिस पर मक्की की काश्त की जाती है।
हुल्लणा—स्त्री० चिता में जलती लाश को हिलाने, इधर-उधर करने का डंडा।
हुशाड़ी—स्त्री० (शि०) डींग।
हुशा—स्त्री० (कु०) खेत में फसल की रखवाली करते समय बंदर आदि को भगाने के लिए किया जाने वाला शब्द।
हुशियार—वि० निपुण।
हुस्सड़—पु० गरमी।
हूं—अ० सुनने की सूचक ध्वनि।
हूंड—पु० (चं०) मिट्टी का पात्र।
हूंड—पु० (सो०) महत्वपूर्ण कार्य निपटाने का उत्तरदायित्व।
हू—अ० (सि०) दूर से बुलाने के लिए दी गई आवाज़।
हूक—स्त्री० छाती में उठी दर्द।
हूज—स्त्री० (सि०) डंडे की नोक चुभाने का भाव।
हूड़—पु० (मं०) बकरे के रक्त को देवता की मूर्ति पर चढ़ाने की क्रिया।
हूणा—अ० क्रि० होना।
हूणी—स्त्री० एक ही रट।
हूम—पु० (कां०, कु०, सो०) यज्ञ, होम, हवन।
हूरपरी—वि० अत्यंत सुंदरी।
हूरु—पु० (सि०) झोंका।
हूल—स्त्री० (चं०) शूल।
हूल—पु० (शि०) सांड़, मेढ़ा।
हूलगा—पु० (सि०) आग की चिंगारी।
हूळा—पु० (सो०) लकड़ी की मशाल।
हूलुक—पु० (सि०) एक वाद्ययंत्र।
हुल्लड़बाजी—स्त्री० (सि०) लूटपाट, व्यर्थ का शोर-शराबा।
हेंडोला—पु० (सि०) झूला, हिंडोला।
हेऊड़ी—स्त्री० (मं०) एक चिड़िया।
हेकड़ी—स्त्री० (शि०) घमंड।
हेकी—वि० छोटी आयु का।
हेज—पु० (बि०) प्रेम।
हेज़णो—स० क्रि० (शि०) झाड़ू देना।
हेजला—वि० बहुत प्यारा।
हेज़ा—पु० (शि०) झाड़ू।
हेट—अ० (सि०) बहादुरी के लिए संबोधन शब्द।
हेट्टै—अ० (सि०) नीचे।
हेठ—अ० नीचे।
हेठला—अ० नीचे का, निचला।
हेठी—स्त्री० (चं०) पराजय, अपमान।
हेड़—स्त्री० पशुओं का समूह।
हेड़—स्त्री० शिकार।
हेड़ा—पु० शिकार, आखेट।
हेड़िया—वि० (मं०) शिकारी।
हेड़ी—वि० शिकारी।
हेडू—पु० भेड़-बकरियां बेचने वाला व्यापारी।
हेत—स्त्री० याद।
हेबी—अ० (शि०) अभी।
हेर—स्त्री० पहचान, उम्मीद, आशा।
हेरअल—स्त्री० देखभाल।
हेरगणायाव—पु० तंत्र विद्या द्वारा निदान करवाने का भाव।
हेरणा—पु० (सि०) नाई का नाखून तराश।
हेरणा—स० क्रि० (चं०) देखना।
हेरणो—स० क्रि० (शि०, सि०) करना।
हेरन—पु० (शि०) उपाय।
हेरना—स० क्रि० (कु०) देखना।
हेरना—स० क्रि० (सो०) दे० हेरणो।
हेरपण—पु० (मं०) प्रतिघात, रुकावट, बाधा।

हेरभाल—स्त्री० (मं०) देखभाल।
हेरशूण—स्त्री० (कु०) देखभाल, संतोष।
हेरिना—अ० क्रि० (कु०) देखा जाना, दिखाई देना।
हेरुणा—अ० क्रि० (शि०) काम किया जाना।
हेरों—अ० (सि०) और, दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाला अव्यय।
हेल—स्त्री० (कु०) बोझ को एक स्थान से उठाकर निश्चित स्थान तक पहुंचाने और वापिस आने की क्रिया, इस तरह बोझ पहुंचाने की बारी।
हेल—स्त्री० (बि०) बारी, अनेक व्यक्तियों में से प्रत्येक को मिलने वाला यथाक्रम अवसर।
हेल—स्त्री० (सो०) खेप।
हेला—पु० (शि०, सि०) सार्वजनिक श्रमदान।
हेल्ला—अ० (कु०) अच्छा, आश्चर्य प्रकट करने वाला शब्द।
हेल्ला—पु० (कु०) शोर।
हेशणा—स० क्रि० (कु०) पकाने हेतु किसी वस्तु को चूल्हे पर रखना।
हेशिणा—स० क्रि० (कु०) चूल्हे पर चढ़ाया जाना।
हेस—पु० (कु०) विश्राम स्थल।
हेसरु—पु० (कु०) एक श्रमगीत जिसमें लोग बड़ी-बड़ी शहतीरों को रस्सों से खींचते हैं और साथ गाना गाते हैं।
हेसा—पु० भाग, हिस्सा।
हेसिया महीना—पु० (मं०) चैत्र मास।
हेसी—पु० शहनाई वादक।
हे सार—अ० (कु०)'हेसरु' श्रम गीत में बोला जाने वाला शब्द।
हेस्सा—स्त्री० (मं०) दुर्गाष्टमी के अवसर पर भैंसे की बलि देते समय गाये जाने वाले गीत के विशेष बोल।
हैंठ—पु० पहाड़ों पर पड़े बर्फ के ढेर जो कभी पिघलते नहीं।
हैंत—पु० (ह०) बर्फीला तूफान।
हैफणा—अ० क्रि० हांफना।
हैओ—पु० (मं०) विश्वास, साहस, हौसला।
हैक—पु० (कु०) हक, अधिकार।
हैट—अ० (शि०) आश्चर्य सूचक शब्द, विस्मयादि-बोधक शब्द।
हैटणा—अ० क्रि० (कु०) हटना।
हैटिणा—अ० क्रि० (कु०) हटा जाना।
हैठी—वि० (कु०) हठी।
हैतिया—स्त्री० (कु०) हत्या।
हैद—स्त्री० (कु०) अति, हद।
हैना—अ० (शि०) पति-पत्नी का परस्पर का संबोधन।
हैफ—पु० (सो०) भय-पूर्ण आश्चर्य।
हैम—पु० (चं०) समय।
हैय्या हो—अ० (कु०) दर्द भरी आवाज़।
हैर—पु० (चं०) सिर।
हैर्ज़—पु० (कु०) हानि, क्षति, हर्ज़।
हैळ—पु० (चं०) शैल, छत पर डाले जाने वाले चौड़े पतले पत्थर।
हैळ—स्त्री० (शि०) लय।
हैळका—वि० (कु०) छोटा, हलका।
हैलफैली—स्त्री० (कु०) उमस।
होंढणा—अ० क्रि० (कु०) चलना, पैदल चलना।
हो—अ० अच्छा, स्वीकृति सूचक शब्द, सचेतक शब्द।
होआ—स्त्री० (कां०) हवा।
होआड़ी—स्त्री० कहकहा।
होइणा—अ० क्रि० (कु०, शि०, सि०) हो जाना।
होइया-हो—पु० (शि०, सि०) नाचते हुए किया जाने वाला हर्ष-नाद।
होई—स्त्री० (सि०) धोखा।
होई—स्त्री० (कां०) होली; अहोई व्रत।
होकड़ा—वि० (मं०) हकलाने वाला।
होकड़ी—वि० (शि०) थोड़ी सी।
होकणा—स० क्रि० (सो०) गला घोंटना।
होकरणो—स० क्रि० (शि०) कै करना, उलटी करना।
होका—पु० बुलावा।
होका/के—वि० (शि०) अन्य।
होकी—स्त्री० किसी भारी वस्तु को खींचते समय निकला सामूहिक शब्द।
होकूणा—अ० क्रि० (सो०) दम घुटना।
होकूरनो—स० क्रि० (शि०) उलटी करना।
होक्का—पु० (सि०) हुक्का।
होख—स्त्री० (शि०) आंशिक विकलांगता।
होखा—वि० छोटा।
होच्चा—वि० (सि०) उतावला।
होच्छा—वि० तुच्छ।
होछणा—वि० (कु०) छोटा।
होछणी—वि० (कु०) छोटी।
होछा—वि० (कु०, शि०) छोटा।
होज़रा—पु० (शि०) पेट।
होटढ़—पु० (कु०) होटल।
होठ—पु० होंठ।
होड़—वि० (शि०) मूर्ख।
होड़ना—स० क्रि० (मं०) धान के खेत में पानी देकर हल चलाना।
होड़शाण—पु० (शि०) मूर्खतापूर्ण हठ।
होड़ा—पु० (कां०) पशुओं का बाड़ा।
होड़ा—पु० (शि०) जंगली जानवरों से फसल की रक्षा करने हेतु खेत में बना मचान।
होड़ा—पु० (ऊ०, कां०) एक चूल वाला दरवाज़ा।
होड़ागोड़ी—स्त्री० व्यर्थ की उछल-कूद, बच्चों का इधर-उधर भागकर खेला गया खेल।
होड़ी—स्त्री० (मं०) होली।
होथणा—अ० क्रि० (कु०, मं०) उतरना।
होफरा—पु० (मं०) देवी-देवता के स्थान में बजने वाली विशेष धुन।
होफरा—पु० (चं०) शोर।
होर—अ० (सि०) "हां" स्वीकृति दर्शाता शब्द।

**होर**— अ० और, दूसरा, अन्य, अतिरिक्त।
**होर**— अ० (शि०) उपेक्षा सूचक शब्द।
**होरकिया**— अ० (शि०) हर्षनाद।
**होरोफ**— पु० (शि०) दे० हौरफ।
**होलकू**— वि० (सि०) हलका।
**होळां**— स्त्री० (कां०, बि०) खेत में आग जलाकर उसमें फलियों सहित भूने हुए हरे चने।
**होला**— पु० (शि०) जलती हुई मशाल।
**होला**— पु० होली के दूसरे दिन मनाया जाने वाला त्योहार।
**होला**— पु० (शि०) सर्दियों में काटे गए घास को 'घासनी' से घर लाने के लिए पूलों के बीच लगाया डंडा।
**होलाच**— पु० (शि०) मशालों का नृत्य-उत्सव जो सावन और भादों की संक्रांति को होता है। इसमें प्रातः काल सीता हरण की गाथा गाई जाती है और रात्रि मे स्वांग किए जाते हैं।
**होलू**— पु० (शि०) पीसी उड़द की दाल अथवा अन्य अनाज की कढ़ी।
**होल्हड़ा**— वि० (कु०) सुस्त।
**होश**— स्त्री० होश।
**होशबास**— पु० सुधबुध।
**होस**— पु० (कां०) होश, चेतना।
**होहल्ला**— पु० शोर-शराबा।
**हौं**— सर्व० (ह०) मैं।
**हौंकणा**— अ० क्रि० (सि०, सो०) तेज़-तेज़ सांस लेना।
**हौंका**— पु० लंबी-लंबी सांस।
**हौंडू**— पु० (कु०) दाल-भात पकाने का मिट्टी का पात्र।
**हौंसला**— पु० उत्साह।
**हाक**— पु० (कु०, शि०) हक।
**हौका**— पु० (कां०) आह, उच्छ्वास।
**हौग**— स्त्री० (शि०) याद।
**हौग**— स्त्री० (शि०) अतिसार।
**हौगणा**— अ० क्रि० (कु०, सि०) मल त्याग करना, टट्टी करना।
**हौछी**— स्त्री० (कु०) आंख।
**हौछु**— पु० (कु०) आंसू।
**हौज**— स्त्री० (कु०) हलदी।
**हौज़**— स्त्री० (शि०) ज़िद।
**हौजो**— अ० (सि०) दोबारा।
**हौठे**— वि० (शि०) हठी।
**हौड़**— पु० (कु०) बाढ़।
**हौड़**— पु० (कु०) शरीर के जोड़ों में होने वाली बीमारी।
**हौड़**— स्त्री० (कु०, शि०) गिरे हुए वृक्ष का बड़ा तना।
**हौड़काठ**— पु० (कु०) भयंकर बाढ़, भारी वर्षा।
**हौड़त**— पु० धिक्कार।
**हौड़ना**— अ० क्रि० (शि०) बहना।
**हौणना**— स० क्रि० (कु०) सींग मारना।
**हौणनो**— स० क्रि० (शि०) घायल करना।
**हौणी**— स्त्री० दुर्दशा, दुर्भाग्य, होनी।
**हौथ**— पु० (कु०) हाथ।
**हौथू**— पु० (कु०) करघे का एक उपकरण जिससे 'बाणा' के धागे को कस दिया जाता है।
**हौरछणा**— अ० क्रि० (शि०) नीचे उतरना।
**हौरफ**— पु० (कु०, सि०) हर्फ, वर्ण।
**हौरा**— वि० (कु०, शि०, सि०) हरा।
**हौर्ज़**— पु० (कु०) नुकसान, क्षति, हानि।
**हौर्जा**— पु० (शि०) क्षति, हानि।
**हौर्न**— स्त्री० (कु०) सर्दियों में चांद के प्रकाश में खेला जाने वाला एक लोकनाट्य जिसमें दो व्यक्ति हिरण बनकर नाचते हैं।
**हौल**— पु० (सो०) खड्ड।
**हौल**— वि० (सि०) होनहार, मेधावी।
**हौल**— पु० जलन, ईर्ष्या।
**हौळ**— पु० (कु०) हल।
**हौळ**— पु० डंडा आदि घुमाने की क्रिया।
**हौळ**— स्त्री० मूर्च्छा।
**हौलख**— पु० (कु०) पागलपन।
**हौलखिणा**— अ० क्रि० (कु०) कुत्ते का पागल हो जाना।
**हौलदार**— पु० हवलदार।
**हौळना**— स० क्रि० (कु०) मिट्टी को नर्म करने के लिए बिना बीज डाले हल जोतना।
**हौळा**— अ० हलका, धीरे।
**हौला/ले**— अ० (शि०) संबोधन सूचक शब्द।
**हौसणा**— अ० क्रि० (कु०) हंसना।
**हौसणो**— अ० क्रि० (शि०) हंसना।
**हौसिणा**— अ० क्रि० (कु०) हंसा जाना।
**ह्वाड़**— पु० (कु०) मकान की ऊपरी तथा निचली मंज़िल में जाने के लिए कमरे के अंदर रखा गया अंदरूनी मार्ग।

# परिशिष्ट

# अ

अंकासुमाह—सं० (कि०) अल्प बल।
अंगणी—सं० (कि०) शरीर का भाग, अंश, प्रकार, प्रतीक।
अंगेली—सं० (कि०) Anemoneobtusiloba.
अंटखपिन—अ० (कि०) सर्वत्र।
अंडो—सं० (कि०) मुकुट।
अंताजा—सं० (ला०) अंदाजा।
अंतासलमाह—स० क्रि० (कि०) परीक्षा लेना।
अंत्रो—सं० (ला०) अंत्र, आंत।
अंथमाह—अ० क्रि० (कि०) उठना।
अंदरासङ—सं० (कि०) दो मंज़िल का घर।
अंदरे—अ० (ला०) अंदर की ओर।
अंदारासंग—वि० (कि०) गुप्त।
अंदुर—सं० (ला०) अंदर।
अंधरा/रू—सं० (ला०) अंधेरा, अंधकार।
अंफोलामाह—स० क्रि० (कि०) सामूहिक उच्चारण करना।
अंबररेसकोह—अ० (कि०) निरंतर।
अंबोथुद्यतिङख—अ० (कि०) सदैव।
अंबोरोमितनिंह—वि० (कि०) अनित्य, अस्थायी।
अंबोरोह—अ० (कि०) सदैव।
अंबोल—सं० (कि०) मद, नशा।
अंबोलिया—वि० (कि०) नशा करने वाला।
अंमबोर—अ० (कि०) सदा-सदा।
अइरङ—सं० (कि०) आखेट, शिकार।
अइरस—सं० (कि०) शिकारी।
अई—अ० (ला०) और।
अऊंठ—सं० (ला०) अंगूठा।
अऊंठी—सं० (ला०) अंगूठी।
अऊंली—सं० (ला०) अंगुलि।
अऊशऊवा—अ० क्रि० (ला०) भौंकना।
अकचेथुलचा—अ० क्रि० (कि०) गले मिलना।
अकछतमाह—स० क्रि० (कि०) घोषणा करना।
अकु—सं० (कि०) चाचा।
अखवाह—सं० (ला०) अफवाह, किंवदंती।
अखह—सं० (कि०) पीड़ा, चोट, घाव।
अखो—सं० (कि०) बाटी, खुला पात्र।
अग—सं० (कि०) कंदरा, गुफा।
अगङ—सं० (कि०) अभिषेक।
अगछली—सं० (कि०) दियासलाई।
अगठो—सं० (कि०) अंगार।
अगसो—वि० (कि०) अभिषेकी।
अगोत—सं० (कि०) मुंह।
अगोतक्वामाह—अ० क्रि० (कि०) मुंह खोलना।
अगोतछितमाह—अ० क्रि० (कि०) मुंह बंद करना।
अगोतप्रूनमाह—स० क्रि० (कि०) मुंह से झाड़ना।
अगोतमुक्लामाह—अ० क्रि० (कि०) मुंह बनाना।
अगोतसा—वि० (कि०) बड़बोला, प्रलापी, बातूनी।
अगोतुराश्यअवङमाह—स० क्रि० (कि०) मुंह तक भरना।
अग्रा—अ० (ला०) आगे।
अग्रेर—वि० (ला०) अगला।
अग्रोई—अ० (ला०) पहले।
अघा—सं० (कि०) ससुर।
अङ—सर्व० (कि०) मेरा।
अङचुमाह—सं० (कि०) अंधकार।
अङरोतसाञ—वि० (कि०) हठी।
अङशेत—सं० (कि०) स्वामित्व।
अङार—सं० (ला०) अंगार।
अङु—सर्व० (कि०) मुझे।
अचकोन—सं० (कि०) अचकन।
अचरे—वि० (कि०) अजीब।
अची—सं० (ला०) बहिन।
अची—अ० (कि०, ला०) स्त्री के लिए संबोधन।
अचो—अ० (कि०, ला०) पुरुष के लिए संबोधन।
अचो—सं० (ला०) भाई।
अच्छामतोई—वि० (कि०) मात्रा रहित।
अच्छोलामाह—अ० क्रि० (कि०) हाय-हाय करना।
अच्छेतुमाह—अ० क्रि० (कि०) पीड़ा होना।
अज़म्याम—स० क्रि० (कि०) परखना।
अज़ा—सं० (ला०) मामा।
अजारङ—वि० (कि०) निर्जन।
अटंग—सं० (कि०) पत्थर का टुकड़ा, फेंकने योग्य पत्थर।
अटक्यामिग—स० क्रि० (कि०) लटकाना।
अटङ—वि० (कि०) सब, सारे, बहुत।
अटाल—सं० (कि०) रोटी।
अट्यामिग—स० क्रि० (कि०) दबाना।
अठङ—सं० (कि०) नदी का तट।
अठङकोलोन—सं० (कि०) नदी का पत्थर।
अठङरोनिङ—सं० (कि०) खड्ड में पड़ी चट्टान।
अड़लिस—वि० (कि०) दरिद्र।
अडुबङ—वि० (कि०) हठी।
अणताजा—सं० (ला०) अंदाजा, अनुमान।
अत—सं० (कि०) छोटी कुल्या या नदी।
अतछम्माह—स० क्रि० (कि०) कुल्या द्वारा सींचना।
अतफोत—स० क्रि० (कि०) प्रथम बार सिंचाई करना।
अतरमतर—वि० (कि०) अतिभारी, अत्यधिक।
अतरा—अ० (कि०) व्यर्थ, बिना मतलब के।
अतरापुनङ—वि० (कि०) बंजर।
अतरावशतमाह—अ० क्रि० (कि०) व्यर्थ बोलना।
अतरामोह—वि० (कि०) ऐसा ही।
अता—सं० (कि०) बहिन।
अतिक—सं० (ला०) ढक्कन।
अतिङख—सं० (कि०) झूठ।
अतुक—वि० (कि०) उदासीन।

अते—सं० (कि०) भाई।

अतेअची—सं० (कि०) भतीजा।

अतेङ्यूअचो—सं० (कि०) भतीजी।

अतारङ—सं० (कि०) अंधकार।

अथप—अ० (कि०) बहुत।

अदखेलस—वि० (कि०) अधमरा।

अदङ—वि० (कि०) आधा।

अदरंगी—वि० (कि०) पक्षाघात से पीड़ित।

अदरालो—वि० (कि०) अधूरा।

अदरो—सं० (कि०) अदरक।

अदुंजा—अ० (ला०) नाम मात्र।

अन—सर्व० (कि०) वह।

अनकाड़ —सं० (ला०) अकाल।

अनचा—स० क्रि० (कि०) मानना।

अनटङपनटङलमाह—सं० (कि०) आनाकानी।

अनपो—वि० (कि०) मज़ेदार।

अनाली—वि० (कि०) पागल।

अनाह—सं० (ला०) अंधकार।

अनाहरू—सं० (ला०) घनघोर घटा।

अनुहकिमाह—स० क्रि० (कि०) उठा कर ले जाना।

अने—सं० (कि०, ला०) बुआ।

अनेउछङ—सं० (कि०) बुआ का लड़का।

अनेजुमों—सं० (कि०) सास।

अनेसुङ—सर्व० (कि०) वे लोग।

अन्तासलमाह—स० क्रि० (कि०) परीक्षा लेना।

अन्पा—सं० (कि०) इनाम।

अन्माह—स० क्रि० (कि०) उठाना।

अपङ—सर्व० (कि०) हम, हम लोग।

अपा—सं० (कि०) पिता।

अपा—सं० (ला०) दादी।

अपिलाई—सं० (कि०) धाय का कार्य।

अपी—सं० (कि०) दादी।

अपी—अ० क्रि० (ला०) आना।

अपीलाच—सं० (कि०) धाय, दाई।

अपीलामा—सं० (कि०) धाय, दाई।

अपू—सं० (कि०) बड़ी बहिन।

अपू—सं० (ला०) छोटी बहिन।

अपूरा—वि० (ला०) अधूरा।

अफुतुरङख—अ० क्रि० (कि०) भूत सवार होना।

अफफो—अ० (कि०) ओह! विस्मयादिबोधक शब्द।

अबा—सं० (ला०) पिता।

अबी—अ० क्रि० (ला०) आना।

अबेल—अ० (ला०) कब।

अम—सं० (ला०) मां।

अमचा—सं० (ला०, कि०) मार्ग, रास्ता।

अमची—सं० (कि०) वैद्य, एक समुदाय विशेष जो जड़ी-बूटियों का काम करता है।

अमदोक—सं० (कि०) कान।

अमनिङ—अ० क्रि० (कि०) बहाना करना, टालमटोल करना।

अमनी—सं० (कि०) चाची, मासी।

अमयो—अ० (कि०) हे मां!

अमलोह—वि० (कि०) आवश्यक, अनिवार्य।

अमलू—वि० (ला०) खट्टा।

अमांस—सं० (ला०) अमावस्या।

अमाच—सं० (कि०) चाची, मासी, ताई।

अमोतीओमना—अ० (कि०) मार्ग-मार्ग, सीधे रास्ते।

अयमचेथ—अ० (कि०) छोटा सा।

अयमपो—अ० (कि०) साथ।

अयानो—वि० (कि०) अधेड़।

अयार—सं० (कि०) Pieris ovalifolia.

अयारङ—सं० (कि०) अंधकार।

अयी—सं० (कि०) बच्चा।

अयोदामा—अ० क्रि० (कि०) विलाप करना।

अरअ—सं० (ला०) जौ से बनी सुरा।

अरखड़ी—सं० (ला०) कुहनी।

अरखुङ—सं० (कि०) खिड़की।

अरगा—सं० (कि०) घोड़े का शृंगार, आभूषण।

अरगोन—वि० (कि०) मिश्रित संतान, दोगला।

अरबा—सं० (कि०) हाथ धुलाने का पात्र।

अरलानमो—स० क्रि० (कि०) निराई करना, गोड़ाई करना।

अरि—सर्व० (ला०) कौन।

अरिकरि—अ० (ला०) अतिरिक्त।

अरूड़—सं० (कि०) चरागाह विशेष।

अरोवङख—वि० (कि०) कुरूप।

अर्क—सं० (ला०) जौ से बनी सुरा।

अलङ—अ० (कि०) दोबारा।

अलङखुह—अ० (कि०) आगे के लिए।

अलङम्या—अ० (कि०) आगामी दिन।

अलङलफमाह—स० क्रि० (कि०) दोबारा पढ़ना।

अलङलिह—अ० (कि०) फिर भी।

अलङलो—अ० (कि०) कभी भी।

अलछेरेप—अ० (कि०) और थोड़ा सा।

अलबो—वि० (कि०) निर्धन, गरीब।

अललिह—अ० (कि०) जैसा-तैसा।

अलवुङ—अ० (कि०) और, एक बार।

अलस—वि० (कि०) कच्चा।

अलसा—अ० (कि०) संपूर्ण, बिल्कुल।

अला—सर्व० (ला०) मुझे।

अलारोनिङुह—अ० क्रि० (कि०) भटकना।

अलालियोत—अ० (कि०) अब भी।

अलालिह—अ० (कि०) दे० अलालियोत।

अलाली—अ० (कि०) और भी।

अलाह—अ० (कि०) और।

अलि—वि० (कि०) मीठा।

अलिचा—वि० (कि०) मीठी चाय।

अलित—वि० (कि०) अगला, दूसरा।

अलितपिन—सं० (कि०) अन्द स्थान।
अलिह—वि० (कि०) दे० अलि।
अलुमतोई—वि० (कि०) निरुत्साह।
अलेआ—अ० (कि०) जबकि।
अलेचा—अ० (कि०) जैसा कि।
अलेतोननङलिह—अ० (कि०) जैसा भी हो।
अलेयहङख—अ० (कि०) जैसा-कैसा।
अलेयाऊ—अ० (कि०) किस प्रकार से।
अलोंग—सं० (कि०) कांटा।
अलोआं—वि० (ला०) अलवण, कम नमक वाला।
अल्जी—स० क्रि० (कि०, ला०) दरवाज़ा, खिड़की आदि खोलना।
अल्हे—वि० (ला०) गीला।
अवसेर—वि० (कि०) आधा सेर।
अवांस—सं० (ला०) अमावस्या।
अवारङ—वि० (कि०) घायल, ज़ख्मी।
अवेरङ—सं० (कि०) मामा, ससुर।
अशंक—सं० (कि०) मामा।
अशारङ—सं० (कि०) आषाढ़।
अशो—सं० (कि०) फल।
अश्चंबर—वि० (कि०) असीम।
अश्य—सं० (कि०) बकरी।
अश्यखमश्यक्ख—सं० (कि०) विपत्ति, संकट।
अश्वारी—सं० (ला०) सवारी।
असमाह—अ० क्रि० (कि०) वापस आना।
असलीकमचित—सं० (कि०) विशेष बात।
अस्केअंपी—अ० क्रि० (ला०) वापस आना।
अस्ति—अ० क्रि० (ला०) है।
अहङथमाह—स० क्रि० (कि०) उठाना, चढ़ाना।

## आ

आंउलि—सं० (ला०) अंगुलि।
आंगी—सं० (कि०) चोली।
आंतर—सं० (ला०) आंत।
आ—सं० (ला०) मुंह।
आइक—वि० (ला०) अगला।
आइद—वि० (ला०) थोड़ा।
आइबा—अ० क्रि० (ला०) आना, पहुंचना।
आइबोलबा—स० क्रि० (ला०) बुलाना।
आई—सं० (कि०) दादी।
आऊये—सं० (कि०) चाची।
आखु—सं० (ला०) आंसू।
आखुर—सं० (ला०) आंसू।
आखो—सं० (कि०) चिलमची, हाथ धोने का बर्तन।
आग—सं० (कि०) गुफा।
आगरू—सं० (कि०) Rubus Retusa.
आगुरा—वि० (ला०) अगला।
आगोत—सं० (कि०) मुंह।
आगोतक्खमाह—स० क्रि० (कि०) मुंह खोलना।
आङन—सं० (ला०) आंगन।
आङार—सं० (ला०) अंगारा, अंगार।
आची—अ० क्रि० (ला०) उठना।
आछे—सं० (कि०) लोमड़ी।
आचो—अ० (ला०) अरी, संबोधन।
आचो—सं० (कि०) बड़ा भाई।
आछे—सं० (ला०) बहिन।
आजंग—सं० (कि०) आंत।
आज—सं० (कि०) बकरा।
आजा—स० क्रि० (कि०) सुनना।
आजुत—सं० (ला०) आदत।
आणन—सं० विधिवत् न ब्याही गई स्त्री।
आणबा—स० क्रि० (ला०) लाना।
आतिक—सं० (ला०) ढक्कन।
आतिङ—सर्व० (ला०) किसको।
आतिङ—सं० (कि०) क्रियाकर्म की एक रस्म।
आते—सं० (कि०) बड़ा भाई।
आदंग—वि० (कि०) आधा।
आद्रो—सं० (कि०) अदरक।
आध—वि० (ला०) आधा।
आघुड़—अ० (ला०) पहले।
आने—सं० (कि०) मामी, सास।
आपा—सं० (कि०) ससुर, श्वशुर।
आपी—सं० (कि०) दाई, धाय।
आपोर—सं० (कि०) फर्श पर किया गया छेद जिससे ऊन कातने में सुविधा होती है।
आमा—सं० (कि०, ला०) मां।
आमाच—सं० (कि०) मौसी।
आमाजू—अ० (कि०) नम्रता का प्रदर्शन।
आम्म—सं० (ला०) मार्ग, रास्ता।
आरअग—सं० (ला०) शराब।
आरगङ—सं० (कि०) आड़ू।
आरनी—सं० (ला०) शहतीर।
आरा—सं० (कि०) 'लुगड़ी', नशीला पेय पदार्थ।
आरेरि—अ० (ला०) किसी की ओर।
आलकोलङ—सं० (कि०) झूठ, असत्य।
आलकोलस—वि० (कि०) झूठा।
आलची—स० क्रि० (ला०) खोलना।
आलबार—वि० (ला०) विश्वसनीय।
आलिङ—सं० (कि०) श्मशान।
आलीह—अ० (कि०) दोबारा, और अधिक।
आलेबिले—अ० (कि०) कठिनाई से।
आलेस—वि० (कि०) अधपका।
आलो—सं० (कि०) देवता का दोष।

आल्ले—अ० (ला०) कब।
आवा—सं० (ला०) पिता।
आवारङ्—स० क्रि० (कि०) ज़ख्मी करना।
आशङ—स० क्रि० (कि०) नई ज़मीन खोदना।
आसयाम—स० क्रि० (कि०) सहन करना, अच्छा लगना।
आसुकड—अ० क्रि० (कि०) सुख न होना।
आसे—स० क्रि० (कि०) तंग करना।
आस्के—अ० (ला०) दोबारा।
आहकुर—सं० (ला०) आंसू।
आह्—सं० (ला०) मुख।

## इ

इं—वि० (कि०) एक।
इंजुक—अ० (कि०) इस प्रकार।
इंद्रोमङ—सं० (कि०) आश्विन मास।
इकतिर—सं० (कि०) हिचकी।
इकतिल—सं० (कि०) हिचकी; ऊंचा डकार।
इकनारङ—अ० (कि०) किनारे पर, एकांत में।
इकारङ—सं० (कि०) एक समय का भोजन।
इगोल—सं० (कि०) एक माह।
इच्चाफेरा—अ० (ला०) एक बार।
इछुम—सं० (कि०) एक पूड़ी।
इछेखे—अ० (कि०) कुछ समय, थोड़ा सा।
इजन—अ० (कि०) एक बार।
इजपसी—अ० (कि०) एक साथ।
इजब—वि० (कि०) एक क्षण।
इजुआऐ—अ० (ला०) व्यर्थ, बिना मतलब के।
इठुरोए—अ० (ला०) इसलिए।
इठुछमुल—सं० (कि०) शुद्ध चांदी।
इठे—अ० (ला०) यहां।
इड्—सं० (कि०) उल्लू।
इत—वि० (कि०) एक।
इतमबङ्ह—अ० (कि०) एक की कमी।
इतलामाह—स० क्रि० (कि०) एक करना।
इद—वि० (कि०) एक।
इदी—अ० (कि०) एक ही।
इदीरोङ—वि० (कि०) एक समान।
इदे—वि० (कि०) कुछ।
इदोरमङ—सं० (कि०) आश्विन मास।
इधरी—अ० (ला०) इधर।
इन्ना—अ० (ला०) इस प्रकार।
इन्नाऐ—अ० (ला०) व्यर्थ, बिना मतलब के।
इपकसी—अ० (कि०) एक साथ।
इपड्—अ० (कि०) एकत्र।
इपिंथ—अ० (कि०) एक जगह से।
इपोटो—वि० (कि०) एक, अकेला।
इपोटोछङ्ख—वि० (कि०) इकलौता (बेटा)।
इपोलङ्खुह—अ० (कि०) एक ही जगह पर।
इफठ—अ० (कि०) एक बार।
इफठसिंह—अ० (कि०) तुरंत, एकदम।
इफठुनऊ—अ० (कि०) एक दम से।
इबेरङ—अ० (कि०) कभी-कभी।
इमा—वि० (ला०) ऐसा।
इमीक—अ० (कि०) थोड़ा सा।
इमुद—वि० (कि०) एकजुट।
इम्यां—अ० (कि०) एक समय, कभी-कभी।
इम्यांखु—वि० (कि०) पीछे का।
इम्यांलेख—अ० (कि०) कभी-कभार।
इरखिह—अ० (कि०) एक ही प्रकार का।
इरचोकत—अ० क्रि० (कि०) उत्पन्न होना।
इरया—सं० (कि०) ससुराल।
इरु—अ० (ला०) इधर।
इर्बा—सं० (कि०) दादा।
इला—सं० (कि०) एक माह।
इलारङ—सं० (कि०) एक परिधान।
इवी—सं० (कि०) दादी।
इस्ती—सं० (कि०) पसीना।

## ई

ईंग—सं० (कि०) दिल।
ईंदोरमङ—सं० (कि०) आश्विन मास।
ई—वि० (कि०) एक।
ईअ—वि० (कि०) एक।
ईक—वि० (कि०) एक।
ईकठुनऊं—अ० (कि०) तत्काल, एकदम।
इखुलीई—वि० (कि०) एकमत।
ईखोचोप—वि० (कि०) एक खुर वाला।
ईगचीं—वि० (कि०) निर्दय।
ईगुखिङ—वि० (कि०) एक मंजिला।
ईगोलडङ—सं० (कि०) एक समय का मथने हेतु दूध।
ईचलोन—वि० (कि०) प्रतिकूल।
ईच्चापल—अ० (ला०) थोड़ी देर के लिए।
ईछन—सं० (कि०) परिवार, टोली।
ईछुन—अ० (कि०) एक ढंग।
ईछुन—सर्व० (कि०) कोई-कोई।
ईछोंपू—सं० (कि०) एक गुच्छा।
ईछोम्योअ—सं० (कि०) एक गुच्छा।
ईजऊ—अ० (कि०) एक बार।
ईजब—अ० (कि०) एक बार।
ईजागाऊ—वि० (कि०) स्थिर।
ईजाजीए—सं० (कि०) अभिवादन।

ईज़ित—सं० (कि०) इज्ज़त, मान।
ईजुअ—अ० (ला०) इस प्रकार।
ईटुंरा—सं० (कि०) ईंट का पत्थर।
ईत—वि० (कि०) एक।
ईतमी—सं० (कि०) रीछ।
ईतलमाह—स० क्रि० (कि०) एक करना।
ईथोकसप—वि० (कि०) एक मंज़िला।
ईदरुखिहछलुख—सं० (कि०) अभिन्न वस्तु।
ईपिन—अ० (कि०) एक जगह।
ईपिनलामाह—स० क्रि० (कि०) इकट्ठा करना।
ईपिनवङमाह—स० क्रि० (कि०) इकट्ठा करना।
ईफठसिख—अ० (कि०) एकदम, तत्काल।
ईफोक—अ० (कि०) एक तरफ।
ईबुह—अ० (कि०) एक बार।
ईबुङ्ख-ईबुङ्ख—अ० (कि०) कभी-कभी।
ईबेरङ—अ० (कि०) एक बार।
ईमची—सं० (कि०) वैद्य।
ईमिग—स० क्रि० (कि०) पूछना।
ईरुखसा—वि० (कि०) एक समान।
ईरुखिह—वि० (कि०) एक समान।
ईरूखी—वि० (कि०) समानान्तर।
ईशिप—अ० (कि०) पलभर।
ईसानउं—अ० (कि०) एक ही सांस में।
ईसुतपा—सं० (कि०) समान प्रवृत्ति।
ईहत—वि० (कि०) एक।

## उ

उंगपा—अ० क्रि० (कि०) ऊंघना।
उ—सं० (कि०) फूल।
उइये—वि० (ला०) अजीब सा।
उउऊ—सं० (कि०) खिला हुआ फूल।
उकपां—सं० (कि०) क्रोध।
उखसुमाह—अ० क्रि० (कि०) चेतना आना।
उखा—सं० (कि०) कांटेदार झाड़ी का एक फल विशेष।
उखाथो—सं० (कि०) नेतागिरी।
उगाड़बा—स० क्रि० (ला०) खोलना।
उगोतछुतमाह—स० क्रि० (कि०) मुंह बांधना।
उघाईबा—स० क्रि० (ला०) खोलना।
उङ—सर्व० (कि०) कौन।
उङआ—सर्व० (कि०) जिसका।
उङई—सर्व० (कि०) कोई सा।
उङईअ—सर्व० (कि०) कोई।
उङईतराह—सर्व० (कि०) किसी को।
उङखर—सं० (कि०) चौलाई।
उङफो—वि० (कि०) ईमानदार।
उङेरबा—स० क्रि० (ला०) निगलना।
उच—सं० (कि०) फूल।
उचणगिरी—सं० (कि०) कंकर-खेल।
उचलागाह—सं० (कि०) प्रेत-प्रकोप।
उचा—सं० (कि०) झाड़ी विशेष जिसके फूल की चाय पी जाती है।
उचामिल—वि० (कि०) कलाकृत।
उचेचै—अ० क्रि० (कि०) मोहित होना।
उचो—अ० क्रि० (कि०) रूठना।
उचोख-मुचोख—वि० (कि०) रंग-बिरंगी।
उच्चेओ—अ० (कि०) उतना ही।
उछले—वि० (कि०) उच्छृंखल।
उजलङ—सं० (कि०) श्रमदान।
उजिबा—अ० क्रि० (ला०) उगना।
उजुरलमाह—स० क्रि० (कि०) विरोध प्रकट करना।
उजोसुजा—वि० (कि०) भड़कीला। सं० साज शृंगार।
उठख्याल—वि० (कि०) ऊटपटांग।
उठबा—अ० क्रि० (ला०) उठना।
उठाइबा—स० क्रि० (ला०) उठाना।
उड़कबा—अ० क्रि० (ला०) कूदना।
उड़तमतमाह—स० क्रि० (कि०) नाश करना।
उडारबा—स० क्रि० (ला०) उड़ाना।
उडुबा—अ० क्रि० (ला०) उड़ना।
उण—वि० (कि०) पांच।
उणी—वि० (ला०) उन्नीस।
उणू—सं० (ला०) खिड़की।
उतङ—सं० (कि०) देवता के भंडार में अन्न का योगदान।
उथोर—वि० (कि०) विपरीत।
उदङ—सं० (कि०) धन।
उदम—सं० (कि०) एकता।
उदानङ—सं० (कि०) विवाह के समय संबंधियों द्वारा कन्या को दी जाने वाली रकम।
उदुखह—अ० क्रि० (कि०) हठ करना।
उदुममतोई—सं० (कि०) अव्यवस्था।
उदुमलसाह—स० क्रि० (कि०) एकता करना।
उदेक्सपयोह—अ० (कि०) उसी समय।
उन—स० क्रि० (कि०) मांगना, लेना।
उनालङ—सं० (कि०) मालिश का तेल।
उपजाइबा—स० क्रि० (ला०) उगाना।
उपड़पु—स० क्रि० (कि०) खींचना।
उपने—अ० क्रि० (कि०) उदय या प्रस्फुटित होना।
उपमाह—स० क्रि० (कि०) खींचना।
उपशबा—अ० क्रि० (ला०) फूलना, सूजना।
उपासङ—सं० (कि०) उपवास, अन्न के अभाव में भूखा रहना।
उपेरिबा—स० क्रि० (ला०) निगलना।
उफा—सं० (ला०) उबाल।
उबलबा—अ० क्रि० (ला०) उबलना।
उबालिबा—स० क्रि० (ला०) उबालना।

उमज़त— सं० (कि०) उपलामा, छोटा लामा।
उमदोहअंथमाह— अ० क्रि० (कि०) आगे आना।
उमासुंचो— सं० (कि०) कल्पना।
उरच— सं० (कि०) कोठार।
उरमाह— स० क्रि० (कि०) धोना।
उरमिह— वि० (कि०) धोया हुआ।
उरवायो— अ० क्रि० (कि०) अप्रिय रूप से आगे आना।
उलपङ— सर्व० (कि०) हम लोग।
उलमतोई— वि० (कि०) उत्साहहीन।
उल्टवाश— सं० (कि०) मृत्यु के बाद के पंद्रह दिन।
उल्ह— सं० (ला०) थन।
उवारा— सं० (ला०) छिद्र।
उसङमटिङ— सं० (कि०) पुण्यभूमि।

## ऊ

ऊ— सं० (कि०) फूल।
ऊचाहमाह— स० क्रि० (कि०) वर्णन करना।
ऊड़ा— सं० (ला०) फूल।
ऊमो— अ० क्रि० (कि०) फूलना।
ऊरनू— सं० (ला०) भेड़ का बच्चा।

## ए

एकधि— अ० (ला०) एकदा, एक दिन।
एकाशङ— वि० (कि०) एकमात्र, इकलौता।
एके— अ० (कि०) साथ।
एकोआद— वि० (ला०) डेढ़।
एकिक घाटगे— वि० (ला०) समान।
एतोख— वि० (ला०) इतना।
एनङ— सं० (कि०) थन।
एने— सं० (कि०) भाभी।
एराइंके— सं० (ला०) दोपहर।
एराई— सं० (ला०) मध्याह्न का भोजन।
एरिङ— वि० (ला०) ऐसा।

## ऐ

ऐच्छी— वि० (कि०) अकेला।
ऐण— सं० (कि०) बिल्ली की आकृति का एक पक्षी।
ऐतवारंग— सं० (कि०) रविवार।
ऐदतचीक— अ० (ला०) अभी तक।
ऐमू— सं० (कि०) जंगली बैल।
ऐमों— सं० (कि०) जंगली गाय।
ऐरयाम— स० क्रि० (कि०) करघे में ताना चढ़ाना।
ऐस— सर्व० (ला०) इस।
ऐसा— वि० (कि०) उत्तम, बढ़िया।

## ओ

ओंचे— वि० (कि०) इतना।
ओंछुससीमाह— अ० क्रि० (कि०) भूख से मरना।
ओंठमाह— अ० क्रि० (कि०) भूख लगना।
ओंठी— वि० (कि०) भूखा।
ओंठुससीमाह— अ० क्रि० (कि०) भूख से मरना।
ओंने— सर्व० (कि०) ये (आदमी)।
ओंनेऊ— सर्व० (कि०) उनका।
ओंतोग— सं० (कि०) रहस्य।
ओंथ— सं० (कि०) भेद।
ओंथखेमाह— स० क्रि० (कि०) भेद बताना।
ओंथरे— अ० (ला०) तुरंत, एकदम।
ओंफ— सं० (कि०) मार्ग।
ओंफ कोचङ— सं० (कि०) भयानक मार्ग।
ओ— सर्व० (ला०) वह। अ० एवं, तथा।
आ— सं० (कि०) पति।
ओई— सर्व० (कि०) "यह" का कारकीय रूप।
ओऊ— सं० (कि०) पत्ता, चारे के पत्ते।
ओकङ— सं० (कि०) माहिलाओं की समूह रूप में देवता को पूजने की क्रिया।
ओकनाट— वि० (कि०) ऊंचाई में पकड़ से बाहर, प्रांशुलभ्य।
ओकल— सं० (कि०) अक्ल।
ओखअग— सर्व० (ला०) हम लोग।
ओखरङ— सं० (कि०) उपकरण विशेष।
ओखरङ— सं० (कि०) अक्षर।
ओखा— सं० (कि०) दोष, ग्रामीण देवता का दोष।
ओखि— सर्व० (ला०) हमारा।
ओखोर्मी— वि० (कि०) मूर्ख।
ओग— अ० (कि०) नीचे।
ओगतु— स० क्रि० (कि०) झेलना।
ओङक्या— सं० (कि०) कीड़ा-मकोड़ा।
ओङखक्वयमाह— अ० क्रि० (कि०) कीड़े लगना।
ओङखक्वयिहश्या— सं० (कि०) कीड़ों वाला मांस।
ओङखजई— वि० (कि०) कीट भक्षक।
ओङगसङ— सं० (कि०) अमावास्या।
ओचक्यामाह— स० क्रि० (कि०) रोकना।
ओच्चीकोन— सं० (कि०) रात का भोजन।
ओछङ— अ० (कि०) आगामी तीसरा वर्ष।
ओछाउनऊ— अ० (कि०) इनमें से।
ओछारङ— सं० (कि०) खेत में वृक्ष की छाया।

ओजड·—सं० (कि०) बधाई।
ओजारड·—वि० (कि०) चोटग्रस्त।
ओजिई—सर्व० (कि०) यह।
ओझामाह—अ० क्रि० (कि०) शिशु का किलकारी भरना।
ओझालबा—स० क्रि० (ला०) उतारना।
ओटक्यामाह—स० क्रि० (कि०) रोकना।
ओटेरबा—स० क्रि० (ला०) उलटाना।
ओटोंग—सं० (कि०) डब्बा।
ओठ—सं० (कि०) धागा।
ओठपन्माह—स० क्रि० (कि०) धागा कातना।
ओठे—अ० (ला०) वहां।
ओडना—अ० कि० (ला०) झुकना।
ओढोहोमशियत—अ० (कि०) उससे पूर्व।
ओत—सर्व० (कि०) आप।
ओतर—सं० (कि०) सुलफा।
ओतरा—वि० (कि०) इतना।
ओतोफ—सं० (कि०) भेद।
ओथक—सं० (कि०) दो बैल।
ओथमाह—अ० क्रि० (कि०) वचनबद्ध होना।
ओद—सर्व० (कि०) वह।
ओदड·—अ० (कि०) वहां से।
ओदथ—अ० (कि०) दे० ओदड·।
ओदम्यां—अ० (कि०) उस दिन।
ओदायोह—अ० (कि०) वहीं पर।
ओदो—सर्व० (कि०) वही।
ओदोऊकोता—अ० (कि०) तदनुसार, उसी तरह।
ओदोख—अ० (कि०) इसलिए।
ओदोख—सर्व० (कि०) उसने।
ओदोचेरिङ·खोह—अ० (कि०) निरंतर।
ओदोनऊ—सर्व० (कि०) उसमें।
ओदोपड·—सर्व० (कि०) वे लोग।
ओदोमोह—सर्व० (कि०) वही।
ओदोशियोह—अ० (कि०) वैसा ही।
ओदोसपरिङ·—अ० (कि०) उस समय।
ओधा—सं० (कि०) बड़ा छेद।
ओन—सं० (कि०) भूख।
ओन—अ० क्रि० (कि०) सोना।
ओन—सं० (कि०) नींद।
ओनउपासड·—वि० (कि०) भूखा।
ओनतडु·—अ० क्रि० (कि०) नींद लगना।
ओनते—सर्व० (कि०) यह औरत।
ओनथ—अ० (कि०) वहां से।
ओनथओया—अ० (कि०) वहां से यहां।
ओनथोरिङ·—अ० (कि०) उस पर।
ओननुआं—अ० (कि०) वहां।
ओनसीमाह—अ० क्रि० (कि०) भूख न होना।
ओनायोह—अ० (कि०) नहीं।
ओनालोख—अ० (कि०) इधर से।
ओनिह—वि० (कि०) भूखा।
ओनी—अ० (ला०) के लिए।
ओनो—सर्व० (कि०) वह।
ओनोऊकोता—अ० (कि०) इस तरह।
ओनोओपड·—अ० (कि०) उसके नीचे।
ओनोमनड·—अ० (कि०) इसके सिवाय।
ओनोयोह—सर्व० (कि०) यही।
ओनोलिह—अ० (कि०) यह भी।
ओन्पी—वि० (कि०) नीला।
ओपड·—अ० (कि०) नीचे।
ओपड्·ख—अ० (कि०) नीचे से।
ओपड्·थोरिङ·—अ० (कि०) नीचे-ऊपर।
ओपहड·ख—अ० (कि०) नीचे से।
ओपा—अ० (कि०) बायीं तरफ।
ओपा-थोपा—अ० (कि०) नीचे-ऊपर।
ओमेतछड·—सं० (कि०) सहेलियां।
ओम—सं० (कि०) रास्ता।
ओमती ओसना—सं० (कि०) मार्ग।
ओमपाश—अ० (कि०) आगे का भाग।
ओमफुल—सं०(कि०) मार्ग का राशन।
ओमलाए—अ० (कि०) दोपहर तक।
ओमशिह झपतिङ·—अ० (कि०) आगे-पीछे।
ओमसी—अ० (कि०) आगे।
ओमा—सं० (कि०) दूध।
ओमी—अ० (कि०) पुराना समय।
ओमेत—सं० (कि०) सहेली।
ओमेतछड्·ख—सं० (कि०) मित्र।
ओमेतलमाह—स० क्रि० (कि०) हाथ बंटाना।
ओयथ—अ० (कि०) यहां से।
ओया—अ० (कि०) इधर, यहां।
ओयातामाह—स० क्रि० (कि०) यहां रखना।
ओरख्यामाह—स० क्रि० (कि०) परीक्षा लेना।
ओरड·—सं० (कि०) रंगा हुआ गुच्छा, रंगीन धागे।
ओरड·—वि० (कि०) खानदानी।
ओरछे—सं० (कि०) मेहरबानी, कृपा।
ओरछेलोमाह—स० क्रि० (कि०) खुशामद करना।
ओरतमाह—स० क्रि० (कि०) पैरों में पड़ना।
ओरथबान—स० क्रि० (कि०) प्रार्थना करना।
ओरमि—सं० (कि०) एक त्योहार।
ओरमीक—सं० (कि०) देवता का एक त्योहार।
ओरमीकशु—सं० (कि०) देवता।
ओरस—सं० (कि०) बढ़ई।
ओरिस—सं० (कि०) बढ़ई।
ओलगो—सं० (कि०) अन्न विशेष।
ओलड·—सं० (कि०) परछाई।
ओलडो—सं० (कि०) अपराध।
ओलड़ो—वि० (कि०) मुश्किल।
ओलाड·—सं० (कि०) परछाई।

ओशांक— सं० (कि०) ओस।
ओशित— सं० (ला०) दवाई, औषध।
ओशियोह— अ० (कि०) ऐसा ही।
ओशिह— अ० (कि०) ऐसा।
ओशिहमेन— अ० (कि०) ऐसा नहीं।
ओशीकहङ्ख— अ० (कि०) ऐसा जैसा।
ओश्य— अ० (कि०) किस ओर।
ओश्यिह— अ० (कि०) इस तरफ।
ओसकों— अ० (कि०) सामने।
ओसपरिङ— अ० (कि०) उस समय।
ओसपरिङोह— अ० (कि०) क्षणभर में।
ओसबा— अ० क्रि० (ला०) उतरना।
ओसम— स० क्रि० (कि०) उड़ेलना।
ओसवयो— सं० (कि०) ठोड़ी।

## औ

औंदरस— सं० (कि०) अंदरस।
औंबा— अ० (कि०) हां-हां।
औईपङ— सर्व० (कि०) ये लोग।
औम— सं० (कि०) दे० ओम।
औरङ— सं० (कि०) खानदान, वंश।
औरछे— सं० (कि०) निवेदन।
औरजी— सं० (कि०) आवेदन पत्र, प्रार्थना पत्र।
औशङ— सं० (कि०) ओस।

## क

कंकनी— सं० (कि०) विशेष प्रवेश द्वार।
कंगदरू— सं० (कि०) बाजू।
कंगपा— सं० (कि०) पैर।
कंग्युरतंग्युर— सं० (कि०) दो बौद्ध ग्रंथ विशेष।
कंटियास— सं० (कि०) Lonicera angustifolia.
कंठी— सं०(कि०) जपमाला।
कंडेरू— सं० (कि०) Ilax depyrlna.
कंदार— सं० (कि०) Carnus macrophytna.
कंबळ— सं० (ला०) कंबल।
कईदालमाह— स० क्रि० (कि०) रस्म निभाना।
कउणी— सं० (ला०) कंगनी, एक प्रकार का अन्न विशेष।
कऊं— सर्व० (ला०) कौन।
कओथग— सं० (कि०) कंघी।
ककरङ— सं० (कि०) ककड़ी, खीरा।
ककरा— सं० (कि०) लकड़ी।
ककरूं— सं० (कि०) प्रातः काल सर्दी से ज़मीन के जम जाने का भाव।
कका— सं० (ला०) भाई।
ककाई— सं० (ला०) भाभी, बड़ी ननद।
ककुबाया— सं० (कि०) एक लकड़ी का नाम।
ककूठ— सं० (कि०) एक फल विशेष।
ककोड़ा— सं० (कि०) जंगली करेला।
कक्शोटी— सं० (ला०) कोयल।
कखलिईचम्माह— स० क्रि० (कि०) आलिंगन करना।
कखलिईयोलमाह— स० क्रि० (कि०) गला काटना।
कखलिऊकोंठी— सं० (कि०) गले का हार।
कखलिऊचोपाअ— सं० (कि०) धड़ से ऊपर।
कखलीईचुम्माह— अ० क्रि० (कि०) गले मिलना।
कखलीचुम्माह— स० क्रि० (कि०) गला पकड़ना।
कग— सं० (कि०) कौवा।
कगडिङ— सं० (कि०) हड्डी का बना वाद्ययंत्र।
कगळी— सं० (कि०) कागज़-पत्र।
कङ— सं० (कि०) मज्जा।
कङ्दुङ— सं० (कि०) टांग की हड्डी का बना वाद्ययंत्र।
कङ्पा— सं० (कि०) पांव, पैर।
कङ्ला— सं० (कि०) हाथ-पैर।
कङ्लाऊथुई— वि० (कि०) लंबे-हाथ पैर वाला।
कङ्लिङ— सं० (कि०) दे० कङदुङ।
कङ्शीर— सं० (कि०) गरुड़।
कङ्सीरङ— सं० (कि०) चारपाई।
कङ्सो— सं० (कि०) एक बौद्ध पूजा।
कङ्हुङ— सं० (कि०) पैरों की हड्डी।
कङ्ख— वि० (कि०) अकेला, एक।
कङ्खत— वि० (कि०) जोड़े में से एक।
कङ्खोनुओपङ— अ० (कि०) पैर के नीचे।
कङ्छप— सं० (कि०) बदला।
कङ्जैन— वि० (कि०) बिना पैर वाला।
कच— सं० (कि०) अखरोट।
कचपाङ— सं० (कि०) अखरोट का पेड़।
कचबीली— सं० (कि०) अखरोट की दातुन।
कचरङ— सं० (कि०) एक रोग का नाम।
कचस— वि० (कि०) कच्चा।
कचा— सं० (कि०) समाचार।
कचुंख— सं० (कि०) घोड़े या गधे का बच्चा।
कचेड़ा— सं० (कि०) खमीर।
कच्छङे— सं० (ला०) किनारा।
कच्छा— सं० (ला०) बगल, कक्ष।
कछपाच— सं० (ला०) कुक्षि, कोख।
कछिजई— वि० (कि०) पागल।
कछिजामाह— अ० क्रि० (कि०) पागल होना।
कज— सं० (कि०) झिझक, संकोच, लज्जा।
कजकण— वि० (कि०) झेंपने वाली स्त्री।
कजङ— सं० (कि०) कारण।
कजल— सं० (कि०) काजल।
कञ्यां— सं० (ला०) कन्या।
कटबोठङ— सं० (कि०) अखरोट का वृक्ष।

कटु—सं० (ला०) बच्चा, बच्ची, लड़का, लड़की।
कटेकी—वि० (ला०) कड़वा।
कट्टामाह—स० क्रि० (कि०) ढिंढोरा पीटना।
कठ—वि० (कि०) आरक्षित।
कठकरिबा—स० क्रि० (ला०) एकत्रित करना।
कठपङ—सं० (कि०) अखरोट का पेड़।
कठो—सं० (ला०) काष्ठ।
कड़कचा—सं० (कि०) झूला, हवाई पुल।
कड़बी—सं० (कि०) Picrorrbiza kuroar.
कड़थूम—सं० (कि०) जुराब।
कड़ा—सं० (ला०) मटर।
कडोई—सं० (कि०) दे० कड़बी।
कणाक—सं० (ला०) आटा।
कणङपोच—सं० (कि०) कान का बींधा जाने वाला भाग, कान का निचला नर्म भाग।
कणसी—सं० (ला०) रेती।
कणि—सं० (ला०) अनाज के टूटे हुए दाने।
कत—सं० (कि०) आवाज़।
कतकनिह—वि० (कि०) कोलाहल करने वाला।
कतग्यपये—वि० (कि०) बुलाने वाला।
कतङ—सं० (कि०) कार्तिक मास।
कतचन—वि० (कि०) ध्वनियुक्त।
कतटामाह—स० क्रि० (कि०) आवाज़ लगाना।
कतपा—वि० (कि०) द्विभाषी।
कतपालमाह—स० क्रि० (कि०) बात बनाना।
कतबा—स० क्रि० (ला०) कातना।
कतमत—सं० (कि०) भाषा। कीर्ति।
कतमरिनङग्रेप—सं० (कि०) सुरीले शब्दों वाला गीत।
कतमाह—स० क्रि० (कि०) करवाना।
कतरंपतरं—अ० (कि०) ऐसा-वैसा।
कतर—सं० (ला०) अंगरखा।
कतरङ—सं० (कि०) कस्तूरी।
कतरीथ—सं० (कि०) कपड़े की लीर।
कतशेर—सं० (कि०) सुरीला स्वर।
कतह—अ० (कि०) समान, सदृश।
कतहनमाह—अ० क्रि० (कि०) खटका करना; उच्चारण करना।
कतांह—वि० (कि०) अनुसार।
कतारो—सं० (कि०) एक फल विशेष।
कतिपह—वि० (कि०) अति पीड़ित।
कतु—सं० (कि०) ऊन काटने की कैंची।
कतोर—सं० (कि०) आपत्ति।
कत्यारो—सं० (कि०) वन्य आड़ू।
कद—सं० (कि०) वाणी, भाषा।
कदचिग—सं० (कि०) पल।
कदो—स० क्रि० (कि०) लाना।
कदोमकुदोम—स० (कि०) जबरदस्ती।
कन—सं० (कि०) व्यंजन।
कन—सर्व० (कि०) तेरा।
कनकंथमाह—स० क्रि० (कि०) दिखाना।
कनङ—सं० (कि०) कान।
कनङपोच—सं० (कि०) कान का निचला नर्म भाग।
कनची—सं० (कि०) व्यंजन, साग-सब्जी।
कनताई—सं० (कि०) कान की बाली।
कननू—स० क्रि० (कि०) सींग मारना।
कनमाये—अ० (कि०) दिखावा मात्र।
कनमाह—स० क्रि० (कि०) दिखाना।
कनसी—सं० (कि०) रेती।
कनारे—अ० (कि०) किनारे पर।
कनिङ—सं० (कि०) ओखली।
कनिया—अ० क्रि० (कि०) तंग होना।
कनु—सर्व० (ला०) तेरा।
कनुदार—वि० (कि०) साहसी।
कनुहपिन्माह—स० क्रि० (कि०) प्रस्तुत करना।
कन्नु—स० क्रि० (कि०) लाना।
कन्माह—सं० (कि०) प्रदर्शनी।
कप—सं० (कि०) समय।
कपचे—सं० (कि०) चिमटा।
कपटो—सं० (कि०) शीशे का खोपड़ी जैसा बर्तन।
कपरा—सं० (कि०) वस्त्र।
कपली—सं० (कि०) खोपड़ी।
कपा—सं० (ला०) सिर।
कपू—सं० (कि०) चर्बी और आटे द्वारा तैयार भोजन।
कपे—सं० (कि०) पुस्तक।
कपो—सं० (कि०) पकवान विशेष।
कपोअ—सं० (कि०) मांसयुक्त भोज्य पदार्थ।
कफफुङ—अ० (कि०) कभी-कभी।
कफरा—सं० (कि०) कपड़ा।
कफा—सं० (ला०) रुई।
कबशकुला—वि० (कि०) झूठा, असत्यभाषी।
कबु—वि० (कि०) काबू, नियंत्रण।
कबुगबुअ—वि० (कि०) खारा।
कबुदार—वि० (कि०) नियंत्रक।
कबुलमाह—स० क्रि० (कि०) काबू करना।
कमख्वङ—सं० (कि०) अनावश्यक कार्य।
कमङ—सं० (कि०) कार्य।
कमचा—अ० क्रि० (कि०) सूखना।
कमचित—सं० (कि०) विशेष बात।
कमचित चलमउलुख—सं० (कि०) भाषा शैली।
कमचितचलामाह—स० क्रि० (कि०) बात चलाना।
कमचितचलीतः—वि० (कि०) बातूनी।
कमचितचुऊ—सं० (कि०) वार्तालाप।
कमचिततुकमचित—अ० (कि०) बात की बात।
कमचितवोदामाह—स० क्रि० (कि०) बात बढ़ाना, तूल देना।
कमचितहनमान—स० क्रि० (कि०) दोषारोपण करना।
कमचितहलामाह—स० क्रि० (कि०) असत्य कथन से कलह

कराना।
**कमचितुज्वारहनमाह**— स० क्रि० (कि०) बात को फैलाना।
**कमचितुपेदो**— सं० (कि०) बात का उदाहरण।
**कमचितुसशुरमाह**— स० क्रि० (कि०) बातों से भ्रमित करना।
**कमनाह**— वि० (कि०) कुछ खुला हुआ।
**कमपटी**— वि० (कि०) बांझ।
**कमपूरड**— वि० (कि०) एकांत, निर्जन।
**कमपूरड**— सं० (कि०) निष्कासन।
**कमपो**— वि० (कि०) सूखा।
**कमफतिड**— सं० (कि०) पीली मिट्टी।
**कमफमाहलोई**— वि० (कि०) शीघ्र संतुष्ट होने वाला।
**कमबणिड**— सं० (कि०) मिट्टी के पात्र।
**कममाटिड**— सं० (कि०) चिकनी मिट्टी।
**कमर**— सं० (ला०) कंधा।
**कमलोटंख**— सं० (कि०) भाट।
**कमाइबा**— स० क्रि० (ला०) कमाना।
**कमार**— सं० (ला०) दे० कमर।
**कमीच**— सं० (ला०) कमीज़।
**कमे**— अ० (कि०) अभिवादन शब्द।
**कम्म**— सं० (कि०) लिपाई की लाल मिट्टी।
**कयुरमाह**— स० क्रि० (कि०) घुमाना।
**कयोकुकरी**— सं० (कि०) मुर्गी ।
**कर**— सं० (कि०) भेड़।
**कर**— स० क्रि० (कि०) फंसाना।
**कर**— सं० (कि०, ला०) तारा।
**करक**— सं० (कि०) बेल्ट, पेटी।
**करकणा**— सं० (कि०) Andrachne cordifalia.
**करकी**— सं० (कि०) Gentiana kurroo.
**करखाच**— सं० (कि०) भेड़ का बच्चा।
**करगुल**— सं० (कि०) चांदी का प्याला।
**करचा**— सं० (कि०) तारों का समूह।
**करची**— सं० (कि०) कलछी।
**करचेन**— सं० (कि०) ध्रुव तारा।
**करचोद**— सं० (ला०) शुभ अवसर पर दिया जाने वाला उपहार इत्यादि।
**करछक**— सं० (कि०) विषयसूची।
**करछड**— सं० (कि०) भेड़ का बच्चा।
**करदा**— सं० (कि०) उल्कापात।
**करनोल**— सं० (कि०) Roylea Calycina.
**करपो**— वि० (कि०) सफेद।
**करम**— स० क्रि० (कि०) लाना।
**करमड**— सं० (कि०) कर्म।
**करमा**— सं० (कि०) तारा।
**करमा**— सं० (कि०) समय।
**करमाख**— सं० (कि०) टूटने वाला तारा।
**करमुह**— स० क्रि० (कि०) लाना।
**करयोल**— सं० (कि०) प्याला, चषक।
**करवो**— वि० (कि०) श्वेत, सफेद।
**करशें**— वि० (कि०) तुला हुआ।
**करश्युप**— सं० (कि०) प्याला रखने का पात्र।
**करसी**— सं० (कि०) सफेद मिट्टी।
**करा**— सं० (ला०) बाल।
**कराई**— सं० (कि०) कड़ाही।
**कराबी**— अ० क्रि० (ला०) रोना।
**करामल**— सं० (कि०) Populus Ciliata.
**करिअ**— स० क्रि० (कि०) ले आना ।
**करिआर**— सं० (ला०) प्रतिज्ञा, वचन।
**करिबा**— स० क्रि० (ला०) करना।
**करिस**— सं० (कि०) निचोड़।
**करिहम्जो**— सं० (ला०) कबूतर।
**करीनास**— अ० (कि०) क्रमशः।
**करीबा**— सं० (कि०) Cornus Capitata.
**करु**— सं० (कि०) तकला।
**करुन**— सं० (ला०) 'चेरी' प्रजाति का एक जंगली फल।
**करुहामाह**— स० क्रि० (कि०) फंसाए रखना।
**करेठु**— सं० (ला०) कड़ाही।
**करोंक**— सं० (ला०) चौकीदार।
**करोद**— सं० (ला०) आरी।
**करोदर**— वि० (ला०) भारी।
**कल**— सं० (ला०) लगाम।
**कल**— स० क्रि० (कि०) लादना।
**कल**— सं० (ला०) खिड़की ।
**कलकाथामा**— सं० (कि०) कलियुग।
**कलकाल**— सं० (कि०) दे० कलकाथामा।
**कळगी**— सं० (कि०) 'बाथू' अन्न की एक किस्म।
**कलछड**— सं० (कि०) अंतिम संतान।
**कलछनड**— अ० (कि०) प्रातःकाल।
**कलजड**— वि० (कि०) भाग्यशाली।
**कळजा**— सं० (ला०) कलेजा।
**कलटीरी**— सं० (कि०) Spiraea Lindleyana.
**कलटुग**— सं० (कि०) फावड़ा।
**कलटू**— सं० (कि०) दे० कलटुग।
**कलथानड**— सं० (कि०) ऊषाकाल।
**कलथो**— सं० (कि०) सिर की चोटी।
**कलबूत**— सं० (ला०) जूते का फर्मा।
**कलबू**— सं० (कि०) दूसरी फसल।
**कळम**— सं० (ला०) कलम।
**कलमाह**— स० क्रि० (कि०) लादना।
**कलवा**— सं० (कि०) ज़माना, युग।
**कलसाल**— सं० (कि०) खरीफ की फसल।
**कला**— सं० (कि०) भाग।
**कलाअ**— सं० (कि०) कीचड़।
**कलाथामाह**— अ० क्रि० (कि०) भाग लेना।
**कलानिड**— सं० (कि०) सिर का एक बाल।
**कलाहुश्यमाह**— अ० क्रि० (कि०) कीचड़ लगना।

कली—सं० (कि०) मूत्र।
कली—सं० (ला०) कालीन।
कलुहृपिन्माह—स० क्रि० (कि०) साथ भेजना।
कवनी—सं० (कि०) दे० काउणी।
कवा—सं० (कि०) खंभा, स्तंभ।
कवाशङ·—अ० क्रि० (कि०) जोड़ टूटना।
कशङ·—सर्व० (कि०) हम दो।
कशत्यांग—सं० (कि०) Indigofera habepetala.
कशपोत—वि० (कि०) गंजा।
कशम—सं० (कि०) पशु युद्ध।
कशा—सं० (कि०) प्यास।
कशा—वि० (ला०) कसैला।
कशा—सर्व० (कि०) हम लोग।
कशीई—सं० (कि०) चकमक पत्थर।
कशुवश—सं० (कि०) भांग के पौधे के रेशे से बनी रस्सी।
कशो—सर्व० (कि०) हमारा।
कस—सर्व० (कि०) तूने
कसम—स० क्रि० (कि०) मिलाना ।
कसमीरा—सं ० (ला०) मशीनी गर्म कपड़ा, कश्मीर का बना कपड़ा।
कसशीस—वि० (कि०) मिला हुआ।
कसुम—सं० (ला०) शपथ।
कहमु—वि० (ला०) भारी।
कहम्मां—अ० क्रि० (कि०) संतोष करना।
कहां—सं० (कि०) भोजन।
कही—सं० (ला०) फावड़ा।
कहुत—स० क्रि० (कि०) बालों में तेल लगाना।
कां—सं० (ला०) अंधा।
कांगणु—सं० (ला०) कंकण।
कांछोटी—सं० (कि०) कनिष्ठ अंगुली।
कांथी—सं० (कि०) Indigofera dosna, Indigofera pulchella.
का:—सं० (कि०) अकाल।
का—सं० (कि०) खंभा।
का—सर्व० (कि०) तू।
का—सं० (कि०) अखरोट।
का—सं० (कि०) Juglans regia.
काअमाह—स० क्रि० (कि०) रोकना।
काइट—सं० (ला०) चाबी।
काईतेया—वि० (कि०) जांचने वाला।
काउं—अ० (ला०) कौन सा।
काउ—सर्व० (ला०) कौन।
काउबा—स० क्रि० (ला०) पहचानना।
काकच—सं० (कि०) गर्दन।
काकल—सं० (ला०) छिपकली।
काका—सं० (ला०) भाई।
काका—सं० (ला०) बुआ का पुत्र।
काकुल—सं० (ला०) छिपकली की तरह का जीव।
काक्योन—सं० (कि०) निंदा, गाली।
काक्योन—सं० (कि०) अभियोग।
काख—वि० (कि०) कड़वा।
काख—सं० (कि०) काकविष्ठा।
काखरीड·—सं० (कि०) ककड़ी, खीरा।
काखरेस—सं० (कि०) हिरण की जाति का जंगली जानवर।
काखेमाह—स० क्रि० (कि०) आज्ञा देना।
कागछड·—सं० (कि०) कौए का बच्चा।
कागली—सं० (कि०) कागज़।
काग्च—सं० (कि०) गर्दन।
काग्यप—स० क्रि० (कि०) पुकारना।
काडे·—सं० (ला०) कंघा।
काचा—सं० (कि०) संदेश।
काचुख—सं० (कि०) घोड़े का बच्चा।
काचू—वि० (ला०) कच्चा।
काछा—वि० (ला०) समीपस्थ।
काजड·—सं० (कि०) कारण।
काजुल—सं० (ला०) काजल।
काञ—स० क्रि० (कि०) खोलना।
काटबा—स० क्रि० (ला०) काटना।
काटयागू—स० क्रि० (कि०) दे० काटयाम।
काटयाम—स० क्रि० (कि०) काटना।
काठ—सं० (कि०) लकड़ी की कलछी।
काठुहृबोत—सं० (कि०) अखरोट का छिलका।
काठुहृमति—सं० (कि०) अखरोट का तेल।
काठेस—वि० (कि०) कठिन।
काठो—सं० (ला०) लकड़ी।
काडू—सं० (ला०) चूड़ियां।
कातिड·—सं० (कि०) कार्तिक।
कातुर—सं० (ला०) अंगरखा, कोट।
काथड·—सं० (कि०) कंघी।
काथी—सं० (कि०) दे० कांथी।
काद—सं० (कि०) दे० कद।
कादमादय—सं० (कि०) अल्पदृष्टि।
कान—सं० (कि०) सब्जी।
कान—सं० (ला०) तीर।
कानड·—सं० (कि०) अंधापन।
कानड·चाथ—सं० (कि०) मूसल।
कानड·ख—सं० (कि०) कान का मैल।
कानड·खोरी—वि० (कि०) कान का कच्चा।
कानजिडा—सं० (कि०) कान का निचला भाग।
कानिड·मिक—अ० क्रि० (कि०) उकता जाना।
कानिचिक—सं० (कि०) कटे हुए बकरे का मध्य भाग
कानीड·—सं० (कि०) तेल निकालने की ओखली।
कानीडिईमी—वि० (कि०) समान विचार वाला।
कानीमडिई—वि० (कि०) परस्पर विरोधी।
कानुए—वि० (कि०) इक्यानबे।
काने—सं० (कि०) कंधे।

कानो— वि० (कि०) अंधा।
कानोहशु— सं० (कि०) अंधापन।
कापादोचे— सं० (कि०) परिणाम।
काबुम— सं० (कि०) भीतरी बरामदा।
कामङ— सं० (कि०) काम।
कामङ— सं० (कि०) सामूहिक नृत्य।
कामा— सं० (कि०) बहुविध कार्य।
कामोऊ— वि० (कि०) फर्श रहित।
कायङ— सं० (कि०) मेला; नृत्य।
कायु— सं० (कि०) खंभे का शिखर।
कार— सं० (कि०) भेड़।
कारकैब— सं० (कि०) सूआ।
कारङ— सं० (कि०) बारी।
कारङ— सं० (कि०) एक ढंग।
कारङ्छखुमी— वि० (कि०) ढंग का आदमी।
कारजुल— सं० (कि०) चांदी की विचित्र कटोरी।
कारण— सं० (ला०) गधा।
कारशुप— सं० (कि०) कांसे की कटोरी।
कारा— सं० (ला०) गधा।
कारेरङ— सं० (कि०) गिरने से बचाव हेतु लकड़ी के बने यंत्र।
कारैशे— स० क्रि० (कि०) घेरा डालना।
कालङ— सं० (कि०) गर्दन।
कालजेमाह— सं० (कि०) प्रलय।
काललू— सं० (कि०) Delphinium vestitum.
काळी— वि० (ला०) कड़वा।
कालुग— सं० (कि०) नाटक।
कालोऊ— सं० (कि०) पानी का बंद होना।
कावा— सं० (कि०) भाग्य।
कावा— सं० (कि०) तपस्या।
कावा— सं० (कि०) खंभा, स्तंभ।
कावोत— सं० (कि०) कहावत।
काशा— सर्व० (कि०) हम लोग।
काशाङ— सर्व० (कि०) हम।
कास— सं० (ला०) खांसी।
कासङ— सं० (कि०) कांसा।
कासङ्छुला— सं० (कि०) कांसे की वस्तु।
कासोनाङ— सं० (कि०) कांसे की थाली।
काही— सं० (कि०) Erianthus Fulxcus.
किच्छे— अ० (कि०) किधर।
किछा— सर्व० (कि०) तुम लोग।
किछाउ— सर्व० (कि०) तुम्हारा।
किंपा— सं० (कि०) घर का मुखिया।
किफमाह— अ० क्रि० (कि०) डूबना।
किशुका— सं० (कि०) तोता।
किऊ— सं० (कि०) लहसुन।
किङ्माह— अ० क्रि० (कि०) कांपना।
किङ्सङ— सं० (कि०) छेद।
किच्चुड़— सं० (ला०) कीचड़।
किछले— वि० (कि०) मैला।
किणशू— सं० (कि०) जुराब।
कित— सं० (कि०) सुख।
कितटाशियस— सं० (कि०) विवाह।
कितपो— सं० (कि०) मज़ा।
किनशा — सर्व० (कि०) आप लोग।
किनां— सर्व० (कि०) दे० किनसा।
किनू— सर्व० (कि०) आपको।
किनोनू— सर्व० (कि०) तुम्हारा।
किफ— सं० (कि०) आड़।
किम— अ० (कि०) कहां।
किम— सं० (कि०) खच्चर।
किमच— सं० (कि०) कुतिया।
किमपा— सं० (कि०) विष।
किमरिम— सं० (कि०) घरबार।
किमाह— स० क्रि० (कि०) ले जाना।
किरकिचि— सं० (ला०) प्याले की आकृति का सिर का आभूषण।
किरकिर— वि० (ला०) गोल।
किरकुंग— सं० (कि०) खिड़की।
किरची— सं० (ला०) घुमाने का भाव।
किल— वि० (कि०) मध्य।
किल— सं० (ला०) दे० किरड़ा।
किलखोरा— वि० (कि०) वास्तविक।
किलङ— सं० (कि०) कील।
किलङ्सा— स० क्रि० (कि०) किलवाना।
किलडिङ— वि० (कि०) गहरा।
किलदयारो— अ० (कि०) दोपहर।
किलदुस— अ० (कि०) दे० किलदयारो।
किलना— अ० (कि०) अंदर से।
किलमाह— स० क्रि० (कि०) बैठाना।
किलमेन— वि० (कि०) स्थापित।
किललिङ— अ० (कि०) मध्य में।
किला— सं० (ला०) टोकरी।
किलामिन— सं० (कि०) गाड़ा हुआ खंभा या कील।
किलालिङ— वि० (कि०) समतल।
किलुनऊ— अ० (कि०) बीच में।
किलुहमी — वि० (कि०) मध्यस्थ (व्यक्ति)।
किसा— वि० (कि०) ऐसा।
किस्मुत— सं० (ला०) भाग्य।
किस्मोतहलग— सं० (कि०) दुर्भाग्य।
की— सर्व० (कि०) आप।
कीऊरला— सं० (ला०) कार्तिक मास।
कीङ्कुटु— वि० (कि०) कुबड़ा।
कीचङ— वि० (कि०) निर्दय।
कीजू— अ० (कि०) क्यों।
कीन— सं० (कि०) नर मृग।
कीन— सर्व० (कि०) आपका।

कीना—सर्व० (कि०) आप लोग।
कीनू—सर्व० (कि०) आपको।
कीम—सं० (कि०) घर।
कीमपा—सं० (कि०) घर का स्वामी।
कीमपो—सं० (कि०) घर बनाने का स्थान।
कीमशू—सं० (कि०) कुल देवता।
कीमोत—सं० (कि०) कीमत।
कीलंग—सं० (कि०) कील।
कीला—सं० (ला०) खूंटा।
कीशा—सर्व० (कि०) हम लोग।
कीशो—सर्व० (कि०) हमारा।
कीस—सर्व० (कि०) आपने।
कुंकनी—सं० (कि०) मक्की।
कुंकुणीअमां—सं० (कि०) मक्की का भुट्टा।
कुंगड़ना—अ० क्रि० (कि०) सिकुड़ना, ठिठुरना।
कुंच—वि० (कि०) चौड़ा।
कुंज—सं० (कि०) Dioscorea deltoida.
कुंजाली—सं० (कि०) दुलहन।
कुंजुफ—अ० (कि०) एक साथ।
कुंडा—सं० (कि०) घूंघट।
कुंडुआ—सं० (कि०) घूंघट।
कुंमाह—स० क्रि० (कि०) चबाना।
कुंमाह—स० क्रि० (कि०) सुलाना।
कु—सं० (कि०) मूर्ति।
कुअड·—सं० (कि०) तालाब।
कुआरमीठे—सं० (कि०) विवाह में मंगल स्नान के उपरांत कन्या को लगाया जाने वाला केश प्रसाधन।
कुइछंग—सं० (कि०) पिल्ला।
कुई—सं० (कि०) कुत्ता।
कुई—सं० (ला०) कन्या, बिटिया।
कुक—सं० (कि०) गिरवी।
कुकटिस—सं० (कि०) एक कड़वा घास।
कुकपा—वि० (कि०) मूर्ख।
कुकरिवशतमाह—अ० क्रि० (कि०) मुर्गे का बांग देना।
कुकरी—सं० (कि०) मुर्गा, मुर्गी।
कुकरीछड·—सं० (कि०) चूजा।
कुकुटा—सं० (कि०) रस्सी में लगी मुड़ी हुई लकड़ी।
कुकुना—सं० (कि०) चींटी।
कुकेस—सं० (कि०) अवतार।
कुख—सं० (कि०) भाग।
कुखरा—सं० (कि०) मुर्गा।
कुखिड·—वि० (कि०) गरम।
कुग—सं० (कि०) उल्लू।
कुगांखा—सं० (कि०) ग्रंथों की अलमारी।
कुड·कुड·—सं० (कि०) दरवाजे का टिकाव, कब्जा।
कुड·कुनीं—सं० (कि०) मक्की।
कुड·कुमीणामां—सं० (कि०) भुट्टा।
कुचकुचयामाह—स० क्रि० (कि०) छेड़ना।
कुचकुचयामाह—अ० क्रि० (कि०) बेचैनी होना।
कुचड·—सं० (कि०) झाड़ू।
कुचड·ची—सं० (कि०) झाड़ू बनाने का घास।
कुचड·लई—सं० (कि०) झाड़ू मारने वाला।
कुचड·लमाह—स० क्रि० (कि०) झाड़ू मारना।
कुचमिक—स० क्रि० (कि०) बुलाना।
कुचानतनन्—स० क्रि० (कि०) झाड़ना।
कुचु—सं० (कि०) चावल।
कुचो—सं० (कि०) आवाज़।
कुछप—वि० (कि०) समान आकृति का।
कुछब—वि० (कि०) अंशभागी।
कुछे—सं० (कि०) मनुष्य का शरीर।
कुझपझेप—वि० (कि०) अधमरा।
कुट—सं० (कि०) एक जड़ी विशेष।
कुटकुटड·—अ० (कि०) टुकड़े-टुकड़े।
कुटबा—स० क्रि० (ला०) कूटना।
कुटा—सं० (कि०) अंकुश।
कुटाशिड·—सं० (कि०) अंकुश का लंबा डंडा।
कुटिई—वि० (कि०) कुटिल।
कुटिड·—सं० (कि०) झोंपड़ी।
कुटिच—सं० (कि०) छोटी कुदाली।
कुटिसा—वि० (कि०) कुटिल स्वभाव वाला।
कुटीलामा—अ० (कि०) जानबूझकर।
कुटुम्माह—स० क्रि० (कि०) चबाना।
कुटोन—सं० (कि०) जादूगरनी, कुटनी।
कुठपड·—सं० (कि०) एक पेड़।
कुठे—सं० (कि०) Trifolium.
कुड़माह—स० क्रि० (कि०) मिलाना, मिश्रित करना।
कुतड·—सं० (कि०) देव कार्य के लिए दिया जाने वाला अनाज।
कुतपा—सं० (कि०) धागा।
कुतम—सं० (कि०) दराट।
कुतमाह—स० क्रि० (कि०) बुलाना।
कुतमाह—स० क्रि० (कि०) ताना बिछाना।
कुतुर—सं० (ला०) कुत्ता।
कुत्रेर—सं० (कि०) पुजारी।
कुथड·—सं० (कि०) भित्तिचित्र।
कुदंग—सं० (कि०) बड़ी मूर्ति।
कुद—सं० (कि०) कोठार में अनाज रखने के लिए बने खाने।
कुदरोत—सं० (कि०) कुदरत।
कुदुरुत—सं० (कि०) दे० कुदरोत।
कुदो—स० क्रि० (कि०) बुलाना।
कुन—सर्व० (कि०) सब।
कुन—सं० (कि०) लौंग।
कुनखेन—वि० (कि०) सर्वज्ञ।
कुनड·—सं० (कि०) मिट्टी का बड़ा पात्र।
कुनड·—सं० (कि०) घास को सुरक्षित रखने की विधि।
कुनच—वि० (कि०) चौड़ा।
कुनतु—अ० (कि०) सदैव।

कुनमा—सं० (कि०) चोर।
कुनमाह—स० क्रि० (कि०) बुलाना।
कुनाल—सं० (कि०) परात।
कुपकुफ—वि० (कि०) झुका हुआ।
कुपरी—सं० (कि०) नाभि।
कुप्पु—सं० (कि०) दे० कुपू।
कुम—सं० (कि०) सिरहाना।
कुम—सं० (कि०) जानवरों का मुंह।
कुमशिङ—सं० (कि०) आग जलाने के लिए रखी जाने वाली पहली लकड़ी।
कुमिग—स० क्रि० (कि०) सुलाना।
कुमो—अ० (कि०) अंदर।
कुम्माह—स० क्रि० (कि०) सुलाना।
कुम्मुह—अ० क्रि० (कि०) रोना।
कुया—स० क्रि० (कि०) करना।
कुयोन—सं० (कि०) मूर्ति का मूल्य।
कुर—सं० (कि०) बोझ।
कुरकुर—वि० (कि०) झुका हुआ (व्यक्ति)।
कुरकुरथ—वि० (कि०) मुड़ा हुआ।
कुरचा—स० क्रि० (कि०) भेजना।
कुरचो—सं० (कि०) कुहनी।
कुरती—सं० (कि०) स्तुति।
कुरनङ—सं० (कि०) दे० कुरुड़।
कुररङ—सं० (कि०) छप्पर के शिखर का जोड़।
कुरशु—सं० (कि०) Deutsia Carymbosa.
कुराई—सं० (ला०) कुल्हाड़ी।
कुरिंगचा—सं० (ला०) चींटी।
कुरिंफ—सं० (कि०) बौद्ध पूजा।
कुरे—सं० (कि०) मज़ाक, उपहास।
कुलकमिक—स० क्रि० (कि०) तह करना, समेटना।
कुलङ—सं० (कि०) कुल्या, छोटी नहर।
कुलचमिक—स० क्रि० (कि०) मारना, पीटना।
कुलडंग—सं० (कि०) कुंडली।
कुलमिक—स० क्रि० (कि०) कूटना, मारना।
कुलमू—स० क्रि० (कि०) पीटना।
कुलमो—सं० (कि०) ओखली।
कुलिक—सं० (ला०) ताला।
कुलीक—सं० (कि०) चाबी।
कुलमोचाथ—सं० (कि०) गंड़ासा।
कुवुतमाह—अ० क्रि० (कि०) हिम्मत आना।
कुशमाह—स० क्रि० (कि०) बुलाना।
कुशु—सं० (कि०) सेब।
कुशोथफुनङ—सं० (कि०) एक दानेदार फल की झाड़ी।
कुश्टयामिक—अ० क्रि० (कि०) लुढ़कना।
कुश्यकाशियह—वि० (कि०) मिलावटी।
कुश्यमाह—स० क्रि० (कि०) गला घोंटना।
कुश्यलेच्छलास—सं० (कि०) कृत्रिम वस्तु।
कुश्या—सं० (कि०) कुशा।
कुश्यामिक—स० क्रि० (कि०) साफ करना, पोंछना।
कुश्योख—सं० (कि०) आर्य।
कुष्ट—सं० (कि०) Spiraea Lindleyana.
कुष्टा—सं० (कि०) चापलूसी।
कुस—सं० (कि०) जोड़, जमा, पर्याप्त।
कुस—सं० (कि०) पित्त।
कुसरी—सं० (कि०) मुर्गी।
कुसलमाह—स० क्रि० (कि०) मिलाना।
कुसलिई—सं० (कि०) गुठली रखने का टोकरा।
कुसी—सं० (कि०) मरोड़।
कुसुईगा—सं० (कि०) Gynura angulosa.
कुसुमज़ा—सं० (ला०) ऊखल, ओखली।
कुहनू—सं० (ला०) घड़ा।
कुहणु—सं० (ला०) सुराही।
कू—वि० (ला०) नौ।
कू—सं० (कि०) Celtis Australis.
कूच—सं० (कि०) कुहनी।
कूट—सं० (कि०) Saussuria Lappa.
कूटा—सं० (कि०) जंगली गंदम।
कूठ—सं० (कि०) एक जंगली फल।
कूठा—वि० (कि०) कुबड़ा।
कून—सं० (कि०) Prunus Cornuta, Prunus spp.
कूल—सं० (कि०) वंश।
कूलमाह—अ० क्रि० (कि०) दौड़ना।
कूलूलुत—सं० (कि०) वंश परंपरा।
कूशमाह—अ० क्रि० (कि०) सम्मिलित होना।
कूशी—वि० (कि०) कृत्रिम।
कूसुम—सं० (कि०) त्रिमूर्ति।
केंग—सं० (कि०) पैर।
केंगशूप—सं० (कि०) जुराब।
केंचङ—सं० (कि०) अंगुलि।
केंठा—वि० (ला०) छोटा।
केंपाऊखूर—स० क्रि० (कि०) कमर में बांधना।
के—सं० (कि०) योनि।
केइट—सं० (ला०) चाबी।
केकरतगपा—सं० (कि०) जन्मपत्री।
केघाखोङमाह—स० क्रि० (कि०) कमर झुकाना।
केङकेङ्ख—वि० (कि०) टेढ़ासा।
केचे—अ० क्रि० (ला०) उत्पन्न होना, पैदा होना।
केछेन—वि० (कि०) महान, बड़ा।
केजा—अ० (कि०) प्रार्थनावाचक शब्द।
केटिन—वि० (कि०) मेहरबान।
केठाभाई—सं० (ला०) भाई।
केति—वि० (ला०) कितने।
केतिक—वि० (ला०) कितने।
केतुक—वि० (ला०) कितना।
केतेस—सं० (कि०) देवता का भंडारी, कारदार।
केथई—अ० (ला०) कब।

केदजुर—सं० (कि०) अनुवादक।
केदपा—सं० (कि०) कमर।
केदारपत्ती—सं० (कि०) Skimmia Laureola.
केन—सं० (कि०) तालू।
केन—सं० (कि०) बारहसिंगा की जाति का एक जानवर।
केने—अ० (ला०) कैसे।
केप—सं० (कि०) सूई।
केपतख—सं० (कि०) जन्मपत्री।
केपतीमाह—स० क्रि० (कि०) सूआ लगाना।
केपाह—स० क्रि० (कि०) ढोना।
केप्पाजुगजेर—सं० (कि०) कमर दर्द।
केब—सं० (कि०) दे० केप।
केबच—सं० (कि०) दे० केप।
केम—सं० (कि०) शराब।
केरकुम—सं० (कि०) खिड़की।
केरकेर—सं० (कि०) खड़ा बुना हुआ।
करेङ—सं० (कि०) टेढ़ापन।
केरमाह—स० क्रि० (कि०) बुनना।
केरा—अ० (ला०) कैसे।
केलफा—सं० (कि०) अनाज रखने हेतु बनाया गया खाल का थैला।
केलमङ—सं० (कि०) देवदार।
केल्ह्रीकारिबा—अ० क्रि० (ला०) लुढ़कना।
केवाटामाह—अ० क्रि० (कि०) नया जन्म लेना।
केवु—सं० (कि०) मानव।
केशण—सं० (कि०) जन्मतिथि।
केशै—अ० क्रि० (कि०) विदा होना।
केस—सं० (कि०) तोहफा, भेंट।
केस—सर्व० (कि०) किस।
केस—सं० (कि०) बगल।
केसपू—सं० (कि०) बगल के बाल।
केसफाथ—सं० (कि०) तोहफे का थैला।
केसा—सं० (कि०) जन्मभूमि।
केसाफ्युल—सं० (कि०) जन्मस्थान।
केही—सं० (ला०) फावड़ा।
कैची—सं० (ला०) दे० कैंची।
कैल—सं० (कि०) लेखापाल।
कैद—सं० (कि०) जेल।
कैनाउंसुमाह—स० क्रि० (कि०) बातों में लाना।
कैमाह—स० क्रि० (कि०) धक्का देना।
कोंचोक—सं० (कि०) भगवान्।
कोंजेर—सं० (कि०) मठ का पुजारी।
कोंठी—सं० (कि०) हार, माला।
कोंदा—वि० (कि०) काना।
कोंदू—सं० (कि०) ककड़ी।
कोंदू—सं० (कि०) कद्दू।
कोंननमुईबा—अ० क्रि० (ला०) झुकना।
कोंयोख—वि० (कि०) प्यारा।
को—सं० (कि०) फोड़ा।
कोअमाह—अ० क्रि० (कि०) सिकुड़ना।
कोअरखुंग—सं० (ला०) खिड़की।
कोअरसवा—सं० (कि०) दाढ़।
कोआ—सं० (ला०) पुत्र।
कोआई—सं० (कि०) परदादी।
कोक—स० क्रि० (कि०) उतारना।
कोकचरा—सं० (कि०) तीतर।
कोकचीरा—सं० (कि०) बटेर।
कोकचुरू—सं० (कि०) दे० कोकचरा।
कोकरथ—सं० (कि०) जंगली बिल्ला।
कोकशल—सं० (कि०) गाय के गले का मांस, गलकंबल।
कोकोने—सं० (कि०) चींटी।
कोकोनेउडोयिङ—सं० (कि०) चींटी का बिल।
कोख—सं० (कि०) तर्ज़।
कोङका—सं० (कि०) अंकुर।
कोङकार—सं० (कि०) गिलहरी की तरह का एक जानवर।
कोङकोङ—वि० (कि०) झुका हुआ।
कोङकोङयातुह—वि० (कि०) कांपता हुआ।
कोङकोने—सं० (कि०) दे० कोकोने।
कोङटा—वि० (कि०) कुबड़ा।
कोङग्वो—सं० (कि०) पशु रोग।
कोचङ—अ० (कि०) ओर।
कोचङ—वि० (कि०) तीखा, निर्दय।
कोचा—वि० (कि०) परदेशी।
कोचो—सं० (कि०) चील।
कोच्चर—सं० (कि०) दाढ़ में कीड़ा लगने से पड़ा छेद।
कोछरा—सं० (कि०) गर्मी।
कोछरातिऊदुःख—स० क्रि० (कि०) गरम पानी से सेंकना।
कोछुअन्माह—स० क्रि० (कि०) दीवार चिनना।
कोछे—वि० (कि०) कसैला।
कोजा—अ० क्रि० (कि०) लंबा होना।
कोजाल्टी—सं० (कि०) पक्षी विशेष।
कोजिया—सं० (कि०) कलह।
कोज्या—सं० (कि०) अच्छी नस्ल की भेड़।
कोट—सं० (कि०) लकड़ी का एक संदूक।
कोटङ—सं० (कि०) पत्थरों का बना बड़ा स्तूप।
कोटयामिग—स० क्रि० (कि०) खोदना।
कोटशमिग—अ० क्रि० (कि०) ठोकर लगना।
कोटामाह—स० क्रि० (कि०) खोदना।
कोटामेन—वि० (कि०) खोदा हुआ।
कोटिंग—सं० (कि०) दे० 'किरडा'।
कोटिङतकचया—वि० (कि०) 'किरडा' बुनने वाला।
कोट्ठा—सं० (कि०) भंडार।
कोठ्ठे—अ० (ला०) कहां।
कोठ—सं० (कि०) कोट।
कोठङ—सं० (कि०) ढेर।
कोठूअ—सं० (कि०) कोट की पट्टी।

कोठे— अ० (ला०) कहां, कहीं।
कोठोअ— सं० (कि०) 'चट्ठा', ढेरी।
कोड़्या— सं० (कि०) सहपाठी।
कोणु— वि० (ला०) नर्म, कोमल।
कोता— अ० (कि०) प्रकार।
कोतेते— सं० (कि०) परदादा।
कोतोरो— सं० (कि०) कोदो अन्न।
कोथड़— सं० (कि०) कंघी।
कोथड़— सं० (कि०) मच्छर।
कोथुम— सं० (कि०) एक प्रकार का दंड।
कोद— सं० (कि०) टमाटर।
कोद— सं० (कि०) खाद।
कोदरा— सं० (ला०) कोदो अन्न।
कोन— स० क्रि० (कि०) पहनाना।
कोन— सं० (कि०) पोता।
कोनछोक— सं० (कि०) भगवान्।
कोनटच— सं० (कि०) रसोईघर।
कोनवो— सं० (कि०) तंगी।
कोनस— सं० (कि०) साथी, धर्मचारा।
कोनसड़— वि० (कि०) छोटा।
कोनाल— सं० (कि०) करनाल।
कोनिच— सं० (कि०) सहेली।
कोनिस— सं० (कि०) मित्र।
कोनीओनी— सं० (ला०) कारण।
कोनीकड़— सं० (कि०) गेहूं का आटा।
कोनीसाई— सं० (कि०) लड़की की शादी में महिलाओं का लड़की के घर भोज पर जाने संबंधी संस्कार।
कोनेप्रच— सं० (कि०) अनामिका।
कोपली— सं० (ला०) खोपड़ी, मस्तिष्क।
कोपले— सं० (कि०) गिरी रहित बादाम या अखरोट आदि।
कोपोट— सं० (कि०) छल, कपट।
कोबजा— सं० (कि०) कब्जा, आधिपत्य, अधिकार।
कोबजिऊतीमाह— स० क्रि० (कि०) वश में करना।
कोमटी— वि० (कि०) मुड़ी सींग वाली (गाय)।
कोमडै— सं० (कि०) हंसों का झुंड।
कोमशोक— सं० (कि०) छिलका।
कोमिक— स० क्रि० (कि०) द्रव पदार्थ को मिलाना।
कोमो— अ० (कि०) भीतर।
कोयड़— सं० (कि०) मच्छर।
कोयलड़— सं० (कि०) 'चिलटे' बनाने के लिए पानी में घोला आटा।
कोयांट— सं० (कि०) कबूतर।
कोर— सं० (कि०) पिंड।
कोरछी— सं० (कि०) कलछी।
कोरजा— सं० (कि०) ऋण, कर्जा।
कोरा— सं० (कि०) परिक्रमा।
कोराऊ— स० क्रि० (कि०) समेटना।
कोराटामाह— अ० क्रि० (कि०) चक्कर लगाना।
कोरामाह— स० क्रि० (कि०) खोदना।
कोरिबा— स० क्रि० (ला०) खोदना।
कोरिया— वि० (कि०) कोढ़ी।
कोरु— सं० (कि०) बाट लगाने की तकली।
कोरुबा— सं० (कि०) एक जड़ी बूटी।
कोरोम— सं० (कि०) कर्म।
कोल— सं० (कि०) कटोरा।
कोलड़— सं० (कि०) याद।
कोलड़— सं० (कि०) अभ्यास।
कोलठू— सं० (ला०) खिड़की।
कोलतो— वि० (कि०) हकला कर बोलने वाला।
कोलम— सं० (कि०) कलम।
कोलमाह— स० क्रि० (कि०) अनुभव करना।
कोलयामिक— स० क्रि० (कि०) महसूस करना।
कोलस— वि० (कि०) नर्म।
कोलसा— सं० (कि०) जंगली मुर्गा।
कोलाच— वि० (कि०) मुलायम।
कोलामाह— अ० क्रि० (कि०) चेतना।
कोलिड़— सं० (कि०) अट्टी।
कोले— अ० (ला०) क्यों।
कोलोचन्नो— सं० (कि०) उपकार।
कोलोन— सं० (ला०) नदी का पत्थर।
कोवा— वि० (ला०) कोमल, नर्म।
कोशमिक— सं० (कि०) खलबली।
कोशशमिक— स० क्रि० (कि०) कमर कसना।
कोशा— सं० (कि०) हिरन का मांस।
कोशाल— सं० (कि०) मेहमान का कमरा।
कोशाल— सं० (कि०) मकान का वह भाग जहां फालतू सामान रखते हैं।
कोशिड़— सं० (कि०) द्रव पदार्थ को मिलाने के लिए प्रयुक्त लकड़ी।
कोष्टड़— सं० (कि०) कष्ट।
कोसमिक— स० क्रि० (कि०) ऊन आदि को कंघी द्वारा पींज कर कातने योग्य बनाना।
कौंज़ा— सं० (ला०) पांव।
कौंठमालड़— सं० (कि०) कंठमाला।
कौंधा— सं० (ला०) कमर।
कौग— सं० (कि०) एक प्रकार का पौधा जिससे दूध सा पदार्थ निकलता है जिसे दूध फाड़ने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
कौड़ा— वि० (ला०) दे० कौला।
कौतीश— अ० क्रि० (कि०) मान जाना।
कौपरा— सं० (कि०) Gerbera lanuginosa.
कौरखुंग— सं० (ला०) गवाक्ष, खिड़की।
कौरमू— स० क्रि० (कि०) गिराना।
कौल— सं० (कि०) दे० जुंगड़ा।
कौला— सं० (कि०) Daphne papyracea.
कौश— सं० (कि०) देवता के मोहरे को धोकर लाया पानी जो

कसम खाने के लिए पीने के प्रयोग में लाया जाता है।
**क्यंफमाह**—अ० क्रि० (कि०) भटकना।
**क्यंमाह**—स० क्रि० (कि०) साधना, ठीक करना।
**क्यइ**—वि० (कि०) गाढ़ा।
**क्यऊजेमाह**—स० क्रि० (कि०) समाप्त करना।
**क्यऊपिनमाह**—स० क्रि० (कि०) समाप्त करना।
**क्यगजस**—वि० (कि०) अतिरिक्त भोजन।
**क्यङ**—सं० (कि०) चिंगारी, शोला।
**क्यङकेथ**—वि० (कि०) चिलगोजे की लघु मात्रा।
**क्यङक्या**—सं० (कि०) घास।
**क्यङजेमाह**—अ० क्रि० (कि०) आग लगना।
**क्यङमाह**—स० क्रि० (कि०) लटकाना।
**क्यङल**—सं० (कि०) जबड़ा।
**क्यङवङ**—वि० (कि०) पतले हाथ-पैर वाला।
**क्यङुतमाह**—स० क्रि० (कि०) देर करना।
**क्यङ्ख**—वि० (कि०) लाल चोंच वाला (पक्षी)।
**क्यङ्गर**—अ० क्रि० (कि०) भाग जाना।
**क्यतपो**—सं० (कि०) कठिनता।
**क्यति**—वि० (कि०) विश्राम रहित।
**क्यतिह**—वि० (कि०) जटिल।
**क्यतिहआसामाह**—स० क्रि० (कि०) कष्ट सहना।
**क्यप**—अ० क्रि० (कि०) चले जाना।
**क्यफलामाह**—स० क्रि० (कि०) रक्षा करना।
**क्यबतेपा**—सं० (कि०) कुशलता।
**क्यमरो**—सं० (कि०) मंत्र।
**क्यलथमाह**—स० क्रि० (कि०) विदा करना।
**क्यलमाह**—स० क्रि० (कि०) पहुंचाना।
**क्यलवङुचो**—सं० (कि०) देवदार की पत्ती।
**क्यलाङ**—सं० (कि०) कोयल।
**क्यलिई**—वि० (कि०) दो रंगा।
**क्यलेखयोह**—वि० (कि०) अनेक।
**क्यलेखी**—वि० (कि०) अनेक।
**क्यवसुजेमाह**—अ० क्रि० (कि०) प्रवृत्त होना।
**क्यवा**—वि० (कि०) दो अंगुल का माप।
**क्यवा**—सं० (कि०) भोजन पकाने की एक छड़।
**क्यसपेल**—सं० (कि०) दही, दधि।
**क्यसेङ**—वि० (कि०) पांच पांडव।
**क्यांटी**—सं० (ला०) कान की बालियां।
**क्यातमाह**—स० क्रि० (कि०) निंदा करना।
**क्याप**—सं० (कि०) शरण।
**क्यामर**—सं० (ला०) मक्खन।
**क्यामाह**—स० क्रि० (कि०) समाप्त करना।
**क्यामाह**—स० क्रि० (कि०) झुलाना।
**क्यालमङ**—सं० (कि०) Cedrus deodara.
**क्यालमङ**—सं० (कि०) देवदार का वृक्ष।
**क्यालीतेत**—सं० (कि०) मुंह पर सफेद धारी वाली बकरी।
**क्यालुआजे**—सं० (कि०) लालधारी वाला बकरा।
**क्यालेखा**—वि० (कि०) पर्याप्त।
**क्याश्युह**—स० क्रि० (कि०) टांगे पसारना।
**क्यास**—सं० (कि०) बगल।
**क्यासपु**—सं० (कि०) बगल के बाल।
**क्यासपेल**—सं० (कि०) दही।
**क्यीकपा**—सं० (कि०) कुंडी।
**क्युकचा**—सं० (ला०) चूज़ा।
**क्युकपा**—सं० (कि०) वमन।
**क्युकुलमाह**—अ० क्रि० (कि०) व्यर्थ बोलना।
**क्युबमीक**—स० क्रि० (कि०) उठाना।
**क्युम**—सं० (कि०) घर।
**क्युमपङ**—सं० (कि०) तकली।
**क्युमपा**—सं० (कि०) गृहस्थी।
**क्युमपो**—सं० (कि०) वंश।
**क्युमपोलंख**—सं० (कि०) घर का स्थान।
**क्युमरीई**—सं० (कि०) घर-बार।
**क्युमशुक**—सं० (कि०) गृह-देवता।
**क्युमशुप्या**—सं० (कि०) देवता के निमत्त रखा हुआ बकरा।
**क्युमो**—सं० (कि०) दीवा पात्र।
**क्युरमाह**—स० क्रि० (कि०) घोलना।
**क्युरमो**—स० क्रि० (कि०) घोलना।
**क्युरमो**—वि० (कि०, ला०) खट्टा।
**क्युशोन**—सं० (कि०) एक पत्तेदार झाड़ी।
**क्यू**—सं० (कि०) वक्षस्थल।
**क्यूम**—वि० (कि०) उदासीन।
**क्यूमीक**—अ० क्रि० (कि०) मानना, साथ मानना।
**क्यूश्वलमाह**—अ० क्रि० (कि०) पश्चात्ताप करना।
**क्येलेखा**—वि० (कि०) अनेक।
**क्योंचन**—वि० (कि०) अपराधी।
**क्यो**—सं० (कि०) नर।
**क्योकुई**—सं० (कि०) कुत्ता।
**क्योख**—सं० (कि०) ऐंठन, अकड़।
**क्योगुह**—अ० क्रि० (कि०) बेचैन होना।
**क्योङम**—अ० क्रि० (कि०) मरना।
**क्योतचा**—अ० क्रि० (कि०) पधारना।
**क्योतमाह**—स० क्रि० (कि०) पालना।
**क्योतमिन**—वि० (कि०) पालतू।
**क्योन**—स० क्रि० (कि०) चढ़ाना।
**क्योन**—सं० (कि०) दोष।
**क्योनचन**—सं० (कि०) अभियुक्त।
**क्योनसा**—वि० (कि०) हानिकारक।
**क्योनहनमाह**—स० क्रि० (कि०) दोष निकालना।
**क्योपि**—अ० क्रि० (ला०) उबलना।
**क्योपिशी**—सं० (कि०) बिलाव।
**क्योफोच**—सं० (कि०) गधा।
**क्योर**—सं० (कि०) एक विशेष पकवान।
**क्योर**—सं० (कि०) बाड़।
**क्योरमिन**—वि० (कि०) घिरा हुआ।
**क्योराङ**—सं० (कि०) घोड़ा।

**क्योराच**— सं० (कि०) बछड़ा।
**क्योलुख**— सं० (कि०) दे० क्योराच।
**क्योले**— सं० (कि०) कोयला।
**क्योलोख**— सर्व० (कि०) स्वयं।
**क्योलोमतोई**— वि० (कि०) अस्थिर।
**क्योशी**— वि० (कि०) पालतू।
**क्योश्यमाह**— स० क्रि० (कि०) निर्वाह करना।
**क्योस**— सं० (कि०) चारा।
**क्योस**— सं० (कि०) नशा।
**क्योसपूअ**— सं० (कि०) चोकर।
**क्रंफा**— सं० (कि०) चिमटा।
**क्रई**— वि० (कि०) ठोस।
**क्रईकत**— अ० क्रि० (कि०) गरजना।
**क्रङ**— सं० (कि०) 'चट्ठा'।
**क्रङमाह**— अ० क्रि० (कि०) उलटना।
**क्रच**— सं० (कि०) भेड़ का बच्चा।
**क्रचङ**— वि० (कि०) उलटा।
**क्रछप**— सं० (कि०) बाल के गुच्छे।
**क्रटिच्**— सं० (कि०) छोटी कुदाली।
**क्रड़**— सं० (कि०) दे क्रङ।
**क्रपतुना**— वि० (कि०) रोने वाला।
**क्रपमतना**— स० क्रि० (कि०) उपेक्षा करना।
**क्रपमाह**— अ० क्रि० (कि०) रोना।
**क्रमनाह**— स० क्रि० (कि०) फंसाना।
**क्रमल**— सं० (कि०) पीपल का पेड़।
**क्रम्माह**— स० क्रि० (कि०) दे० क्रमनाह।
**क्रल**— सं० (कि०) दौड़।
**क्रस**— सं० (कि०) जिगर।
**क्रांई**— वि० (कि०) कठोर।
**क्रांबल**— वि० (कि०) प्रसिद्ध।
**क्रा**— सं० (कि०) बाल।
**क्राई**— वि० (कि०) कठोर।
**क्राई**— सं० (कि०) कड़ाही।
**क्राचोमाह**— स० क्रि० (कि०) बाल काटना।
**क्राछूमाह**— स० क्रि० (कि०) बाल संवारना।
**क्राती**— सं० (कि०) थूक।
**क्रातीसा**— वि० (कि०) जिसके मुख से लार निकलती हो।
**क्राथ**— सं० (कि०) भेड़ का बच्चा।
**क्राथसे**— सं० (कि०) गर्भवती भेड़।
**क्रान**— सं० (कि०) उदर वेदना।
**क्रानङ**— सं० (कि०) मज्जा।
**क्रापी**— अ० क्रि० (ला०) रोना।
**क्राब्रम**— सं० (कि०) रोना।
**क्रिंगमू**— अ० क्रि० (कि०) थरथराना।
**क्रिई-क्रिई**— सं० (कि०) चिल्लाहट।
**क्रिई-क्री**— सं० (कि०) कर्कश स्वर।
**क्रिगछेले**— वि० (कि०) मैला।
**क्रिङ**— सं० (कि०) सरेश का पानी।
**क्रिङटा**— वि० (कि०) कांपने वाला।
**क्रिङमाह**— अ० क्रि० (कि०) कांपना।
**क्रिछले**— वि० (कि०) दे० क्रिगछेले।
**क्रिजला**— वि० (कि०) बदमाश, दुष्ट।
**क्रिजले**— वि० (कि०) अति दुर्बल।
**क्रिपमाह**— अ० क्रि० (कि०) आंखें बंद करना।
**क्रिमल्हिग**— सं० (ला०) कबूतर।
**क्रिम्नाह**— अ० क्रि० (कि०) मिनमिनाना।
**क्रिलडकलोमाह**— अ० क्रि० (कि०) हिचकी लेना।
**क्रिलमाह**— स० क्रि० (कि०) निचोड़ना।
**क्रिशिंग**— सं० (कि०) Cedrela serrata.
**क्रींग**— सं० (कि०) तोता, शुक।
**क्री**— सं० (कि०) मैल।
**क्रीई**— सं० (कि०) शव, मृत व्यक्ति।
**क्रीगर**— सं० (कि०) कारीगर, शिल्पी।
**क्रीठ**— सं० (कि०) अवशिष्ट भोजन।
**क्रीठा**— वि० (ला०) सांवला, काला।
**क्रीतिगा**— सं० (कि०) सप्तर्षि।
**क्रीथथमाह**— स० क्रि० (कि०) मैल उतारना।
**क्रीन**— सं० (कि०) गेहूं।
**क्रुन**— सं० (कि०) जामुन।
**क्रुप**— सं० (कि०) सर्वस्व।
**क्रूच**— सं० (कि०) कुहनी।
**क्रेऊ**— स० क्रि० (कि०) सींग मारना।
**क्रेऊविन्माह**— स० क्रि० (कि०) धकेलना।
**क्रेखक्रेरबुह**— वि० (कि०) लाभप्रद।
**क्रेचङ**— सं० (कि०) घोड़े की पूंछ के केश।
**क्रेमाह**— स० क्रि० (कि०) सींग मारना।
**क्रेमाह**— स० क्रि० (कि०) धकेलना।
**क्रो**— सं० (कि०) देवता का कलश ।
**क्रोक**— सं० (कि०) Abies webbiana.
**क्रोगमीक**— स० क्रि० (कि०) देवता के खेल के लिए तैयार करवाना।
**क्रोध**— सं० (कि०) चोटी।
**क्रोङमाह**— स० क्रि० (कि०) धक्का देना।
**क्रोदाङ**— सं० (कि०) मोनाल पक्षी।
**क्रोमाह**— स० क्रि० (कि०) घोलना।
**क्रोश्चुह**— अ० क्रि० (कि०) घुलना।
**क्रौकौल**— सं० (कि०) कंठ।
**क्लटु**— सं० (कि०) फावड़ा।
**क्वङ**— सं० (कि०) फंदा।
**क्वङचीक**— सं० (कि०) घुटने के नीचे का भाग।
**क्वतमाह**— स० क्रि० (कि०) उबालना।
**क्वनला**— सं० (कि०) कपड़े लटकाने की तार।
**क्वरथ**— सं० (कि०) झोंपड़ी।
**क्वरथ**— सं० (कि०) वृत्त, दायरा।
**क्वरमाह**— स० क्रि० (कि०) खोदना।
**क्वलवङ**— सं० (कि०) देवदार।

**क्वश**—सं० (कि०) असत्य।
**क्वशलमाह**—अ० क्रि० (कि०) बेगार काटना।
**क्वशिह**—वि० (कि०) पका हुआ।
**क्वस**—वि० (कि०) अधिक।
**क्वसमतमाह**—स० क्रि० (कि०) संतुष्ट करना।
**क्वसमीक**—स० क्रि० (कि०) घी आदि को काढ़ना।
**क्वाङचीग**—सं० (कि०) जानू का पृष्ठ भाग।
**क्वामाह**—स० क्रि० (कि०) खोलना।
**क्वाशीमार**—सं० (कि०) घृत।

## ख

**ख**—सं० (कि०) मल।
**खंगणा**—सं० (कि०) घर।
**खंगमिक**—सं० (कि०) कमरा, कक्ष।
**खंगवा**—सं० (कि०) घर।
**खंडो**—सं० (कि०) सलाहकार। देवता का दोधार वाला शस्त्र।
**खंडोमा**—सं० (कि०) अप्सरा, परी।
**खंता**—सं० (कि०) एक पर्वतीय औषधि, सोमलता।
**खंपा**—वि० (कि०) भूरा। तिब्बत की खंपा यायावर जाति।
**खंफतुमाह**—अ० क्रि० (कि०) पसन्द आना।
**खंफमाचुखमाह**—स० क्रि० (कि०) ओढ़ना, पहनना।
**खंबरमा**—सं० (कि०) विराट् रूप।
**खंश्यारस**—वि० (कि०) अधूरा।
**खआड़ी**—स० क्रि० (ला०) देखना।
**खई**—वि० (कि०) काला।
**खईतिर**—अ० (ला०) ऊपर की ओर।
**खईपा**—सं० (कि०) विद्वान।
**खईलमाह**—स० क्रि० (कि०) गंदा करना।
**खऊ**—सं० (कि०) भोजन।
**खऊसुमाह**—स० क्रि० (कि०) चराना।
**खकङ**—सं० (कि०) मुख।
**खकतई**—वि० (कि०) कड़वा, कटु।
**खकले**—सं० (कि०) मक्खन।
**खकोलेती**—वि० (कि०) गंदला पानी।
**खखमाह**—अ० क्रि० (कि०) चरना।
**खखूह**—स० क्रि० (कि०) चूमना।
**खगलो**—सं० (कि०) पशुओं के मुंह और खुर का रोग।
**खगलोक**—सं० (कि०) बुराई।
**खगोलङग**—सं० (कि०) लाल चोंच वाला गृध्र।
**खङता**—सं० (कि०) गली का चौड़ा स्थान।
**खङमिक**—स० क्रि० (कि०) टुकड़े-टुकड़े करना, छीनना।
**खङी**—सं० (कि०) भूतप्रेत।
**खचरा**—सं० (ला०) खच्चर।
**खचली**—सं० (कि०) माला।
**खचाय**—सं० (कि०) पाखाना, मल।
**खचासुमाह**—अ० क्रि० (कि०) सफल होना।
**खचिथ**—सं० (कि०) काली मिट्टी।
**खचिरच**—सं० (कि०) झाड़ी।
**खचुपचुप**—वि० (कि०) भयभीत, कायर।
**खचूरी**—सं० (कि०) सिर का पिछला भाग।
**खचे**—वि० (कि०) काला।
**खछु**—सं० (कि०) मुंह का पानी, लार।
**खजङ्ख**—सं० (कि०) पतीला।
**खजर**—सं० (ला०) खच्चर।
**खज़ा**—सं० (कि०) पशुरोग।
**खज़ासा**—सं० (कि०) पशुओं के मुख का रोग।
**खज़ी**—सं० (कि०) खुजली।
**खजोजो**—सं० (कि०) तीव्र वृष्टि।
**खटखटमाह**—अ० क्रि० (कि०) छटपटाना, उतावलापन दिखाना।
**खटखु**—सं० (कि०) गली।
**खटङ्**—सं० (कि०) बंधुआ मज़दूर।
**खटलङ्**—सं० (कि०) खड्ड, बड़ा नाला।
**खटो**—वि० (कि०) खट्टा।
**खटोङ**—सं० (कि०) नितंब।
**खड़मख**—सं० (कि०) त्रिशूल।
**खडमखा**—सं० (कि०) बरछी।
**खणाबा**—स० क्रि० (ला०) खोदना।
**खणी**—सं० (ला०) टुकड़ा, खंड।
**खतकता**—वि० (कि०) कटु।
**खतख**—सं० (कि०, ला०) शिष्टाचार में दिया जाने वाला विशेष वस्त्र।
**खतङ**—सं० (कि०) हवेली, महल; आंगन।
**खतमाह**—अ० क्रि० (कि०) ठंड लगना।
**खता**—सं० (कि०) कौआ।
**खता**—सं० (कि०) नसीहत, उपदेश।
**खतापता**—सं० (कि०) पता, कुशलता।
**खतिई**—सं० (कि०) दबाया हुआ धन।
**खतिऊदुस**—सं० (कि०) शीत ऋतु।
**खतिरातिरय**—सं० (कि०) कालापन।
**खतिह**—सं० (कि०) शीतल जल।
**खती**—सं० (कि०) शीत।
**खतीच**—सं० (कि०) दुलहन।
**खतुङपोसिह**—सं० (कि०) नौकर, सेवक।
**खतुर्बा**—स० क्रि० (ला०) खुरचना।
**खतूज़**—सं० (कि०) दूल्हा।
**खतोरबा**—स० क्रि० (ला०) व्यय करना।
**खत्राफमाह**—अ० क्रि० (कि०) चिपटना।
**खदिङ**—सं० (कि०) पर्व।
**खदोन**—वि० (कि०) मौखिक।
**खनङ**—वि० (कि०) आधा।
**खनङडेयङसा**—सं० (कि०) विकृत अंग।

**खनचि़या**— सं० (कि०) ज्योतिषी, ओझा।
**खनटिख**— सं० (कि०) विघ्न, रुकावट।
**खनत**— सं० (कि०) शीत लहर।
**खनतरी**— सं० (कि०) वाद्ययंत्र।
**खनतरीई**— सं० (कि०) बंधन, बंदिश।
**खनताअ**— सं० (कि०) सोमलता।
**खनमङीह**— सं० (कि०) ओझा।
**खनमाह**— स० क्रि० (कि०) प्रश्न लगाना।
**खनमिक**— वि० (कि०) प्रश्न लगाने वाला।
**खनश्यारस**— वि० (कि०) अधूरा।
**खनसु**— वि० (कि०) चालाक।
**खना**— सं० (ला०) खाई।
**खनिङ**— सं० (कि०) खान।
**खने**— वि० (कि०) अपूर्ण, आधा।
**खनेखेपोर**— वि० (कि०) टूटा-फूटा।
**खनेखपपटा**— वि० (कि०) टूटा-फूटा।
**खप**— सं० (कि०) इमारत की छत पर प्रयुक्त लकड़ियां। सुई।
**खपमाह**— स० क्रि० (कि०) फल तोड़ना।
**खपल**— सं० (कि०) फल या कद्दू आदि का आधा टुकड़ा।
**खपलयामिक**— स० क्रि० (कि०) कद्दू, फल आदि को दो भागों में बांटना।
**खपलयाशिश**— अ० क्रि० (कि०) शस्त्र आदि से शरीर में चीरा पड़ना या ज़ख्म होना।
**खपा**— सं० (कि०) बर्फ की चट्टान।
**खबङबङ**— वि० (कि०) अंधेरा, धुंधला, सुनसान।
**खबदरिया**— वि० (कि०) बातूनी।
**खबमिक**— अ० क्रि० (कि०) आगे निकले व्यक्ति तक पहुंचना।
**खबसा**— अ० क्रि० (कि०) डकारना।
**खबाइबा**— स० क्रि० (ला०) खिलाना।
**खबी**— सं० (कि०) मलाई।
**खबुर**— सं० (ला०) समाचार।
**खम**— सं० (कि०) धातु।
**खम**— सं० (ला०) पहनने और ओढ़ने के कपड़े।
**खमें**— सं० (कि०) लाल रंग की एक बूटी।
**खर**— सं० (कि०) किला।
**खरकु**— वि० (ला०) नूतन, नया।
**खरकोई**— वि० (ला०) नया।
**खरखरा**— सं० (कि०) एक विशेष प्रकार की कूची जिससे पशुओं के शरीर की सफाई की जाती है।
**खरबुङ**— सं० (कि०) दुर्ग।
**खरामिक**— अ० क्रि० (कि०) देर होना।
**खरे**— वि० (कि०) टेढ़ा।
**खरोमाह**— स० क्रि० (कि०) चिपके हुए पदार्थ को निकालना।
**खरोमिक**— स० क्रि० (कि०) ढक्कन लगाना।
**खरोलयासमिक**— अ० क्रि० (कि०) क्षरित होना, गलना।
**खर्सा**— वि० (ला०) नूतन, ताज़ा।
**खलङ**— सं० (कि०) खलिहान।
**खलङखेरा**— सं० (कि०) सुरागाय के बालों से बनाया गया तिरपाल।
**खलती**— सं० (कि०) अशुद्ध पानी।
**खलपा**— सं० (कि०) मेड़।
**खलबलामाह**— स० क्रि० (कि०) उलझाना।
**खलाइबा**— स० क्रि० (ला०) खिलाना।
**खलि**— सं० (कि०) दे० कली।
**खली**— सं० (कि०) एक जंगली फल।
**खवाका**— सं० (कि०) तिब्बती कौआ।
**खवासा**— सं० (कि०) अजीर्ण।
**खवेवे**— सं० (कि०) भयानक आंधी।
**खशटप**— सं० (कि०) चुगली।
**खशप**— वि० (कि०) घमंडी, अभिमानी, शेखी बघारने वाला।
**खशपङ**— सं० (कि०) एक झाड़ी विशेष।
**खशपशामिक**— स० क्रि० (कि०) चाटुकारिता करना।
**खशपेइङ**— सं० (कि०) फणधर सांप।
**खशापो**— सर्व० (कि०) दे० कस।
**खशरे**— वि० (कि०) खुरदरा।
**खशिया**— सं० (कि०) खस जाति।
**खश्यति**— सं० (कि०) मल-मूत्र।
**खश्योरा**— वि० (कि०) डरपोक।
**खस**— सं० (कि०) मेड़।
**खसपा**— सं० (कि०) विद्वान्।
**खसबल**— सं० (कि०) चोटादि लगने पर औषधि के रूप में प्रयुक्त एक फूल विशेष।
**खां**— सं० (ला०) आलू रखने हेतु निर्मित गढ़ा।
**खांजपो**— वि० (कि०) मृदु भाषी।
**खांता**— सं० (कि०) Ephedra gerardiana.
**खा**— वि० (कि०) मुट्ठी भर।
**खा**— सं० (कि०, ला०) मुख।
**खा**— सं० (कि०) बर्फ।
**खा**— सं० (कि०) आकाश।
**खाइबा**— स० क्रि० (ला०) खाना।
**खाइबा**— स० क्रि० (ला०) काटना।
**खाकङ**— सं० (कि०) मुख।
**खाकशस**— सं० (कि०) पक्षी-विशेष।
**खाकाल**— सं० (कि०) लकड़ी की दीवार।
**खाखशे/शो**— वि० (कि०) जिसके मुंह में दांत न हो, पोपला।
**खाखा**— वि० (कि०) विभाजित किया हुआ।
**खागशा**— सं० (कि०) Cornus capitata.
**खाच़**— सं० (कि०) मेमना।
**खाजी**— सं० (ला०) फोड़ा।
**खाटङ**— सं० (कि०) निर्वाह करने के लिए किसी के पास काम करता हुआ मज़दूर, सेवक, दास।
**खाटस**— सं० (कि०) सेवक, नौकर।
**खाटे**— सं० (कि०) दे० खाटस।
**खाटे-पाटे**— वि० (कि०) आधा-अधूरा।
**खाटो**— सं० (कि०) लस्सी से बनाई गई कढ़ी।
**खाणी**— वि० (ला०) आधा।

खातङ—सं० (कि०) आंगन।
खातर—सं० (ला०) छिद्र।
खातापोरतमाह—अ० क्रि० (कि०) नसीहत मिलना।
खादुमाह—स० क्रि० (कि०) चुप कराना।
खादुला—वि० (कि०) मटमैला, गंदला, गंदा।
खानजारि—सं० (ला०) मच्छर।
खानोपो—वि० (कि०) तेज।
खाबङबङ—वि० (कि०) अस्त-व्यस्त।
खाबुङ—सं० (कि०) हथेली।
खाब्रस—वि० (कि०) काला 'फाफरा'।
खामाह—अ० क्रि० (कि०) झपटना।
खार—सं० (कि०) दुर्ग, किला।
खारकिङ—अ० (कि०) अधिकतर।
खारङ—सं० (कि०) गड्ढा।
खारा—वि० (कि०) खाली।
खारिङ—वि० (कि०) बीस मन अन्न।
खारिङा—सं० (कि०) घंटी।
खालङ—सं० (कि०) खड्ड, छोटी नदी।
खालटा—सं० (ला०) छिलका।
खालेव—सं० (कि०) पतीले का ढक्कन।
खावा—सं० (कि०) बर्फ, हिम।
खाशरो—वि० (कि०) खुरदरा।
खाशी—वि० (कि०) वंचित।
खाशीतामिक—स० क्रि० (कि०) वंचित रखना।
खासविथम—वि० (कि०) सहोदर।
खाससिरे—अ० क्रि० (कि०) क्रमानुसार।
खासूरिंग—अ० क्रि० (कि०) ठिठुरना, बुखार से कांपना।
खिंह—अ० (ला०) कुछ।
खिआं—अ० (ला०) कुछ।
खिउं—सं० (ला०) कुतिया का बच्चा।
खिचङ—सं० (कि०) अतिरिक्त धन संचय।
खिमदेस—सं० (कि०) पड़ोसी।
खिरक्यक—सं० (ला०) बीट।
खिरा—सं० (ला०) शिकार।
खिरी—सं० (कि०) ऊन कातने के लिए तकली घुमाने का आधार।
खिसङ—सं० (कि०) जेब।
खिसतमाह—अ० क्रि० (कि०) कमज़ोर होना।
खी—सं० (कि०) कुत्ता।
खीग—वि० (कि०) लाल।
खीटिकमिक—स० क्रि० (कि०) थाली आदि से उंगली द्वारा खाद्य पदार्थ साफ करना।
खीतङ स्वाह—सं० (कि०) सामने के ऊपर वाले दो दांत।
खीमिक—स० क्रि० (कि०) देखना।
खीमो—सं० (कि०) कुतिया।
खीरङ—सं० (कि०) दूध।
खीलङ—सं० (कि०) खलिहान।
खीलिङ—सं० (कि०) खूंटा।
खुंडी—सं० (कि०) पैर।
खुंडो—सं० (कि०) नाक का आभूषण।
खुंडोच—सं० (कि०) नथ।
खुंफडोरी—सं० (कि०) सलीका रहित साड़ी या पट्टू।
खुङख—सं० (कि०) समान। शाखा, विभाग।
खुङगमाह—अ० क्रि० (कि०) प्रकोप होना।
खुङगमिक—अ० क्रि० (कि०) दैवी प्रकोप से प्रभावित होना।
खुङच—सं० (कि०) दैविक प्रकोप।
खुङी—सं० (कि०) प्रेत।
खुचमिक—स० क्रि० (कि०) चोरी करना।
खुचमुला—स० क्रि० (कि०) घूंसा मारना। चुटकी काटना।
खुचमू—सं० (कि०) चोरी।
खुचि—वि० (कि०) अधिक।
खुचिचलिह—वि० (कि०) बकवासी, बातूनी।
खुचियोवलिमी—वि० (कि०) बहुत जल्दबाज़।
खुड़ख—सं० (कि०) उस्तरा।
खुड़ाक—सं० (कि०) बड़ा लंगूर या बंदर।
खुणङ—सं० (कि०) गांव।
खुतमाह—स० क्रि० (कि०) चोरी करना।
खुनमाह—अ० क्रि० (कि०) कराहना।
खुनुपा—सं० (कि०) किन्नौर का वासी।
खुपमाह—स० क्रि० (कि०) गोशाला में बंद करना।
खुपश्युह—अ० क्रि० (कि०) बंद होना।
खुपुतामाह—स० क्रि० (कि०) बंद करना।
खुप्पी—सं० (ला०) चोरी।
खुफश्यमाह—स० क्रि० (कि०) फेरा लगाना।
खुबमिक—स० क्रि० (कि०) समेटना। देवता को मंदिर में रखना, दुलहन को घर में प्रवेश कराना। चूल्हे की आग को राख से दबाना।
खुबशिङ—सं० (कि०) चूल्हे के अंदर आग से जलती हुई मोटी लकड़ी जिसे राख में दबाकर रखते हैं ताकि आग सुरक्षित रहे।
खुबुड़माह—अ० क्रि० (कि०) धुआं भरना।
खुयूमुयू—सं० (कि०) सेवा शुश्रुषा, सेवा-टहल।
खुर—सं० (कि०) बोझ।
खुर—सं० (कि०) कटार, छुरा।
खुरङ—सं० (कि०) खुर।
खुरङ—सं० (कि०) उस्तरा।
खुरङखटख—सं० (कि०) पशुओं को बांधने का आंगन, पशुशाला।
खुरथ—सं० (कि०) कटार।
खुरमाह—स० क्रि० (कि०) सहन करना।
खुरमुक—सं० (कि०) पीले रंग का एक पक्षी।
खुरा—सं० (कि०) पूरी।
खुल—सं० (ला०) भूसी।
खुल—सं० (कि०) चमड़ा, खाल, भेड़-बकरी की खाल का बना थैला।

खुलडमाह— स० क्रि० (कि०) ओढ़ना।
खुलडुंफमाह— स० क्रि० (कि०) सिर ढंकना।
खुलडुममाह— अ० क्रि० (कि०) सिमटना।
खुलयामिक— स० क्रि० (कि०) खोलना, मुक्त करना।
खुलालमाह— स० क्रि० (कि०) चौड़ा करना।
खुवा— सं० (कि०) राहु।
खुशरतमाह— अ० क्रि० (कि०) खिसकना।
खुशरामाह— स० क्रि० (कि०) धकेलना।
खुशिथु— सं० (कि०) खुशियां।
खुसी— सं० (कि०) अधिकार। इच्छा, पसंद। प्रसन्न।
खुसीलगमिक— अ० क्रि० (कि०) प्रसन्न होना।
खुसीतुततुत— सं० (कि०) मनमर्ज़ी।
खूजिगमाह— अ० क्रि० (कि०) वंशनाश होना।
खूर— सं० (कि०) आस्तीन।
खूर— सं० (कि०) खुखड़ी, नेपाली कटार।
खेंगमिक— अ० क्रि० (कि०) ठंड से अकड़ना।
खे— सं० (कि०) लाभ। अच्छा।
खेइबा— अ० क्रि० (ला०) खेलना।
खेउले— सं० (ला०) खिलौने।
खेऊछोड— सं० (कि०) लाभ का सौदा।
खेचड— सं० (कि०) अतिरिक्त धन। निर्वाह करने का अतिरिक्त साधन।
खेची— वि० (कि०) अकेला। अलग।
खेटामाह— अ० क्रि० (कि०) लाभान्वित होना।
खेनू— सं० (ला०) गेंद।
खेप— सं० (कि०) सुई।
खेपर— सं० (कि०) मिट्टी का टूटा बर्तन।
खेपा— सं० (कि०) सरदी के मौसम में मनाया जाने वाला एक त्योहार।
खेपा— वि० (कि०) विद्वान।
खेपाचो— सं० (कि०) खेपा त्योहार में 'कशमक' (रसांत) झाड़ी को दरवाज़ों आदि पर लगाने का संस्कार।
खेपो— सं० (कि०) चम्मच।
खेमालुरे— अ० (कि०) लाभ न होने या अच्छा न लगने का भाव।
खेमाह— स० क्रि० (कि०) देना।
खेर— वि० (कि०) टेढ़ा।
खेरओंफ— सं० (कि०) टेढ़ा रास्ता।
खेरत्रे— स० क्रि० (ला०) ले जाना।
खेरठेपड— सं० (कि०) टेढ़ी टोपी।
खेरबा— स० क्रि० (ला०) ले जाना।
खेररयामिग— स० क्रि० (कि०) पीछा करना।
खेरामाह— स० क्रि० (कि०) पीछा करना। बुलाना।
खेराश्यमाह— अ० क्रि० (कि०) भाग-दौड़ करना।
खेलड— सं० (कि०) गाय।
खेलाशमाह— स० क्रि० (कि०) वार्तालाप करना।
खेलुख— सं० (कि०) स्वभाव।
खेसर— वि० (कि०) तिरछा।
खैरमिठ्या— वि० (कि०) तिरछी नज़र वाला।
खोंठ— सं० (कि०) खांडसारी।
खोंतली— सं० (कि०) एक फल विशेष।
खो— सर्व० (कि०) यह। वह।
खोअग— सं० (ला०) पेट।
खोअदामाह— स० क्रि० (कि०) पता करना।
खोई— सर्व० (कि०) उसका।
खोकपा— सं० (कि०) ढांचा।
खोकपा— वि० (कि०) भीतरी, आभ्यंतर का।
खोका— सं० (ला०) गोद।
खोक्चू— सं० (कि०) अमावस्या।
खोख— सं० (कि०) उदर, पेट।
खोखऊ— वि० (कि०) सांसारिक, दुनियावी।
खोखचलामाह— अ० क्रि० (कि०) दस्त लगना।
खोखछतमाह— अ० क्रि० (कि०) राशन समाप्त होना।
खोखशोलमाह— अ० क्रि० (कि०) उदर वेदना होना।
खोखा— सं० (कि०) भवसागर।
खोखाक्यम्माह— स० क्रि० (कि०) चक्कर काटना, परिक्रमा करना।
खोखुअपा— वि० (कि०) पेटू।
खोखुछडखनड— वि० (कि०) गर्भवती।
खोखुशोत— सं० (कि०) उदर रोग।
खोखुहचिंगला— सं० (कि०) गर्भस्थ शिशु।
खोगटेर— स० क्रि० (कि०) खांसकर अपनी उपस्थिति बताना।
खोगपा— वि० (कि०) मध्यवर्ती। सं० उदर।
खोडनाह— स० क्रि० (कि०) उधेड़ना।
खोडमाह— स० क्रि० (कि०) मोड़ना।
खोडशिमिग— अ० क्रि० (कि०) झुकना।
खोचम— सं० (कि०) खुर।
खोचर— सं० (कि०) खच्चर।
खोचोप— सं० (कि०) दे० खोचम।
खोचोपुहमोत— सं० (कि०) खुर का चिह्न।
खोचोम— सं० (कि०) दे० खोचम।
खोचोर— सं० (कि०) दे० खोचर।
खोजड— वि० (कि०) वाम, बायां।
खोजा— वि० (कि०) बायें हाथ से कार्य करने वाला।
खोटसिहमी— वि० (कि०) परिश्रमी।
खोटिस— वि० (कि०) त्रुटिपूर्ण।
खोटोख— सं० (कि०) गड्ढा।
खोड़— सं० (कि०) Juglans regia.
खोड़खिमुजा— सं० (ला०) अगूंठा।
खोद— सं० (कि०) मिलावट।
खोत— सं० (कि०) कुदाल।
खोत— सं० (कि०) घराट में डाली जाने वाली अन्न की मात्रा।
खोतुनऊ— वि० (कि०) वशीभूत।
खोतोर— सं० (कि०) खच्चर।
खोतोरिया— सं० (कि०) खच्चर का मालिक।
खोदऊजेमाह— स० क्रि० (कि०) पूछताछ करना।

**खोदामाह**— स० क्रि० (कि०) जासूसी करना।
**खोन**— सं० (कि०) शत्रुता।
**खोनङ**— सं० (कि०) क्षेत्र।
**खोनचे**— स० क्रि० (कि०) पहनना।
**खोनअनोमतोई**— वि० (कि०) कुरूप।
**खोनमाह**— स० क्रि० (कि०) देखना।
**खोनमाह**— स० क्रि० (कि०) जांच करना।
**खोना**— सर्व० (कि०) उससे।
**खोना**— सं० (कि०) खड्ढा रूपी स्थान।
**खोनिङ**— सं० (कि०) थाली।
**खोनुजेमाह**— स० क्रि० (कि०) देखभाल करना।
**खोनुहतामाह**— स० क्रि० (कि०) देखना।
**खोप**— सं० (कि०) ढक्कन।
**खोपटामाह**— स० क्रि० (कि०) ढक्कन लगाना।
**खोपमतोई**— वि० (कि०) अनावृत, आवरण रहित।
**खोपमाह**— स० क्रि० (कि०) ढांपना।
**खोबू**— सं० (कि०) ढक्कन।
**खोमयुनिह**— सं० (कि०) अनबन।
**खोयङ**— वि० (कि०) बायां।
**खोर**— सं० (कि०) अनुयायी।
**खोर**— सं० (कि०) चम्मच।
**खोर**— सं० (कि०) पशुओं का चारा।
**खोरखोखमाह**— अ० क्रि० (कि०) चक्कर काटना।
**खोरखोरतमाह**— स० क्रि० (कि०) पीछा करना।
**खोरङ**— वि० (कि०) लंगड़ा।
**खोरचिला**— वि० (कि०) अपव्ययी, खर्चीला।
**खोरतु**— वि० (कि०) लंगड़ा।
**खोरतोङ**— सं० (कि०) खाई।
**खोरथ**— सं० (कि०) देवपूजा की सामग्री।
**खोरपङ**— सं० (कि०) सेवक।
**खोरबङ**— सं० (कि०) राजसेवक।
**खोरर**— सं० (कि०) व्यय।
**खोरलो**— सं० (कि०) चक्र।
**खोरलो**— सं० (कि०) डब्बा।
**खोरलोसा**— सं० (कि०) चक्रधारी।
**खोरस**— वि० (कि०) लंगड़ा।
**खोरहलामाह**— स० क्रि० (कि०) व्यय करना।
**खोरा**— सं० (ला०) चूल्हा।
**खोरालुतेत**— सं० (कि०) पालतु भेड़।
**खोरीच**— सं० (कि०) दीपदान।
**खोरुआ**— सं० (कि०) भवसागर।
**खोरे**— वि० (कि०) लंगड़ी।
**खोरो**— सं० (कि०) पशुओं का खुजली रोग।
**खोर्लोतीर**— वि० (ला०) अग्रिम, अगला।
**खोळ**— सं० (कि०) छिलका।
**खोलखोलमाह**— स० क्रि० (कि०) छिलका उतारना।
**खोलगङ**— सं० (कि०) मुख्य द्वार।
**खोलङ**— सं० (कि०) खलिहान।
**खोलटा**— सं० (ला०) छिलका।
**खोलटी**— सं० (कि०) गवाक्ष, खिड़की।
**खोलडिङ**— सं० (कि०) पशुओं के जल पीने का पात्र। नांद।
**खोलथुह**— अ० क्रि० (कि०) पृथक् होना।
**खोलमा**— वि० (कि०) उबला हुआ।
**खोलयामू**— स० क्रि० (कि०) खोलना।
**खोला**— सं० (कि०) सत्तू का घोल।
**खोलाइबा**— स० क्रि० (ला०) छीनना।
**खोलाह-खोलाह**— सं० (कि०) सत्तू व पानी का मिश्रण।
**खोली**— सं० (कि०) दीवार में दीपक आदि रखने का स्थान।
**खोळी**— सं० (कि०) सरसों का तेल।
**खोलीफो**— वि० (कि०) मूर्ख।
**खोलीबो**— सं० (कि०) सरसों की खली एवं आटा मिलाकर बनाई गई कढ़ी।
**खोलूअ**— सं० (कि०) अनाज का अधपका दाना।
**खोलूअ**— सं० (कि०) आटा।
**खोलोप**— सं० (कि०) छिलका।
**खोल्यङ**— सं० (कि०) खलिहान।
**खोशङ**— सं० (कि०) एक घास विशेष।
**खोसमाह**— अ० क्रि० (कि०) समाना।
**खोहङखमाह**— अ० क्रि० (कि०) झुकना।
**खोहर**— सं० (क्रि०) व्यय।
**खोह्रथु**— अ० क्रि० (कि०) काबू आना।
**खौचौ**— सं० (कि०) खुर।
**खौचौब**— सं० (कि०) खुर।
**खौर**— सं० (कि०) टूटा हुआ घड़ा अथवा ठीकरा।
**खौरङ**— वि० (कि०) लंगड़ा।
**खौरी**— सं० (कि०) लकड़ी को कुरेद कर बनाया कटोरीनुमा पात्र।
**ख्यङजीमाह**— अ० क्रि० (कि०) सिकुड़ना।
**ख्यत**— अ० क्रि० (कि०) अंतर।
**ख्यतमाह**— स० क्रि० (कि०) उतारना। कम करना।
**ख्यपर**— अ० (कि०) दे० ख्यत।
**ख्यमपो**— वि० (कि०) आवारा।
**ख्यमसा**— वि० (कि०) छत वाला।
**ख्यमाह**— अ० क्रि० (कि०) घूमना।
**ख्यम्माह**— अ० क्रि० (कि०) भटकना।
**ख्यम्मिग**— अ० क्रि० (कि०) मागना।
**ख्यलना**— स० क्रि० (कि०) जांच करना।
**ख्यलमाह**— स० क्रि० (कि०) बीनना।
**ख्यलमाह**— स० क्रि० (कि०) चुनाव करना।
**ख्यांग**— अ० (ला०) किधर।
**ख्या**— सं० (कि०) सामर्थ्य।
**ख्याउणा**— स० क्रि० (शि०) खिलाना।
**ख्याक्पा**— सं० (कि०) बर्फ।
**ख्याङ**— सं० (कि०) पत्थर और मिट्टी का बर्तन।
**ख्याची**— सं० (कि०) कुत्ते का बच्चा, पिल्ला।
**ख्याब**— सं० (कि०) दरार, दो वस्तुओं के बीच कोण बनाता

हुआ खाली स्थान।
**ख्यामिग**— स० क्रि० (कि०) देखना।
**ख्यार**— सं० (कि०) बिछावन।
**ख्याशाह**— अ० क्रि० (कि०) पैदा होना।
**ख्यासुमाह**— अ० क्रि० (कि०) समर्थ होना।
**ख्यी**— सं० (कि०) खून।
**ख्युङ**— सं० (कि०) चिढ़।
**ख्युच**— सं० (कि०) बाजू।
**ख्युपचिमिग**— स० क्रि० (कि०) निंदा करना।
**ख्युपमिग**— स० क्रि० (कि०) निंदा करना।
**ख्युरख्युरमाह**— अ० क्रि० (कि०) खीझना।
**ख्युलथ**— सं० (कि०) टीला।
**ख्युलमाह**— स० क्रि० (कि०) हटाना।
**ख्युलमिग**— स० क्रि० (कि०) छीलना।
**ख्यूङ·पेया**— सं० (कि०) बाहर से आने वाले पक्षी-विशेष जो पंक्तिबद्ध उड़ान भरते हैं।
**ख्यूच**— सं० (कि०) बाजू।
**ख्योंग**— सर्व० (कि०) आप।
**ख्योंचे**— स० क्रि० (ला०) लाना।
**ख्योई**— सर्व० (कि०) तेरा।
**ख्योख्या**— सं० (कि०) खुजली।
**ख्योख्योमाह**— अ० क्रि० (कि०) खुजलाना।
**ख्योट**— सं० (कि०) चम्मच।
**ख्योत**— सर्व० (कि०) तू।
**ख्योथ**— सं० (कि०) दे० ख्योट।
**ख्योद**— सर्व० (कि०) तुम।
**ख्योरबुङ**— वि० (कि०) अंजलिभर।
**ख्योलख्योलतमाह**— अ० क्रि० (कि०) लड़खड़ाना।
**ख्रामिग**— स० क्रि० (कि०) देरी करना।
**खिंचा**— सं० (ला०) खड़डी।
**खुंफह**— वि० (कि०) नग्न।
**खुबुङ**— वि० (कि०) एक हाथ भर।
**खुस**— सं० (कि०) अखरोट आदि का सख्त छिलका।
**खुसमिग**— अ० क्रि० (कि०) सुराख होना।
**खे**— सं० (कि०) भूख।
**खेखाफ**— वि० (कि०) अस्तव्यस्त।
**खेमतीमाह**— स० क्रि० (कि०) परत चढ़ाना।
**खेमसा**— सं० (कि०) धारियां। परतदार।
**खोओमाह**— स० क्रि० (कि०) खुरचना।
**खोओमाह**— स० क्रि० (कि०) चिपकी चीज़ उतारना, खुरचना।
**खोसमाह**— अ० क्रि० (कि०) नाराज़ होना।
**ख्वङ**— सं (कि०) मिट्टी का पात्र।
**ख्वङ·तुथकपा**— सं० (कि०) हल को जुए के साथ बांधने की रस्सी।
**ख्वङ·पो**— सं० (कि०) मिट्टी के पात्र की तह।
**ख्वङ·वरख ङेन-ङेन**— सं० (कि०) उलटा-पलटी।
**ख्वत**— सं० (कि०) कुदाली।
**ख्वरमें**— सं० (कि०) रात्रि का दिव्य दीप।
**ख्वलतास**— सं० (कि०) माला।
**ख्वात**— सं० (कि०) छोटी कुदाली।
**ख्वायामाह**— स० क्रि० (कि०) बरबाद करना।
**ख्वितु**— सं० (कि०) कुत्ते को दिया जाने वाला भोजन।
**ख्विरी**— सं० (कि०) तकली के बटन का छिद्र।
**ख्वी**— सं० (कि०) कुत्ता।
**ख्वीचङ·ख**— सं० (कि०) कुत्ते का बच्चा।
**ख्वीजुलमाह**— अ० क्रि० (कि०) कुत्ते का भौंकना।
**ख्वीमो**— सं० (कि०) कुतिया।
**ख्वीशिई**— सं० (कि०) कुत्ते की जुएं।
**ख्वीशोत**— सं० (कि०) कुत्ते का रोग।
**ख्वेजख्वेलमाह**— स० क्रि० (कि०) अलग-अलग करना।

## ग

**गंग**— सं० (कि०) घाटी।
**गंग**— सं० (कि०) कौन।
**गंगखह**— सं० (कि०) टीला।
**गंगड़**— सं० (कि०) ठहरा हुआ पानी।
**गंठग**— सं० (कि०) गांठ।
**गंडाला**— सं० (कि०) Sambucus ebulus.
**गंड़ीरी**— सं० (कि०) Dephne papyracea.
**गंफ**— सं० (कि०) डिब्बा।
**गंमाऊपीई**— सं० (कि०) बूढ़ी दादी।
**गंमोरत**— सं० (कि०) बूढ़ी गाय।
**ग**— सर्व० (कि०) मैं।
**गइल्ल**— सं० (ला०) बिजली की कड़क।
**गऊ**— सं० (कि०) गले का आभूषण विशेष।
**गगापो**— वि० (कि०) कठिन।
**गगरो**— सं० (कि०) देव वस्त्र, घघरा।
**गगसा**— सं० (कि०) तंगी का समय, कठिनाई का समय।
**गङ**— सं० (कि०) घाटी।
**गङ·गङ**— सं० (कि०) गहरे पानी वाली जगह।
**गङ·पा**— सं० (कि०) घाट का निवासी।
**गङ·राशो**— सं० (कि०) फंदा।
**गङ·री**— सं० (कि०) बर्फ का पहाड़।
**गचकङ**— वि० (कि०) जमा हुआ।
**गच्छ**— अ० क्रि० (ला०) जाना।
**गछङ**— सं० (कि०) पटका जिससे पट्टू को कमर से बांधा जाता है।
**गछयाचमिक**— स० क्रि० (कि०) पहनना।
**गछबा**— अ० क्रि० (ला०) जाना।
**गज़न्ठा**— सं० (कि०) आसानी से न कटने वाली लकड़ी।
**गटतमाह**— अ० क्रि० (कि०) कम होना।
**गटनङ**— सं० (कि०) चोट लगने से उभरने वाली गिलटी।
**गटस**— वि० (कि०) तंग।
**गटातडि·हमी**— वि० (कि०) मुसीबत झेलने वाला।

**गटापिटा**—स० क्रि० (कि०) कम करना।
**गटाशङरी**—सं० (कि०) विपत्ति।
**गटेस**—वि० (कि०) तंग।
**गटो**—वि० (कि०) छोटा।
**गटोच्च**—वि० (कि०) बहुत छोटा।
**गटोस्या**—सं० (कि०) देवर, पति का छोटा भाई।
**गठा**—सं० (कि०) अभाव।
**गठो**—वि० (कि०) थोड़ा।
**गठोलमाह**—स० क्रि० (कि०) कम करना।
**गड़णा**—सं० (कि०) बर्फ की चट्टान।
**गढोचे**—अ० (कि०) थोड़ा सा।
**गढोलेन**—सं० (कि०) थोड़ा काम।
**गणबा**—स० क्रि० (ला०) गिनना।
**गतस**—सं० (कि०) सामान।
**गतसपा**—वि० (कि०) सामान ले जाने वाला।
**गदपा**—सं० (कि०) गिरने योग्य भूमि। कच्ची भूमि।
**गदपो**—वि० (कि०) बूढ़ा।
**गदमो**—वि० (कि०) बूढ़ी।
**गदिकर**—सं० (कि०) मेढ़े की एक नस्ल।
**गदो**—अ० (कि०) थोड़ा सा।
**गनङ**—सं० (कि०) गलगंड, घेघा।
**गनठङ**—सं० (कि०) गांठ।
**गनठङच**—सं० (कि०) छोटी घंटी।
**गनम**—सं० (कि०) गंध।
**गनुके**—वि० (कि०) गलगंड वाला।
**गनुख**—सं० (कि०) गीदड़।
**गनुङ**—सं० (कि०) गले का मांस।
**गनुङख**—सं० (कि०) दे० गनुख।
**गने**—सं० (कि०) जोड़।
**गनेकाऊ**—सं० (कि०) द्विमुखी अखरोट।
**गनेफाथ**—सं० (कि०) दोतरफा थैला, गोन।
**गपखेमाह**—स० क्रि० (कि०) छलना।
**गपश्यूर**—वि० (कि०) बकवासी।
**गपिया**—वि० (कि०) नटखट।
**गप्पा**—सं० (ला०) बात; मामला।
**गप्पाफासा**—सं० (ला०) बातचीत।
**गफना**—सं० (कि०) नाच-गाना।
**गब**—सं० (कि०) धोखा।
**गबमिक**—अ० क्रि० (कि०) कांटे आदि का चुभना।
**गम**—सं० (ला०) संदूक।
**गमगम**—वि० (कि०) अधखुला।
**गमजा**—सं० (कि०) शर्तनामा।
**गमटामाह**—स० क्रि० (कि०) पशु द्वारा मुंह से काटा जाना, दांत मारना।
**गमना**—वि० (कि०) थोड़ा खुला। हैरान।
**गमाकङ**—वि० (कि०) हैरान सा।
**गमोङफो**—वि० (कि०) सख्त।
**गर**—सं० (कि०) दांत।
**गरखेमाह**—स० क्रि० (कि०) रुकावट डालना।
**गरङ**—सं० (कि०) नदी।
**गरङती**—सं० (कि०) दरिया का पानी।
**गरप**—वि० (कि०) काफी।
**गरपचे**—क्रि० (कि०) अधिकतर।
**गरपी**—सं० (ला०) नाच।
**गरमर**—अ० क्रि० (कि०) गिर जाना।
**गरमरु**—सं० (कि०) Hedera helix.
**गरमीक**—अ० क्रि० (कि०) गिरना।
**गरमो**—सं० (कि०) बछड़ी।
**गरमोनी**—सं० (कि०) फूल।
**गरा**—सं० (कि०) दांत।
**गराइबा**—अ० क्रि० (ला०) पिघलना।
**गराकुरे**—सं० (कि०) घुमाव, वक्र।
**गराब**—वि० (कि०) अधिक।
**गरितुमाह**—अ० क्रि० (कि०) खुश होना।
**गरिस**—वि० (कि०) आनंदित।
**गरी:**—सं० (कि०) खुशी।
**गरीईतङमाह**—अ० क्रि० (कि०) प्रसन्न होना।
**गरीईनङग्रेप**—सं० (कि०) प्रिय गीत।
**गरीतङमाह**—अ० क्रि० (कि०) आनंदित होना।
**गरीसब्रेङकीयचोअ**—अ० क्रि० (कि०) रोमांचित होना।
**गरीससीऊ**—अ० क्रि० (कि०) प्रसन्नता से फूले न समाना।
**गरू**—सं० (कि०, ला०) बछड़ा।
**गरू**—सं० (कि०) झूले में लगी गरारी।
**गरेकारेदीबा**—अ० क्रि० (ला०) चीखना।
**गरेबा**—वि० (कि०) परिश्रमी।
**गरोप**—सं० (कि०) ऐसा व्यक्ति जिस पर देवता का भाव आता है।
**गरोपणा**—स० क्रि० (कि०) रोकना।
**गरोल**—सं० (कि०) Clem"tis connata.
**गलङ**—सं० (कि०) गला।
**गलङप**—सं० (कि०) दराज।
**गलचङ**—सं० (कि०) हिचकी।
**गलछे**—वि० (कि०) अत्यावश्यक।
**गलथमाह**—स० क्रि० (कि०) समझौता करना।
**गलथोआ**—सं० (कि०) पेय पदार्थ में आटा आदि न घुलने के कारण पड़ी गांठ।
**गलदन**—सं० (कि०) देव लोक।
**गलदोरा**—सं० (कि०) लोहा कूटने का पत्थर।
**गलपा**—सं० (कि०) गुलूबंद।
**गलफा**—सं० (कि०) ज़ख्म, घाव।
**गलफा**—वि० (कि०) मिलनसार।
**गलफामी**—वि० (कि०) मैत्री भाव वाला (व्यक्ति)।
**गलफो**—सं० (कि०) मैत्री।
**गलम**—सं० (कि०) पत्थर।
**गलमा**—सं० (कि०) मेल।
**गलमाह**—स० क्रि० (कि०) समझौता करना।

गलवाह्—अ० क्रि० (कि०) तैरना।
गलशम—सं० (कि०) समझौता।
गलशमींक—अ० क्रि० (कि०) समझौता होना।
गलीरवसर—सं० (कि०) घर आंगन।
गलीङ—सं० (कि०) गली।
गलीमरी—वि० (कि०) बहुत बुरा।
गलोनतङ—सं० (कि०) गोम्फ़ा।
गवालत्क—सं० (ला०) पशु बांधने की रस्सी।
गवालमो—अ० क्रि० (कि०) छलांग मारना, उछलना।
गवेचा—स० क्रि० (कि०) लगाना।
गवेण—सं० (कि०) गृहिणी।
गस—सर्व० (कि०) मैंने।
गसगोला—सं० (कि०) ऊनी कपड़ा।
गसमाह—अ० क्रि० (कि०) बुढ़ापा आना।
गहम—सं० (कि०) डिब्बा।
गहलमाह—स० क्रि० (कि०) समझौता करना।
गांग्मी—सं० (ला०) मर्द, पुरुष।
गांठङ—सं० (कि०) गांठ।
गांदू—अ० (कि०) कहां।
गा:—सं० (कि०) लकड़ी से बनी घोड़े की काठी।
गाइचा—अ० क्रि० (ला०) जाना।
गाई—सं० (ला०) गाली।
गाऊ—सं० (ला०) गाय।
गाओ-कच्चें—स० क्रि० (कि०) तंग करना।
गागरो—सं० (कि०) देवता को पहनाया जाने वाला घाघरा।
गाचको—सं० (कि०) कमर।
गाछङ—सं० (कि०) कमर बंद।
गाजिमिगगासा—सं० (कि०) पहनने के वस्त्र।
गाटामाह—स० क्रि० (कि०) काठी बांधना।
गाटेस—वि० (कि०) तंग।
गाठुम—सं० (कि०) गांठ।
गातन—सं० (कि०) घोड़े की काठी के नीचे लगाये जाने वाले वस्त्र।
गातेखा—अ० क्रि० (कि०) झगड़ा होना।
गात्री—सं० (ला०) कमर में कसी जाने वाली ऊन की काली डोर।
गानठङ—सं० (कि०) गांठ।
गानिङ—सं० (कि०) ग्राम।
गापलोमाह—अ० क्रि० (कि०) डकारना।
गाबिन—सं० (कि०) गर्भवती स्त्री।
गाम—सं० (कि०) घी या गहने रखने का लकड़ी का बर्तन।
गामअंथमाह—अ० क्रि० (कि०) लू चलना।
गायतमाह—अ० क्रि० (कि०) रुग्ण होना।
गाया—सं० (कि०) ज़रूरत।
गायी—वि० (कि०) अच्छे लगने वाले।
गारङ—सं० (कि०) नदी।
गारयामिक—स० क्रि० (कि०) स्वागत करना।
गारिङस—सं० (कि०) बटाई पर दी गई ज़मीन।
गाल—सं० (कि०) बलगम।
गालकलमाह—स० क्रि० (कि०) अनाज लादना।
गालयामिक—स० क्रि० (कि०) हांकना।
गाला—वि० (कि०) अच्छा।
गालामाह—स० क्रि० (कि०) पानी में लकड़ी बहाना।
गालिङ—सं० (कि०) गाली।
गावा—सं० (कि०) खुश होने का भाव।
गावा—सं० (कि०) सफेद तिलक वाला पशु।
गावो—वि० (कि०) कठिन।
गाश—सं० (कि०) दांत मारने की क्रिया।
गाशङ—सं० (कि०) एक अन्न विशेष जिसे प्रायः व्रत के अवसर पर प्रयोग किया जाता है।
गाशमीक—अ० क्रि० (कि०) बिखरना।
गाशोङ—सं० (कि०) गाशङ का हलवे जैसा नकमीन पकवान।
गास—सं० (कि०) वस्त्र।
गाहाच्मीक—अ० क्रि० (कि०) ठीक होना, अच्छा होना।
गिंदु—सं० (कि०) गेंद।
गिङखमाह—अ० क्रि० (कि०) रुकना।
गिङचा—अ० क्रि० (ला०) पिघलना।
गिङालचा—स० क्रि० (ला०) पिघलाना।
गिज़िमिज़ि—सं० (कि०) चहल-पहल।
गिटा—सं० (कि०) जमा हुआ घोल।
गिट्ठ—वि० (ला०) ठिगना।
गिणचा—स० क्रि० (ला०) गिनना।
गिदार—सं० (कि०) गीदड़।
गिदिल—सं० (कि०) ऊन का गुच्छा।
गिनमऊनारे—सं० (कि०) अत्यावश्यक वस्तु।
गिनमाह—स० क्रि० (कि०) चाहना।
गिनमिक—स० क्रि० (कि०) गिनना।
गिनमेनचे—वि० (कि०) इच्छुक।
गिन्माह—स० क्रि० (कि०) चाहना।
गिन्माहतोर—वि० (कि०) वांछित।
गिपकैन्यू—सं० (कि०) अचानक डर से बिदकने का भाव।
गिमनङ—अ० (कि०) यदि।
गिमा—सं० (कि०) आंत। भेड़-बकरी आदि की ऐसी आंतें जिसमें आटे और खून का मिश्रण पकाया हुआ हो।
गिमिह-गिमिह—सं० (कि०) घूम-धाम।
गियङ—सं० (कि०) एक औषधि विशेष।
गिरगिर—वि० (कि०) गोल।
गियङ—सर्व० (कि०) आप।
गिरोऊ—सर्व० (कि०) आपका।
गिलडिङ—अ० क्रि० (कि०) पानी एकत्रित होना।
गिला—सं० (कि०) उद्यान।
गिसगिस—वि० (कि०) गंभीर।
गिसम—सं० (कि०) छींक।
गिसमाह—अ० क्रि० (कि०) छींकना।
गिसमिक—अ० क्रि० (कि०) दे० गिसमाह।
गीं—सं० (कि०) द्वार।

**गींडा**—सं० (कि०) टोपी।
**गीचलेख**—सं० (कि०) बर्तन को साफ करने के बाद रह गई चिकनाई।
**गीठूश**—वि० (कि०) बालिश्त भर।
**गीतकारस**—सं० (कि०) गीत गाने वाला।
**गीतकारे**—सं० (कि०) गीत गाने वाली।
**गीत की कशी**—सं० (कि०) मरोड़।
**गीथङ**—सं० (कि०) गीत।
**गीनमीक**—अ० क्रि० (कि०) हिलमिल जाना।
**गीपकेनमीक**—अ० क्रि० (कि०) मरते हुए तड़पना।
**गीमाधेतु**—अ० क्रि० (कि०) असफल होना।
**गीरे**—सं० (कि०) मादा।
**गीलीगिली**—वि० (कि०) मस्त।
**गीशह**—स० क्रि० (कि०) चाहना।
**गीसिब**—सं० (कि०) मस्तचाल।
**गीसिब-गीसिब**—सं० (कि०) देवता का मस्ती भरा नृत्य।
**गंगरू**—सं० (कि०) घुंघरू।
**गुंज़िया**—वि० (कि०) बड़ी मूंछों वाला।
**गुंम्फू**—सं० (कि०) ढोल बजाते समय अंगुली द्वारा निकाली आवाज़।
**गुंठा**—सं० (कि०) अंगूठा।
**गुंठाटामाह**—सं० क्रि० (कि०) अंगूठा लगाना।
**गुंडुम**—वि० (कि०) दाग़ी फल।
**गुंत**—सं० (कि०) शरद ऋतु।
**गु.म**—सं० (ला०) संदूक।
**गु**—वि० (कि०) नौ।
**गु**—सं० (कि०) इंतज़ार।
**गुई**—वि० (कि०) नौ।
**गुकतू**—स० क्रि० (कि०) इंतजार करना।
**गुखाङ**—अ० क्रि० (ला०) रेंगना।
**गुखेल**—सं० (कि०) छड़ी।
**गुगती**—सं० (कि०) घुग्घी, एक पक्षी विशेष।
**गुगपा**—स० क्रि० (कि०) इंतजार करना।
**गुगल**—सं० (कि०) Juniperus recuria.
**गुगलङ**—सं० (कि०) गुग्गल धूप की जड़।
**गुगसेर**—सं० (कि०) तिब्बती सोना।
**गुङ**—वि० (कि०) खुला।
**गुङहोन**—सं० (कि०) आकाश।
**गुचु**—वि० (कि०) नब्बे।
**गुछछुरमाह**—स० क्रि० (कि०) अंगूर की शराब निकालना।
**गुछप**—सं० (कि०) दस्ताना।
**गुछी**—सं० (कि०) गमछे जैसा एक वस्त्र।
**गुछीई**—सं० (कि०) अंगोछा।
**गुज़**—सं० (कि०) रीढ़ की हड्डी के भीतर विद्यमान चर्बी जैसा पदार्थ।
**गुजुरी**—सं० (कि०) छेड़खानी।
**गुटननङ**—सं० (कि०) घुटना।
**गुटाल**—वि० (कि०) खुली मुट्ठी भर।
**गुटालवङ**—वि० (कि०) पतली कमर वाली।
**गुटील**—सं० (ला०) गुठली।
**गुडमाह**—अ० क्रि० (कि०) चुभना।
**गुडर**—सं० (कि०) गोलाई।
**गुड्ड**—सं० (ला०) हाथ।
**गुढ़ा**—वि० (कि०) झुका हुआ।
**गुत**—सं० (कि०) हाथ।
**गुततफुड्डबतमाह**—स० क्रि० (कि०) ठहाका लगाना।
**गुतफमा**—स० क्रि० (कि०) ताली बजाना।
**गुतमोमाह**—स० क्रि० (कि०) हाथ मलना।
**गुतलफ**—सं० (कि०) हथकरघा।
**गुतलेन**—सं० (कि०) हस्तकला।
**गुतिङ-गुतिङ**—अ० (कि०) हाथों-हाथ।
**गुतुसचेमिन**—सं० (कि०) हस्तलेख।
**गुतोङ**—सं० (कि०) अमावस्या।
**गुथु**—सं० (कि०) पनघट।
**गुथुऊ-दा**—सं० (कि०) मंडाई का स्थान।
**गुथू**—सं० (कि०) ऊनी वस्त्र मांड़ने के लिए बना लकड़ी का पात्र।
**गुद**—सं० (कि०) हाथ।
**गुदपु**—सं० (कि०) आमाशय।
**गुदरा**—सं० (कि०) फटा पुराना कपड़ा।
**गुदा**—सं० (कि०) बाज़ू।
**गुदुचैद**—सं० (कि०) हस्तरेखा।
**गुन**—सं० (ला०, कि०) शीतकाल।
**गुन**—सं० (कि०) अंगूर।
**गुन**—सं० (कि०) बर्फ।
**गुनकिल**—सं० (कि०) सर्दी का मध्यकाल।
**गुनगुनह**—सं० (कि०) गुनगुनाहट।
**गुनचाथ**—सं० (कि०) सर्दी में रहने का स्थान।
**गुनछङ**—सं० (कि०) अंगूरी शराब।
**गुनछा**—सं० (ला०) शीतकालीन निवास।
**गुनजुरूम**—सं० (कि०) गांठ।
**गुनण्याले**—सं० (कि०) दुलहन, वधू।
**गुनदोर**—सं० (कि०) शीतकालीन राशन।
**गुनपङा**—सं० (कि०) अंगूर की बेल।
**गुनमों**—वि० (कि०) वृद्धा।
**गुनश्यरुह**—सं० (कि०) सर्दी का मौसम।
**गुनसा**—सं० (कि०) शीतकालीन निवास।
**गुनिच**—सं० (कि०) गुड़िया।
**गुनों**—सं० (कि०) शीत ऋतु।
**गुन्मा**—सं० (कि०) घोड़ी।
**गुप**—सं० (कि०) बारी।
**गुपमाह**—स० क्रि० (कि०) घेरना।
**गुपयामिक**—स० क्रि० (कि०) गुप्त रखना।
**गुपुहपिन्माह**—स० क्रि० (कि०) घेराव करना।
**गुब-ग्रब**—वि० (कि०) पंक्तिबद्ध।
**गुबटङ**—सं० (कि०) पर्वत की चोटी।

गुबना— वि० (कि०) ऐसा स्थान जहां हवा महसूस न हो।
गुबरङ—सं० (कि०) दे० गुबटङ।
गुबिंस—सं० (कि०) मंज़िल।
गुबीङ—सं० (कि०) मंज़िल।
गुम—सं० (कि०) धनुष।
गुमाह—अ० क्रि० (कि०) कांटा चुभना।
गुमो-मो—सं० (कि०) धनुष-बाण।
गुर—सं० (कि०) घुमाव, मोड़, वृत, टेढ़ापन।
गुरकायाङ—सं० (कि०) गोल दायरे में किया जाने वाला नाच।
गुरकुम—सं० (कि०) केसर।
गुरख्योग—वि० (कि०) टेढ़ा-मेढ़ा।
गुरगुर—वि० (कि०) मुड़ा हुआ। सं० बिजली की कड़कड़ाहट।
गुरगुलिई—सं० (कि०) अजगर।
गुरगुली—सं० (कि०) आकाश की बिजली।
गुरङ—सं० (कि०) गुड़।
गुरङदू—सं० (कि०) पिटाई।
गुरङशीङ—सं० (कि०) गन्ना।
गुरचर—सं० (कि०) चरागाह।
गुरचा—स० क्रि० (कि०) सहना।
गुरबङया—वि० (कि०) टेढ़े पांव वाला।
गुरबेला—सं० (कि०) तंबू में लगे बांस के डंडे।
गुरम—सं० (कि०) दे० गुरङ।
गुरमती—सं० (कि०) गुड़ का पानी।
गुरमनेली—सं० (कि०) गुड़ का ढेला।
गुरमसिङ—सं० (कि०) गन्ना।
गुरमाह—स० क्रि० (कि०) सहना।
गुररेनमीक—अ० क्रि० (कि०) गुर्राना।
गुरसीप—सं० (कि०) वक्षस्थल की हड्डी।
गुरु—सं० (कि०) सफेद मिट्टी।
गुरुअ—सं० (कि०) खड़िया मिट्टी, सफेद मिट्टी।
गुरुबई—सं० (कि०) मित्र, गुरुभाई।
गुरुमा—सं० (कि०) एक शास्त्रीय गीत, भगवान बुद्ध की स्तुति।
गुरेपाटे—वि० (कि०) टेढ़ा-मेढ़ा।
गुरेल—सं० (कि०) गुलेल।
गुल—सं० (कि०) बलराम।
गुलगुल—वि० (ला०) कुनकुना।
गुलङ—सं० (कि०) नितंब।
गुलङश्या—सं० (कि०) नितंब का मांस।
गुलजङ—वि० (कि०) लंगड़ा।
गुलडियामिक—स० क्रि० (कि०) पोचा लगाकर साफ करना।
गुलफो—वि० (कि०) आलसी, प्रमादी।
गुलफो—स० क्रि० (कि०) ढीला करना।
गुलफो—वि० (कि०) दुर्बल।
गुलबलोस—सं० (कि०) अधिक खांसी।
गुलमाह—अ० क्रि० (कि०) खांसना।
गुलिग—सं० (कि०) कुंडी।
गुलिङ—सं० (कि०) नितंब।
गुली—सं० (कि०) गाली।
गुल्ली—अ० क्रि० (कि०) शरीर से चमड़ी उतरना।
गुल्लू—वि० (ला०) मीठा।
गुवन—स० क्रि० (कि०) इंतज़ार करना।
गुविङ—सं० (कि०) भूमि।
गुशकङ—वि० (कि०) चुप।
गुशरेवो—स० क्रि० (कि०) अंधेरे में ढूंढना।
गुशुर—वि० (कि०) घुटने के बल सरकने वाला।
गुसप—सं० (कि०) जुराब।
गुसाव—सं० (कि०) दस्ताना।
गूर—सं० (ला०) देवता का चेला।
गूर—सं० (कि०) तिरपाल।
गे:—सं० (कि०) मुसीबत, कष्ट।
गे:ग—वि० (कि०) लदा हुआ (पेड़ आदि)।
गे:गचया—सं० (कि०) अधिक उत्पादन देने वाली फसलें और फलों के वृक्ष।
गे—सर्व० (ला०) मैं।
गे—सं० (कि०) अखरोट की गिरी।
गेऊ—सं० (कि०) अखरोट आदि की गिरी की माला।
गेठा—सं० (कि०) अलाव, अधिक आग।
गेठूल—सं० (कि०) अंगीठी।
गेत—वि० (कि०) आठ।
गेतपो—सं० (कि०) वृद्ध।
गेन—सं० (कि०) कर्तव्य।
गेनकुर—सं० (कि०) उतार-चढ़ाव।
गेनपो—वि० (कि०) वृद्ध।
गेप—सं० (कि०) पीठ।
गेफमाह—स० क्रि० (कि०) चिपकाना।
गेबमिक—स० क्रि० (कि०) दो वस्त्रों को पिन से जोड़ना।
गेबा-जिन्बा—सं० (कि०) दान-पुण्य।
गेबिजा—सं० (कि०) जंगली बादाम।
गेब्यां—सं० (कि०) Corylus Colurna.
गेरकङ—वि० (कि०) आलसी मुद्रा में, अस्त व्यस्त रूप में।
गेरगम—सं० (कि०) गुरु।
गेरबा—वि० (कि०) परिश्रमी।
गेरयामु—स० क्रि० (कि०) घेरना।
गेरी—सं० (कि०) प्रसन्नता।
गेरो—सं० (कि०) गेरू।
गेरोफटेननीक—सं० (कि०) शरीर पर दाने फैलने की बीमारी।
गेलड़ामाह—स० क्रि० (कि०) पांव तले कुचलना। 'पोचे' से साफ करना।
गेलसा—सं० (कि०) देश।
गेलोङ—सं० (कि०) बौद्ध भिक्षु।
गेलोङमा—सं० (कि०) भिक्षुणी।
गेवा—सं० (कि०) धर्म, दान।
गेसा—सं० (कि०) गांव।
गैंन—सं० (कि०) प्राण।
गैताङमीक—अ० क्रि० (कि०) मुसीबत में पड़ना।

गैरना—अ० क्रि० (कि०) लंबे पड़े रहना।
गैल—वि० (कि०) घायल।
गैशे—सं० (कि०) लामाओं की एक उपाधि।
गोंखरिया—वि० (कि०) साधारण।
गोंगना—वि० (कि०) आगे झुका हुआ।
गोंटस—सं० (कि०) गो वध करने वाला।
गोंटो—सं० (कि०) हथौड़ा।
गोंडेनलमाह—स० क्रि० (कि०) कृपा करना।
गोंडोलो—सं० (कि०) न फटने वाली गोलाकार लकड़ी।
गोंतरङ—सं० (कि०) गोमूत्र।
गो.र—सं० (कि०) घड़ा।
गो.रचङ—सं० (कि०) पतिगृह।
गो—सं० (कि०, ला०) दरवाज़ा।
गोअ—सं० (ला०) पर्वत।
गोअमाह—स० क्रि० (कि०) सुनना।
गोआ—सं० (ला०) दाना।
गोइनिङ—सं० (कि०) वर्षा।
गोइनिङ—सं० (कि०) आकाश।
गोईमिङ—सं० (कि०) गगन।
गोकतल—सं० (कि०) राख।
गोकरना—सं० (कि०) चूल्हे का किनारा।
गोकोरमाह—स० क्रि० (कि०) भेद लेना, वश में करना।
गोखेङमो—अ० क्रि० (कि०) शीत से हाथ की अंगुलियों का अकड़ना।
गोख्यामिक—स० क्रि० (कि०) हौसला करना।
गोगङ—सं० (कि०) लकड़ी की कलछी।
गोगथूर—सं० (कि०) घोड़े की लगाम।
गोगमाह—स० क्रि० (कि०) सहना।
गोगलङ—सं० (कि०) नारी।
गोगसा—सं० (कि०) पद।
गोगु—वि० (कि०) निन्यानबे की संख्या।
गोग्पा—सं० (कि०) लहसुन।
गोङ—सं० (कि०) मूल्य।
गोङ—सं० (कि०) अंक।
गोङ—सं० (कि०) टालमटोल।
गोङखल—सं० (कि०) अधिक बोझ।
गोङखुहथकतु—सं० (कि०) रात्रि का भोजन।
गोङखोरिया—वि० (कि०) कृतज्ञ।
गोङघुर—सं० (कि०) लगाम।
गोङफो—सं० (कि०) नर प्रेत।
गोङश्यीमाह—स० क्रि० (कि०) नियम तोड़ना।
गोङसाङख—सं० (कि०) सायंकाल।
गोङा—सं० (कि०) अंडा।
गोचक—सं० (कि०) ताला।
गोचिग—वि० (कि०) इक्यानबे।
गोच्छ—अ० क्रि० (ला०) जाना।
गोछोल—सं० (कि०) बालिग।
गोछोलमाह—अ० क्रि० (कि०) उत्तीर्ण होना।
गोज़ी—वि० (कि०) चौरानबे।
गोजेद—सं० (कि०) प्रधान।
गोज्या—सं० (कि०) लंगूर।
गोझेद—वि० (कि०) अट्ठानवे।
गोट—सं० (कि०) मथनी।
गोटगोरन—सं० (कि०) गिलहरी।
गोटङ—सं० (कि०) घराट।
गोठङ—सं० (कि०) घराट।
गोठङराअ—सं० (कि०) चक्की या घराट का पत्थर।
गोठङिण्यां—सं० (कि०) घराट का स्वामी।
गोठयामिक—स० क्रि० (कि०) पशुओं को समूह में करना। पानी गांठना।
गोड़—सं० (कि०) मूल्य।
गोडला—वि० (ला०) मीठा।
गोडसा—सं० (कि०) सायंकाल।
गोड़ा—वि० (कि०) पचानबे।
गोडुग—वि० (कि०) छियानबे।
गोत—सं० (कि०) चंदा।
गोत—वि० (कि०) भाग।
गोतरङ—सं० (कि०) गोमूत्र।
गोतरोल—सं० (कि०) बाधा।
गोथुङ—सं० (कि०) रंग।
गोथोन्नाह—स० क्रि० (कि०) पार लगाना। कठिन मार्ग को पार करने के लिए साहस दिखाना।
गोदपो—सं० (कि०) वीर।
गोदमा—सं० (कि०) घोडी।
गोदुङ—सं० (कि०) तना।
गोदुन—वि० (कि०) सतानबे।
गोदो—सं० (कि०) विपदा।
गोनग—सं० (कि०) मारपीट।
गोनङ—सं० (कि०) लोहे का घन।
गोनजक—सं० (कि०) कपड़ा, परिधान।
गोनटो—सं० (कि०) हथौड़ा।
गोनटोच—सं० (कि०) हथौड़ी।
गोनडेन—सं० (कि०) संरक्षण।
गोनपा—सं० (ला०) मंदिर।
गोनपो—सं० (कि०) नाथ।
गोनफा—सं० (कि०) मंदिर।
गोनस—सं० (कि०) लंगूर।
गोनापंसगी—सं० (कि०) प्रत्येक।
गोनालामाह—स० क्रि० (कि०) कष्ट सहना।
गोनीङ—सं० (कि०) तना।
गोने—सं० (कि०) गृहिणी, पत्नी।
गोनेपङ—सं० (कि०) महिला वर्ग।
गोप—वि० (कि०) कई।
गोप-गोप—अ० (कि०) अधिकतर।
गोपगोरमाह—स० क्रि० (कि०) देर करना।
गोपचेई—वि० (कि०) बहुत बड़ा।

**गोपुहपिन्माह**—स० क्रि० (कि०) संकल्प करना।
**गोबा**—सं० (कि०) मुखिया।
**गोबिजा**—सं० (कि०) जंगली बादाम।
**गोभा**—सं० (कि०) बकरी की आंतों में आटा भर कर बनाया गया मांस।
**गोम**—सं० (कि०) गम।
**गोमछङख**—सं० (कि०) छोटा संदूक।
**गोमज**—वि० (कि०) विपरीत।
**गोमजामिक**—स० क्रि० (कि०) दुःख सहना।
**गोमटामाह**—अ० क्रि० (कि०) समाधिस्थ होना।
**गोमपटाक्ष**—वि० (कि०) औंधे मुंह।
**गोमपराअ**—वि० (कि०) औंधे मुंह।
**गोमया**—सं० (कि०) कदम।
**गोमपिश्य**—वि० (कि०) नतमस्तक।
**गोमपोसमाह**—अ० क्रि० (कि०) झुकना।
**गोमफना**—सं० (कि०) नाच गाना।
**गोमवङमाह**—अ० क्रि० (कि०) झुकना।
**गोमा**—अ० (कि०) प्रारंभ।
**गोमाछोतु**—अ० क्रि० (कि०) असफल होना।
**गोमियां**—वि० (कि०) संयमी।
**गोम्पटा**—वि० (कि०) पेट के बल।
**गोयटा**—सं० (कि०) उपला।
**गोया**—सं० (कि०) आवश्यकता।
**गोयामतोई**—वि० (कि०) व्यर्थ।
**गोयोल**—सं० (कि०) पर्दा।
**गोरंग**—सं० (कि०) गढ़।
**गोरङ**—सं० (कि०) रंगरूप।
**गोरङ**—सं० (कि०) फाटक।
**गोरङ**—वि० (कि०) प्रिय।
**गोरङ**—सं० (कि०) कलह।
**गोरङ**—सं० (कि०) बाधा।
**गोरङकल**—सं० (कि०) मधुर वाणी।
**गोरङवङ माह**—स० क्रि० (कि०) मेल करना।
**गोरतमा**—सं० (कि०) उन्नति।
**गोरतेस**—सं० (कि०) गृहस्वामी, गृह व्यवस्थापक।
**गोरपोट**—सं० (कि०) कुत्ते के गले का पट्टा।
**गोरमाह**—स० क्रि० (कि०) विलंब करना।
**गोरमेट**—सं० (कि०) गुलूबंद।
**गोरसा**—सं० (कि०) विलंब।
**गोरीकेल**—सं० (कि०) जटा।
**गोरे**—वि० (कि०) समर्थ।
**गोरो**—सं० (कि०) घोड़ा।
**गोल**—सं० (कि०) मांस।
**गोलकफा**—वि० (कि०) मूर्ख।
**गोलङ**—सं० (कि०) गला।
**गोलङ**—सं० (कि०) कुदाल।
**गोलचा**—सं० (कि०) ताला।
**गोलडस**—सं० (कि०) चील।
**गोलड़ा**—सं० (कि०) कुंडा, कोढ़ा।
**गोलतमाह**—अ० क्रि० (कि०) हानि होना।
**गोलतमाह**—अ० क्रि० (कि०) गल जाना।
**गोलति**—वि० (कि०) अशुद्धि, गलती।
**गोलनमिक**—अ० क्रि० (कि०) गलना।
**गोलबास**—सं० (कि०) गुलाब का फूल।
**गोलमाह**—स० क्रि० (कि०) आरंभ करना।
**गोलमीक**—स० क्रि० (कि०) खोदना।
**गोलयामिक**—स० क्रि० (कि०) गलाना।
**गोलवासी**—सं० (कि०) तरुणी।
**गोलसङ**—सं० (कि०) चंद्रमा।
**गोलसुङहोत**—सं० (कि०) चांदनी।
**गोलाअ**—सं० (कि०) वस्त्र।
**गोलाअऊरीह**—सं० (कि०) धोबी।
**गोलामाह**—अ० क्रि० (कि०) पिघलना।
**गोलायामाह**—स० क्रि० (कि०) गलाना।
**गोलिङ**—सं० (कि०) कुदाली।
**गोलोबुत**—वि० (कि०) निर्बल।
**गोवरङसा**—वि० (कि०) दीर्घकाय।
**गोविई**—सं० (कि०) बंद गोभी।
**गोश्यमाह**—स० क्रि० (कि०) सुनाई देना।
**गोश्येन**—सं० (कि०) मूल्यवान् चोला।
**गोसमाह**—स० क्रि० (कि०) याद करना।
**गोसा**—सं० (कि०) निवास स्थान।
**गोसुम**—वि० (कि०) तिरानबे।
**गोह्ना**—सं० (ला०) घोड़ा।
**गौ**—सं० (कि०) स्थिर।
**गौईग**—सं० (ला०) गोमूत्र।
**गौनेस**—सं० (कि०) अर्क निकालने के बाद बचा पदार्थ।
**गौम**—वि० (कि०) झुका हुआ।
**गौर बोन**—सं० (कि०) घर-बार।
**गौरयामिक**—स० क्रि० (कि०) प्यार करना, स्नेह करना।
**गौरा**—सं० (कि०) कटघरा।
**गौलङ**—सं० (कि०) गला।
**गौलङ**—सं० (कि०) घास का बढ़ा हुआ लंबा टुकड़ा।
**गौलो-गौलो**—वि० (कि०) खुला, चौड़ा (पाजामा आदि)।
**ग्मुभा**—सं० (कि०) आंत।
**ग्यामिक**—स० क्रि० (कि०) चाहना।
**ग्यालबो**—सं० (कि०) राजा।
**ग्याबुंत्र**—सं० (कि०) गधा।
**ग्योखगुर**—सं० (कि०) शीघ्र।
**ग्योङ-ग्योङ**—स० क्रि० (कि०) ऐंठना।
**ग्योङटा**—वि० (कि०) लंबा।
**ग्योर-ग्योर**—वि० (कि०) लथपथ।
**ग्रख**—अ० क्रि० (कि०) सीधा लेटना।
**ग्रङ**—वि० (कि०) खुला।
**ग्रङना**—वि० (कि०) खुला हुआ।
**ग्रप**—सं० (कि०) ओस।

ग्रपसु—वि० (कि०) क्रमशः।
ग्रबतुरमिक—अ० क्रि० (कि०) अधिक अंधेरा होना।
ग्रमपो—अ० क्रि० (कि०) ठीक से मिलना।
ग्रम्यंतमाह—स० (कि०) वाद्य की झंकार का शब्द।
ग्रस—सर्व० (कि०) मैंने।
ग्रसमिक—अ० क्रि० (कि०) गिरना, ढहना।
ग्रा०—वि० (कि०) सीधा।
ग्रा—सं० (कि०) वस्त्र।
ग्राखी—सं० (कि०) पावती, वसूली।
ग्राङना—वि० (कि०) खुला, निर्वस्त्र।
ग्राङ·माह—अ० क्रि० (कि०) नष्ट होना।
ग्राच—सं० (कि०) अंगुली।
ग्रिङ·टा—वि० (कि०) बदमाश।
ग्रिच्रिप—सं० (कि०) पकड़।
ग्रिथगुङ· माह—स० क्रि० (कि०) तुरंत निगल जाना।
ग्रिपचुम्माह—स० क्रि० (कि०) कसकर पकड़ना।
ग्रिमग्रिमामाह—स० क्रि० (कि०) वाद्ययंत्र बजाना।
ग्रिलहु—वि० (कि०) अधिक भरा हुआ।
ग्रिसमाह—अ० क्रि० (कि०) घिसना।
ग्रीगमिक—अ० क्रि० (कि०) पेट भर जाना।
ग्रीज—सं० (ला०) गिद्ध।
ग्रुठा—वि० (कि०) जला हुआ, कामचोर।
ग्रुठारोट—सं० (कि०) जली हुई रोटी।
ग्रुम—सं० (कि०) धमाके का शब्द।
ग्रुमपुट—वि० (कि०) निर्वस्त्र।
ग्रुममिक—अ० क्रि० (कि०) जलकर राख होना।
ग्रेछयाशमिक—स० क्रि० (कि०) रगड़ना, मैल उतारना।
ग्रेटा—वि० (कि०) स्खलित।
ग्रेटामटङ·—सं० (कि०) स्खलित भूमि।
ग्रेप—सं० (कि०) गाना।
ग्रेप—सं० (कि०) गायक।
ग्रेपलोई—सं० (कि०) गायक।
ग्रेपुहखंटिख्र—सं० (कि०) गायिका।
ग्रेशमाह—सं० (कि०) वाग्युद्ध।
ग्रेशमिक—स० क्रि० (कि०) आलस्य करना।
ग्रैचाचीच—सं० (कि०) भिक्षुक।
ग्रोंथो—सं० (कि०) पिसा हुआ कच्चा माल।
ग्रोंथोवन—सं० (कि०) पीसने की क्रिया।
ग्रोऊ—अ० क्रि० (कि०) उखड़ना।
ग्रोक्च—सं० (कि०) देवता का 'गूर'।
ग्रोङ·टा-ग्रहङ·टा—वि० (कि०) ऊबड़-खाबड़।
ग्रोङ·माह—अ० क्रि० (कि०) खराब होना।
ग्रोङ·मिक—अ० क्रि० (कि०) धंसना।
ग्रोन—सं० (कि०) दावत।
ग्रोनखेमाह—स० क्रि० (कि०) संभालना।
ग्रोनङ·—सं० (कि०) ग्रहण।
ग्रोपरो—वि० (कि०) लंबा।
ग्रोम—सं० (कि०) बड़ा संदूक।
ग्रोमनाह—वि० (कि०) ढका हुआ।
ग्रोलोकङ·—सं० (कि०) गिरा हुआ पेड़।
ग्लोसनङ·—सं० (कि०) लहसुन।
ग्वङ·माह—अ० क्रि० (कि०) उछलना।
ग्वछला—अ० क्रि० (कि०) मध्य में कार्य रुकना।
ग्वराअ—सं० (कि०) कटघरा।
ग्वाकलमाह—स० क्रि० (कि०) समझाना।
ग्वाग्वा-दिङदिङ·—वि० (कि०) खुला।
ग्वाण—सं० (ला०) गाय।
ग्वादशा—सं० (कि०) Salvia glutinosa.
ग्वामिक—अ० क्रि० (कि०) उछलना।
ग्वेलमाह—अ० क्रि० (कि०) टहनी का दोफाड़ होना।

## घ

घंफेत—सं० (कि०) अर्द्ध रात्रि।
घई—सं० (ला०) घड़ा।
घउ—सं० (ला०) चट्टान, पहाड़, पर्वत।
घउक—सं० (ला०) चोटी, शिखर।
घउरमुन्नी—सं० (ला०) पहाड़ की चोटी, शिखर।
घङपङ·—सं० (कि०) झाड़ी।
घङ·माह—अ० क्रि० (कि०) पूर्ण होना।
घटाऊबा—स० क्रि० (कि०, ला०) घटाना।
घटिवाह—सं० (ला०) कृष्णपक्ष।
घरिङ·—सं० (कि०) घड़ी।
घरुऊ—सं० (कि०) भेड़-बकरी के गले में बांधा जाने वाला लकड़ी सहित एक धागा।
घर्नी—सं० (ला०) पाचक, रसोइया।
घव्ररतमाह—अ० क्रि० (कि०) घबराना।
घसाइबा—स० क्रि० (ला०) घिसना।
घा—सं० (ला०) घास।
घागरी—सं० (कि०) लहंगा, घाघरा।
घाघरे/रौ—सं० (कि०) देवता के कपड़े।
घाट—सं० (ला०) घराट।
घाटिया—वि० (कि०) अच्छा, ठीक।
घाटेच्याड़े—सं० (ला०) चैत्र मास, जब सर्दियों में पुराना अनाज कम रह जाता है और अगली फसल अभी दूर होती है।
घाड़ी—सं० (ला०) घड़ी।
घाण—सं० (ला०) अधिक मात्रा में पकाया भोजन।
घादीबा—स० क्रि० (ला०) चोट करना।
घामी—सं० (कि०) पत्नी।
घी—वि० (कि०) ढीला।
घीउआ-रा-माण्हू—सं० (ला०) सम्माननीय व्यक्ति।
घुकपिन्माह—स० क्रि० (कि०) भाग करना।
घुख-घुख—वि० (कि०) नया-नया।
घुखमाह—अ० क्रि० (कि०) सुहाना।
घुखा—सं० (कि०) वर्षा।

घुघताई—सं० (कि०) Deutzia steminea.
घुघु—सं० (ला०) कबूतर।
घुङ्ग—सं० (कि०) लाठी।
घुजटी—सं० (कि०) शोर।
घुटयामिक—स० क्रि० (कि०) दवाई आदि को निगलना।
घुन—सं० (कि०) मात्रा।
घुपचुपिस—अ० (कि०) चुपके से।
घुमकोन—सं० (कि०) विवाह की एक रस्म।
घुमांद्गमाह—स० क्रि० (कि०) पशुओं को इकट्ठा करना।
घुशमिक—स० क्रि० (कि०) धोना।
घूहलू—सं० (ला०) मथनी।
घेकङ—सं० (कि०) जीवन।
घेरङ—सं० (कि०) बूंद, छींटा।
घेरया—सं० (कि०) कांटा।
घेरा—सं० (ला०) लकवा।
घेरा—सं० (कि०) गोल चक्कर।
घोअमाह—स० क्रि० (कि०) दे० छोमिक।
घोआ—सं० (ला०) घोड़ा।
घोकचें—सं० (कि०) सेंध।
घोटङ—सं० (कि०) घराट।
घोटयो—वि० (कि०) कम, कम शक्तिशाली।
घोटाइया—वि० (कि०) घराट चलाने वाला।
घोटिया—वि० (कि०) घटिया।
घोठियामिक—स० क्रि० (कि०) पानी आदि को बांधना। पशुओं को एक जगह इकट्ठा करना।
घोतघोतुह—वि० (कि०) काल्पनिक।
घोतु—स० क्रि० (कि०) जानना।
घोनेस—सं० (कि०) लंगूर।
घोरमियुशु—सं० (कि०) धार्मिक देवता।
घोरहासमिक—स० क्रि० (कि०) मथना, दही से घी तैयार करना।
घोवा—अ० (कि०) जल्दी।
घौर—सं० (कि०) घड़ा।
घ्राऊफुनङ—सं० (कि०) कांटेदार झाड़ी।
घ्रिसमिक—अ० क्रि० (कि०) मिट्टी का खिसकना।
घ्रुसु—सं० (ला०) गली।

## ङ

ङ—सर्व० (कि०) मैं।
ङ—वि० (कि०) पांच।
ङआं—सं० (कि०) ढोल।
ङइचन—वि० (कि०) प्रभावशाली।
ङख—सं० (कि०) मंत्र।
ङखटामाह—स० क्रि० (कि०) फूंक मारना।
ङगतु—अ० वि० (कि०) बीच में।
ङचिक—वि० (कि०) इक्यावन।
ङचु—वि० (कि०) पचास।
ङजी—वि० (कि०) चौवन।
ङडो—सं० (कि०) सवेरे।
ङणुइवा—सं० क्रि० (ला०) दंडित करना।
ङतक्रईसा—वि० (कि०) कठोर स्वभाव वाला।
ङतचन—वि० (कि०) प्रभावशाली।
ङत्री—वि० (कि०) बावन।
ङन—सं० (कि०) जौ के कांटे।
ङनछेन—स० क्रि० (कि०) सताना।
ङनथा—वि० (कि०) दुष्ट।
ङनमिन—सं० (कि०) उपनाम।
ङनेचन्माह—स० क्रि० (कि०) शोषण करना।
ङफसा—सं० (ला०) घास की कटाई का कार्य।
ङमछोत—सं० (कि०) एक पूजा।
ङमो—सं० (कि०) प्रातः।
ङरजा—सं० (कि०) मीठी चाय।
ङरतिमाह—स० क्रि० (कि०) कुल्हाड़ी आदि पर पान चढ़ाना।
ङरमाह—स० क्रि० (कि०) निंदा करना, कोसना, गाली देना, दे० नारमिक।
ङरमो—वि० (कि०) मीठा।
ङलकोल—सं० (कि०) हल।
ङलसो—अ० क्रि० (कि०) आराम करना।
ङसुम—वि० (कि०) तिरपन।
ङा—वि० (ला०, कि० ) पांच।
ङाआं—सं० (कि०) तकिया।
ङाई—सर्व० (ला०) मेरा।
ङाईरो—अ० (कि०) आने वाला कल।
ङागु—वि० (कि०) उनसठ।
ङाग्ग्ये—वि० (कि०) अट्ठावन।
ङाडुक—वि० (कि०) छप्पन।
ङादुन—वि० (कि०) सत्तावन।
ङानिज़ा—वि० (कि०) पांच बीस अर्थात् सौ।
ङापोरे—वि० (कि०) एक सेर कच्चा।
ङार—सं० (कि०) जोश।
ङारहनमाह—अ० क्रि० (कि०) गरजना।
ङारा—वि० (कि०) पांच सौ।
ङारोक—सं० (कि०) सुबह।
ङुकचा—सं० (ला०) छुरी, कटारी।
ङुकाइवा—अ० क्रि० (ला०) छिपना।
ङो—सं० (कि०) एहसास।
ङोठोतमाह—स० क्रि० (कि०) पहचानना।
ङोठोशमतमाह—स० क्रि० (कि०) परिचय कराना।
ङोतख—सं० (कि०) पहचान।
ङोथ्यामतोई—वि० (कि०) निर्लज्ज।
ङोनंशे—सं० (कि०) अभिज्ञान।
ङोनसुम—वि० (कि०) साकार।
ङोमलई—वि० (कि०) कृतघ्न।
ङोलय—सं० (कि०) भेड़ जाति।

डोशेस— वि० (कि०) ज्ञाता।
डोसा— सं० (कि०) शर्म।
डोसुम— वि० (कि०) हूबहू, ज्यों का त्यों।
डोसेसमाह— स० क्रि० (कि०) पहचानना।

## च

चंगपा— वि० (कि०) स्वच्छ।
चंगा— वि० (कि०) साफ, स्वस्थ।
चंगा नैस-नैस— वि० (कि०) बादल रहित, साफ।
चंजी— वि० (ला०) तीखा।
चंटाल— वि० (कि०) गंदा, गंदी।
चंदकली— सं० (कि०) हार।
चंबेठ— सं० (कि०) चाबुक।
चअ— सं० (कि०) चाय।
चअनङ्— स० (कि०) चाय पीने का एक पात्र।
चई— सं० (ला०) चिड़िया।
चउद— वि० (ला०) चौदह।
चउबिओदश— वि० (ला०) नब्बे।
चउर— वि० (ला०) चार।
चऊंरी— सं० (कि०) चक्कर।
चऊ— सं० (ला०) चावल।
चकचाअमाह— स० क्रि० (कि०) घुसेड़ना।
चकथल— स० (कि०) तसला।
चकमिक— स० क्रि० (कि०) ठूंसना। खेतों में पानी को रिसने देना।
चकरङ— स० (कि०) घराट की फिरकी।
चकू— स० (कि०) चाकू।
चखथा— स० (कि०) लोहे का ज़ंग।
चखबा— स० क्रि० (ला०) चखना।
चगज़न— सं० (कि०) दंड।
चगपा— सं० (कि०) डाकू।
चङ— सं० (कि०) कमर।
चङ— सं० (कि०) अधिक पानी वाली भूमि।
चङकु— सं० (कि०) भेड़िया।
चङकुङ — सं० (कि०) घास विशेष।
चंङ्कोई— वि० (कि०) कुबड़ा।
चङ्गाटी— सं० (कि०) झूला (तख्ते पर खेला जाने वाला)।
चङ्ची— सं० (कि०) अधिक पानी वाली भूमि में पैदा होने वाला घास।
चङ्थङ— सं० (कि०) तिब्बत देश।
चङ्पो— वि० (कि०) चतुर।
चङ्माह— स० क्रि० (कि०) भिगोना।
चङ्मिक— स० क्रि० (कि०) भिगोना।
चङ्री— सं० (कि०) जूता।
चङ्लप— वि० (कि०) दे० चङ्पो।
चङ्लीई— सं० (कि०) दे० चङ्री।
चचङ— सं० (ला०) पिस्सू।
चटकैच— वि० (कि०) सुंदर, बढ़िया, खूबसूरत।
चटप— अ० (कि०) एक क्षण, जल्दी।
चटबा— स० क्रि० (ला०) चाटना।
चटम— सं० (कि०) दांती।
चटयामिक— स० क्रि० (कि०) चाटना।
चटा— सं० (कि०) पत्थर या लकड़ियों का ढेर।
चटुप— सं० (कि०) चाय बिलोने की फिरकी।
चढ़बा— अ० क्रि० (ला०) सवार होना।
चणथग— सं० (ला०) तंदूर।
चतोर— वि० (कि०) चतुर।
चथङ— सं० (कि०) बिना दूध की चाय।
चन— सं० (कि०) Machilus duthici.
चनपन— सं० (कि०) पहरावा, पहनावा।
चनंलिया— सं० (कि०) विशेष अवसर पर देवता को कंधे उठाने वाले व्यक्ति।
चनि— सं० (ला०) चंद्रमा।
चनियां— सं० (कि०) देवता के कारदार।
चन्निङ— सं० (कि०) जबड़ा।
चप— सं० (कि०) 'लाहन' में खमीर के रूप में प्रयुक्त वाला एक अन्न विशेष।
चपचपङ— अ० (कि०) धीरे-धीरे, चुपके-चुपके।
चपचपयामिक— स० क्रि० (कि०) स्वाद लेना।
चपचपामाह— स० क्रि० (कि०) स्वाद लेना।
चपजिलङ— सं० (कि०) अंकुर फूटने वाली जड़।
चपज़प— सं० (कि०) दे० चमग्यप।
चपटा— वि० (कि०) चपटा।
चपटिङ— सं० (कि०) चपत।
चपरङयार— सं० (कि०) ताज़ा मक्खन, पूजा में प्रयुक्त होने वाला शुद्ध मक्खन।
चपरयामिक— स० क्रि० (कि०) सताना।
चपरामाह— स० क्रि० (कि०) सताना।
चपलङख— सं० (कि०) चपत, थप्पड़।
चपा— सं० (कि०) सत्तू का गोला।
चपाचिपी— वि० (कि०) चुप।
चबमिक— स० क्रि० (कि०) उतारना।
चबरैया— सं० (कि०) विशेष प्रकार का 'फाफरा' अन्न।
चबा— सं० (कि०) जड़।
चबाचंपन— सं० (कि०) चरित्र।
चबोरे— सं० (कि०) देवरानी।
चम— सं० (कि०) ऊन।
चमकबा— अ० क्रि० (ला०) चमकना।
चमकयामिक— स० क्रि० (कि०) चमकाना।
चमकोरू— वि० (ला०) चमकीला।
चमग्यप— सं० (कि०) ऊन का बड़ा गट्ठर, गट्ठा।
चम-चम— अ० (कि०) धीरे-धीरे।
चमचूथ— वि० (कि०) बेकार आदमी।
चमचौगमिक— स० क्रि० (कि०) ऊन काटना, ऊन उतारना

चमचौमाह— स० क्रि० (कि०) ऊन काटना।
चमनङ— सं० (कि०) देवता का शीर्ष भाग।
चमना— वि० (कि०) शांत।
चमपनमाह— स० क्रि० (कि०) ऊन कातना।
चमपा— सं० (कि०) सत्तू।
चमपुठुथ— सं० (कि०) ऊन का छोटा गोला।
चमपूनङ— सं० (कि०) ऊन का टुकड़ा।
चमफनिच— सं० (कि०) पिंजाई की हुई ऊन।
चमरङ— सं० (कि०) देवता का शीर्ष भाग।
चमरचूल— सं० (कि०) बुजदिली, अनुदारता।
चमाकङ— वि० (कि०) शांत।
चमेत— सं० (कि०) बेटी।
चमेन— सं० (कि०) बालिका।
चर— सं० (कि०) वस्त्र।
चरमिक— स० क्रि० (कि०) रुकावट करना, बाड़ लगाना।
चरमाह— स० क्रि० (कि०) चिपकाना।
चराबरी— सं० (कि०) Sarco-coca-selbigna.
चराल— सं० (कि०) पट्टू।
चररू— सं० (कि०) Deutzia corymbosa.
चर्न— सं० (ला०) जबड़ा।
चलक— सं० (कि०) वस्तु, सामान।
चलगा— सं० (कि०) टहनी।
चलङ— सं० (कि०) छलनी।
चलतीह— वि० (कि०) प्रचलित।
चलबा— अ० क्रि० (ला०) बहना।
चलमिक— स० क्रि० (कि०) महसूस करना।
चलयामिक— स० क्रि० (कि०) छानना।
चलश्यामाह— अ० क्रि० (कि०) छनना।
चलाक— वि० (कि०) चतुर (महिला), उच्छृंखल।
चलामाह— स० क्रि० (कि०) चलाना।
चल्लङ— सं० (कि०) छलनी।
चवाक— सं० (कि०) वेणी में लगाया जाने वाला गोल पट्टा।
चवानिगशङ— सं० (कि०) उबासी।
चसकन— सं० (कि०) तालू।
चसगस— सं० (कि०) वेशभूषा।
चसङ— सं० (कि०) आटा।
चांउ— सं० (ला०) चावल।
चांगट— सं० (ला०) पीली चोंच वाली भूरी चिड़िया।
चांजा— सं० (ला०) जेब।
चांजी— सं० (ला०) नुकीला।
चांजी— सं० (ला०) खूंटा।
चांब— सं० (ला०) चमड़ा।
चा— सं० (ला०) कबूतर।
चाई— सं० (ला०) चिड़िया।
चाउणा— वि० (ला०) चार गुणा।
चाऊ— सं० (कि०) बहुत ऊंचाई पर उगने वाली झाड़ी जिसका फूल चाय की पत्ती के रूप में प्रयुक्त होता है।
चाकवास— सं० (कि०) चिकित्सा की एक पद्धति जिसमें गर्म लोहे की सलाख को दर्द वाली जगह पर लगा देते हैं।
चाकथल— सं० (कि०) लोहे का तसला।
चाकमिक— स० क्रि० (कि०) ठूंसना।
चाकरी— सं० (ला०) चकोर।
चाकशमिक— अ० क्रि० (कि०) घुसना।
चाका— सं० (कि०) देखभाल।
चाकोर— सं० (कि०) नौकर।
चाखर— सं० (कि०) नौकर।
चाखरलमाह— स० क्रि० (कि०) नौकरी करना।
चाखरोअऊ— स० क्रि० (कि०) अवहेलना करना।
चाख्वे— स० क्रि० (ला०) धोना।
चाग— सं० (कि०) जौ।
चागाह— स० क्रि० (कि०) पालन करना।
चाङ— सं० (कि०) धागे का गुच्छा।
चाङकन— वि० (ला०) दरिद्र, गरीब।
चाङकुम— सं० (कि०) बर्फीला भेड़िया।
चाङर— सं० (कि०) रोटी आदि रखने का बांस का टोकरा।
चाङराङ— सं० (कि०) रीढ़ की हड्डी, बैल आदि का स्कंध या पीठ का उभरा हुआ भाग, ककुद।
चाङा— वि० (कि०) तंदुरुस्त, स्वस्थ।
चाची— सं० (ला०) गर्मी।
चाटबा— स० क्रि० (ला०) चाटना।
चाटे— सं० (ला०) थप्पड़।
चाडगरे— सं० (कि०) टोकरी।
चात— सं० (कि०) डेरा, साधु संतों का स्थान।
चायलि— सं० (कि०) कटोरा।
चादुर— सं० (ला०) शाल, पट्टू।
चानक— अ० (ला०) अचानक।
चानङ— सं० (कि०) आभूषण।
चानचक्योच— अ० (कि०) अचानक।
चानो— स० क्रि० (कि०) करना।
चापक— वि० (कि०) नया, कोरा।
चापबा— स० क्रि० (ला०) चबाना।
चापिबा— स० क्रि० (ला०) चबाना।
चाबरू— सं० (कि०) Clematis barbellata.
चामग्या— सं० (कि०) मुर्गा।
चामाह— अ० क्रि० (कि०) नृत्य करना।
चामिक— अ० क्रि० (कि०) दे० चामाह ।
चामैद— सं० (कि०) कन्या।
चामोक— सं० (कि०) चाबुक।
चारजोत— अ० (कि०) परसों।
चारबा— स० क्रि० (ला०) चराना।
चारा— सं० (कि०) अनाज छानने की छलनी।
चारिबा— स० क्रि० (ला०) चराना।
चाललङ— सं० (कि०) छलनी।
चावनिङ— सं० (कि०) चाय पात्र।
चासवा— अ० क्रि० (ला०) टिकना।
चिंज— सं० (ला०) खुर।

चिंद— सं० (ला०) चिंता।
चिंदआई— वि० (ला०) चिंतित।
चि़अ— वि० (ला०) एक।
चिआइबा— अ० क्रि० (ला०) भुनना।
चिईमाह— स० क्रि० (ला०) काटना।
चिक— वि० (कि०) एक।
चिक— सं० (ला०) टखना।
चिक— वि० (कि०) कड़वा।
चिक— सं० (कि०) ठंड।
चिकनस— वि० (कि०) चिकना।
चिकपा— वि० (कि०) समान।
चिकबा— स० क्रि० (ला०) दबोचना।
चि़कमिक— स० क्रि० (कि०) समूल नष्ट करना।
चिका— सं० (ला०) जौ।
चिकुऊ— सं० (कि०) पैसा रखने का एक थैला विशेष।
चिकोर— सं० (कि०) कीचड़।
चिक्स— सं० (कि०) आटा।
चि़गची— सं० (कि०) कड़वापन।
चि़गज़ा— सं० (कि०) बच्चा।
चिगपा— वि० (कि०) एक समान।
चिगपा— सं० (कि०) दीवार।
चिगपु— वि० (कि०) अकेला।
चि़गमिक— स० क्रि० (कि०) काटना।
चिगा— सं० (ला०) गेहूं।
चिगित— वि० (कि०) छोटा।
चिगु— सं० (कि०) बकरे की एक किस्म।
चिङनह— अ० क्रि० (कि०) नशे के प्रभाव का प्रारंभिक अवस्था में होना।
चिङमिक— स० क्रि० (कि०) ठूंसना।
चिचाइबा— अ० क्रि० (ला०) भूनना।
चि़च़ी— सं० (कि०) पका हुआ मांस।
चिटरिंग— सं० (कि०) Myresine afriana.
चि़ता— वि० (ला०) पतला।
चि़थ— सं० (कि०) चीना अन्न।
चि़थकोन— सं० (कि०) 'चि़थ' के सत्तू का घोल।
चिन— सं० (कि०) नाखून।
चिनङ— स० क्रि० (कि०) देवता के आसीन होने पर वाद्ययंत्रों द्वारा अठारह तालों को बजाना।
चिनबा— स० क्रि० (ला०) चिनाई करना, निर्माण करना।
चिनरी— सं० (कि०) जूती।
चि़पा— सं० (कि०) ज्योतिषी, गणितज्ञ।
चि़पू— सं० (कि०) छोटी बहन।
चि़पूर— सं० (कि०) आमाशय।
चिप्पबा— स० क्रि० (ला०) चूसना।
चिमटी— सं० (ला०) ठोड़ी।
चि़मटौ— सं० (कि०) चिमटा।
चि़मा— सं० (कि०) चाची।
चि़मिक— स० क्रि० (कि०) धोना।
चि़मू— स० क्रि० (कि०) दे० चि़मिक।
चिमेद— सं० (कि०) कन्या, लड़की।
चि़मो— सं० (कि०) घास।
चिम्मू— सं० (कि०) Morus serrata.
चि़या— सं० (ला०) गोबर।
चि़या— अ० (ला०) क्या।
चिर— सं० (ला०) खूबानी।
चि़रतिमाह— स० क्रि० (कि०) बाड़ लगाना।
चि़रमाह— स० क्रि० (कि०) दे० चि़रतिमाह।
चिरांडरु— सं० (कि०) Acer caesium.
चिरामाह— स० क्रि० (कि०) फाड़ना।
चिरिंडि— सं० (कि०) Litsea umbrosa.
चि़री— सं० (ला०) आंत।
चि़रीखपटी— स० क्रि० (कि०) तार-तार करना।
चिरीमेसङ— सं० (कि०) तेल वाली लकड़ी।
चिलगोज़ा— सं० (कि०, ला०) Pinus gerardiana.
चिलङटामाह— स० क्रि० (कि०) सिर हिलाना।
चिलमिक— स० क्रि० (कि०) दबाव से भींचना।
चिलिग मिलिग — सं० (कि०) छोटे-मोटे गहने।
चि़लिम— सं० (कि०) हुक्का।
चिल्यामिक— स० क्रि० (कि०) मारना।
चिसङ— सं० (कि०) आटा।
चिसठा— वि० (कि०) सड़ा हुआ। कामचोर।
चिहर— सं० (ला०) खूबानी।
चींगली— सं० (कि०) छोटी चिड़िया।
चींद— सं० (ला०) चिंता।
ची— अ० (कि०) क्या।
चीगे— सं० (कि०) पत्र।
चीचीचङमा— वि० (कि०) स्पष्ट।
चीचीजङमाह— स० क्रि० (कि०) स्पष्ट करना।
ची़चीमां— सं० (कि०) छोटी मां।
चीठल— सं० (कि०) ऐसी ढलानदार भूमि जहां केवल घास ही उगाया जाता है।
चीणी— सं० (ला०) चीनी।
चीनङ— सं० (कि०) घास का भंडार।
चीपक्यामिक— स० क्रि० (कि०) चिपकाना।
चीपा— सं० (कि०) चाचा।
ची़पूलिङ— सं० (कि०) घास का 'पूळा'।
चीबारङ— सं० (कि०) घास का बोझ।
चीम-चीन— सं० (कि०) शीतला देवी।
चीयंग— वि० (कि०) कुछ।
चीरपर्यासौ— सं० (कि०) पक्षियों का कलरव।
ची़रामाह— स० क्रि० (कि०) चीरना।
चीलाबमिक— स० क्रि० (कि०) घास काटना।
चीवीं— सं० (कि०) मूत्र।
चीह— सं० (कि०) घास।
चुंट— सं० (कि०) काले रंग की चिड़िया।
चु— वि० (कि०) दस।

चुकटू—सं० (कि०) ऊन का बना ओढ़ने का वस्त्र।
चुकली—सं० (कि०) चिलम के छेद में डाला जाने वाला कंकर।
चुकसी—सं० (ला०) प्रारंभ।
चुकाइबा—स० क्रि० (ला०) व्यय करना।
चुग—सं० (कि०) Hippophae shamnoydes.
चुगदन—सं० (कि०) नर्म बिछौना।
चुगमिक—स० क्रि० (कि०) गाड़ना।
चुगली—सं० (कि०) शिकायत।
चुगु—वि० (कि०) उन्नीस।
चुगुन—वि० (ला०) छोटा।
चुङ·चुङ· कित—सं० (कि०) एक चिड़िया विशेष।
चुङ·जे—सं० (कि०) भ्राता, भाई।
चुङौ—सं० (कि०) ऊंचाई पर रहने वाले काले रंग के पक्षी।
चुचिग—वि० (कि०) ग्यारह।
चुचु—सं० (ला०) स्तन।
चुजी—वि० (कि०) चौदह।
चुटकङ·म—वि० (कि०) चुप।
चुटचुटास—अ० (कि०) चुपचाप, चुपके से।
चुटयामिक—स० क्रि० (कि०) तोड़ना।
चुटुकङ·—वि० (कि०) स्थिर।
चुटुधाह—अ० (कि०) चुपचाप।
चुटुङ· पोसमाह—अ० क्रि० (कि०) चुप रहना।
चुटुपना—अ० (कि०) चुपचाप।
चुड़ेल—सं० (कि०) चुड़ैल।
चुणबा—स० क्रि० (ला०) चुनना।
चुत—सं० (कि०) स्वाद।
चुतखेमाह—स० क्रि० (कि०) पीटना, बुरे हाल करना।
चुतचन—वि० (कि०) स्वादिष्ट।
चुदरनमिक—स० क्रि० (कि०) बुरे हाल करना।
चुनङ·—सं० (कि०) एक घास विशेष।
चुनङ·ची—सं० (कि०) बहुत ऊंचाई पर उगने वाला घास।
चुनङ·रिम—सं० (कि०) न बीजा गया खेत।
चुनङ·लङ·—सं० (कि०) 'बाखड़' गाय।
चुनमाह—अ० क्रि० (कि०) समाप्त होना।
चुनमिक—स० क्रि० (कि०) उतारना, अलग करना।
चुनमो—सं० (कि०) श्रीमती।
चुनो—सं० (कि०) चूना।
चुपचप—वि० (कि०) एकरूप, समान।
चुपू—वि० (ला०) चुप।
चुबधन—सं० (कि०) गलीचा।
चुम—सं० (कि०) Cotoneaster acuminata.
चुमपालङ·—सं० (कि०) छोटे बच्चों की देख-भाल करने वाला।
चुमिक—स० क्रि० (कि०) पकड़ना।
चुमिक—स० क्रि० (कि०) रोपाई करना।
चुरपुर—सं० (कि०) दूध देने वाले पशु।
चुरबा—स० क्रि० (ला०) निचोड़ना।
चुरमिक—स० क्रि० (कि०) दुहना। शराब निकालना।
चुरु—सं० (कि०) याक।
चुरुप-चुरुप—अ० (कि०) थोड़ा-थोड़ा।
चुर्बिकरबा—स० क्रि० (ला०) मरोड़ना।
चुल—सं० (कि०) देवी-देवताओं का दोष जो किसी द्वारा लगाया जाए।
चुल—सं० (कि०) Prunus armeniaca.
चुलछिती—सं० (कि०) 'चुली' के पेड़ की गोंद।
चुलठि—सं० (कि०) गोंद।
चुलदू—सं० (कि०) 'चुली' का गूदा।
चुलफाटिङ·—सं० (कि०) 'चुली' और आटे के घोल से बना खाद्य पदार्थ।
चुलबोठङ·—सं० (कि०) 'चुली' का पेड़।
चुली—सं० (कि०) जंगली खूबानी का वृक्ष।
चुसिबा—स० क्रि० (ला०) चूसना।
चुसुम—वि० (कि०) तेरह।
चू—सं० (कि०) कालिख।
चू—सं० (कि०) खांसी।
चूली—सं० (कि०) Prunus armeniaca.
चूवमिक—स० क्रि० (कि०) लोहे के औज़ार को तेज करना।
चे—सं० (कि०) ओष्ठ, ओंठ, जिह्वा।
चे—वि० (कि०) सब।
चे—सं० (कि०) चोटी।
चेई—वि० (कि०) बड़ा।
चेई—वि० (कि०) सब।
चेऊखेमाह—स० क्रि० (कि०) लिखित देना।
चेओ—वि० (कि०) सब।
चेखङ·निमाह—स० क्रि० (कि०) निशान लगाना।
चेखे—वि० (कि०) निकम्मी।
चेखो—वि० (कि०) निकम्मा।
चेखोका—वि० (कि०) सख्त अखरोट।
चेङणा—वि० (कि०) सुस्त, निढाल।
चेटक्यच—वि० (कि०) बढ़िया, खूबसूरत।
चेटचेटङ·—अ० (कि०) क्रमशः, यथाक्रम।
चेतरङ·गोल—सं० (कि०) चैत्रमास।
चेत्राङ·—सं० (कि०) चैत्रमास।
चेन—सं० (कि०) नाखून।
चेप-चेप—वि० (कि०) चिपचिपा।
चेपच्छपमाह—स० क्रि० (कि०) कुतरना।
चेपटो—वि० (कि०) चपटा।
चेमचे—स० क्रि० (ला०) वस्त्र सिलना।
चेमचेम—सं० (कि०) एक रोग, चेचक, खसरा।
चेमां—सं० (कि०) बड़ी मां।
चेमिक—स० क्रि० (कि०) लिखना।
चेमी—वि० (कि०) वृद्ध।
चेमे—सं० (कि०) पुत्री।
चेमेच—सं० (कि०) बच्ची।
चेम्मिक—स० क्रि० (कि०) फटे-पुराने वस्त्रों को सिलना।

चेरमिक—स० क्रि० (कि०) फाड़ना।
चेलङ—सं० (कि०) आटे की छलनी।
चेला—सं० (कि०) शिष्य।
चेवबा—अ० क्रि० (ला०) जागना।
चेवा—सं० (कि०, ला०) प्रेम।
चेशिस—वि० (कि०) लिखित, लिखा हुआ।
चेसीकरबा—स० क्रि० (ला०) आश्रय लेना।
चैङेर—सं० (कि०) टोकरी।
चैतरोई—सं० (ला०) चैत्रमास।
चैद—सं० (कि०) निशान।
चैदौस्या—वि० (कि०) धारीदार।
चैनी—सं० (कि०) सूर्यास्त के समय की लाली।
चोंजा—सं० (ला०) चोटी।
चो—सं० (कि०) कांटा।
चोअ—सं० (ला०) शहतूत।
चोअ—सं० (ला०) स्वामी, ठाकुर।
चोअमाह—स० क्रि० (कि०) छीलना। चुगना।
चोअमाह—स० क्रि० (कि०) काटना।
चोई—सं० (ला०) घाघरा।
चोकचे—सं० (कि०, ला०) अतिथियों को पेय पदार्थ भेंट करते समय सामने रखा जाने वाला छोटा मेज़।
चोकती—सं० (कि०) छत से टपकने वाला बर्फ या वर्षा का पानी।
चोकदार—सं० (कि०) चौकीदार, पहरेदार।
चोकन-मेकन—सं० (कि०) कर्ता-धर्ता।
चोकबा—स० क्रि० (ला०) प्रतीक्षा करना। अ० क्रि० रुकना।
चोकाइबा—स० क्रि० (ला०) रुकाना।
चोकोठ—सं० (कि०) चौखट।
चोक्सी—सं० (ला०) सिर पर बांधने का वस्त्र।
चोखरामाह—स० क्रि० (कि०) सताना।
चोखसी—सं० (कि०) सावधानी।
चोखा—सं० (कि०) त्योहारों के विशेष अवसर पर देवता को पूजने वाला आदमी।
चोखिबा—स० क्रि० (ला०) प्रतीक्षा करना।
चोखैस—वि० (कि०) पवित्र।
चोगचे—सं० (कि०, ला०) दे० चोकचे।
चोगति—सं० (कि०) दे० चोकती।
चोगपो—वि० (कि०) सेवक, नौकर।
चोगमिक—स० क्रि० (कि०) बाल या ऊन आदि काटना।
चोगै—अ० (कि०) कभी नहीं।
चोग्येद—वि० (कि०) अट्‌ठारह।
चोङ्ना—अ० क्रि० (कि०) उकड़ूं बैठना।
चोङेन्नमिक—अ० क्रि० (कि०) नशा आदि लगना। भूत- प्रेत लगना।
चोचो—सं० (ला०) बड़ा भाई।
चोटपोट—अ० (कि०) झटपट।
चोटोप—सं० (कि०) शीघ्रता।
चोटोम-पोटोम—अ० (कि०) शीघ्र, एकदम।
चोटोक—अ० (कि०) शीघ्र।
चोडेंठ—अ० (कि०) छठा दिन।
चोणे—सं० (कि०) चने।
चोतपिन्माह—अ० क्रि० (कि०) मंत्र जपना।
चोतमाह—स० क्रि० (कि०) जलाना।
चोतुहखेमाह—स० क्रि० (कि०) जलाना।
चोतोर—वि० (कि०) सचेत, चतुर।
चोतोरे—सं० (कि०) सावधानी।
चोनका—सं० (कि०) लंबी जुल्फें, जटाएं।
चोपचोपङ—सं० (कि०) जल।
चोपचोपयामिक—अ० क्रि० (कि०) व्याकुल होना।
चोपरङमार—सं० (कि०) ताज़ा मक्खन।
चोफू—सं० (ला०) खिड़की।
चोबो—वि० (कि०) मुख्य।
चोमरेनमिक—अ० क्रि० (कि०) चिपकना।
चोमिक—स० क्रि० (कि०) तराशना।
चोमिनरा—सं० (कि०) घड़ा हुआ पत्थर।
चोमो—सं० (ला०) बौद्ध भिक्षुणी।
चोम्मिक—स० क्रि० (कि०) मंत्र द्वारा भूत-प्रेत को भगाना अथवा वश में करना।
चोयेप—अ० (कि०) शीघ्र।
चोरचंड़ी—सं० (कि०) चोर के द्वारा लगाई गई सेंध।
चोरबा—स० क्रि० (ला०) चुराना।
चोरयाङ—स० क्रि० (कि०) चोरना, चुराना।
चोरस—सं० (कि०) चोर।
चोरिबा—स० क्रि० (ला०) चुराना।
चोलती—स० क्रि० (कि०) पुन: पानी देना।
चोलो- वोलोह—वि० (कि०) जर्जर।
चोशित—वि० (कि०) तराशी हुई।
चोशो—सं० (कि०) Rubus dlipticus.
चोहफू—सं० (ला०) खिड़की।
चौंडी—सं० (कि०) चामर, चंवर।
चौंदरहार—सं० (कि०) चंद्रहार।
चौकरी—सं० (कि०) Gerainium wallichianum.
चौगरयामिक—स० क्रि० (कि०) धोखा देना।
चौङ—सं० (ला०) प्याज़।
चौथी—सं० (कि०) चुटिया, वेणी।
चौब—वि० (कि०) अधिक।
चौबा—सं० (कि०) वैद्य, हकीम।
चौर—वि० (ला०) चार।
चौरयामू—स० क्रि० (कि०) चुराना।
चौरस—सं० (कि०) दे० चोरस।
चौरीङ—सं० (कि०) मंदिर के प्रांगण में देवताओं को बैठाने के निमित्त बनी चौकी।
चौरीङ—सं० (कि०) लकड़ी का बना पानी का लंबा पात्र।
चौली—सं० (कि०) ऊनी चोली।
चौहरी—सं० (कि०) Gesanium wallichianuma.
च्वनमाह—स० क्रि० (कि०) फैलाना।

**च्वनूहपिन्माह**— स० क्रि० (कि०) फैलाना।
**च्वाटामिक**— स० क्रि० (कि०) हटाना।
**च्वाटाश्यमाह**— स० क्रि० (कि०) छंटाना।

## छ

छ— वि० (ला०) छः।
**छंखमाह**— स० क्रि० (कि०) मिट्टी छानना।
**छंग**— सं० (कि०) दादी।
**छंग**— सं० (ला०) मदिरा, लुगड़ी।
**छंडल-पंडल**— वि० (कि०) बिखरा हुआ।
**छंतु**— सं० (कि०) दाल, मटर।
**छंपा**— सं० (कि०) जुकाम।
**छंपुरा**— वि० (कि०) सीमांत।
**छफपा**— वि० (कि०) समाधिस्थ।
**छंबा**— सं० (कि०) ऊन काटने की कैंची।
**छ:मर**— सं० (कि०) छिपकली।
**छअ**— अ० (कि०) क्या।
**छअन**— सं० (कि०) स्वभाव, संस्कार।
**छअमा**— वि० (ला०) सब, सारा, संपूर्ण।
**छअरमाह**— अ० क्रि० (कि०) रोगी का अस्वस्थता में शौच करना।
**छउ**— सं० (कि०) हत्थी।
**छकचा**— अ० क्रि० (कि०) टूटना।
**छकदा**— सं० (कि०) शौचालय।
**छकपो**— वि० (कि०) टूटा हुआ।
**छकाठ**— सं० (कि०) बिना छिलके का अखरोट।
**छकी**— सं० (कि०) पशुओं का बंधन।
**छके**— सं० (कि०) निशाना।
**छकेम्**— सं० (कि०) केंद्रबिंदु।
**छकेसा**— सं० (कि०) निशानेबाज।
**छकोरे**— वि० (कि०) अत्यधिक नमकीन।
**छखचन**— वि० (कि०) फलों से लदा हुआ।
**छखमतोई**— अ० (कि०) दानारहित।
**छखमाह**— अ० क्रि० (कि०) रुकना। स० क्रि० सहना।
**छखुहलाश्य**— वि० (कि०) टिका हुआ।
**छगचल**— सं० (कि०) नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन।
**छगदो:**— सं० (कि०) एक देव विशेष।
**छगपर**— सं० (कि०) बनी-बनाई लेखन सामग्री।
**छगपा**— सं० (कि०) मोह।
**छगमा**— सं० (कि०) झाडू।
**छगला**— अ० क्रि० (कि०) रुक जाना।
**छगलोवङमाह**— अ० क्रि० (कि०) छूट जाना।
**छगसुंफ**— सं० (कि०) एक पूजा विशेष।
**छगुनदुगुन**— सं० (कि०) हानि।
**छङ**— सं० (ला०) मदिरा।
**छङ**— अ० (कि०) क्यों।
**छङ**— अ० (कि०) अब।
**छङ**— सं० (कि०) घोंसला।
**छङकुलकुल**— वि० (कि०) सफेद।
**छङखमा**— सं० (कि०) आटे की छलनी।
**छङखले**— वि० (कि०) स्लेटी (रंग)।
**छङगङ**— सं० (कि०) पहली मंज़िल का कमरा।
**छङम्रङम्रङ**— सं० (कि०) रोशनी, प्रकाश।
**छङजोरा**— वि० (कि०) सफेद बालों वाला।
**छङपङ**— सं० (कि०) एक झाड़ी विशेष।
**छङपा**— सं० (कि०) विष्णु।
**छङपाखुङ**— वि० (कि०) अंजलि भर।
**छङपुङ**— सं० (कि०) बाल्यावस्था।
**छङपोऊक्युम**— सं० (कि०) छात्रालय।
**छङप्रङ**— सं० (कि०) बाल्यकाल।
**छङमाह**— अ० क्रि० (कि०) तृप्त होना।
**छङरङ**— सं० (कि०) संतान।
**छङरेह**— अ० (कि०) अब।
**छङीह**— वि० (कि०) सफेद, श्वेत।
**छड़ुह**— वि० (कि०) तृप्त, संतुष्ट।
**छचन**— वि० (कि०) परिचित।
**छचाच**— सं० (कि०) कन्या, लड़की।
**छटंग**— सं० (कि०) दु:ख-दर्द।
**छटफटैनिग**— अ० क्रि० (कि०) छटपटाना।
**छटा**— सं० (कि०) हानि।
**छत**— सं० (कि०) दामाद।
**छतक**— सं० (कि०) प्रकाश।
**छतकङ**— सं० (कि०) मठ का शिखर।
**छतपछतप**— सं० (कि०) प्रात:काल।
**छतपा**— सं० (कि०, ला०) दंड।
**छतपो**— वि० (कि०) पिछड़ा हुआ, थका हुआ।
**छतपो**— सं० (ला०) चिथड़ा।
**छतरङ**— सं० (कि०) दे० छतर।
**छतरङ**— सं० (कि०) फसल की मात्रा।
**छतरयामिक**— स० क्रि० (कि०) बिखेरना।
**छतरोली**— सं० (कि०) छाता।
**छतिङ्ख**— अ० (कि०) के लिए।
**छतिङ्ख**— सं० (कि०) संबंधी।
**छद**— सं० (कि०) दामाद।
**छद**— सर्व० (कि०) क्या।
**छदोह**— अ० क्रि० (कि०) शिथिल पड़ना।
**छन**— सं० (कि०) लक्षण।
**छन**— सं० (कि०) रात।
**छनछाल**— वि० (कि०) भयानक।
**छपजप**— वि० (कि०) फिजूल।
**छपन**— सं० (कि०) नमक रखने का पात्र।
**छपयामिक**— स० क्रि० (कि०) देवता के आगे हस्त मुद्रा से सच्चाई बताना।

छपरङ—सं० (कि०) स्लेट या चादर की छत।
छपरङपूजियामिक—स० क्रि० (कि०) मकान पूरा होने पर छत की पूजा करना।
छपायामाह—स० क्रि० (कि०) छापना।
छप्यामिक—स० क्रि० (कि०) छापना।
छम—सं० (ला०) लामाओं का धार्मिक नृत्य।
छम—सं० (कि०) समाधि।
छम—सं० (कि०) पुल।
छमलाह—अ० क्रि० (कि०) क्रम टूटना।
छमेद—वि० (ला०) कम नमक वाला।
छमो—सं० (कि०) बहू।
छमो—सं० (कि०) पत्नी।
छमो—सं० (ला०) भर्ताजी।
छरगोत—सं० (कि०) खेत में मवेशी बैठाकर खाद बनाने का कार्य।
छरथ—सं० (कि०) दूध छानने की छलनी।
छरपना—सं० (कि०) मांस निकालने का लोहे का कलछीनुमा उपकरण।
छरपा—सं० (कि०, ला०) वर्षा।
छरफा—सं० (ला०) दे० छरपा।
छरबा—सं० (कि०) दे० छरपा।
छरमिक—स० क्रि० (कि०) छानना।
छरमी—सं० (कि०) पतझड़ का मौसम।
छरामिक—स० क्रि० (कि०) छोड़ देना।
छल—सं० (ला०) बाग।
छल—सं० (कि०) औषधि।
छलछोल—वि० (कि०) प्रारंभिक।
छलदुर—सं० (कि०) शुष्क मौसम।
छलिया—सं० (कि०) मक्की।
छलूग—सं० (कि०) छाले।
छवकपराख—अ० क्रि० (कि०) टुकड़े-टुकड़े होकर गिरना।
छवा—सं० (कि०) बुखार। कांटा।
छवा—सं० (कि०) अनाज।
छवाअंथमाह—अ० क्रि० (कि०, ला०) बुखार चढ़ना।
छवादिवा—अ० क्रि० (ला०) कूदना।
छवापोटो—सं० (कि०) अन्न के दाने।
छसख—सं० (कि०) बकरे या मेढ़े की पोटी का मल।
छसमाह—अ० क्रि० (कि०) तैयार होना।
छसमिक—स० क्रि० (कि०) सुनना।
छहङख—सं० (कि०) बच्चा, पुत्र।
छांटयाम—सं० (कि०) क्रियाकर्म।
छांटयामिक—स० क्रि० (कि०) ऋण उतारना।
छांटे—वि० (कि०) फुरतीली।
छा—सं० (कि०, ला०) नमक।
छा—सं० (कि०) दे० छवा।
छाअंग—सं० (ला०) घोंसला।
छाइवा—स० क्रि० (ला०) रखना।
छाई-छड़बा—स० क्रि० (ला०) रखना।
छाक—सं० (कि०) प्रकाश।
छाकङ—सं० (कि०) पूजा का नैवेद्य।
छाकलपाकल—सं० (कि०) किसी पात्र को ठीक प्रकार से न धोने की क्रिया।
छाकलयामिक—स० क्रि० (कि०) छलकाना।
छाकोरे—वि० (कि०) अधिक नमक वाला।
छाखोरलो—सं० (कि०) नमकदानी।
छाङ—सं० (कि०) बेटा, पुत्र।
छाङच—सं० (कि०) बच्चा, भतीजा।
छाचा—सं० (कि०) नमकीन चाय।
छाजा—सं० (ला०) नमकीन चाय।
छाजेमयामिक—स० क्रि० (कि०) नमक चखना।
छाटयामिक—स० क्रि० (कि०) पटकना।
छाटा—सं० (कि०) नुकसान।
छाटिप—सं० (ला०) थकान।
छाटेरङ—सं० (कि०) पानी के छींटे।
छाटो—सं० (कि०) टोकरी।
छाती—सं० (कि०) छाती।
छाती—सं० (ला०) शोरबा।
छाती—सं० (कि०) नमक वाला पानी।
छातुर—सं० (ला०) छत्र।
छाद—सं० (कि०) दामाद।
छादरङ—सं० (कि०) खलियान में लगा अनाज का ढेर।
छान—सं० (ला०) पहरा देने के लिए खेत में बनाई गई घासफूंस की झोंपड़ी।
छानली—सं० (कि०) कंबल।
छान्नछ—सं० (ला०) छलनी।
छापरङ—सं० (कि०) छप्पर।
छापिन्माह—स० क्रि० (कि०) नमक डालना।
छाबो—सं० (कि०) देव मंदिर की छत।
छाम—सं० (कि०) लामाओं का धार्मिक नृत्य।
छाम—सं० (कि०) सीढ़ी।
छामतामाह—अ० क्रि० (कि०) नमक कम लगना।
छायङ—सं० (कि०) किरण, प्रकाश।
छायङनङ—वि० (कि०) चमकदार।
छार—सं० (कि०, ला०) भस्म, राख।
छारछाइबा—स० क्रि० (ला०) रखना।
छालबा—स० क्रि० (ला०) फाड़ना।
छालमिक—स० क्रि० (कि०) लिपाई करना।
छालिया—सं० (कि०) मक्की।
छालुग—सं० (कि०) फुंसी।
छाले—सं० (कि०) सुहागा।
छाल्ली—सं० (कि०) पट्टू।
छावा—सं० (कि०, ला०) एक रोग।
छाशनिक—स० क्रि० (कि०) नमक डालना।
छासे—वि० (कि०) नमकीन।
छाहिवा—स० क्रि० (ला०) छानना।
छिंपा—सं० (कि०) कलेजी।

**छिकने**— वि० (कि०) गांठ युक्त।
**छिकपसा**— वि० (कि०) नाराज़ मुद्रा वाला।
**छिकपा**— सं० (कि०) नाराज़गी।
**छिकसा**— वि० (कि०) गांठ वाला।
**छिकि**— वि० (ला०) कंजूस।
**छिकोर**— वि० (कि०) गंदा।
**छिख**— सं० (कि०) हड्डियों के जोड़।
**छिख**— सं० (कि०) मरणोपरांत का दान।
**छिखदामाह**— अ० क्रि० (कि०) जोड़ टूटना।
**छिग**— सं० (कि०) अंगुलियों के पोर।
**छिग**— सं० (ला०) शब्द।
**छिगस्याशिङ**— सं० (कि०) गांठ युक्त लकड़ी।
**छिङना**— सं० (कि०) क्रोध।
**छिङनातुमंह**— अ० क्रि० (कि०) क्रोध आना।
**छिङनादेम्माह**— अ० क्रि० (कि०) क्रोध शांत होना।
**छिटकी**— सं० (कि०) धुनकी।
**छिटा**— वि० (कि०) बेकार भूमि जिसमें उपज न हो, ऊसर।
**छितरङ**— सं० (कि०) भयानक स्थान।
**छितले**— वि० (कि०) गंदा, मलिन।
**छिता**— वि० (ला०) पतला।
**छिद**— सं० (कि०) स्लेटी रंग की विशेष मिट्टी।
**छिदखाणी**— सं० (कि०) स्लेटी रंग की मिट्टी की खान।
**छिननत**— सं० (कि०, ला०) हृदय रोग।
**छिनमिक**— स० क्रि० (कि०) सुराख आदि को बंद करना।
**छिनयामिक**— स० क्रि० (कि०) छीलना।
**छिन्माह**— स० क्रि० (कि०) छीनना।
**छिपछिपमाह**— स० क्रि० (कि०) चूसना, चाटना।
**छिपछिपुहपिन्माह**— स० क्रि० (कि०) चाट लेना।
**छिमा**— सं० (ला०) आंसू।
**छिमालमाह**— स० क्रि० (कि०) माफ करना।
**छिमेद**— वि० (कि०, ला०) अमर।
**छियासा**— वि० (कि०) लंबे दांत वाला।
**छिरी-छिरीलान**— सं० (कि०) तेज़ तथा चुभने वाली ठंडी हवा।
**छिलछिलीमिङ्ती**— सं० (कि०) ज़ार ज़ार आंसू।
**छिलिप**— सं० (कि०) सूर्य की प्रथम किरण।
**छिलिपनीं**— सं० (कि०) सूर्योदय।
**छिलु**— सं० (कि०, ला०) चर्बी।
**छिवा**— सं० (कि०, ला०) मृत्यु।
**छीकछकबेदङ**— सं० (कि०) जोड़ों का दर्द।
**छीकी**— सं० (ला०) छींक।
**छीन**— सं० (कि०) खून के छींटे।
**छीनरनमिक**— स० क्रि० (कि०) अशुद्ध व्यक्तियों द्वारा देवता को स्पर्श करने पर उसके निवारण हेतु बकरे आदि की बलि देना।
**छीनीं**— सं० (कि०) छेनी।
**छुंबा**— सं० (कि०) कैंची।
**छु**— अ० (कि०, ला०) क्यों।
**छु**— सं० (कि०) पानी।
**छुआ**— सं० (कि०) ऊनी दुपट्टा।
**छुइबा**— स० क्रि० (ला०) छूना।
**छुकपो**— सं० (कि०, ला०) साहूकार।
**छुकशमिक**— अ० क्रि० (कि०) मिलना।
**छुखशियस-मुखशियम**— अ० क्रि० (कि०) मिलना-जुलना।
**छुगे**— सर्व० (कि०) क्या।
**छुछोद**— सं० (ला०) घड़ी।
**छुजोत**— सं० (कि०) घड़ी।
**छुटतमाह**— अ० क्रि० (कि०) छूटना।
**छुटबा**— अ० क्रि० (ला०) छूटना।
**छुटी**— सं० (कि०) छुट्टी।
**छुटेनमिक**— अ० क्रि० (कि०) छूटना।
**छुड़यामिक**— स० क्रि० (कि०) छोड़ना।
**छुड़ाम**— सं० (कि०) पानी का किनारा।
**छुड़िबा**— स० क्रि० (ला०) छूना।
**छुतमाह**— स० क्रि० (कि०) बांधना।
**छुतमेन**— वि० (कि०) बांधा हुआ।
**छुतहतामाह**— स० क्रि० (कि०) बांधकर रखना।
**छुतो**— सं० (ला०) चोंच।
**छुदुत**— सं० (कि०) देवता।
**छुद्र**— सं० (ला०, कि०) जलदेवता।
**छुनज़िअ**— वि० (ला०) थोड़ा।
**छुनपा**— सं० (कि०) नौकरानी।
**छुनपा**— सं० (ला०) उपपत्नी।
**छुनमिक**— स० क्रि० (कि०) बांधना।
**छुपना**— सं० (कि०) कलछीनुमा खुला बर्तन।
**छुपोना**— सं० (कि०) चाय या दूध गर्म करने के लिए बना हत्थी वाला पात्र।
**छुबा**— सं० (ला०, कि०) मोटी ऊन की पट्टी का बना चोगा।
**छुबी**— सं० (ला०, कि०) धरती के भीतर की कुल्या।
**छुमिक**— सं० (कि०, ला०) जल स्रोत।
**छुमिक**— अ० क्रि० (कि०) पशुओं का गर्भपात होना।
**छुमी**— सं० (कि०) पानी।
**छुम्ज़ी**— स० क्रि० (ला०) झाड़ू लगाना।
**छुम्मा**— सं० (कि०) लाठी।
**छुर**— सं० (कि०) उतराई।
**छुरकुती**— सं० (कि०) लस्सी उबालकर फटाने से बचा पनीर का शेष पानी।
**छुरखु**— सं० (ला०) दे० छुरकुती।
**छुरपें**— सं० (कि०, ला०) पनीर।
**छुरमाह**— स० क्रि० (कि०) दुहना।
**छुरशियप**— सं० (कि०) पीसा हुआ पनीर।
**छुरा**— सं० (कि०, ला०) पनीर।
**छुराफात**— सं० (कि०) पनीर छानने की थैली।
**छुरिद**— सं० (कि०) थैला बांधने का धागा।
**छुल**— सं० (कि०, ला०) बनावट, बहाना।
**छुलछुलमाह**— स० क्रि० (कि०) कुतरकर बिखेरना।

**छुलठिम**—सं० (कि०) एक प्रकार का तृण।
**छुलदर**—सं० (ला०) ठंडे पानी में बनाया गया सत्तू का घोल।
**छुलमाह**—स० क्रि० (कि०) औज़ार से काटना।
**छुलमिक**—स० क्रि० (कि०) छोटे-छोटे टुकड़े करना।
**छुलुङ**—सं० (कि०, ला०) दरिया तथा खड्ड का किनारा।
**छुलैंमिक**—अ० क्रि० (कि०) इधर-उधर फिरना।
**छुलोतनङ**—अ० (कि०) क्योंकि।
**छुलोनना**—अ० (कि०) क्योंकि।
**छुशिन**—स० (कि०) पानी के आसपास रहने वाली प्रेतनी।
**छुशी**—सं० (कि०) गर्भपात।
**छुश्मा**—सं० (कि०) बंधन।
**छुसा**—सं० (कि०) औषधियुक्त प्राकृतिक जल।
**छुसेर**—सं० (कि०, ला०) पीप।
**छुहबा**—स० क्रि० (ला०) छूना।
**छू**—सं० (कि०) घराट की नाली।
**छू**—सं० (कि०) दस्ता।
**छूकमी**—सं० (कि०) सेठ।
**छूछू**—सं० (कि०) दे० छुशी।
**छूदङ**—सं० (कि०) झरना।
**छूसाबनिङ**—सं० (कि०) दस्तायुक्त पात्र।
**छूहकारिया**—सं० (कि०) खराद से लकड़ी के पात्र बनाने वाला व्यक्ति।
**छे**—सर्व० (कि०) क्या।
**छे**—सं० (कि०) गुस्सा, शत्रुता।
**छे**—स० (कि०) उम्र।
**छेऊ**—सर्व० (कि०) किसका।
**छेए**—सं० (कि०) मैल।
**छेक-छेक**—सं० (कि०) परत के ऊपर परत।
**छेकछेकरी**—अ० क्रि० (कि०) परत के ऊपर परत होना।
**छेकयामिक**—स० क्रि० (कि०) समाप्त करना।
**छेखोरमिक**—अ० क्रि० (कि०) उम्र समाप्त होना।
**छेगछेगतोशमिक**—अ० क्रि० (कि०) चिपक कर बैठे रहना।
**छेङकले**—सं० (कि०) मैला बर्तन।
**छेच**—सं० (कि०) स्त्री, पत्नी।
**छेचछ़ंग**—सं० (कि०) स्त्री और बच्चे।
**छेचमी**—सं० (कि०) स्त्री।
**छेचस**—सं० (कि०) स्त्री।
**छेचाच**—सं० (कि०) कन्या।
**छेचिह**—सर्व० (कि०) कोई, कुछ।
**छेचू**—सं० (कि०) धार्मिक-पूजा।
**छेचेछेचे**—अ० (ला०) सचमुच।
**छेटांख**—वि० (कि०) छटांक।
**छेटाछट**—अ० (कि०) लगातार, तुरंत।
**छेटिंग**—सं० (कि०) बारीक लकड़ी।
**छेडुप**—सं० (कि०) दीर्घायु।
**छेड़ोन**—सं० (कि०) पूर्वजन्म का कर्म।
**छेतकङ**—सं० (कि०) ठोड़ी।
**छेतपा**—सं० (कि०) जुर्माना, सामाजिक सम्मेलन में भाग न लेने पर दिया जाने वाला दंड।
**छेतम**—सं० (कि०) मंदिर।
**छेताच**—सं० (कि०) कन्या।
**छेतुर**—सं० (ला०) खेत।
**छेनङ**—सं० (कि०) छेनी।
**छेपरामाह**—स० क्रि० (कि०) छितराना।
**छेपा/बा**—सं० (कि०) दिनांक, तिथि।
**छेपी**—सं० (ला०) शुक्ल पक्ष।
**छेबुम**—सं० (कि०) आयु-कलश।
**छेम**—सं० (कि०) मांस।
**छेमछेम्माह**—स० क्रि० (कि०) कुतरना।
**छेमतोद**—सं० (कि०) आरंभिक जीवन।
**छेममाह**—स० क्रि० (कि०) कुतरना।
**छेमसिक**—स० क्रि० (कि०) कुतरना।
**छेमर**—सं० (कि०) छिपकली।
**छेमुन**—सं० (कि०) किस्मत। जीवन।
**छेरख**—सं० (कि०) पेचिश।
**छेरङ**—सं० (कि०) छींटा, धब्बा।
**छेरछेरङ**—अ० (कि०) बार-बार।
**छेरपंग**—सं० (कि०) कांटेदार वृक्ष विशेष।
**छेरब**—वि० (कि०) थोड़ा।
**छेरमग**—सं० (ला०) कांटा।
**छेरमा**—सं० (कि०) दे० छेरमग।
**छेरयामिक**—स० क्रि० (कि०) छोड़ना।
**छेरसुमाह**—अ० क्रि० (कि०) तंग आना।
**छेरा**—सं० (कि०) गेंद।
**छेरा-छेरा**—अ० (कि०) 'ग्रोक्च' में देव शक्ति का प्रवेश करते हुए उपस्थित व्यक्तियों द्वारा उच्चरित शब्द या आह्वान।
**छेरुआ**—वि० (कि०) आवारा, इधर-उधर घूमने वाला।
**छेरुआ-ज़ौद**—सं० (कि०) गेहूं की एक किस्म जिसका चबेना बनता है।
**छेलडू**—सं० (कि०) लड़का, बेटा।
**छेला**—सं० (कि०) अवतार, चेला।
**छेली**—सं० (कि०) बकरी की बच्ची।
**छेवङ**—सं० (कि०) आयु वृद्धि।
**छेशमिक**—अ० क्रि० (कि०) गुस्सा करना, शत्रुता करना।
**छेशु**—सं० (ला०, कि०) गोन्पा में मनाया जाने वाला उत्सव।
**छेश्यु**—सं० (कि०) त्योहार।
**छेसमी**—सं० (कि०) महिला, स्त्री।
**छैकङ**—सं० (कि०) ठोड़ी।
**छैलड़ी**—सं० (कि०) भतीजी।
**छोंपो**—सं० (कि०) गुच्छा।
**छोंबोई**—सं० (कि०) भिगोई हुई 'चुली'।
**छोंबोर**—सं० (कि०) दे० छोंबोई।
**छोंमें**—सं० (कि०) दीपक।
**छो**—सं० (कि०) धर्म।

छो— सं० (कि०) झील।
छोआं— सं० (कि०) क्षमा।
छोआ— सं० (कि०) अनाज।
छोआ— सं० (ला०) दांत।
छोककङ— सं० (कि०) घर में बनाया लघु मंदिर।
छोककन करबा— सं० क्रि० (ला०) जोड़ना।
छोकङ— सं० (कि०) पूजा का कमरा।
छोकलपोकल— वि० (कि०) दोगला। अस्पष्ट।
छोकोपोकोल— वि० (कि०) दे० छोकलपोकल।
छोखंग— सं० (ला०) वह कमरा जहां बौद्ध धर्मग्रंथों को रखा जाता है तथा बौद्ध मूर्तियों की पूजा की जाती है।
छोख— सं० (कि०) बौद्ध पूजा।
छोगचेग— सं० (कि०) स्तूप।
छोगतेन— सं० (कि०) दे० छोगचेग।
छोगशिल— अ० (कि०) आगे।
छोग्यल— सं० (कि०) धर्मराज।
छोङ— सं० (कि०) छलांग।
छोङ— सं० (कि०) व्यापार।
छोङअ— सं० (कि०) गुच्छा।
छोङटामाह— अ० क्रि० (कि०) उछलना, लपकना।
छोङपा— सं० (कि०) व्यापारी।
छोङमाह— स० क्रि० (कि०) आयात करना।
छोङयो— सं० (कि०) घड़ी।
छोङलङमिक— स० क्रि० (कि०) व्यापार करना।
छोङलमाह— स० क्रि० (कि०) गट्ठा बनाना।
छोङसा— सं० (कि०) व्यापार मंडी।
छोचोट— सं० (कि०) छोटी टोकरी।
छोटाच— वि० (कि०) छोटा।
छोटेबां— सं० (ला०) चाचा।
छोटेस— वि० (कि०) छोटा।
छोटेसदयारो— सं० (कि०) सर्दियों के छोटे दिन।
छोत/द— सं० (कि०) परीक्षा, अनुमान, जांच; समय।
छोतपो— वि० (कि०) कृतज्ञ।
छोत्पा— सं० (कि०) ज़ुर्माना।
छोदकङ— सं० (कि०) ठोड़ी।
छोदतेन— सं० (कि०) मूर्ति।
छोदपा— सं० (कि०) पूजा।
छोदमा— सं० (ला०) सब्जी।
छोदमाहच— अ० क्रि० (कि०) पता न होना, तरीके का पता न होना।
छोदमें— सं० (कि०) दीप।
छोन— वि० (कि०) व्यर्थ।
छोनटङ— सं० (कि०) गुच्छा।
छोननस— सं० (कि०) पुरोहित।
छोप— सं० (कि०) दाल; शोरबा।
छोपयामिक— स० क्रि० (कि०) चेचक का टीका लगाना।
छोपलछपल— वि० (कि०) मिला-जुला।
छोपोच— वि० (कि०) पांच उंगलियों के बीच लिया जाने वाला आटा या सत्तू।
छोफमाह— स० क्रि० (कि०) पिरोना, मिलाना।
छोब— सं० (कि०) दाल या सब्जी की तरी, मांस का शोरबा।
छोबचमिक— स० क्रि० (कि०) कलम से स्याही लेना या रोटी के टुकड़े को चाय, दूध, दाल आदि में डुबोना।
छोबमिक— स० क्रि० (कि०) लपक कर पकड़ना।
छोबा— सं० (कि०) चोगा।
छोमपू— सं० (कि०) कलगी।
छोमा— सं० (कि०) दे० छोब।
छोमाई— सं० (कि०) बरसात।
छोमाह— स० क्रि० (कि०) रंग चढ़ाना।
छोमाह— स० क्रि० (कि०) ढूंढना, प्राप्त करना।
छोमिक— स० क्रि० (कि०) रंगना।
छोमो— सं० (कि०) तहज़ीब।
छोरथेन— सं० (ला०) वह स्थान जहां किसी के स्मरण हेतु आभूषणों व धार्मिक पुस्तकों को रखा जाता है।
छोरिया— सं० (कि०) त्रिशूलधारी।
छोलणी— सं० (ला०) झूला।
छोलो— सं० (कि०) पासा।
छोलोङटामाह— अ० क्रि० (कि०) हड़बड़ाना; भूल करना।
छोलोटामाह— सं० (कि०) 'पासे' का खेल।
छोश्यत— सं० (कि०) धर्मोपदेश।
छोस— सं० (कि०) धर्म; धार्मिक बौद्धग्रंथ या पोथी।
छोसकङ— सं० (कि०) मकान के साथ पूजा-पाठ व धार्मिक ग्रंथ, मूर्ति आदि रखने का छोटा बौद्ध मंदिर।
छोसकोर— सं० (कि०) धर्मचक्र।
छोसछलाअ— सं० (कि०) धार्मिक वस्तु।
छोसतेन— सं० (कि०) बौद्ध स्तूप।
छोसपामी— सं० (कि०) धार्मिक पुरुष।
छोसडोसा— सं० (कि०) धर्म पर विश्वास।
छोसरुङमाह— स० क्रि० (कि०) धर्मोपदेश सुनना।
छोसो— सं० (कि०, ला०) चर्बी।
छोह्मछोंहफू— अ० (कि०) बीच-बीच में।
छौःरी— सं० (कि०) देवता की सोने-चांदी की छड़ी।
छौकस— सं० (कि०) बौद्ध मठ में चढ़ाया जाने वाला प्रसाद।
छौका— वि० (ला०) इकट्ठा।
छौङमी— सं० (कि०) पुरुष।
छौट— सं० (कि०) विषम संख्या।
छौद— सं० (कि०) खाना; खाने की क्रिया।
छौन— सं० (कि०) पकाया हुआ मांस।
छौनमिक— स० क्रि० (कि०) दांतों से पकड़कर खींचना।
छौमिक— स० क्रि० (कि०) बूझना, पहचानना।
छौरीया— सं० (कि०) छड़ी लेकर चलने वाला व्यक्ति।
छौलमिक— अ० क्रि० (कि०) स्मरण शक्ति कम होना।
छौले— सं० (कि०) सींग रहित मादा पशु।
छौलो— सं० (कि०) पासा।
छौलोयोचमिक— स० क्रि० (कि०) पासा खेलना।
छौलौग— सं० (कि०) सींग रहित नर पशु।

**छौस**—सं० (कि०) चर्बी।

**छौसपिण्डिङ**—सं० (कि०) चर्बी का गोला।

**छौसमिक**—अ० क्रि० (कि०) बुद्धि का नष्ट होना।

## ज

**ज़ंगजुक**—सं० (कि०) गृहस्थी।

**ज़ंगपो**—वि० (ला०) भद्र।

**ज़ंगमुचा**—सं० (कि०) कुकुरमुत्ता की एक प्रजाति।

**ज़ंगल**—सं० (कि०) जंगल।

**जंगलीखोर**—सं० (कि०) Aesculus indica.

**जंगा**—वि० (कि०) स्वस्थ।

**जंथु**—सं० (कि०) चिथड़ा।

**जंथुगोला**—वि० (कि०) फटे पुराने (वस्त्र)।

**जंथुसा**—वि० (कि०) चिथड़ा पहनने वाला।

**जंपो**—वि० (कि०) नर्म।

**जंपो**—वि० (ला०) भद्र।

**जंफमाह**—अ० क्रि० (कि०) घिस कर नर्म होना।

**जंफो**—वि० (कि०) चिकना।

**जंबुरिहप्यास**—सं० (कि०) चमगादड़।

**ज़.न**—सं० (कि०) ऊनी 'दोहडू'।

**जइबा**—अ० क्रि० (ला०) जलना।

**जईबीजङ**—सं० (कि०) बहुत ऊंचाई पर उगने वाला एक पहाड़ी फूल।

**जकपा**—सं० (कि०, ला०) डाकू।

**ज़कबेलगोरा**—वि० (ला०) ईर्ष्यालु।

**ज़कमक**—सं० (कि०) चमक, जगमग।

**जकमकयामिक**—स० क्रि० (कि०) चमकाना।

**ज़कमकेसमिक**—अ० क्रि० (कि०) चमकना।

**जकलप**—सं० (कि०) हड्डियों का ढेर।

**जकलयामिक**—स० क्रि० (कि०) बड़े ताले या बंद किवाड़ को खोलने के लिए धक्का देना।

**ज़किथ**—वि० (कि०) बारीक।

**जख**—सं० (ला०) कीचड़।

**जखङ**—वि० (कि०) दायां।

**जखङपाश**—अ० (कि०) दक्षिण की ओर।

**जखली**—सं० (कि०) जमा हुआ पानी।

**जग**—सं० (ला०) दिन, तिथि।

**जगपा**—सं० (कि०) डाकू।

**जगफा**—वि० (कि०) मोटा।

**जगमिक**—अ० क्रि० (कि०) टूटना।

**जगरौ**—सं० (कि०) विशेष उत्सव पर जागरण।

**जगलयामिक**—स० क्रि० (कि०) सोए हुए आदमी को जगाना।

**जगोथोत्माह**—अ० क्रि० (कि०) बच्चे का खाने-पीने के योग्य होना।

**जङ**—सं० (कि०) उत्तर दिशा।

**जङ**—सं० (कि०) स्वर्ण, सोना।

**जङ**—अ० (कि०) यहां।

**जङखू**—वि० (ला०) हरा।

**जङती**—सं० (कि०) सोने का पानी।

**जङतीगारङ**—सं० (कि०) सतलुज नदी।

**जङदङ**—अ० (कि०) नदी के इस ओर।

**ज़ङना**—अ० (कि०) मामूली सा।

**जङमाह**—अ० क्रि० (कि०) समाना।

**जङसिक**—अ० क्रि० (कि०) वस्तु का पानी की तह बैठना।

**जङमिक**—स० क्रि० (कि०) कंठस्थ करना।

**जङेजङे**—वि० (कि०) विचारों में खोया हुआ, ध्यानमग्न।

**जठेरस**—सं० (कि०) देवता के कार्कुन।

**ज़त**—सं० (ला०) जौ।

**ज़तरङ**—सं० (कि०) मेला।

**ज़द**—सं० (कि०) गेहूं।

**जन**—सं० (ला०) मिट्टी।

**ज़नच़**—सं० (कि०) छोटे बच्चों के लिए विशेष प्रकार का तौलिया या 'दोहडू'।

**जनजनी**—सं० (कि०) तार बनाने का यंत्र।

**ज़नथू**—सं० (कि०) चिथड़ा।

**जनसपा**—सं० (कि०) बाराती।

**जनेटङ**—सं० (कि०) विवाह की एक रस्म।

**जपतपयामिक**—स० क्रि० (कि०) टटोलना।

**ज़पमाह**—स० क्रि० (कि०) इकट्ठा करना।

**जपाक**—अ० (कि०) झपट कर।

**जपाकचुमिक**—स० क्रि० (कि०) झपट कर पकड़ना।

**जपरु**—वि० (कि०) चिड़चिड़ा।

**जपूहतामाह**—स० क्रि० (कि०) समेटे रखना।

**जफो**—सं० (ला०) मुर्गा।

**जबङ**—सं० (कि०) स्वाद।

**जबङसा**—वि० (कि०) स्वादिष्ट।

**जबमिग**—अ० क्रि० (कि०) उतरना।

**जबामिग**—अ० क्रि० (कि०) उतरना।

**ज़बोरज़स्त**—वि० (कि०) ज़बरदस्त।

**जम**—सं० (ला०) शोरबा।

**जमङ**—सं० (कि०) स्वाद।

**जमङसेमा**—वि० (कि०) स्वादिष्ट। सं० तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य।

**जममिक**—अ० क्रि० (कि०) पानी का सूख जाना।

**ज़मलिंग**—सं० (कि०, ला०) संसार, विश्व।

**ज़मान**—सं० (कि०) ज़बान।

**ज़मानङ**—सं० (कि०) देवता का रथ।

**ज़माह-तुङमाह**—स० क्रि० (कि०) खाना-पीना।

**ज़मिन**—सं० (ला०) भोजन।

**ज़मेन**—सं० (ला०) खाद्य अन्न।

**जम्मामाह**—स० क्रि० (कि०) चखना।

**ज़यकयामिक**—स० क्रि० (कि०) भिड़कना।

**ज्येष्टङ**—सं० (कि०) ज्येष्ठ, उम्र में बड़ा। जेठ (मास)।

**ज़र**—सं० (कि०) मकान का भीतरी या बाहरी कोना।
**ज़रका**—सं० (ला०) दौड़।
**ज़र-ज़र**—वि० (ला०) खुरदरा।
**ज़रजरोंदा**—वि० (ला०) दे० ज़रज़र।
**ज़रताप**—सं० (ला०) ज्वर।
**ज़रपश**—सं० (कि०) पूर्व की ओर।
**ज़रमङ·**—सं० (कि०) जन्म।
**ज़रमिक**—अ० क्रि० (कि०) उदय होना।
**ज़रशैनमिक**—स० क्रि० (कि०) देवी, देवताओं को अर्घ चढ़ाना।
**जरङ·**—सं० (कि०) पथरीला स्थान।
**जरोघरो**—वि० (कि०) तेज़।
**ज़र्का**—सं० (ला०) दे० ज़रका।
**जर्कादीबा**—अ० क्रि० (ला०) दौड़ना।
**ज़ल**—सं० (ला०) कंकड़ों का ढेर।
**जलका/खा**—सं० (ला०, कि०) दर्शन।
**जलजल**—वि० (ला०) गोल।
**जलदारङ·**—सं० (कि०) छत के नीचे बिछाए जाने वाले शहतीर।
**जलबा**—अ० क्रि० (ला०) जलना।
**जलमाह**—स० क्रि० (कि०) दर्शन करना।
**जलमिक**—स० क्रि० (कि०) दर्शन करना।
**जलाइबा**—स० क्रि० (ला०) जलाना।
**जलाही**—सं० (ला०) मछुआ।
**जलिए**—सं० (कि०) अच्छी चाल वाली महिला।
**जलेबरीये**—सं० (कि०) सफेद और काले रंग की सुरागाय।
**जलोयाक**—सं० (कि०) सफेद और काले रंग का याक।
**ज़लौरे**—सं० (कि०) मारने-पीटने की धमकी।
**जल्ला**—वि० (कि०) सीधा-सादा।
**जवङ·**—सं० (कि०) स्वाद, रस।
**जवङ·**—सं० (कि०) जीवन-समय, ज़िंदगी।
**जवा**—अ० (कि०) इधर।
**ज़वा**—सं० (कि०) लकड़ी का बना दूध दुहने का केतलीनुमा बर्तन।
**जवा**—सं० (ला०) बालटी।
**ज़वान**—वि० (कि०) जवान।
**जश्मङ·**—वि० (कि०) ज्येष्ठ।
**जस**—सं० (कि०) खाद्य पदार्थ।
**ज़स**—सं० (ला०) सामग्री।
**ज़सती**—सं० (कि०) खानपान।
**ज़हरी**—वि० (कि०) तेज़, चुस्त।
**ज़ह्वेजाल**—सं० (ला०) संपत्ति।
**जांउबा**—स० क्रि० (ला०) जानना।
**जांउबि**—अ० (ला०) जो भी।
**जांक**—सं० (कि०) तपिश।
**ज़ांङ**—सं० (कि०) सोना।
**ज़ांय**—अ० (ला०) व्यर्थ।
**जांया**—सं० (कि०) बारात।

**ज़ा:ङ·**—वि० (कि०) कुशल, दक्ष।
**जा**—अ० (कि०) इधर।
**जाअ**—वि० (कि०) काफी।
**जाइबा**—स० क्रि० (ला०) पालना; जानना; जलाना।
**ज़ाई**—सं० (कि०) विवाहित बेटी।
**जाक**—सं० (कि०) धोखा।
**ज़ाकज़ाक**—वि० (कि०) छेदों वाला।
**जाकज़ामिक**—अ० क्रि० (कि०) धोखा खाना।
**ज़ाखङ·**—वि० (कि०) दायां।
**ज़ाखोनिङ·**—सं० (कि०) भोजन की थाली।
**जागङ·**—सं० (कि०) विशेष अवसरों पर देवता का कार्य।
**जागरनमिक**—स० क्रि० (कि०) धोखा देना।
**ज़ागा**—सं० (कि०) स्थान।
**ज़ाङ·**—सं० (कि०) स्वर्ण।
**जाङ·टानङ·**—सं० (कि०) सोने के आभूषण।
**जाङ·मिक**—स० क्रि० (कि०) दिखाना।
**ज़ाङ·मुल**—सं० (कि०) सोना-चांदी।
**ज़ाङ·गाल**—सं० (कि०) जंगल।
**ज़ाच**—सं० (कि०) उत्तराधिकारी।
**ज़ाचित**—वि० (कि०) काटने वाले (जानवर)।
**ज़ाचे**—सं० (ला०) भोजन।
**ज़ादू**—वि० (कि०) अनाथ, लावारिस पुत्र।
**ज़ाटे**—वि० (कि०) लावारिस पुत्री।
**ज़ाड़ै**—सं० (कि०) जादू का प्रकोप।
**ज़ाड़ैपोकमिक**—स० क्रि० (कि०) भाड़-फूंक करना, 'ज़ाड़ै' को मंत्रों द्वारा जला डालना।
**जातरमाह**—सं० (ला०) श्रावण मास।
**ज़ातरा**—सं० (कि०) तीर्थ यात्रा।
**जातलामाह**—सं० (ला०) आश्विन मास।
**ज़ाथ**—सं० (कि०) जाति।
**ज़ाथुरङ·**—सं० (कि०) मेले में किया जाने वाला नृत्य।
**जादुसया**—वि० (कि०) जादूगर, जादू करने वाला।
**ज़ादू**—सं० (कि०) जादू, टोना।
**जादूबेरङ·**—अ० (कि०) उस समय, उस दौरान।
**ज़ान**—सं० (कि०) प्राण।
**ज़ानचयामिक**—स० क्रि० (कि०) पढ़ना, जांचना।
**जानदबा**—स० क्रि० (ला०) पालना।
**ज़ानमिक**—अ० क्रि० (कि०) पीछे रहना, खत्म होना।
**ज़ानि**—अ० (कि०) पता नहीं।
**जानेकंग**—सं० (कि०) दे० जानेक।
**जानेक**—सं० (कि०) विवाह की एक प्रथा।
**जानेचङ·**—सं० (कि०) दे० जानेक।
**जानेया**—सं० (कि०) बाराती।
**जानेसआंज**—सं० (कि०) बारातियों को दिया जाने वाला बकरा।
**ज़ापक**—अ० (कि०) अचानक।
**ज़ापत**—वि० (कि०) ज़ब्त।
**ज़ाफरी**—अ० (कि०) ज़बरदस्ती।
**ज़ाफो**—सं० (कि०) मिर्गी (रोग)।

ज़ाबमिक— स० क्रि० (कि०) समेटना।
ज़ाबल— सं० (कि०) दे० झब्बल।
ज़ाबशमिक— अ० क्रि० (कि०) इकट्ठा होना।
ज़ाम— सं० (कि०) फावड़ा।
जामङ— सं० (कि०) स्वाद।
ज़ामम्— स० क्रि० (कि०) इकट्ठा करना।
ज़ाम्लौं— सं० (कि०) राजमाष, सूखे मटर आदि को उबाल कर बनाया गया खाद्यपदार्थ।
ज़ामा— सं० (कि०) खाना, भोजन।
जामात्रा— सं० (ला०) दामाद।
ज़ामानङ— सं० (कि०) देवी-देवताओं का लकड़ी का रथ।
ज़ामाह— स० क्रि० (कि०) भोजन करना।
ज़ामाहखेशिह— वि० (कि०) भोजन देने वाला।
ज़ामाङ्ज़स— सं० (कि०) खाद्यपदार्थ।
जामिक— स० क्रि० (कि०) टपकते हुए तरल पदार्थ को किसी पात्र में एकत्र करना।
ज़ामिक— स० क्रि० (कि०) खाना।
ज़ामिकतुङमिक— स० क्रि० (कि०) खाना-पीना।
जामिबा— अ० क्रि० (ला०) पैदा होना।
जामु— सं० (कि०) Prunus cornuta, Prunus spp.
जामे— सं० (कि०) पानी लाने का लकड़ी का बर्तन।
ज़ारठा— वि० (कि०) बिदकने वाला नर-पशु।
ज़ारठे— वि० (कि०) बिदकने वाला मादा पशु।
ज़ारमिक— अ० क्रि० (कि०) बिदकना।
ज़ारयामिक— अ० क्रि० (कि०) मछलियों का गहरे पानी में तैरना।
ज़ारी— सं० (कि०) सुराहीनुमा पात्र जिससे देवताओं को जल चढ़ाया जाता है।
जाल— सं० (कि०) पतली छड़ी।
ज़ाल— सं० (कि०) सामाजिक अथवा देव कार्य के लिए लोगों के इकट्ठा होने का भाव।
जालमिक— स० क्रि० (कि०) दर्शन करना।
ज़ालमिक— स० क्रि० (कि०) सम्मेलन करना।
जालरु— वि० (ला०) पालतू।
ज़ाला— वि० (कि०) सीधा-सादा।
ज़ाली— वि० (कि०) झूठा।
ज़ालीलोनमिक— स० क्रि० (कि०) झूठ बोलना।
ज़ालोफंड— सं० (कि०) सामूहिक रूप से देव खर्च के लिए इकट्ठा किया गया धन।
ज़ालोप्या— सं० (कि०) देवता के कार्य विशेष को क्रमिक रूप से करने के लिए टोलियों की नियुक्ति।
ज़ावंग— सं० (कि०) ज़िंदगी।
ज़ाशुना— सं० (कि०) पिशाच।
ज़ास— सं० (कि०) खाद्यपदार्थ।
जिंग— सं० (ला०) खेत।
जिंपा— सं० (कि०) दान।
ज़िंबू— सं० (कि०) जिमूचोरा, एक मासाला विशेष।
जिईलमाह— अ० क्रि० (कि०) फिसलना।
जिकपो— वि० (कि०) शानदार।
ज़िक्यामिक— स० क्रि० (कि०) दबाना।
ज़िखिरा— सं० (कि०) जागीर।
ज़िग— सं० (कि०) शेर।
जिगतेनपा— वि० (कि०) सांसारिक।
जिगफो— वि० (कि०) श्रेष्ठ।
जिगमिक— अ० क्रि० (कि०) जड़ समेत नष्ट होना, वंश समाप्त होना।
जिगरमाश्यो— अ० क्रि० (कि०) क्रंदन करना।
ज़िगरोलङ— सं० (कि०) अशांति, झगड़ा।
जिगाजिकङ— सं० (कि०) शोरगुल।
जिगिट— वि० (कि०) छोटा।
ज़िगिमिगी— वि० (कि०) चमकदार।
ज़ित— सं० (कि०) ज़िद।
जितलमाह— स० क्रि० (कि०) जीतना।
ज़ितमाह— अ० क्रि० (कि०) बंद होना।
जितलमाह— स० क्रि० (कि०) पक्षपात करना।
ज़ितलमाह— अ० क्रि० (कि०) ज़िद करना।
जितस— वि० (कि०) धनी।
ज़ितसा— वि० (कि०) ज़िद्दी।
ज़ितिया— वि० (कि०) दे० ज़ितसा।
ज़ितेनमिक— स० क्रि० (कि०) जीतना।
ज़िनज़िनो— वि० (कि०) खिंचावदार, लचकदार।
जिनसेग— सं० (कि०) हवन।
ज़िप— स० क्रि० (कि०) चूसना।
जिपङ— सर्व० (कि०) ये लोग।
ज़िपा— अ० (कि०) इस ओर।
जिफोख— अ० (कि०) इस तरफ।
ज़िमीं— सं० (कि०) ज़मीन।
ज़िमीज़िमी— सं० (कि०) वाद्य का शोर, उत्सव की गहमहई।
ज़िम्मां— सं० (कि०) उत्तरदायित्व।
ज़िर— सं० (ला०) कील।
ज़िरकटिङ— सं० (कि०) कटे बकरे का पसलियों वाला भाग।
जिरतीमाह— स० क्रि० (कि०) मनोकामना करना।
ज़िरिप— सं० (कि०) एकदम उभरी पीड़ा।
जिलङ— सं० (कि०) जड़।
ज़िलमाह— अ० क्रि० (कि०) फिसलना।
ज़िलमिक— अ० क्रि० (कि०) औज़ार का चलाते समय फिसलना।
जिलमिलतमाह— अ० क्रि० (कि०) जगमगाना।
जिलिब— स० क्रि० (ला०) लपेटना।
जिलिम-बिलिम— वि० (कि०) चमकदार।
जिलोरङ— सं० (कि०) मूल, जड़।
ज़िवा— सं० (कि०) दिल।
ज़िश्कटिंग— सं० (कि०) कटे हुए भेड़-बकरे का एक भाग।
ज़ी— वि० (कि०) चार।
जीआंच— सं० (कि०) चार साल की आयु का बकरा।
ज़ीऊना— सं० (कि०) जीवन।

**जी-कार**—सं० (कि०) चार साल की आयु का मेढ़ा।
**जीखतेख**—सं० (कि०) बाल-बच्चे।
**जीखलयामिक**—स० क्रि० (कि०) मरोड़ना, मसलना।
**जीगदंग**—सं० (ला०) ईर्ष्या।
**ज़ीगिच़**—वि० (कि०) छोटा।
**जीडे·नमिक**—अ० क्रि० (कि०) चिल्लाना।
**ज़ीचु**—वि० (कि०) चालीस।
**जीजिटी**—सं० (कि०) बच्चों का झूले का खेल।
**ज़ीथरड·**—सं० (कि०) दांती।
**जीयो**—सं० (कि०) अखरोट का बाहरी छिलका।
**जीनमिक**—अ० क्रि० (कि०) किसी वस्तु का गले में फंसना।
**जीनेस**—वि० (कि०) उम्र में बड़ा।
**जीनेसमिक**—अ० क्रि० (कि०) सब्जी इत्यादि का सख्त होना।
**जीबा**—अ० क्रि० (ला०) जीना।
**जीमिक**—स० क्रि० (कि०) अखरोट का बाहरी छिलका अलग करना।
**जीरमिक**—अ० क्रि० (कि०) जी जाना, जीवित होना।
**जीस**—सं० (कि०) छींक।
**जुंडामाह**—स० क्रि० (कि०) छेदना। उत्तेजित करना।
**जुंबुर**—सं० (कि०) जमुरी, कील निकालने का एक औज़ार।
**जु**—सं० (कि०) उंगली।
**जुअग**—सं० (ला०) दर्द, पीड़ा।
**जुआ**—सं० (कि०) प्रार्थना।
**जुउरमाह**—अ० क्रि० (कि०) उदय होना।
**जुकमिक**—स० क्रि० (कि०) गाड़ना।
**जुक्यामिक**—स० क्रि० (कि०) मारना, लगाना।
**जुखहिई**—सं० (कि०) सिंहासन।
**जुगड·**—सं० (कि०) काल।
**जुगठी**—सं० (कि०) आसन।
**जुगमिक**—अ० क्रि० (कि०) चुभना, लगना, शुरु होना।
**जुड·कु**—सं० (कि०) कान के आभूषण।
**जुड·ढल**—सं० (कि०) माया।
**जुड·था**—सं० (कि०) पशुओं को बांधने का रस्सा।
**जुड·फु**—सं० (कि०) कान का गहना।
**जुड·लयामिक**—स० क्रि० (कि०) हिलाना।
**जुड·जी**—सं० (कि०) पंच तत्त्व।
**जुडुर**—सं० (कि०) ढेर।
**जुटी**—सं० (कि०) जूड़ा।
**जुठ**—वि० (ला०) दो।
**जुठुल**—सं० (कि०) चमत्कार।
**जुठुलसा**—वि० (कि०) चमत्कारिक।
**जुड़जेमाह**—अ० क्रि० (कि०) प्रचलित होना।
**जुतोरो**—अ० (कि०) आज का दिन।
**जुद**—सं० (कि०) युद्ध।
**जुदलाणमिक**—अ० क्रि० (कि०) युद्ध करना।
**जुनमिक**—अ० क्रि० (कि०) अलग होना।
**जुनमिक**—अ० क्रि० (कि०) अच्छा लगना।
**जुनयामिक**—स० क्रि० (कि०) फलदार पेड़ या टहनी को हिला कर फल गिराना।
**जुन्मा**—सं० (ला०) झूठ।
**जुप**—सं० (कि०) क्षण।
**जुपकोमाह**—अ० क्रि० (कि०) चौंकना। भटकना।
**जुपयागमिक**—अ० क्रि० (कि०) क्षण भर सोना।
**जुबाब**—पु० (ला०) जवाब, उत्तर।
**जुबाब**—सं० (ला०) जवाब, उत्तर।
**जुमरा**—सं० (कि०) शहनाई।
**जुमिक**—अ० क्रि० (कि०) धंसना।
**जुम्मिक**—अ० क्रि० (कि०) मुरझाना।
**जुरक्युशु**—सं० (कि०) इष्ट देव।
**जुरलमाह**—अ० क्रि० (कि०) पूरा होना।
**जुरमिक**—अ० क्रि० (कि०) निचुड़ना।
**जुरयामिक**—स० क्रि० (कि०) बताना।
**जुरयाशमिक**—अ० क्रि० (कि०) तैयार होना।
**जुराई**—सं० (कि०) निर्माता।
**जुरामाह**—स० क्रि० (कि०) बनाना।
**जुरामिन**—वि० (कि०) निर्मित।
**जुरामेन**—सं० (कि०) बनावट।
**जुराश्यमाह**—अ० क्रि० (कि०) संवरना।
**जुरुली**—वि० (कि०) आवश्यक।
**जुरेच**—अ० क्रि० (कि०) बनना।
**जुरेलमाह**—स० क्रि० (कि०) सफल करना।
**जुलकू**—वि० (कि०) लंबे बाल वाला (पशु)।
**जुलमाह**—अ० क्रि० (कि०) भौंकना।
**जुलुम**—सं० (कि०) अपराध।
**जुलुमदुस्ती**—सं० (कि०) अत्याचार।
**जुले**—अ० (ला०) नमस्ते।
**जुसोरदो**—अ० क्रि० (कि०) बादल फटना।
**जुहन्माह**—अ० क्रि० (कि०) बादल उमड़ना।
**जुहरमाह**—अ० क्रि० (कि०) घूमना, मुड़ना, खिसकना, छिपना।
**जू:माह**—अ० क्रि० (कि०) झूमना।
**जू**—सं० (कि०) प्रणाम। बादल।
**जू**—सर्व० (कि०) यह।
**जूड·माह**—स० क्रि० (कि०) निगलना।
**जूदुलमाह**—स० क्रि० (कि०) जड़ से समाप्त करना।
**जूटे**—सं० (कि०) जूते।
**जूठ परेठ**—वि० (कि०) जूठा किया हुआ।
**जूठा**—वि० (कि०) ठिंगना।
**जूठे**—वि० (कि०) ठिंगनी।
**जूतिखमाह**—अ० क्रि० (कि०) बादल छाना।
**ज़ूनड·**—सं० (कि०) पिता।
**जूनी**—सं० (कि०) मुसीबत, कठिनाई।
**जूमिक**—अ० क्रि० (कि०) बादलों का उमड़ना।
**जूम्मिक**—अ० क्रि० (कि०) मिलना, इकट्ठा होना।
**ज़ूया**—सं० (कि०) आत्मा।
**जूरुक**—वि० (कि०) तेज।

जेईचेअ—सं० (कि०) प्रचुर मात्रा।
जेऊ—सं० (कि०) कील।
ज़ेए—सं० (कि०) भेड़-बकरी।
जे-खयामिक—स० क्रि० (कि०) इस ओर देखना।
जेखें—अ० (ला०) जब।
ज़ेख्या—सं० (कि०) मित्र।
जेख्यातिमाह—स० क्रि० (कि०) धर्म भाई बनाना।
जेख्यापड·—वि० (कि०) धर्म भाई का परिवार।
जेगजेअ—वि० (कि०) अधमरा।
जेगले—वि० (कि०) बेकार, निकम्मा, अनुपयोगी।
जेगु—वि० (कि०) उनचास।
जेङा—वि० (कि०) पैंतालीस।
जेचकड·—सं० (कि०) प्रचुर मात्रा।
ज़ेचिक—वि० (कि०) इकतालीस।
ज़ेजी—वि० (कि०) चौंतालीस।
ज़ेजुम—सं० (कि०) अनुयायी।
ज़ेज़कार—सं० (कि०) जयकार।
ज़ेझेद—वि० (कि०) अड़तालीस।
जेठटड·—सं० (कि०) ज्येष्ठ मास।
जेठठड·स्यातेगस्या— सं० (कि०) ज्येष्ठ मास।
जेठेरस—सं० (कि०) देवता के 'कारदार'।
जेडुन—वि० (कि०) सैंतालीस।
जेतपालस—सं० (कि०) गड़रिया, भेड़-बकरी चराने वाला नौकर, चरवाहा।
जेताच—अ० (कि०) थोड़ा सा।
जेतिक—अ० (कि०) थोड़ा सा।
जेतुक—अ० (ला०) ज्योंही।
ज़ेत्री—वि० (कि०) बयालीस।
ज़ेदलयामिक—स० क्रि० (कि०) बलि देना।
जेने—सर्व० (ला०) जिन।
जेफल—सं० (कि०) जायफल।
जेमयामिक—स० क्रि० (कि०) चखना।
ज़ेम्मिक—अ० क्रि० (कि०) कोने से फटना।
जेर—सं० (कि०) एक बीमारी।
ज़ेरअंथमाह—अ० क्रि० (कि०) पीड़ा उठना।
जेरचिरामाह—स० क्रि० (कि०) झटके से कपड़ा फाड़ना, फाड़ना।
जेरटामा—सं० (कि०) एक रोग।
जेरटामाह—स० क्रि० (कि०) कील गाड़ना।
ज़ेरठा—वि० (कि०) फटा हुआ।
जेरबाण—सं० (कि०) जुर्माना।
जेरबो—वि० (कि०) खूब, अधिक।
जेरबोजामाह—स० क्रि० (कि०) खूब खाना।
ज़ेरमड·—वि० (कि०) ज्येष्ठ, सबसे बड़ा।
ज़ेरमिक—अ० क्रि० (कि०) फटना।
ज़ेरु—सं० (कि०) कील।
जेलडंगी—वि० (कि०) सहनशील।
जेलयामिक—स० क्रि० (कि०) सहन करना।
जेलाऊ—सं० (कि०) जुलाहा।
जेलायामाह—स० क्रि० (कि०) सहना।
जेशटड·—सं० (कि०) ज्येष्ठ मास।
जेशमड·—वि० (कि०) बड़ा।
जेश्यमाह—स० क्रि० (कि०) मान्यता देना।
जेसरुङसिया—वि० (कि०) इस तरह का।
ज़ेसुम—वि० (कि०) तैंतालीस।
जेहांऊ—सर्व० (ला०) सभी।
जैख्यामिक—स० क्रि० (कि०) रगड़ना।
जैङमिक—अ० क्रि० (कि०) अचेत होना।
ज़ैमठा—वि० (कि०) वह व्यक्ति जिसका ओंठ, कान या नाक कटा हो।
ज़ैर—सं० (कि०) कील।
ज़ैर-ज़ैरो काद—सं० (कि०) फटी हुई आवाज़।
जैरा—अ० क्रि० (कि०) आ जाना।
जैशमंग—वि० (कि०) उम्र में बड़ा।
जैष्टंग—वि० (कि०) ज्येष्ठ।
जैष्टंगोल—सं० (कि०) जेठ का महीना।
जोंटड·—अ० क्रि० (कि०) लटकना।
जोंफमाह—अ० क्रि० (कि०) इकट्ठा होना।
जोंफमाहपनठड·—सं० (कि०) सभा भवन।
जोंफो—सं० (कि०) समूह।
जोंबा—सं० (कि०) स्थानीय जूता।
जो—सं० (कि०) याक और गाय के मिलाप से पैदा नर पशु।
जोअंग—सं० (ला०) विवाह के अवसर पर कन्या को संबन्धियों द्वारा दी जाने वाली रकम।
जोअ—सं० (कि०) सामान।
जोअमाह—अ० क्रि० (कि०) टपकना ।
जोइलि—सं० (ला०) पत्नी।
जोईपोतोरिई—सं० (कि०) लेखा-जोखा रखने की बही।
जोउएं—अ० (ला०) जो भी।
जोओम्स—अ० (कि०) सबसे आगे।
ज़ोकमिक—स० क्रि० (कि०) खरीदना।
जोकोपोको—स० क्रि० (कि०) बर्बाद करना।
जोख—सं० (कि०) लक्षण, योग।
जोखचन—वि० (कि०) धनवान्।
जोगक्षडाबशमु—अ० क्रि० (कि०) घुटनों व हाथ के बल चलना।
ज़ोगचे—सं० (कि०) मेज़।
जोगजोगटानड·—वि० (कि०) गहनों से लदी हुई।
ज़ोगमाह—स० क्रि० (कि०) खरीदना।
जोगमिक—अ० क्रि० (कि०) टपकना।
जोगलमोगल—वि० (कि०) मिला-जुला, अस्पष्ट।
जोगलयामिक—स० क्रि० (कि०) झकझोरना।
जोगसडाकशमिक—स० क्रि० (कि०) घुटनों के बल रेंगना।
जोगांई—सं० (कि०) दामाद।
ज़ोगालामाह—स० क्रि० (कि०) जमा करना।
जोगास—अ० (कि०) मुताबिक।

**जोगिच़**— वि० (कि०) गरम।
**जोङ**— सं० (कि०) बढ़ई का लोहे को छेद करने वाला यंत्र।
**जोङफा**— सं० (कि०) लकड़ी का पात्र।
**जोङबाट**— सं० (कि०) कांसे का प्याला।
**जोखबाटिच**— सं० (कि०) कांसे की थालियां।
**जोङवरिथ**— सं० (कि०) प्याला।
**जोचिसङ**— सं० (कि०) गेहूं का आटा।
**जोत**— सं० (कि०) गेहूं।
**जोतमाह**— स० क्रि० (कि०) जतलाना।
**जोतेनुई**— वि० (कि०) बिल्कुल नया।
**जोतेयोह**— अ० (कि०) अभी-अभी।
**जोतै**— अ० (कि०) अभी।
**जोद**— सं० (कि०) गंदम।
**जोदै**— अ० (कि०) अभी, बिल्कुल।
**ज़ोनज़ोन**— वि० (कि०) लटका हुआ।
**जोनटङ**— वि० (कि०) दे० ज़ोनज़ोन।
**जोनडिबली**— अ० क्रि० (कि०) झूलना।
**जोनथी**— सं० (कि०) पानी का पात्र रखने का आसन।
**ज़ोनम**— सं० (कि०) जन्म।
**जोनमाह**— अ० क्रि० (कि०) सोना।
**ज़ोनमिक**— अ० क्रि० (कि०) खिंच जाना।
**जोनलाटङ**— सं० (कि०) रस्सी का झूला।
**जोप**— वि० (कि०) खूब, अधिक।
**जोपकेसमिक**— अ० क्रि० (कि०) उछलना, अनाप-शनाप बोलना।
**जोपबारङ**— सं० (कि०) भारी बोझ।
**जोफयोफ**— स० क्रि० (कि०) रहस्य उगलवाना।
**जोफयोफ**— सं० (कि०) परीक्षा।
**जोफो**— सं० (कि०) हल जोतने वाला बैल।
**जोफोवियंफ**— सं० (कि०) पशुओं की मक्खी।
**जोबबीमिक**— अ० क्रि० (कि०) नष्ट होना, समाप्त होना।
**जोबरोन**— अ० (कि०) जबरदस्ती ही।
**ज़ोबोरजोस**— अ० (कि०) जबरदस्ती ही।
**ज़ोम**— सं० (कि०) पानी ढोने के लिए लकड़ी का बना विशेष बर्तन।
**जोमचि**— सं० (कि०) पानी रखने का स्थान।
**जोमछो**— सं० (कि०) लकड़ी का पात्र।
**जोमथाग**— सं० (कि०) छोटा रस्सा।
**जोमथी**— सं० (कि०) पानी का पात्र रखने के लिए बना चबूतरा।
**जोमपूरिङ**— सं० (कि०) यमपुरी।
**जोमसा**— सं० (कि०) सम्मेलन।
**जोमिक**— अ० क्रि० (कि०) लस्सी, दही का खराब हो जाना।
**जोमीं**— सं० (कि०) दे० चुरु।
**जोमो**— सं० (कि०) भिक्षुणी।
**ज़ोमो**— सं० (कि०) याक और गाय के मिलाप से पैदा हुआ मादा पशु।
**ज़ोयुम्स**— अ० (कि०) सबसे पीछे।
**जोर**— वि० (कि०) भरपूर।
**जोरतमाह**— अ० क्रि० (कि०) पानी टपकना।
**जोरफोमी**— वि० (कि०) पराक्रमी।
**जोरब**— अ० (कि०) क्षणभर।
**जोरमङ**— सं० (कि०) जन्म।
**जोरमाह**— अ० क्रि० (कि०) धन प्राप्त होना।
**जोरमिक**— अ० क्रि० (कि०) प्राप्त होना।
**जोरवाचन**— वि० (कि०) धनी।
**जोरा**— सं० (ला०) दे० ज़ोंक।
**जोरिईबोदतमाह**— अ० क्रि० (कि०) चिंता ग्रस्त होना।
**जोरिहवनिङ**— सं० (कि०) छिद्र युक्त पात्र।
**ज़ोरी**— सं० (कि०) चिंता।
**ज़ोरीताङमिक**— अ० क्रि० (कि०) चिंता करना।
**जोरीमतोई**— सं० (कि०) असावधानी।
**ज़ोरेनमिक**— अ० क्रि०(कि०) ज़ंग लगने से बर्तन का छलनी होना।
**ज़ोलङ**— सं० (कि०) जोड़ी।
**ज़ोलङो**— सं० (कि०) जुड़वां बच्चे।
**जोलजोखुह**— सं० (कि०) शरीर में होने वाली खुजली।
**जोलठा**— वि० (कि०) फटा हुआ।
**ज़ोलडब**— वि० (कि०) मुश्किल।
**जोलथमाह**— अ० क्रि० (कि०) भटक जाना।
**ज़ोलया**— सं० (कि०) देवता के प्रतिरूप दो व्यक्ति।
**जौला**— सं० (कि०) थैला।
**जोलाहुं**— सं० (ला०) औरत।
**जोलेचौ**— सं० (कि०) जुड़वां लड़कियां।
**जोल्हङ**— वि० (ला०) सभी।
**ज़ोवालियां**— वि० (कि०) बातूनी।
**जोशकोरामात**— सं० (कि०) यश और करामात, चमत्कार।
**जोसण**— सं० (ला०) चंद्रमा।
**जोसुण**— सं० (ला०) दे० जोसण।
**जोसोंग**— स० क्रि० (कि०) उड़ेलना।
**ज़ौकाएं**— सं० (कि०) खुले हाथ में आई वस्तु।
**ज़ौख्या**— सं० (कि०) धर्म-भाई।
**ज़ौख्यापंग**— सं० (कि०) धर्म-भाई का परिवार।
**जौग**— सं० (कि०) यज्ञ, देवता का विशेष मेला।
**जौङ**— सं० (कि०) देवता के रथ का लकड़ी का ढांचा।
**ज़ौटा**— सं० (कि०) जटा; बकरी की ऊन।
**ज़ौटासिया**— वि० (कि०) जटाओं वाला।
**ज़ौप**— सं० (कि०) जाप।
**जौपलानमिक**— स० क्रि० (कि०) जाप करना।
**जौमिक**— अ० क्रि० (कि०) बोलना।
**ज़ौर**— सं० (कि०) ढेर।
**ज़ौराबरी**— अ० (कि०) जल्दी-जल्दी।
**जौगेब्रौरौ**— वि० (कि०) तेज़ (मिर्च आदि)।
**ज्ञछो**— सं० (कि०) सागर।
**ज्ञठरी**— सं० (कि०) लोहे का चूल्हा।
**ज्ञदुंग**— सं० (ला०) करनाल (वाद्य विशेष)।

झनां—सं० (कि०) चीन।
झल—सं० (कि०) गली।
झलपो—सं० (कि०) राजा।
झलमाह—क्रि० (कि०) जीतना।
झलमो—सं० (कि०) राजकुमारी।
झलवो—सं० (कि०) राजा।
झलिङ—सं० (कि०) शहनाई।
झवल—सं० (कि०) ऊन।
झाकर—सं० (कि०) भारत।
झाख्वी—सं० (कि०) छोटा कुत्ता।
झाछो—सं० (कि०) सागर।
झातोङ—सं० (कि०) बौद्धों का एक वाद्ययंत्र।
झामी—सं० (कि०) चीन निवासी।
झालमू—स० क्रि० (कि०) जीतना।
झाला—वि० (ला०) अच्छा।
झालिङ—सं० (कि०) वाद्ययंत्र।
झावोङ—सं० (कि०) गधा।
झीमी—सर्व० (ला०) मुझे।
झुमां—सं० (कि०) अंतड़ी।
झुमापुङमाह—स० क्रि० (कि०) अंतड़ी भरना।
झुरमाह—स० क्रि० (कि०) घुमाना।
झू.ची—सं० (कि०) पुत्री।
झू—सर्व० (ला०) मेरा।
झेमो—सं० (कि०) बौद्ध भिक्षु।
झेद—वि० (कि०) आठ।
झेल—सं० (कि०) राज।
झेलको—सं० (कि०) राजा।
झेलवो—सं० (कि०) राजा।
झेलोङ—सं० (कि०) बौद्ध भिक्षु।
झेलोङमा—सं० (कि०) भिक्षुणी।
झोङफो—वि० (कि०) निर्दय।
झोछा—सं० (कि०) सागर।
झोलोङ—सं० (कि०) ब्रह्मचारी।
ज़्वनमाह—अ० क्रि० (कि०) फूलना।
ज़्वरपटाख—वि० (कि०) ऊटपटांग।
ज्वरूप—अ० (कि०) एक दम से।
ज्वलाअ—सं० (कि०) लकड़ी का बर्तन।
ज्वा—सं० (कि०) दूध दूहने का लकड़ी का पात्र।
ज्वालो—सं० (कि०) काले व सफेद रंग का पशु।

## झ

झख—वि० (ला०) गंदा।
झखरङ—सं० (कि०) झाड़ियां।
झखां—वि० (ला०) खराब।
झखां—वि० (ला०) झगड़ालू।
झगडुड्बा—अ० क्रि० (ला०) झगड़ना।
झड़बा—अ० क्रि० (ला०) गिरना।
झा.स—सं० (कि०) पीड़ा, चोट।
झाड्बा—अ० क्रि० (ला०) गिरना।
झाकालि—वि० (ला०) गंदा, असुंदर।
झाझर—सं० (ला०) झांझर।
झाड़बा—स० (कि०, ला०) गिराना।
झेटोसोमचें—स० क्रि० (कि०) याद दिलाना।
झेधाचे—वि० (कि०) लज्जित।
झोणलयामिक—स० क्रि० (कि०) दो व्यक्तियों द्वारा किसी व्यक्ति को हाथ-पैर से पकड़कर हिलाया जाना, हिलाना।
झोणलाटी—सं० (कि०) रस्सी से झूला जाने वाला झूला।
झोलजीक—सं० (कि०) मेज़।

## ञ

ञङआ—वि० (कि०) दबा हुआ।
ञङलुख—सं० (कि०) चादर।
ञङाथुह—वि० (कि०) पूर्व समय का।
ञनचे—स० क्रि० (ला०) सुनना, मानना।
ञम—सं० (कि०) तिब्बती।
ञम्मपो—अ० (ला०) एक साथ।
ञयुलिच—सं० (कि०) नेवला।
ञरमो—वि० (ला०) मीठा।
ञरमोचा—वि० (ला०) मीठी (चाय)।
ञला—सं० (कि०) नरक।
ञलूमतङ—सं० (कि०) अर्ध निद्रावस्था।
ञसङ—सं० (कि०) लकड़ी।
ञहंफमाह—अ० क्रि० (कि०) लुप्त होना।
ञहम्माह—अ० क्रि० (कि०) समाप्त होना।
ञा—सं० (ला०) मछली।
ञाङ—सं० (कि०) मक्खी।
ञार—सं० (कि०) मटर की छोटी किस्म।
ञाल—सं० (कि०) आनंद।
ञालसुकङ—सं० (कि०) ऐश्वर्य।
ञिङपङ—सर्व० (कि०) हम लोग।
ञिद—सं० (कि०) नींद।
ञिश्यु—वि० (कि०) बीस।
ञुंफ—अ० (कि०) पीछे।
ञुगलङ—सं० (कि०) गरम क्षेत्र।
ञुगलङ—सं० (कि०) नेवला।
ञुङज़े—अ० (कि०) भाई-बहिन का संबोधन करने का शब्द।
ञुङमाह—स० क्रि० (कि०) निगलना।
ञुङमु—स० क्रि० (कि०) निगलना।
ञुङरीङ—सं० (कि०) भाई-बहिन।
ञुमलाय—सं० (कि०) दोपहर बाद।
ञुमाह—अ० (कि०) बाद में।
ञुरजुरतमाह—अ० क्रि० (कि०) बड़बड़ाना।

**ञूक**—वि० (कि०) नया।
**ञोङ·मिक**—अ० क्रि० (कि०) पूरा होना।
**ञोतोला**—सं० (ला०) आषाढ़ मास।
**ञोन**—सं० (कि०) मज़ूदरी।
**ञोनतङ·माह**—अ० क्रि० (कि०) नींद आना।
**ञोनमा**—वि० (ला०) पागल।
**ञोनमाह**—अ० क्रि० (कि०) सो जाना।
**ञोनसा**—वि० (कि०) निद्रालु।
**ञोनूबारस**—वि० (कि०) दे० ञोनसा।
**ञोमनाह**—वि० (कि०) उदास, उत्साह रहित।
**ञोमनाहपोसमाह**—अ० क्रि० (कि०) चिंतित रहना।
**ञोरा**—सं० (कि०) मांस का शोरबा।
**ञौटङ·**—सं० (कि०) जोड़ी।
**ञौत**—सं० (कि०) काम करवाने पर मज़दूरी के रूप में अन्न देने का भाव।
**ञौनतन**—सं० (कि०) शिक्षा।

## ट

**टंखमाह**—अ० क्रि० (कि०) चढ़ाई चढ़ना।
**टंगरोल**—सं० (ला०) जंगली बकरा।
**टअनमिक**—सं० (कि०) उत्तोलक।
**टअमिक**—स० क्रि० (कि०) उबलते हुए घी, तेल आदि से तले जा रहे पदार्थ को बाहर निकालना।
**टअलङ·**—सं० (कि०) कपड़े का टुकड़ा।
**टकटकङ·**—वि० (कि०) तरतीबवार।
**टकप-ना**—अ० (कि०) एक बराबर।
**टकरङ·**—सं० (कि०) पीठ।
**टकरतमाह**—अ० क्रि० (कि०) मुकाबला करना।
**टकु**—सं० (कि०) जौ की किस्म का एक अन्न।
**टकोई**—सं० (कि०) Spiraea canescens.
**टग**—सं० (कि०) जौ।
**टगमिक**—स० क्रि० (कि०) तोड़ना।
**टगमू**—स० क्रि० (कि०) दे० टगमिक।
**टङ·चे**—सं० (कि०) अन्न की छोटी बोरी।
**टङ·टङ·**—वि० (कि०) फूला हुआ।
**टङ·ना**—वि० (कि०) अनिश्चित।
**टङ·माह**—अ० क्रि० (कि०) चढ़ना।
**टङ·रङ·**—वि० (कि०) सूखा (वृक्ष)।
**टङ·लोंङ·**—सं० (कि०) चांडाल।
**टङुहनऊं**—सं० (कि०) चढ़ाई-चढ़ने का भाव।
**टङ्खमाह**—अ० क्रि० (कि०) चढ़ना।
**टतमाह**—स० क्रि० (कि०) उखाड़ना।
**टतमाह**—स० क्रि० (कि०) सौंपना।
**टद**—सं० (कि०) उधार।
**टदङनिक**—स० क्रि० (कि०) उधार लेना।
**टदरन्निक**—स० क्रि० (कि०) उधार देना।
**टनअटनअ**—वि० (कि०) भरा हुआ।
**टनपणयामिक**—स० क्रि० (कि०) रसोई बनाना।
**टनपणयामिक**—स० क्रि० (कि०) जल्दी निपटाना।
**टनेसमिक**—अ० क्रि० (कि०) कराहना।
**टप**—सं० (कि०) लगाम।
**टपतमाह**—स० क्रि० (कि०) सौंपना।
**टपतिमाह**—स० क्रि० (कि०) लगाम लगाना।
**टपरालिङ·**—अ० (कि०) झटके से।
**टपुतपुलमाह**—स० क्रि० (कि०) दीक्षा लेना।
**टबरंग**—सं० (कि०) छिद्र।
**टबर**—सं० (ला०) परिवार, टोली।
**टमलामाह**—स० क्रि० (कि०) बनाना।
**टमारु**—सं० (कि०) डमरू।
**टरटरङ·**—अ० (कि०) सीधा रास्ता दिखाने का सूचक शब्द।
**टरमाह**—स० क्रि० (कि०) फैलाना।
**टल्यामिग**—स० क्रि० (कि०) पैवंद लगाना।
**टांक**—सं० (कि०) वर्तनदार को जंगल से वृक्ष देने पर वन विभाग के कर्मचारी द्वारा वृक्ष पर लगाया निशान, चिह्न।
**टांकयामिक**—स० क्रि० (कि०) निशान लगाना।
**टांडू**—सं० (ला०) घास आदि इकट्ठा करने के लिए आगे से मुड़े लोहे के दांतों वाला उपकरण।
**टाःठखू**—सं० (कि०) नवजात शिशु को लपेटा जाने वाला कपड़ा।
**टा**—सं० (कि०) बाल।
**टाअ**—सं० (कि०) पत्थर की सीढ़ी।
**टाअर**—सं० (ला०) क्रोध, गुस्सा।
**टाउणा**—वि० (ला०) बहरा।
**टाकमिक**—स० क्रि० (कि०) भिगोना।
**टाकू**—सं० (कि०) Spiraea canescens.
**टाग**—सं० (कि०) जौ।
**टागचिसङ·**—सं० (कि०) जौ का आटा।
**टागमिक**—स० क्रि० (कि०) कुल्या के पानी को बंद करना।
**टाङ·**—सं० (कि०) चढ़ाई।
**टाङ·णा**—वि० खुला।
**टाङ·रियामिक**—स० क्रि० (कि०) उलझाना।
**टाङ·रियाशमिक**—अ० क्रि० (कि०) उलझना।
**टाङ·ला**—वि० (कि०) पतला (दूध आदि)।
**टाटूचुमिक**—स० क्रि० (कि०) गले से पकड़ना।
**टाणोरङ·**—सं० (कि०) चोट आदि लगने से माथे या सिर का उभरा भाग।
**टाथ**—सं० (कि०) सीढ़ी।
**टानङ·**—सं० (कि०) आभूषण।
**टाननिक**—स० क्रि० (कि०) उधेड़ना।
**टानारो**—वि० (कि०) तिरछी नज़र वाला।
**टापनिङ·**—सं० (कि०) पशुओं को दिया जाने वाला खली, नमक, चोकर आदि का मिश्रण।
**टापरुच**—सं० (कि०) ज़मीन का छोटा टुकड़ा।
**टापु**—सं० (कि०) पशुओं के कान में लगाया पहचान-चिह्न।

**टापो**—सं० (कि०) चारा।
**टाबुर**—सं० (ला०) परिवार के सदस्य।
**टाबू**—सं० (कि०) निशान लगाने का लोहा।
**टाबोर**—सं० (कि०) परिवार।
**टामाह**—स० क्रि० (कि०) खा जाना।
**टामिक**—स० क्रि० (कि०) खा जाना।
**टायमिक**—स० क्रि० (कि०) गाड़ना।
**टारकमिक**—अ० क्रि० (कि०) आंखों का न झपकना।
**टारेयामिक**—स० क्रि० (कि०) छौंकना।
**टारेयामू**—स० क्रि० (कि०) दे० टारेयामिक।
**टाल**—सं० (कि०) चावल।
**टालयामिक**—स० क्रि० (कि०) लगाना, जान से मारना।
**टालयामिक**—स० क्रि० (कि०) टालना।
**टाल्**—वि० (कि०) सख्त।
**टाशमाह**—स० क्रि० (कि०) रगड़ना।
**टाशी**—सं० (कि०) मंगल।
**टाश्यमाह**—अ० क्रि० (कि०) भिड़ना।
**टासयामिक**—स० क्रि० (कि०) सेंकना।
**टिऊ**—सं० (कि०) खच्चर।
**टिकनङ**—सं० (कि०) तिलक।
**टिकनाटङ**—सं० (कि०) माथा।
**टिकमिक**—स० क्रि० (कि०) मिलाना, जोड़ मिलाना।
**टिको**—सं० (कि०) मुद्रा।
**टिखङ**—सं० (कि०) माथे पर का सफेद निशान।
**टिखो**—सं० (कि०) माथे पर सफेद निशान वाला नर पशु।
**टिगमानो**—स० क्रि० (कि०) जुड़ाना।
**टिगलिक**—सं० (कि०) अंडा।
**टिगसाऊथी**—अ० क्रि० (कि०) जुड़ना।
**टिङज़त**—सं० (कि०) नंगा जौ ।
**टिङना**—वि० (कि०) थोड़ा।
**टिङनाचेअ**—अ० (कि०) थोड़ा सा।
**टिङनाह**—अ० (कि०) मामूली सा।
**टिङमो**—अ० (कि०) भाई द्वारा बहिन को पुकारने का संबोधन।
**टिच**—अ० (कि०) सही, ठीक।
**टिठ**—सं० (ला०) टिड्डा।
**टिनङ**—सं० (कि०) झरोखा।
**टिपटाजेमा**—अ० क्रि० (कि०) पानी में डूबना।
**टिपटास**—अ० क्रि० (कि०) पानी में जाना।
**टिपमाह**—स० क्रि० (कि०) चूसना।
**टिपमिक**—स० क्रि० (कि०) निचोड़ना।
**टिपरिल**—सं० (कि०) केतली।
**टिपलयामिक**—स० क्रि० (कि०) पेड़ों से फल की तोड़ाई करना।
**टिपलौखट्**—सं० (कि०) मेढक।
**टिपुहपिन्माह**—स० क्रि० (कि०) चूसना।
**टिपू**—सं० (कि०) छोटी बूंद।
**टिपू**—सं० (कि०) निशान।
**टिपोल**—सं० (कि०) फफोला।
**टिप्यामाह**—स० क्रि० (कि०) खींच कर लंबा करना।
**टिम**—सं० (कि०) पक्षी आदि को मारने के लिए बनाया गया चौड़े पत्थर का फंदा।
**टिममिक**—स० क्रि० (कि०) 'टिम' को गिराना।
**टिमशेनमिक**—स० क्रि० (कि०) 'टिम' फंदा लगाना।
**टिरिकतुङमिक**—स० क्रि० (कि०) एक सांस में पीना।
**टीईमाह**—स० क्रि० (कि०) उड़ेलना।
**टीऊ**—सं० (कि०) बंदर।
**टीकौ**—सं० (कि०) देवता को भेंट में दिया जाने वाला रुपया-पैसा।
**टीनङ**—सं० (कि०) रोशनदान।
**टीपश्यु**—अ० क्रि० (कि०) सरकना।
**टीपू**—सं० (कि०) निशाना।
**टीमिक**—स० क्रि० (कि०) लोटे से पानी निकालना।
**टीर**—सं० (ला०) आंख।
**टीरङ**—सं० (कि०) धार।
**टुंबु**—सं० (कि०) हुंडी।
**टुउ**—वि० (कि०) छः।
**टुउमिक**—स० क्रि० (कि०) निचोड़ना।
**टुक**—अ० क्रि० (कि०) है।
**टुक**—वि० (कि०) छः।
**टुकचा**—स० क्रि० (कि०) झाड़ना।
**टुकचो**—सं० (कि०) छाती।
**टुकनिज़**—वि० (कि०) छः बीस अर्थात् एक सौ बीस।
**टुकप्राचय**—वि० (कि०) छः उंगलियों वाला।
**टुकरा**—वि० (कि०) छः सौ।
**टुके**—सं० (कि०) किसी मनुष्य के कान के साथ मांस का एक छोटा सा जुड़ा अलग अंग।
**टुक्या**—वि० (कि०) छः अंगुलियों वाला।
**टुखरा**—सं० (कि०) खंड, टुकड़ा।
**टुखरालमाह**—स० क्रि० (कि०) खंड करना।
**टुग**—सं० (कि०) छाती।
**टुङमा**—सं० (कि०) माला, तावीज़।
**टुङमाह**—स० क्रि० (कि०) रोपना।
**टुङमिक**—स० क्रि० (कि०) रोपना, खंभे आदि गाड़ना।
**टुङा**—सं० (कि०) तावीज़।
**टुनङ**—सं० (कि०) होंठ।
**टुनी**—सं० (कि०) लड़की, बच्ची।
**टुनू**—सं० (कि०) बच्चा।
**टुपमाह**—स० क्रि० (कि०) फेंटना।
**टुपमिक**—स० क्रि० (कि०) चूसना।
**टुबमिक**—स० क्रि० (कि०) फेंटना, नमकीन चाय को अखरोट की गिरी और मक्खन के साथ फेंटना।
**टुम**—वि० (कि०) मितव्ययी।
**टुयामिक**—स० क्रि० (कि०) बनाना।
**टुलकु**—वि० (कि०) अवतारी।
**टुलटुलयामिक**—अ० क्रि० (कि०) आंखों में आंसू आना।

**टुलटुलामाह**— स० क्रि० (कि०) आंसू बहाना।
**टुलन्निक**— अ० क्रि० (कि०) रिसना।
**टुलबा**— वि० (कि०) अवतारी, सर्वशक्तिमान्।
**टुलमा**— स० क्रि० (कि०) मथना।
**टुलसाह**— स० क्रि० (कि०) परोसना।
**टुलमिक**— स० क्रि० (कि०) फेंटना।
**टुसटुस**— सं० (कि०) Viburnum Cotinifolium.
**टूउमिक**— अ० क्रि० (कि०) सूजना।
**टूङ**— सं० (कि०) खंभा।
**टूर**— सं० (ला०) चावल।
**टेकयामिक**— अ० क्रि० (कि०) ठहरना, टिकना।
**टेकिमा**— सं० (कि०) सिर में लगाने का फूल।
**टेकुच**— सं० (कि०) 'दोहड़ू' की विशेष बुनावट।
**टेटरा**— सं० (कि०) सूख कर सख्त होने का भाव।
**टेबदकचमिक**— अ० क्रि० (कि०) काम का रुक जाना।
**टेमचेमिक**— अ० क्रि० (कि०) दबना।
**टेमाह**— स० क्रि० (कि०) निकालना।
**टेमिक**— स० क्रि० (कि०) किसी भारी वस्तु को उत्तोलक द्वारा उठाना। उकसाना।
**टेसुहपिन्माह**— स० क्रि० (कि०) दबा देना।
**टेसुहसतमाह**— स० क्रि० (कि०) कुचल कर मार डालना।
**टेम्माह**— स० क्रि० (कि०) दबाना।
**टेम्मिक**— स० क्रि० (कि०) दबाना।
**टेरयामिक**— स० क्रि० (कि०) सेंक लगाना।
**टेरयाशमिक**— स० क्रि० (कि०) सेंकना।
**टेरेकङ**— वि० (कि०) स्थिर।
**टेशी**— सं० (ला०) दर्द।
**टोंटों**— सं० (ला०) गला।
**टोंटो**— सं० (कि०) डिब्बा।
**टोंडो**— वि० (कि०) गुस्सेवाज़।
**टो:कटा**— सं० (कि०) कुल्हाड़ी के प्रहार की आवाज़।
**टो:क-टोअकपिया**— सं० (कि०) कठफोड़ा।
**टो:न**— सं० (कि०) देवदार आदि वृक्षों के पत्ते।
**टो:नपश**— सं० (कि०) पशुओं के नीचे बिछाये जाने वाले देवदार आदि वृक्षों के पत्ते।
**टो:मिक**— स० क्रि० (कि०) गरम करना। वस्त्र उतारना।
**टोअमाह**— स० क्रि० (कि०) गरम करना।
**टोकणा**— सं० (कि०) मांस का टुकड़ा।
**टोकशमुं**— सं० (कि०) कुत्ते, बिल्ली, मुर्गियों और पक्षियों आदि के लड़ने की क्रिया।
**टोके**— सं० (कि०) रुपया।
**टोकोयङ-सा**— वि० (कि०) क्रोधी।
**टोखटोख**— वि० (कि०) घमंडी।
**टोखमाह**— स० क्रि० (कि०) छेड़ना।
**टोखयामिक**— स० क्रि० (कि०) ऊंची आवाज़ देना।
**टोखी**— सं० (कि०) कुल्हाड़ी।
**टोखीईखेमाह**— स० क्रि० (कि०) ठगना।
**टोगटोगप्या**— सं० (कि०) कठफोड़ा।
**टोगोद**— सं० (कि०) सिटकिनी।
**टोङके**— सं० (कि०) कुहनी।
**टोङटोङटेपङ**— सं० (कि०) लामा की टोपी विशेष।
**टोङटोङख**— सं० (कि०) लंबी या ऊंची वस्तु।
**टोङमाह**— स० क्रि० (कि०) भेजना।
**टोङयङ**— सं० (कि०) वाद्ययंत्र।
**टोङरयामिक**— अ० क्रि० (कि०) झगड़ना, लड़ना।
**टोचकङ**— वि० (कि०) उभरा हुआ।
**टोचरालिङ**— अ० (कि०) अचानक।
**टोटरा**— वि० (कि०) कमज़ोर, दुर्बल।
**टोटालनमिक**— स० क्रि० (कि०) आरे से लकड़ी के टुकड़े करना।
**टोणोमोणो**— वि० (कि०) खस्ता हाल, बुरे हाल।
**टोद**— सं० (कि०) रोग।
**टोन**— सं० (कि०) देवदार आदि के पत्ते।
**टोनज़पमाह**— स० क्रि० (कि०) चीड़, देवदार आदि के पत्ते इकट्ठा करना।
**टोनयामिक**— स० क्रि० (कि०) ज़ोर से आवाज़ लगाना।
**टोनोङ**— सं० (कि०) टीन का डिब्बा।
**टोप**— अ० (कि०) ठीक।
**टोपकमचित**— सं० (कि०) सच्ची बात।
**टोपचेचे**— वि० (कि०) मंद।
**टोपयामिक**— स० क्रि० (कि०) पार करना।
**टोपरयाशमिक**— स० क्रि० (कि०) द्वेष भाव से किसी की चर्चा करना।
**टोपरु**— सं० (कि०) कला, बुनाई, मीनाकारी, कशीदाकारी।
**टोपैन्निक**— अ० क्रि० (कि०) पार निकलना।
**टोमरामाह**— स० क्रि० (कि०) डराना।
**टोमुक्च**— सं० (कि०) पट्टू को ओढ़ने के बाद दोनों पल्लों को टिकाने के लिए प्रयोग किया जाने वाला चांदी का गहना विशेष।
**टोमूक्म**— सं० (कि०) दे० टोमुक्च।
**टोरकटे**— वि० (कि०) सिकुड़ा हुआ।
**टोरकी**— वि० (कि०) पतला।
**टोरमाह**— अ० क्रि० (कि०) सिकुड़ना।
**टोरिहफतिङ**— सं० (कि०) सख्त मिट्टी।
**टोरो**— सं० (कि०) चांदी के कड़े।
**टोलङ**— सं० (कि०) खंड, टोली।
**टोलङमाह**— अ० क्रि० (कि०) नाराज़ होना।
**टोलन्निक**— अ० क्रि० (कि०) टल जाना।
**टोलामाह**— स० क्रि० (कि०) झोंकना।
**टौ:न**— सं० (कि०) बड़े पत्थर को उठाने के लिए प्रयुक्त छोटा पत्थर।
**टौकशमिक**— अ० क्रि० (कि०) कुत्ते-बिल्ली का लड़ाई करना।
**टौखयामिक**— स० क्रि० (कि०) काटना।
**टौछुसिया**— वि० (कि०) प्रायः बीमार रहने वाला।
**टौद**— सं० (कि०) बीमारी, रोग।

टौप—अ० (कि०) ठीक।
टौप टौपङ—अ० (कि०) जल्दी-जल्दी।
टौफी—सं० (कि०) टोपी।
टौर—सं० (कि०) शरीर पर भोजन के अटके दाने।
टौरमिक—अ० क्रि० (कि०) सूखना। मर जाना।
टूताउबा—सं० (ला०) खिड़की।
ट्रेदमो—सं० (ला०) भालू।
ट्रेम्की—अ० (ला०) चुपचाप।
ट्रोअपो—सं० (ला०) नाले का पानी।
ट्रोगुर—सं० (ला०) एक विशेष खाद्य पदार्थ।
ट्रोदपा—सं० (ला०) पेट।
ट्वामाह—स० क्रि० (कि०) डंक मारना; नाखून से खरोंचना।
ट्वामिक—स० क्रि० (कि०) फाड़ना।
ट्वाशमिक—अ० क्रि० (कि०) आपस में लड़ाई झगड़ा करना।

## ठ

ठंऊ—सं० (कि०) विशेष प्रकार की चायदानी।
ठंग—सं० (कि०) चट्टान।
ठंटीई—सं० (कि०) पनघट।
ठंडी—सं० (कि०) आसन।
ठंडीई—सं० (कि०) चबूतरा।
ठःडमिक—स० क्रि० (कि०) आगे चलने वाले व्यक्ति को हाथ से छेड़ना।
ठ—अ० (कि०) क्या।
ठऊ—सं० (कि०) केतली।
ठक—सं० (कि०) खून।
ठकचक—सं० (कि०) चट्टान।
ठकरी—वि० (कि०) क्रोधी।
ठकलयामिक—स० क्रि० (कि०) कंधे से धक्का मारना।
ठकायामिक—स० क्रि० (कि०) झूठ बोलना, ठगाना।
ठक्कन—वि० (ला०) सख्त।
ठखठुग—सं० (कि०) गड़बड़।
ठगठुख—सं० (कि०) अनबन।
ठगलुङ—सं० (कि०) रुधिर रोग।
ठगाइबा—स० क्रि० (ला०) ठगना।
ठङ—सं० (कि०) इनाम, पुरस्कार।
ठङठङयामिक—स० क्रि० (कि०) तंग करना।
ठङनफो—सं० (कि०) वेतन लाभ।
ठङपो—वि० (कि०) सीधा।
ठङमिक—स० क्रि० (कि०) तरतीब देना।
ठङरा—सं० (कि०) फूल।
ठङौ—सं० (कि०) पहने हुए 'दोहड़ू' की पीठ के पीछे की तहें।
ठ्चहचीमिक—अ० क्रि० (कि०) कमज़ोर होना।
ठ्चीमाच—अ० (कि०) कुछ भी नहीं।
ठेटङ—सं० (कि०) पहाड़ों में भेड़ें रखने का स्थान, चरागाह में बनाई कुटिया।
ठठे—सं० (कि०) मखौल।
ठठेसा—वि० (कि०) मसखरा।
ठद—अ० (कि०) क्या।
ठनतुहजेमाह—अ० क्रि० (कि०) ठंड से जम जाना।
ठनी—सं० (कि०) जुकाम।
ठपङ—सं० (कि०) दाग।
ठपठप्माह—स० क्रि० (कि०) झाड़ना, फटकारना।
ठपठपमाह—स० क्रि० (कि०) पिटाई करना।
ठफङ—सं० (कि०) टोपी।
ठम्माह—अ० क्रि० (कि०) समा जाना।
ठरच—सं० (कि०) दो साल का बच्चा।
ठल—सं० (कि०) कर, चुंगी।
ठल—सं० (कि०) बंजर जगह, पथरीली जगह।
ठलउन्निक—स० क्रि० (कि०) चुंगी लेना।
ठलचा—अ० क्रि० (कि०) बिछुड़ना।
ठलठलयामिक—स० क्रि० (कि०) तंग करना।
ठलमूल—सं० (कि०) जगह।
ठलरन्निक—स० क्रि० (कि०) चुंगी देना।
ठलस—वि० (कि०) पुराना।
ठवङ—सं० (कि०) कदम।
ठांकाचूमिक—स० क्रि० (कि०) छाती से पकड़ना।
ठाः—सं० (कि०) अंगूठी की चमक।
ठा—सं० (कि०) नग।
ठाऊ—सं० (कि०) केतली।
ठाकठीक—वि० (कि०) टुकड़े-टुकड़े; बरबाद।
ठाङ—सं० (कि०) काम के बदले दिया गया अन्न।
ठाटङ—सं० (कि०) भेड़-बकरी आदि रखने का स्थान।
ठाटयामिक—स० क्रि० (कि०) संवारना।
ठाटयाशमिक—स० क्रि० (कि०) अपने आप को संवारना।
ठाटू—सं० (कि०) इंतज़ाम।
ठाटे—सं० (कि०) मज़ाक।
ठाटेलानमिक—स० क्रि० (कि०) मज़ाक करना।
ठाटोलथ—सं० (कि०) झाड़ू।
ठाडु—सं० (कि०) नौकर।
ठाथेलमाह—स० क्रि० (कि०) मज़ाक करना।
ठानङ—सं० (कि०) बर्फ की शिला, जमा हुआ पानी।
ठानटी—सं० (कि०) बैठने के लिए बनाई गई पैड़ी।
ठानयामिक—स० क्रि० (कि०) निश्चय करना ।
ठाब—सं० (कि०) फेफड़ा।
ठाम—सं० (कि०) निशान।
ठामटामाह—स० क्रि० (कि०) फाड़ कर निशान करना।
ठामा—अ० (कि०) बराबर।
ठामाह—स० क्रि० (कि०) तोड़ना।
ठामो—वि० (कि०) पतला।
ठार—सं० (ला०) स्थान।
ठालपलयामिक—स० क्रि० (कि०) इधर-उधर करना, हतोत्साहित करना।

**ठाललमाह**— स० क्रि० (कि०) नाम मात्र करना।
**ठालस**— वि० (कि०) पुराना (कपड़ा आदि)।
**ठालामाह**— स० क्रि० (कि०) मुरम्मत करना।
**ठिंफ**— सं० (कि०) अनुशासन।
**ठिङ्खमाह**— अ० क्रि० (कि०) जमना।
**ठिङ्खमाह**— अ० क्रि० (कि०) कतार में लगना।
**ठिङठिङ**— सं० (कि०) सिक्कों के खनकने की ध्वनि।
**ठिङठिङ**— सं० (कि०) कठोरता।
**ठिङमा**— सं० (कि०) व्यवस्था।
**ठिङमाह**— स० क्रि० (कि०) निश्चय करना।
**ठिङमेन**— सं० (कि०) नियोजित।
**ठिम्माह**— अ० क्रि० (कि०) पानी का जज़्ब होना।
**ठिम्माह**— स० क्रि० (कि०) चूसना।
**ठियोमतोई**— वि० (कि०) अयोग्य।
**ठियोसा**— वि० (कि०) काबिल।
**ठिलतमाह**— अ० क्रि० (कि०) ढीला होना।
**ठिसमिक**— स० क्रि० (कि०) चोट करना।
**ठीं**— वि० (कि०) दस हज़ार।
**ठी**— सं० (कि०) आसन।
**ठीऊयोरिङरेफमाह**— स० क्रि० (कि०) आसन पर बिठाना।
**ठीकाचऊपिन्माह**— स० क्रि० (कि०) धोखा देना।
**ठीम**— सं० (कि०) कानून।
**ठीशो**— सं० (कि०) गलीचा।
**ठु**— अ० (कि०) क्यों।
**ठुकुलमिक**— स० क्रि० (कि०) धक्का देना।
**ठुगपि**— सं० (ला०) शिकायत।
**ठुङ**— सं० (कि०) ठुंठ।
**ठुङसा**— सं० (कि०) जन्मभूमि।
**ठुङार**— सं० (कि०) शराब के साथ लिया जाने वाला खाद्य।
**ठुडु**— सं० (ला०) टांग।
**ठुनलु**— वि० (कि०) कटे हुए अंग वाला।
**ठुम**— सं० (कि०) एक जंगली पेड़।
**ठुमचो**— सं० (कि०) कांटेदार झाड़ी विशेष।
**ठुरलमाह**— अ० क्रि० (कि०) दौड़ना।
**ठुरमिह**— स० क्रि० (कि०) घुमाना।
**ठुरामिक**— स० क्रि० (कि०) घुमाना।
**ठुराश्यमाह**— स० क्रि० (कि०) बातचीत करना।
**ठुरेन्निक**— अ० क्रि० (कि०) दौड़ना।
**ठुल**— सं० (कि०) चमत्कार। वि० अवतारी।
**ठुलचन**— वि० (कि०) लंबा।
**ठुलठुलयामिक**— स० क्रि० (कि०) इधर-उधर धक्का देना।
**ठुलठुलामाह**— स० क्रि० (कि०) हिलाना।
**ठुलमाह**— स० क्रि० (कि०) हिलाना।
**ठुललमाह**— स० क्रि० (कि०) माला फेरना।
**ठुलसा**— वि० (कि०) चमत्कारी।
**ठुसामाह**— स० क्रि० (कि०) ठूंसना।
**ठेङवा**— सं० (कि०) माला।
**ठेननू**— सं० (कि०) तकली।
**ठेनलू**— सं० (कि०) अटेरन।
**ठेपङ**— सं० (कि०) टोपी।
**ठेरयामिक**— स० क्रि० (कि०) धागों में बाट लगाना।
**ठेलगङ**— सं० (कि०) दहलीज़।
**ठेसामाह**— स० क्रि० (कि०) ठूंसना।
**ठैलू**— सं० (कि०) बहुत ऊंचाई पर उगने वाली जड़ी जिसके पत्ते हवन इत्यादि में धूप के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।
**ठो**— सं० (कि०) चिंगारी, अंगारा, कोयला।
**ठोक**— वि० (कि०) सफेद।
**ठोकङ**— सं० (कि०) व्यंग्य, ताना।
**ठोकटोक्यामाह**— स० क्रि० (कि०) थपथपाना।
**ठोकटोक्यामिक**— स० क्रि० (कि०) थपथपाना।
**ठोकठोमाह**— स० क्रि० (कि०) ठोंकना, मारना।
**ठोकायामाह**— स० क्रि० (कि०) धोखा देना।
**ठोकीनाम**— सं० (कि०) समस्त।
**ठोकुमी**— वि० (कि०) ठग।
**ठोक्कनकरबा**— स० क्रि० (कि०) इकट्ठा करना।
**ठोक्यामाह**— स० क्रि० (कि०) ग्रहण करना।
**ठोग**— वि० (कि०) पापी, ठग।
**ठोगौल**— सं० (कि०) एड़ी।
**ठोङमिक**— स० क्रि० (कि०) झाड़ना।
**ठोङ्खमाह**— अ० क्रि० (कि०) ठोकर खाना।
**ठोङ्गोलच**— सं० (कि०) एड़ी।
**ठोङ्रामाह**— स० क्रि० (कि०) घराट के पत्थर को खुरदरा करना।
**ठोटी**— सं० (कि०) चिलम।
**ठोठी**— सं० (कि०) तंबाकू का पात्र।
**ठोनङ**— सं० (कि०) फुरसत।
**ठोपठोपमाह**— स० क्रि० (कि०) कुरेदना।
**ठोपठोपयामिक**— स० क्रि० (कि०) छेद करना।
**ठोपोन**— सं० (कि०) टीका लगाने वाला।
**ठोप्यामाह**— स० क्रि० (कि०) टीका लगाना। पक्षियों का फल-फूल को चोंच मारना।
**ठोममिक**— अ० क्रि० (कि०) टीन आदि में गड्ढा पड़ना।
**ठोरङ**— सं० (कि०) दाने लुढ़कने का भाव।
**ठोरङबीमिक**— अ० क्रि० (कि०) लुढ़कना।
**ठोरमिक**— स० क्रि० (कि०) खोलना।
**ठोरु**— सं० (कि०) हथौड़ा।
**ठोलूठोलमा**— स० क्रि० (कि०) ढकेलना।
**ठोलो**— वि० (कि०) टोपी रहित।
**ठोलो**— वि० (कि०) बिना सींग का (पशु)। गंजा।
**ठोशकम**— सं० (कि०) सफेद मिट्टी, चूना।
**ठौलठङ**— सं० (कि०) बड़ा पत्थर।
**ठुलथन**— सं० (ला०) फर्श पर बैठने के लिए बनायी गई गद्दी।

## डं

**डंगमों**— वि० (कि०) ठंडा।
**डंफाल**— सं० (कि०) डफ।
**डकपो**— सं० (कि०) यश।
**डकलेन्निक**— अ० क्रि० (कि०) डगमगाना।
**डकलेयामिक**— अ० क्रि० (कि०) हिलना।
**डकशुन**— सं० (कि०) शिलाजीत।
**डकारङ**— सं० (कि०) डकार।
**डकालू**— वि० (ला०) लालची।
**डकिबा**— अ० क्रि० (ला०) कांपना।
**डखमाह**— स० क्रि० (कि०) इकट्ठा करना।
**डखरू**— सं० (कि०) एक वाद्ययंत्र।
**डखरेन**— स्त्री० (कि०, कु०) भादों मास का एक त्योहार।
**डगपा**— वि० (कि०) प्रसिद्ध।
**डगपी**— सं० (कि०) सत्य।
**डगयोमिपेतकन**— वि० (कि०) बेईमान।
**डङ**— सं० (कि०) बर्फ।
**डङ**— सं० (कि०) शहद।
**डङ्के**— सं० (कि०) गाली देने का भाव।
**डङराई**— सं० (कि०) चोट लगने का भाव।
**डङा**— सं० (कि०) मूत्ररोग।
**डज़यामिक**— स० क्रि० (कि०) भूनना।
**डटुथ**— सं० (कि०) सिर पर बांधा जाने वाला कपड़ा।
**डडोर**— वि० (ला०) खोखला।
**डनक**— वि० (कि०) मज़बूत, पक्का।
**डन्बामतोई**— वि० (कि०) विवेकहीन।
**डपखेरमाह**— स० क्रि० (कि०) छीना-झपटी करना।
**डपमाह**— स० क्रि० (कि०) खींचना।
**डबमिक**— स० क्रि० (कि०) खींचना।
**डबरङ**— सं० (कि०) बड़ा छेद।
**डबरङ**— सं० (कि०) बड़े-बड़े पत्थरों का ढेर।
**डबरयामिक**— अ० क्रि० (कि०) आना।
**डबरामाह**— स० क्रि० (कि०) दफन करना।
**डबिबा**— अ० क्रि० (ला०) डूबना।
**डबू**— सं० (ला०) कपड़े।
**डबोखेरो**— स० क्रि० (कि०) घसीटना।
**डम**— सं० (कि०) घास एकत्र करने के लिए बना स्थान।
**डमचङ**— वि० (कि०) एक वर्ष से ऊपर की आयु का।
**डमस**— सं० (कि०) बैल।
**डयाणा**— स० क्रि० (कि०) अड़ाना। काम में लगाना।
**डरबा**— अ० क्रि० (ला०) डरना।
**डराला**— वि० (ला०) खतरनाक।
**डरूबा**— अ० क्रि० (ला०) डरना।
**डलमाह**— सं० (ला०) पौष मास।
**डलयामिक**— स० क्रि० (कि०) बेकार में इधर-उधर घुमाते रहना।
**डलिये**— वि० (कि०) बेकार में घूमने वाला।
**डलुखेमाह**— स० क्रि० (कि०) जबरदस्ती देना।
**डलुपिन्माह**— स० क्रि० (कि०) खदेड़ देना।
**डलूआ**— वि० (कि०) बेकार में घूमने वाली।
**डलेन्निक**— अ० क्रि० (कि०) बेकार घूमना।
**डसऊखेमाह**— स० क्रि० (कि०) जबरदस्ती देना।
**डांस**— सं० (कि०) एक काटने वाली मक्खी।
**डाई**— सं० (ला०) टहनी, शाखा।
**डाईनिज़ा**— वि० (कि०) पचास।
**डाओ**— सं० (कि०) एक अन्न विशेष।
**डाक**— सं० (ला०) बाढ़।
**डाकणा**— सं० (कि०) ढक्कन।
**डाङलमाह**— अ० क्रि० (कि०) जोड़ों में दर्द होना।
**डाङा**— सं० (कि०) मूत्र रोग।
**डाडोरा**— वि० (ला०) खोखला।
**डाढ़ी**— सं० (ला०) दाढ़।
**डानङ**— सं० (कि०) दंड, जुर्माना, कर्ज़ा।
**डानङरन्निक**— स० क्रि० (कि०) जुर्माना देना, सजा देना।
**डानयामिक**— स० क्रि० (कि०) दंड देना, सजा देना।
**डानी**— सं० (कि०) टीला।
**डानो**— सं० (कि०) दीवार।
**डान्निक**— अ० क्रि० (कि०) फूलना।
**डाब**— सं० (ला०) म्यान।
**डाबमीगे**— सं० (कि०) कान के ऊपर बालों में फंसाने का चांदी का आभूषण।
**डाबु**— सं० (ला०) कपड़े, वस्त्र।
**डाबोआ**— सं० (ला०) पैसा।
**डामयामिक**— स० क्रि० (कि०) गर्म लोहे से उपचार करना।
**डाय**— सं० (कि०) डाइन।
**डायबुतुख**— सं० (कि०) मकड़ी।
**डाये**— सं० (कि०) मकड़ी।
**डायेऊबा**— सं० (कि०) मकड़ी का जाल।
**डारमिक**— स० क्रि० (कि०) फुसलाना।
**डाल**— सं० (कि०) हल।
**डालङ**— सं० (कि०) टहनी। पौधा। शरीर रचना।
**डालमूल**— सं० (कि०) झाड़ियां।
**डालिस**— वि० (कि०) गरीब।
**डावा**— सं० (कि०) भिक्षु।
**डिईऊ**— स० क्रि० (कि०) तानना।
**डिईरो**— वि० (कि०) पर्याप्त।
**डिकच**— सं० (कि०) पतीली।
**डिखमऊ**— सं० (कि०) संधि।
**डिखमा**— स० क्रि० (कि०) जोड़ना।
**डिग**— सं० (कि०) पतीला।
**डिगचया**— सं० (कि०) विचारों का तालमेल।
**डिगफो**— वि० (कि०) सबसे बढ़िया।
**डिगमिक**— अ० क्रि० (कि०) तालमेल होना।

डिच—अ० (कि०) ठसाठस।
डिचबड·मिक—स० क्रि० (कि०) ठसाठस भरना।
डिब—सं० (कि०) प्रगति रोध।
डिबमिक—अ० क्रि० (कि०) खिसकना।
डिम्मिक—अ० क्रि० (कि०) धंसना।
डिलतमाह—अ० क्रि० (कि०) क्षीण होना।
डिलधु—सं० (कि०) डमरू।
डिलमाह—स० क्रि० (कि०) जोड़ना।
डिलस—वि० (कि०) ढीला।
डिलसमिक—अ० क्रि० (कि०) ढीला होना।
डिलू—सं० (कि०) घंटी, पूजा की घंटी।
डिवलामाह—स० क्रि० (कि०) द्रव्य मिलाना।
डिवालयामिक—स० क्रि० (कि०) गर्म और ठंडा पानी मिलाना।
डिवेशे—वि० (कि०) चालीस।
डिशरान—सं० (कि०) कर्तव्य।
डीऊ—सं० (कि०) केतली।
डीकर्चे—सं० (कि०) संपर्क।
डीग—सं० (कि०) बड़ा पात्र।
डीगरा—सं० (कि०) छाती पर 'दोहडू' के पल्लों को टिकाने के लिए लगाया जाने वाला आभूषण।
डीचे—स० क्रि० (कि०) पूछना।
डीचे—स० क्रि० (कि०) लिखना।
डीसी—सं० (कि०) चाची।
डीम्तु—वि० (कि०) तीव्र।
डीलड·—सं० (कि०) मादा पशु को प्रजनन हेतु किसी से लाने तथा बच्चा होने पर उसे लौटाने का भाव।
डीवा—सं० (कि०) पाप।
डुंज़ा—सं० (कि०) ठुंठ।
डु—सं० (कि०) अनाज।
डुआदुखमाह—स० क्रि० (कि०) मज़ाक करना।
डुक—सं० (कि०) बादल।
डुकडुकयामिक—अ० क्रि० (कि०) धड़कना।
डुकथक—सं० (कि०) शत्रुता।
डुखडलम्नु—स० क्रि० (कि०) महसूस करना।
डुगचु—वि० (कि०) साठ।
डुगडुग—वि० (ला०) सख्त।
डुगती—सं० (कि०) अखरोट आदि की चटनी।
डुगेस—वि० (कि०) अथाह गहरा।
डुङ—सं० (कि०) शंख।
डुडु—सं० (कि०) उल्लू; उल्लू की ध्वनि।
डुपमाह—स० क्रि० (कि०) ग्रहण करना। सिद्ध करना।
डुबजीई—वि० (कि०) गहरा।
डुबथोप—सं० (कि०) सिद्ध पुरुष।
डुबबा—अ० क्रि० (ला०) डूबना।
डुबयामिक—स० क्रि० (कि०) डुबाना।
डुबेम्निक—अ० क्रि० (कि०) डूबना।
डुमशु—सं० (ला०) घूंसा।
डुल—सं० (कि०) चांदी।
डुलकी—सं० (कि०) मिट्टी का छोटा पात्र।
डुलखड·—सं० (कि०) सुरा रखने का मिट्टी का पात्र।
डुलवा—सं० (कि०) यात्री।
डुलशे—अ० क्रि० (कि०) चलना।
डुवादुखमाह—स० क्रि० (कि०) छेड़ना।
डुशिड·—सं० (ला०) दियासलाई।
डुसती—सं० (कि०) पसीना।
डें—सं० (कि०) चावल।
डेकार—सं० (ला०) डकार।
डेखराच—सं० (कि०) लड़का।
डेखरीच—सं० (कि०) लड़की।
डेगड·—सं० (कि०) शरीर।
डेगडेलमाह—स० क्रि० (कि०) उत्तेजित करना।
डेगा—वि० (कि०) धूर्त।
डेड·ा—सं० (कि०) डंडा; लकड़ी के टुकड़े।
डेड·ाच—सं० (कि०) तिनका।
डेड़—सं० (ला०) बाढ़।
डेन—वि० (कि०) खड़ा।
डेयड·—सं० (कि०) देह।
डेयड·छपू—सं० (कि०) शरीर के बाल।
डेरमिक—अ० क्रि० (कि०) ठंड से अकड़ना।
डेरीतिखमाह—स० क्रि० (कि०) ढेर लगाना।
डेरेकड·—वि० (कि०) निश्चल।
डेल—सं० (ला०) बाड़ा।
डेलगड·—सं० (कि०) कमरे के दरवाज़े का निचला भाग।
डेलड·—सं० (कि०) दहलीज़।
डेलड·फोख—वि० (कि०) बायां।
डेलाट—सं० (कि०) दरवाज़े का वह भाग जो कमरे और बरामदे के बीच होता है, दहलीज।
डेली—सं० (कि०) पचीस पैसे का सिक्का।
डेलुड·—सं० (कि०) ढेला।
डेशिकरबा—अ० क्रि० (ला०) सोना।
डेशिकराइबा—स० क्रि० (ला०) सुलाना।
डैखरस—सं० (कि०) पुरुष।
डैखौर—सं० (कि०) स्त्री।
डोंक—सं० (कि०) झोंपड़ी।
डोंखड·—सं० (कि०) दे० ढांक।
डो—सं० (कि०) गेहूं।
डोअगुजु—सं० (कि०) छेड़छाड़। दिन बरबाद करने का भाव।
डोअहनमाह—अ० क्रि० (कि०) घोड़े का श्रेष्ठ चाल से चलना।
डोआ—सं० (कि०) स्वाद।
डोआमलोई—वि० (कि०) स्वाद रहित।
डोआरिदुख—सं० (कि०) जीव-जंतु।
डोआसा—सं० (कि०) स्वादिष्ट।
डोईड·—सं० (कि०) छिद्र।
डोकड·—सं० (कि०) पहाड़।

डोकपो— सं० (कि०) नाला।
डोकपो— सं० (कि०) मित्र।
डोखमाह— अ० क्रि० (कि०) भय से मांगना।
डोखरी— सं० (कि०) 'फाफरे' के आटे से तैयार की गई रोटी।
डोखुहनऊं— सं० (कि०) खेत में बना मचान।
डोगङ— सं० (कि०) लकड़ी की कलछी।
डोगङ·हौङ— सं० (कि०) मछली प्रजाति का एक जीव।
डोगमो— सं० (कि०) सखी।
डोग्ला— सं० (ला०) कड़ाही।
डोङ·डोङ— वि० (कि०) ऊंचा।
डोङ·र— सं० (कि०) पहाड़ी कमल।
डोङ·लामाह— स० क्रि० (कि०) खदेड़ना।
डोडुब— सं० (कि०) वरदान।
डोपोडोपो— वि० (कि०) फूला हुआ।
डोबरा— सं० (कि०) लकड़ी की परात।
डोबा— सं० (ला०) धन।
डोबा— सं० (कि०) डब्बा।
डोबू— सं० (कि०) बटन।
डोबेन्निक— अ० क्रि० (कि०) ठीक बैठ जाना, अनुकूल पड़ना।
डोम— सं० (कि०) संदूक।
डोमङ·नाङ— सं० (कि०) कांसे की थाली।
डोया— अ० क्रि० (कि०) जाना।
डोयामाह— स० क्रि० (कि०) बिक्री करना।
डोयामिक— स० क्रि० (कि०) साफ करना, काम समाप्त करना।
डोर— सं० (कि०) अनुशासन।
डोरमतोई— वि० (कि०) भयरहित।
डोरिई— सं० (कि०) पट्टू, कंबल।
डोरिङ— सं० (कि०) 'दोहडू' के किनारों पर लगी किनारी।
डोरो— सं० (कि०) नाड़ा, डोरी।
डोलटू— सं० (कि०) पुरुष के कान की बाली।
डोलतमाह— स० क्रि० (कि०) ढूंढना।
डोलमा— सं० (ला०, कि०) इंद्रधनुष।
डोलयामिक— स० क्रि० (कि०) तलाशी लेना।
डोलामाह— स० क्रि० (कि०) दे० डोलयामिक।
डोलेन्निक— अ० क्रि० (कि०) दिन ढलना। दीपक की बत्ती का टेढ़ा होना।
डोसमाह— अ० क्रि० (कि०) गरम होना।
डोसमिक— अ० क्रि० (कि०) जलती लकड़ी का बुझ जाना।
डौरङ— सं० (कि०) मधुमक्खी का छत्ता।
डौरमिक— स० क्रि० (कि०) देवता के रथ के कपड़े व 'मोहरे' उतार कर रखना।
ड्रकफि— सं० (ला०) विजय, जीत।
ड्रनड्रा— वि० (ला०) एक समान।
ड्रिचे— स० क्रि० (ला०) पूछना।
ड्रुगदिर्पि— सं० (ला०) बिजली की कड़क।
ड्रेई— सं० (ला०) चावल।
ड्रोङ— सं० (ला०) इंद्रधनुष।
ड्वारा— सं० (ला०) नथुना।

## ढ

ढंखार— सं० (कि०) एक अन्न विशेष।
ढगपाह— अ० (कि०) बाहर।
ढङसा— सं० (कि०) निवास स्थान।
ढनमाह— स० क्रि० (कि०) याद करना।
ढबुआ — सं० (ला०) रुपया।
ढांडी— सं० (कि०) लंबी मज़बूत लकड़ी में 'दोहडू' आदि में बांध कर रोगियों को ले जाने की व्यवस्था।
ढाइनिज़— वि० (कि०) दो बीस और दस अर्थात् पचास।
ढाकिलामाह— स० क्रि० (कि०) मणि जड़वाना।
ढाखरु— सं० (कि०) डमरु की तरह का वाद्ययंत्र।
ढानोरङ— सं० (कि०) कूड़ा करकट, धूल।
ढाबाई— सं० (ला०) अधिक गरम पानी में डाला जाने वाला ठंडा पानी।
ढायशमिक— अ० क्रि० (कि०) नज़र लगना।
ढारा— सं० (ला०) लकवा।
ढालयामिक— स० क्रि० (कि०) देवता के सामने चंवर झुलाना।
ढावा— सं० (ला०) पैसा।
ढिम— सं० (कि०) उमर।
ढिलतमाह— अ० क्रि० (कि०) ढीला होना।
ढुङयो— सं० (कि०) लेखक।
ढेल— सं० (ला०) नमन।
ढेलु— सं० (कि०) काफी ऊंचाई पर पाई जाने वाली झाड़ी जो धूप बनाने के काम आती है।
ढेशिकरिबा— सं० (कि०, ला०) सुलाना।
ढोङजेमाह— अ० क्रि० (कि०) टक्कर लगना।
ढोतुखेमाह— स० क्रि० (कि०) सौंप देना।
ढोनडोरा— सं० (कि०) ढिंढोरा।
ढोलमा— सं० (कि०) अनाज छानने की छलनी।
ढोलमाटामाह— स० क्रि० (कि०) अनाज छानना।
ढोलहन्माह— स० क्रि० (कि०) कलाकृति करना।
ढोवा— सं० (कि०) मतलब।

## त

तंगध्या— सं० (कि०) एक पर्वतीय औषधि।
तंगगोली— सं० (कि०) खेलने की गोल वस्तुएं।
तंडे— सं० (ला०) कमर, कटि।
तंदीई— सं० (कि०) तार।
तंफो— अ० (कि०) आराम से।
तंफोलऊ— अ० (कि०) सावधानी से।

**तंबिल**—सं० (कि०) बंधन।
**त:न**—सं० (कि०) गेहूं और जौ का बाहरी पतला व नुकीला छिलका, छोटा तिनका।
**तईङ**—अ० (कि०) इस वर्ष।
**तऊथोरिङख्यम**—सं० (कि०) खंभे पर बनी छत।
**तकचटम**—वि० (ला०) गंजा।
**तकचह**—सं० (कि०) रस्सी आदि का पिछला सिरा।
**तकतखमाह**—स० क्रि० (कि०) प्रवेश देना।
**तकपा**—सं० (कि०) पिछला भाग।
**तकुच**—सं० (कि०) नाक।
**तकुड़ी**—सं० (ला०) तकली।
**तख**—सं० (कि०) शकुन।
**तखजुङठुल**—सं० (कि०) दिव्य चमत्कार।
**तखतेमरेल**—सं० (कि०) दे० तख।
**तग**—सं० (कि०) चीता।
**तगछर**—सं० (कि०) मुसलाधार वर्षा।
**तगतु**—अ० (कि०) हमेशा।
**तगतु**—सं० (कि०) भोजन।
**तगपा**—सं० (कि०) सिर।
**तगबरपा**—वि० (ला०) मझोला।
**तगश्वालिङ**—सं० (कि०) बच्चों का समूह।
**तङ**—सं० (ला०) कुशलता का समाचार पहुंचाने के लिए भेजा गया पैसा।
**तङमतङ**—वि० (कि०) देखा-अनदेखा।
**तङमामतोई**—वि० (कि०) सूक्ष्म।
**तङमाह**—स० क्रि० (कि०) देखना।
**तङमाहछसुह**—अ० क्रि० (कि०) प्रारंभ होना।
**तङमिक**—स० क्रि० (कि०) देखना।
**तचाइबा**—स० क्रि० (ला०) गरम करना।
**तचेचेअ**—अ० (कि०) कितना सा।
**तच्छ**—सं० (कि०) हड़बड़ाहट।
**तछुख**—सं० (कि०) घोड़े का बच्चा।
**तड़का**—सं० (ला०) बाली।
**तड़िबा**—स० क्रि० (ला०) छितराना।
**तत**—सं० (कि०) लगाव।
**ततमाह**—स० क्रि० (कि०) स्मरण करना, सोचना।
**तत्तु**—वि० (ला०) गरम।
**तन**—सं० (कि०) खाट। गेहूं और जौ का पतला नुकीला छिलका।
**तनत**—सं० (कि०) एक भयंकर उदर रोग।
**तनतख्यतमाह**—स० क्रि० (कि०) उदर रोग की चिकित्सा करना।
**तनफो**—अ० (कि०) ठीक से।
**तनफोलमिन**—अ० (कि०) सावधानी पूर्वक।
**तनमा**—सं० (कि०) मटर।
**तनमो**—सं० (कि०) तमाशा।
**तनमोकनिंह**—सं० (कि०) दर्शक, तमाशबीन।
**तनीह**—सं० (कि०) स्थाई रूप से टिके रहने का भाव।
**तनुहपोसमाह**—अ० क्रि० (कि०) स्थिर रहना।
**तपङ**—सं० (कि०) तप। तपिश।
**तपचिश**—अ० (कि०) लगातार।
**तपरामाह**—स० क्रि० (कि०) सताना।
**तपि**—सर्व० (ला०) आप।
**तपो**—सं० (कि०) प्रकाश।
**तप्यामाह**—स० क्रि० (कि०) तपाना।
**तप्यामिक**—स० क्रि० (कि०) तपाना।
**तप्यालिस**—सं० (कि०) धूप वाला स्थान।
**तप्याशमिक**—अ० क्रि० (मं०) तपना।
**तब**—सं० (ला०) राख।
**तबरा**—सं० (कि०) घोड़े पर लादने का थैला, गोन।
**तम**—सं० (कि०) बात।
**तमङनहनमाह**—स० क्रि० (कि०) झूठा अर्थ लगाना।
**तमतप**—अ० (कि०) चुपचाप।
**तमनादेस्क**—अ० (कि०) ठीक जैसा।
**तमनाह**—वि० (कि०) मौन।
**तमपे**—सं० (कि०) कहावत।
**तमबिल**—सं० (कि०) बाड़ बांधने का ढंग।
**तममाह**—स० क्रि० (कि०) मिलाना।
**तमसुख**—सं० (कि०) इकरारनामा, अनुबंध पत्र।
**तमाकड़**—वि० (कि०) चुपचाप।
**तरंई**—सं० (ला०) भेड़।
**तरअतरा**—वि० (कि०) दूर-दूर स्थित।
**तरची**—स० क्रि० (ला०) किसी काम को कर सकना।
**तरम**—सं० (ला०) चाबुक।
**तरमतुरेम**—अ० (कि०) पूर्ण-अपूर्ण।
**तरमाह**—स० क्रि० (कि०) कसना, खींचना।
**तरमिक**—स० क्रि० (कि०) माला पिरोना।
**तरमेन**—वि० (कि०) कसा हुआ।
**तरलोकनाथ**—सं० (ला०) लाहुल स्पिति में स्थित एक मंदिर का नाम।
**तरवाल**—सं० (कि०) तलवार।
**तरागी**—सं० (ला०) तराजू।
**तरापला**—वि० (कि०) कमजोर।
**तरुङ**—अ० (ला०) और।
**तरौ**—अ० (कि०) आज।
**तरापकयामिक**—स० क्रि० (कि०) तंग करना।
**तरौपकैन्निक**—अ० क्रि० (कि०) नाराज होना।
**तरौपचिशग्वामिक**—अ० क्रि० (कि०) उछलना।
**तरौल**—सं० (कि०) बैल की एक प्रजाति।
**तरौले**—सं० (कि०) गाय की एक प्रजाति।
**तल**—सं० (कि०) हल।
**तलचा**—सं० (कि०) चाबुक।
**तलतलयामिक**—स० क्रि० (कि०) धक्के देना।
**तलतलसमिक**—अ० क्रि० (कि०) धक्के खाना।
**तलमा**—वि० (कु०) तुरंत, बेधड़क।
**तलमानडणेह**—अ० (कि०) एकाएक।

**तलमाह**—स० क्रि० (कि०) कपड़े आदि में टांका लगाना।
**तलातोले**—वि० (कि०) छोटे-मोटे।
**तलौमलौ**—वि० (कि०) उत्सुक।
**तल्याना**—सं० (कि०) Viburnum cotinifolium.
**तशपौश्यामिक**—स० क्रि० (कि०) दे० तशपशिणो।
**तश्पा**—अ० (कि०) कब।
**तश्पाई**—अ० (कि०) जब।
**तसत्यङ**—सं० (कि०) मधुमक्खी।
**तांगचे**—स० क्रि० (ला०) देना।
**ता**—सं० (कि०) घोड़ा।
**ता**—सं० (कि०) खंभा।
**ताअगचे**—स० क्रि० (ला०) उठाना।
**ताईबा**—स० क्रि० (ला०) तानना।
**ताउमाह**—अ० क्रि० (कि०) प्रसव होना।
**ताऊंला**—सर्व० (कि०) तुम्हें।
**ताओ**—सं० (कि०) बुखार।
**ताकमिक**—अ० क्रि० (कि०) भोजन में नमक या मीठा ठीक होना।
**ताकयामिक**—स० क्रि० (कि०) हिम्मत करना।
**ताकरा**—वि० (कि०) हृष्ट-पुष्ट।
**ताकलयामिक**—स० क्रि० (कि०) ज़ोर से आवाज़ देना।
**ताकशोलिङ**—सं० (कि०) नाक का हिस्सा।
**ताकुई**—सं० (ला०) तलवा।
**ताकुच**—सं० (कि०) नाक।
**ताकुथु**—सं० (ला०) सफाई, लिपाई।
**ताकौत**—सं० (कि०) ताक़त।
**ताक्**—सं० (कि०) पीप।
**ताक्सा**—सं० (ला०) उपहार।
**तागपाऊशकलङ**—सं० (कि०) ऐसा गहना जिसे महिला अपने बालों के पीछे पहनती है।
**तागमिक**—स० क्रि० (कि०) बुनना।
**तागमूर**—स० क्रि० (कि०) बुनना।
**तागोथ**—सं० (कि०) शक्ति।
**ता[illegible]**—वि० (कि०) छोटे कद का।
**[illegible]**—वि० (कि०) छोटे कद की।
**ताचे[illegible]**—अ० (ला०) तक।
**ताच्रंह**—स० क्रि० (कि०) देखना।
**[illegible]च्चां**—सं० (ला०) उधार।
**ताछयामिक**—स० क्रि० (कि०) पेड़ा बनाना, गोला बनाना।
**ताछे**—वि० (कि०) जो कुछ नहीं जानती, अनभिज्ञ।
**ताछो**—वि० (कि०) जो कुछ नहीं जानता हो।
**ताञ**—स० क्रि० (क़ि०) रखो, कहो, करो।
**ताड़बा**—स० क्रि० (ला०) छितराना, फैलाना।
**ताणबा**—स० क्रि० (ला०) खींचना, तानना।
**तातु**—सं० (ला०) गर्मी।
**तातुरध्याड़ा**—सं० (ला०) ग्रीष्म ऋतु।
**तातू**—वि० (ला०) गर्म।
**तानयामिक**—स० क्रि० (कि०) तानना।
**तापक**—वि० (कि०) अंधेरा।
**तापकपत्रि**—अ० क्रि० (कि०) आंखों से न दिखाई देना।
**तापतपिङ**—सं० (कि०) अंधेरे में संभल कर कदम रखने की क्रिया।
**तापी**—सं० (ला०) सीढ़ी।
**ताबोङ**—सं० (कि०) खच्चर प्रजाति का पशु।
**तामा**—सं० (कि०) अमानत।
**तामाकु**—सं० (ला०) तंबाकू।
**तामाह**—स० क्रि० (कि०) रखना, प्रवेश देना।
**तामाह**—स० क्रि० (कि०) बुनना।
**तामिक**—स० क्रि० (कि०) रखना।
**तामू**—स० क्रि० (कि०) रखना।
**तामे**—सं० (कि०) घड़ा।
**तारकमिक**—स० क्रि० (कि०) फैलाना।
**तारकेरमाह**—स० क्रि० (कि०) तारों से बुनना।
**तारदिबा**—अ० क्रि० (ला०) तैरना।
**तारयामिक**—स० क्रि० (कि०) मांस या खाल को सुखाना।
**तारिबा**—स० क्रि० (ला०) फैलाना।
**तालगङ**—सं० (कि०) तालु।
**तालेङ**—सं० (कि०) चाबी।
**तालङसा**—सं० (कि०) भंडारी, मुखिया।
**तालिङ**—सं० (कि०) चाबी।
**तालो**—अ० (कि०) इस साल।
**तालो**—सं० (कि०) अश्व वर्ष।
**तिंछे**—अ० (कि०) उधर।
**तिऊरफ**—सं० (कि०) पानी का उछाल।
**तिओड्ख**—सं० (कि०) केंचुआ।
**तिकट**—सं० (कि०) प्यास।
**तिकमिकेन्तिक**—स० क्रि० (कि०) ताक-झांक करना।
**तिकरटेम्माह**—स० क्रि० (कि०) प्यास बुझाना।
**तिकरीह**—वि० (कि०) प्यासा।
**तिखतिख**—वि० (कि०) भरा हुआ।
**तिखमाह**—अ० क्रि० (कि०) अग्रसर होना।
**तिखमाह**—अ० क्रि० (कि०) समा जाना।
**तिख्यात**—सं० (कि०) खेतों को पानी देने के लिए बनाई छोटी-छोटी कुदालें।
**तिग**—सं० (कि०) चकोर।
**तिङ**—सं० (कि०) नीलमणि।
**तिङशुली**—सं० (कि०) जड़ाऊ आभूषण।
**तिङिह**—वि० (कि०) हरा।
**तितपत्ती**—सं० (कि०) Roylea calycina.
**तितर**—सं० (कि०) Rhus semialta.
**तितरी**—सं० (कि०) दे० तितर।
**तितरेस**—सं० (कि०) तीतर पक्षी।
**तिननिक**—स० क्रि० (कि०) नाम पुकारना।
**तिपमाह**—स० क्रि० (कि०) गिरा देना।
**तिपितिपि**—वि० (कि०) कमज़ोर।
**तिपिमिचुङ्ख**—वि० (कि०) छोटे कद का (आदमी)।

तिमरी—सं० (कि०) Zanthoxylum alatum.
तिरमल—सं० (कि०) अंजीर।
तिरमविरम—अ० (कि०) जल्दी-जल्दी।
तिरमाह—स० क्रि० (कि०) माला बनाना।
तिरमिर—सं० (कि०) Zonthoxylum alatum.
तिरोहानी—सं० (कि०) Geranium nepalense.
तिल—सं० (कि०) मसूड़ा।
तिलक—सं० (कि०) Wikstroemia Conescens.
तिलखा—सं० (कि०) Viburnum nervosum.
तिलती—सं० (कि०) हमेशा से जमी बर्फ का पानी।
तिलेनाल—सं० (कि०) दे० तिलखा।
तिवारङ—सं० (कि०) त्योहार, उत्सव।
तिश—वि० (कि०) सात।
तिशङल—सं० (कि०) पशुओं के नाक में घुसने वाला एक कीड़ा।
तिशानिजा—वि० (कि०) सात बीस अर्थात् एक सौ चालीस।
तिशरा—वि० (कि०) सात सौ।
तिसङ—सं० (कि०) आटा।
ती—सं० (कि०) पानी।
तीआरेस—सं० (कि०) बतख।
तीईखिङखमाह—अ० क्रि० (कि०) रिसता हुआ पानी इकट्ठा होना।
तीईचू—सं० (कि०) पानी के ऊपर उड़ने वाली चिड़िया, नीलकंठ पक्षी।
तीईजङमाह—अ० क्रि० (कि०) भीगना।
तीख—सं० (कि०) काई।
तीगला—अ० (कि०) बाद में।
तीगशों—अ० (कि०) अंत।
तीगांठङबिमिक—अ० क्रि० (कि०) पानी का गले में फंसना।
तीङपू—सं० (कि०) अंकुर।
तीचू—सं० (कि०) पीली चोंच वाली काली चिड़िया, जो पानी के किनारे रहती है।
तीशी—वि० (ला०) नीला।
तीतला—सं० (कि०) पानी का तालाब।
तीतुङचलमिनमिक—स० क्रि० (कि०) शर्मिंदा करना।
तीथङ—सं० (कि०) तीर्थ। कफन में लिपटा हुआ शव।
तीदामस—सं० (कि०) सांड़।
तीनङखमाह—अ० क्रि० (कि०) पानी का गले में फंसना।
तीपटास—अ० क्रि० (कि०) पानी में जाना।
तीपलोकट—सं० (कि०) मेंढक।
तीरूत—सं० (कि०) बकरा।
तील—सं० (कि०) वर्षों से जमी हुई बर्फ।
तीलानमेच—सं० (कि०) इंद्रधनुष।
तीशननिक—स० क्रि० (कि०) सिंचाई करना।
तीशम—सं० (कि०) जोंक।
तीसकर—सं० (कि०) प्यास।
तीसकरमिक—अ० क्रि० (कि०) प्यास लगना।
तीस्या—वि० (कि०) जलयुक्त।
तीहोङ—सं० (कि०) पानी में रहने वाला कीड़ा।
तुंग—सं० (कि०) Rhus cotinus.
तुइकी—वि० (ला०) पहले का।
तुई—अ० (ला०) पहले।
तुईदयारो—सं० (कि०) भविष्य।
तुईध—वि० (कि०) छोटा।
तुकमिक—स० क्रि० (कि०) धक्का देना।
तुखशिरङ—अ० (कि०) परसों।
तुगङ—सं० (कि०) दे० तुंग।
तुगतुगशेनमु—स० क्रि० (कि०) धक्का देना।
तुङचया—वि० (कि०) शराब या पानी वाला।
तुङमिक—स० क्रि० (कि०) पीना।
तुङमिका—स० क्रि० (कि०) पशुओं के बच्चों को दूध पिलाना।
तुङमिको—सं० (कि०) दूध पीने वाले शिशु।
तुङो—सं० (कि०) पशुओं के दूध पीने वाले बच्चे।
तुठोरा—वि० (ला०) प्रसन्न, संतुष्ट।
तुड़बा—स० क्रि० (ला०) छौंकना, बघारना।
तुड़मिकरबा—स० क्रि० (ला०) जोड़ना।
तुद्वि—सर्व० (ला०) तुम दो।
तुनङ—सं० (कि०) होंठ।
तुनङबशमाह—अ० क्रि० (कि०) होंठ फटना।
तुनयामिक—स० क्रि० (कि०) रफू करना।
तुनामाह—स० क्रि० (कि०) अधूरे को पूरा बुनना; सिलना।
तुनीसङ—सं० (कि०) रफू।
तुन्मा—सं० (कि०) भाभी।
तुपमाह—स० क्रि० (कि०) जलाना।
तुपसिक—स० क्रि० (कि०) चिपकाना।
तुफ-तुफ—वि० (कि०) बौना।
तुफमाह—अ० क्रि० (कि०) चिपकाना।
तुफशोत—सं० (कि०) छूत का रोग।
तुब्व—सं० (कि०) मुट्ठी।
तुब्वबङ—वि० (कि०) मुट्ठी भर।
तुमतुम्यामिक—स० क्रि० (कि०) बच्चे को सुलाने के लिए थपकी देना।
तुमनाह—अ० (कि०) शांति पूर्वक।
तुमपालङ—वि० (कि०) छोटे बच्चों की देखभाल करने वाला या वाली।
तुममिक—स० क्रि० (कि०) फल पकाना; अंडे सेना।
तुमरा—वि० फटे-पुराने वस्त्र।
तुमुंड़—वि० (ला०) सबसे पहले।
तुमोरि—सर्व० (कि०) तुम।
तुम्माह—स० क्रि० (कि०) सेंकना; गर्म करना।
तुयारङ—सं० (कि०) त्योहार।
तुरखम—सं० (ला०) सोने के लिए ओढ़ा गया कंबल।
तुरखेन—सं० (ला०) संध्याकालीन भोजन।
तुरतुरथ—सं० (कि०) फेंट कर तैयार किया गया घोल।

तुरपी—अ० क्रि० (ला०) हिलना।
तुरप्या—सं० (कि०) चमगादड़।
तुरमाह—स० क्रि० (कि०) सिलना।
तुरमिक—अ० क्रि० (कि०) शाम होना।
तुरमिक—स० क्रि० (कि०) सिलाना।
तुरा—अ० (ला०) बीता हुआ परसों।
तुराइबा—स० क्रि० (ला०) भगाना।
तुराग्—अ० (ला०) दे ०तुरा।
तुलका—सं० (कि०) छौंक।
तुलङ—सं० (कि०) दातुन।
तुलङलमाह—स० क्रि० (कि०) दातुन करना।
तुलचे—सं० (कि०) एक कांटेदार घास।
तुवारशेअ—अ० (ला०) कभी-कभी।
तुसणा—सं० (कि०) पूरी निकालने के लिए बनी लोहे की छड़ जिसका सिरा मुड़ा होता है।
तुसमिक—स० क्रि० (कि०) सेंकना।
तुसिङ—अ० (कि०) सामने।
तुसिङकमचित—सं० (कि०) स्पष्ट बात।
तुहलमाह—अ० क्रि० (कि०) समाप्त होना।
तूखा—अ० (ला०) आगे।
तूड़ी—सं० (ला०) दियासलाई।
तूमू—सं० (कि०) बीज को एक-एक करके बोने की क्रिया।
तूरङ—सं० (कि०) एक वाद्ययंत्र जो विशेष उत्सव के अवसर पर बजाया जाता है।
तूरमिक—स० क्रि० (कि०) तंत्र-मंत्र करना। अभिमंत्रित करना।
तूरिद—सं० (कि०) अभिमंत्रित धागा।
तूशङ—सं० (कि०) अनाज का छिलका।
ते:त—सं० (कि०) भेड़-बकरी।
ते:तुश्या—सं० (कि०) भेड़ का मांस।
तेअबची—स० क्रि० (ला०) दबाना।
तेआले—सं० (कि०) बड़ा भाई।
तेखें—अ० (ला०) तब।
तेग—वि० (कि०) बड़ा।
तेगआऊ—सं० (कि०) मां की बड़ी बहिन।
तेगआमा—सं० (कि०) ताई।
तेगभोबा—सं० (कि०) ताया।
तेगस्या—वि० (कि०) बड़ा वाला।
तेगापन्निक—अ० क्रि० (कि०) मुश्किल में पड़ना।
तेगो—सं० (कि०) दाढ़ी।
तेङ—अ० (कि०) ऊपर।
तेङ—वि० (कि०) जितना।
तेङाअम—अ० (कि०) जितना आगे।
तेङायुम—अ० (कि०) जितना पीछे।
तेच—वि० (कि०) कुछ।
तेठि—अ० (ला०) वहां।
तेतपालस—सं० (कि०) चरवाहा।
तेतरा—वि० (कि०) कितना।
तेतशुपमाह—स० क्रि० (कि०) बकरा काटना।
तेता—वि० (कि०) कितना।
तेते—सं० (कि०, ला०) दादा।
तेतोख—वि० (ला०) उतना।
तेदुबारिच—अ० (कि०) बहुत पहले से।
तेदुमयक्च—अ० (कि०) कब से।
तेद्दि—सर्व० (ला०) वे दो।
तेनफाट—सं० (कि०) भेंट, तोहफा।
तेने—अ० (कि०) तक।
तेनेघाटे—वि० (ला०) वैसा, उस तरह का।
तेन्माह—स० क्रि० (कि०) थामना।
तेपतप—अ० (कि०) चुपचाप।
तेपो—सं० (कि०) बसूला, एक उपकरण जिससे बढ़ई लकड़ी छीलता है।
तेम—सं० (कि०) बहू।
तेमेरेल—वि० (कि०) शुभ शकुन।
तेरङ—अ० (कि०) कब।
तेरबुम—सं० (कि०) खज़ाना।
तेरहजोत—सं० (कि०) त्रयोदशी।
तेरो—सर्व० (कि०) तेरा।
तेलङ—सं० (कि०) तेल।
तेसु—अ० (ला०) तब।
तैन—सं० (कि०) विवाह के पश्चात् प्रथम बार मायके जाते समय ससुराल की ओर से दिया जाने वाला पकवान विशेष।
तैनपोलटयामिक—स० क्रि० (कि०) वर पक्ष की ओर से भेजे गए पकवान के बदले में कन्या पक्ष की ओर से अनाज भेजना।
तैनफाच—सं० (कि०) उपहार।
तैर—सं० (कि०) कोष, ख़ज़ाना।
तैलमिक—स० क्रि० (कि०) ढोना।
तोंगकी—अ० (ला०) एकांत।
तोंगमिक—स० क्रि० (कि०) मारना।
तोंपो—वि० (कि०) साधारण, सीधा-सादा।
तोंबुआ—सं० (कि०) तंबू।
तो:—सं० (कि०) चेहरा।
तो—अ० (कि०) है।
तोअगचे—सं० (ला०) कुदाली।
तोआ—सं० (कि०) उधार, ऋण।
तोआङ—सं० (कि०) आंगन।
तोक—अ० (कि०) हूं।
तोकचे—सं० (कि०) कुदाली।
तोकपी—सर्व० (कि०) सबका।
तोख—अ० (कि०) हूं।
तोग—सं० (कि०) बड़े पत्थर को उठाने के लिए उसके नीचे प्रयुक्त छोटा पत्थर।
तोगङ—सं० (कि०) बरामदा।
तोगशिमु—अ० क्रि० (कि०) लड़ना।

**तोङ्कु**— वि० (कि०) सीधा सादा।
**तोङकू**— सं० (कि०) चिराग रखने का पात्र।
**तोङ्कोलोंथ**— सं० (कि०) कूटने हेतु पत्थर।
**तोङमिक**— स० क्रि० (कि०) खोलना।
**तोचे**— सं० (कि०) चोगा।
**तोच्यमिक**— अ० क्रि० (कि०) स्मरण होना।
**तोच्चिस**— सं० (कि०) याद।
**तोथी**— सं० (कि०) छोटा पलटा।
**तोनिक**— स० क्रि० (कि०) बच्चे को शौच कराना।
**तोन्निक**— स० क्रि० (कि०) निकालना। अ० क्रि० होना।
**तोफ**— सं० (कि०) स्वाद।
**तोफचन**— वि० (कि०) स्वादिष्ट; देर से पचने वाला, पौष्टिक।
**तोफ-तोफ**— वि० (कि०) छोटा सा।
**तोफमतोइ**— वि० (कि०) रसहीन।
**तोबरा**— सं० (कि०) स्वागत।
**तोबुके**— सं० (ला०) बंदूक।
**तोम**— वि० (कि०) सब।
**तोमङ**— सं० (कि०) पानी भरने का गोल पात्र।
**तोमाखु**— सं० (कि०) तंबाकू।
**तोमाखुची**— सं० (कि०) तंबाकू के पौधे की पत्ती।
**तोमासु**— सं० (कि०) तमाशा।
**तोर**— सं० (कि०) बनावट।
**तोरइया**— वि० (कि०) झूला-पुल की रस्सी खींचने वाला।
**तोरङ**— सं० (कि०) नदी पार करने का झूला विशेष।
**तोरङिया**— सं० (कि०) झूला खींचने वाला।
**तोरज्ञा**— सं० (कि०) एक बौद्ध कर्मकांड।
**तोरमा**— सं० (कि०) सत्तू एवं रत्नजोत द्वारा तैयार की गई पूजन सामग्री।
**तोरिङ**— अ० (ला०) ऊपर।
**तोरी**— सं० (कि०) Depsacur inermis.
**तोरो**— अ० (कि०) आज।
**तोरोलो**— अ० (कि०) आजकल।
**तोलबा**— स० क्रि० (ला०) तोलना।
**तोलमो**— सं० (कि०, ला०) एक गाय जो किन्नौर, लाहुलस्पिति तथा लद्दाख में पाई जाती है।
**तोलयामिक**— स० क्रि० (कि०) उठाना, तोलना।
**तोलिङ**— अ० (कि०) इस वर्ष।
**तोलियानो**— स० क्रि० (कि०) संभालना।
**तोली**— सं० (कि०) एक झाड़ी विशेष जो धूप बनाने के काम आती है।
**तोल्यामिक**— अ० क्रि० (कि०) उठना।
**तोशमीक**— अ० क्रि० (कि०) बैठना। सं० एक सांस्कृतिक कार्यक्रम, जिसमें पुरुष और महिलायें मिलकर खाना, पीना और नाच-गाना करते हैं।
**तोश्यिम**— अ० क्रि० (कि०) बैठना।
**तोसङथुप्पा**— सं० (कि०) एक पकवान विशेष।
**तौंग**— सं० (कि०) बरामदा।
**तौज़कू**— सं० (कि०) एक पात्र विशेष जिस पर बिरोजायुक्त लकड़ी जलाकर प्रकाश किया जाता है।
**त्यरमाह**— अ० क्रि० (कि०) हवा में लहराना।
**त्यामला**— अ० (ला०) तुरंत, एकदम।
**त्रंयी**— सं० (ला०) भेड़।
**त्रकवा**— अ० क्रि० (ला०) गलना।
**त्रगेगी**— अ० क्रि० (ला०) सड़ना।
**त्रगेफी**— अ० क्रि० (ला०) सड़ना।
**त्रपमाह**— अ० क्रि० (कि०) चिपक जाना।
**त्रपी**— सं० (ला०) चमड़ी।
**त्रांगड़**— वि० (ला०) दुर्बल।
**त्रा**— वि० (ला०) तीन।
**त्राई**— वि० (ला०) तीन।
**त्राइमंजिला**— वि० (ला०) तिमंज़िला।
**त्राईबा**— स० क्रि० (ला०) जलाना।
**त्राउदीबा**— अ० क्रि० (ला०) उछलना।
**त्राकबा**— अ० क्रि० (ला०) सड़ना।
**त्राङ**— सं० (कि०) चिलगोजे को भूनने की क्रिया।
**त्रामा**— सं० (ला०) तांबा।
**त्री**— वि० (कि०) दो।
**त्रुई**— वि० (ला०) छः।
**त्रुटबा**— अ० क्रि० (ला०) टूटना।
**त्रुलकी**— अ० क्रि० (ला०) टूटना।
**त्रुलकी**— अ० क्रि० (ला०) हिलना।
**त्रेरगु**— वि० (कि०) उनतीस।
**त्रेरङन**— वि० (कि०) पच्चीस।
**त्रेरचीत्र**— वि० (कि०) इक्कीस।
**त्रेरज़ी**— वि० (कि०) चौबीस।
**त्रेरज्ञेद**— वि० (कि०) अट्ठाईस।
**त्रेरडुग**— वि० (कि०) छब्बीस।
**त्रेरत्री**— वि० (कि०) बाइस।
**त्रेरदुन**— वि० (कि०) सत्ताईस।
**त्रेरसुम**— वि० (कि०) तेईस।
**त्रेशिमस**— वि० (कि०) गूंथा हुआ।
**त्रोआल**— सं० (कि०) तलवार।
**त्रोनाबिसङोत्रोन**— वि० (कि०) तिरसठ।
**त्वालोखमाह**— स० क्रि० (कि०) धर्म परिवर्तन करना।

## थ

**थंगज़द**— सं० (ला०) जौ।
**थङ्गु**— सं० (कि०) Juniperus recurva.
**थक़ुजामाह**— स० क्रि० (कि०) मांग कर खाना।
**थक़ुसोकरो**— सं० (कि०) तोड़-मरोड़।
**थकतुजामाह**— स० क्रि० (कि०) भोजन करना।
**थकतूवतमाह**— स० क्रि० (कि०) भोजन पकाना।
**थकपा**— सं० (कि०) रस्सी।
**थकपाशङमाह**— स० क्रि० (कि०) रस्सी बाटना।

**थकपातोख**— सं० (कि०) रस्सी का टुकड़ा।
**थकराअ**— सं० (कि०) हथकरघा।
**थकरालई**— सं० (कि०) जुलाहा।
**थकश्या**— सं० (कि०) हथकरघा का सामान।
**थकोला**— वि० (कि०) गंदला।
**थगछोत**— सं० (कि०) वास्तविक।
**थगतु**— सं० (कि०) भोजन।
**थगतुअलई**— सं० (कि०) रसोइया।
**थगपो**— वि० (कि०) अच्छा।
**थगरिङ**— अ० (कि०) दूर।
**थङ**— अ० (कि०) ऊपर।
**थङका**— सं० (कि०) मैदान।
**थङको**— अ० (कि०) ऊपर की ओर।
**थङगा**— सं० (कि०) भित्ति चित्र।
**थङगारिई**— सं० (कि०) समतल खेत।
**थङथङ**— सं० (कि०) खंभा।
**थनमिह**— स० क्रि० (कि०) छूना।
**थनरामिक**— स० क्रि० (कि०) छूना।
**थपा**— अ० (कि०) ऊपर।
**थप्यामाह**— स० क्रि० (कि०) नियुक्त करना।
**थमगङ**— सं० (कि०) कमरे के बीच में छत को सहारा देने के लिए लगाया गया खंभा।
**थमथमजेमाह**— अ० क्रि० (कि०) अंधेरे में धीरे-धीरे चलना।
**थममिक**— स० क्रि० (कि०) पता लगाना।
**थमलतमाह**— अ० क्रि० (कि०) अंधेरे में भटकना।
**थमा**— वि० (कि०) शैतान।
**थर**— सं० (कि०) शेर।
**थरछङ्ख**— अ० (कि०) शेर का बच्चा।
**थरथरीनमो**— अ० क्रि० (कि०) ठंड से ठिठुरना।
**थरमिक**— स० क्रि० (कि०) प्रवेश पाना।
**थरसमिक**— स० क्रि० (कि०) तार-तार करना।
**थरिठा**— अ० क्रि० (कि०) ठहरना।
**थरूपखफ**— सं० (कि०) शेर की खाल।
**थल**— सं० (कि०) चुंगीकर।
**थलमाह**— स० क्रि० (कि०) पार करना।
**थलमिक**— स० क्रि० (कि०) पीछे छोड़ना।
**थलिई**— सं० (कि०) थाली।
**थलेगङ**— सं० (कि०) सीढ़ी।
**थसमिक**— स० क्रि० (कि०) सुनना।
**थह**— अ० (कि०) क्या।
**थहफसा**— वि० (कि०) व्यवहार कुशल।
**थांश्यमाह**— अ० क्रि० (कि०) छूत लगना।
**था.र**— सं० (कि०) चीता।
**थाअ**— सं० (कि०) जूते का तला।
**थाऊपिनमाह**— स० क्रि० (कि०) तोड़ देना।
**थानेपो**— वि० (कि०) ऊंचा।
**थापरिणो**— अ० क्रि० (कि०) गुमसुम होना।
**थापा**— अ० (कि०) ऊपर।
**थाप्पेरो**— सं० (कि०) थप्पड़।
**थालीन**— सं० (कि०) Viburnum nervbsum.
**थाल्ज़ा**— सं० (ला०) रस्सी।
**थासङ**— सं० (कि०) तला।
**थिई**— सं० (कि०) रेखा, लकीर।
**थिनमिक**— स० क्रि० (कि०) तानना।
**थीक**— वि० (कि०) मीठा।
**थीती**— वि० (ला०) गीला।
**थीस**— वि० (कि०) नर्म।
**थुंथु**— सं० (ला०, कि०) विशेष प्रकार की कलछी जो अधिक गहरी होती है।
**थुकङ**— सं० (कि०) थूक।
**थुकचा**— स० क्रि० (कि०) छूना।
**थुकपा**— सं० (कि०) पेय पदार्थ।
**थुकमिक**— अ० क्रि० (कि०) ग्रस्त होना, मुसीबत में पड़ना।
**थुकरो**— वि० (कि०) नाराज़।
**थुकिब्बा**— अ० क्रि० (ला०) थूकना।
**थुगजे**— सं० (कि०) कृपा।
**थुगस**— अ० (कि०) ऊपर से।
**थुतमाह**— स० क्रि० (कि०) उठाना।
**थुतुहपयाऊ**— स० क्रि० (कि०) उठाकर फेंकना।
**थुतुहपिन्माह**— स० क्रि० (कि०) झटका देना।
**थुदा**— अ० (कि०) ऊपर।
**थुनङ**— सं० (कि०) मृतक को अर्पित किया गया भोजन।
**थुनपिन्माह**— स० क्रि० (कि०) मंत्र जपना।
**थुपचमिक**— स० क्रि० (कि०) निर्वाह करना।
**थुपहनोर**— सं० (कि०) टिकाऊ धन।
**थुम**— सं० (कि०) Fraxinus xanthoxyloides.
**थुम**— सं० (कि०) गोद।
**थुमकपरा**— सं० (कि०) देवता की पालकी में लगे डंडों को ढकने का कपड़ा विशेष।
**थुममिक**— स० क्रि० (कि०) घेरना।
**थुर**— सं० (कि०) उतराई।
**थुरगोलसङ**— सं० (कि०) शुक्ल पक्ष।
**थुरमिक**— स० क्रि० (कि०) तह लगाना।
**थुरु**— सं० (कि०) घोड़े का बच्चा।
**थुलथुलू**— वि० (कि०) बहुत नर्म।
**थुह**— अ० (कि०) ओह, विस्मयादि बोधक शब्द।
**थूकङ**— सं० (कि०) थूक।
**थूर**— अ० (कि०) ऊपर।
**थूसका**— अ० (कि०) ऊपर की ओर।
**थेंबा**— सं० (कि०) सीढ़ी।
**थेङ्बा**— स० क्रि० (ला०) रखना।
**थेगसो**— सं० (कि०) तेल या पानी के बर्तन की तह में जमी मैल।
**थेनचे**— स० क्रि० (ला०) खींचना।
**थेपगीङखल**— सं० (कि०) अतिरिक्त बोझ।
**थेपथेपमिह**— स० क्रि० (कि०) थपथपाना।

थेफमाह—स० क्रि० (कि०) निशाना लगाना।
थेबो—सं० (ला०) अंगूठा।
थेमचो—सं० (कि०) दीवार में बनाई पत्थर की सीढ़ियां।
थेमपा—सं० (कि०) सीढ़ी।
थेममिक—स० क्रि० (कि०) मिलाना, जोड़ना।
थेलगङ—सं० (कि०) पैड़ी।
थेश्यमाह—अ० क्रि० (कि०) मिलना।
थेसु—अ० (ला०) तब।
थोअचे—सं० (ला०) मंज़िल।
थोक—सं० (कि०) अंदाज़ा।
थोकलयामिक—स० क्रि० (कि०) अंदाज़ा लगाना।
थोखमाह—स० क्रि० (कि०) स्पर्श करना।
थोखसा—वि० (कि०) विवेकी।
थोगमा—सं० (कि०) सिर का पिछला भाग।
थोगमिक—स० क्रि० (कि०) उतारना।
थोङमिक—स० क्रि० (कि०) पक्षियों का घोंसले से अपने बच्चे ले जाना।
थोती—वि० (ला०) गीला।
थोथोलस—वि० (कि०) बहुमूल्य।
थोन—सं० (कि०) विषय।
थोनङ—सं० (कि०) लक्षण।
थोनमाह—अ० क्रि० (कि०) पूरा होना।
थोनमिक—अ० क्रि० (कि०) हिम्मत होना। गुज़ारे लायक होना।
थोबा—सं० (कि०) धब्बा।
थोमाह—स० क्रि० (कि०) उतारना।
थोमिक—स० क्रि० (कि०) प्राप्त करना, उठाना।
थोरमिक—अ० क्रि० (कि०) ठंड से अकड़ना। मरना।
थोसरिङ—सं० (कि०) ऊपर का क्षेत्र।

## द

दगपो—वि० (कि०) प्रथम, पहला।
दओच—सं० (कि०) बहिन।
दकल—सं० (कि०) सवेरा, प्रातः काल।
दखङ—सं० (कि०) अंगूर, दाख।
दखरोनिङ—सं० (कि०) श्रावण संक्राति।
दगो—सं० (कि०) श्वास रोग।
दगोऊशोत—सं० (कि०) श्वास रोग।
दगोला—सं० (कि०) चांदी का हाथ में पहना जाने वाला विशेष प्रकार का आभूषण।
दगोसा—वि० (कि०) श्वास रोगी।
दङ—अ० (कि०) वहां।
दङखक्यङमाह—स० क्रि० (कि०) तर्ज़ लेना।
दङतुयारङ—सं० (कि०) मेले का अंतिम दिन।
दङबो—अ० (कि०) पुराने समय में, बहुत पहले।
दङवल्य—वि० (कि०) गंजा।
दङश्योअ—सं० (कि०) खेत का किनारा।
दटुथ—सं० (कि०) सिर पर बांधा जाने वाला कपड़ा।
दतपा—सं० (कि०) श्रद्धा, भक्ति।
दतमाह—अ० क्रि० (कि०) गिरना।
दतुहजेमाह—अ० क्रि० (कि०) गिर जाना।
दथ—अ० (कि०) फिर।
दथइपतिख—अ० (कि०) उसके बाद।
दनमाह—अ० क्रि० (कि०) टकराना।
दनमो—सं० (कि०) हिरणी।
दबङ—सं० (कि०) Cedrela serrata.
दम—अ० (कि०) तब।
दमरिथ—वि० (कि०) थाड़ा सा।
दमलान्मिङ—सं० (कि०) उपकार।
दमा—स० (कि०) बैल।
दम्मेन—वि० (कि०) बंधा हुआ।
दयांऐ—अ० (ला०) व्यर्थ ही, बिना मतलब के।
दयार—सं० (कि०) दिन।
दयारो—सं० (कि०) समय।
दयोरा—सं० (कि०) समय।
दयोली—सं० (कि०) स्थानीय मेला।
दर—अ० (कि०) दूर।
दरकनारे—अ० (कि०) दूर किनारे।
दरङवरङ—सं० (कि०) युवक।
दरचोअद—सं० (ला०) एक विशेष झंडा जिसमें बौद्ध मंत्रों को छपवाया जाता है।
दरछोऊकरार—सं० (ला०) 'दरचोअद' का वस्त्र।
दरजोम—सं० (कि०) लकड़ी का बनाया बड़ा जल पात्र।
दरथमाह—स० क्रि० (कि०) रगड़कर खुजलाना।
दरबधे—सं० (कि०) पताका।
दरबार—सं० (कि०) राजधानी।
दरमाह—स० क्रि० (कि०) तेज करना।
दरम्यान—सं० (कि०) विवाह संबंध जोड़ने वाले दो व्यक्ति।
दरलु—सं० (कि०) Abelia triflora.
दरा—सं० (कि०) छाज।
दरू—सं० (कि०) बारूद।
दरूपङमिक—स० क्रि० (कि०) बारूद भरना।
दर्व—सं० (कि०) दूर्वा, दूब।
दल—सं० (ला०) सीमा।
दलिद्र—सं० (कि०) नीच प्रकृति वाला।
दलोगा—सं० (कि०) विशेष उत्सव पर रसोई के सामान का मुख्य प्रबंधक।
दवा—सं० (कि०) मास, महीना।
दवाकोत—सं० (कि०) दबाव, प्रभाव।
दवारङ—सं० (कि०) दरवाज़ा।
दवेलङ—सं० (कि०) मंदिर में रात्रि के तीसरे पहर में बजाया जाने वाला लोक ताल।
दसकर्म—सं० (कि०) क्रिया-कर्म।

दसतङ—अ० (कि०) तब तक।
दा—सं० (ला०) पीड़ा।
दाई—सं० (कि०) बड़ी बहिन।
दाओ—सं० (कि०) बहिन।
दाका—सं० (कि०) मुसीबत।
दाको—सं० (कि०) सांस फूलने की क्रिया।
दाखङ—सं० (कि०) अंगूर।
दागलो—सं० (कि०) हाथ में पहना जाने वाला चांदी का आभूषण विशेष।
दागशी—वि० (कि०) ऋणी।
दागु—सं० (ला०) दादा।
दागू—सं० (कि०) पहाड़ों पर होने वाला सुगंधित फूल।
दाङ—सं० (कि०) मोनाल पक्षी।
दाङशुरेस—सं० (कि०) चील।
दाच—अ० (कि०) और।
दाच—सं० (कि०) पति।
दाज़िन—सं० (कि०) चंद्र ग्रहण।
दाठू—सं० (कि०) स्त्रियों का सिर पर बांधने का वस्त्र।
दाननिक—अ० क्रि० (कि०) गिरना।
दाने—सं० (कि०) पशुओं को खिलाया जाने वाला दाना।
दाम—वि० (कि०) अच्छा।
दामङ—सं० (कि०) पीठ पर भार उठाने के लिए प्रयोग की जाने वाली रस्सी।
दामिक—स० क्रि० (कि०) बुनना।
दामैस—सं० (कि०) बैल।
दामङ—सं० (कि०) लंबी उड़ान।
दायरोह—अ० (कि०) बार-बार।
दारङ—सं० (कि०) शहतीर, पानी की धार।
दारजौम—सं० (कि०) बड़े आकार का लकड़ी का बर्तन।
दारी—सं० (कि०) टोपी में लगने वाली किनारी।
दारुच—स० क्रि० (कि०) मदद करना।
दाल्मङ—सं० (कि०) अनार।
दावा—सं० (कि०, ला०) महीना।
दावा—सं० (कि०) सोमवार।
दावा—सं० (कि०) चांद।
दाशियनिक—अ० क्रि० (कि०) झगड़ना।
दाह—सं० (ला०) प्रेम।
दाहटामाह—स० क्रि० (कि०) दाह संस्कार करना।
दिइबा—स० क्रि० (ला०) देना।
दिकपा—सं० (कि०) पाप।
दिकसा—सं० (ला०) समधी।
दिकसादि—सं० (ला०) समधिन।
दिक्स—सं० (ला०) जीजा।
दिगचन—वि० (कि०) भारी।
दिगचू—सं० (ला०) पतीला।
दिगपचन—वि० (कि०) पापी।
दिगरा—सं० (कि०) स्त्रियों का चांदी का गहना।
दिङ—अ०(ला०) यहां।
दिङखलछोतमाह—अ० क्रि० (कि०) तृप्त होना।
दिङखुस—वि० (कि०) आंतरिक।
दिङदिङ—वि० (कि०) लबालब, भरपूर।
दिङमो—सं० (ला०) झील।
दिजेनिक—अ० क्रि० (कि०) विश्वास होना।
दिदीक—वि० (कि०) ऐसी।
दिनमिक—वि० (कि०) तना हुआ।
दिमलिई—सं० (कि०) सच।
दिमिई—सं० (कि०) चाबी।
दिमिलमाह—स० क्रि० (कि०) बागडोर संभालना।
दिमिलिमोह—अ० (कि०) सचमुच।
दिमीक—सं० (कि०) चाबी।
दियंदु—अ० क्रि० (कि०) दौड़।
दियूसङ—अ० (कि०) बार।
दियोटू—सं० (कि०) देवता के मंदिर में वाद्ययंत्र बजाने वा व्यक्ति।
दियोरङ—सं० (कि०) देव मंदिर।
दिरमा—सं० (कि०) माला।
दिरश्योपलमाह—स० क्रि० (कि०) बाधा डालना।
दिव—सं० (ला०) दिन।
दिवङ—सं० (कि०) दीपक।
दिहा—सं० (ला०) दिवस।
दिहाई—वि० (ला०) दैनिक।
दिहोत्रा—सं० (ला०) दौहित्र।
दिहोत्री—सं० (ला०) दौहित्री।
दी—सर्व० (कि०) यह।
दीई—सं० (कि०) बड़ा पतीला।
दीकचे—अ० क्रि० (कि०) बंद होना।
दीकारङ—सं० (कि०) डकार।
दीड़ीक—वि० (कि०) ऐसा।
दीतेराती—सं० (ला०) प्रातःकाल।
दीनताअ—सं० (कि०) अभिप्राय।
दीमङ—सं० (कि०) यथार्थ, सत्य।
दीमङछङरङ—सं० (कि०) योग्य संतान।
दीमङलेन—सं० (कि०) अच्छा काम, अच्छा रास्ता।
दीमचें—अ० क्रि० (कि०) संतुष्ट होना।
दीमुक—सं० (कि०) कलम।
दीमूमाह—अ० क्रि० (कि०) विरक्त होना।
दीरीग—अ० (कि०) आज।
दीरीरैपमिक—अ० क्रि० छोटे बच्चों का अपने पांव पर खड़े होने का प्रयास करना।
दीरू—अ० (कि०) यहां।
दीला—सर्व० (कि०) इसको।
दीश्यमाह—अ० क्रि० (कि०) परिचय होना।
दीसङ—सं० (कि०) कूड़ा।
दीसू—सर्व० (कि०) इसने।
दुंग—सं० (कि०) पहाड़।
दुंबा—वि० (कि०) अंगहीन।

दुंबाबङ·माह—अ० क्रि० (कि०) अंगहीन होना।
दु—अ० क्रि० (कि०) है।
दुअलदुचे—सं० (कि०) महफिल।
दुआत—सं० (ला०) दवात।
दुआसिलीज—सं० (कि०) दियासलाई।
दुइबा—स० क्रि० (ला०) दुहना।
दुईबी—वि० (ला०) चालीस।
दुईबिओदश—वि० (ला०) पचास।
दुऊ—सं० (कि०) धनुष।
दुक—अ० क्रि० (कि०) है।
दुकछु—सं० (कि०) ज़हरीला पानी।
दुकपो—वि० (कि०) बुरा।
दुकरे—सं० (कि०) रेज़गारी, छोटे पैसे।
दुकलिङ·—सं० (कि०) धूपदान।
दुकलू—वि० (कि०) दुःख से पीड़ित।
दुकसुपित—वि० (कि०) शक्तिहीन।
दुकुरु—सं० (कि०) छोटे-छोटे तिनके।
दुखई—सं० (ला०) दर्द।
दुखङ·—सं० (कि०) दुःख।
दुखङ·स—वि० (कि०) दुःख से।
दुखचन—वि० (कि०) कठिन।
दुखलमाह—स० क्रि० (कि०) सेंक देना।
दुखवन—वि० (कि०) ज़हरीला।
दुखाण—सं० (कि०) दुकान।
दुखोरा—वि० (ला०) बीमार।
दुगचे—स० क्रि० (कि०) दंड देना।
दुगजेरलमाह—अ० क्रि० (कि०) पीड़ा होना।
दुगती—सं० (कि०) चटनी।
दुगतीपन—सं० (कि०) पीसने का पत्थर।
दुगपो—वि० (कि०) कष्टदायक, कठिन।
दुगलङ·सा—वि० (कि०) अभागा।
दुङ·—सं० (कि०) शंख।
दुङ·ज़ुर—सं० (कि०) बौद्ध मठ में प्रतिष्ठित एक गोल यंत्र जिसमें बौद्ध संप्रदाय के पवित्र मंत्र लिखे होते हैं तथा श्रद्धालु उसे घुमाते हैं।
दुच—अ० क्रि० (कि०) है।
दुची—सं० (कि०) अमृत।
दुचोयहि—अ० (कि०) अतिरिक्त।
दुछोत—सं० (कि०) समय।
दुत—सं० (कि०) दुश्मन।
दुतपो—सं० (कि०) राक्षस।
दुतया—सं० (कि०) गांठ।
दुतारो—सं० (कि०) तीन तारों वाला वाद्ययंत्र।
दुतिहखरा—सं० (कि०) जली हुई पूरी।
दुत्या—सं० (कि०) धूम्रपान।
दुन—वि० (ला०, कि०) सात।
दुन—सं० (ला०) घर के सामने का आंगन।
दुन—सं० (कि०) मृत्यु-गान।
दुनमा—सं० (ला०) अगला।
दुनला—अ० (ला०) आगे की ओर।
दुनतेरू—अ० (कि०) सामने ।
दुननिङ·—सं० (कि०) भयानक ऊंचा शिखर।
दुनबउशवे—सं० (कि०) स्मरण शक्ति।
दुनमङ·—सं० (कि०) मसाले का पौधा विशेष।
दुनमा—सं० (कि०) बैठक।
दुनसा—वि० (कि०) दुःखी।
दुनीछख—सं० (कि०) सप्ताह।
दुन्बालमाह—स० क्रि० (कि०) याद रखना।
दुन्मालमाह—स० क्रि० (कि०) सभा करना।
दुन्मो—सं० (कि०) प्रेतनी।
दुपङ·—सं० (कि०) धूप।
दुप्पमाह—अ० क्रि० (कि०) जलना।
दुफारि—सं० (ला०) कलेवा।
दुबङ·—सं० (कि०) धूप।
दुबदुब—वि० (कि०) नाटा, मोटे अंग वाला।
दुबा—सं० (कि०) चोला।
दुमङ·—सं० (कि०) धुआं।
दुमरयामिक—स० क्रि० (कि०) कूटना।
दुमरा—सं० (कि०) फुलवाड़ी।
दुमसा—सं० (कि०) सभा, बैठक, सम्मेलन।
दुमांदु—सं० (कि०) दे० दुमाख।
दुमा—सं० (कि०) मोटा डंडा।
दुमाख—सं० (कि०) छोटा नगाड़ा।
दुमेला—सं० (कि०) गुलूबंद।
दुयङ·—सं० (कि०) दीपक जलाने के लिए प्रयोग किया जाने वाला घी या तेल।
दुरखो—अ० (कि०) दूर।
दुरदुर—वि० (कि०) पीसा हुआ।
दुरबीई—वि० (कि०) आंखों से टेढ़ा देखने वाला।
दुरमाह—सं० क्रि० (कि०) हराना।
दुरलु—सं० (कि०) Abelia Triflora.
दुरश्यो—सं० (कि०) कुल्या का किनारा।
दुरसा—सं० (कि०) श्मशान।
दुरारू—सं० (कि०) तीन तार वाले वाद्ययंत्र को बजाने वाला।
दुरिच—सं० (कि०) धूपदानी।
दुरी—सं० (कि०) धूपदानी।
दुरूप—सं० (कि०) सीपी।
दुर्गाराजा—सं० (कि०) यमराज।
दुल—सं० (कि०) भेड़-बकरी का मल।
दुलङ·—वि० (कि०) ऊंघा।
दुलथङ·—सं० (कि०) लीद।
दुलन—सं० (कि०) चपाती बनाने के लिए लोई में लगाने हेतु रखा सूखा आटा।
दुलया—सं० (कि०) लड़के।
दुशा—सं० (कि०) बड़ी आंत।
दुश्यमाह—अ० क्रि० (कि०) इकट्ठा होना।

दुश्युहजेमाह— स० क्रि० (कि०) गठियाना।
दुस— सं० (कि०) समय, अवसर।
दुसमुन— सं० (ला०) शत्रु।
दुसमोन— सं० (कि०) वैरी, शत्रु।
दुसरङ— सं० (कि०) धुआं निकालने के लिए बीच छत में किया गया सुराख।
दुसलेखमाह— अ० क्रि० (कि०) समय बदलना।
दुस्तीई— सं० (कि०) शहद। पसीना।
दुहबा— स० क्रि० (ला०) दुहना।
दुहरमाह— स० क्रि० (कि०) मुकाबला करना।
दूंगचाह— स० क्रि० (कि०) बजाना।
दूंगो— सं० (कि०) चोटी।
दू— सं० (कि०) समय।
दू— सं० (कि०) सत्तू का गोला, एक विशेष प्रकार का पकवान।
दूउमाह— स० क्रि० (कि०) संक्षेप करना।
दूउमाह— स० क्रि० (कि०) इकट्ठा करना।
दूक— वि० (कि०) छः।
दूचो— अ० (कि०) और।
दूड़माह— स० क्रि० (कि०) समेटना।
दूबक— सं० (कि०) बंदूक।
दूय— सं० (कि०) जंगली लहसुन।
दूरङ— सं० (कि०) चंवर लेकर किया जाने वाला नृत्य ।
दूरङटीमाह— अ० क्रि० (कि०) हाथ में चंवर लेकर सबसे आगे नाचना।
दूरदूरस— सं० (कि०) ससुराल।
दूरा— सं० (कि०) ईंधन।
दूरे— सं० (कि०) गृहस्थी।
दूरे— अ० (कि०) सबसे आगे।
दूरे— सं० (ला०) दरी।
दूला— सं० (कि०) दे० दुल।
दूसती— सं० (कि०) पसीना।
दूसरङ— सं० (कि०) दे० दुसरङ।
देऊ— सं० (ला०) देव।
देऊरङ— सं० (कि०) देवालय, देवस्थल।
देची— सं० (ला०) दांती।
देचेह— अ० क्रि० (कि०) ठहरना।
देदुम— सं० (कि०) देवता।
देदे— सं० (ला०) बड़ी बहिन।
देनपा— सं० (कि०) सचाई।
देना— सर्व० (कि०) उसमें।
देनेईबोक— वि० (कि०) संबंधित।
देब— सं० (कि०) पुस्तक।
देबले— वि० (कि०) जिसके नयन-नक्श ठीक न हो।
देम— वि० (कि०) सीधा।
देमयेह— स० क्रि० (कि०) बांधना।
देमना— अ० क्रि० (कि०) छत आदि का एक तरफ से बैठ जाना।
देमरा— सं० (कि०) मैदान।
देमिक— अ० क्रि० (कि०) जाना।
देमिग— सं० (कि०) चाबी।
देमी— वि० (कि०) गोरा।
देमों— वि० (कि०) समतल, सीधा। सुंदर।
देम्माह— अ० क्रि० (कि०) थमना, रुकना।
देयन— सं० (कि०) स्त्री, महिला।
देयारुठङ— सं० (कि०) दिहाड़ी, दैनिक।
देरङ— अ० (कि०) तब।
देरमो— सं० (कि०) नाखून।
देरसू-देरङ— अ० (कि०) बार-बार।
देरू— वि० (कि०) शांत।
देलाट— सं० (कि०) दहलीज़।
देवदार— सं० (कि०) Cedrus deodara.
देवसा— सं० (कि०) बैठने का स्थान।
देवाचन— सं० (कि०) स्वर्ग लोक।
देशङ— सं० (कि०) गांव।
देशङुबेडङ— सं० (कि०) देशभक्त।
देश्यङ— सं० (कि०) गांव।
देश्यङपा— वि० (कि०) ग्रामीण।
देश्यङुहदानस— सं० (कि०) गांव की प्रबंधक समिति।
देस— सं० (कि०) देश।
देसङ— अ० (कि०) अभी।
देसो— सं० (कि०) मैदानी क्षेत्र में, देश में।
दैमा— अ० (कि०) तब।
दोंता— सं० (कि०) प्रयोजन।
दोंफमाह— अ० क्रि० (कि०) एक साथ टकराना।
दोंबोर— सं० (कि०) देवता।
दोंवाशुङतमाह— स० क्रि० (कि०) सिद्वांत की रक्षा करना।
दो— सं० (कि०) पत्थर। गुफा।
दोअ— सर्व० (कि०) वह।
दोआंए— वि० (ला०) वैसा ही।
दोइंह— सं० (कि०) कुटिया।
दोऊ— सर्व० (ला०, कि०) उनका।
दोऊ— सर्व० (कि०) उसका।
दोओ— सं० (कि०) डंडा।
दोक— अ० (कि०) तब, अब।
दोकपाटामाह— स० क्रि० (कि०) ताली बजाना।
दोका— सं० (कि०) शक्ल।
दोखछमफ— सं० (कि०) जोड़।
दोखमतोई— सं० (कि०) निःसंशय।
दोखाअ— वि० (कि०) अनर्थ; दोष।
दोगं— सं० (कि०) चेहरा।
दोग— सं० (कि०) कुआं।
दोगचे— अ० (कि०) विरला ही।
दोगतू— अ० (कि०) सामने।
दोगथफ— सं० (कि०) निधारण।
दोगना— अ० (कि०) समीप।

दोगपा— सं० (कि०) ताली।
दोगरील— सं० (कि०) लात।
दोगलो— वि० (कि०) गाढ़ा।
दोगोत— सर्व० (कि०) उस, वह।
दोङ·पो— सं० (कि०) पेड़।
दोङ·बो— सं० (कि०) तना।
दोङ·मो— सं० (कि०) नाली।
दोङ·मो— सं० (कि०) लकड़ी की बनी चाय छलनी।
दोङ·सर— सं० (कि०) दीपक का धागा।
दोङ·ेसमाह— अ० क्रि० (कि०) झपकी आना।
दोच— सं० (कि०) बहिन।
दोछत— सं० (कि०) सोने चांदी की एक ठोस ईंट।
दोतछक— सं० (कि०) लालच।
दोतें— सं० (ला०) प्रात:काल।
दोदपासा— वि० (कि०) लालची।
दोदरङ·ख— अ०(कि०) कमी-कमी।
दोनगु— वि० (कि०) उन्नासी।
दोनङ·ा— वि० (कि०) पचहत्तर।
दोनङु·ग— वि० (कि०) छिहत्तर।
दोनङु·न— वि० (कि०) सतहत्तर।
दोनचिक— वि० (कि०) इकहत्तर।
दोनज़ी— वि० (कि०) चौहत्तर।
दोनझेन— वि ० (कि०) अठहत्तर।
दोनता— वि० (कि०) तिहत्तर।
दोनत्री— वि० (कि०) बहत्तर।
दोनमाह— स० क्रि० (कि०) मांग करना।
दोनमिक— स० क्रि० (कि०) माग करना।
दोना— अ० (कि०) सामने।
दोपोऊ— सर्व० (कि०) उनका।
दोफ— सं० (कि०) आशा।
दोबकायामाह— स० क्रि० (कि०) धमकी देना ।
दोबल्लल— सं० (कि०) आंगन।
दोम— सं० (कि०) भेड़-बकरी को खाने के लिए काटने की क्रिया।
दोम— सं० (कि०) भालू।
दोमचे— अ० क्रि० (कि०) व्यस्त होना।
दोमजेमाह— अ० क्रि० (कि०) सांस रुकना।
दोम दोम— वि० (कि०) कुरूप।
दोमरारिङ·— अ० (कि०) नीचे।
दोमिया— सं० (कि०) दमा।
दोम्यों— अ० (कि०) उस दिन।
दोयङ·— सं० (कि०) दही।
दोरख्वात— सं० (कि०) प्रार्थना पत्र।
दोरच— सर्व० (कि०) उसमें से।
दोरछे— सं० (ला०) लोहे या चांदी का बना पूजा का विशेष पात्र।
दोरयासमू— अ० क्रि० (कि०) दौड़ना।
दोररोऊपिन्माह— स० क्रि० (कि०) उड़ेल देना।
दोरलीई— सं० (कि०) चांदी के मनके का एक गहना।
दोरसे— सं० (कि०) पत्नी।
दोरिङ·— सं० (कि०) मिट्टी की दीवार।
दोरिङ·खोड़दोरिंख— अ० (कि०) निरंतर।
दोरी— सं० (कि०) ऊनी कंबल विशेष।
दोरुक— सं० (कि०) कंकर।
दोरोतीई— सं० (कि०) कंठहार, माला।
दोरोम— सं० (कि०) धर्म।
दोर्जे— सं० (कि०) वज्र।
दोलङ·— सं० (कि०) दल।
दोलमाह— अ० क्रि० (कि०) टूट जाना, कटना।
दोली— सं० (कि०) दो शिखा वाला फल।
दोले— वि० (कि०) साहसी।
दोलोख— सं० (कि०) बोझ के दो भाग।
दोवा— सं० (ला०) पत्थर।
दोशङ·लमाह— अ० क्रि० (कि०) देवी प्रकोप होना।
दोशालमाह— स० क्रि० (कि०) मनमानी करना।
दोशिनिङ·— अ० (कि०) यदि।
दोशोन— सं० (कि०) संवेदना, सांत्वना।
दोस— सर्व० (कि०) उसने।
दोसङ·— सं० (कि०) दोष, प्रकोप।
दोसकोस— सं० (कि०) कूड़ा-कचरा।
दोसपरिङ·— अ० (कि०) उस समय।
दोसुम— वि० (कि०) तिहत्तर ।
दोसोर— वि० (कि०) सार्वजनिक।
दोसोल— सं० (कि०) पक्का कोयला।
दोस्तखत— सं० (कि०) दस्तख़त, हस्ताक्षर।
दौ— सं० (कि०) आंख में पड़ा जाला (रोग)।
दौर— सं० (कि०) सूप में डाली जाने वाली सामग्री।
दौरेनिक— अ० क्रि० (कि०) दौड़ना।
दौरेनु— अ० क्रि० (कि०) दौड़ कर चलना।
द्रंग— सं० (कि०) पक्षाघात।
द्रउबा— अ० क्रि० (ला०) लड़ना।
द्रड़िबा— स० क्रि० (ला०) पीटना ।
द्रडुइबा— अ० क्रि० (ला०) झगड़ना।
द्रबक्यतमाह— अ० क्रि० (कि०) हर कहीं से पानी की बूंदें गिरना।
द्रम— वि० (कि०) युगल।
द्रलमिक— अ० क्रि० (कि०) मेल-जोल होना।
द्रलु— सं० (कि०) छड़ों की बनाई गई आड़।
द्राउण— सं० (ला०) कुश्ती। ।
द्राड़बा— सं० क्रि० (ला०) पीटना।
द्रीमड़— सं० (कि ) जोड़ा ।
द्रगु— सं० (ला०) बच्चा।
द्रेवु— सं० (ला०) देवर।
दवारङ·— सं० (कि०) दरवाज़ा। ।
द्विजोत— सं० (कि०) दूज
द्विविशेदस— वि० (कि०) पचास।

## ध

**धचुरूपरू**— वि० (कि०) चंचल।
**धन**— सं० (कि०) पेट।
**धनिस**— सं० (कि०) मालिक।
**धराऊमेङखङ**— वि० (कि०) सफेद।
**धर्मी-गोल**— सं० (कि०) दे० धर्मी महीना।
**धर्मेर-भाई**— सं० (ला०) धर्म भाई।
**धीखेरङ**— सं० (कि०) गाय आदि पशु के ब्याने के बाद दो दिन का दूध।
**धीटोमाह**— स० क्रि० (कि०) बांटना।
**धीथलक**— सं० (कि०) वस्त्र।
**धीलशा**— सं० (कि०) ताला।
**धुइङ**— सं० (कि०) धुंध।
**धुका**— सं० (कि०) नल।
**धुतुहकिमाह**— स० क्रि० (कि०) बांध कर ले जाना।
**धुपोती**— सं० (कि०) धूप।
**धुमति**— सं० (कि०) दो नदियों का संगम।
**धुमलयामिक**— स० क्रि० (कि०) अनाज आदि को डंडे द्वारा कूटना।
**धुरधुरङ**— सं० (कि०) फलों के गिरने की क्रिया।
**धूपची**— सं० (कि०) बटन।
**धूमङ**— सं० (कि०) धुआं।
**धेतोरकतोर**— वि० (कि०) बिखरा हुआ।
**धोंरि**— सं० (ला०) धुंध।
**धोआं**— सं० (कि०) अंडा।
**धोइबा**— स० क्रि० (ला०) धोना। अ० क्रि० नहाना।
**धोईमे**— अ० क्रि० (कि०) नहाना।
**धोङयामिक**— स० क्रि० (कि०) बछड़ों को हल के लिए तैयार करना।
**धोतपी**— वि० (कि०) निपुण।
**धोना**— सं० (कि०) रंग।
**धोर्मशाला**— सं० (कि०) धर्मशाला।
**ध्याह**— सं० (ला०) देर।
**ध्याईभुवा**— अ० क्रि० (ला०) देर होना।
**धपचिस**— सं० (कि०) आंसू या रक्त बहने का भाव।
**धसमिक**— अ० क्रि० (कि०) उघड़ना।
**धाचिबा**— स० क्रि० (ला०) कुचलना।
**धीबा**— स० क्रि० (ला०) घसीटना।
**ध्वाथिह**— सं० (कि०) मांगने वाला, भिखारी।

## न

**नंग**— सं० (कि०) कमरा।
**नंग**— अ० (कि०) अंदर।
**नंद्रा**— सं० क्रि० (कि०, ला०) खींचना।
**नंफमाह**— अ० क्रि० (कि०) बुझ जाना।
**न:ङ**— सं० (कि०) थाली।
**न:त**— सं० (कि०) विश्राम स्थल।
**न:र**— सं० (कि०) गिनती।
**नअ**— अ० (कि०) अंदर।
**नआं**— सं० (कि०) चहल-पहल।
**नउ**— वि० (ला०) नौ।
**नउडू**— सं० (ला०) नेवला।
**नऊग्रह**— सं० (ला०) नवग्रह।
**नऊथ**— वि० (कि०) भीतरी।
**नऊथखिसोअ**— वि० (कि०) जेबकतरा, पाकिटमार।
**नकचा**— वि० (कि०) सही।
**नकचोक**— वि० (कि०) अच्छे नैन-नक्श वाला।
**नकटो**— वि० (कि०) नकटा।
**नकती**— सं० (कि०) नासूर।
**नकपो**— वि० (कि०) काला।
**नकशु**— सं० (कि०) देवता।
**नकसीरङ**— सं० (कि०) नकसीर।
**नकाला**— अ० (कि०) अंदर।
**नकिथ**— वि० (कि०) बारीक।
**नकीच**— वि० (कि०) बारीक।
**नकीचे**— वि० (कि०) दुबली-पतली।
**नकीचेआ**— वि० (कि०) दुबला-पतला।
**नकोरा**— सं० (कि०) तिब्बती यात्री।
**नखनुं**— वि० (कि०) नाक से बोलने वाला।
**नखशु-पखशु**— सं० (कि०) कष्ट पहुंचाने वाला ग्राम देव।
**नखुलखुलमाह**— अ० क्रि० (कि०) पीप भरना।
**नखुलखुलुह**— अ० क्रि० (कि०) दे० नखुलखुलमाह।
**नखुलमाह**— अ० क्रि० (कि०) पीतरोग होना।
**नग**— सं० (कि०) पीप।
**नगचा**— सं० (कि०) सिपाही।
**नगपा**— सं० (कि०) घर दामाद।
**नगर**— सं० (ला०) ग्राम।
**नगसे**— सं० (कि०) गहरी पीप।
**नगार**— सं० (कि०) नगाड़ा।
**नङ**— अ० (कि०) वहां, पार।
**नङ**— अ० (कि०) और।
**नङखमाह**— अ० क्रि० (कि०) गले में अटकना।
**नङचोत**— सं० (कि०) प्रात: कालीन स्तुति।
**नङटा**— वि० (ला०) गंजा।
**नङडीवङसाह**— अ० क्रि० (कि०) संधि होना।
**नङतर**— अ० (कि०) अपनी धुन में।
**नङता**— सं० (कि०) परवाह।
**नङदङ**— वि० (कि०) अंदर वाला, आभ्यंतरी।
**नङनङ**— अ० (कि०) समीप।
**नङमतोई**— वि० (कि०) निराधार, निरर्थक।
**नङरोल**— वि० (कि०) अंदरूनी।

नङलोख— वि० (कि०) दे० नङरोल।
नङश्या— सं० (कि०) अंतड़ियों का मांस।
नङु— अ० (कि०) भीतर।
नङुथ— वि० (कि०) भीतरी।
नचवा— अ० क्रि० (ला०) नाचना।
नछा— सं० (कि०) रोग।
नछुङ— सं० (कि०) नवयुवती।
नछोगरुअङ— वि० (कि०) बहुरंगी।
नजांता— वि० (ला०) अनजान।
नजाइस— वि० (कि०) अनुचित।
नजानो— वि० (ला०) अनजान।
नज़ीक— अ० (कि०) नज़दीक।
नतखा— वि० (कि०) आपत्तिजनक।
नतपासा— वि० (कि०) रोगी।
नतमतोई— वि० (कि०) असंख्य।
नतमाह— स० क्रि० (कि०) उतारना।
नथरङ— सं० (कि०) नकसीर।
नदपा— वि० (कि०) गीत गाने वाला; वाद्य बजाने वाला।
ननट्री— सं० (कि०, ला०) खींचना।
ननतलमाह— अ० क्रि० (कि०) नाराज़ होना।
ननमाह— स० क्रि० (कि०) दबाना।
ननुहपिन्माह— स० क्रि० (कि०) दबा देना, परास्त करना।
नपचा— सं० (कि०) छलनी।
नपयामिक— स० क्रि० (कि०) नापना।
नपाईश— सं० (कि०) पैमाइश।
नपैचया— वि० (कि०) लचकदार।
नफातुई— वि० (कि०) लाभदायक।
नब— अ० (कि०) कल।
नम— सं० (कि०) आकाश।
नम— अ० (कि०, ला०) कब। वि० कल।
नमक्यो— सं० (कि०) चक्कर रोग।
नमगादोक— वि० (कि०) आसमानी रंग।
नमङ— वि० (कि०) नया।
नमङमी— वि० (कि०) अजनबी, अपरिचित।
नमचोअग— सं० (ला०) कान।
नमछोक— सं० (कि०) कान।
नमज़ा— सं० (कि०) वस्त्र।
नमज्ञा— सं० (ला०) पाजामा।
नमडु— सं० (कि०) वायुयान।
नमथर— सं० (कि०) वृत्तांत।
नमदो— सं० (कि०) ऊन का बना विशेष आसन या बिछौना।
नमबुर-बुर— सं० (कि०) संध्या समय।
नमबुरिहप्याथ— सं० (कि०) चमगादड़।
नममथ— सं० (कि०) प्रातः।
नमरमेतपा— सं० (कि०) परिणाम।
नमरूरन— सं० (कि०) मौसम का लक्षण।
नमला— सं० (कि०) मौसम।
नमवुरु— अ० क्रि० (कि०) रात होना।
नमश्या— सं० (कि०) बहू।
नमश्याकिमाह— अ० क्रि० (कि०) विवाह करना।
नमश्यामकिऊ— वि० (कि०) अविवाहित।
नमसङ— सं० (कि०) प्रातःकाल।
नमांछङ— सं० (कि०) अरुणोदय, सूर्योदय।
नमानछाख— वि० (कि०) रंगबिरंगा।
नमानोखलो— वि० (कि०) विचित्र।
नमिन— वि० (कि०) उपजाऊ।
नमुछायङ— सं० (कि०) आकाश का प्रकाश, आकाश गंगा।
नमुहकत— सं० (कि०) आकाशवाणी।
नमो— सं० (कि०) जंगली बकरी।
नम्मत— अ० (कि०) प्रातः।
नम्मत— सं० (कि०) चरणामृत। स० क्रि० देव मंदिर में नौबत बजाना।
नयोलिच— सं० (कि०) नेवला।
नरक्या— अ० (कि०) पिछले साल।
नरथ— सं० (कि०) अनर्थ।
नरथमाह— स० क्रि० (कि०) कहलाना।
नरनर— अ० (कि०) पंक्ति में।
नरमाह— स० क्रि० (कि०) गिनना।
नरमिक— स० क्रि० (कि०) गिनती करना।
नररो— सं० (कि०) अपस्मार रोग।
नरवाते— सं० (कि०) नवरात्र।
नलमिक— अ० क्रि० (कि०) मुरझाना।
नलाकला— सं० (कि०) तंत्र-मंत्र।
नवां— अ० (कि०) वहां।
नवापो— वि० (कि०) काला।
नशवा— अ० क्रि० (ला०) जाना।
नशिगछबा— अ० क्रि० (ला०) दौड़ना।
नशिबा— अ० क्रि० (ला०) भाग निकलना।
नशुपा— अ० (कि०) अगले कल की शाम।
नसतेलङ— सं० (कि०) नकसीर।
नसम— अ० (कि०) आने वाले कल की सुबह।
नसान— सं० (कि०) देवताओं के वाद्ययंत्र।
नसार— सं० (कि०) नसवार, नस्य।
नसियौल— सं० (कि०) नसीहत।
नसीमी— वि० (कि०) रोगी।
नसुबेसपा— सं० (कि०) तीर्थ यात्री।
नांगटू— वि० (ला०) नंगा।
ना.मना.स— वि० (कि०) बासी।
ना.मशित— अ० क्रि० (कि०) बासी होना।
ना— सं० (कि०) नाक। तीर्थ। श्लेष्मा।
नाअप— सं० (कि०) छींक।
नाआ— सं० (कि०) पीप।
नाइङ— सं० (कि०) नाभि।
नाइदु— वि० (ला०) शरारती।
नाई— अ० (कि०) नहीं।
नाई— सं० (कि०) मामी।

**नाकोंग**—सं० (कि०) स्याही की दवात।
**नागलाडुपचे**—स० क्रि० (कि०) अन्दर करना।
**नागलिक**—सं० (ला०) छिपकली।
**नागिन**—सं० (कि०) सर्प देवी।
**नागिनकायड़**—सं० (कि०) ग्राम देवी का विशेष नृत्य।
**नागुर**—सं० (ला०) ग्राम।
**नागेस**—सं० (कि०) नागदेवता।
**नागोग**—सं० (कि०) शपथ।
**नाड़**—अ० (ला०) अंदर।
**नाड़कोट**—सं० (कि०) खाद्य पदार्थ व पात्र आदि रखने की लकड़ी की अलमारी।
**नाड़च**—सं० (कि०) कांसे की कटोरी, प्याला।
**नाड़मो**—अ० (ला०) आगामी दिन।
**नाड़ला**—अ० (ला०) अंदर की ओर।
**नाचिता**—सं० (ला०) नर्तक।
**नाछोख**—वि० (कि०) रंग-बिरंगा।
**नाथमाह**—अ० क्रि० (कि०) चोट लगना।
**नाने**—सं० (कि०) मामी।
**नापानेस**—अ० (कि०) उस पार, उधर।
**नाफनड़**—अ० (कि०) उधर।
**नामकुनि**—सं० (कि०) अतिथि।
**नामड़**—सं० (कि०) नाम।
**नामशा**—सं० (कि०) बहू।
**नामा**—सं० (कि०) पत्नी।
**नार**—सं० (ला०) हुक्का।
**नार**—सं० (कि०) पत्नी।
**नारछड़**—सं० (कि०) बाल-बच्चे।
**नारतिमाह**—स० क्रि० (कि०) हिसाब लगाना।
**नारामाह**—स० क्रि० (कि०) फैलाना।
**नाराश्यमाह**—अ० क्रि० (कि०) छिन्न-भिन्न होना।
**नारियम**—अ० क्रि० (कि०) ठहरना।
**नारे**—सं० (कि०) चाल।
**नारैण**—सं० (कि०) नारायण।
**नालड़**—सं० (कि०) नाला।
**नालपुड़माह**—स० क्रि० (कि०) बंदूक भरना।
**नालपुड़माह**—स० क्रि० (कि०) चुगली लगाना।
**नाला कन्ना**—सं० (कि०) तेली।
**नालिया**—सं० (कि०) बंदूक धारी।
**नाश**—सं० (ला०) नाखून।
**नाशड़**—सं० (कि०) ज़ख्म।
**नाशमाह**—अ० क्रि० (कि०) रुकना।
**नाशीम**—अ० क्रि० (कि०) विश्राम करना।
**नाशेन**—सं० (कि०) पवित्र तीर्थ।
**नाश्यम**—अ० (कि०) वहां तक।
**नासपति**—सं० (कि०) नाशपाती।
**नासोग**—अ० (कि०) कल।
**नाह**—सं० (ला०) नाभि।
**निंदयालानमिक**—अ० क्रि० (कि०) लालच करना।
**निंफेत**—अ० (कि०) आधा दिन।
**निआ**—अ० (ला०) निकट।
**निऊंछायड़**—सं० (कि०) सूर्य की किरणें।
**निऊंमऊंप्रामाह**—स० क्रि० (कि०) धूप में सुखाना।
**निओतोला**—सं० (ला०) आषाढ़ मास।
**निकालयामिक**—स० क्रि० (कि०) जबरदस्ती निकालना।
**निकुंग**—सं० (कि०) नाक के नथुने।
**निकेरबा**—स० क्रि० (ला०) झाड़ू लगाना।
**निक्युंशु**—सं० (कि०) सूर्य देव।
**निखरोड़**—सं० (कि०) भौंहें।
**निखिईगुखई**—सं० (कि०) विशेष संबंध।
**निड़**—सर्व० (कि०) मेरा, हमारा।
**निड़**—वि० (ला०) प्यारा।
**निड़**—सं० (कि०) दिल।
**निड़खमाह**—अ० क्रि० (कि०) पुराना होना।
**निड़खा**—सं० (कि०) भीतरी भाग।
**निड़जे**—सं० (कि०) दया।
**निड़थमखुलामाह**—स० क्रि० (कि०) रहस्य खोलना।
**निड़पड़**—सर्व० (कि०) हम लोग।
**निड़मतोई**—वि० (कि०) पत्थर दिल।
**निड़लुड़**—सं० (कि०) हृदय रोग।
**निड़सा**—सर्व० (कि०) दे० निड़पड़।
**निड़ा**—सर्व० (कि०) हम लोग।
**निछला**—वि० (कि०) निष्कपट, ईमानदार, साफ दिल का।
**निजिन**—सं० (कि०) सूर्यग्रहण।
**निजिरीफोख**—अ० (कि०) पूर्व की ओर।
**निजोड़साय**—वि० (कि०) तीस।
**निशातिह**—वि० (कि०) पश्चिम।
**निशेत-शेत**—सं० (कि०) सूर्यास्त का समय।
**निआ**—अ० क्रि० (कि०) है।
**निआमणि**—अ० क्रि० (कि०) है या नहीं।
**निडबा**—स० क्रि० (ला०) निराई करना।
**नित्रोज**—अ० (कि०) परसों।
**निपमाह**—अ० क्रि० (कि०) समा जाना।
**निपूरी**—सं० (ला०) प्रथम मंज़िल।
**निमा**—सं० (कि०) सूर्य।
**निमित**—वि० (कि०) छोटा।
**निमोकुमों**—अ० (कि०) दिन-दिहाड़े।
**निम्मी**—सं० (कि०) दिन।
**नियुकचा**—सं० (ला०) छुरी।
**निरविसी**—सं० (कि०) Delphinium vestitum.
**निरूथलवथ**—अ० (कि०) दिन के बाद।
**निरोल**—सं० (कि०) भीतरी प्रकाश।
**निरोल**—सं० (कि०) देव मंदिर के साथ निर्मित एक अ मंदिर जिसमें मुखौटे आदि पूजा के लिए रखे जाते हैं।
**निरोलमोण्यामिक**—स० क्रि० (कि०) विशेष अवसरों 'निरोल' का पूजन करना।
**निलगड़माह**—अ० क्रि० (कि०) दाढ़ सूजना।

**निलछणा**— वि० (ला०) दुर्बल।
**निलमाह**— अ० क्रि० (कि०) सूखना।
**निला**— वि० (ला०) नीला।
**निला**— सं० (ला०) माथा।
**निलिम**— सं० (कि०) नीलम।
**निलीसरनाल**— सं० (कि०) Gentiana argentia.
**निश**— वि० (कि०) दो।
**निशखनङ**— सं० (कि०) दो टुकड़े।
**निशनिज़ा**— वि० (कि०) दो बीस अर्थात् चालीस।
**निशबा**— वि० (कि०) दोहरा, दो तहों वाला।
**निशरा**— वि० (कि०) दो सौ।
**निशां**— सं० (ला०) नगाड़ा।
**निशि**— सं० (ला०) नाखून।
**निशी**— सर्व० (कि०) हम दोनों।
**निश्य**— वि० (कि०) दो।
**निश्यबुङ**— वि० (कि०) दोबारा।
**निश्यस्मां**— अ० (कि०) कुछ दिन।
**निश्यहद्रीमङ**— वि० (कि०) दो आधार वाला।
**निसा**— वि० (कि०) बीस।
**निसान**— सं० (कि०) वाद्ययंत्र।
**निसिप**— वि० (कि०) दो भाग।
**निसिबा**— अ० क्रि० (ला०) टपकना।
**निस्वा**— स० क्रि० (ला०) उठना।
**नीं**— सं० (कि०) छोटा भाई।
**नीं**— सं० (कि०) सूर्य।
**नींज्ञतमाह**— अ० क्रि० (कि०) सूर्यास्त होना।
**नींटोश्यामाह**— अ० क्रि० (कि०) धूप तापना।
**नींदर**— सं० (ला०) नींद।
**नी**— अ० (कि०) हां।
**नीजा**— वि० (कि०) बीस।
**नीजाऊहद**— वि० (कि०) इक्कीस।
**नीजाऊसे**— वि० (कि०) तीस।
**नीजुरी-फोख**— सं० (कि०) पश्चिम।
**नीदरङ**— सं० (कि०) नींद।
**नीदरङखुलया**— वि० (कि०) अधिक सोने वाला।
**नीमलाए**— अ० (कि०) दोपहर बाद।
**नीमा**— सं० (कि०) दिन का भोजन।
**नीमा**— अ० क्रि० (कि०) हो।
**नीमू**— अ० क्रि० (कि०) रहना।
**नील**— सं० (कि०) मसूड़े।
**नीलासरगरठो**— वि० (ला०) हरा।
**नीशनीजाऊसे**— वि० (कि०) पचास।
**नु**— सर्व० (कि०) वह।
**नुअथआअ**— अ० (कि०) आर-पार।
**नुआं**— अ० (कि०) उधर।
**नुई**— वि० (ला०) नई।
**नुकरी**— स्त्री० (कि०) नौकरी, सेवा।
**नुकु**— सं० (कि०) कलम।
**नुकूर**— सं० (कि०) नौकर।
**नुक्सा**— सं० (कि०) अंदाज़ा।
**नुखसान**— सं० (कि०) हानि।
**नुगो**— सं० (कि०) वह।
**नुङजुङयामाह**— स० क्रि० (कि०) हिलाना, धकेलना।
**नुज़ाज़िग**— सं० (कि०) सगी बहनें।
**नुजबाज़**— सं० (कि०) सगे भाई।
**नुप**— सं० (कि०) पश्चिम।
**नुम**— सं० (कि०) चिकनाहट।
**नुमखुर**— सं० (कि०) परांठा।
**नुमापनुह**— वि० (कि०) तैलयुक्त।
**नुवफोख**— अ० (कि०) पश्चिम की ओर।
**नुसको**— अ० (कि०) पीछे की ओर।
**नुसहनमाह**— स० क्रि० (कि०) दोष निकालना।
**नूफू**— सं० (कि०) कबूतर।
**नूम**— सं० (कि०) टोपी।
**नूमा**— सं० (कि०) थन।
**नूमाह**— स० क्रि० (कि०) धकेलना।
**नूशङ**— सं० (कि०) अन्न के छिलके।
**नूस**— सर्व० (कि०) उसने।
**नेंपू**— सं० (कि०) ऊनी कपड़ा।
**ने**— सं० (कि०) जौ।
**ने**— अ० (कि०) वहां।
**नेइरमच्छ**— सं० (ला०) मछली।
**नेएलुग**— सं० (कि०) स्थिति।
**नेकचुंग**— वि० (कि०) बिल्कुल काला।
**नेच्रया**— सं० (कि०) ज्ञान।
**नेचो**— सं० (कि०) तोता।
**नेनङ**— सं० (कि०) नींद।
**नेनलत**— स० क्रि० (कि०) ध्यान रखना।
**नेनलमाह**— स० क्रि० (कि०) मैत्री करना।
**नेनी**— वि० (कि०) कई।
**नेमदामेसेरशे**— स० क्रि० (कि०) हठ करना।
**नेमा**— सं० (कि०) पूंछ।
**नेमिक**— स० क्रि० (कि०) जानना।
**नेमीनाजो**— वि० (कि०) अनेक।
**नेमों**— वि० (कि०) समीप, नज़दीक।
**नेमोंनेमोंह**— अ० (कि०) पास-पास।
**नेमोंलोख**— वि० (कि०) समीपवर्ती।
**नेरङ**— अ० (कि०) समीप।
**नेरङदेस**— सं० (कि०) सामीप्य।
**नेरपा**— सं० (कि०) पुजारी।
**नेरमा**— सं० (कि०) माथे की झुर्रियां।
**नेराश्यमाह**— स० क्रि० (कि०) व्यवहार करना।
**नेरेमसा**— वि० (कि०) निर्दय।
**नेल**— सं० (कि०) नीला रंग।
**नेलिङ**— सं० (कि०) चूल्हा।
**नेवलिच**— सं० (कि०) नेवला।

नेस—अ० (कि०) उधर।
नेसमाह—अ० क्रि० (कि०) साफ होना।
नेसमिक—अ० क्रि० (कि०) आसमान का साफ होना।
नेसलो—अ० (कि०) इधर-उधर।
नोंओमाह—स० क्रि० (कि०) रगड़ना।
नोंसाह—स० क्रि० (कि०) निचोड़ना।
नो—सं० (कि०) अनुज।
नोअ—सं० (कि०) पशु के पेट का निचला भाग।
नोआब—सं० (कि०) नवाब।
नोए—स० क्रि० (कि०) खरीदना।
नोओंमाह—स० क्रि० (कि०) मसलना।
नोकसमसफसा—वि० (कि०) विचारशील।
नोखु—सं० (कि०) रत्न।
नोखोली—वि० (कि०) नकली।
नोगनोज़—वि० (कि०) आयताकार।
नोगोथ—वि० (कि०) नकद।
नोङलमाह—अ० क्रि० (कि०) संकोच करना।
नोत—सं० (कि०) प्रकोप।
नोतक्यलमाह—स० क्रि० (कि०) हानि पहुंचाना।
नोतक्यलिह—वि० (कि०) हानिकारक।
नोतेऊ—सर्व० (कि०) इनका, उनका।
नोनकमाह—अ० क्रि० (कि०) एक-एक करके इकट्ठा होना।
नोनचन—सं० (कि०) चिकनाहट।
नोनमाह—स० क्रि० (कि०) पूर्ण करना।
नोपङ—सर्व० (कि०) वे लोग।
नोपजिपा—अ० (कि०) पीठ पीछे।
नोफोखुह—स० क्रि० (कि०) हाथ से घिसाना।
नोमिऊ—सर्व० (कि०) इनका।
नोमिक—स० क्रि० (कि०) रगड़ना, मालिश करना।
नोमी—सं० (कि०) अनुजा।
नोम्यां—अ० (कि०) उस दिन।
नोर—सं० (कि०) धन, संपत्ति।
नोर—सं० (ला०) आभूषण।
नोरक्यई—वि० (कि०) खर्चीला।
नोरङ—स० (कि०) उलाहना।
नोरङरन्निक —स० क्रि० (कि०) उलाहना देना।
नोरजिसटोलामाह—अ० क्रि० (कि०) इधर-उधर झांकना।
नोरतमाह—अ० क्रि० (कि०) पानी का रिसना।
नोरथमाह—अ० क्रि० (कि०) भूलना।
नोरदुमाह—स० क्रि० (कि०) धन संग्रह करना।
नोरमतोई—वि० (कि०) निर्धन।
नोरसा—वि० (कि०) धनी।
नोरूराशियङ—सं० (कि०) धन का ढेर।
नोरोक—सं० (कि०) नरक।
नोलमाह—स० क्रि० (कि०) रौंदना, मरोड़ना।
नोलिङ —अ० (कि०) पिछला साल।
नोश्यमाह—स० क्रि० (कि०) रगड़ना।
नोसजिसख्यङमाह—अ० क्रि० (कि०) इधर-उधर भटकना।
नोसवङमाह—अ० क्रि० (कि०) दूर हटना।
नोहरमाह—अ० क्रि० (कि०) गलत होना।
नौखरे—सं० (कि०) नखरा।
नौतोर—सं० (कि०) नई भूमि।
न्योचमू—अ० क्रि० (कि०) खेलना।

## प

पंकट—सं० (कि०) तकली।
पंथल—वि० (कि०) पथरीला।
पंथलिथ—सं० (कि०) छत आदि पर लगाया जाने वाला पत्थर।
पंद—सं० (कि०) Loranthus elatus, loranthus Vestitus.
प:ख—सं० (कि०) घोड़े का खुर।
प:खल—सं० (कि०) कच्ची उमर।
प:ग—सं० (कि०) चाय में सत्तू मिलाने की क्रिया।
प:ङमिक—स० क्रि० (कि०) चिनाई करना।
प:न—सं० (कि०) शिला जिस पर दाल, मसाला आदि पीसा जाता है।
प:नङ—सं० (कि०) ढलान।
प:नमिक—स० क्रि० (कि०) कातना।
प:न्निक—स० क्रि० (कि०) पहुंचाना।
प:पङ—सं० (कि०) चरागाह।
प:बङ—सं० (कि०) बहुत ऊंचाई पर स्थित चरागाह।
प:बङसा—वि० (कि०) चौपाया।
प:लो—सं० (कि०) पल्ला।
प:शरिङ—सं० (कि०) करवट।
प:श्टा—वि० (कि०) फीका।
प—वि० (कि०) चार।
पउथा—सं० (ला०) हथेली।
पऊली—स० क्रि० एक पुराना सिक्का।
पक—सं० (कि०) पिस्सू।
पकफा—सं० (कि०) ऊन सहित ऐसी खाल जो आसन के काम आती है।
पक-लो—स० (कि०) पिस्सू का वर्ष।
पक-लो—सं० (कि०) आयु सूचक।
पकाइबा—स० क्रि० (ला०) पकाना।
पकाइबा—स० क्रि० (ला०) उबालना।
पकामीई—वि० (कि०) दृढ़ निश्चयी।
पकायोह—वि० (कि०) निश्चित।
पकोटमालदु—सं० (ला०) हार।
पकोराउबालला—वि० (ला०) उबला हुआ।
पखङ—सं० (कि०) पंख।
पखङ—सं० (कि०) बर्फ गिरने का माप।
पखटईशङ—सं० (कि०) लात मारने वाला घोड़ा।

**पख्रिबा**—स० क्रि० (ला०) चुनना।
**पगुणा**—वि० (कि०) चौगुना।
**पगुरी**—सं० (कि०) पगड़ी।
**पङ·गोथ**—सं० (कि०) साथी।
**पङ·दारङ·**—सं० (कि०) मकान की चिनाई में प्रयुक्त होने वाली शहतीर।
**पङ·माह**—स० क्रि० (कि०) चिनाई करना।
**पङ·मिक**—स० क्रि० (कि०) भरना।
**पचउरा**—वि० (ला०) उबला हुआ।
**पचतमाह**—अ० क्रि० (कि०) पचना।
**पच-पच**—अ० (कि०) 'हटो-हटो', बहुत भीड़ के बीच में से गुजरते हुए 'हटो-हटो' अर्थ दर्शाता शब्द।
**पचबातङ·**—सं० (कि०) सही बात।
**पचयामिक**—स० क्रि० (कि०) पचाना।
**पचली**—सं० (कि०) विशेष प्रकार का जूता।
**पचाइबा**—स० क्रि० (ला०) पकाना।
**पचामाह**—स० क्रि० (कि०) धोखा देना, पचाना, गबन करना।
**पचिबा**—अ० क्रि० (ला०) पकना।
**पचोरा**—वि० (ला०) पक्व।
**पजयामिक**—स० क्रि० (कि०) पूजा करना।
**पज़र**—सं० (कि०) मकान के चारों कोने।
**पजरगिच**—सं० (कि०) पालथी।
**पजारस**—सं० (कि०) पुजारी।
**पजिर**—सं० (कि०) घर।
**पज़िर**—सं० (कि०) मकान के चारों कोने।
**पञी-पञी**—अ० (क्रि०) हट-हट, दूर हट।
**पटकेन्निक**—अ० क्रि० (कि०) तड़पना।
**पटङ·**—सं० (कि०) मकान की एक तरफ लगाया लंबा तख्ता जिस पर सामान आदि रखते हैं, मकान की दीवार के साथ लगा तख्ता जिस पर बैठते हैं।
**पटपटेसमिक**—अ० क्रि० (कि०) बिगड़ना, रूठने पर क्रोध प्रकट करना।
**पटलङ·**—सं० (कि०) पत्ता, झड़े हुए पत्ते।
**पटले**—वि० (कि०) विभिन्न रंग वाली, दो रंगों वाला मादा पशु।
**पटले-दोहरी**—सं० (कि०) दो रंग का बड़ा पट्टू।
**पटलेस**—वि० (कि०) पंचरंगी।
**पटी**—सं० (कि०) टोपी में लगने वाली पट्टी।
**पटौक**—सं० (कि०) दाना, फल या अन्न आदि का दाना। बच्चे के लिए प्रयुक्त प्रेम सूचक शब्द।
**पट्ट**—सं० (ला०) शिला, बड़ा और चौड़ा पत्थर।
**पठङ·**—सं० (कि०) रिवाज़।
**पड़ा**—सं० (ला०) मैदान।
**पढ़बा**—स० क्रि० (ला०) पढ़ना।
**पढ़ाइबा**—स० क्रि० (ला०) पढ़ाना।
**पतम**—सं० (कि०) बकरा काटने का शस्त्र।
**पतयामिक**—स० क्रि० (कि०) मनाना, पुचकारना।
**पतलङ·**—सं० (कि०) पत्तल।
**पतलेस**—वि० (कि०) पतला।
**पताइबा**—स० क्रि० (ला०) गिराना।
**पतारयापन्निक**—अ० क्रि० (कि०) शर्मिंदा होना।
**पतारयामिक**—स० क्रि० (कि०) शर्मिंदा करना।
**पतारयामाह**—स० क्रि० (कि०) दे० पतारयामिक।
**पथयामिक**—स० क्रि० (कि०) लेपना।
**पथरंग**—सं० (कि०) पत्ता।
**पथामाह**—स० क्रि० (कि०) लेप करना।
**पद**—सं० (कि०) भोजपत्र।
**पदरेस**—वि० (कि०) समतल।
**पनठङ·**—सं० (कि०) कमरे का भीतरी भाग।
**पनमाह**—स० क्रि० (कि०) कातना।
**पनारङ·**—सं० (कि०) चमड़ा।
**पनिङ·**—सं० (कि०) गोला। बचा हुआ भोजन जो पशुओं को दिया जाता है।
**पनीजा**—वि० (कि०) चार-बीस अर्थात् अस्सी।
**पनीजाऊसे**—वि० (कि०) नब्बे।
**पन्ना**—सं० (ला०) हस्तरेखा ।
**पन्निक**—स० क्रि० (कि०) पकाना।
**पन्युत**—सं० (कि०) बाना।
**पया**—सं० (कि०) माथा।
**पयाऊतामा**—स० क्रि० (कि०) फेंकना।
**पयाङ·**—सं० (कि०) खूबानी या आड़ू आदि का छिलका।
**पयाङ·मिक**—स० क्रि० (कि०) डराना। छिलका उतारना।
**पयादि**—सं० (ला०) सांयकाल।
**पयामाला**—सं० (कि०) भाग्य।
**पयामाह**—स० क्रि० (कि०) फेंकना।
**पयामिक**—स० क्रि० (कि०) फेंकना।
**पयाशमाह**—अ० क्रि० (कि०) लड़खड़ाना।
**पर**—सं० (कि०) तस्वीर।
**परकोरिङ·**—सं० (कि०) देवता द्वारा विशेष स्थान पर नमन करने की क्रिया ।
**परखा**—सं० (कि०) भाग्य।
**परख्यामिक**—स० क्रि० (कि०) परखना, जांचना।
**परचा**—स० क्रि० (कि०) जलाना।
**परचूंडी**—वि० (कि०) कुशल, तेज़।
**परमिक**—स० क्रि० (कि०) जलाना।
**परमेशरस**—सं० (कि०) परमेश्वर।
**परमेसुर**—सं० (ला०) परमेश्वर।
**परशुई**—अ० (ला०) परसों।
**परशो**—स० क्रि० (कि०) जलाना।
**परसंद**—सं० (कि०) पसंद।
**पराग**—सं० (कि०) Rhoclodendron arboreum.
**परामिक**—स० क्रि० (कि०) फैलाना।
**परिकोरमा**—सं० (कि०) परिक्रमा।
**परे**—अ० (ला०) परसों।
**परेमिक**—स० क्रि० (कि०) सुखाने के लिए डाले अनाज आदि

को हिलाना।

**परेश्यमाह**—स० क्रि० (कि०) समेटना।

**परोमिक**—स० क्रि० (कि०) पहनाना, देवता को कपड़े पहनाना।

**परोशमिक**—स० क्रि० (कि०) पहनना, सुंदर कपड़े पहनना, सजना-धजना।

**पलंग**—सं० (ला०) गाय।

**पलख**—सं० (ला०) क्षण।

**पलगी**—सं० (कि०) पालकी।

**पलटाइबा**—स० क्रि० (ला०) वापस करना।

**पलटुइबा**—अ० क्रि० (ला०) वापस होना।

**पलतुरु**—अ० (कि०) बारी-बारी से।

**पलतुरुलमाह**—स० क्रि० (कि०) अपनी-अपनी बारी लगाना।

**पलपुल**—सं० (कि०) गोधूलि बेला।

**पलबोर**—अ० (कि०) क्षणभर।

**पलमो**—सं० (कि०) श्रीमती।

**पलस**—वि० (कि०) कच्चा।

**पलाइबा**—अ० क्रि० (ला०) सवार होना।

**पलाइबा**—स० क्रि० (ला०) पैना करना, तेज़ करना।

**पलाल**—सं० (ला०) भूसा।

**पले**—अ० (कि०) पास।

**पलेस**—वि० (कि०) ढीला, काम करने में कमज़ोर।

**पल्लो**—सं० (कि०) तेल मापने का पात्र।

**पश**—सं० (कि०) पहलू।

**पश**—सं० (कि०) घुटना।

**पश**—सं० (कि०) बिल्ली।

**पशटिड·**—सं० (कि०) पीठ।

**पशबाड·**—सं० (कि०) घुटना।

**पशमिक**—स० क्रि० (कि०) बीजना।

**पशमूं**—स० क्रि० (कि०) बीजना।

**पसड·**—सं० (कि०) शुक्रवार ।

**पांगा**—सं० (कि०) झगड़ा।

**पांज़िक**—सं० (कि०) पंचक।

**पांज़ी**—सं० (कि०) संतान।

**पांज़ी**—सं० (कि०) चील।

**पाःठे**—वि० (कि०) टेढ़े अंग वाली।

**पाःठो**—वि० (कि०) टेढ़े अंग वाला।

**पाःन**—सं० (कि०) बड़ा तथा चौड़ा पत्थर।

**पाअमाह**—सं० क्रि० (कि०) छिड़कना।

**पाउथा**—सं० (ला०) हथेली।

**पाऊ**—सं० (कि०) शिखरों पर उगने वाला सुगंधित फूल।

**पाऊन**—सं० (ला०) डमरू के आकार का वाद्ययंत्र जो लंबाई में डमरू से बड़ा होता है तथा विवाह के अवसर पर बांसुरी और नगाड़े के साथ बजाया जाता है।

**पाऐं**—अ० (कि०) आने वाला चौथा दिन।

**पाओ**—सं० (कि०) खाल।

**पाकड़बा**—स० क्रि० (ला०) पकड़ना।

**पाकतिड·**—सं० (कि०) तरफदारी।

**पाकतिड·खड·मिक**—स० क्रि० (कि०) तरफदारी करना।

**पाकपा**—सं० (कि०) बैठने के लिए प्रयुक्त ऊन वाली खाल।

**पाकबा**—अ० क्रि० (ला०) उबलना।

**पाका**—वि० (कि०) पका हुआ।

**पाकिबा**—अ० क्रि० (ला०) पकना।

**पाकुड़बा**—स० क्रि० (ला०) पकड़ना।

**पाकोरा**—वि० (ला०) पका हुआ।

**पाख**—सं० (ला०) पक्ष, पर, पंख।

**पाख**—सं० (कि०) पगड़ी।

**पाखड·**—सं० (कि०) पंख।

**पाखतिमाह**—स० क्रि० (कि०) पगड़ी लगाना।

**पाखला**—वि० (ला०) अजनबी।

**पाखसया**—वि० (कि०) पगड़ी वाला।

**पागमिक**—स० क्रि० (कि०) ऋण चुकाना, दंड भरना।

**पागलड·**—सं० (कि०) कुहरा।

**पागश**—सं० (कि०) घोड़े, गधे व गाय द्वारा टांग मारने की क्रिया।

**पागुआ**—सं० (कि०) महिला टोपी पर लगा कपड़ा विशेष।

**पागुड़ी**—सं० (कि०) पगड़ी।

**पाड·**—सं० (कि०) पेड़।

**पाड·ट**—सं० (कि०) तकली।

**पाड·मिक**—स० क्रि० (कि०) चिनाई करना।

**पाड·रक**—सं० (कि०) चिनाई करने का पत्थर।

**पाच**—सं० (कि०) पौत्र, पौत्री।

**पाचकोती**—सं० (कि०) गंगा जल।

**पाछ्यामिक**—स० क्रि० (कि०) तराशना।

**पाछेम्निक**—अ० क्रि० (कि०) ऊंचाई पर रहने के कारण चेहरे का फटना।

**पाज़िरपोसमा**—अ० क्रि० (कि०) पालथी मार कर बैठना।

**पाजु**—स० (ला०) पुल।

**पाटडो**—सं० (कि०) चांदी का तीन अंगुल चौड़ा कंगन।

**पाटी**—सं० (कि०) टोपी में लगी मखमल आदि की पट्टिका।

**पाटो**—वि० (कि०) सफेद और काले रंग का नर पशु।

**पाटो**—सं० (कि०) लकड़ी की परात आदि के बाहर लगी लोहे की पट्टिका।

**पाटो**—सं० (कि०) पट्टा, कुत्ते आदि के गले में लगाई जाने वाली पट्टी।

**पोठोबुदिड·**—सं० (कि०) उलटा विचार।

**पातक**—अ० (कि०) एक दम।

**पातपात**—वि० (कि०) सना हुआ।

**पातरड·**—सं० (कि०) पन्ना, पृष्ठ।

**पाथो**—सं० (कि०) अन्न मापने का पात्र।

**पादुर**—स० (ला०) खेत।

**पादेशस**—सं० (कि०) पड़ौसी।

**पान**—वि० (ला०) पांच।

**पान**—सं० (कि०) नुकीले पत्तों वाला पेड़ विशेष जो पेटियां बनाने के काम आता है।

**पानड·**—सं० (कि०) लोहे के गर्म औज़ार को पानी में डालने की

क्रिया।

**पानङ·च**—सं० (कि०) आटा, शक्कर, घी आदि का घोल जो कपड़े की पोटली में बांध कर और उसके सिरे पर छेद करके छोटे बच्चे के मुंह में खाने हेतु रखा जाता है जहां मां का दूध काफी न हो।

**पानठङ**—सं० (कि०) फर्श।

**पानतिक**—सं० (कि०) वन मुर्गी, शिखरों पर पाया जाने वाला चकोर जाति का पक्षी।

**पानुङ**—सं० (कि०) चरागाह। ढलान।

**पापङ**—सं० (कि०) दया।

**पापङ·मतोई**—वि० (कि०) दया रहित।

**पापलङ**—सं० (कि०) कुहरा।

**पापीगोल**—सं० (कि०) दे० पापीमहीना।

**पाफ**—सं० (कि०) पाप।

**पाफतुमाह**—अ० क्रि० (कि०) पाप लगना।

**पाफथई**—वि० (कि०) पाप नाशक।

**पाफसलई**—वि० (कि०) अहिंसक।

**पामाह**—स० क्रि० (कि०) मापना। मानना, स्वीकार करना। उधार चुकाना।

**पामिक**—अ० क्रि० (कि०) चलना।

**पाया**—सं० (कि०) मौसी।

**पायाऊपिन**—स० क्रि० (कि०) फेंकना।

**पायामाह**—स० क्रि० (कि०) गिराना, फेंकना।

**पायामिक**—स० क्रि० (कि०) फेंकना।

**पार**—सं० (कि०) छाप, छापने के लिए बनाया लकड़ी का सांचा।

**पारखा**—सं० (कि०) भाग्य।

**पारङ**—सं० (कि०) झटका। ज़ख्म का निशान।

**पारथमाह**—स० क्रि० (कि०) छापना।

**पारमिक**—स० क्रि० (कि०) जलाना।

**पारयामिक**—स० क्रि० (कि०) मारना, जान से मारना।

**पाल**—सं० (कि०) सेब प्रजाति का एक फल।

**पालथ्यङ**—सं० (कि०) ज़मीन को नर्म करने के लिए बिना बीज के हल जोतने की क्रिया।

**पालयामिक**—स० क्रि० (कि०) पालना।

**पालसछङ·ख**—सं० (कि०) गड़रिया, चरवाहा।

**पालिङ**—सं० (कि०) बारी।

**पालिङ·स**—अ० (कि०) बारी-बारी से।

**पाले**—सं० (कि०) सेब।

**पाशकना**—सं० (कि०) हत्थी वाला पात्र विशेष।

**पाशङ**—सं० (कि०) अतिरिक्त भोजन।

**पाश्यिङ**—सं० (कि०) चाबुक।

**पाश्युहपोसमाह**—अ० क्रि० (कि०) हाथ-पांव पसार कर बैठना।

**पासाम**—सं० (कि०) पशम।

**पास्तिला**—सं० (ला०) सायंकाल।

**पिंच**—वि० (कि०) गीला।

**पिआ**—वि० (ला०) पीला।

**पिईक**—वि० (कि०) पीला।

**पिकोटिई**—सं० (कि०) दे० किरडा।

**पिखङ**—सं० (कि०) नृत्यशाला।

**पिङ**—सं० (कि०) गाल।

**पिचङ·ती**—सं० (कि०) मांड़।

**पिचिक**—अ० (कि०) चुपके से।

**पिचुआ मुख्येर**—वि० (ला०) अंतिम।

**पिचुक**—सं० (कि०) छाती की बायीं ओर लगाया जाने वाला आभूषण, चांदी का गहना।

**पिचोबा**—अ० (का०) पीछे।

**पिचोरिबा**—स० क्रि० (ला०) चुटकी काटना।

**पिछुणाक**—वि० (ला०) अंतिम।

**पिजुरा**—वि० (ला०) चौकोर।

**पिटाअ**—वि० (कि०) गंजा।

**पिटोक**—वि० (कि०) दे० पिटाअ।

**पिठू**—सं० (कि०) सामान ढोते समय पीठ पर रखा जाने वाला बोरियों या फटे कपड़ों को सिलकर बनाया गया गद्दा।

**पित**—सं० (कि०) पित्त की थैली।

**पितङ**—सं० (कि०) दरवाज़े के तख्ते।

**पितरो**—सं० (कि०) मृतक।

**पिताङ**—सं० (ला०) दरवाज़ा।

**पितिंफ**—सं० (कि०) चूहे पकड़ने का जाल।

**पितिपा**—सं० (कि०) राजमाष।

**पितौकतौक**—वि० (कि०) बाल रहित।

**पितौरिस**—सं० (कि०) पिता (गाली देते हुए प्रयुक्त शब्द)।

**पिनछुङ**—सं० (कि०) कुठला, अनाज रखने का कुठार।

**पिनजुरामाह**—स० क्रि० (कि०) खाल उबालना।

**पिनझोटी**—सं० (ला०) पूंछ।

**पिनटू**—सं० (कि०) गोला, बर्फ आदि का गोला।

**पिनमाह**—स० क्रि० (कि०) लगाना, डालना।

**पिनमाह**—स० क्रि० (कि०) भेजना।

**पिनमिक**—स० क्रि० (कि०) बंद करना।

**पिनमू**—स० क्रि० (कि०) बंद करना।

**पिपलीची**—सं० (कि०) दे० पिपलूघाह।

**पिपलुङ**—सं० (कि०) पीपल का पेड़।

**पिपी**—सं० (ला०) लाल मिर्च।

**पिबा**—स० क्रि० (ला०) पीना।

**पिया**—सं० (ला०) चूहा।

**पियुङ**—सं० (कि०) गाल।

**पियुटो**—सं० (कि०) फोड़ा।

**पियुद**—सं० (कि०) बाना।

**पियू**—सं० (कि०) चूहा।

**पियूटिम**—सं० (कि०) चूहे मारने का यंत्र।

**पियूलो**—सं० (कि०) चूहे का वर्ष।

**पियूशोलिङ**—सं० (कि०) चूहे का बिल।

**पिरलु**—सं० (कि०) Lnicera angustifolia.

**पिल**—सं० (कि०) कांटा।

**पिलङ·माह**—स० क्रि० (कि०) छालना, धोना।

पिलधह— सं० (कि०) दे० किरडा।
पिलाइबा— स० क्रि० (ला०) पिलाना।
पिलाङ·च— सं० (कि०) पिंडली।
पिलिङ·मिक— स० क्रि० (कि०) छालना, साफ करना।
पिलिपिलिह— वि० (कि०) चिकना, नर्म।
पिलुङ·पिनमाह— स० क्रि० (कि०) बरतन साफ करना।
पिल्थ— सं० (कि०) टोकरी।
पिवा— स० क्रि० (ला०) चूसना।
पिशटिङ— सं० (कि०) पीठ।
पिशटिङ— सं० (कि०) ऊन का छोटा गट्ठर।
पिशटिङ·चम— सं० (कि०) भेड़ की पीठ की ऊन।
पिशा— सं० (कि०) पिशाच।
पिस— वि० (कि०) तीन वर्ष का।
पिसकारी— सं० (कि०) पिचकारी।
पींजाटा— वि० (ला०) शराबी।
पीःबा— स० क्रि० (ला०) पीसना।
पी— वि० (ला०) चार।
पीउका— सं० (ला०) मायका।
पीग— वि० (कि०) पीला।
पीचमा— स० क्रि० (कि०) चूमना।
पीचा— सं० (कि०) सिर, चोटी।
पीछा— सं० (कि०) पोंछने का भाव।
पीटाहनमाह— स० क्रि० (कि०) नग्न करना ।
पीतौल— सं० (कि०) पीतल।
पीनयामिक— स० क्रि० (कि०) पसंद करना।
पीनामाह— स० क्रि० (कि०) पसंद करना।
पीपलसट्टा— सं० (कि०) Smilax Vaginata.
पीबा— स० क्रि० (ला०) घिसना।
पीमिक— स० क्रि० (कि०) मिटाना। गुम करना।
पीरङ— सं० (कि०) रोग।
पीरमान— सं० (कि०) महामारी।
पीरवङ·पनठङ— सं० (कि०) धर्मशाला, सराय।
पीलयामिक— स० क्रि० (कि०) फेरना, निचोड़ना, तेल निकालना।
पीलिङ·च— सं० (कि०) पिंडली।
पीशनालो— सं० (कि०) घराट के ऊपर का बड़ा टोकरा जिसमें पीसने के लिए अन्न डाला जाता है।
पीशावेदङ— सं० (कि०) सिर दर्द।
पीशी— सं० (कि०) बिल्ली।
पीशु— सं० (कि०) फिक्र, चिंता, डर।
पीहबा— स० क्रि० (ला०) पीसना।
पुंज़ा— सं० (ला०) सिर।
पुंजु— सं० (ला०) पूंछ।
पुंडलामाह— अ० क्रि० (कि०) जलना।
पुंदलयामिक— स० क्रि० (कि०) भूनना।
पुंदला— वि० (कि०) जले हुए के रंग का।
पुंदले— वि० (कि०) जले हुए के रंग की।
पुकान— सं० (ला०) आटा।
पुकुलुप— सं० (कि०) सड़ी हुई लकड़ी आदि।
पुकुलुप— अ० (कि०) बिल्कुल, सरासर।
पुकेअ— सं० (कि०) फोड़ा।
पुकेच— सं० (कि०) गुंजाइश।
पुक्कू— सं० (कि०) एक चिड़िया विशेष जो दूसरी चिड़ियों के बच्चों को अपना बच्चा बनाती है।
पुखतिङ— वि० (कि०) पक्का।
पुखा— सं० (कि०) रंग।
पुगपा— सं० (कि०) कंघा।
पुगमों— सं० (कि०) घुटना।
पुङ— सं० (कि०) सहारा, साथ देने का भाव।
पुङ·खेमाह— स० क्रि० (कि०) उकसाना।
पुङ·माह— स० क्रि० (कि०) फुलाना।
पुङ·माह— स० क्रि० (कि०) भरना।
पुङ·मि— स० क्रि० (ला०) उगना।
पुङ·मिक— अ० क्रि० (कि०) भरना।
पुचलिङ— सं० (कि०) धूल।
पुछबा— स० क्रि० (ला०) पूछना।
पुछामाह— स० क्रि० (कि०) पूछना।
पुछिबा— स० क्रि० (ला०) पुछवाना।
पुछुबा— सं० (ला०) सगाई।
पुजामाह— स० क्रि० (कि०) पूजा करना
पुजारस— सं० (कि०) पुजारी।
पुजाश्या— सं० (कि०) बलि का मास।
पुटपुटलमाह— अ० क्रि० (कि०) छटपटाना।
पुटपुटामाह— स० क्रि० (कि०) जलाना।
पुठि— अ० (ला०) ऊपर, पर।
पुठू— वि० (कि०) गठरी के आकार का।
पुणबा— स० क्रि० (ला०) हवा से भूस और दाने अलग करना।
पुतमाह— स० क्रि० (कि०) त्याग देना।
पुतमाह— अ० क्रि० (कि०) पहुँचना।
पुतमाह— स० क्रि० (कि०) रोपाई करना।
पुतराबा— सं० (कि०) गुर्दा।
पुतारी— सं० (कि०) एक वाद्ययंत्र।
पुतीचधुरी— सं० (कि०) गुड़िया।
पुतुऊ— वि० (कि०) प्यारा, छोटे बच्चे को पुकारने के लिए प्रयुक्त शब्द।
पुत्रपा— सं० (कि०) कंघा।
पुथुम— सं० (कि०) बारीक भूसा।
पुनङ·खेमा— स० क्रि० (कि०) दान देना।
पुनमङ— सं० (कि०) एक प्रकार की जंगली सब्जी।
पुनमाह— स० क्रि० (कि०) जलाना, पकाना।
पुनमिक— स० क्रि० (क्रि०) पकाने के लिए चूल्हे पर चढ़ाना।
पुनलई— वि० (कि०) दानी ।
पुनाश्यमाह— स० क्रि० (कि०) खाना बनाना।
पुब— सं० (ला०) पीप।

पुबु—सं० (ला०) फूफी।
पुर—सं० (ला०) मंज़िल।
पुरक—सं० (कि०) सफेद और काले रंग का मिश्रण।
पुरकम—सं० (कि०) किसी चीज़ के सड़ने पर ऊपर लगी फफूंदी।
पुरगोलसङ—सं० (कि०) पूर्णिमा।
पुरची—सं० (कि०) एक घास विशेष
पुरचूलिङ—सं० (कि०) धूल।
पुरपुर—सं० (कि०) दे० पुरकम।
पुरफलिङ—वि० (कि०) बदकिस्मत।
पुरयामिक—स० क्रि० (कि०) पूरा करना।
पुरसालङ—सं० (कि०) फफूंदी।
पुरां—वि० (ला०) पुराना।
पुरांई—वि० (ला०) बासी।
पुराई—सं० (कि०) क्रियाकर्म के अवसर पर रिश्तेदारों द्वारा दिया अन्नादि।
पुरामाङ—स० क्रि० (कि०) हानि पूर्ति करना।
पुरित—सं० (कि०) सफेद और काले रंग का अभिमंत्रित धागा।
पुरिङ—वि० (कि०) स्लेटी रंग।
पुरुलजा—सं० (ला०) धान के छिलके, तुष।
पुल—सं० (कि०) पंख
पुलजा—स० क्रि० (कि०) सौंपना।
पुलनाङ—वि० (कि०) जलता हुआ।
पुलमाङ—स० क्रि० (कि०) समर्पण करना, भेंट चढ़ाना।
पुलुपुलुङ—सं० (कि०) मंद-मंद जलती आग।
पुलि—सं० (कि०) तली हुई रोटी।
पुलिगशा—सं० (कि०) पसली का मांस।
पुलिङ—सं० (कि०) मशाल की लपट।
पुलुक—अ० (कि०) शीघ्र, जल्दी।
पुशटसलामाङ—स० क्रि० (कि०) दृढ़ करना।
पुशपङ—सं० (कि०) साथी।
पुशमिक—स० क्रि० (कि०) बीजना।
पुशाशा—वि० (कि०) वीरान।
पुसला—वि० (कि०) बाल वाला।
पुस्ताअ—सं० (कि०) दीवार।
पू—सं० (कि०) रोम, रोयां।
पूउमाङ—स० क्रि० (कि०) ढेर लगाना।
पूग—सं० (कि०) गेहूं के भुने हुए दाने।
पूरङ—सं० (कि०) प्रेत पूजा।
पूरालामाङ—स० क्रि० (कि०) पूरा करना।
पूलिङ—सं० (कि०) घास का गट्ठा।
पे:ला—सं० (ला०) थाल।
पेऊपिन्माङ—स० क्रि० (कि०) डरा देना।
पेए-पुरुङपिन्माङ—स० क्रि० (कि०) धमकी देना।
पेओनतिमाङ—स० क्रि० (कि०) पौधे में कलम लगाना।
पेखरप—सं० (कि०) कबूतर।
पेगमिक—स० क्रि० (कि०) गंदगी या बर्फ आदि हटाना।
पेचवा—स० क्रि० (ला०) मिट्टी से लीपना।
पेचा—सं० (कि०) ऐसा छोटा ग्रंथ जिसके पन्ने अलग-अलग होते हैं।
पेटिङ—सं० (कि०) पेट।
पेतो—सं० (ला०) गाय का बच्चा।
पेथङ—सं० (कि०) दाल।
पेथुङ—सं० (कि०) छोटी पोथी।
पेद—सं० (कि०) शहतीर आदि को टेढ़ा करके उठाने का भाव।
पेनचेप—सं० (ला०) सूई।
पेनबा—सं० (कि०) शनिवार।
पेरङ—सं० (कि०) पत्नी, परिवार, कुटुंब।
पेरङजोरङ—सं० (कि०) रिश्तेदार।
पेरजोर—सं० (कि०) रिश्तेदार।
पेरथमाङ—स० क्रि० (कि०) नमस्कार करना।
पेरना—सं० (कि०) उदाहरण।
पेरुगोरू—सं० (ला०) पशुधन।
पेल—सं० (कि०) दूध।
पेलछुरमाङ—स० क्रि० (कि०) दूध दुहना।
पेलझयसमाङ—स० क्रि० (कि०) दही जमाना।
पेलयामिक—स० क्रि० (कि०) धकेलना।
पेलवान—सं० (कि०) पहलवान।
पेल्हाङबा—स० क्रि० (ला०) धक्का देना।
पेश्बाई—सं० (ला०) पसली।
पैट्री—स० क्रि० (ला०) मांगना।
पैरङ—सं० (कि०) चरण, देवता के चरण चिह्न।
पैरङथन्निक—स० क्रि० (कि०) पैर बंदना।
पो—सं० (कि०) मिट्टी में नमी का भाव। मकान बनाने के लिए सुरक्षित ज़मीन का टुकड़ा।
पोआन—सं० (कि०) देवालय में मांस बांटने वाला व्यक्ति।
पोईथङख—सं० (कि०) दाल।
पोईरङ—सं० (कि०) देवता का चरण।
पोक—सं० (ला०) पट्टू।
पोकसा—सं० (ला०) भीतरी छत।
पोखश्यिम—स० क्रि० (कि०) पहनना, ओढ़ना।
पोगमिक—स० क्रि० (कि०) जलाना।
पोगशमिक—अ० क्रि० (कि०) जलना।
पोङ—सं० (ला०) गोशाला।
पोचा—सं० (कि०) सिर।
पोटङ—सं० (कि०) पोटी।
पोटयामिक—स० क्रि० (कि०) उखाड़ना।
पोटलो—वि० (कि०) गोल-मटोल।
पोटारी—सं० (कि०) पटवारी।
पोटो—सं० (कि०) गोला। फोड़ा।
पोटोख—सं० (कि०) धब्बा। फोड़ा।
पोटोखलमाङ—स० क्रि० (कि०) गोलाकार पिंड बनाना।
पोटोखसा—वि० (कि०) दानेदार ।
पोठयामिक—स० क्रि० (कि०) नष्ट करना।

**पोठामाह**—स० क्रि० (कि०) ध्वस्त करना, बिगाड़ देना।
**पोड़ाई**—सं० (कि०) पढ़ाई।
**पोणा**—सं० (कि०) जूते।
**पोणा**—सं० (कि०) बड़ी कलछी।
**पोतरामाह**—स० क्रि० (कि०) दोहराना।
**पोतलङ**—सं० (कि०) पैर का तला।
**पोत्रा**—सं० (ला०) पौत्र।
**पोत्राप**—सं० (कि०) गुर्दा।
**पोथयामिक**—स० क्रि० (कि०) पिटाई करना।
**पोदरयामिक**—स० क्रि० (कि०) सुधार करना।
**पोन**—सं० (कि०) चित्रकार।
**पोनथङ**—सं० (कि०) पड़ाव।
**पोनपो**—सं० (कि०) राजा।
**पोनमाह**—स० क्रि० (कि०) सिलना।
**पोनमिक**—स० क्रि० (कि०) सिलाना।
**पोनाखिङ**—सं० (कि०) अमावास्या से अगला दिन।
**पोनो**—सं० (कि०) होने वाली वधु के आश्रय हेतु श्वशुर द्वारा दी गयी संपत्ति।
**पोपथङ**—सं० (कि०) दाल।
**पोम**—सं० (कि०) बर्फ।
**पोमती**—सं० (कि०) बर्फ का पानी।
**पोमी**—सं० (कि०) लड़की।
**पोयारङ**—सं० (कि०) बोझ।
**पोरंटी**—सं० (कि०) तराजू, तुला।
**पोरखङ**—सं० (कि०) लक्षण।
**पोरख्यामिक**—स० क्रि० (कि०) परीक्षा लेना, परखना।
**पोरजऊ**—स० क्रि० (कि०) मनाना।
**पोरज़यामिक**—स० क्रि० (कि०) मनाना।
**पोरजीमानी**—सं० (कि०) मिन्नत।
**पोरतमाह**—अ० क्रि० (कि०) प्राप्त होना।
**पोरतिह**—वि० (कि०) प्राप्य।
**पोरदान**—सं० (कि०) प्रधान।
**पोरदेस**—सं० (कि०) परदेश।
**पोरनटी**—सं० (कि०) सोना-चांदी तोलने का छोटा तराजू।
**पोरमाह**—अ० क्रि० (कि०) पूरा होना।
**पोरमिक**—अ० क्रि० (कि०) पूरा होना।
**पोरसात**—सं० (कि०) हलवा, प्रसाद।
**पोरसिंहमी**—वि० (कि०) बकवादी।
**पोराल**—सं० (कि०) घास की एक किस्म।
**पोरीन्**—सं० (कि०) पट्टी।
**पोल**—सं० (कि०) बैलों के गले में लगाई जाने वाली लकड़ी।
**पोल**—सं० (कि०) तला हुआ एक विशेष पकवान।
**पोलकी**—सं० (कि०) पालकी।
**पोलख**—सं० (कि०) स्थान।
**पोलगाणा**—स० क्रि० (कि०) पिघलाना।
**पोलङ**—सं० (कि०) अवैध संतान।
**पोलङख**—सं० (कि०) स्थान।
**पोलङखेमाह**—स० क्रि० (कि०) स्थान देना।
**पोलटयामिक**—स० क्रि० (कि०) पलटाना, वापस करना।
**पोलटू**—सं० (कि०) अवैध संतान।
**पोलटेसमिक**—अ० क्रि० (कि०) वापस होना, पलटना।
**पोलटोन**—सं० (कि०) सेना।
**पोलठतुतुमाह**—अ० क्रि० (कि०) वापस लौटना।
**पोलठामाह**—अ० क्रि० (कि०) करवट बदलना।
**पोलडिंग**—सं० (कि०) अनाज रखने का बड़ा 'खौलड़ा'।
**पोलदा**—सं० (कि०) पर्दा।
**पोलदोसिरेहन्माह**—स० क्रि० (कि०) भेद खोलना।
**पोलबट**—सं० (कि०) पलक।
**पोलाओङा**—अ० क्रि० (कि०) खून बहना।
**पोलाच**—सं० (कि०) खून।
**पोलामति**—सं० (कि०) खून की कमी।
**पोली**—सं० (कि०) चीला।
**पोलोख**—वि० (कि०) क्षणिक।
**पोल्**—सं० (कि०) खेतों के बीच निकाली गई अस्थाई कुल्या।
**पोल्थ**—सं० (कि०) तकली सहित ताने-बाने का गुच्छा।
**पोश**—सं० (कि०) बिछाने का बिस्तर। पशुओं के नीचे बिछाया घास आदि।
**पोशङ**—सं० (कि०) पौष मास।
**पोशमाह**—अ० क्रि० (कि०) भूलना।
**पोशयामिक**—स० क्रि० (कि०) क्रियाकर्म के समय लोगों में विशेष पकवान बांटना।
**पोशोलमालङ**—सं० (कि०) हार।
**पोश्येल**—सं० (कि०) एक गहना जिसमें कीमती पत्थर लगाते हैं।
**पोस**—सं० (कि०) पूजा का धूप।
**पोसखोर**—सं० (कि०) धूपदानी।
**पोसमाह**—अ० क्रि० (कि०) बैठना, रहना।
**पोसमाहपनठङ**—सं० (कि०) बैठक।
**पोसरङ**—सं० (कि०) निवास स्थान।
**पोसरङखेमाह**—स० क्रि० (कि०) आश्रय देना।
**पौंका**—सं० (ला०) गोशाला।
**पौईताल**—सं० (कि०) पाताल।
**पौकीदिवा**—स० क्रि० (ला०) चूमना।
**पौतरे**—सं० (कि०) खली में से हाथ द्वारा तेल निकालने पर शेष बचा ढेला।
**पौनुगा**—सं० (कि०) अतिथि।
**पौरज़ा**—सं० (कि०) प्रजा।
**पौरी**—सं० (कि०) निगरानी।
**पौरे**—सं० (कि०) लकड़ी का एक पलड़े का विशेष तराजू।
**पौरो**—सं० (कि०) पानी लाने के लिए प्रयुक्त लकड़ी के पात्र का पेंदा।
**पौले**—सं० (कि०) बिछुआ।
**प्यकरङ**—सं० (कि०) चमगादड़।
**प्यखर**—सं० (कि०) पक्षी राज।
**प्यखराअ**—सं० (कि०) कबूतर।

**प्यरजोड·ख**— सं० (कि०) अनाज छांटने का पात्र।
**प्यरमाह**— स० क्रि० (कि०) हवा से अनाज साफ करना।
**प्या**— सं० (कि०) पक्षी ।
**प्याच**— सं० (कि०) छोटी चिड़िया।
**प्यामिक**— सं० क्रि० (कि०) भेद खोलना।
**प्यालो**— सं० (कि०) पक्षियों का वर्ष।
**प्युग**— सं० (कि०) बांस प्रजाति की एक भाड़ी।
**प्युगमिक**— सं० क्रि० (कि०) बुझाना।
**प्र:च**— सं० (कि०) अंगुलि।
**प्र:ल**— सं० (कि०) संदेश।
**प्रतसाह**— स० क्रि० (कि०) त्यागना।
**प्रयाईबा**— स० क्रि० (ला०) पहचानना।
**प्रयाऊ**— सं० (ला०) पहचान।
**प्रसेद**— सं० (ला०) पसीना।
**प्रा:**— सं० (कि०) पशुओं को सर्दियों में दिया जाने वाला चारा।
**प्रा**— सं० (कि०) किला।
**प्राइबा**— स० क्रि० (ला०) पकड़ना।
**प्रागा**— सं० (ला०) प्रकाश, बिजली।
**प्राठस**— सं० (कि०) बकरा।
**प्रामाह**— स० क्रि० (कि०) फैलाना।
**प्रामिक**— स० क्रि० (कि०) दे० प्रामाह।
**प्राशमिक**— अ० क्रि० (कि०) फैलना।
**प्राश्माह**— अ० क्रि० (कि०) कुश्ती करना।
**प्राश्मिक**— अ० क्रि० (कि०) दे० प्राश्माह।
**प्रिंदलयामिक**— स० क्रि० (कि०) लपेटना।
**प्रिड्माह**— स० क्रि० (कि०) फेंकना।
**प्रिड·कलासाह**— अ० क्रि० (कि०) टाल-मटोल करना।
**प्रिनप्रिंथ**— वि० (कि०) बेलन की तरह गोल।
**प्रिनलामाह**— स० क्रि० (कि०) लपेटना।
**प्रिनलाशमाह**— अ० क्रि० (कि०) लिपटना।
**प्रुत**— सं० (कि०) दे० गुलटा।
**प्रुश्यमाह**— अ० क्रि० (कि०) छूटना।
**प्रेअमाह**— स० क्रि० (कि०) खिसकाना।
**प्रेख**— सं० (कि०) कील।
**प्रेदेठफड**— सं० (कि०) छतरीनुमा गोल टोपी।
**प्रेमिक**— स० क्रि० (कि०) तवे पर पतले आटे को हाथ द्वारा चौड़ा करना।
**प्रो**— सं० (कि०) उलटी कटोरी के आकार का पेंदा।
**प्रोच**— सं० (कि०) लकड़ी का प्याला।
**प्रोंथ**— सं० (कि०) लकड़ी का पात्र।
**प्रोमाह**— स० क्रि० (कि०) सजाना।
**प्रोलिया**— सं० (कि०) द्वारपाल। पहाड़ की चोटी या दर्रा का देवता।
**प्रोशेलूमालड**— सं० (कि०) कीमती पत्थरों की माला।

## फ

**फंजीकारे**— अ० क्रि० (ला०) उड़ना।
**फंट**— सं० (कि०) चंदा।
**फंडबा**— स० क्रि० (ला०) झाड़ना।
**फंदिल**— सं० (कि०) पतीला।
**फक**— सं० (कि०) सूअर।
**फकशमिक**— अ० क्रि० (कि०) छूटना, छोटे बच्चे का मरना।
**फकसुप**— सं० (कि०) रिश्वत।
**फकारेसमिक**— अ० क्रि० (कि०) बकवास करना।
**फक्कीचुम्माह**— स० क्रि० (कि०) बहाना बनाना।
**फख**— वि० (कि०) समाप्त।
**फखलमाह**— स० क्रि० (कि०) समाप्त करना।
**फगज़स**— सं० (कि०) छिपाया हुआ भोज्य पदार्थ।
**फगतिख**— अ० (कि०) चुपके से।
**फगतिड्·ख**— अ० (कि०) छिपकर।
**फगपा**— सं० (कि०) आर्य।
**फगसुपखोमाह**— स० क्रि० (कि०) घूस देना।
**फगसे**— सं० (कि०) बुरुश।
**फटऊपिन्माह**— स० क्रि० (कि०) उलटी करना।
**फटक**— अ० (कि०) जल्द, शीघ्र।
**फटकार**— सं० (कि०) बदला।
**फटाइबा**— स० क्रि० (ला०) फेंकना।
**फटामाह**— अ० क्रि० (कि०) फूटना।
**फटामाह**— स० क्रि० (कि०) उलटी करना।
**फटेख**— सं० (कि०) लकड़ी का पतला टुकड़ा; तकली में लगा गोल उपकरण।
**फटेच**— वि० (कि०) धन दौलत के कारण घमंडी।
**फटोशी**— सं० (कि०) वमन, कै।
**फठटामाह**— स० क्रि० (कि०) पटाक से मारना।
**फड़ाकबा**— स० क्रि० (ला०) वायु-प्रवाह से साफ करना।
**फणा**— सं० (कि०) जड़युक्त घास या झाड़ी।
**फतरतरथहनमाह**— स० क्रि० (कि०) खूब मारना।
**फताइबा**— अ० क्रि० (ला०) गिरना।
**फतिड**— सं० (कि०) मिट्टी।
**फतिड·लान**— सं० (कि०) आंधी।
**फतिड·वला**— वि० (कि०) अभागा।
**फद**— सं० (कि०) थैला।
**फनतोखमाह**— स० क्रि० (कि०) कल्याण करना।
**फनतोम्छीह**— वि० (कि०) कल्याणकारी।
**फनदिल**— सं० (कि०) पतीला।
**फननामिदूक**— वि० (कि०) अयोग्य।
**फनपंथी**— वि० (कि०) सहयोगी।
**फनपा**— सं० (कि०) उपकार।
**फनफनमाह**— स० क्रि० (कि०) सुविधा देना।
**फनबा**— वि० (कि०) उपयोगी।
**फनबातुमाह**— अ० क्रि० (कि०) लाभदायक होना।
**फनमाह**— स० क्रि० (कि०) सहायता करना।

फनमिक—स० क्रि० (कि०) उखाड़ना।
फनी—सं० (कि०) जूते।
फनीह—वि० (कि०) लाभप्रद।
फनूमाह—स० क्रि० (कि०) उपकार करना।
फप—सं० (कि०) एक विशेष प्रकार का खमीर।
फपलङछखु—अ० क्रि० (कि०) ओंठ सूखना।
फपलतमाह—अ० क्रि० (कि०) रुक-रुककर बोलना।
फपलो—वि० (कि०) रुक-रुक कर बोलने वाला।
फबु—सं० (कि०) गुफा।
फभ—सं० (कि०) हार, पराजय।
फमगुरमाह—अ० क्रि० (कि०) हार मानना।
फमपा—अ० क्रि० (कि०) हारना।
फमुहपिन्माह—स० क्रि० (कि०) हरा देना।
फम्माह—स० क्रि० (कि०) हराना।
फया—सं० (कि०) माथा।
फयाअ—वि० (कि०) तगड़ा।
फयागमिक—स० क्रि० (कि०) नापना।
फयागमू—स० क्रि० (कि०) नापना।
फयोमाह—स० क्रि० (कि०) छिद्र करना।
फर—सं० (कि०) फोड़ा।
फरका—अ० (ला०) पार।
फरकीनात—सं० (कि०) नाक का स्वर्णाभूषण।
फरगोतमतोई—वि० (कि०) दक्ष।
फरपितलिग—सं० (ला०) तितली।
फरबलमाह—स० क्रि० (कि०) समाप्त करना।
फरमाह—स० क्रि० (कि०) पींजना।
फरमाह—स० क्रि० (कि०) बीनना।
फरा—वि० (कि०) दुराचारी।
फरिंगमिक—स० क्रि० (कि०) उतारना।
फरे—अ० (ला०) परसों।
फल—सं० (कि०) बर्फ के साथ गिरता पानी।
फलङ—सं० (कि०) फल।
फलटुकसुलटुख—सं० (कि०) चुगलखोरी।
फलबा—वि० (कि०) साधारण।
फलशेत—स० क्रि० (कि०) धकेलना।
फलायामाह—स० क्रि० (कि०) प्रचार करना।
फलिमलिम—वि० (कि०) धुंधला; पौ फटने का समय।
फशटला—सं० (कि०) बिना बिरोज़े की लकड़ी।
फशटलेङख—वि० (कि०) फीका सा।
फशटा—वि० (कि०) तेज रहित।
फशमाह—स० क्रि० (कि०) फाड़ना।
फसतमाह—अ० क्रि० (कि०) फंसना।
फसायामाह—स० क्रि० (कि०) फंसाना।
फहङमाह—सं० (कि०) मोह।
फांजणा—अ० क्रि० (ला०) उड़ना।
फांठ—सं० (कि०) अंश, हिस्सा।
फांस—सं० (ला०) चांदी का आभूषण जो सिर की दायीं व बायीं ओर लगाया जाता है।
फा—सं० (कि०) पिता।
फा—वि० (कि०) निःशुल्क, मुफ्त।
फाइदामतोई—वि० (कि०) व्यर्थ।
फाकमाह—स० क्रि० (कि०) फांकना।
फाका—सं० (कि०) चूर्ण वस्तु को खाने की क्रिया।
फागुल—सं० (कि०) फाल्गुन मास में मनाया जाने वाला त्योहार।
फाङनङगोल—सं० (कि०) फाल्गुन मास।
फाच—सं० (कि०) थैला।
फाजे—सं० (कि०) थैला।
फाटक—सं० (कि०) प्रतिबंधित क्षेत्र।
फाटकेओ—सं० (कि०) आवारा पशुओं को बंद करने का स्थान।
फातिङ—सं० (कि०) मिट्टी।
फात्रयामिक—स० क्रि० (कि०) बिखेरना।
फाथमाह—स० क्रि० (कि०) फांकना।
फानटिङ—सं० (कि०) खूबानी के साथ आटा मिलाकर पकाया खाद्य।
फानिच—सं० (कि०) ऊन की छोटी पूनी।
फनियामिक—स० क्रि० (कि०) बर्फ में सबसे पहले चलकर रास्ता बनाना।
फाने—अ० (कि०) पूर्व, पहले, थोड़ी देर पहले।
फापी—वि० (कि०) हकलाकर बोलने वाला।
फापूच—सं० (कि०) चुंबन।
फापूरन्निक—स० क्रि० (कि०) चूमना।
फापैसमिक—अ० क्रि० (कि०) हकलाना।
फामिक—स० क्रि० (कि०) डराना।
फाम्मिक—स० क्रि० (कि०) फसल के दाने निकालना।
फाम्मो—स० क्रि० (कि०) झाड़ना।
फायक—सं० (कि०) सांड़।
फारच—सं० (कि०) काटी हुई भेड़ का अगला भाग।
फारचतानयामिक—अ० क्रि० (कि०) टांगें फैलाकर खड़े होना।
फारफरयामिक—स० क्रि० (कि०) फड़फड़ाना।
फारमिक—स० क्रि० (कि०) छेद करना।
फालग—सं० (कि०) गाय।
फालङ—सं० (कि०) हल में लगाई जाने वाली लोहे की नुकीली छड़।
फालटु—वि० (कि०) फालतू, व्यर्थ।
फालोंग—सं० (ला०) बड़ा पत्थर।
फाशङशोत—सं० (कि०) बकरी की एक बीमारी।
फाशतमाह—अ० क्रि० (कि०) फिसल जाना।
फाशोलिङ—सं० (कि०) गाली; झिड़की।
फासूर—सं० (कि०) शराब।
फिंदरा—अ० (कि०) चारों ओर।
फिङपा—सं० (कि०) ऊन का गद्दा।
फिङमाह—स० क्रि० (कि०) उतारना।
फिङ्हपिन्माह—स० क्रि० (कि०) पछाड़ देना।

**फिटुक**— वि० (कि०) छोटे कद का।
**फिमिक**— स० क्रि० (कि०) ले जाना।
**फिमूह**— स० क्रि० (कि०) ले जाना।
**फिरंग**— सं० (कि०) आतशक रोग।
**फिरक्युम**— सं० (ला०) मकान का वह कमरा जहां ग्रीष्मकाल में परिवार के सदस्य रहते हैं।
**फिरफिर**— वि० (कि०) विपरीत।
**फिरफिरङ**— अ० (कि०) एक के बाद एक।
**फिलोअ**— अ० क्रि० (कि०) फैलना।
**फिश्खुल**— वि० (कि०) चमार।
**फिसमाह**— अ० क्रि० (कि०) विलंब होना।
**फिसमिक**— अ० क्रि० (कि०) विलंब होना।
**फीमिया**— वि० (कि०) अफीम खाने वाला।
**फुक**— सं० (ला०) शरीर।
**फुकरयामिक**— स० क्रि० (कि०) फूंक मारना।
**फुकरामाह**— स० क्रि० (कि०) हवा देना, फूंक मारना।
**फुकरु**— सं० (कि०) दे० फुकनाला।
**फुकान**— सं० (ला०) आटा।
**फुकियामिक**— स० क्रि० (कि०) जलाना।
**फुगु**— सं० (ला०) गुफा।
**फुगो**— वि० (कि०) आज़ाद।
**फुगोछङख**— सं० (कि०) ज्येष्ठ पुत्र।
**फुङखमाह**— अ० क्रि० (कि०) फटना।
**फुचङ**— वि० (ला०) बायां।
**फुचैन्निक**— स० क्रि० (कि०) ऐसी गांठ देना जिसके खुलने की संभावना हो।
**फुटाउणो**— स० क्रि० (कि०) पीटना।
**फुटुक**— सं० (कि०) पुत्र, पुत्री।
**फुतकङ**— सं० (कि०) दही बिलोने के घड़े का ढक्कन।
**फुतराअ**— सं० (कि०) चूल्हे के तीन पत्थर।
**फुतरेल**— स० क्रि० (कि०) विघ्न डालना।
**फुनफन**— अ० (कि०) अकस्मात्, अचानक।
**फुन्नाफनी**— अ० (कि०) सुबह, सवेरे।
**फुपरङ**— सं० (कि०) पीपा, कीप।
**फुबु**— सं० (कि०) गुफा।
**फुरफुरमाह**— स० क्रि० (कि०) शाखा हिलाना।
**फुरवा**— सं० (कि०) फावड़ा।
**फुरा**— सं० (कि०) गिरते हुए पत्थर।
**फुरीखेप**— सं० (कि०) बड़ी सूई।
**फुरुफुरु**— सं० (कि०) पकाये हुए चावल का एक-एक दाना अलग होने का भाव।
**फुर्व**— सं० (कि०) वीरवार।
**फुल**— सं० (कि०) गड़रियों के लिए चरागाहों पर पहुंचाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।
**फुलक्यलमाह**— स० क्रि० (कि०) रसद पहुंचाना।
**फुलबा**— अ० क्रि० (ला०) फूलना।
**फुलमाह**— स० क्रि० (कि०) जड़ से उखाड़ना।
**फुल्यामिक**— स० क्रि० (कि०) फुलाना।
**फुशाशा**— वि० (कि०) वीरान।
**फुशिया**— वि० (कि०) अधिक भाइयों वाला।
**फुसराअ**— सं० (कि०) चूल्हे का पत्थर।
**फुसुतमाह**— स० क्रि० (कि०) फूंक मारना।
**फू**— सं० (कि०) पहाड़ों की चोटी के सूखे नाले।
**फू**— सं० (ला०) फूंक।
**फूउमाह**— स० क्रि० (कि०) छीलना। मंड़ाई करना।
**फूकनू**— सं० (कि०) दे० फूकणू।
**फूका**— वि० (कि०) व्यर्थ, फुज़ूल।
**फूङयामाह**— अ० क्रि० (कि०) वायु के झोंके से हिलना।
**फूमिक**— स० क्रि० (कि०) ऊनी कपड़ों को मांड़ना।
**फूरी**— वि० (कि०) मोटा।
**फूलङ**— सं० (कि०) मोतियाबिंद।
**फूलमिक**— स० क्रि० (कि०) भेंट चढ़ाना।
**फूशमिक**— अ० क्रि० (कि०) बीमारी से पुन: ग्रस्त होना।
**फूश्यीह**— वि० (कि०) मंड़ा हुआ।
**फेंजा**— सं० (कि०) काठी।
**फेया**— वि० (ला०) अधमरा।
**फेअद**— सं० (कि०) काठी।
**फेअदशीदे**— वि० (ला०) अधमरा।
**फेची**— वि० (ला०) छोटा।
**फेचीआवा**— सं० (ला०) चाचा।
**फेचे**— सं० (ला०) चाचा।
**फेद**— वि० (ला०) आधा।
**फेदछोई**— वि० (ला०) अधपका।
**फेया**— सं० (कि०) माथा।
**फेरती**— अ० (कि०) चारों ओर।
**फेरयानू**— अ० क्रि० (कि०) मिलना।
**फेरापुरी**— अ० (ला०) चारों ओर।
**फेरिआइबा**— अ० क्रि० (ला०) मुड़ना।
**फेलयामिक**— स० क्रि० (कि०) फैलाना।
**फो**— सं० (कि०) मृग जाति के पशु जिनका शिकार किया जाता है।
**फोअर**— सं० (कि०) फर्श, मकान के साथ अनाज सुखाने के लिए बनाया लकड़ी का फ़र्श।
**फोआ**— सं० (ला०) पेट का निचला भाग।
**फोआ**— सं० (कि०) नाभि के आसपास का अंदरूनी भाग।
**फोआ**— सं० (कि०) पाचन।
**फोआलमाह**— अ० क्रि० (कि०) पेट दर्द होना।
**फोइस**— वि० (कि०) मुफ्त।
**फोउंशणा**— अ० क्रि० (कि०) बड़बोला बनना।
**फोऊपिन्माह**— स० क्रि० (कि०) गिरा देना।
**फोकदोरी**— सं० (कि०) ओढ़ने का 'दोहडू'।
**फोकमिक**— स० क्रि० (कि०) गिराना, तरल पदार्थ को गिराना।
**फोकलङ**— स० क्रि० (कि०) प्रश्न लगाना।
**फोकशङ**— सं० (कि०) ओढ़ने के वस्त्र।
**फोकशमिक**— स० क्रि० (कि०) ओढ़ना।

**फोक्लिबा**— स० क्रि० (ला०) छिड़कना।
**फोखु**— अ० (कि०) ओर, तरफ।
**फोङ्रा**— सं० (कि०) आतिथ्य, मेहमानी।
**फोच**— सं० (कि०) गधा।
**फोछाङ्**— सं० (कि०) गधे का बच्चा।
**फोञा**— सं० (कि०) दूत द्वारा भेजा जाने वाला संदेश।
**फोञोपा**— सं० (कि०) दूत, संदेशवाहक।
**फोञालोमाह**— स० क्रि० (कि०) संदेश देना।
**फोटका**— सं० (कि०) बकरियों की एक बीमारी जो सारे रेवड़ को नष्ट कर देती है।
**फोटफटङ्**— अ० (कि०) शीघ्रातिशीघ्र, फटाफट।
**फोतफोतमाह**— अ० क्रि० (कि०) तड़पना।
**फोतफोतामाह**— स० क्रि० (कि०) पटकाना।
**फोतलामाह**— स० क्रि० (कि०) उलट-पुलट करना।
**फोथपङ्**— सं० (कि०) पौत्र।
**फोथार**— सं० (कि०) लकड़बग्घा।
**फोनी**— सं० (कि०) जूता।
**फोफोतलमाह**— स० क्रि० (कि०) फड़फड़ाना।
**फोबलङ्ख**— सं० (कि०) पुरुष।
**फोमलङ्**— सं० (कि०) पुरुष।
**फोमार**— स० (कि०) चाय पर डाला मक्खन।
**फोयोअ**— वि० (ला०) थोड़ा।
**फोरफोन्निक**— स० क्रि० (कि०) फड़फड़ाना।
**फोरमाह**— स० क्रि० (कि०) खोलना।
**फोरयामिक**— स० क्रि० (कि०) प्रशिक्षित करना।
**फोरयाशित**— वि० (कि०) प्रशिक्षित, सुधारा हुआ।
**फारयाशिस**— वि० (कि०) प्रशिक्षित।
**फोरशी**— वि० (कि०) प्रशिक्षित।
**फोरामाह**— स० क्रि० (कि०) प्रशिक्षण देना।
**फोराशमाह**— स० क्रि० (कि०) अभ्यास करना।
**फोराशी**— वि० (कि०) सभ्य।
**फोराश्यमाह**— स० क्रि० (कि०) सीखना।
**फोरेज़**— अ० (कि०) परसों।
**फोरोख**— सं० (कि०) अंतर, फर्क।
**फोरोस**— सं० (कि०) कर्तव्य।
**फोलङ्**— सं० (कि०) फल।
**फोलङ्सा**— वि० (कि०) फलदार।
**फोलतमाह**— अ० क्रि० (कि०) बढ़ना।
**फोलमाह**— स० क्रि० (कि०) फाड़ना।
**फोलमिक**— स० क्रि० (कि०) फाड़ना।
**फोलाथ**— सं० (कि०) जंगली बकरी।
**फोल्यादु**— अ० क्रि० (कि०) फूलना।
**फोसमतमाह**— स० क्रि० (कि०) सुखाना।
**फोसमाह**— अ० क्रि० (कि०) सूखना।
**फोसमिक**— स० क्रि० (कि०) सुखाना।
**फोसयामिक**— स० क्रि० (कि०) फंसाना।
**फोसेन्निक**— अ० क्रि० (कि०) फंसना।
**फ्याऊतामाह**— स० क्रि० (कि०) संभाल कर रखना।
**फ्याऊनेरमा**— सं० (कि०) माथे की झुर्रियां।
**फ्याएज़ा**— सं० (कि०) माथे पर पहना जाने वाला आभूषण।
**फ्यामाला**— वि० (कि०) भाग्य में लिखा हुआ।
**फ्यामाह**— स० क्रि० (कि०) मापना।
**फ्योचेशिल**— वि० (कि०) भाग्य में लिखा हुआ।
**फ्योमाइच**— वि० (कि०) भाग्यहीन।
**फ्रङ्**— वि० (कि०) बिना छत का, बाहर का।
**फ्रत्नमाह**— स० क्रि० (कि०) उलटना।
**फ्रनमाह**— स० क्रि० (कि०) ज़मीन को हल से पाटना।
**फ्रनुहखेमाह**— स० क्रि० (कि०) उलटा करना।
**फ्रलफ्रलमाह**— स० क्रि० (कि०) अलग करना।
**फ्रलमाह**— स० क्रि० (कि०) अलग करना; गिराना ।
**फ्रामिक**— स० क्रि० (कि०) रोटी को दाल के साथ खाने के लिए मिलाना; हाथों से मसलना।
**फ्रालमिक**— स० क्रि० (कि०) गिराना।
**फ्रासमिक**— स० क्रि० (कि०) गिराना; दीवार आदि को गिराना।
**फ्रेङा**— सं० (कि०) मंत्र माला।
**फ्रेलमिक**— स० क्रि० (कि०) पीछे छोड़ना।
**फ्रोमाह**— स० क्रि० (कि०) स्पष्ट करना।
**फ्रोलमा**— स० क्रि० (कि०) स्पष्ट करना।

## ब

**बंगुला**— सं० (कि०) विश्रामगृह, बंगला।
**बंचयामू**— स० क्रि० (कि०) पढ़ना।
**बंजबकरा**— सं० (कि०) Hypericum cerwm.
**बंठस**— वि० (कि०) सुंदर।
**बंठेनचियोस**— सं० (कि०) सुंदर तरुणी।
**बंडबा**— स० क्रि० (ला०) बांटना।
**बंडाबसोर**— सं० (कि०) माल, सामान।
**बंडी-तंडी**— अ० (ला०) मिलजुल कर।
**बंति**— वि० (कि०) अनोखा।
**बंदरे**— वि० (कि०) भूरे रंग का, भूरा।
**बंदे**— सं० (कि०) स्तंभ।
**बंदोअ**— सं० (कि०) धरोहर, रहन।
**बंदोतामाह**— स० क्रि० (कि०) गिरवी रखना।
**बंद्रस**— सं० (कि०) बंदर।
**बंपा**— सं० (कि०) लैंप।
**बंबिकुश**— वि० (ला०) विक्षिप्त, पागल।
**बःरमिक**— अ० क्रि० (कि०) पशु द्वारा शरीर का हिलाया जाना।
**बईयर**— सं० (कि०) मित्र।
**बऊलस**— वि० (कि०) अत्यधिक।
**बऊला**— वि० (कि०) पागल।
**बखरङ्ज़ेद**— सं० (कि०) बकरे-बकरियां।

**बखोर**— सं० (कि०) बकरी।
**बगचा**— सं० (कि०) आटे के छोटे-छोटे पिंड बनाकर पानी में पकाकर बनाया गया खाद्य पदार्थ।
**बगछ्ग**— सं० (कि०) संस्कार।
**बगज़स**— वि० (कि०) पर्याप्त।
**बगज़ालस**— सं० (कि०) अत्यधिक गर्मी।
**बगटूथ**— सं० (कि०) बेर का साथी।
**बगत**— सं० (ला०) भोजन।
**बगथूअ**— सं० (कि०) आटे का गोंद, लेई।
**बगथोन**— सं० (ला०) विवाह।
**बगलेब**— सं० (कि०) रोटी।
**बगसब**— सं० (कि०) जुराब।
**बगार**— सं० (कि०) बोझ।
**बङ·**— सं० (ला०) घोंसला।
**बङ·खोऊटेम्माह**— स० क्रि० (कि०) पैर से दबाना।
**बङ·खोनउरमाह**— स० क्रि० (कि०) पैर धोना।
**बङ·खोनछुतमाह**— स० क्रि० (कि०) पैर बांधना।
**बङ·खोनतपमाह**— स० क्रि० (कि०) पैर पटकना।
**बङ·खोनबोअमाह**— अ० क्रि० (कि०) बर्फ से पैर सुन्न होना।
**बङ·खोनयङि·थ**— वि० (कि०) तेज़ चलने वाला।
**बङ·खोनलमाह**— स० क्रि० (कि०) कदमताल करना।
**बङ·खोनुहब्रंथ**— सं० (कि०) पैर की अंगुली।
**बङ·खोनुहमोत**— सं० (कि०) पदचिह्न।
**बङ·गोलसङ·**— सं० (कि०) पूर्णिमा।
**बङ·ङि·प**— सं० (कि०) सूतक, प्रसवकाल का अशुद्ध समय।
**बङ·चमिक**— अ० क्रि० (कि०) सुन्न होना।
**बङ·नङ·**— सं० (कि०) प्रसूतिअवस्था।
**बङ·बङ·**— वि० (कि०) भरा हुआ।
**बङ·माह**— स० क्रि० (कि०) दफन करना।
**बङ·मिक**— अ० क्रि० (कि०) भर जाना।
**बङ·ाथ**— सं० (कि०) कोठार में बने अनाज रखने के खाने।
**बङे·रो**— सं० (कि०) भांग।
**बङ्केदिन**— सं० (कि०) दुर्दिन।
**बङ्खमाह**— अ० क्रि० (कि०) पूरा होना।
**बचायामाह**— स० क्रि० (कि०) बचाना।
**बचार**— सं० (कि०) विचार।
**बचारयामिक**— स० क्रि० (कि०) विचार करना।
**बच्छरू**— सं० (ला०) बछड़ा।
**बछप**— सं० (कि०) मूत्र।
**बछा**— सं० (कि०) दे० बाचा।
**बजऊकिमाह**— स० क्रि० (कि०) बैंड-बाजे सहित ले जाना।
**बजतमतमाह**— अ० क्रि० (कि०) बजने देना।
**बजरङ·**— सं० (कि०) भाद्रपद।
**बजरबंग**— सं० (कि०) धूप की तेज गर्मी जब सब कुछ सूख जाता है।
**बजामू**— स० क्रि० (कि०) बजाना।
**बज़ायामाह**— स० क्रि० (कि०) पीटना।
**बज़ायामिक**— स० क्रि० (कि०) पीटना।
**बजीपू**— वि० (कि०) मंझली (बहिन)।
**बटंगी**— सं० (कि०) Pyrus pashia.
**बटक्यतुह**— अ० क्रि० (कि०) भटकना।
**बटसंगली**— सं० (कि०) Crataegus oxyacantha
**बटायामाह**— स० क्रि० (कि०) बटोरना।
**बटिच**— सं० (कि०) कांसे का प्याला।
**बटिथ**— सं० (कि०) चाय पीने का कांसे का प्याला।
**बटी**— सं० (कि०) गिलास।
**बड़ती**— सं० (कि०) भरपूर जल।
**बडल**— सं० (कि०) सिर।
**बडली**— सं० (ला०) टोकरी।
**बडारयामिक**— स० क्रि० (कि०) देवता या उसके 'ग्रोक्च' की शुद्धि करना।
**बणमाछु**— सं० (ला०) वनमानुष।
**बणशीर**— सं० (कि०) एक वन-देवता जिसकी देवदार के पेड़ में स्थापना की जाती है।
**बणाइबा**— स० क्रि० (ला०) बनाना।
**बणुबा**— स० क्रि० (ला०) गूंथना, आटा गूंथना।
**बणेर**— वि० (ला०) जंगली।
**बतानो**— सं० (कि०) सगाई।
**बतामाह**— स० क्रि० (कि०) पूछना।
**बतारङ·**— सं० (कि०) बातचीत।
**बतारङ·सा**— वि० (कि०) बातूनी।
**बताशमाह**— स० क्रि० (कि०) विचार-विमर्श करना।
**बताश्यमिक**— स० क्रि० (कि०) विचार-विमर्श करना।
**बत्ते**— अ० (ला०) संपूर्ण। वि० सब।
**बत्याचा**— वि० (कि०) बातचीत करने वाला।
**बथु**— सं० (कि०) गोमूत्र।
**बदनींई**— सं० (कि०) केतली।
**बदल**— सं० (कि०) आंख का सफेद जाला।
**बदळ**— सं० (ला०) बादल।
**बदा**— सं० (कि०) आया, धाय।
**बदाई**— सं० (कि०) बधाई।
**बदुड़**— सं० (ला०) बादल।
**बद्दे**— वि० (ला०) सब, प्रत्येक।
**बनंग**— सं० (कि०) Cotoneaster acuminate.
**बनऊदोरिङ·**— वि० (कि०) समीपवर्ती।
**बनजस**— सं० (कि०) भानजा।
**बनठयस**— वि० (कि०) प्यारा, सुंदर।
**बनठो**— सं० (कि०) भाग, हिस्सा।
**बनवा**— सं० (कि०) Myresine africana.
**बनशारी**— सं० (कि०) Corylus colurna.
**बनाछाङ·ा**— सं० (कि०) पिता-पुत्र।
**बनाडिए**— वि० (कि०) बांझ।
**बनामाह**— स० क्रि० (कि०) ख़यानत, अमानत रखी हुई वस्तु को दबा लेना, चुरा लेना।
**बनिङ·**— सं० (कि०) पात्र।

**बनिङ·खोपमाह**—स० क्रि० (कि०) पात्र को ढंकना।
**बनिबा**—स० क्रि० (ला०) बांधना।
**बनुङ**—सं० (कि०) मानजी।
**बपचे**—सं० (कि०) पतन।
**बपदुङ·माह**—अ० क्रि० (कि०) इलाज में रहना।
**बपशे**—अ० क्रि० (कि०) उतरना।
**बपू**—सं० (कि०) चाचा।
**बफमाह**—अ० क्रि० (कि०) सामान्य होना।
**बमोटामाह**—अ० क्रि० (कि०) कुहरा छाना।
**बमोन**—सं० (कि०) ब्राह्मण।
**बयङ·ओजा**—सं० (कि०) स्थानीय गेहूं।
**बयलमाह**—स० क्रि० (कि०) पहुंचाना।
**बयांग**—सं० (कि०) ऊन की एक किस्म जो बहुत लंबी होती है।
**बयांगकर**—सं० (कि०) 'बयांग' ऊन वाला मेंढ़ा।
**बयाह**—सं० (कि०) राजाओं में प्रचलित विवाह प्रथा।
**बयारङ**—सं० (कि०) पति-पत्नी।
**बयुल**—सं० (कि०) पाताल लोक।
**बर**—सं० (कि०) भेड़ की तरह का मृग।
**बर**—सं० (कि०) मध्य।
**बरउहतुमाह**—अ० क्रि० (कि०) फूल का खिलना।
**बरके**—सं० (कि०) शाखा।
**बरगोत**—सं० (कि०) वृद्धि, लाभ।
**बरछत**—सं० (कि०) दुर्घटना।
**बरछोङ**—सं० (कि०) अतिरिक्त व्यापार।
**बरजिगपा**—सं० (कि०) मझला बेटा।
**बरजिङ**—सं० (कि०) चक्कर।
**बरततमाह**—स० क्रि० (कि०) व्यवहार करना।
**बरतोन**—सं० (कि०) बर्तन, विवाह में दिए जाने वाले बर्तन।
**बरनङ**—सं० (कि०) आकाश व पृथ्वी के मध्य का भाग।
**बरबङ**—सं० (कि०) चक्कर आने का रोग।
**बरबा**—वि० (कि०) मध्यम श्रेणी का।
**बरमेछतमाह**—अ० क्रि० (कि०) अविरल, बिना रुके चलना।
**बरमाह**—स० क्रि० (कि०) खाना। अ० क्रि० जलना।
**बरमिक**—स० क्रि० (कि०) अलग करना।
**बरमी**—सं० (कि०) दुभाषी।
**बरमेली**—सं० (कि०) Euonymusttingens.
**बरलोई**—सं० (ला०) बटलोई।
**बरशङ**—सं० (कि०) वर्ष।
**बरा**—सं० (कि०) शाखा।
**बराट**—वि० (कि०) सख्त, कंजूस।
**बरानिस**—सं० (कि०) व्यायाम।
**बराबोर**—वि० (कि०) बराबर, समान।
**बरामासी**—सं० (कि०) गुलबहार पुष्प।
**बरासऊनी**—सं० (कि०) गंधर्व।
**बरासङ**—सं० (कि०) बरास का फूल।
**बरिह**—अ० (कि०) दूर।
**बरीजोत**—सं० (कि०) पूर्णिमा।
**बरीनबीमिक**—अ० क्रि० (कि०) लेटना।
**बरूपोसमाह**—अ० क्रि० (कि०) कुद्ते रहना।
**बरेंगठा**—वि० (कि०) टेढ़ा।
**बरे**—सं० (कि०) भाभी।
**बरेच**—सं० (कि०) देवर, देवरानी।
**बरेलङ**—सं० (कि०) एक कांटेदार झाड़ी जिसे झाड़-फूंक के काम लाया जाता है।
**बरेसकङ**—सं० (कि०) निष्क्रिय रूप से बैठे रहने का भाव।
**बरेह**—सं० (कि०) Quercus ibex.
**बरोर**—सं० (ला०) शहतीर।
**बर्रक**—सं० (कि०) वर्षा के पानी से गिरने वाला पत्थर।
**बल**—सं० (कि०) शीशा।
**बल**—सं० (कि०) ऊन।
**बलउबा**—स० क्रि० (ला०) सहारा लेना।
**बलकांगी**—सं० (कि०) Clematis barbellata.
**बलकोशा**—अ० क्रि० (कि०) किसी वस्तु का मुंह से बाहर निकलना।
**बलदेन**—अ० (कि०) शिखर पर।
**बलबलशो**—सं० (कि०) Fragaris vesca.
**बलमाह**—स० क्रि० (कि०) खदेड़ना।
**बलमाह**—अ० क्रि० (कि०) जल्दी करना।
**बलराशङ**—सं० (कि०) सिरदर्द।
**बलिह**—वि० (कि०) उतावला।
**बलीया**—सं० (कि०) राजमाष।
**बलु**—सं० (कि०) नस्ल का बकरा।
**बले**—अ० (कि०) पीठ में।
**बलेखा**—सं० (कि०) धोखा, गलती, भूल।
**बलेतीपू**—सं० (कि०) अखरोट प्रजाति का फल।
**बलेशन्निक**—स० क्रि० (कि०) पीठ पर लगाना।
**बल्टी**—सं० (कि०) बालटी।
**बल्लती**—सं० (कि०) चश्मे का पानी।
**बश**—वि० (कि०) अशुद्ध, अपवित्र, जूठा।
**बश**—सं० (कि०) रस्सी।
**बशकनङ**—सं० (कि०) भोजन।
**बशखेर**—सं० (कि०) कूड़ाकरकट, जूठन।
**बशतमाह**—अ० क्रि० (कि०) भिनभिनाना, रेंगना।
**बशबश**—वि० (कि०) फटा हुआ।
**बशमाह**—अ० क्रि० (कि०) फट जाना।
**बशमिक**—स० क्रि० (कि०) रस्सी आदि बांटना।
**बशाल**—सं० (कि०) Salix alba.
**बशिहमटङ**—सं० (कि०) फटी हुई धरती।
**बशिहराअ**—सं० (कि०) दरार वाला पत्थर।
**बशुतुमाह**—स० क्रि० (कि०) फूट जाना।
**बस**—सं० (कि०) घास का चिपकने वाला विशेष प्रकार का फल।
**बस**—सं० (कि०) शहद।
**बसकिसा**—सं० (कि०) वाद्ययंत्र वादक।
**बसकी**—सं० (कि०) वाद्ययंत्र।

बसक्यङ—अ० (कि०) अतिरिक्त।
बसत्यङ—सं० (कि०) मधुमक्खी।
बसदुश्माह—अ० क्रि० (कि०) ऊन में घास के फल का चिपकना।
बसोअ—सं० (कि०) जागीर।
बसोजुरामाह—स० क्रि० (कि०) जायदाद बनाना।
बस्तेप—सं० (कि०) सीढ़ीदार दीवार।
बस्पा—सं० (कि०) राख।
बहुई—सं० (ला०) बहू।
बहोरा—वि० (ला०) पागल।
बांक्रेच्याड़े—सं० (कि०) बुरे हाल, बुरे दिन।
बांगप्राच—सं० (कि०) पैर की उंगली।
बांगरा—सं० (कि०) Plectranthus goetra.
बांगा—सं० (कि०) पैर।
बांटयामिक—स० क्रि० (कि०) बांटना।
बांटाह—सं० (कि०) Clematis connata.
बांडा—सं० (कि०) बर्तन, भांडा।
बांडिए—वि० (कि०) बांझ।
बांडिबा—स० क्रि० (ला०) बांटना।
बांती—वि० (कि०) अनोखा।
बांती-बांती—अ० (कि०) विभिन्न, भांति-भांति।
बांथ-बांथ—वि० (कि०) अनोखे।
बांदबा—स० क्रि० (ला०) बांधना।
बांदरे—वि० (कि०) भूरे रंग का।
बांदरेस—सं० (कि०) बंदर।
बांदो—वि० (कि०) गिरवी।
बा:ग—सं० (कि०) मुखौटा।
बा:ङ—सं० (कि०) पैर; टांग।
बा:ङटौ—सं० (कि०) पैर दिखाना, पैर दिखाकर इन्कार करने का भाव।
बा:ङपोले—सं० (कि०) पैर में लगाया जाने वाला आभूषण।
बा:ङसाब—सं० (कि०) जुराब, मोजा।
बा:ङपौलोडी—सं० (कि०) पायजेब।
बा:ज़ेन्निक—अ० क्रि० (कि०) चुप रहना, बाज़ आना।
बा:ट—सं० (कि०) कांसे का प्याला।
बा:नचयामिक—स० क्रि० (कि०) पढ़ना।
बा:माह—स० क्रि० (कि०) मिलाना।
बा:र—सं० (कि०) शाखा।
बा:ल—सं० (कि०) शिखर, सिर।
बा:शला:श—वि० (कि०) फटा हुआ।
बा:शमिक—अ० क्रि० (कि०) फटना।
बा:स—सं० (कि०) चिपकने वाला घास।
बा—सं० (कि०) तह।
बा—सं० (ला०) पिता।
बाअ—सं० (कि०) मुखौटा।
बाइला—स० क्रि० (ला०) उगाना।
बाऊंदू—सं० (ला०) वायु, हवा।
बाऊलहुत—अ० क्रि० (कि०) पागल होना।
बाकचमिक—अ० क्रि० (कि०) दरार पड़ना।
बाख—सं० (कि०) भाग्य।
बाखचन—वि० (कि०) भाग्यवान्।
बाखया—सं० (कि०) कौए या लोमड़ी का बोलने का भाव, जिससे संदेश का अर्थ निकाला जाता है।
बाखरी—सं० (ला०) बकरी।
बाखो:र—सं० (कि०) बकरी।
बाख्यामाह—स० क्रि० (कि०) बहकाना।
बागङ—सं० (कि०) पिसाई का भाग।
बागिन—सं० (कि०) भाग्य।
बागुई—सं० (ला०) थैला।
बागे—सं० (कि०) पनघट, नल।
बागे—वि० (कि०) बायीं ओर से सबसे पीछे रहने वाला।
बागेर—अ० (ला०) बगैर, बिना।
बाङ—सं० (ला०) चुरु बैल।
बाङद्रा—सं० (ला०) युवा बैल।
बाङप्राच—सं० (कि०) पैर की उंगली।
बाचकोट—सं० (कि०) लबादा, वास्कट।
बाचा—सं० (ला०) खली।
बाछट—सं० (कि०) ऐसा मकान जिसके एक ओर दीवार नहीं होती है।
बाज़—सं० (कि०) बांस।
बाज़गी/गे—सं० (कि०) वाद्ययंत्र वादक।
बाज़यामिक—स० क्रि० (कि०) वाद्ययंत्र बजाना।
बाज़ी—सं० (कि०) सब्जी।
बाज़ेनिक—अ० क्रि० (कि०) चुप रहना; बजना।
बाटङ—सं० (कि०) बाड़।
बाटा—सं० (ला०) कटोरा।
बाटी—सं० (कि०) खुला पात्र।
बाड्डाश्यमाह—स० क्रि० (कि०) वार्तालाप करना।
बाठ—सं० (कि०) सूती धागा।
बाडयाशमिक—स० क्रि० (कि०) मुकाबला करना।
बाणि—सं० (कि०) बजाने का घंटा।
बात—सं० (ला०) मार्ग।
बातङ—सं० (कि०) बात।
बातङचु—सं० (कि०) बातचीत।
बातयाचया—वि० (कि०) बात करने वाला, सगाई करवाने वाला।
बातयामिक—स० क्रि० (कि०) पूछना, बात करना, सगाई करना।
बातर—सं० (ला०) वस्त्र।
बातेसमिक—स० क्रि० (कि०) बात करना।
बाथिहमीं—सं० (कि०) भिखारी।
बाथुर—सं० (ला०) वस्त्र।
बादरङगोल—सं० (कि०) भाद्रपद मास।
बादिल—सं० (ला०) बैल।
बादी—सं० (ला०) आरोप।
बादी—सं० (कि०) तोंद।

बादुर— वि० (कि०) वीर, बहादुर।
बादुल— सं० (ला०) बादल।
बादेहल— सं० (ला०) बैल।
बादौन— सं० (कि०) पानी पीने का पीतल का पात्र।
बान— सं० (कि०) बजाने की घंटी, कांसे का गोलाकार पात्र जिसे लकड़ी से बजाया जाता है।
बानज़ा— सं० (कि०) भानजा।
बानज़ास— सं० (कि०) भानजे, भानजियां।
बानज़े— सं० (कि०) भानजी।
बानठिन— वि० (कि०) सुंदर; तरुणि।
बानठो— सं० (कि०) भाग, हिस्सा।
बानी— सं० (कि०) बान वृक्ष।
बानुच— सं० (कि०) भतीजा, भतीजी।
बानेस— सं० (कि०) एक विशेष त्योहार में पतली लकड़ियों को बाट कर बनाया गया सांप।
बान्नू— अ० क्रि० (कि०) हंसना।
बापू— सं० (कि०) चाचा।
बापूच— सं० (कि०) छोटा चाचा।
बाबा— सं० (ला०) चाचा।
बाबा— सं० (ला०) मौसा।
बाबाच— सं० (कि०) मौसा।
बाम— सं० (कि०) नगाड़ा।
बामङ— वि० (कि०) बुरा, गलत।
बामङलोमाह— स० क्रि० (कि०) अनुचित कहना।
बामङव्यासङ— सं० (कि०) बुरी आदत।
बामटामाह— अ० क्रि० (कि०) आराम करना।
बामटामाह— स० क्रि० (कि०) नगाड़े बजाना।
बाममिक— अ० क्रि० (कि०) हारना।
बाममू— अ० क्रि० (कि०) हारना।
बामियां— सं० (कि०) नगाड़ा वादक।
बामोण— सं० (कि०) ब्राह्मण।
बायङ— सं० (कि०) देवता को उठाने की एक जोड़ी डंडी। भाग्य।
बायरङ— अ० (कि०) बाहर।
बाया— सं० (ला०) मौसी; चाची।
बायो— सं० (कि०) छोटा भाई।
बायाऊशोत— सं० (कि०) चर्मरोग, खुजली।
बायामाह— स० क्रि० (कि०) बहा देना।
बायामिक— स० क्रि० (कि०) बहा देना। चांटा मारना। फेंकना।
बायारङ— सं० (कि०) पति-पत्नी।
बायु— सं० (कि०) गोमूत्र।
बायो— वि० (कि०) सम आयु के साथी।
बारङ— सं० (कि०) बोझ।
बारच— सं० (कि०) छोटी शाखा।
बारहजोत— सं० (कि०) द्वादशी।
बाराश्यमाह— अ० क्रि० (कि०) संभलना।
बारेयाशमिक— अ० क्रि० (कि०) संभलना।
बालगमा— वि० (कि०) पहला।
बालङ— सं० (कि०) पौधा।
बालजान— सं० (कि०) बकरे के बाल से बना जूता।
बालफासुर— सं० (कि०) सुरा निकालते समय उसकी पहली बूंदें।
बालराशङ— सं० (कि०) सिरदर्द।
बालिक— सं० (कि०) बालक।
बालिङ— सं० (कि०) रेत।
बालिछूमाह— अ० क्रि० (कि०) अति होना।
बालिया— सं० (कि०) राजमाष।
बालुदेन— अ० (कि०) शिखर पर।
बाश— वि० (कि०) अनुकूल।
बाशटो— सं० (कि०) लंबा-मोटा डंडा।
बाशबा— अ० क्रि० (ला०) पशु, पक्षी का बोलना।
बाशाग— सं० (कि०) बांसुरी।
बाश्यङ— सं० (कि०) बांसुरी।
बासक्यङ— वि० (कि०) अतिरिक्त।
बासन— सं० (कि०) बोझ।
बासनो— अ० क्रि० (कि०) रंभाना।
बासमोंती— सं० (कि०) बासमती चावल।
बासिङ— सं० (कि०) बसूला।
बासिङगारया— सं० (कि०) चूहा।
बासिया— वि० (कि०) सुगंधित।
बास्कट— सं० (ला०) बिना आस्तीन का परिधान जिसे कोट के नीचे और कमीज़ के ऊपर पहनते हैं।
बास्तु— सं० (कि०) हवन।
बाहतर— सं० (ला०) वस्त्र।
बाहिबा— स० क्रि० (ला०) हल जोतना।
बाहिरां— अ० (ला०) बाहर।
बि— वि० (ला०) बीस।
बि— अ० (ला०) भी।
बिईअमां— सं० (कि०) सौतेली मां।
बिईछङख— सं० (कि०) सौतेला बच्चा।
बिकपा— सं० (कि०) डंडा।
बिक्रिबा— स० क्रि० (ला०) बेचना।
बिख— सं० (कि०) विष।
बिखोरिया— वि० (कि०) व्यवहार कुशल।
बिखौख्यारङ— वि० (कि०) युक्तियुक्त।
बिखौख्यारङकनमाह— स० क्रि० (कि०) सलाह देना।
बिखौर— सं० (कि०) युक्ति।
बिगछा— सं० (कि०) व्यथा।
बिगता— सं० (कि०) मुसीबत, कष्ट।
बिगबिई— वि० (कि०) आलसी।
बिचङटामाह— अ० क्रि० (कि०) चले जाना।
बिच्च— अ० (ला०) बीचों-बीच।
बिछु— सं० (कि०) सिटकिनी, छपका, कुंडा।
बिजबा— स० क्रि० (ला०) बंद करना।
बिजबा— स० क्रि० (ला०) भेजना।

बिजा—सं० (कि०) मीठी गुठली।
बिजुल—सं० (कि०) दामिनी, आकाश की बिजली।
बिजेसमिक—अ० क्रि० (कि०) आकाश निर्मल होना।
बिजो—वि० (कि०) सूखा।
बिजोबिमिक—अ० क्रि० (कि०) सूखा पड़ना।
बिलमाह—स० क्रि० (कि०) पीसना।
बिति—सं० (ला०) दीवार।
बितिङ—सं० (कि०) दीवार।
बितुङसीई—सं० (कि०) दीवार पर बने चित्र।
बित्त—सं० (कि०) सत्तू।
बित्त—वि० (कि०) थोड़ा सा।
बिथों—सं० (कि०) विवाह में लड़की को दिया जाने वाला सामान, दहेज।
बिद—सं० (कि०) कंघा।
बिदोजेऊ—सं० (कि०) अनावृष्टि।
बिदोजेमाह—अ० क्रि० (ला०) सूखा पड़ना।
बिधमाता—सं० (कि०) भाग्य लिखने वाली देवी।
बिनमाह—अ० क्रि० (कि०) चलना।
बिनूजेमाह—अ० क्रि० (कि०) पैदल जाना।
बिमोलस—वि० (कि०) चेतनाहीन।
बियङ—सं० (कि०) बीज।
बियम—सं० (कि०) भाई-बहन।
बियोशसिक—स० क्रि० (कि०) विदा करना।
बिराई—सं० (ला०) बिल्ली।
बिरी—सं० (कि०) लकड़ी की दातुन।
बिल—सं० (कि०) कंबल के किनारों पर लगने वाली डोरी।
बिलङिम—सं० (कि०) चीता पकड़ने का जाल।
बिलबिल—वि० (कि०) चिकना, फिसलनयुक्त।
बिलिपांच—सं० (कि०) एक प्रकार का खेल जिसमें मैदान में चतुर्भुज आकार में दाएं-बाएं पांच-पांच खाने बनाकर चपटे पत्थर को एक पैर से धक्का मारते हुए खेलते हैं।
बिलेए—वि० (कि०) अंतिम।
बिलोशनिङकपरा—सं० (कि०) कफन।
बिशङ—सं० (कि०) विष।
बिशारङ—वि० (कि०) हैरान, विस्मित।
बिशारेन्निक—अ० क्रि० (कि०) विस्मित होना, हैरान होना।
बिश्टु—वि० (कि०) विवाह का मध्यस्थ।
बिश्यारतुह—अ० क्रि० (कि०) विस्मित होना।
बिसुरबा—अ० क्रि० (ला०) भूलना।
बिहाएक—वि० (ला०) इक्कीस।
बीत—सं० (कि०) पीठ।
बीधु—सं० (कि०) 'फाफरे' के आटे की एक प्रकार की रोटी।
बीनयामिक—स० क्रि० (कि०) पसंद करना।
बीमिक—अ० क्रि० (कि०) गुम होना, मिटना।
बीरबली—सं० (ला०) पुरुषों के कान का आभूषण।
बीशा—सं० (कि०) वैशाखी।
बीश्य—सं० (कि०) वैशाखी।
बीश्यङची—सं० (कि०) विषैला घास।
बुंबा—सं० (कि०) कलश।
बुंबा—सं० (कि०) कुंडल।
बु—सं० (कि०) अनाज।
बु—सं० (कि०) लड़का।
बुआ—सं० (ला०) बुढ़ापा।
बुआर—सं० (ला०) झाडू।
बुआरी—सं० (कि०) बहू।
बुईबा—स० क्रि० (ला०) बुनना।
बुऊ—सं० (कि०) कीड़ा।
बुक—अ० (कि०) आगे।
बुकज़—सं० (कि०) गठरी।
बुकतयामिक—स० क्रि० (कि०) भुगतना।
बुकुप—सं० (कि०) भूसा।
बुकुप—वि० (कि०) नासमझ।
बुकुर—सं० (ला०) भूख।
बुकुरे—वि० (ला०) भूखा।
बुक्का—सं० (ला०) वृक्क, गुर्दा।
बुख—सं० (कि०) गठरी।
बुखारी—सं० (कि०) तंदूर।
बुखोमाह—स० क्रि० (कि०) फसल काटना।
बुगजाल—सं० (कि०) एक प्रकार का वाद्ययंत्र।
बुङ—अ० (कि०) एक बार।
बुङखमाह—अ० क्रि० (कि०) हाथ-पैर का सुन्न हो जाना।
बुङबुङ—वि० (कि०) भरा हुआ।
बुङशकङ—सं० (कि०) फसल से भरा खेत।
बुङसिई—सं० (कि०) मधु, शहद।
बुङहजेमाह—अ० क्रि० (कि०) भर जाना।
बुचेन—सं० (कि०) एक जाति विशेष जो तांत्रिक अभिनय करती है।
बुज़यामिक—अ० क्रि० (कि०) भुनना।
बुज़ामाह—स० क्रि० (कि०) छौंक लगाना, भूनना।
बुटली—सं० (कि०) लोटा, गड़वी।
बुटले—सं० (कि०) बटलोई।
बुटिई—सं० (कि०) जड़ी-बूटी।
बुठ—सं० (ला०) वृक्ष।
बुड़ी—सं० (ला०) बुढ़िया।
बुढ़ियार—सं० (ला०) मकड़ी।
बुणबा—स० क्रि० (ला०) बुनना।
बुणिहार—सं० (ला०) जुलाहा।
बुणिहार—सं० (ला०) मकड़ी का जाला।
बुतङ—सं० (कि०) मकड़ी।
बुतपा—सं० (कि०) धौंकनी।
बुतिगचे—सं० (कि०) मंत्रमाला।
बुदनों—सं० (कि०) दे० बुदड़ा।
बुदारङ—सं० (कि०) बुधवार।
बुदिङ—सं० (कि०) बुद्धि।

**बुन**—अ० (ला०) नीचे।
**बुनकड**—वि० (कि०) पृथ्वी पर गिरा हुआ।
**बुनक्युलिङ**—सं० (कि०) भूकंप।
**बुननिक**—अ० क्रि० (कि०) उखड़ना।
**बुनमिक**—अ० क्रि० (कि०) आना।
**बुनाई**—सं० (ला०) खेत का अंदर का किनारा।
**बुनेन**—सं० (कि०) स्वैटर।
**बुनोटी**—वि० (कि०) नकली, बनावटी।
**बुबा**—सं० (कि०) पिता।
**बुबिङ**—सं० (कि०) मंज़िल।
**बुबु**—सं० (ला०) फूफी।
**बुबु**—सं० (कि०) धाय, आया।
**बुमछु**—सं० (कि०) कलश का पानी।
**बुमो**—सं० (कि०) लड़की।
**बुरक्यामिक**—स० क्रि० (कि०) छिड़कना, सूखी वस्तु को छिड़कना।
**बुरजा**—सं० (कि०) सुखाई गई मीठी खूबानी।
**बुरिङ**—सं० (कि०) रिश्वत।
**बुरुबरुह**—वि० (कि०) उभरा हुआ।
**बुलक्यामिक**—स० क्रि० (कि०) छीनना।
**बुलती**—सं० (कि०) चश्मे का पानी।
**बुलथुप**—सं० क्रि० (कि०) धन इकट्ठा करना।
**बुलबा**—सं० (कि०) दान।
**बुलबाटई**—वि० (कि०) दानी।
**बुलबुलतमाह**—अ० क्रि० (कि०) बुदबुदाना।
**बुलबुलीसाङमिक**—अ० क्रि० (कि०) ऊषाकाल होना।
**बुलिई**—सं० (कि०) पीठ।
**बुसङ**—सं० (कि०) भूसा।
**बुसलिङ**—सं० (कि०) भूसे के तिनके, कण।
**बुसे**—सं० (कि०) लुहार की धौंकनी।
**बुहि**—सं० (ला०) बुढ़िया।
**बू**—सं० (कि०) कुष्ठ।
**बूज**—सं० (ला०) कागज़।
**बूज़ामाह**—स० क्रि० (कि०) भूनना।
**बूरज़िङलामाह**—अ० क्रि० (कि०) चक्कर खाना।
**बूरतिई**—सं० (कि०) देवता को अर्पित बकरे पर डाला जाने वाला जल।
**बूरथमाह**—अ० क्रि० (कि०) पशु का हिलना।
**बूशङ**—सं० (कि०) एक रोग।
**बूस**—सं० (कि०) धागा।
**बेंज**—सं० (ला०) बांसुरी।
**बेंथु**—सं० (कि०) फटे-पुराने वस्त्रों से बनाई 'खिंद'।
**बे:**—सं० (कि०) पैसे लेकर ज़मीन बेचने की क्रिया।
**बे**—सं० (कि०) पहाड़।
**बेअद**—सं० (ला०) डर, भय।
**बेइबा**—अ० क्रि० (ला०) बहना।
**बेऊकोअमाह**—अ० क्रि० (कि०) भय से सिकुड़ना।
**बेऊथुतुरुप**—वि० (कि०) अति भयभीत।
**बेकरे**—वि० (कि०) सादा।
**बेकरेडोरी**—सं० (कि०) ऊन का सादा कंबल।
**बेकैदा**—वि० (कि०) नियम विरुद्ध।
**बेक्यामिक**—स० क्रि० (कि०) बहकाना।
**बेखलांग**—सं० (कि०) Prinsepia utilis.
**बेचङ**—सं० (कि०) मूल्य।
**बेठू**—सं० (कि०) देवता का कार्य करने वाला हरिजन व्यक्ति; नौकर।
**बेतसा**—वि० (कि०) छिलकेदार।
**बेतें**—सं० (कि०) छोटा भाई।
**बेद**—सं० (कि०) रहस्य।
**बेनङ**—सं० (कि०) लकड़ी। हत्था।
**बेना**—सं० (कि०) कस्तूरी मृग।
**बेपचितलमाह**—स० क्रि० (कि०) अपमानित करना।
**बेफैदा**—सं० (कि०) जिसमें कोई लाभ न हो।
**बेबाख**—सं० (कि०) अधिकार से वंचित।
**बेमान**—वि० (कि०) बेईमान, झूठा।
**बेर**—सं० (कि०) महल।
**बेरखा**—सं० (कि०) डंडा।
**बेरखाखखेमाह**—स० क्रि० (कि०) डंडे से मारना।
**बेरगा**—सं० (कि०) डंडा।
**बेरङ**—सं० (कि०) समय, वक्त।
**बेलङ**—सं० (कि०) देवमंदिर में आरती के समय बजाया जाने वाला वाद्य।
**बेलडङ**—सं० (कि०) विवाह के अवसर पर वर को दिए जाने वाले रुपए।
**बेलापिन्माह**—अ० क्रि० (कि०) समय बिताना।
**बेशङ**—सं० (कि०) साल।
**बेशतमाह**—अ० क्रि० (कि०) टिकना।
**बेशबा**—अ० क्रि० (ला०) रहना, बैठना।
**बेश्यागङ**—सं० (कि०) वैशाख।
**बेसपा**—वि० (कि०) परदेसी।
**बेसरेस**—सं० (कि०) स्वर्ण का बना नाक का आभूषण।
**बेस**—सं० (कि०) एक फल।
**बेसु**—सं० (ला०) खटमल।
**बेसु**—सं० (कि०) लकड़ी का तराशा हुआ लंबा डंडा जो पत्थर आदि पलटने के काम आता है।
**बैकून**—सं० (कि०) Principia utilis.
**बैगमिक**—अ० क्रि० (कि०) भूमि कटाव होना।
**बैगरादोरी**—सं० (कि०) सादा ऊनी कंबल।
**बैठी**—सं० (कि०) विश्राम।
**बैम**—सं० (कि०) टिड्डी।
**बैमअकत**—सं० (कि०) खतरे की सूचना।
**बैमाह**—अ० क्रि० (कि०) डरना।
**बैमाहथहङख**—वि० (कि०) भयानक।
**बैरङ**—अ० (कि०) बाहर।
**बैरु**—सं० (कि०) हरिजन।
**बैसुमाह**—अ० क्रि० (कि०) डर लगना।

**बोंचे**— सं० (कि०) ऊन।
**बोंशु**— सं० (कि०) फेफड़ा।
**बो:न**— सं० (कि०) पिता।
**बो:र**— सं० (कि०) वरदान।
**बो:रङ**— सं० (कि०) वरदान।
**बोअङ**— वि० (ला०) अत्यधिक।
**बोअची**— सं० (कि०) सौतेली मां की बेटी।
**बोअमाह**— अ० क्रि० (कि०) गिरना।
**बोअमिक**— अ० क्रि० (कि०) भाग जाना।
**बोआऊ**— सं० (कि०) सौतेला पिता।
**बोआमा**— सं० (कि०) सौतेली मां।
**बोआर**— सं० (कि०) संबंध।
**बोइमनबंठेन**— वि० (कि०) अतिसुंदर (स्त्री)।
**बोई**— सं० (कि०) बही-खाता।
**बोईरस**— वि० (कि०) शत्रु।
**बोईसा**— सं० (कि०) साली।
**बोऊचे**— सं० (कि०) चाचा।
**बोऊजेमाह**— अ० क्रि० (कि०) निद्रा में चलना।
**बोऊला**— वि० (कि०) पागल।
**बोऊलेसमिक**— अ० क्रि० (कि०) पागल होना।
**बोकसुप**— सं० (कि०) घुटना।
**बोक्**— सं० (कि०) गर्मी।
**बोक्सुपतिमाह**— स० क्रि० (कि०) गला घोंटना।
**बोखपारङ**— सं० (कि०) ताज़ी चोट।
**बोगत**— वि० (कि०) भक्त।
**बोगती**— सं० (कि०) गरम जल।
**बोगरस**— वि० (कि०) साधारण, तुच्छ, घटिया।
**बोगान**— सं० (कि०) भगवान्।
**बोगानमच्हिई**— सं० (कि०) नास्तिक।
**बोङ**— सं० (कि०) कूड़ा।
**बोङथोर**— वि० (कि०) मोटा, सुस्त।
**बोङबोङ**— वि० (कि०) विस्तृत।
**बोङरा**— सं० (कि०) मुर्गी का दड़बा।
**बोङसर**— सं० (कि०) दीपक का धागा।
**बोचया**— वि० (कि०) नींद में बोलने वाला।
**बोचयामिक**— स० क्रि० (कि०) बचाना।
**बोचायाम्**— अ० क्रि० (कि०) बचना।
**बोजङ**— अ० (कि०) आज, वर्तमान दिन में।
**बोजङ**— सं० (कि०) भोज, देवता की ओर से दिया गया भोजन।
**बोजो**— सं० (कि०) बकरा।
**बोजो:न**— सं० (कि०) देवता के मंदिर का प्रसाद।
**बोटकङ**— वि० (कि०) उभरा हुआ।
**बोटङ**— सं० (कि०) वृक्ष।
**बोटथ**— सं० (कि०) कटोरा।
**बोटया**— सं० (कि०) दे० दाच।
**बोटुआ**— सं० (कि०) बटुआ।
**बोटोका**— वि० (कि०) मोटा।
**बोटोग्रंथ**— सं० (कि०) अंगूठा।
**बोठङ**— सं० (कि०) वृक्ष।
**बोठङ्हश्म**— सं० (कि०) वृक्षों के झाड़ीदार पत्ते।
**बोड़ाई**— सं० (कि०) इज़्ज़त।
**बोडुप**— सं० (कि०) गधा।
**बोडू**— सं० (कि०) पात्र विशेष जिसे दाल, मांस आदि पकाने हेतु प्रयुक्त करते हैं।
**बोत**— सं० (कि०) छाछ।
**बोतख**— सं० (कि०) मकड़ा।
**बोतखएकोलङ**— सं० (कि०) मकड़ी का जाल।
**बोतझुलमाह**— स० क्रि० (कि०) खाल या छिलका उतारना।
**बोत्**— वि० (कि०) बदमाश।
**बोथमाह**— स० क्रि० (कि०) प्राप्त करना।
**बोद**— सं० (कि०) तिब्बत।
**बोदकिसमत**— वि० (कि०) बदकिस्मत।
**बोदकौदामिक**— स० क्रि० (कि०) अकड़ के साथ नखरे करना।
**बोदचलन**— वि० (कि०) बदचलन।
**बोदतमाह**— अ० क्रि० (कि०) बढ़ना।
**बोदपा**— वि० (कि०) तिब्बती।
**बोदलयामिक**— स० क्रि० (कि०) बदलना।
**बोदला**— सं० (कि०) बदला।
**बोदलाम**— वि० (कि०) बदनाम।
**बोदि**— वि० (कि०) अधिक।
**बोदिबङमाह**— अ० क्रि० (कि०) अधिक होना।
**बोदी**— सं० (कि०) बुराई।
**बोदोल**— सं० (कि०) बोतल।
**बोन**— सं० (कि०) वन, जंगल।
**बोनङ**— सं० (कि०) चरागाह।
**बोनचा**— सं० (कि०) बाप-बेटा।
**बोनडोरिया**— सं० (कि०) सैनिक।
**बोनप्यूथ**— सं० (कि०) नेवला।
**बोनप्रच**— सं० (कि०) अंगूठा।
**बोनबोस्ता**— सं० (कि०) प्रबंध, बंदोबस्त।
**बोनमी**— सं० (कि०) वनमानुष।
**बोनमी**— वि० (कि०) ठिंगना।
**बोनवा**— सं० (कि०) किसान।
**बोनशियर**— सं० (कि०) वनदेवता।
**बोनिथ**— सं० (कि०) गवाक्ष, रोशनदान।
**बोन्याङ**— सं० (कि०) वन।
**बोबा**— सं० (कि०) पिता।
**बोमलिनारे**— सं० (कि०) बहने वाला द्रव।
**बोमिक**— अ० क्रि० (कि०) नींद में बोलना।
**बोयतमाह**— अ० क्रि० (कि०) बहना।
**बोयतिहनोर**— सं० (कि०) तरल पदार्थ।
**बोयन्निक**— अ० क्रि० (कि०) बहना।
**बोरगोंत**— सं० (कि०) बरकत, वृद्धि।
**बोरचा**— सं० (ला०) झाड़ी।

बोरछिन्माह— स० क्रि० (कि०) धन छीनना।
बोरछो— सं० (कि०) भाला।
बोरतियामिक— स० क्रि० (कि०) बरतना, व्यवहार करना।
बोरतुहपिन्माह— स० क्रि० (कि०) व्यवहार करना।
बोरतेसमिक— स० क्रि० (कि०) व्यवहार करना, बरतना।
बोरथुहजेमाह— अ० क्रि० (कि०) विसर्जित होना।
बोररिङ— सं० (कि०) छत की मुख्य मोटी लकड़ी।
बोरलाकन— सं० (कि०) प्रत्याशी, उम्मीदवार।
बोरे— सं० (कि०) ननद; भाभी; देवर, जेठ।
बोरेच— सं० (कि०) छोटी आयु के देवर; देवरानी; ननद; भाभी।
बोरोन्निङ— सं० (कि०) मकान की छत का मुख्य बड़ा शहतीर।
बोरोम— सं० (कि०) भ्रम।
बोरोमलऊपिन्माह— अ० क्रि० (कि०) सनक सवार होना।
बोरोमिया— वि० (कि०) भ्रमित।
बोल— सं० (कि०) जुराब।
बोलकेरमाह— स० क्रि० (कि०) जुराब बुनना।
बोलदन— सं० (कि०) बैठने का गद्दा।
बोलबड— सं० (कि०) बिवाई।
बोलबा— स० क्रि० (ला०) कहना, बोलना।
बोलमाह— अ० क्रि० (कि०) फटना।
बोलमिक— अ० क्रि० (कि०) फटना।
बोलमो— वि० (कि०) नर्म।
बोलमोडेयङसे— वि० (कि०) कोमलांगी।
बोलश— वि० (कि०) उत्तम।
बोलाचांगा— वि० (कि०) भली प्रकार, अच्छा, स्वच्छ।
बोलास— सं० (कि०) सामर्थ्य।
बोलिबा— स० क्रि० (ला०) बुलाना।
बोलू— सं० (कि०) नस्ल का बकरा।
बोशमिक— अ० क्रि० (कि०) भूलना।
बोशार— सं० (कि०) हलदी।
बोशारबनिङ— सं० (कि०) मसालादानी।
बोश्यंग— सं० (कि०) वर्ष।
बोशियमिक— अ० क्रि० (कि०) भूलना।
बोसपा— सं० (कि०) राख।
बोसाखु— सं० (कि०) स्थानीय तंबाकू।
बोसुहपिन्माह— अ० क्रि० (कि०) घुस जाना।
बोसेचिया— वि० (कि०) बसने वाला।
बोसेन्निक— अ० क्रि० (कि०) बसना।
बोहडू— सं० (ला०) गेंदे का फूल।
बोहलाण— वि० (ला०) पहलवान।
बौ— सं० (कि०) चर्बी।
बौकेसमिक— अ० क्रि० (कि०) बकना। बहना।
बौङरस— सं० (कि०) भ्रमर, भौंरा।
बौटोम— सं० (कि०) बटन।
बौत— सं० (कि०) छिलका।
बौनङ— सं० (कि०) खरपतवार।
बौल— सं० (कि०) त्योहार।
बौलमिक— अ० क्रि० (कि०) बढ़ना।
बौशिमू— अ० क्रि० (कि०) भूलना।
ब्यकटू— सं० (कि०) तिब्बत का पशम वाला छोटा बकरा।
ब्यङ— सं० (कि०) डर।
ब्यङकार— सं० (कि०) तिब्बती मेढ़ा।
ब्यङकार— सं० (कि०) आंच।
ब्यङमिक— अ० क्रि० (कि०) डरना।
ब्यनलप— सं० (कि०) पानी की लहर।
ब्यांगी— सं० (कि०) लंबे रेशे वाली ऊन जो तिब्बती भेड़ों की हुआ करती थी।
ब्याकिउरा— वि० (ला०) विवाहित।
ब्यालीङ— सं० (कि०) लकड़ी का मकान।
ब्यासङ— सं० (कि०) स्वभाव।
ब्याहू— सं० (ला०) दूल्हा।
ब्युर— सं० (कि०) खूबानी या अखरोट के वृक्ष में असामान्य रूप से उपजे पत्ते।
ब्युरथ— सं० (कि०) एक जंगली घास।
ब्युर-ब्युर— वि० (कि०) लंबा।
ब्यूर— सं० (कि०) Artemisia maritma.
ब्यों— अ० (ला०) ऊपर।
ब्योंच— सं० (कि०) टिड्डा।
ब्योमाह— अ० क्रि० (कि०) भाग जाना।
ब्योलाग— सं० (कि०) दे० ब्यूहल।
ब्योशैनों— सं० (कि०) विदाई।
ब्रंथ— सं० (कि०) अंगुली।
ब्रङमाह— अ० क्रि० (कि०) फैलना, वृद्धि होना।
ब्रण— सं० (ला०) आटा।
ब्रबु— सं० (ला०) भालू।
ब्रलम— सं० (कि०) चौराहा।
ब्रलमाह— अ० क्रि० (कि०) गिर जाना।
ब्रश— सं० (कि०) रस्सा।
ब्रस— सं० (कि०) एक अन्न विशेष 'फाफरा'।
ब्रसलतमाह— अ० क्रि० (कि०) रोगग्रस्त होना।
ब्रहलमाह— अ० क्रि० (कि०) बिछुड़ना।
ब्राकजा— वि० (कि०) शाखाओं वाला।
ब्राकेय— वि० (कि०) दो शाखाओं वाला।
ब्राक्यो— सं० (कि०) तने का वह भाग जहां से शाखा निकलती है।
ब्राखतिसङ— सं० (कि०) शुद्ध आटा।
ब्रागमिक— स० क्रि० (कि०) चबाना।
ब्रान— सं० (ला०) शाखा।
ब्रामाह— स० क्रि० (कि०) चबाना।
ब्रालेअगोत— वि० (कि०) दोतरफा बोलने वाला।
ब्रिकुणुबा— स० क्रि० (ला०) बेचना।
ब्रिङमाह— अ० क्रि० (कि०) मुक्त होना, खिसकना।
ब्रिनजेमाह— अ० क्रि० (कि०) गिरना।
ब्रिनतिखमाह— अ० क्रि० (कि०) लेटना।

ब्रिनपिन्माह— स० क्रि० (कि०) गिराना।
ब्रिनलतमाह— अ० क्रि० (कि०) सरकना।
ब्रिनलतीह— सं० (कि०) सांप।
ब्रिनलु— सं० (कि०) सांप।
ब्रिनलो— वि० (कि०) गोलाई में मुड़ा हुआ।
ब्रिनशनो— अ० क्रि० (कि०) लेटना।
ब्रुथमाह— अ० क्रि० (कि०) उबाल आना।
ब्रुनमाह— अ० क्रि० (कि०) समाप्त होना।
ब्रुन्निक— अ० क्रि० (कि०) समाप्त होना।
ब्रुसमाह— अ० क्रि० (कि०) गिरना।
ब्रुसमिक— अ० क्रि० (कि०) गिरना।
ब्रू— सं० (कि०) अनाज।
ब्रेखोमाह— स० क्रि० (कि०) फसल काटना।
ब्रेंगड़ा— वि० (कि०) टेढ़ी टांगों वाला।
ब्रेंच— सं० (कि०) टिड्डी।
ब्रेगज़ा— सं० (ला०) अंगुली।
ब्रेनमाह— अ० क्रि० (कि०) फिसलना।
ब्रेमे— सं० (कि०) सुरागाय।
ब्रेलडङ— सं० (कि०) दहेज।
ब्रेसि— सं० (ला०) खटमल।
ब्रो— सं० (कि०) अनाज।
ब्रोकमब्राकस— अ० (कि०) उथल-पुथल।
ब्रोसा— सं० (कि०) सहारा।

## भ

भंडारङ— सं० (कि०) भंडार।
भंती— वि० (कि०) अद्‌भुत, अनोखा।
भइरां— अ० (ला०) बाहर।
भकी— सं० (ला०) तराजू।
भकोरा— वि० (ला०) बासी।
भगुथ— सं० (ला०) भोजन।
भगुला— सं० (कि०) अतिथिगृह।
भट— सं० (ला०) भाट।
भटाइबा— स० क्रि० (ला०) छिड़कना।
भणेज— सं० (ला०) भानजा।
भणेजी— सं० (ला०) भानजी।
भतार— सं० (ला०) पति।
भनारङ— सं० (कि०) भंडार।
भम— सं० (ला०) फेफड़ा।
भरबा— स० क्रि० (ला०) भरना।
भरिबा— स० क्रि० (ला०) भरना।
भरैखु— सं० (ला०) लाल भालू।
भरोरा— वि० (ला०) भरपूर।
भरोशा— सं० (कि०) भरोसा, सहारा, आश्रय।
भसिईछला— सं० (कि०) अविनाशी वस्तु।
भांजेच— सं० (कि०) भानजी।
भाईचा— सं० (कि०) छोटे भाई-बहिन।
भाईसई— सं० (कि०) महिला-मित्र।
भाओ-चाओ— सं० (कि०) भाव, दर, मूल्य।
भागयालेख— सं० (कि०) वंश के लोग।
भागिच— वि० (कि०) पतला।
भाङगुगा— वि० (ला०) दुर्बल।
भाज़ा— सं० (कि०) भाई।
भाण— सं० (ला०) पात्र, बर्तन।
भान— सं० (कि०) Rhusparviflora.
भापिन— सं० (ला०) खाल।
भाबी— सं० (ला०) ननद।
भायू— सं० (ला०) पानी को बहाव देने के लिए प्रयुक्त लकड़ी की छोटी नाली।
भायो— सं० (कि०) बड़ी बहिन।
भारती— सं० (कि०) Andrachne Cordifolia.
भारबा— स० क्रि० (ला०) भरना।
भाहा— अ० (कि०) दायें।
भित्त— सं० (ला०) दीवार।
भियाइबा— अ० क्रि० (ला०) भोर होना।
भिशाउरा— वि० (ला०) प्यासा।
भिशें— वि० (ला०) प्यासा।
भीतचे— अ० (कि०) थोड़ा सा।
भीतरी— सं० (कि०) चांदी के सिक्कों का बना आभूषण विशेष।
भुंदाद— सं० (कि०) सहायता, मदद।
भुईआखे— सं० (कि०) Fragaria Vesca.
भुकचे— अ० क्रि० (कि०) भौंकना।
भुकुर— सं० (ला०) भूख।
भुक्क भुक्क— वि० (कि०) बुरी तरह पिचका हुआ।
भुगतायामाह— स० क्रि० (ला०) भोगना।
भुजपत्रा— सं० (ला०) कागज़, भूर्जपत्र।
भुजै— सं० (ला०) पुस्तकें।
भुछुल— सं० (ला०) भूचाल।
भुती— सं० (कि०) नदी का गंदा पानी।
भुम— सं० (कि०) गोद।
भुमिक— अ० क्रि० (कि०) बर्फ के पिघलने या अधिक वर्षा से नदी के जल का अधिक गंदला होना।
भुरे— वि० (ला०) भूरा।
भुलमोरा— सं० (कि०) Rumex hestutus.
भुलु— सं० (ला०) उल्लू।
भुलुख— सं० (ला०) उल्लू।
भूमिग— सं० (कि०) खंड।
भूलखा— सं० (कि०) कलेजी, फेफड़े आदि का सूखा भुना हुआ मांस।
भूसङ— सं० (कि०) भूसा।
भे— सं० (ला०) बड़ा पत्थर।
भेसा— सं० (कि०) साली।

**भैं**—सं० (ला०) सलहज, साले की पत्नी। चाचा की पुत्री, बुआ की पुत्री।
**भैकुनी**—सं० (कि०) दे० मेखळ।
**भो**—अ० क्रि० (ला०) है।
**भोटङ**—सं० (कि०) दे० भौठ।
**भोठबा**—स० क्रि० (ला०) तोड़ना।
**भोलकू**—सं० (कि०) पानी में उगने वाला साग।
**भौरम**—सं० (कि०) भ्रम।
**भ्रमलामाह**—स० क्रि० (कि०) समेटना। अ० क्रि० लिपटना।
**भ्राउजी**—सं० (ला०) ननद।
**भ्रेंच**—वि० (कि०) बहुत बड़ा।
**भ्रे**—सं० (ला०) मेड़।
**भ्रेन्निक**—अ० क्रि० (कि०) 'पौथे' में अनाज डालते समय फालतू अनाज का गिरना।

## म

**मंगणा**—सं० (ला०) मंगलवार।
**मंगणेथोंपो**—वि० (ला०) बहुत ऊंचा।
**मंगमी**—सं० (कि०) सेना।
**मंगलारंग**—सं० (कि०) मंगलवार।
**मंट**—सं० (कि०) मादा (केवल पशुओं के लिए प्रयुक्त)।
**मंडल**—सं० (कि०) बीड़ी का बंडल।
**मंडेए**—सं० (कि०) विवशता।
**मंडेर**—सं० (कि०) Acer acuminatum.
**मंडेलमाह**—स० क्रि० (कि०) मंडाई करना।
**मंताअ**—सं० (कि०) इच्छा।
**मअलस**—सं० (कि०) ननिहाल।
**मआसामाहशोत**—सं० (कि०) असाध्य रोग।
**मई**—वि० (कि०) लाल।
**मईटङ**—सं० (कि०) दुलहन का घर।
**मईदान**—सं० (कि०) मैदान।
**मउलेस**—सं० (कि०) ननिहाल।
**मऊ**—सं० (कि०) कीड़े-मकोड़े।
**मऊ**—सं० (कि०) राक्षस।
**मएंफोह**—वि० (कि०) बुरा।
**मकंथ**—सं० (कि०) जंगली जूं।
**मक**—सं० (कि०) युद्ध।
**मकङ**—सं० (कि०) सर्दी में बैठने का कमरा।
**मकजी**—सं० (कि०) सभापति।
**मकठप**—अ० क्रि० (कि०) युद्ध होना।
**मकपा**—सं० (कि०) घर दामाद।
**मकोचामाह**—स० क्रि० (कि०) मना करना।
**मकोलमिन**—वि० (कि०) उपयुक्त।
**मक्कडु**—सं० (ला०) कुल्हाड़ी।
**मक्कुड़**—सं० (ला०) बंदर।
**मक्यई**—वि० (कि०) अनंत।
**मक्युशिह**—वि० (कि०) शत्रु।
**मक्यूश्माह**—अ० क्रि० (कि०) ईर्ष्या करना।
**मक्वसुहपिनुह**—वि० (कि०) असंतुष्ट, अतृप्त; अधूरा।
**मखठुख**—सं० (कि०) युद्ध।
**मखमी**—सं० (कि०) सैनिक।
**मखसीखमेत**—सं० (कि०) अस्वीकृतिकरण।
**मखुसीई**—सं० (कि०) अप्रसन्नता।
**मखरङखीह**—वि० (कि०) अतृप्त।
**मगज़ी**—सं० (कि०) कफन।
**मगपोन**—सं० (कि०) सेनापति।
**मगलथमाह**—अ० क्रि० (कि०) अनबन होना।
**मगिनमाह**—अ० क्रि० (कि०) घृणा करना।
**मगोखङमाह**—अ० क्रि० (कि०) गर्भवती होना।
**मगोमाह**—स० क्रि० (कि०) न सुनना।
**मगोरे**—वि० (कि०) गर्भवती।
**मङ**—सं० (कि०) स्वप्न।
**मङतोअ**—वि० (कि०) लाल मुंह वाला।
**मङमिक**—स० क्रि० (कि०) छिपाना।
**मङमिक**—अ० क्रि० (कि०) स्वप्न आना।
**मङरोआले**—सं० (कि०) पक्षियों के अंडे।
**मङित्**—वि० (कि०) हलका।
**मङीनोखू**—सं० (कि०) लाल रत्न।
**मचस**—सं० (कि०) मछली।
**मचसुमत्ती**—सं० (कि०) मछली का तेल।
**मचालिह**—वि० (कि०) मूक।
**मछसुह**—वि० (कि०) तैयारी रहित।
**मछु**—सं० (कि०) एक मदिरा।
**मछुखमाह**—अ० क्रि० (कि०) वियोग होना।
**मछुङ**—सं० (कि०) निषेध।
**मछोई**—सं० (कि०) निषेध।
**मछोरबालमाह**—अ० क्रि० (कि०) बेहोश होना।
**मज़ई**—वि० (कि०) बेमेल।
**मजङमुनवोन**—सं० (कि०) अभिभावक। मझला घरवाला।
**मजङु**—अ० (कि०) मध्य में।
**मज़ातिया**—वि० (कि०) वर्णहीन, भद्दा।
**मज़ामाहश्या**—वि० (कि०) अभक्ष्य मांस।
**मजुरतिहलेन**—वि० (कि०) असाध्य (कार्य)।
**मजुरा**—वि० (कि०) टेढ़ा।
**मजुरेचलमाह**—स० क्रि० (कि०) उत्तेजक वार्ता करना।
**मजूमाहशोत**—सं० (कि०) बदहज़मी का रोग।
**मजोआं**—सं० (ला०) खटमल।
**मजोङमी**—सं० (कि०) प्रतिनिधि।
**मज़ोमी**—सं० (कि०) विवाह के मध्यस्थ।
**मजोरमाह**—अ० क्रि० (कि०) पूरा न होना।
**मजोरिमीं**—वि० (कि०) दरिद्र।
**मटङ**—सं० (कि०) मिट्टी।
**मटङक्युमशु**—सं० (कि०) मिट्टी का तल।
**मटङमत्ती**—सं० (कि०) भूमि देव।

**मटङ·रुलतमाह**— अ० क्रि० (कि०) भूमि हिलना।
**मटङ·वरामाह**— अ० क्रि० (कि०) भूमि फटना।
**मटङ·सतमाह**— अ० क्रि० (कि०) तेल आदि का दाग पड़ना। भूमि में समा जाना।
**मटङु·ओषङ·**— सं० (कि०) तहखाना।
**मटेओचलमाह**— स० क्रि० (कि०) अधिक बोलना।
**मटेख्यतिह**— वि० (कि०) अस्थिर।
**मठेओचेई**— वि० (कि०) बहुत बड़ा।
**मड़मीऊ**— सं० (कि०) कमज़ोर आदमी।
**मड़ा**— सं० (ला०) मृतक।
**मडामाह**— स० क्रि० (कि०) घृणा करना।
**मडामिन**— वि० (कि०) घृणित।
**मडिईलेन**— सं० (कि०) असंगत कार्य।
**मणिङ·**— सं० (कि०) मणि।
**मतईलमाह**— स० क्रि० (कि०) वंचित करना।
**मतकचा**— वि० (कि०) दुराचारी।
**मतकतखुह**— स० क्रि० (कि०) रोकना।
**मतङ·खुङ·खलमाह**— स० क्रि० (कि०) अनदेखी करना।
**मतङ·मससुमाह**— स० क्रि० (कि०) छिपाकर लाना।
**मतङ·माओहंफ**— सं० (कि०) गुप्त मार्ग।
**मतङ·माह**— अ० क्रि० (कि०) अदृश्य होना।
**मतनिंह**— वि० (कि०) अस्थाई।
**मतफोख**— सं० (कि०) शरीर का निचला भाग।
**मतलुपमाह**— अ० क्रि० (कि०) शरीर के निचले भाग का बेकार होना।
**मतवङ·खलिंख**— सं० (कि०) पशु का पिछला पैर।
**मताअमाह**— स० क्रि० (कि०) प्रवेश निषेध करना।
**मतामाह**— स० क्रि० (कि०) रोकना।
**मतेमेरेल**— सं० (कि०) अपशकुन।
**मतोमा**— वि० (कि०) अनुपस्थित।
**मत्तितिई**— सं० (कि०) तेल निकालते समय प्रयोग में लाया जाने वाला पानी।
**मत्तीई**— सं० (कि०) तेल।
**मथतमाह**— अ० क्रि० (कि०) नाराज़ होना।
**मथैफमाह**— स० क्रि० (कि०) चूकना।
**मद**— सं० (कि०) पदचिह्न।
**मदई**— वि० (कि०) अटूट।
**मदङ·खौटोक**— सं० (कि०) गर्दन से लगता सिर का पिछला भाग।
**मदत्तुमिक**— अ० क्रि० (कि०) पैरों के निशान के साथ-साथ चलना।
**मदुम**— वि० (ला०) बुरा, शरारती।
**मदुमबोलबा**— स० क्रि० (ला०) बुराई करना।
**मदुसङ·ऊसीमाह**— अ० क्रि० (कि०) असामयिक मृत्यु होना।
**मदेङ·माह**— स० क्रि० (कि०) विश्वास न करना।
**मदेमों**— अ० क्रि० (कि०) चित्त विक्षिप्त होना।
**मधुखिह**— वि० (कि०) निर्भय।

**मन**— सं० (कि०) औषधि।
**मन**— सं० (कि०) मादा (मनुष्य के लिए भी प्रयुक्त होता है)।
**मनक्युम**— सं० (कि०) औषधालय।
**मनखङ·**— सं० (कि०) चिकित्सालय।
**मनङ·**— अ० (कि०) अतिरिक्त।
**मनङ·खौटोक**— सं० (कि०) सिर का पिछला भाग।
**मनचीपनुङ·**— सं० (कि०) औषध वन।
**मनजुरामाह**— स० क्रि० (कि०) औषधि बनाना।
**मनपे**— सं० (कि०) औषध ग्रंथ।
**मनरङी**— सं० (कि०) औषधि बेचने वाला।
**मनरिङ·च**— सं० (कि०) महिला।
**मनहुतमाह**— स० क्रि० (कि०) दवाई लगाना।
**मनाछङ·**— सं० (कि०) माँ-बेटे।
**मनारी**— सं० (कि०) मनिहार।
**मनिनमाहमी**— वि० (कि०) अनिच्छित व्यक्ति।
**मनियांपङ·**— सं० (कि०) व्यावसायिक नर्तकदल।
**मनिया**— सं० (कि०) नाटक-कलाकार।
**मनी**— अ० (कि०) नहीं, निषेधसूचक शब्द।
**मनुहछुन**— सं० (कि०) दवाई की पुड़िया।
**मनेठुरामाह**— स० क्रि० (कि०) 'मणि' मंत्र के यंत्र को घुमाना।
**मनेपन**— सं० (कि०) 'मणि' मंत्र खुदी हुई शिला।
**मनैरा**— सं० (कि०) शिलालेख।
**मनोरो**— वि० (कि०) कार्यरहित।
**मपङ·युमछो**— सं० (कि०) मानसरोवर।
**मपडेन**— सं० (कि०) नींव।
**मपिनुहलामाह**— स० क्रि० (कि०) रोक कर रखना।
**मपूरिई**— वि० (कि०) अपूर्ण।
**मपोरहित**— वि० (कि०) अप्राप्य।
**मपोरिहजस**— सं० (कि०) न फेंकने योग्य खाद्य।
**मफेमफिह**— वि० (कि०) अजेय।
**मफोराशिह**— वि० (कि०) गंवार, अशिष्ट।
**मबोरततमिन**— वि० (कि०) अप्रयुक्त।
**मबोलामाह**— स० क्रि० (कि०) नापसंद करना।
**ममज़ा**— सं० (कि०) मोर।
**ममतमाह**— स० क्रि० (कि०) विरोध करना।
**ममापङ·**— सं० (कि०) ननिहाल।
**ममिनू**— वि० (कि०) कच्चा।
**ममों**— वि० (कि०) नीचा।
**मयङ·ना**— स० क्रि० (कि०) बिल्ली की तरह देखना।
**मयागमूं**— अ० क्रि० (कि०) डरना।
**मयोंरावङ·**— सं० (कि०) गर्मी।
**मयोंवा**— वि० (कि०) अनुपस्थित।
**मयोंहअलाचार**— सं० (कि०) कष्ट।
**मयोतिह**— वि० (कि०) दरिद्र।
**मरकत**— सं० (कि०) अशिष्ट भाषा।
**मरकाठ**— सं० (कि०) कागज़ी अखरोट।
**मरकोऊज़िरा**— सं० (कि०) काला ज़ीरा।

मरखु—सं० (कि०) तेल।
मरखोख्र—सं० (कि०) नाभि से नीचे का पेट का भाग।
मरगंफ—सं० (कि०) घी रखने का लकड़ी का बना डिब्बा।
मरछा—सं० (कि०) मक्खन का गोला।
मरजई—वि० (कि०) आलसी।
मरज़ामाह—अ० क्रि० (कि०) जी चुराना।
मरपो—वि० (कि०) लाल।
मरफ—वि० (कि०) असभ्य।
मरफयोमलङ—सं० (कि०) असभ्य महिला।
मरमाह—स० क्रि० (कि०) चिपकाना।
मरमीऊ—वि० (कि०) दुर्जन।
मरमें—सं० (कि०) प्रदीप।
मरशठो—वि० (कि०) अप्रिय।
मरिईवङमाह—अ० क्रि० (कि०) स्वस्थ होना।
मरिकचा—सं० (कि०) शुभ समाचार।
मरिचलोन—सं० (कि०) अच्छा स्वभाव।
मरिजेमाह—स० क्रि० (कि०) शुभ विदाई देना।
मरिबा—स० क्रि० (ला०) गाड़ना। अ० क्रि० मरना।
मरिरीह—वि० (कि०) उपजाऊ (भूमि)।
मरिह—वि० (कि०) अच्छा, सफल।
मरिहलोशमा—स० क्रि० (कि०) प्रशंसा करना।
मरीफतिङ—सं० (कि०) चिकनी मिट्टी।
मरीफिया—वि० (कि०) अभागा।
मरुखिह—वि० (कि०) भिन्न, अलग।
मरुवङसा—वि० (कि०) कुरूप।
मल—सं० (कि०) चांदी।
मळ—सं० (कि०) Populus alta.
मलछा—सं० (कि०) बिस्तर।
मला—सर्व० (कि०) मुझे।
मलिई—वि० (कि०) गर्भवती।
मलिईबङमाह—अ० क्रि० (कि०) गर्भधारण करना।
मलिमाह—अ० क्रि० (कि०) थकावट होना।
मलेखान—वि० (कि०) चालाक (महिला)।
मलेखित—वि० (कि०) अपरिवर्तित।
मलोई—वि० (कि०) स्थायी, टिकाऊ।
मवुनतमाह—अ० क्रि० (कि०) अनबन होना।
मवोलामाह—स० क्रि० (कि०) नापसंद करना।
मश—सं० (कि०) माप।
मशटर—सं० (कि०) अध्यापक।
मशना—सं० (कि०) Strobilanthes atropurpureus.
मशुउजेमाह—अ० क्रि० (कि०) प्रवृत्त होना।
मशैन—सं० (कि०) दे० मशना।
मशोई—सं० (कि०) पका हुआ अन्न।
मशोई—सं० (कि०) कच्चा फल।
मश्यरे—वि० (कि०) कुरूप।
मश्यासा—वि० (कि०) अभिमानी।
मश्येरलमाह—स० क्रि० (कि०) अपमानित करना।
मसमजतिह—वि० (कि०) मूर्ख।
मसलफो—वि० (कि०) अस्पष्ट, धुंधला।
मसाल—सं० (कि०) मशाल।
मसुकङ—सं० (कि०) परेशानी, कठिनाई।
मसुकङखेमाह—स० क्रि० (कि०) कष्ट देना।
मसुकङलमाह—स० क्रि० (कि०) तंग करना।
मसुक्यत—सं० (कि०) असमर्थता।
मसुक्यतमाह—अ० क्रि० (कि०) सहन न होना।
मसुन्वतमाह—स० क्रि० (कि०) ध्यान न देना।
मसुरी—सं० (कि०) Cariaria nepalensis.
मसेसमाह—अ० क्रि० (कि०) अज्ञान होना।
मसेसीह—वि० (कि०) अनजान।
मसेसीहतोम्पो—वि० (कि०) अबोध।
महाङ—सं० (कि०) माघ।
मां—सं० (ला०) पात्र, बर्तन।
मांअ—सं० (कि०) पीप।
मांगपो—वि० (ला०) अत्यधिक, ज़्यादा।
मांगल—सं० (कि०) Populus Ciliata.
मांज़याकर—सं० (कि०) सफेद और भूरे रंग का मेढ़ा।
मांज़यामिक—स० क्रि० (कि०) सोने और चांदी के आभूषणों या देवता के 'मोहरें' को साफ करना।
मांज़ा—सं० (ला०) चारपाई।
मांठ—सं० (कि०) लकड़ी फाड़ने का औज़ार, छेनी।
मांङयामिक—स० क्रि० (कि०) अन्न के दाने निकालना।
मांङलू—सं० (कि०) Acerpitum.
मांङो—सं० (कि०) अन्न मांड़ने की क्रिया।
मांदयोमोनङस—अ० (कि०) मजबूरी से।
मांद्ळा—सं० (कि०) बीमारी आदि का उपचार करने के लिए 'गूर' द्वारा फर्श पर बनाया गोबर का गोल लेप।
मा.ङ—सं० (कि०) स्वप्न।
मा.ङमिक—अ० क्रि० (कि०) स्वप्न देखना।
मां.च—अ० क्रि० (कि०) नहीं (बहुवचन में)।
मा.री—वि० (कि०) बुरा।
मा—अ० (कि०, ला०) मत।
माआसयामिक—स० क्रि० (कि०) सहन न करना, मन न लगना।
माइच—अ० क्रि० (कि०) नहीं है (एक वचन में)।
माई—सर्व० (कि०) मेरा।
माएं—अ० क्रि० (कि०) नहीं है।
माएटिङ—सं० (कि०) मायका।
माओरङ—सं० (कि०) छोटा खानदान।
माओरस—वि० (कि०) छोटे खानदान वाला।
माकुई—सं० (ला०) कुठार, कुल्हाड़ी।
माक्कुङ—सं० (ला०) बंदर।
माखुण—सं० (ला०) बढ़ई।
मागोर—वि० (कि०) गर्भवती।
माङ—सं० (कि०) माघ।
माङआ—स० क्रि० (ला०) मांगना।
माङमिक—स० क्रि० (कि०) छुपाना।

**माङ्श**— अ० (कि०) चुपके से।
**माङशिस**— वि० (कि०) छुपा हुआ।
**माङिबा**— स० क्रि० (ला०) मांगना।
**माच्र**— सं० (कि०) मेमना।
**माचाआया**— सं० (कि०) नानी।
**माचातेते**— सं० (कि०) नाना।
**माछी**— सं० (ला०) मक्खी।
**माजङ**— अ० (कि०) मध्य।
**माजङमी**— सं० (कि०) प्रतिनिधि।
**माजङसिया**— सं० (कि०) बीच वाला व्यक्ति। देवर।
**माज़मी**— वि० (कि०) मध्यस्थ।
**माजामाह**— स० क्रि० (कि०) रगड़ कर चमकाना।
**माज़ी**— वि० (ला०) गंदा।
**माजुन्निक**— अ० क्रि० (कि०) अच्छा न लगना।
**माजे**— सं० (कि०) बीच की लड़की।
**माज़ो**— सं० (कि०) अरथी, एक सीढ़ी जैसा उपकरण जिस पर मृतक को श्मशान ले जाते हैं।
**माज़ोन**— सं० (कि०) बाग के चारों ओर की दीवार।
**माजोमी**— सं० (कि०) विवाह-संबंध को पुष्ट करने के लिए नियुक्त दो आदमी।
**माञा**— सं० (कि०) माया।
**माटयङ**— सं० (कि०) मिट्टी।
**माटर**— सं० (कि०) मटर।
**माटिङ**— सं० (कि०) मिट्टी।
**माठा**— सं० (ला०) बच्चा, छोटा लड़का।
**मातम**— सं० (कि०) व्रत।
**मातमा**— सं० (कि०) महात्मा।
**माथस**— सं० (कि०) देवता का कारकुन।
**मादकचिस**— वि० (कि०) स्वर्गवासी।
**मादाचमिक**— अ० क्रि० (कि०) मर जाना, न रहना।
**मादु**— अ० क्रि० (कि०) नहीं है।
**मानङ्ख**— सं० (कि०) छोटा 'किरडा'।
**मानी**— अ० (कि०) नहीं।
**माने**— सं० (कि०) 'ओंमणि पदमे हूं' बौद्ध मंत्र।
**मानेशङ**— वि० (कि०) अनजान।
**मापङ**— सं० (कि०) ननिहाल।
**मापयामिक**— स० क्रि० (कि०) नापना।
**मापुं**— सर्व० (ला०) अपना, आत्म संबंधी।
**मापौक**— अ० (कि०) ठीक जैसा।
**मामा**— सं० (ला०) फूफा।
**मामापेरङा**— सं० (कि०) ननिहाल।
**मामाह**— स० क्रि० (कि०) मानना।
**मामो**— वि० (कि०) नीचा।
**मायङ**— सं० (कि०) ननिहाल।
**मार**— सं० (कि०) मक्खन।
**मारका**— सं० (कि०) कागज़ी अखरोट।
**मारगचा**— सं० (ला०) भेड़ चराने वाला।
**मारछा**— सं० (कि०) ताज़ा मक्खन।
**मारमे**— सं० (कि०) मक्खन से जलने वाला दीपक।
**माराज़**— सं० (कि०) महाराज।
**मारुखशित**— वि० (कि०) जो मेल न खाता हो।
**मारुखि**— वि० (कि०) भिन्न।
**मालङ**— सं० (कि०) माला।
**मालटस्पोन**— सं० (कि०) सुरा गाय के बालों से बनाए जूते।
**मालडुग**— सं० (कि०) Ulmus wallichiana.
**मालमिक**— स० क्रि० (कि०) अन्न को भूसे से अलग करना।
**माली**— सं० (कि०) देवता का 'गूर'।
**मालीमिक**— अ० क्रि० (कि०) नफरत करना, घृणा करना, अच्छा न लगना।
**मालैस**— सं० (कि०) कुश्ती।
**माल्ह**— वि० (कि०) पहलवान।
**माशारे**— वि० (कि०) बदसूरत।
**माशारो**— वि० (कि०) बदसूरत।
**मासीरख्यु**— सं० (कि०) अनसुनी।
**माहनों**— सं० (कि०) असमर्थता।
**माहू**— सं० (ला०) मनुष्य।
**मिंईफ्योमाह**— स० क्रि० (कि०) छेदन करना।
**मिंईविसलतमाह**— अ० क्रि० (कि०) चौंधियाना।
**मिंछोत**— वि० (कि०) प्रसिद्ध।
**मिंटरमाह**— स० क्रि० (कि०) डराना।
**मिईंक्यपक्यपामाह**— स० क्रि० (कि०) पलक झपकाना।
**मिईंकनमाह**— स० क्रि० (कि०) आंखें दिखाना।
**मिईंछितमाह**— स० क्रि० (कि०) आंखें बंद करना।
**मिईंटरमतमाह**— स० क्रि० (कि०) आंखें खोलना।
**मिऊजोरज़ाउ**— वि० (कि०) दूसरे का धन खाने वाला।
**मिऊबरखता**— स० क्रि० (कि०) हस्तक्षेप करना।
**मिऊशोत**— सं० (कि०) आंख की बीमारी।
**मिक**— सं० (कि०) आंख।
**मिकचाम**— सं० (कि०) भौं।
**मिकछु**— सं० (कि०) आंसू।
**मिकपू**— सं० (कि०) दे० मिकचाम।
**मिकपौन**— सं० (कि०) पलक।
**मिकमर**— वि० (कि०) मंगल।
**मिकलम**— सं० (कि०) स्वप्न।
**मिकलोकताचे**— स० क्रि० (कि०) घृणा से देखना।
**मिकेनकेनी**— सं० (कि०) मानव प्रेमी।
**मिक्या**— वि० (कि०) गृहस्थी।
**मिख्र**— सं० (कि०) आंख का मैल।
**मिख्रमतई**— वि० (कि०) अंधा।
**मिखरोङ**— सं० (कि०) आंख का नाक से लगता धंसा हुआ भाग।
**मिख्रा**— सं० (कि०) चर्चा।
**मिख्राछ्ङ**— सं० (कि०) भांड, मसखरा।
**मिखुर**— सं० (कि०) बोझ।
**मिगचा**— सं० (कि०) पत्थर से आग पैदा करने का लोहा।
**मिगचिलिक**— सं० (ला०) अक्षिगोलक।

मिगछु— सं० (कि०) शराब।
मिगज़ुप— सं० (कि०) आंख का इशारा।
मिगनसनईं— वि० (कि०) अदृश्य।
मिगनिई— सं० (कि०) आंसू।
मिगतो/तो— सं० (कि०) लक्ष्य।
मिगपोल्— सं० (कि०) पलकें।
मिगयुल— सं० (कि०) उद्देश्य।
मिगरोङ— सं० (कि०) अक्षिगोलक।
मिगशे— सं० (कि०) मोह।
मिङणा— सं० (ला०) मादा।
मिङनछहङख— अ० (कि०) बहुधा।
मिचुग— सं० (कि०) बूआ।
मिचुङख— वि० (कि०) नाटा, बौना।
मिछङ— सं० (कि०) ईर्ष्या।
मिछे— सं० (कि०) आयु।
मिटयामिक— स० क्रि० (कि०) मिटाना।
मिठो— सं० (कि०) एक मसाला, मेथी।
मिनिई— सं० (कि०) पिस्सू।
मितीस्माह— स० क्रि० (कि०) आंसू पोंछना।
मित्रु— सं० (ला०) मित्र।
मिथन— वि० (कि०) प्रसिद्ध।
मिदरुमन्ती— सं० (कि०) देवदार का तेल।
मिन— सं० (कि०) नाम।
मिनचन— सं० (कि०) कीर्तिमान।
मिनजदुगचें— स० क्रि० (कि०) मात करना।
मिनटतमाह— स० क्रि० (कि०) कमी निकालना, गाली देना।
मिनमिनामाह— स० क्रि० (कि०) हाथ में रगड़ना।
मिनहंथमाह— स० क्रि० (कि०) नाम कमाना।
मिनींह— वि० (कि०) पका हुआ।
मिनुहचे— अ० (कि०) नाममात्र।
मिनों— सं० (कि०) माथे का आभूषण, टीका।
मिनोत— सं० (कि०) परिश्रम, मेहनत।
मिमजुबखेमाह— स० क्रि० (कि०) आंख मारना।
मियाञा— सं० (कि०) Vitis semicordata.
मियुमिक— स० क्रि० (कि०) निगलना।
मियुल— सं० (कि०) परदेस।
मियोमशुरुशायामाह— स० क्रि० (कि०) एकटक देखना।
मिरकु— सं० (कि०) मिट्टी का तेल।
मिरगोतङ्शावा— वि० (कि०) निराला आदमी।
मिरङ— वि० (कि०) पैदल।
मिरिख— सं० (कि०) मनुष्य जाति।
मिलाइबा— स० क्रि० (कि०) मिश्रित करना।
मिलाङ— सं० (कि०) मिलावट।
मिशती— सं० (कि०) आंसू।
मिशुममाह— स० क्रि० (कि०) जनगणना करना।
मिशुमार— सं० (कि०) जनसंख्या।
मिशेपा— वि० (कि०) अनजान, अजनबी।
मिसातसा— सं० (कि०) सामाजिक रीति।
मिहानिङ— सं० (कि०) विवशता।
मीं— सर्व० (ला०) मैंने।
मी— सं० (कि०) आदमी।
मंखा— सं० (कि०) भूत-प्रेत को निकालने के लिए आदमी को दिया भूत का रूप।
मांछ्यामिक— स० क्रि० (कि०) मसल कर मिलाना।
मांथूनचें— वि० (कि०) सर्वप्रिय।
मारराइ— सं० (कि०) उपजाऊ भूमि।
माराहफनमाह— स० क्रि० (कि०) किसी का उद्धार करना।
मा-ला— सं० (कि०) मृतक आदमी की परछाई।
मुंअजोरचा— वि० (कि०) हठी।
मुंआरतिङ— अ० (कि०) आधी रात को।
मुंगरो— सं० (कि०) गर्दन।
मुंज़ीबश— सं० (कि०) मूंज घास की रस्सी।
मुंडयाल— सं० (कि०) माला, फूलों की माला।
मुंडेली— सं० (कि०) देवता के रथ में लगा 'आगळ' के आगे लगा चांदी का आवरण।
मुंडी— सं० (कि०) अगूंठी।
मुंडेले— सं० (कि०) बछिया।
मुंदअग— सं० (ला०) अन्धेरा।
मुंफ— अ० (कि०) पीछे।
मुअग— सं० (ला०) बर्फ।
मुआर— वि० (ला०) कनिष्ठ।
मुकङ— सं० (कि०) छोटी 'झब्बल'।
मुकजीरङ— सं० (कि०) मार्गशीर्ष।
मुकपाबुङह— वि० (कि०) मेघाच्छन्न।
मुकयामिक— स० क्रि० (कि०) 'झब्बल' से ज़मीन खोदना, काम समाप्त करना।
मुकरामनू— अ० क्रि० (कि०) मुकरना, कहा हुई बात से हटना।
मुकरेन्निक— अ० क्रि० (कि०) मुकरना।
मुकले— सं० (कि०) कुंद तलवार।
मुकवोर— वि० (कि०) मुख्य।
मुकाइबा— स० क्रि० (ला०) समाप्त करना।
मुकुल्टा— सं० (कि०) अंडा।
मुक्खाइबा— स० क्रि० (ला०) दंडित करना।
मुखङ— सं० (कि०) देवमूर्ति, देवता के 'माहरे'।
मुखङबारयामिक— स० क्रि० (कि०) मुंह छिपाना।
मुखचे— अ० क्रि० (ला०) भौंकना।
मुखमोल— सं० (कि०) मखमल।
मुखा— सं० (ला०) कोना।
मुखालिई— स० क्रि० (कि०) मुख धोना।
मुखीई— सं० (कि०) पुरुष के कान का स्वर्णाभूषण।
मुखौदङ— अ० (कि०) मौके पर, मुंह के सामने।
मुख्यामाह— वि० (कि०) कमाने वाला।
मुर्गज़िल— सं० (कि०) बादल की नमी।
मुगज़ा— वि० (कि०) फूल सी देह वाला, सुंदर। धारीदार।
मुगपा— सं० (कि०) बादल।

मुगपाबुङ— अ० क्रि० (कि०) बादल छाना।
मुगबोर— सं० (कि०) नेतागिरी।
मुगरो— सं० (कि०) गले की हड्डी का जोड़।
मुगलमाह— अ० क्रि० (कि०) लालच करना।
मुगे— सं० (कि०) चाह।
मुगोज़िल— सं० (कि०) बूंदाबांदी।
मुङमाह— अ० क्रि० (कि०) टिकना।
मुचरयामिक— स० क्रि० (कि०) मरोड़ना।
मुचरो— वि० (कि०) जिस (नर पशु) के पूंछ न हो।
मुची— सं० (कि०) मोची।
मुछे— सं० (कि०) मूंछ।
मुछोई— वि० (कि०) प्रभावशाली।
मुछोक्रिलमाह— स० क्रि० (कि०) ताव देना।
मुछोक्रिसमिक— स० क्रि० (कि०) मूछों में ताव देना।
मुछोसया— वि० (कि०) मूछों वाला।
मुज़ी— सं० (कि०) गंधक।
मुज़ुपुरिई— वि० (कि०) जबरदस्ती।
मुज़ुरदार— सं० (कि०) कुली, मज़दूर।
मुञा— सं० (कि०) रात्रि, अंधकार।
मुटंगरी— सं० (कि०) कली।
मुठि— सं० (कि०) किस्त। मालगुज़ारी का वह भाग जो नियत समय पर दिया जाए या देय हो।
मुठु— सं० (कि०) मुक्का।
मुठुबङ— वि० (कि०) मुट्ठी भर।
मुठसखेमाह— स० क्रि० (कि०) घूंसा मारना।
मुठूअ— वि० (कि०) कंजूस।
मुठूअखिह— वि० (कि०) मुक्केबाज।
मुड़यानू— स० क्रि० (कि०) मोड़ना।
मुतिई— सं० (कि०) मोती।
मुतेकपा— वि० (कि०) भक्तिहीन।
मुत्ती— सं० (कि०) पानी का चश्मा।
मुत्रयामिक— स० क्रि० (कि०) कुतरना।
मुत्रूंस— सं० (ला०) पेशाब, मूत्र।
मुथोल— वि० (कि०) मूर्ख।
मुदोत— सं० (कि०) सहायता, मदद।
मुदोतलमाह— स० क्रि० (कि०) सहायता करना।
मुन— सं० (कि०) मां।
मुनखम— सं० (कि०) कंबल।
मुनडेले— सं० (कि०) बछिया।
मुनतंग— अ० (ला०) आगामी दिन।
मुनतना— वि० (कि०) रात भर।
मुनदअग— सं० (ला०) अंधेरा।
मुननक— सं० (कि०) अंधकार।
मुनबोख— सं० (कि०) हलवा।
मुनमाह— अ० क्रि० (कि०) बास करना।
मुनरिङच— सं० (कि०) मां बहिन।
मुनशिङख— सं० (कि०) महिला।
मुनिङ— सं० (कि०) मणि।
मुनी— सं० (ला०) सिर, मुंड।
मुनीपेंच— सं० (कि०) चमगादड़।
मुन्ना— अ० (ला०) पहले।
मुन्शी— सं० (ला०) अध्यापक।
मुममुन— सं० (कि०) तीसरा पहर।
मुमलाय— सं० (कि०) सायं।
मुमिईकन्माह— स० क्रि० (कि०) मुंह दिखाना।
मुर— सं० (कि०) नाक।
मुरङमुत्ति— सं० (कि०) इंद्रधनुष।
मुरच— सं० (कि०) फफूंद।
मुरमिक— अ० क्रि० (कि०) फफूंद द्वारा सड़ना।
मुरमुर— अ० (कि०) अस्वस्थ मुद्रा।
मुरमुरतमाह— अ० क्रि० (कि०) बड़बड़ाना।
मुराफ— सं० (कि०) लकड़ी पर की गई कलाकृति।
मुरिह— वि० (कि०) सड़ा हुआ।
मुरुहडवरङ— सं० (कि०) नथुने।
मुरुहलाम— सं० (कि०) श्लेष्मा।
मुरोल— सं० (कि०) गीत।
मुर्तिह— सं० (ला०) बावली, चश्मा।
मुल— सं० (कि०, ला०) चांदी।
मुलछु— सं० (कि०) पारा।
मुलती— सं० (कि०) चांदी का पानी।
मुलथङ— सं० (कि०) छत।
मुलपोटो— सं० (कि०) चांदी का छोटा गोला।
मुलबनिङ— सं० (कि०) चांदी का छोटा गोला।
मुलाई— सं० (कि०) मूलधन।
मुलाज़ा— सं० (कि०) लिहाज़।
मुलाशुतङ— स० क्रि० (कि०) मदिरापान कराना।
मुलुखुमी— सं० (कि०) निवासी।
मुलुम— स० क्रि० (कि०) ठीक करना।
मुलुमलाऊ— स० क्रि० (कि०) ठीक करना।
मुलुहजुटी— सं० (कि०) चांदी की वेणी।
मुलेम— वि० (कि०) नर्म।
मुल्थ— सं० (कि०) सामान रखने की लघु कुटिया।
मुशामुशतमाह— अ० क्रि० (कि०) झटक कर चलना।
मुशान— सं० (कि०) श्मशान का राक्षस।
मुशुमुशु— वि० (कि०) क्रोधी, मूर्ख।
मुष्टकपारोकापली— सं० (कि०) खोपड़ी।
मुस— सं० (कि०) Desmodium tiliaefdium.
मुस— सं० (कि०) हल का लोहा।
मुस— सं० (कि०) दे० छुब।
मुसकोल— वि० (कि०) कठिन।
मुसमिक— स० क्रि० (कि०) 'मुस' को बाट देना।
मुसलङ— सं० (कि०) मूसल।
मुसली— सं० (कि०) सूजन।
मुसारबो— सं० (कि०) केतली।
मुसाला— सं० (कि०) मसाला।
मुसालो— सं० (कि०) मशाल।

मुसुरू—सं० (कि०) कफ़न।
मू—सं० (कि०) पेड़ के सड़े हुए तने पर उगा हुआ कुकुरमुत्ता।
मूटकन—सं० (कि०) खोपड़ी।
मूरा—वि० (कि०) मुख्य, सिरा।
मूरी—सं० (कि०) अच्छी शराब, सुरा।
मुरुख—वि० (कि०) मूर्ख।
मूलिंह—सं० (ला०) चश्मा, बावली।
मूशा—सं० (ला०) चूहा।
में—सं० (कि०) पिछला कल।
मेंगतमाह—स० क्रि० (कि०) आधार लगाना।
मेंयो—सं० (कि०) पुष्प।
मेंयोऊक्यनलङ—सं० (कि०) फूल माला।
मेंयोक—सं० (कि०) फूलों का मेला।
मेंयोछूमाह—स० क्रि० (कि०) फूल काढ़ना।
मेंयोथुतमाह—स० क्रि० (कि०) फूल चुनना।
मेंसङ—अ० (कि०) धीरे।
मे—सं० (कि०) आग।
मेअद—सं० (ला०) पत्नी।
मेऊंपिन्माह—स० क्रि० (कि०) आग में डालना।
मेओरा—सं० (ला०) मिश्रण।
मेकफा—सं० (कि०) जूते की नाल।
मेकोंचे—वि० (कि०) सफेद पूंछ वाली गाय।
मेकोन—वि० (कि०) पीछा करने वाला।
मेकोनसेकरमा—सं० (कि०) पुच्छल तारा।
मेकौनुपू—सं० (कि०) पूंछ के बाल।
मेगचाऊमें—सं० (कि०) पत्थर द्वारा निकाली गई आग।
मेघ—सं० (ला०) हिम।
मेङकोटामाह—स० क्रि० (कि०) नींव खोदना।
मेच—सं० (कि०) पूंछ।
मेच़मी—सं० (ला०) औरत, स्त्री।
मेछअंद—सं० (ला०) अंगार।
मेछर—सं० (कि०) दियासलाई।
मेछामङ—सं० (कि०) आग की रोशनी।
मेजा—सं० (कि०) अग्निराश।
मेजू—सं० (कि०) मगज़, दिमाग।
मेजेमाह—अ० क्रि० (कि०) आग लगना।
मेटङ—सं० (कि०) मायका।
मेटयामिक—स० क्रि० (कि०) समेटना।
मेटामाह—स० क्रि० (कि०) बांधना।
मेतपो—वि० (कि०) गरीब।
मेतपोप्यखराअ—वि० (कि०) अति निर्धन।
मेतोग—सं० (कि०) पुष्प।
मेदा—सं० (कि०) बंदूक। मैदा।
मेनतोग—सं० (ला०) पुष्प।
मेनतोगमा—वि० (ला०) रंग-बिरंगी।
मेनिह—अ० (कि०) नहीं।
मेनू—सं० (ला०) दिमाग।
मेफतिङ—अ० (कि०) स्वाहा।
मेफालिङ—सं० (कि०) प्रचंड अग्नि।
मेबरुङतुमाह—अ० क्रि० (कि०) जलन होना।
मेबुक—सं० (ला०) जुगनू।
मेमें—सं० (कि०, ला०) दादा। चाचा।
मेयङ—सं० (कि०) धुआं।
मेलती—वि० (कि०) बेकार, आवश्यकता से अधिक।
मेलतेप—सं० (कि०) काठी का सामान।
मेलप—सं० (कि०) लपटें।
मेलपटामाह—अ० क्रि० (कि०) आग का प्रज्वलित होना।
मेला—सं० (कि०) अग्निदेव।
मेलिङ—सं० (कि०) चूल्हा।
मेलिङचूल्यामू—स० क्रि० (कि०) चूल्हा-चौका करना।
मेलिङरा—सं० (कि०) चूल्हे का पत्थर।
मेलोङ—सं० (कि०) दर्पण, आईना।
मेलोङ—सं० (कि०) धूपदानी।
मेशापा—अ० (कि०) बीता हुआ कल।
मेशिंग—सं० (कि०) दियासलाई।
मेशू—सं० (कि०) अग्निदेव।
मेश्योरेवङमाह—अ० क्रि० (कि०) अधजला होना।
मेसङओङख—सं० (कि०) जुगनू।
मेसङख-मेसङख—अ० (कि०) धीरे-धीरे।
मेसतमाह—स० क्रि० (कि०) आग बुझाना।
मैंगछुतमाह—स० क्रि० (कि०) आधार रखना।
मैंटामाह—स० क्रि० (कि०) तपे लोहे से बेधना।
मै:ल—सं० (कि०) देवता के लिए बलि चढ़ाने हेतु कुछ व्यक्तियों द्वारा सांझा लाया गया बकरा या मेढ़ा।
मै—सं० (कि०) आग।
मैअल—सं० (कि०) महल।
मैङ—सं० (कि०) आधारशिला।
मैटामाह—स० क्रि० (कि०) समेटना।
मैठो—सं० (कि०) आग का अंगारा।
मैनिङ—सं० (कि०) छोटी 'झब्बल'।
मैलक—सं० (कि०) कमरे की कम ऊंचाई की छत।
मैलब—सं० (कि०) आग की लपटें।
मैला—सं० (कि०) आग की परछाई।
मैसौमाह—स० क्रि० (कि०) आग जलाना।
मोंअ—सं० (कि०) चारा, दाना।
मोंतोर—सं० (कि०) मंत्र।
मोंत्रामाह—स० क्रि० (कि०) वश में करना।
मो:ग—सं० (कि०) (मुर्गी का) दाना।
मो:त—वि० (कि०) थोड़ा, क्षणिक। चिह्न।
मो:तकमचित—सं० (कि०) लघुवार्ता।
मो:द—सं० (कि०) पैर या पंजे का निशान।
मो:लङ—सं० (कि०) गोबर।
मो—सं० (कि०) तीर। मधुमक्खी का डंक।
मोअद—सं० (ला०) चेहरा।
मोई—सं० (कि०) आंख।
मोईरा—सं० (कि०) खर्राटा।

मोउइ— सं० (ला०) पुत्रवधु।
मोकर— सं० (ला०) झाड़ू।
मोका— सं० (कि०) दे० मौका।
मोखमो— सं० (कि०) एक पकवान, मांस भरा समोसा।
मोगङ— सं० (कि०) परलोक।
मोगठु— सं० (कि०) भोजन बनाने का एक पात्र।
मोगपोकतमाह— स० क्रि० (कि०) नौकरी कराना।
मोगा— सं० (ला०) एक लंबी लकड़ी जिससे पशुओं को बांधते हैं।
मोगि— सं० (कि०) मुखड़ा।
मोङचा— सं० (कि०) खुले मुंह का पतीला।
मोचा— सं० (कि०) फसल की क्षति।
मोचाअ— सं० (कि०) वस्तु का मूल्य; हर्जाना।
मोटरस— सं० (कि०) Desmodiumtiliaefolium.
मोठलो— सं० (कि०) गोद।
मोठस— वि० (कि०) मोटा।
मोठे— वि० (कि०) मोटी।
मोड़बा— सं० (ला०) ताया।
मोड़ा— वि० (ला०) बड़ा।
मोतचे— वि० (कि०) थोड़ा सा।
मोतटेम्माह— स० क्रि० (कि०) अनुसरण करना।
मोतमू— सं० (कि०) गुच्छा।
मोतलोब— सं० (कि०) अभिप्राय, मतलब।
मोतसअदा— सं० (कि०) श्रृंगार का सामान।
मोनङ— सं० (कि०) मन।
मोनङमतोई— वि० (कि०) स्पष्टवादी।
मोनङलामाह— स० क्रि० (कि०) अनुभव करना।
मोनङस— अ० (कि०) दिल से, मन से।
मोनतसाह— स० क्रि० (कि०) स्वीकार करना।
मोनता— सं० (कि०) इच्छा।
मोनपो— वि० (ला०) हरा।
मोनमाह— स० क्रि० (कि०) याद करना।
मोनमो— स० क्रि० (कि०) गालियां देना।
मोनलम— सं० (कि०) प्रार्थना।
मोनायामिक— स० क्रि० (कि०) सम्मान देना, मनाना, पूजा करना।
मोनाश्यमाह— स० क्रि० (कि०) आदर करना।
मोनिया— सं० (कि०) नाट्यकार।
मोनेई— वि० (कि०) उपासक।
मोनेयाशित— वि० (कि०) माना हुआ।
मोपचेन— सं० (कि०) रकाब पर पैर रखने का लोहा।
मोमा— सं० (कि०) मामा।
मोमिइ— सं० (कि०) मुखड़ा।
मोमींचोम्माह— स० क्रि० (कि०) मुंह पर चोट करना।
मोरगंग— सं० (कि०) Quercus diliata.
मोरङ— सं० (कि०) देवता का सोने-चांदी का बना चेहरा।
मोरङ— सं० (कि०) धागे में लगी बाट।
मोरछङ— वि० (कि०) बहादुर।
मोरजा— सं० (कि०) मर्यादा।
मोरजास— सं० (कि०) लिहाज़, ध्यान।
मोरस— सं० (कि०) मोर।
मोरो— सं० (कि०) विष।
मोरोऊब्रू— वि० (कि०) जला हुआ (अन्न)।
मोलङ— सं० (कि०) मूल्य।
मोलङसया— वि० (कि०) मूल्यवान।
मोलज़ैद— सं० (कि०) भेड़ की एक प्रजाति।
मोलथपिपली— सं० (कि०) काली मिर्च।
मोलमी— वि० (कि०) देवी-देवता की भूमि आदि का हिसाब रखने वाला।
मोलिङ — सं० (कि०) सिर की चोटी, पक्षियों की कलगी।
मोसमाह— स० क्रि० (कि०) स्तुति करना।
मोसरगा— सं० (कि०) मां की बहिन का लड़का।
मोसाफोर— सं० (कि०) यात्री।
मोसिङ— वि० (कि०) चुस्त।
मोहडुईवा— अ० क्रि० (ला०) फैलना।
मौखीर— सं० (ला०) शहद।
मौज़ा— सं० (कि०) आनंद।
मौरथौरिङ— सं० (कि०) श्मशान।
म्यअल— सं० (कि०) सिरका।
म्यङमाह— अ० क्रि० (कि०) अनुभव होना।
म्याङ— सं० (कि०) डर।
म्युङ— सं० (कि०) मोची का सूआ।
म्हस— वि० (ला०) अधीक।

## यं

यंकिंत-तुमाह— अ० क्रि० (कि०) हलका पड़ना।
यंत्रपोजें देचे— अ० क्रि० (कि०) सावधान होना।
यऊपिन्माह— अ० क्रि० (कि०) मान जाना। स० क्रि० तोड़ देना।
यकपी— वि० (कि०) योग्य।
यकमी— सं० (कि०) सिपाही।
यक्षो— सं० (कि०) ऊपरी दांत।
यगछोलमाह— स० क्रि० (कि०) जिम्मेवारी लेना।
यगपो— वि० (कि०) अच्छा।
यगवी-तेरशे— स० क्रि० (कि०) बधाई देना।
यगापगालमाह— स० क्रि० (कि०) देखभाल करना।
यङ— सं० (कि०) बरकत, वृद्धि।
यङकुख— सं० (कि०) लक्ष्मी।
यङको— अ० (कि०) नीचे की ओर।
यङज़े— वि० (कि०) वृद्धा।
यङिथ— वि० (कि०) हलका।
यनमाह— स० क्रि० (कि०) बचाव करना, रोकना, अड़ाना।
यनुहतामाह— स० क्रि० (कि०) रोके रखना।

**यपकोर**—वि० (कि०) अंधा।
**यपचेन**—सं० (कि०) परमपिता।
**यपमतमाह**—स० क्रि० (कि०) नाश करना, उड़ा देना।
**यपमिक**—अ० क्रि० (कि०) उड़ना।
**यप्प**—अ० (ला०) शीघ्र।
**यमजें**—वि० (कि०) अद्‌भुत।
**यमपीदुरशें**—अ० क्रि० (कि०) मुकाबला करना।
**यमां**—सं० (कि०) नज़ला (रोग)।
**यरका**—सं० (कि०) गरमी।
**यरकेत**—अ० क्रि० (कि०) धन प्राप्त होना।
**यरफ**—सं० (कि०) सभ्यता।
**यरमाह**—स० क्रि० (कि०) छानना।
**यरश्यरूह**—अ० क्रि० (कि०) ग्रीष्म ऋतु आरंभ होना।
**यलगा**—सं० (कि०) टहनी, शाखा।
**यलदो**—सं० (कि०) शलजम।
**यलमाह**—अ० क्रि० (कि०) समाप्त होना।
**यलमिक**—अ० क्रि० (कि०) थकना।
**यल-यल ब्रल-ब्रल**—वि० (कि०) बिखरा हुआ।
**यलुथ**—सं० (कि०) एक फूल विशेष।
**यलुथपङ**—सं० (कि०) एक फूल विशेष की बेल।
**यवा**—अ० (कि०) नीचे।
**यश्यालऊलोमाह**—स० क्रि० (कि०) विनम्रता से बोलना।
**यश्योमश्यो**—सं० (कि०) घोड़े के वस्त्र।
**यसकन**—सं० (कि०) तालु।
**यह**—सं० (कि०) चींटी।
**यां-यां**—अ० (कि०) बार-बार।
**याः र**—अ० (कि०) अतिरिक्त।
**या**—सं० (कि०) जंगल, वन।
**या**—सं० (कि०) पीतल के पात्र में लगा कस।
**या**—सं० (कि०) सुरा गाय।
**या**—सं० (ला०) माँ।
**याऊ**—सं० (ला०) आशा।
**याका**—सं० (ला०) छाती।
**याग**—सं० (कि०) याक।
**यागमिक**—अ० क्रि० (कि०) सोना।
**याङ**—सं० (कि०) मक्खी।
**याच**—सं० (कि०) बछिया।
**यामाह**—स० क्रि० (कि०) स्वीकार करना, मानना।
**यामिक**—स० क्रि० (कि०) नचाना।
**यारकाणाया**—वि० (कि०) ऐसा व्यक्ति जिसके कान के साथ मांस का छोटा अंश निकला हो।
**यारकाणे**—वि० (कि०) दे० यारकाणाया।
**यारङ**—सं० (कि०) अंतर, फर्क।
**यारा**—सं० (कि०) बड़े छेदों वाली छलनी।
**यावनिङ**—सं० (कि०) कसैला पात्र।
**याश्यमाह**—सं० (कि०) देवनृत्य।
**याश्या**—सं० (कि०) नम्रता।
**याहका**—सं० (ला०) छाती।
**याहरे**—अ० (कि०) दायीं ओर।
**यिगे**—सं० (कि०) लिखावट, चिट्ठी।
**यिगेचेमाह**—स० क्रि० (कि०) अक्षर लिखना।
**यिद**—सं० (कि०) दिल।
**यिन**—अ० (कि०) हां।
**यिम्माह**—स० क्रि० (कि०) दबाना।
**यींश्यमाह**—स० क्रि० (कि०) छत पर मिट्टी डालना।
**युई**—वि० (ला०) पुराना।
**युकपो**—वि० (कि०) टिकाऊ।
**युकसापो**—सं० (कि०) विधुर।
**युकसामों**—सं० (कि०) विधवा।
**युग**—अ० (कि०) नीचे।
**युगगुबिङ**—सं० (कि०) निचली मंज़िल।
**युङख**—सं० (कि०) भाई।
**युङखर**—सं० (कि०) सरसों।
**युङच**—सं० (कि०) भाई।
**युङरिङ**—सं० (कि०) भाई-बहिन।
**युङरूङ**—सं० (कि०) स्वस्ति चिह्न।
**युटुङ**—अ० (कि०) नीचे।
**युतमाह**—स० क्रि० (कि०) जोड़ना।
**युद**—सं० (कि०) सत्तू।
**युदुचिअ**—अ० (ला०) थोड़ी देर के लिए।
**युनमङ**—सं० (कि०) 'ओगले' का आटा।
**युनमिक**—अ० क्रि० (कि०) चलना।
**युनिग**—सं० (कि०) सूर्य।
**युप्पमाह**—अ० क्रि० (कि०) टिकना।
**युम**—सं० (कि०) आंचल।
**युमपोथी**—सं० (कि०) देवी से संबंधित पुस्तक।
**युमलामाह**—स० क्रि० (कि०) लपेटना।
**युमे**—सं० (कि०) सा[illegible]।
**युर**—सं० (कि०) कमी।
**युरचुंग**—वि० (कि०) छोटा सा।
**युरमिक**—स० क्रि० (कि०) चूरा करना।
**युरशिस**—वि० (कि०) चूरा बना हुआ।
**युरा**—सं० (कि०) नाला, कुल्या।
**युल**—सं० (कि०) गांव, देश।
**युल**—सं० (कि०) अंतड़ी।
**युलखमफ**—सं० (कि०) राज्य।
**युलटिङीह**—वि० (कि०) अडिग, स्थिर।
**युलडालथुह**—सं० (कि०) देश-निकाला।
**युलमटिङिह**—वि० (कि०) अस्थाई।
**युलयुलमाह**—स० क्रि० (कि०) कुतरना।
**युला**—सं० (कि०) ग्रामदेव।
**युलाम**—सं० (कि०) झूठ।
**युह्ता**—अ० (ला०) तुरंत।
**यून**—वि० (कि०) छोटा।
**यूनङरक**—सं० (कि०) ऐसा पत्थर जिस पर अन्न पीसा जाता है।

**यूनमिक**— अ० क्रि० (कि०) चलना। स० क्रि० पीसना।
**यूने**— सं० (कि०) सूर्य।
**यूबमिक**— स० क्रि० (कि०) पूछना।
**यूमम्**— स० क्रि० (कि०) पकड़ना।
**यूरा**— सं० (कि०) फूल।
**येऊछुड**— सं० (कि०) सबसे छोटी उंगली।
**येङछेमाह**— स० क्रि० (कि०) आशा करना।
**येडाई**— अ० क्रि० (कि०) होंठ सूजना।
**योंगखा**— अ० (ला०) नीचे की ओर।
**योंडो**— सं० (कि०) छत के चारों ओर की लकड़ी। छत का किनारा।
**योअ**— सं० (कि०) नौकर।
**योअमाह**— स० क्रि० (कि०) टांगना।
**योअमिक**— स० क्रि० (कि०) संकलित करना, जमा करना।
**योअवङमाह**— अ० क्रि० (कि०) अधीन होना।
**योई**— सं० (ला०) भूना हुआ गेहूं का दाना।
**योओमाह**— स० क्रि० (कि०) पहचानना।
**योंकग**— सं० (कि०) भोजन।
**योक**— सं० (कि०) नौकरी।
**योकपी**— सं० (कि०) नौकर।
**योकमो**— सं० (कि०) नौकरानी।
**योखमाह**— अ० क्रि० (कि०) लटकना, झूलना।
**योगमिक**— स० क्रि० (कि०) पालन-पोषण करना।
**योगयोगतामिग**— स० क्रि० (कि०) लटकाना।
**योगस**— वि० (कि०) नुकीला।
**योगाअ**— सं० (कि०) बकरे या सुरा गाय के बाल बटने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का यंत्र।
**योगालमाह**— स० क्रि० (कि०) धागा कातना।
**योङख**— वि० (कि०) पूर्ण।
**योङमिक**— अ० क्रि० (कि०) पूरा होना।
**योचि**— सं० (कि०) खिलौना।
**योचि**— वि० (ला०) सरल।
**योचिज़या**— वि० (कि०) खिलाड़ी।
**योचिमिक**— अ० क्रि० (कि०) खेलना।
**योचुङ**— सं० (कि०) लुहार का हथौड़ा।
**योचो**— सं० (कि०) तीर की नोक।
**योतमाह**— स० क्रि० (कि०) जलाना। अ० क्रि० निर्वाह होना।
**योथाऊ**— सं० (कि०) याचना।
**योनछप**— सं० (कि०) जलपूजा।
**योनछपवटिथ**— सं० (कि०) पूजा का जलपात्र।
**योनतन**— सं० (कि०) गुण, विद्वान, ज्ञान।
**योनतनसया**— वि० (कि०) विद्वान।
**योनयोगतामिक**— स० क्रि० (कि०) लटकाना।
**योनयोनतमाह**— अ० क्रि० (कि०) डगमगाना।
**योप**— सं० (कि०) रजाई का गिलाफ।
**योम**— सं० (कि०) अनुचर।
**योमछप**— सं० (कि०) जलपान।
**योमलङख**— सं० (कि०) महिला।
**योमाह**— स० क्रि० (कि०) लटकाना।
**योयमु**— अ० क्रि० (कि०) खेलना।
**योरशेमाह**— स० क्रि० (कि०) उछालना।
**योरोअ**— सं० (कि०) हथौड़ा।
**योलबो**— वि० (कि०) अति दुराचारी।
**योला**— सं० (कि०) पर्दा।
**योश्यमाह**— अ० क्रि० (कि०) लटकना, टेढ़ा होना।
**योसप्रुङख**— सं० (कि०) पति-पत्नी।
**योसमाह**— अ० क्रि० (कि०) नशा।
**योसरिङ**— अ० (कि०) नीचे से ऊपर की ओर।
**योसारिङ**— वि० (कि०) निचला क्षेत्र।
**योसुह**— अ० क्रि० (कि०) नशा होना।
**योह-योह**— सं० (कि०) ओम्-ओम्।

## र

**रंगखोल**— सं० (कि०) कंधा।
**रंगतल**— सं० (कि०) बड़ी परात।
**रंगथन**— वि० (कि०) स्वतंत्र।
**रंगा**— वि० (ला०) बेचारा।
**रंगायामाह**— स० क्रि० (कि०) रंगना।
**रंडेल**— सं० (कि०) सीढ़ी।
**रंदक**— सं० (कि०) चक्की।
**रंदो**— सं० (कि०) लकड़ी को समतल करने का यंत्र।
**रंपेच**— सं० (कि०) मैना की तरह का एक पहाड़ी पक्षी।
**रंमगला**— अ० क्रि० (कि०) चक्कर आना।
**र.ङक**— वि० (कि०) ऊंचा।
**र.निक**— सं० क्रि० (कि०) देना।
**र.ल**— सं० (कि०) चावल।
**र.सक**— वि० (कि०) तीखा।
**र.सप.न**— सं० (कि०) शस्त्र को रगड़ कर तेज़ करने का पत्थर।
**रआग**— सं० (ला०) पत्थर।
**रअगजंग**— सं० (ला०) बरतन।
**रआशमिक**— अ० क्रि० (कि०) भिड़ना।
**रऊ**— सं० (ला०) साधु।
**रऊचेखङ**— सं० (कि०) पत्थर की रेखा।
**रऊला**— सं० (कि०) दे० रऊ।
**रक**— अ० क्रि० (कि०) है, "होना" का वर्तमान काल का एक वचन रूप।
**रकटङ**— सं० (कि०) पत्थर वाली जगह।
**रकथेल**— सं० (कि०) पीतल की थाली।
**रकपा**— वि० (कि०) भूरा पशु।
**रकस**— सं० (कि०) शस्त्र।
**रकसलथ**— सं० (कि०) राक्षस।
**रकुमपिङ**— सं० (कि०) अन्न भंडारण के लिए पत्थर का

गृह।
रकुलमों—सं० (कि०) पत्थर की ओखली।
रक्छनी—सं० (कि०) राक्षसी।
रक्ता—वि० (ला०) लाल।
रक्सैस—सं० (कि०) राक्षस।
रख—सं० (कि०) मदिरा।
रखछुरमाह—स० क्रि० (कि०) मदिरा निकालना।
रखछेमि—वि० (कि०) अति कंजूस।
रखतुङिहमी—सं० (कि०) शराबी।
रखसिंह—सं० (कि०) लक्कड़-पत्थर।
रखसे—वि० (कि०) पथरीला।
रखाला—सं० (कि०) Taxus baccata.
रखोबरा—सं० (कि०) मृत्यु के समय दी जाने वाली पंचरत्न की पुड़िया।
रख्याश्यमाह—स० क्रि० (कि०) दृढ़ संकल्प करना।
रगछा—सं० (कि०) काला नमक।
रगछीई—सं० (कि०) शिलाजीत।
रगजङख—सं० (कि०) सत्तू रखने का पात्र।
रगतीपुतमाह—अ० क्रि० (कि०) अंधेरा छटना।
रगन—सं० (कि०) पीतल।
रगनु—स० क्रि० (कि०) चराना।
रगबायु—सं० (कि०) पनघट।
रगमिक—अ० क्रि० (कि०) टूटना।
रगशिद—वि० (कि०) टूटा हुआ।
रङ—अ० (कि०) साथ।
रङकोलमाह—अ० क्रि० (कि०) होश संभालना।
रङगिकरिबा—स० क्रि० (ला०) उठाना।
रङगी—वि० (ला०) ऊंचा।
रङदोद—सं० (कि०) स्वार्थ।
रङपालस—सं० (कि०) अश्वपाल।
रङपोऊछलाअ—सं० (कि०) स्वदेशी माल।
रङमाह—स० क्रि० (कि०) बेचना।
रङमुलुखुकत्—सं० (कि०) मातृभाषा।
रङयामाह—स० क्रि० (कि०) रंगाई करना।
रङयुल—सं० (कि०) अपना गांव।
रङरङ—अ० (कि०) अपना-अपना।
रङराती—सं० (ला०) प्रातःकाल।
रङल—सं० (कि०) ततैया।
रङशीन—सं० (कि०) स्वभाव।
रङाशियह—वि० (कि०) रंगा हुआ।
रङिहमी—सं० (कि०) विक्रेता।
रङुथोरिङ—सं० (कि०) कंधे के ऊपर।
रङुवाश—अ० (कि०) स्वेच्छा पूर्वक।
रङुह—वि० (कि०) अपना।
रच—सं० (कि०) बछड़ी।
रचा—सं० (कि०) मूत्र।
रचाफेङसपा—सं० (कि०) पेशाबघर।
रछोई—सं० (कि०) Viburnum stellulatum.
रजद—सं० (ला०) गेहूं।
रजल—सं० (कि०) एक प्रकार का घास जिससे 'किरडे' आदि बनाए जाते हैं।
रजालमाह—स० क्रि० (कि०) ईर्ष्या करना।
रटिए—वि० (कि०) व्यर्थ घूमने वाली।
रटुआ—वि० (कि०) व्यर्थ घूमने वाला।
रटेन्निक—अ० क्रि० (कि०) व्यर्थ समय बिताना।
रठी—सं० (कि०) कुत्ता।
रणमु—स० क्रि० (कि०) चराना।
रणशींग—सं० (कि०, ला०) रणसिंघा।
रणु—सं० (ला०) विधुर।
रत—सं० (ला०) खून।
रत—सं० (कि०) गाय।
रतठिसमाह—अ० क्रि० (कि०) चले जाना।
रतबोङ—सं० (कि०) गोशाला।
रतुआरी—सं० (ला०) ग्वाला।
रथ—सं० (कि०) चौलाई का दाना।
रथु—सं० (कि०) बछड़ा।
रन—सं० (कि०) पीतल।
रनत—सं० (कि०) बकरी आदि को होने वाला रोग।
रनतशोतमाह—अ० क्रि० (कि०) गाय को बीमारी होना।
रनशित—वि० (कि०) दिया हुआ।
रपमाह—स० क्रि० (कि०) पीसना।
रबछत—सं० (कि०) कुलनाश।
रबमिक—स० क्रि० (कि०) पीसना।
रबशित—वि० (कि०) पीसा हुआ।
रबो—सं० (कि०) बकरा।
रम—सं० (कि०) तिनका।
रमनस—सं० (कि०) बौद्ध मंदिर में होने वाली विशेष पूजा।
रमपूलिङ—सं० (कि०) तिनकों का 'पूला'।
रमरामो—वि० (कि०) धुंधला।
रमराम्याचमिक—अ० क्रि० (कि०) धुंधला होना।
रमिक—स० क्रि० (कि०) भेड़-बकरियों की आंतें भींच कर साफ करना।
रयसि—सं० (कि०) राज्य।
रयुगुऊरुप्या—सं० (कि०) कागज़ के नोट।
रल—सं० (कि०) जंगली फल।
रलङ—सं० (कि०) कैलाश।
रलड़—सं० (कि०) लंबी छुरी।
रलफा—सं० (कि०) जटा।
रलफासा—वि० (कि०) जटाधारी।
रलिङ—अ० (कि०) दो साल पहले।
रवाज़—सं० (कि०) रीति-रिवाज़।
रश—सं० (कि०) प्रभाव।
रशि—सं० (ला०) रस्सी।
रशोत—सं० (कि०) गौ रोग।
रस—सं० (कि०) बर्फ।
रसटीमाह—स० क्रि० (कि०) पानी का रुख बदलवाना।

रसमाह— स० क्रि० (कि०) शस्त्र तेज़ करना।
रहित— सं० (कि०) प्रजा।
रांक— सं० (कि०) रंग।
रांगयामिक— स० क्रि० (कि०) रंगना।
रांडोले— सं० (कि०) विधवा।
रांडोल्स— सं० (कि०) विधुर।
रा.क— सं० (कि०) शराब।
रा.कदारङ— सं० (कि०) शराब की धार।
रा.कशैस— सं० (कि०) राक्षस।
रा.कसैस— वि० (कि०) ज़रूरी।
रा.ग— सं० (कि०) पत्थर।
रा.गलो— सं० (कि०) घोड़े का वर्ष।
रा.ङ— सं० (कि०) दर्रा। घोड़ा।
रा.द— सं० (कि०) चौलाई प्रजाति का अन्न विशेष।
रा— सं० (कि०) पत्थर।
रा— सं० (कि०) धागा।
रा— सं० (कि०) कपड़ा।
रा— वि० (कि०) सौ।
रा— सं० (कि०) मदिरा।
राईलामा— स० क्रि० (कि०) खाली करना।
राऊ— सं० (ला०) योगी।
राऊऐटी— सं० (ला०) योगिनी।
राऊला— सं० (कि०) साधु।
राऊसोला— सं० (कि०) पत्थर का कोयला।
राए— वि० (कि०) आठ।
राएटङ— सं० (कि०) शादी।
राक— वि० (कि०) हरा।
राकछी— सं० (कि०) शिलाजीत।
राकुमफिङ— सं० (कि०) पत्थर का बना कोठार।
राकोस— सं० (ला०) राक्षस।
राखलमाह— स० क्रि० (कि०) अभिनय करना।
राखवङ— सं० (कि०) पत्थर का पात्र।
राखान— सं० (कि०) पत्थर की खान।
रागस— सं० (ला०) राक्षस।
रागसैस— सं० (कि०) राक्षस।
रागो— सं० (कि०) कमीज़।
राङ— सं० (कि०) ऊंचे पहाड़ की चरागाह।
राङऊ— सं० (कि०) पहाड़ी फूल।
राङफो— वि० (कि०) सावधान।
राङा— सं० (कि०) बाल-बच्चे।
राङोन— सं० (कि०) रोगन।
राचो— सं० (कि०) सींग।
राछेन्निक— अ० क्रि० (कि०) सख्त होना।
राज़ा— सं० (कि०) राजा।
राज़ाऊकुल— सं० (कि०) राजवंश।
राज़ी— वि० (कि०) ठीक-ठाक।
रातिङ— सं० (कि०) रात।
रातियुरातङ— अ० (कि०) रातों रात।
रातुङच— सं० (कि०) पशमीना बकरा।
रापोटो— सं० (कि०) ऊन का गोला।
राप्या— सं० (कि०) कबूतर की तरह का एक पक्षी जो कबूतर से कुछ बड़ा होता है।
राबङ— सं० (कि०) गर्मी।
रामा— सं० (कि०, ला०) बकरी।
राम्यां— अ० (कि०) सौ बार।
रायांग— सं० (कि०) Picea smithiana.
रावङ— सं० (कि०) चाल।
रावङ— सं० (कि०) गर्मी।
राश— सं० (कि०) राशि।
राशङ— सं० (कि०) पीड़ा, दर्द। ढेर।
राशमत्वा— अ० क्रि० (कि०) कम दिखना।
राशी— सं० (कि०) हलकी शराब।
रासकयङ— सं० (कि०) रासलीला।
रासमू— सं० (कि०) चाकू।
रासलमाह— स० क्रि० (कि०) शासन करना।
रासोल— सं० (कि०) रिवालसर।
रिंगगोलछङ— सं० (कि०) चंद्रमास।
रिंछेन— सं० (कि०) रत्न।
रिंपङ— सं० (कि०) खेतों की दीवार।
रिंबास— अ० (कि०) क्रमश.।
रि— सं० (कि०) खेत।
रिईजुरामाह— स० क्रि० (कि०) खेत बनाना।
रिईपुतमाह— स० क्रि० (कि०) हल जोतना।
रिईबुङ— वि० (कि०) फसल से भरा हुआ खेत।
रिओङ— सं० (कि०) खरगोश।
रिख— सं० (कि०) जाति।
रिखांडलु— सं० (कि०) Acer acuminatum.
रिखा— सं० (कि०) भालू।
रिखाल— सं० (कि०) Rhuscotinus.
रिखु— सं० (कि०) कान की मैल।
रिगपा— सं० (कि०) दिमाग।
रिगपाश्यरमाह— स० क्रि० (कि०) अंत करना।
रिगपासङ.फो— वि० (कि०) स्वस्थचित्त।
रिगपासा— सं० (कि०) ज्ञानी, बुद्धिमान।
रिगसाअलमाह— स० क्रि० (कि०) सांस खींचना।
रिगा— सं० (कि०) पर्वत।
रिगाकंपो— सं० (कि०) सूखा पहाड़।
रिगिल— सं० (कि०) रेखा।
रिगे— अ० (कि०) ऊपर।
रिङ— अ० (कि०) ऊपर।
रिङजे— सं० (कि०) बहिन।
रिङपो— वि० (कि०) लंबा।
रिङमिक— स० क्रि० (कि०) कहना।
रिङयतमाह— अ० क्रि० (कि०) भिनभिनाना। टहलना।
रिङश्य— अ० (कि०) कहां।
रिजिङ— सं० (कि०) बिना जोता खेत।

रिटतमाह—अ० क्रि० (कि०) आवारा घूमना।
रिटामाह—स० क्रि० (कि०) घुमाना।
रिटुआ—वि० (कि०) बेकार घूमने वाला, घुमक्कड़।
रिड़किबा—अ० क्रि० (ला०) फिसलना।
रिन—सं० (कि०) ताना।
रिनबङ—वि० (कि०) हाथ भर।
रिनबोछे—सं० (कि०) गुरु।
रिनमदयारो—वि० (कि०) छोटे दिन।
रिनमाह—स० क्रि० (कि०) ताना बुनना।
रिनमिक—स० क्रि० (कि०) हाथ से नापना।
रिपरिपङ—सं० (कि०) डंडे की मार।
रिपुथ—सं० (कि०) 'न्योज़े' का गुच्छा।
रिफुटामाह—स० क्रि० (कि०) तपस्या करना।
रिब्र—सं० (कि०) पसली।
रिम—सं० (कि०) खेत।
रिमा—वि० (कि०) टेढ़ा।
रिमों—सं० (कि०) रेखाचित्र।
रिमों—सं० (कि०) वृत्त रेखा।
रिमोंटामाह—स० क्रि० (कि०) रेखा खींचना।
रिमोतीशेन्नू—स० क्रि० (कि०) सिंचाई करना।
रिम्मनाह—अ० क्रि० (कि०) मामूली बादल छाना।
रियासोत—सं० (कि०) रियासत।
रिलतोअ—वि० (कि०) गोल।
रिलमा—सं० (कि०) मेगनी।
रिलरिल—वि० (कि०) गोल।
रिलवु—सं० (कि०) गोला।
रिला—सं० (कि०) पहाड़।
रिलु—सं० (कि०) गोली।
रिश्यमाह—अ० क्रि० (कि०) दरार पड़ना।
रिश्यू—सं० (कि०) दरार।
री—सं० (कि०) Pinus gerardiana.
री—सं० (कि०) पहाड़।
री—सं० (कि०) किनारा।
री—अ० (कि०) बीता हुआ कल।
री—सं० (कि०) न्योज़ा।
री—सं० (कि०) शव।
रीआ—सं० (कि०) जंगल।
रीईसा—सं० (कि०) जमींदार।
रीऊ—सं० (कि०) बकरी का बच्चा।
रीग—सं० (ला०) डंडा।
रीगचोओम्या—सं० (कि०) बीता हुआ चौथा दिन।
रीगिल—सं० (कि०) लकीर।
रीतङ—सं० (कि०) ऋतु।
रीतोच—सं० (कि०) छोटी चिड़िया।
रीथबोठङ्‌छी—सं० (कि०) 'न्योज़े' के पेड़ का बिरोज़ा।
रीन—सं० (कि०) ऋण।
रीनदौन—सं० (कि०) कर्ज़ा।
रीनपाकमिक—स० क्रि० (कि०) कर्ज़ अदा करना।
रीनिया—सं० (कि०) कर्ज़दार।
रीबा—सं० (कि०) रीढ़ की हड्डी।
रीमो—सं० (कि०) लकीर।
रीयाशमिक—अ० क्रि० (कि०) तंग होना।
रीराखरङ—सं० (कि०) एक झाड़ी विशेष जिसकी पशुओं को हांकने के लिए छड़ी बनाई जाती है।
रीलुक—सं० (कि०) भेड़-बकरी।
रील्दी—सं० (कि०) गोली।
रीश्यमाह—अ० क्रि० (कि०) दरार पड़ना।
रीसुर—सं० (कि०) हिमशिला।
रुंशमिक—अ० क्रि० (कि०) नाले आदि के जल का एक जगह एकत्रित होना।
रुंशिश—वि० (कि०) एकत्रित जल।
रुअङ—सं० (कि०) आकृति।
रुअङस्वामिक—स० क्रि० (कि०) रूप बिगाड़ना।
रुअद—सं० (ला०) हिमखंड।
रुआ—सं० (कि०) जरायु।
रुकच—सं० (कि०) लिक्षा।
रुकशमिक—अ० क्रि० (कि०) मेल होना, एक समान होना।
रुकशित—वि० (कि०) एक समान।
रुकशिस—वि० (कि०) मिला हुआ।
रुकशिस—सं० (कि०) समानता।
रुखा—वि० (कि०) कठोर स्वभाव का।
रुखिह—वि० (कि०) एक समान।
रुखिहवङमाह—अ० क्रि० (कि०) समान रूप होना।
रुगचि—स० क्रि० (ला०) पूछना।
रुगपा—सं० (कि०) पहाड़ी साग।
रुगल—सं० (कि०) भेड़-बकरे पर लादने की गोनी।
रुङ—सं० (कि०) बड़े पत्थरों का समूह।
रुङखमाह—स० क्रि० (कि०) सुनना।
रुङमिक—स० क्रि० (कि०) निगरानी करना, इंतज़ार करना।
रुङरा—सं० (कि०) कंकर-पत्थर का ढेर।
रुङशकल—सं० (कि०) पथरीली जगह।
रुङशमिक—अ० क्रि० (कि०) जीवित रहना, दीर्घायु होना।
रुङशिश—वि० (शि०) जीवित।
रुचो—सं० (कि०) सींग।
रुचोसा—वि० (कि०) सींग वाला।
रुज़ा—वि० (कि०) बूढ़ा।
रुट्ठा—वि० (ला०) रुचिर, दयालु।
रुठ—वि० (ला०) अच्छा।
रुठबा—अ० क्रि० (ला०) नाराज़ होना।
रुठा—वि० (ला०) साफ।
रुठे—वि० (ला०) अच्छा।
रुड़बा—अ० क्रि० (ला०) लुढ़कना।
रुणिग—सं० (कि०) बड़ा पत्थर, चट्टान।
रुण्ण—सं० (ला०) पत्थर।
रुथङ—सं० (कि०) मांस का सूप।
रुद—सं० (कि०) सींग।

रुदोस्या— वि० (कि०) सींग वाला।
रुन्निक— स० क्रि० (कि०) पानी बांधना।
रुपखेमाह— स० क्रि० (कि०) शीघ्रता से खाना।
रुपमाह— स० क्रि० (कि०) समेटना।
रुपमिक— स० क्रि० (कि०) पट्टी बांधना।
रुपु— सं० (कि०) मूंछ।
रुबङ— सं० (कि०) आकृति, दशा।
रुबू— सं० (कि०) पशुओं के सींग में पड़ने वाले कीड़े।
रुम— सं० (कि०) कली। जुगाली।
रुमनाह— सं० (कि०) क्रोधी मुद्रा।
रुमसा— सं० (कि०) कलियुक्त।
रुमसो— सं० (कि०) चित्रकला।
रुयाल— सं० (कि०) Rosa macrophylla.
रुलऊखेमह्रा— स० क्रि० (कि०) हिला देना।
रुलज़ोम— वि० (कि०) कामचोर (स्त्री)।
रुलडिमा— सं० (कि०) बदबू।
रुलतमाह— अ० क्रि० (कि०) हिलना।
रुलनाह— वि० (कि०) ढीला।
रुलपा— वि० (कि०) सड़ा हुआ।
रुलबुलामाह— स० क्रि० (कि०) तंग करना।
रुलमतमाह— स० क्रि० (कि०) सड़ाना।
रुलमो— वि० (कि०) आलसी महिला।
रुलयामिक— स० क्रि० (कि०) हिलाना-डुलाना।
रुलामा— स० क्रि० (कि०) हिलाना।
रुलिहजस— वि० (कि०) सड़ा हुआ माल।
रुलैस्मिक— अ० क्रि० (कि०) हिलना-डुलना।
रुवा— सं० (कि०) हड्डी।
रुवाल— सं० (कि०) दे० घासनी।
रुवास— सं० (कि०) देवदूत।
रुस्कोंठो— सं० (कि०) बूढ़ा, अधिक वृद्ध।
रुहल— सं० (ला०) गांठ।
रेंपा— वि० (कि०) बहादुर।
रे— सं० (कि०) कमर।
रेअन— सं० (कि०) कसम, शपथ।
रेए— सं० (कि०) कपड़ा।
रेओंग— सं० (कि०) खरगोश।
रेखङ— सं० (कि०) रेखा।
रेग— सं० (कि०) Prunus persica.
रेगु— कि० (कि०) उनसठ।
रेङनाह— वि० (कि०) उदास।
रेङा— वि० (कि०) पैंसठ।
रेच— सं० (कि०) लकड़ी का बना पलटा।
रेचपाङ— सं० (कि०) एक पेड़ जो कुल्हाड़ी का डंडा बनाने के काम आता है।
रेचिक— वि० (कि०) इकसठ।
रेजङ— सं० (कि०) एक कान रोग।
रेज़ी— वि० (कि०) चौंसठ।
रेट्रा— सं० (ला०) कान।
रेङन— वि० (कि०) ताज़ा।
रेडु— सं० (कि०) रेडियो।
रेडुग— वि० (कि०) छासठ।
रेतर— सं० (कि०) आरा।
रेदङशोत— सं० (कि०) कान का रोग।
रेनम— सं० (कि०) रवि।
रेनाम— सं० (कि०) हेमंत।
रेपङ— सं० (कि०) कान।
रेपङ्पोली— सं० (कि०) कान का निचला भाग।
रेपङ्श्यो— वि० (कि०) कान का बाहरी भाग।
रेफदार— सं० (कि०) चूड़ीदार।
रेबोचूमाह— स० क्रि० (कि०) तंबू लगाना।
रेमामटङ— सं० (कि०) ऊबड़-खाबड़ भूमि।
रेमासलमाह— स० क्रि० (कि०) मार गिराना।
रेमोछरमाह— स० क्रि० (कि०) गुठली से छिलका अलग करना।
रेयारिई— सं० (कि०) टेढ़ा खेत।
रेलुठो— सं० (कि०) पत्थर का कोयला।
रेशमिक— स० क्रि० (कि०) ले जाना।
रैंडो— सं० (कि०) घास में लगने वाला कीड़ा।
रैअ— वि० (कि०) आठ।
रैअर्नाज़ा— वि० (कि०) आठ बीस अर्थात् एक सौ साठ।
रैकङ— सं० (कि०) निशान।
रैकङशिङ— सं० (कि०) निशान लगी हुई लकड़ी।
रैग— वि० (कि०) बेमी, आड़ू प्रजाति का स्थानीय फल।
रैठो— सं० (कि०) कद्दू।
रैतपा:श— सं० (कि०) पश्चिम की ओर।
रैन्निक— अ० क्रि० (कि०) अस्त होना। स० क्रि० बेचना।
रैपशिश— वि० (कि०) स्थिर, चुप।
रैबमिक— स० क्रि० (कि०) टिकाना।
रैम— सं० (कि०) गुठली।
रैया— सं० (कि०) ढलान।
रैयाशमिक— स० क्रि० (कि०) कार्य में रुचि लेना।
रोंदो— सं० (कि०) बढ़ई का रंदा।
रो— सं० (कि०) तख्ता।
रोअ— वि० (कि०) मृत।
रोअमाह— अ० क्रि० (कि०) भागना।
रोअल— सं० (कि०) पशुओं को दिया जाने वाला दिन का चारा। बदला।
रोअलजेमाह— स० क्रि० (कि०) बदला लेना।
रोई— सं० (कि०) देवदार प्रजाति का एक वृक्ष।
रोकपा— सं० (कि०) दिमाग।
रोकबा— स० क्रि० (ला०) रोकना।
रोकमाश— सं० (कि०) उड़द।
रोकलपोकल— वि० (कि०) ऊबड़-खाबड़।
रोकलो— वि० (कि०) गूंगा।
रोकिबा— स० क्रि० (ला०) रोकना, रुकाना, मना करना।
रोकोल-पोकोल— सं० (कि०) शोर-शराबा।

**रोकोलपोकोलचलमाह**— अ० क्रि० (कि०) अशुद्ध उच्चारण करना।
**रोक्यामिक**— स० क्रि० (कि०) रोकना।
**रोखरम**— सं० (कि०) सहायता।
**रोखरोअ**— सं० (कि०) क्षतिग्रस्त।
**रोखरोलमाह**— स० क्रि० (कि०) विकृत करना।
**रोगरम**— सं० (कि०) सहायता।
**रोगश**— सं० (कि०) तिल, शरीर पर का काला दाग।
**रोगशमिक**— अ० क्रि० (कि०) चरना।
**रोगिच़**— वि० (कि०) गरम।
**रोगिया**— वि० (कि०) अधिक बीमार रहने वाला।
**रोङ**— सं० (कि०) ढांचा, आकृति।
**रोङिप**— सं० (कि०) अशौच।
**रोच**— सं० (कि०) कान।
**रोच़**— सं० (कि०) कस्तूरी।
**रोच़**— सं० (कि०) तख्ती।
**रोचो**— सं० (कि०) सींग।
**रोजङ**— अ० क्रि० (कि०) वर्षा लगना।
**रोज़त**— सं० (कि०) गेहूं।
**रोटिच़**— सं० (कि०) चपाती।
**रौड़**— सं० (कि०) ढांचा।
**रोत**— सं० (कि०) शक्ति।
**रोतमाह**— स० क्रि० (कि०) जलाना।
**रोती**— सं० (ला०) श्मशान।
**रोतो**— सं० (कि०) अंतिम माल।
**रोतोहनमाह**— स० क्रि० (कि०) रस निकालना।
**रोदङ**— सं० (कि०) वर्षा।
**रोनतमाह**— अ० क्रि० (कि०) गूंजना।
**रोपकफा**— वि० (कि०) आलसी।
**रोपजेमाह**— अ० क्रि० (कि०) जल जाना।
**रोपटोच्छलाअ**— वि० (कि०) टूटे-फूटे बरतन।
**रोपतीमाह**— स० क्रि० (कि०) जला देना।
**रोपा**— सं० (ला०) चांदी।
**रोपोचा**— सं० (ला०) कस्तूरी।
**रोफला**— सं० (कि०) झगड़ा।
**रोफाथकफरा**— सं० (कि०) कफन।
**रोबङ**— सं० (कि०) रोम।
**रोबयामिक**— स० क्रि० (कि०) रोपना।
**रोबयाशिल**— वि० (कि०) रोपा हुआ।
**रोबोल**— सं० (कि०) रबड़।
**रोम**— सं० (कि०) फेफड़े का रोग, दमा।
**रोमचम**— स० क्रि० (कि०) सुनना।
**रोमनाह**— सं० (कि०) लकड़ी या हड्डी का ढांचा।
**रोमपनिङ**— अ० क्रि० (कि०) बर्बाद होना, चले जाना।
**रोमाह**— अ० क्रि० (कि०) भाग जाना।
**रोमिक**— अ० क्रि० (कि०) बोलना।
**रोमी**— अ० (कि०) परसों।
**रोमुहशोत**— सं० (कि०) दमे की बीमारी।
**रोमेठ**— अ० (कि०) चौथे दिन।
**रोरेफमाह**— स० क्रि० (कि०) आधार रखना।
**रोलङ**— सं० (कि०) झगड़ा।
**रोलङखटामाह**— अ० क्रि० (कि०) मृतक का पुनः जीवित होना।
**रोलङपयामाह**— स० क्रि० (कि०) कलह पैदा करना।
**रोलथमाह**— अ० क्रि० (कि०) बदले में काम पर जाना।
**रोलबा**— अ० क्रि० (ला०) चिल्लाना।
**रोलांगभोणा**— अ० क्रि० (ला०) मुर्दे का उठना।
**रोलिबा**— अ० क्रि० (ला०) चिल्लाना।
**रोलूथ**— वि० (कि०) झगड़ालू।
**रोशङ**— सं० (कि०) गुस्सा।
**रोशङखुल्या**— वि० (कि०) गुस्सेबाज़।
**रोशङताङमिक**— अ० क्रि० (कि०) गुस्सा करना।
**रोशौःल**— सं० (कि०) तख्ते का बना छत।
**रोश्यिह**— वि० (कि०) जला हुआ।
**रोसीद**— सं० (कि०) रसीद।
**रोसोम**— सं० (कि०) रस्म।
**रोहतारी**— सं० (ला०) चरवाहा।
**रौंग**— सं० (कि०) देवता का खाली रथ।
**रौंचमिक**— स० क्रि० (कि०) सुनना।
**रौंडी**— सं० (कि०) झूठ।
**रौःद**— सं० (कि०) मक्खन का गोला।
**रौःस**— सं० (कि०) रस।
**रौःस्या**— वि० (कि०) रसदार।
**रौक**— वि० (कि०) काला।
**रौकमाटिङ**— सं० (कि०) काली मिट्टी।
**रौकरांक**— वि० (कि०) काला रंग।
**रौकशा**— सं० (कि०) तिल के आकार का काला दाग जो शरीर पर होता है।
**रौकाले**— वि० (कि०) काली।
**रौकालो**— वि० (कि०) काला।
**रौगमिक**— स० क्रि० (कि०) चराना।
**रौडे**— सं० (कि०) पांव।
**रौदस पौःस**— वि० (कि०) अनुभवी, पढ़ा लिखा।
**रौथङ**— सं० (कि०) देवरथ।
**रौन**— सं० (कि०) लोहा।
**रौनको**— सं० (कि०) चकमक पत्थर से अग्नि प्रज्वलित करने के लिए प्रयुक्त होने वाला लोहे का यंत्र।
**रौनपाःन**— सं० (कि०) तवा।
**रौनेम्निक**— अ० क्रि० (कि०) गूंजना।
**रौपङ**— सं० (कि०) धान के खेत।
**रौपबीमिक**— अ० क्रि० (कि०) नष्ट होना।
**रौपा**— सं० (ला०) रुपया।
**रौमङ**— सं० (कि०) बकरे या याक के बाल।
**रौमाःश**— सं० (कि०) माश।
**रौयङ**— सं० (कि०) 'रई' का वृक्ष।
**रौलटु**— वि० (कि०) झगड़ालू, बातूनी।

**रौला**—सं० (कि०) साधु, शरीफ।

**रौलीङ**—अ० (कि०) पिछले से पिछला साल।

## ल

**लंईथ**—वि० (कि०) हलका।
**लंकाअ**—सं० (कि०) अन्न भूनने का लोहे का पात्र।
**लंकाहोङ्**—सं० (कि०) काले रंग का उड़ने वाला कीड़ा।
**लंगता**—वि० (कि०) लंबा।
**लंगफोछे**—सं० (ला०) हाथी।
**लंगराअ**—सं० (कि०) वस्त्र का बाजू।
**लंगसा**—सं० (ला०) गोबर की खाद।
**लंगीथल**—सं० (कि०) हथेली।
**लअ**—सं० (ला०) चांद।
**लइशेसखसणा**—सं० (कि०) हस्तशिल्पी।
**लईङन**—सं० (कि०) कर्म।
**लईङन्यन**—वि० (कि०) अभागा।
**लईमार**—सं० (कि०) पिघला हुआ घी।
**लऊजेमाह**—अ० क्रि० (कि०) गल जाना।
**लऊवेदङ**—सं० (कि०) हाथ-दर्द।
**लकथत्**—सं० (कि०) छोटी कुल्हाड़ी।
**लकथप**—सं० (कि०) संकेत।
**लकथा**—सं० (कि०) झूठ बोलने वाला व्यक्ति।
**लकदे**—सं० (कि०) लड़की।
**लकपा**—सं० (कि०) हाथ।
**लकफा**—सं० (कि०) खाल से बना वस्त्र।
**लकलाचूकटी**—सं० (कि०) सौंपने का भाव।
**लकसप**—सं० (कि०) अंगूठा।
**लखपोतीई**—सं० (कि०) लखपती।
**लखरा**—सं० (कि०) भेड़-बकरी का बच्चा।
**लखलाअ**—वि० (कि०) पूर्णता से अधिक।
**लखलेन**—सं० (कि०) प्रयोग, संबंध, लेनदेन।
**लखलोङछोत**—सं० (कि०) भोग-विलास।
**लखसान**—सं० (कि०) चांद।
**लगथपलोमाह**—स० क्रि० (कि०) इशारा करना।
**लगरिख**—सं० (कि०) हस्तरेखा।
**लगरिगखखोनीई**—सं० (कि०) हस्तरेखा विशेषज्ञ।
**लगलेनपा**—सं० (कि०) कार्यकर्ता।
**लगशूप**—सं० (कि०) दस्ताना।
**लगा**—सं० (कि०) चमड़े का वस्त्र।
**लगीरख**—सं० (कि०) हस्त रेखाएं।
**लग्याच**—सं० (कि०) वर्षा।
**लङ**—अ० क्रि० (कि०) उठना।
**लङ**—सं० (कि०) थन।
**लङपालस**—सं० (कि०) ग्वाला।
**लङफा**—सं० (कि०) भाप।
**लङफाहन्युह**—अ० क्रि० (कि०) भाप उठना।
**लङमिक**—अ० क्रि० (कि०) ठहरना।
**लङवो**—सं० (कि०) गोबर।
**लङवोलमाह**—स० क्रि० (कि०) गोबर लीपना।
**लङश्चु**—सं० (कि०) पशु का रोग।
**लङसा**—सं० (कि०) खाद।
**लङ्गूरस**—सं० (कि०) लंगूर।
**लच**—सं० (कि०) बकरी का बच्चा।
**लचा**—सं० (ला०) बकरी।
**लछा**—सं० (कि०) मोम।
**लछाफात**—सं० (कि०) नकदी का थैला।
**लछोन**—सं० (कि०) योग्यता।
**लजङ**—सं० (कि०) लज्जा।
**लजङकत**—सं० (कि०) अश्लील वार्तालाप।
**लजाश्यशुत**—अ० क्रि० (कि०) लज्जित होना।
**लजिउरा**—वि० (ला०) शर्मीला।
**लझुलमाह**—स० क्रि० (कि०) इशारा करना।
**लटकचलमाह**—अ० क्रि० (कि०) ऊंचा बोलना।
**लटरी**—सं० (कि०) लोटा।
**लटा**—वि० (कि०) बहरा, गूंगा।
**लटु**—सं० (कि०) लड़का।
**लत**—सं० (कि०) रस्सी।
**लतघटतमाह**—अ० क्रि० (कि०) मर्यादा कम होना।
**लतङख**—सं० (कि०) लात।
**लतपा**—सं० (कि०) दिमाग।
**लतलमाह**—स० क्रि० (कि०) प्रतिष्ठा करना।
**लत्**—सं० (कि०) आदत।
**लथो**—सं० (कि०) छींटा।
**लदुसछुदुस**—सं० (कि०) एक पर्व।
**लन**—सं० (ला०) वायु।
**लनचिकयोआला**—अ० (कि०) तुरंत।
**लनतुख**—सं० (कि०) वायुभक्षी पक्षी विशेष।
**लननिक**—स० क्रि० (कि०) करना।
**लनबू**—सं० (कि०) बालों का गुच्छा।
**लप**—सं० (ला०) पत्ता।
**लपक्यतिह**—वि० (कि०) प्रकाश युक्त, उजला।
**लपचसा**—सं० (कि०) रास्ते के पास की झाड़ियां।
**लपचाव्यपचे**—स० क्रि० (कि०) समझाना।
**लपचे**—वि० (कि०) सचेत।
**लपछङ**—सं० (कि०) एक चिकित्सा क्रिया।
**लपतप्यलमाह**—अ० क्रि० (कि०) उदय होना।
**लपलप्यामिक**—स० क्रि० (कि०) लहराना, लपलपाना।
**लपलेनतेरशे**—स० क्रि० (कि०) उत्तर देना।
**लपशप**—सं० (कि०) अधिक व्यय।
**लपा**—सं० (कि०) सेवक।
**लपालपाह**—सं० (कि०) पत्तीदार शस्त्र।
**लपालपाह**—वि० (कि०) चकमदार।
**लपुअ**—सं० (कि०) गाजर की सब्जी।
**लपेजू**—सं० (कि०) वृत्तांत।

लप्प—सं० (कि०) बात।
लप्प—सं० (ला०) पत्ता।
लफमाह—स० क्रि० (कि०) पढ़ाना।
लफमेनमतोई—वि० (कि०) अशिक्षित।
लफिह—वि० (कि०) शिक्षित।
लफीछङ—सं० (कि०) विद्यार्थी।
लबक्यतिमाह—स० क्रि० (कि०) लहराना।
लबतिई—वि० (कि०) बेकार।
लबानिया—सं० (कि०) साधू।
लम—सं० (कि०) मार्ग।
लमठू—सं० (कि०) पीतल का बड़ा पात्र।
लमतीई—सं० (कि०) नाक का पानी, श्लेष्मा।
लमवसनतपा—वि० (कि०) काफी समय से रोगी।
लमशो—सं० (कि०) फल।
लमश्या—सं० (कि०) गंधर्व।
लमस—वि० (कि०) दे० लामेस।
लमा—वि० (ला०) लंबा।
लमाालमाह—सं० (कि०) इंतज़ाम करने वाला, प्रबंधक।
लमाहतङमाह—अ० क्रि० (कि०) क्रियाशील होना।
लमो—सं० (कि०) बौद्ध देवमाला में एक देवी का नाम।
लमोथ—सं० (कि०) एक त्योहार।
लम्नाद्दिती—सं० (कि०) मार्गदर्शक।
लम्म—सं० (ला०) मार्ग, रास्ता।
लम्मेन—सं० (कि०) बनावट।
लम्हु—सं० (कि०) दे० लमठू।
लयाटामाह—स० क्रि० (कि०) दीवार में गारा लगाना।
लयाश्यमाहथङख—वि० (कि०) लज्जायुक्त।
लयुल—सं० (कि०) देवलोक।
लयोख—सं० (कि०) प्रलय।
लरज्ञा—सं० (कि०) ठाट-बाट, शान।
लरलरङ—अ० (कि०) एक के पीछे एक।
लरिख—सं० (कि०) चित्रकला।
ललची—वि० (कि०) लालची।
लवङ—सं० (कि०) सिलसिला।
लवङुरासीमा—अ० क्रि० (कि०) सदमें से मरना।
लवचा—सं० (कि०) निर्देश।
लवचारिया—वि० (कि०) अधिक काम करने वाला।
लवजा—सं० (कि०) देवपक्षी।
लवरंग—सं० (कि०) बौद्धमठ।
लशङफो—सं० (कि०) वस्त्र।
लशटी—सं० (कि०) दे० लौटरी।
लश्युर—सं० (कि०) तने के साथ वाली शाखा।
लस—सं० (कि०) मूल्य।
लसथमाह—सं० (कि०) मूल्यांकन।
लसोनङ—सं० (कि०) लहसुन।
लस्या—सं० (कि०) कुल्हाड़ी।
लहकणा——सं० (कि०) बुधवार।
लहखङ—सं० (कि०) देवघर।
लहङटामा—अ० क्रि० (कि०) कूदना।
लहम—सं० (कि०) जूता।
लहाङ—सं० (कि०) छलांग।
लहाङयामिक—अ० क्रि० (कि०) छलांग लगाना।
लहाणेपंग—सं० (कि०) देवपरी।
ला:ग—सं० (कि०) आस्तीन।
ला:ङ—सं० (कि०) गाय।
ला:पलापङ—अ० (कि०) जल्दी-जल्दी।
ला:स—सं० (कि०) कीचड़।
ला—सं० (कि०) देवता। दर्रा। बकरी। साया।
ला—सं० (ला०) ज्योति।
लाअम—सं० (कि०) सींग।
लाअमा—वि० (कि०) अवशेष।
लाइबा—स० क्रि० (ला०) पहनना।
लाईख—वि० (कि०) सुंदर। लायक।
लाऊंग—सं० (ला०) लौंग, नाक का आभूषण।
लाऊ—सं० (कि०) एक पाषाण भेदक पौधा।
लाए—सं० (कि०) दिन।
लाखपमाह—स० क्रि० (कि०) पीछा करके पकड़ना।
लाखुर—सं० (ला०) चक्की।
लागङ—सं० (कि०) बौद्ध-मठ।
लागा—सं० (कि०) ऊन या बाल से युक्त खाल का वस्त्र।
लागिन—स० क्रि० (कि०) बरसाना।
लागू—वि० (कि०) संक्रामक।
लागेच—सं० (कि०) वर्षा।
लागोथ—सं० (कि०) मूलधन।
लाङखुरङ—सं० (कि०) गोशाला।
लाङचमिक—स० क्रि० (कि०) प्रतीक्षा करना।
लाङतुङजा—सं० (ला०) चील।
लाङशे—अ० क्रि० (ला०) उठना।
लाडिच—वि० (कि०) हलका।
लाच—सं० (कि०) साया, छाया।
लाच—सं० (ला०) बकरी।
लाजङ—सं० (कि०) लज्जा।
लाजयाशमिक—अ० क्रि० (कि०) लज्जित होना।
लाजे—वि० (कि०) बेशर्म।
लाजो—वि० (कि०) बेशर्म।
लाझो—वि० (कि०) सुंदर।
लाटा—वि० (कि०) तोतला बोलने वाला, हकलाने वाला।
लाटी—सं० (कि०) लड़की।
लाटू—सं० (कि०) बालक।
लाटे—वि० (कि०) हकला कर बोलने वाली।
लाठयामिक—स० क्रि० (कि०) ले जाना, चोरी करना।
लाठयाशमिक—अ० क्रि० (कि०) लड़ना।
लाठि—सं० (ला०, कि०) लाठी।
लाडुरान्निक—स० क्रि० (कि०) खूब पिटाई करना।
लातङख—सं० (कि०) लात।
लाथ—सं० (कि०) मेमना।

लाथङ—सं० (कि०) लात।
लादयामिक—स० क्रि० (कि०) लादना।
लादी—वि० (कि०) सामान ढोने वाले बकरे और मेढ़े।
लादुस—सं० (कि०) पर्व।
लात्त—सं० (कि०) उत्तर। वायु।
लानचमिक—स० क्रि० (कि०) पहनना।
लानचमू—स० क्रि० (कि०) देखना।
लानचिस—वि० (कि०) पहना हुआ।
लानटामाह—स० क्रि० (कि०) जवाब देना।
लानली—सं० (कि०) जलवायु।
लानप्या—सं० (कि०) बाज की तरह का छोटा पक्षी।
लानमिक—स० क्रि० (कि०) करना।
लानशित—वि० (कि०) किया हुआ।
लानिङ—सं० (कि०) बेल। अ० पवित में।
लानेकुररो—स० क्रि० (कि०) संदेश देना।
लानोरोनम्मो—स० क्रि० (कि०) हवा के प्रवाह में अनाज को साफ करना।
लानूनिक—स० क्रि० (कि०) बनाना।
लापटलङ—सं० (कि०) सदाबहार फूल-पत्ती।
लाप्या—सं० (कि०) स्थानीय बकरी।
लाम—सं० (कि०) भेड़-बकरी के बच्चों का समूह।
लामठु—सं० (कि०) दे० लमठु।
लामलमाह—स० क्रि० (कि०) गलाना।
लामन—सं० (कि०) गोश्त का एक टुकड़ा।
लामा—वि० (ला०) लंबा।
लामा—सं० (कि०) बौद्ध भिक्षु।
लामाह—अ० क्रि० (कि०) गलना।
लामाह—स० क्रि० (कि०) करना।
लामेस—वि० (कि०) लंबा।
लामो—सं० (कि०) पर्वत।
लायङपुग—सं० (कि०) भुनी हुई चौलाई, चौलाई की खीलें।
लायोख—सं० (कि०) याद।
लारङ—सं० (कि०) पहनने के कपड़े।
लारज़े—सं० (ला०) वैद्य।
लारी—सं० (कि०) दुलहन।
लारो—सं० (कि०) वर।
लालङ—सं० (कि०) लार।
लालचेन्निक—स० क्रि० (कि०) लालच करना।
लालेमा—वि० (कि०) आसान।
लालोधकनमाह—स० क्रि० (कि०) लुभाना।
लावपा—सं० (कि०) दिमाग।
लावा—वि० (कि०) सुंदर।
लावो—सं० (कि०) छाछ।
लाशङशीर—सं० (कि०) दर्पण।
लाशनिक—स० क्रि० (कि०) प्रतिबिंब देखना।
लाश्युर—सं० (कि०) मेले में लगाई जाने वाली शुष्क टहनी।
लासा—सं० (कि०) पशुधन का स्वामी।
लास्ता—सं० (कि०) कुल्हाड़ी।
लिंडा—वि० (कि०) आवारा।
लिई—वि० (कि०) भारी।
लिईतुमाह—अ० क्रि० (कि०) भार पड़ना।
लिऊमलिऊ—अ० (कि०) जैसा-तैसा।
लिखबा—स० क्रि० (ला०) लिखना।
लिगपा—सं० (कि०) अंडकोश।
लिङ—सं० (कि०) दिल।
लिङ—अ० (कि०) तुरंत।
लिङ—सं० (कि०) द्वीप।
लिङचे—सं० (कि०) छोटी ओढ़नी।
लिङजेमाह—अ० क्रि० (कि०) एकदम जाना।
लिङडोअ—सं० (कि०) मोतिया बिंद।
लिङदोत—कि० (कि०) अस्थिर व्यक्ति।
लिङलिङ—वि० (कि०) जुड़ा हुआ।
लिचङ—सं० (कि०) आंख की मैल।
लिज़म—सं० (कि०) ग्लेशियर का पुल।
लितमाह—अ० क्रि० (कि०) ठंडा होना।
लितुह—अ० क्रि० (कि०) ठंडा होना।
लिनाजुङ—सं० (कि०) छोटी बांसुरी।
लिप—वि० (कि०) चालाक।
लिप—वि० (कि०) एक 'पौधा' अनाज। बराबर।
लिपट्यामिक—स० क्रि० (कि०) लिपटाना।
लिपरू—वि० (कि०) मुंहफट।
लिप्यामिक—स० क्रि० (कि०) लीपना।
लिप्याशिद—वि० (कि०) लीप हुआ।
लिम—सं० (कि०) शंकु प्रजाति का पेड़। चीड़। Pinuswallichia.
लिमलिम—वि० (कि०) बराबर।
लिम्साह—स० क्रि० (कि०) सिंचित करना।
लियजलको—स० क्रि० (कि०) Coriaria nepalensis.
लिलान—सं० (कि०) बर्फीली वायु।
लिलामलामाह—अ० क्रि० (कि०) कुर्की होना।
लिलामवङमाह—अ० क्रि० (कि०) नीलाम होना।
लिस—सं० (कि०) ठंड।
लिसती—सं० (कि०) शीतल जल।
लिस्मिक—अ० क्रि० (कि०) शीतल होना।
लिसुर—सं० (कि०) ग्लेशियर।
लींगू—सं० (कि०) इजारबंद डालने का स्थान, नेफा।
ली—सं० (ला०) अष्टधातु का बना थालीनुमा वाद्ययंत्र जिसे एक छोटी डंडी से बजाते हैं।
ली—सं० (कि०) कैथ। Pyrus pashia.
लीउक—सं० (कि०) मूली।
लीखङ—सं० (कि०) ताना, व्यंग्य।
लीच—सं० (कि०) अंडा।
लीथेल—सं० (कि०) कांसे की थाली।
लीपशेंचूकयें—स० क्रि० (कि०) विश्वास दिलाना।
लीपावेंचे—स० क्रि० (कि०) हस्तक्षेप करना।

लीप्चमिक— अ० क्रि० (कि०) खिसकना।
लीप्मिक— अ० क्रि० (कि०) खिसकना।
लीप्या— सं० (कि०) पर्वतीय पक्ष।
लीमपेच— सं० (कि०) गौरैया की तरह का पक्षी।
लीमलाशोरशे— अ० क्रि० (कि०) पीछे भागना।
लीमाहब्रेऊ— अ० क्रि० (कि०) हिचकिचाना।
लीमिक— अ० क्रि० (कि०) अच्छा लगना।
लीमेनचेअ— अ० (कि०) यथासंभव।
लीरप— सं० (कि०) रजाई।
लुंगमिक— अ० क्रि० (कि०) अंकुरित होना।
लुंपा— सं० (ला०) नाला।
लुंफल— अ० क्रि० (कि०) जलना।
लुंमा— सं० (कि०) पेट।
लु— सं० (कि०) नाग गीत।
लुअज़ी— सं० (ला०) भेड़ चराने वाला।
लुऊ— वि० (कि०) खुश।
लुक— सं० (कि०) भेड़।
लुकचूड़ा— सं० (कि०) भेड़ का बच्चा।
लुकचें— सं० (कि०) बछड़ा।
लुकाइबा— स० क्रि० (ला०) हिलाना।
लुकिबा— अ० क्रि० (ला०) घूमना।
लुकुलुकुह— वि० (कि०) नर्म।
लुकैन्निक— अ० क्रि० (कि०) छिप जाना, भाग जाना।
लुखलु— वि० (कि०) बहुत, अत्यधिक।
लुखसो— सं० (कि०) रीति।
लुग— सं० (कि०) दे० लुक।
लुग— सं० (कि०) जांघ।
लुगज़ी— सं० (ला०) गड़रिया।
लुगपा— सं० (कि०) नाला।
लुगपो— सं० (कि०) वायु।
लुगसोल— सं० (कि०) रीति-रिवाज़।
लुगु— सं० (ला०) भेड़ का बच्चा।
लुङ— सं० (कि०) पतझड़।
लुङ— सं० (कि०) उपदेश।
लुचिई— सं० (कि०) चपाती, पूरी।
लुजुंग— सं० (कि०) छोटा गाना।
लुटई— वि० (कि०) लुटेरा।
लुटयामिक— स० क्रि० (कि०) लूटना।
लुटयाशिद— वि० (कि०) लुटा हुआ।
लुटामाह— स० क्रि० (कि०) लूटना।
लुटुआ— वि० (कि०) लुटेरा।
लुड़ला— सं० (ला०) कीड़ा।
लुत— सं० (कि०) पुतला।
लुतकङ— सं० (कि०) गलस्तन, बकरी के गले में लटके दो मांस पिंड।
लुतछोलमाह— स० क्रि० (कि०) खरी-खरी सुनाना।
लुपखोर— सं० (कि०) चांदी उबालने का बर्तन।
लुपबङ— वि० (कि०) अंजलिभर।
लुपमाह— स० क्रि० (कि०) उखाड़ना।
लुपमाह— अ० क्रि० (कि०) छूटना, खिसकना।
लुप्पा— सं० (ला०) खांसी।
लुबयामिक— स० क्रि० (कि०) बंद करना।
लुम— सं० (कि०) पेट, जांघ।
लुम— सं० (कि०) खुराक।
लुममिक— अ० क्रि० (कि०) फसल का तैयार होना। लाहण का तैयार होना।
लुमो— सं० (कि०) सांप।
लुमोती— सं० (कि०) चश्मे का पानी।
लुम्माह— स० क्रि० (कि०) गर्म पानी में डालना।
लुयैनमिक— अ० क्रि० (कि०) गलना।
लुयैशित— वि० (कि०) गला हुआ।
लुला— सं० (कि०) गीत।
लुस— सं० (कि०) काम।
लुसतोर— सं० (कि०) नागपूजा।
लूंग— सं० (कि०) उपदेश।
लूगदा— सं० (कि०) वायु।
लूचा— सं० (कि०) आलूचा।
लूचा— वि० (कि०) कपटी, स्वार्थी।
लूची— सं० (कि०) आलूबुखारा।
लूत— सं० (कि०) ग्रामीण खेल।
लूनखेमाह— स० क्रि० (कि०) उत्तर देना।
लूमो— सं० (कि०) नाग।
लूसलोश्यमाह— स० क्रि० (कि०) मूल्यांकन करना।
ले— सं० (कि०) जिह्वा। लोग। कर्म।
लेअ— सं० (ला०) जिह्वा।
लेअमाह— स० क्रि० (कि०) बदलना।
लेइबा— स० क्रि० (ला०) खरीदना, लेना।
लेई— वि० (कि०) पीला।
लेउर— सं० (ला०) देवदार।
लेऊ— सं० (ला०) देवदार।
लेएमाह— स० क्रि० (कि०) बदलना।
लेकपि— सं० (ला०) बदलाव।
लेकपिकरिबा— स० क्रि० (ला०) बदलना।
लेकेलेकह— वि० (कि०) लचीला।
लेको— सं० (कि०) तालु।
लेकोल— सं० (कि०) मुंह के मध्य गले में लटकी अलिजिह्वा।
लेखमाह— स० क्रि० (कि०) बदलना।
लेखलेर— सं० (कि०) गाढ़ा द्रव।
लेखा— सं० (कि०) विचार। पृष्ठभूमि।
लेखुङख— सं० (कि०) पृष्ठभूमि।
लेगशिङ— सं० (कि०) पाठशाला।
लेगुलगुल— वि० (कि०) धुंधला पीला।
लेङलेङयातमाह— अ० क्रि० (कि०) तैरना।
लेछिथ— सं० (कि०) पीली मिट्टी।
लेजमजम— वि० (कि०) पीलापन।
लेत— सं० (कि०) वस्त्र।

लेतरे— वि० (कि०) लेई की तरह पतला।
लेतेलेतेह— वि० (कि०) दे० लेतरे।
लेन— सं० (कि०) कार्य।
लेन— सं० (कि०) उत्तर।
लेनपा— स० क्रि० (कि०) लेना।
लेनपा— वि० (कि०) अनजान, मूर्ख।
लेनमरज्ञाई— वि० (कि०) कामचोर।
लेनलमाहछलाअ— सं० (कि०) औज़ार।
लेनाअ— सं० (कि०) पशम।
लेनुमतोई— वि० (कि०) बेकार।
लेपकड़— सं० (कि०) आंच।
लेपनिड— सं० (कि०) पलस्तर का गारा।
लेपरामाह— स० क्रि० (कि०) लेप लगाना।
लेपश्यिड— सं० (कि०) पोथी के बाहर लगे लकड़ी के फट्टे।
लेपुरु— वि० (कि०) गप्प मारने वाला।
लेफलेफ— सं० (कि०) चौड़ा सा शस्त्र।
लेफुत— वि० (कि०) होशियार।
लेबा— सं० (कि०) बड़ी दांती।
लेम— अ० (कि०) केवल।
लेमनऊं— अ० (कि०) एकदम।
लेममिक— स० क्रि० (कि०) चाटना।
लेमशित— वि० (कि०) चाटा हुआ।
लेमलेन— सं० (कि०) चोकर।
लेमा— सं० (कि०) भाग्य।
लेमाह— स० क्रि० (कि०) बदलना।
लेमुहपिन्माह— स० क्रि० (कि०) चाट लेना।
लेम्ना— स० (कि०) बकरा काटने की कटार।
लेम्माह— स० क्रि० (कि०) चाटना।
लेर-लेर— वि० (कि०) फैला हुआ।
लेलामी— वि० (कि०) सुगम, आसान।
लेलोसा— वि० (कि०) आलसी।
लेह— सं० (कि०) बदला।
लेहू— सं० (कि०) पाठ।
लैकचिस— वि० (कि०) जला हुआ।
लैकमिक— स० क्रि० (कि०) जलाना।
लैक-लैक— वि० (कि०) फैला हुआ।
लैकलैकचमिक— अ० क्रि० (कि०) जलना।
लैखा-जोखा— सं० (कि०) हिसाब-किताब।
लैन— सं० (कि०) पंक्ति।
लैपनयामिक— स० क्रि० (कि०) लीपना।
लैपनयाशित— वि० (कि०) लीपा हुआ।
लैम— अ० (कि०) एकदम।
लैमना— वि० (कि०) मामूली।
लों— सं० (कि०) आयु।
लोंअ— सं० (कि०) मास।
लोंतगचें— स० क्रि० (कि०) अर्पित करना।
लोंप— सं० (कि०) लेप।
लोंफुज— अ० क्रि० (कि०) लालच में पड़ना।
लो:ठि— सं० (कि०) कड़ाही।
लो— सं० (कि०) वर्ष, आयु।
लोअंथमाह— अ० क्रि० (कि०) ऊपर चढ़ना।
लोअफोख— सं० (कि०) उत्तर दिशा।
लोआ— सं० (कि०) फेफड़ा।
लोआऊशोत— सं० (कि०) फेफड़े की बीमारी।
लोइबा— स० क्रि० (ला०) चाहना, खोजना।
लोई— वि० (कि०) सुगम।
लोई— सं० (ला०) डंडा।
लोई— सं० (कि०) लवी का मेला।
लोईलामाह— स० क्रि० (कि०) सहज करना।
लोईवडमाह— अ० क्रि० (कि०) सहज होना।
लोईसोपा— सं० (कि०) डाका।
लोईह— वि० (कि०) सुगम।
लोक— वि० (कि०) वापस।
लोकचीयोगचे— स० क्रि० (कि०) दौरा करना।
लोकपो— सं० (कि०) बोझ ढोने वाले बकरे, मेढ़े।
लोकलमाह— स० क्रि० (कि०) जिम्मेवारी देना।
लोकसंफटामाह— स० क्रि० (कि०) सोच-विचार करना।
लोकसाक— सं० (ला०) दया।
लोकोह-लोकोह— वि० (कि०) खुला-खुला वस्त्र।
लोखतु— वि० (कि०) ऊपर का।
लोखश्यु— अ० (कि०) ऊपर-नीचे।
लोखतुशड— सं० (कि०) पहाड़ी घोड़ा।
लोगते— अ० (ला०) दोबारा।
लोगशु— सं० (कि०) बैटरी।
लोड— सं० (कि०) फुरसत।
लोडखमाह— अ० क्रि० (कि०) जलना।
लोडमपोरतमाह— अ० क्रि० (कि०) फुरसत न मिलना।
लोडमो— सं० (कि०) दिन का भोजन।
लोडमोश्या— सं० (कि०) एक खाद्यपदार्थ।
लोचावा— सं० (कि०) गुरुजन।
लोछगोरु— सं० (ला०) पशुधन।
लोजेई— वि० (कि०) पुराना।
लोट— सं० (कि०) नोट।
लोटड— सं० (कि०) शव।
लोटडख— सं० (कि०) मिट्टी का पात्र।
लोटडरोतमाह— स० क्रि० (कि०) दाह संस्कार करना।
लोठी— सं० (कि०) कड़ाही।
लोड़बा— स० क्रि० (ला०) ढूंढना।
लोड़ाई— सं० (कि०) लड़ाई।
लोड़ाईटाश्यमाह— अ० क्रि० (कि०) लड़ाई करना।
लोड़ीअंमा— सं० (कि०) चाची।
लोड़ोबांबा— सं० (कि०) चाचा।
लोततमाह— स० क्रि० (कि०) विश्वास करना।
लोनानड— सं० (कि०) चूल्हा-चौका।
लोनो— सं० (कि०) तिब्बती पंचाङ्ग।

लोतोक—वि० (कि०) मोटा।
लोदरंग—सं० (कि०) लोहे का तीन टांगों वाल चूल्हा।
लोदेमतमाह—स० क्रि० (कि०) विश्वास दिलाना।
लोदेमाह—अ० क्रि० (कि०) विश्वासपात्र होना।
लोनत—सं० (कि०) क्षय रोग।
लोनता—सं० (कि०) उल्लंघन।
लोनपो—सं० (कि०) मंत्री।
लोनां—सं० (कि०) ढंग।
लोना—सं० (कि०) चाल।
लोन्मा—वि० (ला०) गीला।
लोपीक—सं० (कि०) एक वर्ष।
लोपोन—सं० (कि०) बौद्धदेवता।
लोपोलोपोह—वि० (कि०) फूला हुआ।
लोफोख—सं० (कि०) दक्षिण दिशा।
लोबजोड़—सं० (कि०) शिक्षा।
लोबड़ा—सं० (कि०) पाठशाला।
लोबादोक—वि० (कि०) गुलाबी रंग।
लोबीई—स० क्रि० (कि०) पसंद करनो।
लोमशित—अ० (कि०) आगे।
लोमा—सं० (कि०) चेला।
लोमाह—अ० क्रि० (कि०) पुराना होना।
लोमाह—स० क्रि० (कि०) बताना।
लोमिक—स० क्रि० (कि०) सहयोग देना।
लोमोछोमोह—सं० (कि०) जल्दबाजी।
लोम्फुह—सं० (कि०) लालच।
लोरख्याश्माह—स० क्रि० (कि०) व्यवहार करना।
लोरख्याश्यु—सं० (कि०) मुकावला।
लोरता—सं० (कि०) विश्वास।
लोरिनो—सं० (कि०) टोह, खोज।
लोलटी—सं० (कि०) Carpinus viminea.
लोला—सं० (ला०) सांप।
लोलू—सं० (ला०) कीट।
लोलोश्यमाह—स० क्रि० (कि०) सहयोग करना।
लोशमाह—स० क्रि० (कि०) वार्तालाप करना।
लोशित—वि० (कि०) सहयोजित।
लोस—सं० (कि०) खाट।
लोसकस—सं० (कि०) एक पर्वतीय पुष्प।
लोसकुम—सं० (कि०) सिरहाना।
लोसनङ—सं० (कि०) लहसुन।
लोसर—सं० (कि०) नया वर्ष।
लोसेम—सं० (कि०) दिल।
लोह—सं० (कि०) दक्षिण।
लौं—सं० (ला०) नमक।
लौंआं—वि० (ला०) नमकीन।
लौकशमिक—अ० क्रि० (कि०) निवृत्त होना।
लौकशिश—अ० वि० (कि०) निवृत्त हुआ।
लौगमिक—स० क्रि० (कि०) हटाना।
लौगिन—सं० (कि०) गृहिणी, पत्नी।
लौचमी—सं० (कि०) लक्ष्मी।
लौछन—सं० (कि०) लक्षण।
लौटरी—सं० (कि०) लोटा।
लौतकङ—वि० (कि०) पड़ी हुई गंदी वस्तु।
लौदानङ—सं० (कि०) लोहे का चूल्हा।
लौदानङ—सं० (कि०) लोहे का तीन टांगों वाला चूल्हा।
लौननिक—अ० क्रि० (कि०) बोलना।
लौराई—सं० (कि०) लड़ाई।
लौरयाशमिक—अ० क्रि० (कि०) लड़ाई करना।
लौसमिक—अ० क्रि० (कि०) सड़ना, बुरी दशा होना।
ल्यईजस—सं० (कि०) तरल पदार्थ।
ल्यामिक—अ० क्रि० (कि०) गलना।
ल्याशिवद्—वि० (कि०) गला हुआ।
ल्वाशमिक—अ० क्रि० (कि०) छंटना।
ल्वाश्यमाह—अ० क्रि० (कि०) छूटना।
ल्वाशिस—वि० (कि०) छंटा हुआ।
ल्हामिकरिबा—स० क्रि० (ला०) भूनना।
ल्हेजा—सं० (ला०) तला।

## व

वगनिऊंहन्माह—स० क्रि० (कि०) रहस्य खोलना।
वङथिल—सं० (कि०) पैर का तला।
वतक्यलकसा—सं० (कि०) ठिठोलियां।
वतमाह—अ० क्रि० (कि०) हंसना।
वतुल—सं० (कि०) पशु रोग।
वरी—सं० (ला०) वर्ष।
वा.चखाक्या—वि० (कि०) हंसमुख।
वा.न—सं० (कि०) भाप।
वा.नदोनमिक—अ० क्रि० (कि०) भाप निकलना।
वा.ननिक—अ० क्रि० (कि०) हंसना।
वा.र—सं० (कि०) ऊंचाई पर पाया जाने वाला भेड़ प्रजाति का पशु।
वा.लमिक—स० क्रि० (कि०) ऊन काटना।
वा.लशमिक—स० क्रि० (कि०) खुजलाना।
वा.श—वि० (कि०) जूठा।
वा.शक्यर—सं० (कि०) जूठन।
वा.स—सं० (कि०) शहद।
वा.सकोटङ—सं० (कि०) मधुमक्खियों का छत्ता।
वा.सयाङ—सं० (कि०) मधुमक्खी।
वा—सं० (कि०) घोंसला। रीछ की मांद।
वाऊदु-पाई—सं० (ला०) हवा-पानी।
वाकैरमिक—स० क्रि० (कि०) घोंसला बनाना।
वाचे—सं० (ला०) लोमड़ी।
वाख्यामिक—स० क्रि० (कि०) जंगली जानवरों को भगाने के लिए शोर करना।
वाङमिक—स० क्रि० (कि०) झाड़ना।

**वातखानङ**—वि० (कि०) अधिक हंसने वाली, चंचल।
**वाथ**—सं० (कि०) ऊन का गुच्छा।
**वानिङ**—सं० (कि०) निचली या ऊपरी मंज़िल को जाने के लिए फर्श में रखा मार्ग।
**वाबोत**—सं० (कि०) ताज़ी छाछ।
**वामङ**—वि० (कि०) गलत, बुरा, दुष्ट।
**वामङदामिक**—स० क्रि० (कि०) गलत करना।
**वामथाम**—वि० (कि०) गलत कार्य।
**वार**—सं० (कि०) जंगली भेड़।
**वारक**—अ० (कि०) दूर।
**वारक्योच**—अ० (कि०) दूर से।
**वारि**—सं० (कि०) मुर्गी का दड़बा।
**वाल**—वि० (कि०) बहुत।
**वालस्या**—वि० (कि०) बहुत अच्छा।
**वाली**—वि० (कि०) बहुत सारे।
**वाशपा**—सं० (कि०) हवा के साथ उड़ी बर्फ।
**वाशलान्निक**—स० क्रि० (कि०) जूठा करना।
**वास्की**—वि० (ला०) मीठा।
**वाहतर**—सं० (ला०) वस्त्र।
**वाहथड़ी**—सं० (ला०) शूल, पेट दर्द।
**विगुन**—वि० (ला०) अधिक।
**विछां**—सं० (ला०) बिस्तर।
**विजीमाता**—सं० (ला०) विधिमाता, विघना।
**विमछेअ**—सं० (कि०) आंख का मैल।
**विश्यारतुजेमाह**—अ० क्रि० (कि०) आश्चर्य चकित होना।
**वी**—सं० (कि०) Olea cuspidata.
**वीहाऊला**—सं० (ला०) मार्गशीर्ष मास।
**वुफारी**—सं० (ला०) कलेवा।
**वे**—सं० (कि०) पहाड़।
**वेन**—सं० (कि०) सूर्य।
**वेहउंई**—सं० (ला०) खेत का बाहरी किनारा।
**वै**—सं० (कि०) गिद्ध।
**वैच**—वि० (कि०) स्वर्गीय।
**वैदा**—सं० (कि०) वायदा।
**वैम**—सं० (कि०) वहम।
**वैमलानमिक**—स० क्रि० (कि०) वहम करना, शक करना।
**वैमी**—वि० (कि०) वहमी।
**वैली**—सं० (ला०) ढोल बजाने की डंडी।
**वोनो**—स० क्रि० (कि०) ढोना।

## श

**शंगलिङ**—सं० (कि०) ज़ंजीर।
**शंतख**—सं० (कि०) घाघरा।
**शंदरङ**—सं० (कि०) हल की लकड़ी।
**श**—सं० (कि०) फल।
**शई**—वि० (कि०) खाली।
**शउरङ**—सं० (कि०) बाघ।
**शउरा**—सं० (ला०) श्वशुर।
**शऊनङ**—सं० (कि०) दे० शौनङ।
**शऊलमाह**—स० क्रि० (कि०) पीछा करना।
**शओंसा**—वि० (कि०) निर्भय।
**शकंसां**—सं० (कि०) शुभ दिन।
**शक**—सं० (कि०) चौलाई; भोजपत्र।
**शकपा**—सं० (कि०) चकोर।
**शकरङ**—सं० (कि०) मिस्री।
**शकरो**—सं० (कि०) डोरी।
**शकला**—सं० (कि०) कंकड़-पत्थर।
**शकलामाह**—स० क्रि० (कि०) साफ करना।
**शकशिई**—सं० (कि०) चारा।
**शकैत**—सं० (कि०) शिकायत।
**शक्कुर**—सं० (ला०) शुक्रवार।
**शक्पो**—सं० (कि०) साला।
**शखपटलङ**—सं० (कि०) भोजपत्र।
**शखवाङ**—सं० (कि०) पत्थर का टीला।
**शगमा**—सं० (कि०) बजरी, ओला।
**शङ**—सं० (कि०) घोड़ा।
**शङकलङ**—सं० (कि०) ज़ंजीर।
**शङकुङ**—सं० (कि०) गुलेल।
**शङकोङ**—सं० (कि०) जंगली कुत्ता।
**शङखल**—सं० (कि०) कंघा।
**शङनत**—सं० (कि०) पथरी, एक रोग जिसमें वृक्कों आदि में पत्थर के छोटे टुकड़े जैसे पिंड बन जाते हैं।
**शङफोवङमाह**—अ० क्रि० (कि०) जागरूक होना।
**शङमिक**—अ० क्रि० (कि०) जीवित रहना।
**शङसापङ**—सं० (कि०) अश्वारोही।
**शङरङ**—सं० (कि०) घमंड।
**शङरयाशमिक**—अ० क्रि० (कि०) घमंड करना।
**शङाशङा**—वि० (कि०) उजाड़।
**शङी**—वि० (कि०) जीवित।
**शङुगा**—सं० (कि०) घोड़े की काठी।
**शङो**—सं० (कि०) गला।
**शचतमाह**—अ० क्रि० (कि०) चिपकना; पीछा करना।
**शटङ**—सं० (कि०) श्लेष्मा।
**शटीनूम**—सं० (कि०) एक प्रकार की काली टोपी।
**शडने**—सं० (कि०) श्वास नलिका।
**शणसा**—सं० (ला०) संड़सा।
**शतचा**—स० क्रि० (कि०) शिकायत करना।
**शतमयोमतोई**—अ० (कि०) अकस्मात्।
**शतमाह**—स० क्रि० (कि०) बताना।
**शथाअ**—अ० (कि०) अवश्य।
**शन**—सं० (कि०) एक वृक्ष विशेष जिसकी लंबी और पतली शाखाएं नीचे को लटकी रहती हैं।
**शनजर**—सं० (ला०) शनिवार।

**शनशोण्गो**— वि० (कि०) सुनसान।
**शनशोरस**— सं० (कि०) शनिवार।
**शनेटङ**— सं० (कि०) सूखी लकड़ी; वृक्ष में पड़ी गांठ।
**शन्मा**— सं० (कि०) मटर।
**शपतङ**— स० क्रि० (कि०) चाहना।
**शपमाह**— अ० क्रि० (कि०) पसीना आना।
**शबलिङ**— सं० (कि०) छिद्र।
**शबीक**— वि० (कि०) लाल।
**शममतमाह**— स० क्रि० (कि०) थोड़ा सूखने देना।
**शममिक**— अ० क्रि० (कि०) सूखना।
**शमशुम**— सं० (कि०) सायंकाल।
**शमाशमाह**— अ० क्रि० (कि०) जनहीन होना, वीरान होना।
**शमाशिमें**— स० क्रि० (कि०) चिखाना।
**शमाह-शमाह**— सं० (कि०) आतंक।
**शमो**— सं० (कि०) टोपी।
**शम्माह**— अ० क्रि० (कि०) सूखना।
**शयकर**— सं० (कि०) शलजम।
**शयलमा**— सं० (कि०) रेतीला पहाड़।
**शयामाह**— स० क्रि० (कि०) निहारना, गौर से देखना।
**शर**— सं० (कि०) पूर्व दिशा।
**शरणा**— सं० (ला०) छत।
**शरद**— सं० (कि०) गुण।
**शरा**— वि० (कि०) अंधा।
**शरिनमो**— अ० क्रि० (कि०) झड़ना।
**शरेनिङ**— सं० (कि०) शिशिर ॠतु, पतझड़।
**शल**— सं० (ला०) अतिसार।
**शलङ**— सं० (कि०) तह।
**शलमाह**— अ० क्रि० (कि०) अतिसार लगना।
**शलशाला**— सं० (कि०) फुंसी।
**शलशे**— स० क्रि० (कि०) पालना।
**शवा**— सं० (कि०) मस्तक।
**शस्ता**— वि० (ला०) अल्पमूल्य का, सस्ता।
**शहन्माह**— स० क्रि० (कि०) पत्थर निकालना।
**शांच**— सं० (कि०) नख।
**शा.ङ**— सं० (कि०) गला।
**शा.द**— सं० (कि०) फल तोड़ने के लिए प्रयुक्त लंबा डंडा।
**शा**— सं० (कि०) बाल। मांस।
**शा**— सं० (ला०) ध्वनि; श्वास।
**शाअफो**— सं० (कि०) एक जंगली पशु।
**शाअर**— सं० (कि०) खीरे-कद्दू की लता को सहारा देने हेतु बनाया गया मचान, टेक।
**शाई**— सं० (ला०) सरसों।
**शाई**— वि० (कि०) खाली।
**शाउरी**— सं० (ला०) ससुराल।
**शाऊं**— सं० (ला०) हाथ भर की दूरी।
**शाक.र**— सं० (कि०) शलजम।
**शाकपो**— सं० (कि०) बहनोई, साला।
**शाकरङ**— सं० (कि०) पक्षियों के अंडे।
**शाकलयामिक**— स० क्रि० (कि०) बर्तन को छलका कर साफ करना।
**शाकुर**— सं० (कि०) बछिया।
**शाग**— सं० (ला०) सब्जी।
**शागर**— सं० (कि०) शलजम।
**शागुण**— सं० (ला०) शकुन।
**शाघी**— वि० (कि०) खाली।
**शाङ**— सं० (कि०) सरसों।
**शाङन-शाङन-थङ**— वि० (कि०) कमज़ोर।
**शाङलिङ**— सं० (कि०) ज़ंजीर।
**शाङो**— सं० (कि०) गला।
**शाङोचुममिक**— स० क्रि० (कि०) गला पकड़ना।
**शाचिबा**— अ० क्रि० (ला०) चिपकना।
**शाचेन्निक**— अ० क्रि० (कि०) चिपकना।
**शाचेशित**— वि० (कि०) चिपका हुआ।
**शाथ.र**— सं० (कि०) चीता।
**शानङ**— सं० (कि०) ताला।
**शानसमिक**— अ० क्रि० (कि०) पानी का जमना।
**शानिङ**— सं० (कि०) अंग।
**शानो**— स० क्रि० (कि०) देखना।
**शापङ**— सं० (कि०) चट्टानों के बीच की दरार।
**शामरे/रो**— वि० (कि०) चितकबरा(री)।
**शामलयामिक**— स० क्रि० (कि०) पुचकारना।
**शायङ**— सं० (कि०) देवता के 'गूर' द्वारा दिए गए कंगनी के दाने।
**शारङ**— सं० (कि०) आंगनबाड़ी।
**शारङकारङ**— सं० (कि०) त्योहार।
**शारानो**— स० क्रि० (कि०) झाड़ना, पोंछना।
**शारामाह**— स० क्रि० (कि०) निंदा करना।
**शारीपेंच**— सं० (कि०) मैना।
**शारे**— वि० (कि०) सुंदर।
**शारेयामिक**— स० क्रि० (कि०) आदर करना।
**शालङ**— सं० (कि०) सलाई, चांदी की पिन।
**शालङ**— सं० (कि०) भेड़-बकरियों का समूह, रेवड़।
**शाला**— सं० (ला०) भेड़-बकरियों का समूह।
**शालासा**— वि० (कि०) भाग्यवान्।
**शालिच**— सं० (कि०) लोमड़ी।
**शावी**— वि० (कि०) लंगड़ा।
**शाशकाल**— वि० (कि०) नंगा (पैर)।
**शाशत्राङ**— सं० (कि०) पहेली।
**शाशु**— सं० (ला०) सास।
**शाह**— सं० (ला०) आवाज़।
**शाहोम**— सं० (कि०) लाल भालू।
**शिंगरसमी**— वि० (कि०) दुष्ट।
**शिंडे**— सं० (कि०) मृतात्मा।
**शिआ**— सं० (ला०) ठंड।
**शिइमाह**— स० क्रि० (कि०) मिटाना।
**शिई**— सं० (कि०) जूं।

**शिउण**— सं० (कि०) लकड़ी।
**शिउल**— सं० (ला०) बड़ा 'किरडा' जिसमें घास, अन्न आदि डालकर लाते हैं।
**शिकखेमाह**— स० क्रि० (कि०) उकसाना।
**शिकचें**— स० क्रि० (कि०) संबंध तोड़ना।
**शिकतकुतसीस**— स० क्रि० (कि०) शिकायत करना।
**शिकपा**— स० क्रि० (कि०) बिगाड़ना।
**शिका**— वि० (ला०) ठंडा।
**शिकु**— स० क्रि० (कि०) बचाना।
**शिकुर्बा**— स० क्रि० (ला०) सीखना।
**शिख**— सं० (कि०) शह, मदद, हिमायत, ढील।
**शिख्र**— सं० (ला०) बाल।
**शिग**— सं० (कि०) तीर।
**शिगिरगिर**— सं० (कि०) चमकता हुआ अंगारा।
**शिङ**— सं० (कि०) ईंधन।
**शिङका**— सं० (कि०) सख्त अखरोट।
**शिङचङमो**— सं० (कि०) तलाक।
**शिङटंगमिक**— स० क्रि० (कि०) तलाक देना।
**शिङटंगशमिक**— स० क्रि० (कि०) तलाक लेना।
**शिङठोङ**— सं० (कि०) कठफोड़ा।
**शिङपर**— सं० (कि०) लकड़ी पर खुदी कलाकृति।
**शिङफो**— वि० (कि०) जीवित।
**शिङमाह**— अ० क्रि० (कि०) जीना।
**शिङले**— वि० (कि०) झूठा।
**शिङह**— सं० (कि०) बहिन।
**शिङार**— सं० (कि०) गर्जन।
**शिङिह**— वि० (कि०) जीवित।
**शिङीलमाह**— स० क्रि० (कि०) जीवित करना।
**शिटङ**— सं० (कि०) सींग।
**शिटङखुल्थ**— वि० (कि०) सींग वाला।
**शिडे**— सं० (कि०) मृतात्मा।
**शिढ़**— सं० (ला०) एक ही लक्कड़ की बनाई गई सीढ़ी।
**शिणजोत**— सं० (कि०) क्रियाकर्म।
**शितिरिपखेमाह**— अ० क्रि० (कि०) भाग जाना।
**शिन**— सं० (कि०) कलेजा।
**शिप**— सं० (कि०) क्षण।
**शिपुनऊं**— अ० (कि०) तुरंत।
**शिम**— सं० (कि०) तीर।
**शिमटामाह**— स० क्रि० (कि०) तीर चलाना।
**शिममूमाह**— अ० क्रि० (कि०) तीर लगना।
**शिमिन**— सं० (कि०) फली।
**शिमुहदोङमो**— सं० (कि०) सरकस।
**शियङरसा**— वि० (कि०) अहंकारी।
**शियमल**— सं० (कि०) वसीयत।
**शियरह**— अ० (कि०) बीता हुआ कल।
**शियलोगया**— वि० (कि०) अर्द्धमृत।
**शिए**— सं० (ला०) रेत।
**शिरण**— सं० (ला०) तकिया।
**शिरनाह**— वि० (कि०) नीरस।
**शिरनाहलमाह**— अ० क्रि० (कि०) उकता जाना।
**शिरिपमिक**— अ० क्रि० (कि०) फसल का जल जाना।
**शिल**— सं० (कि०) अल्पाहार, कलेवा।
**शिलमाह**— स० क्रि० (कि०) जबरन देना।
**शिलिङ-शिलिङ**— सं० (कि०) घोड़े की घंटी की ध्वनि।
**शिलु**— सं० (कि०) आलू।
**शिवा**— सं० (कि०) शांति।
**शिशमाल**— वि० (कि०) बहुत।
**शिशमालगोरमाह**— स० क्रि० (कि०) बहुत देर करना।
**शिश्यमाह**— स० क्रि० (कि०) घृणा करना।
**शिश्यमाहङिमां**— सं० (कि०) दुर्गंध।
**शिहते**— सं० (ला०) शीतकाल।
**शींगजेम**— सं० (कि०) लकड़ी की पेटी।
**शींच**— सं० (कि०) पंजा।
**शी**— सं० (कि०) गुदा।
**शीईमाह**— स० क्रि० (कि०) समेटना।
**शीङरतीमाह**— स० क्रि० (कि०) तीखा स्वर लगाना।
**शीचेह**— अ० क्रि० (कि०) मरना।
**शीडुत**— सं० (कि०) बाड़।
**शीन**— सं० (कि०) बादल।
**शीनातुर**— सं० (ला०) तकिया।
**शीफुल**— अ० (कि०) नरसों।
**शीमिक**— अ० क्रि० (कि०) मरना।
**शीमी**— सं० (कि०) मुर्दा।
**शीमीलेत**— सं० (कि०) कफ़न।
**शीमो**— सं० (कि०) मृत्यु।
**शीरङडोलयामिक**— स० क्रि० (कि०) देवता का नाचते हुए सिर को झुकाना।
**शीरशे**— अ० क्रि० (कि०) बच निकलना।
**शीरा**— सं० (ला०) बाल।
**शीशे**— वि० (कि०) मृत।
**शुंठ**— सं० (ला०) ओंठ।
**शुंठ**— सं० (ला०) चोंच।
**शुई**— अ० (ला०) आने वाला कल।
**शुई**— सं० (कि०) लंबाई।
**शुई**— सं० (कि०, ला०) रक्त।
**शुईकमचित**— सं० (कि०) लंबी बात।
**शुईगुल**— सं० (कि०) चोरी।
**शुईचम**— वि० (कि०) भूरी ऊन।
**शुईबा**— स० क्रि० (ला०) सुनना।
**शुक**— सं० (कि०) बल।
**शुकचें**— अ० क्रि० (कि०) दौड़ना। स० क्रि० प्रतिज्ञा करना।
**शुकङ**— वि० (ला०) सफेद, श्वेत।
**शुकपा**— सं० (कि०) देवदार।
**शुकलमाह**— स० क्रि० (कि०) कुरेद कर सफाई करना।
**शुकलयामिक**— स० क्रि० (कि०) कुल्ला करना।
**शुकलामाह**— स० क्रि० (कि०) कुरेदना।

**शुकस**— वि० (कि०) शुष्क, सूखा हुआ।
**शुकाइबा**— स० क्रि० (ला०) सुखाना।
**शुकारङ**— सं० (कि०) शुक्रवार।
**शुकुलथ**— सं० (कि०) एक जंगली दवा।
**शुकुलु**— सं० (कि०) छोटे-छोटे दाने।
**शुकुलुप**— वि० (कि०) बहुत सारे।
**शुकैस**— वि० (कि०) सूखा।
**शुक्ली**— सं० (कि०) कूल्हा।
**शुख्र**— सं० (कि०) सफेद जूं।
**शुख्र**— सं० (कि०) साहस।
**शुख्रचन**— वि० (कि०) साहसी।
**शुखमाह**— अ० क्रि० (कि०) उत्तेजित होना।
**शुख्रसला**— वि० (कि०) ऐसा व्यक्ति जिसके शरीर में जुएं हों।
**शुगसजेमाह**— अ० क्रि० (कि०) भूखे जाना।
**शुगू**— सं० (कि०) कागज़, नोट (रुपया)।
**शुङमतमाह**— स० क्रि० (कि०) प्रतीक्षा करवाना।
**शुङमा**— सं० (कि०) पहरेदार।
**शुङमाह**— स० क्रि० (कि०) इंतज़ार करना।
**शुङमिक**— स० क्रि० (कि०) समाप्त करना।
**शुङ्पोसमाह**— स० क्रि० (कि०) प्रतीक्षा करना।
**शुचा**— वि० (कि०) सच्चा, पवित्र।
**शुचु**— वि० (ला०) स्वच्छ।
**शुणबा**— स० क्रि० (कि०) सुनना।
**शुत**— सं० (कि०) झूठ।
**शुतपुतयाशमिक**— अ० क्रि० (कि०) धीरे से बात करना।
**शुति**— सं० (कि०) मूत्र।
**शुतुपशतप**— सं० (कि०) कानाफूसी।
**शुद**— सं० (कि०) ध्यान।
**शुनगिनों**— वि० (कि०) भुरभुरा।
**शुनयामिक**— स० क्रि० (कि०) ज़ोर से आवाज़ देकर सुनाना।
**शुना**— सं० (कि०) प्रेतनी।
**शुनाहमुलुख**— सं० (कि०) प्रेतलोक।
**शुप**— सं० (ला०) शूर्प, सूप।
**शुप**— सं० (कि०) म्यान। झाग।
**शुपङ**— सं० (कि०) शूर्प, सूप।
**शुपचाअ**— सं० (कि०) आस्तीन, म्यान।
**शुपचो**— सं० (कि०) उफान।
**शुपमुआ**— सं० (कि०) गहरी रात, अंधेरी रात।
**शुपा**— सं० (कि०) शाम।
**शुपेलङ**— सं० (कि०) सायंकाल।
**शुप्माह**— स० क्रि० (कि०) काटना।
**शुप्याच**— सं० (कि०) तितली।
**शुफ**— सं० (ला०) म्यान।
**शुबनीज**— वि० (कि०) चाह या रुचि रखने वाला।
**शुबमिक**— स० क्रि० (कि०) काटना।
**शुममाह**— स० क्रि० (कि०) गिनती करना।
**शुमरात**— सं० (कि०) शिवरात्रि।
**शुम**— वि० (कि०) तीन।
**शुमजुरा**— वि० (कि०, ला०) त्रिकोण।
**शुममाह**— स० क्रि० (कि०) बुलाना।
**शुमलाख**— सं० (कि०) रस्सा।
**शुमशुंफमाह**— स० क्रि० (कि०) याद दिलाना।
**शुमिक**— अ० क्रि० (कि०) जल्दी करना।
**शुमु**— वि० (ला०) तीन।
**शुम्माह**— स० क्रि० (कि०) गिनना।
**शुर**— वि० (कि०) तीव्र।
**शुर**— सं० (कि०) स्थानीय झाड़ी विशेष जो धूप के रूप में काम में आती है।
**शुरगङ**— सं० (कि०) दे० लटीर।
**शुरगुलिईटाश्यमाह**— अ० क्रि० (कि०) बिजली चमकना।
**शुरा**— वि० (कि०) लाल रंग का (बैल)।
**शुरामाह**— स० क्रि० (कि०) वसूली करना।
**शुरूमाह**— स० क्रि० (कि०) पूछना।
**शुरेयामिक**— स० क्रि० (कि०) घुमाना।
**शुल**— सं० (कि०) लक्षण।
**शुलनाह**— वि० (कि०) अज्ञात भय।
**शुलमाह**— स० क्रि० (कि०) घुसाना।
**शुलशुलमाह**— स० क्रि० (कि०) छड़ से हिलाना।
**शुलशुलयामिक**— अ० क्रि० (कि०) बेचैनी होना।
**शुलशुली**— सं० (कि०) न्योजी का छिलका।
**शुलसुलिई**— सं० (कि०) बांसुरी।
**शुलि**— सं० (कि०) कंठी।
**शुलिक**— सं० (कि०) लाल मनका।
**शुलिह**— वि० (कि०) कच्चा, बिना पका।
**शुलुकङ**— सं० (कि०) भयभीत मुद्रा।
**शुलेप**— सं० (कि०) पृष्ठ।
**शुल्क**— वि० (कि०) अधपका।
**शुशमाह**— स० क्रि० (कि०) मंत्रणा करना।
**शुशु**— अ० (कि०) जल्दी-जल्दी।
**शुशुसते**— सं० (कि०) नमस्कार।
**शुशुसीमी**— सं० (कि०) प्रश्नकर्ता।
**शुश्यमाह**— स० क्रि० (कि०) राय लेना।
**शुहङख**— सं० (कि०) पहरेदार।
**शुहङखतिमाह**— स० क्रि० (कि०) पहरा लगवाना।
**शू**— सं० (कि०) देवता।
**शू**— स० क्रि० (कि०) पिलाना।
**शूमाह**— स० क्रि० (कि०) पूछना।
**शूकोठी**— सं० (कि०) देव मंदिर।
**शूटपाङ**— सं० (कि०) धूप का पौधा विशेष।
**शूटिक**— सं० (कि०) पशु हांकने की छड़ी।
**शूटी**— सं० (कि०) लड़की, बालिका।
**शूमाह**— स० क्रि० (कि०) पूछना।
**शूरशीङ**— सं० (कि०) चंदन की लकड़ी।
**शूलूऊ**— सं० (कि०) झाड़ी में लगने वाला पुष्प विशेष।
**शूश्यमाह**— स० क्रि० (कि०) परामर्श लेना।

शेंगर— सं० (कि०) पैर की हड्डी।
शे— सं० (कि०) रबी की फसल।
शे— वि० (कि०) चतुर।
शेअद— सं० (ला०) बल।
शेई— वि० (ला०) सफेद।
शेउरा— सं० (ला०) छाया।
शेऊ— सं० (ला०) सर्दी।
शेकङ— सं० (कि०) ठोड़ी।
शेकुद— सं० (कि०) निश्चित तिथि।
शेकेखकर— वि० (कि०) पथरीला।
शेखिईटेम्माह— स० क्रि० (कि०) दंभ चूरना।
शेखिईमतोई— वि० (कि०) घमंड रहित।
शेखीस्या— वि० (कि०) घमंडी।
शेगपो— वि० (कि०) लंबा।
शेङले— वि० (कि०) खोखला।
शेजङ— सं० (कि०) नींव।
शेटिई— सं० (कि०) लकड़ी का टुकड़ा।
शेत— सं० (कि०) शक्ति।
शेतखेमाह— स० क्रि० (कि०) गति देना।
शेतचन— वि० (कि०) शक्तिशाली।
शेततिऊङघमाह— स० क्रि० (कि०) ज़ोर से खींचना।
शेततिमाह— स० क्रि० (कि०) ज़ोर देना।
शेततुई— वि० (कि०) शक्तिवर्धक।
शेथ— सं० (कि०) तख्ती।
शेन— सं० (कि०) लोहा।
शेनबूटा— सं० (ला०) बेंत वृक्ष।
शेनिश्यङ— सं० (कि०) संड़सी।
शेन्नङ— सं० (कि०) दे० दोगरी।
शेपजेमाह— स० क्रि० (कि०) धोखे से आग लगाना।
शेपशपअगोत— सं० (कि०) कड़वी बात।
शेपामाह— स० क्रि० (कि०) जानना।
शेमखङ— वि० (कि०) उजड़ा हुआ (मकान)।
शेमगा— सं० (कि०) सीढ़ी।
शेमनाह— अ० (कि०) थोड़ा सा।
शेयरो— सं० (कि०) श्वशुर।
शेरशेरजेमाह— अ० क्रि० (कि०) मूर्छित होना।
शेरस— सं० (कि०) टिड्डीदल।
शेल— सं० (कि०) दर्पण।
शेलाऊपिन्माह— स० क्रि० (कि०) भगा देना।
शेलु— सं० (कि०) थाली।
शेलू— सं० (कि०) प्याला।
शेवरो— सं० (कि०) श्वशुर।
शेवशी— सं० (कि०) सेवा।
शेषशेषकरिबा— स० क्रि० (ला०) कुतरना।
शेसलाङ— सं० (कि०) जान-पहचान।
शै:ल— सं० (कि०) औषधि।
शैङगार— सं० (कि०) पिंडली का अग्रभाग।
शैन्नङ— सं० (कि०) दे० दोगरी।
शैन्निक— स० क्रि० (कि०) लगाना।
शैलङसे— सं० (कि०) लोहे की सलाई। पट्टू के अग्रभाग को बांधने के लिए बना चांदी का सूआ।
शैलमिक— स० क्रि० (कि०) मालिश करना।
शैलयामिक— अ० क्रि० (कि०) दर्द होना।
शैशौ— सं० (कि०) सरसों।
शैसक— सं० (कि०) पहचान।
शैसमिक— स० क्रि० (कि०) पहचानना।
शोंफमाह— अ० क्रि० (कि०) जड़ का न सूखना।
शो— सं० (कि०) मिट्टी। फल।
शोअ— वि० (कि०) अग्रभाग।
शोअद— सं० (ला०) दोपहर का भोजन।
शोअब— सं० (ला०) बात।
शोअबचाणु— वि० (ला०) बातूनी।
शोअमाह— अ० क्रि० (कि०) फल का पकना।
शोअलङ— सं० (कि०) सूआ।
शोई— वि० (कि०) पका हुआ फल।
शोओ— सं० (कि०) दही।
शोकचोत— वि० (कि०) समर्थ।
शोकपा— सं० (कि०) पंख।
शोखचोत— सं० (कि०) हिंसा।
शोखज़ोरमाह— वि० (कि०) अति निर्भय।
शोखमाह— अ० क्रि० (कि०) सवार होना।
शोङगिया— वि० (कि०) शौकीन।
शोङफो— वि० (कि०) सख्त।
शोङले— वि० (कि०) खोखला।
शोजू— सं० (कि०) घुंघ।
शोट— सं० (कि०) ऊन पींजने का कंघा।
शोत— सं० (कि०) रोग।
शोतमतोई— वि० (कि०) नीरोग, स्वस्थ।
शोतमाह— अ० क्रि० (कि०) बीमार होना।
शोतिह— वि० (कि०) रोगी।
शोदयामिक— स० क्रि० (कि०) खोजना।
शोनक्यतमाह— स० क्रि० (कि०) ठंडा करना।
शोनगार— सं० (कि०) पिंडली का आगे का हिस्सा।
शोनडुश्या— सं० (कि०) सूखा मांस।
शोनतमाह— अ० क्रि० (कि०) गूंजना।
शोननु— सं० (कि०) कुम्हार।
शोनशिरेस— सं० (कि०) शनिवार।
शोन्नाल— सं० (कि०) शहनाई।
शोन्नालिया— सं० (कि०) शहनाई वादक।
शोपक्यामाह— स० क्रि० (कि०) खदेड़ना; मारना।
शोपङ— सं० (कि०) शोक।
शोपरल्माह— अ० क्रि० (कि०) अति बकवाद करना।
शोफमाह— अ० क्रि० (कि०) पत्तों का झड़ना।
शोमाह— अ० क्रि० (कि०) पकना।
शोर— वि० (कि०) सुंदर।
शोरी— सं० (ला०) बेटी।

**शोरु**—सं० (कि०) ओला।
**शोरोरो**—अ० (कि०) किसी वस्तु को तलने से हुई ध्वनि।
**शोलतमतु**—अ० क्रि० (कि०) मुरझाना।
**शोलपमाह**—अ० क्रि० (कि०) झड़ जाना। पीलापन आना।
**शोवा**—वि० (ला०) सोलह।
**शोशमङ**—सं० (कि०) शलजम।
**शोशोयतलमाह**—स० क्रि० (कि०) नकल करना।
**शोश्या**—सं० (कि०) दिल।
**शौंक**—सं० (कि०) शौक।
**शौंई**—सं० (ला०) फली।
**शौकरंग**—वि० (कि०) अनाथ।
**शौख**—सं० (कि०) श्वास नली।
**शौखी**—वि० (कि०) शौकीन।
**शौग**—सं० (कि०) कंठ।
**शौटपौट**—अ० (कि०) झटपट।
**शौठयामिक**—स० क्रि० (कि०) छोड़ना।
**शौत**—सं० (कि०) जंगली प्याज़।
**शौन**—सं० (कि०) वृक्ष विशेष जिसकी पत्तियां पशु के चारे के काम आती हैं।
**शौनङ**—सं० (कि०) चोंच।
**शौनमिक**—स० क्रि० (कि०) मेला लगाना।
**शौबमिक**—अ० क्रि० (कि०) झड़ना।
**शौयामिक**—स० क्रि० (कि०) साफ करना।
**शौर्च**—सं० (कि०) ऊन पींजने की कंघी।
**शौल**—सं० (कि०) छत।
**शौल**—सं० (कि०) ग्रीष्म ऋतु।
**श्कुलमों**—सं० (कि०) पत्थर की ओखली।
**श्पुमुकङ**—वि० (कि०) उदासीन।
**श्पोटोख**—वि० (कि०) एक।
**श्पोनमाह**—अ० क्रि० (कि०) सामूहिक नृत्य करना।
**श्पोना**—सं० (कि०) जूता।
**श्बिरिबिह**—वि० (कि०) धुंधला।
**श्बीहनमाह**—स० क्रि० (कि०) रक्त बहाना।
**श्मिपो**—वि० (कि०) स्वादिष्ट।
**श्यकराछस्माह**—स० क्रि० (कि०) रोड़ी बिछाना।
**श्यख**—सं० (कि०) कष्ट।
**श्यखकनमाह**—स० क्रि० (कि०) यातना देना।
**श्यखतङमाह**—स० क्रि० (कि०) विपत्ति झेलना।
**श्यखतु**—सं० (कु०) असुविधा।
**श्यखपङ**—सं० (कि०) भोज वृक्ष।
**श्यखमाह**—अ० क्रि०.(कि०) पापमुक्त होना।
**श्यखा**—सं० (कि०) चेहरा।
**श्यङ**—वि० (कि०) चुस्त।
**श्यङकरा**—सं० (कि०) बजरी।
**श्यङकुङ**—सं० (कि०) गुलेल।
**श्यङफो**—सं० (कि०) जागृति।
**श्यङरालस**—वि० (कि०) पथरीला।
**श्यटीई**—सं० (कि०) छड़ी पर बांधा हुआ घास।
**श्यतन**—सं० (कि०) घोड़े की काठी।
**श्यतमाह**—स० क्रि० (कि०) शिकायत करना।
**श्यतिङख**—सं० (कि०) पिट्ठू।
**श्यतूथ**—सं० (कि०) अंगुलियों में होने वाला रोग।
**श्यतेप**—सं० (कि०) वृत्तांत।
**श्यथा**—अ० (कि०) अवश्य।
**श्यनपा**—सं० (कि०) कसाई।
**श्यपुत्रा**—वि० (कि०) कुफ्रा।
**श्यफरत**—सं० (कि०) मांस का टुकड़ा।
**श्यबनुहपोसमाह**—अ० क्रि० (कि०) आराम से रहना।
**श्यब्रुतचन**—वि० (कि०) भरपूर मांस वाला।
**श्यमलङ**—सं० (कि०) मांस के गुच्छे।
**श्यमिबुङ**—वि० (कि०) स्वस्थ।
**श्यर**—सं० (कि०) पूर्व।
**श्यरा**—सं० (कि०) नवयुवक।
**श्यरु**—सं० (कि०) कठिनाई।
**श्यरेलमाह**—स० क्रि० (कि०) दही से मक्खन बनाना।
**श्यलङ**—सं० (कि०) हल में लगने वाला सामान।
**श्यलमन**—सं० (कि०) दस्त की दवा।
**श्यलमाह**—अ० क्रि० (कि०) दस्त लगना।
**श्यलापा**—सं० (कि०) भेड़-बकरी वाला।
**श्यवत्रामाह**—स० क्रि० (कि०) नाखून से घाव करना।
**श्याण्या**—सं० (कि०) मांस भक्षी पक्षी विशेष।
**श्यातिङख**—सं० (कि०) पट्टू में लपेट कर पीठ पर उठाया जाने वाला बोझ।
**श्याथोरपिन्माह**—स० क्रि० (कि०) मांसपिंड बिखेरना।
**श्याप्याथ**—सं० (कि०) बाज़ पक्षी।
**श्याबास**—अ० (कि०) साधुवाद।
**श्याबौद**—सं० (कि०) त्वचा।
**श्यारऊदोसपरिङ**—सं० (कि०) यौवन।
**श्यारामाह**—स० क्रि० (कि०) सराहना।
**श्यारोलमाह**—स० क्रि० (कि०) मांस जलाना।
**श्यालङ**—सं० (कि०) मवेशी।
**श्याललतगामी**—वि० (कि०) दया का पात्र।
**श्याललतमाह**—स० क्रि० (कि०) दया करना।
**श्यिऊमिन्माह**—स० क्रि० (कि०) मिटा देना।
**श्यिकोमी**—वि० (कि०) कमज़ोर (व्यक्ति)।
**श्यिकोवङमाह**—अ० क्रि० (कि०) कमज़ोर होना।
**श्यिखमाह**—अ० क्रि० (कि०) मिटना।
**श्यिजा**—सं० (कि०) दुर्दिन।
**श्यितिरिपखेमाह**—अ० क्रि० (कि०) भाग जाना।
**श्यिब्रालटामाह**—स० क्रि० (कि०) वसीयत करना।
**श्यिरिहश्यिरिह**—सं० (कि०) वायुयुक्त ठंड।
**श्यिल**—सं० (कि०) दावत।
**श्यु**—अ० (कि०) नीचे।
**श्युकतुशङ**—सं० (कि०) मैदानी घोड़ा।
**श्युकरम**—सं० (कि०) चर्बी से भरी हुई अंतड़ी।
**श्युगु**—सं० (कि०) कागज।

श्युतखेमाह— स० क्रि० (कि०) झूठ बोलना।
श्युतुङ— सं० (कि०) सुरा।
श्युनसे— वि० (कि०) पिशाच वृत्ति वाली (स्त्री)।
श्युनालान— सं० (कि०) गोल चलने वाली वायु।
श्युपटिई— अ० (कि०) बलात्, जबरदस्ती।
श्युपमाह— स० क्रि० (कि०) गला काटना।
श्युपुहपिन्माह— स० क्रि० (कि०) सिर काट देना।
श्युप्यात— सं० (कि०) तितली।
श्युमुकङ— वि० (कि०) उदासीन।
श्युरकू— सं० (कि०) धूप का पौधा विशेष।
श्युरा— वि० (कि०) रंगदार (पशु)। लाल और काला रंग।
श्युरिस— अ० (कि०) शीघ्र।
श्युल— सं० (कि०) झलक। चिह्न, लक्षण।
श्युलनङ— वि० (कि०) लक्षणयुक्त।
श्युलि— सं० (कि०) फ़िरोज़ा।
श्युलिह— वि० (कि०) कच्चा।
श्युलुकङजेमाह— अ० क्रि० (कि०) हतोत्साहित होना।
श्यूफोख— सं० (कि०) दक्षिण दिशा।
श्यूफोग— वि० (कि०) नीचे की ओर।
श्येङश्येङ— वि० (कि०) ढीठ।
श्येटऊरख— सं० (कि०) जौ की शराब।
श्येतचनलान— सं० (कि०) आंधी।
श्येतहनमाह— स० क्रि० (कि०) ज़ोर दिखाना।
श्येरश्येर— सं० (कि०) मूर्च्छा।
श्येरश्येरजेमाह— अ० क्रि० (कि०) मूर्च्छित होना।
श्येरश्येरपिन्माह— स० क्रि० (कि०) बेहोश करना।
श्योंवाअ— सं० (कि०) जौ का छिलका।
श्यो— सं० (कि०) धूम।
श्यो— सं० (कि०) मुखड़ा।
श्योअ— सं० (कि०) पात्र का अग्रभाग।
श्योकरसा— सं० (कि०) गुठली का छिलका।
श्योखमाह— अ० क्रि० (कि०) चढ़ना।
श्योगपा— सं० (कि०) पंख।
श्योगपासा— वि० (कि०) पंख वाला।
श्योगलस— सं० (कि०) एक मरहम पट्टी।
श्योङ— अ० (कि०) नीचे।
श्योङमाह— अ० क्रि० (कि०) समाना।
श्योजेमाह— अ० क्रि० (कि०) लुप्त होना।
श्योतीमाह— अ० क्रि० (कि०) स्वस्थ होना।
श्योपकनमाह— स० क्रि० (कि०) हाव-भाव दर्शाना।
श्योबोरिया— वि० (कि०) ढोंगी।
श्योरमाह— अ० क्रि० (कि०) छूट जाना।
श्योरा— सं० (कि०) बर्फ जमने के दाग।
श्योरे— वि० (कि०) अधूरा।
श्योरेलमाह— स० क्रि० (कि०) अपंग करना।
श्योल— सं० (कि०) कर्तव्य।
श्योलङ— सं० (कि०) विशेष प्रकार की कील।
श्योलडङ— सं० (कि०) चिंता।
श्योलबङक्याश्यमाह— स० क्रि० (कि०) पांव पसारना।
श्योलमतोई— वि० (कि०) बेपरवाह।
श्योलमोज़स— वि० (कि०) रस रहित।
श्योवोरिया— वि० (कि०) सनकी; बकवादी।
श्योश्या— सं० (कि०) दिल।
श्योश्योतलमाह— स० क्रि० (कि०) नकल करना।
श्योहलोमहा— स० क्रि० (कि०) बैल को दुत्कारना।
श्वकचीथ— वि० (कि०) टेढ़े-मेढ़े दांतों वाला।
श्वकर— सं० (कि०) शलजम।
श्वकलतमाह— अ० क्रि० (कि०) प्रतिध्वनि होना।
श्वकापका— वि० (कि०) कुरूप।
श्वखमाह— स० क्रि० (कि०) चरना।
श्वङखुह— अ० क्रि० (कि०) निर्मल होना।
श्वनप्राथ— सं० (कि०) विश्राम स्थल।
श्वनमाह— अ० क्रि० (कि०) आराम करना।
श्वनुहपोसमाह— अ० क्रि० (कि०) टिके रहना।
श्वरह— सं० (कि०) कंगन।
श्वलथ— सं० (कि०) बर्फ की चट्टान।
श्वलथुजेमाह— अ० क्रि० (कि०) गूंजना।
श्वलमाह— स० क्रि० (कि०) नाखून मारना।
श्वा— वि० (कि०) निर्जन।
श्वामाह— स० क्रि० (कि०) चराना।
श्वी— सं० (कि०) रक्त। मुंह से बजाई गई सीटी।
श्वीक— वि० (कि०) लाल।
श्वीकोलयतोमङ— वि० (कि०) खून से सना हुआ।
श्वीग— वि० (कि०) लाल।
श्वीठोल-ठोल— वि० (कि०) रक्तरंजित।

## स

संगदलमाह— अ० क्रि० (कि०) जवानी का ढलना।
संगपा— वि० (कि०) गुप्त।
संगफो— सं० (ला०) नदी।
संगा— सं० (कि०) लकड़ी की बनी सीढ़ी।
संगुल— सं० (कि०) भूकंप।
संगोथ— सं० (कि०) दोस्त।
संजा— वि० (कि०) पंद्रह।
संतङ— सं० (कि०) गांव का सार्वजनिक मनोरंजन स्थल।
संदा— सं० (ला०) वर्षा।
संपा— सं० (कि०) पुल।
संपा— सं० (कि०) सत्तू।
संफ— सं० (कि०) चेतना।
संफशोरमाह— अ० क्रि० (कि०) शिथिलता आना।
संबाल्यामिक— स० क्रि० (कि०) संभालना।
संबोत— सं० (कि०) सीढ़ी।
स.ङकर— सं० (कि०) प्रातः का तारा।
स.ङमिक— अ० क्रि० (कि०) पौ फटना।
स.ङरतिङ— सं० (कि०) संक्रांति।

**सअर**—सं० (कि०) निशान।
**सईनिङ**—सं० (कि०) संबंध।
**सईनिङकुनिक**—स० क्रि० (कि०) संबंध जोड़ना।
**सईश्यासा**—वि० (कि०) गोरे रंग का।
**सकचा**—अ० क्रि० (कि०) चुभना।
**सकटाक्चास**—सं० (कि०) Cornus capitata.
**सकत**—वि० (कि०) सख्त।
**सकुङलामाह**—अ० क्रि० (कि०) आराम करना।
**सकुपकुप**—वि० (कि०) हवा रहित।
**सकोरे**—वि० (कि०) तीखा।
**सक्यत**—सं० (कि०) जगह।
**सक्सामाह**—स० क्रि० (कि०) जमा करना।
**सखचन**—वि० (कि०) संचित करने वाला।
**सखमाह**—स० क्रि० (कि०) संचित करना।
**सखमाह**—अ० क्रि० (कि०) छिपना।
**सखसखुह**—अ० क्रि० (कि०) इकट्ठा होना।
**सख्ती**—सं० (कि०) जल प्रवाह का मध्य भाग।
**सगुल**—सं० (कि०) भूकंप।
**सग्यामरो**—सं० (कि०) भजन, कीर्तन।
**सङचा**—सं० (कि०) वृक्ष विशेष के छिलकों की बनी चाय।
**सङडेल**—वि० (कि०) स्वस्थ।
**सङपो**—वि० (कि०) भद्र।
**सङफो**—वि० (कि०) स्वस्थ।
**सङफोलमाह**—अ० क्रि० (कि०) स्वस्थ होना।
**सङबो**—सं० (कि०) नदी।
**सङमा**—वि० (कि०) शुद्ध।
**सङमाह**—स० क्रि० (कि०) भरना।
**सङशिश**—वि० (कि०) घुसा हुआ।
**सङ्खमतोई**—वि० (कि०) स्वच्छ पानी।
**सङ्खमाह**—अ० क्रि० (कि०) घुसना, प्रवेश करना।
**सङ्खले**—वि० (कि०) स्लेटी।
**सचा**—सं० (कि०) धरती।
**सछम**—सं० (कि०) सीमा।
**सजायामाह**—स० क्रि० (कि०) सजाना।
**सज़िदार**—सं० (कि०) भागीदार।
**सजी**—सं० (कि०) भूमि।
**सटु**—वि० (कि०) सोलह।
**सणसा**—सं० (ला०) चिमटा।
**सत**—सं० (कि०) देवता।
**सतएचोरंग**—सं० (कि०) मंदिर।
**सतक्यूम**—सं० (कि०) देव गृह।
**सतचा**—स० क्रि० (कि०) मारना।
**सतबतई**—सं० (कि०) देवता से बात करने वाला व्यक्ति-विशेष।
**सतबतामाह**—स० क्रि० (कि०) देवता को पूछना।
**सतमत**—सं० (कि०) चमत्कार।
**सतमाह**—स० क्रि० (कि०) मारना।
**सतरथ**—सं० (कि०) जंगली बिल्ला।
**सतुओन्मिाह**—स० क्रि० (कि०) जान से मार देना।
**सतुणा**—वि० (ला०) सातगुणा।
**सतुहपोल्ङख**—सं० (कि०) देवता का स्थान।
**सतुहमाथस**—सं० (कि०) देवता का कारकुन।
**सतूहपिन्माह**—स० क्रि० (कि०) हत्या करना।
**सते**—अ० (ला०) पास में।
**सद**—सं० (ला०) देवता।
**सदचे**—स० क्रि० (ला०) खून करना।
**सनां**—वि० (कि०) कमज़ोर।
**सनाथ**—सं० (कि०) एक वृक्ष विशेष जिसके पत्तों का पेट की सफाई के लिए प्रयोग किया जाता है।
**सनिश**—वि० (कि०) बारह।
**सनीदार**—सं० (कि०) साझीदार।
**सपअ**—वि० (कि०) चौदह।
**सपतन**—सं० (कि०) घोड़े का वस्त्र।
**सपतिमाह**—स० क्रि० (कि०) तेल लगाना।
**सपनाहततु**—अ० क्रि० (कि०) अचानक याद आना।
**सपलोखदोपलोख**—सं० (कि०) उथल-पुथल।
**सपै.स**—सं० (कि०) सांप।
**सबोख**—सं० (कि०) पाठ, सबक।
**सबोन**—सं० (कि०) साबुन।
**समकोरुहतीमाह**—स० क्रि० (कि०) वश में करना।
**समचा**—सं० (कि०) आटे की छलनी।
**समचे**—अ० क्रि० (कि०) गर्व करना।
**समजबा**—अ० क्रि० (ला०) समझना।
**समजायामाह**—स० क्रि० (कि०) समझाना।
**समजीतेयांग**—स० क्रि० (कि०) आशा करना।
**समदेन**—सं० (कि०) गलीचा।
**समलामु**—स० क्रि० (कि०) संभालना।
**समली**—स० क्रि० (कि०) सोचना।
**समलो**—सं० (कि०) विचार।
**समलोतीईमाह**—स० क्रि० (कि०) विचार करना।
**समालयामिक**—स० क्रि० (कि०) संभालना।
**समालयाशित**—वि० (कि०) संभाला हुआ।
**समीह**—वि० (कि०) मीठा।
**समेटयामिक**—स० क्रि० (कि०) समेटना।
**सम्मन**—सं० (कि०) सावन।
**सम्यामाह**—स० क्रि० (कि०) झाड़-फूंक करना।
**सम्लाइबा**—स० क्रि० (कि०) बंद करना।
**सयाने.स**—सं० (कि०) वृद्ध; बुद्धिमान्।
**सर**—सं० (कि०) बस्ती। निशान।
**सरक**—सं० (कि०) जल्दी।
**सरक्यामिक**—स० क्रि० (कि०) सरकाना।
**सरगेत**—वि० (कि०) अठारह।
**सरना सरना**—अ० (कि०) मंद-मंद।
**सरपा**—सं० (कि०) नया।
**सरपाजुगङ**—सं० (कि०) नवयुग।
**सरपारुअङ**—सं० (कि०) नई आकृति।

सरमिक—अ० क्रि० (कि०) टूटना।
सरशित—वि० (कि०) टूटा हुआ।
सरशियम—स० क्रि० (कि०) उठाना।
सरसूनफङ—सं० (कि०) रोंगटे।
सरा—सं० (ला०) शराब।
सरायां—सं० (कि०) धर्मशाला।
सरियारा—सं० (ला०) चौलाई प्रजाति का अन्न।
सरेफमाह—स० क्रि० (कि०) आधारशिला रखना।
सर्ग—सं० (ला०) आकाश।
सर्ग—सं० (ला०) वर्षा।
सलचेत—सं० (कि०) व्यंजन।
सलडिङ—वि० (कि०) नग्न।
सलपो—वि० (कि०) स्पष्ट।
सलफो—वि० (कि०) प्रत्यक्ष।
सलाठे—वि० (ला०) सुंदर।
सलामी—वि० (कि०) सीधा।
सलिख—सं० (कि०) क्षेत्र।
सलीसक्यत—सं० (कि०) अचल संपत्ति।
सलूका—सं० (कि०) ऊनी कमीज़।
सल्लचिस—अ० (कि०) धीरे-धीरे।
सवस—सं० (कि०) नाग।
सवाङ—सं० (कि०) मेला।
सविश्य—वि० (कि०) बारह।
सजोन—सं० (कि०) बीज।
ससखअ—सं० (कि०) आमाशय का मल।
ससमाह—स० क्रि० (कि०) मरवाना।
सस्युई—वि० (कि०) उन्नीस।
सस्तीश—वि० (कि०) सत्रह।
सस्तू—वि० (ला०) सस्ता।
सहङखमाह—अ० क्रि० (कि०) घुसना।
सहङमा—वि० (कि०) पवित्र।
सहङमा—अ० क्रि० (कि०) प्रवेश करना।
सहीत—वि० (कि०) ग्यारह।
सहुत—सं० (कि०) नमी।
सहुतमटङ—सं० (कि०) नमीदार भूमि।
सहुरूम—वि० (कि०) तेरह।
सांग—सं० (कि०) सीढ़ी।
सांच—वि० (कि०) थोड़ा।
सांजोआ—सं० (ला०) दीपक।
सांथ—वि० (कि०) थोड़ा।
सा.ई—सं० (सो०) ईसाई।
सा.क—सं० (कि०) मध्यवर्ती भाग।
सा.कति—सं० (कि०) नदी के बीच का पानी।
सा.कमिक—अ० क्रि० (कि०) गले में किसी चीज के फंसने से हिचकी आना।
सा.त—सं० (कि०) निशान।
सा.न्निक—स० क्रि० (कि०) मारना।
सा.न्निक—सं० (कि०) कंजूसी का भाव।
सा.प—सं० (कि०) साहब।
सा.रपाला—सं० (कि०) देवता उठाने की बारी।
सा.रमिक—स० क्रि० (कि०) उठाना।
सा.रशमिक—अ० क्रि० (कि०) उठना।
सा.रशिस—वि० (कि०) उठा हुआ।
सा.रो—वि० (कि०) ठीक सुनने वाला।
सा.लगी—वि० (कि०) नग्न।
सा.लमिक—स० क्रि० (कि०) उतारना।
सा—सं० (कि०) घास, मिट्टी, भूमि।
साअ—सं० (कि०) सांस। नब्ज़।
साअख्यामिक—स० क्रि० (कि०) नब्ज देखना।
साअरिया—वि० (कि०) कार्य कुशल।
साअहनमाह—अ० क्रि० (कि०) सांस लेना।
साई—सं० (कि०) स्याही।
साऊ—सं० (कि०) व्यापारी।
साकग—सं० (कि०) घास रखने का कमरा।
साखा—सं० (कि०) भूभाग, हिस्सा।
साखोनमाह—स० क्रि० (कि०) नब्ज देखना।
सागणगुर—सं० (कि०) Atropa belladonna.
सागू—वि० (कि०) उन्नीस।
साङ—सं० (कि०) बारीक चीरी हुई लकड़ियां।
साङमशाला—सं० (कि०) मशाल।
साङमिक—स० क्रि० (कि०) मरना।
साङरातिङ—सं० (कि०) रात्रि का अंतिम पहर।
साङशिद—वि० (कि०) मरा हुआ।
साङशेल—सं० (कि०) नाश्ता।
साङस्कार—सं० (कि०) ध्रुवतारा।
साङा—सं० (कि०, ला०) मकान की सीढ़ी।
साचादेमो—सं० (कि०) अच्छी भूमि।
साजा—सं० (कि०) खाना, भोजन।
साज़ौ—सं० (कि०) माघ संक्रांति।
साणे—वि० (कि०) जिसकी दोनों आंखें ठीक हों।
साणे—सं० (कि०) गुठलीदार फलों की गिरी। ठीक होने क भाव।
सातजोत—सं० (कि०) सप्तमी।
सातार्ड—सं० (कि०) बाघ का बच्चा।
साति—सं० (ला०) सहायता।
साती—सं० (ला०) दोस्त।
साते—अ० (ला०) साथ।
साथ—वि० (कि०) दस।
सादङ—सं० (कि०) कोमल स्वभाव।
सादू—सं० (कि०) साधु।
सान—वि० (कि०) थोड़ा।
सानलङ—सं० (कि०) मंदिर का प्रांगण।
सानदा—अ० (कि०) थोड़ा सा।
साना—सं० (कि०) इशारा।
सानुम—सं० (कि०) मिट्टी का तेल।
सानोदय—सं० (ला०) शाम।

**साप**— वि० (कि०) चौदह।
**सापालङ**— सं० (कि०) ऊंचाई पर मिलने वाला फूल जिसकी जड़ें मसाले के रूप में प्रयोग की जाती हैं।
**सापेस**— सं० (कि०) सांप।
**साप्रुश्यमाह**— अ० क्रि० (कि०) सांस घुटना।
**साबुत**— वि० (कि०) सही, साबित।
**सामका**— सं० (कि०) एक सफेद फूल जिसे वृक्ष विशेष की फलियों से निकाल कर टोपियों में लगाया जाता है।
**सामयां**— सं० (ला०) समधी।
**सामरयामिक**— स० क्रि० (कि०) साफ करना, चाटना।
**सामरौथ**— सं० (कि०) क्षमता; सामर्थ्य।
**सामासमू**— सं० (कि०) डरने का भाव।
**सामो**— सं० (ला०) क्रियाकर्म।
**सामोन**— सं० (कि०) साबुन।
**साम्यामिक**— क्रि० (कि०) झाड़-फूंक से प्रेत को भगाना। विदा करना।
**साय**— वि० (कि०) दस।
**सायरा**— वि० (कि०) हज़ार।
**सारशिमु**— अ० क्रि० (कि०) उठना।
**सारा**— सं० (ला०) शराब।
**सारिङ**— सं० (कि०) खेत।
**सारेगङ**— सं० (कि०) आसमान।
**साल**— सं० (ला०) दाना।
**साल**— सं० (कि०) फसल।
**सालखौनका**— वि० (कि०) छिलके से अपने आप उतरने वाला (अखरोट)।
**सालबुदिई**— सं० (कि०) उपज।
**सालहंथिहरी**— सं० (कि०) उपजाऊ खेत।
**सावी**— सं० (कि०) दरिया।
**सासङ**— वि० (कि०) कमज़ोर।
**साहयणी**— सं० (ला०) सहेली।
**सिंग**— सं० (ला०) लकड़ी।
**सिंगथामाह**— स० क्रि० (कि०) विवाह बंधन तोड़ना।
**सिंदरङटामाह**— स० क्रि० (कि०) बरतन के छिद्र को बंद करने हेतु टांका लगाना।
**सिंदीस**— वि० (कि०) व्यर्थ।
**सिंवरु**— सं० (ला०) दाड़िम।
**सिंई**— सं० (कि०) शेर।
**सिउबा**— स० क्रि० (कि०) सिलना।
**सिऊ**— वि० (कि०) मृत।
**सिकरेठ**— सं० (कि०) सिगरेट।
**सिकलामाह**— स० क्रि० (कि०) हिलाना।
**सिकिना**— वि० (कि०) बढ़िया।
**सिकिप**— अ० (कि०) ठुमक-ठुमक।
**सिकिल**— सं० (कि०) चाल-ढाल।
**सिक्यतमाह**— अ० क्रि० (कि०) हिलना।
**सिक्‍[illegible]जेमाह**— अ० क्रि० (कि०) खिसक जाना।
**सिक्यामिक**— स० क्रि० (कि०) हटाना।
**सिक्याशित**— वि० (कि०) हटाया हुआ।
**सिक्येनमिक**— अ० क्रि० (कि०) हिलना।
**सिखा**— सं० (कि०) पका हुआ विशेष प्रकार का मांस।
**सिगरे**— सं० (कि०) जौ के आटे का पकवान विशेष।
**सिङ**— सं० (कि०) लकड़ी।
**सिङखोनिङ**— सं० (कि०) जूठा पात्र।
**सिङछिनमाह**— स० क्रि० (कि०) सर्वस्व हरण करना।
**सिङटोस**— वि० (कि०) अकड़ा हुआ, आलसी।
**सिङथामाह**— स० क्रि० (कि०) संबंध विच्छेद करना।
**सिङथुंथमाह**— अ० क्रि० (कि०) इकट्ठे हो जाना।
**सिङनाह**— अ० (कि०) चुपके से।
**सिङपा**— सं० (कि०) गला।
**सिङफो**— वि० (कि०) बेकार।
**सिङफो**— वि० (कि०) हूबहू।
**सिङफोमी**— वि० (कि०) मूर्ख मनुष्य।
**सिङसङ**— वि० (कि०) संपूर्ण।
**सिङसिङ**— वि० (कि०) अधूरा।
**सिङवङमाह**— अ० क्रि० (कि०) अड़ जाना।
**सिङा**— सं० (कि०) देवता के प्रतिरूप में देवता द्वारा नामित व्यक्ति।
**सिङासन**— सं० (कि०) सिंहासन।
**सिङुहसोलाअ**— सं० (कि०) लकड़ी का कोयला।
**सिज़ैन्निक**— अ० क्रि० (कि०) सजना, फबना।
**सिज़ौन**— सं० (कि०) टांका।
**सिटेयामिक**— स० क्रि० (कि०) सेंकना। पिटाई करना।
**सिठिप**— वि० (कि०) शीघ्र।
**सितङ**— सं० (कि०) मोम।
**सितङ**— सं० (कि०) हल की सीता।
**सितिङ**— सं० (कि०) चाल-चलन। स्वार्थ।
**सितिरिङ**— सं० (कि०) तह।
**सिदादुरिस**— अ० (कि०) सीधी तरह।
**सिघा**— वि० (ला०) मुफ्त।
**सिनदरङ**— सं० (कि०) पात्र में टांका लगाने के लिए प्रयोग की जाने वाली एक धातु।
**सिनदरङटामाह**— स० क्रि० (कि०) टांका लगाना।
**सिनातुर**— सं० (ला०) तकिया।
**सिनिमा**— सं० (कि०) चलचित्र।
**सिपसिप**— वि० (कि०) बर्फ से पूर्ण रूप से भरा हुआ।
**सिमाहबोलङखु**— सं० (कि०) मरणासन्न।
**सिमिह-सिमिह**— सं० (कि०) धीरे-धीरे हिलने का भाव।
**सिरनालान**— सं० (कि०) हलकी सी हवा।
**सिरुक**— सं० (कि०) गिनती।
**सिरेटर**— सं० (ला०) रेत।
**सिल**— सं० (ला०) कलेवा, नाश्ता।
**सिल**— सं० (कि०) मसूढ़े।
**सिलङ**— सं० (कि०) गेहूं-जौ की बाल।
**सिलचा**— स० क्रि० (कि०) पढ़ना।
**सिलमिक**— स० क्रि० (कि०) पढ़ना।

**सिलमोसा**—वि० (कि०) छायादार।
**सिलरीआडू**—सं० (कि०) अरबी।
**सिलस**—सं० (कि०) छाया।
**सिलायामू**—स० क्रि० (कि०) सिलाना।
**सिसो**—सं० (कि०) दर्पण।
**सिह**—सं० (ला०) सिंह।
**सींगयुत**—सं० (कि०) रीढ़ की हड्डी।
**सी**—सं० (कि०) सोने-चांदी का पानी।
**सीईपिन्माह**—स० क्रि० (कि०) सोने या चांदी के पानी से दीवार पर कलाकृति करना।
**सीईमी**—वि० (कि०) स्वर्गवासी।
**सीकोरमिक**—स० क्रि० (कि०) मृत आत्मा का तांत्रिक विधि से पता लगाना।
**सीगीद**—वि० (कि०) ग्यारह।
**सीगीनो**—स० क्रि० (कि०) सूंघना।
**सीज़ियामिक**—स० क्रि० (कि०) टांका लगाना।
**सीतङ**—सं० (कि०) दरार।
**सीतङस्वाह**—सं० (कि०) सामने के ऊपर वाले दो दांत।
**सीतो**—सं० (कि०) खेत का मेंड़ वाला भाग।
**सीद**—वि० (कि०) ग्यारह।
**सीपिनिह**—सं० (कि०) चित्रकार।
**सीमङ**—सं० (कि०) सीमा।
**सीमङगाहर**—सं० (कि०) दे० सीतङस्वाह।
**सीमाह**—अ० क्रि० (कि०) मरना।
**सीर**—सं० (ला०) जड़।
**सीरङ**—सं० (कि०) नस।
**सीरङशन्निक**—स० क्रि० (कि०) बीमारी में उपचार हेतु धमनी काट कर खून निकालना।
**सीरी**—सं० (कि०) चिंता।
**सीलखन**—सं० (कि०) पाठक।
**सुंचतुपोसमाह**—स० क्रि० (कि०) सोचते रहना।
**सुंचो**—अ० (कि०) विचार में।
**सुंदुख**—सं० (कि०) संदूक।
**सुःतोन**—सं० (कि०) पायजामा।
**सु**—सर्व० (ला०) कौन।
**सुअर**—सं० (कि०) फसल के मध्य उगी घास।
**सुइबा**—अ० क्रि० (ला०) ब्याना।
**सुउमाह**—स० क्रि० (कि०) पोंछना।
**सुक**—सं० (कि०) आराम; आसान।
**सुकङलामाह**—अ० क्रि० (कि०) आराम करना।
**सुकचे**—सं० (कि०) टांग।
**सुकदुक**—सं० (कि०) सुख-दुःख।
**सुकपुकेन्निक**—स० क्रि० (कि०) हरकत करना।
**सुकरुवङमाह**—अ० क्रि० (कि०) चूर-चूर होना।
**सुकरो**—वि० (कि०) चूरायुक्त।
**सुकरोलान्निक**—स० क्रि० (कि०) चूर-चूर करना।
**सुकसुकमतमाह**—अ० क्रि० (कि०) हरकत करना।
**सुकुरुंफमाह**—अ० क्रि० (कि०) जुगाली करना।
**सुख्कुल**—सं० (कि०) स्कूल।
**सुख**—सं० (कि०) हिम्मत।
**सुखुप**—सं० (कि०) अंगूठी।
**सुङ**—सं० (कि०) उपदेश।
**सुङलाऊ**—सं० (कि०) व्याकरण।
**सुङमतोई**—वि० (कि०) शक्तिहीन।
**सुङमिक**—अ० क्रि० (कि०) बोलना।
**सुङुर**—सं० (ला०) सूअर।
**सुचंग**—वि० (ला०) दायां।
**सुच्चा**—वि० (कि०) सच्चा।
**सुट**—सं० (कि०) खटमल।
**सुटज**—सं० (कि०) Hippophae rhemnoides.
**सुटी**—सं० (कि०) खटमल।
**सुठोसयानों**—सं० (कि०) बुजुर्ग वर्ग।
**सुड़मतमाह**—स० क्रि० (कि०) सुखी करना।
**सुणाबा**—स० क्रि० (कि०) सुनना।
**सुतक**—सं० (कि०) मृत्यु का अशौच।
**सुतरङ**—सं० (कि०) काले रंग से रंगा हुआ सूत का धागा जिससे लकड़ी चीरने के लिए निशान लगाया जाता है।
**सुतरोल**—सं० (कि०) दिवाल नामक त्योहार के अवसर पर बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।
**सुतलियो**—अ० (कि०) वास्तव में।
**सुतलिह**—सं० (कि०) झूठा मित्र।
**सुथन**—सं० (कि०) पाजामा।
**सुद**—सं० (कि०) पात्र में लगी टोंटी।
**सुनङगोर**—सं० (कि०) सोने का कड़ा।
**सुनचतमाह**—स० क्रि० (कि०) विचारना।
**सुनाचिंतो**—सं० (कि०) कल्पना।
**सुनचेन्निक**—स० क्रि० (कि०) विचार करना, याद करना।
**सुनचो**—सं० (कि०) सोच-विचार।
**सुनदुख**—सं० (कि०) संदूक।
**सुनपो**—वि० (कि०) मायूस।
**सुनयामिक**—स० क्रि० (कि०) सुनाना।
**सुना**—सं० (ला०) घाव।
**सुनारस**—सं० (कि०) सुनार।
**सुन्निक**—स० क्रि० (कि०) आटे के घोल को तवे पर डालना। घराट में दानें डालना।
**सुन्नेहरु**—वि० (कि०) सोने का।
**सुपचो**—सं० (कि०) झाग।
**सुपमाह**—स० क्रि० (कि०) मिलाना, फंसाना।
**सुपमिक**—स० क्रि० (कि०) लपेटना।
**सुपुत**—सं० (कि०) बुजुर्ग।
**सुपुत**—सं० (कि०) प्रमाण।
**सुपुतलमाह**—स० क्रि० (कि०) प्रमाणित करना।
**सुप्पमाह**—स० क्रि० (कि०) लपेटना।
**सुफना**—सं० (कि०) स्वप्न।
**सुबाब**—सं० (कि०) स्वभाव।
**सुमनां**—सं० (कि०) चौराहा।

**सुमनाह**— सं० (कि०) मुस्कराहट।
**सुमफङ**— सं० (कि०) रोम।
**सुमफङो**— सं० (कि०) तारों का समूह।
**सुमराल**— सं० (कि०) Rhododendrn lapidotum.
**सुमसुम**— सं० (कि०) मुस्कान।
**सुमारस**— सं० (कि०) गहरी नींद।
**सुमाह**— स० क्रि० (कि०) लाना।
**सुर**— सं० (कि०) कोना।
**सुरक**— वि० (कि०) खट्टा।
**सुरकाटया**— वि० (कि०) तीखा।
**सुरकुल**— सं० (कि०) इजारबंद।
**सुरगि**— वि० (ला०) खट्टा।
**सुरतुप**— सं० (कि०) अगूंठी।
**सुरथ**— सं० (कि०) घास।
**सुरदुप**— सं० (ला०) अंगूठी।
**सुरना**— सं० (ला०) शहनाई।
**सुरमें**— सं० (कि०) माचिस।
**सुरला**— सं० (ला०) ज्येष्ठ मास।
**सुरसुम**— वि० (कि०) त्रिकोण।
**सुराङकीम**— सं० (कि०) स्नानगृह।
**सुरामाह**— अ० क्रि० (कि०) नहाना।
**सुरिह**— वि० (कि०) खट्टा।
**सुरेस**— सं० (कि०) सूअर।
**सुर्क**— वि० (कि०) दे० सुरक।
**सुर्त्त**— सं० (कि०) झाड़ीदार पेड़ विशेष जिसके फलों का रस खट्टा होता है।
**सुल**— सं० (कि०) रेंगने वाला कीट विशेष जो प्राय: कान में घुसता है।
**सुलकङ**— वि० (कि०) चुप।
**सुलतोख**— सं० (कि०) बुजुर्ग जन।
**सुलसुलयामिक**— अ० क्रि० (कि०) सुरसुराहट होना।
**सुलसुलासुह**— सं० (कि०) सुरसुराहट।
**सुलाफ**— सं० (कि०) अतिसार।
**सुलिङ**— सं० (कि०) छिद्र।
**सुलुख**— सं० (कि०) एकता।
**सुलुखरन्निक**— अ० क्रि० (कि०) चित्त होना, मरना।
**सुलुखहाचमिक**— अ० क्रि० (कि०) सुधरना।
**सुलुपयामाह**— अ० क्रि० (कि०) शीघ्र मानना।
**सुल्ल**— वि० (ला०) मंद, ढीला।
**सुवारङ**— सं० (कि०) सोमवार।
**सुसको**— वि० (कि०) कोटर वाला (वृक्ष)।
**सुसू**— सं० (कि०) उपज।
**सुस्कर**— सं० (कि०) एक त्योहार विशेष।
**सूअमाह**— स० क्रि० (कि०) नहलाना।
**सूई**— सं० (कि०) दर्जी।
**सूउमा**— अ० क्रि० (कि०) पैदा होना।
**सूऊमाह**— स० क्रि० (कि०) पोंछना।
**सूतूं**— सं० (ला०) पाजामा।
**सूनंगणो**— सं० (कि०) चूड़ा।
**सून**— सं० (कि०) पुल का आधार।
**सूमपङ**— सं० (कि०) रोंगटे।
**सूमाह**— स० क्रि० (कि०) नहलाना।
**सूर**— सं० (कि०) आवाज़।
**सूर**— सं० (कि०) घी तथा सत्तू का घोल।
**सूरचूपाङ**— सं० (कि०) एक झाड़ी विशेष जिसमें पीले रंग के खट्टे फल लगते हैं।
**सूरमाह**— अ० क्रि० (कि०) नहाना।
**सूरस**— सं० (कि०) सूअर।
**सूरसूछोस**— सं० (कि०) सूअर की चर्बी।
**सूल**— सं० (कि०) महिलाओं के 'दोहडू' की तह।
**सूलिङ**— सं० (कि०) प्रेत।
**सूशूमापंठङ**— सं० (कि०) स्नानागार।
**सूश्यमाह**— अ० क्रि० (कि०) नहाना।
**सूहे**— सं० (कि०) खटमल।
**सेंपा**— वि० (कि०) निष्पाप।
**सेंफज्ञुरमाह**— स० क्रि० (कि०) विचार बदलना।
**सेंफटेम्माह**— स० क्रि० (कि०) इच्छाओं को दबाना, मन मारना।
**सेंफलिऊजेमाह**— स० क्रि० (कि०) ध्यान से सुनना।
**सेंफदाअमाह**— अ० क्रि० (कि०) दिल टूटना।
**सेंफपोसमयांमाह**— अ० क्रि० (कि०) बेचैनी होना।
**सेंफश्योरमाह**— अ० क्रि० (कि०) मोहित होना।
**सेंफुहगरीई**— सं० (कि०) आत्मिक प्रसन्नता।
**से**— सं० (कि०) ताली।
**सेऊ**— सं० (ला०) पुल, सेतु।
**सेकदर**— सं० (कि०) औजार तेज़ करने की रेती।
**सेकारामजेमाह**— अ० क्रि० (कि०) धराशायी होना।
**सेगदर**— सं० (कि०) कटोरा।
**सेगहचेईसा**— वि० (कि०) गंभीर (पुरुष)।
**सेङपुङमाह**— स० क्रि० (कि०) कान भरना।
**सेचे**— स० क्रि० (कि०) बुझाना।
**सेझचुम्माह**— अ० क्रि० (कि०) स्थिर रहना।
**सेठहलीमाह**— अ० क्रि० (कि०) पैर झटकाना।
**सेति**— सं० (ला०) मुरम्मत।
**सेनमो**— सं० (कि०) नाखून।
**सेनिमा**— सं० (कि०) सिनेमा।
**सेनू**— स० क्रि० (कि०) बेचना।
**सेपेन**— सं० (कि०) मिर्च।
**सेप्सुङ**— सं० (कि०) भोजन।
**सेम**— सं० (कि०) हृदय।
**सेम**— सं० (ला०) मन।
**सेमचन**— सं० (कि०) प्राणी।
**सेमचीन्ह**— सं० (कि०) ढोर, पशु।
**सेमथाडोगपो**— सं० (कि०) प्रेमिका।
**सेमपक्कासा**— वि० (कि०) एकाग्रचित।
**सेमपे**— स० क्रि० (कि०) सोचना।

**सेमफमलऊ**—सं० (कि०) हीन भावना।
**सेमलाछूप**—सं० (कि०) मतभेद।
**सेयामाह**—स० क्रि० (कि०) सहना।
**सेर**—सं० (कि०) लोग।
**सेर**—सं० (कि०) स्वर्ण, सोना।
**सेरकेंप**—सं० (कि०) अमृत।
**सेरङसा**—वि० (कि०) कंजूस।
**सेरपो**—वि० (कि०) पीला।
**सेरमङ**—सं० (कि०) एक सदाबहार झाड़ी।
**सेरमाह**—स० क्रि० (कि०) संचित करना।
**सेरा**—सं० (कि०) घरोहर, अमानत।
**सेरा**—सं० (कि०) ओले।
**सेरातामाह**—स० क्रि० (कि०) धरोहर रखना।
**सेले**—सं० (कि०) खटमल।
**सेलेखाट**—स० क्रि० (कि०) लटकाना। अ० क्रि० दरार पड़ना।
**सेसमायङख**—वि० (कि०) जानने योग्य।
**सेसमाह**—स० क्रि० (कि०) जानना।
**सेसिहतई**—वि० (कि०) पूर्णाधिकारी।
**सेसीमी**—वि० (कि०) बुद्धिमान्।
**सेहंफुमतोई**—वि० (कि०) निष्कपट।
**सेहनफलुहरमाह**—अ० क्रि० (कि०) चित्त विचलित होना।
**सेहमफ**—सं० (कि०) आत्मा।
**सेहणा**—सं० (ला०) नेता।
**सै**—वि० (कि०) दस।
**सैली**—सं० (कि०) भ्रमण।
**सोंठामाह**—स० क्रि० (कि०) त्यागना।
**सोंडा**—वि० (कि०) साक्षात् (भूत)।
**सोंथबोंथ**—सं० (कि०) आपत्कालीन व्यवस्था।
**सोंदरङ**—सं० (कि०) समुद्र।
**सोंपोदेछेह**—अ० क्रि० (कि०) जीवित रहना।
**सोंफो**—वि० (कि०) साक्षात्।
**सोंवारङ**—सं० (कि०) सोमवार।
**सो**—सं० (कि०) दांत।
**सो**—वि० (कि०) अलग।
**सोअमाह**—स० क्रि० (कि०) पूर्ति करना।
**सोआतफमाह**—स० क्रि० (कि०) स्तुति करना।
**सोआबेंदङ**—सं० (कि०) दांत दर्द।
**सोई**—सं० (कि०) स्याही।
**सोएस**—वि० (कि०) नर्म।
**सोक**—सं० (कि०) सौतन।
**सोकपा**—सं० (कि०) कंधा।
**सोकपो**—सं० (कि०) बोझ लादे रखने का भाव।
**सोकरे**—वि० (कि०) सूखे (तृण); टूटे-फूटे।
**सोकरोलमाह**—स० क्रि० (कि०) विकृत करना।
**सोकलामाह**—स० क्रि० (कि०) उथल-पुथल करना।
**सोकलामाह**—स० क्रि० (कि०) परोसना।
**सोकसोअ**—अ० (कि०) खचाखच।
**सोकार**—सं० (कि०) साहूकार।
**सोकोअ**—सं० (कि०) बिच्छू।
**सोकोङ**—सं० (कि०) कान की बाली।
**सोख**—सं० (कि०) दूसरी शादी।
**सोगतगचे**—स० क्रि० (कि०) व्यापार करना।
**सोङलोमाह**—स० क्रि० (कि०) कुत्ते को दुत्कारना।
**सोचामीं**—सं० (कि०) निर्दोष व्यक्ति।
**सोचिबा**—स० क्रि० (कि०) सोचना।
**सोचिमु**—अ० (कि०) विशेषकर।
**सोचोह**—वि० (कि०) सच्चा।
**सोज़ोम**—वि० (कि०) पूरा।
**सोटो**—सं० (कि०) बड़ा कांटा।
**सोटोसा**—वि० (कि०) कांटेदार।
**सोठाऊजेमाह**—स० क्रि० (कि०) छोड़कर जाना।
**सोठामाह**—स० क्रि० (कि०) त्यागना। स्थगित करना।
**सोठामिन**—वि० (कि०) त्यागा हुआ।
**सोत**—सं० (कि०) छाया।
**सोतती**—वि० (कि०) ठंडा पानी।
**सोतलमाह**—स० क्रि० (कि०) छाया करना।
**सोती**—सं० (कि०) भाग्य।
**सोत्**—सं० (कि०) साधु।
**सोथ**—सं० (कि०) एक धातु।
**सोदाअंबोर**—वि० (कि०) सदाबहार।
**सोदायोह**—वि० (कि०) नित्य।
**सोनगम**—सं० (कि०) भिक्षा।
**सोनङ**—वि० (कि०) अकेला।
**सोनथलामा**—स० क्रि० (कि०) प्रबंध करना।
**सोनपो**—वि० (कि०) जीवित।
**सोनफोश्युमां**—वि० (कि०) साक्षात् भूत।
**सोनमसा**—वि० (कि०) पुण्यवान।
**सोनमोत**—सं० (कि०) शक्ति।
**सोनयाम**—सं० (कि०) भिक्षा।
**सोप-सोप**—वि० (कि०) स्वादहीन, स्वाद रहित।
**सोपाछियगोबा**—सं० (कि०) सेनापति।
**सोबाओ**—सं० (कि०) स्वभाव।
**सोबौक**—सं० (कि०) पाठ, सबक।
**सोमंदरङ**—सं० (कि०) समुद्र।
**सोमङ**—सं० (कि०) मैदान, समतल भूमि।
**सोमङा**—सं० (कि०) प्रतिबिंब।
**सोमबेला**—सं० (कि०) प्रातः काल।
**सोमलता**—सं० (ला०) Ephedra gerardiana.
**सोमां**—सं० (कि०) कंघी।
**सोमार**—सं० (ला०) सोमवार।
**सोमाह**—स० क्रि० (कि०) पूरा करना।
**सोमू**—सं० (कि०) प्रातः।
**सोमो**—सं० (कि०) फसल।
**सोयङ**—सं० (कि०) परछाई।
**सोयस**—वि० (कि०) सीधा-सादा।
**सोर**—सं० (कि०) जोड़ा।

**सोरगड**—सं० (कि०) गगन।
**सोरड**—सं० (कि०) तालाब, सरोवर।
**सोरदुब**—सं० (कि०) अंगूठी।
**सोरफो**—सं० (कि०) सुविधा।
**सोरम**—सं० (कि०) शर्म।
**सोरममतोई**—वि० (कि०) निर्लज्ज।
**सोरममयाशमिक**—अ० क्रि० (कि०) लज्जित होना।
**सोरमाह**—स० क्रि० (कि०) पूर्ण करना।
**सोरमो**—सं० (ला०) छोटी कुदाली।
**सोरम्याशिह**—वि० (कि०) लज्जित।
**सोरामिन**—वि० (कि०) प्यार में पालित।
**सोरूम**—वि० (कि०) तेरह।
**सोल**—सं० (कि०) खाना।
**सोलऊमें**—सं० (कि०) कोयले की आग।
**सोलगड**—सं० (कि०) मुख्य द्वार।
**सोलछोतमाह**—स० क्रि० (कि०) चायपान करना।
**सोलजोहडख**—सं० (कि०) उपवास।
**सोलमाह**—स० क्रि० (कि०) पूजा करना।
**सोला**—सं० (कि०) कोयला।
**सोलोक**—सं० (कि०) सड़क।
**सोलोडलोड**—सं० (कि०) ढीलापन।
**सोश्यमाह**—अ० क्रि० (कि०) पलना। जलना।
**सोसाई**—सं० (कि०) सास।
**सोसेजिअग**—वि० (ला०) अजीब।
**सोस्ती**—सं० (कि०) ठंडा पानी।
**सौ.द**—सं० (कि०) पंडित।
**सौ.ल**—सं० (कि०) ऊन में लगने वाला कीड़ा।
**सौकोर**—सं० (कि०) जन्म का अशौच।
**सौडा**—वि० (कि०) पंद्रह।
**सौत**—सं० (कि०) गिलट धातु।
**सौतेजुग**—सं० (कि०) सत्ययुग।
**सौदापतराड**—सं० (कि०) सामान, सौदा।
**सौदायो**—वि० (कि०) नित्य।
**सौनिके**—सं० (कि०) पहाड़ की देवियां।
**सौनिडच**—सं० (कि०) इशारा।
**सौनिश**—वि० (कि०) बारह।
**सौमांहैलिड**—सं० (कि०) 'फुलैच' में गाया जाने वाला लोक गीत।
**सौरग**—सं० (कि०) स्वर्ग, आसमान।
**सौरगड**—सं० (कि०) दे० सोरगड।
**सौरदा**—सं० (कि०) श्रद्धा।
**सौरप**—सं० (कि०) सर्प।
**सौरफी**—सं० (कि०) अशर्फी।
**सौरमाया**—सं० (कि०) धन-दौलत।
**सौरयामिक**—स० क्रि० (कि०) पुचकारना।
**सौरयाशित**—वि० (कि०) लाड़ला।
**सौरुग**—वि० (कि०) सोलह।
**सौरे**—वि० (कि०) अठारह।
**सौरैन्निक**—अ० क्रि० (कि०) रिसना।
**सौरोम**—सं० (कि०) लज्जा।
**सौरोमिंच**—वि० (कि०) लज्जावान।
**सौलथ**—सं० (कि०) पौधा।
**सौस्ता**—वि० (कि०) सस्ता।
**स्कयोराड**—सं० (कि०) घोड़ा।
**स्कली**—सं० (कि०) मूत्र।
**स्कान**—सं० (कि०) सरसों; पत्तेदार सब्जी।
**स्कारा**—सं० (कि०) तारा।
**स्किथतमाह**—अ० क्रि० (कि०) हिलना।
**स्कोरों**—सं० (कि०) तकली।
**स्दुक**—सं० (कि०) छाती।
**स्ताकुच**—सं० (कि०) नाक।
**स्ताल**—सं० (कि०) हल।
**स्तिड**—सं० (कि०) दिल।
**स्तीफा**—सं० त्यागपत्र।
**स्तीला**—सं० (कि०) मसूढ़ा।
**स्तेम**—सं० (कि०) बहू।
**स्तौ**—सं० (कि०) चेहरा।
**स्त्रीन**—सं० (कि०) बर्फीले स्थान में रहने वाली जंगली बकरी।
**स्त्रोलच**—सं० (कि०) कोंपलें।
**स्परक**—सं० (कि०) Rhododendron arboreum.
**स्पाच**—सं० (कि०) पौत्र।
**स्पान**—सं० (कि०) Abies bindron.
**स्पियुमों**—स० क्रि० (कि०) विदा करना।
**स्पीरिया**—सं० (कि०) राजमाष।
**स्पूद**—सं० (कि०) धन।
**स्याउ**—वि० (ला०) सौ।
**स्याळ**—सं० (ला०) श्रृगाल।
**स्वडबराअ**—अ० क्रि० (कि०) बिखर जाना।
**स्वशमाह**—अ० क्रि० (कि०) बिगड़ना।
**स्वा**—सं० (कि०) Morus serrata.
**स्वाऊशोत**—सं० (कि०) दंत रोग।
**स्वाकृसमाह**—स० क्रि० (कि०) दांत पीसना।
**स्वागुमाह**—अ० क्रि० (कि०) कांटा चुभना।
**स्वाचूमाह**—अ० क्रि० (कि०) दांत गाड़ना।
**स्वाटमाह**—स० क्रि० (कि०) दांत मारना।
**स्वातिग**—सं० (कि०) Rubus lasiacarpus.
**स्वाफुलमाह**—स० क्रि० (कि०) दांत उखाड़ना।
**स्वामाह**—स० क्रि० (कि०) बिगाड़ना।
**स्वारई**—सं० (कि०) समाज सुधारक।
**स्वारशमाह**—अ० क्रि० (कि०) सुधरना।
**स्वारामाह**—स० क्रि० (कि०) मुरम्मत करना।
**स्वारामेन**—वि० (कि०) संशोधित।
**स्वाराशिह**—वि० (कि०) सुधारा हुआ।
**स्वारेयामिक**—स० क्रि० (कि०) सुधारना, मुरम्मत करना, बधियाना।
**स्वारेयाशिश**—सं० (कि०) वधिया पशु।

**स्वाशुकलामाह**—स० क्रि० (कि०) दातुन करना।
**स्वाश्माह**—अ० क्रि० (कि०) बिगड़ना।
**स्वाह**—सं० (कि०) दांत।

## ह

**हंथमाह**—अ० क्रि० (कि०) निकलना।
**हंयुजेमाह**—अ० क्रि० (कि०) निष्कासित होना।
**हंबासा**—वि० (कि०) लालची।
**हअक**—सं० (कि०) सिसकी।
**हई**—अ० (कि०) हाय।
**हईमई**—अ० (कि०) हे राम।
**हईयई**—अ० (कि०) वाह-वाह।
**हईह**—अ० क्रि० (कि०) आश्चर्य बोधक शब्द।
**हकलपारङ**—सं० (कि०) गहरा घाव।
**हङमाह**—स० क्रि० (कि०) ले जाना।
**हङशिलिङ**—सं० (कि०) बड़ी दरार।
**हज़**—सं० (कि०) गाय।
**हजङ**—अ० (कि०) यहां।
**हजिग**—अ० (कि०) यहां।
**हजुथूमाह**—अ० क्रि० (कि०) लाचार होना।
**हजे**—अ० क्रि० (कि०) इस तरह।
**हजेको**—अ० (कि०) इस ओर।
**हटबा**—अ० क्रि० (ला०) चलना।
**हटवाई**—सं० (ला०) दुकानदार।
**हट्टा**—सं० (ला०) हड्डी।
**हट्टाहिहि**—सं० (कि०) विनोद।
**हतपततमाह**—अ० क्रि० (कि०) हड़बड़ाना।
**हतपतामाह**—अ० क्रि० (कि०) घबराना।
**हतापतला**—अ० (कि०) सहसा।
**हतुइबा**—स० क्रि० (ला०) मिश्रित करना।
**हतू**—सर्व० (कि०) किसका।
**हथ**—सर्व० (कि०) कौन।
**हथा**—सं० (कि०) सीमा, हद।
**हथिई**—सं० (कि०) हाथी।
**हथिलमाह**—स० क्रि० (कि०) मज़ाक करना।
**हनङ**—अ० (कि०) वहां।
**हनङच**—अ० (कि०) वहां से।
**हनची**—स० क्रि० (ला०) लाना।
**हनदलशे**—वि० (कि०) चकित।
**हनमाह**—अ० क्रि० (कि०) निकलना। स० क्रि० निकास करना, निकालना।
**हनमिक**—सं० (कि०) सामर्थ्य।
**हनुहीपन्माह**—स० क्रि० (कि०) घटाना। बहिष्कार करना।
**हपसी**—सं० (ला०) झूठ।
**हपू**—सं० (कि०) मुंह की सूजन।
**हप्सि**—सं० (कि०) बहाना।
**हप्सिकरबा**—स० क्रि० (ला०) बहाना करना।
**हम**—अ० (कि०) कहां।
**हयरो**—अ० क्रि० (कि०) आने वाला कल, अगला कल।
**हयाऊ**—सं० (ला०) हिम्मत।
**हयुर्ना**—वि० (ला०) शीघ्र।
**हर**—सं० (कि०) पतीले आदि का मुंह।
**हरकाइए**—अ० (ला०) कुछ भी।
**हरको**—सं० (कि०) हड्डी।
**हरङ**—सं० (कि०) हड्डी।
**हरचो**—सं० (कि०) खुजली।
**हरटौ**—सं० (कि०) खुजली।
**हरपलख**—अ० (ला०) हरपल।
**हरमान**—सं० (कि०) अपहरण।
**हररा**—सं० (कि०) गुर्राने की ध्वनि।
**हरलङ**—सं० (कि०) हथेली।
**हराइबा**—स० क्रि० (ला०) गंवाना।
**हराउबा**—अ० क्रि० (ला०) गुम होना।
**हराहुरे**—सं० (कि०) हेराफेरी।
**हरिबा**—स० क्रि० (ला०) देखना।
**हरुबा**—स० क्रि० (ला०) खोना, खो देना।
**हरो**—सं० (कि०) शोर।
**हरोटऊक्रपमाह**—अ० क्रि० (कि०) ज़ोर से रोना।
**हरोसा**—वि० (कि०) शोर मचाने वाला।
**हरोहन्माह**—स० क्रि० (कि०) शोर मचाना।
**हर्न**—सं० (ला०) हरिण, मृग।
**हलग**—वि० (कि०) खराब।
**हलजङ**—सं० (कि०) हलदी।
**हळजी**—सं० (कि०) हलदी।
**हलतमाह**—अ० क्रि० (कि०) घूमना-फिरना।
**हलनकिस्मोतसा**—वि० (कि०) अभागा।
**हलम**—वि० (कि०) घटिया, बुरा।
**हलयामिक**—स० क्रि० (कि०) घुमाना, फिराना।
**हलला**—सं० (कि०) याद।
**हलसमिक**—अ० क्रि० (कि०) घूमना, फिरना।
**हलांगतननू**—स० क्रि० (कि०) हल चलाना।
**हला**—अ० (कि०) कैसे।
**हलामाह**—स० क्रि० (कि०) घुमाना।
**हलाश्यमाह**—स० क्रि० (कि०) आदान-प्रदान करना।
**हलु**—सं० (कि०) आलू।
**हलेसक**—अ० (कि०) कैसा, किस तरह का।
**हलो**—सं० (कि०) एक पीला फूल विशेष।
**हलोट**—सं० (कि०) बड़ा खेत।
**हल्या**—अ० (कि०) जैसे।
**हशततमाह**—अ० क्रि० (कि०) तंग होना।
**हश्कमिक**—अ० क्रि० (कि०) दे० हश्कम्माह।
**हश्कम्माह**—अ० क्रि० (कि०) जम्हाई लेना।
**हसतलङ**—सं० (कि०) हथेली।

हसबा—अ० क्रि० (ला०) हंसना।
हसिबो—अ० क्रि० (ला०) दे० हसबा।
हांडयारो—सं० (कि०) सुरा निकालने का पात्र।
हांदग—अ० (कि०) उधर।
हा.कटे—अ० (कि०) किसी के कष्ट या अभाव को देखकर हुई प्रसन्नता।
हाई-या—अ० (कि०) दुःख या शोक सूचक शब्द।
हाउश—सं० (ला०) ध्वनि, आवाज़।
हाउशौबा—अ० क्रि० (ला०) रंभाना, चीखना, भौंकना।
हाकटामाह—स० क्रि० (कि०) घोषणा करना।
हागोमाह—अ० क्रि० (कि०) समझना।
हागोमिक—अ० क्रि० (कि०) समझना।
हाचि—वि० (ला०) अत्यधिक।
हाचिमिक—अ० क्रि० (कि०) होना।
हाजा—सं० (कि०) टोपी।
हाञार—सं० (ला०) अंधेरा।
हाडको—सं० (कि०) हड्डी।
हाड़पठ—वि० (ला०) ज़ोर से, कसकर।
हाड़ब्रुई—वि० (कि०) ढोंगी।
हात—सं० (कि०) हाथ।
हाति—सं० (ला०) हाथी।
हातु—सर्व० (कि०) किसे।
हातुइबा—स० क्रि० मिलना, पाना।
हाथू—सं० (कि०) पलटा।
हाप्ता—सं० (कि०) सप्ताह।
हाप्सि—सं० (ला०) झूठ।
हाफ—सं० (कि०) सियार, गीदड़।
हाबा—सं० (कि०) चिकित्सक।
हामगोई—वि० (कि०) अनभिज्ञ।
हार—सं० (कि०) विवाहिता को चोरी से भगाने की क्रिया, विवाह की एक किस्म।
हारहन्माह—स० क्रि० (कि०) अपहरण करना।
हारिनमो—अ० क्रि० (कि०) हारना।
हारी—सं० (कि०) ब्याहता स्त्री के किसी दूसरे के साथ भाग जाने की क्रिया।
हाल—अ० (कि०) जल्दी, शीघ्र।
हालाशांग—सं० (कि०) Rhus semialata.
हालेमाह—अ० क्रि० (कि०) चकित होना।
हालेस—वि० (कि०) हल चलाने वाला।
हालो—सं० (कि०) पत्ती।
हालोत—सं० (कि०) दशा, हालत।
हाल्लङ—सं० (कि०) आलू।
हाल्स—सं० (कि०) दे० हालेस।
हाशकनमाह—स० क्रि० (कि०) जोश दिखाना।
हाशमलोई—वि० (कि०) निरुत्साहित।
हाशलमाह—अ० क्रि० (कि०) स्थिर रहना।
हासल—अ० (कि०) शीघ्र।
हासलतुमाह—अ० क्रि० (कि०) शीघ्र आना।
हिंथीमिन्थी—अ० (कि०) बरबस।
हिंसार—सं० (कि०) Rubus laceocarpus.
हि—अ० (ला०) कल।
हिऊंद—सं० (ला०) हेमंत, शरद् ऋतु।
हिओ—सं० (ला०) हृदय।
हिकुअ—सं० (ला०) हिचकी।
हिछा—सं० (कि०) आ...., इच्छा।
हिड़मा—सं० (कि०) देवी हिडिम्बा जिसका एक मुख्य मंदिर कुल्लू में मनाली के निकट ढूंगरी के स्थान पर है।
हित—सं० (ला०) स्मृति।
हिदख—सं० (कि०) पिशाच, राक्षस विशेष। ऋणी।
हिमौत—सं० (कि०) साहस, सहायता।
हियां—सं० (ला०) हिमशिला।
हिरो—सं० (ला०) हृदय।
हिरोण—सं० (कि०) हरिण, मृग।
हिलैन्ठन—सं० (कि०) घृणित, गंदी वस्तु।
हिलैन्निक—अ० क्रि० (कि०) घृणास्पद वस्तु को देखकर घृणा उत्पन्न होना।
हिसाइबा—स० क्रि० (ला०) बुझाना।
हिसाल्बा—स० क्रि० (ला०) बुझाना।
हिस्सा—सं० (ला०) पसली।
हिस्सादार—वि० (कि०) भागीदार।
हींख—सं० (कि०) हींग।
हीन्मी—स० क्रि० (कि०) कम सुनाई देना।
हीमे—सं० (कि०) सास।
हीरकीकम—वि० (ला०) गैरकानूनी।
हुंदा—सं० (कि०) वर्तमान।
हुंदासुनचतिह—वि० (कि०) वर्तमान का सोचने वाला।
हुअपा—सं० (ला०) उल्लू।
हुकपा—सं० (कि०) उल्लू।
हुकपातंगचे—अ० क्रि० (कि०) झगड़ना।
हुकुम—सं० (कि०) आज्ञा, आदेश।
हुङसा—सं० (कि०) जन्मभूमि।
हुची—अ० क्रि० (ला०) निकलना।
हुच्छु—सं० (कि०) थकावट।
हुजाश्यमाह—स० क्रि० (कि०) बात को बढ़ाना।
हुजुत—सं० (कि०) हठ।
हुठयाश्यामाह—स० क्रि० (कि०) अफवाह उड़ाना।
हुड़—सं० (ला०) मेढ़ा।
हुत—सं० (कि०) मालिश का तेल।
हुत—वि० (कि०) गीला।
हुतकी—सं० (कि०) शरारत।
हुतमाह—स० क्रि० (कि०) लिपाई करना।
हुयुकचे—स० क्रि० (कि०) गुस्सा करना।
हुदुख—सं० (कि०) हठ।
हुदुखसा—वि० (कि०) हठी।
हुनां—अ० (कि०) अब।
हुनु—सर्व० (कि०) वह, उसका।

**हुन्नमिक**—स० क्रि० (कि०) पढ़ाना।
**हुन्नूमाह**—स० क्रि० (कि०) पढ़ाना।
**हुप**—सं० (कि०) घूंट। प्याला।
**हुफुह**—सं० (कि०) समाधि, गुफा।
**हुब**—सं० (कि०) नमी।
**हुबाहु**—वि० (कि०) हूबहू, ज्यों का त्यों।
**हुम**—वि० (कि०) तीन।
**हुमजिरा**—वि० (कि०) त्रिकोण।
**हुमबा**—वि० (कि०) तिहरा।
**हुर**—सं० (कि०) कुल्या, पानी की कुल्या।
**हुर**—सं० (कि०) सुरा रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र।
**हुरङ**—सं० (कि०) द्वार। गोशाला।
**हुरजुप**—सं० (कि०) तूफान।
**हुरथमाह**—स० क्रि० (कि०) इनकार करना।
**हुरपुख**—सं० (कि०) कुल्या का स्रोत।
**हुरयामिक**—स० क्रि० (कि०) बंद करना।
**हुरहनमाह**—स० क्रि० (कि०) कुल्या निकालना।
**हुराश्यमाह**—अ० क्रि० (कि०) बंद होना।
**हुलमाह**—स० क्रि० (कि०) जबरदस्ती देना।
**हुलमिक**—स० क्रि० (कि०) दे० हुलमाह।
**हुलस**—सं० (कि०) मेढ़ा।
**हुली**—वि० (कि०) नपुंसक।
**हुशमाह**—स० क्रि० (कि०) पढ़ना। मलना।
**हुशमिक**—स० क्रि० (कि०) पढ़ना।
**हुशार**—वि० (कि०) निपुण।
**हुशिमसा**—सं० (कि०) धनुष बाण धारण करने वाला।
**हुश्यमाह**—स० क्रि० (कि०) मढ़ना।
**हुसक्यामिक**—स० क्रि० (कि०) उकसाना, बहकाना, किसी को उकसाकर कोई काम कराना।
**हुसाटाश्यमाह**—अ० क्रि० (कि०) समूह में चलना।
**हुहुईह**—अ० क्रि० (कि०) हाँफना।
**हूऊ**—सं० (कि०) धनुष।
**हेंदु**—सर्व० (ला०) हमारा।
**हे**—अ० (कि०) दोबारा, फिर।
**हेतामाह**—अ० क्रि० (कि०) पुनर्जन्म होना।
**हेतिस**—वि० (कि०) इतना।
**हेनाम्**—अ० (कि०) दो साल बाद।
**हेनारे**—सर्व० (ला०) हम लोग।
**हेनजू**—सं० (ला०) हृदय।
**हेके**—अ० (ला०) अब।
**हेमया**—अ० (कि०) एक साल बाद।
**हेरत**—सं० (कि०) बैल।
**हेरबा**—स० क्रि० (ला०) देखना।
**हेरबेरकमिक**—स० क्रि० (कि०) रगड़ना।
**हेरालबा**—स० क्रि० (ला०) दिखाना।
**हेरालिबा**—स० क्रि० (ला०) सूचित करना।
**हेलङ**—सं० (कि०) लय।
**हेला**—सं० (कि०) ध्यान।
**हेलि**—अ० (कि०) दोबारा।
**हेलि-हेलि**—अ० (कि०) बार-बार।
**हैद**—अ० (कि०) अलावा, अतिरिक्त।
**होकरामिक**—स० क्रि० (कि०) ज़ोर से बुलाना।
**होकलोदुआ**—वि० (कि०) विश्वासपात्र।
**होकल्यामिक**—स० क्रि० (कि०) वमन करना।
**होग**—सं० (कि०) पत्तीदार चारा।
**होङ्ख**—सं० (कि०) अन्न की ढेरी।
**होजङ**—अ० (कि०) इधर।
**होजेर**—सं० (कि०) किरण।
**होटाश्यामाह**—स० क्रि० (कि०) स्पर्द्धा करना।
**होणा**—अ० (कि०) अभी।
**होत**—सं० (कि०) प्रकाश।
**होत**—सं० (कि०) 'फाफरे' तथा 'ओगले' के आटे को घोल कर बनाई गई पतली रोटी।
**होतचन**—वि० (कि०) तेजस्वी।
**होतयाछोत**—सं० (कि०) अनुमान।
**होतसा**—वि० (कि०) चमकदार।
**होतहंथमाह**—अ० क्रि० (कि०) चमकना।
**होतहोत**—स० क्रि० (कि०) उलझाना।
**होता**—वि० (कि०) इतना।
**होतिसका**—सर्व० (कि०) उसका।
**होतेच**—अ० (कि०) इतना सा।
**होद**—सं० (कि०) 'फाफरे' तथा 'ओगले' के आटे को घोलकर बनाई गई पतली रोटी।
**होन**—सं० (कि०) पानी का हौज़, तालाब।
**होने**—वि० (कि०) ऐसा।
**होनो**—सर्व० (कि०) वह।
**होम**—सं० (कि०) रीछ।
**होमङ**—सं० (कि०) हवन।
**होमयों**—वि० (कि०) सत्य, प्रकृत, उचित।
**होमशित**—अ० (कि०) आगे।
**होमशितुह**—वि० (कि०) पूर्व का।
**होमां**—अ० (कि०) विशेषत:।
**होमा**—सं० (ला०) दूध।
**होमायो**—अ० (कि०) सदा।
**होमाश्यीम्यां**—वि० (कि०) पहले दिन।
**होयो**—सर्व० (कि०) वह, यह।
**होरकिन्च**—सं० (कि०) हरगिज़।
**होरकीतङच**—सं० (कि०) दूरदृष्टि।
**होरङ**—सं० (कि०) शर्त।
**होरिङ**—सं० (कि०) लकड़ी के बड़े-बड़े टुकड़े।
**होरिङफो**—सं० (कि०) हिरण। मुखौटा लगाकर किया हरिण नृत्य।
**होरेके**—वि० (ला०) विचित्र।
**होरोफ**—सं० (कि०) लिखावट।
**होल**—सं० (कि०) घास का मैदान।
**होलङ**—सं० (कि०) प्रतिज्ञा, शर्त।

**होलङ·तीमाह**—स० क्रि० (कि०) शर्त लगाना।

**होलमिक**—स० क्रि० (कि०) खुजलाना। ऊन काटना।

**होलशमिक**—स० क्रि० (कि०) खुजलाना।

**होलासे**—अ० (कि०) धन्यवाद।

**होल्डो**—सं० (कि०) बाढ़।

**होल्दी**—सं० (कि०) हलदी।

**होल्ल**—सं० (कि०) एक प्रकार का बेलचा।

**होस**—सं० (कि०) शहद।

**होसपा**—स० क्रि० (कि०) चाहना।

**होसपालमाह**—स० क्रि० (कि०) प्रशंसा करना।

**होसमाह**—स० क्रि० (कि०) खाली करना, गिराना।

**होसयङ·चू**—सं० (कि०) मधुमक्खी।

**होसलाखेमाह**—स० क्रि० (कि०) उत्साहित करना।

**होसु**—सं० (कि०) धनिया।

**होहोलामाह**—अ० क्रि० (कि०) चिल्लाना।

**हौं**—सर्व० (कि०) मैं।

**हौतिच्छे**—अ० क्रि० (कि०) उधर।

**हौङ**—सं० (कि०) कीड़ा।

**हौङ·शैलिङ**—सं० (कि०) पेट के कृमि।

**हौर्के**—अ० (ला०) अन्य, इतर।

**हौर्जा**—सं० (कि०) क्षति, हानि।

**हौलू**—सं० (कि०) एक घास विशेष।